

**THE BOOK OF  
MORMON**

**HINDI – ENGLISH  
PARALLEL EDITION**

Version 1, published April 2023. [bencrowder.net/book-of-mormon-parallel-edition/](http://bencrowder.net/book-of-mormon-parallel-edition/)

This parallel edition © 2023 Benjamin Crowder. All rights reserved. You have permission to print this document for your own use. For other uses, send requests to [ben.crowder@gmail.com](mailto:ben.crowder@gmail.com).

Text of the Book of Mormon © 2023 Intellectual Reserve, Inc. All rights reserved.

The text of this edition is licensed from The Church of Jesus Christ of Latter-day Saints with the following disclaimer: *The Product offered by Benjamin Crowder is neither made, provided, approved, nor endorsed by, Intellectual Reserve, Inc. or The Church of Jesus Christ of Latter-day Saints. Any content or opinions expressed, implied, or included in or with the Product offered by Benjamin Crowder are solely those of Benjamin Crowder and not those of Intellectual Reserve, Inc. or The Church of Jesus Christ of Latter-day Saints.*

## मॉरमन की पुस्तक

### नफी की पट्टियों से ली गई पट्टियों पर मॉरमन के हाथों द्वारा लिखा गया विवरण

इसलिए, यह नफी के लोगों, और लमनाइयों का भी संक्षिप्त अभिलेख है—लमनाइयों को लिखा गया, जो कि इस्राएल के घराने के बचे हुए लोग हैं; और यहूदी और अन्य जाति को भी—आज्ञा द्वारा लिखा गया, और भविष्यवाणी और प्रकटीकरण की आत्मा द्वारा भी—लिखा और मुहरबंद किया गया, और प्रभु के पास छिपाया गया, ताकि ये नष्ट न किये जा सकें—परमेश्वर के उपहार और शक्ति से इसका अनुवाद करने के लिए प्रकट होने के लिए—मोरोनी के हाथों द्वारा मुहरबंद किये और प्रभु के पास छिपाए गए, और उचित समय में अन्य जाति द्वारा प्रकट किये जाने के लिए—परमेश्वर के उपहार द्वारा इनका अनुवाद किया जाए ।

ईथर की पुस्तक से भी संक्षिप्त विवरण लिया गया, जो कि येरेद के लोगों का अभिलेख है, जो उस समय तितर-बितर कर दिए गए थे जब प्रभु ने लोगों की भाषा में गड़बड़ी की थी, जब वे स्वर्ग में जाने के लिए मीनार बना रहे थे—जो कि इस्राएल के घराने के बाकी बचे लोगों को दिखाने के लिए था कि प्रभु ने उनके पूर्वजों के लिए कितने महान कार्य किये थे; और वे प्रभु के अनुबंधों को जान सकें, कि वे सदा के लिए अलग नहीं किये जाएं—और यहूदी और अन्य जाति को विश्वास दिलाने के लिए भी कि यीशु ही मसीह, अनंत परमेश्वर है, जिसने सभी राष्ट्रों पर स्वयं को प्रकट किया है—और अब, यदि त्रुटियां हैं तो वे मनुष्य की त्रुटियां हैं; इसलिए, परमेश्वर के कार्यों में दोष मत निकालो, ताकि तुम मसीह के न्याय-आसन के सम्मुख दोषरहित पाए जा सको ।

## The Book of Mormon

### An Account Written by the Hand of Mormon upon Plates Taken from the Plates of Nephi

Wherefore, it is an abridgment of the record of the people of Nephi, and also of the Lamanites—Written to the Lamanites, who are a remnant of the house of Israel; and also to Jew and Gentile—Written by way of commandment, and also by the spirit of prophecy and of revelation—Written and sealed up, and hid up unto the Lord, that they might not be destroyed—To come forth by the gift and power of God unto the interpretation thereof—Sealed by the hand of Moroni, and hid up unto the Lord, to come forth in due time by way of the Gentile—The interpretation thereof by the gift of God.

An abridgment taken from the Book of Ether also, which is a record of the people of Jared, who were scattered at the time the Lord confounded the language of the people, when they were building a tower to get to heaven—Which is to show unto the remnant of the house of Israel what great things the Lord hath done for their fathers; and that they may know the covenants of the Lord, that they are not cast off forever—And also to the convincing of the Jew and Gentile that JESUS is the CHRIST, the ETERNAL GOD, manifesting himself unto all nations—And now, if there are faults they are the mistakes of men; wherefore, condemn not the things of God, that ye may be found spotless at the judgment-seat of Christ.

## तीन गवाहों की गवाही

सभी राष्ट्रों, जातियों, भाषाओं, और लोगों को, जिन्हें यह पुस्तक प्राप्त होगी, सूचित किया जाता है कि पिता परमेश्वर, और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह से हमने उन पट्टियों को देखा है जिनमें यह अभिलेख है, जो कि नफी के लोग, और लमानायटियों, उनके भाई-बंधु, और येरेद के लोगों का भी अभिलेख है, जो कि उस मीनार से आए थे जिसकी चर्चा की जा चुकी है। हम यह भी जानते हैं कि इस अभिलेख का अनुवाद परमेश्वर के उपहार और शक्ति द्वारा किया गया है, क्योंकि उसकी वाणी ने हम पर इस बात की घोषणा की है; इसलिए हम निश्चित रूप से जानते हैं कि यह कार्य सच्चा है। और हम यह भी प्रमाणित करते हैं कि उन पट्टियों पर अंकित लिपि को हमने देखा है; जो कि हमें परमेश्वर की शक्ति द्वारा दिखाई गई थी, और मनुष्य द्वारा नहीं। हम गंभीरता से यह भी घोषणा करते हैं, कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत स्वर्ग से नीचे आया, और पट्टियों को लाया और हमारे सामने रखी, ताकि हम पट्टियों, और उन में अंकित लिपि को अपनी आंखों से देखें; और हम जानते हैं कि यह पिता परमेश्वर, और हमारे प्रभु यीशु मसीह, का अनुग्रह है जिसके द्वारा हमने यह सब देखा और प्रमाणित करते हैं कि यह बातें सच्ची हैं। और हमारी आंखों में यह बहुत अद्भुत है। फिर भी, परमेश्वर की वाणी ने हमें आज्ञा दी कि हम इस बात की गवाही दें; इसलिए, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए, हम इन बातों की गवाही देते हैं। हम यह जानते हैं कि यदि हम मसीह में विश्वसनीय रहे, तो हमारे वस्त्रों से मनुष्य का लहू दूर हो जाएगा, और मसीह के न्याय-आसन के सम्मुख बेदाग पाए जाएंगे, और हमेशा के लिए उसके साथ स्वर्ग में रहेंगे। और इसकी महिमा पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को मिलेगी जो कि एक ही परमेश्वर हैं।  
आमीन।

ओलिवर काउडी  
डेविड विटमर  
मार्टिन हैरिस

## The Testimony of Three Witnesses

Be it known unto all nations, kindreds, tongues, and people, unto whom this work shall come: That we, through the grace of God the Father, and our Lord Jesus Christ, have seen the plates which contain this record, which is a record of the people of Nephi, and also of the Lamanites, their brethren, and also of the people of Jared, who came from the tower of which hath been spoken. And we also know that they have been translated by the gift and power of God, for his voice hath declared it unto us; wherefore we know of a surety that the work is true. And we also testify that we have seen the engravings which are upon the plates; and they have been shown unto us by the power of God, and not of man. And we declare with words of soberness, that an angel of God came down from heaven, and he brought and laid before our eyes, that we beheld and saw the plates, and the engravings thereon; and we know that it is by the grace of God the Father, and our Lord Jesus Christ, that we beheld and bear record that these things are true. And it is marvelous in our eyes. Nevertheless, the voice of the Lord commanded us that we should bear record of it; wherefore, to be obedient unto the commandments of God, we bear testimony of these things. And we know that if we are faithful in Christ, we shall rid our garments of the blood of all men, and be found spotless before the judgment-seat of Christ, and shall dwell with him eternally in the heavens. And the honor be to the Father, and to the Son, and to the Holy Ghost, which is one God. Amen.

OLIVER COWDERY  
DAVID WHITMER  
MARTIN HARRIS

## आठ गवाहों की गवाही

सभी राष्ट्रों, जातियों, भाषाओं, और लोगों को, जिन्हें यह पुस्तक प्राप्त होगी, सूचित किया जाता है कि जोसफ स्मिथ, जु. ने, जो इस अभिलेख का अनुवादक है, हमें उन स्वर्ण पट्टियों को दिखाया है जिनकी चर्चा पहले की गई है और जो दिखने में सोने की प्रतीत होती हैं; और इनमें से जिन पट्टियों का अनुवाद जोसफ स्मिथ ने किया है, उन पट्टियों को हमने अपने हाथों से स्पर्श किया; और उन पर अंकित लिपि को भी हमने देखा है, जो कि देखने में प्राचीन और विचित्र कारीगरी लगती है। और इस बात को हम गंभीरता से लिख रहे हैं, कि उसी स्मिथ ने हमें उन पट्टियों को दिखाया, क्योंकि हमने उन्हें देखा और हाथों में लिया, और निश्चित रूप से जानते हैं कि जिन पट्टियों की चर्चा हमने की है वे उसी स्मिथ के पास हैं। और सारे संसार को अपनी देखी हुई बातों की गवाही देने के लिए, हम अपना नाम संसार को देते हैं। और हम असत्य नहीं कह रहे हैं, परमेश्वर इसका गवाह है।

क्रिश्चयन विटमर  
जेकब विटमर  
पीटर विटमर, जु.  
जॉन विटमर  
हाइरम पेज  
जोसफ स्मिथ, सि.  
हायरम स्मिथ  
सेमुएल एच. स्मिथ

## The Testimony of Eight Witnesses

Be it known unto all nations, kindreds, tongues, and people, unto whom this work shall come: That Joseph Smith, Jun., the translator of this work, has shown unto us the plates of which hath been spoken, which have the appearance of gold; and as many of the leaves as the said Smith has translated we did handle with our hands; and we also saw the engravings thereon, all of which has the appearance of ancient work, and of curious workmanship. And this we bear record with words of soberness, that the said Smith has shown unto us, for we have seen and hefted, and know of a surety that the said Smith has got the plates of which we have spoken. And we give our names unto the world, to witness unto the world that which we have seen. And we lie not, God bearing witness of it.

CHRISTIAN WHITMER  
JACOB WHITMER  
PETER WHITMER, JUN.  
JOHN WHITMER  
HIRAM PAGE  
JOSEPH SMITH, SEN.  
HYRUM SMITH  
SAMUEL H. SMITH

# नफी की प्रथम पुस्तक

## उसका शासन और सेवकाई

लेही और उसकी पत्नी सरायाह, और उसके चार पुत्र, (जेठे से) लमान, लेमुएल, साम, और नफी का वर्णन । प्रभु लेही को यरूशलेम की भूमि से चले जाने की चेतावनी देता है, क्योंकि उसने वहां के लोगों के अधर्म के संबंध में भविष्यवाणी की थी और वे उसकी जान लेना चाहते थे । वह अपने परिवार के साथ निर्जन प्रदेश की तीन दिनों की यात्रा करता है । नफी अपने भाइयों को लेता और यहूदियों का अभिलेख लेने के लिए यरूशलेम वापस लौटता है । उनके कष्टों का वर्णन । वे इश्माएल की पुत्रियों को पत्नी के रूप में ग्रहण करते हैं । वे अपने परिवारों को साथ लेते हैं और निर्जन प्रदेश को निकल पड़ते हैं । निर्जन प्रदेश में उनके कष्ट और विपत्ति । उनकी यात्रा का मार्ग । उनका समुद्र तट पर पहुंचना । नफी के भाइयों का उसके विरुद्ध होना । नफी उनको पराजित करता है और नाव बनाता है । उस स्थान का नाम बांऊटीफल रखते हैं । वे सागर को पार करके प्रतिज्ञा के प्रदेश पहुंचते हैं, इत्यादि । यह सब नफी के लेखानुसार है, या दूसरे शब्दों में, नफी ने, यह अभिलेख लिखा है ।

### 1 नफी 1

- 1 मैं, नफी एक अच्छे घराने में पैदा हुआ, इसलिए मुझे अपने पिता की सभी विद्याओं में शिक्षित किया गया, और मैंने अपने समय के अनेक कष्टों को देखा, फिर भी, जीवनभर प्रभु की कृपा मुझ पर बनी रही; हां, परमेश्वर की अच्छाइयों और रहस्य की बातों का भारी ज्ञान होने के कारण मैं अपने समय की होने वाली घटनाओं का विवरण लिख रहा हूँ ।
- 2 हां, मैं यह विवरण अपने पिता की भाषा में लिख रहा हूँ, जिसमें यहूदियों का ज्ञान और मिश्र-वासियों की भाषा सम्मिलित है ।
- 3 और मैं जानता हूँ कि जो अभिलेख मैं लिख रहा हूँ वह सत्य है; और यह मैं अपने हाथ से; और अपने ज्ञान के अनुसार लिख रहा हूँ ।

# The First Book of Nephi

## His Reign and Ministry

*An account of Lehi and his wife Sariah, and his four sons, being called, (beginning at the eldest) Laman, Lemuel, Sam, and Nephi. The Lord warns Lehi to depart out of the land of Jerusalem, because he prophesieth unto the people concerning their iniquity and they seek to destroy his life. He taketh three days' journey into the wilderness with his family. Nephi taketh his brethren and returneth to the land of Jerusalem after the record of the Jews. The account of their sufferings. They take the daughters of Ishmael to wife. They take their families and depart into the wilderness. Their sufferings and afflictions in the wilderness. The course of their travels. They come to the large waters. Nephi's brethren rebel against him. He confoundeth them, and buildeth a ship. They call the name of the place Bountiful. They cross the large waters into the promised land, and so forth. This is according to the account of Nephi; or in other words, I, Nephi, wrote this record.*

### 1 Nephi 1

I, Nephi, having been born of goodly parents, therefore I was taught somewhat in all the learning of my father; and having seen many afflictions in the course of my days, nevertheless, having been highly favored of the Lord in all my days; yea, having had a great knowledge of the goodness and the mysteries of God, therefore I make a record of my proceedings in my days.

Yea, I make a record in the language of my father, which consists of the learning of the Jews and the language of the Egyptians.

And I know that the record which I make is true; and I make it with mine own hand; and I make it according to my knowledge.

- 4 ऐसा हुआ कि यहूदा के राजा सिदकिय्याह के शासन के प्रथम वर्ष के आरंभ में (मेरे पिता लेही, ने अपना सारा समय यरूशलेम में बिताया था); और उसी वर्ष कई भविष्यवक्ता आकर भविष्यवाणी करने लगे कि लोगों को पश्चाताप करना चाहिए, वरना महान यरूशलेम शहर को नष्ट कर दिया जाएगा ।
- 5 तब ऐसा हुआ कि मेरे पिता, लेही, अपने लोगों के लिए अपने पूरे हृदय से प्रभु से प्रार्थना करने लगे ।
- 6 और ऐसा हुआ कि जब वे प्रभु से प्रार्थना कर ही रहे थे तब उनके सामने एक चट्टान पर अग्नि का एक स्तंभ आकर ठहरा; और जो कुछ उन्होंने देखा और सुना उससे वह थर-थर कांपने लगे ।
- 7 और तब ऐसा हुआ कि जब वे यरूशलेम में अपने घर लौटे; तब आत्मा और जो कुछ उन्होंने देखा था उससे प्रभावित होकर वह अपने बिस्तर पर लेट गए ।
- 8 और इस तरह आत्मा से प्रभावित होकर, वह दिव्यदर्शन में खो गए, और उन्होंने स्वर्गों को खुलते देखा, और उन्हें लगा कि वह परमेश्वर को अपने सिंहासन पर बैठा देख रहे हैं, जो असंख्य स्वर्गदूतों की भीड़ से घिरे हैं और स्वर्गदूत अपने परमेश्वर का भजन और गुणगान कर रहे हैं ।
- 9 और ऐसा हुआ कि उन्होंने स्वर्ग के बीच में से एक को नीचे उतरते देखा, और उन्होंने देखा कि उसकी चमक दोपहर के सूर्य से भी अधिक तेज थी ।
- 10 और उसने बारह जनों को उसके पीछे जाते देखा, और उनकी उज्ज्वलता गगनमण्डल के तारों से भी अधिक तेज थी ।
- 11 और वे नीचे उतर कर पृथ्वी पर आए; और प्रथम आने वाला मेरे पिता के सामने आकर खड़ा हुआ, और उनको एक पुस्तक दी, और उससे कहा कि वह पढ़ें ।
- 12 और ऐसा हुआ कि जैसे ही उन्होंने पढ़ा, वह प्रभु की आत्मा से भर गए ।
- 13 और वह पढ़ते हुए बोले: यरूशलेम पर हाय, क्योंकि मैंने तेरे घृणित कार्यों को देखा है; हां, और मेरे पिता ने यरूशलेम के विषय में अनेक बातों को पढ़ा—कि वह नष्ट कर दिया जाएगा, और वहां के निवासियों को भी नष्ट कर दिया जाएगा; बहुत से लोग तलवार से मार दिए जाएंगे, और बहुतों को गुलाम बना कर बाबुल ले जाया जाएगा ।
- For it came to pass in the commencement of the first year of the reign of Zedekiah, king of Judah, (my father, Lehi, having dwelt at Jerusalem in all his days); and in that same year there came many prophets, prophesying unto the people that they must repent, or the great city Jerusalem must be destroyed.
- Wherefore it came to pass that my father, Lehi, as he went forth prayed unto the Lord, yea, even with all his heart, in behalf of his people.
- And it came to pass as he prayed unto the Lord, there came a pillar of fire and dwelt upon a rock before him; and he saw and heard much; and because of the things which he saw and heard he did quake and tremble exceedingly.
- And it came to pass that he returned to his own house at Jerusalem; and he cast himself upon his bed, being overcome with the Spirit and the things which he had seen.
- And being thus overcome with the Spirit, he was carried away in a vision, even that he saw the heavens open, and he thought he saw God sitting upon his throne, surrounded with numberless concourses of angels in the attitude of singing and praising their God.
- And it came to pass that he saw One descending out of the midst of heaven, and he beheld that his luster was above that of the sun at noon-day.
- And he also saw twelve others following him, and their brightness did exceed that of the stars in the firmament.
- And they came down and went forth upon the face of the earth; and the first came and stood before my father, and gave unto him a book, and bade him that he should read.
- And it came to pass that as he read, he was filled with the Spirit of the Lord.
- And he read, saying: Wo, wo, unto Jerusalem, for I have seen thine abominations! Yea, and many things did my father read concerning Jerusalem—that it should be destroyed, and the inhabitants thereof; many should perish by the sword, and many should be carried away captive into Babylon.

- 14 और तब ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता ने अनेकों महान और आश्चर्यजनक बातों को पढ़ और देख लिया, तब उन्होंने प्रभु से कई बातें कहीं जैसे: आप के कार्य महान और आश्चर्यजनक हैं, हे प्रभु सर्वशक्तिमान परमेश्वर ! आपका आसन ऊंचे स्वर्गों में है, और आपकी शक्ति, और उदारता, और दया पृथ्वी के सारे लोगों के ऊपर है; और क्योंकि आप दयालु हैं, इसलिए जो आपकी शरण में आएंगे उन्हें आप नष्ट नहीं करेंगे !
- 15 और मेरे पिता ने अपने परमेश्वर के यशगान में इस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया; क्योंकि उनकी आत्मा आनंद-विभोर थी, और उन्होंने जो कुछ देखा था, हां, प्रभु ने उन्हें जो कुछ दिखाया था, उन बातों से उनका पूरा हृदय भर उठा था ।
- 16 और अब मैं, नफी, अपने पिता द्वारा लिखी गयी बातों का पूरा विवरण नहीं लिख रहा हूं, क्योंकि मेरे पिता ने दिव्यदर्शन और सपने में जो कुछ देखा था, उसके विषय में उन्होंने बहुत कुछ लिखा है और उन्होंने जो कुछ अपने बच्चों से भविष्यवाणी की और कहा उस पर भी उन्होंने बहुत कुछ लिखा है, जिसका पूरा वर्णन मैं नहीं लिखूंगा ।
- 17 लेकिन मैं अपने समय में होने वाली घटनाओं का विवरण लिखूंगा । सुनो, मैं अपने पिता द्वारा लिखे गए विवरण को संक्षेप में उन पट्टियों पर लिखूंगा, जिन्हें मैंने अपने हाथों से बनाया है; इसलिए अपने पिता के अभिलेख को संक्षिप्त में लिख देने के पश्चात मैं अपने जीवन का विवरण लिखूंगा ।
- 18 इसलिए, मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो, कि मेरे पिता, लेही, को यरूशलेम को नष्ट किये जाने से संबंधित अनेक अदभुत बातों को प्रभु द्वारा दिखाए जाने के पश्चात वह लोगों के बीच गए, और भविष्यवाणी करने लगे और जो बातें उन्होंने देखी और सुनी थी उसके संबंध में उन्हें घोषणा करने लगे ।
- 19 और ऐसा हुआ कि जिन बातों की गवाही उन्होंने यहूदियों के विषय में दी थी उसके कारण वे उनका उपहास करने लगे; क्योंकि उन्होंने उनकी दुष्टता और उनके घिनौनेपन की असलियत के बारे में बतलाया, और उन्होंने गवाही दी कि जो बातें उन्होंने देखी और सुनी थी, और जो बातें उन्होंने उस पुस्तक में पढ़ी थी, स्पष्ट रूप से मसीहा के आने के विषय में और संसार की मुक्ति के बारे में भी गवाही देती थी ।

And it came to pass that when my father had read and seen many great and marvelous things, he did exclaim many things unto the Lord; such as: Great and marvelous are thy works, O Lord God Almighty! Thy throne is high in the heavens, and thy power, and goodness, and mercy are over all the inhabitants of the earth; and, because thou art merciful, thou wilt not suffer those who come unto thee that they shall perish!

And after this manner was the language of my father in the praising of his God; for his soul did rejoice, and his whole heart was filled, because of the things which he had seen, yea, which the Lord had shown unto him.

And now I, Nephi, do not make a full account of the things which my father hath written, for he hath written many things which he saw in visions and in dreams; and he also hath written many things which he prophesied and spake unto his children, of which I shall not make a full account.

But I shall make an account of my proceedings in my days. Behold, I make an abridgment of the record of my father, upon plates which I have made with mine own hands; wherefore, after I have abridged the record of my father then will I make an account of mine own life.

Therefore, I would that ye should know, that after the Lord had shown so many marvelous things unto my father, Lehi, yea, concerning the destruction of Jerusalem, behold he went forth among the people, and began to prophesy and to declare unto them concerning the things which he had both seen and heard.

And it came to pass that the Jews did mock him because of the things which he testified of them; for he truly testified of their wickedness and their abominations; and he testified that the things which he saw and heard, and also the things which he read in the book, manifested plainly of the coming of a Messiah, and also the redemption of the world.



20 और जब यहूदियों ने इन बातों को सुना तब वे उन पर क्रोधित हो उठे; और हां, जिस प्रकार उन्होंने पुराने भविष्यवक्ताओं के साथ व्यवहार किया था, जिन्हें निर्वासित करके उन पर पत्थर बरसाए और उनकी हत्या कर दी; और वे उसी प्रकार उनकी भी जान लेने पर उतारू हो गए । लेकिन देखो, मैं, नफी तुम्हें यह दिखाऊंगा कि प्रभु की दया उन सभी के ऊपर होती है जिनको वह चुनता है, क्योंकि उनका विश्वास उन्हें बचाने की शक्ति देकर शक्तिशाली बना देता है ।

And when the Jews heard these things they were angry with him; yea, even as with the prophets of old, whom they had cast out, and stoned, and slain; and they also sought his life, that they might take it away. But behold, I, Nephi, will show unto you that the tender mercies of the Lord are over all those whom he hath chosen, because of their faith, to make them mighty even unto the power of deliverance.

## 1 नफी 2

- 1 सुनो, ऐसा हुआ कि प्रभु ने मेरे पिता से बात की, हां, सपने में उनसे कहा: लेही तुमने जिन कामों को किया है, उनके लिए तुम आशीषित हो; और क्योंकि तुम मेरे विश्वासी रहे हो और इन लोगों को वे बातें बताई जिसका मैंने तुम्हें आदेश दिया था, इसलिए वे तुम्हारी जान लेना चाहते हैं।
- 2 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने मेरे पिता को सपने में आज्ञा दी, कि वह अपने परिवार को लेकर निर्जन प्रदेश में चले जाएं।
- 3 और तब ऐसा हुआ कि वे प्रभु के प्रति आज्ञाकारी थे, इसलिए उन्होंने उनके आदेश के अनुसार काम किया।
- 4 और ऐसा हुआ कि वह निर्जन प्रदेश को खाना हो गए। और उन्होंने अपने घर को, अपनी पैतृक संपत्ति वाले प्रदेश को, और अपने सोना, और चांदी को, और अपने मूल्यवान वस्तुओं को छोड़ दिया। उन्होंने अपने साथ केवल अपने परिवार को, खाद्य सामग्रियां और तंबूओं को छोड़ कर कुछ नहीं लिया, और निर्जन प्रदेश को खाना हो गए।
- 5 और वह लाल सागर के तट के निकट आए; और उन्होंने लाल सागर के तट के निकट निर्जन प्रदेश में यात्रा की, और उन्होंने अपने परिवार, जिसमें मेरी मां, सरायाह, और मेरे बड़े भाई, लमान, लेमुएल और साम शामिल थे, के साथ निर्जन प्रदेश में यात्रा की थी।
- 6 और ऐसा हुआ कि जब उन्हें निर्जन प्रदेश में यात्रा करते हुए तीन दिन हो गए, उन्होंने जल की एक नदी के पास घाटी में अपना तंबू लगाया।
- 7 और ऐसा हुआ कि उन्होंने पत्थरों की एक वेदी बनाई, और प्रभु को भेंट चढ़ाई, और प्रभु हमारे परमेश्वर को धन्यवाद दिया।
- 8 और ऐसा हुआ कि उन्होंने उस नदी का नाम, लमान रखा, जो लाल सागर में जाकर गिरती थी; और वह घाटी तट पर उसके मुहाने के निकट थी।
- 9 और जब मेरे पिता ने देखा कि वह नदी लाल सागर के सोते में जाकर गिरती है तब उन्होंने लमान से कहा: तुम इस नदी की तरह बनो और सदैव नेकी के सोते की तरह बहते रहो!

## 1 Nephi 2

For behold, it came to pass that the Lord spake unto my father, yea, even in a dream, and said unto him: Blessed art thou Lehi, because of the things which thou hast done; and because thou hast been faithful and declared unto this people the things which I commanded thee, behold, they seek to take away thy life.

And it came to pass that the Lord commanded my father, even in a dream, that he should take his family and depart into the wilderness.

And it came to pass that he was obedient unto the word of the Lord, wherefore he did as the Lord commanded him.

And it came to pass that he departed into the wilderness. And he left his house, and the land of his inheritance, and his gold, and his silver, and his precious things, and took nothing with him, save it were his family, and provisions, and tents, and departed into the wilderness.

And he came down by the borders near the shore of the Red Sea; and he traveled in the wilderness in the borders which are nearer the Red Sea; and he did travel in the wilderness with his family, which consisted of my mother, Sariah, and my elder brothers, who were Laman, Lemuel, and Sam.

And it came to pass that when he had traveled three days in the wilderness, he pitched his tent in a valley by the side of a river of water.

And it came to pass that he built an altar of stones, and made an offering unto the Lord, and gave thanks unto the Lord our God.

And it came to pass that he called the name of the river, Laman, and it emptied into the Red Sea; and the valley was in the borders near the mouth thereof.

And when my father saw that the waters of the river emptied into the fountain of the Red Sea, he spake unto Laman, saying: O that thou mightest be like unto this river, continually running into the fountain of all righteousness!

- 10 और उन्होंने लेमुएल से भी कहा: ओह तुम इस घाटी की तरह दृढ़, और स्थिर, और प्रभु के आदेशों के पालन करने में अडिग बने रहो !
- 11 अब उन्होंने लमान और लेमुएल से उनके हठीपन के कारण कहा; क्योंकि सुनो वे अपने पिता के विरुद्ध कई बातों में बड़बड़ करते थे, क्योंकि वह दिव्यदर्शी पुरुष थे और वह उन लोगों को यरूशलेम की भूमि, उनके पैतृक संपत्ति वाला प्रदेश, तथा उनका सोना, और उनका चांदी, और उनकी अन्य मूल्यवान वस्तुओं को छोड़ कर निर्जन प्रदेश में नष्ट होने के लिए ले गए थे। और वे यह कहते थे कि उन्होंने अपने हृदय की मूर्खतापूर्ण कल्पनाओं के कारण यह सब किया था।
- 12 और इस प्रकार लमान और लेमुएल ने, जो सब से बड़े थे, अपने पिता के विरुद्ध बड़बड़ाए। और वे इसलिए शिकायत कर रहे थे क्योंकि जिस परमेश्वर ने उनको बनाया था उसके कार्य वे नहीं जानते थे।
- 13 वे यह भी विश्वास नहीं करते थे कि भविष्यवक्ता के वचनों के अनुसार, वह महान शहर, यरूशलेम नष्ट कर दिया जाएगा। और वे यरूशलेम में रहने वाले यहूदियों की तरह थे, जो मेरे पिता की जान लेना चाहते थे।
- 14 और तब ऐसा हुआ कि मेरे पिता ने लेमुएल की घाटी में, आत्मा से परिपूर्ण होकर शक्ति से उनसे तब तक बातें की जब तक कि वे उनके समक्ष कांपने न लगे। और उनकी बातों से वे इतना घबरा गए कि वे उनके विरुद्ध कुछ नहीं बोल पाए; इसलिए, उन्होंने वैसा ही किया जैसा उनको उन्होंने आदेश दिया था।
- 15 और मेरे पिता तंबू में रहते थे।
- 16 और ऐसा हुआ कि उस समय मैं, नफी, आयु में बहुत छोटा था, फिर भी शरीर से अपनी अवस्था से अधिक हृष्ट-पुष्ट और बलवान था, और परमेश्वर के भेदों को जानने के लिए मेरी बड़ी अभिलाषा थी; इसलिए, मैंने प्रभु को पुकारा, और सुनो, उन्होंने मुझे दर्शन दिए और मेरे हृदय को इतना विनम्र किया कि मैंने अपने पिता द्वारा कहे गए हर एक शब्दों पर विश्वास किया; इसलिए, अपने भाइयों की तरह मैंने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह नहीं किया।
- 17 और मैंने साम से उन बातों के विषय में बातचीत की जिनको प्रभु ने अपनी पवित्र आत्मा के द्वारा मुझ पर प्रकट किया था। और ऐसा हुआ कि उसने मेरी बातों पर विश्वास किया।
- 18 लेकिन देखो, लमान और लेमुएल ने मेरी बातों को नहीं सुना; और उनके हृदयों की कठोरता से दुखी होकर मैंने उनके लिए प्रभु को पुकारा।

And he also spake unto Lemuel: O that thou mightest be like unto this valley, firm and steadfast, and immovable in keeping the commandments of the Lord!

Now this he spake because of the stiffneckedness of Laman and Lemuel; for behold they did murmur in many things against their father, because he was a visionary man, and had led them out of the land of Jerusalem, to leave the land of their inheritance, and their gold, and their silver, and their precious things, to perish in the wilderness. And this they said he had done because of the foolish imaginations of his heart.

And thus Laman and Lemuel, being the eldest, did murmur against their father. And they did murmur because they knew not the dealings of that God who had created them.

Neither did they believe that Jerusalem, that great city, could be destroyed according to the words of the prophets. And they were like unto the Jews who were at Jerusalem, who sought to take away the life of my father.

And it came to pass that my father did speak unto them in the valley of Lemuel, with power, being filled with the Spirit, until their frames did shake before him. And he did confound them, that they durst not utter against him; wherefore, they did as he commanded them.

And my father dwelt in a tent.

And it came to pass that I, Nephi, being exceedingly young, nevertheless being large in stature, and also having great desires to know of the mysteries of God, wherefore, I did cry unto the Lord; and behold he did visit me, and did soften my heart that I did believe all the words which had been spoken by my father; wherefore, I did not rebel against him like unto my brothers.

And I spake unto Sam, making known unto him the things which the Lord had manifested unto me by his Holy Spirit. And it came to pass that he believed in my words.

But, behold, Laman and Lemuel would not hearken unto my words; and being grieved because of the hardness of their hearts I cried unto the Lord for them.

19 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने मुझसे कहा: नफी, तुम अपने विश्वास के लिए आशीषित हो, क्योंकि तुमने मुझे लगन और दीन हृदय से खोजा है।

20 और जब तक तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करते रहोगे, तब तक तुम समृद्ध होते रहोगे, और तुमको प्रतिज्ञा के प्रदेश में ले जाया जाएगा; हां, एक ऐसे प्रदेश में जिसे मैंने तुम्हारे लिए तैयार किया है; हां, यह प्रदेश सब प्रदेशों में सर्वश्रेष्ठ है।

21 और जब तक तुम्हारे भाई तुम्हारे विरुद्ध विद्रोह करेंगे, तब तक उन्हें प्रभु की उपस्थिति से वंचित रखा जाएगा।

22 और जब तक तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करते रहोगे, तब तक तुम अपने भाइयों के ऊपर शासक और शिक्षक बने रहोगे।

23 इसलिए सुनो, जिस दिन वे मेरे विरुद्ध विद्रोह करेंगे, उसी दिन मैं उनको कठोर श्राप दूंगा, और सिवाय मेरे विरुद्ध विद्रोह करने के, तुम्हारे वंश के ऊपर उनका कोई वंश न चलेगा।

24 और अगर ऐसा होता है कि वे मेरे विरुद्ध विद्रोह करते हैं तब वे तुम्हारे वंश को इतना तंग करेंगे कि उन्हें मेरी याद आएगी।

And it came to pass that the Lord spake unto me, saying: Blessed art thou, Nephi, because of thy faith, for thou hast sought me diligently, with lowliness of heart.

And inasmuch as ye shall keep my commandments, ye shall prosper, and shall be led to a land of promise; yea, even a land which I have prepared for you; yea, a land which is choice above all other lands.

And inasmuch as thy brethren shall rebel against thee, they shall be cut off from the presence of the Lord.

And inasmuch as thou shalt keep my commandments, thou shalt be made a ruler and a teacher over thy brethren.

For behold, in that day that they shall rebel against me, I will curse them even with a sore curse, and they shall have no power over thy seed except they shall rebel against me also.

And if it so be that they rebel against me, they shall be a scourge unto thy seed, to stir them up in the ways of remembrance.

## 1 नफी 3

- 1 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी, प्रभु से बातचीत कर के अपने पिता के तंबू में गया ।
- 2 और ऐसा हुआ कि उन्होंने मुझसे कहा: देखो, मैंने एक सपना देखा है, जिस में प्रभु ने मुझे आदेश दिया है कि तुम अपने भाइयों के साथ वापस यरूशलेम लौट जाओ ।
- 3 क्योंकि देखो यहूदियों का अभिलेख लाबान के पास है, और उसके पास तुम्हारे पूर्वजों की वंशावली भी है, और वे पीतल की पट्टियों में खुदे हुए हैं ।
- 4 इसलिए, प्रभु ने मुझे आज्ञा दी है कि तुम अपने भाइयों के साथ लाबान के घर जाओ, और उन अभिलेखों को ढूँढो, और यहां इस निर्जन प्रदेश में लाओ ।
- 5 और अब, देखो तुम्हारे भाई यह कहते हुए बड़बड़ाते हैं कि मैं उनसे कठिन कार्य करवाना चाहता हूँ; लेकिन देखो उनसे यह कार्य मैं नहीं करवा रहा हूँ, यह तो प्रभु की आज्ञा है ।
- 6 इसलिए मेरे बेटे, जाओ, और तुम पर प्रभु की कृपा रहेगी, क्योंकि तुमने बड़बड़ नहीं किया ।
- 7 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने पिता से कहा: मैं जाऊंगा और वह काम करूंगा जिसकी आज्ञा प्रभु ने दी है, क्योंकि यह मैं जानता हूँ कि प्रभु मानव संतान को ऐसी कोई आज्ञा नहीं देता जिसे पूरा करने के लिए वह मार्ग तैयार न करे ।
- 8 और ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता ने इन शब्दों को सुना तब वह अत्यंत ही प्रसन्न हुए, क्योंकि वह जानते थे कि प्रभु की आशीष मुझे प्राप्त थी ।
- 9 और मैं, नफी और मेरे भाइयों ने, अपने तंबू लेकर यरूशलेम की भूमि को जाने के लिए निर्जन प्रदेश से होकर यात्रा की ।
- 10 और ऐसा हुआ कि जब हम यरूशलेम की भूमि में पहुंचे, तब मैंने, और मेरे भाइयों ने एक दूसरे से विचार विमर्श किया ।
- 11 और लाबान के घर कौन जाए—इसका निर्णय हमने पर्ची डाल कर किया । और ऐसा हुआ कि पर्ची लमान के नाम निकली; और लमान लाबान के घर गया; और उसने उसके घर के अंदर बैठे हुए उससे बातें की ।
- 12 और उसने लाबान से उस अभिलेख को मांगा जो पीतल की पट्टियों पर खुदा हुआ था, जिसमें मेरे पिता की वंशावली थी ।

## 1 Nephi 3

And it came to pass that I, Nephi, returned from speaking with the Lord, to the tent of my father.

And it came to pass that he spake unto me, saying: Behold I have dreamed a dream, in the which the Lord hath commanded me that thou and thy brethren shall return to Jerusalem.

For behold, Laban hath the record of the Jews and also a genealogy of my forefathers, and they are engraven upon plates of brass.

Wherefore, the Lord hath commanded me that thou and thy brothers should go unto the house of Laban, and seek the records, and bring them down hither into the wilderness.

And now, behold thy brothers murmur, saying it is a hard thing which I have required of them; but behold I have not required it of them, but it is a commandment of the Lord.

Therefore go, my son, and thou shalt be favored of the Lord, because thou hast not murmured.

And it came to pass that I, Nephi, said unto my father: I will go and do the things which the Lord hath commanded, for I know that the Lord giveth no commandments unto the children of men, save he shall prepare a way for them that they may accomplish the thing which he commandeth them.

And it came to pass that when my father had heard these words he was exceedingly glad, for he knew that I had been blessed of the Lord.

And I, Nephi, and my brethren took our journey in the wilderness, with our tents, to go up to the land of Jerusalem.

And it came to pass that when we had gone up to the land of Jerusalem, I and my brethren did consult one with another.

And we cast lots—who of us should go in unto the house of Laban. And it came to pass that the lot fell upon Laman; and Laman went in unto the house of Laban, and he talked with him as he sat in his house.

And he desired of Laban the records which were engraven upon the plates of brass, which contained the genealogy of my father.

- 13 और देखो, ऐसा हुआ कि लाबान क्रोधित हो गया, और उसने उसे अपने सामने से धक्का दे कर निकाल दिया और उसे अभिलेख नहीं दिया। उसने उससे कहा: तुम लूटेरे हो और मैं तुम्हें मार डालूंगा।
- 14 लेकिन लमान उसके सामने से भाग आया और उसने हमें लाबान द्वारा किये गए व्यवहार को बताया। और हमें यह सब सुन कर बहुत दुख हुआ, और मेरे भाई निर्जन प्रदेश में पिता के पास लौटने ही वाले थे।
- 15 लेकिन देखो, मैंने उनसे कहा कि: जब तक प्रभु जीवित है, और हम लोग जीवित हैं, तब तक हम लोग वापस अपने पिता के पास नहीं लौटेंगे, जब तक कि हम प्रभु की आज्ञानुसार काम पूरा नहीं कर लेंगे।
- 16 इसलिए, प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने में सच्चे रहो; इसलिए चलो, अपने पिता की पैतृक संपत्ति वाले प्रदेश को जाएं, क्योंकि देखो, वे सोना और चांदी, और हर प्रकार की मूल्यवान चीजों को छोड़ गए थे। और उन्होंने यह सब प्रभु की आज्ञा के कारण किया था।
- 17 क्योंकि वे जानते थे कि लोगों के पापों के कारण यरूशलेम को नष्ट कर दिया जाएगा।
- 18 क्योंकि देखो उन्होंने भविष्यवक्ताओं की बातों पर विश्वास नहीं किया। इसलिए, अगर मेरे पिता यरूशलेम से निकल जाने की आज्ञा पाने पर भी वहीं रहते, तब देखो, वे भी नष्ट हो जाते। इसलिए उनका यहां से भाग जाना आवश्यक था।
- 19 और देखो, यह परमेश्वर का विवेक है कि हम इन अभिलेखों को प्राप्त करें, जिससे कि हम अपने पूर्वजों की भाषा को अपने बच्चों के लिए सुरक्षित रखें।
- 20 और कि हम उनके लिए उन वचनों को भी सुरक्षित रखें जो कि पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुंह से कहे गए हैं, जो कि उन्हें परमेश्वर की आत्मा और सामर्थ्य द्वारा संसार के आरंभ से लेकर, वर्तमान समय तक दिए जाते हैं।
- 21 और ऐसा हुआ कि इस प्रकार की भाषा से मैंने अपने भाइयों से अनुरोध किया, कि वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में विश्वासी बने रहें।
- 22 और ऐसा हुआ कि हम अपनी पैतृक संपत्ति वाली भूमि में गए, और अपने सोना, चांदी और मूल्यवान वस्तुओं को एकत्रित किया।
- 23 और इन चीजों को एकत्रित कर के, हम लाबान के घर फिर से गए।

And behold, it came to pass that Laban was angry, and thrust him out from his presence; and he would not that he should have the records. Wherefore, he said unto him: Behold thou art a robber, and I will slay thee.

But Laman fled out of his presence, and told the things which Laban had done, unto us. And we began to be exceedingly sorrowful, and my brethren were about to return unto my father in the wilderness.

But behold I said unto them that: As the Lord liveth, and as we live, we will not go down unto our father in the wilderness until we have accomplished the thing which the Lord hath commanded us.

Wherefore, let us be faithful in keeping the commandments of the Lord; therefore let us go down to the land of our father's inheritance, for behold he left gold and silver, and all manner of riches. And all this he hath done because of the commandments of the Lord.

For he knew that Jerusalem must be destroyed, because of the wickedness of the people.

For behold, they have rejected the words of the prophets. Wherefore, if my father should dwell in the land after he hath been commanded to flee out of the land, behold, he would also perish. Wherefore, it must needs be that he flee out of the land.

And behold, it is wisdom in God that we should obtain these records, that we may preserve unto our children the language of our fathers;

And also that we may preserve unto them the words which have been spoken by the mouth of all the holy prophets, which have been delivered unto them by the Spirit and power of God, since the world began, even down unto this present time.

And it came to pass that after this manner of language did I persuade my brethren, that they might be faithful in keeping the commandments of God.

And it came to pass that we went down to the land of our inheritance, and we did gather together our gold, and our silver, and our precious things.

And after we had gathered these things together, we went up again unto the house of Laban.

24 और ऐसा हुआ कि लाबान के पास जाकर हमने उन अभिलेखों को प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की जो पीतल की पट्टियों में खुदे हुए थे, जिनके बदले में हम उसे अपना सोना, और अपनी चांदी और अपनी सभी मूल्यवान वस्तुओं को देना चाहते थे ।

25 और ऐसा हुआ कि जब लाबान ने हमारी संपत्ति को देखा जो कि बहुत मूल्यवान थी, तब वह लालच में पड़ गया, और हमें धक्का देकर बाहर निकाल दिया, और हमें मार डालने के लिए, उसने अपने नौकरों को भेजा ताकि वह हमारी संपत्ति को प्राप्त कर ले ।

26 और ऐसा हुआ कि तब हम लाबान के नौकरों के सामने से भाग खड़े हुए, और हमें अपनी संपत्ति को छोड़ना पड़ा और उसे लाबान ने हथिया लिया ।

27 और ऐसा हुआ कि हमें निर्जन प्रदेश में भागना पड़ा, और लाबान के नौकर हमें पकड़ नहीं पाए और हमने अपने आपको चट्टान की एक गुफा में छिपा लिया ।

28 और ऐसा हुआ कि लमान मुझ पर, और मेरे पिता पर भी क्रोधित हो उठा; और लमान की बातों को सुन कर लेमुएल भी हम पर नाराज हुआ । इसलिए लमान और लेमुएल ने हमें, अपने छोटे भाइयों को, कई कठोर वचन कहे, और उन्होंने हमें डण्डों से भी पीटा ।

29 और ऐसा हुआ जब वे हमें डंडों से मार रहे थे, तब देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत आया और उनके सामने खड़ा हो गया और उनसे बोला: तुम अपने छोटे भाई को डंडे से क्यों मार रहे हो ? क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे अन्याय के कारण प्रभु ने इसे तुम्हारे ऊपर शासक होने के लिए चुना है ? सुनो, तुम यरूशलेम फिर से जाओ और प्रभु लाबान को तुम्हारे हाथों में सौंप देगा ।

30 और स्वर्गदूत हमसे बातें करने के बाद चला गया ।

31 और स्वर्गदूत के चले जाने के बाद, लमान और लेमुएल इस प्रकार बड़बड़ाने लगे: लाबान को हमारे हाथों में सौंपना प्रभु के लिए किस प्रकार संभव हो सकता है ? देखो, वह बलवान पुरुष है, और वह पचास व्यक्तियों को आज्ञा दे सकता है, हां, वह पचास लोगों की हत्या भी कर सकता है; तब वह हमारी हत्या क्यों नहीं करेगा ?

And it came to pass that we went in unto Laban, and desired him that he would give unto us the records which were engraven upon the plates of brass, for which we would give unto him our gold, and our silver, and all our precious things.

And it came to pass that when Laban saw our property, and that it was exceedingly great, he did lust after it, insomuch that he thrust us out, and sent his servants to slay us, that he might obtain our property.

And it came to pass that we did flee before the servants of Laban, and we were obliged to leave behind our property, and it fell into the hands of Laban.

And it came to pass that we fled into the wilderness, and the servants of Laban did not overtake us, and we hid ourselves in the cavity of a rock.

And it came to pass that Laman was angry with me, and also with my father; and also was Lemuel, for he hearkened unto the words of Laman. Wherefore Laman and Lemuel did speak many hard words unto us, their younger brothers, and they did smite us even with a rod.

And it came to pass as they smote us with a rod, behold, an angel of the Lord came and stood before them, and he spake unto them, saying: Why do ye smite your younger brother with a rod? Know ye not that the Lord hath chosen him to be a ruler over you, and this because of your iniquities? Behold ye shall go up to Jerusalem again, and the Lord will deliver Laban into your hands.

And after the angel had spoken unto us, he departed.

And after the angel had departed, Laman and Lemuel again began to murmur, saying: How is it possible that the Lord will deliver Laban into our hands? Behold, he is a mighty man, and he can command fifty, yea, even he can slay fifty; then why not us?

## 1 नफी 4

- 1 और ऐसा हुआ कि मैंने अपने भाइयों से इस प्रकार कहा: हम फिर से यरूशलेम चलें, और आओ हम प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने में विश्वासी बने रहें; क्योंकि वह संपूर्ण पृथ्वी में सबसे अधिक शक्तिशाली है, तब वह लाबान और उसके पचास या दस हजार नौकरों से भी अधिक शक्तिशाली क्यों नहीं हो सकता है ?
- 2 इसलिए चलो चलें; हम मूसा के समान बलवान बनें; क्योंकि उसने सचमुच में लाल सागर के जल से बातें की, और सागर के जल ने इधर-उधर बंट कर राह बना दी थी, और बीच की सूखी भूमि पर चलते हुए हमारे पूर्वज गुलामी से निकल आए थे, और फिरौन की सेना पीछा करती हुई आई और लाल सागर के जल में डूब गई ।
- 3 अब सुनो तुम जानते हो कि यह सत्य है; और तुम यह भी जानते हो कि एक स्वर्गदूत ने तुमसे बातें की: तब तुम क्यों संदेह करते हो ? चलो ऊपर चलें; प्रभु हमें बचाने में समर्थ है, जैसे उसने हमारे पूर्वजों को बचाया था, और वह लाबान को नष्ट करने में भी समर्थ है, जैसे उसने मिश्र-वासियों को नष्ट किया था ।
- 4 अब मेरे इतना कुछ कहने पर भी वे क्रोध में लगातार बड़बड़ाते रहे; परन्तु वे मेरे पीछे-पीछे यरूशलेम की चारदीवारी के बाहर तक चले आए ।
- 5 और यह रात का समय था; और मैंने उन्हें अपने-आपको चारदीवारी के बाहर छिपाने के लिए कहा । और उनके छिप जाने के बाद, मैं, नफी, चुपके से शहर में दाखिल हुआ और लाबान के घर की तरफ चल पड़ा ।
- 6 और आत्मा ने मेरा मार्गदर्शन किया, मुझे पहले से पता नहीं था कि मुझे क्या करना होगा ।
- 7 फिर भी मैं आगे चलता रहा और जब मैं लाबान के घर निकट पहुंचा तब मैंने एक पुरुष को देखा, जो मेरे सामने आकर जमीन पर गिर गया था, क्योंकि वह मदिरा के नशे में था ।
- 8 और जब मैं उसके निकट गया तब मैंने पाया कि वह लाबान था ।
- 9 और मैंने उसकी तलवार देखी, और मैंने उसे म्यान से बाहर खींच लिया; उसकी मुठिया शुद्ध सोने की थी, और उस पर उच्च कोटि की कारीगरी की गई थी, और मैंने देखा कि उसका फल अति मूल्यवान इस्पात का बना हुआ था ।

## 1 Nephi 4

And it came to pass that I spake unto my brethren, saying: Let us go up again unto Jerusalem, and let us be faithful in keeping the commandments of the Lord; for behold he is mightier than all the earth, then why not mightier than Laban and his fifty, yea, or even than his tens of thousands?

Therefore let us go up; let us be strong like unto Moses; for he truly spake unto the waters of the Red Sea and they divided hither and thither, and our fathers came through, out of captivity, on dry ground, and the armies of Pharaoh did follow and were drowned in the waters of the Red Sea.

Now behold ye know that this is true; and ye also know that an angel hath spoken unto you; wherefore can ye doubt? Let us go up; the Lord is able to deliver us, even as our fathers, and to destroy Laban, even as the Egyptians.

Now when I had spoken these words, they were yet wroth, and did still continue to murmur; nevertheless they did follow me up until we came without the walls of Jerusalem.

And it was by night; and I caused that they should hide themselves without the walls. And after they had hid themselves, I, Nephi, crept into the city and went forth towards the house of Laban.

And I was led by the Spirit, not knowing beforehand the things which I should do.

Nevertheless I went forth, and as I came near unto the house of Laban I beheld a man, and he had fallen to the earth before me, for he was drunken with wine.

And when I came to him I found that it was Laban.

And I beheld his sword, and I drew it forth from the sheath thereof; and the hilt thereof was of pure gold, and the workmanship thereof was exceedingly fine, and I saw that the blade thereof was of the most precious steel.



- 10 और ऐसा हुआ कि आत्मा ने मुझे विवश किया कि मैं लाबान को मार डालूं; लेकिन मैंने मन में सोचा: मैंने कभी भी किसी व्यक्ति का रक्त नहीं बहाया। और मैं पीछे हटा ताकि मुझे उसे मारना न पड़े।
- 11 और आत्मा ने मुझे फिर कहा: देखो प्रभु ने उसे तुम्हारे हाथों में सौंप दिया है। हां, और मैं यह भी जानता था कि वह मेरी जान लेना चाहता था; हां, और वह प्रभु की आज्ञाओं को भी नहीं मानता था; और उसने हमारी संपत्ति को भी हथिया लिया था।
- 12 और ऐसा हुआ कि आत्मा ने मुझसे फिर कहा: उसे मार डालो, क्योंकि प्रभु ने उसे तुम्हारे हाथों में सौंप दिया है;
- 13 देखो प्रभु पापियों को मार कर अपने धार्मिक उद्देश्यों को पूरा करता है। एक राष्ट्र के अविश्वास में नष्ट होने की अपेक्षा एक व्यक्ति का नष्ट होना अधिक अच्छा है।
- 14 और अब, जबकि मैं, नफी ने, इन शब्दों को सुना, तब निर्जन प्रदेश में कहे गए प्रभु के ये शब्द मुझे याद आए, जब तक तुम्हारा वंश मेरी आज्ञाओं का पालन करेगा तब तक वे प्रतिज्ञा के प्रदेश में संपन्न होंगे।
- 15 हां, और मैंने यह भी सोचा कि मूसा के नियमों के अनुसार प्रभु की आज्ञाओं का पालन, वे तब तक नहीं कर सकते, जब तक उनके पास व्यवस्था न हो।
- 16 और मैं यह भी जानता था कि व्यवस्था पीतल की पट्टियों पर खुदी हुई थी।
- 17 और फिर, मैं यह भी जानता था कि प्रभु ने इसी उद्देश्य के लिए लाबान को मेरे हाथों में सौंप दिया था—कि मैं उसकी आज्ञानुसार अभिलेखों को प्राप्त करूं।
- 18 इसलिए मैंने आत्मा के वचन का पालन किया, और लाबान के सिर के बालों को पकड़ा, और उसी की तलवार से उसका सिर काट दिया।
- 19 और उसी की तलवार से उसका सिर काटने के बाद, मैंने लाबान के कपड़े लिए और अपने शरीर पर पहन लिए; हां, उसकी प्रत्येक चीज को धारण किया; और उसकी ढाल को अपनी कमर पर बांध लिया।

And it came to pass that I was constrained by the Spirit that I should kill Laban; but I said in my heart: Never at any time have I shed the blood of man. And I shrunk and would that I might not slay him.

And the Spirit said unto me again: Behold the Lord hath delivered him into thy hands. Yea, and I also knew that he had sought to take away mine own life; yea, and he would not hearken unto the commandments of the Lord; and he also had taken away our property.

And it came to pass that the Spirit said unto me again: Slay him, for the Lord hath delivered him into thy hands;

Behold the Lord slayeth the wicked to bring forth his righteous purposes. It is better that one man should perish than that a nation should dwindle and perish in unbelief.

And now, when I, Nephi, had heard these words, I remembered the words of the Lord which he spake unto me in the wilderness, saying that: Inasmuch as thy seed shall keep my commandments, they shall prosper in the land of promise.

Yea, and I also thought that they could not keep the commandments of the Lord according to the law of Moses, save they should have the law.

And I also knew that the law was engraven upon the plates of brass.

And again, I knew that the Lord had delivered Laban into my hands for this cause—that I might obtain the records according to his commandments.

Therefore I did obey the voice of the Spirit, and took Laban by the hair of the head, and I smote off his head with his own sword.

And after I had smitten off his head with his own sword, I took the garments of Laban and put them upon mine own body; yea, even every whit; and I did gird on his armor about my loins.

- 20 और ऐसा करने के बाद, मैं लाबान के खजाने की ओर चल पड़ा । और जब मैं लाबान के खजाने की ओर जा रहा था, तब मैंने लाबान के उस नौकर को देखा जिसके पास खजाने की चाबियां थीं । और मैंने लाबान की आवाज में उसे आदेश दिया, कि वह मेरे साथ खजाने में चले ।
- 21 और उसने मुझे अपना स्वामी, लाबान समझा, क्योंकि मैं उसके कपड़े पहने हुए था और उसकी तलवार मेरी कमर में बंधी हुई थी ।
- 22 और उसने मुझसे यहूदियों के एल्डरों के विषय में बातें कही क्योंकि वह जानता था कि उसका स्वामी, लाबान, रात को उनके साथ था ।
- 23 और मैंने उससे ऐसे बातों की जैसे कि मैं लाबान ही था ।
- 24 और मैंने उससे कहा कि मुझे पीतल की पट्टियों पर अंकित अभिलेख को शहर के बाहर अपने बड़े भाइयों के पास ले जाना है, जो चारदीवारी के बाहर थे ।
- 25 और मैंने उससे कहा कि वह मेरे पीछे आए ।
- 26 और उसने सोचा कि मैं गिरजे के सदस्य भाइयों के विषय में बातें कर रहा था, और मैं सचमुच में वही लाबान था, जिसको मैंने मार डाला था, इसलिए वह मेरे पीछे चला आया ।
- 27 और उसने कई बार मुझसे यहूदी एल्डरों के विषय में बातें की, जब मैं अपने भाइयों की ओर जा रहा था, जो कि चारदीवारी के बाहर थे ।
- 28 और ऐसा हुआ कि जब लमान ने मुझे देखा वह बहुत डर गया, और लेमुएल और साम भी । वे मेरे सामने से भाग गए; क्योंकि उन्होंने-ने समझा कि मैं लाबान हूँ, और कि उसने मुझे मार दिया था और उनकी भी जान लेने के लिए आया था ।
- 29 और ऐसा हुआ कि मैंने उनको पुकारा, और उन्होंने मेरी आवाज सुनी; इसलिए वे मेरे सामने से भागने से रूक गए ।
- 30 और ऐसा हुआ कि जब लाबान के नौकर ने मेरे भाइयों को देखा, तब वह डर के मारे कांपने लगा, और मेरे सामने से वापस यरूशलेम शहर में भागने ही वाला था ।
- 31 और मैं, नफी ने, ताकतवर पुरुष होने, और प्रभु की बहुत शक्ति पाने के कारण लाबान के नौकर को पकड़ लिया, ताकि वह भाग न पाए ।
- 32 और ऐसा हुआ कि मैंने उससे कहा, कि यदि वह मेरी बातों का पालन करेगा, जब तक प्रभु जीवित है, और जब तक मैं जीवित हूँ, यदि वह हमारी बातों का पालन करता है, तो हम उसे जिन्दा छोड़ देंगे ।

And after I had done this, I went forth unto the treasury of Laban. And as I went forth towards the treasury of Laban, behold, I saw the servant of Laban who had the keys of the treasury. And I commanded him in the voice of Laban, that he should go with me into the treasury.

And he supposed me to be his master, Laban, for he beheld the garments and also the sword girded about my loins.

And he spake unto me concerning the elders of the Jews, he knowing that his master, Laban, had been out by night among them.

And I spake unto him as if it had been Laban.

And I also spake unto him that I should carry the engravings, which were upon the plates of brass, to my elder brethren, who were without the walls.

And I also bade him that he should follow me.

And he, supposing that I spake of the brethren of the church, and that I was truly that Laban whom I had slain, wherefore he did follow me.

And he spake unto me many times concerning the elders of the Jews, as I went forth unto my brethren, who were without the walls.

And it came to pass that when Laman saw me he was exceedingly frightened, and also Lemuel and Sam. And they fled from before my presence; for they supposed it was Laban, and that he had slain me and had sought to take away their lives also.

And it came to pass that I called after them, and they did hear me; wherefore they did cease to flee from my presence.

And it came to pass that when the servant of Laban beheld my brethren he began to tremble, and was about to flee from before me and return to the city of Jerusalem.

And now I, Nephi, being a man large in stature, and also having received much strength of the Lord, therefore I did seize upon the servant of Laban, and held him, that he should not flee.

And it came to pass that I spake with him, that if he would hearken unto my words, as the Lord liveth, and as I live, even so that if he would hearken unto our words, we would spare his life.

- 33 और मैंने शपथ लेकर उससे कहा, कि उसे डरना नहीं चाहिए; कि वह हमारे समान एक स्वतंत्र व्यक्ति की तरह रह सकता है यदि वह निर्जन प्रदेश में हमारे साथ चलता है ।
- 34 और उससे मैंने यह भी कहा: प्रभु ने ही हमें यह सब करने की आज्ञा दी थी; क्या हमें प्रभु की आज्ञाओं को पालन करने में ईमानदार नहीं होना चाहिए ? इसलिए, यदि तुम निर्जन प्रदेश में मेरे पिता के पास चलते हो तो तुम्हें हमारे बीच स्थान मिलेगा ।
- 35 और ऐसा हुआ कि मेरी बातों से जोराम को हिम्मत मिली । अब उस नौकर का नाम जोराम था; और उसने प्रतिज्ञा की कि वह मेरे पिता के पास निर्जन प्रदेश में चलेगा । हां, और उसने यह भी शपथ ली कि वह उस समय से हमेशा हमारे साथ ही रहेगा ।
- 36 अब हम उसे अपने साथ इसलिए रखना चाहते थे, ताकि यहूदियों को हमारे निर्जन प्रदेश में भाग जाने के बारे में पता न चले, नहीं तो वे हमारा पीछा करते और हमें मार डालते ।
- 37 और ऐसा हुआ कि जब जोराम ने हमसे प्रतिज्ञा कर ली, तब उसको लेकर हमारा भय समाप्त हो गया ।
- 38 और ऐसा हुआ कि हमने पीतल की पट्टियों और लाबान के नौकर को लेकर निर्जन प्रदेश में अपने पिता के तंबू तक यात्रा की ।

And I spake unto him, even with an oath, that he need not fear; that he should be a free man like unto us if he would go down in the wilderness with us.

And I also spake unto him, saying: Surely the Lord hath commanded us to do this thing; and shall we not be diligent in keeping the commandments of the Lord? Therefore, if thou wilt go down into the wilderness to my father thou shalt have place with us.

And it came to pass that Zoram did take courage at the words which I spake. Now Zoram was the name of the servant; and he promised that he would go down into the wilderness unto our father. Yea, and he also made an oath unto us that he would tarry with us from that time forth.

Now we were desirous that he should tarry with us for this cause, that the Jews might not know concerning our flight into the wilderness, lest they should pursue us and destroy us.

And it came to pass that when Zoram had made an oath unto us, our fears did cease concerning him.

And it came to pass that we took the plates of brass and the servant of Laban, and departed into the wilderness, and journeyed unto the tent of our father.

## 1 नफी 5

- 1 और ऐसा हुआ कि हमारे निर्जन प्रदेश में अपने पिता के पास वापस लौटने पर, देखो, वह बहुत खुश हुए, और मेरी मां, सरायाह को भी बहुत आनंद हुआ, क्योंकि हम लोगों के कारण वह बहुत दुखी रहती थी ।
- 2 क्योंकि वह सोचती थी कि हम निर्जन प्रदेश में नष्ट चुके थे, और मेरे पिता से शिकायत करते हुए वह कहती थी कि वह दिव्यदर्शी पुरुष है: देखो, तुम हमें अपने पूर्वजों की भूमि से ले आए, और हमारे बेटे भी अब नहीं रहे, और हम इस निर्जन प्रदेश में नष्ट हो रहे हैं ।
- 3 और इस प्रकार की भाषा से मेरी मां ने मेरे पिता से शिकायत की थी ।
- 4 और ऐसा हुआ कि मेरे पिता ने मेरी मां से कहा: मैं जानता हूँ कि मैं दिव्यदर्शी पुरुष हूँ; क्योंकि अगर मैंने परमेश्वर की बातों को दिव्यदर्शन में नहीं देखा होता तब मैं परमेश्वर की अच्छाइयों को नहीं जान पाता, और मैं यरूशलेम में ही रह जाता और अपने भाइयों के साथ नष्ट हो जाता ।
- 5 लेकिन देखो, मैंने प्रतिज्ञा की भूमि को प्राप्त किया है, जिस के लिए मैं आनंद मनाता हूँ; हां, और मैं यह भी जानता हूँ कि लाबान के हाथों से प्रभु मेरे पुत्रों की रक्षा करेगा और उन्हें इस निर्जन प्रदेश में हमारे पास वापस ले आएगा ।
- 6 इस प्रकार की भाषा से मेरे पिता, लेही ने, मेरी मां, सरायाह, को हम से संबंधित दिलासा तब दी थी, जब हम निर्जन प्रदेश से होकर यरूशलेम की भूमि, यहूदियों का अभिलेख लाने जा रहे थे।
- 7 और जब हम अपने पिता के तंबू में वापस लौटे, तब देखो उन्हें बहुत खुशी हुई थी, और मेरी मां को दिलासा मिली थी ।
- 8 और वह बोली: अब मैं निश्चितरूप से जानती हूँ कि प्रभु ने मेरे पति को निर्जन प्रदेश में भाग जाने की आज्ञा दी थी, और मैं निश्चितरूप से यह भी जान गई हूँ कि प्रभु ने मेरे पुत्रों की रक्षा की है, और उन्हें लाबान के हाथों से बचाया है और उन्हें शक्ति दी, जिसके कारण वे उस काम को कर सके जिसकी आज्ञा प्रभु ने उन्हें दी थी । और इस प्रकार की भाषा में वह बोली ।
- 9 और ऐसा हुआ कि उन्होंने बहुत अधिक खुशी मनायी और प्रभु को बलि भेंट की और होमबलि चढ़ाई; और इस्राएल के परमेश्वर को धन्यवाद दिया ।

## 1 Nephi 5

And it came to pass that after we had come down into the wilderness unto our father, behold, he was filled with joy, and also my mother, Sariah, was exceedingly glad, for she truly had mourned because of us.

For she had supposed that we had perished in the wilderness; and she also had complained against my father, telling him that he was a visionary man; saying: Behold thou hast led us forth from the land of our inheritance, and my sons are no more, and we perish in the wilderness.

And after this manner of language had my mother complained against my father.

And it had come to pass that my father spake unto her, saying: I know that I am a visionary man; for if I had not seen the things of God in a vision I should not have known the goodness of God, but had tarried at Jerusalem, and had perished with my brethren.

But behold, I have obtained a land of promise, in the which things I do rejoice; yea, and I know that the Lord will deliver my sons out of the hands of Laban, and bring them down again unto us in the wilderness.

And after this manner of language did my father, Lehi, comfort my mother, Sariah, concerning us, while we journeyed in the wilderness up to the land of Jerusalem, to obtain the record of the Jews.

And when we had returned to the tent of my father, behold their joy was full, and my mother was comforted.

And she spake, saying: Now I know of a surety that the Lord hath commanded my husband to flee into the wilderness; yea, and I also know of a surety that the Lord hath protected my sons, and delivered them out of the hands of Laban, and given them power whereby they could accomplish the thing which the Lord hath commanded them. And after this manner of language did she speak.

And it came to pass that they did rejoice exceedingly, and did offer sacrifice and burnt offerings unto the Lord; and they gave thanks unto the God of Israel.

- 10 इस्राएल के परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के पश्चात् मेरे पिता, लेही ने, उन अभिलेखों को, जो कि पीतल की पट्टियों पर खुदे हुए थे ले लिया, और उन्होंने आरंभ से उनकी छानबीन की।
- 11 और उसने देखा कि उन में मूसा की पांचों पुस्तकें थीं, जिन में सृष्टि की रचना का, और आदम और हव्वा का वर्णन भी था, जो कि हमारे प्रथम माता-पिता थे।
- 12 और उसमें यहूदियों का आरंभ से लेकर, राजा सिदकिय्याह के शासनकाल के अंत तक का अभिलेख भी है।
- 13 और उनमें पवित्र भविष्यवक्ताओं, सिदकिय्याह के शासनकाल के आरंभ से लेकर अंत तक की भविष्यवाणियां भी थीं; और बहुत सी भविष्यवाणियां भी थीं जो यिर्मयाह के मुहं द्वारा बोली गई थीं।
- 14 और ऐसा हुआ कि मेरे पिता, लेही ने, पीतल की पट्टियों में अपने पूर्वजों की वंशावली को भी पाया; इसलिए उनको पता लगा कि वह यूसुफ के वंशज थे; हां, वही यूसुफ जो याकूब का पुत्र था जिसे मिश्र में बेचा गया था, और जो प्रभु के हाथों द्वारा बचाया गया था, कि वह अपने पिता, याकूब, और उसके पूरे परिवार को अकाल में नष्ट होने से बचाए।
- 15 और उन्हें गुलामी और मिश्र की भूमि से उसी परमेश्वर द्वारा निकाला गया, जिस ने उन्हें बचाया था।
- 16 और इस प्रकार मेरे पिता, लेही ने, अपने पिता के पूर्वजों की वंशावली को खोजा था। और लाबान भी यूसुफ का वंशज था, इसलिए उसने और उसके पूर्वजों ने अभिलेखों को रखा था।
- 17 और अब जब मेरे पिता ने इन सब बातों को देखा, तब वह आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और अपने वंश के विषय में भविष्यवाणी करने लगे—
- 18 कि पीतल की ये पट्टियां उनके वंश के सभी राष्ट्रों, जातियों, भाषाओं और लोगों के बीच में जाएंगी।
- 19 इसलिए, उन्होंने कहा कि ये पीतल की पट्टियां कभी नष्ट नहीं होंगी; और न ही समय बीतने पर धूमिल होंगी। और उन्होंने अपने वंश के विषय में बहुत सी भविष्यवाणियां की।
- 20 और ऐसा हुआ कि यहां तक मेरे पिता और मैंने प्रभु द्वारा दिए गए आदेशों का पालन किया।

And after they had given thanks unto the God of Israel, my father, Lehi, took the records which were engraven upon the plates of brass, and he did search them from the beginning.

And he beheld that they did contain the five books of Moses, which gave an account of the creation of the world, and also of Adam and Eve, who were our first parents;

And also a record of the Jews from the beginning, even down to the commencement of the reign of Zedekiah, king of Judah;

And also the prophecies of the holy prophets, from the beginning, even down to the commencement of the reign of Zedekiah; and also many prophecies which have been spoken by the mouth of Jeremiah.

And it came to pass that my father, Lehi, also found upon the plates of brass a genealogy of his fathers; wherefore he knew that he was a descendant of Joseph; yea, even that Joseph who was the son of Jacob, who was sold into Egypt, and who was preserved by the hand of the Lord, that he might preserve his father, Jacob, and all his household from perishing with famine.

And they were also led out of captivity and out of the land of Egypt, by that same God who had preserved them.

And thus my father, Lehi, did discover the genealogy of his fathers. And Laban also was a descendant of Joseph, wherefore he and his fathers had kept the records.

And now when my father saw all these things, he was filled with the Spirit, and began to prophesy concerning his seed—

That these plates of brass should go forth unto all nations, kindreds, tongues, and people who were of his seed.

Wherefore, he said that these plates of brass should never perish; neither should they be dimmed any more by time. And he prophesied many things concerning his seed.

And it came to pass that thus far I and my father had kept the commandments wherewith the Lord had commanded us.

- 21 और हमने उन अभिलेखों को प्राप्त किया था जिसकी आज्ञा प्रभु ने हमें दी थी, और हमने उनकी जांच की और पाया कि वे हमारे लिए वांछनीय थे; और हां, हमारे लिए मूल्यवान भी थे, इतने मूल्यवान कि हम प्रभु की आज्ञाओं को अपने बच्चों के लिए सुरक्षित रख सकें।
- 22 इसलिए, यह प्रभु की इच्छा थी कि हम उन्हें अपने साथ ले जाएं, जब हम निर्जन प्रदेश से प्रतिज्ञा के प्रदेश में जाते हैं।

And we had obtained the records which the Lord had commanded us, and searched them and found that they were desirable; yea, even of great worth unto us, insomuch that we could preserve the commandments of the Lord unto our children.

Wherefore, it was wisdom in the Lord that we should carry them with us, as we journeyed in the wilderness towards the land of promise.

## 1 नफी 6

- 1 और अब मैं, नफी, अपने अभिलेख के इस भाग में अपने पूर्वजों की वंशावली को नहीं लिख रहा हूँ; और उसे न तो मैं इन पट्टियों पर लिखूँगा, जिन्हें मैं लिख रहा हूँ; क्योंकि वह तो उस अभिलेख में दी गई है जिसे मेरे पिता ने रखा है; इसलिए मैं उसे इसमें नहीं लिख रहा हूँ।
- 2 क्योंकि मेरे लिए इतना कहना पर्याप्त है कि हम यूसुफ के वंशज हैं।
- 3 और मेरे लिए यह आवश्यक नहीं है कि विशेष रूप से अपने पिता का पूरा लेखा यहाँ लिखूँ, क्योंकि उन्हें इन पट्टियों पर नहीं लिखा जा सकता है, क्योंकि मेरी इच्छा है कि मैं परमेश्वर की बातों को लिखने के लिए स्थान रखूँ।
- 4 क्योंकि मेरी पूर्ण इच्छा है कि मैं लोगों से आग्रह करूँ कि वे इब्राहीम के परमेश्वर, और इसहाक के परमेश्वर, और याकूब के परमेश्वर के पास आएँ, और बचाए जाएँ।
- 5 इसलिए, जो बातें संसार को पसंद हैं मैं उन्हें नहीं लिखूँगा, लेकिन जो बातें परमेश्वर को पसंद हैं और जो संसार की नहीं हैं, उन्हें लिखूँगा।
- 6 इसलिए, मैं अपने वंशों को यह आज्ञा दूँगा, कि वे इन पट्टियों में उन बातों को स्थान न दे जो मानव संतान के लिए महत्व की न हों।

## 1 Nephi 6

And now I, Nephi, do not give the genealogy of my fathers in this part of my record; neither at any time shall I give it after upon these plates which I am writing; for it is given in the record which has been kept by my father; wherefore, I do not write it in this work.

For it sufficeth me to say that we are descendants of Joseph.

And it mattereth not to me that I am particular to give a full account of all the things of my father, for they cannot be written upon these plates, for I desire the room that I may write of the things of God.

For the fulness of mine intent is that I may persuade men to come unto the God of Abraham, and the God of Isaac, and the God of Jacob, and be saved.

Wherefore, the things which are pleasing unto the world I do not write, but the things which are pleasing unto God and unto those who are not of the world.

Wherefore, I shall give commandment unto my seed, that they shall not occupy these plates with things which are not of worth unto the children of men.

## 1 नफी 7

- 1 और अब मैं चाहता हूँ कि आप यह जानें कि जब मेरे पिता, लेही ने अपने वंश के विषय में भविष्यवाणी करना समाप्त कर दिया, तब ऐसा हुआ कि प्रभु ने उन से फिर बातें की और कहा कि यह लेही के लिए उचित नहीं होगा कि वह अकेले अपने परिवार को निर्जन प्रदेश में ले जाए; परन्तु उसके पुत्रों को पत्नी के रूप में बेटियों को ले जाना चाहिए, ताकि वे प्रभु के लिए प्रतिज्ञा के प्रदेश में वंश उत्पन्न करें।
- 2 ऐसा हुआ कि प्रभु ने उनको आज्ञा दी कि मैं, नफी, और मेरे भाई फिर से यरूशलेम की भूमि को वापस जाएं और इश्माएल और उसके परिवार को निर्जन प्रदेश में लेकर आएँ।
- 3 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने भाइयों के साथ, फिर से यरूशलेम जाने के लिए निर्जन प्रदेश से यात्रा की।
- 4 और ऐसा हुआ कि हम इश्माएल के घर गए, और हमने इश्माएल का सर्मथन पाया, इतना अधिक कि हमने उसे प्रभु के वचन बताए।
- 5 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने इश्माएल और उसके परिवार के हृदयों को इतना कोमल कर दिया कि उन्होंने हमारे साथ निर्जन प्रदेश से होकर हमारे पिता के तंबू तक यात्रा की।
- 6 और ऐसा हुआ कि जब हम उस निर्जन प्रदेश से होकर यात्रा कर रहे थे, तब देखो लमान और लेमुएल, और इश्माएल की दो बेटियों और दो बेटों और उनके परिवार ने, हमारे विरुद्ध विरोध किया, हां, मेरे, यानि नफी, और साम, और अपने पिता, इश्माएल, और उसकी पत्नी, और उसकी तीन बेटियों के विरुद्ध विद्रोह किया।
- 7 और ऐसा हुआ इस विद्रोह में, वे वापस यरूशलेम की भूमि लौटने के इच्छुक थे।
- 8 और मैं, नफी उनके हृदयों की कठोरता के कारण दुखी हुआ, इस-लिए मैंने उनसे, लमान, और लेमुएल से कहा: देखो, तुम मेरे बड़े भाई हो, कैसे तुम हृदय से इतने कठोर हो, और बुद्धि से इतने अन्धे हो कि मुझे, तुम्हारे छोटे भाई को, तुम्हें बोलना पड़ रहा है और हां, तुम्हारे लिए उदाहरण रखना पड़ रहा है?
- 9 कैसे तुम प्रभु की बातों पर ध्यान नहीं देते हो ?
- 10 तुम कैसे भूल गए कि तुम ने प्रभु के स्वर्गदूत को देखा है ?

## 1 Nephi 7

And now I would that ye might know, that after my father, Lehi, had made an end of prophesying concerning his seed, it came to pass that the Lord spake unto him again, saying that it was not meet for him, Lehi, that he should take his family into the wilderness alone; but that his sons should take daughters to wife, that they might raise up seed unto the Lord in the land of promise.

And it came to pass that the Lord commanded him that I, Nephi, and my brethren, should again return unto the land of Jerusalem, and bring down Ishmael and his family into the wilderness.

And it came to pass that I, Nephi, did again, with my brethren, go forth into the wilderness to go up to Jerusalem.

And it came to pass that we went up unto the house of Ishmael, and we did gain favor in the sight of Ishmael, insomuch that we did speak unto him the words of the Lord.

And it came to pass that the Lord did soften the heart of Ishmael, and also his household, insomuch that they took their journey with us down into the wilderness to the tent of our father.

And it came to pass that as we journeyed in the wilderness, behold Laman and Lemuel, and two of the daughters of Ishmael, and the two sons of Ishmael and their families, did rebel against us; yea, against me, Nephi, and Sam, and their father, Ishmael, and his wife, and his three other daughters.

And it came to pass in the which rebellion, they were desirous to return unto the land of Jerusalem.

And now I, Nephi, being grieved for the hardness of their hearts, therefore I spake unto them, saying, yea, even unto Laman and unto Lemuel: Behold ye are mine elder brethren, and how is it that ye are so hard in your hearts, and so blind in your minds, that ye have need that I, your younger brother, should speak unto you, yea, and set an example for you?

How is it that ye have not hearkened unto the word of the Lord?

How is it that ye have forgotten that ye have seen an angel of the Lord?



- 11 और हां, तुम लोग यह भी कैसे भूल गए कि प्रभु ने हमें लाबान के हाथों से बचाने के लिए, और अभिलेख प्राप्त करने के लिए क्या महान कार्य किये हैं ?
- 12 हां, और तुम यह कैसे भूल गए कि प्रभु मानव संतान के लिए अपनी इच्छा के अनुसार कुछ भी कर सकता है, यदि वे उसमें विश्वास रखते हैं ? इसलिए, हमें उसके विश्वासी बने रहना चाहिए ।
- 13 और यदि हम उसके विश्वासी बने रहते हैं, तब हमें प्रतिज्ञा का प्रदेश प्राप्त होगा; और भविष्य में तुम एक दिन जानोगे कि यरूशलेम के नष्ट किये जाने से संबंधित प्रभु की वाणी सत्य हुई है; क्योंकि यरूशलेम के नष्ट होने से संबंधित जितनी बातें जिन्हें प्रभु ने कही हैं वे अवश्य पूरी होंगी ।
- 14 इसलिए देखो, शीघ्र ही प्रभु की आत्मा उनके लिए प्रयास करना समाप्त कर देगी; क्योंकि देखो, उन्होंने भविष्यवक्ताओं को अस्वीकार कर दिया है, और यिर्मयाह को उन्होंने बंदीगृह में डाल दिया है । और उन्होंने मेरे पिता की जान लेने की इतनी कोशिश की कि उन्होंने उन्हें प्रदेश से बाहर खदेड़ दिया ।
- 15 और अब देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि तुम वापस यरूशलेम लौटे तब तुम भी उनके साथ नष्ट हो जाओगे । और अब, यदि तुम चाहते हो, तो प्रदेश जाओ, और मेरे उन शब्दों को याद रखना जो मैंने तुमसे कहता हूँ, कि यदि तुम जाओगे तो तुम भी नष्ट हो जाओगे; क्योंकि प्रभु की आत्मा ने मुझ पर दबाव डाला है कि मैं ऐसा कहूँ ।
- 16 और ऐसा हुआ कि जब मैं, नफी ने, इन शब्दों को अपने भाइयों से कहा, तब वे मुझ पर क्रोधित हो उठे । और तब ऐसा हुआ कि उन्होंने मेरे ऊपर हाथ उठाए, क्योंकि देखो, वे बहुत क्रोधित हुए, और उन्होंने मुझे रस्सियों से बांध दिया, क्योंकि वे मेरे प्राण लेना चाहते थे, वे मुझे निर्जन प्रदेश में छोड़ देना चाहते थे ताकि जंगली जानवर मुझे खा जाएं ।
- 17 लेकिन ऐसा हुआ कि मैंने प्रभु से यह कहते हुए प्रार्थना की; हे प्रभु, आप में मेरा जो विश्वास है उसके अनुसार क्या आप मेरे भाइयों के हाथों से मेरी रक्षा करोगे; हां, मुझे इतनी शक्ति दो कि मैं इन बंधनों को तोड़ दूँ जिससे मैं बंधा हूँ ।
- 18 और ऐसा हुआ कि मैंने जब इन शब्दों को कहा, देखो, मेरे हाथों और पैरों के बंधन मुक्त हो गए, और मैं अपने भाइयों के सामने खड़ा हो गया और मैंने उनसे फिर से बातें की ।

Yea, and how is it that ye have forgotten what great things the Lord hath done for us, in delivering us out of the hands of Laban, and also that we should obtain the record?

Yea, and how is it that ye have forgotten that the Lord is able to do all things according to his will, for the children of men, if it so be that they exercise faith in him? Wherefore, let us be faithful to him.

And if it so be that we are faithful to him, we shall obtain the land of promise; and ye shall know at some future period that the word of the Lord shall be fulfilled concerning the destruction of Jerusalem; for all things which the Lord hath spoken concerning the destruction of Jerusalem must be fulfilled.

For behold, the Spirit of the Lord ceaseth soon to strive with them; for behold, they have rejected the prophets, and Jeremiah have they cast into prison. And they have sought to take away the life of my father, insomuch that they have driven him out of the land.

Now behold, I say unto you that if ye will return unto Jerusalem ye shall also perish with them. And now, if ye have choice, go up to the land, and remember the words which I speak unto you, that if ye go ye will also perish; for thus the Spirit of the Lord constraineth me that I should speak.

And it came to pass that when I, Nephi, had spoken these words unto my brethren, they were angry with me. And it came to pass that they did lay their hands upon me, for behold, they were exceedingly wroth, and they did bind me with cords, for they sought to take away my life, that they might leave me in the wilderness to be devoured by wild beasts.

But it came to pass that I prayed unto the Lord, saying: O Lord, according to my faith which is in thee, wilt thou deliver me from the hands of my brethren; yea, even give me strength that I may burst these bands with which I am bound.

And it came to pass that when I had said these words, behold, the bands were loosed from off my hands and feet, and I stood before my brethren, and I spake unto them again.

19 और तब वे मेरे ऊपर फिर से क्रोधित हुए और उन्होंने मेरे ऊपर हाथ उठाए; लेकिन देखो, इश्माएल की बेटियों में से एक, हां, और उसकी मां और इश्माएल के बेटों में से एक ने, मेरे भाइयों से मेरे लिए इतनी याचना की कि उनके हृदय पसीज गए; और उन्होंने मेरे प्राण लेने की कोशिश करना छोड़ दिया ।

20 और ऐसा हुआ कि वे अपनी दुष्टता के कारण पछताने लगे, यहां तक कि उन्होंने मेरे सामने घुटने टेक दिए और मेरे प्रति किये गए अपने दुर्व्यवहार के लिए मुझ से क्षमा मांगने लगे ।

21 और ऐसा हुआ कि जो कुछ उन्होंने किया था उसके लिए मैंने उन्हें सचमुच में क्षमा कर दिया था, और उन्हें उपदेश दिया कि वे प्रभु अपने परमेश्वर से क्षमा के लिए प्रार्थना करें । और ऐसा हुआ कि उन्होंने वैसे ही किया । और जब वे प्रभु से प्रार्थना कर चुके तब हम फिर से अपने पिता के तंबू की ओर यात्रा करने लगे ।

22 और ऐसा हुआ कि हम अपने पिता के तंबू तक पहुंचे । और जब मैं, और मेरे भाई और इश्माएल का पूरा परिवार, मेरे पिता के तंबू में पहुंच गए, उन्होंने प्रभु अपने परमेश्वर को धन्यवाद दिया, और उन्होंने उसे बलि और होमबलि चढ़ाई ।

And it came to pass that they were angry with me again, and sought to lay hands upon me; but behold, one of the daughters of Ishmael, yea, and also her mother, and one of the sons of Ishmael, did plead with my brethren, insomuch that they did soften their hearts; and they did cease striving to take away my life.

And it came to pass that they were sorrowful, because of their wickedness, insomuch that they did bow down before me, and did plead with me that I would forgive them of the thing that they had done against me.

And it came to pass that I did frankly forgive them all that they had done, and I did exhort them that they would pray unto the Lord their God for forgiveness. And it came to pass that they did so. And after they had done praying unto the Lord we did again travel on our journey towards the tent of our father.

And it came to pass that we did come down unto the tent of our father. And after I and my brethren and all the house of Ishmael had come down unto the tent of my father, they did give thanks unto the Lord their God; and they did offer sacrifice and burnt offerings unto him.

## 1 नफी 8

- 1 और ऐसा हुआ कि हमने हर प्रकार के बीजों को एकत्रित किया; जिन में सभी प्रकार के अनाजों के बीज और सभी प्रकार के फलों के बीज भी थे ।
- 2 और ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता उस निर्जन प्रदेश में रह रहे थे तब उन्होंने हम से कहा: देखो, मैंने एक सपना देखा है; या, दूसरे शब्दों में मैंने दिव्यदर्शन देखा है।
- 3 और देखो, जो कुछ मैंने देखा है, उसके कारण मैं प्रभु में आनंदित हूँ नफी और साम के कारण भी; क्योंकि मैं मानता हूँ कि वे, और उनके बहुत वंश भी, बचाए जाएंगे ।
- 4 लेकिन देखो, लमान और लेमुएल, तुम्हारे कारण मैं बहुत भयभीत हूँ; क्योंकि देखो, मैं सोचता हूँ कि मैंने अपने सपने में एक अंधकारपूर्ण और सुनसान निर्जन प्रदेश को देखा है ।
- 5 और ऐसा हुआ कि मैंने एक पुरुष देखा, और उसने सफेद लबादा पहन रखा था; और वह आया और मेरे सामने खड़ा हो गया ।
- 6 और ऐसा हुआ कि उसने मुझसे बातें की, और मुझे अपने पीछे आने को कहा ।
- 7 और ऐसा हुआ कि जब मैं उसके पीछे चल रहा था तब मैंने अपने-आपको देखा कि मैं एक अंधकारपूर्ण और सुनसान स्थान में था ।
- 8 और जब मैं अंधकार में कई घण्टे तक चल चुका, तो मैंने प्रभु से प्रार्थना करना शुरू किया कि वह अपनी असीम स्नेही दया के अनुसार मुझ पर दया करे ।
- 9 और ऐसा हुआ प्रभु से प्रार्थना करने के बाद मैंने एक बड़ा और लंबा चौड़ा खेत देखा ।
- 10 और ऐसा हुआ कि मैंने एक वृक्ष देखा, जिसके फल किसी को भी आनंदित करने के लिए आकर्षक थे।
- 11 और ऐसा हुआ कि मैं वहां गया और उस वृक्ष का फल खाया; और मुझे लगा कि वह अत्याधिक मीठा था, इतना मीठा फल पहले मैंने कभी भी नहीं चखा था । हां, और मैंने यह भी देखा कि वह फल सफेद था, इतना सफेद कि उतनी सफेदी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी।
- 12 और जब मैं उसके फल को खा रहा था तब मेरी आत्मा महान आनंद से परिपूर्ण हो गई थी; इसलिए मेरी इच्छा हुई कि मेरा परिवार भी इसे खाए; क्योंकि मैं यह जानता था कि यह अन्य सब फलों से अधिक वांछनीय था ।

## 1 Nephi 8

And it came to pass that we had gathered together all manner of seeds of every kind, both of grain of every kind, and also of the seeds of fruit of every kind.

And it came to pass that while my father tarried in the wilderness he spake unto us, saying: Behold, I have dreamed a dream; or, in other words, I have seen a vision.

And behold, because of the thing which I have seen, I have reason to rejoice in the Lord because of Nephi and also of Sam; for I have reason to suppose that they, and also many of their seed, will be saved.

But behold, Laman and Lemuel, I fear exceedingly because of you; for behold, methought I saw in my dream, a dark and dreary wilderness.

And it came to pass that I saw a man, and he was dressed in a white robe; and he came and stood before me.

And it came to pass that he spake unto me, and bade me follow him.

And it came to pass that as I followed him I beheld myself that I was in a dark and dreary waste.

And after I had traveled for the space of many hours in darkness, I began to pray unto the Lord that he would have mercy on me, according to the multitude of his tender mercies.

And it came to pass after I had prayed unto the Lord I beheld a large and spacious field.

And it came to pass that I beheld a tree, whose fruit was desirable to make one happy.

And it came to pass that I did go forth and partake of the fruit thereof; and I beheld that it was most sweet, above all that I ever before tasted. Yea, and I beheld that the fruit thereof was white, to exceed all the whiteness that I had ever seen.

And as I partook of the fruit thereof it filled my soul with exceedingly great joy; wherefore, I began to be desirous that my family should partake of it also; for I knew that it was desirable above all other fruit.

- 13 और जब मैंने चारों ओर नजरें घुमाई, कि शायद मैं अपने परिवार को भी देख पाऊं, तब मैंने एक नदी को देखा: और वह साथ में बह रही थी, और वह उस वृक्ष के निकट थी जिसका फल मैं खा रहा था ।
- 14 और मैंने उसके स्रोत को देखने के लिए जब दृष्टि घुमाई; और तब मैंने देखा कि उसका उद्गम स्थल वहां से थोड़ी दूरी पर था; और उसके उद्गम स्थल पर मैंने तुम्हारी माता सरायाह, और साम और नफी को देखा, और वे ऐसे खड़े थे कि मानो उन्हें पता नहीं था कि उन्हें कहां जाना चाहिए ।
- 15 और ऐसा हुआ कि मैंने उन्हें इशारा किया; और मैंने ऊंची आवाज में उनसे कहा कि वे मेरे पास आएँ, और उस फल को खाएँ, जो सभी अन्य फलों से अधिक वांछनीय था ।
- 16 और ऐसा हुआ कि वे मेरे पास आए और उस फल को भी खाया ।
- 17 और ऐसा हुआ कि मैं चाहता था कि लमान और लेमुएल भी आएँ और उस फल को खाएँ; इसलिए, मैंने नदी के उद्गम की ओर नजरें घुमाई, कि शायद मैं उन्हें वहां देख पाऊं ।
- 18 और ऐसा हुआ कि मैंने उन्हें वहां देखा, लेकिन वे मेरे पास नहीं आए और उस फल को नहीं खाया ।
- 19 और मैंने लोहे की एक छड़ को देखा, और यह नदी के किनारे लगी हुई थी, और उस वृक्ष तक जा रही थी, जिसके निकट मैं खड़ा था ।
- 20 और मैंने एक तंग और संकरा रास्ता भी देखा, जो उस लोहे की छड़ के साथ-साथ उस वृक्ष तक आया था जिसके निकट मैं खड़ा था; और यह भी उद्गम स्थल के झरने के पास से होता हुआ एक बड़े और लंबे चौड़े खेत को जा रहा था जिसमें लगता था कि पूरा संसार समा गया था ।
- 21 और मैंने असंख्य लोगों की भीड़ को देखा, जिन में से बहुत से उस मार्ग पर आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे थे जो उस वृक्ष तक जा रहा था जिसके निकट मैं खड़ा हुआ था ।
- 22 और ऐसा हुआ कि वे आगे आने में सफल हुए, और उस मार्ग पर आगे बढ़े जो उस वृक्ष तक जाता था ।
- 23 और ऐसा हुआ कि अंधकार की धुंध उठी; हां, वह बहुत ही अधिक अंधकारमय धुंध थी, इतनी अधिक कि जो उस मार्ग पर आगे बढ़ रहे थे वे अपना रास्ता भूल गए, और वे भटक कर खो गए ।

And as I cast my eyes round about, that perhaps I might discover my family also, I beheld a river of water; and it ran along, and it was near the tree of which I was partaking the fruit.

And I looked to behold from whence it came; and I saw the head thereof a little way off; and at the head thereof I beheld your mother Sariah, and Sam, and Nephi; and they stood as if they knew not whither they should go.

And it came to pass that I beckoned unto them; and I also did say unto them with a loud voice that they should come unto me, and partake of the fruit, which was desirable above all other fruit.

And it came to pass that they did come unto me and partake of the fruit also.

And it came to pass that I was desirous that Laman and Lemuel should come and partake of the fruit also; wherefore, I cast mine eyes towards the head of the river, that perhaps I might see them.

And it came to pass that I saw them, but they would not come unto me and partake of the fruit.

And I beheld a rod of iron, and it extended along the bank of the river, and led to the tree by which I stood.

And I also beheld a strait and narrow path, which came along by the rod of iron, even to the tree by which I stood; and it also led by the head of the fountain, unto a large and spacious field, as if it had been a world.

And I saw numberless concourses of people, many of whom were pressing forward, that they might obtain the path which led unto the tree by which I stood.

And it came to pass that they did come forth, and commence in the path which led to the tree.

And it came to pass that there arose a mist of darkness; yea, even an exceedingly great mist of darkness, insomuch that they who had commenced in the path did lose their way, that they wandered off and were lost.

- 24 और ऐसा हुआ कि मैंने दूसरों को उस मार्ग पर आने की कोशिश करते हुए देखा, और वे उस मार्ग पर आए और लोहे की उस छड़ के छोर को पकड़ लिया; और वे उस अंधकार की धुंधमें, लोहे की छड़ को पकड़े हुए, आगे बढ़ते गए, जब तक कि उन्होंने आकर उस वृक्ष के फल को नहीं खा लिया ।
- 25 और उस वृक्ष के फल को खाने के पश्चात वे इधर-उधर देखने लगे मानो उन्हें शर्म आ रही थी ।
- 26 और मैंने भी चारों ओर जब नजरें घुमाई, और देखो, उस नदी के दूसरी ओर, एक बड़ा और विशाल भवन था; और वह ऐसा खड़ा था मानो, वह धरती से बहुत ऊपर, हवा में हो ।
- 27 और वह लोगों, बूढ़े और जवान, पुरुष और स्त्री, से भरा हुआ था, और उनके पहनावे बहुत ही अच्छे थे; और उनका व्यवहार मजाक उड़ाने वाला था और वे अपनी उंगलियां उनकी ओर उठा रहे थे जो आकर उस फल को खा रहे थे ।
- 28 और उस फल को चखने के बाद वे उनके कारण लज्जित हुए जो उनका मजाक उड़ा रहे थे; और वे वर्जित मार्गों पर चल कर खो गए ।
- 29 और अब मैं, नफी, अपने पिता की कही गई सभी बातों को नहीं कहूंगा ।
- 30 लेकिन, मैं संक्षेप में लिखूंगा, देखो, उन्होंने अन्य भीड़ को आगे बढ़ते देखा; और वे आए और लोहे की छड़ का छोर पकड़ लिया; और वे, निरंतर लोहे की उस छड़ को पकड़े हुए, आगे बढ़ते गए, जब तक कि वे उस वृक्ष के फल पर टूट नहीं पड़े और उसे खा नहीं लिया ।
- 31 और उन्होंने अन्य भीड़ को भी देखा जो उस बड़े और विशाल भवन की ओर अपना मार्ग महसूस कर रही थी ।
- 32 और ऐसा हुआ कि बहुत से उस झरने की गहराई में डूब गए, और बहुत से अनजान राहों पर भटकते हुए उनकी दृष्टि से खो गए ।
- 33 और उस अनजान भवन में प्रवेश करने वाली भीड़ बहुत बड़ी थी । और उस भवन में प्रवेश करने के पश्चात उन्होंने मेरी और उनकी ओर जो फल खा रहे थे, घृणा से उंगली उठाई, लेकिन हमने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया ।
- 34 ये शब्द मेरे पिता के हैं: जितने लोगों ने उनकी ओर ध्यान दिया, वे पतित हो गए ।

And it came to pass that I beheld others pressing forward, and they came forth and caught hold of the end of the rod of iron; and they did press forward through the mist of darkness, clinging to the rod of iron, even until they did come forth and partake of the fruit of the tree.

And after they had partaken of the fruit of the tree they did cast their eyes about as if they were ashamed.

And I also cast my eyes round about, and beheld, on the other side of the river of water, a great and spacious building; and it stood as it were in the air, high above the earth.

And it was filled with people, both old and young, both male and female; and their manner of dress was exceedingly fine; and they were in the attitude of mocking and pointing their fingers towards those who had come at and were partaking of the fruit.

And after they had tasted of the fruit they were ashamed, because of those that were scoffing at them; and they fell away into forbidden paths and were lost.

And now I, Nephi, do not speak all the words of my father.

But, to be short in writing, behold, he saw other multitudes pressing forward; and they came and caught hold of the end of the rod of iron; and they did press their way forward, continually holding fast to the rod of iron, until they came forth and fell down and partook of the fruit of the tree.

And he also saw other multitudes feeling their way towards that great and spacious building.

And it came to pass that many were drowned in the depths of the fountain; and many were lost from his view, wandering in strange roads.

And great was the multitude that did enter into that strange building. And after they did enter into that building they did point the finger of scorn at me and those that were partaking of the fruit also; but we heeded them not.

These are the words of my father: For as many as heeded them, had fallen away.

35 और मेरे पिता ने कहा कि लमान और लेमुएल ने उस फल को नहीं खाया ।

36 और ऐसा हुआ जब मेरे पिता ने अपने सपने या दिव्यदर्शन के विषय में सब बातों को बता दिया, जो कि बहुत थीं, उन्होंने हमसे कहा, क्योंकि उन्होंने जो दिव्यदर्शन में देखा था, उन बातों से वह लमान और लेमुएल के लिए बहुत भयभीत थे; हां, वह भयभीत थे कि कहीं ऐसा न हो कि उन्हें प्रभु की उपस्थिति से बाहर कर दिया जाए ।

37 और उन्होंने माता-पिता की कोमल भावना से उनको उपदेश दिया, कि वे उनकी बातों पर ध्यान दें, ताकि शायद प्रभु उन पर दया करे, और उन्हें बाहर नहीं निकाले; हां, मेरे पिता ने उनको शिक्षा दी ।

38 और उनको उपदेश देने, और उनको बहुत-सी बातों की भविष्यवाणी करने के बाद, उन्होंने उनसे कहा कि वे प्रभु की आज्ञाओं का पालन करें; और उन्होंने उनसे बोलना समाप्त किया ।

And Laman and Lemuel partook not of the fruit, said my father.

And it came to pass after my father had spoken all the words of his dream or vision, which were many, he said unto us, because of these things which he saw in a vision, he exceedingly feared for Laman and Lemuel; yea, he feared lest they should be cast off from the presence of the Lord.

And he did exhort them then with all the feeling of a tender parent, that they would hearken to his words, that perhaps the Lord would be merciful to them, and not cast them off; yea, my father did preach unto them.

And after he had preached unto them, and also prophesied unto them of many things, he bade them to keep the commandments of the Lord; and he did cease speaking unto them.

## 1 नफी 9

- 1 और इन सभी बातों को मेरे पिता ने उस समय देखा, और सुना, और बताया, जब वह लेमुएल की घाटी में एक तंबू में रहते थे, और अन्य बहुत सी महान बातों को भी उन्होंने देखा, सुना, और बताया, जिन्हें इन पट्टियों पर नहीं लिखा जा सकता है ।
- 2 और अब, जब मैंने इन पट्टियों के विषय में कहा है, तब देखो ये वे पट्टियां नहीं हैं जिन पर मैं अपने लोगों के इतिहास का पूरा लेखा बनाता हूँ; क्योंकि जिन पट्टियों पर मैं अपने लोगों का पूरा लेखा बनाता हूँ, उनका नाम मैंने नफी दिया है; इसलिए, वे मेरे स्वयं के नाम पर, नफी की पट्टियां कहलाती हैं; और ये पट्टियां भी नफी की पट्टियां कहलाती हैं ।
- 3 फिर भी, मैंने प्रभु से आज्ञा पाई है कि विशेष उद्देश्य के लिए मैं इन पट्टियों को बनाऊँ, ताकि मेरे लोगों की सेवकाई का लेखा खोद कर अंकित किया जाए ।
- 4 अन्य पट्टियों पर राजाओं के शासन, और युद्ध और अपने लोगों के विवादों का लेखा खोद कर अंकित किया जाएगा; इसलिए इन पट्टियों का अधिकतर हिस्सा सेवकाई के लिए है; और अन्य पट्टियों का अधिकतर हिस्सा राजाओं के शासन और युद्धों और मेरे लोगों के विवादों के लिए है ।
- 5 इसलिए, प्रभु ने इन पट्टियों को उसके बुद्धिमान उद्देश्य के लिए बनाने की आज्ञा मुझे दी है, वह उद्देश्य जो मुझे नहीं मालूम ।
- 6 लेकिन प्रभु आरंभ से सभी बातों को जानता है, इसलिए, मानव संतान के बीच मैं अपने सभी कामों को पूरा करने के लिए वह रास्ता तैयार करता है; क्योंकि देखो, अपने सभी वचनों को पूरा करने के लिए उसके पास शक्ति है । और यह सच है । आमीन ।

## 1 Nephi 9

And all these things did my father see, and hear, and speak, as he dwelt in a tent, in the valley of Lemuel, and also a great many more things, which cannot be written upon these plates.

And now, as I have spoken concerning these plates, behold they are not the plates upon which I make a full account of the history of my people; for the plates upon which I make a full account of my people I have given the name of Nephi; wherefore, they are called the plates of Nephi, after mine own name; and these plates also are called the plates of Nephi.

Nevertheless, I have received a commandment of the Lord that I should make these plates, for the special purpose that there should be an account engraven of the ministry of my people.

Upon the other plates should be engraven an account of the reign of the kings, and the wars and contentions of my people; wherefore these plates are for the more part of the ministry; and the other plates are for the more part of the reign of the kings and the wars and contentions of my people.

Wherefore, the Lord hath commanded me to make these plates for a wise purpose in him, which purpose I know not.

But the Lord knoweth all things from the beginning; wherefore, he prepareth a way to accomplish all his works among the children of men; for behold, he hath all power unto the fulfilling of all his words. And thus it is. Amen.

## 1 नफी 10

- 1 और अब मैं, नफी, इन पट्टियों पर अपनी कार्यवाहियों, और अपने शासन और सेवकाई का लेखा देने जा रहा हूँ; इसलिए, अपना लेखा देने के साथ-साथ, मुझे थोड़ी बहुत बातें अपने पिता, और अपने भाइयों के विषय में भी बोलनी चाहिए।
- 2 क्योंकि देखो, ऐसा हुआ जब मेरे पिता ने अपने सपने की बातों को कहना और उन्हें हर संभव परिश्रम से उपदेश देना समाप्त किया, तब उन्होंने उनसे यहूदियों के विषय में कहा—
- 3 कि उनके और यहां तक कि उस महान शहर यरूशलेम के नष्ट होने, और बहुतों को बाबुल में गुलाम बना कर ले जाए जाने के पश्चात्, प्रभु के अपने समयानुसार वे फिर वापस लौटेंगे, हां, यहां तक कि गुलामी से मुक्त कर लाए जाएंगे, और जब वे गुलामी से मुक्त कर वापस लाए जाएंगे तब वे फिर से अपनी पैतृक संपत्ति वाली भूमि को प्राप्त करेंगे।
- 4 हां, मेरे पिता द्वारा यरूशलेम को छोड़ने के छःसौ वर्ष के बाद भी, प्रभु परमेश्वर यहूदियों के बीच एक भविष्यवक्ता खड़ा करेगा—यहां तक कि एक मसीहा, या, दूसरे शब्दों में, संसार का उद्धारकर्ता।
- 5 और उन्होंने उन भविष्यवक्ताओं के विषय में भी कहा, जिनमें से बहुतों ने इस मसीहा, या संसार के मुक्तिदाता से संबंधित इन बातों की गवाही दी थी, जिसके विषय में उन्होंने कहा था।
- 6 इसलिए, सारी मानवजाति खो जाती और पतित अवस्था में रह जाती, और हमेशा ऐसे ही रहती जब तक कि वे इस मुक्तिदाता पर भरोसा नहीं करते।
- 7 और उन्होंने एक भविष्यवक्ता के विषय में भी कहा था जो मसीहा से पहले आकर प्रभु का मार्ग तैयार करेगा—
- 8 हां, वह निर्जन प्रदेश में जाएगा और पुकारेगा: तुम प्रभु का मार्ग तैयार करो, और उसके मार्गों को सीधा करो; क्योंकि तुम्हारे बीच में एक जो खड़ा हुआ है जिसको तुम नहीं जानते; और वह मुझसे अधिक शक्तिशाली है और मैं उसके जूते के बंधन खोलने योग्य नहीं हूँ। और इस विषय पर मेरे पिता ने बहुत कुछ कहा।
- 9 और मेरे पिता ने कहा वह यरदन से आगे बिथाब्रा में बपतिस्मा देगा; और उन्होंने यह भी कहा वह जल से बपतिस्मा देगा; यहां तक कि वह मसीहा को भी जल से बपतिस्मा देगा।

## 1 Nephi 10

And now I, Nephi, proceed to give an account upon these plates of my proceedings, and my reign and ministry; wherefore, to proceed with mine account, I must speak somewhat of the things of my father, and also of my brethren.

For behold, it came to pass after my father had made an end of speaking the words of his dream, and also of exhorting them to all diligence, he spake unto them concerning the Jews—

That after they should be destroyed, even that great city Jerusalem, and many be carried away captive into Babylon, according to the own due time of the Lord, they should return again, yea, even be brought back out of captivity; and after they should be brought back out of captivity they should possess again the land of their inheritance.

Yea, even six hundred years from the time that my father left Jerusalem, a prophet would the Lord God raise up among the Jews—even a Messiah, or, in other words, a Savior of the world.

And he also spake concerning the prophets, how great a number had testified of these things, concerning this Messiah, of whom he had spoken, or this Redeemer of the world.

Wherefore, all mankind were in a lost and in a fallen state, and ever would be save they should rely on this Redeemer.

And he spake also concerning a prophet who should come before the Messiah, to prepare the way of the Lord—

Yea, even he should go forth and cry in the wilderness: Prepare ye the way of the Lord, and make his paths straight; for there standeth one among you whom ye know not; and he is mightier than I, whose shoe's latchet I am not worthy to unloose. And much spake my father concerning this thing.

And my father said he should baptize in Bethabara, beyond Jordan; and he also said he should baptize with water; even that he should baptize the Messiah with water.



- 10 और मसीहा को जल से बपतिस्मा देने के पश्चात् वह देखेगा और इसकी साक्षी देगा कि उसने परमेश्वर के मेमने को बपतिस्मा दिया, जो इस संसार के पापों को उठाएगा ।
- 11 और ऐसा हुआ इन बातों को कहने के पश्चात् मेरे पिता ने मेरे भाइयों से उस सुसमाचार के संबंध में बातें की जिसका प्रचार यहूदियों के बीच होना चाहिए था, और यहूदियों के अविश्वास के कारण नष्ट होने के संबंध में भी बातें की । और उन्होंने मसीहा, जो कि आएगा, की हत्या करने के बाद, और उसकी हत्या होने के बाद वह मृतकों में से जी उठेगा, और अपने-आपको, पवित्र आत्मा के द्वारा अन्य जातियों में प्रकट करेगा ।
- 12 हां, मेरे पिता ने अन्य जातियों के संबंध में बहुत बातें की, और इस्राएल के घराने के संबंध में भी, कि उनकी तुलना जैतून के वृक्ष से की जानी चाहिए, जिसकी शाखाएं तोड़ी जाएंगी और संपूर्ण पृथ्वी पर बिखेर दी जाएंगी ।
- 13 इसलिए, उन्होंने कहा यह जरूरी है कि प्रतिज्ञा के प्रदेश में हमारा नेतृत्व एकमत से किया जाए, प्रभु का वचन पूरा करते हुए, कि हमें संपूर्ण पृथ्वी पर बिखेर दिया जाएगा ।
- 14 और इस्राएल के घराने के बिखरने के पश्चात् वे फिर से एकत्रित किये जाएंगे; या, अंत में, अन्य जातियों को सुसमाचार की परिपूर्णता मिल जाएगी, तब जैतून की प्राकृतिक शाखाएं, या इस्राएल के घराने के अवशेषों की कलम को लगाया जाएगा, या सच्चे मसीहा, अपने प्रभु और अपने मुक्तिदाता का ज्ञान पाएंगे।
- 15 और इस प्रकार की भाषा में मेरे पिता ने मेरे भाइयों से भविष्यवाणी और बातें करने के बाद; और अन्य बहुत सी बातें भी जिन्हें मैं इस पुस्तक में नहीं लिखूंगा; क्योंकि उनमें से बहुत सी बातें जो मेरे लिए उचित थीं मैंने उन्हें अपनी अन्य पुस्तक में लिख दिया है ।
- 16 और ये सभी बातें, जिनके विषय में मैंने कहा, तब हुई थीं जब मेरे पिता लेमुएल की घाटी में एक तंबू में रहते थे ।

And after he had baptized the Messiah with water, he should behold and bear record that he had baptized the Lamb of God, who should take away the sins of the world.

And it came to pass after my father had spoken these words he spake unto my brethren concerning the gospel which should be preached among the Jews, and also concerning the dwindling of the Jews in unbelief. And after they had slain the Messiah, who should come, and after he had been slain he should rise from the dead, and should make himself manifest, by the Holy Ghost, unto the Gentiles.

Yea, even my father spake much concerning the Gentiles, and also concerning the house of Israel, that they should be compared like unto an olive tree, whose branches should be broken off and should be scattered upon all the face of the earth.

Wherefore, he said it must needs be that we should be led with one accord into the land of promise, unto the fulfilling of the word of the Lord, that we should be scattered upon all the face of the earth.

And after the house of Israel should be scattered they should be gathered together again; or, in fine, after the Gentiles had received the fulness of the Gospel, the natural branches of the olive tree, or the remnants of the house of Israel, should be grafted in, or come to the knowledge of the true Messiah, their Lord and their Redeemer.

And after this manner of language did my father prophesy and speak unto my brethren, and also many more things which I do not write in this book; for I have written as many of them as were expedient for me in mine other book.

And all these things, of which I have spoken, were done as my father dwelt in a tent, in the valley of Lemuel.

17 और ऐसा हुआ मैं, नफी, ने उन सब बातों को सुनने के पश्चात् जो मेरे पिता ने दिव्यदर्शन में देखी थीं, और उन बातों को भी जो उन्होंने पवित्र आत्मा की शक्ति से कही थीं, यह शक्ति उन्होंने परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास के द्वारा प्राप्त की थी—और परमेश्वर का पुत्र मसीहा था जो कि आएगा—मुझ, नफी, की इच्छा थी कि मैं भी पवित्र आत्मा की शक्ति, से इन बातों को देख, और सुन, और जान सकूँ, जो कि उन सब के लिए परमेश्वर का उपहार है जो परिश्रम से उसकी खोज करते हैं, ऐसा अतीत में था और ऐसा उस समय भी होगा जब वह अपने-आप को मानव संतान पर प्रकट करेगा ।

18 क्योंकि वह कल, आज, और हमेशा के लिए एक जैसा है, और संसार के आरंभ से सब मनुष्यों के लिए मार्ग तैयार है, यदि वे पश्चात्ताप करते और उसकी शरण में आते हैं ।

19 क्योंकि जो परिश्रम से खोजेगा वह पाएगा; और परमेश्वर के रहस्य पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा उनके लिए खोल दिए जाएंगे, जैसा वर्तमान में है वैसा अतीत में भी था, और जैसा अतीत में था वैसा आने वाले समय में भी होगा; इसलिए, प्रभु का मार्ग एक अनंत चक्र है ।

20 इसलिए हे मुनष्य, याद रख, तुम्हें अपने सारे कर्मों के न्याय के लिए ले जाया जाएगा ।

21 इसलिए, यदि तुम अपनी परीक्षा के समय के दिनों में दुष्ट कर्म करते हो, तब तुम परमेश्वर के न्याय-सिंहासन के सामने अशुद्ध पाए जाओगे; और परमेश्वर के साथ कोई भी अशुद्ध वस्तु निवास नहीं कर सकती; इसलिए तुम हमेशा के लिए बाहर कर दिए जाओगे ।

22 और पवित्र आत्मा अधिकार देती है कि मैं इन बातों को कहूँ, और इनका इन्कार न करूँ ।

And it came to pass after I, Nephi, having heard all the words of my father, concerning the things which he saw in a vision, and also the things which he spake by the power of the Holy Ghost, which power he received by faith on the Son of God—and the Son of God was the Messiah who should come—I, Nephi, was desirous also that I might see, and hear, and know of these things, by the power of the Holy Ghost, which is the gift of God unto all those who diligently seek him, as well in times of old as in the time that he should manifest himself unto the children of men.

For he is the same yesterday, today, and forever; and the way is prepared for all men from the foundation of the world, if it so be that they repent and come unto him.

For he that diligently seeketh shall find; and the mysteries of God shall be unfolded unto them, by the power of the Holy Ghost, as well in these times as in times of old, and as well in times of old as in times to come; wherefore, the course of the Lord is one eternal round.

Therefore remember, O man, for all thy doings thou shalt be brought into judgment.

Wherefore, if ye have sought to do wickedly in the days of your probation, then ye are found unclean before the judgment-seat of God; and no unclean thing can dwell with God; wherefore, ye must be cast off forever.

And the Holy Ghost giveth authority that I should speak these things, and deny them not.

## 1 नफी 11

- 1 ऐसा हुआ जिन बातों को मेरे पिता ने देखा था उनको जानने की मेरी इच्छा के पश्चात, और क्योंकि मैं विश्वास करता था कि प्रभु उनकी जानकारी मुझे देने के योग्य था, जब मैं बैठा अपने हृदय में मनन कर रहा था मुझे प्रभु की आत्मा उठा ले गई, हां, एक बहुत ही ऊंचे पर्वत पर, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था, और न ही कभी मैंने उसके ऊपर अपना पांव धरा था ।
- 2 और आत्मा ने मुझ से कहा: देखो, तुम क्या चाहते हो ?
- 3 और मैंने कहा: मैं उन बातों को देखना चाहता हूँ जिन्हें मेरे पिता ने देखा था ।
- 4 और आत्मा ने मुझसे कहा: क्या तुम विश्वास करते हो कि तुम्हारे पिता ने उस वृक्ष को देखा था जिसके विषय में उन्होंने कहा है ?
- 5 और मैंने कहा: हां, आप जानते हो कि मैं अपने पिता के कहे गए हर एक शब्द पर विश्वास करता हूँ ।
- 6 और जब मैंने इन शब्दों को कहा; तब आत्मा ने ऊंचे शब्दों में पुकारकर, कहा: प्रभु सर्वोच्च परमेश्वर को होशाना, क्योंकि वह संपूर्ण पृथ्वी का परमेश्वर है, हां, वह सब से ऊपर है । और आशीषित हो तुम, नफी, क्योंकि तुम सर्वोच्च परमेश्वर के पुत्र में विश्वास करते हो; इसलिए, तुम उन बातों को देखोगे जिन्हें देखने की तुमने इच्छा प्रकट की है ।
- 7 और देखो जिस फल को तुम्हारे पिता ने चखा, उस फल वाले वृक्ष को देख लेने पर तुम्हें एक चिन्ह दिया जाएगा। तुम एक पुरुष को आकाश से उतरते देखोगे; और उसके गवाह तुम रहोगे; और उसे देख लेने पर तुम इसकी गवाही दोगे कि वह परमेश्वर का पुत्र है ।
- 8 और ऐसा हुआ कि आत्मा ने मुझ से कहा: नजरें उठाओ ! और मैंने नजरें उठाई और एक वृक्ष देखा; और वह उसी प्रकार का वृक्ष था जिसको मेरे पिता ने देखा था; और उसकी सुंदरता बहुत अधिक थी, हां, सभी सुंदरताओं से सर्वश्रेष्ठ; और उसकी सफेदी हिम की सफेदी से भी अधिक सफेद थी ।
- 9 और ऐसा हुआ जब मैंने उस वृक्ष को देख लिया, मैंने आत्मा से कहा: तुमने मुझे उस वृक्ष को दिखाया है, जो सबसे अधिक मूल्यवान है ।
- 10 और उसने मुझ से कहा: तुम्हारी क्या इच्छा है ?

## 1 Nephi 11

For it came to pass after I had desired to know the things that my father had seen, and believing that the Lord was able to make them known unto me, as I sat pondering in mine heart I was caught away in the Spirit of the Lord, yea, into an exceedingly high mountain, which I never had before seen, and upon which I never had before set my foot.

And the Spirit said unto me: Behold, what desirest thou?

And I said: I desire to behold the things which my father saw.

And the Spirit said unto me: Believest thou that thy father saw the tree of which he hath spoken?

And I said: Yea, thou knowest that I believe all the words of my father.

And when I had spoken these words, the Spirit cried with a loud voice, saying: Hosanna to the Lord, the most high God; for he is God over all the earth, yea, even above all. And blessed art thou, Nephi, because thou believest in the Son of the most high God; wherefore, thou shalt behold the things which thou hast desired.

And behold this thing shall be given unto thee for a sign, that after thou hast beheld the tree which bore the fruit which thy father tasted, thou shalt also behold a man descending out of heaven, and him shall ye witness; and after ye have witnessed him ye shall bear record that it is the Son of God.

And it came to pass that the Spirit said unto me: Look! And I looked and beheld a tree; and it was like unto the tree which my father had seen; and the beauty thereof was far beyond, yea, exceeding of all beauty; and the whiteness thereof did exceed the whiteness of the driven snow.

And it came to pass after I had seen the tree, I said unto the Spirit: I behold thou hast shown unto me the tree which is precious above all.

And he said unto me: What desirest thou?

- 11 और मैंने उससे कहा: उसकी व्याख्या जानने के लिए—मैंने उससे ऐसे बातें की जैसे एक मनुष्य बातें करता है; क्योंकि मैंने देखा वह एक मनुष्य के रूप में था; फिर भी मैं यह जानता था कि वह प्रभु की आत्मा थी; और उसने मुझसे ऐसे बातें की जैसा एक मनुष्य दूसरे से बातें करता है।
- 12 और ऐसा हुआ कि उसने मुझ से कहा: नजरें उठाओ ! और उसे देखने के लिए मैंने जैसे दृष्टि उठाई, और मैंने उसे नहीं देखा; क्योंकि वह मेरी उपस्थिति से दूर चला गया था।
- 13 और ऐसा हुआ कि मैंने नजरें उठाई और महान शहर यरूशलेम को देखा, और अन्य शहरों को भी। और मैंने नासरत शहर को देखा; और नासरत शहर में मैंने एक कुंवारी को देखा, और वह बहुत ही गोरी और निष्कपट थी।
- 14 और ऐसा हुआ कि मैंने स्वर्ग को खुलते देखा; और एक स्वर्गदूत नीचे उतर कर आया और मेरे सामने खड़ा हो गया; और उसने मुझ से कहा: नफी तुम क्या देखते हो ?
- 15 और मैंने उससे कहा: एक कुंवारी जो अन्य सभी कुवारियों से अधिक सुन्दर और निष्कपट है।
- 16 और उसने मुझ से कहा: क्या तुम परमेश्वर की कृपा को जानते हो ?
- 17 और मैंने उससे कहा: मैं जानता हूँ कि वह अपने बच्चों से प्रेम करता है: फिर भी मैं सभी बातों का अर्थ नहीं जानता।
- 18 और उसने मुझ से कहा: देखो, जिस कुंवारी को तुम देख रहे हो, वह मानव शरीर में परमेश्वर के पुत्र की माता है।
- 19 और ऐसा हुआ कि मैंने देखा कि वह आत्मा में विलीन हो गई; और उसके आत्मा में कुछ समय के लिए विलीन होने के पश्चात स्वर्गदूत ने मुझ से कहा: नजरें उठाओ !
- 20 और मैंने नजरें उठाई और उस कुंवारी को फिर से देखा, जो अपनी गोद में एक बच्चे को लिए हुए थी।
- 21 और वह स्वर्गदूत मुझ से बोला: परमेश्वर के मेमने को देखो, हां, यह अनंत पिता का पुत्र है ! क्या तुम उस वृक्ष का अर्थ जानते हो जिसको तुम्हारे पिता ने देखा था ?
- 22 और मैंने उसे उत्तर दिया: हां, वह परमेश्वर का प्रेम है, जो अपने आप मानव संतान के हृदयों में प्रवेश करता है; इसलिए, वह सभी अन्य वस्तुओं से अधिक वांछनीय है।

And I said unto him: To know the interpretation thereof—for I spake unto him as a man speaketh; for I beheld that he was in the form of a man; yet nevertheless, I knew that it was the Spirit of the Lord; and he spake unto me as a man speaketh with another.

And it came to pass that he said unto me: Look! And I looked as if to look upon him, and I saw him not; for he had gone from before my presence.

And it came to pass that I looked and beheld the great city of Jerusalem, and also other cities. And I beheld the city of Nazareth; and in the city of Nazareth I beheld a virgin, and she was exceedingly fair and white.

And it came to pass that I saw the heavens open; and an angel came down and stood before me; and he said unto me: Nephi, what beholdest thou?

And I said unto him: A virgin, most beautiful and fair above all other virgins.

And he said unto me: Knowest thou the condemnation of God?

And I said unto him: I know that he loveth his children; nevertheless, I do not know the meaning of all things.

And he said unto me: Behold, the virgin whom thou seest is the mother of the Son of God, after the manner of the flesh.

And it came to pass that I beheld that she was carried away in the Spirit; and after she had been carried away in the Spirit for the space of a time the angel spake unto me, saying: Look!

And I looked and beheld the virgin again, bearing a child in her arms.

And the angel said unto me: Behold the Lamb of God, yea, even the Son of the Eternal Father! Knowest thou the meaning of the tree which thy father saw?

And I answered him, saying: Yea, it is the love of God, which sheddeth itself abroad in the hearts of the children of men; wherefore, it is the most desirable above all things.

- 23 और उसने मुझ से कहा: और हां, आत्मा को सबसे अधिक आनंदित करने वाली है ।
- 24 और उन शब्दों को कहने के पश्चात, उसने मुझसे कहा: नजरें उठाओ ! और मैंने नजरें उठाई, और परमेश्वर के पुत्र को मानव संतान के बीच जाते हुए देखा; और बहुत से लोगों को उसके पैरों पर गिरते और उसकी आराधना करते हुए देखा ।
- 25 और ऐसा हुआ कि मैंने लोहे की उस छड़ को देखा, जिसे मेरे पिता ने देखा था, परमेश्वर का वचन था, और जो जीवन के जल के झरने, या जीवन के वृक्ष तक ले जाता था; जिसका जल परमेश्वर के प्रेम का प्रतिनिधित्व करता है; और मैंने यह भी देखा कि जीवन का वृक्ष परमेश्वर के प्रेम का प्रतिनिधित्व करता था ।
- 26 और स्वर्गदूत ने मुझ से फिर कहा: नजरें उठाओ और परमेश्वर की कृपा को देखो !
- 27 और मैंने नजरें उठाई और संसार के मुक्तिदाता को देखा, जिसके विषय में मेरे पिता ने कहा था; और मैंने उस भविष्यवक्ता को भी देखा जो उससे पहले रास्ता तैयार करेगा । और परमेश्वर का मेमना आगे बढ़ा और उससे बपतिस्मा लिया; और उसके बपतिस्मा लेने के पश्चात, मैंने स्वर्ग को खुलते हुए देखा, और पवित्र आत्मा स्वर्ग से नीचे उतरी और एक कबूतर के रूप में उसके ऊपर बैठ गई ।
- 28 और मैंने देखा कि वह आगे बढ़कर, अधिकार और महान अनुग्रह से लोगों को उपदेश देने लगा; और मैंने भीड़ को उसे सुनने के लिए एकत्रित होते हुए देखा; और मैंने देखा कि उन्होंने उसको अपने बीच में से निकाल कर अलग कर दिया ।
- 29 और मैंने बारह जनों को उसका अनुकरण करते भी देखा । और ऐसा हुआ कि वे मेरे सामने आत्मा में विलीन हो गए, और फिर मैंने उन्हें नहीं देखा ।
- 30 और ऐसा हुआ कि उस स्वर्गदूत ने मुझ से फिर कहा: नजरें उठाओ ! और मैंने नजरें उठाई, और मैंने स्वर्गों को फिर से खुलते देखा, और स्वर्गदूतों को मानव संतान पर उतरते देखा; और उन्होंने उनको उपदेश दिए ।
- 31 और उसने मुझसे फिर कहा: नजरें उठाओ ! और मैंने नजरें उठाई, और परमेश्वर के मेमने को मानव संतान के बीच में जाकर उपदेश देते हुए देखा । और मैंने उन लोगों की भीड़ को देखा जो बीमार थे, और जो सभी प्रकार की बीमारियों से पीड़ित थे, और शैतान और दुष्ट आत्माओं से ग्रसित थे; स्वर्गदूत ने बातें की और मुझे यह सब दिखाया । और वे सब परमेश्वर के मेमने की शक्ति द्वारा ठीक कर दिए गए; और शैतान और दुष्ट आत्माएं निकाल दी गई थीं ।

And he spake unto me, saying: Yea, and the most joyous to the soul.

And after he had said these words, he said unto me: Look! And I looked, and I beheld the Son of God going forth among the children of men; and I saw many fall down at his feet and worship him.

And it came to pass that I beheld that the rod of iron, which my father had seen, was the word of God, which led to the fountain of living waters, or to the tree of life; which waters are a representation of the love of God; and I also beheld that the tree of life was a representation of the love of God.

And the angel said unto me again: Look and behold the condescension of God!

And I looked and beheld the Redeemer of the world, of whom my father had spoken; and I also beheld the prophet who should prepare the way before him. And the Lamb of God went forth and was baptized of him; and after he was baptized, I beheld the heavens open, and the Holy Ghost come down out of heaven and abide upon him in the form of a dove.

And I beheld that he went forth ministering unto the people, in power and great glory; and the multitudes were gathered together to hear him; and I beheld that they cast him out from among them.

And I also beheld twelve others following him. And it came to pass that they were carried away in the Spirit from before my face, and I saw them not.

And it came to pass that the angel spake unto me again, saying: Look! And I looked, and I beheld the heavens open again, and I saw angels descending upon the children of men; and they did minister unto them.

And he spake unto me again, saying: Look! And I looked, and I beheld the Lamb of God going forth among the children of men. And I beheld multitudes of people who were sick, and who were afflicted with all manner of diseases, and with devils and unclean spirits; and the angel spake and showed all these things unto me. And they were healed by the power of the Lamb of God; and the devils and the unclean spirits were cast out.

- 32 और ऐसा हुआ कि उस स्वर्गदूत ने मुझ से फिर कहा: नजरें उठाओ ! और मैंने नजरें उठाई और परमेश्वर के मेमने को देखा, कि वह लोगों द्वारा ले जाए जा रहा था; हां, अनंत परमेश्वर के पुत्र का न्याय संसार के कानून के अनुसार किया गया; और मैंने इसे देखा और इसकी गवाही देता हूं ।
- 33 और मैं, नफी ने, देखा कि वह क्रूस पर चढ़ाया गया और संसार के पापों के लिए मारा गया ।
- 34 और उसे मारने के पश्चात मैंने पृथ्वी की बड़ी भीड़ को देखा, कि वे मेमने के प्रेरितों से लड़ने के लिए एकत्रित हो रहे थे; क्योंकि प्रभु के स्वर्गदूत द्वारा उन बारहों को प्रेरित कहा गया था ।
- 35 और पृथ्वी की भीड़ एकत्रित हुई थी; और मैंने देखा कि वे एक बड़े और लंबे चौड़े भवन में थे, जैसा कि मेरे पिता ने देखा था । और प्रभु के स्वर्गदूत ने मुझ से फिर कहा: संसार और उसके विवेक को देखो; हां, देखो इस्राएल का घराना मेमने के बारह प्रेरितों से लड़ने के लिए एकत्रित हुआ है ।
- 36 और ऐसा हुआ कि मैंने देखा और इसकी गवाही देता हूं, कि वह बड़ा और लंबा चौड़ा भवन संसार का अहंकार था; और वह गिर पड़ा, और उसका गिरना बहुत भयानक था । और प्रभु के स्वर्गदूत ने मुझ से फिर कहा: उन सब प्रदेशों, जातियों, भाषाओं और लोगों का विनाश इसी प्रकार होगा, जो मेमने के बारह प्रेरितों से लड़ेंगे ।

And it came to pass that the angel spake unto me again, saying: Look! And I looked and beheld the Lamb of God, that he was taken by the people; yea, the Son of the everlasting God was judged of the world; and I saw and bear record.

And I, Nephi, saw that he was lifted up upon the cross and slain for the sins of the world.

And after he was slain I saw the multitudes of the earth, that they were gathered together to fight against the apostles of the Lamb; for thus were the twelve called by the angel of the Lord.

And the multitude of the earth was gathered together; and I beheld that they were in a large and spacious building, like unto the building which my father saw. And the angel of the Lord spake unto me again, saying: Behold the world and the wisdom thereof; yea, behold the house of Israel hath gathered together to fight against the twelve apostles of the Lamb.

And it came to pass that I saw and bear record, that the great and spacious building was the pride of the world; and it fell, and the fall thereof was exceedingly great. And the angel of the Lord spake unto me again, saying: Thus shall be the destruction of all nations, kindreds, tongues, and people, that shall fight against the twelve apostles of the Lamb.

## 1 नफी 12

- 1 और ऐसा हुआ कि स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: नजरें उठाओ, और अपने वंश और अपने भाइयों के वंशों को भी देखो। और मैंने नजरें उठाई और प्रतिज्ञा का प्रदेश देखा; और मैंने लोगों की एक भीड़ देखी, हां, इसकी संख्या समुद्र तट के रेत के समान थी।
- 2 और ऐसा हुआ कि मैंने भीड़ को एक दूसरे से युद्ध करने के लिए एकत्रित होते हुए देखा; और मैंने युद्धों, और युद्ध की अफवाहें, और अपने लोगों के बीच तलवार से बड़ी मार-काट को देखा।
- 3 और ऐसा हुआ कि मैंने कई पीढ़ियों को प्रदेश में युद्ध और विवाद करते हुए गुजरते देखा, और मैंने कई शहरों को देखा, हां, इतने अधिक कि मैं उन्हें गिन नहीं सका।
- 4 और ऐसा हुआ कि मैंने प्रतिज्ञा के प्रदेश के ऊपर अंधकार की धुंधको देखा; और मैंने बिजली चमकती देखी, और मेघ की गर्जन, और भूकंप, और हर एक प्रकार के कोलाहल को सुना; और मैंने पृथ्वी और चट्टानों को देखा, कि उनमें दरार पड़ गई थी; और मैंने पहाड़ों को गिर कर चूर चूर होते देखा; और मैंने पृथ्वी के मैदानों को देखा, जो कि उबड़-खाबड़ हो गए थे; और मैंने कई शहरों को देखा जो कि धंस गए थे; और मैंने बहुतों को देखा जो कि आग में जल गए थे; और मैंने बहुतों को देखा जो कि भूकंप के कारण पृथ्वी में ढह गए थे।
- 5 और ऐसा हुआ कि इन घटनाओं को देखने के पश्चात, मैंने अंधकार के कोहरे को देखा, कि वह पृथ्वी के ऊपर से हट गया; और देखो, मैंने भीड़ को देखा जो प्रभु के महान और भयानक न्याय के कारण गिरे नहीं थे।
- 6 और मैंने स्वर्ग को खुलते और परमेश्वर के मेमने को स्वर्ग से उतरते देखा; और वह नीचे उतरा और उन पर अपने आपको प्रकट किया।
- 7 और मैंने देखा और गवाही देता हूँ कि अन्य बारह जनों पर भी पवित्र आत्मा उतरी थी; और वे परमेश्वर के नियुक्त, और चुने हुए थे।
- 8 और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: मेमने के बारह शिष्यों को देखो, जिन्हें तुम्हारे वंश की सेवा करने के लिए चुना गया है।
- 9 और उसने मुझसे कहा: क्या तुम्हें मेमने के बारह प्रेरित याद हैं? देखो वे वही हैं जो इस्राएल की बारह जातियों का न्याय करेंगे; इसलिए, तुम्हारे वंश के बारह सेवकों का न्याय उन्हीं के द्वारा होगा; क्योंकि तुम इस्राएल के घराने के हो।

## 1 Nephi 12

And it came to pass that the angel said unto me: Look, and behold thy seed, and also the seed of thy brethren. And I looked and beheld the land of promise; and I beheld multitudes of people, yea, even as it were in number as many as the sand of the sea.

And it came to pass that I beheld multitudes gathered together to battle, one against the other; and I beheld wars, and rumors of wars, and great slaughters with the sword among my people.

And it came to pass that I beheld many generations pass away, after the manner of wars and contentions in the land; and I beheld many cities, yea, even that I did not number them.

And it came to pass that I saw a mist of darkness on the face of the land of promise; and I saw lightnings, and I heard thunderings, and earthquakes, and all manner of tumultuous noises; and I saw the earth and the rocks, that they rent; and I saw mountains tumbling into pieces; and I saw the plains of the earth, that they were broken up; and I saw many cities that they were sunk; and I saw many that they were burned with fire; and I saw many that did tumble to the earth, because of the quaking thereof.

And it came to pass after I saw these things, I saw the vapor of darkness, that it passed from off the face of the earth; and behold, I saw multitudes who had not fallen because of the great and terrible judgments of the Lord.

And I saw the heavens open, and the Lamb of God descending out of heaven; and he came down and showed himself unto them.

And I also saw and bear record that the Holy Ghost fell upon twelve others; and they were ordained of God, and chosen.

And the angel spake unto me, saying: Behold the twelve disciples of the Lamb, who are chosen to minister unto thy seed.

And he said unto me: Thou rememberest the twelve apostles of the Lamb? Behold they are they who shall judge the twelve tribes of Israel; wherefore, the twelve ministers of thy seed shall be judged of them; for ye are of the house of Israel.

- 10 और ये बारह सेवक जिन्हें तुम देख रहे हो तुम्हारे वंश का न्याय करेंगे। और, देखो, वे हमेशा के लिए धर्मी हैं; क्योंकि परमेश्वर के मेमना में विश्वास होने के कारण उनकी पोशाकें उसके रक्त में धुल कर निर्मल सफेद हो चुकी हैं।
- 11 और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: नजरें उठाओ! और मैंने नजरें उठाई, और तीन पीढ़ियों को धार्मिकता से गुजरते हुए देखा जिनकी पोशाकें परमेश्वर के मेमने की तरह निर्मल सफेद थीं। और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: मेमने में इनके विश्वास के कारण इनको उसके रक्त से निर्मल सफेद किया गया है।
- 12 और मैं, नफी ने, चौथी पीढ़ी को भी धार्मिकता से गुजरते हुए देखा।
- 13 और ऐसा हुआ कि मैंने पृथ्वी की भीड़ को एकत्रित होते देखा।
- 14 और स्वर्गदूत ने मुझ से कहा: अपने वंशों को देखो, और अपने भाइयों के वंशों को भी।
- 15 और ऐसा हुआ कि मैंने नजरें उठाई और अपने वंश के लोगों को भीड़ में अपने भाइयों के वंश के विरुद्ध एकत्रित होते हुए देखा; और वे युद्ध करने के लिए एकत्रित हुए थे।
- 16 और मुझ से स्वर्गदूत ने कहा: दूषित जल के उस झरने को देखो जिसको तुम्हारे पिता ने देखा था; हां, उस नदी को भी देखो जिस के विषय में उन्होंने कहा था; और उसकी गहराई नरक की गहराई है।
- 17 और अंधकार की धुंध शैतान के प्रलोभन हैं, जो आंखों को अंधा कर देते हैं, और मानव संतान के हृदयों को कठोर बनाते, और उन्हें चौड़े रास्तों पर ले जाते हैं, ताकि वे नष्ट हो जाएं और खो जाएं।
- 18 और वह बड़ा और लंबा चौड़ा भवन, जिसे तुम्हारे पिता ने देखा था, वह मानव संतान की निरर्थक कल्पना और अहंकार है। और उनको एक बहुत बड़ी और भयंकर खाई विभाजित करती है; हां, अनंत परमेश्वर और मसीहा के न्याय के शब्द, जो कि परमेश्वर का मेमना है, जिसकी साक्षी पवित्र आत्मा, संसार के आरंभ से वर्तमान समय तक, और वर्तमान समय से हमेशा देती रहेगी।
- 19 और जब स्वर्गदूत इन शब्दों को कह रहा था, तब मैंने स्वर्गदूत के शब्द के अनुसार अपने भाइयों के वंश को मेरे अपने वंश के विरुद्ध विवाद करते हुए देखा; और अपने वंश के अहंकार, और शैतान के प्रलोभनों के कारण, मैंने देखा कि मेरे भाइयों के वंश ने मेरे वंश के लोगों को हरा दिया था।

And these twelve ministers whom thou beholdest shall judge thy seed. And, behold, they are righteous forever; for because of their faith in the Lamb of God their garments are made white in his blood.

And the angel said unto me: Look! And I looked, and beheld three generations pass away in righteousness; and their garments were white even like unto the Lamb of God. And the angel said unto me: These are made white in the blood of the Lamb, because of their faith in him.

And I, Nephi, also saw many of the fourth generation who passed away in righteousness.

And it came to pass that I saw the multitudes of the earth gathered together.

And the angel said unto me: Behold thy seed, and also the seed of thy brethren.

And it came to pass that I looked and beheld the people of my seed gathered together in multitudes against the seed of my brethren; and they were gathered together to battle.

And the angel spake unto me, saying: Behold the fountain of filthy water which thy father saw; yea, even the river of which he spake; and the depths thereof are the depths of hell.

And the mists of darkness are the temptations of the devil, which blindeth the eyes, and hardeneth the hearts of the children of men, and leadeth them away into broad roads, that they perish and are lost.

And the large and spacious building, which thy father saw, is vain imaginations and the pride of the children of men. And a great and a terrible gulf divideth them; yea, even the word of the justice of the Eternal God, and the Messiah who is the Lamb of God, of whom the Holy Ghost beareth record, from the beginning of the world until this time, and from this time henceforth and forever.

And while the angel spake these words, I beheld and saw that the seed of my brethren did contend against my seed, according to the word of the angel; and because of the pride of my seed, and the temptations of the devil, I beheld that the seed of my brethren did overpower the people of my seed.



- 20 और ऐसा हुआ कि मैंने अपने भाइयों के वंश को मेरे वंश को हरा कर प्रदेश भर में भारी संख्या में फैलते हुए देखा ।
- 21 और मैंने उनको भीड़ में एकत्रित होते देखा; और मैंने उनके बीच युद्धों और युद्ध की अफवाहों को देखा; और युद्धों और युद्ध की अफवाहों में मैंने कई पीढ़ियों को गुजरते हुए देखा ।
- 22 और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: देखो, ये अविश्वास में विलीन हो जाएंगे ।
- 23 और ऐसा हुआ कि मैंने देखा, वे अविश्वास में विलीन होने के बाद काले, और घृणित, और गंदे लोग हो गए, आलसी और सभी प्रकार के घृणित काम करने लगे ।
- And it came to pass that I beheld, and saw the people of the seed of my brethren that they had overcome my seed; and they went forth in multitudes upon the face of the land.
- And I saw them gathered together in multitudes; and I saw wars and rumors of wars among them; and in wars and rumors of wars I saw many generations pass away.
- And the angel said unto me: Behold these shall dwindle in unbelief.
- And it came to pass that I beheld, after they had dwindled in unbelief they became a dark, and loathsome, and a filthy people, full of idleness and all manner of abominations.

## 1 नफी 13

- 1 और ऐसा हुआ कि स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: नज़रें उठाओ ! और मैंने नज़रें उठाई और कई राष्ट्रों और राज्यों को देखा ।
- 2 और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: तुम क्या देखते हो ? और मैंने कहा: मैं कई राष्ट्रों और राज्यों को देखता हूँ ।
- 3 और उसने मुझसे कहा: ये राष्ट्र और राज्य अन्यजातियों के हैं ।
- 4 और ऐसा हुआ कि मैंने राष्ट्रों के बीच अन्यजातियों के एक विशाल गिरजे के गठन को देखा ।
- 5 और स्वर्गदूत ने मुझ से कहा: उस गिरजे के गठन को देखो जो अन्य सभी गिरजों में अत्यंत घृणित है, जो परमेश्वर के संतों की हत्या करता, और हां, उन्हें यातना देता और बंधनों से बांधता, और उनकी गर्दनों पर लोहे के जुए रखता है, और उन्हें गुलाम बनाता है ।
- 6 और ऐसा हुआ कि मैंने इस विशाल घृणित गिरजे को देखा; और मैंने शैतान को देखा कि वह उसका संस्थापक था ।
- 7 और मैंने सोना, और चांदी, और रेशम, और लाल, और उत्तम सन के वस्त्र, और सब प्रकार की अनमोल पोशाकों को भी देखा; और मैंने बहुत सी वेश्याओं को देखा ।
- 8 और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: सोना, और चांदी, और रेशम, और लाल, और उत्तम सन के वस्त्र, और अनमोल पोशाकों, और वेश्याओं को देखो, ये इस विशाल और घृणित गिरजे की इच्छाएं हैं ।
- 9 और संसार की प्रशंसा के लिए ये परमेश्वर के संतों को नष्ट करते हैं, और उन्हें गुलाम बनाते हैं ।
- 10 और ऐसा हुआ कि मैंने नज़र उठाई और मैंने कई समुद्र देखे; और वे अन्यजातियों को मेरे भाइयों के वंश से अलग करते थे ।
- 11 और ऐसा हुआ कि स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: देखो परमेश्वर का क्रोध तुम्हारे भाइयों के वंश के ऊपर है ।
- 12 और मैंने नज़रें उठाई और अन्यजातियों के बीच एक पुरुष को देखा, जो मेरे भाइयों के वंश से कई समुद्रों द्वारा अलग किया गया था; और मैंने परमेश्वर की आत्मा को देखा, कि वह उतरी और उस व्यक्ति पर प्रभाव डाला; और वह कई समुद्रों को पार करता हुआ मेरे भाइयों के वंशों के पास गया जो कि प्रतिज्ञा के प्रदेश में थे ।

## 1 Nephi 13

And it came to pass that the angel spake unto me, saying: Look! And I looked and beheld many nations and kingdoms.

And the angel said unto me: What beholdest thou? And I said: I behold many nations and kingdoms.

And he said unto me: These are the nations and kingdoms of the Gentiles.

And it came to pass that I saw among the nations of the Gentiles the formation of a great church.

And the angel said unto me: Behold the formation of a church which is most abominable above all other churches, which slayeth the saints of God, yea, and tortureth them and bindeth them down, and yoketh them with a yoke of iron, and bringeth them down into captivity.

And it came to pass that I beheld this great and abominable church; and I saw the devil that he was the founder of it.

And I also saw gold, and silver, and silks, and scarlets, and fine-twined linen, and all manner of precious clothing; and I saw many harlots.

And the angel spake unto me, saying: Behold the gold, and the silver, and the silks, and the scarlets, and the fine-twined linen, and the precious clothing, and the harlots, are the desires of this great and abominable church.

And also for the praise of the world do they destroy the saints of God, and bring them down into captivity.

And it came to pass that I looked and beheld many waters; and they divided the Gentiles from the seed of my brethren.

And it came to pass that the angel said unto me: Behold the wrath of God is upon the seed of thy brethren.

And I looked and beheld a man among the Gentiles, who was separated from the seed of my brethren by the many waters; and I beheld the Spirit of God, that it came down and wrought upon the man; and he went forth upon the many waters, even unto the seed of my brethren, who were in the promised land.

- 13 और ऐसा हुआ कि मैंने परमेश्वर की आत्मा को देखा, कि उसने अन्यजातियों पर प्रभाव डाला; और वे गुलामी से बाहर निकल कर कई समुद्रों को पार करते हुए आगे बढ़ गए ।
- 14 और ऐसा हुआ कि मैंने अन्यजातियों की कई भीड़ को प्रतिज्ञा के प्रदेश में देखा; और मैंने परमेश्वर के क्रोध को देखा, जो कि मेरे भाइयों के वंशों के ऊपर था; और वे अन्यजातियों के सामने तितर-बितर हो गए और पीटे गए ।
- 15 और मैंने प्रभु की आत्मा को देखा, कि वह अन्यजातियों के ऊपर था, और उन्होंने उन्नति की और भूमि को अपनी विरासत में प्राप्त कर लिया; और मैंने देखा कि वे श्वेत, और अत्यन्त गोरे और सुन्दर थे, जैसे मार दिए जाने से पूर्व मेरे लोग थे ।
- 16 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, देखा कि अन्यजातियां जो गुलामी से बाहर निकल कर गई थीं, उन्होंने अपने आपको प्रभु के समक्ष दीन बना लिया; और प्रभु की शक्ति उनके साथ थी ।
- 17 और मैंने देखा कि उनकी मूल जातियां उन से युद्ध करने के लिए, समुद्रों पर और भूमि पर भी एकत्रित हो गई थीं ।
- 18 और मैंने देखा कि परमेश्वर की शक्ति उनके साथ थी, और यह भी देखा कि परमेश्वर का क्रोध उन सब पर था जो उन से युद्ध करने के लिए एकत्रित हुए थे ।
- 19 और मैं, नफी, ने देखा कि अन्यजातियां जो गुलामी से बाहर निकल कर गई थीं उन्हें परमेश्वर की शक्ति द्वारा सभी अन्य राष्ट्रों से मुक्त किया गया था ।
- 20 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी, ने देखा कि उन्होंने उस प्रदेश में उन्नति की; और मैंने एक पुस्तक देखी, और यह उनके बीच ले जाई गई ।
- 21 और स्वर्गदूत ने मुझ से कहा: क्या तुम उस पुस्तक का अर्थ जानते हो ?
- 22 और मैंने उससे कहा: मैं नहीं जानता ।

And it came to pass that I beheld the Spirit of God, that it wrought upon other Gentiles; and they went forth out of captivity, upon the many waters.

And it came to pass that I beheld many multitudes of the Gentiles upon the land of promise; and I beheld the wrath of God, that it was upon the seed of my brethren; and they were scattered before the Gentiles and were smitten.

And I beheld the Spirit of the Lord, that it was upon the Gentiles, and they did prosper and obtain the land for their inheritance; and I beheld that they were white, and exceedingly fair and beautiful, like unto my people before they were slain.

And it came to pass that I, Nephi, beheld that the Gentiles who had gone forth out of captivity did humble themselves before the Lord; and the power of the Lord was with them.

And I beheld that their mother Gentiles were gathered together upon the waters, and upon the land also, to battle against them.

And I beheld that the power of God was with them, and also that the wrath of God was upon all those that were gathered together against them to battle.

And I, Nephi, beheld that the Gentiles that had gone out of captivity were delivered by the power of God out of the hands of all other nations.

And it came to pass that I, Nephi, beheld that they did prosper in the land; and I beheld a book, and it was carried forth among them.

And the angel said unto me: Knowest thou the meaning of the book?

And I said unto him: I know not.

23 और उसने कहा: देखो, वह एक यहूदी के मुख से प्रकट हो रही है। और मैं, नफी ने, इसे देखा; और उसने मुझसे कहा: जिस पुस्तक को तुम देख रहे हो वह यहूदियों का एक अभिलेख है जिसमें प्रभु के अनुबंध हैं, जो उसने इस्राएल के घराने के साथ बनाए हैं; और इसमें पवित्र भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियां भी हैं: और वह उसी प्रकार का अभिलेख है जैसे पीतल की पट्टियों पर खुदे हुए हैं, लेकिन ये बहुत नहीं हैं; फिर भी, इनमें प्रभु के अनुबंध हैं, जो उसने इस्राएल के घराने के साथ बनाए हैं; इसलिए, ये अन्यजातियों के लिए मूल्यवान हैं।

24 और प्रभु के स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: तुमने देखा कि वह पुस्तक एक यहूदी के मुख से प्रकट हुई है; और जबकि वह एक यहूदी के मुख से निकली है, तब उसमें उस प्रभु के सुसमाचार की परिपूर्णता है, जिसका प्रमाण बारह प्रेरित देते हैं; और वे उस सच्चाई के अनुसार गवाही देते हैं जो परमेश्वर के मेमने में है।

25 इसलिए, ये बातें विशुद्ध रूप में यहूदियों से अन्यजातियों के पास उस सच्चाई के अनुसार जा रही है, जो कि परमेश्वर में है।

26 और मेमने के बारह प्रेरितों के हाथों द्वारा, यहूदियों से अन्यजातियों को, देने के पश्चात, तुम एक विशाल और घृणित गिरजे का गठन देख रहे हो, जो अन्य सभी गिरजों में अत्यंत घृणित है; क्योंकि देखो, मेमने के सुसमाचार में से उन्होंने बहुत से हिस्सों को निकाल दिया है, जो कि स्पष्ट और बहुमूल्य हैं; और उन्होंने प्रभु के कई अनुबंधों को भी निकाल दिया है।

27 और यह सब उन्होंने इसलिए किया है ताकि वे प्रभु के सही मार्गों को दूषित कर दें, ताकि वे मानव संतान की आंखों पर पर्दा डाल दें और हृदयों को कठोर कर दें।

28 इसलिए, तुम देखते हो कि इस विशाल और घृणित गिरजे के हाथों में इस पुस्तक के आने के बाद, इस पुस्तक से, जो कि परमेश्वर के मेमने की पुस्तक है, बहुत सी स्पष्ट और अनमोल बातें निकाल दी गई हैं।

And he said: Behold it proceedeth out of the mouth of a Jew. And I, Nephi, beheld it; and he said unto me: The book that thou beholdest is a record of the Jews, which contains the covenants of the Lord, which he hath made unto the house of Israel; and it also containeth many of the prophecies of the holy prophets; and it is a record like unto the engravings which are upon the plates of brass, save there are not so many; nevertheless, they contain the covenants of the Lord, which he hath made unto the house of Israel; wherefore, they are of great worth unto the Gentiles.

And the angel of the Lord said unto me: Thou hast beheld that the book proceeded forth from the mouth of a Jew; and when it proceeded forth from the mouth of a Jew it contained the fulness of the gospel of the Lord, of whom the twelve apostles bear record; and they bear record according to the truth which is in the Lamb of God.

Wherefore, these things go forth from the Jews in purity unto the Gentiles, according to the truth which is in God.

And after they go forth by the hand of the twelve apostles of the Lamb, from the Jews unto the Gentiles, thou seest the formation of that great and abominable church, which is most abominable above all other churches; for behold, they have taken away from the gospel of the Lamb many parts which are plain and most precious; and also many covenants of the Lord have they taken away.

And all this have they done that they might pervert the right ways of the Lord, that they might blind the eyes and harden the hearts of the children of men.

Wherefore, thou seest that after the book hath gone forth through the hands of the great and abominable church, that there are many plain and precious things taken away from the book, which is the book of the Lamb of God.

29 और इन स्पष्ट और मूल्यवान बातों के निकल जाने के पश्चात यह पुस्तक अन्यजातियों के सभी राष्ट्रों में गई; और इसके अन्यजातियों के सभी राष्ट्रों में जाने के पश्चात, हां, कई समुद्रों के पार जिसे तुमने अन्यजातियों के साथ देखा है जो कि गुलामी से बाहर निकल कर गए हैं, तुम देखते हो—बहुत सी स्पष्ट और मूल्यवान बातों को उस पुस्तक से निकाल देने के कारण, जो कि मानव संतान के लिए समझने में स्पष्ट थीं, उस स्पष्टता के अनुसार जो कि परमेश्वर के मेमने में है—मेमने के सुसमाचार से उन बातों को निकालने के कारण, बहुत से लोग ठोकर खाते हैं, हां, इतनी अधिक ठोकर खाते हैं कि शैतान उनके ऊपर हावी हो जाता है।

30 फिर भी, तुम देखते हो कि अन्यजातियां जो कि गुलामी से बाहर निकल कर गए हैं, और परमेश्वर की शक्ति द्वारा सभी राष्ट्रों से उस प्रदेश के लिए चुने गए हैं, जो कि अन्य सभी देशों से सर्वश्रेष्ठ है, यह वही प्रदेश है जिसका अनुबंध प्रभु परमेश्वर ने तुम्हारे पिता से उसके वंशों को विरासत में देने का अनुबंध किया है; इसलिए, तुम देखते हो कि प्रभु परमेश्वर अन्यजातियों को तुम्हारे मिश्रित वंशों, जिसमें तुम्हारे भाई हैं, को पूर्णरूप से नष्ट नहीं करने देगा।

31 न ही वह अन्यजातियों को तुम्हारे भाइयों के वंशों को नष्ट करने देगा।

32 न ही प्रभु परमेश्वर चाहेगा कि अन्यजातियां उस भयानक अंधकारपूर्ण अवस्था में हमेशा रहें, जिसमें तुम उन्हें देख रहे हो, क्योंकि मेमने के सुसमाचार में से स्पष्ट और मूल्यवान हिस्सों को को उस विशाल और घृणित गिरजे द्वारा निकाल दिए जाने से उनको दूर रखा है, जिसका गठन तुमने देखा है।

33 इसलिए परमेश्वर का मेमना कहता है: मैं अन्यजातियों के प्रति तब तक दयालु बना रहूंगा, जब तक कि इस्राएल के घराने के अवशेष के महान न्याय में मिलने नहीं आता।

And after these plain and precious things were taken away it goeth forth unto all the nations of the Gentiles; and after it goeth forth unto all the nations of the Gentiles, yea, even across the many waters which thou hast seen with the Gentiles which have gone forth out of captivity, thou seest—because of the many plain and precious things which have been taken out of the book, which were plain unto the understanding of the children of men, according to the plainness which is in the Lamb of God—because of these things which are taken away out of the gospel of the Lamb, an exceedingly great many do stumble, yea, insomuch that Satan hath great power over them.

Nevertheless, thou beholdest that the Gentiles who have gone forth out of captivity, and have been lifted up by the power of God above all other nations, upon the face of the land which is choice above all other lands, which is the land that the Lord God hath covenanted with thy father that his seed should have for the land of their inheritance; wherefore, thou seest that the Lord God will not suffer that the Gentiles will utterly destroy the mixture of thy seed, which are among thy brethren.

Neither will he suffer that the Gentiles shall destroy the seed of thy brethren.

Neither will the Lord God suffer that the Gentiles shall forever remain in that awful state of blindness, which thou beholdest they are in, because of the plain and most precious parts of the gospel of the Lamb which have been kept back by that abominable church, whose formation thou hast seen.

Wherefore saith the Lamb of God: I will be merciful unto the Gentiles, unto the visiting of the remnant of the house of Israel in great judgment.

34 और ऐसा हुआ कि प्रभु का स्वर्गादूत मुझसे बोला: देखो, परमेश्वर का मेमना कहता है कि इस्राएल के घराने के अवशेष से मिलने के पश्चात—और यह अवशेष जिन के विषय में मैं कहता हूँ तुम्हारे पिता के वंश हैं—इसलिए, न्याय के दिन मेरे उनसे मिलने के पश्चात, और अन्यजातियों के हाथों उन्हें दणित करने पश्चात, और अन्यजातियों के अत्याधिक ठोकर खाने के पश्चात, क्योंकि मेमने के सुसमाचार के अत्याधिक स्पष्ट और मूल्यवान हिस्सों को, उस विशाल और घृणित गिरजे, जो कि वेश्याओं की जननी है, उनसे दूर रखे जाने के कारण—मैं उस दिन अन्यजातियों पर दयालु बनूँगा, इतना अधिक कि मैं उन्हें, अपनी स्वयं की शक्ति से, अपने सुसमाचार की अधिकता दूँगा, जो कि स्पष्ट और मूल्यवान होगी, मेमना कहता है ।

35 क्योंकि, देखो, मेमना कहता है: मैं तुम्हारे वंश में अपने आपको प्रकट करूँगा, कि वे बहुत सी बातों को लिखेंगे जो मैं उन्हें उपदेश में दूँगा, जो कि स्पष्ट और मूल्यवान होंगी; और तुम्हारे वंश के नष्ट होने, और अविश्वास में विलीन होने के पश्चात, और तुम्हारे भाइयों के वंश भी, देखो, इन बातों को, मेमने के उपहार और शक्ति द्वारा अन्यजातियों को प्रकट किये जाने तक, छिपा दिया जाएगा ।

36 और उनमें मेरा सुसमाचार, और मेरी चट्टान और मेरा उद्धार लिखा जाएगा, मेमना कहता है ।

37 और वे लोग आशीषित हैं जो उस दिन मेरा सिंघोण लाने का प्रयत्न करेंगे, क्योंकि उनको पवित्र आत्मा का उपहार और शक्ति प्राप्त होगी; और यदि वे अंत तक सहनशील बने रहते हैं तो उन्हें अंतिम दिन उत्कर्ष प्राप्त होगा, और मेमने के अनंत राज्य में बचा लिए जाएंगे; और जो कोई शांति कायम करेगा, हां, महान आनंद के समाचार भी, वे पर्वत पर कितने सुंदर लगेंगे ।

38 और ऐसा हुआ कि मैंने अपने भाइयों के वंश के अवशेष, और परमेश्वर के मेमने की पुस्तक को देखा जो एक यहूदी के मुख से निकली थी, कि वह अन्यजातियों से मेरे भाइयों के वंश के अवशेषों को प्राप्त हुई थी ।

And it came to pass that the angel of the Lord spake unto me, saying: Behold, saith the Lamb of God, after I have visited the remnant of the house of Israel—and this remnant of whom I speak is the seed of thy father—wherefore, after I have visited them in judgment, and smitten them by the hand of the Gentiles, and after the Gentiles do stumble exceedingly, because of the most plain and precious parts of the gospel of the Lamb which have been kept back by that abominable church, which is the mother of harlots, saith the Lamb—I will be merciful unto the Gentiles in that day, insomuch that I will bring forth unto them, in mine own power, much of my gospel, which shall be plain and precious, saith the Lamb.

For, behold, saith the Lamb: I will manifest myself unto thy seed, that they shall write many things which I shall minister unto them, which shall be plain and precious; and after thy seed shall be destroyed, and dwindle in unbelief, and also the seed of thy brethren, behold, these things shall be hid up, to come forth unto the Gentiles, by the gift and power of the Lamb.

And in them shall be written my gospel, saith the Lamb, and my rock and my salvation.

And blessed are they who shall seek to bring forth my Zion at that day, for they shall have the gift and the power of the Holy Ghost; and if they endure unto the end they shall be lifted up at the last day, and shall be saved in the everlasting kingdom of the Lamb; and whoso shall publish peace, yea, tidings of great joy, how beautiful upon the mountains shall they be.

And it came to pass that I beheld the remnant of the seed of my brethren, and also the book of the Lamb of God, which had proceeded forth from the mouth of the Jew, that it came forth from the Gentiles unto the remnant of the seed of my brethren.

- 39 और यह उनको मिलने के पश्चात मैंने अन्य पुस्तकों को देखा, जो कि मेमने की शक्ति द्वारा, अन्यजातियों से उनको प्राप्त हुई थीं, अन्यजातियों को और मेरे भाइयों के वंश के अवशेषों, और यहूदियों को भी जो कि संपूर्ण पृथ्वी पर बिखरे हुए थे, कि मेमने के भविष्यवक्ताओं और बारह प्रेरितों के अभिलेख सच्चे हैं ।
- 40 और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: ये अंतिम अभिलेख, जिन्हें तुमने अन्यजातियों के बीच देखा है, उस प्रथम सच्चाई की स्थापना करेंगे, जो मेमने के बारह प्रेरितों की हैं, और स्पष्ट और मूल्यवान बातों की घोषणा करेंगे जिन्हें उनसे दूर कर दिया गया था; और सभी जातियों, भाषाओं, और लोगों को घोषणा करेंगे, कि परमेश्वर का मेमना ही अनंत पिता का पुत्र, और संसार का उद्धारकर्ता है; और कि सभी मनुष्यों को उसके पास आना चाहिए, वरना वे बचाए नहीं जा सकते ।
- 41 और उन्हें उन शब्दों के अनुसार पास आना चाहिए जिन्हें मेमने के मुंह से स्थापित किया जाएगा; और मेमने के शब्दों की घोषणा तुम्हारे वंश के अभिलेखों में की जाएगी, और मेमने के बारह प्रेरितों के अभिलेखों में भी; इसलिए वे दोनों एक साथ स्थापित किये जाएंगे; क्योंकि संपूर्ण पृथ्वी का एक परमेश्वर और एक चरवाहा है ।
- 42 और समय आने वाला है कि वह सभी राष्ट्रों पर, यहूदियों और अन्यजातियों दोनों पर भी अपने आपको प्रकट करेगा; और यहूदियों और अन्यजातियों पर अपने आपको प्रकट करने के पश्चात, फिर वह अपने आपको वह अन्यजातियों और यहूदियों पर भी प्रकट करेगा, और अंतिम प्रथम हो जाएंगे, और प्रथम अंतिम हो जाएंगे ।

And after it had come forth unto them I beheld other books, which came forth by the power of the Lamb, from the Gentiles unto them, unto the convincing of the Gentiles and the remnant of the seed of my brethren, and also the Jews who were scattered upon all the face of the earth, that the records of the prophets and of the twelve apostles of the Lamb are true.

And the angel spake unto me, saying: These last records, which thou hast seen among the Gentiles, shall establish the truth of the first, which are of the twelve apostles of the Lamb, and shall make known the plain and precious things which have been taken away from them; and shall make known to all kindreds, tongues, and people, that the Lamb of God is the Son of the Eternal Father, and the Savior of the world; and that all men must come unto him, or they cannot be saved.

And they must come according to the words which shall be established by the mouth of the Lamb; and the words of the Lamb shall be made known in the records of thy seed, as well as in the records of the twelve apostles of the Lamb; wherefore they both shall be established in one; for there is one God and one Shepherd over all the earth.

And the time cometh that he shall manifest himself unto all nations, both unto the Jews and also unto the Gentiles; and after he has manifested himself unto the Jews and also unto the Gentiles, then he shall manifest himself unto the Gentiles and also unto the Jews, and the last shall be first, and the first shall be last.

## 1 नफी 14

- 1 और ऐसा होगा कि यदि अन्यजातियां उस दिन परमेश्वर के मेमने की सुनेंगी जिस दिन वह उन्हें अपने शब्द, और शक्ति में भी, उनकी बाधाओं को दूर करने के काम में अपने आपको प्रकट करेगा—
- 2 और परमेश्वर के मेमने के प्रति जो अपने हृदयों को कठोर नहीं करते, वे तुम्हारे पिता के वंशों में गिने जाएंगे; हां, वे इस्राएल के घराने में गिने जाएंगे; और वे प्रतिज्ञा के प्रदेश में हमेशा के लिए आशीषित होंगे; वे दुबारा गुलाम नहीं बनाए जाएंगे; और इस्राएल के घराने को दुबारा हराया नहीं जाएगा ।
- 3 और वह गहरा गड्ढा, जो उनके लिए उस विशाल और घृणित गिरजा के द्वारा खोदा गया है जिसकी स्थापना शैतान और उसके बच्चों के द्वारा की गई थी, ताकि वह लोगों को बहका कर नरक में ले जा सके—हां, वह महान गड्ढा जो कि मनुष्य को नष्ट करने के लिए खोदा गया है वह उसे खोदने वालों से भर जाएगा और उनको पूरी तरह नष्ट कर देगा, परमेश्वर का मेमना कहता है; उनकी आत्मा नष्ट नहीं की जाएगी परन्तु उस नरक में फेंकी जाएगी जिसका अंत नहीं है ।
- 4 क्योंकि देखो, यह शैतान की गुलामी, और परमेश्वर के न्याय के अनुसार भी, उन लोगों पर होगा जो उसके सामने दुष्टता और घृणा के कार्य करेंगे ।
- 5 और ऐसा हुआ कि स्वर्गदूत ने मुझे कहा, नफी: तुमने देखा कि यदि अन्यजातियां पश्चाताप करती हैं तब उनके साथ भला होगा; और तुम इस्राएल के घराने के साथ किये प्रभु के अनुबंधों के संबंध में भी जानते हो; और तुमने यह भी सुना है कि जो पश्चाताप नहीं करता उसे नष्ट किया जाना चाहिए ।
- 6 इसलिए, अन्यजातियों पर हाय यदि वे अपने हृदयों को परमेश्वर के मेमने के विरुद्ध कठोर बना लेती हैं ।
- 7 क्योंकि समय आने वाला है, परमेश्वर का मेमना कहता है, कि जब मैं मानव संतान के बीच आश्चर्यजनक कार्य करूंगा; वह कार्य जो कि अनंत होगा, या तो एक हाथ की ओर या दूसरे की ओर—या तो उन्हें शांति और अनंत जीवन के लिए उत्साहित करेगा, या फिर उनके हृदयों को कठोर बना कर और उनके मनो को अंधा बना कर, वे गुलाम बना लिए जाएंगे, और नष्ट भी किये जाएंगे, पार्थिव और आत्मिकरूप दोनों तरह से, शैतान के गुलाम बनाए जाएंगे, जिसके विषय में मैंने कहा है ।

## 1 Nephi 14

And it shall come to pass, that if the Gentiles shall hearken unto the Lamb of God in that day that he shall manifest himself unto them in word, and also in power, in very deed, unto the taking away of their stumbling blocks—

And harden not their hearts against the Lamb of God, they shall be numbered among the seed of thy father; yea, they shall be numbered among the house of Israel; and they shall be a blessed people upon the promised land forever; they shall be no more brought down into captivity; and the house of Israel shall no more be confounded.

And that great pit, which hath been digged for them by that great and abominable church, which was founded by the devil and his children, that he might lead away the souls of men down to hell—yea, that great pit which hath been digged for the destruction of men shall be filled by those who digged it, unto their utter destruction, saith the Lamb of God; not the destruction of the soul, save it be the casting of it into that hell which hath no end.

For behold, this is according to the captivity of the devil, and also according to the justice of God, upon all those who will work wickedness and abomination before him.

And it came to pass that the angel spake unto me, Nephi, saying: Thou hast beheld that if the Gentiles repent it shall be well with them; and thou also knowest concerning the covenants of the Lord unto the house of Israel; and thou also hast heard that whoso repenteth not must perish.

Therefore, wo be unto the Gentiles if it so be that they harden their hearts against the Lamb of God.

For the time cometh, saith the Lamb of God, that I will work a great and a marvelous work among the children of men; a work which shall be everlasting, either on the one hand or on the other—either to the convincing of them unto peace and life eternal, or unto the deliverance of them to the hardness of their hearts and the blindness of their minds unto their being brought down into captivity, and also into destruction, both temporally and spiritually, according to the captivity of the devil, of which I have spoken.



- 8 और ऐसा हुआ कि जब स्वर्गदूत ने इन शब्दों को कह लिया, उसके पश्चात उसने मुझ से कहा: क्या तुम्हें इस्राएल के घराने के साथ बनाए हुए पिता के अनुबंध याद हैं? मैंने उससे कहा, हां।
- 9 और तब ऐसा हुआ कि उसने मुझसे कहा: नजरें उठाओ, और उस विशाल और घृणित गिरजे को देखो जो कि घृणित कार्यों की जननी है, जिसका संस्थापक शैतान है।
- 10 और उसने मुझसे कहा: देखो, केवल दो गिरजे हैं; एक गिरजा परमेश्वर के मेमने का है, और दूसरा गिरजा है शैतान का; इसलिए जो परमेश्वर के मेमने के गिरजे का सदस्य नहीं है वह उस विशाल गिरजे का सदस्य है जो कि सभी घृणित कार्यों की जननी है और वह संपूर्ण पृथ्वी की वेश्या है।
- 11 और ऐसा हुआ कि मैंने नजरें उठाई और संपूर्ण पृथ्वी की वेश्या को देखा, और वह कई समुद्रों के ऊपर बैठी हुई थी; और उसका अधिकार सारे पृथ्वी के, सभी राष्ट्रों, जातियों, भाषाओं, और लोगों पर था।
- 12 और ऐसा हुआ कि मैंने परमेश्वर के मेमने के गिरजे को देखा; और इसकी संख्या जिस के सदस्य उस वेश्या की दुष्टता और घृणा के कारण बहुत कम थी, जो कई समुद्रों के ऊपर बैठी हुई थी; फिर मैंने देखा कि मेमने के गिरजे, जो परमेश्वर के संत थे, वे भी संपूर्ण पृथ्वी पर थे; और उनका अधिकार उस बड़ी वेश्या, जिसे मैंने देखा था, की दुष्टता के कारण संपूर्ण पृथ्वी पर छोटा था।
- 13 और ऐसा हुआ कि मैंने देखा कि घृणा की उस महान जननी ने संपूर्ण पृथ्वी पर अन्यजातियों के सभी राष्ट्रों में, भीड़ को परमेश्वर के मेमने से युद्ध करने के लिए, एकत्रित किया था।
- 14 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, परमेश्वर के मेमने की शक्ति को देखा, कि वह मेमने के गिरजे के संतों के ऊपर, और प्रभु के अनुबंधित लोगों के ऊपर आई, जो कि संपूर्ण पृथ्वी पर बिखरे हुए थे; और वे धार्मिकता और परमेश्वर की शक्ति के महान अनुग्रह से लैस थे।

And it came to pass that when the angel had spoken these words, he said unto me: Rememberest thou the covenants of the Father unto the house of Israel? I said unto him, Yea.

And it came to pass that he said unto me: Look, and behold that great and abominable church, which is the mother of abominations, whose founder is the devil.

And he said unto me: Behold there are save two churches only; the one is the church of the Lamb of God, and the other is the church of the devil; wherefore, whoso belongeth not to the church of the Lamb of God belongeth to that great church, which is the mother of abominations; and she is the whore of all the earth.

And it came to pass that I looked and beheld the whore of all the earth, and she sat upon many waters; and she had dominion over all the earth, among all nations, kindreds, tongues, and people.

And it came to pass that I beheld the church of the Lamb of God, and its numbers were few, because of the wickedness and abominations of the whore who sat upon many waters; nevertheless, I beheld that the church of the Lamb, who were the saints of God, were also upon all the face of the earth; and their dominions upon the face of the earth were small, because of the wickedness of the great whore whom I saw.

And it came to pass that I beheld that the great mother of abominations did gather together multitudes upon the face of all the earth, among all the nations of the Gentiles, to fight against the Lamb of God.

And it came to pass that I, Nephi, beheld the power of the Lamb of God, that it descended upon the saints of the church of the Lamb, and upon the covenant people of the Lord, who were scattered upon all the face of the earth; and they were armed with righteousness and with the power of God in great glory.

- 15 और मैंने देखा कि परमेश्वर का क्रोध उस विशाल और घृणित गिरजे के ऊपर उंडेला गया था, इतना अधिक कि पृथ्वी के सभी राष्ट्रों और जातियों में युद्ध और युद्ध की अफवाहें फैल गयीं ।
- 16 और जब घृणा की उस जननी के सभी राष्ट्रों में युद्ध और युद्ध की अफवाहें फैलनी शुरू हुईं, तब उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: देखो, परमेश्वर का क्रोध वेश्याओं की जननी के ऊपर है; और देखो, तुम इन सब बातों को देख रहे हो—
- 17 और जब वह दिन आएगा जब कि परमेश्वर का क्रोध वेश्याओं की जननी के ऊपर उंडेला जाएगा, जो कि संपूर्ण पृथ्वी का विशाल और घृणित गिरजा है, जिसका संस्थापक शैतान है, तब, उस दिन पिता अपने अनुबंध को पूरा करने के लिए कार्य आरंभ करेगा, जिसे उसने इस्राएल के घराने के अपने लोगों के लिए बनाया था ।
- 18 और ऐसा हुआ कि स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: नजरें उठाओ !
- 19 और मैंने नजरें उठाई और एक व्यक्ति को देखा, और वह सफेद लबादा पहने हुए था ।
- 20 और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: मेमने के बारह प्रेरितों में से एक को देखो ।
- 21 देखो, वह इन शेष बातों को देखेगा और लिखेगा; हां, और भी बहुत सी बातों को जो हो चुकी हैं ।
- 22 और वह संसार के अंत के विषय में भी लिखेगा ।
- 23 इसलिए, जो बातें वह लिखेगा उचित और सत्य होंगी; और देखो, वे सब उस पुस्तक में लिखी हुई हैं जिसे तुमने एक यहूदी के मुख से निकलते हुए देखा था; और जब वे यहूदी के मुख से निकली थीं, या, जिस समय यहूदी के मुख से वह पुस्तक आई थी, उसमें लिखी गई बातें स्पष्ट और शुद्ध थीं, और सब से मूल्यवान और सभी मनुष्यों के लिए समझने में सरल थीं ।
- 24 और देखो, जो बातें मेमने का यह प्रेरित लिखेगा उनमें से बहुत सी बातों को तुम देख चुके हो; और देखो, शेष बातों को भी तुम देखोगे ।
- 25 लेकिन जिन बातों को तुम अब देखोगे उसे तुम नहीं लिखोगे; क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने परमेश्वर के मेमने के प्रेरित को नियुक्त किया है कि वह उन्हें लिखेगा ।

And it came to pass that I beheld that the wrath of God was poured out upon that great and abominable church, insomuch that there were wars and rumors of wars among all the nations and kindreds of the earth.

And as there began to be wars and rumors of wars among all the nations which belonged to the mother of abominations, the angel spake unto me, saying: Behold, the wrath of God is upon the mother of harlots; and behold, thou seest all these things—

And when the day cometh that the wrath of God is poured out upon the mother of harlots, which is the great and abominable church of all the earth, whose founder is the devil, then, at that day, the work of the Father shall commence, in preparing the way for the fulfilling of his covenants, which he hath made to his people who are of the house of Israel.

And it came to pass that the angel spake unto me, saying: Look!

And I looked and beheld a man, and he was dressed in a white robe.

And the angel said unto me: Behold one of the twelve apostles of the Lamb.

Behold, he shall see and write the remainder of these things; yea, and also many things which have been.

And he shall also write concerning the end of the world.

Wherefore, the things which he shall write are just and true; and behold they are written in the book which thou beheld proceeding out of the mouth of the Jew; and at the time they proceeded out of the mouth of the Jew, or, at the time the book proceeded out of the mouth of the Jew, the things which were written were plain and pure, and most precious and easy to the understanding of all men.

And behold, the things which this apostle of the Lamb shall write are many things which thou hast seen; and behold, the remainder shalt thou see.

But the things which thou shalt see hereafter thou shalt not write; for the Lord God hath ordained the apostle of the Lamb of God that he should write them.

- 26 और अन्यो को भी जो जा चुके हैं, उसने सब बातें उनको दिखाई हैं, और उन्होंने उन्हें लिखा है; और उस सच्चाई के अनुसार जो कि मे-  
मने में है, प्रभु के स्वयं निर्धारित समय में इस्राएल के घराने पर प्रकट होने के लिए इन्हें शुद्ध रूप में मुहरबंद कर दिया गया है ।
- 27 और मैं, नफी ने, सुना और गवाही देता हूँ, कि स्वर्गदूत के कहे अनुसार मेमने के उस प्रेरित का नाम यूहन्ना था ।
- 28 और देखो, मुझ, नफी को, मना किया गया कि मैं उन शेष बातों को जिसे मैंने देखा और सुना था न लिखूँ; इसलिए जो बातें मैंने लि-  
खी हैं मेरे लिए पर्याप्त हैं; और जो बातें मैंने देखी थीं उसका केवल एक छोटा भाग मैंने लिखा है ।
- 29 और मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि मैंने उन बातों को देखा जि-  
न्हें मेरे पिता ने देखा था, और प्रभु के स्वर्गदूत ने मुझे इन्हें बताया था ।
- 30 और अब मैं उन बातों के संबंध में बोलना बंद करता हूँ जिनको मैंने उस समय देखा था जब कि मैं आत्मा में विलीन था; और उन सब बा-  
तों को जिन्हें मैंने देखा पर नहीं लिखा, उन बातों को जिन्हें मैंने लिखा है सत्य हैं । और यह सच है । आमीन ।

And also others who have been, to them hath he shown all things, and they have written them; and they are sealed up to come forth in their purity, ac-  
cording to the truth which is in the Lamb, in the own due time of the Lord, unto the house of Israel.

And I, Nephi, heard and bear record, that the name of the apostle of the Lamb was John, according to the word of the angel.

And behold, I, Nephi, am forbidden that I should write the remainder of the things which I saw and heard; wherefore the things which I have written sufficeth me; and I have written but a small part of the things which I saw.

And I bear record that I saw the things which my father saw, and the angel of the Lord did make them known unto me.

And now I make an end of speaking concerning the things which I saw while I was carried away in the Spirit; and if all the things which I saw are not written, the things which I have written are true. And thus it is. Amen.

## 1 नफी 15

- 1 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी आत्मा में विलीन होकर, और इन सब बातों को देखने के पश्चात्, मैं अपने पिता के तंबू में वापस लौटा ।
- 2 और ऐसा हुआ कि मैंने अपने भाइयों को देखा, और वे उन बातों के संबंध में एक दूसरे से विवाद कर रहे थे जो मेरे पिता ने उनको कही थीं ।
- 3 क्योंकि उन्होंने वास्तव में उनसे अनेक ऐसी महान बातें कही थीं, जिन्हें समझना कठिन था, जब तक मनुष्य प्रभु से न पूछे; और क्योंकि वे अपने हृदयों में कठोर थे, इसलिए उन्होंने प्रभु से नहीं पूछा जैसा कि उन्हें करना चाहिए था ।
- 4 और अब मैं, नफी, उनके हृदयों की कठोरता के कारण दुखी था, और उन बातों के कारण भी जो मैंने देखी थी, और जानता था कि मानव संतान की बड़ी दुष्टता के कारण वे निश्चितरूप से पूरी होंगी ।
- 5 और ऐसा हुआ कि मैं अपने दुखों के कारण व्याकुल था, क्योंकि मैं अपने कष्टों को अन्य सब से बड़ा समझता था, अपने लोगों के विनाश के कारण, क्योंकि मैंने उनका पतन देखा था ।
- 6 और ऐसा हुआ कि मैंने कुछ शक्ति पाने के पश्चात् मैंने अपने भाइयों से उनके विवाद का कारण जानने की इच्छा से बात की ।
- 7 और उन्होंने कहा: देखो, हम उन शब्दों को समझ नहीं पा रहे हैं जो हमारे पिता ने जैतून की प्राकृतिक शाखाओं और अन्यजातियों के संबंध में कही हैं ।
- 8 और मैंने उनसे कहा: क्या तुमने प्रभु से पूछा है ?
- 9 और उन्होंने मुझसे कहा: हमने नहीं पूछा; क्योंकि प्रभु ऐसी बातों की जानकारी हमें नहीं देता ।
- 10 देखो, मैंने उनसे कहा: ऐसा क्यों है कि तुम प्रभु की आज्ञाओं का पालन नहीं करते ? ऐसा क्यों है कि तुम अपने हृदयों की कठोरता के कारण नष्ट हो जाओगे ?
- 11 क्या तुम्हें वे बातें याद नहीं हैं जो प्रभु ने कही थीं ?—यदि तुम अपने हृदयों को कठोर नहीं करो, और मुझसे विश्वास में पूछो, इस आशा से कि तुम्हें उत्तर मिलेगा, लगन के साथ मेरी आज्ञाओं का पालन करो, निश्चितरूप से तुम्हें इन बातों की जानकारी दी जाएगी ।

## 1 Nephi 15

And it came to pass that after I, Nephi, had been carried away in the Spirit, and seen all these things, I returned to the tent of my father.

And it came to pass that I beheld my brethren, and they were disputing one with another concerning the things which my father had spoken unto them.

For he truly spake many great things unto them, which were hard to be understood, save a man should inquire of the Lord; and they being hard in their hearts, therefore they did not look unto the Lord as they ought.

And now I, Nephi, was grieved because of the hardness of their hearts, and also, because of the things which I had seen, and knew they must unavoidably come to pass because of the great wickedness of the children of men.

And it came to pass that I was overcome because of my afflictions, for I considered that mine afflictions were great above all, because of the destruction of my people, for I had beheld their fall.

And it came to pass that after I had received strength I spake unto my brethren, desiring to know of them the cause of their disputations.

And they said: Behold, we cannot understand the words which our father hath spoken concerning the natural branches of the olive tree, and also concerning the Gentiles.

And I said unto them: Have ye inquired of the Lord?

And they said unto me: We have not; for the Lord maketh no such thing known unto us.

Behold, I said unto them: How is it that ye do not keep the commandments of the Lord? How is it that ye will perish, because of the hardness of your hearts?

Do ye not remember the things which the Lord hath said?—If ye will not harden your hearts, and ask me in faith, believing that ye shall receive, with diligence in keeping my commandments, surely these things shall be made known unto you.

- 12 देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, कि इस्राएल के घराने की तुलना जैतून के वृक्ष से प्रभु की आत्मा द्वारा की गई है जो कि हमारे पिता में थी, और देखो, क्या हमें इस्राएल के घराने से अलग नहीं किया गया है, और क्या हम इस्राएल के घराने की शाखा नहीं हैं ?
- 13 और अब प्राकृतिक शाखाओं को कलम करके अन्यजातियों की पूर्णता के लिए लगाने से हमारे पिता का अर्थ है कि अंतिम दिनों में, जब हमारे वंश अविश्वास में विलीन हो जाएंगे, हां, कई वर्षों और कई पीढ़ियों के पश्चात मसीहा मानव संतान के बीच शरीर में प्रकट होगा, तब मसीहा के सुसमाचार की पूर्णता अन्यजातियों के पास आएगी, और अन्यजातियों से हमारे वंश के अवशेषों के पास—
- 14 और उस दिन हमारे वंश के अवशेषों को पता चलेगा कि वे इस्राएल के घराने के हैं, और वे प्रभु के अनुबंधित लोग हैं; और तब उनको अपने पूर्वजों की और मुक्तिदाता के सुसमाचार की भी जानकारी होगी, जिसका उपदेश उसने उनके पूर्वजों को दिया था; इसलिए, उन्हें अपने मुक्तिदाता और उसके सिद्धांत के उन विषयों की जानकारी होगी, ताकि वे जान सकें कि कैसे उसके पास जाएं और बचाए जाएं ।
- 15 और उस दिन क्या वे आनंद नहीं मनाएंगे और अपने अनंत परमेश्वर जो उनकी चट्टान और उनका उद्धार है, की प्रशंसा नहीं करेंगे ? हां, उस दिन क्या सच्ची दाखलता से बल और पोषण नहीं प्राप्त करेंगे ? हां, क्या वे परमेश्वर के सच्चे झुंड में नहीं आएंगे ?
- 16 देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, हां; वे इस्राएल के घराने में फिर से याद किये जाएंगे, वे जैतून की प्राकृतिक शाखा के होते हुए सच्चे जैतून के वृक्ष में कलम करके लगाए जाएंगे ।
- 17 और यह हमारे पिता के कहने का अर्थ है; और उनके कहने का अर्थ ऐसा तब तक नहीं होगा जब तक वे अन्यजातियों द्वारा बिखेर न दिए जाएं; और उनके कहने का अर्थ है कि यह काम अन्यजातियों द्वारा होगा, कि प्रभु अपनी शक्ति अन्यजातियों को दिखाएगा, इसी कारणवश वह यहूदियों द्वारा या इस्राएल के घराने द्वारा अस्वीकार किया जाएगा ।

Behold, I say unto you, that the house of Israel was compared unto an olive tree, by the Spirit of the Lord which was in our father; and behold are we not broken off from the house of Israel, and are we not a branch of the house of Israel?

And now, the thing which our father meaneth concerning the grafting in of the natural branches through the fulness of the Gentiles, is, that in the latter days, when our seed shall have dwindled in unbelief, yea, for the space of many years, and many generations after the Messiah shall be manifested in body unto the children of men, then shall the fulness of the gospel of the Messiah come unto the Gentiles, and from the Gentiles unto the remnant of our seed—

And at that day shall the remnant of our seed know that they are of the house of Israel, and that they are the covenant people of the Lord; and then shall they know and come to the knowledge of their forefathers, and also to the knowledge of the gospel of their Redeemer, which was ministered unto their fathers by him; wherefore, they shall come to the knowledge of their Redeemer and the very points of his doctrine, that they may know how to come unto him and be saved.

And then at that day will they not rejoice and give praise unto their everlasting God, their rock and their salvation? Yea, at that day, will they not receive the strength and nourishment from the true vine? Yea, will they not come unto the true fold of God?

Behold, I say unto you, Yea; they shall be remembered again among the house of Israel; they shall be grafted in, being a natural branch of the olive tree, into the true olive tree.

And this is what our father meaneth; and he meaneth that it will not come to pass until after they are scattered by the Gentiles; and he meaneth that it shall come by way of the Gentiles, that the Lord may show his power unto the Gentiles, for the very cause that he shall be rejected of the Jews, or of the house of Israel.

- 18 इसलिए, हमारे पिता ने केवल हमारे वंशों के बारे में ही नहीं कहा, लेकिन इस्राएल के पूरे घराने के बारे में भी कहा, उस अनुबंध की ओर इशारा करते हुए कहा जो अंतिम दिनों में पूरा किया जाएगा; जो अनुबंध प्रभु ने हमारे पिता इब्राहीम से, यह कहते हुए बनाया था: तुम्हारे वंशों द्वारा पृथ्वी की सारी जातियां आशीषित होंगी।
- 19 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, उनसे इन बातों के संबंध में बहुत कुछ कहा; हां, मैंने उनसे अंतिम दिनों में यहूदियों की पुनःस्थापना के विषय में कहा।
- 20 और मैंने उनको यशायाह के शब्दों को सुनाया, जिसने यहूदियों, या इस्राएल के घराने के पुनःस्थापना के संबंध में कहा था; उनके पुनःस्थापित होने के पश्चात् वे दुबारा तंग नहीं किये जाएंगे और न ही वे फिर से बिखरे जाएंगे। और ऐसा हुआ कि मैंने अपने भाइयों से बहुत सी अन्य बातें भी कहीं, जिससे कि वे शांत हो गए और अपने आपको प्रभु के सामने दीन बना लिया।
- 21 और ऐसा हुआ कि उन्होंने मुझसे फिर कहा: जो बात हमारे पिता ने सपने में देखी थी उसका क्या अर्थ है? जो वृक्ष उन्होंने देखा था उसका क्या अर्थ है?
- 22 और मैंने उनसे कहा: वह जीवन के वृक्ष का प्रतीक था।
- 23 और उन्होंने मुझसे कहा: लोहे की छड़ जिसे हमारे पिता ने देखा, जो कि वृक्ष तक गई थी, उसका क्या अर्थ है?
- 24 और मैंने उनसे कहा कि वह परमेश्वर का वचन था: और जो कोई परमेश्वर के वचन को सुनेगा, और उन पर कायम रहेगा, वे कभी नष्ट नहीं होंगे; न ही शत्रु के प्रलोभन और जलते गर्म तीर अंधा करके उन पर विजय प्राप्त कर, उन्हें विनाश के लिए ले जा सकेंगे।
- 25 इसलिए, मैं, नफी ने, उन्हें प्रभु के वचन पर ध्यान देने का उपदेश दिया; हां, मैंने अपनी आत्मा की सारी शक्ति, और सारी योग्यता जो मेरे पास थी के साथ उनसे आग्रह किया, कि वे परमेश्वर के वचन पर ध्यान दें और उसकी आज्ञाओं का हर समय और हर बातों में पालन करें।
- 26 और उन्होंने मुझसे कहा: हमारे पिता ने जो नदी देखी थी, उसका क्या अर्थ है?
- 27 और मैंने उनसे कहा कि जो जल मेरे पिता ने देखा था वह गंदा था; और उनका मन अन्य बातों में इतना उलझा हुआ था कि वे जल की गंदगी देख नहीं पाए।

Wherefore, our father hath not spoken of our seed alone, but also of all the house of Israel, pointing to the covenant which should be fulfilled in the latter days; which covenant the Lord made to our father Abraham, saying: In thy seed shall all the kindreds of the earth be blessed.

And it came to pass that I, Nephi, spake much unto them concerning these things; yea, I spake unto them concerning the restoration of the Jews in the latter days.

And I did rehearse unto them the words of Isaiah, who spake concerning the restoration of the Jews, or of the house of Israel; and after they were restored they should no more be confounded, neither should they be scattered again. And it came to pass that I did speak many words unto my brethren, that they were pacified and did humble themselves before the Lord.

And it came to pass that they did speak unto me again, saying: What meaneth this thing which our father saw in a dream? What meaneth the tree which he saw?

And I said unto them: It was a representation of the tree of life.

And they said unto me: What meaneth the rod of iron which our father saw, that led to the tree?

And I said unto them that it was the word of God; and whoso would hearken unto the word of God, and would hold fast unto it, they would never perish; neither could the temptations and the fiery darts of the adversary overpower them unto blindness, to lead them away to destruction.

Wherefore, I, Nephi, did exhort them to give heed unto the word of the Lord; yea, I did exhort them with all the energies of my soul, and with all the faculty which I possessed, that they would give heed to the word of God and remember to keep his commandments always in all things.

And they said unto me: What meaneth the river of water which our father saw?

And I said unto them that the water which my father saw was filthiness; and so much was his mind swallowed up in other things that he beheld not the filthiness of the water.

- 28 और मैंने उनसे कहा कि वह एक भयानक खाई थी, जो दुष्टों को जीवन के वृक्ष, और परमेश्वर के संतो से भी अलग करती थी।
- 29 और मैंने उनसे कहा कि वह उस भयंकर नरक का प्रतीक थी, जिसे स्वर्गदूत ने मुझ से कहा कि दुष्ट के लिए तैयार किया गया था।
- 30 और मैंने उनसे कहा कि हमारे पिता ने यह भी देखा था कि परमेश्वर का न्याय भी दुष्टों को धर्मियों से अलग करता है: और उसकी चमक जलती हुई आग के समान थी, जो परमेश्वर तक हमेशा और सदा के लिए ऊपर जाती है, और जिसका अंत नहीं है।
- 31 और उन्होंने मुझसे कहा: क्या इस बात का अर्थ परीक्षा के दिनों में शरीर की यातना है, या क्या इसका अर्थ पार्थिव शरीर की मृत्यु के बाद आत्मा की अंतिम अवस्था है, या क्या यह पार्थिव बातों के विषय में बताती है ?
- 32 और ऐसा हुआ कि मैंने उनसे कहा कि यह पार्थिव और आत्मिक दोनों बातों का प्रतीक है; क्योंकि वह दिन आएगा जब कि उनका न्याय उनके कर्मों के अनुसार किया जाएगा; हां, वे कर्म भी जो पार्थिव शरीर द्वारा उनके परीक्षा के दिनों में किये गए थे।
- 33 इसलिए, यदि वे अपनी दुष्टता में मरते हैं तब उन्हें बाहर कर दिया जाना चाहिए, वे बातें जो आत्मिक हैं, जो धार्मिकता से संबंध रखती हैं; इसलिए, उन्हें परमेश्वर के सामने खड़ा किया जाना चाहिए, उनके कर्मों का न्याय करने के लिए; और यदि उनके कर्म गंदे रहे हैं तब उन्हें गंदे ही रहना चाहिए; और यदि वे गंदे रहते हैं तो यह जरूरी है कि वे परमेश्वर के राज्य में निवास नहीं कर सकते; यदि ऐसा होता है, तो परमेश्वर का राज्य भी गंदा हो जाएगा।
- 34 लेकिन देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि परमेश्वर का राज्य गंदा नहीं है, और परमेश्वर के राज्य में कोई भी गंदी वस्तु प्रवेश नहीं कर सकती; इसलिए गंद के लिए गंदगी का एक स्थान तैयार किया जाना चाहिए।
- 35 और एक स्थान तैयार किया गया है, हां, वह भयंकर नरक जिसके विषय में मैंने कहा है, और शैतान इसका तैयार करने वाला है; इसलिए मनुष्य की आत्मा अंतिम अवस्था में परमेश्वर के राज्य में निवास करती है, या फिर उस न्याय के कारण जिसके विषय में मैंने कहा है, बाहर निकाल दी जाती है।

And I said unto them that it was an awful gulf, which separated the wicked from the tree of life, and also from the saints of God.

And I said unto them that it was a representation of that awful hell, which the angel said unto me was prepared for the wicked.

And I said unto them that our father also saw that the justice of God did also divide the wicked from the righteous; and the brightness thereof was like unto the brightness of a flaming fire, which ascendeth up unto God forever and ever, and hath no end.

And they said unto me: Doth this thing mean the torment of the body in the days of probation, or doth it mean the final state of the soul after the death of the temporal body, or doth it speak of the things which are temporal?

And it came to pass that I said unto them that it was a representation of things both temporal and spiritual; for the day should come that they must be judged of their works, yea, even the works which were done by the temporal body in their days of probation.

Wherefore, if they should die in their wickedness they must be cast off also, as to the things which are spiritual, which are pertaining to righteousness; wherefore, they must be brought to stand before God, to be judged of their works; and if their works have been filthiness they must needs be filthy; and if they be filthy it must needs be that they cannot dwell in the kingdom of God; if so, the kingdom of God must be filthy also.

But behold, I say unto you, the kingdom of God is not filthy, and there cannot any unclean thing enter into the kingdom of God; wherefore there must needs be a place of filthiness prepared for that which is filthy.

And there is a place prepared, yea, even that awful hell of which I have spoken, and the devil is the preparator of it; wherefore the final state of the souls of men is to dwell in the kingdom of God, or to be cast out because of that justice of which I have spoken.

36      इसलिए, दुष्ट को धर्मी से अलग कर दिया गया है, और उस जीवन के वृक्ष से भी, जिसके फल अन्य फलों से अधिक मूल्यवान और वांछित हैं; हां, और वह परमेश्वर द्वारा दिए गए सभी उपहारों से सर्वोत्तम है, और मैंने अपने भाइयों से ऐसा कहा था । आमीन ।

Wherefore, the wicked are rejected from the righteous, and also from that tree of life, whose fruit is most precious and most desirable above all other fruits; yea, and it is the greatest of all the gifts of God. And thus I spake unto my brethren. Amen.



## 1 नफी 16

- 1 और ऐसा हुआ कि जब मैं, नफी ने, अपने भाइयों से बोलना समाप्त किया, तब देखो, उन्होंने मुझसे कहा: तुमने हमसे, जितना हम सह सकते हैं उसके अधिक कठोर बातों की घोषणा की है।
- 2 और ऐसा हुआ कि मैंने उनसे कहा कि मैं यह जानता था कि मैंने दुष्टों के विरुद्ध सत्य के अनुसार कठोर बातें कही थी; और धर्मों को मैंने उचित कहा था, और गवाही दी थी कि वे अंतिम समय में उत्कर्ष पाएंगे; इसलिए, अपराधी सत्य को कठोर मानते हैं, क्योंकि यह उन्हें मध्य से काटती है।
- 3 और अब मेरे भाइयों, यदि तुम धर्मों होते और सत्य को सुनने के इच्छुक होते, और उस पर ध्यान देते, कि तुम परमेश्वर के सामने सिर ऊंचा करके चल सकते, तब तुम सत्य के कारण बड़बड़ाते नहीं, और नहीं कहते: तुम हमारे विरुद्ध कठोर बातें कहते हो।
- 4 और मैं, नफी ने, अपने भाइयों को प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने के लिए संपूर्ण परिश्रम के साथ उपदेश दिया।
- 5 और ऐसा हुआ कि उन्होंने प्रभु के सामने अपने आपको इतना दीन बना लिया कि मुझे खुशी हुई और उनसे बहुत आशा हुई, कि वे धार्मिकता के मार्गों पर चलेंगे।
- 6 अब, ये सब बातें और की गई थीं जब मेरे पिता एक तंबू में उस घाटी में रहते थे जिसे उन्होंने लेमुएल की घाटी कहा था।
- 7 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, इश्माइल की बेटियों में से एक को अपनी पत्नी बना लिया; और मेरे भाइयों ने भी इश्माएल की बेटियों को पत्नी बना लिया; और जोराम ने भी इश्माएल की सबसे बड़ी बेटी को पत्नी बना लिया।
- 8 और इस प्रकार मेरे पिता ने प्रभु की उन सभी आज्ञाओं का पालन किया जो उन्हें दी गई थी। और मुझ, नफी को, भी प्रभु द्वारा अत्याधिक आशीर्षित किया गया।
- 9 और ऐसा हुआ कि प्रभु की वाणी ने मेरे पिता से रात को बातें कीं, और उन्हें आज्ञा दी कि वह अगले दिन निर्जन प्रदेश में यात्रा करें।

## 1 Nephi 16

And now it came to pass that after I, Nephi, had made an end of speaking to my brethren, behold they said unto me: Thou hast declared unto us hard things, more than we are able to bear.

And it came to pass that I said unto them that I knew that I had spoken hard things against the wicked, according to the truth; and the righteous have I justified, and testified that they should be lifted up at the last day; wherefore, the guilty taketh the truth to be hard, for it cutteth them to the very center.

And now my brethren, if ye were righteous and were willing to hearken to the truth, and give heed unto it, that ye might walk uprightly before God, then ye would not murmur because of the truth, and say: Thou speakest hard things against us.

And it came to pass that I, Nephi, did exhort my brethren, with all diligence, to keep the commandments of the Lord.

And it came to pass that they did humble themselves before the Lord; insomuch that I had joy and great hopes of them, that they would walk in the paths of righteousness.

Now, all these things were said and done as my father dwelt in a tent in the valley which he called Lemuel.

And it came to pass that I, Nephi, took one of the daughters of Ishmael to wife; and also, my brethren took of the daughters of Ishmael to wife; and also Zoram took the eldest daughter of Ishmael to wife.

And thus my father had fulfilled all the commandments of the Lord which had been given unto him. And also, I, Nephi, had been blessed of the Lord exceedingly.

And it came to pass that the voice of the Lord spake unto my father by night, and commanded him that on the morrow he should take his journey into the wilderness.

- 10 और ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता सुबह उठे, और तंबू के द्वार पर पहुंचे, वहां विशिष्ट कारीगरी की एक गोल गेंद देख कर उन्हें बहुत अचंभा हुआ; और यह उत्तम पीतल की बनी थी। और उस गेंद के अंदर दो धुरियां थी; उनमें से एक बताती थी कि निर्जन प्रदेश में हमें किस मार्ग पर जाना चाहिए।
- 11 और ऐसा हुआ कि हमने उन सब वस्तुओं को एकत्रित किया जिन्हें लेकर हमें निर्जन प्रदेश जाना चाहिए, और प्रभु द्वारा हमें दी गई शेष सारी खाद्य सामग्री को; और हर प्रकार के बीजों को लिया जिसे हम निर्जन प्रदेश में ले जा सकते थे।
- 12 और ऐसा हुआ कि हमने अपने तंबुओं को लिया और लमान नदी के पार निर्जन प्रदेश में रवाना हो गए।
- 13 और ऐसा हुआ कि हम चार दिनों तक, लगभग दक्षिण-दक्षिण पूर्व दिशा की ओर चलते रहे, और हमने फिर अपने तंबुओं को लगाया; और हमने उस स्थान का नाम शाजर रखा।
- 14 और ऐसा हुआ कि हमने अपने धनुषों और अपने बाणों को लिया, और निर्जन प्रदेश में अपने परिवार के भोजन के लिए शिकार करने निकले; और भोजन के लिए शिकार मारने के बाद हम निर्जन प्रदेश में अपने परिवार के पास शाजर नामक स्थान वापस लौटे। और हम फिर निर्जन प्रदेश में उसी दिशा में आगे बढ़े, निर्जन प्रदेश के अत्याधिक उपजाऊ भाग से होते हुए, जो कि लाल सागर की सीमा के निकट था।
- 15 और ऐसा हुआ कि मार्ग में अपने धनुषों और अपने बाणों, और अपने पत्थरों और अपनी गुल्लियों से, भोजन के लिए शिकार करते हुए, हमने कई दिनों तक यात्रा की।
- 16 और हमने गेंद की दिशाओं का पालन किया, जो कि हमें निर्जन प्रदेश के अधिक उपजाऊ भाग में ले गयीं।
- 17 और कई दिनों की यात्रा करने के पश्चात्, हमने अपने तंबुओं को कुछ समय के लिए लगाया, ताकि हम अपने आप को आराम दे सकें और अपने परिवारों के लिए भोजन प्राप्त कर सकें।
- 18 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी, जब भोजन के लिए शिकार मारने गया, देखो, मुझ से मेरा धनुष टूट गया, जो कि उत्तम इस्पात का बना था; देखो, मेरे भाई मेरे धनुष के नुकसान के कारण मुझ पर क्रोधित हो गए, क्योंकि हम भोजन प्राप्त नहीं कर पाए थे।

And it came to pass that as my father arose in the morning, and went forth to the tent door, to his great astonishment he beheld upon the ground a round ball of curious workmanship; and it was of fine brass. And within the ball were two spindles; and the one pointed the way whither we should go into the wilderness.

And it came to pass that we did gather together whatsoever things we should carry into the wilderness, and all the remainder of our provisions which the Lord had given unto us; and we did take seed of every kind that we might carry into the wilderness.

And it came to pass that we did take our tents and depart into the wilderness, across the river Laman.

And it came to pass that we traveled for the space of four days, nearly a south-southeast direction, and we did pitch our tents again; and we did call the name of the place Shazer.

And it came to pass that we did take our bows and our arrows, and go forth into the wilderness to slay food for our families; and after we had slain food for our families we did return again to our families in the wilderness, to the place of Shazer. And we did go forth again in the wilderness, following the same direction, keeping in the most fertile parts of the wilderness, which were in the borders near the Red Sea.

And it came to pass that we did travel for the space of many days, slaying food by the way, with our bows and our arrows and our stones and our slings.

And we did follow the directions of the ball, which led us in the more fertile parts of the wilderness.

And after we had traveled for the space of many days, we did pitch our tents for the space of a time, that we might again rest ourselves and obtain food for our families.

And it came to pass that as I, Nephi, went forth to slay food, behold, I did break my bow, which was made of fine steel; and after I did break my bow, behold, my brethren were angry with me because of the loss of my bow, for we did obtain no food.

- 19 और ऐसा हुआ कि हम बिना भोजन प्राप्त किये ही अपने परिवारों के पास वापस लौटे, और यात्रा करने से थके होने के कारण, बिना भोजन के उनको बहुत कष्ट हुआ ।
- 20 और ऐसा हुआ कि निर्जन प्रदेश में कष्टों और परेशानियों के कारण लमान और लेमुएल और इश्माएल के बेटे अत्याधिक बड़बड़ाने लगे; और मेरे पिता ने भी प्रभु अपने परमेश्वर के विरुद्ध बड़बड़ाना शुरू कर दिया; और हां, वे सभी अत्याधिक दुखी थे, वे इतने दुःखी थे कि वे प्रभु के विरुद्ध भी बड़बड़ाने लगे ।
- 21 और ऐसा हुआ कि मुझ, नफी, को अपने धनुष के नुकसान के कारण अपने भाइयों से कष्ट पहुंचा, और उनके धनुष का लचीलापन खोने से, यह अत्याधिक असहनीय हो गया था, हां, इतना अधिक कि हम भोजन प्राप्त न कर सके ।
- 22 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने भाइयों से बहुत बातें की, क्योंकि उन्होंने फिर से अपने हृदयों को इतना कठोर बना लिया कि वे प्रभु अपने परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत करने लगे ।
- 23 और तब ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, लकड़ी का एक धनुष, और सीधी लकड़ी से, तीर बनाया; इस प्रकार मैंने धनुष और तीर, गुलेल और पत्थरों से अपने आपको लैस किया । और मैंने अपने पिता से पूछा: भोजन प्राप्त करने मैं किधर जाऊं ?
- 24 और ऐसा हुआ कि उन्होंने प्रभु से पूछा, क्योंकि मेरे शब्दों से उन्होंने अपने आप को विनम्र बना लिया था; और क्योंकि मैंने अपनी आत्मा की शक्ति से उन्हें बहुत सी बातें कही थी ।
- 25 और ऐसा हुआ कि प्रभु की वाणी मेरे पिता ने सुनी; और उन्हें प्रभु के विरुद्ध बड़बड़ाने के कारण सचमुच में दंड दिया गया, इतना अधिक कि वह दुख की गहराइयों में डूब गए ।
- 26 और ऐसा हुआ कि प्रभु की वाणी ने उनसे कहा: गेंद की ओर नजरें उठाओ, और उन बातों को देखो जो वहां लिखी हैं ।
- 27 और ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता ने गेंद पर लिखी हुई बातों को देखा, तब वह भयभीत हो गए और अत्याधिक कांपने लगे, और मेरे भाई और इश्माएल के बेटे और हमारी पत्नियां भी ।
- 28 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, गेंद में लगी सुइयों को देखा जो कि वे हमारे विश्वास और परिश्रम और हमारे उन पर ध्यान देने के अनुसार कार्य करती थीं ।

And it came to pass that we did return without food to our families, and being much fatigued, because of their journeying, they did suffer much for the want of food.

And it came to pass that Laman and Lemuel and the sons of Ishmael did begin to murmur exceedingly, because of their sufferings and afflictions in the wilderness; and also my father began to murmur against the Lord his God; yea, and they were all exceedingly sorrowful, even that they did murmur against the Lord.

Now it came to pass that I, Nephi, having been afflicted with my brethren because of the loss of my bow, and their bows having lost their springs, it began to be exceedingly difficult, yea, insomuch that we could obtain no food.

And it came to pass that I, Nephi, did speak much unto my brethren, because they had hardened their hearts again, even unto complaining against the Lord their God.

And it came to pass that I, Nephi, did make out of wood a bow, and out of a straight stick, an arrow; wherefore, I did arm myself with a bow and an arrow, with a sling and with stones. And I said unto my father: Whither shall I go to obtain food?

And it came to pass that he did inquire of the Lord, for they had humbled themselves because of my words; for I did say many things unto them in the energy of my soul.

And it came to pass that the voice of the Lord came unto my father; and he was truly chastened because of his murmuring against the Lord, insomuch that he was brought down into the depths of sorrow.

And it came to pass that the voice of the Lord said unto him: Look upon the ball, and behold the things which are written.

And it came to pass that when my father beheld the things which were written upon the ball, he did fear and tremble exceedingly, and also my brethren and the sons of Ishmael and our wives.

And it came to pass that I, Nephi, beheld the pointers which were in the ball, that they did work according to the faith and diligence and heed which we did give unto them.

- 29 और उन पर नया निर्देश भी लिखा हुआ था, जो पढ़ने में सरल था, जो हमें प्रभु के मार्गों के संबंध में समझ देता था; और यह इन पर हमारे विश्वास और परिश्रम करने के अनुसार समय समय पर लिखा और बदला जाता था। और इस प्रकार हम देखते हैं कि थोड़े से साधन के द्वारा प्रभु महान कार्य कर सकता है।
- 30 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी, उस गेंद पर दिए गए निर्देशों के अनुसार पर्वत की चोटी पर गया।
- 31 और ऐसा हुआ कि मैंने इतने अधिक जंगली जानवरों को मारा कि मैंने अपने परिवारों के लिए भोजन प्राप्त किया।
- 32 और ऐसा हुआ कि मैं उन जानवरों के साथ अपने तंबूओं को लौटा जिन्हें मैंने मारा था; और जब उन्होंने देखा कि मैंने भोजन प्राप्त कर लिया है, उनकी खुशी बहुत महान थी! और ऐसा हुआ कि उन्होंने अपने आपको प्रभु के सामने दीन बना लिया, और उसका धन्यवाद दिया।
- 33 और ऐसा हुआ कि हमने फिर से उसी दिशा की ओर यात्रा की और कई दिनों के पश्चात हमने अपने तंबूओं को लगाया जिससे हम वहां कुछ समय तक रहें।
- 34 और ऐसा हुआ कि इश्माएल की मृत्यु हो गई, और उस स्थान पर दफनाया गया जिसे नाहूम कहते थे।
- 35 और ऐसा हुआ कि उनके पिता के मरने और जंगल में कष्ट झेलने के कारण इश्माएल की बेटियों को बहुत शोक हुआ और यरूशलेम से उन्हें लाने के कारण वे यह कहते हुए मेरे पिता के विरुद्ध बड़बड़ाई: हमारे पिता मर गए, और हां, हम इस निर्जन प्रदेश में बहुत भटक चुकी हैं, और हमने बहुत कष्ट, भूख, प्यास और थकान को सहा है; और इन सब कष्टों को सहते हुए हम इस निर्जन प्रदेश में भूख से नष्ट हो जाएंगे।
- 36 और इस प्रकार वे मेरे पिता के विरुद्ध बड़बड़ करती, और मेरे विरुद्ध भी; और वे फिर से यरूशलेम लौटना चाहती थी।
- 37 और लमान ने लेमुएल और इश्माएल के बेटों से भी कहा: देखो, हम अपने पिता को मार डालें और अपने भाई नफी को भी, जिसने अपने आपको हमारा शासक और शिक्षक बना लिया है, हम जो कि उसके बड़े भाई हैं।

And there was also written upon them a new writing, which was plain to be read, which did give us understanding concerning the ways of the Lord; and it was written and changed from time to time, according to the faith and diligence which we gave unto it. And thus we see that by small means the Lord can bring about great things.

And it came to pass that I, Nephi, did go forth up into the top of the mountain, according to the directions which were given upon the ball.

And it came to pass that I did slay wild beasts, in-somuch that I did obtain food for our families.

And it came to pass that I did return to our tents, bearing the beasts which I had slain; and now when they beheld that I had obtained food, how great was their joy! And it came to pass that they did humble themselves before the Lord, and did give thanks unto him.

And it came to pass that we did again take our journey, traveling nearly the same course as in the beginning; and after we had traveled for the space of many days we did pitch our tents again, that we might tarry for the space of a time.

And it came to pass that Ishmael died, and was buried in the place which was called Nahom.

And it came to pass that the daughters of Ishmael did mourn exceedingly, because of the loss of their father, and because of their afflictions in the wilderness; and they did murmur against my father, because he had brought them out of the land of Jerusalem, saying: Our father is dead; yea, and we have wandered much in the wilderness, and we have suffered much affliction, hunger, thirst, and fatigue; and after all these sufferings we must perish in the wilderness with hunger.

And thus they did murmur against my father, and also against me; and they were desirous to return again to Jerusalem.

And Laman said unto Lemuel and also unto the sons of Ishmael: Behold, let us slay our father, and also our brother Nephi, who has taken it upon him to be our ruler and our teacher, who are his elder brethren.

38 अब वह कहता है कि प्रभु ने उससे बातें की है, और कि स्वर्गदूतों ने भी उसे उपदेश दिए हैं, लेकिन देखो, हम जानते हैं कि वह हमसे झूठ बोलता है; और वह हमसे इन बातों को कहता, और अपने धूर्त कामों के द्वारा, कि वह हमारी आंखों में धूल झोंक कर, सोचता है, शायद, वह हमें किसी अनजान निर्जन प्रदेश ले जाएगा; और हमें दूर ले जाने के पश्चात, उसने अपने आपको हमारा राजा और शासक बनाने का विचार किया है, कि वह हमारे साथ अपनी इच्छा और सुख के अनुसार राज करे। और इस तरह से मेरे भाई लमान ने उनके हृदयों में क्रोध उत्पन्न किया।

39 और ऐसा हुआ कि प्रभु हमारे साथ था, हां, यहां तक कि प्रभु का शब्द उन पर हुआ और उनसे बहुत बातें कहीं, और उन्हें अत्याधिक दंडित किया; और उन्हें प्रभु की वाणी द्वारा दंडित किये जाने के पश्चात उन्होंने अपने गुस्से को शांत किया, और अपने पापों के लिए इतना पश्चाताप किया कि प्रभु ने हमें दोबारा भोजन से आशीषित किया, कि हम नष्ट नहीं हुए।

Now, he says that the Lord has talked with him, and also that angels have ministered unto him. But behold, we know that he lies unto us; and he tells us these things, and he worketh many things by his cunning arts, that he may deceive our eyes, thinking, perhaps, that he may lead us away into some strange wilderness; and after he has led us away, he has thought to make himself a king and a ruler over us, that he may do with us according to his will and pleasure. And after this manner did my brother Laman stir up their hearts to anger.

And it came to pass that the Lord was with us, yea, even the voice of the Lord came and did speak many words unto them, and did chasten them exceedingly; and after they were chastened by the voice of the Lord they did turn away their anger, and did repent of their sins, insomuch that the Lord did bless us again with food, that we did not perish.

## 1 नफी 17

- 1 और ऐसा हुआ कि हमने निर्जन प्रदेश में फिर से अपनी यात्रा की; और इस समय के बाद हमने लगभग पूर्व दिशा की ओर यात्रा की। और हमने यात्रा की और निर्जन प्रदेश में बहुत कष्टों को पार किया; और हमारी स्त्रियों ने निर्जन प्रदेश में बच्चों को जन्म दिया।
- 2 और प्रभु की आशीर्षों हमारे ऊपर इतनी महान थी, कि निर्जन प्रदेश में रहने के दौरान हम कच्चे मांस पर गुजारा करते थे, हमारी स्त्रियों ने अपने बच्चों को बहुतायात से दूध पिलाया था, और सशक्त थीं, हां, पुरुषों के समान; और उन्होंने अपनी यात्रा बिना बड़बड़ाए शुरू की।
- 3 और इस प्रकार हमने देखा कि परमेश्वर की आज्ञाओं को पूरा किया जाना चाहिए। और यदि मानव संतान परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करती हैं तो वह उनका पोषण करेगा, और उन्हें ताकत देगा, और उन्हें साधन देगा जिससे वे उन बातों को पूरा कर सकें जिसकी आज्ञा उसने उन्हें दी है; इसलिए निर्जन प्रदेश में हमारे पड़ाव के दौरान उसने हमें साधन दिए थे।
- 4 और हमने उस निर्जन प्रदेश में कई वर्षों तक पड़ाव डाला, हां, आठ वर्षों तक।
- 5 और हम उस भूमि पर पहुंचे जिसे हमने संपन्न प्रदेश कहा था, क्योंकि यहां पर बहुत फल और जंगली शहद भी था; और ये सब वस्तुएं प्रभु ने तैयार की थी ताकि हम नष्ट न हों। और हमने उस समुद्र को देखा, जिसका नाम हमने इरियन्टम रखा, जिसका अर्थ होता है, अत्याधिक पानी।
- 6 और ऐसा हुआ कि हमने समुद्र के किनारे अपने तंबूओं को लगाया; और यद्यपि हमने कई कष्टों और परेशानियों को सहा था, हां, इतना अधिक कि हम उन सब को नहीं लिख सकते, फिर भी हम समुद्र के किनारे पहुंच कर अत्याधिक खुश थे; और फलों की बहुतायत के कारण हमने उस स्थान को संपन्न प्रदेश कहा था।
- 7 और ऐसा हुआ कि जब मैं, नफी, संपन्न प्रदेश की भूमि पर कई दिनों से रहा था, मुझे प्रभु की वाणी यह कहते हुए सुनाई दी: उठो, और तुम पहाड़ पर जाओ। और ऐसा हुआ कि मैं उठा और पहाड़ पर चढ़ गया, और प्रभु को पुकारा।
- 8 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने मुझ से कहा: जैसा मैं तुम्हें दिखाऊंगा उसके अनुसार, तुम एक जहाज बनाओगे, ताकि मैं तुम्हारे लोगों को समुद्र के पार ले जा सकूँ।

## 1 Nephi 17

And it came to pass that we did again take our journey in the wilderness; and we did travel nearly eastward from that time forth. And we did travel and wade through much affliction in the wilderness; and our women did bear children in the wilderness.

And so great were the blessings of the Lord upon us, that while we did live upon raw meat in the wilderness, our women did give plenty of suck for their children, and were strong, yea, even like unto the men; and they began to bear their journeyings without murmurings.

And thus we see that the commandments of God must be fulfilled. And if it so be that the children of men keep the commandments of God he doth nourish them, and strengthen them, and provide means whereby they can accomplish the thing which he has commanded them; wherefore, he did provide means for us while we did sojourn in the wilderness.

And we did sojourn for the space of many years, yea, even eight years in the wilderness.

And we did come to the land which we called Bountiful, because of its much fruit and also wild honey; and all these things were prepared of the Lord that we might not perish. And we beheld the sea, which we called Irreantum, which, being interpreted, is many waters.

And it came to pass that we did pitch our tents by the seashore; and notwithstanding we had suffered many afflictions and much difficulty, yea, even so much that we cannot write them all, we were exceedingly rejoiced when we came to the seashore; and we called the place Bountiful, because of its much fruit.

And it came to pass that after I, Nephi, had been in the land of Bountiful for the space of many days, the voice of the Lord came unto me, saying: Arise, and get thee into the mountain. And it came to pass that I arose and went up into the mountain, and cried unto the Lord.

And it came to pass that the Lord spake unto me, saying: Thou shalt construct a ship, after the manner which I shall show thee, that I may carry thy people across these waters.

- 9 और मैंने कहा: प्रभु, मैं कहां जाऊं कि मुझे पिघलाने के लिए अयस्क प्राप्त हो, ताकि तुम्हारे दिखाए अनुसार जहाज बनाने के लिए मैं औजार बनाऊं ?
- 10 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने मुझे बताया अयस्क प्राप्त करने के लिए मुझे कहां जाना चाहिए, ताकि मैं औजार बनाऊं ।
- 11 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी, ने आग प्रज्वलित करने के लिए जंगली जानवर की खाल से धौंकनी बनाई, और आग को प्रज्वलित करने के लिए धौंकनी बनाने के बाद, मैंने आग जलाने के लिए दो पत्थरों को आपस में टकराया ।
- 12 क्योंकि जब से हम निर्जन प्रदेश में यात्रा कर रहे थे, प्रभु ने अभी तक हमें अधिक आग नहीं जलाने दी थी; क्योंकि उसने कहा था: मैं तुम्हारे भोजन को स्वादिष्ट बनाऊंगा, कि तुम्हें इसे पकाना नहीं पड़ेगा;
- 13 और निर्जन प्रदेश में मैं तुम्हारी ज्योति बनूंगा; और मैं तुम्हारे मार्ग तैयार करूंगा, यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करते हो; क्योंकि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे इसलिए तुम प्रतिज्ञा के प्रदेश की ओर ले जाए जाओगे; और तुम जानोगे कि मैंने तुम्हारा नेतृत्व किया है ।
- 14 हां, और प्रभु ने यह भी कहा कि: जब तुम प्रतिज्ञा के प्रदेश में पहुंच जाओगे, तुम जानोगे कि मैं, प्रभु, परमेश्वर हूँ; और कि मुझ, प्रभु ने, तुम्हें विनाश से बचाया है; हां, कि मैं तुम्हें यरूशलेम की भूमि से निकाल कर लाया था ।
- 15 इसलिए, मैं, नफी ने, प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास किया, और मैंने अपने भाइयों को विश्वसनीयता और परिश्रम के उपदेश दिए थे ।
- 16 और ऐसा हुआ कि मैंने अयस्क से औजार बनाए जिसे मैंने चट्टान से गलाया था ।
- 17 और जब मेरे भाइयों ने देखा कि मैं जहाज बनाने वाला हूँ, वे मेरे विरुद्ध यह कहकर बड़बड़ाते लगे: हमारा भाई पागल है, क्योंकि वह सोचता है कि वह एक जहाज बना सकता है; और हां, वह यह भी सोचता है कि वह इस महान समुद्र को पार सकता है ।
- 18 और इस प्रकार मेरे भाइयों ने मेरे विरुद्ध शिकायत की, और चाहते थे कि वे मेहनत न करें, क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं था कि मैं जहाज बना सकता हूँ; न ही उन्हें विश्वास था कि मुझे प्रभु ने निर्देश दिया था ।

And I said: Lord, whither shall I go that I may find ore to molten, that I may make tools to construct the ship after the manner which thou hast shown unto me?

And it came to pass that the Lord told me whither I should go to find ore, that I might make tools.

And it came to pass that I, Nephi, did make a bellows wherewith to blow the fire, of the skins of beasts; and after I had made a bellows, that I might have wherewith to blow the fire, I did smite two stones together that I might make fire.

For the Lord had not hitherto suffered that we should make much fire, as we journeyed in the wilderness; for he said: I will make thy food become sweet, that ye cook it not;

And I will also be your light in the wilderness; and I will prepare the way before you, if it so be that ye shall keep my commandments; wherefore, inasmuch as ye shall keep my commandments ye shall be led towards the promised land; and ye shall know that it is by me that ye are led.

Yea, and the Lord said also that: After ye have arrived in the promised land, ye shall know that I, the Lord, am God; and that I, the Lord, did deliver you from destruction; yea, that I did bring you out of the land of Jerusalem.

Wherefore, I, Nephi, did strive to keep the commandments of the Lord, and I did exhort my brethren to faithfulness and diligence.

And it came to pass that I did make tools of the ore which I did molten out of the rock.

And when my brethren saw that I was about to build a ship, they began to murmur against me, saying: Our brother is a fool, for he thinketh that he can build a ship; yea, and he also thinketh that he can cross these great waters.

And thus my brethren did complain against me, and were desirous that they might not labor, for they did not believe that I could build a ship; neither would they believe that I was instructed of the Lord.

19 और अब ऐसा हुआ कि, मैं, नफी, उनके हृदयों की कठोरता के कारण अत्याधिक दुखी हो गया था; और अब जब उन्होंने देखा कि मैं दुखी होने लगा हूँ वे अपने हृदयों में खुश थे, वे इतने खुश हुए कि मुझ से बोले: हम जानते थे कि तुम जहाज नहीं बना सकते हो, क्योंकि हम जानते थे कि तुम में समझ की कमी है; इसलिए, तुम इतना महान कार्य नहीं कर सकते हो।

20 और तुम हमारे पिता के समान हो, जो कि अपने हृदय की मूर्ख कल्पनाओं द्वारा काम करते हैं; वह हमें यरूशलेम की भूमि से निकालकर लाए हैं, और हम कई वर्षों से इस निर्जन प्रदेश में भटक रहे हैं; और हमारी स्त्रियों ने बच्चों के बोझ को उठाने में कड़ी मेहनत की है; और उन्होंने इस निर्जन प्रदेश में बच्चों को जन्म दिया है और मृत्यु के सिवाय बाकी सब कष्टों को सहा है; और यह बेहतर होता कि वे यरूशलेम से बाहर निकलने से पहले मर जातीं ताकि उन्हें ये कष्ट न सहने पड़ते।

21 देखो, इतने वर्ष हमने इस निर्जन प्रदेश में कष्ट सहे हैं, यह समय हमें अपनी पैतृक भूमि में अपनी संपत्तियों का उपभोग करते हुए गुजारना चाहिए था; और हां, हम खुश भी रहते।

22 और हम जानते हैं कि जो लोग यरूशलेम में थे वे धर्मी लोग थे; क्योंकि मूसा की व्यवस्था के अनुसार, वे के प्रभु नियमों और निर्देशों, और उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करते थे; इसलिए, हम जानते हैं कि वे धर्मी लोग हैं; और हमारे पिता ने उनका आंकलन किया, और हमें निकाल लाए क्योंकि हमने उनकी बातों को माना; और हां, हमारा भाई उनके समान है। और इस तरह की भाषा का प्रयोग करते हुए मेरे भाई हमारे विरुद्ध बड़बड़ाते और शिकायत करते थे।

23 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी, ने उनसे कहा: क्या तुम हमारे पूर्वजों पर विश्वास करते हो, जो कि इस्राएल की संतान थे, क्या वे मिस्रियों के हाथों से बाहर निकाले जा सकते यदि उन्होंने प्रभु के शब्दों पर ध्यान न दिया होता ?

24 हां, क्या तुम मानते हो कि वे गुलामी से बाहर निकाले जाते, यदि प्रभु मूसा को आदेश न देता कि वह उन्हें गुलामी से बाहर निकाले ?

25 अब तुम जानते हो कि इस्राएल की संतान गुलामी में थी; और तुम जानते हो कि वे कामों के बोझ से लदे हुए थे, जिन्हें सहन करना बहुत कष्टदायक था; इसलिए, तुम जानते हो कि उनका गुलामी से बाहर निकाला जाना, अवश्य ही उनके भले के लिए था।

And now it came to pass that I, Nephi, was exceedingly sorrowful because of the hardness of their hearts; and now when they saw that I began to be sorrowful they were glad in their hearts, insomuch that they did rejoice over me, saying: We knew that ye could not construct a ship, for we knew that ye were lacking in judgment; wherefore, thou canst not accomplish so great a work.

And thou art like unto our father, led away by the foolish imaginations of his heart; yea, he hath led us out of the land of Jerusalem, and we have wandered in the wilderness for these many years; and our women have toiled, being big with child; and they have borne children in the wilderness and suffered all things, save it were death; and it would have been better that they had died before they came out of Jerusalem than to have suffered these afflictions.

Behold, these many years we have suffered in the wilderness, which time we might have enjoyed our possessions and the land of our inheritance; yea, and we might have been happy.

And we know that the people who were in the land of Jerusalem were a righteous people; for they kept the statutes and judgments of the Lord, and all his commandments, according to the law of Moses; wherefore, we know that they are a righteous people; and our father hath judged them, and hath led us away because we would hearken unto his words; yea, and our brother is like unto him. And after this manner of language did my brethren murmur and complain against us.

And it came to pass that I, Nephi, spake unto them, saying: Do ye believe that our fathers, who were the children of Israel, would have been led away out of the hands of the Egyptians if they had not hearkened unto the words of the Lord?

Yea, do ye suppose that they would have been led out of bondage, if the Lord had not commanded Moses that he should lead them out of bondage?

Now ye know that the children of Israel were in bondage; and ye know that they were laden with tasks, which were grievous to be borne; wherefore, ye know that it must needs be a good thing for them, that they should be brought out of bondage.



- 26 अब तुम जानते हो कि उस महान कार्य को करने के लिए मूसा को प्रभु का आदेश था; और तुम जानते हो कि उसके शब्दों के द्वारा लाल सागर का पानी इधर और उधर बंट गया; और वे सूखी जमीन से होकर गए थे ।
- 27 लेकिन तुम जानते हो कि वे मिस्री लाल सागर में डूब गए थे, जो कि फिरौन की सेना में थे ।
- 28 और तुम यह भी जानते हो कि उन्हें निर्जन प्रदेश में मन्ना खिलाया गया था ।
- 29 हां, और तुम यह भी जानते हो कि मूसा ने परमेश्वर की शक्ति के अनुसार जो उस में थी अपने शब्दों द्वारा चट्टान पर चोट की थी, और उससे पानी बह निकला आया था, ताकि इस्राएल की संतान अपनी प्यास बुझा सके ।
- 30 और यद्यपि उन्हें प्रभु अपने परमेश्वर से नेतृत्व मिलता रहा, उनका मुक्तिदाता, उनके आगे आगे चलकर दिन में उनका मार्गदर्शन करता और रात को उनको प्रकाश देता, और उनके लिए वह सबकुछ करता रहा जो मनुष्य के लिए उचित था, लेकिन उन्होंने अपने हृदयों को कठोर कर लिया और अपने मनों को अंधा कर दिया, और मूसा की और सच्चे और जीवित परमेश्वर की निंदा की ।
- 31 और ऐसा हुआ कि अपने वचन के अनुसार उसने उनको नष्ट किया; और अपने वचन के अनुसार उसने उनका मार्गदर्शन किया; और अपने वचन के अनुसार उसने उनके लिए सब कुछ किया; और कोई भी ऐसा काम नहीं था जो उसके वचन के द्वारा नहीं हुआ ।
- 32 और जब उन्होंने यरदन नदी पार ली तो उसने उनको बहुत शक्तिशाली बना दिया, हां, इतना शक्तिशाली कि उन्होंने उस प्रदेश के लोगों को तितर-बितर करके नष्ट कर दिया ।
- 33 और अब, क्या तुम मानते हो कि इस प्रदेश के लोग, जो प्रतिज्ञा के प्रदेश में थे, जो हमारे पूर्वजों द्वारा बाहर निकाल दिए गए थे, क्या तुम मानते हो कि वे धर्मी थे ? देखो, मैं तुमसे कहता हूं, नहीं ।
- 34 क्या तुम मानते हो कि हमारे पूर्वजों के पास उनसे अधिक चुनाव होते यदि वे धर्मी होते ? मैं तुम से कहता हूं, नहीं ।

Now ye know that Moses was commanded of the Lord to do that great work; and ye know that by his word the waters of the Red Sea were divided hither and thither, and they passed through on dry ground.

But ye know that the Egyptians were drowned in the Red Sea, who were the armies of Pharaoh.

And ye also know that they were fed with manna in the wilderness.

Yea, and ye also know that Moses, by his word according to the power of God which was in him, smote the rock, and there came forth water, that the children of Israel might quench their thirst.

And notwithstanding they being led, the Lord their God, their Redeemer, going before them, leading them by day and giving light unto them by night, and doing all things for them which were expedient for man to receive, they hardened their hearts and blinded their minds, and reviled against Moses and against the true and living God.

And it came to pass that according to his word he did destroy them; and according to his word he did lead them; and according to his word he did do all things for them; and there was not any thing done save it were by his word.

And after they had crossed the river Jordan he did make them mighty unto the driving out of the children of the land, yea, unto the scattering them to destruction.

And now, do ye suppose that the children of this land, who were in the land of promise, who were driven out by our fathers, do ye suppose that they were righteous? Behold, I say unto you, Nay.

Do ye suppose that our fathers would have been more choice than they if they had been righteous? I say unto you, Nay.

35 देखो, प्रभु सब मनुष्यों को एक समान महत्व देता है; जो धर्मी है वह परमेश्वर को अधिक प्रिय होता है। लेकिन देखो, इन्हीं लोगों ने परमेश्वर के प्रत्येक वचन को अस्वीकार कर दिया, और वे अधर्म में बढ़ते चले गए; और परमेश्वर का संपूर्ण क्रोध उन पर भड़का; और प्रभु ने उनके कारण उस प्रदेश को श्रापित किया, और हमारे पूर्वजों के लिए इसे आशीषित किया; हां, उसने उन्हें श्राप देकर नष्ट किया, और उसने हमारे पूर्वजों को इसका अधिकार देकर इसे उनके लिए आशीषित किया।

36 देखो, प्रभु ने पृथ्वी की सृष्टि की ताकि यह आबाद हो सके; और उसने अपने बच्चों की रचना की ताकि वे इसे अधिकार प्राप्त करें।

37 और वह एक धर्मी राष्ट्र को खड़ा करता, और दुष्ट के राष्ट्रों को नष्ट करता है।

38 और वह धर्मी को मूल्यवान देशों में ले जाता है, और दुष्ट को वह नष्ट करता, और उनके कारण उस प्रदेश को श्रापित करता है।

39 वह स्वर्गों में राज्य करता है, क्योंकि वह उसका सिंहासन है, और पृथ्वी उसकी चौकी है।

40 और उनसे प्रेम करता है जो उसे अपना परमेश्वर मानते हैं। देखो, उसने हमारे पूर्वजों से प्रेम किया, और उसने उनके साथ अनुबंध बनाया, हां, इब्राहीम, इसहाक, और याकूब के साथ भी; और उसने उन अनुबंधों को याद रखा जो उसने बनाए; इसलिए, वह उन्हें मिस्र के प्रदेश से बाहर निकाल लाया।

41 और उसने उन्हें निर्जन प्रदेश में अपनी लाठी से सीधा किया; क्योंकि उन्होंने अपने हृदयों को कठोर कर लिया, जैसा कि तुमने किया है; और प्रभु ने उनके अधर्म के कारण उनको सीधा किया। उसने उड़ते हुए सापों को उनके बीच भेजा; और उनको काट लिए जाने के बाद उसने एक मार्ग तैयार किया ताकि वे चंगे हो सकें; और जो कार्य उन्हें करना था वह था देखना; और इस मार्ग की सहजता के कारण, या इसकी सरलता के कारण, बहुत से थे जो नष्ट हो गए।

42 और उन्होंने समय-समय पर अपने हृदयों को कठोर कर लिया, और उन्होंने मूसा की, और परमेश्वर की भी निंदा की; फिर भी, तुम जानते हो कि वे उसकी अतुल्य शक्ति द्वारा प्रतिज्ञा के प्रदेश में लाए गए।

Behold, the Lord esteemeth all flesh in one; he that is righteous is favored of God. But behold, this people had rejected every word of God, and they were ripe in iniquity; and the fulness of the wrath of God was upon them; and the Lord did curse the land against them, and bless it unto our fathers; yea, he did curse it against them unto their destruction, and he did bless it unto our fathers unto their obtaining power over it.

Behold, the Lord hath created the earth that it should be inhabited; and he hath created his children that they should possess it.

And he raiseth up a righteous nation, and destroyeth the nations of the wicked.

And he leadeth away the righteous into precious lands, and the wicked he destroyeth, and curseth the land unto them for their sakes.

He ruleth high in the heavens, for it is his throne, and this earth is his footstool.

And he loveth those who will have him to be their God. Behold, he loved our fathers, and he covenanted with them, yea, even Abraham, Isaac, and Jacob; and he remembered the covenants which he had made; wherefore, he did bring them out of the land of Egypt.

And he did straiten them in the wilderness with his rod; for they hardened their hearts, even as ye have; and the Lord straitened them because of their iniquity. He sent fiery flying serpents among them; and after they were bitten he prepared a way that they might be healed; and the labor which they had to perform was to look; and because of the simplicity of the way, or the easiness of it, there were many who perished.

And they did harden their hearts from time to time, and they did revile against Moses, and also against God; nevertheless, ye know that they were led forth by his matchless power into the land of promise.

- 43 और अब, इन सब बातों के बाद, समय आ गया है कि वे दुष्ट हो गए हैं, हां, बहुत अधिक; और मैं नहीं जानता लेकिन वे शीघ्र ही नष्ट किये जाने वाले हैं; क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह दिन अवश्य आएगा कि वे नष्ट किये जाएंगे, केवल कुछ को छोड़कर, जो गुलाम बना लिए जाएंगे ।
- 44 इसलिए, प्रभु ने मेरे पिता को आदेश दिया था कि वह निर्जन प्रदेश में चले जाएं; और यहूदी भी उनकी जान लेना चाहते थे; और हां, तुम भी उसकी जान लेना चाहते हो; इसलिए, तुम अपने हृदयों में हत्यारे हो और तुम उनके समान हो ।
- 45 तुम अधर्म करने में तेज लेकिन प्रभु अपने परमेश्वर को याद करने में धीमे हो । तुमने स्वर्गदूत को देखा है; और उसने तुम से बातें की हैं; हां, तुमने समय-समय पर उसकी वाणी को सुना है; और उसने तुमसे धीमी स्थिर आवाज में बातें की हैं, लेकिन तुम इतने संवेदनहीन हो गए थे, कि तुम उसके शब्दों को न सुन सके; इसलिए, उसने मेघ की गर्जन की तरह तुम से बातें की, जिससे पृथ्वी कांपने लगी मानो यह फटने वाली थी ।
- 46 और तुम यह भी जानते हो कि अपने सर्वशक्तिमान शब्द के द्वारा वह पृथ्वी को मिटा सकता है; और हां, तुम जानते हो कि वह अपने शब्द के द्वारा उबड़-खाबड़ स्थानों को समतल कर सकता है, और समतल स्थानों को तबाह कर सकता है । ओह, तब, क्यों ऐसा है, कि तुम अपने हृदयों से इतने कठोर हो जाते हो ?
- 47 देखो, मेरी आत्मा तुम्हारे कारण दर्द से फटी जाती है, और मेरा हृदय दुखी है; मुझे भय है कि कहीं तुम सदा के लिए न निकाल दिए जाओ । देखो, मैं परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण हूँ, इतना अधिक कि मेरे शरीर में कोई शक्ति नहीं रही ।
- 48 और ऐसा हुआ कि जब मैंने इन शब्दों को कहा वे मुझ पर क्रोध करने लगे, और मुझे समुद्र की गहराइयों में फेंकने की इच्छा करने लगे; और जैसे ही वे मुझे हाथ लगाने के लिए आगे बढ़े मैंने उनसे कहा: सर्वशक्तिमान परमेश्वर के नाम में, मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि तुम मुझे छुना नहीं, क्योंकि मैं परमेश्वर की शक्ति से परिपूर्ण हूँ, मेरा संपूर्ण शरीर इससे प्रभावित है; और जो कोई मुझे हाथ लगाएगा सूखे सरकंडे के समान नष्ट हो जाएगा; और वह परमेश्वर की शक्ति के सामने कुछ नहीं है, क्योंकि परमेश्वर उसे दंड देगा ।
- 49 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, उनसे कहा कि वे अपने पिता के विरुद्ध बिलकुल बड़बड़ न करें; न ही मेरे साथ काम करना बंद करें, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे आदेश दिया है कि मैं एक जहाज बनाऊँ ।

And now, after all these things, the time has come that they have become wicked, yea, nearly unto ripeness; and I know not but they are at this day about to be destroyed; for I know that the day must surely come that they must be destroyed, save a few only, who shall be led away into captivity.

Wherefore, the Lord commanded my father that he should depart into the wilderness; and the Jews also sought to take away his life; yea, and ye also have sought to take away his life; wherefore, ye are murderers in your hearts and ye are like unto them.

Ye are swift to do iniquity but slow to remember the Lord your God. Ye have seen an angel, and he spake unto you; yea, ye have heard his voice from time to time; and he hath spoken unto you in a still small voice, but ye were past feeling, that ye could not feel his words; wherefore, he has spoken unto you like unto the voice of thunder, which did cause the earth to shake as if it were to divide asunder.

And ye also know that by the power of his almighty word he can cause the earth that it shall pass away; yea, and ye know that by his word he can cause the rough places to be made smooth, and smooth places shall be broken up. O, then, why is it, that ye can be so hard in your hearts?

Behold, my soul is rent with anguish because of you, and my heart is pained; I fear lest ye shall be cast off forever. Behold, I am full of the Spirit of God, insomuch that my frame has no strength.

And now it came to pass that when I had spoken these words they were angry with me, and were desirous to throw me into the depths of the sea; and as they came forth to lay their hands upon me I spake unto them, saying: In the name of the Almighty God, I command you that ye touch me not, for I am filled with the power of God, even unto the consuming of my flesh; and whoso shall lay his hands upon me shall wither even as a dried reed; and he shall be as naught before the power of God, for God shall smite him.

And it came to pass that I, Nephi, said unto them that they should murmur no more against their father; neither should they withhold their labor from me, for God had commanded me that I should build a ship.

- 50 और मैंने उनसे कहा: यदि परमेश्वर ने मुझे यह सब करने का आदेश दिया है तो मैं इन्हें कर सकता हूँ। यदि वह मुझे आदेश देता है कि मैं इस पानी से कहूँ, पृथ्वी बन जा, तो यह पृथ्वी बन जाएगी; यदि मैं ऐसा कहता हूँ, तो वैसा ही होगा।
- 51 और अब, यदि प्रभु के पास इतनी महान शक्ति है, और मनुष्य के बीच इतने अधिक चमत्कार किये हैं, तो यह कैसे नहीं हो सकता कि वह मुझे निर्देश दे, कि मैं एक जहाज बनाऊँ ?
- 52 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने भाइयों से बहुत सी बातें कही, इतनी अधिक कि वे हार गए और मेरा विरोध न कर सके; कई दिनों तक, न ही उन्होंने मुझे हाथ लगाने की हिम्मत की न ही मुझे उंगली से छुआ। अब ऐसा करने की हिम्मत उनमें नहीं थी कि कहीं वे नष्ट न हो जाएं, परमेश्वर की आत्मा इतनी शक्तिशाली थी; और इस प्रकार इसने उन्हें प्रभावित किया।
- 53 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने मुझ से कहा: अपने हाथों को अपने भाइयों के सामने फिर से फैलाओ, और वे तुम्हारे सामने नष्ट नहीं होंगे, लेकिन मैं उन्हें झटका दूंगा, प्रभु कहता है, और मैं ऐसा इसलिए करूंगा, ताकि वे जान सकें कि मैं प्रभु उनका परमेश्वर हूँ।
- 54 और ऐसा हुआ कि मैंने अपने हाथों को अपने भाइयों के सामने फैलाया, और वे मेरे सामने नष्ट नहीं हुए; लेकिन प्रभु ने उन्हें हिला दिया, जैसा कि उसने कहा था।
- 55 और अब, उन्होंने कहा: हम निश्चितरूप से जानते हैं कि प्रभु तुम्हारे साथ है, क्योंकि यह प्रभु की शक्ति है जिसने हमें हिलाया। और वे सामने गिर गए, और मेरी उपासना करने वाले थे, लेकिन मैंने उन्हें यह कहते हुए ऐसा नहीं करने दिया: मैं तुम्हारा भाई हूँ, हां, तुम्हारा छोटा भाई; इसलिए, प्रभु अपने परमेश्वर की उपासना करो, और अपने पिता और अपनी माता का आदर करो, ताकि तुम्हारे दिन उस प्रदेश में लंबे हो सकें जिसे प्रभु तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें देता है।

And I said unto them: If God had commanded me to do all things I could do them. If he should command me that I should say unto this water, be thou earth, it should be earth; and if I should say it, it would be done.

And now, if the Lord has such great power, and has wrought so many miracles among the children of men, how is it that he cannot instruct me, that I should build a ship?

And it came to pass that I, Nephi, said many things unto my brethren, insomuch that they were confounded and could not contend against me; neither durst they lay their hands upon me nor touch me with their fingers, even for the space of many days. Now they durst not do this lest they should wither before me, so powerful was the Spirit of God; and thus it had wrought upon them.

And it came to pass that the Lord said unto me: Stretch forth thine hand again unto thy brethren, and they shall not wither before thee, but I will shock them, saith the Lord, and this will I do, that they may know that I am the Lord their God.

And it came to pass that I stretched forth my hand unto my brethren, and they did not wither before me; but the Lord did shake them, even according to the word which he had spoken.

And now, they said: We know of a surety that the Lord is with thee, for we know that it is the power of the Lord that has shaken us. And they fell down before me, and were about to worship me, but I would not suffer them, saying: I am thy brother, yea, even thy younger brother; wherefore, worship the Lord thy God, and honor thy father and thy mother, that thy days may be long in the land which the Lord thy God shall give thee.

## 1 नफी 18

- 1 और ऐसा हुआ कि उन्होंने प्रभु की उपासना की, और मेरे साथ गए; और हमने लकड़ियों से विचित्र कारीगरी का काम किया। और प्रभु ने मुझे समय-समय पर दिखाया कि मुझे जहाज की लकड़ियों से किस तरह से काम करना चाहिए।
- 2 अब मैं, नफी ने, लकड़ियों से उस तरह काम नहीं किया जैसे मनुष्यों द्वारा सीखा गया था; न ही मैंने जहाज मनुष्यों के अनुसार बनाया; लेकिन मैंने इसे उस तरह बनाया जैसा प्रभु ने मुझे दिखाया; इसलिए, यह मनुष्यों के अनुसार नहीं बनाया गया था।
- 3 और मैं, नफी, अक्सर पर्वत पर जाता, और प्रभु से प्रार्थना करता; इसलिए प्रभु ने मुझे महान बातें दिखाईं।
- 4 और ऐसा हुआ कि जब मैंने प्रभु के शब्द के अनुसार, जहाज तैयार कर लिया, मेरे भाइयों ने देखा कि वह अच्छा था, और कि उसकी कारीगरी बहुत बढ़िया थी; इसलिए, उन्होंने अपने आपको प्रभु के सामने विनम्र कर लिया।
- 5 और ऐसा हुआ कि मेरे पिता ने प्रभु की वाणी सुनी, कि हम उठें और जहाज में सवार हों।
- 6 और ऐसा हुआ कि अगले दिन, निर्जन प्रदेश से बहुत से फल और मांस, और बहुतायत से शहद, और खाद्य सामग्रियां जिसका प्रभु ने हमें आदेश दिया था, सबकुछ तैयार करने के पश्चात्, हम अपने सारे सामान और बीजों, और जो कुछ भी हम अपने साथ लाए थे, प्रत्येक अपनी आयु के अनुसार, को लेकर जहाज में सवार हुए; इसलिए, हम सब हमारी पत्नियों और हमारे बच्चों के साथ जहाज में सवार हुए।
- 7 और अब, मेरे पिता को निर्जन प्रदेश में दो पुत्र हुए; बड़े को याकूब नाम दिया गया और छोटे को यूसुफ।
- 8 और ऐसा हुआ कि हमारे जहाज में सवार होने, और अपने साथ खाद्य सामग्रियां और अन्य वस्तुएं जिनका हमें आदेश दिया गया था, लेने के पश्चात्, हम समुद्र में गए और हवा के साथ-साथ हम प्रतिज्ञा के प्रदेश की ओर आगे बढ़ने लगे।

## 1 Nephi 18

And it came to pass that they did worship the Lord, and did go forth with me; and we did work timbers of curious workmanship. And the Lord did show me from time to time after what manner I should work the timbers of the ship.

Now I, Nephi, did not work the timbers after the manner which was learned by men, neither did I build the ship after the manner of men; but I did build it after the manner which the Lord had shown unto me; wherefore, it was not after the manner of men.

And I, Nephi, did go into the mount oft, and I did pray oft unto the Lord; wherefore the Lord showed unto me great things.

And it came to pass that after I had finished the ship, according to the word of the Lord, my brethren beheld that it was good, and that the workmanship thereof was exceedingly fine; wherefore, they did humble themselves again before the Lord.

And it came to pass that the voice of the Lord came unto my father, that we should arise and go down into the ship.

And it came to pass that on the morrow, after we had prepared all things, much fruits and meat from the wilderness, and honey in abundance, and provisions according to that which the Lord had commanded us, we did go down into the ship, with all our loading and our seeds, and whatsoever thing we had brought with us, every one according to his age; wherefore, we did all go down into the ship, with our wives and our children.

And now, my father had begat two sons in the wilderness; the elder was called Jacob and the younger Joseph.

And it came to pass after we had all gone down into the ship, and had taken with us our provisions and things which had been commanded us, we did put forth into the sea and were driven forth before the wind towards the promised land.

- 9 और कई दिनों तक हवा के साथ-साथ आगे बढ़ने के पश्चात, देखो, मेरे भाइयों और इश्माएल के बेटों और उनकी पत्नियों ने भी आनंद मनाना शुरू कर दिया, इतना अधिक कि वे नाचने, और गाने, और बहुत असभ्यता से बातें करने लगे, हां, यहां तक कि वे उस शक्ति को भी भूल गए जो उन्हें यहां तक लाई थी; हां, वे अत्याधिक असभ्य हो गए ।
- 10 और मैं, नफी, अत्याधिक भयभीत हो गया कहीं ऐसा न हो कि प्रभु हम से क्रोधित हो जाए, और हमारे अधर्म के कारण हमें समुद्र की गहराइयों में डूबाकर हमें दंड दे; इसलिए, मैं, नफी ने, उनसे बहुत गंभीरता से बात की; लेकिन देखो वे मुझ पर क्रोधित होते हुए बोले: हम नहीं चाहते कि हमारा छोटा भाई हमारा शासक बने ।
- 11 और ऐसा हुआ कि लमान और लेमुएल ने मुझे पकड़ा और रस्सियों से बांध दिया, और उन्होंने बहुत कठोरता से मेरे साथ व्यवहार किया; फिर भी, प्रभु ने ऐसा होने दिया ताकि वह अपनी शक्ति दिखा कर, दुष्ट के संबंध में बोले गए अपने शब्दों को पूरा कर सके ।
- 12 और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने मुझे इतना कस कर बांध दिया कि मैं हिल नहीं सकता था, तबदिक्सूचक यंत्र जिसे प्रभु ने तैयार किया था, ने काम करना बंद कर दिया ।
- 13 इसलिए, वे नहीं जानते थे कि जहाज को किधर ले जाएं, वे बहुत भटक गए तभी समुद्र में बड़ा तूफान उठा, हां, एक बड़ी और भयंकर आंधी, और तीन दिनों तक हम समुद्र में पीछे की ओर बहते रहे; और वे अत्याधिक भयभीत हो गए कि कहीं वे समुद्र में डूब न जाएं, फिर भी उन्होंने मुझे नहीं खोला ।
- 14 और चौथे दिन, जो आंधी हमें पीछे की ओर बहाए ले जा रही थी, वह अत्याधिक तेज हो गई ।
- 15 और ऐसा हुआ कि हम समुद्र की गहराइयों में डूबने ही वाले थे । और चार दिनों तक समुद्र में पीछे की ओर बहने के पश्चात, मेरे भाइयों ने देखा कि परमेश्वर का न्याय उनके ऊपर है, और वे अवश्य ही नष्ट हो जाएंगे यदि वे अपने अधर्मों से पश्चाताप नहीं करते; इसलिए, वे मेरे पास आए, और उन बंधनों को खोल दिया जो मेरी कलाईयों पर थे, और देखो वे अत्याधिक सूज गई थीं; और मेरे टखने भी बहुत सूजे हुए थे, और उनमें बहुत दर्द भी हो रहा था ।

And after we had been driven forth before the wind for the space of many days, behold, my brethren and the sons of Ishmael and also their wives began to make themselves merry, insomuch that they began to dance, and to sing, and to speak with much rudeness, yea, even that they did forget by what power they had been brought thither; yea, they were lifted up unto exceeding rudeness.

And I, Nephi, began to fear exceedingly lest the Lord should be angry with us, and smite us because of our iniquity, that we should be swallowed up in the depths of the sea; wherefore, I, Nephi, began to speak to them with much soberness; but behold they were angry with me, saying: We will not that our younger brother shall be a ruler over us.

And it came to pass that Laman and Lemuel did take me and bind me with cords, and they did treat me with much harshness; nevertheless, the Lord did suffer it that he might show forth his power, unto the fulfilling of his word which he had spoken concerning the wicked.

And it came to pass that after they had bound me insomuch that I could not move, the compass, which had been prepared of the Lord, did cease to work.

Wherefore, they knew not whither they should steer the ship, insomuch that there arose a great storm, yea, a great and terrible tempest, and we were driven back upon the waters for the space of three days; and they began to be frightened exceedingly lest they should be drowned in the sea; nevertheless they did not loose me.

And on the fourth day, which we had been driven back, the tempest began to be exceedingly sore.

And it came to pass that we were about to be swallowed up in the depths of the sea. And after we had been driven back upon the waters for the space of four days, my brethren began to see that the judgments of God were upon them, and that they must perish save that they should repent of their iniquities; wherefore, they came unto me, and loosed the bands which were upon my wrists, and behold they had swollen exceedingly; and also mine ankles were much swollen, and great was the soreness thereof.

- 16 फिर भी, मैंने अपने परमेश्वर की ओर नजरें उठाई, और मैंने पूरे दिन उसकी प्रशंसा की; और मैं अपने कष्टों के कारण प्रभु के विरुद्ध बड़बड़ाया नहीं ।
- 17 अब मेरे पिता, लेही, ने उन्हें बहुत सी बातें कहीं, और इश्माएल के बेटों को भी; लेकिन, देखो, उन्होंने हर किसी को कड़ी धमकी दी जिसने भी मेरे पक्ष में बोला था; और मेरे माता-पिता जो बूढ़े हो चुके थे, और अपने बच्चों की बजह से बहुत कष्ट सहने के कारण, वे नीचे लाए गए, हां, यहां तक कि उनके बिस्तर के ऊपर ।
- 18 अपने कष्ट और बहुत दुख, और मेरे भाइयों के अधर्म के कारण, अपने परमेश्वर से मिलने का उनका समय निकट आ गया था; हां, उनके सफेद बालों को मिट्टी में दबाने का समय निकट था; हां, यहां तक कि वे दुख के साथ समुद्री कब्र में डाले जाने के निकट थे ।
- 19 और याकूब और यूसुफ भी, जिन्हें छोटे होने के कारण, अधिक पोषण की जरूरत थी, अपनी मां के कष्टों के कारण दुखी थे; और मेरी पत्नी भी अपने आंसूओं और प्रार्थनाओं के साथ, और मेरे बच्चे भी दुखी थे, लेकिन मेरे भाइयों के हृदय नहीं पिघले और उन्होंने मुझे नहीं खोला ।
- 20 और परमेश्वर की शक्ति के सिवाय कुछ नहीं था, जिसने उन्हें विनाश के लिए धमकाया था, उनके हृदयों को पिघला सकती थी; इसलिए, जब उन्होंने देखा कि वे कि वे समुद्र की गहराइयों में डूबने वाले हैं उन्होंने उस काम के लिए पश्चाताप किया जो उन्होंने किया था और मुझे छोड़ दिया ।
- 21 और ऐसा हुआ मुझे छोड़ने के पश्चात, देखो, मैंने दिक्सूचक लिया, और वह मेरी इच्छा के अनुसार काम करने लगा । और ऐसा हुआ कि मैंने प्रभु से प्रार्थना की; और मेरी प्रार्थना करने के बाद हवाएं चलना बंद हो गयीं, और तूफान रूक गया, और वहां बहुत शांति छा गई ।
- 22 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, जहाज का मार्गदर्शन किया, ताकि हम फिर से प्रतिज्ञा के प्रदेश की ओर यात्रा कर सकें ।
- 23 और ऐसा हुआ कि कई दिनों तक यात्रा करने के पश्चात हम प्रतिज्ञा के प्रदेश में पहुंचे; और हम जमीन के ऊपर गए, और अपने तंबूओं को लगाया; और हमने उसे प्रतिज्ञा का प्रदेश नाम दिया ।

Nevertheless, I did look unto my God, and I did praise him all the day long; and I did not murmur against the Lord because of mine afflictions.

Now my father, Lehi, had said many things unto them, and also unto the sons of Ishmael; but, behold, they did breathe out much threatenings against anyone that should speak for me; and my parents being stricken in years, and having suffered much grief because of their children, they were brought down, yea, even upon their sick-beds.

Because of their grief and much sorrow, and the iniquity of my brethren, they were brought near even to be carried out of this time to meet their God; yea, their grey hairs were about to be brought down to lie low in the dust; yea, even they were near to be cast with sorrow into a watery grave.

And Jacob and Joseph also, being young, having need of much nourishment, were grieved because of the afflictions of their mother; and also my wife with her tears and prayers, and also my children, did not soften the hearts of my brethren that they would loose me.

And there was nothing save it were the power of God, which threatened them with destruction, could soften their hearts; wherefore, when they saw that they were about to be swallowed up in the depths of the sea they repented of the thing which they had done, insomuch that they loosed me.

And it came to pass after they had loosed me, behold, I took the compass, and it did work whither I desired it. And it came to pass that I prayed unto the Lord; and after I had prayed the winds did cease, and the storm did cease, and there was a great calm.

And it came to pass that I, Nephi, did guide the ship, that we sailed again towards the promised land.

And it came to pass that after we had sailed for the space of many days we did arrive at the promised land; and we went forth upon the land, and did pitch our tents; and we did call it the promised land.

24 और ऐसा हुआ कि हमने धरती जोती, और बीज बोए; हां, हमने अपने सारे बीज धरती में डाल दिए, जो हम यरूशलेम के प्रदेश से लाए थे। और ऐसा हुआ कि वे अत्याधिता से उपजे; इसलिए, हम बहुतायत से आशीषित हुए।

25 और ऐसा हुआ कि प्रतिज्ञा के प्रदेश में, जब हमने निर्जन प्रदेश की यात्रा की, हमने पाया कि जंगल में हर प्रकार के जानवर थे, गाय और बैल दोनों, और गधे और घोड़े, और बकरी और जंगली बकरी, और सभी तरह के जंगली जानवर, जो कि मनुष्य के उपयोग के लिए थे। और हमें हर प्रकार के अयस्क, सोना और चांदी, और तांबा भी मिले।

And it came to pass that we did begin to till the earth, and we began to plant seeds; yea, we did put all our seeds into the earth, which we had brought from the land of Jerusalem. And it came to pass that they did grow exceedingly; wherefore, we were blessed in abundance.

And it came to pass that we did find upon the land of promise, as we journeyed in the wilderness, that there were beasts in the forests of every kind, both the cow and the ox, and the ass and the horse, and the goat and the wild goat, and all manner of wild animals, which were for the use of men. And we did find all manner of ore, both of gold, and of silver, and of copper.



## 1 नफी 19

- 1 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने मुझे आदेश दिया, इसलिए मैंने अयस्क से पट्टियां बनाई ताकि मैं उनपर अपने लोगों का इतिहास अंकित कर सकूं। और जो पट्टियां मैंने बनाई उनपर मैंने अपने पिता का अभिलेख, और निर्जन प्रदेश में हमारी यात्राएं, और अपने पिता की भविष्यवाणियों को अंकित किया; और बहुत सी अपनी स्वयं की भविष्यवाणियों को भी मैंने उन पर अंकित किया।
- 2 और जब मैंने उन्हें बनाया था उस समय मैं नहीं जानता था कि इन पट्टियों को बनाने के लिए मुझे प्रभु का आदेश मिलेगा; इसलिए, मेरे पिता का अभिलेख, और उनके पूर्वजों की वंशावली, और निर्जन प्रदेश में हमारी गतिविधियों का अधिकतर भाग इन प्रथम पट्टियों में अंकित किया गया है जिनके विषय में मैंने बात की है; इसलिए, मेरी इन पट्टियों को बनाने से पहले हुई बातों, की सच्चाई, का उल्लेख विशेषरूप से प्रथम पट्टियों पर किया गया है।
- 3 और आज्ञा के द्वारा जब मैंने इन पट्टियों को बनाया, मुझ, नफी, को आज्ञा मिली कि सेवा और भविष्यवाणियां, उनके अधिक सरल और अमूल्य हिस्सों को इन पट्टियों पर लिखा जाना चाहिए; और कि लिखी गई बातों को मेरे लोगों के निर्देशन के लिए रखा जाना चाहिए, जो इस भूमि का अधिकार प्राप्त करेंगे, और अन्य समझदार उद्देश्यों के लिए भी, उन उद्देश्यों को प्रभु जानता है।
- 4 इसलिए, मैं, नफी, ने अन्य पट्टियों पर अभिलेख बनाया था, जो वर्णन करता है, या जो मेरे लोगों के युद्धों और विवादों का वर्णन करता है। और यह मैंने किया है, और अपने लोगों को मैंने निर्देश दिया है कि वे भी ऐसा ही करें; और कि इन पट्टियों को एक पीढ़ी से दूसरी, या एक भविष्यवक्ता से दूसरे को सौंपा जाना चाहिए, जब तक प्रभु के अगले निर्देश न मिलें।
- 5 और इन पट्टियों को बनाने का मेरा वर्णन इसके बाद दिया जाएगा; और फिर, देखो, मैं उसके अनुसार आगे बढ़ता हूँ जिसे मैंने कहा है; और यह मैं करता हूँ ताकि अधिक पवित्र बातों को मेरे लोगों के ज्ञान के लिए सुरक्षित रखा जा सके।

## 1 Nephi 19

And it came to pass that the Lord commanded me, wherefore I did make plates of ore that I might engraven upon them the record of my people. And upon the plates which I made I did engraven the record of my father, and also our journeyings in the wilderness, and the prophecies of my father; and also many of mine own prophecies have I engraven upon them.

And I knew not at the time when I made them that I should be commanded of the Lord to make these plates; wherefore, the record of my father, and the genealogy of his fathers, and the more part of all our proceedings in the wilderness are engraven upon those first plates of which I have spoken; wherefore, the things which transpired before I made these plates are, of a truth, more particularly made mention upon the first plates.

And after I had made these plates by way of commandment, I, Nephi, received a commandment that the ministry and the prophecies, the more plain and precious parts of them, should be written upon these plates; and that the things which were written should be kept for the instruction of my people, who should possess the land, and also for other wise purposes, which purposes are known unto the Lord.

Wherefore, I, Nephi, did make a record upon the other plates, which gives an account, or which gives a greater account of the wars and contentions and destructions of my people. And this have I done, and commanded my people what they should do after I was gone; and that these plates should be handed down from one generation to another, or from one prophet to another, until further commandments of the Lord.

And an account of my making these plates shall be given hereafter; and then, behold, I proceed according to that which I have spoken; and this I do that the more sacred things may be kept for the knowledge of my people.

- 6 फिर भी, मैं पट्टियों पर ऐसा कुछ नहीं लिख रहा हूँ जिसे मैं पावन नहीं समझता हूँ। और अब, यदि मैं गलती करता हूँ, अतीत में भी उन्होंने गलती की थी; अन्य लोगों के कारण मैं अपने आपको क्षमा नहीं करूँगा, लेकिन उस कमजोरी के कारण जो मुझ में, शरीर के अनुसार है, मैं अपने आप को क्षमा करूँगा।
- 7 क्योंकि कुछ मनुष्य शारीरिक और आत्मिक दोनों रूप से, जिन बातों को अधिक महत्व देते हैं, अन्य उन्हें महत्वहीन मानते और अपने पैरों तले रौंदते हैं। हां, यहां तक कि लोग इस्राएल के परमेश्वर को भी पैरों तले रौंदते हैं लेकिन मैं अन्य शब्दों में कहता हूँ—वे उसे महत्वहीन समझते, और उसकी सलाह के शब्दों पर ध्यान नहीं देते हैं।
- 8 और देखो स्वर्गदूत के वचनों के अनुसार, वह मेरे पिता के यरूशलेम को छोड़े हुए छह सौ वर्षों के पश्चात आएगा।
- 9 और संसार, उनके अधर्म के कारण, उसे महत्वहीन समझेंगे; इसलिए वे उसे सताएंगे, और वह इसे सहेंगा; और वे उसे मारेंगे, और वह इसे सहेंगा। हां, वे उस पर थूकेंगे, और मानव संतान के प्रति अपनी प्रेमपूर्ण दया और सहनशीलता के कारण, वह इसे सहेंगा।
- 10 और हमारे पूर्वजों का परमेश्वर, जो मिस्र की गुलामी से बाहर निकाल कर लाए गए थे, और उसके द्वारा निर्जन प्रदेश में बचा कर भी रखे गए थे, हां, इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का, और याकूब का परमेश्वर, स्वर्गदूत के शब्दों के अनुसार वह मानव रूप में अपने आपको पापी लोगों के हाथों में समर्पित करेगा, और जीनक के शब्दों के अनुसार क्रूस पर चढ़ाया जाएगा, और नयुम के शब्दों के अनुसार क्रूस पर मारा जाएगा, और जीनस के शब्दों के अनुसार कब्र में गाड़ा जाएगा, जिसके संबंध में उसने तीन दिनों का अंधकार कहा था, जो कि समुद्र के द्वीपों पर रहने वालों के लिए उसकी मृत्यु चिन्ह होगा, विशेषरूप से जो इस्राएल के घराने के लोग हैं।
- 11 क्योंकि भविष्यवक्ता इस प्रकार कहता है: प्रभु परमेश्वर उस दिन अवश्य ही इस्राएल के संपूर्ण घराने से मिलेगा, कुछ के साथ अपनी वाणी से, उनकी धार्मिकता के कारण, उनके बड़े आनंद और उद्धार के लिए, और अन्य के साथ अपनी शक्ति की गर्जन और बिजली, तूफान द्वारा, आग द्वारा, और धुएं द्वारा, और अंधकार के कोहरे, और पृथ्वी के फटने द्वारा, और पर्वतों के द्वारा जो कि ऊपर उठाए जाएंगे।

Nevertheless, I do not write anything upon plates save it be that I think it be sacred. And now, if I do err, even did they err of old; not that I would excuse myself because of other men, but because of the weakness which is in me, according to the flesh, I would excuse myself.

For the things which some men esteem to be of great worth, both to the body and soul, others set at naught and trample under their feet. Yea, even the very God of Israel do men trample under their feet; I say, trample under their feet but I would speak in other words—they set him at naught, and hearken not to the voice of his counsels.

And behold he cometh, according to the words of the angel, in six hundred years from the time my father left Jerusalem.

And the world, because of their iniquity, shall judge him to be a thing of naught; wherefore they scourge him, and he suffereth it; and they smite him, and he suffereth it. Yea, they spit upon him, and he suffereth it, because of his loving kindness and his long-suffering towards the children of men.

And the God of our fathers, who were led out of Egypt, out of bondage, and also were preserved in the wilderness by him, yea, the God of Abraham, and of Isaac, and the God of Jacob, yieldeth himself, according to the words of the angel, as a man, into the hands of wicked men, to be lifted up, according to the words of Zenock, and to be crucified, according to the words of Neum, and to be buried in a sepulchre, according to the words of Zenos, which he spake concerning the three days of darkness, which should be a sign given of his death unto those who should inhabit the isles of the sea, more especially given unto those who are of the house of Israel.

For thus spake the prophet: The Lord God surely shall visit all the house of Israel at that day, some with his voice, because of their righteousness, unto their great joy and salvation, and others with the thunderings and the lightnings of his power, by tempest, by fire, and by smoke, and vapor of darkness, and by the opening of the earth, and by mountains which shall be carried up.

- 12 और ये सब बातें अवश्य पूरी होंगी, भविष्यवक्ता जीनस कहता है: और पृथ्वी की चट्टानें अवश्य ही टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगी; और पृथ्वी के कराहने के कारण, समुद्र के द्वीपों के बहुत से राजा परमेश्वर की आत्मा से प्रभावित होकर पुकारेंगे: प्रकृति का परमेश्वर कष्ट में है।
- 13 और जो लोग यरूशलेम में हैं उनके लिए, भविष्यवक्ता कहता है, वे सब लोगों द्वारा कोड़े खाएंगे, क्योंकि वे इस्राएल के परमेश्वर को क्रूस पर बलिदान करते, और अपने हृदयों को दूसरी ओर फिराते, और इस्राएल के परमेश्वर की शक्ति और महिमा, और चिन्हों और चमत्कारों को अस्वीकार करते हैं।
- 14 और क्योंकि उन्होंने अपने हृदयों को दूसरी ओर फिरा दिया, भविष्यवक्ता कहता है, और इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर का तिरस्कार किया है, वे शरीर में भटकेंगे, और नष्ट हो जाएंगे, और सभी राष्ट्रों में उनका तिरस्कार और अपमान किया जाएगा।
- 15 फिर भी, जब वह दिन आएगा, भविष्यवक्ता कहता है, कि वे इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर से अपने हृदयों को दूसरी ओर नहीं फिराएंगे, तब वह अपने उन अनुबंधों को याद करेगा जो उसने उनके पूर्वजों से बनाए थे।
- 16 हां, फिर वह समुद्र के द्वीपों को याद करेगा; और हां, उन सब लोगों को जो इस्राएल के घराने के हैं, भविष्यवक्ता जीनस के शब्दों के अनुसार प्रभु कहता है, पृथ्वी के चारों ओर से मैं उन्हें एकत्रित करूंगा।
- 17 हां, और संपूर्ण पृथ्वी प्रभु के उद्धार को देखेगी, भविष्यवक्ता कहता है; प्रत्येक राष्ट्र, जाति, भाषा और लोग आशीषित होंगे।
- 18 और मैं, नफी ने, इन बातों को अपने लोगों के लिए लिख दिया है, कि शायद मैं उन्हें प्रभु उनके मुक्तिदाता की याद दिला सकूँ।
- 19 इसलिए, मैं इस्राएल के संपूर्ण घराने से कहता हूँ, कि यदि ऐसा होता है तो वे इन बातों को प्राप्त करें।
- 20 क्योंकि देखो, जो यरूशलेम में हैं उनके लिए, मैंने आत्मा में काम किया है, जिससे मैं इतना थक गया हूँ कि मेरे सारे जोड़ कमजोर हो गए; क्योंकि यदि प्रभु दयालु होते हुए मुझे उनके संबंध में न बताता, जैसा उसने अतीत के भविष्यवक्ताओं के साथ किया, तो मैं भी नष्ट हो गया होता।

And all these things must surely come, saith the prophet Zenos. And the rocks of the earth must rend; and because of the groanings of the earth, many of the kings of the isles of the sea shall be wrought upon by the Spirit of God, to exclaim: The God of nature suffers.

And as for those who are at Jerusalem, saith the prophet, they shall be scourged by all people, because they crucify the God of Israel, and turn their hearts aside, rejecting signs and wonders, and the power and glory of the God of Israel.

And because they turn their hearts aside, saith the prophet, and have despised the Holy One of Israel, they shall wander in the flesh, and perish, and become a hiss and a byword, and be hated among all nations.

Nevertheless, when that day cometh, saith the prophet, that they no more turn aside their hearts against the Holy One of Israel, then will he remember the covenants which he made to their fathers.

Yea, then will he remember the isles of the sea; yea, and all the people who are of the house of Israel, will I gather in, saith the Lord, according to the words of the prophet Zenos, from the four quarters of the earth.

Yea, and all the earth shall see the salvation of the Lord, saith the prophet; every nation, kindred, tongue and people shall be blessed.

And I, Nephi, have written these things unto my people, that perhaps I might persuade them that they would remember the Lord their Redeemer.

Wherefore, I speak unto all the house of Israel, if it so be that they should obtain these things.

For behold, I have workings in the spirit, which doth weary me even that all my joints are weak, for those who are at Jerusalem; for had not the Lord been merciful, to show unto me concerning them, even as he had prophets of old, I should have perished also.

- 21 और उसने उनके संबंध में अतीत के भविष्यवक्ताओं को सारी बातें दिखाई; और उसने हमारे संबंध में भी बहुत कुछ दिखाया; इसलिए, यह जरूरी है कि हम उनके संबंध में जानें क्योंकि वे बातें पीतल की पट्टियों पर लिखी हुई हैं ।
- 22 अब ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने भाइयों को इन बातों को सीखाया; और ऐसा हुआ कि मैंने उन्हें कई बातें पढ़कर सुनाई, जो कि पीतल की पट्टियों पर अंकित हैं, ताकि वे अन्य प्रदेशों में अतीत के लोगों के बीच प्रभु के कामों के संबंध में जान सकें ।
- 23 और मैंने उन्हें कई बातें पढ़कर सुनाई जो मूसा की पुस्तकों में लिखी हुई थीं; लेकिन प्रभु उनके मुक्तिदाता में पूर्णरूप से विश्वास करने के लिए मैंने उन्हें वह पढ़कर सुनाया जो भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक में लिखा हुआ था; क्योंकि मैंने सभी धर्मशास्त्रों को हम पर लागू किया, कि इनसे हमें लाभ और शिक्षा मिले ।
- 24 इसलिए मैंने उनसे कहा: तुम भविष्यवक्ता के शब्दों को सुनो, तुम जो कि इस्राएल के घराने के वंश के अवशेष हो, एक शाखा जो अलग की गई; तुम भविष्यवक्ता के शब्दों को सुनो, जो संपूर्ण इस्राएल के घराने के लिए लिखे गए, और उनकी तुलना अपने आप से करो, ताकि तुम और तुम्हारे भाइयों के पास आशा हो जिनसे तुम्हें अलग किया गया; क्योंकि भविष्यवक्ता इस प्रकार लिखता है ।

And he surely did show unto the prophets of old all things concerning them; and also he did show unto many concerning us; wherefore, it must needs be that we know concerning them for they are written upon the plates of brass.

Now it came to pass that I, Nephi, did teach my brethren these things; and it came to pass that I did read many things to them, which were engraven upon the plates of brass, that they might know concerning the doings of the Lord in other lands, among people of old.

And I did read many things unto them which were written in the books of Moses; but that I might more fully persuade them to believe in the Lord their Redeemer I did read unto them that which was written by the prophet Isaiah; for I did liken all scriptures unto us, that it might be for our profit and learning.

Wherefore I spake unto them, saying: Hear ye the words of the prophet, ye who are a remnant of the house of Israel, a branch who have been broken off; hear ye the words of the prophet, which were written unto all the house of Israel, and liken them unto yourselves, that ye may have hope as well as your brethren from whom ye have been broken off; for after this manner has the prophet written.

## 1 नफी 20

- 1 ध्यान दो और इसे सुनो, ओह याकूब के घराने, जिसे इस्राएल के नाम से बुलाया जाता है, और यहूदा के जल से निकले, या बपतिस्मे के जल से बाहर निकले, जो प्रभु के नाम की शपथ लेते, और इस्राएल के परमेश्वर का नाम लेते, फिर भी वे सच्चाई और धार्मिकता की शपथ नहीं लेते ।
- 2 फिर भी, वे अपने आप को पवित्र शहर कहते हैं, लेकिन वे अपने आप को इस्राएल के परमेश्वर पर कायम नहीं करते, जो कि सर्वशक्तिमान प्रभु है; हां, सर्वशक्तिमान प्रभु उसका नाम है ।
- 3 देखो, मैंने अतीत की बातों की घोषणा आरंभ से की है; और वे मेरे मुंह से निकली, और मैंने उनको दिखाया । मैंने उन्हें अचानक दिखाया ।
- 4 और मैंने इसे किया क्योंकि मैं जानता था कि तुम हठी हो, और तुम्हारी गर्दन लोहे की है, और तुम्हारा माथा पीतल का;
- 5 और मैंने आरंभ से ही तुम्हें घोषणा कर दी थी; इससे पहले कि ऐसा होता मैंने उन्हें तुम्हें दिखाया था; और मैंने तुम्हें इस भय से दिखाया कि कहीं तुम न कहो—मेरी मूर्ति ने उन्हें किया, और मेरी गढ़ी गई मूर्ति, और मेरी पिघला कर बनाई गई मूर्ति ने उनको आदेश दिया ।
- 6 तुमने यह सब देखा और सुना; और क्या तुम इनकी घोषणा नहीं करोगे ? और इस समय मैंने तुम्हें नई बातें दिखाई हैं, यहां तक कि गुप्त बातें, और तुम इन्हें नहीं जानते थे ।
- 7 वे अभी रची गई हैं, और आरंभ से नहीं, यहां तक कि जिस दिन तुमने इन्हें नहीं सुना उससे पहले इनकी घोषणा तुम्हें की गई, ताकि तुम न कहो—कि देखो मैं इन्हें जानता था ।
- 8 हां, और तुमने सुना नहीं; हां, तुम नहीं जानते थे; हां, उस समय से तुम्हारे कान नहीं खुले थे; क्योंकि मैं जानता था कि तुम धोखे का कार्य करोगे, और गर्भ से अपराधी हो ।
- 9 फिर भी, अपने नाम के खातिर मैं अपने क्रोध को टालूंगा, और अपनी कीर्ति के कारण मैं तुम्हें नष्ट करने से बच रहा हूं, कि मैं तुम्हें नष्ट न करूं ।
- 10 क्योंकि, देखो, मैंने तुम्हें शुद्ध किया, मैंने तुम्हें कष्ट की भट्टी में से चुना है ।
- 11 अपने स्वयं के कारण, हां अपने स्वयं के कारण मैं यह करूंगा, क्योंकि मैं अपना नाम दूषित नहीं करना चाहूंगा, और मैं अपनी महिमा किसी अन्य को नहीं दूंगा ।

## 1 Nephi 20

Hearken and hear this, O house of Jacob, who are called by the name of Israel, and are come forth out of the waters of Judah, or out of the waters of baptism, who swear by the name of the Lord, and make mention of the God of Israel, yet they swear not in truth nor in righteousness.

Nevertheless, they call themselves of the holy city, but they do not stay themselves upon the God of Israel, who is the Lord of Hosts; yea, the Lord of Hosts is his name.

Behold, I have declared the former things from the beginning; and they went forth out of my mouth, and I showed them. I did show them suddenly.

And I did it because I knew that thou art obstinate, and thy neck is an iron sinew, and thy brow brass;

And I have even from the beginning declared to thee; before it came to pass I showed them thee; and I showed them for fear lest thou shouldst say—Mine idol hath done them, and my graven image, and my molten image hath commanded them.

Thou hast seen and heard all this; and will ye not declare them? And that I have showed thee new things from this time, even hidden things, and thou didst not know them.

They are created now, and not from the beginning, even before the day when thou heardest them not they were declared unto thee, lest thou shouldst say—Behold I knew them.

Yea, and thou heardest not; yea, thou knewest not; yea, from that time thine ear was not opened; for I knew that thou wouldst deal very treacherously, and wast called a transgressor from the womb.

Nevertheless, for my name's sake will I defer mine anger, and for my praise will I refrain from thee, that I cut thee not off.

For, behold, I have refined thee, I have chosen thee in the furnace of affliction.

For mine own sake, yea, for mine own sake will I do this, for I will not suffer my name to be polluted, and I will not give my glory unto another.

- 12 मुझ पर ध्यान दो, ओह याकूब, और इस्राएल मेरे बुलाए गए, क्योंकि मैं वह हूँ; मैं प्रथम हूँ, और मैं अंतिम भी हूँ ।
- 13 मेरे हाथों ने पृथ्वी की नींव डाली, और मेरे दाएँ हाथ ने स्वर्ग का विस्तार किया । मैं उन्हें बुलाता हूँ और वे एकसाथ खड़े हो जाते हैं ।
- 14 तुम सब, अपने आपको एकत्रित करो, और सुनो; उनके बीच किसने इन बातों की घोषणा की ? प्रभु ने उसे प्रेम किया; हां, और वह अपने शब्दों को पूर्ण करेगा जिसकी घोषणा उसने उनके द्वारा की है; और वह बाबुल पर अपनी इच्छा प्रकट करेगा, और उसकी बांह कस-दियों के ऊपर आएगी ।
- 15 प्रभु ने यह भी कहा; मैं प्रभु, हां, मैंने कहा है; हां, उसे घोषणा करने के लिए बुलाया है, मैं उसे लाया हूँ, और वह उसके मार्ग को समृद्ध करेगा ।
- 16 मेरे निकट आओ; मैंने गुप्त में नहीं कहा; आरंभ से, उस समय से जब यह घोषणा की गई कि मैंने कहा था; और प्रभु परमेश्वर, और उसकी आत्मा ने मुझे भेजा है ।
- 17 और प्रभु इस प्रकार कहता है, तुम्हारा मुक्तिदाता, इस्राएल का एकमेव पवित्र परमेश्वर; मैंने उसे भेजा है, प्रभु तुम्हारा परमेश्वर, जो तुम्हारे लाभ के लिए सीखाता है, जो तुम्हें वह मार्ग दिखाता है जिस पर तुम्हें चलना चाहिए, ने इसे किया ।
- 18 ओह यदि तुमने मेरी आज्ञाओं पर ध्यान दिया—तब तुम्हारी शांति नदी के समान होगी, और तुम्हारी धार्मिकता समुद्र के जल के धाराओं के समान ।
- 19 तुम्हारे वंश रेत के समान हैं; और तुम्हारी संतान उसके कण के समान; उसका नाम मेरे सामने से न तो अलग किया जाएगा न ही नष्ट किया जाएगा ।
- 20 तुम बाबुल से बाहर निकलो, कसदियों से भाग जाओ, गाते हुए तुम घोषणा करो, यह कहो, पृथ्वी के छोर तक बताओ; तुम कहो: प्रभु ने अपने सेवक याकूब को बचाया है ।
- 21 और वे प्यासे नहीं होंगे; वह उन्हें मरूस्थलों से ले गया; उसने उनके लिए चट्टान से जल का झरना निकाला; उसने चट्टान को भी काटा और जल बहने लगा ।
- 22 और उसने यह सब किया, और भी बड़े काम किये, फिर भी दुष्टों को शांति नहीं, प्रभु कहता है ।

Hearken unto me, O Jacob, and Israel my called, for I am he; I am the first, and I am also the last.

Mine hand hath also laid the foundation of the earth, and my right hand hath spanned the heavens. I call unto them and they stand up together.

All ye, assemble yourselves, and hear; who among them hath declared these things unto them? The Lord hath loved him; yea, and he will fulfil his word which he hath declared by them; and he will do his pleasure on Babylon, and his arm shall come upon the Chaldeans.

Also, saith the Lord; I the Lord, yea, I have spoken; yea, I have called him to declare, I have brought him, and he shall make his way prosperous.

Come ye near unto me; I have not spoken in secret; from the beginning, from the time that it was declared have I spoken; and the Lord God, and his Spirit, hath sent me.

And thus saith the Lord, thy Redeemer, the Holy One of Israel; I have sent him, the Lord thy God who teacheth thee to profit, who leadeth thee by the way thou shouldst go, hath done it.

O that thou hadst hearkened to my commandments—then had thy peace been as a river, and thy righteousness as the waves of the sea.

Thy seed also had been as the sand; the offspring of thy bowels like the gravel thereof; his name should not have been cut off nor destroyed from before me.

Go ye forth of Babylon, flee ye from the Chaldeans, with a voice of singing declare ye, tell this, utter to the end of the earth; say ye: The Lord hath redeemed his servant Jacob.

And they thirsted not; he led them through the deserts; he caused the waters to flow out of the rock for them; he clave the rock also and the waters gushed out.

And notwithstanding he hath done all this, and greater also, there is no peace, saith the Lord, unto the wicked.

## 1 नफी 21

- 1 और फिर: ओह तुम इस्राएल के घराने, कान लगाकर सुनो, तुम सब जो मेरे लोगों के पादरियों के कारण अलग किये गए और निकाल दिए गए; हां, तुम सब जो अलग किये गए, जो परदेश में बिखेर दिए गए हो, मेरे लोग हो, ओह इस्राएल के घराने । ओह द्वीपों, मुझे सुनो, और तुम दूर प्रदेशों के लोगों कान लगाकर सुनो; प्रभु ने मुझे गर्भ से ही नियुक्त किया है; मेरी मां के पेट में ही उसने मेरे नाम का उल्लेख किया ।
- 2 और उसने मेरे मुंह को तलवार के समान तेज किया; अपने हाथ की परछाईं में उसने मुझे छिपाया, और मुझे उसने चमकीला तीर बनाकर अपने तरकक्ष में मुझे छिपाया;
- 3 और मुझ से कहा: तुम मेरे सेवक हो, ओह इस्राएल, तुम्हारे द्वारा मेरी महिमा प्रकट होगी ।
- 4 तब मैंने कहा, मैंने व्यर्थ में परिश्रम किया, मैंने बिना कारण और व्यर्थ में अपनी शक्ति खोई; अवश्य ही मेरा न्याय प्रभु के साथ है, और मेरा कार्य मेरे परमेश्वर के साथ ।
- 5 और अब, प्रभु कहता है—जिसने मुझे गर्भ से तैयार किया कि मैं उसका सेवक बनूँ, याकूब को फिर से उसके पास लाऊँ—यद्यपि इस्राएल एकत्रित न हो पाए, फिर भी मैं प्रभु की नजरों में महिमापूर्ण रहूँगा, और मेरा परमेश्वर मेरी शक्ति होगी ।
- 6 और उसने कहा था: यह एक सरल सी बात है कि याकूब की जातियों को ऊपर उठाने के लिए, और इस्राएल के बचाए हुएों को पुनःस्थापित करने के लिए तुम मेरे सेवक बनो । मैं तुम्हें अन्यजातियों के लिए ज्योति भी बनाऊँगा, ताकि तुम पृथ्वी के छोर तक मेरा उद्धार बनो ।
- 7 इस्राएल का मुक्तिदाता, उसका पवित्र जन, प्रभु इस प्रकार कहता है, वह जिससे मनुष्य घृणा करता है, वह जिससे राष्ट्र और शासकों के सेवक नफरत करते हैं: राजा देखेंगे और खड़े होंगे, राजकुमार भी उपासना करेंगे, उस प्रभु के कारण जो विश्वसनीय है ।
- 8 प्रभु इस प्रकार कहता है: अपने आनंद के समय मैंने तुम्हें सुना, ओह समुद्र के द्वीपों, और उद्धार के दिन मैंने तुम्हारी मदद की; और मैं तुम्हें सुरक्षित रखूँगा, और उनके अनुबंध के तौर पर तुम्हें अपना सेवक बना कर उन्हें दूँगा । तुम पृथ्वी को स्थापित करके इस उजड़ी विरासत का अधिकार उन्हें दोगे;
- 9 कि तुम कैदियों को कह सकोगे: जाओ; और जो आत्मिक अंधकार में हैं: अपने आपको दिखलाओ । मार्गों के किनारे उनके पेट भरे जाएंगे, और उनकी चारागाह उंचे स्थानों पर होगी ।

## 1 Nephi 21

And again: Hearken, O ye house of Israel, all ye that are broken off and are driven out because of the wickedness of the pastors of my people; yea, all ye that are broken off, that are scattered abroad, who are of my people, O house of Israel. Listen, O isles, unto me, and hearken ye people from far; the Lord hath called me from the womb; from the bowels of my mother hath he made mention of my name.

And he hath made my mouth like a sharp sword; in the shadow of his hand hath he hid me, and made me a polished shaft; in his quiver hath he hid me;

And said unto me: Thou art my servant, O Israel, in whom I will be glorified.

Then I said, I have labored in vain, I have spent my strength for naught and in vain; surely my judgment is with the Lord, and my work with my God.

And now, saith the Lord—that formed me from the womb that I should be his servant, to bring Jacob again to him—though Israel be not gathered, yet shall I be glorious in the eyes of the Lord, and my God shall be my strength.

And he said: It is a light thing that thou shouldst be my servant to raise up the tribes of Jacob, and to restore the preserved of Israel. I will also give thee for a light to the Gentiles, that thou mayest be my salvation unto the ends of the earth.

Thus saith the Lord, the Redeemer of Israel, his Holy One, to him whom man despiseth, to him whom the nations abhorreth, to servant of rulers: Kings shall see and arise, princes also shall worship, because of the Lord that is faithful.

Thus saith the Lord: In an acceptable time have I heard thee, O isles of the sea, and in a day of salvation have I helped thee; and I will preserve thee, and give thee my servant for a covenant of the people, to establish the earth, to cause to inherit the desolate heritages;

That thou mayest say to the prisoners: Go forth; to them that sit in darkness: Show yourselves. They shall feed in the ways, and their pastures shall be in all high places.

- 10 वे भूखे न रहेंगे न ही प्यासे रहेंगे, न गरमी और न ही सूरज कष्ट देगा; क्योंकि वह जो उन पर दया करता है, वही उनका मार्गदर्शन करेगा, यहां तक कि वह उन्हें जल के सोतों के पास ले जाएगा ।
- 11 और मैं अपने सब पर्वतों को मार्ग बना दूंगा, और मेरे राजमार्ग ऊंचे किये जाएंगे ।
- 12 और तब, ओह इस्राएल के घराने, देखो, ये दूर से आएंगे; और ये उत्तर से और पश्चिम से; और ये सीनियों की भूमि से आएंगे ।
- 13 ओह स्वर्ग, गाओ; और ओह पृथ्वी, आनंद मनाओ; क्योंकि जिन-के पैर पूरब में हैं वे स्थापित किये जाएंगे; हे पर्वतों, जोर-जोर से गीत गाओ; क्योंकि वे बिलकुल भी कष्ट नहीं पाएंगे; क्योंकि प्रभु ने अपने लोगों को दिलासा दी है और अपने दुखी लोगों पर दया की है ।
- 14 लेकिन, देखो, सिय्योन कहता है; प्रभु ने मुझे त्याग दिया है, और मेरा प्रभु मुझे भूल गया है—लेकिन वह दिखाएगा कि उसने नहीं त्यागा ।
- 15 क्योंकि क्या एक स्त्री अपने दूध-मुंहे बच्चे को भूल सकती है, क्या उसे अपने गर्भ के बेटे पर दया नहीं होगी ? हां, वे भूल सकती हैं, फिर भी, ओह इस्राएल के घराने, मैं तुम्हें नहीं भूल सकता ।
- 16 देखो, मैंने तुम्हें अपनी हथेलियों पर अंकित कर लिया है; तेरी चारदीवारी निरंतर मेरे सामने है ।
- 17 तुम्हारे बच्चे शीघ्रता से आ रहे हैं और विनाश करने वाले और हानि पहुंचाने वाले तुम्हारे बीच से निकले जा रहे हैं ।
- 18 अपनी आंखें उठाकर चारों ओर देखो; वे सब के सब एकत्रित होकर तुम्हारे पास आ रहे हैं । प्रभु का यह वचन है कि मेरे जीवन की शपथ, तुम अवश्य ही उन सभी को गहनों के समान पहन लोगी, और तुम दुलहन की तरह उन सब को बांध लोगी ।
- 19 क्योंकि तुम्हारे जो स्थान सुनसान और उजड़े हैं, और तुम्हारी जिस भूमि का विनाश हो गया है, उन में अब निवासी न समाएंगे, और तुम्हें नष्ट करने वाले दूर हो जाएंगे ।
- 20 तुम्हारे बच्चे, जो तुम्हें पहले को खोने के पश्चात मिलेंगे, तुम्हारे कान में आकर कहेंगे: यह स्थान हमारे लिए बहुत सकरा है, हमें और स्थान दो ताकि हम उसमें रह सकें ।

They shall not hunger nor thirst, neither shall the heat nor the sun smite them; for he that hath mercy on them shall lead them, even by the springs of water shall he guide them.

And I will make all my mountains a way, and my highways shall be exalted.

And then, O house of Israel, behold, these shall come from far; and lo, these from the north and from the west; and these from the land of Sinim.

Sing, O heavens; and be joyful, O earth; for the feet of those who are in the east shall be established; and break forth into singing, O mountains; for they shall be smitten no more; for the Lord hath comforted his people, and will have mercy upon his afflicted.

But, behold, Zion hath said: The Lord hath forsaken me, and my Lord hath forgotten me—but he will show that he hath not.

For can a woman forget her sucking child, that she should not have compassion on the son of her womb? Yea, they may forget, yet will I not forget thee, O house of Israel.

Behold, I have graven thee upon the palms of my hands; thy walls are continually before me.

Thy children shall make haste against thy destroyers; and they that made thee waste shall go forth of thee.

Lift up thine eyes round about and behold; all these gather themselves together, and they shall come to thee. And as I live, saith the Lord, thou shalt surely clothe thee with them all, as with an ornament, and bind them on even as a bride.

For thy waste and thy desolate places, and the land of thy destruction, shall even now be too narrow by reason of the inhabitants; and they that swallowed thee up shall be far away.

The children whom thou shalt have, after thou hast lost the first, shall again in thine ears say: The place is too strait for me; give place to me that I may dwell.



- 21 तब तुम अपने हृदय में कहोगी: किस ने इन्हें मेरे लिए जन्म दिलाया है ? मैं तो पुत्रहीन और बाँझ हो गई, गुलामी में और यहां वहां घूमती रही ? और इनको किस ने पाला ? देखो, मैं अकेली रह गई थी; तब, ये कहां थे ?
- 22 इस प्रकार प्रभु परमेश्वर कहता है: देखो, मैं अपने हाथ अन्यजातियों की ओर उठाऊंगा, और लोगों के सामने अपना आदर्श स्थापित करूंगा; और वे तुम्हारे बेटों को अपनी गोद में लाएंगे, और तुम्हारी बेटियों को अपने कंधे पर चढ़ाकर तुम्हारे पास पहुंचाएंगे ।
- 23 और राजा तुम्हारे पोषण करने वाले पिता होंगे, और उनकी रानियां तुम्हें दूध पिलाने वाली मां होंगी; वे अपना चेहरा पृथ्वी की ओर करके तुम्हारे सामने झुकेंगे, और तुम्हारे पैरों की धूल चाटेंगे; और तब तुम जानोगे कि मैं प्रभु हूँ; क्योंकि वे कभी लज्जित न होंगे जो मेरी प्रतीक्षा करते हैं ।
- 24 क्या वीर के हाथ से शिकार छीना जा सकता है, या न्यायानुसार बनाये गए बंदी को छोड़ा जा सकता है ?
- 25 लेकिन प्रभु कहता है: बलवान के बंदी छोड़ा लिए जाएंगे और भयानक मनुष्य का शिकार छीन लिया जाएगा; क्योंकि मैं उनके साथ संघर्ष करूंगा, जो तुम्हारे साथ संघर्ष करते हैं, और मैं तुम्हारे बच्चों को बचाऊंगा ।
- 26 और जो तुम्हें सताएंगे उन्हें मैं उन्हीं का मांस खिलाऊंगा; और मीठी मदिरा के समान उन्हें अपने लहू को पीकर मतवाला होना पड़ेगा; और सबको यह मालूम होगा कि मैं, प्रभु, याकूब का सर्वशक्तिमान परमेश्वर, तुम्हारा उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता हूँ ।

Then shalt thou say in thine heart: Who hath begotten me these, seeing I have lost my children, and am desolate, a captive, and removing to and fro? And who hath brought up these? Behold, I was left alone; these, where have they been?

Thus saith the Lord God: Behold, I will lift up mine hand to the Gentiles, and set up my standard to the people; and they shall bring thy sons in their arms, and thy daughters shall be carried upon their shoulders.

And kings shall be thy nursing fathers, and their queens thy nursing mothers; they shall bow down to thee with their face towards the earth, and lick up the dust of thy feet; and thou shalt know that I am the Lord; for they shall not be ashamed that wait for me.

For shall the prey be taken from the mighty, or the lawful captives delivered?

But thus saith the Lord, even the captives of the mighty shall be taken away, and the prey of the terrible shall be delivered; for I will contend with him that contendeth with thee, and I will save thy children.

And I will feed them that oppress thee with their own flesh; they shall be drunken with their own blood as with sweet wine; and all flesh shall know that I, the Lord, am thy Savior and thy Redeemer, the Mighty One of Jacob.

## 1 नफी 22

- 1 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, इन बातों को पढ़ने के बाद जो कि पीतल की पट्टियों पर लिखी हुई थीं, मेरे भाई मेरे पास आए और मुझ से बोले: जो बातें तुमने पढ़ी हैं उनका क्या अर्थ है ? देखो, क्या उनको आत्मिक रूप से समझा जाना चाहिए, जो बातें आत्मा के कारण होंगी न कि शरीर के ?
- 2 और मैं, नफी ने, उनसे कहा: देखो इन्हें भविष्यवक्ता पर आत्मा की वाणी के द्वारा प्रकट किया गया; क्योंकि आत्मा के द्वारा भविष्यवक्ताओं को सब बातें बताई जाती हैं, जो कि मानव संतान पर शरीर के कारण आएंगी ।
- 3 इसलिए, जिन बातों को मैंने पढ़ा है वे पार्थिव और आत्मिक दोनों से संबंधित हैं; क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि इस्राएल का घराना, अभी या बाद में, संपूर्ण पृथ्वी पर और सभी राष्ट्रों के बीच बिखरा दिया जाएगा ।
- 4 और देखो, बहुत से हैं जो पहले से ही यरूशलेम में रहने वालों की जानकारी से खो चुके हैं । हां, सभी जातियों के बहुत से हिस्से को दूर ले जाया जा चुका है; और वे समुद्र के द्वीपों में इधर-उधर बिखर चुके हैं; और वे कहां हैं हम में से किसी को नहीं पता, सिवाय इसके कि उन्हें दूर ले जाया गया है ।
- 5 और जबकि वे दूर ले जाए जा चुके हैं, उनके संबंध में इन बातों की भविष्यवाणी की गई है, और उनके संबंध में भी जो इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर के कारण इसके बाद बिखरे जाएंगे और अन्य लोगों के साथ मिलाए जाएंगे; क्योंकि वे उसके विरुद्ध अपने हृदयों को कठोर कर लेंगे; इसलिए, वे सभी राष्ट्रों के बीच बिखरे जाएंगे और सभी मनुष्यों से घृणा पाएंगे ।
- 6 फिर भी, अन्यजातियों द्वारा पोषण पाने, और प्रभु ने अपना हाथ अन्यजाति के ऊपर उठाने और उनको एक आदर्श के लिए स्थापित करने, और उनके बच्चे उनकी गोद में उठाए जाने, और उनकी बेटियां उनके कंधों पर चढ़ाए जाने के पश्चात, देखो ये बातें जिनके बारे में बोला गया है पार्थिव हैं; क्योंकि हमारे पूर्वजों के साथ इस प्रकार प्रभु के अनुबंध हैं; और आने वाले दिनों में हमारे लिए इनका अर्थ है, और हमारे भाइयों के लिए भी जो इस्राएल के घराने के हैं ।

## 1 Nephi 22

And now it came to pass that after I, Nephi, had read these things which were engraven upon the plates of brass, my brethren came unto me and said unto me: What meaneth these things which ye have read? Behold, are they to be understood according to things which are spiritual, which shall come to pass according to the spirit and not the flesh?

And I, Nephi, said unto them: Behold they were manifest unto the prophet by the voice of the Spirit; for by the Spirit are all things made known unto the prophets, which shall come upon the children of men according to the flesh.

Wherefore, the things of which I have read are things pertaining to things both temporal and spiritual; for it appears that the house of Israel, sooner or later, will be scattered upon all the face of the earth, and also among all nations.

And behold, there are many who are already lost from the knowledge of those who are at Jerusalem. Yea, the more part of all the tribes have been led away; and they are scattered to and fro upon the isles of the sea; and whither they are none of us knoweth, save that we know that they have been led away.

And since they have been led away, these things have been prophesied concerning them, and also concerning all those who shall hereafter be scattered and be confounded, because of the Holy One of Israel; for against him will they harden their hearts; wherefore, they shall be scattered among all nations and shall be hated of all men.

Nevertheless, after they shall be nursed by the Gentiles, and the Lord has lifted up his hand upon the Gentiles and set them up for a standard, and their children have been carried in their arms, and their daughters have been carried upon their shoulders, behold these things of which are spoken are temporal; for thus are the covenants of the Lord with our fathers; and it meaneth us in the days to come, and also all our brethren who are of the house of Israel.

- 7 और इसका अर्थ है कि समय आता है कि इस्राएल के घराने के बिखर जाने और अन्य लोगों के साथ मिलाए जाने के पश्चात, प्रभु परमेश्वर अन्यजातियों के बीच एक शक्तिशाली राष्ट्र खड़ा करेगा, हां, इसी भूमि पर, और उनके द्वारा हमारे वंश बिखरे जाएंगे ।
- 8 और हमारे वंश के बिखरने के पश्चात प्रभु परमेश्वर अन्यजातियों के बीच आश्चर्यजनक कार्य करेगा, जो हमारे वंश के लिए बहुत मूल्यवान होंगे; इसलिए, इसकी तुलना ऐसा की जा सकती है जैसे उनका पोषण अन्यजातियों द्वारा किया जाना और उनकी गोद में और उनके कंधे में लाया जाना ।
- 9 और यह अन्यजातियों के लिए भी मूल्यवान होगा; और न केवल अन्यजातियों के लिए लेकिन संपूर्ण इस्राएल के घराने के लिए, स्वर्ग के पिता के इब्राहीम के साथ बनाए अनुबंध को प्रकट करते हुए कहेगा: तुम्हारे वंश में पृथ्वी की सारी जातियां आशीषित होंगी ।
- 10 और मैं चाहूंगा, मेरे भाइयों, कि तुम जानो कि पृथ्वी की सारी जातियां तब तक आशीषित नहीं हो सकतीं जब तक वह अपनी भुजा को राष्ट्रों की आंखों के सामने प्रकट नहीं करेगा ।
- 11 इसलिए, प्रभु परमेश्वर, अपने अनुबंधों और सुसमाचार को इस्राएल के घराने में लाकर, राष्ट्रों की आंखों के सामने अपनी भुजा को प्रकट करेगा ।
- 12 इसलिए, वह उन्हें गुलामी से फिर से बाहर निकालेगा, और वे अपने पैतृक संपत्ति वाली भूमि में एकत्रित होंगे; और वे अज्ञानता और अंधकार से बाहर निकाले जाएंगे; और वे जानेंगे कि, इस्राएल का सर्वशक्तिमान, प्रभु उनका उद्धारकर्ता और उनका मुक्तिदाता है ।
- 13 और उस बड़े और विशाल घृणित गिरजे का रक्त, जो कि संपूर्ण पृथ्वी की वेश्या है, उनके स्वयं के सिरों पर होगा; क्योंकि वे आपस में युद्ध करेंगे, और उनके अपने हाथों की तलवार उनके स्वयं के सिरों पर आकर गिरेगी, और वे अपने स्वयं के रक्त को पीकर मतवाले होंगे ।
- 14 और प्रत्येक राष्ट्र जो तुम्हारे से युद्ध करेगा, ओह इस्राएल के घराने, एक दूसरे के खिलाफ हो जाएंगे, और वे उसी गड्ढे में गिरेंगे जो उन्होंने प्रभु के लोगों को फंसाने के लिए खोदा था । और वे सब जो सिय्योन से युद्ध करेंगे मिटा दिए जाएंगे, और वह बड़ी वेश्या, जिसने प्रभु के सीधे मार्गों को दूषित किया है, हां, वह बड़े और विशाल घृणित गिरजा, मिट्टी में धंस जाएगा और उसका पतन बहुत भयंकर होगा ।

And it meaneth that the time cometh that after all the house of Israel have been scattered and confounded, that the Lord God will raise up a mighty nation among the Gentiles, yea, even upon the face of this land; and by them shall our seed be scattered.

And after our seed is scattered the Lord God will proceed to do a marvelous work among the Gentiles, which shall be of great worth unto our seed; wherefore, it is likened unto their being nourished by the Gentiles and being carried in their arms and upon their shoulders.

And it shall also be of worth unto the Gentiles; and not only unto the Gentiles but unto all the house of Israel, unto the making known of the covenants of the Father of heaven unto Abraham, saying: In thy seed shall all the kindreds of the earth be blessed.

And I would, my brethren, that ye should know that all the kindreds of the earth cannot be blessed unless he shall make bare his arm in the eyes of the nations.

Wherefore, the Lord God will proceed to make bare his arm in the eyes of all the nations, in bringing about his covenants and his gospel unto those who are of the house of Israel.

Wherefore, he will bring them again out of captivity, and they shall be gathered together to the lands of their inheritance; and they shall be brought out of obscurity and out of darkness; and they shall know that the Lord is their Savior and their Redeemer, the Mighty One of Israel.

And the blood of that great and abominable church, which is the whore of all the earth, shall turn upon their own heads; for they shall war among themselves, and the sword of their own hands shall fall upon their own heads, and they shall be drunken with their own blood.

And every nation which shall war against thee, O house of Israel, shall be turned one against another, and they shall fall into the pit which they digged to ensnare the people of the Lord. And all that fight against Zion shall be destroyed, and that great whore, who hath perverted the right ways of the Lord, yea, that great and abominable church, shall tumble to the dust and great shall be the fall of it.

15 क्योंकि देखो, भविष्यवक्ता कहता है, समय बहुत जल्दी आने वाला है कि मानव संतान के हृदयों पर शैतान का कोई वश नहीं चलेगा; क्योंकि जल्दी वह दिन आने वाला है कि सब घमंड और दुष्ट कर्म करने वाले ठूठ के समान हो जाएंगे; और दिन आने वाला है कि उन्हें अवश्य ही जलाया जाएगा।

16 क्योंकि शीघ्र वह समय आने वाला है कि परमेश्वर के क्रोध की परिपूर्णता को मनुष्य के सब बच्चों के ऊपर उंडेला जाएगा; क्योंकि वह ऐसा नहीं होने देगा कि दुष्ट धर्मी को नष्ट करे।

17 इसलिए, वह अपनी शक्ति से धर्मियों को बचाएगा, चाहे उसकी क्रोध की परिपूर्णता ही क्यों न आ जाए, और धर्मी बचाए जाएं, बेशक उनके शत्रुओं को आग के द्वारा नष्ट करना पड़े। इसलिए, धर्मी को भयभीत होने की जरूरत नहीं; क्योंकि भविष्यवक्ता इस प्रकार कहता है, वे आग से भी बचाए जाएंगे।

18 देखो, मेरे भाइयों, मैं तुम से कहता हूँ, कि ये बातें जल्दी होने वाली हैं; हाँ, रक्त, और आग, और धुएँ का कोहरा भी अवश्य आएगा; और यह इस पृथ्वी पर ही होगा; और यह मनुष्य पर शरीर के अनुसार होगा यदि वे अपने हृदयों को इस्राएल के एकमेव परमेश्वर के विरुद्ध कठोर बना लेंगे।

19 क्योंकि देखो, धर्मी नष्ट नहीं होंगे; क्योंकि अवश्य ही वह समय आएगा कि वे सब जो सिय्योन से लड़ेंगे अलग कर दिए जाएंगे।

20 और प्रभु अवश्य ही अपने लोगों के लिए मार्ग तैयार करेगा, मूसा के शब्दों के पूरा होने तक, जो उसने यह कहते हुए बोले थे: प्रभु तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे और मेरे समान एक भविष्यवक्ता खड़ा करेगा; तुम उसकी सब बातों को सुनना जो कुछ वह तुम से कहेगा। और ऐसा होगा कि वे सब जो उस भविष्यवक्ता को नहीं सुनेंगे लोगों के बीच से अलग कर दिए जाएंगे।

21 और अब मैं, नफी, तुम से घोषणा करता हूँ, कि यह भविष्यवक्ता जिसके विषय में मूसा ने कहा वह इस्राएल का एकमेव परमेश्वर था; इसलिए, वह धार्मिकता से न्याय करेगा।

22 और धर्मी को भयभीत होने की अवश्यकता नहीं; क्योंकि ये वे हैं जो हराए नहीं जाएंगे। लेकिन यह शैतान का राज्य है, जो मानव संतान के बीच बनाया जाएगा, जिसके राज्य की स्थापना उनके बीच होगी जो शरीर में हैं—

For behold, saith the prophet, the time cometh speedily that Satan shall have no more power over the hearts of the children of men; for the day soon cometh that all the proud and they who do wickedly shall be as stubble; and the day cometh that they must be burned.

For the time soon cometh that the fulness of the wrath of God shall be poured out upon all the children of men; for he will not suffer that the wicked shall destroy the righteous.

Wherefore, he will preserve the righteous by his power, even if it so be that the fulness of his wrath must come, and the righteous be preserved, even unto the destruction of their enemies by fire. Wherefore, the righteous need not fear; for thus saith the prophet, they shall be saved, even if it so be as by fire.

Behold, my brethren, I say unto you, that these things must shortly come; yea, even blood, and fire, and vapor of smoke must come; and it must needs be upon the face of this earth; and it cometh unto men according to the flesh if it so be that they will harden their hearts against the Holy One of Israel.

For behold, the righteous shall not perish; for the time surely must come that all they who fight against Zion shall be cut off.

And the Lord will surely prepare a way for his people, unto the fulfilling of the words of Moses, which he spake, saying: A prophet shall the Lord your God raise up unto you, like unto me; him shall ye hear in all things whatsoever he shall say unto you. And it shall come to pass that all those who will not hear that prophet shall be cut off from among the people.

And now I, Nephi, declare unto you, that this prophet of whom Moses spake was the Holy One of Israel; wherefore, he shall execute judgment in righteousness.

And the righteous need not fear, for they are those who shall not be confounded. But it is the kingdom of the devil, which shall be built up among the children of men, which kingdom is established among them which are in the flesh—

23 क्योंकि वह समय शीघ्रता से आएगा कि सब गिरजे जो कि लाभ पाने के लिए बनाए गए हैं, और जो शरीर पर अधिकार पाने के लिए बनाए गए हैं, और जो संसार की दृष्टि में लोकप्रिय होने के लिए बनाए गए हैं, और जो शरीर की चाहतों और संसार की बातों की खोज करते हैं, और सब तरह के अधर्म करते हैं; हां, अन्य शब्दों में, वे सब जो शैतान के राज्य के हैं उन्हें भयभीत होने, और कांपने, और थरथराने की जरूरत है; वे वो हैं जो धूल में मिला दिए जाएंगे; वे वो हैं जो ठूठ के समान जलाए जाएंगे; और यह भविष्यवक्ता के शब्दों के अनुसार होगा।

24 और समय शीघ्रता से आता है कि धर्मियों को थान के बछड़ों के समान ले जाया जाएगा, और इस्राएल का एकमेव पवित्र परमेश्वर अवश्य ही अधिकार, और बल, और शक्ति, और महान महिमा से राज्य करेगा।

25 और वह अपने बच्चों को पृथ्वी के चारों कोनों से एकत्रित करेगा; और वह अपनी भेड़ों को गिनेगा और वे उसे जानेंगी; और फिर एक झुंड और एक चरवाहा होगा; और वह अपनी भेड़ों को चराएगा, और वे उसमें चारागाह पाएंगी।

26 और उसके लोगों की धार्मिकता के कारण, शैतान के पास शक्ति नहीं होगी; इसलिए, कई वर्षों के लिए उसे खुला नहीं छोड़ा जाएगा; क्योंकि उसका लोगों के हृदयों पर शक्ति नहीं होगी, क्योंकि वे धार्मिकता में रहेंगे, और इस्राएल का एकमेव परमेश्वर राज्य करेगा।

27 और अब देखो, मैं, नफी, तुम से कहता हूँ कि शरीर के कारण ये सब बातें अवश्य ही आएंगी।

28 लेकिन, देखो, सब राष्ट्र, जाति, भाषा, और लोग इस्राएल के एकमेव परमेश्वर में सुरक्षित रहेंगे यदि वे पश्चाताप करेंगे।

29 और अब मैं, नफी, समाप्त करता हूँ; क्योंकि इन बातों के संबंध में आगे बोलने की हिम्मत अभी मुझ में नहीं है।

30 इसलिए, मेरे भाइयों, मैं चाहूंगा कि तुम उन बातों पर विचार करो जो पीतल की पट्टियों पर लिखी गई हैं उन्हें सच मानो; और वे गवाही देती हैं कि मनुष्य को अवश्य ही परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी होना चाहिए।

31 इसलिए, तुम यह न समझना कि केवल मैं और मेरे पिता ही इनकी गवाही देते हैं, और इन्हें सीखाते भी हैं। इसलिए, यदि तुम आज्ञाओं का पालन करते हो, और अंत तक सहनशील बने रहते हो, तो अंतिम दिन में तुम्हें बचा लिया जाएगा। और यह सच है। आमीन

For the time speedily shall come that all churches which are built up to get gain, and all those who are built up to get power over the flesh, and those who are built up to become popular in the eyes of the world, and those who seek the lusts of the flesh and the things of the world, and to do all manner of iniquity; yea, in fine, all those who belong to the kingdom of the devil are they who need fear, and tremble, and quake; they are those who must be brought low in the dust; they are those who must be consumed as stubble; and this is according to the words of the prophet.

And the time cometh speedily that the righteous must be led up as calves of the stall, and the Holy One of Israel must reign in dominion, and might, and power, and great glory.

And he gathereth his children from the four quarters of the earth; and he numbereth his sheep, and they know him; and there shall be one fold and one shepherd; and he shall feed his sheep, and in him they shall find pasture.

And because of the righteousness of his people, Satan has no power; wherefore, he cannot be loosed for the space of many years; for he hath no power over the hearts of the people, for they dwell in righteousness, and the Holy One of Israel reigneth.

And now behold, I, Nephi, say unto you that all these things must come according to the flesh.

But, behold, all nations, kindreds, tongues, and people shall dwell safely in the Holy One of Israel if it so be that they will repent.

And now I, Nephi, make an end; for I durst not speak further as yet concerning these things.

Wherefore, my brethren, I would that ye should consider that the things which have been written upon the plates of brass are true; and they testify that a man must be obedient to the commandments of God.

Wherefore, ye need not suppose that I and my father are the only ones that have testified, and also taught them. Wherefore, if ye shall be obedient to the commandments, and endure to the end, ye shall be saved at the last day. And thus it is. Amen.

# नफी की दूसरी पुस्तक

लेही की मृत्यु का विवरण । नफी के भाइयों का उसके विरुद्ध विद्रोह करना । प्रभु नफी को निर्जन प्रदेश में भाग जाने की चेतावनी देता है । निर्जन प्रदेश में उसकी यात्रा, इत्यादि ।

## 2 नफी 1

- 1 और अब ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने भाइयों को शिक्षा देना समाप्त किया, तब हमारे पिता लेही ने भी उनसे बहुत बातें कही, और उन्हें समझाया, प्रभु ने यरूशलेम प्रदेश से बाहर निकालने में उनके लिए कितने महान कार्य किये थे ।
- 2 और उन्होंने समुद्र पर उनके प्रतिरोध और उनके जीवन को बचाने में परमेश्वर की दया के संबंध में उनसे कहा, कि वे समुद्र में डुबाए नहीं गए ।
- 3 और उन्होंने प्रतिज्ञा के प्रदेश के संबंध में भी उनसे कहा, जिसे उन्होंने पा लिया था—हमें यरूशलेम से बाहर निकल आने की चेतावनी देकर प्रभु कितना दयावान रहा है ।
- 4 क्योंकि, देखो, उन्होंने कहा, मैंने एक दिव्यदर्शन देखा है, जिससे मैं जानता हूँ कि यरूशलेम नष्ट कर दिया गया है; और यदि हम यरूशलेम में रह जाते तो हम भी नष्ट हो गए होते ।
- 5 लेकिन, उन्होंने कहा, हमारे कष्टों के बावजूद, हमने प्रतिज्ञा के प्रदेश को पा लिया है, एक ऐसा प्रदेश जो अन्य सभी प्रदेशों में से चुने जाने के योग्य है; एक प्रदेश जिसे प्रभु परमेश्वर ने मेरे वंश के लिए पितृक संपत्ति वाला प्रदेश होने के लिए अनुबंध किया है । हां, प्रभु ने इस प्रदेश को मेरे और मेरे बच्चों से हमेशा के लिए अनुबंध किया है, और उन सब से भी जो प्रभु के हाथों द्वारा अन्य प्रदेशों से बाहर लाए जाएंगे ।
- 6 इसलिए, मैं लेही, अपने अंदर आत्मा के कामों के अनुसार भविष्यवाणी करता हूँ, कि इस प्रदेश में केवल वे ही आएंगे जो प्रभु के हाथों द्वारा लाए जाएंगे ।

# The Second Book of Nephi

*An account of the death of Lehi. Nephi's brethren rebel against him. The Lord warns Nephi to depart into the wilderness. His journeyings in the wilderness, and so forth.*

## 2 Nephi 1

And now it came to pass that after I, Nephi, had made an end of teaching my brethren, our father, Lehi, also spake many things unto them, and rehearsed unto them, how great things the Lord had done for them in bringing them out of the land of Jerusalem.

And he spake unto them concerning their rebellions upon the waters, and the mercies of God in sparing their lives, that they were not swallowed up in the sea.

And he also spake unto them concerning the land of promise, which they had obtained—how merciful the Lord had been in warning us that we should flee out of the land of Jerusalem.

For, behold, said he, I have seen a vision, in which I know that Jerusalem is destroyed; and had we remained in Jerusalem we should also have perished.

But, said he, notwithstanding our afflictions, we have obtained a land of promise, a land which is choice above all other lands; a land which the Lord God hath covenanted with me should be a land for the inheritance of my seed. Yea, the Lord hath covenanted this land unto me, and to my children forever, and also all those who should be led out of other countries by the hand of the Lord.

Wherefore, I, Lehi, prophesy according to the workings of the Spirit which is in me, that there shall none come into this land save they shall be brought by the hand of the Lord.

- 7 इसलिए, यह प्रदेश उन्हीं को समर्पित किया गया है जिन्हें वह यहां लाएगा। और यदि उन्होंने उसकी दी आज्ञाओं के अनुसार उसकी सेवा की, तब यह उनके लिए स्वतंत्रता का प्रदेश होगा; इसलिए, वे कभी भी गुलामी में नहीं लाए जाएंगे; यदि, ऐसा होता है तो अधर्म के कारण होगा; क्योंकि यदि अधर्म प्रदेश को श्रापित करता है तो यह उनके कारण होगा, लेकिन धर्मी के लिए यह हमेशा आशीषित रहेगा।
- 8 और देखो, अभी इस प्रदेश को अन्य राष्ट्रों की जानकारी से अलग रखना बुद्धिमानी होगी; क्योंकि बहुत से राष्ट्र इस प्रदेश में फैल जाएंगे, कि इसके उतराधिकारी के लिए स्थान नहीं रहेगा।
- 9 इसलिए, मैं, लेही ने, एक प्रतिज्ञा प्राप्त की है कि जिन लोगों को प्रभु परमेश्वर यरूशलेम से बाहर ले आएगा, यदि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे तो वे इस प्रदेश में प्रगति करेंगे; और उन्हें अन्य सभी राष्ट्रों से सुरक्षित रखा जाएगा जिससे वे इस प्रदेश को अपने नियंत्रण में रख सकेंगे। और यदि वे नियमों का पालन करते रहेंगे तो उन्हें इस प्रदेश में आशीष प्राप्त होगी, और उन्हें सताने वाला कोई नहीं होगा; और न ही उनके पैतृक संपत्ति वाले प्रदेश को लेने वाला; और वे सदा के लिए सुरक्षित रह सकेंगे।
- 10 लेकिन देखो, पृथ्वी और सभी मनुष्य की रचना का ज्ञान प्राप्त करने, संसार की रचना से लेकर प्रभु के महान और आश्चर्यकर्मों को जानने, विश्वास द्वारा सब कुछ करने की शक्ति प्राप्त होने, आरंभ से सभी आज्ञाओं को प्राप्त करने और उसकी असीम करुणा द्वारा प्रतिज्ञा के इस बहुमूल्य प्रदेश में लाए जाने की महान आशीष प्रभु के हाथ से प्राप्त करने के पश्चात वह समय आने वाला है जब वे अविश्वास में दुर्बल होंगे—देखो, मैं कहता हूँ, यदि वह दिन आता है जब वे इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर, सच्चे मसीहा, अपने मुक्तिदाता और अपने परमेश्वर को अस्वीकार कर देंगे, तब देखो, उसका उचित न्याय उनके सिर पर होगा।
- 11 हां, वह अन्य राष्ट्रों को उनके यहां लाएगा, और वह उनको शक्ति देगा और वह उनसे प्रदेश का स्वामित्व का अधिकार लेकर उन लोगों को देगा और इनको पराजित कर तितर-बितर कर दिया जाएगा।

Wherefore, this land is consecrated unto him whom he shall bring. And if it so be that they shall serve him according to the commandments which he hath given, it shall be a land of liberty unto them; wherefore, they shall never be brought down into captivity; if so, it shall be because of iniquity; for if iniquity shall abound cursed shall be the land for their sakes, but unto the righteous it shall be blessed forever.

And behold, it is wisdom that this land should be kept as yet from the knowledge of other nations; for behold, many nations would overrun the land, that there would be no place for an inheritance.

Wherefore, I, Lehi, have obtained a promise, that inasmuch as those whom the Lord God shall bring out of the land of Jerusalem shall keep his commandments, they shall prosper upon the face of this land; and they shall be kept from all other nations, that they may possess this land unto themselves. And if it so be that they shall keep his commandments they shall be blessed upon the face of this land, and there shall be none to molest them, nor to take away the land of their inheritance; and they shall dwell safely forever.

But behold, when the time cometh that they shall dwindle in unbelief, after they have received so great blessings from the hand of the Lord—having a knowledge of the creation of the earth, and all men, knowing the great and marvelous works of the Lord from the creation of the world; having power given them to do all things by faith; having all the commandments from the beginning, and having been brought by his infinite goodness into this precious land of promise—behold, I say, if the day shall come that they will reject the Holy One of Israel, the true Messiah, their Redeemer and their God, behold, the judgments of him that is just shall rest upon them.

Yea, he will bring other nations unto them, and he will give unto them power, and he will take away from them the lands of their possessions, and he will cause them to be scattered and smitten.

- 12 हां, जैसे एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को देती, वैसे ही रक्तपात भी आगे बढ़ेगा, और उनके बीच बहुत मुसीबतें आएंगी; इसलिए मेरे बेटों, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी बातों को याद रखो, हां, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी बातों पर ध्यान दो ।
- 13 ओह ! मैं चाहता हूँ कि तुम जागो, गहरी नींद से जागो, हां, नरक की नींद से तुम जागो और जिस भयानक जंजीर से तुम बंधे हुए हो उसे जोर से हिला कर तोड़ दो, यह वह जंजीर है जो मानव संतान को बंदी बना कर अनंत दुख और पीड़ा की गहरी खाई में ले जाती है ।
- 14 जागो ! और धूल में से उठो, और कांपते माता-पिता की आवाज सुनो जिनके शरीरों को तुम शीघ्र ही ठंडी और शांत कब्र में सुला दोगे जहां से कोई भी यात्री वापस नहीं लौट सकता; कुछ दिनों में ही मैं इस संसार की रीति से गुजर जाऊंगा ।
- 15 लेकिन देखो, प्रभु ने मेरी आत्मा को नरक से बचा लिया है; मैंने उसकी महिमा को देखा है और मैं उसके प्रेम की बांहों में अनंतरूप से लपेट लिया गया हूँ ।
- 16 और मेरी इच्छा यह है कि तुम प्रभु के नियमों और न्याय का पालन करना याद रखो; देखो, यह आरंभ से ही मेरी आत्मा की उत्सुकता रही है ।
- 17 मेरा हृदय समय समय पर दुख में डूबा रहता है, क्योंकि मैं इस बात से भयभीत हूँ कि कहीं प्रभु तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे हृदयों की कठोरता के कारण तुम्हारे ऊपर अपने संपूर्ण क्रोध के साथ आ न जाए, और तुम अलग हो जाओ और सदा के लिए नष्ट कर दिए जाओ ।
- 18 या, कि तुम्हारे ऊपर अनेक पीढ़ियों तक श्राप रहेगा; और तुम्हारे ऊपर तलवार, और अकाल, और घृणा आएगी और तुम शैतान की गुलामी और इच्छानुसार चलाए जाओगे ।
- 19 ओह मेरे बेटों, मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे ऊपर ये कष्ट न आए और तुम प्रभु के चुने हुए और पसंदीदा बने रहो । लेकिन देखो, उसकी इच्छा पूरी होगी; क्योंकि उसकी रीतियां सदा के लिए धार्मिक हैं ।
- 20 और उसने कहा है कि: जितना तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे उतना तुम प्रदेश में प्रगति करोगे; लेकिन जब तुम मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे तब तुम्हें मेरी उपस्थिति से अलग कर दिया जाएगा ।

Yea, as one generation passeth to another there shall be bloodsheds, and great visitations among them; wherefore, my sons, I would that ye would remember; yea, I would that ye would hearken unto my words.

O that ye would awake; awake from a deep sleep, yea, even from the sleep of hell, and shake off the awful chains by which ye are bound, which are the chains which bind the children of men, that they are carried away captive down to the eternal gulf of misery and woe.

Awake! and arise from the dust, and hear the words of a trembling parent, whose limbs ye must soon lay down in the cold and silent grave, from whence no traveler can return; a few more days and I go the way of all the earth.

But behold, the Lord hath redeemed my soul from hell; I have beheld his glory, and I am encircled about eternally in the arms of his love.

And I desire that ye should remember to observe the statutes and the judgments of the Lord; behold, this hath been the anxiety of my soul from the beginning.

My heart hath been weighed down with sorrow from time to time, for I have feared, lest for the hardness of your hearts the Lord your God should come out in the fulness of his wrath upon you, that ye be cut off and destroyed forever;

Or, that a cursing should come upon you for the space of many generations; and ye are visited by sword, and by famine, and are hated, and are led according to the will and captivity of the devil.

O my sons, that these things might not come upon you, but that ye might be a choice and a favored people of the Lord. But behold, his will be done; for his ways are righteousness forever.

And he hath said that: Inasmuch as ye shall keep my commandments ye shall prosper in the land; but inasmuch as ye will not keep my commandments ye shall be cut off from my presence.



- 21 और अब, कि तुमसे मेरी आत्मा आनंदित रहे और तुम्हारे कारण सुखपूर्वक मैं इस संसार से जा सकूँ, कि मैं शोक और दुख के साथ कब्र में न जाऊँ, इसलिए, मेरे बेटों तुम धूल से उठो, और मर्द बन कर एक ही मन और एक ही हृदय होकर, निश्चय करके, सभी बातों में संगठित हो जाओ, ताकि तुम गुलामी में न चले जाओ;
- 22 ताकि तुम दुखदाई श्राप से श्रापित न किये जाओ; और यह भी, कि न्याय संगत परमेश्वर का क्रोध, नाश करने के लिए, तुम्हारे ऊपर न आए, हाँ, आत्मा और शरीर दोनों का अनंत नाश ।
- 23 जागो, मेरे बेटों; धार्मिकता का कवच पहन लो । जिस जंजीर से तुम बंधे हुए हो उसे तोड़ दो, और अंधकार से बाहर निकल आओ, और धूल से उठो ।
- 24 अपने भाई का बिलकुल विद्रोह मत करना जिसके दर्शन महिमापूर्ण रहे हैं, और जिसने हमारे यरूशलेम छोड़ने के समय से आज्ञाओं का पालन किया; और जो इस प्रतिज्ञा के प्रदेश में हमें लाने में परमेश्वर के हाथों का औजार बना रहा; क्योंकि यदि वह नहीं होता तब हम निर्जन प्रदेश में भूख से मर जाते; फिर भी तुमने उसके प्राण लेने चाहे और तुम्हारे कारण उसने बहुत कष्ट सहे ।
- 25 और तुम्हारे कारण मैं उसके लिए अत्याधिक भयभीत हूँ और कांप रहा हूँ, कहीं ऐसा न हो कि उसे फिर कष्ट उठाना पड़े; क्योंकि देखो, तुमने उस पर दोष लगाया है कि वह शक्तिशाली और तुम्हारा अधिकारी बनना चाहता है; लेकिन मैं यह जानता हूँ कि वह न तो शक्तिशाली और न ही तुम्हारा अधिकारी बनना चाहता है; वह तो परमेश्वर की महिमा और तुम्हारे स्वयं के लिए अनंत कल्याण खोज रहा है ।
- 26 और तुम उसकी स्पष्टता के कारण उसके विरुद्ध बड़बड़ाते हो । तुम कहते हो कि उसने रूखी बातें कहीं; और कहते हो कि उसने तुम पर क्रोध किया; लेकिन देखो, उसकी रूखी बातें परमेश्वर के शब्दों की शक्ति थी, जो उसके अंदर थी, और जिसे तुम क्रोध कहते हो वह सच्चाई परमेश्वर के अनुसार थी, जिसे उसने छिपाया नहीं और निडरता से तुम्हारे अधर्म को प्रकट किया ।

And now that my soul might have joy in you, and that my heart might leave this world with gladness because of you, that I might not be brought down with grief and sorrow to the grave, arise from the dust, my sons, and be men, and be determined in one mind and in one heart, united in all things, that ye may not come down into captivity;

That ye may not be cursed with a sore cursing; and also, that ye may not incur the displeasure of a just God upon you, unto the destruction, yea, the eternal destruction of both soul and body.

Awake, my sons; put on the armor of righteousness. Shake off the chains with which ye are bound, and come forth out of obscurity, and arise from the dust.

Rebel no more against your brother, whose views have been glorious, and who hath kept the commandments from the time that we left Jerusalem; and who hath been an instrument in the hands of God, in bringing us forth into the land of promise; for were it not for him, we must have perished with hunger in the wilderness; nevertheless, ye sought to take away his life; yea, and he hath suffered much sorrow because of you.

And I exceedingly fear and tremble because of you, lest he shall suffer again; for behold, ye have accused him that he sought power and authority over you; but I know that he hath not sought for power nor authority over you, but he hath sought the glory of God, and your own eternal welfare.

And ye have murmured because he hath been plain unto you. Ye say that he hath used sharpness; ye say that he hath been angry with you; but behold, his sharpness was the sharpness of the power of the word of God, which was in him; and that which ye call anger was the truth, according to that which is in God, which he could not restrain, manifesting boldly concerning your iniquities.

- 27 और ऐसा है कि परमेश्वर की शक्ति का उसके साथ होना आवश्यक है, यहां तक कि तुम्हें उसके द्वारा आज्ञा देना कि तुम उन आज्ञाओं का पालन करो। लेकिन देखो, यह वह नहीं था, लेकिन उसके अंदर प्रभु की आत्मा थी जिसने उसके मुख को खोल कर वह बातें कहीं जिन्हें वह रोक नहीं सका।
- 28 और अब मेरे बेटों, लमान, लेमुएल और साम, और मेरे वे बेटे भी, जो इश्माएल के पुत्र हैं, देखो, यदि तुमने नफी की कही बातों को माना, तब तुम नष्ट नहीं होगे। और यदि तुमने उसकी बातों के अनुसार किया तब मैं तुम्हें आशीष देता हूँ, यहां तक कि यह मेरी प्रथम आशीष होगी।
- 29 यदि तुमने उसकी बातों के अनुसार नहीं किया तब मैं अपनी प्रथम आशीष वापस ले लूंगा और वह उसके पास चली जाएगी।
- 30 और अब, जेरम, मैं तुमसे बोल रहा हूँ; देखो, तुम लाबान के सेवक हो; फिर भी तुम यरूशलेम प्रदेश लाए गए, और मैं जानता हूँ कि तुम सदैव के लिए मेरे पुत्र, नफी, के सच्चे मित्र हो।
- 31 इसलिए, क्योंकि तुम विश्वासी हो उसके वंश के साथ तुम्हारे वंश को आशीष प्राप्त होगी और तुम्हारा वंश उन्नति करके बहुत दिनों तक इस प्रदेश में निवास करेगा; और सिवाय उनके बीच दुष्कर्मों को छोड़कर, कुछ भी इस प्रदेश में उनकी प्रगति में बाधा या क्षति नहीं पहुंचाएगी।
- 32 इसलिए यदि तुम प्रभु की आज्ञाओं का पालन करोगे तब प्रभु इस प्रदेश को तुम्हारे वंश के साथ मेरे बेटे के वंश की सुरक्षा के लिए समर्पित कर देगा।

And it must needs be that the power of God must be with him, even unto his commanding you that ye must obey. But behold, it was not he, but it was the Spirit of the Lord which was in him, which opened his mouth to utterance that he could not shut it.

And now my son, Laman, and also Lemuel and Sam, and also my sons who are the sons of Ishmael, behold, if ye will hearken unto the voice of Nephi ye shall not perish. And if ye will hearken unto him I leave unto you a blessing, yea, even my first blessing.

But if ye will not hearken unto him I take away my first blessing, yea, even my blessing, and it shall rest upon him.

And now, Zoram, I speak unto you: Behold, thou art the servant of Laban; nevertheless, thou hast been brought out of the land of Jerusalem, and I know that thou art a true friend unto my son, Nephi, forever.

Wherefore, because thou hast been faithful thy seed shall be blessed with his seed, that they dwell in prosperity long upon the face of this land; and nothing, save it shall be iniquity among them, shall harm or disturb their prosperity upon the face of this land forever.

Wherefore, if ye shall keep the commandments of the Lord, the Lord hath consecrated this land for the security of thy seed with the seed of my son.

## 2 नफी 2

- 1 और अब, याकूब, मैं तुम से कहता हूँ: तुम निर्जन प्रदेश की कठिनाइयों के दिनों में मेरे पहिलौठे हो। और देखो, तुम्हारे बचपन में तुमने अपने भाइयों के रूखेपन के कारण बहुत कष्ट और दुख सहे हैं।
- 2 फिर भी, याकूब, निर्जन प्रदेश के मेरे पहिलौठे, तुम परमेश्वर की महानता को जानते हो; और वह तुम्हारे कष्टों को तुम्हारे लाभ के लिए समर्पित करेगा।
- 3 इसलिए, तुम्हारी आत्मा आशीषित होगी, और तुम अपने भाई, नफी के साथ सुरक्षित रहोगे; और तुम्हारे दिन तुम्हारे परमेश्वर की सेवा में व्यतीत होंगे। इसलिए, मैं जानता हूँ कि तुम अपने मुक्तिदाता की धार्मिकता के कारण मुक्त किये गए हो; क्योंकि तुमने देखा है कि समय की परिपूर्णता आने वाली है जब वह मनुष्य के लिए उद्धार लाएगा।
- 4 और तुमने अपनी जवानी में उसकी महिमा को देखा है; इसलिए, तुम उसी प्रकार आशीषित हुए हो जिस प्रकार वह शरीर में अन्य लोगों की सेवा करेगा; क्योंकि आत्मा कल, आज और हमेशा के लिए एक जैसी है। और मनुष्य के पतन से ही मार्ग तैयार किया गया है, और उद्धार निःशुल्क है।
- 5 और मनुष्यों को पर्याप्त निर्देश दिए जा चुके हैं कि वे भले-बुरे को जानते हैं। और मनुष्यों को व्यवस्था दी गई है। और बिना व्यवस्था के उनका न्याय नहीं होगा; या, व्यवस्था के अनुसार ही मनुष्य को अलग किया जाएगा। हां, सांसारिक व्यवस्था के अनुसार वे अलग किये गए थे; और आत्मिक व्यवस्था के अनुसार भी वे अच्छी बातों से दूर किये जाते हैं, और हमेशा के लिए दुखी होते हैं।
- 6 इसलिए, मुक्ति पवित्र मसीहा में और उसके द्वारा आती है; क्योंकि वह अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण है।
- 7 देखो, वह व्यवस्था को पूरा करने के लिए सभी टूटे हुए मन और पश्चातापी लोगों के पाप के लिए स्वयं का बलिदान करता है; और उसके सिवाय अन्य कोई भी इस व्यवस्था को पूरा नहीं कर सकता।
- 8 इसलिए, संसार के लोगों को यह बताना कितना महत्वपूर्ण है, कि वे जानें कि कोई भी मनुष्य पवित्र मसीहा की योग्यताओं, और दया, और अनुग्रह के बिना परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं रह सकता, जो मनुष्य की प्रकृति के अनुसार अपना जीवन देगा और आत्मा की शक्ति से इसे फिर वापस लेगा, ताकि सर्वप्रथम पुनर्जीवित होकर, वह मृतकों के लिए पुनरुत्थान ला सके।

## 2 Nephi 2

And now, Jacob, I speak unto you: Thou art my first-born in the days of my tribulation in the wilderness. And behold, in thy childhood thou hast suffered afflictions and much sorrow, because of the rudeness of thy brethren.

Nevertheless, Jacob, my firstborn in the wilderness, thou knowest the greatness of God; and he shall consecrate thine afflictions for thy gain.

Wherefore, thy soul shall be blessed, and thou shalt dwell safely with thy brother, Nephi; and thy days shall be spent in the service of thy God. Wherefore, I know that thou art redeemed, because of the righteousness of thy Redeemer; for thou hast beheld that in the fulness of time he cometh to bring salvation unto men.

And thou hast beheld in thy youth his glory; wherefore, thou art blessed even as they unto whom he shall minister in the flesh; for the Spirit is the same, yesterday, today, and forever. And the way is prepared from the fall of man, and salvation is free.

And men are instructed sufficiently that they know good from evil. And the law is given unto men. And by the law no flesh is justified; or, by the law men are cut off. Yea, by the temporal law they were cut off; and also, by the spiritual law they perish from that which is good, and become miserable forever.

Wherefore, redemption cometh in and through the Holy Messiah; for he is full of grace and truth.

Behold, he offereth himself a sacrifice for sin, to answer the ends of the law, unto all those who have a broken heart and a contrite spirit; and unto none else can the ends of the law be answered.

Wherefore, how great the importance to make these things known unto the inhabitants of the earth, that they may know that there is no flesh that can dwell in the presence of God, save it be through the merits, and mercy, and grace of the Holy Messiah, who layeth down his life according to the flesh, and taketh it again by the power of the Spirit, that he may bring to pass the resurrection of the dead, being the first that should rise.

- 9 इसलिए, परमेश्वर का पहिलौठा होने के कारण, वह मनुष्य के सभी बच्चों के लिए मध्यस्थता करेगा; और वे जो उसमें विश्वास करेंगे बचाए जाएंगे ।
- 10 और सभी के लिए मध्यस्थता के कारण, सब मनुष्य परमेश्वर के पास आते हैं; इसलिए वे उस सच्चाई और पवित्रता के अनुसार जो उस में है न्याय किये जाने के लिए उसकी उपस्थिति में खड़े होते हैं । इसलिए, उस व्यवस्था को पूरा करने के लिए जिसे पवित्र जन ने दिया है, वे उस दंड को पाते हैं जो निश्चित है, जो दंड निश्चित है वह उस आनंद के प्रतिकूल है जो कि निश्चित, प्रायश्चित को पूरा करने के लिए है—
- 11 क्योंकि यह अवश्यक है कि सब कामों में विरोध हो । यदि ऐसा नहीं होता, निर्जन प्रदेश के मेरे पहिलौठे, तो धार्मिकता नहीं लाई जा सकती थी, न दुष्टता, न पवित्रता, न दुख, न ही अच्छाई और न ही बुराई होती । इसलिए सब बातें एक में ही मिश्रित होनी चाहिए; इसलिए, यदि एक जैसी स्थिति होती, न जीवित, न मृत, न भ्रष्ट, न अभ्रष्ट, न सुख, न दुख, न ही संवेदना और न ही असंवेदना, तो यह अवश्य ही मृत होती ।
- 12 यदि कोई वस्तु बिना आवश्यकता के रची गई; तो उसकी रचना का अंत में कोई उद्देश्य नहीं होगा । इसलिए, ऐसी वस्तु अवश्य ही परमेश्वर के विवेक और उसके अनंत उद्देश्यों का नाश करती है, और परमेश्वर की शक्ति, और दया, और न्याय भी ।
- 13 और यदि तुम कहते हो कि कोई व्यवस्था नहीं है, तुम्हें यह भी कहना चाहिए कि कोई पाप नहीं है । यदि तुम कहते हो कि कोई पाप नहीं है, तुम्हें यह भी कहना चाहिए कि कोई धार्मिकता नहीं है । और यदि कोई धार्मिकता नहीं है तो कोई खुशी भी नहीं होगी । यदि कोई धार्मिकता नहीं, न ही कोई खुशी, तो कोई दंड और न ही कोई दुख होगा । यदि ये बातें नहीं हैं तो कोई परमेश्वर नहीं है । और यदि कोई परमेश्वर नहीं है, तो हम भी नहीं हैं, न ही पृथ्वी है; क्योंकि किसी वस्तु की रचना ही नहीं होती, न ही कोई कार्य होता, न ही किसी पर कार्य किया जाता; इसलिए, सभी बातें अवश्य ही गायब हो जातीं ।
- 14 और अब, मेरे बेटों, मैं ये बातें तुम से तुम्हारे लाभ और सीखने के लिए बोल रहा हूँ; क्योंकि परमेश्वर है, और उसने सब कुछ रचा है, स्वर्ग और पृथ्वी दोनों को, और इन में पाई जाने वाली हर एक वस्तु, चाहे वह कार्य करे या उस पर कार्य किया जाए ।

Wherefore, he is the firstfruits unto God, inasmuch as he shall make intercession for all the children of men; and they that believe in him shall be saved.

And because of the intercession for all, all men come unto God; wherefore, they stand in the presence of him, to be judged of him according to the truth and holiness which is in him. Wherefore, the ends of the law which the Holy One hath given, unto the inflicting of the punishment which is affixed, which punishment that is affixed is in opposition to that of the happiness which is affixed, to answer the ends of the atonement—

For it must needs be, that there is an opposition in all things. If not so, my firstborn in the wilderness, righteousness could not be brought to pass, neither wickedness, neither holiness nor misery, neither good nor bad. Wherefore, all things must needs be a compound in one; wherefore, if it should be one body it must needs remain as dead, having no life neither death, nor corruption nor incorruption, happiness nor misery, neither sense nor insensibility.

Wherefore, it must needs have been created for a thing of naught; wherefore there would have been no purpose in the end of its creation. Wherefore, this thing must needs destroy the wisdom of God and his eternal purposes, and also the power, and the mercy, and the justice of God.

And if ye shall say there is no law, ye shall also say there is no sin. If ye shall say there is no sin, ye shall also say there is no righteousness. And if there be no righteousness there be no happiness. And if there be no righteousness nor happiness there be no punishment nor misery. And if these things are not there is no God. And if there is no God we are not, neither the earth; for there could have been no creation of things, neither to act nor to be acted upon; wherefore, all things must have vanished away.

And now, my sons, I speak unto you these things for your profit and learning; for there is a God, and he hath created all things, both the heavens and the earth, and all things that in them are, both things to act and things to be acted upon.

- 15 और मनुष्य के अंत में उसके अनंत उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, उसने हमारे प्रथम माता-पिता, और जमीन के जानवरों और हवा के पक्षियों की रचना करने के बाद, अन्य शब्दों में, सब कुछ रचने के बाद विरोध की जरूरत थी; यहां तक कि वर्जित फल के विरोध में जीवन का वृक्ष था; एक मीठा और दूसरा कड़वा ।
- 16 इसलिए, प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को स्वयं के लिए कार्य करने की छूट दी । इसलिए, मनुष्य स्वयं के लिए कार्य नहीं कर सकता था यदि वह एक या अन्य द्वारा फुसलाया जाता ।
- 17 और मैं, लेही, जो बातें मैंने पढ़ी हैं उनके अनुसार, ऐसा मानता हूं कि परमेश्वर का स्वर्गदूत, जैसा लिखा है उसके अनुसार, स्वर्ग से गिरा; इसलिए ऐसे कार्य कर के जो कि परमेश्वर के सामने बुरे हैं, वह शैतान बन गया ।
- 18 और क्योंकि वह स्वर्ग से गिरा था, और हमेशा के लिए दुखी हो गया, उसने संपूर्ण मानवजाति के लिए भी दुख चाहा । इसलिए, हां, उस बूढ़े सांप ने, जो कि शैतान, सभी झूठ का पिता है, हव्वा से कहा: उस वर्जित फल को खालो, और तुम मरोगी नहीं, लेकिन तुम अच्छे और बुरे का ज्ञान प्राप्त कर परमेश्वर के समान बन जाओगी ।
- 19 और आदम और हव्वा के वर्जित फल खा लेने के पश्चात उन्हें, पृथ्वी पर परिश्रम करने के लिए, अदन की वाटिका से बाहर निकाल दिया गया ।
- 20 और उनके बच्चे पैदा हुए; यहां तक कि संपूर्ण पृथ्वी के परिवार उनसे उत्पन्न हुए ।
- 21 और मानव संतान की आयु, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार लंबी की गई थी, ताकि वे शरीर में रहते हुए पश्चाताप कर सकें; इसलिए, उनकी अवस्था परीक्षा की अवस्था बनी, और उनकी आयु को बढ़ाया गया, उन आज्ञाओं के अनुसार थी जो प्रभु परमेश्वर ने मानव संतान को दी थी । क्योंकि उसने आज्ञाएं इसलिए दी थीं ताकि सभी मनुष्य पश्चाताप करें; क्योंकि उसने सभी मनुष्यों को दिखाया कि वे अपने माता-पिता के उल्लंघन के कारण खो चुके हैं ।
- 22 और अब, देखो, यदि आदम उल्लंघन नहीं करता तो उसका पतन नहीं होता, परन्तु वह अदन की वाटिका में ही रहता । और सभी वस्तुएं जिनकी रचना की गई थी उसी अवस्था में रहतीं जिसमें उन्हें रचा गया था; और वे हमेशा वैसे ही रहतीं, और कोई अंत नहीं होता ।

And to bring about his eternal purposes in the end of man, after he had created our first parents, and the beasts of the field and the fowls of the air, and in fine, all things which are created, it must needs be that there was an opposition; even the forbidden fruit in opposition to the tree of life; the one being sweet and the other bitter.

Wherefore, the Lord God gave unto man that he should act for himself. Wherefore, man could not act for himself save it should be that he was enticed by the one or the other.

And I, Lehi, according to the things which I have read, must needs suppose that an angel of God, according to that which is written, had fallen from heaven; wherefore, he became a devil, having sought that which was evil before God.

And because he had fallen from heaven, and had become miserable forever, he sought also the misery of all mankind. Wherefore, he said unto Eve, yea, even that old serpent, who is the devil, who is the father of all lies, wherefore he said: Partake of the forbidden fruit, and ye shall not die, but ye shall be as God, knowing good and evil.

And after Adam and Eve had partaken of the forbidden fruit they were driven out of the garden of Eden, to till the earth.

And they have brought forth children; yea, even the family of all the earth.

And the days of the children of men were prolonged, according to the will of God, that they might repent while in the flesh; wherefore, their state became a state of probation, and their time was lengthened, according to the commandments which the Lord God gave unto the children of men. For he gave commandment that all men must repent; for he showed unto all men that they were lost, because of the transgression of their parents.

And now, behold, if Adam had not transgressed he would not have fallen, but he would have remained in the garden of Eden. And all things which were created must have remained in the same state in which they were after they were created; and they must have remained forever, and had no end.

- 23 और उनके कोई बच्चे नहीं होते; इसलिए वे निर्दोष अवस्था में ही रहते, कोई आनंद नहीं होता, क्योंकि वे दुख नहीं जानते; कुछ अच्छा नहीं करते, क्योंकि उन्हें कोई पाप नहीं पता था ।
- 24 लेकिन देखो, हर बात उसके ज्ञान के अनुसार की गई है जो सब बातों को जानता है ।
- 25 आदम का पतन हुआ ताकि मनुष्य हो; और मनुष्य हैं, ताकि उन्हें आनंद प्राप्त हो ।
- 26 और मसीहा समय की परिपूर्णता में आएगा, ताकि वह मानव संतान को पतन से मुक्त कर सके । और क्योंकि वे पतन से मुक्त किये गए हैं, इसलिए वे अच्छे और बुरे के ज्ञान के साथ, हमेशा के लिए स्वतंत्र हो गए हैं; अपने स्वयं के प्रति कार्य करने के लिए और न कि उनके कार्य किये जाने के लिए, सिवाय इसके कि उन्हें परमेश्वर की दी आज्ञाओं के अनुसार, उस महान और अंतिम दिन व्यवस्था का दंड भोगना होगा ।
- 27 इसलिए, मनुष्य शरीर में स्वतंत्र है; और उन्हें सब वस्तुएं दी गई हैं जो मनुष्य को चाहिए । और वे, सभी मनुष्यों के महान मध्यस्थ के द्वारा, स्वतंत्रता और अनंत जीवन चुनने के लिए, या शैतान की गुलामी और शक्ति के अनुसार गुलामी और मृत्यु चुनने के लिए स्वतंत्र हैं; क्योंकि वह चाहता है कि सभी मनुष्य उसके स्वयं के समान दुखी हों ।
- 28 और अब, मेरे बेटों, मैं चाहूंगा कि तुम महान मध्यस्थ की ओर नजरें उठाओ, और उसकी महान आज्ञाओं पर ध्यान दो; और उसके वचनों के प्रति विश्वसनीय बनो, और उसकी पवित्र आत्मा के अनुसार अनंत जीवन चुनो ।
- 29 और शरीर की इच्छा और बुराई के अनुसार जो कि उसमें है, अनंत मृत्यु को मत चुनो, जो कि शैतान की आत्मा को गुलाम बनाने की शक्ति देती है, जो तुम्हें नरक में धकेलती है, ताकि वह तुम्हारे ऊपर अपने राज्य में राज करे ।
- 30 मेरे बेटों, मैंने अपनी परीक्षा के समय के अंत में, ये कुछ शब्द तुम सभी को कहे हैं; और भविष्यवक्ता के शब्दों के अनुसार मैंने अच्छे भाग को चुना है । और तुम्हारी आत्माओं के अनंत कल्याण के सिवाय मेरा कोई दूसरा उद्देश्य नहीं है । आमीन ।

And they would have had no children; wherefore they would have remained in a state of innocence, having no joy, for they knew no misery; doing no good, for they knew no sin.

But behold, all things have been done in the wisdom of him who knoweth all things.

Adam fell that men might be; and men are, that they might have joy.

And the Messiah cometh in the fulness of time, that he may redeem the children of men from the fall. And because that they are redeemed from the fall they have become free forever, knowing good from evil; to act for themselves and not to be acted upon, save it be by the punishment of the law at the great and last day, according to the commandments which God hath given.

Wherefore, men are free according to the flesh; and all things are given them which are expedient unto man. And they are free to choose liberty and eternal life, through the great Mediator of all men, or to choose captivity and death, according to the captivity and power of the devil; for he seeketh that all men might be miserable like unto himself.

And now, my sons, I would that ye should look to the great Mediator, and hearken unto his great commandments; and be faithful unto his words, and choose eternal life, according to the will of his Holy Spirit;

And not choose eternal death, according to the will of the flesh and the evil which is therein, which giveth the spirit of the devil power to captivate, to bring you down to hell, that he may reign over you in his own kingdom.

I have spoken these few words unto you all, my sons, in the last days of my probation; and I have chosen the good part, according to the words of the prophet. And I have none other object save it be the everlasting welfare of your souls. Amen.

## 2 नफी 3

- 1 और मैं, युसुफ, मेरे अंतिम पुत्र तुम से बोलता हूँ। तुम निर्जन प्रदेश में मेरी कठिनाइयों में पैदा हुए; हां, मेरे कठोरतम दुख के दिनों में तुम्हारी मां ने तुम्हें जन्म दिया।
- 2 और प्रभु तुम्हारे लिए भी इस प्रदेश को समर्पित करे, जो कि बहुत मूल्यवान है, तुम्हारी विरासत के लिए और तुम्हारे भाइयों के साथ तुम्हारे वंश की विरासत के लिए, हमेशा तुम्हारी सुरक्षा के लिए, यदि तुम इस्राएल के एकमेव परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हो।
- 3 और अब, युसुफ, मेरे अंतिम-जन्मे, जिसे मैं अपने निर्जन प्रदेश के कष्टों से बाहर निकालकर लाया हूँ, प्रभु तुम्हें हमेशा आशीष दे, क्योंकि तुम्हारा वंश पूरी तरह से नष्ट नहीं होगा।
- 4 क्योंकि देखो, तुम मेरी संतान हो; और मैं युसुफ का वंशज हूँ जिसे मिस्र में बंदी बना कर ले जाया गया था। और प्रभु के अनुबंध महान थे जो उसने युसुफ के साथ बनाए थे।
- 5 इसलिए, युसुफ ने सचमुच में हमारे दिन देखे। और प्रभु की प्रतिज्ञा प्राप्त की थी, कि उसकी संतान में से प्रभु परमेश्वर इस्राएल के घराने के लिए एक धार्मिक शाखा खड़ी करेगा; मसीहा नहीं, लेकिन एक शाखा जो तोड़ डाली जाएगी, फिर भी, प्रभु के अनुबंधों में याद की जाएगी कि मसीहा अंतिम दिनों में, आत्मा की शक्ति में, उनपर प्रकट होगा, और उन्हें अंधकार से प्रकाश में लाएगा—हां, गुप्त अंधकार से बाहर और गुलामी से बाहर स्वतंत्रता में।
- 6 क्योंकि युसुफ ने सचमुच में गवाही देकर कहा: प्रभु मेरा परमेश्वर एक दिव्यदर्शी खड़ा करेगा, जो मेरी संतानों में उत्तम होगा।
- 7 हां, युसुफ ने सचमुच में कहा: प्रभु मुझ से इस प्रकार कहता है: मैं तुम्हारी संतान में से एक उत्तम दिव्यदर्शी खड़ा करूंगा; और वह तुम्हारी संतानों में बहुत सम्मानित होगा। और उसे मैं एक आज्ञा दूंगा कि वह तुम्हारी संतान, अपने भाइयों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होगा, यहां तक कि वह उन्हें तुम्हारे पूर्वजों के साथ बनाए मेरे अनुबंधों की जानकारी देगा।
- 8 और मैं उसे एक आज्ञा दूंगा कि वह कोई अन्य कार्य नहीं करेगा, सिवाय उसके जिसकी आज्ञा मैं उसे दूंगा। और मैं उसे अपनी आंखों के सामने महान बनाऊंगा; क्योंकि वह मेरा कार्य करेगा।

## 2 Nephi 3

And now I speak unto you, Joseph, my last-born. Thou wast born in the wilderness of mine afflictions; yea, in the days of my greatest sorrow did thy mother bear thee.

And may the Lord consecrate also unto thee this land, which is a most precious land, for thine inheritance and the inheritance of thy seed with thy brethren, for thy security forever, if it so be that ye shall keep the commandments of the Holy One of Israel.

And now, Joseph, my last-born, whom I have brought out of the wilderness of mine afflictions, may the Lord bless thee forever, for thy seed shall not utterly be destroyed.

For behold, thou art the fruit of my loins; and I am a descendant of Joseph who was carried captive into Egypt. And great were the covenants of the Lord which he made unto Joseph.

Wherefore, Joseph truly saw our day. And he obtained a promise of the Lord, that out of the fruit of his loins the Lord God would raise up a righteous branch unto the house of Israel; not the Messiah, but a branch which was to be broken off, nevertheless, to be remembered in the covenants of the Lord that the Messiah should be made manifest unto them in the latter days, in the spirit of power, unto the bringing of them out of darkness unto light—yea, out of hidden darkness and out of captivity unto freedom.

For Joseph truly testified, saying: A seer shall the Lord my God raise up, who shall be a choice seer unto the fruit of my loins.

Yea, Joseph truly said: Thus saith the Lord unto me: A choice seer will I raise up out of the fruit of thy loins; and he shall be esteemed highly among the fruit of thy loins. And unto him will I give commandment that he shall do a work for the fruit of thy loins, his brethren, which shall be of great worth unto them, even to the bringing of them to the knowledge of the covenants which I have made with thy fathers.

And I will give unto him a commandment that he shall do none other work, save the work which I shall command him. And I will make him great in mine eyes; for he shall do my work.

- 9 और वह मूसा के समान महान होगा, जिससे मैंने कहा था कि मैं तुम्हें, अपने लोगों, इस्राएल के घराने, को छुड़ाने के लिए खड़ा करूंगा ।
- 10 और मैं मूसा को, तुम्हारे लोगों को मिस्र प्रदेश से छुड़ाने के लिए खड़ा करूंगा ।
- 11 लेकिन मैं तेरी संतान में से एक दिव्यदर्शी खड़ा करूंगा; और उसे मैं तेरी संतान के वंश के लिए मेरे वचन प्रकट करने की शक्ति दूंगा— और न केवल मेरे वचन को प्रकट करेगा, प्रभु कहता है, लेकिन उन्हें मेरे वचनों को मनाने के लिए भी, जो उनके बीच पहले ही जा चुके होंगे ।
- 12 इसलिए, तुम्हारी संतान लिखेगी; और यहूदा की संतान लिखेगी; और जो कुछ तुम्हारी संतान लिखेगी, और यहूदा की संतान भी लिखेगी, दोनों मिलकर एक होंगे; और गलत सिद्धांत को गलत साबित करेंगे और विवादों का अंत करेंगे, और तुम्हारी संतान के बीच में शांति स्थापित करेंगे, और उन्हें अंतिम दिनों में उनके पूर्वजों की जानकारी देंगे, और मेरे अनुबंधों की जानकारी भी, प्रभु कहता है ।
- 13 और निर्बल को वह बलवान बनाएगा, उस दिन जब मेरे सब लोगों के बीच, ओह, इस्राएल के घराने तुम्हें पुनःस्थापित करने का मेरा कार्य आरंभ होगा, प्रभु कहता है ।
- 14 और युसुफ ने इस प्रकार भविष्यवाणी की: देखो, उस दिव्यदर्शी को प्रभु आशीषित करेगा; और जो उसे नष्ट करना चाहते हैं मिटा दिए जाएंगे; क्योंकि यह प्रतिज्ञा, जो मैंने प्रभु से अपनी संतान के लिए पायी है, पूरी की जाएगी । देखो, मैं इस प्रतिज्ञा की पूरी होने के प्रति निश्चित हूँ;
- 15 और उसका नाम मेरे पर होगा; और यह उसके पिता के नाम पर होगा । और वह मेरी तरह होगा; क्योंकि जो बातें, प्रभु उसके हाथों से प्रकट करेगा, प्रभु की शक्ति के द्वारा मेरे लोगों का उद्धार करेंगी ।
- 16 हां, इस प्रकार युसुफ ने भविष्यवाणी की: मुझे इस बात पर पूरा विश्वास है, जैसा मैं मूसा की प्रतिज्ञा पर विश्वास करता हूँ; क्योंकि प्रभु ने मुझे कहा है, मैं तुम्हारे वंश को हमेशा सुरक्षित रखूंगा ।

And he shall be great like unto Moses, whom I have said I would raise up unto you, to deliver my people, O house of Israel.

And Moses will I raise up, to deliver thy people out of the land of Egypt.

But a seer will I raise up out of the fruit of thy loins; and unto him will I give power to bring forth my word unto the seed of thy loins—and not to the bringing forth my word only, saith the Lord, but to the convincing them of my word, which shall have already gone forth among them.

Wherefore, the fruit of thy loins shall write; and the fruit of the loins of Judah shall write; and that which shall be written by the fruit of thy loins, and also that which shall be written by the fruit of the loins of Judah, shall grow together, unto the confounding of false doctrines and laying down of contentions, and establishing peace among the fruit of thy loins, and bringing them to the knowledge of their fathers in the latter days, and also to the knowledge of my covenants, saith the Lord.

And out of weakness he shall be made strong, in that day when my work shall commence among all my people, unto the restoring thee, O house of Israel, saith the Lord.

And thus prophesied Joseph, saying: Behold, that seer will the Lord bless; and they that seek to destroy him shall be confounded; for this promise, which I have obtained of the Lord, of the fruit of my loins, shall be fulfilled. Behold, I am sure of the fulfilling of this promise;

And his name shall be called after me; and it shall be after the name of his father. And he shall be like unto me; for the thing, which the Lord shall bring forth by his hand, by the power of the Lord shall bring my people unto salvation.

Yea, thus prophesied Joseph: I am sure of this thing, even as I am sure of the promise of Moses; for the Lord hath said unto me, I will preserve thy seed forever.



- 17 और प्रभु ने कहा है: मैं एक मूसा खड़ा करूंगा; और मैं एक छड़ में उसे शक्ति दूंगा; और मैं उसे लिखित न्याय दूंगा। फिर भी मैं उसकी जबान पर नियंत्रण रखूंगा, कि वह अधिक न बोले, क्योंकि मैं उसे बोलने में शक्तिशाली नहीं बनाऊंगा। लेकिन मैं अपनी स्वयं की उंगली से अपनी व्यवस्था लिख कर उसे दूंगा; और मैं उसके लिए एक प्रवक्ता बनाऊंगा।
- 18 और प्रभु ने मुझ से यह भी कहा: मैं तुम्हारी संतान में से एक खड़ा करूंगा; और मैं उसके लिए एक प्रवक्ता बनाऊंगा। और मैं, देखो, मैं उसको दूंगा कि वह तुम्हारी संतान के लेख लिखेगा, तुम्हारी संतान के लिए; और तुम्हारी संतान का प्रवक्ता इसकी घोषणा करेगा।
- 19 और जिन शब्दों को वह लिखेगा वे शब्द तुम्हारी संतान के पास जाएंगे जो मेरे विवेक से उनके लिए उचित होंगे। और यह ऐसा होगा मानो तुम्हारी संतान धूल से उन्हें पुकार रही थी; क्योंकि मैं उनके विश्वास को जानता हूँ।
- 20 और वे धूल से पुकारेंगे; हां, यहां तक कि कई पीढ़ियों के गुजर जाने के पश्चात वे अपने भाइयों से पश्चाताप करेंगे। और ऐसा होगा कि उनकी पुकार सुनी जाएगी, यहां तक कि उनके सरल शब्द भी।
- 21 उनके विश्वास के कारण उनके शब्द मेरे मुंह से उनके भाइयों के लिए निकलेंगे जो कि तुम्हारी संतान हैं; और उन अनुबंधों को याद करते हुए जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों से बनाए थे, उनके शब्दों की दुर्बलता को मैं उनके विश्वास में मजबूत करूंगा।
- 22 और अब, देखो, मेरे बेटे युसुफ, इस प्रकार मेरे पिता ने अतीत में भविष्यवाणी की थी।
- 23 इसलिए, क्योंकि इस अनुबंध के कारण तुम आशीषित किये गए हो; क्योंकि तुम्हारा वंश नष्ट नहीं होगा, क्योंकि वे उस पुस्तक के शब्दों पर ध्यान देंगे।
- 24 और उनके बीच एक शक्तिशाली खड़ा होगा, परमेश्वर के हाथों में औजार होते हुए, वह बहुत अच्छा करेगा, शब्द और कार्य दोनों प्रकार से, अत्याधिक विश्वास के साथ, बहुत आश्चर्यजनक और ऐसे काम करेगा जो परमेश्वर की नजर में महान होंगे, और वे इस्राएल के घराने और तुम्हारे भाइयों के वंश को अधिक पुनःस्थापित करेगा।

And the Lord hath said: I will raise up a Moses; and I will give power unto him in a rod; and I will give judgment unto him in writing. Yet I will not loose his tongue, that he shall speak much, for I will not make him mighty in speaking. But I will write unto him my law, by the finger of mine own hand; and I will make a spokesman for him.

And the Lord said unto me also: I will raise up unto the fruit of thy loins; and I will make for him a spokesman. And I, behold, I will give unto him that he shall write the writing of the fruit of thy loins, unto the fruit of thy loins; and the spokesman of thy loins shall declare it.

And the words which he shall write shall be the words which are expedient in my wisdom should go forth unto the fruit of thy loins. And it shall be as if the fruit of thy loins had cried unto them from the dust; for I know their faith.

And they shall cry from the dust; yea, even repentance unto their brethren, even after many generations have gone by them. And it shall come to pass that their cry shall go, even according to the simplicity of their words.

Because of their faith their words shall proceed forth out of my mouth unto their brethren who are the fruit of thy loins; and the weakness of their words will I make strong in their faith, unto the remembering of my covenant which I made unto thy fathers.

And now, behold, my son Joseph, after this manner did my father of old prophesy.

Wherefore, because of this covenant thou art blessed; for thy seed shall not be destroyed, for they shall hearken unto the words of the book.

And there shall rise up one mighty among them, who shall do much good, both in word and in deed, being an instrument in the hands of God, with exceeding faith, to work mighty wonders, and do that thing which is great in the sight of God, unto the bringing to pass much restoration unto the house of Israel, and unto the seed of thy brethren.

25 और अब, तुम आशीषित हो, युसुफ । देखो, तुम छोटे हो; इसलिए अपने भाई, नफी, के शब्दों पर ध्यान देना, और तुम्हारे साथ वैसा ही होगा जैसा मैंने तुम्हें कहा है । अपने मरते हुए पिता के शब्दों को याद रखना । आमीन ।

And now, blessed art thou, Joseph. Behold, thou art little; wherefore hearken unto the words of thy brother, Nephi, and it shall be done unto thee even according to the words which I have spoken. Remember the words of thy dying father. Amen.

## 2 नफी 4

- 1 और अब, मैं, नफी अपने पिता के द्वारा कही गई भविष्यवाणियों के विषय में कहूंगा जो यूसुफ से संबंध रखती है, जो कि मिस्र ले जाया गया था ।
- 2 क्योंकि देखो, उसने उसके सारे वंश के विषय में सचमुच में भविष्यवाणी की । और जिन भविष्यवाणियों को उसने लिखा उतनी महान भविष्यवाणियां बहुत कम हैं । उसने हमारे और हमारे भविष्य की पीढ़ियों के विषय में भी भविष्यवाणी की, और इन्हें पीतल की पट्टियों पर लिखा गया है ।
- 3 और जब मेरे पिता ने यूसुफ के विषय की भविष्यवाणियां करना समाप्त कर दिया, तब उन्होंने लमान के बच्चों, उसके बेटे और बेटियों को बुलाया और उनसे कहा: मेरे बेटे और बेटियों जो कि मेरे पहिलौठे के बेटे और बेटियां हो, मैं चाहूंगा कि तुम मेरी बातों को ध्यान से सुनो ।
- 4 क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने कहा है कि: जितना तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे, उतना तुम इस प्रदेश में प्रगति करोगे; और जब तुम मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे तब तुम्हें मेरी उपस्थिति से अलग कर दिया जाएगा ।
- 5 लेकिन देखो, मेरे बेटे और बेटियों, बिना तुम्हें आशीष दिए मैं अपनी कब्र में नहीं जा सकता, क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि जिस रास्ते पर तुम्हें चलना चाहिए उसके अनुसार यदि तुम्हें शिक्षा दी गई तब तुम उससे अलग नहीं होगे ।
- 6 इसलिए, यदि तुम्हें श्राप दिया जाता है, तब देखो, मैं अपनी आशीष तुम्हें देता हूँ, कि वह श्राप तुम पर नहीं लगेगा, और तुम्हारे माता-पिता उसके लिए उत्तरदायी होंगे ।
- 7 इसलिए, मेरी आशीष के कारण प्रभु परमेश्वर तुम्हें नष्ट नहीं होने देगा और वह तुम पर और तुम्हारे वंश पर हमेशा दयालु बना रहेगा ।
- 8 और ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता ने लमान के बेटे और बेटियों से बोलना समाप्त किया तब उन्होंने लमूएल के बेटे और बेटियों को अपने सामने बुलवाया ।
- 9 और उन्होंने उनसे कहा: मेरे बेटों और बेटियों, तुम जो कि मेरे द्वितीय पुत्र की संतान हो; देखो मैं तुम्हें वही आशीष देता हूँ जो कि मैंने लमान के बेटे और बेटियों को दी है; इसलिए तुम पूरी तरह नष्ट नहीं किये जाओगे; परन्तु अंत में तुम्हारा वंश आशीषित होगा ।

## 2 Nephi 4

And now, I, Nephi, speak concerning the prophecies of which my father hath spoken, concerning Joseph, who was carried into Egypt.

For behold, he truly prophesied concerning all his seed. And the prophecies which he wrote, there are not many greater. And he prophesied concerning us, and our future generations; and they are written upon the plates of brass.

Wherefore, after my father had made an end of speaking concerning the prophecies of Joseph, he called the children of Laman, his sons, and his daughters, and said unto them: Behold, my sons, and my daughters, who are the sons and the daughters of my firstborn, I would that ye should give ear unto my words.

For the Lord God hath said that: Inasmuch as ye shall keep my commandments ye shall prosper in the land; and inasmuch as ye will not keep my commandments ye shall be cut off from my presence.

But behold, my sons and my daughters, I cannot go down to my grave save I should leave a blessing upon you; for behold, I know that if ye are brought up in the way ye should go ye will not depart from it.

Wherefore, if ye are cursed, behold, I leave my blessing upon you, that the cursing may be taken from you and be answered upon the heads of your parents.

Wherefore, because of my blessing the Lord God will not suffer that ye shall perish; wherefore, he will be merciful unto you and unto your seed forever.

And it came to pass that after my father had made an end of speaking to the sons and daughters of Laman, he caused the sons and daughters of Lemuel to be brought before him.

And he spake unto them, saying: Behold, my sons and my daughters, who are the sons and the daughters of my second son; behold I leave unto you the same blessing which I left unto the sons and daughters of Laman; wherefore, thou shalt not utterly be destroyed; but in the end thy seed shall be blessed.

- 10 और ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता ने उनसे बोलना समाप्त किया तब उन्होंने इश्माएल के बेटों, हां, और उसके सारे परिवार से बातें की ।
- 11 और जब उन्होंने उनसे बातें करना समाप्त किया, तब उन्होंने साम से कहा; तुम और तुम्हारा वंश आशीषित है; क्योंकि तुम इस प्रदेश के अधिकारी उसी प्रकार होगे जिस प्रकार तुम्हारा भाई नफी होगा । और तुम्हारे वंश की गिनती उसके वंश के साथ की जाएगी; और तुम अपने भाई के समान होगे, और तुम्हारा वंश उसके वंश की तरह होगा; और तुम अपने सारे जीवन भर आशीष प्राप्त करते रहोगे ।
- 12 और ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता लेही ने, अपने पूरे घराने से अपने हृदय की भावनाओं और प्रभु की आत्मा, जो उनके अंदर व्याप्त थी, के अनुसार बातें कर लीं, तब उनके ऊपर बुढ़ापे का प्रभाव बढ़ा; और ऐसा हुआ कि उनकी मृत्यु हो गई, और उन्हें कब्र में दबा दिया गया ।
- 13 और ऐसा हुआ कि मेरे पिता के मरने के कुछ ही दिनों के पश्चात लमान, लमूएल और इश्माएल के बेटे प्रभु की चेतावनियों के कारण मुझ पर कोधित हो उठे ।
- 14 क्योंकि मुझ, नफी, को प्रभु के वचन के अनुसार उनसे बोलना पड़ता था; मैंने, और मृत्यु से पूर्व मेरे पिता ने भी उनको बहुत उपदेश दिए थे, जिन में से बहुत सी बातें मेरी दूसरी पट्टियों पर लिखी हुई हैं; क्योंकि अधिक ऐतिहासिक बातें मेरी दूसरी पट्टियों पर लिखी गई हैं ।
- 15 और इन पर मैं अपनी आत्मा और धर्मशास्त्रों की उन बहुत सी बातों को लिख रहा हूँ जो पीतल की पट्टियों पर लिखी हुई हैं । क्योंकि धर्मग्रंथों में मेरी आत्मा आनंद विभोर होती है और मेरा हृदय उनके मनन में मग्न है, और मैं उन्हें अपनी संतानों की शिक्षा और लाभ के लिए लिख रहा हूँ ।
- 16 देखो, मेरी आत्मा प्रभु की बातों में आनंदित है; और जिन बातों को मैंने देखा और सुना, उन पर मेरा हृदय लगातार मनन कर रहा है ।
- 17 फिर भी परमेश्वर द्वारा अपने महान और आश्चर्यमय कामों को मुझे दिखाने के महान उपकारों के बावजूद मेरा हृदय पुकार उठता है; ओह अभागे मनुष्य अर्थात् स्वयं मैं; मानव शरीर के कारण मेरा हृदय दुःखित होता है; मेरे दुष्कर्मों के कारण मेरी आत्मा दुखी होती है ।
- 18 मैं प्रलोभन और पापों से घिरा हुआ हूँ जो कि आसानी से मुझ पर काबू कर लेते हैं ।
- 19 और जब मैं आनंद मनाना चाहता हूँ तब मेरा हृदय मेरे पापों के कारण कराह उठता है, हालांकि मैं जानता हूँ कि मैंने किस पर विश्वास किया है ।

And it came to pass that when my father had made an end of speaking unto them, behold, he spake unto the sons of Ishmael, yea, and even all his household.

And after he had made an end of speaking unto them, he spake unto Sam, saying: Blessed art thou, and thy seed; for thou shalt inherit the land like unto thy brother Nephi. And thy seed shall be numbered with his seed; and thou shalt be even like unto thy brother, and thy seed like unto his seed; and thou shalt be blessed in all thy days.

And it came to pass after my father, Lehi, had spoken unto all his household, according to the feelings of his heart and the Spirit of the Lord which was in him, he waxed old. And it came to pass that he died, and was buried.

And it came to pass that not many days after his death, Laman and Lemuel and the sons of Ishmael were angry with me because of the admonitions of the Lord.

For I, Nephi, was constrained to speak unto them, according to his word; for I had spoken many things unto them, and also my father, before his death; many of which sayings are written upon mine other plates; for a more history part are written upon mine other plates.

And upon these I write the things of my soul, and many of the scriptures which are engraven upon the plates of brass. For my soul delighteth in the scriptures, and my heart pondereth them, and writeth them for the learning and the profit of my children.

Behold, my soul delighteth in the things of the Lord; and my heart pondereth continually upon the things which I have seen and heard.

Nevertheless, notwithstanding the great goodness of the Lord, in showing me his great and marvelous works, my heart exclaimeth: O wretched man that I am! Yea, my heart sorroweth because of my flesh; my soul grieveth because of mine iniquities.

I am encompassed about, because of the temptations and the sins which do so easily beset me.

And when I desire to rejoice, my heart groaneth because of my sins; nevertheless, I know in whom I have trusted.

- 20 मेरा परमेश्वर मेरा सहारा रहा है; निर्जन प्रदेश में मेरे कष्टों के समय उसने मेरा पथ-प्रदर्शन किया; और उसने गहरे समुद्र में मेरी रक्षा की ।  
 My God hath been my support; he hath led me through mine afflictions in the wilderness; and he hath preserved me upon the waters of the great deep.
- 21 उसने अपने प्रेम से मुझे इतना भर दिया, कि मेरा मानव शरीर उससे अत्याधिक प्रभावित हो गया ।  
 He hath filled me with his love, even unto the consuming of my flesh.
- 22 उसने मेरे शत्रुओं को पराजित किया और उनको मेरे सामने भय से कंपा दिया ।  
 He hath confounded mine enemies, unto the causing of them to quake before me.
- 23 देखो, दिन में उसने मेरी पुकार सुनी और रात को दिव्यदर्शनों द्वारा ज्ञान दिया ।  
 Behold, he hath heard my cry by day, and he hath given me knowledge by visions in the night-time.
- 24 और दिन में मैंने निर्भय होकर उसके सामने गंभीर प्रार्थना की; हां, मैंने अपनी आवाज ऊपर भेजी; और स्वर्गदूतों ने नीचे आकर मुझे उपदेश दिए ।  
 And by day have I waxed bold in mighty prayer before him; yea, my voice have I sent up on high; and angels came down and ministered unto me.
- 25 और उसकी आत्मा के परों पर मेरे शरीर को उड़ाकर बहुत ही ऊंचे पर्वतों पर ले जाया गया और मेरी आंखों ने महान बातों को देखा, हां, यहां तक कि मनुष्य के लिए वे आवश्यकता से अधिक महान थीं; इसलिए उन्हें लिखने को मुझे मना किया गया ।  
 And upon the wings of his Spirit hath my body been carried away upon exceedingly high mountains. And mine eyes have beheld great things, yea, even too great for man; therefore I was bidden that I should not write them.
- 26 यदि मैंने इतनी महान बातों को देखा है, यदि प्रभु मानव-संतति पर कृपा करके मनुष्यों में आया, ओह तब, क्यों मेरी विपदाओं के कारण मेरा हृदय रोए और आत्मा दुःख की घाटी में पड़ी रहे, और मेरा शरीर नष्ट और मेरी शक्ति क्षीण हो ?  
 O then, if I have seen so great things, if the Lord in his condescension unto the children of men hath visited men in so much mercy, why should my heart weep and my soul linger in the valley of sorrow, and my flesh waste away, and my strength slacken, because of mine afflictions?
- 27 और अपने इस मानव शरीर के कारण, मैं क्यों पाप के आगे झुकूँ ? हां, मैं प्रलोभन से क्यों पराजित होऊँ कि जिससे मेरे हृदय में शैतान घुसकर मेरी शांति भंग करे और मेरी आत्मा को कष्ट पहुंचाए ? अपने शत्रु के कारण मैं क्रोधित क्यों होऊँ ?  
 And why should I yield to sin, because of my flesh? Yea, why should I give way to temptations, that the evil one have place in my heart to destroy my peace and afflict my soul? Why am I angry because of mine enemy?
- 28 मेरी आत्मा, जाग ! अब पाप की ओर मत झुक । ओह मेरे हृदय, आनंद मना, और मेरी आत्मा के शत्रु को बिलकुल भी स्थान मत दे ।  
 Awake, my soul! No longer droop in sin. Rejoice, O my heart, and give place no more for the enemy of my soul.
- 29 मेरे शत्रुओं के कारण क्रोध मत कर । मेरे कष्टों के कारण मेरी शक्ति को निर्बल मत कर ।  
 Do not anger again because of mine enemies. Do not slacken my strength because of mine afflictions.
- 30 ओह मेरे हृदय, आनंद मना, और प्रभु को पुकार और कह: ओह प्रभु, मैं सदैव तेरा यशगान करूंगा; और मेरे परमेश्वर तुम जो मेरी उद्धार की आधार शिला हो, तुममें मेरी आत्मा आनंद मनाएगी ।  
 Rejoice, O my heart, and cry unto the Lord, and say: O Lord, I will praise thee forever; yea, my soul will rejoice in thee, my God, and the rock of my salvation.
- 31 ओह प्रभु क्या तुम मेरी आत्मा का उद्धार करोगे ? क्या तुम मुझे मेरे शत्रुओं के हाथों से बचाओगे । क्या तुम मुझे ऐसा कर दोगे कि पाप को देखते ही मैं कांप जाऊँ ?  
 O Lord, wilt thou redeem my soul? Wilt thou deliver me out of the hands of mine enemies? Wilt thou make me that I may shake at the appearance of sin?

- 32 काश मेरे सामने अधोलोक का द्वार सदैव बंद रहे, क्योंकि मेरा हृ-  
दय टूट चुका है और मेरी आत्मा दुखी है ! ओह प्रभु, तुम मेरे सामने  
अपनी पवित्र धार्मिकता का द्वार बंद न करना, कि मुझे नीची तराई से  
होकर चलना पड़े, और कि मैं सत्य के मार्ग पर दृढ़ बना रहूं !
- 33 ओह प्रभु, क्या तुम मुझे अपनी धार्मिकता के वस्त्र में लपेट लोगे !  
ओह प्रभु, क्या तुम अपने शत्रुओं से बचने के लिए मेरा मार्ग तैयार  
करोगे ? क्या तुम मेरे सामने के मार्ग को सीधा करोगे ! तुम मेरे मार्ग  
में अवरोध तो नहीं डालोगे—अपितु मेरे सामने के मार्ग को साफ  
करोगे, और मेरे मार्ग को नहीं, लेकिन मेरे शत्रुओं के मार्ग में बाधा डा-  
लोगे।
- 34 ओह प्रभु, मैंने तुम पर विश्वास किया और सदैव तुम पर विश्वास  
करता ही रहूंगा ! मैं मानव बाहुबल पर विश्वास नहीं करूंगा; क्योंकि  
मैं जानता हूँ कि वह श्रापित है जो मानव बाहुबल पर विश्वास करता  
है । हां, वह शापित है जो मनुष्य पर भरोसा करता है और मानव  
शरीर को अपना शस्त्र बनाता है ।
- 35 हां, मैं जानता हूँ कि परमेश्वर से जो कोई मांगेगा उसे वह उदारता  
से देगा । हां, परमेश्वर मुझे देगा, यदि मैं अपनी आवाज़ आपके पास  
ले आऊंगा; हां, मेरे प्रभु, तुम जो मेरी सत्यनिष्ठा की आधारशिला हो,  
मैं अपनी पुकार तुम तक ले आऊंगा । देखो, ओह मेरे सहारे, और मेरे  
अनंत परमेश्वर, मेरे शब्द सदैव ऊपर तुम्हारे पास जायेंगे । आमीन ।

May the gates of hell be shut continually before  
me, because that my heart is broken and my spirit is  
contrite! O Lord, wilt thou not shut the gates of thy  
righteousness before me, that I may walk in the path  
of the low valley, that I may be strict in the plain  
road!

O Lord, wilt thou encircle me around in the robe  
of thy righteousness! O Lord, wilt thou make a way  
for mine escape before mine enemies! Wilt thou  
make my path straight before me! Wilt thou not  
place a stumbling block in my way—but that thou  
wouldst clear my way before me, and hedge not up  
my way, but the ways of mine enemy.

O Lord, I have trusted in thee, and I will trust in  
thee forever. I will not put my trust in the arm of  
flesh; for I know that cursed is he that putteth his  
trust in the arm of flesh. Yea, cursed is he that put-  
teth his trust in man or maketh flesh his arm.

Yea, I know that God will give liberally to him that  
asketh. Yea, my God will give me, if I ask not amiss;  
therefore I will lift up my voice unto thee; yea, I will  
cry unto thee, my God, the rock of my righteousness.  
Behold, my voice shall forever ascend up unto thee,  
my rock and mine everlasting God. Amen.

## 2 नफी 5

- 1 देखो, ऐसा हुआ कि अपने भाइयों के क्रोध के कारण मुझ, नफी को, प्रभु मेरे परमेश्वर के आगे बहुत रोना पड़ा ।
- 2 लेकिन देखो, उनका क्रोध इतना अधिक बढ़ गया कि वे मेरे प्राण लेने की ताक में रहने लगे ।
- 3 हां, मेरे विरुद्ध असंतोष प्रकट करते हुए वे बोले: हमारा छोटा भाई हम पर शासन करना चाहता है; और उसके कारण हमें बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा; इसलिए हम उसे मार डालें जिससे कि उसकी बातों से हमें और कष्ट सहना न पड़े । देखो, हम उसे अपने ऊपर शासक नहीं होने देंगे; क्योंकि इन लोगों पर शासन करने का अधिकार बढ़े होने के कारण हमारे पास है ।
- 4 उन्होंने असंतोष प्रकट करते हुए जो कुछ कहा उन सब शब्दों को मैं इन पट्टियों पर नहीं लिख रहा हूँ । लेकिन मेरे लिए इतना कहना पर्याप्त होगा, कि वे मेरा प्राण लेना चाहते थे ।
- 5 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने मुझे चेतावनी दी कि मैं, नफी, उनसे अलग होकर और जो मेरे साथ चलना चाहें, उन्हें साथ लेकर, निर्जन प्रदेश में भाग जाऊँ ।
- 6 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने परिवार को साथ लिया, और जेरम और उसके परिवार को भी; और अपने बड़े भाई साम और उसके परिवार और मेरे छोटे भाई याकूब, यूसुफ और अपनी बहनों और वे सब जो मेरे साथ जाना चाहते थे उन्हें भी साथ लिया । और अन्य सब लोग जो मेरे साथ जाना चाहते थे वे परमेश्वर की चेतावनी और प्रकटीकरणों में विश्वास करते थे; इसलिए उन्होंने मेरी बातों में विश्वास किया ।
- 7 और हमने अपने साथ अपने तंबुओं और दूसरी चीजें जो ले जा सकते थे लिया, और निर्जन प्रदेश में कई दिनों की यात्रा की । कई दिनों की यात्रा के पश्चात हमने अपने तंबुओं को लगाया ।
- 8 और मेरे लोग चाहते थे कि उस स्थान का नाम नफी रखा जाए; इसलिए हमने उस स्थान का नाम नफी रखा ।
- 9 और जो लोग मेरे साथ थे वे अपने आपको नफी के लोग कहने लगे ।
- 10 और हमने सभी बातों में मूसा के नियम के अनुसार प्रभु के न्याय, व्यवस्था और आज्ञाओं को माना ।

## 2 Nephi 5

Behold, it came to pass that I, Nephi, did cry much unto the Lord my God, because of the anger of my brethren.

But behold, their anger did increase against me, insomuch that they did seek to take away my life.

Yea, they did murmur against me, saying: Our younger brother thinks to rule over us; and we have had much trial because of him; wherefore, now let us slay him, that we may not be afflicted more because of his words. For behold, we will not have him to be our ruler; for it belongs unto us, who are the elder brethren, to rule over this people.

Now I do not write upon these plates all the words which they murmured against me. But it sufficeth me to say, that they did seek to take away my life.

And it came to pass that the Lord did warn me, that I, Nephi, should depart from them and flee into the wilderness, and all those who would go with me.

Wherefore, it came to pass that I, Nephi, did take my family, and also Zoram and his family, and Sam, mine elder brother and his family, and Jacob and Joseph, my younger brethren, and also my sisters, and all those who would go with me. And all those who would go with me were those who believed in the warnings and the revelations of God; wherefore, they did hearken unto my words.

And we did take our tents and whatsoever things were possible for us, and did journey in the wilderness for the space of many days. And after we had journeyed for the space of many days we did pitch our tents.

And my people would that we should call the name of the place Nephi; wherefore, we did call it Nephi.

And all those who were with me did take upon them to call themselves the people of Nephi.

And we did observe to keep the judgments, and the statutes, and the commandments of the Lord in all things, according to the law of Moses.

- 11 और प्रभु हमारे साथ था; और हमने अत्याधिक प्रगति की; क्योंकि हमने बीज बोए, और हमने बहुतायत से उपज प्राप्त की। और हमने पक्षी के झुंडों, और पशु के रेवड़ों, और हर प्रकार के जानवरों को पालना आरंभ कर दिया था।
- 12 और मैं, नफी उस अभिलेख को जो कि पीतल की पट्टियों पर अंकित था; और दिग्दर्शक यंत्र अथवा गेंद को भी, अपने साथ लाया था जो कि मेरे पिता के लिए प्रभु के हाथों द्वारा बनाया गया था, जिस प्रकार कि लिखा गया है।
- 13 और ऐसा हुआ कि उस स्थान पर हम बहुत अधिक समृद्ध होते चले गए, और हमारी संख्या में भी वृद्धि हुई।
- 14 और मैं, नफी, लाबान की तलवार को भी लाया था, और मैंने उसी तरह की कई तलवारें बनाईं क्योंकि मुझे इस बात का भय था कि वे लोग जो अब लमनाई कहलाते थे, हम पर आक्रमण करके हमें नष्ट कर सकते हैं; क्योंकि मेरे और मेरे बच्चों, और जो लोग मेरे लोग कहलाते थे, उनके विरुद्ध उनका द्वेष मैं जानता था।
- 15 और मैंने अपने लोगों को घर बनाना सिखाया और लकड़ी, लोहा, तांबा, पीतल, इस्पात, सोना, चांदी और मूल्यवान धातु जिनकी वहां बहुतायत थी, की कारीगरी सिखाई।
- 16 और मैं, नफी ने, एक मंदिर बनाया; और मैंने इसे सुलेमान के मंदिर की तरह बनाया जोकि बनावट में तो उसकी तरह ही था बस केवल यह उतनी मूल्यवान वस्तुओं से नहीं बना था; क्योंकि वे वस्तुएं इस प्रदेश में मिलती नहीं थी; इस दृष्टि से यह मंदिर बिलकुल सुलेमान के मंदिर की तरह नहीं था। लेकिन उस मंदिर की बनावट सुलेमान के मंदिर जैसी ही थी; और यह श्रेष्ठ कारीगरी के साथ बनाया गया था।
- 17 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने लोगों को कर्मठ होना और हाथों से परिश्रम करना सिखा दिया था।
- 18 और ऐसा हुआ कि उन्होंने मुझे अपना राजा बनाना चाहा। लेकिन मैं, नफी, चाहता था कि उनके ऊपर कोई राजा न रहे; फिर भी मैंने अपनी शक्ति के अनुसार उनके लिए, जो कुछ हो सकता था, किया।
- 19 और देखो, प्रभु ने मेरे भाइयों से जो कुछ उनके विषय में कहा था कि मैं उनका शासक और शिक्षक होऊंगा, वह पूरा हुआ। इसलिए, प्रभु की आज्ञा द्वारा मैं उनका शासक और शिक्षक उस समय तक बना रहा जब तक कि उन्होंने मुझे मार डालने की चेष्टा नहीं की।

And the Lord was with us; and we did prosper exceedingly; for we did sow seed, and we did reap again in abundance. And we began to raise flocks, and herds, and animals of every kind.

And I, Nephi, had also brought the records which were engraven upon the plates of brass; and also the ball, or compass, which was prepared for my father by the hand of the Lord, according to that which is written.

And it came to pass that we began to prosper exceedingly, and to multiply in the land.

And I, Nephi, did take the sword of Laban, and after the manner of it did make many swords, lest by any means the people who were now called Lamanites should come upon us and destroy us; for I knew their hatred towards me and my children and those who were called my people.

And I did teach my people to build buildings, and to work in all manner of wood, and of iron, and of copper, and of brass, and of steel, and of gold, and of silver, and of precious ores, which were in great abundance.

And I, Nephi, did build a temple; and I did construct it after the manner of the temple of Solomon save it were not built of so many precious things; for they were not to be found upon the land, wherefore, it could not be built like unto Solomon's temple. But the manner of the construction was like unto the temple of Solomon; and the workmanship thereof was exceedingly fine.

And it came to pass that I, Nephi, did cause my people to be industrious, and to labor with their hands.

And it came to pass that they would that I should be their king. But I, Nephi, was desirous that they should have no king; nevertheless, I did for them according to that which was in my power.

And behold, the words of the Lord had been fulfilled unto my brethren, which he spake concerning them, that I should be their ruler and their teacher. Wherefore, I had been their ruler and their teacher, according to the commandments of the Lord, until the time they sought to take away my life.



- 20 इसलिये प्रभु का वह वचन भी पूरा हुआ जिसे उसने मुझसे कहा था: जब वे तुम्हारी बातों को नहीं सुनेंगे तब प्रभु की उपस्थिति से उनको अलग कर दिया जाएगा। और देखो, उनकी उपस्थिति से उन्हें अलग कर दिया गया था।
- 21 और उसने उनको शापित करवाया, हां उनके दुराचारों के कारण उनके ऊपर दुखदाई श्राप आया। क्योंकि देखो, उन्होंने उसके प्रति अपने हृदय को कठोर बना लिया था और वे पत्थर की तरह हो गए थे; वे गोरे और अति सुंदर थे; और प्रभु परमेश्वर ने इसलिये उनकी चमड़ी को काला कर दिया जिससे कि वे मेरे लोगों को लुभा न सकें।
- 22 और प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कहता है: जब तक वे अपने पापों से पश्चात्ताप नहीं करते, तब तक मैं उनको तुम्हारे लोगों के लिए घृणित बना दूंगा।
- 23 और जो उनके वंश में मिलेंगे उनके वंश के ऊपर भी वही श्राप होगा प्रभु ने ऐसा कहा और ऐसा ही हुआ।
- 24 और उस श्राप के कारण जो कि उनके ऊपर था, वे आलसी हो गए और शरारती और धूर्त बनकर निर्जन प्रदेश में शिकार के पशुओं को खोजने लगे।
- 25 और मुझ से प्रभु परमेश्वर ने कहा: वे तुम्हारे वंश में मेरी याद जगाने के लिए, उनके लिए अभिशाप बनेंगे, और यदि वे फिर भी मुझे याद न करेंगे और मेरी वाणी को नहीं सुनेंगे, तब वे उन्हें नष्ट भी कर देंगे।
- 26 और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, याकूब और यूसुफ को समर्पित किया, ताकि वे मेरे प्रदेश के लोगों के लिए याजक और शिक्षक हों।
- 27 और ऐसा हुआ कि तब हम आनंदपूर्वक रहने लगे।
- 28 और अब तक हमें यरूशलेम को छोड़े हुए तीस वर्ष बीत चुके थे।
- 29 और मैं, नफी ने, यहां तक का अपने लोगों का अभिलेख अपनी उन पट्टियों पर रखा, जिन्हें मैंने बनाया था।
- 30 और ऐसा हुआ कि प्रभु परमेश्वर ने मुझसे कहा: दूसरी पट्टियों को बनाओ; और उनमें तुम उन बहुत सी बातों को अंकित करो जो कि मेरी दृष्टि में तुम्हारे लोगों के लिए लाभप्रद हैं।

Wherefore, the word of the Lord was fulfilled which he spake unto me, saying that: Inasmuch as they will not hearken unto thy words they shall be cut off from the presence of the Lord. And behold, they were cut off from his presence.

And he had caused the cursing to come upon them, yea, even a sore cursing, because of their iniquity. For behold, they had hardened their hearts against him, that they had become like unto a flint; wherefore, as they were white, and exceedingly fair and delightsome, that they might not be enticing unto my people the Lord God did cause a skin of blackness to come upon them.

And thus saith the Lord God: I will cause that they shall be loathsome unto thy people, save they shall repent of their iniquities.

And cursed shall be the seed of him that mixeth with their seed; for they shall be cursed even with the same cursing. And the Lord spake it, and it was done.

And because of their cursing which was upon them they did become an idle people, full of mischief and subtlety, and did seek in the wilderness for beasts of prey.

And the Lord God said unto me: They shall be a scourge unto thy seed, to stir them up in remembrance of me; and inasmuch as they will not remember me, and hearken unto my words, they shall scourge them even unto destruction.

And it came to pass that I, Nephi, did consecrate Jacob and Joseph, that they should be priests and teachers over the land of my people.

And it came to pass that we lived after the manner of happiness.

And thirty years had passed away from the time we left Jerusalem.

And I, Nephi, had kept the records upon my plates, which I had made, of my people thus far.

And it came to pass that the Lord God said unto me: Make other plates; and thou shalt engraven many things upon them which are good in my sight, for the profit of thy people.

31 इसलिए, मैं, नफी, प्रभु की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी होने के कारण, गया और इन पट्टियों को बनाया जिन पर इन बातों को मैंने खोद कर अंकित किया ।

32 और इन पर मैंने उन्हीं बातों को खोद कर अंकित किया जो कि परमेश्वर को पसंद हैं । और यदि मेरे लोगों को परमेश्वर की बातें पसंद हैं, तब उन्हें इन पट्टियों पर अंकित बातें भी पसंद होंगी ।

33 और यदि मेरे लोगों को, विशेषकर अपने इतिहास को जानने की इच्छा होगी, तब उन्हें मेरी अन्य पट्टियों को ढूंढना चाहिए ।

34 और मेरे लिए इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि चालीस वर्ष बीत गए थे, और हमारे भाइयों से हमारे युद्ध और विवाद हो चुके थे ।

Wherefore, I, Nephi, to be obedient to the commandments of the Lord, went and made these plates upon which I have engraven these things.

And I engraved that which is pleasing unto God. And if my people are pleased with the things of God they will be pleased with mine engravings which are upon these plates.

And if my people desire to know the more particular part of the history of my people they must search mine other plates.

And it sufficeth me to say that forty years had passed away, and we had already had wars and contentions with our brethren.

## 2 नफी 6

- 1 नफी के भाई, याकूब के वे शब्द, जिन्हें उसने नफी के लोगों से कहा:
- 2 देखो, मेरे प्रिय बंधुओं, मैं, याकूब, परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया, और उसकी पवित्र रीति के अनुसार नियुक्त किया गया और मेरे उस भाई नफी द्वारा समर्पित किया गया जिसे तुम राजा और रक्षक की तरह देखते हो, और जिस पर अपनी रक्षा के लिए आश्रित हो, देखो, तुम जानते हो कि मैंने तुमसे अनेक विषयों पर बहुत सी बातें कहीं ।
- 3 फिर भी मैं तुमसे फिर कह रहा हूँ; क्योंकि मैं तुम्हारी आत्माओं की भलाई का इच्छुक हूँ । हां, तुम्हारे लिए मेरी चिंता महान है; और तुम स्वयं जानते हो कि ऐसा हमेशा रहा है । क्योंकि मैंने संपूर्ण परिश्रम के साथ तुम्हें उपदेश दिया; और अपने पिता की वाणी को तुम्हें सिखाया; और संसार की रचना के संबंध में जो बातें लिखी गई हैं, उन सभी विषयों पर मैंने बातें की ।
- 4 और अब, मैं वर्तमान और भविष्य के विषय में बातें करूँगा; इसलिए मैं यशायाह की वाणी पढ़कर सुनाऊँगा । और ये वे शब्द हैं जिसे मेरा भाई चाहता है कि मैं तुम्हें सुनाऊँ । और मैं तुम्हारी ही भलाई के लिए तुम से बातें करता हूँ, कि तुम सीखो और परमेश्वर के नाम की प्रशंसा करो ।
- 5 और अब, मैं उन शब्दों को पढ़ूँगा जिसे यशायाह ने इस्राएल के घराने के विषय में कहा था; इसलिए उनका संबंध तुम से हो सकता है, क्योंकि तुम इस्राएल के घराने के हो । और यशायाह द्वारा बहुत सी बातें कही गई हैं जिनसे तुम्हारा संबंध हो सकता है, क्योंकि तुम इस्राएल के घराने के हो ।
- 6 और अब, ये उसके शब्द हैं: प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कहता है: देखो, मैं अपना हाथ अन्यजाति के लोगों की ओर उठाऊँगा, और लोगों के सामने अपना आदर्श रखूँगा; और वे तेरे बेटों को अपनी गोद में लाएँगे, और तेरी बेटियाँ उनके कंधों पर चढ़ा कर लाई जाएँगी ।
- 7 और राजा तेरी देखभाल करने वाले पिता और उनकी रानियाँ तेरी दूध पिलाने वाली माता होंगी । वे भूमि की ओर मुख करके तेरे सामने झुकेंगे, और तेरे पैरों की धूल चाटेंगे, और तब तू यह जानेगा कि मैं ही प्रभु हूँ; क्योंकि वे कभी लज्जित नहीं होंगे जो मेरी प्रतीक्षा करते हैं ।

## 2 Nephi 6

The words of Jacob, the brother of Nephi, which he spake unto the people of Nephi:

Behold, my beloved brethren, I, Jacob, having been called of God, and ordained after the manner of his holy order, and having been consecrated by my brother Nephi, unto whom ye look as a king or a protector, and on whom ye depend for safety, behold ye know that I have spoken unto you exceedingly many things.

Nevertheless, I speak unto you again; for I am desirous for the welfare of your souls. Yea, mine anxiety is great for you; and ye yourselves know that it ever has been. For I have exhorted you with all diligence; and I have taught you the words of my father; and I have spoken unto you concerning all things which are written, from the creation of the world.

And now, behold, I would speak unto you concerning things which are, and which are to come; wherefore, I will read you the words of Isaiah. And they are the words which my brother has desired that I should speak unto you. And I speak unto you for your sakes, that ye may learn and glorify the name of your God.

And now, the words which I shall read are they which Isaiah spake concerning all the house of Israel; wherefore, they may be likened unto you, for ye are of the house of Israel. And there are many things which have been spoken by Isaiah which may be likened unto you, because ye are of the house of Israel.

And now, these are the words: Thus saith the Lord God: Behold, I will lift up mine hand to the Gentiles, and set up my standard to the people; and they shall bring thy sons in their arms, and thy daughters shall be carried upon their shoulders.

And kings shall be thy nursing fathers, and their queens thy nursing mothers; they shall bow down to thee with their faces towards the earth, and lick up the dust of thy feet; and thou shalt know that I am the Lord; for they shall not be ashamed that wait for me.

- 8 और अब, मैं, याकूब, थोड़ा बहुत इन शब्दों के विषय में बोलूंगा। क्योंकि देखो, प्रभु ने मुझे यह दिखाया है कि जो लोग यरूशलेम में थे, जहां से हम आए हैं, वे मारे गए और बंदी बनाए गए।
- 9 फिर भी प्रभु ने हमें यह दिखाया है कि वे वापस लौटेंगे। और उसने मुझे यह भी दिखाया है कि प्रभु परमेश्वर, इस्राएल का एकमेव पवित्र परमेश्वर, मानव शरीर में उनके बीच प्रकट होगा; और जब वह अपने आपको प्रकट करेगा, उस स्वर्गदूत, जिसने मुझे यह बताया था, के शब्दों के अनुसार वे उसको कोड़े मारेंगे और क्रूस पर चढ़ा देंगे।
- 10 और इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर के विरुद्ध अपने हृदयों को कठोर बना लेने और आंखें फेर लेने के पश्चात्, देखो, इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर का न्याय उनके ऊपर आएगा। और वह दिन आएगा जब कि उनको दंड और कष्ट दिया जाएगा।
- 11 इसलिए, स्वर्गदूत इस प्रकार कहता है कि इधर-उधर भटकाने के पश्चात्, बहुतों को शारीरिक पीड़ा दी जाएगी, परन्तु विश्वासियों की प्रार्थनाओं के कारण उनको नष्ट नहीं किया जाएगा; वे तितर-बितर और दंडित किये जाएंगे और उनसे घृणा की जाएगी, फिर भी प्रभु उन पर दयावान बना रहेगा और जब उनको अपने उद्धारकर्ता का ज्ञान होगा, तब उनको अपने पैतृक प्रदेश में पुनः इकट्ठा किया जाएगा।
- 12 और आशीषित हैं वे अन्यजातियां जिनके विषय में भविष्यवक्ता ने लिखा; क्योंकि देखो, यदि ऐसा हुआ कि उन्होंने पश्चात्ताप किया और सियोन के विरुद्ध लड़े नहीं और उस अति घृणित गिरजे का साथ नहीं दिया; तब उन्हें बचा लिया जाएगा; क्योंकि प्रभु परमेश्वर अपने बच्चों से किये गए अनुबंधों को पूरा करेगा; और इसी कारण से भविष्यवक्ता ने इन बातों को लिखा है।
- 13 इसलिए सियोन और प्रभु के अनुबंधित लोगों के विरुद्ध युद्ध करने वाले उनके पैरों की धूल चार्टेंगे; और प्रभु के लोगों को लज्जित नहीं होना पड़ेगा। क्योंकि वे प्रभु के लोग हैं जो उसके आगमन की प्रतीक्षा करते हैं; क्योंकि वे अब भी मसीहा के आने की बाट जोह रहे हैं।

And now I, Jacob, would speak somewhat concerning these words. For behold, the Lord has shown me that those who were at Jerusalem, from whence we came, have been slain and carried away captive.

Nevertheless, the Lord has shown unto me that they should return again. And he also has shown unto me that the Lord God, the Holy One of Israel, should manifest himself unto them in the flesh; and after he should manifest himself they should scourge him and crucify him, according to the words of the angel who spake it unto me.

And after they have hardened their hearts and stiffened their necks against the Holy One of Israel, behold, the judgments of the Holy One of Israel shall come upon them. And the day cometh that they shall be smitten and afflicted.

Wherefore, after they are driven to and fro, for thus saith the angel, many shall be afflicted in the flesh, and shall not be suffered to perish, because of the prayers of the faithful; they shall be scattered, and smitten, and hated; nevertheless, the Lord will be merciful unto them, that when they shall come to the knowledge of their Redeemer, they shall be gathered together again to the lands of their inheritance.

And blessed are the Gentiles, they of whom the prophet has written; for behold, if it so be that they shall repent and fight not against Zion, and do not unite themselves to that great and abominable church, they shall be saved; for the Lord God will fulfil his covenants which he has made unto his children; and for this cause the prophet has written these things.

Wherefore, they that fight against Zion and the covenant people of the Lord shall lick up the dust of their feet; and the people of the Lord shall not be ashamed. For the people of the Lord are they who wait for him; for they still wait for the coming of the Messiah.

- 14 और देखो, भविष्यवक्ता के शब्दों के अनुसार, जो मसीहा पर विश्वास करेंगे, तब वह उन्हें संभालने का दुबारा प्रयत्न करेगा; इसलिए वह सामर्थ्य और महान यश के साथ प्रकट होगा और उनके शत्रुओं को नष्ट कर देगा, परन्तु जो उस पर विश्वास करेंगे उनमें से किसी को भी नष्ट नहीं किया जाएगा ।
- 15 और जो उस पर विश्वास नहीं करेंगे उन्हें अग्नि और प्रचण्ड आंधी, भूकंपों, युद्ध, महामारी, और अकाल से नष्ट कर दिया जाएगा । और उन्हें मालूम होगा कि प्रभु ही परमेश्वर है जो कि इस्राएल का एकमेव ईश्वर है ।
- 16 क्या वीर के हाथ से शिकार छीना जा सकता है, या न्याय अनुसार बनाए गए बंदी को छोड़ा जा सकता है ?
- 17 लेकिन प्रभु कहता है: बलवान के बंदी छोड़ा लिए जाएंगे और भयानक मनुष्य का शिकार उसके हाथ से छीन लिया जाएगा; क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने अनुबंधित लोगों को मुक्त करेगा । क्योंकि प्रभु इस प्रकार कहता है: मैं उनके साथ संघर्ष करूंगा, जो तुम्हारे साथ संघर्ष करते हैं ।
- 18 और जो तुम्हें सताएंगे उन्हें मैं उन्हीं का मांस खिलाऊंगा; और मीठी मदिरा की तरह उन्हें अपने लहू को पीकर मतवाला होना पड़ेगा; और सबको यह मालूम होगा कि मैं, प्रभु तुम्हारा रक्षक और उद्धारकर्ता, याकूब का सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ ।

And behold, according to the words of the prophet, the Messiah will set himself again the second time to recover them; wherefore, he will manifest himself unto them in power and great glory, unto the destruction of their enemies, when that day cometh when they shall believe in him; and none will he destroy that believe in him.

And they that believe not in him shall be destroyed, both by fire, and by tempest, and by earthquakes, and by bloodsheds, and by pestilence, and by famine. And they shall know that the Lord is God, the Holy One of Israel.

For shall the prey be taken from the mighty, or the lawful captive delivered?

But thus saith the Lord: Even the captives of the mighty shall be taken away, and the prey of the terrible shall be delivered; for the Mighty God shall deliver his covenant people. For thus saith the Lord: I will contend with them that contendeth with thee—

And I will feed them that oppress thee, with their own flesh; and they shall be drunken with their own blood as with sweet wine; and all flesh shall know that I the Lord am thy Savior and thy Redeemer, the Mighty One of Jacob.

## 2 नफी 7

- 1 हां, प्रभु इस प्रकार कहता है: क्या मैंने तुम्हें ठुकराया है, या क्या मैंने हमेशा के लिए तुम्हें त्याग दिया है ? क्योंकि प्रभु इस प्रकार कहता है: तुम्हारी माता का तलाक पत्र कहां है ? मैंने तुम्हें किसे दिया था, या अपने किस लेनदार के हाथ तुम्हें बेचा ? हां, मैंने किसको तुम्हें बेचा है ? देखो, तुम अपने ही अधर्म के कामों के कारण बिक गए, और तुम्हारे ही अपराधों के कारण तुम्हारी माता अलग कर दी गई ।
- 2 इसका क्या कारण है कि जब मैं आया तब कोई न मिला ? और जब मैंने पुकारा, तब किसी ने जवाब नहीं दिया ? ओ इस्राएल के घराने, क्या मेरे हाथ इतने छोटे हैं कि यह मुक्ति नहीं दे सकते, या क्या मुझ में उद्धार करने की शक्ति नहीं ? देखो, मैं एक धमकी से समुद्र को सुखा देता हूं, मैं नदियों को रेगिस्थान बना देता हूं, उनकी मछलियां सड़ती हैं क्योंकि पानी सूख जाता है, और वे प्यासी मर जाती हैं ।
- 3 मैं आकाश को मानो शोक का काला कपड़ा पहनाता, और टाट को उनका ओढ़ना बना देता हूं ।
- 4 प्रभु परमेश्वर ने मुझे विद्वानों की भाषा दी है, ताकि मैं जान सकूं कैसे मैं सही समय में तुम्हें बताऊं, ओ इस्राएल के घराने, जब तुम थके होते हो तो वह तुम्हें हर सुबह जगाता है, वह मेरे कान को खोलता है ताकि मैं सुन सकूं जैसे विद्वान सुनते हैं ।
- 5 प्रभु परमेश्वर ने मेरा कान खोला है, और मैंने विरोध न किया, न पीछे हटा ।
- 6 मैंने मारने वालों को अपनी पीठ और दाढ़ी नोचने वालों की ओर अपने गाल किये; अपमानित होने और थूकने से मैंने मुंह न छिपाया ।
- 7 क्योंकि प्रभु परमेश्वर मेरी सहायता करता है, इसलिए मैंने संकोच नहीं किया; वरन अपना माथा चकमक की तरह कड़ा किया, और मैं जानता था कि मुझे लज्जित होना न पड़ेगा ।
- 8 और प्रभु मेरे निकट है, और वह मुझे निर्दोष ठहराता है । मेरे साथ कौन विवाद करेगा ? हम एक साथ खड़े हो जाएं । मेरा विरोधी कौन है ? वह मेरे निकट आए, और मैं उसे अपने मुंह की शक्ति से दंड दूंगा ।
- 9 क्योंकि देखो प्रभु परमेश्वर मेरी सहायता करता है । और वे सब जो मुझे दोषी ठहराएंगे, देखो, वे सब कपड़े के समान पुराने हो जाएंगे; उनको कीड़े खा जाएंगे ।
- 10 तुम में से कौन है जो प्रभु का भय मानता और उसके सेवक की बातों का पालन किया, जो अधंकार में चलता हो और उसके पास ज्योति न हो ?

## 2 Nephi 7

Yea, for thus saith the Lord: Have I put thee away, or have I cast thee off forever? For thus saith the Lord: Where is the bill of your mother's divorcement? To whom have I put thee away, or to which of my creditors have I sold you? Yea, to whom have I sold you? Behold, for your iniquities have ye sold yourselves, and for your transgressions is your mother put away.

Wherefore, when I came, there was no man; when I called, yea, there was none to answer. O house of Israel, is my hand shortened at all that it cannot redeem, or have I no power to deliver? Behold, at my rebuke I dry up the sea, I make their rivers a wilderness and their fish to stink because the waters are dried up, and they die because of thirst.

I clothe the heavens with blackness, and I make sackcloth their covering.

The Lord God hath given me the tongue of the learned, that I should know how to speak a word in season unto thee, O house of Israel. When ye are weary he waketh morning by morning. He waketh mine ear to hear as the learned.

The Lord God hath opened mine ear, and I was not rebellious, neither turned away back.

I gave my back to the smiter, and my cheeks to them that plucked off the hair. I hid not my face from shame and spitting.

For the Lord God will help me, therefore shall I not be confounded. Therefore have I set my face like a flint, and I know that I shall not be ashamed.

And the Lord is near, and he justifieth me. Who will contend with me? Let us stand together. Who is mine adversary? Let him come near me, and I will smite him with the strength of my mouth.

For the Lord God will help me. And all they who shall condemn me, behold, all they shall wax old as a garment, and the moth shall eat them up.

Who is among you that feareth the Lord, that obeyeth the voice of his servant, that walketh in darkness and hath no light?

11 देखो, तुम सब जो आग जलाते और अग्निबाणों को कमर में बांधते हो ! तुम सब अपनी जलाई हुई आग में और अपने जलाए हुए अग्निबाणों के बीच में चलो । तुम्हारी यह दशा मेरी ही ओर से होगी—तुम संताप में पड़े रहोगे ।

Behold all ye that kindle fire, that compass yourselves about with sparks, walk in the light of your fire and in the sparks which ye have kindled. This shall ye have of mine hand—ye shall lie down in sorrow.

## 2 नफी 8

- 1 ध्यान से मुझे सुनो, तुम जो धार्मिकता पर चलते हो । उसे देखो, जिस चट्टान में से तुम काट कर निकाले गए, और जिस खदान से तुम खोद कर निकाले गए हो ।
- 2 अपने पिता इब्राहीम और अपनी मां सारा, जिसने तुम्हें पैदा किया, को देखो; क्योंकि मैंने उसे अकेले बुलाया, और उसे आशीष दी ।
- 3 क्योंकि प्रभु ने सिय्योन को शांति दी है, उसने उसके सब खंडहरों को शांति दी है; वह उसके निर्जन प्रदेश को अदन के बगीचे के समान बनाएगा, और उसके रेगिस्तान को प्रभु की वाटिका के समान । उसमें हर्ष और आनंद पाया जाएगा, धन्यवाद और मधुर संगीत की वाणी होगी ।
- 4 ध्यान से मुझे सुनो, मेरे लोगों; और कान लगाकर मेरी सुनो, ओह मेरे राष्ट्र; क्योंकि मेरी ओर से व्यवस्था दी जाएगी, और मैं अपना न्याय लोगों की ज्योति होने के लिए स्थिर करूंगा ।
- 5 मेरी धार्मिकता निकट है; मेरा उद्धार प्रकट हुआ है; और मैं अपनी भुजा से लोगों का न्याय करूंगा । द्वीप मेरी प्रतीक्षा करेंगे, और मेरी भुजा पर वे भरोसा करेंगे ।
- 6 आकाश की ओर अपनी नज़रें उठाओ, और नीचे पृथ्वी को देखो; क्योंकि आकाश धुंए के समान लुप्त हो जाएगा, और पृथ्वी कपड़े के समान पुरानी हो जाएगी; और जो इसमें निवास करते हैं उसी प्रकार मर जाएंगे । लेकिन मेरा उद्धार सदा के लिए होगा, और मेरी धार्मिकता कभी नाश न होगी ।
- 7 ध्यान से मुझे सुनो, तुम जो धार्मिकता को जानते हो, वे लोग जिनके हृदय में मेरी व्यवस्था लिखी है, मनुष्यों के दोषारोपण से तुम मत डरो, न ही तुम उनकी निंदा करने से भयभीत हो ।
- 8 क्योंकि घुन उन्हें कपड़ों की तरह और कीड़ा उन्हें ऊन की तरह खाएगा; परन्तु मेरी धार्मिकता चिरकाल तक और मेरा उद्धार पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा ।
- 9 ओह प्रभु की भुजा, जाग, जाग ! और बल धारण कर; जैसे अतीत में और बीती हुई पीढ़ियों में, वैसे ही अब भी जाग ! क्या तुम वही नहीं हो जिस ने रहब को टुकड़े-टुकड़े किया और दैत्य को घायल किया ?
- 10 क्या तुम वही नहीं जिस ने समुद्र, गहरे सागर के जल को सुखा डाला था; जिसने सागर की गहराइयों में अपने छुड़ाए हुआओं को पार जाने के लिए मार्ग बनाया था ?

## 2 Nephi 8

Hearken unto me, ye that follow after righteousness. Look unto the rock from whence ye are hewn, and to the hole of the pit from whence ye are digged.

Look unto Abraham, your father, and unto Sarah, she that bare you; for I called him alone, and blessed him.

For the Lord shall comfort Zion, he will comfort all her waste places; and he will make her wilderness like Eden, and her desert like the garden of the Lord. Joy and gladness shall be found therein, thanksgiving and the voice of melody.

Hearken unto me, my people; and give ear unto me, O my nation; for a law shall proceed from me, and I will make my judgment to rest for a light for the people.

My righteousness is near; my salvation is gone forth, and mine arm shall judge the people. The isles shall wait upon me, and on mine arm shall they trust.

Lift up your eyes to the heavens, and look upon the earth beneath; for the heavens shall vanish away like smoke, and the earth shall wax old like a garment; and they that dwell therein shall die in like manner. But my salvation shall be forever, and my righteousness shall not be abolished.

Hearken unto me, ye that know righteousness, the people in whose heart I have written my law, fear ye not the reproach of men, neither be ye afraid of their revilings.

For the moth shall eat them up like a garment, and the worm shall eat them like wool. But my righteousness shall be forever, and my salvation from generation to generation.

Awake, awake! Put on strength, O arm of the Lord; awake as in the ancient days. Art thou not he that hath cut Rahab, and wounded the dragon?

Art thou not he who hath dried the sea, the waters of the great deep; that hath made the depths of the sea a way for the ransomed to pass over?



- 11 इसलिए, प्रभु के मुक्त किये गए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन में आएंगे, और उनके सिरों पर अनंत आनंद गूंजता रहेगा; वे हर्ष और आनंद प्राप्त करेंगे, और शोक और सिसकियों का अंत हो जाएगा ।
- 12 मैं वह हूँ; हां, मैं ही तुम्हें दिलासा देने वाला हूँ; देखो, तुम कौन हो जो उस मनुष्य से, जो मर जाएगा, और उस पुरुष से, जो घास के समान मुझाया जाएगा?
- 13 और स्वर्गों को तानने वाले, और पृथ्वी की नींव डालने वाले, अपने बनाने वाले प्रभु को भूल गए हो, और हर दिन लगातार डरते हो अपने द्रोही के गुस्से से, जैसे कि वह सर्वनाश करने के लिए तैयार है ? परन्तु द्रोही की जलजलाहट कहां रही ?
- 14 बंदी शीघ्र ही स्वतंत्र किया जाएगा; वह गड्ढे में न मरेगा और न उसे रोटी की कमी होगी ।
- 15 लेकिन मैं प्रभु तुम्हारा परमेश्वर हूँ, जिसकी लहरें गरजती हैं; सेनाओं का प्रभु मेरा नाम है ।
- 16 और मैंने अपने शब्दों को तुम्हारे मुंह में डाला है, और तुम्हें अपने हाथ की आड़ में छिपा रखा है; कि मैं स्वर्गों को तानूँ और पृथ्वी की बुनियाद डालूँ, और सिय्योन से कहूँ: देखो, तुम मेरे लोग हो ।
- 17 ओह यरूशलेम जाग ! जाग ! खड़ी हो जा, तुमने प्रभु के हाथ से उसकी जलजलाहट के कटोरे में से पिया है—तुमने कटोरे का लड़खड़ा देने वाला मद पूरा पूरा ही पी लिया है—
- 18 और जितने बेटों ने उससे जन्म लिया उन में से कोई न रहा जो उसका मार्गदर्शन करे; और वे सब बेटे जो उसने पाले-पोसे, उन में से कोई न रहा जो उसके हाथ को थाम ले ।
- 19 ये दो बेटे तुम्हारे पास आए हैं, जो तुम्हारे लिए विलाप करेंगे—तुम्हारी तबाही और विनाश, और आकाल और तलवार—और किसके द्वारा मैं तुम्हें दिलासा दूंगा ?
- 20 तुम्हारे बेटे, सिवाय इन दोनों के, वे हर एक सड़क के सिरे पर, जाल में फंसे हुए जंगली बैल के समान पड़े हैं; प्रभु की जलजलाहट और तुम्हारे परमेश्वर की धमकी के कारण वे अचेत पड़े हैं ।
- 21 इसलिए ओह दुखियारी अब इसे सुनो, तुम मतवाली तो है, परन्तु मदिरा पीकर नहीं:

Therefore, the redeemed of the Lord shall return, and come with singing unto Zion; and everlasting joy and holiness shall be upon their heads; and they shall obtain gladness and joy; sorrow and mourning shall flee away.

I am he; yea, I am he that comforteth you. Behold, who art thou, that thou shouldst be afraid of man, who shall die, and of the son of man, who shall be made like unto grass?

And forgettest the Lord thy maker, that hath stretched forth the heavens, and laid the foundations of the earth, and hast feared continually every day, because of the fury of the oppressor, as if he were ready to destroy? And where is the fury of the oppressor?

The captive exile hasteneth, that he may be loosed, and that he should not die in the pit, nor that his bread should fail.

But I am the Lord thy God, whose waves roared; the Lord of Hosts is my name.

And I have put my words in thy mouth, and have covered thee in the shadow of mine hand, that I may plant the heavens and lay the foundations of the earth, and say unto Zion: Behold, thou art my people.

Awake, awake, stand up, O Jerusalem, which hast drunk at the hand of the Lord the cup of his fury—thou hast drunken the dregs of the cup of trembling wrung out—

And none to guide her among all the sons she hath brought forth; neither that taketh her by the hand, of all the sons she hath brought up.

These two sons are come unto thee, who shall be sorry for thee—thy desolation and destruction, and the famine and the sword—and by whom shall I comfort thee?

Thy sons have fainted, save these two; they lie at the head of all the streets; as a wild bull in a net, they are full of the fury of the Lord, the rebuke of thy God.

Therefore hear now this, thou afflicted, and drunken, and not with wine:

- 22 तुम्हारा प्रभु परमेश्वर जो अपने लोगों का मुकदमा लड़ने वाला तुम्हारा परमेश्वर है, वह इस प्रकार कहता है; देखो, मैं लड़खड़ा देने वाले मद के कटोरे को अर्थात् अपनी जलजलाहट के कटोरे को तुम्हारे हाथ से ले लेता हूँ; तुम्हें उसमें से फिर कभी पीना न पड़ेगा ।
- 23 लेकिन मैं उसे तुम्हारे उन दुख देने वालों के हाथ में दूंगा, जिन्होंने तुम्हारी आत्मा से कहा: नीचे झुको, कि हम तुम पर पांव धरकर आगे चलें—और तुम ने औंधे मुंह गिरकर अपनी पीठ को भूमि और आगे चलने वालों के लिए सड़क बना दी ।
- 24 ओह सिय्योन जाग, जाग ! अपना बल धारण कर; ओह पवित्र नगर यरूशलेम, अपने शोभायान वस्त्र पहन ले; क्योंकि तुम्हारे बीच खतनारहित और अशुद्ध फिर कभी प्रवेश न करने पाएंगे ।
- 25 अपने ऊपर से धूल झाड़ दे, ओह यरूशलेम, उठ; ओह सिय्योन की गुलाम बेटी अपने गले के बंधन खोल दे ।

Thus saith thy Lord, the Lord and thy God pleading the cause of his people; behold, I have taken out of thine hand the cup of trembling, the dregs of the cup of my fury; thou shalt no more drink it again.

But I will put it into the hand of them that afflict thee; who have said to thy soul: Bow down, that we may go over—and thou hast laid thy body as the ground and as the street to them that went over.

Awake, awake, put on thy strength, O Zion; put on thy beautiful garments, O Jerusalem, the holy city; for henceforth there shall no more come into thee the uncircumcised and the unclean.

Shake thyself from the dust; arise, sit down, O Jerusalem; loose thyself from the bands of thy neck, O captive daughter of Zion.

## 2 नफी 9

- 1 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, मैंने इन बातों को पढ़ा है ताकि तुम प्रभु के अनुबंधों के संबंध में जान सको कि उसने संपूर्ण इस्राएल के घराने के साथ अनुबंध किया है—
- 2 कि उसने आरंभ से ही, यहूदियों से अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुंह द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी बोला है, और जब तक परमेश्वर का सच्चा गिरजा और लोगों की पुनःस्थापना का समय नहीं आता तब तक बोलता रहेगा; जब वे अपने पैतृक संपत्ति वाले प्रदेश में एकत्रित किये जाएंगे, और सभी अपने प्रतिज्ञा के प्रदेश में स्थापित किये जाएंगे ।
- 3 देखो, मेरे प्रिय भाइयों, मैं तुम से इन बातों को बोल रहा हूँ ताकि तुम आनंदित हो सको, और अपने सिरों को उन आशीषों के कारण हमेशा के लिए उठा सको जिन्हें प्रभु तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे बच्चों को देगा ।
- 4 क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुमने आने वाली बातों को जानने के लिए काफी खोज की है; इसलिए मैं जानता हूँ कि तुम जानो कि तुम्हारा शरीर मर कर नष्ट हो जाएगा; फिर भी, हम अपने शरीरों में परमेश्वर को देखेंगे ।
- 5 हां, मैं जानता हूँ कि तुम्हें यह मालूम है कि यरूशलेम जहां से हम आए हैं, वहां के लोगों को वह शरीर में अपने आपको दिखाएगा; क्योंकि यह आवश्यक है कि यह उनके बीच हो; क्योंकि उस महान रचयिता का शरीर में मनुष्य के लिए कष्ट झेलना और मनुष्य के लिए मरना आवश्यक होगा जिससे कि सब मनुष्य उसके अधीन हो जाएं ।
- 6 उस महान रचयिता का दयापूर्ण योजना को पूरा करने के लिए हर एक को मरना पड़ेगा, क्योंकि पुनरुत्थान की शक्ति चाहिए; और पतन के कारण मनुष्य का पुनरुत्थान जरूरी है; और मनुष्य का पतन उसके नियमों के उल्लंघन के कारण हुआ; क्योंकि मनुष्य पतित हो गया, इसलिए उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर दिया गया ।
- 7 इसलिए, असीम प्रायश्चित की आवश्यकता है—बिना असीम प्रायश्चित के इस भ्रष्टाचार को सदाचार में बदला नहीं जा सकता । इसलिए, मनुष्य का जो प्रथम न्याय हुआ, वह उस पर अंतहीन अवधि के लिए बना रहता । और यदि ऐसा होता तो, इस शरीर को धरती माता में सड़ने, घुलने और कभी भी वहां से न उठने के लिए सुला दिया जाता ।

## 2 Nephi 9

And now, my beloved brethren, I have read these things that ye might know concerning the covenants of the Lord that he has covenanted with all the house of Israel—

That he has spoken unto the Jews, by the mouth of his holy prophets, even from the beginning down, from generation to generation, until the time comes that they shall be restored to the true church and fold of God; when they shall be gathered home to the lands of their inheritance, and shall be established in all their lands of promise.

Behold, my beloved brethren, I speak unto you these things that ye may rejoice, and lift up your heads forever, because of the blessings which the Lord God shall bestow upon your children.

For I know that ye have searched much, many of you, to know of things to come; wherefore I know that ye know that our flesh must waste away and die; nevertheless, in our bodies we shall see God.

Yea, I know that ye know that in the body he shall show himself unto those at Jerusalem, from whence we came; for it is expedient that it should be among them; for it behooveth the great Creator that he suffereth himself to become subject unto man in the flesh, and die for all men, that all men might become subject unto him.

For as death hath passed upon all men, to fulfil the merciful plan of the great Creator, there must needs be a power of resurrection, and the resurrection must needs come unto man by reason of the fall; and the fall came by reason of transgression; and because man became fallen they were cut off from the presence of the Lord.

Wherefore, it must needs be an infinite atonement—save it should be an infinite atonement this corruption could not put on incorruption. Wherefore, the first judgment which came upon man must needs have remained to an endless duration. And if so, this flesh must have laid down to rot and to crumble to its mother earth, to rise no more.

- 8 ओह प्रभु की बुद्धि, उसकी दया और अनुग्रह ! क्योंकि देखो, यदि हमारा शरीर पुनर्जीवित नहीं होता तब हमारी आत्मा उस स्वर्गदूत के अधीन हो जाती है जो अनंत परमेश्वर की उपस्थिति से नीचे गिर गया था, और जो शैतान बन गया, और जिसका कभी भी उत्थान नहीं होगा ।
- 9 और हमारी आत्मा उसी की तरह हो जाती और हम शैतान बन कर शैतान के दूत हो जाते और हमें परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर झूठ के जन्मदाता के साथ उसी की तरह कष्ट में रहना पड़ता; हां, वह जिसने हमारे प्रथम माता-पिता को बहकाया था, जो ज्योति के स्वर्गदूत का भेष धारण कर लेता है और मानव संतान को गुप्त षड्यंत्र करके हत्या, और सभी प्रकार के अंधकार में किये जाने वाले कामों के लिए उकसाता है ।
- 10 ओह हमारे परमेश्वर की कृपा कितनी महान है, जो इस भयंकर राक्षस की पकड़ से हमारे बचने के लिए रास्ता तैयार करता है; हां, वह राक्षस मृत्यु और नरक, जिसे मैं शरीर की मृत्यु और आत्मा की मृत्यु भी कहता हूँ ।
- 11 और हमारे, इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर के द्वारा दिए गए बचने की राह के कारण, वह मृत्यु जिसके विषय में मैंने कहा है, जो कि पार्थिव है, उसके मृतक को मुक्त कर देगी; वह मृत्यु कब्र है ।
- 12 और यह मृत्यु, जिसके विषय में मैंने कहा है, यह आत्मिक मृत्यु है, उसके मृतक को मुक्त करेगी; यह आत्मिक मृत्यु नरक है; इसलिए मृत्यु और नरक को अपने मृतकों को मुक्त करना पड़ेगा, और नरक बंदी आत्माओं को मुक्त करना पड़ेगा, और कब्र को बंदी शरीरों को मुक्त करना पड़ेगा, और मनुष्यों के शरीर और आत्माओं को एक दूसरे के साथ पुनःस्थापित किया जाएगा; और यह इस्राएल के एकमेव परमेश्वर की पुनरुत्थान की शक्ति के द्वारा है ।
- 13 ओह हमारे परमेश्वर की योजना कितनी महान है ! क्योंकि दूसरी ओर स्वर्ग धर्मियों की आत्माओं को सौंप देंगे, और कब्र धर्मियों के शरीरों को मुक्त कर देंगे; और आत्मा और शरीर पुनःस्थापित हो जाएंगे और सभी मनुष्य भ्रष्टहीन, और अमर बन जाएंगे, और उनका हमारे समान परिपूर्ण ज्ञान सहित शरीर होगा, सिवाय इसके कि हमारा ज्ञान परिपूर्ण होगा ।

O the wisdom of God, his mercy and grace! For behold, if the flesh should rise no more our spirits must become subject to that angel who fell from before the presence of the Eternal God, and became the devil, to rise no more.

And our spirits must have become like unto him, and we become devils, angels to a devil, to be shut out from the presence of our God, and to remain with the father of lies, in misery, like unto himself; yea, to that being who beguiled our first parents, who transformeth himself nigh unto an angel of light, and stirreth up the children of men unto secret combinations of murder and all manner of secret works of darkness.

O how great the goodness of our God, who prepareth a way for our escape from the grasp of this awful monster; yea, that monster, death and hell, which I call the death of the body, and also the death of the spirit.

And because of the way of deliverance of our God, the Holy One of Israel, this death, of which I have spoken, which is the temporal, shall deliver up its dead; which death is the grave.

And this death of which I have spoken, which is the spiritual death, shall deliver up its dead; which spiritual death is hell; wherefore, death and hell must deliver up their dead, and hell must deliver up its captive spirits, and the grave must deliver up its captive bodies, and the bodies and the spirits of men will be restored one to the other; and it is by the power of the resurrection of the Holy One of Israel.

O how great the plan of our God! For on the other hand, the paradise of God must deliver up the spirits of the righteous, and the grave deliver up the body of the righteous; and the spirit and the body is restored to itself again, and all men become incorruptible, and immortal, and they are living souls, having a perfect knowledge like unto us in the flesh, save it be that our knowledge shall be perfect.

- 14 इसलिए, हमें अपने सब अपराधों, और अपनी अशुद्धता, और अपनी नग्नता का परिपूर्ण ज्ञान होगा; और धर्मियों को अपने आनंद, और अपनी धार्मिकता, पवित्रता से ढके होने का परिपूर्ण ज्ञान होगा, हां, यहां तक कि धार्मिकता के लबादे का भी ।
- 15 और ऐसा होगा कि हर एक मनुष्य अपनी इस प्रथम मृत्यु के पश्चात पुनर्जीवन धारण कर लेने पर अमर होकर इस्राएल के एकमेव परमेश्वर के न्यायसिंहासन के सामने उपस्थित होगा; और तब न्याय किया जाएगा और तब उनका न्याय परमेश्वर के पवित्र न्याय के अनुसार होगा ।
- 16 और निश्चय ही, जब तक प्रभु जीवित है, क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने इसे कहा है, और यह उसका अनंत वचन है, जो कि टल नहीं सकता, कि जो धर्मी हैं धर्मी ही रहेंगे, और जो गंदे हैं वे गंदे ही रहेंगे; इसलिए, जो गंदे हैं वे शैतान और उसके दूत हैं; और वे अनंत आग में जाएंगे, जो उनके लिए तैयार की गई है; और उनका कष्ट वैसे ही होगा जैसे उस आग और गंधक की झील में होता है, जिसकी ज्वाला अनंत काल के लिए उठती ही रहती है और अंत नहीं होता ।
- 17 ओह, हमारे परमेश्वर का न्याय और महानता ! क्योंकि वह अपने वचनों को पूरा करता है, और ये उसके मुख से निकले हैं, और उसकी व्यवस्था अवश्य ही पूरी की जाएगी ।
- 18 लेकिन, इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर के धर्मी, संतों को देखो, वे जो इस्राएल के एकमेव परमेश्वर में विश्वास करते हैं, वे जो संसार के अत्याचारों को सहते, और इसके तिरस्कार को अनदेखा करते, वे परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे, जो कि संसार की नींव से उनके लिए तैयार किया गया है, और उनका आनंद हमेशा के लिए होगा ।
- 19 ओह, हमारे इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर की दया की महानता ! क्योंकि वह अपने संतों को उस भयानक राक्षस शैतान से, और मृत्यु से, और नरक से और उस आग और गंधक की झील से मुक्त करता है, जोकि अंतहीन कष्ट है ।
- 20 ओह, हमारे परमेश्वर की पवित्रता कितनी महान है ! क्योंकि वह सब बातों को जानता है, और कोई ऐसी बात नहीं जो वह न जानता हो ।
- 21 और वह इस संसार में आता है ताकि वह मनुष्यों को बचा सके यदि वे उसकी बातों पर ध्यान देते हैं; क्योंकि वह सब मनुष्य के लिए कष्ट सहता, हां, हर एक जीवित प्राणी, पुरुष, स्त्री दोनों के लिए, और बच्चों के लिए, जो आदम के परिवार से संबंध रखते हैं ।

Wherefore, we shall have a perfect knowledge of all our guilt, and our uncleanness, and our nakedness; and the righteous shall have a perfect knowledge of their enjoyment, and their righteousness, being clothed with purity, yea, even with the robe of righteousness.

And it shall come to pass that when all men shall have passed from this first death unto life, insomuch as they have become immortal, they must appear before the judgment-seat of the Holy One of Israel; and then cometh the judgment, and then must they be judged according to the holy judgment of God.

And assuredly, as the Lord liveth, for the Lord God hath spoken it, and it is his eternal word, which cannot pass away, that they who are righteous shall be righteous still, and they who are filthy shall be filthy still; wherefore, they who are filthy are the devil and his angels; and they shall go away into everlasting fire, prepared for them; and their torment is as a lake of fire and brimstone, whose flame ascendeth up forever and ever and has no end.

O the greatness and the justice of our God! For he executeth all his words, and they have gone forth out of his mouth, and his law must be fulfilled.

But, behold, the righteous, the saints of the Holy One of Israel, they who have believed in the Holy One of Israel, they who have endured the crosses of the world, and despised the shame of it, they shall inherit the kingdom of God, which was prepared for them from the foundation of the world, and their joy shall be full forever.

O the greatness of the mercy of our God, the Holy One of Israel! For he delivereth his saints from that awful monster the devil, and death, and hell, and that lake of fire and brimstone, which is endless torment.

O how great the holiness of our God! For he knoweth all things, and there is not anything save he knows it.

And he cometh into the world that he may save all men if they will hearken unto his voice; for behold, he suffereth the pains of all men, yea, the pains of every living creature, both men, women, and children, who belong to the family of Adam.

- 22 और वह इसे इसलिए सहता कि पुनरुत्थान सब मनुष्यों को उपलब्ध हो सके, ताकि सब मनुष्य उस महान और न्याय के दिन उसके सामने खड़े हो सकें ।
- 23 और वह हर एक को पश्चाताप करने, और इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर में परिपूर्ण विश्वास रखते हुए उसके नाम में बपतिस्मा लेने की आज्ञा देता है, अन्यथा उनको परमेश्वर के राज्य में बचाया नहीं जाएगा ।
- 24 और यदि वे पश्चाताप और उसके नाम में विश्वास नहीं करेंगे, और उसके नाम में बपतिस्मा नहीं लेंगे, और अंत तक धीरज नहीं धरेंगे, तब वे अवश्य ही नरक में जाएंगे, क्योंकि प्रभु परमेश्वर, इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर ने ऐसा कहा है ।
- 25 इसलिए उसने एक व्यवस्था दी है; और जहां कोई व्यवस्था नहीं दी जाती वहां कोई दंड नहीं होता है; और जहां कोई दंड नहीं होता वहां कोई दंड की आज्ञा भी नहीं होती; और जहां कोई दंड की आज्ञा नहीं होती उनके ऊपर इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर की दया का अधिकार, प्रायश्चित के कारण होता है; क्योंकि वे उसकी शक्ति के द्वारा मुक्त किये जाते हैं ।
- 26 क्योंकि प्रायश्चित उन लोगों की आवश्यकता की पूर्ति करता है जिन्हें व्यवस्था नहीं दी गई है, ताकि उन लोगों को उस भयंकर राक्षस से मुक्त किया जा सके, जो कि मृत्यु, और नरक, शैतान और आग और गंधक की झील है, जिसका कष्ट अंतहीन है; और वे उस परमेश्वर के साथ पुनःस्थापित होते हैं जो उन्हें सांस देता है, जोकि इस्राएल का एकमेव पवित्र परमेश्वर है ।
- 27 लेकिन उस पर हाथ जिसे व्यवस्था दी गई है, हां, जिसके पास परमेश्वर की सारी आज्ञाएं हैं, जैसी की हमारे पास हैं, और वह उनका उल्लंघन करता है, और अपने परीक्षा के दिनों को नष्ट करता है, क्योंकि उसकी दशा भयंकर है ।
- 28 ओह, उस शैतान की धूर्त योजना ! ओह, मनुष्यों की व्यर्थता, और दुर्बलता, और अज्ञानता ! जब वे ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं तब वे अपने आपको बुद्धिमान समझते हैं, और वे परमेश्वर की सलाह की ओर ध्यान नहीं देते हैं, क्योंकि वे इसे अलग कर देते हैं, वे अपने आपको विद्वान समझते हैं, इसलिए उनका ज्ञान मूर्खतापूर्ण है और इससे उनको कोई लाभ नहीं होता । और वे नष्ट हो जाएंगे ।
- 29 लेकिन बुद्धिमान होना तब ठीक होता जब वे परमेश्वर की सलाह पर ध्यान देते हैं ।

And he suffereth this that the resurrection might pass upon all men, that all might stand before him at the great and judgment day.

And he commandeth all men that they must repent, and be baptized in his name, having perfect faith in the Holy One of Israel, or they cannot be saved in the kingdom of God.

And if they will not repent and believe in his name, and be baptized in his name, and endure to the end, they must be damned; for the Lord God, the Holy One of Israel, has spoken it.

Wherefore, he has given a law; and where there is no law given there is no punishment; and where there is no punishment there is no condemnation; and where there is no condemnation the mercies of the Holy One of Israel have claim upon them, because of the atonement; for they are delivered by the power of him.

For the atonement satisfieth the demands of his justice upon all those who have not the law given to them, that they are delivered from that awful monster, death and hell, and the devil, and the lake of fire and brimstone, which is endless torment; and they are restored to that God who gave them breath, which is the Holy One of Israel.

But wo unto him that has the law given, yea, that has all the commandments of God, like unto us, and that transgresseth them, and that wasteth the days of his probation, for awful is his state!

O that cunning plan of the evil one! O the vainness, and the frailties, and the foolishness of men! When they are learned they think they are wise, and they hearken not unto the counsel of God, for they set it aside, supposing they know of themselves, wherefore, their wisdom is foolishness and it profiteth them not. And they shall perish.

But to be learned is good if they hearken unto the counsels of God.

- 30 लेकिन धनी पर हाय, जोकि संसार की बातों में धनी हैं। क्योंकि ऐसे लोग धनी होने के कारण गरीबों से घृणा करते और विनम्र को सताते हैं, और उनका मन अपने धन में लगा रहता है; इसलिए, उनका धन ही उनका परमेश्वर है। और देखो, उनका धन उनके साथ ही नष्ट हो जाएगा।
- 31 और हाय उन बहरों पर जो नहीं सुनेंगे; क्योंकि वे नष्ट हो जाएंगे।
- 32 हाय उन अंधों पर जो नहीं देखेंगे; क्योंकि वे भी नष्ट हो जाएंगे।
- 33 हाय बिना संस्कार के हृदय वाले पर, क्योंकि उनके अधर्मों का ज्ञान अंतिम दिन उन्हें दंडित करेंगे।
- 34 हाय झूठे पर, क्योंकि वह नरक में ढकेल दिया जाएगा।
- 35 हाय हत्यारे पर जो जानबूझकर हत्या करता है, क्योंकि वह मरेगा।
- 36 हाय, उन पर जो व्यभिचार करते हैं, क्योंकि उन्हें नरक में ढकेल दिया जाएगा।
- 37 हां, हाय उन पर जो मूर्तियों की पूजा करते हैं, क्योंकि शैतानों का शैतान उनसे प्रसन्न होता है।
- 38 और अंत में उन सब लोगों पर हाय, जो अपने पापों में मरते हैं; क्योंकि वे परमेश्वर के पास लौटेंगे और उसके चेहरे को देखेंगे और अपने पापों में ही रहेंगे।
- 39 हे, मेरे प्रिय भाइयों, उस पवित्र परमेश्वर के विरुद्ध नियमों के उल्लंघन की भयानकता को याद रखो, और उस धूर्त के प्रलोभनों के आगे झुकने की भयानकता को भी याद रखो। याद रखो कि शारीरिक बातों में मन लगाना मृत्यु है, और आत्मिकता में मन लगाना अनंत जीवन है।
- 40 हे, मेरे प्रिय भाइयों, मेरी बातों को ध्यान से सुनो। इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर की महानता को याद रखो। यह मत कहो कि मैंने तुम्हारे विरुद्ध कठोर बातें कही हैं; यदि तुम ऐसा करते हो, तब तुम सच्चाई का विद्रोह करते हो; क्योंकि मैंने तुम्हारे रचयिता के वचनों को कहा है। मैं यह जानता हूँ कि सच्चाई की बातें हर प्रकार की अशुद्धता के विरुद्ध कठोर होती हैं; लेकिन धर्मी उनसे भयभीत नहीं होते, क्योंकि उनको सत्य प्रिय होती है और वे कांपते नहीं।
- But wo unto the rich, who are rich as to the things of the world. For because they are rich they despise the poor, and they persecute the meek, and their hearts are upon their treasures; wherefore, their treasure is their god. And behold, their treasure shall perish with them also.
- And wo unto the deaf that will not hear; for they shall perish.
- Wo unto the blind that will not see; for they shall perish also.
- Wo unto the uncircumcised of heart, for a knowledge of their iniquities shall smite them at the last day.
- Wo unto the liar, for he shall be thrust down to hell.
- Wo unto the murderer who deliberately killeth, for he shall die.
- Wo unto them who commit whoredoms, for they shall be thrust down to hell.
- Yea, wo unto those that worship idols, for the devil of all devils delighteth in them.
- And, in fine, wo unto all those who die in their sins; for they shall return to God, and behold his face, and remain in their sins.
- O, my beloved brethren, remember the awfulness in transgressing against that Holy God, and also the awfulness of yielding to the enticings of that cunning one. Remember, to be carnally-minded is death, and to be spiritually-minded is life eternal.
- O, my beloved brethren, give ear to my words. Remember the greatness of the Holy One of Israel. Do not say that I have spoken hard things against you; for if ye do, ye will revile against the truth; for I have spoken the words of your Maker. I know that the words of truth are hard against all uncleanness; but the righteous fear them not, for they love the truth and are not shaken.

- 41 तब हे, मेरे प्रिय भाइयों, प्रभु के पास आओ, जो कि पवित्र जन है। याद रखो कि उसके मार्ग धर्मी हैं। देखो, मनुष्य के लिए रास्ता सकंरा है, लेकिन उसके सामने वह सीधा सरल है और द्वार का रक्षक इस्राएल का एकमेव पवित्र परमेश्वर है; और उसने वहां कोई अन्य सेवक नहीं रखा है; और उस द्वार के अलावा, अंदर आने का कोई दूसरा मार्ग नहीं है; क्योंकि उसको धोखा भी नहीं दिया जा सकता, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उसका नाम है।
- 42 और जो कोई उसके द्वार को खटखटाएगा उसके लिए द्वार को खोलेगा; और जो अपने को समझदार और बुद्धिमान समझते हैं, जो धनी हैं, जो अपनी विद्या पर, अपनी बुद्धि पर और अपनी संपत्ति पर फूलते हैं—हां, यही हैं वे लोग जिनका वह तिरस्कार करता है; जब तक कि यह लोग इनको त्याग नहीं देते, और अपने आपको परमेश्वर के सामने अज्ञानी और अत्यंत दीन समझते हैं, वह उनके लिए द्वार नहीं खोलेगा।
- 43 लेकिन बुद्धिमान और समझदार लोगों की बातें उनसे सदा के लिए छुपा ली जाएंगी—हां, वह आनंद जो संतों के लिए तैयार किया गया है।
- 44 हे मेरे भाइयों, मेरी बातों को याद रखो। देखो, मैं अपने लबादे को उतार कर तुम्हारे सामने झाड़ रहा हूँ; मैं अपने उद्धार के परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे अपनी सब कुछ खोजने वाली आंख से देखे; ताकि, अंतिम दिन जब सब मनुष्यों का उनके कर्मों के अनुसार न्याय होगा, तब तुम्हें यह ज्ञान रहेगा कि इस्राएल का परमेश्वर इस बात का साक्षी है कि मैंने अपनी आत्मा से तुम्हारे अधर्मों को झाड़ दिया है और मैं उसके सामने उज्ज्वल होकर तुम्हारे लहू से मुक्त खड़ा हूँ।
- 45 हे मेरे प्रिय भाइयों; अपने पापों से मुख मोड़ लो; उसकी जंजीर को उतार फेंको जो तुम्हें दृढ़ता से बांधता है; उस परमेश्वर के पास जाओ, जो तुम्हारे उद्धार की दृढ़ चट्टान है।
- 46 अपनी आत्मा को उस महिमापूर्ण दिन के लिए तैयार करो जब धर्मी लोगों का न्याय होगा, कहीं उस न्याय के दिन तुम्हें भयंकर भय से झिझकना न पड़े; कि तुम्हें अपना अपराध ठीक से याद न रहे और मजबूर होकर तुम्हें कहना पड़े: पवित्र, पवित्र हैं तुम्हारे न्याय, हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर—लेकिन मैं अपने अपराध को जानता हूँ; मैंने आपकी व्यवस्था का उल्लंघन किया है, और मेरे उल्लंघन मेरे हैं; और शैतान ने मुझ पर कब्जा कर लिया था, और मैं उसके भयंकर दुख का शिकार हो गया था।

O then, my beloved brethren, come unto the Lord, the Holy One. Remember that his paths are righteous. Behold, the way for man is narrow, but it lieth in a straight course before him, and the keeper of the gate is the Holy One of Israel; and he employeth no servant there; and there is none other way save it be by the gate; for he cannot be deceived, for the Lord God is his name.

And whoso knocketh, to him will he open; and the wise, and the learned, and they that are rich, who are puffed up because of their learning, and their wisdom, and their riches—yea, they are they whom he despiseth; and save they shall cast these things away, and consider themselves fools before God, and come down in the depths of humility, he will not open unto them.

But the things of the wise and the prudent shall be hid from them forever—yea, that happiness which is prepared for the saints.

O, my beloved brethren, remember my words. Behold, I take off my garments, and I shake them before you; I pray the God of my salvation that he view me with his all-searching eye; wherefore, ye shall know at the last day, when all men shall be judged of their works, that the God of Israel did witness that I shook your iniquities from my soul, and that I stand with brightness before him, and am rid of your blood.

O, my beloved brethren, turn away from your sins; shake off the chains of him that would bind you fast; come unto that God who is the rock of your salvation.

Prepare your souls for that glorious day when justice shall be administered unto the righteous, even the day of judgment, that ye may not shrink with awful fear; that ye may not remember your awful guilt in perfectness, and be constrained to exclaim: Holy, holy are thy judgments, O Lord God Almighty—but I know my guilt; I transgressed thy law, and my transgressions are mine; and the devil hath obtained me, that I am a prey to his awful misery.



- 47 लेकिन देखो मेरे भाइयों, क्या यह जरूरी है कि मैं इन भयानक वास्तविकताओं से तुम्हें जागृत कराऊं ? तुम्हारे मन यदि शुद्ध होते तो क्या मुझे आत्माओं को कष्ट देना पड़ता ? यदि तुम पाप से मुक्त होते तो क्या मुझे सच्चाई की स्पष्टता को तुम्हें इतना स्पष्ट करना पड़ता ?
- 48 देखो, यदि तुम पवित्र होते तो मैं तुम से पवित्रता के विषय में बोलता; लेकिन तुम पवित्र नहीं हो, और मुझे तुम एक शिक्षक की तरह देखते हो, इसलिए यह जरूरी है कि मैं तुम्हें पाप के परिणाम से अवगत कराऊं ।
- 49 देखो, पाप से मेरी आत्मा बहुत अधिक घृणा करती है, और धार्मिकता से मेरा हृदय आनंदित होता है; और मैं अपने परमेश्वर के पवित्र नाम की स्तुति करूंगा ।
- 50 आओ मेरे भाइयों हर एक जो प्यासा है, जल के पास आओ; और जिसके पास पैसे नहीं हैं, आओ खरीदो और खाओ; हां, मदिरा और दूध बिना पैसे और बिना कीमत के खरीद लो ।
- 51 इसलिए, जिसका कोई मूल्य नहीं उसके पीछे पैसे मत खर्च करो, और न ही जो संतुष्ट कर सकता है उसके लिए परिश्रम करो । ध्यानपूर्वक मुझे सुनो, और जिन बातों को मैंने कहा उनको याद रखो; और इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर के पास आओ, और उसमें आनंदित रहो जो कभी नष्ट नहीं होता, और न ही भ्रष्ट होता है, और अपनी आत्मा को इस उत्कृष्टता में आनंद मनाने दो ।
- 52 देखो, मेरे प्रिय भाइयों; अपने परमेश्वर के वचनों को याद रखो; दिन में निरंतर उससे प्रार्थना करो, और रात को उसके पवित्र नाम का धन्यवाद दो । अपने हृदयों को आनंद मनाने दो ।
- 53 और देखो, प्रभु के अनुबंध कितने महान हैं, और मानव संतान पर कितनी महान है उसकी कृपा; और उसकी महानता, अनुग्रह और दया के कारण उसने हम से प्रतिज्ञा की है कि हमारे वंश, शरीर की तरह, संपूर्ण रूप से नष्ट नहीं होंगे, परन्तु वह उन्हें सुरक्षित रखेगा; और भविष्य की पीढ़ियों में वे इस्राएल के घराने की एक धार्मिक शाखा होंगे ।
- 54 और अब, मेरे भाइयों, मैं तुम से और बातें करता; लेकिन कल मैं तुम्हें अपने शेष वचनों की घोषणा करूंगा, आमीन ।

But behold, my brethren, is it expedient that I should awake you to an awful reality of these things? Would I harrow up your souls if your minds were pure? Would I be plain unto you according to the plainness of the truth if ye were freed from sin?

Behold, if ye were holy I would speak unto you of holiness; but as ye are not holy, and ye look upon me as a teacher, it must needs be expedient that I teach you the consequences of sin.

Behold, my soul abhorreth sin, and my heart delighteth in righteousness; and I will praise the holy name of my God.

Come, my brethren, every one that thirsteth, come ye to the waters; and he that hath no money, come buy and eat; yea, come buy wine and milk without money and without price.

Wherefore, do not spend money for that which is of no worth, nor your labor for that which cannot satisfy. Harken diligently unto me, and remember the words which I have spoken; and come unto the Holy One of Israel, and feast upon that which perisheth not, neither can be corrupted, and let your soul delight in fatness.

Behold, my beloved brethren, remember the words of your God; pray unto him continually by day, and give thanks unto his holy name by night. Let your hearts rejoice.

And behold how great the covenants of the Lord, and how great his condescensions unto the children of men; and because of his greatness, and his grace and mercy, he has promised unto us that our seed shall not utterly be destroyed, according to the flesh, but that he would preserve them; and in future generations they shall become a righteous branch unto the house of Israel.

And now, my brethren, I would speak unto you more; but on the morrow I will declare unto you the remainder of my words. Amen.

## 2 नफी 10

- 1 और अब मैं, याकूब, मेरे प्रिय भाइयों मैं फिर तुम से इस धार्मिक शाखा के विषय में बोलूंगा, जिसके संबंध में मैंने कहा था ।
- 2 क्योंकि देखो, जो प्रतिज्ञाएं प्राप्त की गई हैं वे शरीर के अनुसार प्राप्त हुई हैं; इसलिए, जैसा कि मुझे दिखाया गया है कि हमारे बहुत से बच्चे अविश्वास के कारण शरीर में नष्ट हो जाएंगे, फिर भी, परमेश्वर बहुतों के साथ दयालु रहेगा; और हमारे बच्चे पुनःस्थापित किये जाएंगे, ताकि वे उसके पास आएँ जो उन्हें उनके मुक्तिदाता का सच्चा ज्ञान देगा ।
- 3 इसलिए जैसा कि मैंने तुम से कहा था, यह जरूरी था कि मसीह—क्योंकि पिछली रात स्वर्गदूत ने मुझे कहा था कि यह उसका नाम होगा—यहूदियों के बीच आएगा, उनके बीच जो कि संसार का अधिक दुष्ट भाग है; और वे उसे क्रूस पर चढ़ाएंगे—क्योंकि हमारे परमेश्वर की यही इच्छा है, और कोई पृथ्वी पर अन्य राष्ट्र नहीं होगा जो अपने परमेश्वर को क्रूस पर चढ़ाएगा ।
- 4 क्योंकि यदि इस शक्तिशाली चमत्कार को किसी अन्य राष्ट्र के बीच लाया जाता है तो वे पश्चाताप करेंगे, और जानेंगे कि वह उनका परमेश्वर है ।
- 5 लेकिन दुराचारियों और दुष्टों के कारण, वे यरूशलेम के लोग उस-के विरुद्ध हठी हो जाएंगे, और वह क्रूस पर चढ़ाया जाएगा ।
- 6 इसलिए, उनकी दुष्टता के कारण, विनाश, अकाल, महामारी, और रक्तपात उनके बीच होगा; और वे जो नष्ट नहीं होंगे वे सब राष्ट्रों के बीच बिखेर दिए जाएंगे ।
- 7 लेकिन देखो, प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कहता है: जब वह दिन आएगा जब वह मुझ में विश्वास करने लगेंगे, कि मैं ही मसीह हूँ, तब मैंने उनके पूर्वजों के साथ अनुबंध बनाया है कि वे शरीर में, पृथ्वी पर, अपनी पैतृक संपत्ति वाले प्रदेश में पुनःस्थापित किये जाएंगे ।
- 8 और ऐसा हुआ कि वे अपने लंबे बिखराव के बाद समुद्र के द्वीपों, और पृथ्वी के चारों कोनों से, एकत्रित किये जाएंगे; और उन्हें उनके पैतृक संपत्ति वाले प्रदेश में लाने के कारण, अन्य जातियों के राष्ट्र मेरी नजर में महान होंगे, परमेश्वर इस प्रकार कहता है,

## 2 Nephi 10

And now I, Jacob, speak unto you again, my beloved brethren, concerning this righteous branch of which I have spoken.

For behold, the promises which we have obtained are promises unto us according to the flesh; wherefore, as it has been shown unto me that many of our children shall perish in the flesh because of unbelief, nevertheless, God will be merciful unto many; and our children shall be restored, that they may come to that which will give them the true knowledge of their Redeemer.

Wherefore, as I said unto you, it must needs be expedient that Christ—for in the last night the angel spake unto me that this should be his name—should come among the Jews, among those who are the more wicked part of the world; and they shall crucify him—for thus it behooveth our God, and there is none other nation on earth that would crucify their God.

For should the mighty miracles be wrought among other nations they would repent, and know that he be their God.

But because of priestcrafts and iniquities, they at Jerusalem will stiffen their necks against him, that he be crucified.

Wherefore, because of their iniquities, destructions, famines, pestilences, and bloodshed shall come upon them; and they who shall not be destroyed shall be scattered among all nations.

But behold, thus saith the Lord God: When the day cometh that they shall believe in me, that I am Christ, then have I covenanted with their fathers that they shall be restored in the flesh, upon the earth, unto the lands of their inheritance.

And it shall come to pass that they shall be gathered in from their long dispersion, from the isles of the sea, and from the four parts of the earth; and the nations of the Gentiles shall be great in the eyes of me, saith God, in carrying them forth to the lands of their inheritance.

- 9 हां, अन्यजातियों के राजा तेरी देखभाल करने वाले पिता और उनकी रानियां तेरी दुध पिलाने वाली माता होंगी; इसलिए, अन्यजातियों के लिए प्रभु की प्रतिज्ञाएं महान हैं, क्योंकि उसने उन्हें कहा है, और कौन इस पर विवाद कर सकता है ?
- 10 लेकिन देखो, यह प्रदेश, परमेश्वर कहता है, तुम्हारा पैतृक संपत्ति वाला प्रदेश होगा, और अन्यजातियां इस प्रदेश पर आशीषित होंगी ।
- 11 और यह प्रदेश अन्यजातियों के लिए स्वतंत्रता का प्रदेश होगा, और इस प्रदेश में कोई राजा नहीं होगा, जो अन्यजातियों के बीच राज करेगा ।
- 12 और मैं इस प्रदेश को अन्य सभी राष्ट्रों से सुरक्षित रखूंगा ।
- 13 और परमेश्वर कहता है, जो सिय्योन से लड़ेगा वह नष्ट हो जाएगा ।
- 14 क्योंकि वह जो कोई मेरे विरुद्ध राजा खड़ा करेगा वह नष्ट हो जाएगा, क्योंकि मैं, प्रभु, स्वर्ग का राजा, उनका राजा होऊंगा, और मैं उनके लिए हमेशा प्रकाश बनूंगा, जो मेरे वचनों को सुनेंगे ।
- 15 इसलिए, इस कारण से, कि मेरे अनुबंध पूरे हों जो मैंने मानव संतान के साथ बनाए हैं, कि वे शरीर में रहते हुए उन्हें निभाएं, मैं अवश्य ही अंधकार के गुप्त कार्यों, और हत्या, और घृणित कार्यों को नष्ट करूंगा ।
- 16 इसलिए, वह जो सिय्योन से लड़ते हैं, यहूदी और अन्यजातियां दोनों, गुलाम और स्वतंत्र दोनों, पुरुष और स्त्री दोनों, नष्ट हो जाएंगे; क्योंकि वे वह हैं जो पूरी पृथ्वी के वेश्या है; क्योंकि वे जो मेरे साथ नहीं हैं वे मेरे विरुद्ध हैं, हमारा परमेश्वर कहता है ।
- 17 क्योंकि मैं अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करूंगा जो मैंने मानव संतान के साथ बनाई हैं, कि मैं उन्हें उनके मानव शरीर में रहते हुए ही करूंगा—
- 18 इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों, परमेश्वर इस प्रकार कहता है: मैं तुम्हारे वंश को अन्यजाति के हाथों कष्ट पहुंचाऊंगा; फिर भी, मैं अन्यजातियों के हृदयों को कोमल कर दूंगा, कि वे उनके पिता समान होंगे; इसलिए, अन्यजातियां आशीषित होंगी और इस्राएल के घराने में गिनी जाएंगी।

Yea, the kings of the Gentiles shall be nursing fathers unto them, and their queens shall become nursing mothers; wherefore, the promises of the Lord are great unto the Gentiles, for he hath spoken it, and who can dispute?

But behold, this land, said God, shall be a land of thine inheritance, and the Gentiles shall be blessed upon the land.

And this land shall be a land of liberty unto the Gentiles, and there shall be no kings upon the land, who shall raise up unto the Gentiles.

And I will fortify this land against all other nations.

And he that fighteth against Zion shall perish, saith God.

For he that raiseth up a king against me shall perish, for I, the Lord, the king of heaven, will be their king, and I will be a light unto them forever, that hear my words.

Wherefore, for this cause, that my covenants may be fulfilled which I have made unto the children of men, that I will do unto them while they are in the flesh, I must needs destroy the secret works of darkness, and of murders, and of abominations.

Wherefore, he that fighteth against Zion, both Jew and Gentile, both bond and free, both male and female, shall perish; for they are they who are the whore of all the earth; for they who are not for me are against me, saith our God.

For I will fulfil my promises which I have made unto the children of men, that I will do unto them while they are in the flesh—

Wherefore, my beloved brethren, thus saith our God: I will afflict thy seed by the hand of the Gentiles; nevertheless, I will soften the hearts of the Gentiles, that they shall be like unto a father to them; wherefore, the Gentiles shall be blessed and numbered among the house of Israel.

- 19 इसलिए, मैं तुम्हारे वंश और वे जो तुम्हारे वंश में गिने जाएंगे, उनके लिए इस प्रदेश को सर्वदा उनके पैतृक संपत्ति वाले प्रदेश के रूप में समर्पित करूंगा; क्योंकि परमेश्वर मुझ से कहता है कि यह अन्य सभी प्रदेशों में श्रेष्ठ है, इसलिए मैं चाहता हूँ कि इसमें रहने वाले सभी मनुष्य मेरी आराधना करें, परमेश्वर कहता है ।
- 20 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, यह देखते हुए कि हमारे दयालु परमेश्वर ने हमें इन बातों के संबंध में इतना अधिक ज्ञान दिया है, आओ हम उसे याद करें, और अपने पापों को अलग रख दें, और अपने सिरों को नीचे न झुकने दें, क्योंकि हमें बाहर नहीं निकाला गया है; वरन हमें एक उत्तम प्रदेश में लाया गया है, क्योंकि प्रभु ने समुद्र में हमारे लिए मार्ग बनाया, और हम समुद्र के एक द्वीप पर हैं ।
- 21 लेकिन प्रभु के प्रतिज्ञाएं उनके लिए महान हैं जो समुद्र के द्वीपों पर हैं; इसलिए जैसा यह कहता है द्वीपों, अवश्य ही इस से अधिक हैं, और उन पर भी हमारे भाई रहते हैं ।
- 22 क्योंकि देखो, प्रभु परमेश्वर ने अपनी इच्छा और आनंद के अनुसार समय-समय पर इस्राएल के घराने को दूर ले गया है । और अब देखो, प्रभु उन सभी को याद करता है जो अलग कर दिए गए हैं, क्योंकि वह हमें भी याद करता है ।
- 23 इसलिए, अपने हृदयों में खुशी मनाओ और याद करो कि तुम अपने स्वयं के प्रति कार्य करने के लिए—हमेशा की मृत्यु या अनंत जीवन का मार्ग चुनने के लिए, स्वतंत्र हो ।
- 24 इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों, अपने आपको परमेश्वर की इच्छा के अनुकूल बनाओ, और शैतान और शरीर की इच्छा के लिए नहीं; और याद रखो, जब तुम परमेश्वर के अनुकूल बन जाते हो, तब तुम केवल परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा ही बचाए जाओगे ।
- 25 इसलिए, परमेश्वर तुम्हें पुनरुत्थान की शक्ति के द्वारा मृत्यु, और प्रायश्चित की शक्ति के द्वारा अनंत मृत्यु से भी जीवित करे, ताकि तुम्हारा परमेश्वर के अनंत राज्य में स्वागत किया जाए, ताकि तुम दिव्य अनुग्रह द्वारा उसकी प्रशंसा करो । आमीन ।

Wherefore, I will consecrate this land unto thy seed, and them who shall be numbered among thy seed, forever, for the land of their inheritance; for it is a choice land, saith God unto me, above all other lands, wherefore I will have all men that dwell thereon that they shall worship me, saith God.

And now, my beloved brethren, seeing that our merciful God has given us so great knowledge concerning these things, let us remember him, and lay aside our sins, and not hang down our heads, for we are not cast off; nevertheless, we have been driven out of the land of our inheritance; but we have been led to a better land, for the Lord has made the sea our path, and we are upon an isle of the sea.

But great are the promises of the Lord unto them who are upon the isles of the sea; wherefore as it says isles, there must needs be more than this, and they are inhabited also by our brethren.

For behold, the Lord God has led away from time to time from the house of Israel, according to his will and pleasure. And now behold, the Lord remembereth all them who have been broken off, wherefore he remembereth us also.

Therefore, cheer up your hearts, and remember that ye are free to act for yourselves—to choose the way of everlasting death or the way of eternal life.

Wherefore, my beloved brethren, reconcile yourselves to the will of God, and not to the will of the devil and the flesh; and remember, after ye are reconciled unto God, that it is only in and through the grace of God that ye are saved.

Wherefore, may God raise you from death by the power of the resurrection, and also from everlasting death by the power of the atonement, that ye may be received into the eternal kingdom of God, that ye may praise him through grace divine. Amen.

## 2 नफी 11

- 1 और अब, याकूब ने उस समय मेरे लोगों से बहुत सी बातें कही; फिर भी केवल इन्हीं बातों का लिखने का अधिकार मुझे दिया गया, क्योंकि जो बातें मैंने लिखी वे मेरे लिए पर्याप्त हैं ।
- 2 और अब, मैं, नफी, अधिकतर यशायाह के वचनों को लिखूंगा, क्योंकि मेरी आत्मा उसके वचनों में आनंदित होती है । क्योंकि उसके वचनों को मैं अपने लोगों पर लागू करूंगा, और मैं इन्हें अपने सभी बच्चों को भेजूंगा, क्योंकि उसने सचमुच में मेरे मुक्तिदाता को देखा है, जैसा कि मैं उसे देखता हूँ ।
- 3 और मेरे भाई, याकूब, ने भी उसे वैसे ही देखा है जैसे मैं उसे देखता हूँ; इसलिए, मैं उनके वचनों को यह साबित करने के लिए अपने बच्चों को भेजूंगा कि मेरे वचन सच्चे हैं । इसलिए, परमेश्वर ने कहा है कि तीन लोगों की गवाहियों के द्वारा मैं अपना वचन स्थापित करूंगा । फिर भी, परमेश्वर और गवाह भेजेगा, और वह अपने सभी वचनों को साबित करेगा ।
- 4 देखो, अपने लोगों को मसीह के आने की सच्चाई को साबित करने में मेरी आत्मा आनंदित होती है; क्योंकि इसी लक्ष्य के लिए मूसा की व्यवस्था दी गई है; और संसार के आरंभ से जो बातें परमेश्वर की ओर से मनुष्यों को दी गई हैं, उसका प्रतिनिधित्व करती हैं ।
- 5 और मेरी आत्मा प्रभु के अनुबंधों में भी आनंदित होती है जिसे उसने हमारे पूर्वजों के साथ बनाया था; हां, मेरी आत्मा उसके अनुग्रह और उसके न्याय, शक्ति में, और मृत्यु से छुटकारे की महान और अनंत योजना की दया में आनंदित होती है ।
- 6 और मेरी आत्मा मेरे लोगों को यह साबित करने में आनंदित होती है कि यदि मसीह नहीं आया तो सभी मनुष्य नष्ट हो जाएंगे ।
- 7 क्योंकि यदि कोई मसीह नहीं होता तो कोई परमेश्वर भी नहीं होता; और यदि कोई परमेश्वर नहीं होता तो हम भी नहीं होते, क्योंकि कोई सृष्टि न होती । लेकिन परमेश्वर है, और वह मसीह है, और वह अपने समय की परिपूर्णता में आएगा ।
- 8 और अब मैं यशायाह के कुछ वचनों को लिखूंगा, ताकि मेरे लोगों में से जो भी इन वचनों को देखेगा खुश होकर सभी मनुष्यों के लिए आनंद मनाएंगे । अब ये वे वचन हैं, और तुम इन्हें अपने और सभी मनुष्यों पर लागू करोगे ।

## 2 Nephi 11

And now, Jacob spake many more things to my people at that time; nevertheless only these things have I caused to be written, for the things which I have written sufficeth me.

And now I, Nephi, write more of the words of Isaiah, for my soul delighteth in his words. For I will liken his words unto my people, and I will send them forth unto all my children, for he verily saw my Redeemer, even as I have seen him.

And my brother, Jacob, also has seen him as I have seen him; wherefore, I will send their words forth unto my children to prove unto them that my words are true. Wherefore, by the words of three, God hath said, I will establish my word. Nevertheless, God sendeth more witnesses, and he proveth all his words.

Behold, my soul delighteth in proving unto my people the truth of the coming of Christ; for, for this end hath the law of Moses been given; and all things which have been given of God from the beginning of the world, unto man, are the typifying of him.

And also my soul delighteth in the covenants of the Lord which he hath made to our fathers; yea, my soul delighteth in his grace, and in his justice, and power, and mercy in the great and eternal plan of deliverance from death.

And my soul delighteth in proving unto my people that save Christ should come all men must perish.

For if there be no Christ there be no God; and if there be no God we are not, for there could have been no creation. But there is a God, and he is Christ, and he cometh in the fulness of his own time.

And now I write some of the words of Isaiah, that whoso of my people shall see these words may lift up their hearts and rejoice for all men. Now these are the words, and ye may liken them unto you and unto all men.

## 2 नफी 12

- 1 आमोस के पुत्र यशायाह का वचन, जो उस ने यहूदा और यरूशलेम के संबंध में देखा था ।
- 2 और अंत के दिनों में ऐसा होगा कि प्रभु के भवन को पहाड़ों की चोटी पर स्थापित किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा; और सब राष्ट्र उसकी ओर आएंगे ।
- 3 और बहुत लोग आएंगे, और कहेंगे: आओ, हम प्रभु के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं; और वह हमें अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके मार्गों पर चलेंगे । क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा ।
- 4 और वह राष्ट्रों का न्याय करेगा, और बहुत से लोगों को फटकार लगाएगा; और वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे—एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध फिर तलवार न चलाएगा, न ही लोग युद्ध की विद्या सीखेंगे ।
- 5 हे याकूब के घराने, आओ और हम प्रभु के प्रकाश में चलें; हां, आओ, क्योंकि सभी अपने अपने दुष्ट मार्गों में भटक गए हैं ।
- 6 इसलिए, हे प्रभु, तुमने अपने लोग याकूब के घराने को त्याग दिया है, क्योंकि वे पूर्वियों के व्यवहार पर तन मन से चलते और पलिशितियों की तरह टोना करते हैं, और वे परदेशियों से मिलकर खुश होते हैं ।
- 7 उनका प्रदेश चांदी और सोने से भरपूर है, और न ही उनके खजाने का कोई अंत है; उनका प्रदेश घोड़ों से भरपूर है, और न ही उनके रथों का कोई अंत है ।
- 8 उनका प्रदेश मूर्तियों से भरा है; वे अपने हाथों की बनाई वस्तुओं को जिन्हें उन्होंने अपनी उंगलियों से संवारा है, उनकी पूजा करते हैं ।
- 9 और नीच मनुष्य, नहीं झुकता, और महान मनुष्य, अपने आपको दीन नहीं बनाता, इसलिए, उसे क्षमा न कर ।
- 10 हे तुम दुष्टों, चट्टान में घुस जाओ, और मिट्टी में छिप जाओ, क्योंकि प्रभु का भय और उसकी प्रतापी महिमा तुम्हें नष्ट कर देगी ।
- 11 और ऐसा होगा कि मनुष्य की घमंड भरी आखें नीची की जाएंगी और मनुष्यों का घमंड दूर किया जाएगा; और उस दिन केवल प्रभु ही ऊंचे पर विराजमान होगा ।

## 2 Nephi 12

The word that Isaiah, the son of Amoz, saw concerning Judah and Jerusalem:

And it shall come to pass in the last days, when the mountain of the Lord's house shall be established in the top of the mountains, and shall be exalted above the hills, and all nations shall flow unto it.

And many people shall go and say, Come ye, and let us go up to the mountain of the Lord, to the house of the God of Jacob; and he will teach us of his ways, and we will walk in his paths; for out of Zion shall go forth the law, and the word of the Lord from Jerusalem.

And he shall judge among the nations, and shall rebuke many people: and they shall beat their swords into plow-shares, and their spears into pruning-hooks—nation shall not lift up sword against nation, neither shall they learn war any more.

O house of Jacob, come ye and let us walk in the light of the Lord; yea, come, for ye have all gone astray, every one to his wicked ways.

Therefore, O Lord, thou hast forsaken thy people, the house of Jacob, because they be replenished from the east, and hearken unto soothsayers like the Philistines, and they please themselves in the children of strangers.

Their land also is full of silver and gold, neither is there any end of their treasures; their land is also full of horses, neither is there any end of their chariots.

Their land is also full of idols; they worship the work of their own hands, that which their own fingers have made.

And the mean man boweth not down, and the great man humbleth himself not, therefore, forgive him not.

O ye wicked ones, enter into the rock, and hide thee in the dust, for the fear of the Lord and the glory of his majesty shall smite thee.

And it shall come to pass that the lofty looks of man shall be humbled, and the haughtiness of men shall be bowed down, and the Lord alone shall be exalted in that day.

- 12 क्योंकि सेनाओं के प्रभु का दिन सब राष्ट्रों पर, हां, हर एक पर शीघ्र आएगा; हां, घमंडी और अहंकारी पर, और हर एक पर जो ऊंचा उठाया गया है, और वह नीचे झुकाया जाएगा ।
- 13 हां, और प्रभु का दिन लबनोन के सब देवदारों पर आएगा, क्योंकि वे ऊंचे और ऊपर उठाए गए हैं; और बाशान के सब बांज वृक्षों पर आएगा;
- 14 और सब ऊंचे पहाड़ों और सब ऊंची पहाड़ियों पर, और सब राष्ट्रों पर जो ऊपर उठाए गए हैं, और सब लोगों पर;
- 15 और सब ऊंची मीनारों, और सब चारदीवारी पर;
- 16 और समुद्र के सब जहाजों पर, और तर्शीश के सब जहाजों और सब सुंदर चित्रकारी पर वह दिन आएगा ।
- 17 और मनुष्य का अहंकार मिटाया जाएगा, और मनुष्यों का घमंड नीचा किया जाएगा; और उस दिन केवल प्रभु ही ऊंचे पर विराजमान रहेगा ।
- 18 और मूर्तियों को वह पूरी तरह से नष्ट करेगा ।
- 19 और वे प्रभु के भय के कारण चट्टानों की गुफाओं और धरती के बिलों में जा घुसेंगे, क्योंकि प्रभु का भय उन पर आएगा और उसके प्रताप की महिमा उन्हें दंड देगी, जब वह पृथ्वी को कंपित करने के लिए उठेगा ।
- 20 उस दिन लोग अपनी चांदी-सोने की मूर्तियों को जिन्हें उन्होंने दंड-वत करने के लिए बनाया था, छछूंदरों और चमगादड़ों के आगे फेंकेंगे;
- 21 वे चट्टान की दरारों ओर पहाड़ियों के छेदों में घुसेंगे, क्योंकि प्रभु का भय उन पर आएगा और उसके प्रताप की महिमा उन्हें दंड देगी, जब वह पृथ्वी को कंपित करने के लिए उठेगा ।
- 22 तुम मनुष्य से दूर रहो, जिसकी सांस उसके नथनों में है, क्योंकि उसका मूल्य है ही क्या ?

For the day of the Lord of Hosts soon cometh upon all nations, yea, upon every one; yea, upon the proud and lofty, and upon every one who is lifted up, and he shall be brought low.

Yea, and the day of the Lord shall come upon all the cedars of Lebanon, for they are high and lifted up; and upon all the oaks of Bashan;

And upon all the high mountains, and upon all the hills, and upon all the nations which are lifted up, and upon every people;

And upon every high tower, and upon every fenced wall;

And upon all the ships of the sea, and upon all the ships of Tarshish, and upon all pleasant pictures.

And the loftiness of man shall be bowed down, and the haughtiness of men shall be made low; and the Lord alone shall be exalted in that day.

And the idols he shall utterly abolish.

And they shall go into the holes of the rocks, and into the caves of the earth, for the fear of the Lord shall come upon them and the glory of his majesty shall smite them, when he ariseth to shake terribly the earth.

In that day a man shall cast his idols of silver, and his idols of gold, which he hath made for himself to worship, to the moles and to the bats;

To go into the clefts of the rocks, and into the tops of the ragged rocks, for the fear of the Lord shall come upon them and the majesty of his glory shall smite them, when he ariseth to shake terribly the earth.

Cease ye from man, whose breath is in his nostrils; for wherein is he to be accounted of?

## 2 नफी 13

- 1 क्योंकि सुनो, प्रभु, सेनाओं का प्रभु यरूशलेम और यहूदा का सब प्रकार का सहारा और आधार, अन्न का सारा आधार, और जल का सारा आधार दूर कर देगा—
- 2 और वीर और योद्धा को, न्यायी और भविष्यवक्ता को, भावी वक्ता और वृद्ध को,
- 3 पचास सिपाहियों के सरदार और माननीय पुरुष को, और सलाहकार को और चतुर कारीगर को, और ज्ञानी वक्ता को भी दूर कर देगा ।
- 4 और मैं लड़कों को उनके शासक बना दूंगा, और शिशु उन पर राज करेंगे ।
- 5 और लोग आपस में एक दूसरे पर, और हर एक अपने पड़ोसी पर अंधेरे करेंगे; और जवान वृद्ध जनों से और साधारण लोग माननीय लोगों से असभ्यता का व्यवहार करेंगे ।
- 6 उस समय जब कोई पुरुष अपने पिता के घर में अपने भाई को पकड़कर कहेगा कि तुम्हारे पास वस्त्र है, हमारा शासक हो जा और यह विनाश तुम्हारे हाथों न आए—
- 7 उस दिन वह शपथ खाकर कहेगा, मैं चंगा करने वाला नहीं बनूंगा; क्योंकि मेरे घर में न तो रोटी है और न वस्त्र; मुझे लोगों का शासक न बनाओ ।
- 8 क्योंकि यरूशलेम उजड़ गया और यहूदा गिर गया है; क्योंकि उनकी भाषा और उनके काम प्रभु के विरुद्ध रहे हैं, जो उसकी तेजोमय आंखों के सामने विद्रोह करते हैं ।
- 9 उनके चेहरे भी उनके विरुद्ध साक्षी देते हैं; और सदोमियों की तरह अपने पाप का ढिंडोरा पीटते हैं, और वे इसे नहीं छिपाते हैं । उनकी आत्मा पर हाय, क्योंकि उन्होंने अपने आप को बुराई का फल दिया है !
- 10 धर्मियों से कहो कि उनका भला होगा, क्योंकि वे अपने कामों का फल प्राप्त करेंगे ।
- 11 दुष्टों पर हाय, क्योंकि वे नष्ट किये जाएंगे; क्योंकि उनके कामों का फल उन्हें मिलेगा !
- 12 और मेरे लोगों पर, बच्चे अंधेरे करते हैं, और स्त्रियां उन पर शासन करती हैं । हे मेरे लोगों, तुम्हारे मार्गदर्शक तुम्हें भटकाते हैं, और तुम्हारे चलने के मार्गों को मिटा देते हैं ।
- 13 प्रभु अपने लोगों का मुकदमा लड़ने, और उनका न्याय करने के लिए खड़ा है ।

## 2 Nephi 13

For behold, the Lord, the Lord of Hosts, doth take away from Jerusalem, and from Judah, the stay and the staff, the whole staff of bread, and the whole stay of water—

The mighty man, and the man of war, the judge, and the prophet, and the prudent, and the ancient;

The captain of fifty, and the honorable man, and the counselor, and the cunning artificer, and the eloquent orator.

And I will give children unto them to be their princes, and babes shall rule over them.

And the people shall be oppressed, every one by another, and every one by his neighbor; the child shall behave himself proudly against the ancient, and the base against the honorable.

When a man shall take hold of his brother of the house of his father, and shall say: Thou hast clothing, be thou our ruler, and let not this ruin come under thy hand—

In that day shall he swear, saying: I will not be a healer; for in my house there is neither bread nor clothing; make me not a ruler of the people.

For Jerusalem is ruined, and Judah is fallen, because their tongues and their doings have been against the Lord, to provoke the eyes of his glory.

The show of their countenance doth witness against them, and doth declare their sin to be even as Sodom, and they cannot hide it. Wo unto their souls, for they have rewarded evil unto themselves!

Say unto the righteous that it is well with them; for they shall eat the fruit of their doings.

Wo unto the wicked, for they shall perish; for the reward of their hands shall be upon them!

And my people, children are their oppressors, and women rule over them. O my people, they who lead thee cause thee to err and destroy the way of thy paths.

The Lord standeth up to plead, and standeth to judge the people.



- 14 प्रभु अपने लोगों के वृद्ध और शासकों के साथ यह विवाद करता है, तुम ही ने बारी की दाख खा डाली है, और दीन लोगों का धन लूटकर तुम ने अपने घरों में रखा है ।
- 15 तुम क्या समझते हो ? तुम मेरे लोगों को कुचलते और दीन लोगों को पीस डालते हो; सेनाओं का प्रभु परमेश्वर कहता है ।
- 16 फिर भी, प्रभु कहता है: क्योंकि सिय्योन की बेटियां घमंड करती और सिर ऊंचे किये आंखें मटकाली और घुंघरूओं को छमछमाती हुई ठुमुक ठुमुक कर चलती हैं—
- 17 इसलिए प्रभु परमेश्वर उनके सिर को गंजा करेगा, और उनके तन को उघारेगा ।
- 18 उस दिन प्रभु उनके घुंघरूओं, और जालियों, और चंद्रहारों के दिखावे को ले जाएगा;
- 19 झुमकों, और कड़ों, और घुंघटों;
- 20 पगड़ियों, और पैरों के आभूषण, और पटुकों, और सुगंधपात्रों, और कान की बालियों;
- 21 अंगूठियों, और नाक की बालियां;
- 22 सुंदर वस्त्रों, और कुर्तियों, और चदरों, और बटुओं;
- 23 दर्पणों, और मलमल के वस्त्रों, और कनटोपों, और दुपट्टों ।
- 24 और ऐसा होगा, सुगंध की बजाय गंध, और सुंदर कर्घनी के बजाए बंधन की रस्सी, और गुंथें हुए बालों के बजाए गंजापन, सुंदर पटुके के बजाए टाट की पेटी, और सुंदरता के बजाए दाग होंगे ।
- 25 तुम्हारे पुरुष तलवार से और शूरवीर युद्ध में मारे जाएंगे ।
- 26 और उसके फाटकों में सिसकियां और विलाप होगा; और वह उजाड़ हो जाएगी, और भूमि पर बैठी रहेगी ।

The Lord will enter into judgment with the ancients of his people and the princes thereof; for ye have eaten up the vineyard and the spoil of the poor in your houses.

What mean ye? Ye beat my people to pieces, and grind the faces of the poor, saith the Lord God of Hosts.

Moreover, the Lord saith: Because the daughters of Zion are haughty, and walk with stretched-forth necks and wanton eyes, walking and mincing as they go, and making a tinkling with their feet—

Therefore the Lord will smite with a scab the crown of the head of the daughters of Zion, and the Lord will discover their secret parts.

In that day the Lord will take away the bravery of their tinkling ornaments, and caul, and round tires like the moon;

The chains and the bracelets, and the mufflers;

The bonnets, and the ornaments of the legs, and the headbands, and the tablets, and the ear-rings;

The rings, and nose jewels;

The changeable suits of apparel, and the mantles, and the wimples, and the crisping-pins;

The glasses, and the fine linen, and hoods, and the veils.

And it shall come to pass, instead of sweet smell there shall be stink; and instead of a girdle, a rent; and instead of well set hair, baldness; and instead of a stomacher, a girding of sackcloth; burning instead of beauty.

Thy men shall fall by the sword and thy mighty in the war.

And her gates shall lament and mourn; and she shall be desolate, and shall sit upon the ground.

## 2 नफी 14

- 1 और उस दिन सात स्त्रियां एक पुरुष को पकड़कर कहेंगी कि रोटी तो हम अपनी ही खाएंगी, और वस्त्र अपने ही पहनेंगी, केवल हम तेरी कहलाएंगे; हम केवल तुम्हारे नाम से बुलाई जाएं ताकि हमारी बदनामी न हो ।
- 2 उस दिन प्रभु की शाखा सुंदर और महिमापूर्ण होगी; पृथ्वी के फल उनके लिए उत्तम और मनोरम होंगे जो इस्राएल से बच गए हैं ।
- 3 और ऐसा होगा कि, जो कोई सिय्योन में बचा रहे, और यरूशलेम में रहे, अर्थात् यरूशलेम में जितनों के नाम जीवनपत्र में लिखें हों, वे पवित्र कहलाएंगे—
- 4 जब यहोवा सिय्योन की बेटियों के गंध को धो देगा, और न्याय की आत्मा और भस्म करने वाली आत्मा के द्वारा उनके मध्य से यरूशलेम के लहू को मिटा देगा ।
- 5 और तब प्रभु सिय्योन पर्वत के प्रत्येक घर के ऊपर, और उसके सभाघरों के ऊपर, दिन को तो धुएं का बादल, और रात को धधकती आग समस्त सिय्योन के वैभव के ऊपर एक मंडप होकर छायी रहेगी ।
- 6 और उस दिन को गर्मी से बचाने के लिए मंडप और तूफान और बारिश में एक शरण और आड़ होगा ।

## 2 Nephi 14

And in that day, seven women shall take hold of one man, saying: We will eat our own bread, and wear our own apparel; only let us be called by thy name to take away our reproach.

In that day shall the branch of the Lord be beautiful and glorious; the fruit of the earth excellent and comely to them that are escaped of Israel.

And it shall come to pass, they that are left in Zion and remain in Jerusalem shall be called holy, every one that is written among the living in Jerusalem—

When the Lord shall have washed away the filth of the daughters of Zion, and shall have purged the blood of Jerusalem from the midst thereof by the spirit of judgment and by the spirit of burning.

And the Lord will create upon every dwelling-place of mount Zion, and upon her assemblies, a cloud and smoke by day and the shining of a flaming fire by night; for upon all the glory of Zion shall be a defence.

And there shall be a tabernacle for a shadow in the daytime from the heat, and for a place of refuge, and a covert from storm and from rain.

## 2 नफी 15

- 1 और तब मैं अपने प्रिय के लिए और उसकी दाख की बारी के विषय में गीत गाऊंगा: एक अति उपजाऊ टीले पर मेरे प्रिय की एक दाख की बारी है ।
- 2 और उसने उसकी चारदीवारी की, और उसके पत्थर बीनकर उस में उत्तम जाति की एक दाखलता लगाई; उसके बीच में उस ने एक मीनार बनाई, और मदिरा के लिए एक कुंड भी बनाया; और उसने दाख की आशा की, लेकिन उसमें जंगली दाखें ही लगीं ।
- 3 और अब हे यरूशलेम के निवासियों, और हे यहूदा के पुरुषों, मैं तुम से प्रार्थना करता हूँ, मेरे और मेरी दाख की बारी के बीच न्याय करो ।
- 4 मेरी दाख की बारी के लिए और क्या करना रह गया जो मैंने उसके लिए न किया हो ? फिर क्या कारण है कि जब मैंने दाख की आशा की तब उसमें जंगली दाखें लगीं ?
- 5 और अब मैं तुम को बताता हूँ कि अपनी दाख की बारी से क्या करूंगा—मैं उसके कांटे वाले बाड़े को उखाड़ दूंगा कि वह खा ली जाए, और उसकी दीवार को गिरा दूंगा, और वह रौंदी जाएगी;
- 6 और मैं उसे उजाड़ दूंगा; वह न तो फिर छांटी और न खोदी जाएगी और उसमें भांति भांति के कटीले पेड़ उगेंगे; मैं मेघों को भी आज्ञा दूंगा कि उस पर जल न बरसाएं ।
- 7 क्योंकि सेनाओं के प्रभु की दाख की बारी इस्राएल का घराना है, और उसका मनभावन पौधा यहूदा के पुरुष, हैं; और उसने उनमें न्याय की आशा की परन्तु अन्याय दिखाई दिया; उसने धर्म की आशा की, परन्तु उसे चिल्लाहट ही सुनाई पड़ी ।
- 8 हाय उन पर जो घर से घर, और खेत से खेत यहां तक मिलाते जाते हैं कि कुछ स्थान नहीं बचता, कि तुम पृथ्वी के बीच में अकेले रह जाओ !
- 9 सेनाओं के प्रभु ने मेरे कानों में कहा है: निश्चय बहुत से घर सुनसान हो जाएंगे, और बड़े बड़े और सुंदर शहर उजाड़ हो जाएंगे ।
- 10 हां, दस बीघे की दाख की बारी से एक ही बत मदिरा मिलेगी, और होमेर भर के बीज से एक ही एपाह अन्न उत्पन्न होगा ।
- 11 हाय उन पर जो बड़े तड़के उठकर मदिरा पीने लगते हैं और बड़ी रात तक मदिरा पीते रहते हैं जब तक उनको गर्मी न चढ़ जाए !

## 2 Nephi 15

And then will I sing to my well-beloved a song of my beloved, touching his vineyard. My well-beloved hath a vineyard in a very fruitful hill.

And he fenced it, and gathered out the stones thereof, and planted it with the choicest vine, and built a tower in the midst of it, and also made a wine-press therein; and he looked that it should bring forth grapes, and it brought forth wild grapes.

And now, O inhabitants of Jerusalem, and men of Judah, judge, I pray you, betwixt me and my vineyard.

What could have been done more to my vineyard that I have not done in it? Wherefore, when I looked that it should bring forth grapes it brought forth wild grapes.

And now go to; I will tell you what I will do to my vineyard—I will take away the hedge thereof, and it shall be eaten up; and I will break down the wall thereof, and it shall be trodden down;

And I will lay it waste; it shall not be pruned nor digged; but there shall come up briars and thorns; I will also command the clouds that they rain no rain upon it.

For the vineyard of the Lord of Hosts is the house of Israel, and the men of Judah his pleasant plant; and he looked for judgment, and behold, oppression; for righteousness, but behold, a cry.

Wo unto them that join house to house, till there can be no place, that they may be placed alone in the midst of the earth!

In mine ears, said the Lord of Hosts, of a truth many houses shall be desolate, and great and fair cities without inhabitant.

Yea, ten acres of vineyard shall yield one bath, and the seed of a homer shall yield an ephah.

Wo unto them that rise up early in the morning, that they may follow strong drink, that continue until night, and wine inflame them!

- 12 और उनकी जेवनारों में वीणा, सारंगी, डफ, बांसुरी, और मदिरा, ये सब पाए जाते हैं; परन्तु वे प्रभु के कार्य की ओर दृष्टि नहीं करते, और उसके हाथों के काम को नहीं देखते ।
- 13 इसलिए, अज्ञानता के कारण मेरे लोग गुलाम बन जाते हैं, उसके प्रतिष्ठित पुरुष भूखों मरते, और साधारण लोग प्यास से व्याकूल होते हैं ।
- 14 इसलिए, अधोलोक ने अत्यंत लालसा करके अपना मुंह अत्याधिक खोला है, और उनकी महिमा, और भीड़-भाड़, और उनकी धूम-धाम, और वह जो आनंद मनाता है, सब उसके मुंह में जा गिरेंगे ।
- 15 और आम मनुष्य दबाए जाते और बड़े मनुष्य नीचे किये जाते हैं, और अहंकारियों की आंखें नीची की जाती हैं ।
- 16 परन्तु सेनाओं का प्रभु न्याय करने के कारण महान ठहरता, और पवित्र परमेश्वर धर्मी होने के कारण पवित्र ठहरता है ।
- 17 तब भेड़ों के बच्चे मानो अपने खेत में चरेंगे, परन्तु हष्टपुष्टों के उजड़े स्थान परदेसियों को चराई के लिए मिलेंगे ।
- 18 हाय उन पर जो अधर्म को अनर्थ की रस्सियों से और पाप को मानो गाड़ी की रस्सी से खींच ले आते हैं;
- 19 जो कहते हैं, वह फूर्ती करे और अपने काम को शीघ्र करे कि हम उसको देखें; और इस्राएल के पवित्र की सलाह प्रकट हो, वह निकट आए कि हम उसको समझें ।
- 20 हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते, और कड़वे को मीठा और मीठे को कड़वा करके मानते हैं !
- 21 हाय उन पर जो अपनी दृष्टि में ज्ञानी और अपने देखे बुद्धिमान हैं !
- 22 हाय उन पर जो मदिरा पीने में वीर और दाखमधु को तेज बनाने में बहादुर हैं;
- 23 जो घूस लेकर दुष्टों को निर्दोष ठहराते, और धर्मियों से धार्मिकता को छिन लेते हैं !
- 24 इसलिए, जैसे अग्नि की लौ से खूंटी भस्म होती है, और सूखी घास जलकर बैठ जाती है, वैसे ही उनकी जड़ सड़ जाएगी और उनके फूल धूल होकर उड़ जाएंगे; क्योंकि उन्होंने सेनाओं के प्रभु की व्यवस्था को अस्वीकार किया, और इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर के वचन का अपमान किया है ।

And the harp, and the viol, the tabret, and pipe, and wine are in their feasts; but they regard not the work of the Lord, neither consider the operation of his hands.

Therefore, my people are gone into captivity, because they have no knowledge; and their honorable men are famished, and their multitude dried up with thirst.

Therefore, hell hath enlarged herself, and opened her mouth without measure; and their glory, and their multitude, and their pomp, and he that rejoiceth, shall descend into it.

And the mean man shall be brought down, and the mighty man shall be humbled, and the eyes of the lofty shall be humbled.

But the Lord of Hosts shall be exalted in judgment, and God that is holy shall be sanctified in righteousness.

Then shall the lambs feed after their manner, and the waste places of the fat ones shall strangers eat.

Wo unto them that draw iniquity with cords of vanity, and sin as it were with a cart rope;

That say: Let him make speed, hasten his work, that we may see it; and let the counsel of the Holy One of Israel draw nigh and come, that we may know it.

Wo unto them that call evil good, and good evil, that put darkness for light, and light for darkness, that put bitter for sweet, and sweet for bitter!

Wo unto the wise in their own eyes and prudent in their own sight!

Wo unto the mighty to drink wine, and men of strength to mingle strong drink;

Who justify the wicked for reward, and take away the righteousness of the righteous from him!

Therefore, as the fire devoureth the stubble, and the flame consumeth the chaff, their root shall be rottenness, and their blossoms shall go up as dust; because they have cast away the law of the Lord of Hosts, and despised the word of the Holy One of Israel.

- 25 इसलिये, प्रभु का क्रोध अपने लोगों पर भड़का है, और उसने उनके विरुद्ध हाथ बढ़ाकर उनको मारा है; और पहाड़ कांप उठे, और लोगों की लोथें गलियों के बीच कूड़े सी पड़ी हैं। इतने पर भी उसका क्रोध शांत नहीं हुआ, बल्कि उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है।
- 26 और वह दूर दूर के राष्ट्रों के लिए झंडा खड़ा करेगा, और सीटी बजाकर उनको पृथ्वी के छोर से बुलाएगा; और देखो, वे फुर्ती करके वेग से आएंगे; उनमें न कोई थकेगा न ही ठोकर खाएगा।
- 27 कोई न ऊंगेगा या सोयेगा, न किसी का फेंटा खुलेगा, और न ही किसी के जूतों का बंधन नहीं टूटेगा;
- 28 उनके तीर चोखे, और सभी धनुष चढ़े होंगे, और उनके घोड़ों के खुर वज्र के से, और रथों के पहिए बवंडर सरीखे होंगे, वे सिंह के समान गरजेगें।
- 29 वे जवान सिंह के समान गरजेगें; हां, वे गुर्राएंगे, और शिकार को पकड़ेंगे, और उसको ले भागेंगे, और कोई उसे उनसे नहीं छुड़ा सकेगा।
- 30 और उस दिन वे उन पर समुद्र के गर्जन की तरह गरजेगें और यदि कोई प्रदेश की ओर देखे, तो उसे अंधकार और संकट देख पड़ेगा और ज्योति आकाश से छिप जाएगी।

Therefore, is the anger of the Lord kindled against his people, and he hath stretched forth his hand against them, and hath smitten them; and the hills did tremble, and their carcasses were torn in the midst of the streets. For all this his anger is not turned away, but his hand is stretched out still.

And he will lift up an ensign to the nations from far, and will hiss unto them from the end of the earth; and behold, they shall come with speed swiftly; none shall be weary nor stumble among them.

None shall slumber nor sleep; neither shall the girdle of their loins be loosed, nor the latchet of their shoes be broken;

Whose arrows shall be sharp, and all their bows bent, and their horses' hoofs shall be counted like flint, and their wheels like a whirlwind, their roaring like a lion.

They shall roar like young lions; yea, they shall roar, and lay hold of the prey, and shall carry away safe, and none shall deliver.

And in that day they shall roar against them like the roaring of the sea; and if they look unto the land, behold, darkness and sorrow, and the light is darkened in the heavens thereof.

## 2 नफी 16

- 1 जिस वर्ष उज्जिय्याह राजा मरा, मैंने प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर विराजमान देखा; और उसके वस्त्र के घेर से मंदिर भर गया ।
- 2 उससे ऊंचे पर साराप दिखाई दिए; उनके छह छह पंख थे; दो पंखों से वे अपने मुंह को ढांपे थे, और दो से अपने पांवों को, और दो से उड़ रहे थे ।
- 3 और वे एक दूसरे को पुकार पुकार कर कह रहे थे: सेनाओं का प्रभु पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भरपूर है ।
- 4 और पुकारने वाले के शब्द से डेवद्वियों की नेवें डोल उठी, और भवन धुंए से भर गया ।
- 5 तब मैंने कहा: हाय मुझ पर ! मैं नाश हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठ-वाला मनुष्य हूँ, और अशुद्ध होंठवाले लोगों के बीच में रहता हूँ; क्योंकि मैंने सेनाओं के प्रभु, राजा को अपनी आंखों से देखा है ।
- 6 तब एक साराप हाथ में अंगारा लिए हुए, जिसे उस ने चिमटे से वेदी पर उठा लिया था, मेरे पास उड़ कर आया;
- 7 और उसने उससे मेरे मुंह को छूकर कहा: देख, इसने तुम्हारे होंठों को छू लिया है, इसलिए तेरा अधर्म दूर हो गया और तुम्हारे पाप क्षमा हो गए ।
- 8 मैंने प्रभु की आवाज को यह भी कहते सुना: मैं किस को भेंजू, और हमारी ओर से कौन जाएगा ? तब मैंने कहा: मैं यहां हूँ; मुझे भेज ।
- 9 और उसने कहा: जा, और इन लोगों से कह—सुनते ही रहो, परन्तु वे न समझे; और देखते ही रहे, लेकिन वे न समझे ।
- 10 इन लोगों के हृदय को मोटा और उनके कानों को भारी कर, और उनकी आंखों को बंद कर—ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से समझें, और मन फिरावें और चंगे हो जाएं ।
- 11 तब मैंने पूछा: प्रभु कब तक ? उसने कहा: जब तक नगर न उजड़े और उनमें कोई रह न जाए, और घरों में कोई मनुष्य न रह जाए, और प्रदेश उजाड़ और सुनसान हो जाए;
- 12 और प्रभु मनुष्यों को दूर ले गया है, क्योंकि इस प्रदेश के बीच से बहुत से स्थान उजड़ जाएंगे ।

## 2 Nephi 16

In the year that king Uzziah died, I saw also the Lord sitting upon a throne, high and lifted up, and his train filled the temple.

Above it stood the seraphim; each one had six wings; with twain he covered his face, and with twain he covered his feet, and with twain he did fly.

And one cried unto another, and said: Holy, holy, holy, is the Lord of Hosts; the whole earth is full of his glory.

And the posts of the door moved at the voice of him that cried, and the house was filled with smoke.

Then said I: Wo is unto me! for I am undone; because I am a man of unclean lips; and I dwell in the midst of a people of unclean lips; for mine eyes have seen the King, the Lord of Hosts.

Then flew one of the seraphim unto me, having a live coal in his hand, which he had taken with the tongs from off the altar;

And he laid it upon my mouth, and said: Lo, this has touched thy lips; and thine iniquity is taken away, and thy sin purged.

Also I heard the voice of the Lord, saying: Whom shall I send, and who will go for us? Then I said: Here am I; send me.

And he said: Go and tell this people—Hear ye indeed, but they understood not; and see ye indeed, but they perceived not.

Make the heart of this people fat, and make their ears heavy, and shut their eyes—lest they see with their eyes, and hear with their ears, and understand with their heart, and be converted and be healed.

Then said I: Lord, how long? And he said: Until the cities be wasted without inhabitant, and the houses without man, and the land be utterly desolate;

And the Lord have removed men far away, for there shall be a great forsaking in the midst of the land.

13      लेकिन उसके निवासियों का दसवां अंश भी रह जाए, तौभी वह नाश किया जाएगा, परन्तु जैसे छोटे व बड़े बांजवृक्ष को काट डालने पर भी उसका टूठ बना रहता है, वैसे ही पवित्र वंश उसका टूठ ठहरेगा ।

But yet there shall be a tenth, and they shall return, and shall be eaten, as a teil tree, and as an oak whose substance is in them when they cast their leaves; so the holy seed shall be the substance thereof.

## 2 नफी 17

- 1 और ऐसा हुआ कि यहूदा का राजा आहाज जो योताम का पुत्र और उज्जिय्याह का पोता था, उसके दिनों में आराम (सीरिया) के राजा रसीन और इस्राएल के राजा रमल्याह के पुत्र पेकह ने यरूशलेम से लड़ने के लिए चढ़ाई की, लेकिन इसके विरुद्ध जीत न सका।
- 2 और दाऊद के घराने को कहा गया: अरामियों ने एप्रैमियों से संधि की है। और उसका और उसके लोगों का हृदय ऐसे कांप उठा, जैसे वन के वृक्ष वायु चलने से कांप जाते हैं।
- 3 तब प्रभु ने यशायाह से कहा: अपने पुत्र शार्याशूब को लेकर धोबी के खेत की सड़क से ऊपर पोखरे की नाली के सिरे पर आहाज से भेंट करने के लिए जा;
- 4 और उससे कह: सावधान और शांत हो; और उन दोनों धुआं निकलती लुकटियों से अर्थात् रसीन और अरामियों के भड़के हुए कोप से, और रमल्याह के पुत्र से मत डर, और न तेरा मन कच्चा हो।
- 5 क्योंकि अरामियों और रमल्याह के पुत्र सहित एप्रैमियों ने यह कहकर तुम्हारे विरुद्ध बुरी चाल चली है:
- 6 आओ हम यहूदा पर चढ़ाई करें और उसे घबरा दें, और हम उनमें अपने लिए दरार डाल देंगे, और उनके बीच एक राजा नियुक्त कर देंगे, हां, ताबेल का बेटा।
- 7 प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कहता है: यह चाल न तो सफल होगी और न पूरी।
- 8 क्योंकि आराम का सिर दमिश्क, और दमिश्क का सिर रसीन है; और पैंसठ वर्ष के भीतर एप्रैम इतना टूट जाएगा कि लोग बने न रहेंगे।
- 9 और एप्रैम का सिर शोमरोन, और शोमरोन का सिर रमल्याह का पुत्र है। यदि तुम लोग विश्वास न करो तो निश्चय ही तुम स्थापित न हो पाओगे।
- 10 और आगे, प्रभु ने आहाज से कहा:
- 11 तू प्रभु अपने परमेश्वर से कोई चिन्ह मांग; चाहे वह गहरे स्थान का हो, या ऊपर आसमान का हो।
- 12 लेकिन आहाज ने कहा: मैं नहीं मांगूंगा, न ही मैं प्रभु की परीक्षा लूंगा।
- 13 और उसने कहा: अब तुम सुनो, हे दाऊद के घराने; क्या तुम्हारे लिए मनुष्यों को उकता देना छोटी बात है, जो तुम अब मेरे परमेश्वर को भी उकता रहे हो ?

## 2 Nephi 17

And it came to pass in the days of Ahaz the son of Jotham, the son of Uzziah, king of Judah, that Rezin, king of Syria, and Pekah the son of Remaliah, king of Israel, went up toward Jerusalem to war against it, but could not prevail against it.

And it was told the house of David, saying: Syria is confederate with Ephraim. And his heart was moved, and the heart of his people, as the trees of the wood are moved with the wind.

Then said the Lord unto Isaiah: Go forth now to meet Ahaz, thou and Shearjashub thy son, at the end of the conduit of the upper pool in the highway of the fuller's field;

And say unto him: Take heed, and be quiet; fear not, neither be faint-hearted for the two tails of these smoking firebrands, for the fierce anger of Rezin with Syria, and of the son of Remaliah.

Because Syria, Ephraim, and the son of Remaliah, have taken evil counsel against thee, saying:

Let us go up against Judah and vex it, and let us make a breach therein for us, and set a king in the midst of it, yea, the son of Tabeal.

Thus saith the Lord God: It shall not stand, neither shall it come to pass.

For the head of Syria is Damascus, and the head of Damascus, Rezin; and within threescore and five years shall Ephraim be broken that it be not a people.

And the head of Ephraim is Samaria, and the head of Samaria is Remaliah's son. If ye will not believe surely ye shall not be established.

Moreover, the Lord spake again unto Ahaz, saying:

Ask thee a sign of the Lord thy God; ask it either in the depths, or in the heights above.

But Ahaz said: I will not ask, neither will I tempt the Lord.

And he said: Hear ye now, O house of David; is it a small thing for you to weary men, but will ye weary my God also?



- 14 इसलिए, प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा—देखो, एक कुवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मनूएल रखेगी ।
- 15 वह मक्खन और मधु खाएगा, ताकि वह बुराई को अस्वीकार करना और भलाई को स्वीकार करना जान सके ।
- 16 क्योंकि इससे पहले कि वह बालक बुराई को अस्वीकार करना और भलाई को स्वीकार करना जाने, वह प्रदेश जिसके दोनों राजाओं से तुम घबरा रहे हो उसे त्याग देंगे ।
- 17 प्रभु तुम पर, तुम्हारे लोगों पर और तुम्हारे पिता के घराने पर ऐसे दिनों को ले आएगा कि जब से एप्रैम यहूदा से अलग हो गया, तब से वैसे दिन कभी नहीं आए—अर्थात् अशूर के राजा के दिन ।
- 18 और उस समय प्रभु उन मक्खियों को जो मिस्र की नदियों के सिरो पर रहती हैं, और उन मधुमक्खियों को जो अशूर प्रदेश में रहती हैं, सीटी बजाकर बुलाएगा ।
- 19 और वे सब की सब आकर इस प्रदेश के पहाड़ों नालों में, और चट्टानों की दरारों में, और सब कंटीली झाड़ियों, और सब चराइयों पर बैठ जाएंगी ।
- 20 उसी दिन प्रभु नदी के पारवाले अशूर के राजारूपी भाड़े के छूरे से सिर और पांवों के रोएं मूडेगा, उससे दाढ़ी भी पूरी मूंड जाएगी ।
- 21 और उस दिन ऐसा होगा कि मनुष्य केवल एक बछिया और दो भेड़ों को पालेगा;
- 22 और ऐसा होगा कि वे इतना दूध देंगी कि वह मक्खन खाया करेगा; क्योंकि जितने इस प्रदेश में रह जाएंगे वे सब मक्खन और मधु खाया करेंगे ।
- 23 और ऐसा होगा कि उस समय जिन जिन स्थानों में हजार टुकड़े चांदी की हजार दाखलताएं हैं, उन सब स्थानों में कंटीली झाड़ियां होंगी ।
- 24 तीर और धनुष लेकर पुरुष, वहां जाया करेंगे, क्योंकि सारे प्रदेश में कंटीली झाड़ियां हो जाएंगी ।
- 25 और जितने पहाड़ कुदाल से खोदे जाते हैं, उन सभी पर कंटीली झाड़ियों के डर के मारे कोई न जाएगा, वे गाएं बैलों के चरने के, और भेड़ बकरियों के रौंदने के लिए होंगी ।

Therefore, the Lord himself shall give you a sign—Behold, a virgin shall conceive, and shall bear a son, and shall call his name Immanuel.

Butter and honey shall he eat, that he may know to refuse the evil and to choose the good.

For before the child shall know to refuse the evil and choose the good, the land that thou abhorrest shall be forsaken of both her kings.

The Lord shall bring upon thee, and upon thy people, and upon thy father's house, days that have not come from the day that Ephraim departed from Judah, the king of Assyria.

And it shall come to pass in that day that the Lord shall hiss for the fly that is in the uttermost part of Egypt, and for the bee that is in the land of Assyria.

And they shall come, and shall rest all of them in the desolate valleys, and in the holes of the rocks, and upon all thorns, and upon all bushes.

In the same day shall the Lord shave with a razor that is hired, by them beyond the river, by the king of Assyria, the head, and the hair of the feet; and it shall also consume the beard.

And it shall come to pass in that day, a man shall nourish a young cow and two sheep;

And it shall come to pass, for the abundance of milk they shall give he shall eat butter; for butter and honey shall every one eat that is left in the land.

And it shall come to pass in that day, every place shall be, where there were a thousand vines at a thousand silverlings, which shall be for briers and thorns.

With arrows and with bows shall men come thither, because all the land shall become briers and thorns.

And all hills that shall be digged with the mattock, there shall not come thither the fear of briers and thorns; but it shall be for the sending forth of oxen, and the treading of lesser cattle.

## 2 नफी 18

- 1 और आगे, प्रभु के वचन ने मुझसे कहा: एक बड़ी पटिया ले, और उस पर साधारण भाषा में लिख, महेशालाल्हाशबज के बारे में ।
- 2 और मैं विश्वासयोग्य पुरुषों को अर्थात् ऊरिय्याह याजक, और जे-बेरेक्याह के पुत्र जकर्याह को इस बात की साक्षी करूंगा ।
- 3 और मैं अपनी पत्नी के पास गया, और वह गर्भवती हुई और उस-के पुत्र उत्पन्न हुआ । तब प्रभु ने मुझसे कहा, उसका नाम महेशालाल्हाशबज रख ।
- 4 क्योंकि देखो, इससे पहले कि वह बालक मेरे पिता और मेरी मां पुकारना जाने, दमिश्क और शोमरोन दोनों की धन-संपत्ति लूटकर अशशूर का राजा अपने प्रदेश को भेजेगा ।
- 5 प्रभु ने फिर मुझसे दूसरी बार कहा:
- 6 इसलिए कि लोग शीलोह के धीरे धीरे बहने वाले सोते को अस्वीकार करते हैं, और रसीन और रमल्याह के बेटे के संग आनंदित रहते हैं;
- 7 अब इसलिए सुनो, प्रभु उन पर उस प्रबल और गहिरि नदी को, अर्थात् अशशूर के राजा को उसके सारे प्रताप के साथ चढ़ा जाएगा; और वह उनके सब नालों को भर देगा और सारे किनारों से छलककर बहेगा ।
- 8 और वह यहूदा पर चढ़ आएगा, और बढ़ते बढ़ते उस पर चढ़ेगा और गले तक पहुंचेगा; और हे इम्मनूएल, तेरा समस्त प्रदेश उसके पंखों के फैलने से ढक जाएगा ।
- 9 हे लोगों, हल्ला करो तो करो, परन्तु तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा । हे पृथ्वी के दूर दूर प्रदेश के सब लोगों कान लगाकर सुनो, अपनी अपनी कमर कसो तो कसो, परन्तु तुम्हारे टुकड़े टुकड़े किये जाएंगे; अपनी कमर कसो तो कसो, परन्तु तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा ।
- 10 तुम मिलकर सलाह करो तो करो, परन्तु वह निष्फल हो जाएगी, तुम कुछ भी कहो, परन्तु तुम्हारा कहा हुआ ठहरेगा नहीं, क्योंकि परमेश्वर हमारे संग है ।
- 11 क्योंकि प्रभु दृढ़ता के साथ मुझ से बोला, और इन लोगों की सी चल चलने को मुझे मना किया,
- 12 और कहा, जिस बात को यह लोग राजद्रोह कहें, उसको तुम राजद्रोह न कहना, और जिस बात से वे डरते हैं उससे तुम न डरना और न भय खाना ।

## 2 Nephi 18

Moreover, the word of the Lord said unto me: Take thee a great roll, and write in it with a man's pen, concerning Maher-shalal-hash-baz.

And I took unto me faithful witnesses to record, Uriah the priest, and Zechariah the son of Jeberechiah.

And I went unto the prophetess; and she conceived and bare a son. Then said the Lord to me: Call his name, Maher-shalal-hash-baz.

For behold, the child shall not have knowledge to cry, My father, and my mother, before the riches of Damascus and the spoil of Samaria shall be taken away before the king of Assyria.

The Lord spake also unto me again, saying:

Forasmuch as this people refuseth the waters of Shiloah that go softly, and rejoice in Rezin and Remaliah's son;

Now therefore, behold, the Lord bringeth up upon them the waters of the river, strong and many, even the king of Assyria and all his glory; and he shall come up over all his channels, and go over all his banks.

And he shall pass through Judah; he shall overflow and go over, he shall reach even to the neck; and the stretching out of his wings shall fill the breadth of thy land, O Immanuel.

Associate yourselves, O ye people, and ye shall be broken in pieces; and give ear all ye of far countries; gird yourselves, and ye shall be broken in pieces; gird yourselves, and ye shall be broken in pieces.

Take counsel together, and it shall come to naught; speak the word, and it shall not stand; for God is with us.

For the Lord spake thus to me with a strong hand, and instructed me that I should not walk in the way of this people, saying:

Say ye not, A confederacy, to all to whom this people shall say, A confederacy; neither fear ye their fear, nor be afraid.

- 13 सेनाओं के प्रभु ही को पवित्र जानना; और उसे अपना भय होने दो, और उसे अपना डर होने दो ।
- 14 और वह शरणस्थान होगा, परन्तु इस्राएल के दोनों घरानों के लिए ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान, और यरूशलेम के निवासियों के लिए फंदा और जाल होगा ।
- 15 और बहुत से लोग ठोकर खाएंगे; वे गिरेंगे और चकनाचूर होंगे; वे फंदे में फंसेंगे और पकड़े जाएंगे ।
- 16 इस गवाही को बांध दो, और मेरे चेलों के बीच इस व्यवस्था को मुहरबंद कर दो ।
- 17 और मैं उस प्रभु की बात जोहता रहूंगा, जो अपने मुख को याकूब के घराने से छिपाए है, और मैं उसी पर आशा लगाए रहूंगा ।
- 18 देखो, मैं और जो बच्चे प्रभु ने मुझे सौंपे हैं, उसी सेनाओं के प्रभु की ओर से जो सिय्योन पर्वत पर निवास किये रहता है, इस्राएलियों के लिए चिन्ह और चमत्कार हैं ।
- 19 और जब लोग तुम से कहें कि ओझाओं और टोन्हों के पास जाकर पूछो जो गुनगुनाते और फुसफुसाते हैं—तब तुम यह कहना कि क्या लोगों को अपने परमेश्वर ही के पास जाकर न पूछना चाहिए ? क्या जीवतों के लिए मुर्दों से पूछना चाहिए ?
- 20 व्यवस्था और गवाही की चर्चा किया करो; और यदि वे लोग इन वचनों के अनुसार न बोलें, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि उनमें ज्योति नहीं है ।
- 21 और वे इस प्रदेश में क्लेशित और भूखे फिरते रहेंगे; और ऐसा होगा कि जब वे भूखे होंगे, तब वे क्रोध में आकर अपने राजा और अपने परमेश्वर को शाप देंगे, और अपना मुख ऊपर आकाश की ओर उठाएंगे ।
- 22 और वे पृथ्वी की ओर देखेंगे और चिंता दिखाई देगी, और अंधकार, दुख का धुंधलापन, और अंधकार में धकेल दिए जाएंगे ।
- Sanctify the Lord of Hosts himself, and let him be your fear, and let him be your dread.
- And he shall be for a sanctuary; but for a stone of stumbling, and for a rock of offense to both the houses of Israel, for a gin and a snare to the inhabitants of Jerusalem.
- And many among them shall stumble and fall, and be broken, and be snared, and be taken.
- Bind up the testimony, seal the law among my disciples.
- And I will wait upon the Lord, that hideth his face from the house of Jacob, and I will look for him.
- Behold, I and the children whom the Lord hath given me are for signs and for wonders in Israel from the Lord of Hosts, which dwelleth in Mount Zion.
- And when they shall say unto you: Seek unto them that have familiar spirits, and unto wizards that peep and mutter—should not a people seek unto their God for the living to hear from the dead?
- To the law and to the testimony; and if they speak not according to this word, it is because there is no light in them.
- And they shall pass through it hardly bestead and hungry; and it shall come to pass that when they shall be hungry, they shall fret themselves, and curse their king and their God, and look upward.
- And they shall look unto the earth and behold trouble, and darkness, dimness of anguish, and shall be driven to darkness.

## 2 नफी 19

- 1 फिर भी, अंधकार वैसा न होगा जैसा उसकी नाराजगी में था, जब पहले उसने जबूलून के प्रदेश और नप्ताली के प्रदेश का कम अपमान किया, और बाद में लाल समुद्र की ओर यरदन के पार गलील के राष्ट्रों में अधिक कष्टदायक ढंग से अपमान किया ।
- 2 जो लोग अंधियारे में चल रहे थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा; और जो लोग घोर अंधकार से भरे हुए मृत्यु के प्रदेश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी ।
- 3 तुमने राष्ट्र को बढ़ाया, तुमने उसको बहुत आनंद दिया; वे तेरे सामने कटनी के समय का सा आनंद करते हैं, और ऐसे आनंदित हैं जैसे मनुष्य लूट बांटने के समय आनंदित रहते हैं ।
- 4 क्योंकि तुमने उसके जूए के भार, और उसकी कंधे के बांस, उस पर अंधरे करने वाले की लाठी, को तोड़ दिया है ।
- 5 क्योंकि युद्ध में लड़ने वाले सिपाहियों के जूते और लहू में लिपटे हुए कपड़े सब आग का कौर हो जाएंगे ।
- 6 क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कंधे पर होगी, और उसका नाम अदभुत, सलाहकार, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, अनंतकाल का पिता, और शांति का राजकुमार रखा जाएगा ।
- 7 उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शांति का अंत न होगा, इसलिए वह दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किये और संभाले रहेगा । सेनाओं के प्रभु के जोश के द्वारा यह हो जाएगा ।
- 8 प्रभु ने याकूब के पास एक संदेश भेजा है, और वह इस्राएल पर प्रकट हुआ है ।
- 9 और सब लोगों को, एप्रैमियों और शोमरोनवासियों को मालूम हो जाएगा जो गर्व और कठोरता से बोलते हैं:
- 10 ईंटें तो गिर गई हैं, लेकिन हम गढ़ें हुए पत्थरों से घर बनाएंगे; गूलर के वृक्ष तो कट गए हैं, परन्तु हम उनके बदले देवदारों से काम लेंगे ।
- 11 इसलिए प्रभु रसीन के बैरियों को उसके विरुद्ध करेगा, और उसके शत्रुओं को एक करेगा;
- 12 आगे से आराम को और पीछे से पलिशितियों को लाएगा; और वे मुंह खोलकर इस्राएलियों को निगल लेंगे । क्योंकि इतने पर भी उसका क्रोध शांत नहीं हुआ, और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है ।

## 2 Nephi 19

Nevertheless, the dimness shall not be such as was in her vexation, when at first he lightly afflicted the land of Zebulun, and the land of Naphtali, and afterwards did more grievously afflict by the way of the Red Sea beyond Jordan in Galilee of the nations.

The people that walked in darkness have seen a great light; they that dwell in the land of the shadow of death, upon them hath the light shined.

Thou hast multiplied the nation, and increased the joy—they joy before thee according to the joy in harvest, and as men rejoice when they divide the spoil.

For thou hast broken the yoke of his burden, and the staff of his shoulder, the rod of his oppressor.

For every battle of the warrior is with confused noise, and garments rolled in blood; but this shall be with burning and fuel of fire.

For unto us a child is born, unto us a son is given; and the government shall be upon his shoulder; and his name shall be called, Wonderful, Counselor, The Mighty God, The Everlasting Father, The Prince of Peace.

Of the increase of government and peace there is no end, upon the throne of David, and upon his kingdom to order it, and to establish it with judgment and with justice from henceforth, even forever. The zeal of the Lord of Hosts will perform this.

The Lord sent his word unto Jacob and it hath lighted upon Israel.

And all the people shall know, even Ephraim and the inhabitants of Samaria, that say in the pride and stoutness of heart:

The bricks are fallen down, but we will build with hewn stones; the sycamores are cut down, but we will change them into cedars.

Therefore the Lord shall set up the adversaries of Rezin against him, and join his enemies together;

The Syrians before and the Philistines behind; and they shall devour Israel with open mouth. For all this his anger is not turned away, but his hand is stretched out still.

- 13 क्योंकि ये लोग अपने मारने वाले की ओर नहीं फिरे, और न ही वे सेनाओं के प्रभु की खोज करते हैं ।
- 14 इसलिए प्रभु इस्राएल में से सिर और पूंछ को, खजूर की डालियों और सरकंडे को, एक ही दिन में काट डालेगा ।
- 15 प्रतिष्ठित पुरुष, उसके सिर हैं; और झूठी बातें सीखाने वाले भविष्यवक्ता, उसकी पूंछ हैं ।
- 16 क्योंकि जो उन लोगों का मार्गदर्शन करते हैं वे इनको भटका देते हैं; और जिनका मार्गदर्शन होता है वे नाश हो जाते हैं ।
- 17 इसलिए प्रभु न तो इनके जवानों से प्रसन्न होगा, और न इनके अनाथ बालकों और विधवाओं पर दया करेगा; क्योंकि वे सब ढोंगी और बुराई करने वाले हैं, और हर एक के मुख से मूर्खता की बातें निकलती हैं । क्योंकि इतने पर भी उसका क्रोध शांत नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है ।
- 18 क्योंकि दुष्टता आग की तरह धधकती है, वह ऊंटकटारों और कांटों को भस्म करती है, वरन वह घने वन की झाड़ियों में आग लगाती है और वह धुंए में चकरा चकराकर ऊपर की ओर उठती है ।
- 19 सेनाओं के प्रभु के रोष के मारे यह प्रदेश जलाया गया है, और ये लोग आग की ईंधन के समान हैं; कोई भी मनुष्य अपने भाई पर दया नहीं करेगा ।
- 20 और वे दहिनी ओर से भोजनवस्तु छीनकर भी भूखे रहते, और बायें ओर से खाकर भी तृप्त नहीं होते; उनमें से प्रत्येक मनुष्य अपनी अपनी बांहों का मांस खाता है—
- 21 मनश्शे एप्रैम को और एप्रैम मनश्शे को खाता है, और वे दोनों मिलकर यहूदा के विरुद्ध हैं । क्योंकि इतने पर भी उसका क्रोध शांत नहीं हुआ, और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है ।

For the people turneth not unto him that smiteth them, neither do they seek the Lord of Hosts.

Therefore will the Lord cut off from Israel head and tail, branch and rush in one day.

The ancient, he is the head; and the prophet that teacheth lies, he is the tail.

For the leaders of this people cause them to err; and they that are led of them are destroyed.

Therefore the Lord shall have no joy in their young men, neither shall have mercy on their fatherless and widows; for every one of them is a hypocrite and an evildoer, and every mouth speaketh folly. For all this his anger is not turned away, but his hand is stretched out still.

For wickedness burneth as the fire; it shall devour the briars and thorns, and shall kindle in the thickets of the forests, and they shall mount up like the lifting up of smoke.

Through the wrath of the Lord of Hosts is the land darkened, and the people shall be as the fuel of the fire; no man shall spare his brother.

And he shall snatch on the right hand and be hungry; and he shall eat on the left hand and they shall not be satisfied; they shall eat every man the flesh of his own arm—

Manasseh, Ephraim; and Ephraim, Manasseh; they together shall be against Judah. For all this his anger is not turned away, but his hand is stretched out still.

## 2 नफी 20

- 1 हाय उन पर जो दुष्टता से न्याय करते, और उन पर जो अन्याय करने की आज्ञा लिख देते हैं;
- 2 कि वे जरूरतमंदों का न्याय बिगाड़ें और मेरे लोगों में से गरीबों का हक मारें, कि वे विधवाओं को लूटें, और अनाथों को लूट लें !
- 3 और तुम दंड के दिन और उस विनाश के दिन जो दूर से आएगा क्या करोगे ? तुम सहायता के लिए किसके पास भाग कर जाओगे ? और तुम अपनी महिमा को कहां रख छोड़ोगे ?
- 4 मेरे बिना वे केवल कैदियों के पैरों के पास गिर पड़ेंगे, और मरे हुएों के नीचे दबे पड़े रहेंगे । इतने पर भी उसका क्रोध शांत नहीं हुआ, लेकिन उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है ।
- 5 अशूर पर हाय, जो मेरे क्रोध की छड़ी, और मेरे हाथ का सोंटा है, वह मेरा क्रोध है ।
- 6 मैं उसको कपटी राष्ट्र के विरुद्ध भेजूंगा, और जिन लोगों पर मेरा रोष भड़का है उनके विरुद्ध उसको आज्ञा दूंगा कि छीना झपटी करे और लूट ले, और उनको गलियों की कीच के समान लताड़े ।
- 7 लेकिन उसकी ऐसी मनसा न होगी, न उसके मन में ऐसा विचार है; क्योंकि उसके मन में यही है कि मैं बहुत सी जातियों का नाश और अंत कर डालूं ।
- 8 क्योंकि वह कहता है: क्या मेरे राजकुमार राजा के तुल्य नहीं हैं ?
- 9 क्या कलनो कर्कमीश के समान नहीं है ? क्या हमात अर्पद के समान नहीं ? और शोमरोन दमिश्क के जैसा नहीं ?
- 10 जिस प्रकार मेरा हाथ मूर्तियों से भरे हुए उन राज्यों पर पहुंचा, और जिनकी मूर्तियां यरूशलेम और शोमरोन की मूर्तियों से सर्वश्रेष्ठ थीं;
- 11 क्या जैसा मैंने शोमरोन और उसकी मूर्तियों के साथ किया है, उसी प्रकार मैं यरूशलेम से और उसकी मूर्तियों से भी न करूं ?
- 12 इसलिए जब प्रभु सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में अपना सब काम कर चुकेगा, तब मैं अशूर के राजा के गर्व की बातों का, और उसकी घमंड भरी आंखों का पलटा दूंगा ।
- 13 उसने कहा है, अपने ही बाहुबल और बुद्धि से मैं ने यह काम किया है, क्योंकि मैं चतुर हूं; और मैंने लोगों की सीमाओं को हटा दिया, और उनके धन को लूट लिया; और मैंने वीर की तरह निवासियों को गद्दी से उतार दिया है;

## 2 Nephi 20

Wo unto them that decree unrighteous decrees, and that write grievousness which they have prescribed;

To turn away the needy from judgment, and to take away the right from the poor of my people, that widows may be their prey, and that they may rob the fatherless!

And what will ye do in the day of visitation, and in the desolation which shall come from far? to whom will ye flee for help? and where will ye leave your glory?

Without me they shall bow down under the prisoners, and they shall fall under the slain. For all this his anger is not turned away, but his hand is stretched out still.

O Assyrian, the rod of mine anger, and the staff in their hand is their indignation.

I will send him against a hypocritical nation, and against the people of my wrath will I give him a charge to take the spoil, and to take the prey, and to tread them down like the mire of the streets.

Howbeit he meaneth not so, neither doth his heart think so; but in his heart it is to destroy and cut off nations not a few.

For he saith: Are not my princes altogether kings?

Is not Calno as Carchemish? Is not Hamath as Arpad? Is not Samaria as Damascus?

As my hand hath founded the kingdoms of the idols, and whose graven images did excel them of Jerusalem and of Samaria;

Shall I not, as I have done unto Samaria and her idols, so do to Jerusalem and to her idols?

Wherefore it shall come to pass that when the Lord hath performed his whole work upon Mount Zion and upon Jerusalem, I will punish the fruit of the stout heart of the king of Assyria, and the glory of his high looks.

For he saith: By the strength of my hand and by my wisdom I have done these things; for I am prudent; and I have moved the borders of the people, and have robbed their treasures, and I have put down the inhabitants like a valiant man;

- 14 और लोगों की धनसंपत्ति, चिड़ियों के घोंसलों की तरह, मेरे हाथ आई है, और जैसे कोई छोड़े हुए अंडों को बटोर ले वैसे ही मैंने सारी पृथ्वी को बटोर लिया है; और कोई पंख फड़फड़ाने या चोंच खोलने या चीं चीं करने वाला न था ।
- 15 क्या कुल्हाड़ा उसके विरुद्ध जो उससे काटता हो डींग मारेगा ? आरी उसके विरुद्ध जो उसे खींचता हो बड़ाई करेगी ? क्या अपने चलानेवाले पर चलती, या क्या लाठी उस पर उठती है जो लकड़ी नहीं है !
- 16 इसलिए प्रभु अर्थात् सेनाओं का प्रभु उस राजा के हृष्टपुष्ट योद्धाओं को दुबला कर देगा, और उसके ऐश्वर्य के नीचे आग की सी जलन होगी ।
- 17 और इस्राएल की ज्योति तो आग ठहरेगी, और इस्राएल का पवित्र ज्वाला ठहरेगा; और वह उसके झाड़ झंखाड़ को एक ही दिन में भस्म करेगा ।
- 18 और जैसे रोगी के क्षीण हो जाने पर उसकी दशा होती है वैसे ही वह उसके वन और फलदाई बारी की शोभा पूरी रीति से नाश करेगा ।
- 19 और उस वन के वृक्ष इतने थोड़े रह जाएंगे कि एक बालक भी उनको गिन कर लिख लेगा ।
- 20 और उस दिन ऐसा होगा इस्राएल के बचे हुए लोग और याकूब के घराने के भागे हुए, अपने मारने वाले पर फिर कभी भरोसा न रखेंगे, लेकिन प्रभु, जो इस्राएल का एकमेव पवित्र परमेश्वर है, उसी पर वे सच्चाई से भरोसा रखेंगे ।
- 21 याकूब में से बचे हुए लोग पराक्रमी परमेश्वर की ओर फिरेंगे ।
- 22 क्योंकि हे इस्राएल, चाहे तेरे लोग समुद्र की रेत के समान भी बहुत हों, तौभी निश्चय है कि उनमें से केवल बचे लोग ही लौटेंगे सत्यानाश तो पूरे न्याय के साथ किया जाएगा ।
- 23 क्योंकि प्रभु सेनाओं के परमेश्वर ने सारे प्रदेश का सत्यानाश कर देना ठाना है ।
- 24 इसलिए सेनाओं का प्रभु परमेश्वर यों कहता है: हे सिय्योन में रहने वाले मेरे लोगों, अशशूर से मत डरो; चाहे वह सोंटों से तुम्हें मारे और मिस्र के समान तुम्हारे ऊपर छड़ी उठाएंगे ।
- 25 क्योंकि अब थोड़ी ही देर है कि मेरी जलन और क्रोध उनका सत्यानाश करके शांत होगा ।

And my hand hath found as a nest the riches of the people; and as one gathereth eggs that are left have I gathered all the earth; and there was none that moved the wing, or opened the mouth, or peeped.

Shall the ax boast itself against him that heweth therewith? Shall the saw magnify itself against him that shaketh it? As if the rod should shake itself against them that lift it up, or as if the staff should lift up itself as if it were no wood!

Therefore shall the Lord, the Lord of Hosts, send among his fat ones, leanness; and under his glory he shall kindle a burning like the burning of a fire.

And the light of Israel shall be for a fire, and his Holy One for a flame, and shall burn and shall devour his thorns and his briars in one day;

And shall consume the glory of his forest, and of his fruitful field, both soul and body; and they shall be as when a standard-bearer fainteth.

And the rest of the trees of his forest shall be few, that a child may write them.

And it shall come to pass in that day, that the remnant of Israel, and such as are escaped of the house of Jacob, shall no more again stay upon him that smote them, but shall stay upon the Lord, the Holy One of Israel, in truth.

The remnant shall return, yea, even the remnant of Jacob, unto the mighty God.

For though thy people Israel be as the sand of the sea, yet a remnant of them shall return; the consumption decreed shall overflow with righteousness.

For the Lord God of Hosts shall make a consumption, even determined in all the land.

Therefore, thus saith the Lord God of Hosts: O my people that dwellest in Zion, be not afraid of the Assyrian; he shall smite thee with a rod, and shall lift up his staff against thee, after the manner of Egypt.

For yet a very little while, and the indignation shall cease, and mine anger in their destruction.

- 26 और सेनाओं का प्रभु उसके विरुद्ध कोड़ा उठाकर उसको ऐसा मारेगा जैसा उसने ओरेब नाम चट्टान पर मिद्यानियों को मारा था; और जैसा उसने मिस्रियों के विरुद्ध लाठी बढ़ाई, वैसा ही उसकी ओर भी बढ़ाएगा ।
- 27 और ऐसा होगा कि उस दिन उसका बोझ तेरे कंधे पर से और उसका जूआ तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा, और अभिषेक के कारण वह जूआ तोड़ डाला जाएगा ।
- 28 वह अय्यात में आया है, और मिग्रोन में से होकर आगे बढ़ गया है; मिकमाश में उसने अपना सामान रखा है ।
- 29 वे घाटी से पार हो गए, उन्होंने गेबा में रात काटी; रामा थराथरा उठा है, शाऊल का गिबा भाग निकला है ।
- 30 हे गल्लीम की बेटी, चिल्ला; हे लैशा के लोगों कान लगाओ, हाय बेचारा अनातोत ।
- 31 मदमेना भागा फिरता है गेबीम के निवासी भागने के लिए अपना अपना समान इकट्ठा कर रहे हैं ।
- 32 आज ही के दिन वह नोब में टिकेगा; तब वह सिय्योन पहाड़ पर, और यरूशलेम की पहाड़ों पर हाथ उठाकर धमकाएगा ।
- 33 देखो, प्रभु, सेनाओं का प्रभु पेड़ों को भयानक रूप से छांट डालेगा; ऊंचे ऊंचे वृक्ष काटे जाएंगे, और जो ऊंचे हैं सो नीचे किये जाएंगे ।
- 34 और वह घने वन को लोहे से काट डालेगा और लबानोन एक प्रतापी के हाथ से नाश किया जाएगा ।

And the Lord of Hosts shall stir up a scourge for him according to the slaughter of Midian at the rock of Oreb; and as his rod was upon the sea so shall he lift it up after the manner of Egypt.

And it shall come to pass in that day that his burden shall be taken away from off thy shoulder, and his yoke from off thy neck, and the yoke shall be destroyed because of the anointing.

He is come to Aiath, he is passed to Migron; at Michmash he hath laid up his carriages.

They are gone over the passage; they have taken up their lodging at Geba; Ramath is afraid; Gibeah of Saul is fled.

Lift up the voice, O daughter of Gallim; cause it to be heard unto Laish, O poor Anathoth.

Madmenah is removed; the inhabitants of Gebim gather themselves to flee.

As yet shall he remain at Nob that day; he shall shake his hand against the mount of the daughter of Zion, the hill of Jerusalem.

Behold, the Lord, the Lord of Hosts shall lop the bough with terror; and the high ones of stature shall be hewn down; and the haughty shall be humbled.

And he shall cut down the thickets of the forests with iron, and Lebanon shall fall by a mighty one.



## 2 नफी 21

- 1 और यिशै के ठूठ में से एक डाली फूट निकलेगी, और उसकी जड़ में से एक शाखा निकलकर फलवंत होगी ।
- 2 और प्रभु की आत्मा बुद्धि और समझ की आत्मा, सलाह और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और प्रभु के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी;
- 3 और प्रभु के भय में सहजता से ज्ञान प्राप्त करेगा; और वह मुंह देखा न्याय न करेगा, और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा ।
- 4 लेकिन वह गरीबों का न्याय धर्म से, और पृथ्वी के नम्र लोगों का निर्णय निष्पक्षता से करेगा; और वह पृथ्वी को अपने वचन के सोंटे से मारेगा, और अपने फूंक के झोंके से दुष्ट को मिटा डालेगा ।
- 5 और धार्मिकता और सत्यनिष्ठता उसकी कमर के बंद के समान होंगे ।
- 6 तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा रहेगा, और बछड़ा और जवान सिंह और पाला पोसा हुआ बैल तीनों इकट्ठा रहेंगे, और एक छोटा बालक उनकी अगुवाई करेगा ।
- 7 गाय और रीछनी मिलकर चरेंगी, और उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे; और सिंह बैल की तरह भूसा खाया करेगा ।
- 8 और दुध पिता बच्चा करैत के बिल पर खेलेगा, और दूध छुड़ाया हुआ बालक नाग के बिल में हाथ डालेगा ।
- 9 वे मेरे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुख देंगे और न हानि करेंगे, क्योंकि पृथ्वी प्रभु के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे जल समुद्र में भरा रहता है ।
- 10 और उस दिन यिशै की जड़ होगी, जो लोगों के लिए एक झंडा होगी; अन्यजाति के लोग उसे ढूंढेंगे; और उसका विश्रामस्थान महिमापूर्ण होगा ।
- 11 और ऐसा होगा कि उस दिन प्रभु अपना हाथ दूसरी बार बढ़ाकर बचे हुए लोगों को, अशशूर से, और मिस्र से, और पत्रोस से, और कुश से, और एलाम से, और शिनार से, और हमात से, और समुद्र के द्वीपों से छुड़ाएगा ।

## 2 Nephi 21

And there shall come forth a rod out of the stem of Jesse, and a branch shall grow out of his roots.

And the Spirit of the Lord shall rest upon him, the spirit of wisdom and understanding, the spirit of counsel and might, the spirit of knowledge and of the fear of the Lord;

And shall make him of quick understanding in the fear of the Lord; and he shall not judge after the sight of his eyes, neither reprove after the hearing of his ears.

But with righteousness shall he judge the poor, and reprove with equity for the meek of the earth; and he shall smite the earth with the rod of his mouth, and with the breath of his lips shall he slay the wicked.

And righteousness shall be the girdle of his loins, and faithfulness the girdle of his reins.

The wolf also shall dwell with the lamb, and the leopard shall lie down with the kid, and the calf and the young lion and fatling together; and a little child shall lead them.

And the cow and the bear shall feed; their young ones shall lie down together; and the lion shall eat straw like the ox.

And the sucking child shall play on the hole of the asp, and the weaned child shall put his hand on the cockatrice's den.

They shall not hurt nor destroy in all my holy mountain, for the earth shall be full of the knowledge of the Lord, as the waters cover the sea.

And in that day there shall be a root of Jesse, which shall stand for an ensign of the people; to it shall the Gentiles seek; and his rest shall be glorious.

And it shall come to pass in that day that the Lord shall set his hand again the second time to recover the remnant of his people which shall be left, from Assyria, and from Egypt, and from Pathros, and from Cush, and from Elam, and from Shinar, and from Hamath, and from the islands of the sea.

- 12 वह अन्यजातियों के लिए झंडा खड़ा करके इस्राएल के सब निकाले हुएों को, और यहूदा के सब बिखरे हुएों को पृथ्वी की चारों दिशाओं से इकट्ठा करेगा ।
- 13 एप्रैम फिर डह न करेगा और यहूदा के तंग करने वाले काट डाले जाएंगे; न तो एप्रैम यहूदा से डह करेगा और न यहूदा एप्रैम को तंग करेगा ।
- 14 लेकिन वे पश्चिम की ओर पलिशतियों के कंधे पर झपट्टा मारेंगे; और मिलकर पूर्वियों को लूटेंगे; वे एदोम और मोआब पर हाथ बढ़ाएंगे; और अम्मोन की संतान उनके अधीन हो जाएगी ।
- 15 और प्रभु मिस्र के समुद्र की खाड़ी को सुखा डालेगा; और नदी पर अपना हाथ बढ़ाकर प्रचंड लू से ऐसा सुखाएगा कि वह सात धार हो जाएगा, और मनुष्य जूता पहने हुए भी पार हो जाएंगे ।
- 16 और उसके बचे हुए लोगों के लिए अशूर से एक ऐसा राज-मार्ग होगा जैसा मिस्र प्रदेश से चले आने के समय इस्राएल के लिए हुआ था ।

And he shall set up an ensign for the nations, and shall assemble the outcasts of Israel, and gather together the dispersed of Judah from the four corners of the earth.

The envy of Ephraim also shall depart, and the adversaries of Judah shall be cut off; Ephraim shall not envy Judah, and Judah shall not vex Ephraim.

But they shall fly upon the shoulders of the Philistines towards the west; they shall spoil them of the east together; they shall lay their hand upon Edom and Moab; and the children of Ammon shall obey them.

And the Lord shall utterly destroy the tongue of the Egyptian sea; and with his mighty wind he shall shake his hand over the river, and shall smite it in the seven streams, and make men go over dry shod.

And there shall be a highway for the remnant of his people which shall be left, from Assyria, like as it was to Israel in the day that he came up out of the land of Egypt.

## 2 नफी 22

- 1 और उस दिन तुम कहोगे, हे प्रभु, मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि यद्यपि तू मुझ पर क्रोधित हुआ था, परन्तु अब तेरा क्रोध शांत हुआ, और तुमने मुझे शांति दी है।
- 2 देखो, परमेश्वर मेरा उद्धार है; मैं भरोसा रखूंगा और भयभीत न हूंगा; क्योंकि प्रभु यहोवा मेरा बल और मेरा गीत है; और वह मेरा उद्धारक भी हो गया है।
- 3 इसलिए, तुम आनंदपूर्वक उद्धार के स्रोतों से जल भरोगे।
- 4 और उस दिन तुम कहोगे: प्रभु की प्रशंसा करो, उससे प्रार्थना करो, लोगों के बीच में उसके बड़े कामों का प्रचार करो, और कहो कि उसका नाम उत्कर्ष है।
- 5 प्रभु के भजन गाओ; क्योंकि उसने प्रतापमय काम किये हैं; इसे सारी पृथ्वी पर प्रकट करो।
- 6 हे सिय्योन में बसने वाले लोगों, तुम जयजयकार करो और ऊंचे स्वर से गाओ, क्योंकि इस्राएल का एकमेव पवित्र परमेश्वर तुम में महान है।

## 2 Nephi 22

And in that day thou shalt say: O Lord, I will praise thee; though thou wast angry with me thine anger is turned away, and thou comfortedst me.

Behold, God is my salvation; I will trust, and not be afraid; for the Lord JEHOVAH is my strength and my song; he also has become my salvation.

Therefore, with joy shall ye draw water out of the wells of salvation.

And in that day shall ye say: Praise the Lord, call upon his name, declare his doings among the people, make mention that his name is exalted.

Sing unto the Lord; for he hath done excellent things; this is known in all the earth.

Cry out and shout, thou inhabitant of Zion; for great is the Holy One of Israel in the midst of thee.

## 2 नफी 23

- 1 बाबुल के विषय की भारी भविष्यवाणी जिसको आमोस के पुत्र यशायाह ने दर्शन में पाया ।
- 2 ऊंचे पहाड़ पर एक झंडा खड़ा करो, हाथ से इशारा करो और उन से ऊंचे स्वर में पुकारो कि वे कुलीन व्यक्तियों के फाटकों में प्रवेश करें ।
- 3 मैंने स्वयं अपने पवित्र किये हुआओं को आज्ञा दी है, मैंने अपने क्रोध के लिए अपने वीरों को बुलाया है जो मेरे प्रताप के कारण प्रसन्न हैं ।
- 4 पहाड़ों पर एक बड़ी भीड़ का सा कोलाहल हो रहा है, मानो एक बड़ी फौज की हलचल हो । राष्ट्रों के इकट्ठे किये हुए राज्य हलचल मचा रहे हैं, सेनाओं का प्रभु युद्ध के लिए अपनी सेना इकट्ठा कर रहा है ।
- 5 वे दूर प्रदेश से, आकाश के छोर से आए हैं, हां, प्रभु अपने क्रोध के हथियारों सहित सारे प्रदेश का नाश करने के लिए आया है ।
- 6 हाय-हाय करो, क्योंकि प्रभु का दिन निकट है; वह सर्वशक्तिमान की ओर से मानो सत्यानाश करने के लिए आता है ।
- 7 इसलिए सब के हाथ ढीले पड़ेंगे, प्रत्येक मनुष्य का हृदय पिघल जाएगा;
- 8 और वे घबरा जाएंगे । उनको पीड़ा और शोक होगा; उनको जच्चा की सी पीड़ाएं उठेंगी । वे चकित होकर एक दूसरे को ताकेंगे; उनके चेहरे लाल हो जाएंगे ।
- 9 देखो, प्रभु का वह दिन रोष और क्रोध और निर्दयता के साथ आता है कि वह धरती को उजाड़ डाले और पापियों को उसमें नाश करे ।
- 10 क्योंकि आकाश के तारागण और बड़े बड़े नक्षत्र अपना प्रकाश न देंगे, और सूर्य उदय होते होते अंधेरा हो जाएगा, और चंद्रमा अपना प्रकाश न देगा ।
- 11 और मैं जगत के लोगों को उनकी बुराई के कारण, और दुष्टों को उनके अधर्म का दंड दूंगा; मैं अभिमानियों के अभिमान को नाश करूंगा और उपद्रव करने वालों के घमंड को तोड़ूंगा ।
- 12 मैं मनुष्य को शुद्ध सोने से अधिक मूल्यवान बनाऊंगा; और आदमी को ओपीर के सोने से भी अधिक ।
- 13 इसलिए, मैं आकाश को कंपाऊंगा, और पृथ्वी अपने स्थान से टल जाएगी; यह सेनाओं के प्रभु के रोष के कारण, और उसके भड़के हुए क्रोध के दिन होगा ।

## 2 Nephi 23

The burden of Babylon, which Isaiah the son of Amoz did see.

Lift ye up a banner upon the high mountain, exalt the voice unto them, shake the hand, that they may go into the gates of the nobles.

I have commanded my sanctified ones, I have also called my mighty ones, for mine anger is not upon them that rejoice in my highness.

The noise of the multitude in the mountains like as of a great people, a tumultuous noise of the kingdoms of nations gathered together, the Lord of Hosts mustereth the hosts of the battle.

They come from a far country, from the end of heaven, yea, the Lord, and the weapons of his indignation, to destroy the whole land.

Howl ye, for the day of the Lord is at hand; it shall come as a destruction from the Almighty.

Therefore shall all hands be faint, every man's heart shall melt;

And they shall be afraid; pangs and sorrows shall take hold of them; they shall be amazed one at another; their faces shall be as flames.

Behold, the day of the Lord cometh, cruel both with wrath and fierce anger, to lay the land desolate; and he shall destroy the sinners thereof out of it.

For the stars of heaven and the constellations thereof shall not give their light; the sun shall be darkened in his going forth, and the moon shall not cause her light to shine.

And I will punish the world for evil, and the wicked for their iniquity; I will cause the arrogancy of the proud to cease, and will lay down the haughtiness of the terrible.

I will make a man more precious than fine gold; even a man than the golden wedge of Ophir.

Therefore, I will shake the heavens, and the earth shall remove out of her place, in the wrath of the Lord of Hosts, and in the day of his fierce anger.

- 14 और वे खदेड़े हुए हिरण, और बिन चरवाहे की भेड़ों की तरह अपने अपने लोगों की ओर फिरेंगे; और अपने प्रदेश को भाग जाएंगे ।
- 15 प्रत्येक जो कोई घमंडी होगा भालों से बेधा जाएगा; हां, और प्रत्येक जो दुष्ट के साथ पकड़ा जाएगा, वह तलवार से मार डाला जाएगा ।
- 16 उनकी संतानें उनके सामने पटक दी जाएंगी; उनके घर लूटे जाएंगे और उनकी पत्नियां भ्रष्ट की जाएंगी ।
- 17 देखो, मैं उनके विरुद्ध मादी लोगों को उभाऊंगा, जो न तो चांदी का कुछ विचार करेंगे और न सोने का लालच करेंगे ।
- 18 उनके तीर जवानों को मारेंगे, और वे गर्भ के फल पर कुछ दया न करेंगे; उनकी आंखें बच्चों पर तरस न खाएंगी ।
- 19 और बाबुल जो सब राज्यों का शिरोमणि है, और जिसकी शोभा पर कसदी लोग फूलते हैं, वह ऐसा हो जाएगा जैसे सदोम और अमोरा, जब परमेश्वर ने उन्हें उलट दिया था ।
- 20 वह फिर कभी न बसेगा और पीढ़ी दर पीढ़ी उसमें कोई वास न करेगा: न ही अरबी लोग उसमें तंबू खड़ा करेंगे; और न ही चरवाहे उसमें अपने पशु बैठाएंगे ।
- 21 लेकिन वहां जंगली जानवर बैठेंगे; और उल्लू उनके घरों में भरे रहेंगे; वहीं शतुर्मुख बसेंगे, और छगलमानस वहां नाचेंगे ।
- 22 और द्वीपों के जंगली जानवर उनके घरों में, और उड़ने वाले नाग उनके सुख-विलास के महलों में शोर मचाएंगे; और उसके नाश होने का समय निकट आ गया है, और उसके दिन अब बहुत नहीं रहे । क्योंकि मैं तुरन्त उसका नाश कर दूंगा; हां, क्योंकि मैं अपने लोगों के प्रति दयालु रहूंगा, लेकिन दुष्टों का नाश होगा ।
- And it shall be as the chased roe, and as a sheep that no man taketh up; and they shall every man turn to his own people, and flee every one into his own land.
- Every one that is proud shall be thrust through; yea, and every one that is joined to the wicked shall fall by the sword.
- Their children also shall be dashed to pieces before their eyes; their houses shall be spoiled and their wives ravished.
- Behold, I will stir up the Medes against them, which shall not regard silver and gold, nor shall they delight in it.
- Their bows shall also dash the young men to pieces; and they shall have no pity on the fruit of the womb; their eyes shall not spare children.
- And Babylon, the glory of kingdoms, the beauty of the Chaldees' excellency, shall be as when God overthrew Sodom and Gomorrah.
- It shall never be inhabited, neither shall it be dwelt in from generation to generation: neither shall the Arabian pitch tent there; neither shall the shepherds make their fold there.
- But wild beasts of the desert shall lie there; and their houses shall be full of doleful creatures; and owls shall dwell there, and satyrs shall dance there.
- And the wild beasts of the islands shall cry in their desolate houses, and dragons in their pleasant palaces; and her time is near to come, and her day shall not be prolonged. For I will destroy her speedily; yea, for I will be merciful unto my people, but the wicked shall perish.

## 2 नफी 24

- 1 क्योंकि प्रभु याकूब पर दया करेगा, और इस्राएल को फिर अपना-कर, उन्हीं के प्रदेश में बसाएगा, और परदेशी उनसे मिल जाएंगे और अपने आप को याकूब के घराने से मिला लेंगे ।
- 2 और लोग उन्हें ले जाएंगे और उन्हें उन के स्थान में पहुंचाएंगे; हां, पृथ्वी के दूर छोरों से; और वे अपने प्रतिज्ञा के प्रदेश में वापस लौटेंगे । और इस्राएल का घराना प्रभु की भूमि पर अधिकारी होकर दास और दासियां बनाएगा; और वे उनको बंदी बनाएंगे जिनके वे बंदी थे; और जो उन पर अत्याचार करते थे उन पर वे शासन करेंगे ।
- 3 और ऐसा होगा कि जिस दिन प्रभु तुम्हें तुम्हारे दुख और भय से, और उस कठिन श्रम से जो तुम से करवाया गया था, विश्राम देगा ।
- 4 और उस दिन ऐसा होगा, कि तुम बाबुल के राजा पर ताना मारकर कहोगे: परिश्रम कराने वाला कैसे नाश हो गया है, सुनहरे मंदिरों से भरी नगरी कैसी नाश हो गई है !
- 5 प्रभु ने दुष्टों की लाठी को और अन्याय से शासन करने वालों के राजदंड को तोड़ दिया है ।
- 6 जिससे वे मनुष्यों को लगातार रोष से मारते रहते थे, और राष्ट्रों पर क्रोध से राज करते और लगातार उनके पीछे पड़े रहते थे ।
- 7 संपूर्ण पृथ्वी को विश्राम मिला है, और शांत है; वे ऊंचे स्वर से गा रहे हैं ।
- 8 हां, सनौवर और लबनोन के देवदार भी तुम पर आनंद करके कहते हैं: जब से तुम गिराए गए हो तब से कोई हमें काटने को नहीं आया ।
- 9 पाताल के नीचे नरक में तुम से मिलने के लिए हलचल हो रही है; वह तुम्हारे लिए मुर्दे को अर्थात् पृथ्वी के सब मुखियों को जगाता है, और वह राष्ट्रों के सब राजाओं को उनके सिंहासन पर से उठा खड़ा करता है ।
- 10 वे सब तुम से कहेंगे, क्या तुम भी हमारी तरह निर्बल हो गए हो ? क्या तुम हमारे समान बन गए हो ?
- 11 तुम्हारा वैभव मृत्युलोक में उतार दिया गया; तुम्हारी सारंगियों का शोर सुनाई नहीं देता; कीड़े तुम्हारा बिछौना, और केंचुए तुम्हारा ओढ़ना हैं ।

## 2 Nephi 24

For the Lord will have mercy on Jacob, and will yet choose Israel, and set them in their own land; and the strangers shall be joined with them, and they shall cleave to the house of Jacob.

And the people shall take them and bring them to their place; yea, from far unto the ends of the earth; and they shall return to their lands of promise. And the house of Israel shall possess them, and the land of the Lord shall be for servants and handmaids; and they shall take them captives unto whom they were captives; and they shall rule over their oppressors.

And it shall come to pass in that day that the Lord shall give thee rest, from thy sorrow, and from thy fear, and from the hard bondage wherein thou wast made to serve.

And it shall come to pass in that day, that thou shalt take up this proverb against the king of Babylon, and say: How hath the oppressor ceased, the golden city ceased!

The Lord hath broken the staff of the wicked, the scepters of the rulers.

He who smote the people in wrath with a continual stroke, he that ruled the nations in anger, is persecuted, and none hindereth.

The whole earth is at rest, and is quiet; they break forth into singing.

Yea, the fir trees rejoice at thee, and also the cedars of Lebanon, saying: Since thou art laid down no feller is come up against us.

Hell from beneath is moved for thee to meet thee at thy coming; it stirreth up the dead for thee, even all the chief ones of the earth; it hath raised up from their thrones all the kings of the nations.

All they shall speak and say unto thee: Art thou also become weak as we? Art thou become like unto us?

Thy pomp is brought down to the grave; the noise of thy viols is not heard; the worm is spread under thee, and the worms cover thee.

- 12 हे भोर के चमकनेवाले तारे, लूसीफर, तुम कैसे आकाश से गिर पड़े हो ? तुम जो राष्ट्रों को हरा देते थे, तुम अब कैसे काटकर भूमि पर गिराए गए हो ?
- 13 क्योंकि तुम मन में कहते थे कि मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपने सिंहासन को परमेश्वर के तारागण से अधिक ऊंचा करूंगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर बिराजूंगा;
- 14 मैं मेघों से भी ऊंचे ऊंचे स्थानों के ऊपर चढ़ूंगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा ।
- 15 परन्तु तुम नरक में उस गड्ढे की तह तक उतारे जाओगे ।
- 16 जो तुम्हें देखेंगे तुम को ताकते हुए तुम्हारे विषय में सोच सोचकर कहेंगे, क्या यह वही पुरुष है जो पृथ्वी को चैन से रहने न देता था और राज्यों में घबराहट डाल देता था ?
- 17 और संसार को निर्जन प्रदेश बनाता, और उसके नगरों को नष्ट कर देता था, और अपने बंदियों को घर जाने नहीं देता था ?
- 18 राष्ट्रों के सारे राजा, हां, वे सब, उनमें से प्रत्येक अपने घर में महिमा के साथ आराम से है ।
- 19 लेकिन तुम्हें घृणित शाख की तरह अपनी कब्र में से फेंका गया; तुम उन सारे मारे हुआओं की लोथों से घिरे हो, जो तलवार से बिधकर गड्ढे में पत्थरों के बीच में लताड़ी हुई लोथ के समान पड़ी हैं ।
- 20 तुम उनके साथ कब्र में न गाड़े जाओगे, क्योंकि तुम ने अपने प्रदेश को उजाड़ दिया, और अपने लोगों का घात किया है । कुकर्मियों के वंश का नाम भी कभी न लिया जाएगा ।
- 21 उनके पूर्वजों के अधर्म के कारण उसकी संतान की घात की तैयारी करो, ऐसा न हो कि वे फिर उठकर धरती के अधिकारी हो जाएं, और संसार में बहुत से नगर बसाएं ।
- 22 क्योंकि सेनाओं का प्रभु कहता है, मैं उनके विरुद्ध उठूंगा, और बाबुल का नाम और निशान मिटा डालूंगा, और बेटों, और भतीजों को काट डालूंगा, प्रभु कहता है ।
- 23 मैं उसे सारस का निवास और जल की झीलें बना दूंगा; और मैं उसे सत्यानाश के झाड़ू से झाड़ डालूंगा, सेनाओं का प्रभु कहता है ।
- 24 सेनाओं के प्रभु ने यह शपथ खाई है: निसंदेह जैसा मैंने सोचा है, वैसा ही हो जाएगा, और जैसा मैंने संकल्प किया है, वह पूरा होगा—

How art thou fallen from heaven, O Lucifer, son of the morning! Art thou cut down to the ground, which did weaken the nations!

For thou hast said in thy heart: I will ascend into heaven, I will exalt my throne above the stars of God; I will sit also upon the mount of the congregation, in the sides of the north;

I will ascend above the heights of the clouds; I will be like the Most High.

Yet thou shalt be brought down to hell, to the sides of the pit.

They that see thee shall narrowly look upon thee, and shall consider thee, and shall say: Is this the man that made the earth to tremble, that did shake kingdoms?

And made the world as a wilderness, and destroyed the cities thereof, and opened not the house of his prisoners?

All the kings of the nations, yea, all of them, lie in glory, every one of them in his own house.

But thou art cast out of thy grave like an abominable branch, and the remnant of those that are slain, thrust through with a sword, that go down to the stones of the pit; as a carcass trodden under feet.

Thou shalt not be joined with them in burial, because thou hast destroyed thy land and slain thy people; the seed of evil-doers shall never be renowned.

Prepare slaughter for his children for the iniquities of their fathers, that they do not rise, nor possess the land, nor fill the face of the world with cities.

For I will rise up against them, saith the Lord of Hosts, and cut off from Babylon the name, and remnant, and son, and nephew, saith the Lord.

I will also make it a possession for the bittern, and pools of water; and I will sweep it with the besom of destruction, saith the Lord of Hosts.

The Lord of Hosts hath sworn, saying: Surely as I have thought, so shall it come to pass; and as I have purposed, so shall it stand—

- 25 कि मैं अशूर को अपने ही प्रदेश में लाऊंगा, और अपने पर्वतों पर उसे पैरों तले कुचल डालूंगा; तब उसका जुआ उनकी गर्दनों पर से और उसका बोझ उनके कंधों पर से उतर जाएगा ।
- 26 यही उद्देश्य है जो सारी पृथ्वी के लिए सोचा गया है; और यह वही हाथ है जो सब राष्ट्रों पर बढ़ा हुआ है ।
- 27 क्योंकि सेनाओं के प्रभु ने सोचा है, और कौन उसे रोक सकता है ? और उसका हाथ बढ़ा हुआ है, और कौन उसे पीछे कर सकता है ?
- 28 जिस वर्ष आहाज राजा मरा उसी वर्ष विनाश का संदेश दिया गया था ।
- 29 हे सारे पलिशतीन तुम इसलिए आनंद न करो, क्योंकि तुम्हें मारने वाले की लाठी टूट गई; क्योंकि सांप की जड़ से एक नाग उत्पन्न होगा, और उसका फल एक उड़नेवाला तेज विषवाला अग्नि सांप होगा ।
- 30 और गरीबों के जेठे खाएंगे, और जरूरतमंद निडर बैठने पाएंगे; लेकिन मैं तुम्हारे वंश को भूख से मार डालूंगा, और वह तुम्हारे बचे हुए लोगों को घात करेगा ।
- 31 हे फाटक, हाय हाय कर; हे नगर चिल्ला; हे तू, पलिशतीन सब का सब पिघल जा; क्योंकि उत्तर से एक धुआं उठेगा और उसके निर्धारित समय में कोई भी अकेला न रहेगा ।
- 32 तब राष्ट्रों के दूतों को क्या उत्तर दिया जाएगा ? यह कि प्रभु ने सिय्योन की नींव डाली है, और उसके लोगों के गरीब उसमें भरोसा करेंगे ।
- That I will bring the Assyrian in my land, and upon my mountains tread him under foot; then shall his yoke depart from off them, and his burden depart from off their shoulders.
- This is the purpose that is purposed upon the whole earth; and this is the hand that is stretched out upon all nations.
- For the Lord of Hosts hath purposed, and who shall disannul? And his hand is stretched out, and who shall turn it back?
- In the year that king Ahaz died was this burden.
- Rejoice not thou, whole Palestina, because the rod of him that smote thee is broken; for out of the serpent's root shall come forth a cockatrice, and his fruit shall be a fiery flying serpent.
- And the firstborn of the poor shall feed, and the needy shall lie down in safety; and I will kill thy root with famine, and he shall slay thy remnant.
- Howl, O gate; cry, O city; thou, whole Palestina, art dissolved; for there shall come from the north a smoke, and none shall be alone in his appointed times.
- What shall then answer the messengers of the nations? That the Lord hath founded Zion, and the poor of his people shall trust in it.



## 2 नफी 25

- 1 अब मैं, नफी, जिन बातों को लिख चुका हूँ और जो यशायाह के मुख से निकली थी, उन के संबंध में बोलूंगा। क्योंकि देखो, यशायाह ने बहुत सी ऐसी बातें कही जिसे मेरे बहुत से लोगों के लिए समझना कठिन है; क्योंकि उन्हें नहीं मालूम कि यहूदियों में किस तरह भविष्यवाणी की जाती थी।
- 2 क्योंकि मैं, नफी, ने उन्हें यहूदियों की बहुत सी रीतियों को नहीं सीखाया; क्योंकि उनके काम पाप के थे, और उनके कार्य घृणित थे।
- 3 इसलिए, मैं यह अपने उन लोगों के लिए लिख रहा हूँ, जिनके हाथों में यह पड़ेगा जिससे उन्हें परमेश्वर के न्याय का ज्ञान हो, ताकि उसकी वाणी के अनुसार उसका न्याय सभी राष्ट्रों के लोगों के ऊपर आएगा।
- 4 इसलिए, हे मेरे लोगों, तुम जो इस्राएल के घराने के हो, मेरी बातों को ध्यान से सुनो; क्योंकि यशायाह के वचन तुम्हें समझ में नहीं आते हैं, फिर भी जो लोग भविष्यवाणी की आत्मा से भरे हैं उनके लिए ये स्पष्ट हैं। लेकिन मैं तुम्हें अपने अंदर व्याप्त आत्मा के अनुसार एक भविष्यवाणी देता हूँ; इसलिए मैं तुम्हें उस स्पष्टता से भविष्यवाणी दूंगा जो मेरे साथ उस समय से है जब मैं अपने पिता के साथ यरूशलेम से निकल आया था; क्योंकि देखो, अपने लोगों से स्पष्टता से बोलने से मेरी आत्मा आनंदित होती है, ताकि वे सीख सकें।
- 5 हां, यशायाह के वचनों में मेरी आत्मा आनंदित होती है, क्योंकि मैं यरूशलेम से निकल कर आया हूँ और मेरी आंखों ने यहूदियों की बातों को देखा है, और मैं जानता हूँ कि यहूदी भविष्यवाक्ता की बातों को समझते हैं, और यहूदियों से कही गई बातों को समझने वाले दूसरे कोई नहीं हैं, सिवाय उन लोगों के जिन्होंने यहूदियों के समान शिक्षा पाई हो।
- 6 लेकिन देखो, मैं, नफी, ने अपने बच्चों को यहूदियों की रीतियों के अनुसार शिक्षा नहीं दी है; लेकिन देखो, मैं स्वयं यरूशलेम में रह चुका हूँ, इसलिए वहीं की परिस्थितियों को जानता हूँ; और मैंने अपने बच्चों से परमेश्वर के उस न्याय की चर्चा की है जो यहूदियों में से मेरे बच्चों में लाया जाएगा, यशायाह के कहे अनुसार सब कुछ होगा, और मैं उन्हें नहीं लिख रहा हूँ।

## 2 Nephi 25

Now I, Nephi, do speak somewhat concerning the words which I have written, which have been spoken by the mouth of Isaiah. For behold, Isaiah spake many things which were hard for many of my people to understand; for they know not concerning the manner of prophesying among the Jews.

For I, Nephi, have not taught them many things concerning the manner of the Jews; for their works were works of darkness, and their doings were doings of abominations.

Wherefore, I write unto my people, unto all those that shall receive hereafter these things which I write, that they may know the judgments of God, that they come upon all nations, according to the word which he hath spoken.

Wherefore, hearken, O my people, which are of the house of Israel, and give ear unto my words; for because the words of Isaiah are not plain unto you, nevertheless they are plain unto all those that are filled with the spirit of prophecy. But I give unto you a prophecy, according to the spirit which is in me; wherefore I shall prophesy according to the plainness which hath been with me from the time that I came out from Jerusalem with my father; for behold, my soul delighteth in plainness unto my people, that they may learn.

Yea, and my soul delighteth in the words of Isaiah, for I came out from Jerusalem, and mine eyes hath beheld the things of the Jews, and I know that the Jews do understand the things of the prophets, and there is none other people that understand the things which were spoken unto the Jews like unto them, save it be that they are taught after the manner of the things of the Jews.

But behold, I, Nephi, have not taught my children after the manner of the Jews; but behold, I, of myself, have dwelt at Jerusalem, wherefore I know concerning the regions round about; and I have made mention unto my children concerning the judgments of God, which hath come to pass among the Jews, unto my children, according to all that which Isaiah hath spoken, and I do not write them.

- 7 लेकिन देखो, मैं अपनी स्वयं की भविष्यवाणी को स्पष्टता से देने जा रहा हूँ; जिसमें मैं जानता हूँ कि कोई मनुष्य भूल नहीं कर सकता; फिर भी, जब यशायाह की भविष्यवाणियों के पूरा होने का समय होगा लोग अवश्य ही जान जाएंगे ।
- 8 इसलिए, वे मानव संतान के लिए महत्व की होंगी, और वह जो इन्हें ऐसा नहीं समझते हैं, मैं उनसे विशेषरूप से बात करूँगा, और शब्दों को अपने स्वयं के लोगों तक ही सीमित रखूँगा; क्योंकि मैं जानता हूँ कि वे उनके लिए अंतिम दिनों में विशेष महत्व की होंगी; क्योंकि उस दिन वे उन्हें समझेंगे; इसलिए, उनकी भलाई के लिए मैंने इन्हें लिखा है ।
- 9 और जिस प्रकार यहूदियों की एक पीढ़ी अपने पापों के कारण नष्ट हो गई, उसी प्रकार वे पापों के कारण पीढ़ी दर पीढ़ी हो गए; और उनमें से कोई भी प्रभु के भविष्यवक्ताओं के द्वारा भविष्यवाणी किये बिना नष्ट नहीं किया गया ।
- 10 इसलिए, मेरे पिता के यरूशलेम से निकल कर आने के तुरन्त बाद, उन्हें उस विनाश के विषय में बता दिया गया था जो उन पर आने वाला था; फिर भी उन्होंने अपने हृदयों को कठोर बना लिया; और मेरी भविष्यवाणी के अनुसार वे नष्ट कर दिए, सिवाय उनके जो बंदी बना कर बाबुल ले जाए गए थे ।
- 11 और अब जो आत्मा मेरे अंदर है उसके प्रेरणा से मैं यह कह रहा हूँ । और बेशक वे ले जाए गए हैं लेकिन वे फिर वापस आएंगे, और यरूशलेम प्रदेश के अधिकारी होंगे; इसलिए वे अपनी पैतृक संपत्ति वाली भूमि में पुनःस्थापित होंगे ।
- 12 लेकिन देखो, उनके बीच युद्ध, और युद्ध की अपवाहें होंगी; और जब वह दिन आएगा जब कि पिता का इकलौता पुत्र, हां, जोकि स्वर्ग और पृथ्वी का पिता है, वह मानव शरीर में उनके बीच अपने आपको प्रकट करेगा, देखो, अपने पापों, हृदयों की कठोरता और अभिमान के कारण वे उसे अस्वीकार कर देंगे ।
- 13 देखो, वे उसे क्रूस पर चढ़ा देंगे; और कब्र में दफना देने के तीन दिनों के बाद वह चंगाई की शक्ति के साथ पुनःजीवित होगा; और जो लोग उसके नाम पर विश्वास करेंगे उन्हें परमेश्वर के राज्य में बचा लिया जाएगा । इसलिए, उसके संबंध में भविष्यवाणी करने में मेरी आत्मा आनंदित होती है, क्योंकि मैंने उसके दिन को देखा, और मेरा हृदय उसके पवित्र नाम की बड़ाई करता है ।

But behold, I proceed with mine own prophecy, according to my plainness; in the which I know that no man can err; nevertheless, in the days that the prophecies of Isaiah shall be fulfilled men shall know of a surety, at the times when they shall come to pass.

Wherefore, they are of worth unto the children of men, and he that supposeth that they are not, unto them will I speak particularly, and confine the words unto mine own people; for I know that they shall be of great worth unto them in the last days; for in that day shall they understand them; wherefore, for their good have I written them.

And as one generation hath been destroyed among the Jews because of iniquity, even so have they been destroyed from generation to generation according to their iniquities; and never hath any of them been destroyed save it were foretold them by the prophets of the Lord.

Wherefore, it hath been told them concerning the destruction which should come upon them, immediately after my father left Jerusalem; nevertheless, they hardened their hearts; and according to my prophecy they have been destroyed, save it be those which are carried away captive into Babylon.

And now this I speak because of the spirit which is in me. And notwithstanding they have been carried away they shall return again, and possess the land of Jerusalem; wherefore, they shall be restored again to the land of their inheritance.

But, behold, they shall have wars, and rumors of wars; and when the day cometh that the Only Begotten of the Father, yea, even the Father of heaven and of earth, shall manifest himself unto them in the flesh, behold, they will reject him, because of their iniquities, and the hardness of their hearts, and the stiffness of their necks.

Behold, they will crucify him; and after he is laid in a sepulchre for the space of three days he shall rise from the dead, with healing in his wings; and all those who shall believe on his name shall be saved in the kingdom of God. Wherefore, my soul delighteth to prophesy concerning him, for I have seen his day, and my heart doth magnify his holy name.

- 14 और देखो, ऐसा होगा कि मसीहा के मृतकों में से जीवित होने के बाद, और जितने लोग उसके नाम पर विश्वास करेंगे उनमें वह अपने आपको प्रकट करेगा, तब देखो, यरूशलेम को पुनः नष्ट कर दिया जाएगा; क्योंकि उन पर हाथ जो परमेश्वर और उसके गिरजे के विरुद्ध लड़ते हैं ।
- 15 इसलिए, यहूदी सभी राष्ट्रों के बीच तितर-बितर कर दिए जाएंगे; हां, और बाबुल को नष्ट भी कर दिया जाएगा; इसलिए, यहूदियों को अन्य राष्ट्रों द्वारा तितर-बितर किया जाएगा ।
- 16 और उन्हें तितर-बितर कर दिए जाने के बाद, और प्रभु परमेश्वर उनकी कई पीढ़ियों को अन्य राष्ट्रों द्वारा तब तक दंडित करेगा, हां, पीढ़ी से पीढ़ी तक जब तक कि उन्हें परमेश्वर के पुत्र यीशु, और प्रायश्चित में विश्वास न कराया जाएगा जोकि संपूर्ण मानवजाति के लिए असीम है—और जब उनका मसीह में विश्वास करने का वह दिन आएगा, तब शुद्ध हृदय और शुद्ध हाथों से परमेश्वर पिता की प्रार्थना करेंगे, और यदि वे किसी अन्य मसीहा की प्रतीक्षा नहीं करेंगे तब वह दिन शीघ्र आएगा जबकि वे इन बातों पर विश्वास करेंगे ।
- 17 और प्रभु अपने लोगों को उनकी खोई और पतन की स्थिति से निकाल कर, उन्हें पुनः स्थापित करने के लिए अपने हाथ को फिर से बढ़ाएगा । इसलिए वह मानव संतान के बीच शानदार और आश्चर्यजनक कार्य करेगा ।
- 18 इसलिए, वह उनके बीच अपने वचन को लाएगा जिसके द्वारा अंतिम दिनों में वह उनका न्याय करेगा, क्योंकि वह उनको दिया जाएगा कि जिससे वे उस सच्चे मसीहा पर विश्वास कर सकें जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया था; और वह उन्हें इस बात पर भी विश्वास कराएगा कि उन्हें किसी दूसरे मसीहा के आने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि कोई अन्य मसीहा नहीं आएगा, सिवाय झूठे मसीहा के जो लोगों को ठगने के लिए आएगा; क्योंकि भविष्यवक्ताओं के द्वारा केवल एक ही मसीहा के विषय में कहा गया है, और यह मसीहा वह होगा जिसे यहूदियों द्वारा अस्वीकार कर दिया जाएगा ।
- 19 क्योंकि भविष्यवक्ता के वचनों के अनुसार, मेरे पिता के यरूशलेम से निकल आने के छह सौ वर्ष बाद मसीहा आएगा; और भविष्यवक्ताओं के शब्दों के अनुसार, और परमेश्वर के स्वर्गदूत के अनुसार, उसका नाम यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र होगा ।

And behold it shall come to pass that after the Messiah hath risen from the dead, and hath manifested himself unto his people, unto as many as will believe on his name, behold, Jerusalem shall be destroyed again; for wo unto them that fight against God and the people of his church.

Wherefore, the Jews shall be scattered among all nations; yea, and also Babylon shall be destroyed; wherefore, the Jews shall be scattered by other nations.

And after they have been scattered, and the Lord God hath scourged them by other nations for the space of many generations, yea, even down from generation to generation until they shall be persuaded to believe in Christ, the Son of God, and the atonement, which is infinite for all mankind—and when that day shall come that they shall believe in Christ, and worship the Father in his name, with pure hearts and clean hands, and look not forward any more for another Messiah, then, at that time, the day will come that it must needs be expedient that they should believe these things.

And the Lord will set his hand again the second time to restore his people from their lost and fallen state. Wherefore, he will proceed to do a marvelous work and a wonder among the children of men.

Wherefore, he shall bring forth his words unto them, which words shall judge them at the last day, for they shall be given them for the purpose of convincing them of the true Messiah, who was rejected by them; and unto the convincing of them that they need not look forward any more for a Messiah to come, for there should not any come, save it should be a false Messiah which should deceive the people; for there is save one Messiah spoken of by the prophets, and that Messiah is he who should be rejected of the Jews.

For according to the words of the prophets, the Messiah cometh in six hundred years from the time that my father left Jerusalem; and according to the words of the prophets, and also the word of the angel of God, his name shall be Jesus Christ, the Son of God.

20 और अब, मेरे भाइयों, मैंने स्पष्ट रूप से बोला है ताकि तुम गलत न समझो। और जब तक कि मिस्र से इस्राएलियों को बाहर निकाल लाने वाला प्रभु मौजूद है जिसने मूसा को वह शक्ति दी जिसके द्वारा वह अपने राष्ट्रों को विषधर सांप से डसे जाने के बाद ठीक कर सका और वे उसे सांप की ओर आंख उठा कर देख सके जिसे वह उनके सामने लाया था, और जिसने उसे यह शक्ति दी कि वह चट्टान पर प्रहार करे और उसमें से जल निकल आये; हां सुनो, मैं तुमसे कहता हूँ कि यह सब बातें जबकि सत्य हैं, और जबकि प्रभु परमेश्वर जीवित है, तब आकाश के नीचे यीशु मसीह के नाम के अलावा दूसरा नाम नहीं दिया गया है, जिसकी चर्चा मैंने की है और जिसकी शरण में—मनुष्य बच सकता है।

21 इसलिए, प्रभु परमेश्वर ने मुझ से यह प्रतिज्ञा की है कि मैं जिन बातों को लिख रहा हूँ वे सुरक्षित रखी जाएंगी और ये मेरे वंश को पीढ़ी दर पीढ़ी दी जाएंगी ताकि यूसुफ को दी गई यह प्रतिज्ञा पूरी हो कि जब तक पृथ्वी रहेगी, तब तक उसका वंश नष्ट नहीं होगा।

22 इसलिए, जब तक पृथ्वी रहेगी तब तक ये बातें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जाएंगी; और ये परमेश्वर की इच्छा और खुशी के अनुसार ही जाएंगी; और जिन राष्ट्रों के पास ये बातें होंगी उनका न्याय इन लिखित शब्दों के अनुसार ही किया जाएगा।

23 हम परिश्रम करके इसलिए लिख रहे हैं, ताकि हम अपने वंशजों और भाइयों को मसीह में विश्वास करा सकें, और परमेश्वर के साथ मेल कर लें; क्योंकि हम जानते हैं कि हम जो कर सकते हैं, उन सब को करने के पश्चात भी हम उसके अनुग्रह द्वारा बचाए गए हैं।

24 और यद्यपि हम मसीह में विश्वास करते हैं, फिर भी हम मूसा की व्यवस्था का पालन करते हैं, और हम दृढ़ता के साथ मसीह की प्रतिक्षा करते रहेंगे, जब तक कि यह व्यवस्था पूरी न हो जाए।

25 क्योंकि हमें व्यवस्था इसी उद्देश्य से दी गई है; क्योंकि व्यवस्था हमारे लिए समाप्त हो गई, और हम मसीह में अपने विश्वास के कारण जीवित किये गए हैं; फिर भी हम व्यवस्था का पालन आज्ञाओं के कारण करते हैं।

26 और हम मसीह के विषय में बात करते हैं, हम मसीह में आनंदित होते हैं, हम मसीह का प्रचार करते हैं, हम मसीह की भविष्यवाणी करते हैं, और हम अपनी भविष्यवाणियों के अनुसार लिखते हैं कि हमारी संतान जान सके कि वे अपने पापों की क्षमा के लिए किसके पास जाएं।

And now, my brethren, I have spoken plainly that ye cannot err. And as the Lord God liveth that brought Israel up out of the land of Egypt, and gave unto Moses power that he should heal the nations after they had been bitten by the poisonous serpents, if they would cast their eyes unto the serpent which he did raise up before them, and also gave him power that he should smite the rock and the water should come forth; yea, behold I say unto you, that as these things are true, and as the Lord God liveth, there is none other name given under heaven save it be this Jesus Christ, of which I have spoken, whereby man can be saved.

Wherefore, for this cause hath the Lord God promised unto me that these things which I write shall be kept and preserved, and handed down unto my seed, from generation to generation, that the promise may be fulfilled unto Joseph, that his seed should never perish as long as the earth should stand.

Wherefore, these things shall go from generation to generation as long as the earth shall stand; and they shall go according to the will and pleasure of God; and the nations who shall possess them shall be judged of them according to the words which are written.

For we labor diligently to write, to persuade our children, and also our brethren, to believe in Christ, and to be reconciled to God; for we know that it is by grace that we are saved, after all we can do.

And, notwithstanding we believe in Christ, we keep the law of Moses, and look forward with steadfastness unto Christ, until the law shall be fulfilled.

For, for this end was the law given; wherefore the law hath become dead unto us, and we are made alive in Christ because of our faith; yet we keep the law because of the commandments.

And we talk of Christ, we rejoice in Christ, we preach of Christ, we prophesy of Christ, and we write according to our prophecies, that our children may know to what source they may look for a remission of their sins.

- 27 इसलिए हम व्यवस्था के विषय में बातें करते हैं ताकि हमारी संतान व्यवस्था के अंत को जान सके; व्यवस्था के अंत को जानकर वे उस जीवन को देखना चाहेंगे जो मसीह में है, और तब वे यह जान जाएंगे कि व्यवस्था किस लिए दी गई थी। और जब मसीह में व्यवस्था पूरी हो जाएगी, तब उन्हें उसके प्रति अपने हृदयों को कठोर करने की जरूरत नहीं होगी।
- 28 और अब देखो, मेरे लोगों, तुम हठी लोग हो; इसलिए मैंने तुम से स्पष्टरूप से बोला है, ताकि तुम समझने में गलती न करो। और जो वचन मैंने तुम्हें बोले हैं वे तुम्हारे विरुद्ध साक्षी होंगे; क्योंकि किसी भी मनुष्य को उचित मार्ग दिखाने के लिए ये पर्याप्त हैं; क्योंकि उचित मार्ग है मसीह में विश्वास करना और उसे अस्वीकार न करना; क्योंकि उसे अस्वीकार करने से तुम भविष्यवक्ताओं और व्यवस्था को भी अस्वीकार करते हो।
- 29 और अब देखो, मैं तुम से कहता हूँ कि उचित मार्ग है मसीह में विश्वास करना और उसे अस्वीकार न करना; और मसीह ही इस्राएल का एकमेव पवित्र परमेश्वर है; इसलिए तुम उसके आगे घुटने टेक कर अपनी पूरी पराक्रम, मन, शक्ति और आत्मा से आराधना करो; और यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम्हें अलग नहीं किया जाएगा।
- 30 और तब तक यह उचित होगा, कि तुम परमेश्वर के कार्यों और विधियों का पालन करो जब तक कि मूसा को दी गई व्यवस्था पूरी नहीं हो जाती।

Wherefore, we speak concerning the law that our children may know the deadness of the law; and they, by knowing the deadness of the law, may look forward unto that life which is in Christ, and know for what end the law was given. And after the law is fulfilled in Christ, that they need not harden their hearts against him when the law ought to be done away.

And now behold, my people, ye are a stiffnecked people; wherefore, I have spoken plainly unto you, that ye cannot misunderstand. And the words which I have spoken shall stand as a testimony against you; for they are sufficient to teach any man the right way; for the right way is to believe in Christ and deny him not; for by denying him ye also deny the prophets and the law.

And now behold, I say unto you that the right way is to believe in Christ, and deny him not; and Christ is the Holy One of Israel; wherefore ye must bow down before him, and worship him with all your might, mind, and strength, and your whole soul; and if ye do this ye shall in nowise be cast out.

And, inasmuch as it shall be expedient, ye must keep the performances and ordinances of God until the law shall be fulfilled which was given unto Moses.

## 2 नफी 26

- 1 और मेरे बच्चों और मेरे प्रिय भाइयों, मसीह मर कर जीवित उठने के पश्चात अपने आपको तुम्हें दिखाएगा; और जो वचन वह तुम से कहेगा तुम्हारे लिए व्यवस्था होगी जिसका तुम्हें पालन करना होगा ।
- 2 क्योंकि देखो, मैं तुम से कहता हूँ कि मैंने कई पीढ़ियों को गुजरते हुए देखा है, और मेरे लोगों के बीच महान युद्ध और विवाद होंगे ।
- 3 और मसीहा के आने के पश्चात मेरे लोगों को उसके जन्म, और मृत्यु और पुनरुत्थान के चिन्ह भी दिए जाएंगे; और दुष्टों के लिए वह दिन महत्वपूर्ण और भयंकर होगा, क्योंकि वे नष्ट हो जाएंगे; और वे इसलिए नष्ट होंगे क्योंकि उन्होंने भविष्यवक्ताओं और संतों को त्यागते और पत्थराव करते, और उनकी हत्या करते हैं; इसलिए संतों का लहू धरती से उठकर परमेश्वर के सम्मुख उनके विरुद्ध याचना करेगा ।
- 4 इसलिए, वे सब जो घमंडी हैं, और दुष्टता करते हैं, सेनाओं का प्रभु कहता है कि वह दिन आने वाला है जब उन्हें भस्म कर दिया जाएगा, क्योंकि वे ठूठ के समान होंगे ।
- 5 और वे जो भविष्यवक्ताओं, और संतों की हत्या करते हैं, पृथ्वी की गहराइयां उन्हें निगल जाएंगी, सेनाओं का प्रभु कहता है; और पर्वत उन्हें ढक लेंगे, और बवंडर उन्हें उड़ा ले जाएगा, और भवन उनके ऊपर गिरेंगे और उन्हें चकनाचूर करके धूल में मिला देंगे ।
- 6 और वे मेघों की गर्जन, वज्रपात, और भूकंप, और हर प्रकार के विनाश का सामना करेंगे, क्योंकि प्रभु के क्रोध की अग्नि उनके विरुद्ध भड़क उठेगी, और वे ठूठ के समान होंगे, और वह दिन जो आने वाला है उन्हें निगल जाएगा, सेनाओं का प्रभु कहता है ।
- 7 ओह दर्द, और पीड़ा से मेरी आत्मा कराह उठती है अपने उन लोगों को खोने से जो मारे गए हैं ! क्योंकि मैं, नफी, ने इसे देखा है, और प्रभु की उपस्थिति में यह वेदना मुझे लगभग भस्म कर देती; लेकिन मैंने पुकार कर अपने परमेश्वर से कहा: तुम्हारे मार्ग न्यायसंगत हैं ।
- 8 लेकिन देखो, धार्मिक जो भविष्यवक्ताओं के वचनों में विश्वास करते हैं, और उन्हें नष्ट नहीं करते हैं, लेकिन सब कष्टों को सहते हुए, दृढ़ता से मसीह के आने के चिन्हों की प्रतीक्षा करते हैं—देखो, ये वे लोग हैं जो नष्ट नहीं होंगे ।

## 2 Nephi 26

And after Christ shall have risen from the dead he shall show himself unto you, my children, and my beloved brethren; and the words which he shall speak unto you shall be the law which ye shall do.

For behold, I say unto you that I have beheld that many generations shall pass away, and there shall be great wars and contentions among my people.

And after the Messiah shall come there shall be signs given unto my people of his birth, and also of his death and resurrection; and great and terrible shall that day be unto the wicked, for they shall perish; and they perish because they cast out the prophets, and the saints, and stone them, and slay them; wherefore the cry of the blood of the saints shall ascend up to God from the ground against them.

Wherefore, all those who are proud, and that do wickedly, the day that cometh shall burn them up, saith the Lord of Hosts, for they shall be as stubble.

And they that kill the prophets, and the saints, the depths of the earth shall swallow them up, saith the Lord of Hosts; and mountains shall cover them, and whirlwinds shall carry them away, and buildings shall fall upon them and crush them to pieces and grind them to powder.

And they shall be visited with thunderings, and lightnings, and earthquakes, and all manner of destructions, for the fire of the anger of the Lord shall be kindled against them, and they shall be as stubble, and the day that cometh shall consume them, saith the Lord of Hosts.

O the pain, and the anguish of my soul for the loss of the slain of my people! For I, Nephi, have seen it, and it will nigh consumeth me before the presence of the Lord; but I must cry unto my God: Thy ways are just.

But behold, the righteous that hearken unto the words of the prophets, and destroy them not, but look forward unto Christ with steadfastness for the signs which are given, notwithstanding all persecution—behold, they are they which shall not perish.

- 9 लेकिन धार्मिकता का पुत्र उनको प्रकट होगा; और वह उन्हें चंगा करेगा, और वे उसके साथ तीन पीढ़ियों के गुजरने तक शांति पाएंगे, और चौथी पीढ़ी के बहुत से लोग धार्मिकता में गुजरेंगे ।
- 10 और इन सब बातों के हो जाने के बाद शीघ्रता से मेरे लोगों का विनाश हो जाएगा; क्योंकि अपनी आत्मा के कष्ट को सहते हुए, मैंने इसे देखा है; इसलिए, मैं जानता हूँ कि ऐसा अवश्य होगा; और वे अपने आपको बिना किसी मूल्य के बेच देंगे; क्योंकि अपने घमंड और अपनी मूर्खता के लिए वे विनाश का प्रतिफल प्राप्त करेंगे; क्योंकि वे शैतान के सामने झुकते हैं और प्रकाश में किये जाने वाले कार्यों के स्थान पर अंधकार में किये जाने वाले कार्यों का चुनाव करते हैं, इसलिए वे अवश्य ही नरक में जाएंगे ।
- 11 क्योंकि प्रभु की आत्मा हमेशा मनुष्य के साथ प्रयास नहीं करेगी । और जब आत्मा मनुष्य के साथ प्रयास करना समाप्त कर देती है तब शीघ्रता से विनाश आता है, और मेरी आत्मा इससे दुखी होती है ।
- 12 और जब मैं यहूदियों को विश्वास कराने के लिए बोलता हूँ, कि यीशु ही वह मसीह है, तब उसी प्रकार अन्य जातियों को भी विश्वास कराने की आवश्यकता है कि यीशु ही मसीह, अनंत परमेश्वर है ।
- 13 और कि वह पवित्र आत्मा की शक्ति से, अपने आपको उन सब पर प्रकट करेगा जो उसमें विश्वास करते हैं; हां, प्रत्येक राष्ट्र, जाति, भाषा, और लोगों में वह चमत्कार, चिन्ह, और आश्चर्यजनक काम, मानव संतान के बीच उनके विश्वास के अनुसार करता है ।
- 14 लेकिन देखो, मैं तुमसे अंतिम दिनों के संबंध में भविष्यवाणी करता हूँ; उन दिनों के संबंध में जब प्रभु परमेश्वर इन बातों को मानव संतान पर प्रकट करेगा ।
- 15 जब मेरे वंश और मेरे भाइयों के वंश अविश्वास में दुर्बल हो जाएंगे, और अन्यजातियों द्वारा सताए जाएंगे; हां, प्रभु परमेश्वर उनको चारों ओर से घेर लेगा, और उनको पर्वत और किले की दिवारों से घेर लेगा; और उनको धूल में मिला देने के बाद, यहां तक कि वे मिट जाएंगे, फिर भी धार्मिक व्यक्ति के वचन लिखे जाएंगे, और विश्वासी की प्रार्थनाएं सुनी जाएंगी, और वे सब जो अविश्वास में दुर्बल हो गए उन्हें भुलाया नहीं जाएगा ।

But the Son of Righteousness shall appear unto them; and he shall heal them, and they shall have peace with him, until three generations shall have passed away, and many of the fourth generation shall have passed away in righteousness.

And when these things have passed away a speedy destruction cometh unto my people; for, notwithstanding the pains of my soul, I have seen it; wherefore, I know that it shall come to pass; and they sell themselves for naught; for, for the reward of their pride and their foolishness they shall reap destruction; for because they yield unto the devil and choose works of darkness rather than light, therefore they must go down to hell.

For the Spirit of the Lord will not always strive with man. And when the Spirit ceaseth to strive with man then cometh speedy destruction, and this grieveth my soul.

And as I spake concerning the convincing of the Jews, that Jesus is the very Christ, it must needs be that the Gentiles be convinced also that Jesus is the Christ, the Eternal God;

And that he manifesteth himself unto all those who believe in him, by the power of the Holy Ghost; yea, unto every nation, kindred, tongue, and people, working mighty miracles, signs, and wonders, among the children of men according to their faith.

But behold, I prophesy unto you concerning the last days; concerning the days when the Lord God shall bring these things forth unto the children of men.

After my seed and the seed of my brethren shall have dwindled in unbelief, and shall have been smitten by the Gentiles; yea, after the Lord God shall have camped against them round about, and shall have laid siege against them with a mount, and raised forts against them; and after they shall have been brought down low in the dust, even that they are not, yet the words of the righteous shall be written, and the prayers of the faithful shall be heard, and all those who have dwindled in unbelief shall not be forgotten.

- 16 क्योंकि जो नष्ट किये जाएंगे वे धरती से निकल कर बोलेंगे, और उनकी बातें धरती की गहराइयों में निकलेंगी, और उनकी आवाज जानी-पहचानी लगेगी; क्योंकि प्रभु परमेश्वर उसे शक्ति देगा, ताकि वह उनके संबंध में फुसफुसाकर कहेगा, मानो यह धरती से आ रही हो; और उनकी बातें धूल में से फुसफुसाएंगी ।
- 17 क्योंकि प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कहता है: वे उनके बीच होने वाली बातों को लिखेंगे, और वे पुस्तक में लिखेंगे और मुहरबंद करेंगे, और जो अविश्वास में दुर्बल होंगे वे इन्हें प्राप्त नहीं करेंगे, क्योंकि वे परमेश्वर की बातों को नष्ट करने की खोज में रहते हैं ।
- 18 इसलिए, जिन्हें नष्ट किया गया है उन्हें शीघ्रता से नष्ट किया गया है; और उस भीड़ के भयंकर लोग उस भूसे के समान होंगे जो हवा में उड़ जाती है—हां, प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कहता है: यह तुरन्त, अचानक होगा—
- 19 और ऐसा होगी कि जो अविश्वास में दुर्बल होंगे वे अन्यजातियों के हाथों सताए जाएंगे ।
- 20 और अन्यजातियां अपनी आंखों के घमंड में ऊपर उठती हैं, और ठोकर खाती हैं, क्योंकि उनको गिराने के लिए राह के रोड़े बहुत बड़े हैं, जोकि उनके बनाए हुए बहुत से गिरजे हैं; फिर भी, वे परमेश्वर की शक्ति और चमत्कारों को अनदेखा करते हैं, और अपने स्वयं के ज्ञान और समझ का प्रचार करते हैं, ताकि उन्हें फायदा हो और वे गरीब को बेहरमी से कुचल सकें ।
- 21 और ऐसे बहुत से गिरजे बनाए गए हैं जो ईर्ष्या, और शत्रुता, और दुर्भावना पैदा करते हैं ।
- 22 और अतीत की तरह, आजकल भी शैतान के गुप्त षडयंत्र हैं, क्योंकि वह इन सब बातों का संस्थापक है; हां, हत्या और अंधकार के कामों का संस्थापक; हां, वह उनके गले में रस्सी डाल ले जाता है, जब तक कि वह उन्हें मजबूत रस्सी से हमेशा के लिए न बांध ले ।
- 23 क्योंकि सुनो, मेरे प्रिय भाइयों, मैं तुम से कहता हूं कि प्रभु परमेश्वर अंधकार में काम नहीं करता ।
- 24 वह ऐसा कोई भी कार्य नहीं करता जो संसार के लाभ के लिए न हो; क्योंकि वह संसार से प्रेम करता है, वह इतना प्रेम करता है कि उसने अपना स्वयं का जीवन दे दिया ताकि वह संसार के मनुष्यों को अपने पास बुला सके । इसलिए, उसने किसी को भी उसके उद्धार में भाग न लेने की आज्ञा नहीं दी है ।

For those who shall be destroyed shall speak unto them out of the ground, and their speech shall be low out of the dust, and their voice shall be as one that hath a familiar spirit; for the Lord God will give unto him power, that he may whisper concerning them, even as it were out of the ground; and their speech shall whisper out of the dust.

For thus saith the Lord God: They shall write the things which shall be done among them, and they shall be written and sealed up in a book, and those who have dwindled in unbelief shall not have them, for they seek to destroy the things of God.

Wherefore, as those who have been destroyed have been destroyed speedily; and the multitude of their terrible ones shall be as chaff that passeth away—yea, thus saith the Lord God: It shall be at an instant, suddenly—

And it shall come to pass, that those who have dwindled in unbelief shall be smitten by the hand of the Gentiles.

And the Gentiles are lifted up in the pride of their eyes, and have stumbled, because of the greatness of their stumbling block, that they have built up many churches; nevertheless, they put down the power and miracles of God, and preach up unto themselves their own wisdom and their own learning, that they may get gain and grind upon the face of the poor.

And there are many churches built up which cause envyings, and strifes, and malice.

And there are also secret combinations, even as in times of old, according to the combinations of the devil, for he is the founder of all these things; yea, the founder of murder, and works of darkness; yea, and he leadeth them by the neck with a flaxen cord, until he bindeth them with his strong cords forever.

For behold, my beloved brethren, I say unto you that the Lord God worketh not in darkness.

He doeth not anything save it be for the benefit of the world; for he loveth the world, even that he layeth down his own life that he may draw all men unto him. Wherefore, he commandeth none that they shall not partake of his salvation.



- 25 सुनो, क्या उसने चिल्ला कर किसी से कहा है: मुझ से दूर हट जा ? सुनो, मैं तुम से कहता हूँ, नहीं; लेकिन वह कहता है: पृथ्वी के दूर दूर प्रदेशों के सब लोगों तुम मेरे पास आओ, बिना धन और बिना मूल्य के दूध और मधु खरीदो ।
- 26 सुनो, क्या उसने किसी को सभाओं या प्रार्थना घरों से निकल जाने का आदेश दिया है ? सुनो, मैं तुम से कहता हूँ, नहीं ।
- 27 क्या उसने किसी को आदेश दिया है कि वे उसके उद्धार में भाग न लें ? सुनो मैं तुम से कहता हूँ, नहीं; लेकिन उसने सब मनुष्यों को यह मुफ्त में दिया है; और उसने आज्ञा दी है कि उसके लोग सब मनुष्यों को पश्चाताप के लिए राजी करें ।
- 28 देखो, क्या प्रभु ने किसी को आज्ञा दी है कि उन्हें उसकी भलाई में भाग नहीं लेना चाहिए ? सुनो, मैं तुम से कहता हूँ, नहीं; लेकिन सभी मनुष्यों के पास एक दूसरे के समान अधिकार है, किसी को मना नहीं किया गया है ।
- 29 उसने आज्ञा दी है कि धर्म के नाम पर दुराचार नहीं किया जाना चाहिए; क्योंकि, देखो दुराचार करने वाले वे मनुष्य होते हैं जो अपने आप को संसार को ज्ञान देने वाला बताते हैं, ताकि उन्हें सांसारिक लाभ और प्रशंसा मिल सके; लेकिन वे सिय्योन के कल्याण को नहीं चाहते हैं ।
- 30 देखो, प्रभु ने इस काम के लिए मना किया है; इसलिए, प्रभु परमेश्वर ने आज्ञा दी है कि सभी मनुष्यों को उदारता होना चाहिए, जो उदारता प्रेम है । और जब तक उनके पास प्रेम नहीं है उनके पास कुछ नहीं है । इसलिए, यदि उनके पास प्रेम है तो वे सिय्योन के परिश्रम को नष्ट नहीं होने देंगे ।
- 31 लेकिन सिय्योन में परिश्रम करने वाले सिय्योन के लिए परिश्रम करें; क्योंकि जो धन के लिए परिश्रम करते हैं नष्ट हो जाएंगे ।
- 32 और फिर, प्रभु परमेश्वर ने आज्ञा दी है कि मनुष्य को हत्या नहीं करनी चाहिए; कि उन्हें झूठ नहीं बोलना चाहिए; कि उन्हें चोरी नहीं करनी चाहिए; कि उन्हें प्रभु अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ में नहीं लेना चाहिए; कि उन्हें ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए; कि उन्हें द्वेष नहीं रखना चाहिए; कि उन्हें एक दूसरे से विवाद नहीं करना चाहिए; कि उन्हें व्यभिचार नहीं करना चाहिए; और उन्हें इनमें से किसी भी काम को नहीं करना चाहिए; क्योंकि जो इन्हें करता है नष्ट हो जाएगा ।

Behold, doth he cry unto any, saying: Depart from me? Behold, I say unto you, Nay; but he saith: Come unto me all ye ends of the earth, buy milk and honey, without money and without price.

Behold, hath he commanded any that they should depart out of the synagogues, or out of the houses of worship? Behold, I say unto you, Nay.

Hath he commanded any that they should not partake of his salvation? Behold I say unto you, Nay; but he hath given it free for all men; and he hath commanded his people that they should persuade all men to repentance.

Behold, hath the Lord commanded any that they should not partake of his goodness? Behold I say unto you, Nay; but all men are privileged the one like unto the other, and none are forbidden.

He commandeth that there shall be no priestcrafts; for, behold, priestcrafts are that men preach and set themselves up for a light unto the world, that they may get gain and praise of the world; but they seek not the welfare of Zion.

Behold, the Lord hath forbidden this thing; wherefore, the Lord God hath given a commandment that all men should have charity, which charity is love. And except they should have charity they were nothing. Wherefore, if they should have charity they would not suffer the laborer in Zion to perish.

But the laborer in Zion shall labor for Zion; for if they labor for money they shall perish.

And again, the Lord God hath commanded that men should not murder; that they should not lie; that they should not steal; that they should not take the name of the Lord their God in vain; that they should not envy; that they should not have malice; that they should not contend one with another; that they should not commit whoredoms; and that they should do none of these things; for whoso doeth them shall perish.

33      क्योंकि इन में से कोई भी बातें प्रभु से नहीं आती हैं; क्योंकि वह मानव संतान के बीच भलाई करता है; और वह कोई भी ऐसा नहीं करता जो मानव संतान को स्पष्ट न हो; और उन सब को उसके पास आने और उसकी भलाई में भाग लेने का निमंत्रण देता है; और वह, काले और गोरे, गुलाम और स्वतंत्र, पुरुष और स्त्री किसी को भी अपने पास आने के लिए मना नहीं करता है; और वह मूर्तिपूजक को भी याद करता है; और यहूदी और अन्यजाति दोनों परमेश्वर के लिए समान हैं ।

For none of these iniquities come of the Lord; for he doeth that which is good among the children of men; and he doeth nothing save it be plain unto the children of men; and he inviteth them all to come unto him and partake of his goodness; and he denieth none that come unto him, black and white, bond and free, male and female; and he remembereth the heathen; and all are alike unto God, both Jew and Gentile.

## 2 नफी 27

- 1 लेकिन, देखो, अंतिम दिनों में, या अन्यजातियों के अंतिम दिनों में—  
हां, देखो अन्यजातियों के सभी राष्ट्र और यहूदी भी, दोनों जो भी इस प्रदेश में आएगा और जो अन्य प्रदेशों में होगा, हां, पृथ्वी के सभी प्रदेशों में, देखो, वे अधर्म और सभी प्रकार के बुरे कामों के नशे में चूर रहेंगे—
- 2 और वह दिन आएगा जब सेनाओं का प्रभु उनसे, बादलों की गर्जन के साथ और भूकंप के साथ, और तेज कोलाहल के साथ, और आंधी के साथ, और तूफान के साथ, और निगल जाने वाली आग के साथ भेंट करेगा ।
- 3 और वे सभी राष्ट्र जो सिय्योन के साथ युद्ध करते हैं, और उसे कष्ट देते हैं, रात के सपने के समान होंगे; हां, उनके साथ ऐसा होगा, जैसा उस भूखे मनुष्य के साथ होता है जो सपने में भोजन करता है लेकिन जागने पर उसकी आत्मा भूखी ही रहती है; या वह उस प्यासे मनुष्य के समान जो सपने में जल पीता है लेकिन जागने पर उसकी आत्मा प्यासी ही रहती है; हां, उन सभी राष्ट्रों के साथ ऐसा ही होगा जो सिय्योन के पर्वत के साथ युद्ध करते हैं ।
- 4 क्योंकि देखो, तुम सब जो अधर्म करते हो, अपने आप में और आश्चर्य में पड़े रहते हो, क्योंकि तुम चिल्लाओगे, और शोर मचाओगे; हां, तुम नशे में रहोगे लेकिन मदिरा के नशे में नहीं, तुम लड़खड़ाओगे लेकिन दाखमधु के नशे में नहीं ।
- 5 क्योंकि देखो, प्रभु ने तुम्हारे ऊपर गहरी निद्रा की आत्मा उंडेली है । क्योंकि देखो, तुमने अपनी आंखें बंद कर लीं हैं, और तुमने भविष्यवक्ताओं को अस्वीकार कर दिया है; और तुम्हारे शासकों और दिव्यदर्शियों को उसने तुम्हारे अधर्म के कारण ढक दिया है ।
- 6 और ऐसा होगा कि प्रभु परमेश्वर तुम्हारे लिए एक पुस्तक के वचनों को प्रकट करेगा और ये उनके वचन होंगे जो धरती में मौत की नींद सो रहे हैं ।
- 7 और देखो यह पुस्तक मुहरबंद होगी; और इस पुस्तक में संसार के आरंभ से लेकर अंत का परमेश्वर से मिला प्रकटीकरण होगा ।
- 8 इसलिए, इन बातों के कारण जो मुहरबंद की गई हैं, ये बातें जो मुहरबंद हैं उन लोगों के समय में नहीं दी जाएंगी जो दुष्ट और बुरे हैं । इसलिए यह पुस्तक उनसे दूर रखी जाएगी ।

## 2 Nephi 27

But, behold, in the last days, or in the days of the Gentiles—yea, behold all the nations of the Gentiles and also the Jews, both those who shall come upon this land and those who shall be upon other lands, yea, even upon all the lands of the earth, behold, they will be drunken with iniquity and all manner of abominations—

And when that day shall come they shall be visited of the Lord of Hosts, with thunder and with earthquake, and with a great noise, and with storm, and with tempest, and with the flame of devouring fire.

And all the nations that fight against Zion, and that distress her, shall be as a dream of a night vision; yea, it shall be unto them, even as unto a hungry man which dreameth, and behold he eateth but he awaketh and his soul is empty; or like unto a thirsty man which dreameth, and behold he drinketh but he awaketh and behold he is faint, and his soul hath appetite; yea, even so shall the multitude of all the nations be that fight against Mount Zion.

For behold, all ye that doeth iniquity, stay yourselves and wonder, for ye shall cry out, and cry; yea, ye shall be drunken but not with wine, ye shall stagger but not with strong drink.

For behold, the Lord hath poured out upon you the spirit of deep sleep. For behold, ye have closed your eyes, and ye have rejected the prophets; and your rulers, and the seers hath he covered because of your iniquity.

And it shall come to pass that the Lord God shall bring forth unto you the words of a book, and they shall be the words of them which have slumbered.

And behold the book shall be sealed; and in the book shall be a revelation from God, from the beginning of the world to the ending thereof.

Wherefore, because of the things which are sealed up, the things which are sealed shall not be delivered in the day of the wickedness and abominations of the people. Wherefore the book shall be kept from them.

- 9 लेकिन यह पुस्तक एक पुरुष को दी जाएगी, और वह इस पुस्तक के वचनों को देगा, जोकि उन लोगों के वचन हैं जो मिट्टी में मृत्यु की नींद सो चुके हैं, और वह इन वचनों को दूसरों को देगा;
- 10 लेकिन वह उन वचनों को नहीं देगा जो मुहरबंद हैं, न ही वह पुस्तक देगा। क्योंकि पुस्तक को परमेश्वर की शक्ति से मुहरबंद किया गया है, और प्रकटीकरण जोकि मुहरबंद किया गया था तब तक पुस्तक में रखा रहेगा, जब तक इसे प्रकट करने का प्रभु द्वारा निर्धारित समय नहीं आ जाता; क्योंकि देखो, वे संसार के आरंभ से लेकर इसके अंत तक की सभी बातों को प्रकट करेंगे।
- 11 और वह दिन आने वाला है जब इस पुस्तक के वचनों को जोकि मुहरबंद किये गए थे घरों की छतों के ऊपर से पढ़ा जाएगा; और मसीह की शक्ति से इन्हें पढ़ा जाएगा; और मानव संतान को सब बातें प्रकट की जाएंगी जो हमेशा मानव संतान के साथ रही हैं, और जो पृथ्वी के अंत तक हमेशा रहेंगी।
- 12 इसलिए, उस दिन पर जब यह पुस्तक उस पुरुष द्वारा दी जाएगी जिसके विषय में मैंने बोला है, पुस्तक को संसार की आंखों से छिपा दिया जाएगा, और जिसे यह पुस्तक दी जाएगी उसके अलावा कोई भी आंख इसे नहीं देख पाएगी सिवाय तीन गवाहों के जो परमेश्वर की शक्ति से इसे देखेंगे; और वे इस पुस्तक और इसमें लिखी बातों की सच्चाई को प्रमाणित करेंगे।
- 13 और कोई इसे नहीं देखेगा, सिवाय उन कुछ लोगों के जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, मानव संतान के लिए उसके वचन की गवाही देंगे; क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने कहा है कि विश्वासी के वचन ऐसे बात करेंगे जैसे वह मृतक से आ रहे हों।
- 14 इसलिए, प्रभु परमेश्वर इस पुस्तक के वचनों को प्रकट करेगा; और वह जितने गवाहों को उपयुक्त समझेगा उनके मुंह से अपने वचनों को स्थापित करेगा; और हाय उन पर जो परमेश्वर के वचन को अस्वीकार करते हैं!
- 15 लेकिन देखो, ऐसा होगा कि प्रभु परमेश्वर जिसे यह पुस्तक देगा उससे कहेगा: इन वचनों को लो जो कि मुहरबंद नहीं है और इन्हें दूसरों को दो, कि वह इन्हें ज्ञानी को यह कहकर देगा: मैं तुमसे विनती करता हूँ, इसे पढ़ो। और ज्ञानी कहेगा: इस पुस्तक को इधर लाओ, और मैं इसे पढ़ूंगा।

But the book shall be delivered unto a man, and he shall deliver the words of the book, which are the words of those who have slumbered in the dust, and he shall deliver these words unto another;

But the words which are sealed he shall not deliver, neither shall he deliver the book. For the book shall be sealed by the power of God, and the revelation which was sealed shall be kept in the book until the own due time of the Lord, that they may come forth; for behold, they reveal all things from the foundation of the world unto the end thereof.

And the day cometh that the words of the book which were sealed shall be read upon the house tops; and they shall be read by the power of Christ; and all things shall be revealed unto the children of men which ever have been among the children of men, and which ever will be even unto the end of the earth.

Wherefore, at that day when the book shall be delivered unto the man of whom I have spoken, the book shall be hid from the eyes of the world, that the eyes of none shall behold it save it be that three witnesses shall behold it, by the power of God, besides him to whom the book shall be delivered; and they shall testify to the truth of the book and the things therein.

And there is none other which shall view it, save it be a few according to the will of God, to bear testimony of his word unto the children of men; for the Lord God hath said that the words of the faithful should speak as if it were from the dead.

Wherefore, the Lord God will proceed to bring forth the words of the book; and in the mouth of as many witnesses as seemeth him good will he establish his word; and wo be unto him that rejecteth the word of God!

But behold, it shall come to pass that the Lord God shall say unto him to whom he shall deliver the book: Take these words which are not sealed and deliver them to another, that he may show them unto the learned, saying: Read this, I pray thee. And the learned shall say: Bring hither the book, and I will read them.

- 16 और अब, इस संसार के यश और अपने लाभ के लिए वे ऐसा कहेंगे, और न कि परमेश्वर की महिमा के लिए ।
- 17 और वह पुरुष कहेगा: मैं इस पुस्तक को प्रकट नहीं कर सकता, क्योंकि यह मुहरबंद है ।
- 18 तब वह ज्ञानी कहेगा: मैं इसे नहीं पढ़ सकता ।
- 19 इसलिए ऐसा होगा, कि प्रभु परमेश्वर फिर उस पुस्तक और उसके वचनों को उसे देगा जो ज्ञानी नहीं है; और वह पुरुष जो ज्ञानी नहीं है कहेगा: मैं ज्ञानी नहीं हूँ ।
- 20 तब परमेश्वर उससे कहेगा: ज्ञानी इन्हें नहीं पढ़ेंगे, क्योंकि वे इन्हें अस्वीकार कर चुके हैं, और मैं अपने स्वयं का कार्य करने में समर्थ हूँ; इसलिए तुम उन वचनों को पढ़ोगे जो मैं तुम्हें दूंगा ।
- 21 उन बातों को मत छूना जो मुहरबंद हैं, क्योंकि मैं उन्हें स्वयं उचित समय पर प्रकट करूंगा; क्योंकि मैं मानव संतान को दिखाऊंगा कि मैं अपने स्वयं का कार्य करने में समर्थ हूँ ।
- 22 इसलिए, जब तुम इन वचनों को पढ़ चुको जिन्हें पढ़ने की आज्ञा मैंने तुम्हें दी है, और उन गवाहों को प्राप्त कर लो जिसकी प्रतिज्ञा मैंने तुम से की है, तब तुम इस पुस्तक को फिर से मुहरबंद करना, और मुझ में छिपा देना, ताकि मैं उन वचनों को सुरक्षित रख सकूँ जिसे तुमने नहीं पढ़ा है, जब तक कि मैं अपने स्वयं के विवेकानुसार सब बातों को मानव संतान को प्रकट करने के लिए उचित समय नहीं आ जाता ।
- 23 क्योंकि देखो, मैं परमेश्वर हूँ; और मैं चमत्कारों का परमेश्वर हूँ; और मैं संसार को दिखाऊंगा कि मैं कल, आज, और हमेशा एक समान हूँ; और मैं मानव संतान के बीच उनके विश्वास के अनुसार ही काम करता हूँ ।
- 24 और फिर ऐसा होगा कि प्रभु जिसे इन वचनों को पढ़ने के लिए देगा वह उससे कहेगा:
- 25 क्योंकि यह लोग जितना अपने मुंह से मेरे निकट हैं, और अपने होंठों से मेरा आदर करते हैं, लेकिन वे अपने हृदयों से मुझे उतने ही दूर रखते हैं, और मनुष्यों के उपदेशों के कारण वे मुझ से डरते हैं—
- 26 इसलिए, मैं इन लोगों के बीच मे एक आश्चर्यजनक काम करूंगा, हां, एक आश्चर्यजनक और अदभुत काम, क्योंकि उनके बुद्धिमान और ज्ञानी का विवेक नष्ट हो जाएगा, और उनके बुद्धिमान की समझ छिपा दी जाएगी ।

And now, because of the glory of the world and to get gain will they say this, and not for the glory of God.

And the man shall say: I cannot bring the book, for it is sealed.

Then shall the learned say: I cannot read it.

Wherefore it shall come to pass, that the Lord God will deliver again the book and the words thereof to him that is not learned; and the man that is not learned shall say: I am not learned.

Then shall the Lord God say unto him: The learned shall not read them, for they have rejected them, and I am able to do mine own work; wherefore thou shalt read the words which I shall give unto thee.

Touch not the things which are sealed, for I will bring them forth in mine own due time; for I will show unto the children of men that I am able to do mine own work.

Wherefore, when thou hast read the words which I have commanded thee, and obtained the witnesses which I have promised unto thee, then shalt thou seal up the book again, and hide it up unto me, that I may preserve the words which thou hast not read, until I shall see fit in mine own wisdom to reveal all things unto the children of men.

For behold, I am God; and I am a God of miracles; and I will show unto the world that I am the same yesterday, today, and forever; and I work not among the children of men save it be according to their faith.

And again it shall come to pass that the Lord shall say unto him that shall read the words that shall be delivered him:

Forasmuch as this people draw near unto me with their mouth, and with their lips do honor me, but have removed their hearts far from me, and their fear towards me is taught by the precepts of men—

Therefore, I will proceed to do a marvelous work among this people, yea, a marvelous work and a wonder, for the wisdom of their wise and learned shall perish, and the understanding of their prudent shall be hid.

27 और उन पर हाथ जो अपनी सलाह को प्रभु से छिपा कर रखने का प्रयास करते हैं ! और उनके काम अंधकार के हैं; और वे कहते हैं: हमें कौन देखता है, और हमें कौन जानता है ? और वे यह भी कहते हैं: अवश्य ही, तुम्हारी उलटी बातें कुम्हार की मिट्टी के समान समझी जाएंगी । लेकिन देखो, सेनाओं का प्रभु कहता मैं उन्हें दिखाऊंगा कि मैं उनके सब कामों को जानता हूँ । क्योंकि क्या बनाई गई वस्तु अपने बनाने वाले के विषय में कहे कि उसने मुझे नहीं बनाया ? या रची गई वस्तु अपने रचने वाले के विषय में कहे, उसे कोई समझ नहीं है ?

28 लेकिन सुनो, सेनाओं का प्रभु कहता है: मैं मानव संतान को दिखाऊंगा कि थोड़े ही दिनों में लबनोन को एक उपजाऊ खेत बनाया जाएगा; और उपजाऊ खेत को जंगल के समान समझा जाएगा ।

29 और उस दिन बहरा भी इस पुस्तक के वचनों को सुनेगा, और अंधे की आंखें अंधकार और अज्ञानता के बाहर देख सकेंगी ।

30 और विनम्र भी उन्नति करेंगे, और उनका आनंद प्रभु में होगा, और मनुष्यों में गरीब इस्राएल के एकमेव परमेश्वर में आनंदित होंगे ।

31 क्योंकि जब तक प्रभु जीवित है वे देखेंगे कि भयंकर अत्याचारी को शून्य कर दिया जाएगा, और नफरत करने वाले को निगल लिया जाएगा, और वे सब जो दुष्टता की ताक में रहते हैं अलग कर दिए जाएंगे;

32 और वे जो मनुष्य को एक वचन के लिए दोषी ठहराते हैं, और उसको फंसाने के लिए जाल बिछाते हैं कि वह द्वार के अंदर झिड़की खाए, और तुच्छ बात के लिए धार्मिक का तिरस्कार करते हैं ।

33 इसलिए, प्रभु इस प्रकार कहता है, जिसने याकूब के घराने के इब्राहीम को बचाया था: याकूब को अब लज्जित नहीं होना पड़ेगा, न ही उसका चहेरा पीला पड़ेगा ।

34 लेकिन जब वह अपने बच्चों को देखेगा वह मेरे हाथों के काम को अपने बीच में पाएगा, वे मेरे नाम की प्रशंसा करेंगे, और याकूब के पवित्र प्रभु की प्रशंसा करेंगे, और इस्राएल के परमेश्वर से भय खाएंगे ।

35 वे भी जिन्होंने आत्मा में भूल की थी समझ जाएंगे, और वे जो बड़बड़ाते थे सिद्धांतों को सीखेंगे ।

And wo unto them that seek deep to hide their counsel from the Lord! And their works are in the dark; and they say: Who seeth us, and who knoweth us? And they also say: Surely, your turning of things upside down shall be esteemed as the potter's clay. But behold, I will show unto them, saith the Lord of Hosts, that I know all their works. For shall the work say of him that made it, he made me not? Or shall the thing framed say of him that framed it, he had no understanding?

But behold, saith the Lord of Hosts: I will show unto the children of men that it is yet a very little while and Lebanon shall be turned into a fruitful field; and the fruitful field shall be esteemed as a forest.

And in that day shall the deaf hear the words of the book, and the eyes of the blind shall see out of obscurity and out of darkness.

And the meek also shall increase, and their joy shall be in the Lord, and the poor among men shall rejoice in the Holy One of Israel.

For assuredly as the Lord liveth they shall see that the terrible one is brought to naught, and the scorner is consumed, and all that watch for iniquity are cut off;

And they that make a man an offender for a word, and lay a snare for him that reproveth in the gate, and turn aside the just for a thing of naught.

Therefore, thus saith the Lord, who redeemed Abraham, concerning the house of Jacob: Jacob shall not now be ashamed, neither shall his face now wax pale.

But when he seeth his children, the work of my hands, in the midst of him, they shall sanctify my name, and sanctify the Holy One of Jacob, and shall fear the God of Israel.

They also that erred in spirit shall come to understanding, and they that murmured shall learn doctrine.

## 2 नफी 28

- 1 और अब, मेरे भाइयों, सुनो, मैंने तुमसे आत्मा के अनुसार बातें कही हैं; इसलिए मैं जानता हूँ कि वे अवश्य ही पूरी होंगी।
- 2 और जो बातें इस पुस्तक में लिखी जाएंगी वे मानव संतान के लिए बहुत महत्व की होंगी, और विशेषकर हमारे वंश के लिए, जो कि इस्राएल के घराने के अवशेष हैं।
- 3 क्योंकि ऐसा होगा कि उस दिन वे गिरजे जो प्रभु के लिए नहीं बनाए जाएंगे, वे एक दूसरे से कहेंगे: देखो, मैं प्रभु का गिरजा हूँ; और दूसरा कहेगा: मैं प्रभु का गिरजा हूँ; और इस प्रकार गिरजों को बनाने वाले भी कहेंगे, और प्रभु को नहीं सुनेंगे—
- 4 और वे एक दूसरे के साथ विवाद करेंगे; और उनके याजक एक दूसरे के साथ विवाद करेंगे, और वे अपनी समझ के साथ सीखाएंगे, और पवित्र आत्मा को अस्वीकार करेंगे, जो उन्हें प्रेरणा देती है।
- 5 और इस्राएल के एकमेव परमेश्वर की शक्ति को अस्वीकार करेंगे; और लोगों से कहेंगे: हमारी बातों को ध्यान से सुनो, और तुम हमारे उपदेशों को सुनो; क्योंकि देखो आज कोई परमेश्वर नहीं है, क्योंकि प्रभु और मुक्तिदाता ने अपना कार्य कर दिया है, और उसने अपनी शक्ति मनुष्य को दे दी है;
- 6 देखो, तुम मेरे उपदेशों पर ध्यान दो; यदि कोई कहता है कि प्रभु के हाथ से चमत्कार होते हैं, उसका विश्वास मत करना; क्योंकि आजकल वह चमत्कारों का परमेश्वर नहीं है; उसने अपना कार्य कर दिया है।
- 7 हां, और बहुत से होंगे जो कहेंगे: खाओ, पियो, और मजे करो, क्योंकि कल हमें मर जाना है; और हमारे साथ अच्छा ही होगा।
- 8 और बहुत से ऐसे भी होंगे जो कहेंगे: खाओ, पियो, और मजे करो; फिर भी, परमेश्वर से भय करो—वह छोटे पाप को क्षमा कर देगा; हां, छोटा झूठ, दूसरों की बातों से लाभ उठाओ, अपने पड़ोसियों के लिए गद्दा खोदो; ऐसा करने में कोई नुकसान नहीं है; और इन सब कामों को करो, क्योंकि कल हम मर जाएंगे; और यदि हम अपराधी ठहराए जाते हैं, तो परमेश्वर हमें कुछ कोड़े मारेगा, और अंत में हम परमेश्वर के राज्य में बचा लिए जाएंगे।

## 2 Nephi 28

And now, behold, my brethren, I have spoken unto you, according as the Spirit hath constrained me; wherefore, I know that they must surely come to pass.

And the things which shall be written out of the book shall be of great worth unto the children of men, and especially unto our seed, which is a remnant of the house of Israel.

For it shall come to pass in that day that the churches which are built up, and not unto the Lord, when the one shall say unto the other: Behold, I, I am the Lord's; and the others shall say: I, I am the Lord's; and thus shall every one say that hath built up churches, and not unto the Lord—

And they shall contend one with another; and their priests shall contend one with another, and they shall teach with their learning, and deny the Holy Ghost, which giveth utterance.

And they deny the power of God, the Holy One of Israel; and they say unto the people: Hearken unto us, and hear ye our precept; for behold there is no God today, for the Lord and the Redeemer hath done his work, and he hath given his power unto men;

Behold, hearken ye unto my precept; if they shall say there is a miracle wrought by the hand of the Lord, believe it not; for this day he is not a God of miracles; he hath done his work.

Yea, and there shall be many which shall say: Eat, drink, and be merry, for tomorrow we die; and it shall be well with us.

And there shall also be many which shall say: Eat, drink, and be merry; nevertheless, fear God—he will justify in committing a little sin; yea, lie a little, take the advantage of one because of his words, dig a pit for thy neighbor; there is no harm in this; and do all these things, for tomorrow we die; and if it so be that we are guilty, God will beat us with a few stripes, and at last we shall be saved in the kingdom of God.

- 9 हां, और बहुत से होंगे जो इस प्रकार के झूठे और निरर्थक और मूर्खतापूर्ण सिद्धांत सीखाएंगे, और अपने हृदयों में फूले नहीं समाएंगे, और प्रभु से अपने सलाहों को छिपाने का भारी प्रत्यन करेंगे; और उनके कर्म अंधकार में किये जाने वाले होंगे ।
- 10 और संतो का लहू उनके विरुद्ध धरती से पुकारेगा ।
- 11 हां, वे मार्ग से भटक जाएंगे; वे भ्रष्ट हो जाएंगे ।
- 12 घमंड के कारण, और झूठे शिक्षकों, और झूठे सिद्धांतों के कारण, उनके गिरजे भ्रष्ट हो गए हैं, और उनके गिरजे ऊपर उठे हुए हैं; घमंड के कारण वे फूले हुए हैं ।
- 13 अपने सुंदर गिरजों के कारण वे गरीब को लूटते हैं; अपने सुंदर कपड़ों के कारण वे गरीब को लूटते हैं; और वे विनम्र और हृदय से गरीब को सताते हैं, अपने घमंड के कारण वे फूले हुए हैं ।
- 14 उनकी गर्दनें अकड़ी हुईं और सिर ऊंचे हैं; हां, घमंड, और दुष्टता, और घृणा के कामों, और दुराचारों के कारण, वे सब मार्ग से भटक गए हैं सिवाय कुछ के, जो मसीह के दीन अनुयायी हैं; फिर भी, उनका मार्गदर्शन किया जाता है, कि वे बहुत सी भूल करते हैं क्योंकि वे मनुष्य के सीखाए उपदेशों पर चलते हैं ।
- 15 हे बुद्धिमान, और समझदार, और धनी जो हृदयों के घमंड से फूले हुए हो, और सब जो झूठे सिद्धांत सीखाते हो, और सब जो दुराचार करते हो, और प्रभु के सही मार्ग को दूषित करते हो, हाय, हाय, हाय, उन पर, सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर कहता है, क्योंकि वे नरक में धकेल दिए जाएंगे !
- 16 हाय उन पर जो व्यर्थ में न्याय पर चलने वालों का पथ भ्रष्ट करते हैं और सही बातों की निंदा करते हैं और कहते हैं कि यह महत्वहीन है ! क्योंकि वह दिन आने वाला है कि प्रभु परमेश्वर शीघ्र ही पृथ्वी के लोगों से भेंट करने आएगा; और उस दिन वे जिनका घड़ा अधर्म से भर चुका है नष्ट हो जाएंगे ।
- 17 लेकिन देखो, यदि पृथ्वी के निवासी अपनी दुष्टता और घृणित कार्यों से पश्चाताप करेंगे वे नष्ट नहीं किये जाएंगे, सेनाओं का प्रभु कहता है ।
- 18 लेकिन देखो, वह विशाल और घृणित गिरजा, सारे विश्व की वेश्या, अवश्य ही धरती पर गिरेगा, और इसका गिरना बहुत भयंकर होगा ।

Yea, and there shall be many which shall teach after this manner, false and vain and foolish doctrines, and shall be puffed up in their hearts, and shall seek deep to hide their counsels from the Lord; and their works shall be in the dark.

And the blood of the saints shall cry from the ground against them.

Yea, they have all gone out of the way; they have become corrupted.

Because of pride, and because of false teachers, and false doctrine, their churches have become corrupted, and their churches are lifted up; because of pride they are puffed up.

They rob the poor because of their fine sanctuaries; they rob the poor because of their fine clothing; and they persecute the meek and the poor in heart, because in their pride they are puffed up.

They wear stiff necks and high heads; yea, and because of pride, and wickedness, and abominations, and whoredoms, they have all gone astray save it be a few, who are the humble followers of Christ; nevertheless, they are led, that in many instances they do err because they are taught by the precepts of men.

O the wise, and the learned, and the rich, that are puffed up in the pride of their hearts, and all those who preach false doctrines, and all those who commit whoredoms, and pervert the right way of the Lord, wo, wo, wo be unto them, saith the Lord God Almighty, for they shall be thrust down to hell!

Wo unto them that turn aside the just for a thing of naught and revile against that which is good, and say that it is of no worth! For the day shall come that the Lord God will speedily visit the inhabitants of the earth; and in that day that they are fully ripe in iniquity they shall perish.

But behold, if the inhabitants of the earth shall repent of their wickedness and abominations they shall not be destroyed, saith the Lord of Hosts.

But behold, that great and abominable church, the whore of all the earth, must tumble to the earth, and great must be the fall thereof.



- 19 क्योंकि शैतान का राज्य अवश्य ही कांपेगा, और वे जो इससे संबंध रखते हैं उन्हें पश्चाताप करने की जरूरत है, वरना शैतान उन्हें अपनी अनंत जंजीर में जकड़ लेगा, और वे क्रोधित होंगे, और नष्ट हो जाएंगे ।
- 20 क्योंकि देखो, उस दिन वह मानव संतान के हृदयों में द्वेष उत्पन्न करेगा, और उन्हें भलाई के विरुद्ध उत्तेजित करेगा ।
- 21 और दूसरों को वह शांत करेगा, और उन्हें सांसारिक सुरक्षा का धोखा देगा, कि वे कहेंगे: सिय्योन में सब कुछ ठीक है; हां, सिय्योन संपन्न है, सब कुछ ठीक है—और इस प्रकार शैतान उनकी आत्माओं को धोखा देगा, और जानबूझकर उन्हें नरक में ले जाएगा ।
- 22 और देखो, दूसरों को वह झूठी प्रशंसा करके बहकाता है, और उन से कहता है कोई नरक नहीं है; और वह उनसे कहता है; मैं शैतान नहीं हूँ, क्योंकि कोई शैतान नहीं है—और वह इस प्रकार उनके कानों में फुसफुसाता है, जब तक कि वह अपनी भयंकर जजीरों में जकड़ नहीं लेता, जिस से बचना असंभव है ।
- 23 हां, वे मृत्यु, और नरक के पंजे में जकड़ लिए जाते हैं; और मृत्यु, और नरक, और शैतान, और इनमें फंसे सब लोग अपने कामों के अनुसार न्याय के लिए परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होंगे, और वहां से वे उस स्थान में जाएंगे जो उनके लिए तैयार किया गया है, यहां तक कि आग और गंधक की झील, जहां अंतहीन कष्ट है ।
- 24 इसलिए, उस पर हाय जो सिय्योन में आराम से है !
- 25 हाय उस पर जो कहता है: सबकुछ ठीक है !
- 26 हां, उस पर हाय जो मनुष्यों के उपदेशों पर ध्यान देते हैं, और परमेश्वर की शक्ति, और पवित्र आत्मा के उपहार को अस्वीकार करते हैं !
- 27 हां, उस पर हाय जो कहता: हमने सबकुछ पा लिया, और हमें अधिक नहीं चाहिए !
- 28 और अन्य शब्दों में, हाय उन सभी पर जो परमेश्वर की सच्चाई से कांपते, और क्रोधित होते हैं ! क्योंकि देखो, वह जिसने चट्टान पर निर्माण किया है वह आनंद से स्वीकार करता है; और जिसने रेत पर निर्माण की नींव रखी है वह इसके गिरने के भय से कांपता है ।
- 29 हाय उस पर जो कहता है: हमने परमेश्वर के वचन को पा लिया है, और हमें परमेश्वर के अधिक वचनों की जरूरत नहीं है, क्योंकि हमारे पास पर्याप्त है ।

For the kingdom of the devil must shake, and they which belong to it must needs be stirred up unto repentance, or the devil will grasp them with his everlasting chains, and they be stirred up to anger, and perish;

For behold, at that day shall he rage in the hearts of the children of men, and stir them up to anger against that which is good.

And others will he pacify, and lull them away into carnal security, that they will say: All is well in Zion; yea, Zion prospereth, all is well—and thus the devil cheateth their souls, and leadeth them away carefully down to hell.

And behold, others he flattereth away, and telleth them there is no hell; and he saith unto them: I am no devil, for there is none—and thus he whispereth in their ears, until he grasps them with his awful chains, from whence there is no deliverance.

Yea, they are grasped with death, and hell; and death, and hell, and the devil, and all that have been seized therewith must stand before the throne of God, and be judged according to their works, from whence they must go into the place prepared for them, even a lake of fire and brimstone, which is endless torment.

Therefore, wo be unto him that is at ease in Zion!

Wo be unto him that crieth: All is well!

Yea, wo be unto him that hearkeneth unto the precepts of men, and denieth the power of God, and the gift of the Holy Ghost!

Yea, wo be unto him that saith: We have received, and we need no more!

And in fine, wo unto all those who tremble, and are angry because of the truth of God! For behold, he that is built upon the rock receiveth it with gladness; and he that is built upon a sandy foundation trembleth lest he shall fall.

Wo be unto him that shall say: We have received the word of God, and we need no more of the word of God, for we have enough!

30 क्योंकि देखो, प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कहता है: मैं मानव संतान को नियम पर नियम, आज्ञा पर आज्ञा, थोड़ा यहां, थोड़ा वहां दूंगा; और आशीषित हैं वे जो मेरे उपदेशों पर ध्यान देते हैं, और मेरी सलाह पर कान लगाते हैं, क्योंकि वे ज्ञान की बातें सीखेंगे; क्योंकि वह जो पाता है उसे मैं अधिक दूंगा; और जो कहते हैं, हमारे पास पर्याप्त है, उनसे वे भी ले लिया जाएगा जो उनके पास है।

31 शापित है वह जो पवित्र आत्मा की शक्ति से दिए उपदेशों के अपेक्षा अपना भरोसा मनुष्य में रखता है, या संसारिक शक्ति को बढ़ाता है, या मनुष्य के उपदेशों पर ध्यान देता है,

32 हाय अन्यजातियों पर, सेनाओं का प्रभु परमेश्वर कहता है ! क्योंकि वे मुझे अस्वीकार करेंगे, फिर भी मैं दिन प्रतिदिन अपनी बांह उनकी ओर बढ़ाऊंगा; प्रभु परमेश्वर कहता है, मैं फिर भी, उन पर दयालु बना रहूंगा यदि वे पश्चाताप करते हैं और मेरे पास आते हैं; क्योंकि मेरी बांह पूरे दिन बढ़ी रहती है, सेनाओं का प्रभु परमेश्वर कहता है।

For behold, thus saith the Lord God: I will give unto the children of men line upon line, precept upon precept, here a little and there a little; and blessed are those who hearken unto my precepts, and lend an ear unto my counsel, for they shall learn wisdom; for unto him that receiveth I will give more; and from them that shall say, We have enough, from them shall be taken away even that which they have.

Cursed is he that putteth his trust in man, or maketh flesh his arm, or shall hearken unto the precepts of men, save their precepts shall be given by the power of the Holy Ghost.

Wo be unto the Gentiles, saith the Lord God of Hosts! For notwithstanding I shall lengthen out mine arm unto them from day to day, they will deny me; nevertheless, I will be merciful unto them, saith the Lord God, if they will repent and come unto me; for mine arm is lengthened out all the day long, saith the Lord God of Hosts.

## 2 नफी 29

- 1 लेकिन देखो, उस दिन बहुत से लोग होंगे जब मैं उनके बीच आश्चर्यजनक काम करूंगा, ताकि मैं अपने अनुबंधों को याद कर सकूँ जो मैंने मानव संतान के साथ बनाए हैं, कि मैं अपने लोगों को बचाने के लिए अपना हाथ फिर से बढ़ाऊँ, जो इस्राएल के घराने के हैं;
- 2 और इसलिए भी, ताकि मैं अपनी उन प्रतिज्ञाओं को याद कर सकूँ जो मैंने, नफी, तुम्हारे और तुम्हारे पिता के साथ बनाई हैं, कि मैं तुम्हारे वंश को याद रखूँगा; और कि तुम्हारे वंश के वचन मेरे मुँह से निकलकर तुम्हारे वंश के बीच चली जाएँ; और मेरे वचन पृथ्वी के हर छोर पर फुसफुसाए जाएंगे, मेरे लोगों के लिए आदर्श होंगे, जोकि इस्राएल के घराने के हैं;
- 3 और क्योंकि मेरे वचन फुसफुसाए जाएंगे—इसलिए बहुत सी अन्यजातियाँ कहेंगी: बाइबिल ! बाइबिल ! हमारे पास बाइबिल है, और दूसरी कोई बाइबिल नहीं हो सकती ।
- 4 लेकिन प्रभु परमेश्वर कहता है: हे मूर्खों, उनके पास बाइबिल होगी; और यह मेरे प्राचीन अनुबंधित लोगों, यहूदियों द्वारा लाई जाएगी । और यहूदियों से बाइबिल प्राप्त करके वे उनके कितने आभारी होंगे ? हाँ, अन्यजातियों का क्या अर्थ है ? क्या उन्हें यहूदियों की घोर पीड़ा, और परिश्रम, और दर्द, और अन्यजातियों के लिए उद्धार लाने में मेरे प्रति उनकी लगन याद है,
- 5 हे तुम अन्यजातियों, क्या तुम्हें मेरे प्राचीन अनुबंधित लोगों की याद है ? नहीं; लेकिन तुमने उन्हें शापित किया है, और उनसे नफरत की है, और बचाने की कोशिश नहीं की है । लेकिन देखो, मैं इन सब बातों को वापस तुम्हारे सिरों पर डालूँगा; क्योंकि मैं प्रभु अपने लोगों को भूला नहीं हूँ ।
- 6 तुम मूर्ख ये कहोगे: बाइबिल, हमारे पास बाइबिल है, और हमें दूसरी बाइबिल नहीं चाहिए । क्या यहूदियों द्वारा दी गई बाइबिल के अलावा तुम्हारे पास कोई बाइबिल है ?
- 7 क्या तुम नहीं जानते कि एक से अधिक राष्ट्र हैं ? क्या तुम नहीं जानते कि मैं, प्रभु तुम्हारे परमेश्वर, ने सभी मनुष्य की रचना की है, और कि मैं उन्हें भी याद रखता हूँ जो समुद्र के द्वीपों पर रहते हैं; और कि मैं ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथ्वी पर शासन करता हूँ; और मैं अपने वचन मानव संतान के बीच लाता हूँ, हाँ, यहां तक कि पृथ्वी के सभी राष्ट्रों में भी ?

## 2 Nephi 29

But behold, there shall be many—at that day when I shall proceed to do a marvelous work among them, that I may remember my covenants which I have made unto the children of men, that I may set my hand again the second time to recover my people, which are of the house of Israel;

And also, that I may remember the promises which I have made unto thee, Nephi, and also unto thy father, that I would remember your seed; and that the words of your seed should proceed forth out of my mouth unto your seed; and my words shall hiss forth unto the ends of the earth, for a standard unto my people, which are of the house of Israel;

And because my words shall hiss forth—many of the Gentiles shall say: A Bible! A Bible! We have got a Bible, and there cannot be any more Bible.

But thus saith the Lord God: O fools, they shall have a Bible; and it shall proceed forth from the Jews, mine ancient covenant people. And what thank they the Jews for the Bible which they receive from them? Yea, what do the Gentiles mean? Do they remember the travails, and the labors, and the pains of the Jews, and their diligence unto me, in bringing forth salvation unto the Gentiles?

O ye Gentiles, have ye remembered the Jews, mine ancient covenant people? Nay; but ye have cursed them, and have hated them, and have not sought to recover them. But behold, I will return all these things upon your own heads; for I the Lord have not forgotten my people.

Thou fool, that shall say: A Bible, we have got a Bible, and we need no more Bible. Have ye obtained a Bible save it were by the Jews?

Know ye not that there are more nations than one? Know ye not that I, the Lord your God, have created all men, and that I remember those who are upon the isles of the sea; and that I rule in the heavens above and in the earth beneath; and I bring forth my word unto the children of men, yea, even upon all the nations of the earth?

- 8 तुम किसलिए बड़बड़ करते हो, क्या इसलिए कि तुम्हें मेरे अधिक वचन प्राप्त होंगे ? क्या तुम यह नहीं जानते कि दो राष्ट्रों की गवाही इस बात की साक्षी है कि मैं परमेश्वर हूँ, कि मैं एक राष्ट्र को दूसरे के समान याद करता हूँ ? इसलिए, मैं वही वचन एक राष्ट्र से बोलता हूँ जैसा मैं दूसरे राष्ट्र के साथ बोलता हूँ । और जब दो राष्ट्रों की गवाही एक समान होगी तो दोनों राष्ट्र एक साथ मिलकर भी चलेंगे ।
- 9 और मैं ऐसा इसलिए करता हूँ ताकि मैं साबित कर सकूँ कि मैं कल, आज, और हमेशा एक समान हूँ; और कि मैं अपनी इच्छा के अनुसार अपने वचनों को बोलता हूँ । और जब मैं एक वचन बोल चुका हूँ तो तुम यह न समझना कि मैं दूसरा वचन नहीं बोल सकता; क्योंकि मेरा काम अभी समाप्त नहीं हुआ है; न ही यह मनुष्य के अंत तक समाप्त होगा, न ही उसके बाद कभी समाप्त होगा ।
- 10 इसलिए, तुम एक बाइबिल अपने पास होने से यह न समझ लेना कि उसमें मेरे सारे वचन सम्मिलित हैं; न ही तुम यह समझना कि मैंने अधिक लिखने से मना किया है ।
- 11 क्योंकि मैं सभी मनुष्यों को, पूरब में और पश्चिम में, और उत्तर में, और दक्षिण में, और समुद्र के द्वीपों पर हर जगह आज्ञा देता हूँ, कि वे उन वचनों को लिखेंगे जो मैं उनसे बोलूंगा; क्योंकि लिखी हुई पुस्तकों के आधार पर मैं संसार का न्याय करूंगा, प्रत्येक मनुष्य का उसके कामों के अनुसार न्याय होगा जो कि लिखा जाएगा ।
- 12 क्योंकि सुनो, मैं यहूदियों से बोलूंगा और वे लिखेंगे; और मैं नफाइयों को अपने वचन बोलूंगा और वे लिखेंगे; और मैं इस्राएल के घराने की अन्य जातियों से भी बोलूंगा, जिनको मैं निकाल कर लाया हूँ, और वे भी लिखेंगे; और पृथ्वी के सभी राष्ट्रों से भी बोलूंगा और वे भी लिखेंगे ।
- 13 और ऐसा होगा कि यहूदियों को नफाइयों के वचन मिलेंगे, और नफाइयों को यहूदियों के वचन प्राप्त होंगे; और नफाइयों और यहूदियों को इस्राएल की खोई हुई जातियों के वचन मिलेंगे; और इस्राएल की खोई हुई जातियों को नफाइयों और यहूदियों के वचन मिलेंगे ।

Wherefore murmur ye, because that ye shall receive more of my word? Know ye not that the testimony of two nations is a witness unto you that I am God, that I remember one nation like unto another? Wherefore, I speak the same words unto one nation like unto another. And when the two nations shall run together the testimony of the two nations shall run together also.

And I do this that I may prove unto many that I am the same yesterday, today, and forever; and that I speak forth my words according to mine own pleasure. And because that I have spoken one word ye need not suppose that I cannot speak another; for my work is not yet finished; neither shall it be until the end of man, neither from that time henceforth and forever.

Wherefore, because that ye have a Bible ye need not suppose that it contains all my words; neither need ye suppose that I have not caused more to be written.

For I command all men, both in the east and in the west, and in the north, and in the south, and in the islands of the sea, that they shall write the words which I speak unto them; for out of the books which shall be written I will judge the world, every man according to their works, according to that which is written.

For behold, I shall speak unto the Jews and they shall write it; and I shall also speak unto the Nephites and they shall write it; and I shall also speak unto the other tribes of the house of Israel, which I have led away, and they shall write it; and I shall also speak unto all nations of the earth and they shall write it.

And it shall come to pass that the Jews shall have the words of the Nephites, and the Nephites shall have the words of the Jews; and the Nephites and the Jews shall have the words of the lost tribes of Israel; and the lost tribes of Israel shall have the words of the Nephites and the Jews.

14 और ऐसा होगा कि मेरे लोग, जो कि इस्राएल के घराने के हैं, अपने पैतृक प्रदेशों में वापस एकत्रित होंगे; और मेरे वचन भी एक में एकत्रित किये जाएंगे। और उन्हें दिखाऊंगा जो मेरे वचन और मेरे लोगों, जो कि इस्राएल के घराने के हैं, के साथ युद्ध करते हैं, कि मैं परमेश्वर हूँ, और कि मैंने इब्राहीम के साथ अनुबंध किया था कि मैं उसके वंश को सदैव याद रखूंगा।

And it shall come to pass that my people, which are of the house of Israel, shall be gathered home unto the lands of their possessions; and my word also shall be gathered in one. And I will show unto them that fight against my word and against my people, who are of the house of Israel, that I am God, and that I covenanted with Abraham that I would remember his seed forever.

## 2 नफी 30

- 1 और अब सुनो, मेरे प्रिय भाइयों, मैं तुमसे बातें करूंगा; क्योंकि मैं, नफी, नहीं चाहूंगा कि तुम अपने आपको अन्यजातियों से अधिक धार्मिक समझने लगे। क्योंकि देखो, यदि तुमने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं किया तो तुम सब उसी तरह नष्ट हो जाओगे; और बोले गए वचनों के कारण तुम यह नहीं समझना कि अन्यजातियां पूर्ण रूप से नष्ट हो गई हैं।
- 2 क्योंकि देखो, मैं तुम से कहता हूँ कि अन्यजातियों के जितने लोग पश्चाताप करेंगे वे प्रभु के अनुबंधित लोग होंगे; और यहूदियों में से जितने लोग पश्चाताप नहीं करेंगे वे अलग कर दिए जाएंगे; क्योंकि प्रभु किसी के साथ अनुबंध नहीं बनाता सिवाय उनके जो पश्चाताप करते और उसके पुत्र में विश्वास करते हैं।
- 3 और अब, मैं यहूदियों और अन्यजातियों के विषय में कुछ भविष्यवाणियां करूंगा। क्योंकि जिस पुस्तक के विषय में मैंने कहा है उसके प्रकट होने, और अन्यजातियों के लिए लिखे जाने और फिर से प्रभु में मुहरबंद किये जाने के बाद, बहुत से होंगे जो उन वचनों पर विश्वास करेंगे जो लिखे गए हैं; और वे उन्हें हमारे वंश के बचे हुए लोगों के पास पहुंचाएंगे।
- 4 और फिर हमारे बचे हुए वंश हमारे संबंध में जानेंगे, कि हम कैसे यरूशलेम से निकल कर आए थे, और कि वे यहूदियों के वंशज हैं।
- 5 और यीशु मसीह का सुसमाचार उनके बीच घोषित किया जाएगा; इसलिए, उन्हें उनके पूर्वजों का ज्ञान, और यीशु मसीह का ज्ञान भी पुनः स्थापित किया जाएगा, जो उनके पूर्वजों के बीच में था।
- 6 और फिर वे आनंद मनाएंगे; क्योंकि वे जानेंगे कि यह उनके लिए परमेश्वर के हाथ द्वारा यह आशीष प्राप्त हुई है; और उनकी आंखों से अंधकार का परदा गिरने लगेगा; और उनके बीच बहुत सी पीढ़ियां नहीं गुजरेंगी, जब तक कि वे शुद्ध और आनंदमय लोग नहीं हो जाएंगे।
- 7 और ऐसा होगा कि यहूदी जो बिखेर दिए गए थे वे भी मसीह में विश्वास करने लगेंगे; और वे प्रदेश में एकत्रित होने लगेंगे; और जितने लोग मसीह में विश्वास करेंगे वे भी आनंदमय लोग हो जाएंगे।

## 2 Nephi 30

And now behold, my beloved brethren, I would speak unto you; for I, Nephi, would not suffer that ye should suppose that ye are more righteous than the Gentiles shall be. For behold, except ye shall keep the commandments of God ye shall all likewise perish; and because of the words which have been spoken ye need not suppose that the Gentiles are utterly destroyed.

For behold, I say unto you that as many of the Gentiles as will repent are the covenant people of the Lord; and as many of the Jews as will not repent shall be cast off; for the Lord covenanteth with none save it be with them that repent and believe in his Son, who is the Holy One of Israel.

And now, I would prophesy somewhat more concerning the Jews and the Gentiles. For after the book of which I have spoken shall come forth, and be written unto the Gentiles, and sealed up again unto the Lord, there shall be many which shall believe the words which are written; and they shall carry them forth unto the remnant of our seed.

And then shall the remnant of our seed know concerning us, how that we came out from Jerusalem, and that they are descendants of the Jews.

And the gospel of Jesus Christ shall be declared among them; wherefore, they shall be restored unto the knowledge of their fathers, and also to the knowledge of Jesus Christ, which was had among their fathers.

And then shall they rejoice; for they shall know that it is a blessing unto them from the hand of God; and their scales of darkness shall begin to fall from their eyes; and many generations shall not pass away among them, save they shall be a pure and a delightful people.

And it shall come to pass that the Jews which are scattered also shall begin to believe in Christ; and they shall begin to gather in upon the face of the land; and as many as shall believe in Christ shall also become a delightful people.

- 8 और ऐसा होगा कि प्रभु परमेश्वर सब राष्ट्रों, जातियों, भाषाओं, लोगों के बीच पृथ्वी पर अपने लोगों को पुनःस्थापित करने का अपना काम आरंभ करेगा ।
- 9 और धार्मिकता के साथ प्रभु परमेश्वर गरीब का न्याय करेगा, और पृथ्वी के नम्र लोगों का न्याय समानता से करेगा । और वह पृथ्वी को अपने मुंह के वचन के सोटों से दंड देगा; और अपनी फूंक से वह दुष्ट का वध करेगा ।
- 10 क्योंकि समय शीघ्रता से आता है कि प्रभु परमेश्वर लोगों के बीच बड़ा विभाजन करेगा, और वह दुष्टों को नष्ट करेगा; और वह अपने लोगों को छोड़ देगा, हां, बेशक उसे दुष्टों को आग से नष्ट करना पड़े ।
- 11 और धार्मिकता उसकी कमर की पेटी होगी, और विश्वसनीयता उसकी बागडोर होगी ।
- 12 और तब भेड़िया मेमने के साथ रहेगा; और चीता बकरी के बच्चे के साथ लेटेगा, और बछड़ा, और शेर का बच्चा, और पाला पोसा हुआ बैल, एक साथ रहेंगे; और एक छोटा बच्चा उनको लेकर जाएगा ।
- 13 और गाय और भालू एक साथ चरेंगे; और उनके बच्चे इकट्ठा लेटेंगे; और शेर बैल के समान भूसा खाएगा ।
- 14 और दूध पीता बच्चा विषधर सांप के बिल के पास खेलेगा, और दुध छुड़ाया बच्चा अपना हाथ नाग के बिल में डालेगा ।
- 15 वे मेरे सारे पवित्र पर्वतों को हानि न तो पहुंचाएंगे न ही नष्ट करेंगे; क्योंकि संपूर्ण पृथ्वी प्रभु के ज्ञान से भरी होगी जैसे समुद्र पानी से भरा रहता है ।
- 16 इसलिए, सभी राष्ट्रों की बातें बताई जाएंगी; हां, सभी बातें मानव संतान को बताई जाएंगी ।
- 17 कोई भी ऐसी गुप्त बात नहीं होगी जिसे बताया नहीं जाएगा; अंधकार का कोई भी कार्य ऐसा नहीं होगा जिसे प्रकाश में प्रकट नहीं किया जाएगा; और पृथ्वी पर ऐसा कुछ भी मुहरबंद नहीं होगा जिसे खोला नहीं जाएगा ।
- 18 इसलिए, सभी बातें जिन्हें मानव संतान को प्रकट किया गया है उस दिन प्रकट की जाएंगी; और शैतान का मानव संतान के हृदयों के ऊपर अधिक समय तक कोई अधिकार न रहेगा । और अब, मेरे प्रिय भाइयों, मैं अपनी बातों को समाप्त करता हूं ।

And it shall come to pass that the Lord God shall commence his work among all nations, kindreds, tongues, and people, to bring about the restoration of his people upon the earth.

And with righteousness shall the Lord God judge the poor, and reprove with equity for the meek of the earth. And he shall smite the earth with the rod of his mouth; and with the breath of his lips shall he slay the wicked.

For the time speedily cometh that the Lord God shall cause a great division among the people, and the wicked will he destroy; and he will spare his people, yea, even if it so be that he must destroy the wicked by fire.

And righteousness shall be the girdle of his loins, and faithfulness the girdle of his reins.

And then shall the wolf dwell with the lamb; and the leopard shall lie down with the kid, and the calf, and the young lion, and the fatling, together; and a little child shall lead them.

And the cow and the bear shall feed; their young ones shall lie down together; and the lion shall eat straw like the ox.

And the sucking child shall play on the hole of the asp, and the weaned child shall put his hand on the cockatrice's den.

They shall not hurt nor destroy in all my holy mountain; for the earth shall be full of the knowledge of the Lord as the waters cover the sea.

Wherefore, the things of all nations shall be made known; yea, all things shall be made known unto the children of men.

There is nothing which is secret save it shall be revealed; there is no work of darkness save it shall be made manifest in the light; and there is nothing which is sealed upon the earth save it shall be loosed.

Wherefore, all things which have been revealed unto the children of men shall at that day be revealed; and Satan shall have power over the hearts of the children of men no more, for a long time. And now, my beloved brethren, I make an end of my sayings.

## 2 नफी 31

- 1 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, मैं, नफी, तुम से भविष्यवाणी करना समाप्त करता हूँ। और कुछ बातें जोकि मैं जानता हूँ अवश्य पूरी होंगी उनको छोड़ अधिक नहीं लिखूंगा; मैं अपने भाई याकूब के कुछ शब्दों को भी लिखूंगा।
- 2 इसलिए, जो बातें मैंने लिखी हैं वह पर्याप्त हैं, इनके अलावा मैं कुछ शब्द मसीह के सिद्धांत के संबंध में बोलूंगा; इसलिए, मैं तुमसे अपनी भविष्यवाणी के अनुसार, स्पष्ट रूप से बोलूंगा।
- 3 क्योंकि मेरी आत्मा स्पष्टता में आनंदित होती है; क्योंकि इसी रीति से प्रभु परमेश्वर मानव संतान के बीच कार्य करता है। क्योंकि प्रभु परमेश्वर समझ को स्पष्टता देता है; क्योंकि वह मनुष्य से उनकी भाषा, उनकी समझ के अनुसार बोलता है।
- 4 इसलिए, मैं चाहता हूँ कि तुम याद रखो कि मैंने तुम से उस भविष्यवक्ता के संबंध में बोला है जिसे प्रभु ने मुझे दिखाया था, कि वह परमेश्वर के मेमने को बपतिस्मा देगा, जोकि संसार के पापों को हर लेगा। या उठा ले जाएगा।
- 5 और अब, यदि परमेश्वर के मेमने को, पवित्र होते हुए सभी धार्मिकता को पूरा करने के लिए जल द्वारा बपतिस्मा लेने की जरूरत हो सकती है, ओह फिर, हम जोकि अपवित्र हैं, बपतिस्मा लेने की कितनी जरूरत होगी, हां, वह भी जल द्वारा!
- 6 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, मैं तुम से पूछता हूँ, क्या परमेश्वर के मेमने ने जल द्वारा बपतिस्मा लेकर सभी धार्मिकता को पूरा कर दिया था?
- 7 क्या तुम नहीं जानते कि वह पवित्र था? लेकिन पवित्र होते हुए भी, उसने मानव संतान को दिखाया कि, मानव रूप में उसने अपने आपको पिता के सामने दीन बना लिया था; और उसने पिता को गवाही दी कि वह आज्ञाओं का पालन करते हुए उसका आज्ञाकारी बना रहेगा।
- 8 इसलिए, जल द्वारा उसका बपतिस्मा होने के बाद पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में उसके ऊपर उतरी।
- 9 और फिर, यह मानव संतान को सीधा मार्ग, और द्वार का संकरापन दिखाता है, जिसके द्वारा उन्हें प्रवेश करना चाहिए, उसने उनके सामने यह उदाहरण रखा है।

## 2 Nephi 31

And now I, Nephi, make an end of my prophesying unto you, my beloved brethren. And I cannot write but a few things, which I know must surely come to pass; neither can I write but a few of the words of my brother Jacob.

Wherefore, the things which I have written sufficeth me, save it be a few words which I must speak concerning the doctrine of Christ; wherefore, I shall speak unto you plainly, according to the plainness of my prophesying.

For my soul delighteth in plainness; for after this manner doth the Lord God work among the children of men. For the Lord God giveth light unto the understanding; for he speaketh unto men according to their language, unto their understanding.

Wherefore, I would that ye should remember that I have spoken unto you concerning that prophet which the Lord showed unto me, that should baptize the Lamb of God, which should take away the sins of the world.

And now, if the Lamb of God, he being holy, should have need to be baptized by water, to fulfil all righteousness, O then, how much more need have we, being unholy, to be baptized, yea, even by water!

And now, I would ask of you, my beloved brethren, wherein the Lamb of God did fulfil all righteousness in being baptized by water?

Know ye not that he was holy? But notwithstanding he being holy, he showeth unto the children of men that, according to the flesh he humbleth himself before the Father, and witnesseth unto the Father that he would be obedient unto him in keeping his commandments.

Wherefore, after he was baptized with water the Holy Ghost descended upon him in the form of a dove.

And again, it showeth unto the children of men the straitness of the path, and the narrowness of the gate, by which they should enter, he having set the example before them.



- 10 और उसने मानव संतान से कहा: मेरा अनुकरण करो। इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों, क्या हम यीशु का अनुकरण कर सकते हैं जब तक कि हम पिता की आज्ञाओं का पालन करने की इच्छा न करें ?
- 11 और पिता ने कहा: तुम पश्चाताप करो, तुम पश्चाताप करो, और मेरे प्रिय पुत्र के नाम में बपतिस्मा लो।
- 12 और पुत्र की वाणी मुझे यह कहते हुए सुनाई दी: वह जो मेरे नाम से बपतिस्मा लेता है, पिता उसे मेरे समान, पवित्र आत्मा देगा; इसलिए, मेरा अनुकरण करो, और उन कामों को करो जो तुम मुझे करते हुए देखते हो।
- 13 इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों, मैं जानता हूँ कि यदि तुम अपने संपूर्ण हृदय से पुत्र का अनुकरण करोगे, बिना दिखावे और बिना परमेश्वर को धोखा दिए, सच्ची इच्छा के साथ, अपने पापों से पश्चाताप करते हुए, पिता को गवाही देते हुए कि तुम मसीह का नाम अपने ऊपर धारण करने के इच्छुक हो, बपतिस्मे के द्वारा—हां, अपने प्रभु और अपने उद्धारकर्ता का अनुकरण करते हुए जल में डुबकी लगाकर, उसके वचन के अनुसार, तब देखो, तुम्हें पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त होगा; हां, फिर आग और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा आता है; और फिर तुम स्वर्गदूतों की भाषा बोलोगे, और इस्राएल के एकमेव परमेश्वर की प्रशंसा में चिल्ला उठोगे।
- 14 लेकिन, देखो, मेरे प्रिय भाइयों, पुत्र की वाणी मुझे यह कहते हुए सुनाई दी: तुम्हारे पापों से पश्चाताप करने, और पिता को गवाही देने के बाद कि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करने की इच्छा करते हो, जल द्वारा बपतिस्मा लेकर, और आग और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाकर, और नई भाषा बोलने, हां, यहां तक कि स्वर्गदूतों की भाषा भी, और इसके बाद यदि मुझे अस्वीकार करते हो, तो यह बेहतर होता कि तुम जानते ही नहीं।
- 15 और मैंने पिता की वाणी यह कहते हुए सुनी: हां, मेरे प्रिय पुत्र के वचन सच्चे और विश्वसनीय हैं। वह जो अंत तक धीरज धरेगा, वही बचाया जाएगा।
- 16 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, इसके द्वारा मैं जानता हूँ कि जब तक कि मनुष्य, जीवित परमेश्वर के पुत्र के उदाहरण का अनुकरण करते हुए अंत तक धीरज न धरे, वह बचाया नहीं जा सकता।

And he said unto the children of men: Follow thou me. Wherefore, my beloved brethren, can we follow Jesus save we shall be willing to keep the commandments of the Father?

And the Father said: Repent ye, repent ye, and be baptized in the name of my Beloved Son.

And also, the voice of the Son came unto me, saying: He that is baptized in my name, to him will the Father give the Holy Ghost, like unto me; wherefore, follow me, and do the things which ye have seen me do.

Wherefore, my beloved brethren, I know that if ye shall follow the Son, with full purpose of heart, acting no hypocrisy and no deception before God, but with real intent, repenting of your sins, witnessing unto the Father that ye are willing to take upon you the name of Christ, by baptism—yea, by following your Lord and your Savior down into the water, according to his word, behold, then shall ye receive the Holy Ghost; yea, then cometh the baptism of fire and of the Holy Ghost; and then can ye speak with the tongue of angels, and shout praises unto the Holy One of Israel.

But, behold, my beloved brethren, thus came the voice of the Son unto me, saying: After ye have repented of your sins, and witnessed unto the Father that ye are willing to keep my commandments, by the baptism of water, and have received the baptism of fire and of the Holy Ghost, and can speak with a new tongue, yea, even with the tongue of angels, and after this should deny me, it would have been better for you that ye had not known me.

And I heard a voice from the Father, saying: Yea, the words of my Beloved are true and faithful. He that endureth to the end, the same shall be saved.

And now, my beloved brethren, I know by this that unless a man shall endure to the end, in following the example of the Son of the living God, he cannot be saved.

- 17 इसलिए, उन बातों को करो जो मैंने तुम से कही हैं, जिन्हें मैंने तुम्हारे प्रभु और तुम्हारे मुक्तिदाता को करते देखा है; क्योंकि, इसी कारण मुझे इन्हें दिखाया गया है, कि तुम उस द्वार को जान सको जिससे तुम्हें प्रवेश करना होगा। क्योंकि जिस द्वार से तुम प्रवेश करोगे वह पश्चाताप और जल द्वारा बपतिस्मा है; और फिर आता है आग और पवित्र आत्मा द्वारा तुम्हारे पापों का क्षमा किया जाना।
- 18 और फिर तुम इस तंग और संकरे मार्ग में होगे जोकि अनंत जीवन को ले जाता है; हां, तुमने द्वार से प्रवेश पा लिया है; तुमने पिता और पुत्र की आज्ञाओं के अनुसार काम किया है; और तुमने पवित्र आत्मा प्राप्त कर ली है, जोकि पिता और पुत्र की गवाही देती है, उस प्रतिज्ञा को पूरा करते हुए जो उसने बनाई थी, कि यदि तुम उस तरह से प्रवेश करते जैसा कि तुम्हें करना चाहिए।
- 19 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, इस तंग और संकरे मार्ग में तुम्हारे चलने के बाद, मैं पूछता हूँ कि क्या सब कुछ किया जा चुका है? सुनो, मैं तुम से कहता हूँ, नहीं; क्योंकि मसीह के वचनों के द्वारा उस में अटल विश्वास के सहारे, पूर्ण रूप से उसके गुणों पर निर्भर होते हुए जोकि बचाने में पराक्रमी है, तुम यहां तक पहुंचे हो।
- 20 इसलिए, तुम मसीह में दृढ़ता से विश्वास करते हुए, आशा की परिपूर्ण चमक, और परमेश्वर और सभी मनुष्य से प्रेम करते हुए, हमेशा आगे बढ़ते चलो। इसलिए, यदि तुम, मसीह की वाणी का प्याला पीते हुए, और अंत तक धीरज धरते हुए, आगे बढ़ते रहोगे, सुनो, पिता इस प्रकार कहता है: तुम्हें अनंत जीवन मिलेगा।
- 21 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, सुनो, यही वह मार्ग है; और इस के अलावा स्वर्ग के नीचे दूसरा कोई नाम नहीं जिसके द्वारा मनुष्य को परमेश्वर के राज्य में बचाया जा सकता है। और अब, सुनो, यह मसीह का सिद्धांत है, और पिता का, और पुत्र का, और पवित्र आत्मा का, एकमात्र और सच्चा सिद्धांत है, जोकि एक परमेश्वर है, जिसका कोई अंत नहीं। आमीन।

Wherefore, do the things which I have told you I have seen that your Lord and your Redeemer should do; for, for this cause have they been shown unto me, that ye might know the gate by which ye should enter. For the gate by which ye should enter is repentance and baptism by water; and then cometh a remission of your sins by fire and by the Holy Ghost.

And then are ye in this strait and narrow path which leads to eternal life; yea, ye have entered in by the gate; ye have done according to the commandments of the Father and the Son; and ye have received the Holy Ghost, which witnesses of the Father and the Son, unto the fulfilling of the promise which he hath made, that if ye entered in by the way ye should receive.

And now, my beloved brethren, after ye have gotten into this strait and narrow path, I would ask if all is done? Behold, I say unto you, Nay; for ye have not come thus far save it were by the word of Christ with unshaken faith in him, relying wholly upon the merits of him who is mighty to save.

Wherefore, ye must press forward with a steadfastness in Christ, having a perfect brightness of hope, and a love of God and of all men. Wherefore, if ye shall press forward, feasting upon the word of Christ, and endure to the end, behold, thus saith the Father: Ye shall have eternal life.

And now, behold, my beloved brethren, this is the way; and there is none other way nor name given under heaven whereby man can be saved in the kingdom of God. And now, behold, this is the doctrine of Christ, and the only and true doctrine of the Father, and of the Son, and of the Holy Ghost, which is one God, without end. Amen.

## 2 नफी 32

- 1 और अब, देखो, मेरे प्रिय भाइयों, मैं सोचता हूँ कि तुम हृदयों में कुछ मनन करोगे कि इस द्वार से प्रवेश करने के बाद तुम क्या करोगे । लेकिन, देखो, अपने हृदयों में तुम इन बातों पर मनन क्यों करते हो ?
- 2 क्या तुम्हें याद नहीं है कि मैंने तुम से कहा था कि पवित्र आत्मा प्राप्त कर लेने के बाद तुम स्वर्गदूतों की भाषा बोल सकते हो ? और अब, पवित्र आत्मा के बिना तुम स्वर्गदूतों की भाषा कैसे बोल सकते हो ?
- 3 स्वर्गदूत पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा बोलते हैं; इसलिए, वे मसीह के वचनों को बोलते हैं । इसलिए, मैं तुम से कहता हूँ, मसीह के वचनों में आनंदित रहो; क्योंकि देखो, मसीह के वचन तुम्हें वह सब बातें बताएंगे जो तुम्हें करनी चाहिए ।
- 4 इसलिए, अब मेरे इन शब्दों के कहने के बाद, यदि तुम इन्हें समझ नहीं सकते तो ऐसा इसलिए है क्योंकि तुमने मांगा नहीं है, न ही तुमने खटखटाया है; इसलिए, तुम ज्योति में नहीं लाए गए हो, और तुम अंधकार में ही नष्ट हो जाओगे ।
- 5 क्योंकि देखो, मैं तुमसे फिर कहता हूँ कि यदि तुम इस मार्ग से अंदर प्रवेश करते, और पवित्र आत्मा प्राप्त करते हो, तब वह तुम्हें सब बातें दिखाएगी जो तुम्हें करनी चाहिए ।
- 6 देखो, यह मसीह का सिद्धांत है, और इसके बाद तब तक कोई सिद्धांत नहीं दिया जाएगा जब तक कि वह अपने आपको शरीर में तुम पर प्रकट न करेगा । और जब वह अपने आपको शरीर में तुम पर प्रकट करेगा, तब जो बातें वह तुम से कहेगा तुम्हें करनी होंगी ।
- 7 और अब, मैं, नफी, अधिक नहीं कह सकता; आत्मा मुझे कहने से मना कर रही है, और मनुष्य के अविश्वास, और दुष्टता, और अज्ञानता, और हठीपन के कारण शोकित होने के लिए छोड़ दिया गया हूँ; क्योंकि वे ज्ञान की खोज नहीं करते, न ही महान ज्ञान को समझते हैं, जबकि यह उन्हें स्पष्टता से दिया जाता है, इतना स्पष्ट जितना की वचन हो सकता है ।
- 8 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, मैं समझता हूँ कि तुम अपने हृदयों में अभी भी मनन कर रहे हो; और इससे मुझे दुख होता है कि मैं इस बात के संबंध में बोलूँ । क्योंकि यदि तुम आत्मा पर ध्यान दो जो मनुष्य को प्रार्थना करना सीखाती है, तब तुम जानोगे कि तुम्हें प्रार्थना करनी चाहिए; क्योंकि बुरी आत्मा मनुष्य को प्रार्थना करना नहीं सीखाती, लेकिन सीखती है कि उसे प्रार्थना नहीं करनी चाहिए ।

## 2 Nephi 32

And now, behold, my beloved brethren, I suppose that ye ponder somewhat in your hearts concerning that which ye should do after ye have entered in by the way. But, behold, why do ye ponder these things in your hearts?

Do ye not remember that I said unto you that after ye had received the Holy Ghost ye could speak with the tongue of angels? And now, how could ye speak with the tongue of angels save it were by the Holy Ghost?

Angels speak by the power of the Holy Ghost; wherefore, they speak the words of Christ. Wherefore, I said unto you, feast upon the words of Christ; for behold, the words of Christ will tell you all things what ye should do.

Wherefore, now after I have spoken these words, if ye cannot understand them it will be because ye ask not, neither do ye knock; wherefore, ye are not brought into the light, but must perish in the dark.

For behold, again I say unto you that if ye will enter in by the way, and receive the Holy Ghost, it will show unto you all things what ye should do.

Behold, this is the doctrine of Christ, and there will be no more doctrine given until after he shall manifest himself unto you in the flesh. And when he shall manifest himself unto you in the flesh, the things which he shall say unto you shall ye observe to do.

And now I, Nephi, cannot say more; the Spirit stoppeth mine utterance, and I am left to mourn because of the unbelief, and the wickedness, and the ignorance, and the stiffneckedness of men; for they will not search knowledge, nor understand great knowledge, when it is given unto them in plainness, even as plain as word can be.

And now, my beloved brethren, I perceive that ye ponder still in your hearts; and it grieveth me that I must speak concerning this thing. For if ye would hearken unto the Spirit which teacheth a man to pray, ye would know that ye must pray; for the evil spirit teacheth not a man to pray, but teacheth him that he must not pray.

9      लेकिन देखो, मैं तुम से कहता हूँ कि तुम हमेशा प्रार्थना करते रहो और निर्बल मत बनो; कि तुम्हें प्रभु के लिए कुछ नहीं करना चाहिए सिवाय इसके कि सबसे पहले तुम मसीह के नाम में पिता से प्रार्थना करोगे, ताकि वह तुम्हारे काम को तुम्हारे लिए समर्पित करे, कि तुम्हारे काम तुम्हारी आत्मा के लिए कल्याणकारी हो ।

But behold, I say unto you that ye must pray always, and not faint; that ye must not perform any thing unto the Lord save in the first place ye shall pray unto the Father in the name of Christ, that he will consecrate thy performance unto thee, that thy performance may be for the welfare of thy soul.

## 2 नफी 33

- 1 और अब, मैं, नफी, उन सब बातों को नहीं लिख सकता जो मेरे लोगों के बीच सीखाई गई थी; न ही मैं बोलने के समान, लिखने में शक्तिशाली हूँ; क्योंकि जब मनुष्य पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा बोलता है तब पवित्र आत्मा इसे मानव संतान के हृदयों तक पहुंचाती है।
- 2 लेकिन देखो, बहुत से हैं जिन्होंने अपने हृदयों को पवित्र आत्मा के विरुद्ध कठोर बना लिया है, कि इसके लिए उनके बीच कोई स्थान नहीं है; इसलिए, उन्होंने ऐसी बहुत सी बातों को फेंक दिया है जो कि लिखी हुई हैं और उन्हें बेकार की बातें समझते हैं।
- 3 लेकिन मैं, नफी, ने जिन बातों को लिख दिया सो लिख दिया, और मैं इन्हें बहुत महत्व की मानता हूँ, और विशेषकर अपने लोगों के लिए। क्योंकि मैं दिन में उनके लिए निरंतर प्रार्थना करता हूँ, और उनके कारण मेरी आंखें रात को मेरा तकिया भिगोती हैं; और मैं अपने परमेश्वर को विश्वास में पुकारता हूँ, और मैं जानता हूँ कि वह मेरी पुकार को सुनेगा।
- 4 और मैं जानता हूँ कि प्रभु परमेश्वर मेरी प्रार्थनाओं को मेरे लोगों के लाभ के लिए समर्पित करेगा। और जो वचन मैंने दुर्बलता में लिखे हैं उनके लिए मजबूत किये जाएंगे; क्योंकि यह उन्हें भलाई के लिए प्रेरित करते हैं; ये उन्हें उनके पूर्वजों के बारे में बताते हैं; और ये यीशु के विषय में बोलते हैं, और उन्हें उसमें विश्वास करने, और अंत तक धीरज धरने के लिए प्रेरित करते हैं, जो कि अनंत जीवन है।
- 5 और ये सच्चाई की स्पष्टता के अनुसार पाप के विरुद्ध कठोरता से बोलते हैं; इसलिए, कोई भी मनुष्य इन वचनों से क्रोधित नहीं होगा जो मैंने लिखे हैं सिवाय उसके जो बुराई की आत्मा का होगा।
- 6 मैं स्पष्टता में गर्व करता हूँ; मैं सच्चाई में गर्व करता हूँ; मैं अपने यीशु में गर्व करता हूँ, क्योंकि उसने मेरी आत्मा को नरक से मुक्त कर दिया है।
- 7 मेरे पास अपने लोगों के लिए प्रेम, और यीशु में महान विश्वास है कि मैं बहुत सी बेदाग आत्माओं से उसके न्याय-सिंहासन पर मिलूंगा।
- 8 मेरे पास यहूदी के लिए प्रेम है—मैं यहूदी कह रहा हूँ, क्योंकि मेरा अर्थ उनसे है जहां से मैं आया था।

## 2 Nephi 33

And now I, Nephi, cannot write all the things which were taught among my people; neither am I mighty in writing, like unto speaking; for when a man speaketh by the power of the Holy Ghost the power of the Holy Ghost carrieth it unto the hearts of the children of men.

But behold, there are many that harden their hearts against the Holy Spirit, that it hath no place in them; wherefore, they cast many things away which are written and esteem them as things of naught.

But I, Nephi, have written what I have written, and I esteem it as of great worth, and especially unto my people. For I pray continually for them by day, and mine eyes water my pillow by night, because of them; and I cry unto my God in faith, and I know that he will hear my cry.

And I know that the Lord God will consecrate my prayers for the gain of my people. And the words which I have written in weakness will be made strong unto them; for it persuadeth them to do good; it maketh known unto them of their fathers; and it speaketh of Jesus, and persuadeth them to believe in him, and to endure to the end, which is life eternal.

And it speaketh harshly against sin, according to the plainness of the truth; wherefore, no man will be angry at the words which I have written save he shall be of the spirit of the devil.

I glory in plainness; I glory in truth; I glory in my Jesus, for he hath redeemed my soul from hell.

I have charity for my people, and great faith in Christ that I shall meet many souls spotless at his judgment-seat.

I have charity for the Jew—I say Jew, because I mean them from whence I came.

- 9 मेरे पास अन्यजातियों के लिए भी प्रेम है। लेकिन देखो, इनमें से किसी के लिए मैं कोई आशा नहीं करता जब तक वे मसीह से मेल नहीं कर लेते, और संकरे द्वार में प्रवेश कर लेते, और तंग मार्ग में चलते जो जीवन की ओर ले जाता है, और निरंतर उस मार्ग पर चलते हैं जब तक कि परीक्षा का समय पूरा नहीं हो जाता।
- 10 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, और यहूदियों भी, और पृथ्वी के छोर तक तुम सभी, इन वचनों पर ध्यान दो और मसीह में विश्वास करो; और यदि तुम इन वचनों में विश्वास नहीं करते तो मसीह में विश्वास करो। और यदि तुम मसीह में विश्वास करोगे तुम इन वचनों में विश्वास करोगे, क्योंकि ये मसीह के वचन हैं, और इन्हें उसने मुझे दिया है; और वे सब मनुष्य को सीखाते हैं कि उन्हें भलाई करनी चाहिए।
- 11 और यदि वे मसीह के वचन नहीं हैं, तो तुम जांच करो—क्योंकि अंतिम दिन मसीह तुम्हें शक्ति और महान महिमा के साथ दिखाएगा, कि ये उसके वचन हैं; और तुम और मैं उसके कठघरे के सम्मुख आमने-सामने खड़े होंगे; और तुम जानोगे कि मेरी कमजोरी के बावजूद, उसने मुझे ये बातें लिखने की आज्ञा दी थी।
- 12 और मसीह के नाम में पिता से प्रार्थना करता हूँ कि हम में से बहुत, यदि सब नहीं, उसके राज्य में उस महान और अंतिम दिन बचाए जाएंगे।
- 13 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, वे सब जो इस्राएल के घराने के हैं, और पृथ्वी के छोर तक तुम सब, मैं तुम से बात करता हूँ जैसे कोई धरती से पुकार रहा है: जब तक वह महान दिन नहीं आता तबतक के लिए अलविदा।
- 14 और तुम जो परमेश्वर की भलाई में भाग नहीं लेते, और यहूदियों के वचनों और मेरे वचनों, और वे वचन जो परमेश्वर के मेमने के मुंह से निकलते हैं, का आदर नहीं करते, सुनो, मैं तुम्हें हमेशा के लिए अलविदा कहता हूँ, क्योंकि ये वचन अंतिम दिन तुम्हें अपराधी ठहराएंगे।
- 15 क्योंकि जो मैं पृथ्वी पर मुहरबंद करता हूँ, न्याय के कठघरे में तुम्हारे विरुद्ध लाई जाएंगी; क्योंकि ऐसी आज्ञा प्रभु ने मुझे दी है, और मुझे आज्ञा पालन करना चाहिए। आमीन।

I also have charity for the Gentiles. But behold, for none of these can I hope except they shall be reconciled unto Christ, and enter into the narrow gate, and walk in the strait path which leads to life, and continue in the path until the end of the day of probation.

And now, my beloved brethren, and also Jew, and all ye ends of the earth, hearken unto these words and believe in Christ; and if ye believe not in these words believe in Christ. And if ye shall believe in Christ ye will believe in these words, for they are the words of Christ, and he hath given them unto me; and they teach all men that they should do good.

And if they are not the words of Christ, judge ye—for Christ will show unto you, with power and great glory, that they are his words, at the last day; and you and I shall stand face to face before his bar; and ye shall know that I have been commanded of him to write these things, notwithstanding my weakness.

And I pray the Father in the name of Christ that many of us, if not all, may be saved in his kingdom at that great and last day.

And now, my beloved brethren, all those who are of the house of Israel, and all ye ends of the earth, I speak unto you as the voice of one crying from the dust: Farewell until that great day shall come.

And you that will not partake of the goodness of God, and respect the words of the Jews, and also my words, and the words which shall proceed forth out of the mouth of the Lamb of God, behold, I bid you an everlasting farewell, for these words shall condemn you at the last day.

For what I seal on earth, shall be brought against you at the judgment bar; for thus hath the Lord commanded me, and I must obey. Amen.

# याकूब की पुस्तक

## नफी का भाई

अपने भाइयों को उसके उपदेश के वचन । वह एक पुरुष को पराजित करता है जो मसीह के सिद्धांत को नष्ट करने का प्रयास करता है ।  
नफी के लोगों के इतिहास के संबंध में कुछ शब्द ।

### याकूब 1

- 1 क्योंकि देखो, ऐसा हुआ कि लेही को यरूशलेम छोड़े हुए पचपन साल हो चुके थे; इसलिए, नफी ने, मुझ, याकूब, को छोटी पट्टियों के संबंध में आज्ञा दी, जिन पर ये बातें लिखी हुई हैं ।
- 2 और उसने, मुझ, याकूब, को आज्ञा दी कि मैं इन पट्टियों पर कुछ बातें लिखूँ जिन्हें मैं अति महत्वपूर्ण समझता था; और कि मैं इन लोगों, जो नफी के लोग कहलाए जाते हैं, के इतिहास के संबंध में अधिक न लिखूँ ।
- 3 क्योंकि उसने कहा था कि उसके लोगों का इतिहास उसकी अन्य पट्टियों पर लिखा जाएगा, और कि मुझे इन पट्टियों को सुरक्षित रखना चाहिए और इन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी दिए जाने के लिए, अपने वंश को सौंप दूँ ।
- 4 और यदि कुछ उपदेश जो पावन थे, या प्रकटीकरण, या भविष्यवाणी जो महान थी, उसे मुझे उनके शीर्षकों को इन पट्टियों पर लिखना चाहिए, और इनके विषय में, मसीह और हमारे लोगों की खातिर जितना संभव हो उतना अधिक वर्णन करना चाहिए ।
- 5 क्योंकि विश्वास और महान चिंता के कारण, हमें अपने लोगों के संबंध में सचमुच में प्रकट किया गया था, कि उनके साथ क्या होने वाला था ।
- 6 और हमें बहुत से प्रकटीकरण, और आत्मा की बहुत सी भविष्यवाणी भी हुई थी; इसलिए, हम मसीह और उसके राज्य के विषय में जानते थे, जो आने वाला था ।

# The Book of Jacob

## the Brother of Nephi

*The words of his preaching unto his brethren. He confoundeth a man who seeketh to overthrow the doctrine of Christ. A few words concerning the history of the people of Nephi.*

### Jacob 1

For behold, it came to pass that fifty and five years had passed away from the time that Lehi left Jerusalem; wherefore, Nephi gave me, Jacob, a commandment concerning the small plates, upon which these things are engraven.

And he gave me, Jacob, a commandment that I should write upon these plates a few of the things which I considered to be most precious; that I should not touch, save it were lightly, concerning the history of this people which are called the people of Nephi.

For he said that the history of his people should be engraven upon his other plates, and that I should preserve these plates and hand them down unto my seed, from generation to generation.

And if there were preaching which was sacred, or revelation which was great, or prophesying, that I should engraven the heads of them upon these plates, and touch upon them as much as it were possible, for Christ's sake, and for the sake of our people.

For because of faith and great anxiety, it truly had been made manifest unto us concerning our people, what things should happen unto them.

And we also had many revelations, and the spirit of much prophecy; wherefore, we knew of Christ and his kingdom, which should come.

- 7 इसलिए हमने अपने लोगों के बीच बहुत परिश्रम किया, ताकि हम उन्हें मसीह के पास आने के लिए, और परमेश्वर की अच्छाई में भाग लेने के लिए राजी कर सकें, ताकि वे उसकी शरण में प्रवेश कर सकें, कहीं ऐसा न हो कि उसका क्रोध भड़के और वे प्रवेश न कर पाएं, जैसा निर्जन प्रदेश में इस्राएल के बच्चों ने परीक्षा के दिनों में उस कोप को झेला था ।
- 8 इसलिए, हम परमेश्वर से चाहते हैं कि हम सब मनुष्यों से आग्रह कर सकें कि वे परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करके, उसके क्रोध को न भड़काएं, बल्कि सब मनुष्य मसीह में विश्वास, और उसकी मृत्यु पर विचार करें, और उसके क्रूस का कष्ट उठाएं और संसार के तिरस्कार को सहें; इसलिए, मैं, याकूब, अपने ऊपर अपने भाई नफी की आज्ञा को पूरा करने का भार लेता हूँ ।
- 9 अब नफी बूढ़ा होने लगा है, और उसने देखा था कि वह जल्द ही मर जाएगा; इसलिए, अब उसने अपने लोगों के ऊपर राजा और शासक होने के लिए एक पुरुष को, राजाओं के शासन के अनुसार अभिषिक्त किया है ।
- 10 लोगों ने नफी को बहुतायत से प्रेम किया है, वह लोगों के लिए महान रक्षक रहा है, उसने उनकी रक्षा के लिए लाबान की तलवार का उपयोग किया, और उसने अपने सारे जीवनभर उनके कल्याण के लिए परिश्रम किया—
- 11 इसलिए, लोग उसके नाम की याद को बनाए रखना चाहते थे । और जो कोई उसके स्थान पर शासन करेगा उसे राजाओं के शासन के अनुसार लोगों द्वारा, द्वितीय नफी, तृतीय नफी, और इत्यादि के नाम से बुलाया गया; और वे लोगों द्वारा इसी प्रकार बुलाए गए, चाहे उनके नाम कुछ भी रहें हों ।
- 12 और ऐसा हुआ कि नफी मर गया ।
- 13 अब लोग जो लमनाई नहीं थे वे नफाई थे; फिर भी, वे नफाइयों, याकूबियों, यूसुफियों, जोरामाइयों, लमनाइयों, लमुवेलियों और इश्माएलियों के नाम से बुलाए गए ।
- 14 लेकिन मैं, याकूब, आगे से उनसे इन नामों के द्वारा भेद नहीं करूंगा, लेकिन मैं उन्हें लमनाई बुलाऊंगा जो नफी के लोगों को नष्ट करना चाहते हैं, और जो नफी के मित्र हैं उन्हें मैं नफाई, या राजाओं के शासन के अनुसार, नफी के लोग कहूंगा ।
- 15 और अब ऐसा हुआ कि नफी के लोगों ने, द्वितीय राजा के शासन के अधीन, अपने हृदयों को कठोर करना आरंभ कर दिया था, और अपने आपको कुछ-कुछ भ्रष्ट प्रथाओं में लिप्त कर लिया था, जैसे प्राचीन काल के दाऊद, और उसके पुत्र, सुलेमान के समान कई पत्नियों और रखैलों की इच्छा करने लगे ।

Wherefore we labored diligently among our people, that we might persuade them to come unto Christ, and partake of the goodness of God, that they might enter into his rest, lest by any means he should swear in his wrath they should not enter in, as in the provocation in the days of temptation while the children of Israel were in the wilderness.

Wherefore, we would to God that we could persuade all men not to rebel against God, to provoke him to anger, but that all men would believe in Christ, and view his death, and suffer his cross and bear the shame of the world; wherefore, I, Jacob, take it upon me to fulfil the commandment of my brother Nephi.

Now Nephi began to be old, and he saw that he must soon die; wherefore, he anointed a man to be a king and a ruler over his people now, according to the reigns of the kings.

The people having loved Nephi exceedingly, he having been a great protector for them, having wielded the sword of Laban in their defence, and having labored in all his days for their welfare—

Wherefore, the people were desirous to retain in remembrance his name. And whoso should reign in his stead were called by the people, second Nephi, third Nephi, and so forth, according to the reigns of the kings; and thus they were called by the people, let them be of whatever name they would.

And it came to pass that Nephi died.

Now the people which were not Lamanites were Nephites; nevertheless, they were called Nephites, Jacobites, Josephites, Zoramites, Lamanites, Lemuelites, and Ishmaelites.

But I, Jacob, shall not hereafter distinguish them by these names, but I shall call them Lamanites that seek to destroy the people of Nephi, and those who are friendly to Nephi I shall call Nephites, or the people of Nephi, according to the reigns of the kings.

And now it came to pass that the people of Nephi, under the reign of the second king, began to grow hard in their hearts, and indulge themselves somewhat in wicked practices, such as like unto David of old desiring many wives and concubines, and also Solomon, his son.



- 16 हां, और उन्होंने अधिक सोना और चांदी की खोज करना आरंभ कर दिया, और कुछ कुछ घमंड से ऊंचा उठना आरंभ कर दिया ।
- 17 इसलिए मुझ, याकूब ने, प्रभु से अपने निर्देश प्राप्त करने के पश्चात उन्हें इन शब्दों को कहा, जब मैंने उन्हें मंदिर में सिखाया था ।
- 18 क्योंकि मैं, याकूब, और मेरा भाई यूसुफ, नफी के हाथों के द्वारा इन लोगों के याजक और शिक्षक समर्पित किये गए थे ।
- 19 और अपने ऊपर इस जिम्मेदारी को लेते हुए, हमने प्रभु में अपने पद की मर्यादा को बढ़ाया, यदि हमने लोगों को परमेश्वर के वचन को संपूर्ण परिश्रम के साथ नहीं सिखाया तो लोगों के पापों का उत्तरदायित्व हमारे सिर होगा; इसलिए, हमने अपनी पूरी निष्ठा से काम किया ताकि उनका रक्त हमारे कपड़ों पर न आए; वरना उनका रक्त हमारे कपड़ों पर आएगा, और हम अंतिम दिन बेदाग नहीं पाए जाएंगे ।

Yea, and they also began to search much gold and silver, and began to be lifted up somewhat in pride.

Wherefore I, Jacob, gave unto them these words as I taught them in the temple, having first obtained mine errand from the Lord.

For I, Jacob, and my brother Joseph had been consecrated priests and teachers of this people, by the hand of Nephi.

And we did magnify our office unto the Lord, taking upon us the responsibility, answering the sins of the people upon our own heads if we did not teach them the word of God with all diligence; wherefore, by laboring with our might their blood might not come upon our garments; otherwise their blood would come upon our garments, and we would not be found spotless at the last day.

## याकूब 2

- 1 नफी की मृत्यु के पश्चात नफी के लोगों को बोले गए नफी के भाई, याकूब के शब्दः
- 2 अब, मेरे प्रिय भाइयों, मैं, याकूब, उस जिम्मेदारी के अनुसार जो मुझे परमेश्वर के प्रति है, अपने पद की मर्यादा को गंभीरता से निभाने के लिए, और ताकि मैं अपने कपड़ों से तुम्हारे पापों का छुटकारा पा सकूँ, मैं आज मंदिर में आया हूँ ताकि मैं तुम्हें परमेश्वर के वचन सुना सकूँ।
- 3 और तुम स्वयं जानते हो कि मैं अपने पद की नियुक्ति में सदा परिश्रमी रहा हूँ; लेकिन आज मैं तुम्हारी आत्माओं के कल्याण के लिए अत्याधिक इच्छा और चिंता के बोझ से इतना दब गया हूँ जितना कि मैं पहले कभी नहीं दबा था।
- 4 क्योंकि देखो, जैसे अब तक, तुम प्रभु के वचन के प्रति आज्ञाकारी रहे हो, जो मैंने तुम्हें दिए हैं।
- 5 लेकिन देखो, मुझे ध्यान से सुनो, और जानो कि स्वर्ग और पृथ्वी के सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता की सहायता के द्वारा मैं तुम्हें तुम्हारे विचारों के संबंध में बता सकता हूँ, कि कैसे तुमने पाप करना आरंभ कर दिया है, वह पाप जो मुझे बहुत घृणित लगता है, और हाँ, परमेश्वर को भी घृणित लगता है।
- 6 हाँ, मेरी आत्मा को इससे शोक होता है और मुझे अपने बनाने वाले की उपस्थिति में शर्म से सिकुड़ने के लिए मजबूर करती है, कि मैं तुम्हारे हृदयों की दुष्टता के संबंध में गवाही दूँ।
- 7 और मुझे इससे भी शोक होता है कि मैं, तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारे बच्चों के सामने, तुम्हारे संबंध में बोलने की इतनी अधिक निर्भयता का उपयोग करूँ, जिनमें से बहुतों की भावनाएं परमेश्वर के सम्मुख अत्याधिक कोमल और शुद्ध और नाजुक हैं, जो परमेश्वर को प्रिय हैं।
- 8 और मैं ऐसा सोचता हूँ कि वे यहां परमेश्वर के प्रिय वचन को सुनने आए हैं, हाँ, वे वचन जो घायल आत्मा को चंगा करते हैं।
- 9 इसलिए, यह मेरी आत्मा पर बोझ डालता है कि उस कठोर आज्ञा के कारण जो मुझे परमेश्वर से मिली है, मैं तुम्हारे अपराधों के अनुसार तुम्हें चेतावनी देकर, जो पहले ही से घायल हैं उन्हें दिलासा देने और उनके घावों को चंगा करने के स्थान पर, घावों को और ठेस पहुंचाने; और जो घायल नहीं हैं, उन्हें परमेश्वर के वचनों में आनंदित होने के स्थान पर उनकी आत्मा को कटार से छेदने और उनके नाजुक मनों को घायल करने, के लिए विवश हूँ।

## Jacob 2

The words which Jacob, the brother of Nephi, spake unto the people of Nephi, after the death of Nephi:

Now, my beloved brethren, I, Jacob, according to the responsibility which I am under to God, to magnify mine office with soberness, and that I might rid my garments of your sins, I come up into the temple this day that I might declare unto you the word of God.

And ye yourselves know that I have hitherto been diligent in the office of my calling; but I this day am weighed down with much more desire and anxiety for the welfare of your souls than I have hitherto been.

For behold, as yet, ye have been obedient unto the word of the Lord, which I have given unto you.

But behold, hearken ye unto me, and know that by the help of the all-powerful Creator of heaven and earth I can tell you concerning your thoughts, how that ye are beginning to labor in sin, which sin appeareth very abominable unto me, yea, and abominable unto God.

Yea, it grieveth my soul and causeth me to shrink with shame before the presence of my Maker, that I must testify unto you concerning the wickedness of your hearts.

And also it grieveth me that I must use so much boldness of speech concerning you, before your wives and your children, many of whose feelings are exceedingly tender and chaste and delicate before God, which thing is pleasing unto God;

And it supposeth me that they have come up hither to hear the pleasing word of God, yea, the word which healeth the wounded soul.

Wherefore, it burdeneth my soul that I should be constrained, because of the strict commandment which I have received from God, to admonish you according to your crimes, to enlarge the wounds of those who are already wounded, instead of consoling and healing their wounds; and those who have not been wounded, instead of feasting upon the pleasing word of God have daggers placed to pierce their souls and wound their delicate minds.

- 10 लेकिन, इस काम की महानता को अनदेखा न करते हुए, मुझे परमेश्वर की कठोर आज्ञा के अनुसार काम करना चाहिए, और तुम्हारी दुष्टता और द्वेष के कामों को पवित्र हृदय और टूटे हुए हृदय वालों, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की तीक्ष्ण दृष्टि के समक्ष बोलना ही होगा ।
- 11 इसलिए, मुझे तुम्हें परमेश्वर के वचन की स्पष्टता के अनुसार सच्चाई बतानी पड़ेगी । क्योंकि देखो, जब मैंने प्रभु से पूछा, तो मुझे यह कहते हुए वचन मिले: याकूब, कल सुबह तुम मंदिर में जाओ, और उन वचनों की घोषणा करो जो मैं तुम्हें इन लोगों के लिए दूंगा ।
- 12 और अब देखो, मेरे भाइयों, यह वह वचन है जिसकी घोषणा मैं तुम से करता हूँ, कि तुम में से बहुत से सोने की, और चांदी की, और सब प्रकार के मूल्यवान खनिजों की खोज कर रहे हैं, जो कि इस प्रदेश में बहुतायत से है, जोकि तुम्हारे और तुम्हारे वंश के लिए एक प्रतिज्ञा का प्रदेश है ।
- 13 और विधाता की कृपा तुम्हारे ऊपर अधिकता से बनी हुई है, कि तुम्हें बहुत सी धन-संपत्ति प्राप्त हुई है; और क्योंकि तुम में से कुछ लोगों ने अपने भाइयों से अधिक संपत्ति प्राप्त कर ली है, इसलिए तुमने अपने हृदयों को घमंड से भर लिया है, और अपने कीमती पहनावे के कारण तुम्हारी गर्दनें अकड़ गई हैं और सिर घमंड से ऊंचे हो गए हैं, और अपने भाइयों पर अत्याचार करते हो क्योंकि तुम सोचते हो कि तुम उनसे बेहतर हो ।
- 14 और अब, मेरे भाइयों, क्या तुम सोचते हो कि परमेश्वर इस काम के लिए तुम्हें क्षमा करेगा ? नहीं । लेकिन वह तुम्हें अपराधी ठहराता है, और यदि तुम ये काम करते रहे तो शीघ्र ही उसका न्याय तुम्हारे ऊपर आएगा ।
- 15 ओह वह तुम्हें दिखाएगा कि वह तुम्हें भेद सकता है, और अपनी एक दृष्टि से तुम्हें धूल में मिलाकर दंड दे सकता है !
- 16 ओह क्या ही अच्छा होता कि वह तुम्हें इस अधर्म और घृणा से बचा लेता । और, ओह क्या ही अच्छा होता कि तुम उसकी आज्ञाओं को सुनते, और अपने हृदय के इस अहंकार को अपनी आत्मा को नष्ट मत करने दो !
- 17 अपने भाइयों को अपने समान समझो, और सब के साथ मेल-जोल रखो और अपनी संपत्ति के साथ दयालु बनो, ताकि वे भी तुम्हारी तरह संपन्न हो जाएं ।
- 18 लेकिन धन-संपत्ति की खोज करने से पहले, तुम परमेश्वर के राज्य की खोज करो ।

But, notwithstanding the greatness of the task, I must do according to the strict commands of God, and tell you concerning your wickedness and abominations, in the presence of the pure in heart, and the broken heart, and under the glance of the piercing eye of the Almighty God.

Wherefore, I must tell you the truth according to the plainness of the word of God. For behold, as I inquired of the Lord, thus came the word unto me, saying: Jacob, get thou up into the temple on the morrow, and declare the word which I shall give thee unto this people.

And now behold, my brethren, this is the word which I declare unto you, that many of you have begun to search for gold, and for silver, and for all manner of precious ores, in the which this land, which is a land of promise unto you and to your seed, doth abound most plentifully.

And the hand of providence hath smiled upon you most pleasingly, that you have obtained many riches; and because some of you have obtained more abundantly than that of your brethren ye are lifted up in the pride of your hearts, and wear stiff necks and high heads because of the costliness of your apparel, and persecute your brethren because ye suppose that ye are better than they.

And now, my brethren, do ye suppose that God justifieth you in this thing? Behold, I say unto you, Nay. But he condemneth you, and if ye persist in these things his judgments must speedily come unto you.

O that he would show you that he can pierce you, and with one glance of his eye he can smite you to the dust!

O that he would rid you from this iniquity and abomination. And, O that ye would listen unto the word of his commands, and let not this pride of your hearts destroy your souls!

Think of your brethren like unto yourselves, and be familiar with all and free with your substance, that they may be rich like unto you.

But before ye seek for riches, seek ye for the kingdom of God.

- 19 और मसीह में आशा प्राप्त करने के पश्चात तुम धन-संपत्ति पाओगे, यदि तुम इनकी खोज करते हो; और तुम इनकी खोज भलाई करने की नियत से करो—वस्त्रहीन को वस्त्र देने के लिए, भूखों को भोजन देने के लिए, और बंदियों को स्वतंत्र करने के लिए, और बीमारों और पीड़ितों की सहायता करने के लिए ।
- 20 और अब, मेरे भाइयों, मैंने तुम से घमंड के संबंध में बातें की हैं; और तुम में से जिन्होंने परमेश्वर की दी गई वस्तुओं के कारण अपने हृदय में घमंड के कारण अपने पड़ोसी को कष्ट दिया, और उस पर अत्याचार किया, तुम इसके विषय में क्या कहते हो ?
- 21 क्या तुम यह नहीं सोचते कि ये काम उसके लिए घृणास्पद हैं जिसने सब प्राणियों की रचना की है ? और उसकी दृष्टि में एक व्यक्ति उतना ही मूल्यवान है जितना कि दूसरा । और सभी शरीर मिट्टी के हैं; और सभी को एक समान अंत के लिए उसने रचा है, कि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करें और हमेशा के लिए उसकी महिमा करें ।
- 22 और अब मैं इस घमंड के संबंध में तुम से बोलना समाप्त करता हूँ । और यदि मुझे इस बड़े अपराध के संबंध में न बोलना पड़ता, तो मेरा हृदय तुम्हारे लिए अत्याधिक आनंदित होता ।
- 23 लेकिन तुम्हारे बड़े अपराधों के कारण परमेश्वर के वचन मुझ पर दबाव डालते हैं । क्योंकि देखो, प्रभु इस प्रकार कहता है: ये लोग अधर्म में आगे बढ़ने लगे हैं; वे धर्मशास्त्रों को नहीं समझते हैं, क्योंकि वे दाऊद, और उसके पुत्र सुलेमान के संबंध में लिखी बातों का बहाना बनाकर, अपने आपको व्यभिचार से दोष मुक्त होने का प्रयास करते हैं ।
- 24 देखो, दाऊद और सुलेमान की सचमुच में कई पत्नियाँ और रखैल थीं, लेकिन प्रभु कहता है, यह बात मेरे समक्ष घृणित थी ।
- 25 इसलिए, प्रभु इस प्रकार कहता है, मैंने अपनी भुजा के बल से इन लोगों को यरूशलेम से इसलिए निकाला था कि मैं यूसुफ की संतान से एक धार्मिक शाखा पैदा कर सकूँ ।
- 26 इसलिए, मैं प्रभु परमेश्वर नहीं चाहूँगा कि ये लोग प्राचीन लोगों के समान काम करें ।
- 27 इसलिए, मेरे भाइयों, मेरी सुनो, और प्रभु के वचन पर ध्यान दो: तुम्हारे बीच कोई भी ऐसा नहीं होना चाहिए जिसकी एक से अधिक पत्नी हो; और रखैल एक भी नहीं;

And after ye have obtained a hope in Christ ye shall obtain riches, if ye seek them; and ye will seek them for the intent to do good—to clothe the naked, and to feed the hungry, and to liberate the captive, and administer relief to the sick and the afflicted.

And now, my brethren, I have spoken unto you concerning pride; and those of you which have afflicted your neighbor, and persecuted him because ye were proud in your hearts, of the things which God hath given you, what say ye of it?

Do ye not suppose that such things are abominable unto him who created all flesh? And the one being is as precious in his sight as the other. And all flesh is of the dust; and for the selfsame end hath he created them, that they should keep his commandments and glorify him forever.

And now I make an end of speaking unto you concerning this pride. And were it not that I must speak unto you concerning a grosser crime, my heart would rejoice exceedingly because of you.

But the word of God burdens me because of your grosser crimes. For behold, thus saith the Lord: This people begin to wax in iniquity; they understand not the scriptures, for they seek to excuse themselves in committing whoredoms, because of the things which were written concerning David, and Solomon his son.

Behold, David and Solomon truly had many wives and concubines, which thing was abominable before me, saith the Lord.

Wherefore, thus saith the Lord, I have led this people forth out of the land of Jerusalem, by the power of mine arm, that I might raise up unto me a righteous branch from the fruit of the loins of Joseph.

Wherefore, I the Lord God will not suffer that this people shall do like unto them of old.

Wherefore, my brethren, hear me, and hearken to the word of the Lord: For there shall not any man among you have save it be one wife; and concubines he shall have none;

- 28 क्योंकि मैं, प्रभु परमेश्वर, स्त्रियों के सतीत्व से खुश होता हूँ। और व्यभिचार मेरे समक्ष घृणित है; सर्वशक्तिमान प्रभु इस प्रकार कहता है।
- 29 इसलिए, ये लोग मेरी आज्ञाओं का पालन करेंगे, वरना इनके कारण यह भूमि श्रापित हो जाएगी, सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है।
- 30 क्योंकि यदि मुझे अपने वंश को खड़ा करना होगा, तो मैं अपने लोगों को आज्ञा दूंगा; और उन्हें इन बातों पर ध्यान देना होगा, सेनाओं का प्रभु कहता है।
- 31 क्योंकि देखो, मुझ, प्रभु ने यरूशलेम के प्रदेश में अपने लोगों की बेटियों के दुख को देखा, और विलाप को सुना है, हां, और मेरे लोगों के सब प्रदेशों में, उनके पतियों की दुष्टता और घृणित कामों के कारण।
- 32 और मैं नहीं चाहूंगा, सेनाओं का प्रभु कहता है, कि इन लोगों की सुंदर बेटियों का रूदन, जिन्हें मैं यरूशलेम के प्रदेश से निकाल कर लाया हूँ, मेरे लोगों के पुरुषों के विरुद्ध मेरे पास आए, सेनाओं का प्रभु कहता है।
- 33 क्योंकि वे मेरे लोगों की बेटियों को उनकी कोमलता के कारण गुलामी में नहीं ले जा सकेंगे, वरना मैं उन्हें घोर श्राप दूंगा, यहां तक कि मैं उनका विनाश कर दूंगा; वे प्राचीन लोगों के समान व्यभिचार नहीं करेंगे, सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है।
- 34 और अब देखो, मेरे भाइयों, तुम जानते हो कि ये आज्ञाएं हमारे पिता लेही को दी गई थीं; इसलिए, तुम इन्हें पहले से जानते हो; और तुम पर बहुत बड़े अपराध के दंड की आज्ञा लागू हुई है; क्योंकि तुमने उन कामों को किया है जिन्हें तुम्हें नहीं करना चाहिए था।
- 35 देखो, तुमने हमारे भाई लमनाइयों से अधिक पाप किये हैं। तुमने अपनी नाजुक पत्नी के हृदय को तोड़ा है, और उनके समक्ष अपने बुरे उदाहरणों के कारण अपने बच्चों के विश्वास को खोया है; और उनके हृदयों की सिसकियां तुम्हारे विरुद्ध परमेश्वर तक पहुंची हैं। और परमेश्वर के वचन की सख्ती के कारण, जोकि तुम्हारे विरुद्ध नीचे आते हैं, बहुत से हृदय गहरे घावों से क्षत-विक्षत होकर मर चुके हैं।

For I, the Lord God, delight in the chastity of women. And whoredoms are an abomination before me; thus saith the Lord of Hosts.

Wherefore, this people shall keep my commandments, saith the Lord of Hosts, or cursed be the land for their sakes.

For if I will, saith the Lord of Hosts, raise up seed unto me, I will command my people; otherwise they shall hearken unto these things.

For behold, I, the Lord, have seen the sorrow, and heard the mourning of the daughters of my people in the land of Jerusalem, yea, and in all the lands of my people, because of the wickedness and abominations of their husbands.

And I will not suffer, saith the Lord of Hosts, that the cries of the fair daughters of this people, which I have led out of the land of Jerusalem, shall come up unto me against the men of my people, saith the Lord of Hosts.

For they shall not lead away captive the daughters of my people because of their tenderness, save I shall visit them with a sore curse, even unto destruction; for they shall not commit whoredoms, like unto them of old, saith the Lord of Hosts.

And now behold, my brethren, ye know that these commandments were given to our father, Lehi; wherefore, ye have known them before; and ye have come unto great condemnation; for ye have done these things which ye ought not to have done.

Behold, ye have done greater iniquities than the Lamanites, our brethren. Ye have broken the hearts of your tender wives, and lost the confidence of your children, because of your bad examples before them; and the sobbings of their hearts ascend up to God against you. And because of the strictness of the word of God, which cometh down against you, many hearts died, pierced with deep wounds.

### याकूब 3

- 1 लेकिन देखो, मैं, याकूब, तुम से बोलता हूँ जो हृदय से शुद्ध हैं। परमेश्वर को दृढ़ संकल्प के साथ देखो, और अत्याधिक विश्वास के साथ प्रार्थना करो, और वह तुम्हारे कष्टों में तुम्हें दिलासा देगा, और वह तुम्हारे पक्ष का समर्थन करेगा, और उन्हें दंड देगा जो तुम्हारा विनाश चाहते हैं।
- 2 ओह तुम सब जो हृदय से शुद्ध हो, अपने सिरों को उठाओ और परमेश्वर के प्रिय वचन को प्राप्त करो, और उसके प्रेम में आनंदित रहो; यदि तुम दृढ़ संकल्प रहते हो तो हमेशा आनंदित रहोगे।
- 3 लेकिन, हाय. तुम पर जो कि हृदय से शुद्ध नहीं हो, जो आज परमेश्वर के समक्ष गंदे हैं; क्योंकि जब तक तुम पश्चाताप नहीं करोगे तब तक तुम्हारे कारण यह भूमि श्रापित रहेगी; और लमनाई, जो कि तुम्हारी तरह गंदे नहीं हैं, फिर भी वे घोर श्राप से श्रापित हैं, वे इतना सताएंगे कि तुम्हें नष्ट कर देंगे।
- 4 और समय शीघ्रता से आता है, कि यदि तुमने पश्चाताप नहीं किया तब वे तुम्हारे पैतृक संपत्ति के प्रदेश पर कब्जा कर लेंगे, और प्रभु परमेश्वर तुम्हारे बीच से धर्मियों को निकाल कर ले जाएगा।
- 5 देखो, लमनाई तुम्हारे भाई, जिन से तुम उनकी गंदगी और श्रापित चमड़ी के कारण घृणा करते हो, तुम से अधिक धर्मी हैं; क्योंकि वे प्रभु की आज्ञाओं को नहीं भूले हैं, जो कि उनके पूर्वजों को दी गई थीं—कि उन्हें केवल एक पत्नी रखनी चाहिए, और रखल एक भी नहीं, और उनके बीच व्यभिचार भी नहीं होना चाहिए।
- 6 और अब, इस आज्ञा का पालन करते हैं; इसलिए, इस आज्ञा के पालन के कारण, प्रभु परमेश्वर उन्हें नष्ट नहीं करेगा, लेकिन उनके प्रति दयालु होगा; और एक दिन वे आशीषित लोग बन जाएंगे।
- 7 देखो, उनके पति अपनी पत्नियों से प्रेम करते हैं, और उनकी पत्नियां अपने पतियों से प्रेम करती हैं; और उनकी पत्नियां अपने बच्चों से प्रेम करती हैं; और तुम्हारे प्रति उनका अविश्वास और नफरत उनके पूर्वजों के कारण है; इसलिए, अपने महान रचयिता की दृष्टि में तुम उनसे कितने बेहतर हो ?
- 8 ओह मेरे भाइयों, मुझे भय है कि यदि तुम अपने पापों से पश्चाताप नहीं करोगे तो जब तुम परमेश्वर के सिंहासन के समक्ष लाए जाओगे तो उनकी चमड़ी तुमसे अधिक साफ हो जाएगी।

### Jacob 3

But behold, I, Jacob, would speak unto you that are pure in heart. Look unto God with firmness of mind, and pray unto him with exceeding faith, and he will console you in your afflictions, and he will plead your cause, and send down justice upon those who seek your destruction.

O all ye that are pure in heart, lift up your heads and receive the pleasing word of God, and feast upon his love; for ye may, if your minds are firm, forever.

But, wo, wo, unto you that are not pure in heart, that are filthy this day before God; for except ye repent the land is cursed for your sakes; and the Lamanites, which are not filthy like unto you, nevertheless they are cursed with a sore cursing, shall scourge you even unto destruction.

And the time speedily cometh, that except ye repent they shall possess the land of your inheritance, and the Lord God will lead away the righteous out from among you.

Behold, the Lamanites your brethren, whom ye hate because of their filthiness and the cursing which hath come upon their skins, are more righteous than you; for they have not forgotten the commandment of the Lord, which was given unto our father—that they should have save it were one wife, and concubines they should have none, and there should not be whoredoms committed among them.

And now, this commandment they observe to keep; wherefore, because of this observance, in keeping this commandment, the Lord God will not destroy them, but will be merciful unto them; and one day they shall become a blessed people.

Behold, their husbands love their wives, and their wives love their husbands; and their husbands and their wives love their children; and their unbelief and their hatred towards you is because of the iniquity of their fathers; wherefore, how much better are you than they, in the sight of your great Creator?

O my brethren, I fear that unless ye shall repent of your sins that their skins will be whiter than yours, when ye shall be brought with them before the throne of God.

- 9 इसलिए, मैं तुम्हें एक आज्ञा देता हूँ, जो कि परमेश्वर का वचन है, कि तुम उनकी काली चमड़ी के कारण उनकी निंदा बिलकुल न करना; न ही तुम उनकी गंदगी के कारण उनकी निंदा करना; बल्कि तुम अपनी स्वयं की गंदगी याद रखना, और याद रखना कि उनकी गंदगी उनके पूर्वजों के कारण आई थी ।
- 10 इसलिए, तुम अपने बच्चों को याद रखना, कि उनके समक्ष जो उदाहरण तुम रख रहे हो उसके कारण उनके हृदय कितने दुखी हुए हैं; और तुम यह भी याद रखना कि, तुम्हारी गंदगी के कारण, तुम्हारे बच्चों का नाश आएगा, और अंतिम दिन उनके पापों का ढेर तुम्हारे सिर पर होगा ।
- 11 ओह मेरे भाइयों, मेरे शब्दों पर ध्यान दो; अपनी आत्माओं की शक्ति को उठाओ; अपने आपको हिलाओ ताकि तुम मृत्यु की झपकी से उठ जाओ; और अपने आपको नरक के कष्टों से मुक्त करो ताकि आग और गंधक की झील में फेंके जाने के लिए तुम शैतान के दूत न बन सको जोकि दूसरी मृत्यु है ।
- 12 और अब मैं, याकूब, ने नफी के लोगों को व्यभिचार और कामुकता, और हर प्रकार के पाप के भयंकर परिणामों को बताया और उनके विरुद्ध चेतावनी देते हुए उनसे बहुत सी बातें बोलीं ।
- 13 और इन लोगों के कामों के एक सौवें हिस्से को, जोकि अब अनगिनत हो गए हैं, इन पट्टियों पर नहीं लिखा जा सकता है; लेकिन उनके बहुत से काम, और उनके युद्ध, और उनके राजाओं के शासन बड़ी पट्टियों पर लिखे हुए हैं ।
- 14 इन पट्टियों को याकूब की पट्टियां कहते हैं, और ये नफी के हाथों से बनाई गई थी । और मैं इन शब्दों को कहना समाप्त करता हूँ ।

Wherefore, a commandment I give unto you, which is the word of God, that ye revile no more against them because of the darkness of their skins; neither shall ye revile against them because of their filthiness; but ye shall remember your own filthiness, and remember that their filthiness came because of their fathers.

Wherefore, ye shall remember your children, how that ye have grieved their hearts because of the example that ye have set before them; and also, remember that ye may, because of your filthiness, bring your children unto destruction, and their sins be heaped upon your heads at the last day.

O my brethren, hearken unto my words; arouse the faculties of your souls; shake yourselves that ye may awake from the slumber of death; and loose yourselves from the pains of hell that ye may not become angels to the devil, to be cast into that lake of fire and brimstone which is the second death.

And now I, Jacob, spake many more things unto the people of Nephi, warning them against fornication and lasciviousness, and every kind of sin, telling them the awful consequences of them.

And a hundredth part of the proceedings of this people, which now began to be numerous, cannot be written upon these plates; but many of their proceedings are written upon the larger plates, and their wars, and their contentions, and the reigns of their kings.

These plates are called the plates of Jacob, and they were made by the hand of Nephi. And I make an end of speaking these words.

## याकूब 4

- 1 अब देखो, ऐसा हुआ कि मैं, याकूब ने, अपने लोगों को बहुत से उपदेश दिए (और अपनी कुछ बातों को ही पट्टियों पर लिख पाऊंगा क्योंकि इन पट्टियों पर खोदकर शब्दों को लिखना कठिन है) और हम जानते हैं कि जो बातें हम इन पट्टियों पर लिखते हैं वह स्थाई रहेगा;
- 2 लेकिन जो कुछ बातें हम इन पट्टियों के सिवाय कहीं कहीं और लिखते हैं वे नष्ट और ओझल हो जाएंगी; लेकिन हम पट्टियों पर कुछ शब्द लिख सकते हैं, जो हमारे बच्चों, और हमारे प्रिय भाइयों को, हमारे संबंध में, या उनके पूर्वजों के संबंध में कुछ ज्ञान देंगी—
- 3 अब इस बात में हम आनंदित होते हैं; और हम इस आशा से निरंतर परिश्रम करके इन शब्दों को पट्टियों पर खोदकर लिख रहे हैं कि हमारे प्रिय भाई और हमारे बच्चे इन्हें कृतज्ञ हृदयों से स्वीकार करेंगे, और इनको इस प्रकार देखेंगे जिससे वे खुशी से सीख सकें न कि दुःखी होकर, और न ही अपने पूर्वजों से संबंधित ज्ञान का अपमान करेंगे।
- 4 क्योंकि, हमने इसी उद्देश्य से इन बातों को लिखा है, कि वे जानें कि हम मसीह के विषय में जानते थे, और हमें उसकी महिमा की आशा उसके आने से कई सौ साल पहले से थी; और न केवल हमें स्वयं उसकी महिमा की आशा थी, लेकिन हम से पहले सभी पवित्र भविष्यवक्ताओं को भी थी।
- 5 देखो, उन्होंने मसीह में विश्वास किया और पिता की उसके नाम में आराधना की थी, और हमने भी पिता की आराधना उसके नाम में की थी। और इसी उद्देश्य से हम मूसा की व्यवस्था का पालन करते हैं, जो हमारी आत्माओं को उसकी ओर केन्द्रित करता है; और इस कारण से इसे हमारी धार्मिकता के लिए उसी प्रकार पवित्र किया गया है, जैसे इसे निर्जन प्रदेश में इब्राहीम परमेश्वर की आज्ञा को पूरा करने के लिए अपने पुत्र इसहाक की बलि चढ़ाने के लिए तैयार हो गया था, जोकि परमेश्वर और उसके एकलौते पुत्र का प्रतीक था।
- 6 इसलिए, हम भविष्यवक्ताओं को खोजते हैं, और हमारे पास कई प्रकटीकरण और भविष्यवाणी की आत्मा है; और इन सब साक्षियों को प्राप्त करने के पश्चात हमें एक आशा मिली है, और हमारा विश्वास इतना मजबूत हो गया है कि हम वास्तव में यीशु के नाम में आज्ञा दे सकते हैं और वृक्ष, या पर्वत, या समुद्र की लहरें, हमारी आज्ञा का पालन करेंगी।

## Jacob 4

Now behold, it came to pass that I, Jacob, having ministered much unto my people in word, (and I cannot write but a little of my words, because of the difficulty of engraving our words upon plates) and we know that the things which we write upon plates must remain;

But whatsoever things we write upon anything save it be upon plates must perish and vanish away; but we can write a few words upon plates, which will give our children, and also our beloved brethren, a small degree of knowledge concerning us, or concerning their fathers—

Now in this thing we do rejoice; and we labor diligently to engraven these words upon plates, hoping that our beloved brethren and our children will receive them with thankful hearts, and look upon them that they may learn with joy and not with sorrow, neither with contempt, concerning their first parents.

For, for this intent have we written these things, that they may know that we knew of Christ, and we had a hope of his glory many hundred years before his coming; and not only we ourselves had a hope of his glory, but also all the holy prophets which were before us.

Behold, they believed in Christ and worshiped the Father in his name, and also we worship the Father in his name. And for this intent we keep the law of Moses, it pointing our souls to him; and for this cause it is sanctified unto us for righteousness, even as it was accounted unto Abraham in the wilderness to be obedient unto the commands of God in offering up his son Isaac, which is a similitude of God and his Only Begotten Son.

Wherefore, we search the prophets, and we have many revelations and the spirit of prophecy; and having all these witnesses we obtain a hope, and our faith becometh unshaken, insomuch that we truly can command in the name of Jesus and the very trees obey us, or the mountains, or the waves of the sea.



- 7 फिर भी, प्रभु परमेश्वर ने हमें हमारी कमजोरियों को दिखाया है ताकि हम जान सकें कि मानव संतान पर उसके अनुग्रह, और उसकी महान कृपा के द्वारा हमें ये सब करने की शक्ति मिली है ।
- 8 देखो, प्रभु के काम महान और आश्चर्यजनक हैं । उसके रहस्यों की गहराइयों को खोजना कितना कठिन है; और उसके सब मार्गों को समझ पाना मनुष्य के लिए असंभव है । और कोई भी मनुष्य उसके मार्गों को नहीं जानता जब वह उस पर इन्हें प्रकट न करे; इसलिए, भाइयों, परमेश्वर के प्रकटीकरणों की उपेक्षा मत करो ।
- 9 क्योंकि देखो, उसके वचन की शक्ति के द्वारा मनुष्य पृथ्वी पर आया, जिस पृथ्वी को उसके वचन की शक्ति के द्वारा रचा गया था । इसलिए, यदि परमेश्वर ने कहा और संसार की रचना हो गई, और उसने कहा और मनुष्य की रचना हो गई, तो ओह, क्यों वह पृथ्वी को आज्ञा नहीं दे सकता या इसके ऊपर उसके हाथों की कारीगरी, उसकी इच्छा और मर्जी से क्यों नहीं हो सकती ?
- 10 इसलिए, भाइयों, प्रभु को सलाह देने का प्रयास न करें, लेकिन उसके हाथों से सलाह लें । क्योंकि देखो, तुम स्वयं जानते हो कि वह अपने सब कामों में बुद्धिमता से, और न्याय से, और महान अनुग्रह से सलाह देता है ।
- 11 इसलिए, प्रिय भाइयों, उसके एकलौते पुत्र, मसीह के प्रायश्चित के द्वारा उससे मेल कर लो, और तब तुम पुनरुत्थान की शक्ति जोकि मसीह में है, के अनुसार पुनरुत्थान प्राप्त करो, और मसीह के प्रथम फल के रूप में परमेश्वर को समर्पित किये जाओ, उसे अपने आपकी शरीर में प्रकट करने से पहले, उसमें विश्वास और आशा की महिमा प्राप्त करो ।
- 12 और अब, प्रिय, आश्चर्य न करो कि मैं तुम से इन बातों को बोलता हूँ; क्यों हम मसीह के पश्चाताप के बारे में बातें न करें, और उसके परिपूर्ण ज्ञान को उसी प्रकार प्राप्त करें, जैसे हम पुनरुत्थान और आने वाले संसार के ज्ञान को प्राप्त करते हैं ?
- 13 देखो, मेरे भाइयों, वह जो भविष्यवाणी करता है, उसे मनुष्यों के ज्ञान के अनुसार भविष्यवाणी करने दो; क्योंकि आत्मा सच्चाई बोलती है और झूठ नहीं । इसलिए, वह बातों के विषय में वैसे ही बोलती है जैसी वे आज हैं, और जैसे वे भविष्य में होंगी; इसलिए, ये बातें, हमारी आत्माओं के उद्धार के लिए हम पर स्पष्टता से प्रकट की गई हैं । लेकिन सुनो, इन बातों के हम ही एक मात्र गवाह नहीं हैं; क्योंकि परमेश्वर ने प्राचीन भविष्यवक्ताओं से भी इनके विषय में बोला था ।

Nevertheless, the Lord God showeth us our weakness that we may know that it is by his grace, and his great condescensions unto the children of men, that we have power to do these things.

Behold, great and marvelous are the works of the Lord. How unsearchable are the depths of the mysteries of him; and it is impossible that man should find out all his ways. And no man knoweth of his ways save it be revealed unto him; wherefore, brethren, despise not the revelations of God.

For behold, by the power of his word man came upon the face of the earth, which earth was created by the power of his word. Wherefore, if God being able to speak and the world was, and to speak and man was created, O then, why not able to command the earth, or the workmanship of his hands upon the face of it, according to his will and pleasure?

Wherefore, brethren, seek not to counsel the Lord, but to take counsel from his hand. For behold, ye yourselves know that he counseleth in wisdom, and in justice, and in great mercy, over all his works.

Wherefore, beloved brethren, be reconciled unto him through the atonement of Christ, his Only Begotten Son, and ye may obtain a resurrection, according to the power of the resurrection which is in Christ, and be presented as the first-fruits of Christ unto God, having faith, and obtained a good hope of glory in him before he manifesteth himself in the flesh.

And now, beloved, marvel not that I tell you these things; for why not speak of the atonement of Christ, and attain to a perfect knowledge of him, as to attain to the knowledge of a resurrection and the world to come?

Behold, my brethren, he that prophesieth, let him prophesy to the understanding of men; for the Spirit speaketh the truth and lieth not. Wherefore, it speaketh of things as they really are, and of things as they really will be; wherefore, these things are manifested unto us plainly, for the salvation of our souls. But behold, we are not witnesses alone in these things; for God also spake them unto prophets of old.

14 लेकिन देखो, यहूदी हठी लोग थे; और उन्होंने स्पष्टता के शब्दों को अनदेखा कर दिया, और भविष्यवक्ताओं को मार डाला, और उन बातों की खोज करने लगे जिसे वे समझते नहीं थे। इसलिए, उनके अंधेपन के कारण, यह अंधापन लक्ष्य से परे देखने के कारण आया था, उनका पतन अवश्य होना था; क्योंकि परमेश्वर ने अपनी स्पष्टता को उनसे वापस ले लिया, और उन्हें वे बातें दी जो वे नहीं समझ सकते थे, क्योंकि उन्होंने इसकी इच्छा की थी। और क्योंकि उन्होंने इच्छा की इसलिए परमेश्वर ने वैसे ही किया, कि वे ठोकर खाएं।

15 और अब मैं, याकूब, आत्मा के द्वारा भविष्यवाणी करने के लिए प्रेरित किया गया हूँ; क्योंकि जो आत्मा मुझ में व्याप्त है उसके कामों के द्वारा मैं देख सकता हूँ, कि यहूदियों के ठोकर खाने के द्वारा वे उस पत्थर को अस्वीकार कर देंगे जिसके ऊपर वे सुरक्षित नींव का निर्माण कर सकते थे।

16 लेकिन देखो, धर्मशास्त्रों के अनुसार, यह पत्थर महान बनेगा, और यह अंतिम, और एकमात्र मजबूत नींव होगी, जिस पर यहूदी निर्माण कर सकते हैं।

17 और अब, मेरे प्रिय, यह कैसे संभव हो सकता है, कि मजबूत नींव को अस्वीकार करने के पश्चात कभी उस पर निर्माण करो, कि वह उनका कोने का पत्थर बन सके ?

18 देखो, मेरे प्रिय भाइयों, इस रहस्य को मैं तुम्हारे सामने खोलूंगा; यदि किसी कारण से मैं आत्मा की मजबूती में न डगमगाऊं और तुम्हारे लिए अपनी अत्याधिक चिन्ता के कारण ठोकर न खाऊं।

But behold, the Jews were a stiffnecked people; and they despised the words of plainness, and killed the prophets, and sought for things that they could not understand. Wherefore, because of their blindness, which blindness came by looking beyond the mark, they must needs fall; for God hath taken away his plainness from them, and delivered unto them many things which they cannot understand, because they desired it. And because they desired it God hath done it, that they may stumble.

And now I, Jacob, am led on by the Spirit unto prophesying; for I perceive by the workings of the Spirit which is in me, that by the stumbling of the Jews they will reject the stone upon which they might build and have safe foundation.

But behold, according to the scriptures, this stone shall become the great, and the last, and the only sure foundation, upon which the Jews can build.

And now, my beloved, how is it possible that these, after having rejected the sure foundation, can ever build upon it, that it may become the head of their corner?

Behold, my beloved brethren, I will unfold this mystery unto you; if I do not, by any means, get shaken from my firmness in the Spirit, and stumble because of my over anxiety for you.

## याकूब 5

- 1 देखो मेरे भाइयों, क्या तुम्हें याद नहीं कि तुमने भविष्यवक्ता जीनस के शब्दों को पढ़ा है, जो उसने इस्राएल के घराने से इस प्रकार कहे थे:
- 2 हे इस्राएल के घराने, मुझ, प्रभु के भविष्यवक्ता के शब्दों को सुनो ।
- 3 क्योंकि सुनो, प्रभु इस प्रकार कहता है, हे इस्राएल के घराने मैं तुम्हें पालतू जैतून के वृक्ष की तरह पसंद करता हूँ, जिसे एक मनुष्य ने अपने बगीचे में बोया और उसकी देखभाल की; और बड़ा हुआ, और बुढ़ा हुआ और सड़ना शुरू हो गया ।
- 4 और ऐसा हुआ कि बगीचे का स्वामी बगीचे में आया, और उसने देखा कि उसका जैतून का वृक्ष सड़ना शुरू हो गया है; और वह बोला: मैं इसकी छंटाई करूँगा, और इसके आस-पास खोदूँगा, और इसमें खाद डालूँगा, तो शायद हो सकता है इसमें से नई और कोमल शाखाएँ फूट निकलें, और यह सड़े नहीं ।
- 5 और ऐसा हुआ कि उसने अपने कहे अनुसार इसकी छंटाई की, और इसके आस-पास खुदाई की, और इसमें खाद डाली ।
- 6 और ऐसा हुआ कि कई दिनों के बाद इस में से कुछ छोटी, नई और कोमल शाखाएँ निकलनी शुरू हो गई; लेकिन देखो, इसका ऊपर की मुख्य शाखा सड़ने लगी थी ।
- 7 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने देखा, और अपने नौकर से बोला: मुझे दुख है कि मैं इस वृक्ष को खो दूँगा; इसलिए, जाओ और एक जंगली जैतून के वृक्ष की शाखाएँ तोड़ो, और यहाँ मेरे पास लाओ; और हम उन मुख्य शाखाओं को तोड़ देंगे जो सड़ रही है, और हम उन्हें आग में फेंक देंगे ताकि वे जल जाएँ ।
- 8 और देखो, बगीचे का स्वामी कहता है, मैं इन कई नई और कोमल शाखाओं को लेता हूँ, और मैं जहाँ चाहूँगा वहाँ मैं इनकी कलम लगाऊँगा; और इस बात का महत्व नहीं कि इस वृक्ष की जड़ सड़ जाए, मैं इसके फलों को अपने पास सुरक्षित रखूँगा; इसलिए, मैं इन नई और कोमल शाखाओं की कलम मैं जहाँ चाहूँगा वहाँ लगाऊँगा ।
- 9 तुम जंगली जैतून के वृक्ष की शाखाएँ लो, और सड़ी हुई शाखाओं के स्थान पर इनकी कलम लगाओ; और जिन्हें मैंने तोड़ा है मैं इन्हें आग में डालूँगा और जला दूँगा, ताकि वे मेरे बगीचे में स्थान न घेरें ।

## Jacob 5

Behold, my brethren, do ye not remember to have read the words of the prophet Zenos, which he spake unto the house of Israel, saying:

Hearken, O ye house of Israel, and hear the words of me, a prophet of the Lord.

For behold, thus saith the Lord, I will liken thee, O house of Israel, like unto a tame olive tree, which a man took and nourished in his vineyard; and it grew, and waxed old, and began to decay.

And it came to pass that the master of the vineyard went forth, and he saw that his olive tree began to decay; and he said: I will prune it, and dig about it, and nourish it, that perhaps it may shoot forth young and tender branches, and it perish not.

And it came to pass that he pruned it, and digged about it, and nourished it according to his word.

And it came to pass that after many days it began to put forth somewhat a little, young and tender branches; but behold, the main top thereof began to perish.

And it came to pass that the master of the vineyard saw it, and he said unto his servant: It grieveth me that I should lose this tree; wherefore, go and pluck the branches from a wild olive tree, and bring them hither unto me; and we will pluck off those main branches which are beginning to wither away, and we will cast them into the fire that they may be burned.

And behold, saith the Lord of the vineyard, I take away many of these young and tender branches, and I will graft them whithersoever I will; and it mattereth not that if it so be that the root of this tree will perish, I may preserve the fruit thereof unto myself; wherefore, I will take these young and tender branches, and I will graft them whithersoever I will.

Take thou the branches of the wild olive tree, and graft them in, in the stead thereof; and these which I have plucked off I will cast into the fire and burn them, that they may not cumber the ground of my vineyard.

- 10 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी के नौकर ने बगीचे के स्वामी के शब्दों के अनुसार किया, और जंगली जैतून के वृक्ष की शाखाओं की कलम लगा दी ।
- 11 और बगीचे के स्वामी ने वृक्ष के आस-पास खुदाई, और इसकी छटाई करवाई, और खाद डलवाई, अपने नौकर से कहा: मुझे दुख है कि मैं इस वृक्ष को खो दूंगा; इसलिए हो सकता है मैं इसकी जड़ों को सुरक्षित रख सकूँ ताकि वे नष्ट न हों, ताकि मैं उन्हें अपने लिए सुरक्षित रख सकूँ, इसलिए मैंने यह किया है ।
- 12 इसलिए, तुम जाओ; मेरे कहे अनुसार, वृक्ष की देखभाल करो, और इसमें खाद डालो ।
- 13 और मैं इन्हें अपने बगीचे के बीचों-बीच जहां मैं चाहूँगा वहां लगाऊँगा, इससे तुम्हारा कोई संबंध नहीं; और मैं ऐसा इसलिए करूँगा ताकि मैं वृक्ष की प्राकृतिक शाखाओं को अपने लिए सुरक्षित रख सकूँ; और इसके फल को भी मैं अपने उस समय के लिए जमा करके रख सकूँ जब इनका मौसम नहीं होता; क्योंकि मुझे दुख है कि मैं इस वृक्ष और इसके फल को खो दूँगा ।
- 14 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने अपने कहे अनुसार काम किया, और पालतू जैतून के वृक्ष की प्राकृतिक शाखाओं को बगीचे के बीचों-बीच, किसी को यहां और किसी को वहां अपनी इच्छा और मर्जी के अनुसार छिपा दिया ।
- 15 और ऐसा हुआ कि बहुत दिन गुजर गए, और बगीचे के स्वामी ने अपने नौकर से कहा: आओ, हम नीचे बगीचे में जाएं, ताकि हम बगीचे में काम करें ।
- 16 और ऐसा हुआ कि बगीचे का स्वामी, और उसका नौकर भी, नीचे बगीचे में काम करने गए । और ऐसा हुआ कि नौकर ने अपने स्वामी से कहा: यहां देखो; इस वृक्ष को देखो ।
- 17 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने उस वृक्ष को देखा जिसमें जंगली जैतून की शाखाएं कलम लगाई गई थीं; और वह विकसित हो गई थी और फल निकलने लगे थे । और उसने देखा कि वे अच्छे थे; और उसके फल प्राकृतिक फल के समान थे ।

And it came to pass that the servant of the Lord of the vineyard did according to the word of the Lord of the vineyard, and grafted in the branches of the wild olive tree.

And the Lord of the vineyard caused that it should be digged about, and pruned, and nourished, saying unto his servant: It grieveth me that I should lose this tree; wherefore, that perhaps I might preserve the roots thereof that they perish not, that I might preserve them unto myself, I have done this thing.

Wherefore, go thy way; watch the tree, and nourish it, according to my words.

And these will I place in the nethermost part of my vineyard, whithersoever I will, it mattereth not unto thee; and I do it that I may preserve unto myself the natural branches of the tree; and also, that I may lay up fruit thereof against the season, unto myself; for it grieveth me that I should lose this tree and the fruit thereof.

And it came to pass that the Lord of the vineyard went his way, and hid the natural branches of the tame olive tree in the nethermost parts of the vineyard, some in one and some in another, according to his will and pleasure.

And it came to pass that a long time passed away, and the Lord of the vineyard said unto his servant: Come, let us go down into the vineyard, that we may labor in the vineyard.

And it came to pass that the Lord of the vineyard, and also the servant, went down into the vineyard to labor. And it came to pass that the servant said unto his master: Behold, look here; behold the tree.

And it came to pass that the Lord of the vineyard looked and beheld the tree in the which the wild olive branches had been grafted; and it had sprung forth and begun to bear fruit. And he beheld that it was good; and the fruit thereof was like unto the natural fruit.

18 और उसने नौकर से कहा: देखो, जंगली वृक्ष की शाखाओं ने इसकी जड़ के जल को प्राप्त कर लिया है, इसकी जड़ ने बहुत शक्ति प्राप्त कर ली है; और इसकी जड़ की अधिक शक्ति के कारण जंगली शाखाओं ने पालतू फल पैदा किये हैं। अब, यदि हमने इन शाखाओं की कलम न लगाई होती, तो यह वृक्ष नष्ट हो जाता; और इसके फल को मैं अपने उस समय के लिए जमा करके रखूंगा जब इनका मौसम नहीं होता।

19 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने नौकर से कहा: आओ, हम बगीचे के बीचों-बीच जाएं, और देखें क्या उस वृक्ष की प्राकृतिक शाखाओं में भी इतने फल निकले हैं या नहीं; कि मैं उन्हें अपने उस समय के लिए जमा करके रख सकूँ जब इनका मौसम नहीं होता।

20 और ऐसा हुआ कि वे वहां गए जहां स्वामी ने वृक्ष की प्राकृतिक शाखाओं को छिपाया था, और उसने नौकर से कहा: इन्हें देखो; और उसने देखा कि पहली शाखा में बहुत से फल लगे थे; और उसने देखा कि वे अच्छे थे। और उसने नौकर से कहा: इसके फलों को लो, और इन्हें उस समय के लिए जमा कर लो जब इनका मौसम नहीं होता, ताकि मैं इन्हें अपने लिए सुरक्षित रख सकूँ; क्योंकि देखो, उसने कहा, मैंने इतने दिनों तक इसकी देखभाल की है, और इसमें बहुत फल निकले हैं।

21 और ऐसा हुआ कि नौकर ने स्वामी से कहा: आपने इस वृक्ष को या इसकी शाखा को यहां क्यों लगाया? क्योंकि देखो, यह आपके बगीचे की सारी भूमि की सबसे खराब जगह है।

22 और बगीचे के स्वामी ने उससे कहा: मुझे सलाह मत दो; मैं जानता था कि यह जमीन का खराब स्थान था; इसलिए, मैंने तुम से कहा था, मैंने इतने दिनों तक इसकी देखभाल की है, और तुम देख रहे हो कि इसमें बहुत फल लगे हैं।

23 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने नौकर से कहा: यहां देखो; मैंने इस वृक्ष की अन्य शाखा को भी लगाया था; और तुम जानते हो कि यह जगह पहले वाले से अधिक खराब थी। लेकिन, इस वृक्ष को देखो। मैंने इसकी इतने समय तक देखभाल की है, और इसमें बहुत फल लगे हैं; इसलिए इन्हें एकत्रित करो, और उस समय के लिए जमा करो जब इनका मौसम नहीं होता, ताकि मैं इन्हें अपने लिए सुरक्षित रख सकूँ।

And he said unto the servant: Behold, the branches of the wild tree have taken hold of the moisture of the root thereof, that the root thereof hath brought forth much strength; and because of the much strength of the root thereof the wild branches have brought forth tame fruit. Now, if we had not grafted in these branches, the tree thereof would have perished. And now, behold, I shall lay up much fruit, which the tree thereof hath brought forth; and the fruit thereof I shall lay up against the season, unto mine own self.

And it came to pass that the Lord of the vineyard said unto the servant: Come, let us go to the nethermost part of the vineyard, and behold if the natural branches of the tree have not brought forth much fruit also, that I may lay up of the fruit thereof against the season, unto mine own self.

And it came to pass that they went forth whither the master had hid the natural branches of the tree, and he said unto the servant: Behold these; and he beheld the first that it had brought forth much fruit; and he beheld also that it was good. And he said unto the servant: Take of the fruit thereof, and lay it up against the season, that I may preserve it unto mine own self; for behold, said he, this long time have I nourished it, and it hath brought forth much fruit.

And it came to pass that the servant said unto his master: How comest thou hither to plant this tree, or this branch of the tree? For behold, it was the poorest spot in all the land of thy vineyard.

And the Lord of the vineyard said unto him: Counsel me not; I knew that it was a poor spot of ground; wherefore, I said unto thee, I have nourished it this long time, and thou beholdest that it hath brought forth much fruit.

And it came to pass that the Lord of the vineyard said unto his servant: Look hither; behold I have planted another branch of the tree also; and thou knowest that this spot of ground was poorer than the first. But, behold the tree. I have nourished it this long time, and it hath brought forth much fruit; therefore, gather it, and lay it up against the season, that I may preserve it unto mine own self.

24 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने अपने नौकर से फिर कहा: यहां देखो; मैंने इस वृक्ष की अन्य शाखा को भी लगाया था; देखो मैंने इसकी भी देखभाल की थी, और इसमें फल लगे हैं।

25 और उसने अपने नौकर से कहा: यहां इस अंतिम शाखा को देखो, इसे मैंने अच्छी जगह पर लगाया था; और मैंने इसकी लंबे समय तक देखभाल की थी, और वृक्ष का केवल के एक हिस्से में ही पालतू जै-तून निकले हैं, और वृक्ष के अन्य भाग में जंगली फल निकले हैं; देखो, इस वृक्ष की देखभाल मैंने अन्य वृक्षों के समान की थी।

26 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने नौकर से कहा: उन शाखाओं को उखाड़ दो जिनमें अच्छे फल नहीं निकले हैं, और इन्हें आग में फेंक दो।

27 लेकिन देखो, नौकर ने उससे कहा: आओ हम इसकी छंटाई कर दें, और इसके आस-पास खोदें, और इसकी थोड़ी और देखभाल करते हैं, हो सकता है यह आपको अच्छे फल दे, जिसे आप उस समय के लिए रख सकें जब इनका मौसम नहीं होता।

28 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी और बगीचे के स्वामी के नौकर ने बगीचे के फलों की देखभाल की।

29 और ऐसा हुआ कि लंबा समय बीत चुका था, और बगीचे के स्वामी ने अपने नौकर से कहा: आओ, हम नीचे बगीचे में चलते हैं, कि हम बगीचे में फिर से काम करें। क्योंकि देखो, समय निकट आ रहा है, और जल्द ही समय समाप्त हो जाएगा; इसलिए, मुझे अपने लिए फलों को उस समय के लिए रख लेना चाहिए जब इनका मौसम नहीं होता।

30 और ऐसा हुआ कि बगीचे का स्वामी और नौकर नीचे बगीचे में गए; और वे उस वृक्ष के पास आए जिसकी शाखाएं तोड़ दी गई थी, और जंगली शाखाओं की कलम लगाई गयी थी; और देखा उस वृक्ष में सब प्रकार के फल लगे हुए थे।

31 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने सब प्रकार के फलों को एक-एक करके चखा। और बगीचे के स्वामी ने कहा: देखो, हमने इतने लंबे समय तक इस वृक्ष की देखभाल की है, और मैंने अपने लिए बहुत से फलों को उस समय के लिए रख लिया है जब इनका मौसम नहीं होता।

And it came to pass that the Lord of the vineyard said again unto his servant: Look hither, and behold another branch also, which I have planted; behold that I have nourished it also, and it hath brought forth fruit.

And he said unto the servant: Look hither and behold the last. Behold, this have I planted in a good spot of ground; and I have nourished it this long time, and only a part of the tree hath brought forth tame fruit, and the other part of the tree hath brought forth wild fruit; behold, I have nourished this tree like unto the others.

And it came to pass that the Lord of the vineyard said unto the servant: Pluck off the branches that have not brought forth good fruit, and cast them into the fire.

But behold, the servant said unto him: Let us prune it, and dig about it, and nourish it a little longer, that perhaps it may bring forth good fruit unto thee, that thou canst lay it up against the season.

And it came to pass that the Lord of the vineyard and the servant of the Lord of the vineyard did nourish all the fruit of the vineyard.

And it came to pass that a long time had passed away, and the Lord of the vineyard said unto his servant: Come, let us go down into the vineyard, that we may labor again in the vineyard. For behold, the time draweth near, and the end soon cometh; wherefore, I must lay up fruit against the season, unto mine own self.

And it came to pass that the Lord of the vineyard and the servant went down into the vineyard; and they came to the tree whose natural branches had been broken off, and the wild branches had been grafted in; and behold all sorts of fruit did cumber the tree.

And it came to pass that the Lord of the vineyard did taste of the fruit, every sort according to its number. And the Lord of the vineyard said: Behold, this long time have we nourished this tree, and I have laid up unto myself against the season much fruit.

- 32 लेकिन देखो, इस समय इसमें बहुत से फल निकले हैं, और कोई भी फल अच्छा नहीं है। और देखो, सभी प्रकार के बुरे फल हैं; और हमारी इतनी मेहनत करने से भी इनसे मुझे कुछ लाभ नहीं; और अब मुझे दुख है कि मैं इस वृक्ष को खो दूंगा।
- 33 और बगीचे के स्वामी ने नौकर से कहा: हम इस वृक्ष के साथ क्या करें, कि जिससे मैं अपने लिए इसके अच्छे फलों को फिर से जमा कर सकूँ ?
- 34 और नौकर ने स्वामी से कहा: देखो, क्योंकि आपने जंगली जैतून की शाखाओं की कलम लगाई थी उन्होंने जड़ों का पोषण किया है, कि वे जीवित हैं और वे नष्ट नहीं हुईं; इसलिए आप देखते हो कि वे अभी भी अच्छी हैं।
- 35 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने नौकर से कहा: इस वृक्ष से मुझे कोई लाभ नहीं है, और इसकी जड़ों से मुझे कुछ लाभ नहीं है जब तक इसमें बुरे फल लगते हैं।
- 36 फिर भी, मैं जानता हूँ कि इसकी जड़ें अच्छी हैं, और अपने स्वयं के उद्देश्य के लिए मैंने इन्हें सुरक्षित रखा है; और इनकी अधिक शक्ति के कारण इन, जंगली शाखाओं में से अच्छे फल निकले हैं
- 37 लेकिन देखो, जंगली शाखाएं बड़ी हो गई हैं और इसकी जड़ों को जकड़ लिया है; और क्योंकि जंगली शाखाओं ने इसकी जड़ों को जकड़ लिया है इसलिए इसमें अधिक बुरे फल निकले हैं; और क्योंकि इसमें इतने अधिक बुरे फल निकले हैं कि तुम देख सकते हो ये नष्ट होना शुरू हो गए हैं; और ये शीघ्र पक जाएंगे, यदि हमने इन्हें सुरक्षित रखने के लिए कुछ नहीं किया तो हमें इन्हें आग में फेंकना पड़ सकता है।
- 38 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने अपने नौकर से कहा: आओ हम बगीचे के सबसे निचले हिस्सों में जाएं, और देखें कि क्या प्राकृतिक शाखाओं में बुरे फल निकले हैं।
- 39 और ऐसा हुआ कि वे बगीचे के सबसे निचले हिस्सों में गए। और ऐसा हुआ कि उन्होंने देखा कि प्राकृतिक शाखाओं के फल भी भ्रष्ट हो गए थे; हां, पहली और दूसरी और अंतिम शाखा के भी; और वे सबके सब भ्रष्ट हो गए थे।
- 40 और अंतिम शाखा के जंगली फलों ने वृक्ष के उस हिस्से को भी जकड़ लिया था जिसमें अच्छे फल निकले थे, यहां तक कि वह शाखा मुरझा कर मर गई थी।

But behold, this time it hath brought forth much fruit, and there is none of it which is good. And behold, there are all kinds of bad fruit; and it profiteth me nothing, notwithstanding all our labor; and now it grieveth me that I should lose this tree.

And the Lord of the vineyard said unto the servant: What shall we do unto the tree, that I may preserve again good fruit thereof unto mine own self?

And the servant said unto his master: Behold, because thou didst graft in the branches of the wild olive tree they have nourished the roots, that they are alive and they have not perished; wherefore thou beholdest that they are yet good.

And it came to pass that the Lord of the vineyard said unto his servant: The tree profiteth me nothing, and the roots thereof profit me nothing so long as it shall bring forth evil fruit.

Nevertheless, I know that the roots are good, and for mine own purpose I have preserved them; and because of their much strength they have hitherto brought forth, from the wild branches, good fruit.

But behold, the wild branches have grown and have overrun the roots thereof; and because that the wild branches have overcome the roots thereof it hath brought forth much evil fruit; and because that it hath brought forth so much evil fruit thou beholdest that it beginneth to perish; and it will soon become ripened, that it may be cast into the fire, except we should do something for it to preserve it.

And it came to pass that the Lord of the vineyard said unto his servant: Let us go down into the nethermost parts of the vineyard, and behold if the natural branches have also brought forth evil fruit.

And it came to pass that they went down into the nethermost parts of the vineyard. And it came to pass that they beheld that the fruit of the natural branches had become corrupt also; yea, the first and the second and also the last; and they had all become corrupt.

And the wild fruit of the last had overcome that part of the tree which brought forth good fruit, even that the branch had withered away and died.

- 41 और ऐसा हुआ कि बगीचे का स्वामी रोया, और अपने नौकर से कहा: मैं अपने बगीचे के लिए इससे अधिक क्या कर सकता था ?
- 42 देखो, मैं जानता था कि इन फलों के सिवाय सारे बगीचे के फल भ्रष्ट हो गए थे । और ये भी भ्रष्ट हो गए हैं जो कभी अच्छे फल हुआ करते थे; और मेरे बगीचे के ये सब वृक्ष अब किसी काम के नहीं सिवाय इसके कि इन्हें काट डाला जाए और आग में फेंका जाए ।
- 43 और देखो इस अंतिम को देखो, जिसकी शाखा मुरझा गई है, मैंने इसे अच्छी जगह में लगाया था; हां, जो मुझे अपने बगीचे की सारी भूमि में सबसे अधिक पसंद थी ।
- 44 और तुम देखते हो कि मैंने उनको भी काट डाला था जो इस जगह को घेरे हुए थे, ताकि मैं इस वृक्ष को उनके स्थान पर लगा सकूँ ।
- 45 और तुम देखते हो कि इसके एक हिस्से में अच्छे फल निकले हैं, और दूसरे हिस्से में जंगली फल निकले हैं; और क्योंकि मैंने इसकी शाखाओं को नहीं काटा और इन्हें आग में नहीं फेंका, इसलिए देखो, इन्होंने अच्छी शाखा को इतना जकड़ लिया है कि वह मुरझा गई है ।
- 46 और अब, देखो, हमने इतनी देखभाल जो मेरे बगीचे की है उसके बावजूद, इसके वृक्ष इतने भ्रष्ट हो गए हैं, कि इनमें अच्छे फल नहीं निकले हैं; और मैंने सोचा था कि इसके फल को मैं अपने उस समय के लिए जमा करके रखूंगा जब इनका मौसम नहीं होता । लेकिन, देखो ये जंगली जैतून के वृक्ष के समान बन गए हैं, और ये किसी काम के नहीं सिवाय इसके कि इन्हें काट डाला जाए और आग में फेंक दिया जाए; और मुझे दुख है कि मैं इन्हें खो दूंगा ।
- 47 लेकिन अपने बगीचे में इससे अधिक मैं क्या कर सकता था ? क्या इसकी देखभाल करने में मैंने अपने हाथ शिथिल किये थे ? नहीं, मैंने इसकी देखभाल की थी, और मैंने इसके आसपास मिट्टी खोदी थी, और मैंने इसकी छंटाई की थी; और मैंने इसमें खाद डाली थी; और लगभग सारा दिन मैंने अपने हाथ से काम किया था, और अंत निकट आ गया है । और मुझे दुख है कि मैं अपने बगीचे के सारे वृक्षों को काट डालूंगा, और इन्हें आग में फेंक दूंगा कि ये जलाए जाएं । कौन है जिसने मेरे बगीचे को भ्रष्ट किया है ?

And it came to pass that the Lord of the vineyard wept, and said unto the servant: What could I have done more for my vineyard?

Behold, I knew that all the fruit of the vineyard, save it were these, had become corrupted. And now these which have once brought forth good fruit have also become corrupted; and now all the trees of my vineyard are good for nothing save it be to be hewn down and cast into the fire.

And behold this last, whose branch hath withered away, I did plant in a good spot of ground; yea, even that which was choice unto me above all other parts of the land of my vineyard.

And thou beheldest that I also cut down that which cumbered this spot of ground, that I might plant this tree in the stead thereof.

And thou beheldest that a part thereof brought forth good fruit, and a part thereof brought forth wild fruit; and because I plucked not the branches thereof and cast them into the fire, behold, they have overcome the good branch that it hath withered away.

And now, behold, notwithstanding all the care which we have taken of my vineyard, the trees thereof have become corrupted, that they bring forth no good fruit; and these I had hoped to preserve, to have laid up fruit thereof against the season, unto mine own self. But, behold, they have become like unto the wild olive tree, and they are of no worth but to be hewn down and cast into the fire; and it grieveth me that I should lose them.

But what could I have done more in my vineyard? Have I slackened mine hand, that I have not nourished it? Nay, I have nourished it, and I have digged about it, and I have pruned it, and I have dunged it; and I have stretched forth mine hand almost all the day long, and the end draweth nigh. And it grieveth me that I should hew down all the trees of my vineyard, and cast them into the fire that they should be burned. Who is it that has corrupted my vineyard?



48 और ऐसा हुआ कि नौकर ने अपने स्वामी से कहा: क्या यह आपके बगीचे का अभिमान नहीं है—क्या शाखाओं ने ही उन जड़ों को नहीं जकड़ लिया था जो अच्छी थीं? और क्योंकि शाखाओं ने अपनी ही जड़ों को जकड़ लिया था, देखो, वे जड़ों की शक्ति लेकर जड़ों की शक्ति से अधिक तेजी से विकसित हो गईं। देखो, मैं कहता हूँ, क्या यह वह कारण नहीं है जिससे आपके बगीचे के वृक्ष भ्रष्ट हो गए?

49 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने नौकर से कहा: आओ हम जाएं और बगीचे के वृक्षों को काट डालें और इन्हें आग में फेंक दें, ताकि वे मेरे बगीचे में जगह न घेरें, क्योंकि मैं सब कुछ कर चुका हूँ। मैं अपने बगीचे के लिए इससे अधिक क्या कर सकता था?

50 लेकिन, देखो, नौकर ने बगीचे के स्वामी से कहा: इन्हें थोड़ा समय और दे दो।

51 और स्वामी ने कहा: हाँ, मैं इन्हें थोड़ा समय और दूंगा, क्योंकि मुझे दुख है कि मैं अपने बगीचे के वृक्षों को खो दूंगा।

52 इसलिए, आओ हम उनकी शाखाओं को लें जिन्हें मैंने अपने बगीचे के बीचों-बीच लगाया है, और आओ इन्हें हम उन वृक्षों पर कलम लगाएं जहां से ये लाई गई थीं; और आओ वृक्ष से उन शाखाओं को उखाड़ दें जिसके फल बहुत कड़वे हैं, और इनके स्थान पर प्राकृतिक वृक्ष की शाखाओं की कलम लगाएं।

53 और मैं ऐसा ही करूंगा ताकि वह वृक्ष नष्ट न हो, शायद मैं इसकी जड़ों को अपने स्वयं के उद्देश्य के लिए सुरक्षित रख सकूँ।

54 और, वृक्ष की उन प्राकृतिक शाखाओं को देखो जिन्हें मैंने जहां चाहा था वहां लगाया था वे अभी भी जीवित हैं; इसलिए, मैं इन्हें भी अपने स्वयं के उद्देश्य के लिए सुरक्षित रखूंगा, मैं इस वृक्ष की शाखाओं को लूंगा, और मैं इनकी उनमें कलम लगाऊंगा। हाँ, मैं इनके मूल वृक्ष में इनकी कलम लगाऊंगा, ताकि मैं इन जड़ों को भी अपने स्वयं के लिए सुरक्षित रख सकूँ, कि जब वे काफी मजबूत हो जाएंगी वे मुझे अच्छे फल देगीं, और मैं अपने बगीचे के फल का आनंद ले सकूंगा।

55 और ऐसा हुआ कि उन्होंने उस प्राकृतिक वृक्ष को लिया जो जंगली हो गया था, और प्राकृतिक वृक्षों में उसकी कलम लगा दी, जोकि जंगली हो गए थे।

56 और उन्होंने प्राकृतिक वृक्षों को भी लिया जो जंगली हो गए थे, और उनकी कलम उनके मूल वृक्ष में लगा दी।

And it came to pass that the servant said unto his master: Is it not the loftiness of thy vineyard—have not the branches thereof overcome the roots which are good? And because the branches have overcome the roots thereof, behold they grew faster than the strength of the roots, taking strength unto themselves. Behold, I say, is not this the cause that the trees of thy vineyard have become corrupted?

And it came to pass that the Lord of the vineyard said unto the servant: Let us go to and hew down the trees of the vineyard and cast them into the fire, that they shall not cumber the ground of my vineyard, for I have done all. What could I have done more for my vineyard?

But, behold, the servant said unto the Lord of the vineyard: Spare it a little longer.

And the Lord said: Yea, I will spare it a little longer, for it grieveth me that I should lose the trees of my vineyard.

Wherefore, let us take of the branches of these which I have planted in the nethermost parts of my vineyard, and let us graft them into the tree from whence they came; and let us pluck from the tree those branches whose fruit is most bitter, and graft in the natural branches of the tree in the stead thereof.

And this will I do that the tree may not perish, that, perhaps, I may preserve unto myself the roots thereof for mine own purpose.

And, behold, the roots of the natural branches of the tree which I planted whithersoever I would are yet alive; wherefore, that I may preserve them also for mine own purpose, I will take of the branches of this tree, and I will graft them in unto them. Yea, I will graft in unto them the branches of their mother tree, that I may preserve the roots also unto mine own self, that when they shall be sufficiently strong perhaps they may bring forth good fruit unto me, and I may yet have glory in the fruit of my vineyard.

And it came to pass that they took from the natural tree which had become wild, and grafted in unto the natural trees, which also had become wild.

And they also took of the natural trees which had become wild, and grafted into their mother tree.

- 57 और बगीचे के स्वामी ने नौकर से कहा: वृक्षों से जंगली शाखाओं को नहीं उखाड़ो, सिवाय उनके जो बहुत कड़वी हो गई हैं; और उनमें तुम वही कलम लगाना जैसे मैंने कहा है।
- 58 और हम बगीचे की फिर से देखभाल करेंगे, और हम शाखाओं की छटाई करेंगे; और वृक्ष की उन शाखाओं को उखाड़ देंगे जो पककर नष्ट हो जाएंगी, और इन्हें आग में फेंक देंगे।
- 59 और मैं ऐसा करता हूँ कि, शायद, इसकी जड़ें उनकी अच्छाई से शक्ति प्राप्त कर सकें; और शाखाओं को बदलने के कारण, हो सकता है अच्छाई बुराई को पराजित कर दे।
- 60 और क्योंकि मैंने प्राकृतिक शाखाओं और जड़ों को सुरक्षित रखा, और कि मैंने प्राकृतिक शाखाओं की कलम को उनके मूल वृक्ष में फिर से लगाई, और उनके मूल वृक्ष की जड़ों को सुरक्षित रखा, कि, शायद, मेरे बगीचे के वृक्ष फिर से अच्छे फल देंगे, और, शायद, कि मैं अत्याधिक आनंदित हो सकूँ कि मैंने प्रथम फल की जड़ों और शाखाओं को सुरक्षित रखा—
- 61 इसलिए, जाओ, और नौकरों को बुलाओ, कि हम बगीचे में अपनी शक्ति से काम करें, कि हम मार्ग तैयार कर सकें, कि मैं फिर से प्राकृतिक फलों को उगा सकूँ, जोकि अच्छे और सभी अन्य फलों से मूल्यवान हैं।
- 62 इसलिए, आओ हम अंतिम बार अपनी शक्ति से काम करने चलें, क्योंकि देखो अंत निकट है, और यह अंतिम बार है कि मैं अपने बगीचे की छटाई करूँगा।
- 63 शाखाओं में कलम लगाओ; आखिर से शुरू करो कि वे पहले हो जाएं, और पहले आखिर हो जाएं, और वृक्षों के चारों ओर गड्ढा खोदो, दोनों पुराने और नए, प्रथम और अंतिम, और अंतिम और प्रथम, कि सभी को आखिरी बार फिर से पोषण दिया जा सके।
- 64 इसलिए, उनके चारों ओर गड्ढा खोदो, और उनकी छटाई करो, और उनको एक बार फिर खाद दो, अंतिम बार, क्योंकि अंत निकट है। और यदि ऐसा होता कि यह अंतिम कलम उगती है, और प्राकृतिक फल निकलते हैं, फिर तुम उनके मार्ग तैयार करना, कि वे विकसित हो सकें।

And the Lord of the vineyard said unto the servant: Pluck not the wild branches from the trees, save it be those which are most bitter; and in them ye shall graft according to that which I have said.

And we will nourish again the trees of the vineyard, and we will trim up the branches thereof; and we will pluck from the trees those branches which are ripened, that must perish, and cast them into the fire.

And this I do that, perhaps, the roots thereof may take strength because of their goodness; and because of the change of the branches, that the good may overcome the evil.

And because that I have preserved the natural branches and the roots thereof, and that I have grafted in the natural branches again into their mother tree, and have preserved the roots of their mother tree, that, perhaps, the trees of my vineyard may bring forth again good fruit; and that I may have joy again in the fruit of my vineyard, and, perhaps, that I may rejoice exceedingly that I have preserved the roots and the branches of the first fruit—

Wherefore, go to, and call servants, that we may labor diligently with our might in the vineyard, that we may prepare the way, that I may bring forth again the natural fruit, which natural fruit is good and the most precious above all other fruit.

Wherefore, let us go to and labor with our might this last time, for behold the end draweth nigh, and this is for the last time that I shall prune my vineyard.

Graft in the branches; begin at the last that they may be first, and that the first may be last, and dig about the trees, both old and young, the first and the last; and the last and the first, that all may be nourished once again for the last time.

Wherefore, dig about them, and prune them, and dung them once more, for the last time, for the end draweth nigh. And if it be so that these last grafts shall grow, and bring forth the natural fruit, then shall ye prepare the way for them, that they may grow.

- 65 और वे जब बढ़ने लगे तब जिन शाखाओं में कड़वे फल लगे, उन्हें काट कर अच्छी डालियों की शक्ति और आकार के अनुसार छोड़ दो, परन्तु सभी भ्रष्ट डालियों को एक साथ मत काटना वरना उनकी जड़ें कलम की गई शाखाओं के लिए अधिक शक्तिमान होंगी और वे नष्ट हो जाएंगी और मैं अपने बगीचे के वृक्षों को खो दूंगा ।
- 66 क्योंकि अपने वृक्षों को खोने का मुझे दुख होगा; इसलिए जैसे जैसे अच्छी शाखा बढ़े, वैसे वैसे बुरी शाखाओं को काट कर अलग करते जाओ जिससे कि जड़ और शाखाएं शक्ति में एक समान हों और यह तब तक करते जाओ जब तक कि अच्छी फल वाली शाखाएं बुरे फल वाली शाखाओं को वश में न कर लें, और बुरी शाखाओं को काटकर अग्नि में डाल दो जिससे कि उनसे मेरे बगीचे की भूमि पर विघ्न न पैदा हो; इस प्रकार मैं अपने बगीचे में से भ्रष्टता निकाल बाहर करूंगा ।
- 67 और मैं प्राकृतिक वृक्ष की शाखाओं में फिर से प्राकृतिक वृक्ष की कलम बांधूंगा;
- 68 और मैं प्राकृतिक वृक्ष की शाखाओं को, वृक्ष की प्राकृतिक शाखाओं में कलम बांधूंगा; और इस प्रकार मैं उन दोनों को पुनः निकट लाऊंगा, जिससे कि वे प्राकृतिक फल देंगे और वे दोनों एक हो जाएंगे ।
- 69 और जो भ्रष्ट हैं उनको मेरे बगीचे के बाहर फेंका जाएगा; क्योंकि देखो, इसी एक बार मैं अपने बगीचे को छाटूंगा ।
- 70 और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने अपने सेवकों को भेजा; और सेवक ने जाकर वैया ही किया जैसा स्वामी ने कहा था, वह जाकर अन्य सेवकों को भी बुला लाया जो संख्या में कम थे ।
- 71 और ऐसा हुआ कि बगीचे का स्वामी उनसे बोला: जाओ और बगीचे में परिश्रम करो । क्योंकि देखो; अब अंतिम बार मैं अपने बगीचे की देख भाल करूंगा; क्योंकि अंत निकट है; और मौसम शीघ्रता के साथ बदल रहा है; और अगर तुमने मेरे साथ लगन के साथ परिश्रम किया तब जो फल मैं अपने भविष्य के लिए संचित करूंगा उससे तुमको भी आनंद प्राप्त होगा ।
- 72 और ऐसा हुआ कि सेवकों ने जाकर पूरी शक्ति से परिश्रम किया और उनके साथ बगीचे के स्वामी ने भी परिश्रम किया और सेवकों ने सभी बातों में बगीचे के स्वामी की आज्ञाओं का पालन किया ।

And as they begin to grow ye shall clear away the branches which bring forth bitter fruit, according to the strength of the good and the size thereof; and ye shall not clear away the bad thereof all at once, lest the roots thereof should be too strong for the graft, and the graft thereof shall perish, and I lose the trees of my vineyard.

For it grieveth me that I should lose the trees of my vineyard; wherefore ye shall clear away the bad according as the good shall grow, that the root and the top may be equal in strength, until the good shall overcome the bad, and the bad be hewn down and cast into the fire, that they cumber not the ground of my vineyard; and thus will I sweep away the bad out of my vineyard.

And the branches of the natural tree will I graft in again into the natural tree;

And the branches of the natural tree will I graft into the natural branches of the tree; and thus will I bring them together again, that they shall bring forth the natural fruit, and they shall be one.

And the bad shall be cast away, yea, even out of all the land of my vineyard; for behold, only this once will I prune my vineyard.

And it came to pass that the Lord of the vineyard sent his servant; and the servant went and did as the Lord had commanded him, and brought other servants; and they were few.

And the Lord of the vineyard said unto them: Go to, and labor in the vineyard, with your might. For behold, this is the last time that I shall nourish my vineyard; for the end is nigh at hand, and the season speedily cometh; and if ye labor with your might with me ye shall have joy in the fruit which I shall lay up unto myself against the time which will soon come.

And it came to pass that the servants did go and labor with their mights; and the Lord of the vineyard labored also with them; and they did obey the commandments of the Lord of the vineyard in all things.

73 और बगीचे में पुनः प्राकृतिक फल लगने लगे; और प्राकृतिक शाखा अत्याधिक बढ़ने लगी; और जंगली शाखाओं को काट-काट कर फेंका जाने लगा और उन्होंने जड़ों और शाखाओं को उनकी शक्ति के अनुपात में बराबर किया ।

74 और इस प्रकार वे बगीचे के स्वामी की आज्ञानुसार तब तक परिश्रम के साथ काम करते रहे जब तक कि बगीचे में से सब भ्रष्ट शाखाओं को फेंका न गया और स्वामी ने अपने लिए वृक्षों को अच्छे प्राकृतिक फल देने वाला न बना लिया; और वे सब वृक्ष एक से हो गए; और उनके फल भी वैसे ही हो गए; और बगीचे के स्वामी ने अपने लिए पहले से भी अधिक बहुमूल्य प्राकृतिक फलों को संचित कर लिया ।

75 और ऐसा हुआ कि जब बगीचे के स्वामी ने देखा कि उसके फल अच्छे थे और उसका बगीचा भ्रष्ट नहीं रहा, तब उसने अपने सेवकों को बुला कर कहा: देखो, हमने इस अंतिम बार अपने बगीचे की देखभाल की, और तुमने देखा कि यह मैंने अपनी इच्छानुसार किया है; और मैंने प्राकृतिक फलों का संग्रह किया है जो कि पहले की तरह ही अच्छे हैं । आशीर्षित हो तुम क्योंकि तुमने मेरी आज्ञा को माना, और फिर से प्राकृतिक फलों को लाए जिससे कि मेरा बगीचा भ्रष्ट नहीं रहा, और जो बुरे थे उन्हें निकाल फेंका; देखो मेरे बगीचे के फलों के कारण तुम भी मेरे साथ आनंद मनाओ ।

76 क्योंकि देखो, जब फलों के लगने का मौसम नहीं रहेगा, जोकि शीघ्र आनेवाला है, तब बहुत दिनों तक के लिए मैंने फलों को सुरक्षित रख लिया है; और मैंने अपने बगीचे की देखभाल अंतिम बार की है, शाखाएं छांटी, जड़ के आस-पास मिट्टी खोदी, और खाद दी; इसलिए जैसा कि मैंने कहा वैसे ही अपने निमित्त बहुत दिनों तक के लिए फलों को संचित कर लिया है ।

77 और जब वह समय फिर से आएगा कि मेरे बगीचे में भ्रष्ट फल फिर से लगेंगे, तब मैं अच्छे और बुरे फलों को एकत्रित करूंगा; और अच्छे को अपने लिए सुरक्षित रखूंगा, और बुरों को उनके स्थान पर ही फेंक दूंगा । और तब मौसम और अंत समय आएगा; और मैं अपने बगीचे को आग से जलवा दूंगा ।

And there began to be the natural fruit again in the vineyard; and the natural branches began to grow and thrive exceedingly; and the wild branches began to be plucked off and to be cast away; and they did keep the root and the top thereof equal, according to the strength thereof.

And thus they labored, with all diligence, according to the commandments of the Lord of the vineyard, even until the bad had been cast away out of the vineyard, and the Lord had preserved unto himself that the trees had become again the natural fruit; and they became like unto one body; and the fruits were equal; and the Lord of the vineyard had preserved unto himself the natural fruit, which was most precious unto him from the beginning.

And it came to pass that when the Lord of the vineyard saw that his fruit was good, and that his vineyard was no more corrupt, he called up his servants, and said unto them: Behold, for this last time have we nourished my vineyard; and thou beholdest that I have done according to my will; and I have preserved the natural fruit, that it is good, even like as it was in the beginning. And blessed art thou; for because ye have been diligent in laboring with me in my vineyard, and have kept my commandments, and have brought unto me again the natural fruit, that my vineyard is no more corrupted, and the bad is cast away, behold ye shall have joy with me because of the fruit of my vineyard.

For behold, for a long time will I lay up of the fruit of my vineyard unto mine own self against the season, which speedily cometh; and for the last time have I nourished my vineyard, and pruned it, and dug about it, and dunged it; wherefore I will lay up unto mine own self of the fruit, for a long time, according to that which I have spoken.

And when the time cometh that evil fruit shall again come into my vineyard, then will I cause the good and the bad to be gathered; and the good will I preserve unto myself, and the bad will I cast away into its own place. And then cometh the season and the end; and my vineyard will I cause to be burned with fire.

## याकूब 6

- 1 और अब, देखो, मेरे भाइयों, मैंने यह कहा था कि मैं भविष्यवाणी करूंगा, देखो, यह मेरी भविष्यवाणी है—कि इस्राएल के घराने के विषय में भविष्यवक्ता जीनस, जिन्होंने उसकी एक प्राकृतिक जैतून के वृक्ष से तुलना की थी, वह निश्चय ही पूरी होगी ।
- 2 और जिस दिन वह अपने लोगों को प्राप्त करने के लिए दुबारा हाथ बढ़ाएगा, वही वह दिन होगा जब कि प्रभु के सेवक उसकी शक्ति के साथ उसके बगीचे की देखभाल करने और छांटने के लिए अंतिम बार जाएंगे; और तब अंत शीघ्र आएगा ।
- 3 और कितने धन्य हैं वे लोग जिन्होंने उसके बगीचे में परिश्रम किया है; और कितने शापित हैं वे लोग जिन्हें उनके स्थानों पर फेंका जाएगा । और संसार को अग्नि से जलाया जाएगा ।
- 4 और इस्राएल के घराने की जड़ और शाखाओं को याद रखने के लिए हमारा परमेश्वर हम पर कितना दयालु है; और वह उनके लिए पूरे दिन अपना हाथ आगे बढ़ाता रहता है; किन्तु वे हठी और स्वार्थी लोग हैं; लेकिन जितने लोग हृदय को कठोर नहीं करेंगे; उनको परमेश्वर के राज्य में बचा लिया जाएगा ।
- 5 इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों, मैं विवेकमय शब्दों से तुमसे कहता हूँ कि तुम पश्चाताप करो, और सच्चे हृदय से परमेश्वर के पास आओ और जैसे वह तुम्हारे लिए प्रयत्नशील है वैसे ही तुम भी उसके लिए प्रयत्न करो । और दिन के प्रकाश में जब तक उसकी दया का हाथ तुम्हारी ओर बढ़ा है, तुम अपने हृदय को कठोर मत करो ।
- 6 हां, आज, यदि तुम उसकी वाणी को सुनते हो, तो अपने हृदय को कठोर मत करना; क्योंकि तुम मरना क्यों चाहोगे ?
- 7 क्योंकि देखो, सारा दिन परमेश्वर की अच्छी वाणी द्वारा पोषित किये जाने के पश्चात क्या तुम बुरा फल खाओगे जिससे कि तुम्हें काटकर अग्नि में डाल दिया जाए ?
- 8 देखो, क्या तुम इन शब्दों को अस्वीकार कर दोगे ? क्या तुम भविष्यवक्ताओं की बातों को अस्वीकार कर दोगे ? मसीह के विषय में इतने लोगों द्वारा कही गई बातों को सुनने के पश्चात क्या तुम उसे अस्वीकार कर दोगे; और मसीह की अच्छी वाणी, और परमेश्वर की शक्ति, और पवित्र आत्मा के उपहार को अस्वीकार करोगे, और पवित्र आत्मा की चिंगारी बुझा दोगे, और मुक्ति की उस महान योजना का मजाक उड़ाओगे, जिसे तुम्हारे लिए तैयार किया गया है ?

## Jacob 6

And now, behold, my brethren, as I said unto you that I would prophesy, behold, this is my prophecy—that the things which this prophet Zenos spake, concerning the house of Israel, in the which he likened them unto a tame olive tree, must surely come to pass.

And the day that he shall set his hand again the second time to recover his people, is the day, yea, even the last time, that the servants of the Lord shall go forth in his power, to nourish and prune his vineyard; and after that the end soon cometh.

And how blessed are they who have labored diligently in his vineyard; and how cursed are they who shall be cast out into their own place! And the world shall be burned with fire.

And how merciful is our God unto us, for he remembereth the house of Israel, both roots and branches; and he stretches forth his hands unto them all the day long; and they are a stiffnecked and a gainsaying people; but as many as will not harden their hearts shall be saved in the kingdom of God.

Wherefore, my beloved brethren, I beseech of you in words of soberness that ye would repent, and come with full purpose of heart, and cleave unto God as he cleaveth unto you. And while his arm of mercy is extended towards you in the light of the day, harden not your hearts.

Yea, today, if ye will hear his voice, harden not your hearts; for why will ye die?

For behold, after ye have been nourished by the good word of God all the day long, will ye bring forth evil fruit, that ye must be hewn down and cast into the fire?

Behold, will ye reject these words? Will ye reject the words of the prophets; and will ye reject all the words which have been spoken concerning Christ, after so many have spoken concerning him; and deny the good word of Christ, and the power of God, and the gift of the Holy Ghost, and quench the Holy Spirit, and make a mock of the great plan of redemption, which hath been laid for you?

- 9 क्या तुम नहीं जानते कि यदि तुमने ऐसा किया तब प्रायश्चित्त द्वारा पाप की मुक्ति और पुनःजीवन प्राप्त करने की शक्ति जो मसीह में है, वह तुम्हें परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने लज्जित कर गंभीर अपराध से दोषित कर खड़ा कर देगी ?
- 10 और न्याय को अस्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि जो बल न्याय में है उसके अनुसार तुम्हें अग्नि और गंधक की झील में जाना पड़ेगा जिसकी लपटों की प्यास बुझाई नहीं जा सकती और यह अग्नि और गंधक की झील अंतहीन क्लेश है ।
- 11 तब, हे मेरे प्रिय भाइयों, तुम पश्चाताप करो और तंग द्वार से प्रवेश करो, और जो रास्ता संकरा है उस पर तब तक चलते जाओ जब तक कि तुम्हें अनंत जीवन प्राप्त न हो जाए ।
- 12 ओह बुद्धिमान बनो; और इससे अधिक मैं क्या कह सकता हूँ ?
- 13 अंत में, मैं तुम्हें अलविदा कहता हूँ, जब तक हम परमेश्वर के उस आनंददायक न्याय सिंहासन के सामने न मिलें जो कि पापियों को भयंकर आतंक और भय से दहलाता है । आमीन ।

Know ye not that if ye will do these things, that the power of the redemption and the resurrection, which is in Christ, will bring you to stand with shame and awful guilt before the bar of God?

And according to the power of justice, for justice cannot be denied, ye must go away into that lake of fire and brimstone, whose flames are unquenchable, and whose smoke ascendeth up forever and ever, which lake of fire and brimstone is endless torment.

O then, my beloved brethren, repent ye, and enter in at the strait gate, and continue in the way which is narrow, until ye shall obtain eternal life.

O be wise; what can I say more?

Finally, I bid you farewell, until I shall meet you before the pleasing bar of God, which bar striketh the wicked with awful dread and fear. Amen.

## याकूब 7

- 1 और तब ऐसा हुआ कि कुछ साल बीत जाने के बाद नफी के लोगों में एक ऐसा मनुष्य आया जिसका नाम शीरम था ।
- 2 और ऐसा हुआ कि वह नफी के लोगों में यह प्रचार करने लगा कि मसीह नहीं होगा । उसने लोगों में और बहुत-सी बातों का प्रचार किया जो कि लोगों को प्रसन्न करने के लिए थीं । ऐसा उसने इसलिए किया ताकि वह मसीह के सिद्धांत को पराजित कर सके ।
- 3 और वह परिश्रम के साथ प्रचार करता रहा ताकि वह लोगों के हृदयों को जीत सके और उसने अनेक हृदयों पर विजय प्राप्त भी की । वह यह जानता था कि मेरा विश्वास मसीह पर था जो भविष्य में आने वाला है, इसलिए वह मुझसे भेंट करने का अवसर खोज रहा था ।
- 4 और वह विद्वान था, कि उसे लोगों की भाषा का परिपूर्ण ज्ञान था; इसलिए शैतान की शक्ति के अनुसार वह लोगों की बहुत चापलूसी और बातें कर सकता था ।
- 5 और वह आशा करता था कि वह मुझे अपने विश्वास से डिगा सकता है परन्तु वह यह नहीं जानता था कि इन विषयों पर मैंने बहुत प्रकटीकरण प्राप्त किये थे और बहुत सी बातों को देखा था; क्योंकि मैंने सचमुच में स्वर्गदूतों को देखा था; जिन्होंने मुझे उपदेश दिए थे । मैंने समय समय पर प्रभु की वाणी को भी सुना था जिन्होंने वचनों से मुझ से बातें की थी; इसलिए मैं अपने विश्वास से डिग नहीं सकता था ।
- 6 और ऐसा हुआ कि वह मेरे पास आया और बुद्धिमानी के साथ इस प्रकार बोला: भाई याकूब, मैं तुमसे मिलने का अवसर बहुत दिनों से ढूँढ रहा था; क्योंकि मैंने यह सुना था और जानता हूँ कि तुम बहुत अधिक उस सिद्धांत का प्रचार कर रहे हो जिसे सुसमाचार या मसीह का सिद्धांत कहते हैं ।
- 7 और तुमने इन बहुत से लोगों को भटकाया है कि वे परमेश्वर के सही मार्ग से गुमराह हो रहे हैं; और वे मूसा के नियम का पालन नहीं कर रहे हैं, जोकि सही मार्ग है; और तुम मूसा के नियम को एक ऐसे व्यक्ति की आराधना में परिवर्तित कर रहे हो, जिसके विषय में तुम कहते हो कि वह आज से कई सौ वर्षों पश्चात आएगा । और देखो, मैं शीरम तुमसे यह घोषणा करता हूँ कि यह ईश-निंदा है । कोई भी मनुष्य ऐसी बातें नहीं जानता, क्योंकि वह भविष्य की बातें नहीं बता सकता । और इस प्रकार उसने मेरे विरुद्ध मत प्रकट किया ।
- 8 लेकिन देखो, प्रभु परमेश्वर ने अपनी आत्मा को मेरी आत्मा में इतना अधिक उंडेल दिया कि मैंने उसकी हर बात पर उसे पराजित कर दिया ।

## Jacob 7

And now it came to pass after some years had passed away, there came a man among the people of Nephi, whose name was Sherem.

And it came to pass that he began to preach among the people, and to declare unto them that there should be no Christ. And he preached many things which were flattering unto the people; and this he did that he might overthrow the doctrine of Christ.

And he labored diligently that he might lead away the hearts of the people, insomuch that he did lead away many hearts; and he knowing that I, Jacob, had faith in Christ who should come, he sought much opportunity that he might come unto me.

And he was learned, that he had a perfect knowledge of the language of the people; wherefore, he could use much flattery, and much power of speech, according to the power of the devil.

And he had hope to shake me from the faith, notwithstanding the many revelations and the many things which I had seen concerning these things; for I truly had seen angels, and they had ministered unto me. And also, I had heard the voice of the Lord speaking unto me in very word, from time to time; wherefore, I could not be shaken.

And it came to pass that he came unto me, and on this wise did he speak unto me, saying: Brother Jacob, I have sought much opportunity that I might speak unto you; for I have heard and also know that thou goest about much, preaching that which ye call the gospel, or the doctrine of Christ.

And ye have led away much of this people that they pervert the right way of God, and keep not the law of Moses which is the right way; and convert the law of Moses into the worship of a being which ye say shall come many hundred years hence. And now behold, I, Sherem, declare unto you that this is blasphemy; for no man knoweth of such things; for he cannot tell of things to come. And after this manner did Sherem contend against me.

But behold, the Lord God poured in his Spirit into my soul, insomuch that I did confound him in all his words.

- 9 और मैंने उससे कहा: क्या तुम उस मसीह को अस्वीकार करते हो जो आने वाला है ? और उसने कहा: यदि कोई मसीह है तब मैं उसे अस्वीकार नहीं करता; लेकिन मैं जानता हूँ कि मसीह नहीं है, न कभी था, और न कभी होगा ।
- 10 और मैंने उससे कहा: क्या तुम धर्मशास्त्रों पर विश्वास करते हो ? और उसने कहा, हां ।
- 11 और मैंने उससे कहा: तब तुम उन्हें समझते नहीं; क्योंकि वे सच-मुच में उसकी गवाही देते हैं । देखो, मैं तुम से कहता हूँ कि किसी भी भविष्यवक्ता ने इस मसीह के विषय को छोड़कर न तो कुछ लिखा, और न ही कोई भविष्यवाणी की है ।
- 12 और इतना ही नहीं, यह तो मुझ पर प्रकट भी किया गया है क्योंकि मैंने इसे सुना और देखा है; और यह पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा भी मुझ पर प्रकट किया गया है; इसलिए मैं जानता हूँ कि यदि मनुष्यजाति के लिए प्रायश्चित्त नहीं किया गया तो सारी मानवजाति नष्ट हो जाएगी ।
- 13 और ऐसा हुआ कि उसने मुझसे कहा: तुम जिस पवित्र आत्मा को इतना जानते हो उसकी शक्ति के द्वारा मुझे कोई चिन्ह दिखाओ ।
- 14 और मैंने उससे कहा: मैं कौन हूँ कि उस बात का चिन्ह तुम्हें दिखलाने के लिए परमेश्वर को उकसाऊँ जिसे तुम जानते हो कि सत्य है ? फिर भी तुम उसे अस्वीकार करते हो, क्योंकि तुम शैतान हो । फिर भी मेरी इच्छा पूरी न हो; यदि परमेश्वर ने तुम्हें दंड दिया, तब यह तुम्हारे लिए इस बात का चिन्ह होगा कि स्वर्ग और पृथ्वी पर दोनों जगह उसकी शक्ति है; और वह मसीह आएगा, और हे प्रभु, मेरी नहीं परन्तु आपकी इच्छा पूरी हो ।
- 15 और ऐसा हुआ कि जब मैं, याकूब, ने इन शब्दों को कहा, तब प्रभु की शक्ति उसके ऊपर इतनी आई कि वह धरती पर गिर पड़ा । और ऐसा हुआ कि कई दिनों तक उसकी देखभाल की गई ।
- 16 और ऐसा हुआ कि उसने लोगों से कहा: कल एकत्रित होना, क्योंकि मैं मर जाऊँगा; इसलिए मरने से पहले मैं लोगों से बातें करना चाहता हूँ ।
- 17 और ऐसा हुआ कि अगले दिन एक भारी भीड़ एकत्रित हुई; और उसने स्पष्ट बोलते हुए उनको जिन बातों की शिक्षा दी थी उसे अस्वीकार करते हुए मसीह को, पवित्र आत्मा की शक्ति को और स्वर्गदूतों द्वारा दिए जाने वाले उपदेशों को स्वीकार किया ।

And I said unto him: Deniest thou the Christ who shall come? And he said: If there should be a Christ, I would not deny him; but I know that there is no Christ, neither has been, nor ever will be.

And I said unto him: Believest thou the scriptures? And he said, Yea.

And I said unto him: Then ye do not understand them; for they truly testify of Christ. Behold, I say unto you that none of the prophets have written, nor prophesied, save they have spoken concerning this Christ.

And this is not all—it has been made manifest unto me, for I have heard and seen; and it also has been made manifest unto me by the power of the Holy Ghost; wherefore, I know if there should be no atonement made all mankind must be lost.

And it came to pass that he said unto me: Show me a sign by this power of the Holy Ghost, in the which ye know so much.

And I said unto him: What am I that I should tempt God to show unto thee a sign in the thing which thou knowest to be true? Yet thou wilt deny it, because thou art of the devil. Nevertheless, not my will be done; but if God shall smite thee, let that be a sign unto thee that he has power, both in heaven and in earth; and also, that Christ shall come. And thy will, O Lord, be done, and not mine.

And it came to pass that when I, Jacob, had spoken these words, the power of the Lord came upon him, insomuch that he fell to the earth. And it came to pass that he was nourished for the space of many days.

And it came to pass that he said unto the people: Gather together on the morrow, for I shall die; wherefore, I desire to speak unto the people before I shall die.

And it came to pass that on the morrow the multitude were gathered together; and he spake plainly unto them and denied the things which he had taught them, and confessed the Christ, and the power of the Holy Ghost, and the ministering of angels.



- 18 और उसने इतना स्पष्ट बोला कि उसे शैतान की शक्ति के द्वारा धोखा दिया गया था। उसने अधोलोक, अनंतता और अनंत दंड के विषय में भी बातें कही।
- 19 और उसने कहा: मैं इस बात से डरता हूँ कि मैंने अक्षम्य अपराध किये हैं, क्योंकि मैंने परमेश्वर को असत्य बताया था; क्योंकि मैंने मसीह को अस्वीकार किया और कहा कि मैं धर्मशास्त्रों पर विश्वास करता हूँ; और धर्मशास्त्र सचमुच उसकी गवाही देते हैं। और परमेश्वर से इस प्रकार से असत्य कहने के कारण मैं भयभीत हो रहा हूँ क्योंकि मेरी अवस्था भयंकर है; लेकिन मैं परमेश्वर के प्रति अपने अपराध को स्वीकार करता हूँ।
- 20 और ऐसा हुआ कि जब उसने इन शब्दों को कह लिया तब और कुछ न कह सका और उसने आत्मा को त्याग दिया।
- 21 और जब भीड़ ने यह देखा कि उसने आत्मा को त्यागने से पहले इन बातों को कहा है तब उन्हें इतना आश्चर्य हुआ कि परमेश्वर की शक्ति उनके ऊपर उतरी जिसके प्रभाव से लोग धरती पर प्रभु के आदर में झुक गए।
- 22 अब, यह घटना मुझ, याकूब के लिए, प्रसन्नता की थी, क्योंकि मैंने, अपने स्वर्ग में रहने वाले पिता से इसकी मांग की थी; उसने मेरी पुकार को सुना और मेरी प्रार्थना का उत्तर दिया था।
- 23 और ऐसा हुआ कि लोगों में शांति और परमेश्वर के प्रेम की पुनः स्थापना हुई; और वे धर्मशास्त्र का अध्ययन करने लगे और उन्होंने पापी के शब्दों पर विश्वास करना भी छोड़ दिया था।
- 24 और ऐसा हुआ कि लमानयटियों में फिर से सत्य के ज्ञान पुनः स्थापना करने के लिए अनेक उपायों को काम में लाया गया; परन्तु सब व्यर्थ हुए क्योंकि उनको युद्ध और रक्तपात में आनंद प्राप्त होता था, और हमारे विरुद्ध जो उनके भाई थे, अनंत द्वेष था। और वे अपने अस्त्र-शास्त्रों के बल पर हमें लगातार नष्ट कर देना चाहते थे।
- 25 इसलिए, नफी के लोगों ने उनके विरुद्ध अपनी सेनाओं के द्वारा अपनी सारी शक्ति के साथ और अपने उद्धार की चट्टान परमेश्वर में विश्वास करते हुए अपनी सुरक्षा की व्यवस्था दृढ़ की; इसलिए, वे अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनेवाले बने।

And he spake plainly unto them, that he had been deceived by the power of the devil. And he spake of hell, and of eternity, and of eternal punishment.

And he said: I fear lest I have committed the unpardonable sin, for I have lied unto God; for I denied the Christ, and said that I believed the scriptures; and they truly testify of him. And because I have thus lied unto God I greatly fear lest my case shall be awful; but I confess unto God.

And it came to pass that when he had said these words he could say no more, and he gave up the ghost.

And when the multitude had witnessed that he spake these things as he was about to give up the ghost, they were astonished exceedingly; insomuch that the power of God came down upon them, and they were overcome that they fell to the earth.

Now, this thing was pleasing unto me, Jacob, for I had requested it of my Father who was in heaven; for he had heard my cry and answered my prayer.

And it came to pass that peace and the love of God was restored again among the people; and they searched the scriptures, and hearkened no more to the words of this wicked man.

And it came to pass that many means were devised to reclaim and restore the Lamanites to the knowledge of the truth; but it all was vain, for they delighted in wars and bloodshed, and they had an eternal hatred against us, their brethren. And they sought by the power of their arms to destroy us continually.

Wherefore, the people of Nephi did fortify against them with their arms, and with all their might, trusting in the God and rock of their salvation; wherefore, they became as yet, conquerors of their enemies.

26 और ऐसा हुआ कि मैं, याकूब, वृद्ध होने लगा था; और इन लोगों के अभिलेख अब नफी की अन्य पट्टियों पर रखे जाएंगे, इसलिए मैं यह घोषणा करते हुए इस अभिलेख को समाप्त करता हूँ कि हमारा समय बीत गया है और हमारा अतीत का जीवन हमारे लिए एक सपने की तरह है, जिसमें हम लोग अकेले और निष्ठावान, बंजारे, यरूशलेम से निकाले गए, कष्टों और निर्जन प्रदेश में पैदा हुए, और अपने भाइयों द्वारा घृणा किये गए थे, जिससे युद्ध और विवाद हुए; इसलिए, हमने दुखों में दिन काटे थे।

27 और मैं, याकूब ने, देखा कि मैं शीघ्र ही अपनी कब्र में जाऊंगा; इसलिए मैंने अपने पुत्र इनोस से कहा: इन पट्टियों को तुम ले लो, और जिन बातों की आज्ञा मुझे नफी ने दी थी, उसे मैंने उसको बताया और उसने उन आज्ञाओं का पालन करने की प्रतिज्ञा की थी। और अब मैं इन पट्टियों को लिखना समाप्त करता हूँ जो कि कम थी; और पढ़ने वालों को मैं इस आशा के साथ विदा दे रहा हूँ कि बहुत से मेरे भाई मेरे शब्दों को पढ़ेंगे। भाइयों, अलविदा।

And it came to pass that I, Jacob, began to be old; and the record of this people being kept on the other plates of Nephi, wherefore, I conclude this record, declaring that I have written according to the best of my knowledge, by saying that the time passed away with us, and also our lives passed away like as it were unto us a dream, we being a lonesome and a solemn people, wanderers, cast out from Jerusalem, born in tribulation, in a wilderness, and hated of our brethren, which caused wars and contentions; wherefore, we did mourn out our days.

And I, Jacob, saw that I must soon go down to my grave; wherefore, I said unto my son Enos: Take these plates. And I told him the things which my brother Nephi had commanded me, and he promised obedience unto the commands. And I make an end of my writing upon these plates, which writing has been small; and to the reader I bid farewell, hoping that many of my brethren may read my words. Brethren, adieu.

## इनोस की पुस्तक

- 1 देखो, ऐसा हुआ कि मैं, इनोस, जानते हुए कि मेरे पिता धार्मिक पुरुष थे—क्योंकि उन्होंने मुझे अपनी भाषा में शिक्षा दी, और प्रभु की दया और चेतावनी में भी—और इसके लिए मेरे परमेश्वर का नाम आशीषित हो—
- 2 और मैं आपको उस संघर्ष के विषय में बताऊंगा जो मुझे, अपने पापों की क्षमा पाने से पहले परमेश्वर के साथ करना पड़ा था ।
- 3 देखो, मैं जानवरों का शिकार करने जंगल में गया; और जो वचन मैं अपने पिता से अनंत जीवन, और संतों के आनंद के विषय में सुना करता था, वे मेरे हृदय में गहरे बैठ गए थे ।
- 4 और मेरी आत्मा को भूख लगी; और मैंने अपने बनाने वाले के सामने घुटने टेके, और मैंने अपनी पूरी शक्ति से प्रार्थना और अपनी आत्मा के लिए विनती की; और मैं सारा दिन उसे पुकारता रहा; हां, और जब रात आई मैं फिर भी इतनी जोर से पुकारता रहा कि वह स्वर्ग तक पहुंच गई ।
- 5 और मैंने एक वाणी को यह कहते सुना: इनोस, तुम्हारे पाप क्षमा कर दिए गए हैं, और तुम आशीषित किये जाओगे ।
- 6 और मैं, इनोस, जानता था कि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता; इसलिए, मेरे अपराध धुल गए थे ।
- 7 और मैंने कहा: प्रभु, यह कैसे हुआ ?
- 8 और उसने मुझ से कहा: मसीह में तुम्हारे प्रेम के कारण, जिसे तुमने पहले कभी न तो सुना है न ही देखा है । और बहुत साल बीत जाने पर वह अपने-आपको शरीर में प्रकट करेगा; इसलिए, जाओ, तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें चंगा किया ।
- 9 अब, ऐसा हुआ कि जब मैंने इन वचनों को सुना तो मैं अपने भाइयों, नफाइयों के कल्याण की इच्छा करने लगा; इसलिए, मैंने उनके लिए परमेश्वर के सम्मुख अपनी संपूर्ण आत्मा को समर्पित किया ।
- 10 और जब मैं इस प्रकार आत्मिकरूप से संघर्ष कर रहा था, सुनो, प्रभु की वाणी मेरे मन में फिर से यह कहते हुए आई: मैं तुम्हारे भाइयों से मेरी आज्ञाओं का पालन करने की निष्ठा के अनुसार मिलूंगा । मैंने उन्हें यह प्रदेश दिया है, और यह पवित्र प्रदेश है; और मैं इसे श्राप नहीं दूंगा सिवाय दुष्टता के कारण; इसलिए, जैसा मैंने कहा है मैं तुम्हारे भाइयों से मिलूंगा; और उनके अपराधों को मैं दुख के साथ उनके स्वयं के सिरों पर डालूंगा ।

## The Book of Enos

Behold, it came to pass that I, Enos, knowing my father that he was a just man—for he taught me in his language, and also in the nurture and admonition of the Lord—and blessed be the name of my God for it—

And I will tell you of the wrestle which I had before God, before I received a remission of my sins.

Behold, I went to hunt beasts in the forests; and the words which I had often heard my father speak concerning eternal life, and the joy of the saints, sunk deep into my heart.

And my soul hungered; and I kneeled down before my Maker, and I cried unto him in mighty prayer and supplication for mine own soul; and all the day long did I cry unto him; yea, and when the night came I did still raise my voice high that it reached the heavens.

And there came a voice unto me, saying: Enos, thy sins are forgiven thee, and thou shalt be blessed.

And I, Enos, knew that God could not lie; wherefore, my guilt was swept away.

And I said: Lord, how is it done?

And he said unto me: Because of thy faith in Christ, whom thou hast never before heard nor seen. And many years pass away before he shall manifest himself in the flesh; wherefore, go to, thy faith hath made thee whole.

Now, it came to pass that when I had heard these words I began to feel a desire for the welfare of my brethren, the Nephites; wherefore, I did pour out my whole soul unto God for them.

And while I was thus struggling in the spirit, behold, the voice of the Lord came into my mind again, saying: I will visit thy brethren according to their diligence in keeping my commandments. I have given unto them this land, and it is a holy land; and I curse it not save it be for the cause of iniquity; wherefore, I will visit thy brethren according as I have said; and their transgressions will I bring down with sorrow upon their own heads.

- 11 और जब मैं, इनोस ने, इन वचनों को सुना, तब प्रभु में मेरा विश्वास दृढ़ हो गया; और मैंने बहुत संघर्ष के साथ अपने भाइयों, लमनाइयों, के लिए प्रार्थना की।
- 12 और ऐसा हुआ कि मेरी पूरी निष्ठा से प्रार्थना और कार्य करने के पश्चात, प्रभु ने मुझ से कहा: मैं तुम्हारे विश्वास के कारण, तुम्हारी इच्छाओं को पूरा करूँगा।
- 13 और अब देखो, यह मेरी इच्छा थी जो मैंने उन्हें प्रकट की थी—कि यदि मेरे लोग, नफाई, अपराध करते हैं, और किसी भी कारण से नष्ट होते हैं, और लमनाई नष्ट नहीं किये जाएंगे, कि प्रभु परमेश्वर मेरे लोग, नफाइयों का अभिलेख सुरक्षित रखेगा; बेशक ऐसा उसकी पवित्र भुजा की शक्ति से होगा, कि यह भविष्य में किसी दिन लमनाइयों के लिए, शायद उद्धार लाए—
- 14 क्योंकि वर्तमान में उनको बचाने का हमारा संघर्ष बेकार हो गया है। और उन्होंने अपने क्रोध में प्रतिज्ञा की है, कि यदि संभव हुआ, वे हमारे अभिलेख और हमें नष्ट कर देंगे, और हमारे पूर्वजों की सभी परंपराओं को भी।
- 15 इसलिए, मैंने जानते हुए कि प्रभु परमेश्वर हमारे अभिलेखों को सुरक्षित रखने में सक्षम है, मैं उन्हें लगातार पुकारता रहा, क्योंकि उन्होंने मुझ से कहा था: जो कुछ भी तुम विश्वास में मांगोगे, यह विश्वास करते हुए कि तुम उसे मसीह के नाम में प्राप्त करोगे, तुम उसे प्राप्त करोगे।
- 16 और मुझे विश्वास था, और मैंने परमेश्वर को पुकारा कि वह हमारे अभिलेखों को सुरक्षित रखे; और उसने मुझ से अनुबंध किया कि वह इन्हें लमनाइयों पर अपने स्वयं के समयानुसार प्रकट करेगा।
- 17 और मैं, इनोस, जानता था जो अनुबंध उसने बनाया था उसके अनुसार होगा; इसलिए मेरी आत्मा को राहत मिली।
- 18 और प्रभु ने मुझ से कहा: तुम्हारे पूर्वजों ने भी मुझ से यही मांगा था; और यह उन के साथ उनके विश्वास के अनुसार किया जाएगा; क्योंकि उनका विश्वास तुम्हारे समान था।
- 19 और अब ऐसा हुआ कि मैं, इनोस, नफी के लोगों के बीच, आने वाली बातों के बारे में भविष्यवाणी करने लगा, और उन बातों की गवाही देने लगा जो मैंने सुनी और देखी थी।

And after I, Enos, had heard these words, my faith began to be unshaken in the Lord; and I prayed unto him with many long strugglings for my brethren, the Lamanites.

And it came to pass that after I had prayed and labored with all diligence, the Lord said unto me: I will grant unto thee according to thy desires, because of thy faith.

And now behold, this was the desire which I desired of him—that if it should so be, that my people, the Nephites, should fall into transgression, and by any means be destroyed, and the Lamanites should not be destroyed, that the Lord God would preserve a record of my people, the Nephites; even if it so be by the power of his holy arm, that it might be brought forth at some future day unto the Lamanites, that, perhaps, they might be brought unto salvation—

For at the present our strugglings were vain in restoring them to the true faith. And they swore in their wrath that, if it were possible, they would destroy our records and us, and also all the traditions of our fathers.

Wherefore, I knowing that the Lord God was able to preserve our records, I cried unto him continually, for he had said unto me: Whatsoever thing ye shall ask in faith, believing that ye shall receive in the name of Christ, ye shall receive it.

And I had faith, and I did cry unto God that he would preserve the records; and he covenanted with me that he would bring them forth unto the Lamanites in his own due time.

And I, Enos, knew it would be according to the covenant which he had made; wherefore my soul did rest.

And the Lord said unto me: Thy fathers have also required of me this thing; and it shall be done unto them according to their faith; for their faith was like unto thine.

And now it came to pass that I, Enos, went about among the people of Nephi, prophesying of things to come, and testifying of the things which I had heard and seen.

20 और मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि नफी के लोगों ने लमनाइयों को परमेश्वर के विश्वास में पुनः स्थापित करने के लिए बहुत परिश्रम किया था । लेकिन हमारा परिश्रम बेकार गया; उनका द्वेष बना रहा, और वे अपनी बुराई के मार्ग में चलते रहे जिससे कि वे जंगली, और उग्र, और खून के प्यासे होकर, मूर्तिपूजा और गंदगी में लिप्त हो गए; पशुओं का मांस खाने लगे; तंबुओं में रहने लगे, और चमड़े की छोटी सी पेटी अपनी कमर में लेपटे और अपना सिर मुंडाए, निर्जन प्रदेश में भटकते रहते थे; और वे धनुष, और गदा, और कुल्हाड़ी चलाने में कुशल थे । और उनमें से बहुतेरे कच्चे मांस के सिवाय और कुछ नहीं खाते थे; और वे निरंतर हमें नष्ट करने का प्रयास करते रहते थे ।

21 और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों ने भूमि पर हल चलाया, और सब प्रकार की फसल और फल उगाए, और सब प्रकार के पशुओं और पक्षियों को पाला, जैसे बकरियां, और जंगली बकरियां, और बहुत से घोड़े भी ।

22 और हमारे बीच में बहुत से भविष्यवक्ता थे । और लोग घमंडी थे, जिन्हें समझाना कठिन था ।

23 और वहां बहुत अधिक कठोरता, युद्ध का प्रचार और भविष्यवाणी, और विवाद, और विनाश के सिवाय और कुछ नहीं था, और उन्हें लगातार मृत्यु का भय, और अनंतकाल की अवधि, और न्याय और परमेश्वर की शक्ति, और ये सब बातें—उन्हें निरंतर प्रभु के भय में रखने के लिए थीं । मैं कहता हूँ वहां इन बातों की कमी नहीं थी, और अत्याधिक सरल बातें, उन्हें शीघ्र विनाश से बचाने के लिए पर्याप्त थी । और इस तरीके से मैं उनके विषय में लिखता हूँ ।

24 और मैंने अपने समय के दौरान नफाइयों और लमनाइयों के बीच युद्धों को देखा था ।

25 और ऐसा हुआ कि मैं बुढ़ा होने लगा था, और हमारे पिता को यरूशलेम छोड़े एक सौ उन्नासी वर्ष बीत गए थे ।

26 और मैंने देखा कि जल्द ही मैं अपनी कब्र में जाने वाला हूँ, मैं परमेश्वर के शक्ति द्वारा लाया गया था कि मैं इन लोगों के बीच प्रचार और भविष्यवाणी करूँ, और उस सच्चाई के अनुसार वचनों की घोषणा करूँ जो मसीह में है । और मैंने अपने पूरे जीवन भर इसकी घोषणा की, और इस संसार से अधिक मैं इनमें आनंदित हुआ हूँ ।

And I bear record that the people of Nephi did seek diligently to restore the Lamanites unto the true faith in God. But our labors were vain; their hatred was fixed, and they were led by their evil nature that they became wild, and ferocious, and a blood-thirsty people, full of idolatry and filthiness; feeding upon beasts of prey; dwelling in tents, and wandering about in the wilderness with a short skin girdle about their loins and their heads shaven; and their skill was in the bow, and in the cimeter, and the ax. And many of them did eat nothing save it was raw meat; and they were continually seeking to destroy us.

And it came to pass that the people of Nephi did till the land, and raise all manner of grain, and of fruit, and flocks of herds, and flocks of all manner of cattle of every kind, and goats, and wild goats, and also many horses.

And there were exceedingly many prophets among us. And the people were a stiffnecked people, hard to understand.

And there was nothing save it was exceeding harshness, preaching and prophesying of wars, and contentions, and destructions, and continually reminding them of death, and the duration of eternity, and the judgments and the power of God, and all these things—stirring them up continually to keep them in the fear of the Lord. I say there was nothing short of these things, and exceedingly great plainness of speech, would keep them from going down speedily to destruction. And after this manner do I write concerning them.

And I saw wars between the Nephites and Lamanites in the course of my days.

And it came to pass that I began to be old, and an hundred and seventy and nine years had passed away from the time that our father Lehi left Jerusalem.

And I saw that I must soon go down to my grave, having been wrought upon by the power of God that I must preach and prophesy unto this people, and declare the word according to the truth which is in Christ. And I have declared it in all my days, and have rejoiced in it above that of the world.

27 और शीघ्र मैं अपने विश्राम के स्थल जाऊंगा, जो कि मेरे मुक्तिदा-  
ता के साथ है; क्योंकि मैं जानता हूं उसमें ही मैं विश्राम करूंगा । और  
मैं उस दिन आनंदित होऊंगा जब मेरा पार्थिव शरीर अमरत्व को प्राप्त  
करेगा, और मैं उसके सम्मुख खड़ा होऊंगा; तब मैं उसके चेहरे को  
आनंद से देखूंगा, और वह मुझ से कहेगा: मेरे पास आओ, तुम  
आशीषित, मेरे पिता के महलों में तुम्हारे लिए एक जगह तैयार की  
गई है । आमीन ।

And I soon go to the place of my rest, which is  
with my Redeemer; for I know that in him I shall  
rest. And I rejoice in the day when my mortal shall  
put on immortality, and shall stand before him; then  
shall I see his face with pleasure, and he will say unto  
me: Come unto me, ye blessed, there is a place pre-  
pared for you in the mansions of my Father. Amen.

## जेरम की पुस्तक

- 1 अब देखो, मैं, जेरम, अपने पिता इनोस की आज्ञा के अनुसार थोड़े से शब्दों को लिख रहा हूँ, ताकि हमारी वंशावली रखी जा सके।
- 2 और जब कि ये पट्टियां छोटी हैं, और इन बातों को हमारे भाइयों लमनाइयों के लाभ के लिए लिखा जा रहा है इसलिए यह जरूरी है कि मैं कुछ लिखूँ; परन्तु मैं अपनी भविष्यवाणियों और प्रकटीकरणों को नहीं लिखूँगा, क्योंकि जो कुछ मेरे पूर्वजों के द्वारा लिखा जा चुका है उससे अधिक मैं और क्या लिख सकता हूँ ? क्या उन्होंने उद्धार की योजना को प्रकट नहीं किया ? मैं तुम से कहता हूँ कि हां; और मेरे लिए यह पर्याप्त है।
- 3 देखो, इन लोगों के बीच में बहुत परिश्रम करने की आवश्यकता है, क्योंकि इनके हृदय कठोर हैं, इनके कान बहरे हैं, इनकी बुद्धि अंधी है, और ये हठी हैं; लेकिन फिर भी परमेश्वर इन पर बहुत अधिक दयालु है और उसने इन्हें इस प्रदेश से अब तक मिटाया नहीं है।
- 4 और हम लोगों में कई लोग हैं जिन्हें बहुत से प्रकटीकरण हुए हैं, क्योंकि वे सब जिद्दी नहीं हैं। और जितने जिद्दी नहीं हैं और विश्वासी हैं उनका संपर्क पवित्र आत्मा से है जो मानव संतान में उनके विश्वास के अनुसार प्रकट होती है।
- 5 और अब, देखो, दो सौ वर्ष बीत चुके थे, और नफी के लोग इस प्रदेश में मजबूत हुए थे। वे मूसा की व्यवस्था का पालन करते और प्रभु के लिए विश्राम दिन को पवित्र रखते थे। वे भ्रष्ट नहीं हुए; और न ही वे परमेश्वर की निंदा करते थे। और इस देश की व्यवस्था भी कठोर थी।
- 6 और वे प्रदेश अधिकतर भाग में बिखरे हुए थे, और लमनाई भी। और वे नफाइयों से संख्या में बहुत अधिक थे; और वे हत्या करना और जानवरों का लहू पीना पसंद करते थे।
- 7 और ऐसा हुआ कि वे हम, नफाइयों, से युद्ध करने के लिए कई बार आए। लेकिन हमारे राजा और मार्गदर्शक प्रभु के विश्वास में महान थे; और उन्होंने लोगों को प्रभु के अनुकूल शिक्षा दी थी; इसलिए हमने लमनाइयों को पराजित करके उन्हें अपनी भूमि से खदेड़ दिया था, और हम अपने शहरों या अपने पैतृक-स्थानों की सुरक्षा को मजबूत करने लगे थे।

## The Book of Jarom

Now behold, I, Jarom, write a few words according to the commandment of my father, Enos, that our genealogy may be kept.

And as these plates are small, and as these things are written for the intent of the benefit of our brethren the Lamanites, wherefore, it must needs be that I write a little; but I shall not write the things of my prophesying, nor of my revelations. For what could I write more than my fathers have written? For have not they revealed the plan of salvation? I say unto you, Yea; and this sufficeth me.

Behold, it is expedient that much should be done among this people, because of the hardness of their hearts, and the deafness of their ears, and the blindness of their minds, and the stiffness of their necks; nevertheless, God is exceedingly merciful unto them, and has not as yet swept them off from the face of the land.

And there are many among us who have many revelations, for they are not all stiffnecked. And as many as are not stiffnecked and have faith, have communion with the Holy Spirit, which maketh manifest unto the children of men, according to their faith.

And now, behold, two hundred years had passed away, and the people of Nephi had waxed strong in the land. They observed to keep the law of Moses and the sabbath day holy unto the Lord. And they profaned not; neither did they blaspheme. And the laws of the land were exceedingly strict.

And they were scattered upon much of the face of the land, and the Lamanites also. And they were exceedingly more numerous than were they of the Nephites; and they loved murder and would drink the blood of beasts.

And it came to pass that they came many times against us, the Nephites, to battle. But our kings and our leaders were mighty men in the faith of the Lord; and they taught the people the ways of the Lord; wherefore, we withstood the Lamanites and swept them away out of our lands, and began to fortify our cities, or whatsoever place of our inheritance.

- 8 और हमारी जनसंख्या में बहुत वृद्धि हुई और हम सारे प्रदेश में फैल गए और हम सोना, चांदी, आदि मूल्यवान वस्तुओं में अत्याधिक धनी हो गए थे और काष्ठकारी, मकान बनाने, यंत्र बनाने, लोहे और तांबे की वस्तुओं को बनाने, पीतल और कठोर लोहे के हर प्रकार के तरह तरह के खेत जोतने के औजार, युद्ध के हथियार, जैसे पौने तीर और तरकस, छोटी बरछी, भाले आदि बनाने और हर तरह से युद्ध की तैयारी में कारीगर हो गए थे ।
- 9 और इस तरह लमनाइयों से सामना करने की तैयारी के कारण, वे हम पर सफलता प्राप्त नहीं कर सके । लेकिन प्रभु का वह वचन जो उन्होंने हमारे पूर्वजों से बोले थे: जितना तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे उतना तुम प्रदेश में प्रगति करोगे, वह साबित हो गया था ।
- 10 और ऐसा हुआ कि प्रभु के भविष्यवक्ताओं ने नफी के लोगों को परमेश्वर के वचन के अनुसार यह चेतावनी दी, कि यदि वे आज्ञाओं का पालन नहीं करते, परन्तु अपराध करते रहे, तो वे इस प्रदेश से नष्ट कर दिए जाएंगे ।
- 11 इसलिए, भविष्यवक्ताओं, और याजकों, और शिक्षकों ने, कष्ट सहने वाले लोगों को उपदेश देने के लिए बहुत परिश्रम किया; मूसा की व्यवस्था, और उसके दिए जाने के उद्देश्य की शिक्षा दी; और उनसे आग्रह किया कि वे मसीह के आगमन की प्रतीक्षा करें और ऐसा विश्वास करें कि जैसे मानो वह आ चुका था । और इस तरह उन्होंने उनको शिक्षा दी ।
- 12 और ऐसा हुआ कि ऐसा करने से उन्होंने उनको प्रदेश से नष्ट होने से बचा लिया; क्योंकि उन्होंने लगातार उनको पश्चाताप करने के लिए उत्साहित करते हुए, अपने वचन द्वारा उनके हृदयों को उकसाया ।
- 13 और ऐसा हुआ कि दो सौ अड़तीस वर्ष व्यतीत हो गए—और अधिकांश समय युद्ध, विवाद और मतभेद में बीता ।
- 14 और मैं, जेरम, और अधिक नहीं लिखूंगा, क्योंकि पट्टियां छोटी हैं । लेकिन देखो, मेरे भाइयों, तुम नफी की अन्य पट्टियों को देख सकते हो; क्योंकि हमारे युद्धों का वर्णन जैसा कि हमारे राजाओं ने लिखा, या जिन विषयों को उनसे लिखवाया गया वे सब उस में अंकित हैं ।
- 15 और मैं इन पट्टियों को अपने पुत्र ओमनी को दे रहा हूँ, जिससे कि मेरे पूर्वजों की आज्ञा के अनुसार इनको रखा जा सके ।

And we multiplied exceedingly, and spread upon the face of the land, and became exceedingly rich in gold, and in silver, and in precious things, and in fine workmanship of wood, in buildings, and in machinery, and also in iron and copper, and brass and steel, making all manner of tools of every kind to till the ground, and weapons of war—yea, the sharp pointed arrow, and the quiver, and the dart, and the javelin, and all preparations for war.

And thus being prepared to meet the Lamanites, they did not prosper against us. But the word of the Lord was verified, which he spake unto our fathers, saying that: Inasmuch as ye will keep my commandments ye shall prosper in the land.

And it came to pass that the prophets of the Lord did threaten the people of Nephi, according to the word of God, that if they did not keep the commandments, but should fall into transgression, they should be destroyed from off the face of the land.

Wherefore, the prophets, and the priests, and the teachers, did labor diligently, exhorting with all long-suffering the people to diligence; teaching the law of Moses, and the intent for which it was given; persuading them to look forward unto the Messiah, and believe in him to come as though he already was. And after this manner did they teach them.

And it came to pass that by so doing they kept them from being destroyed upon the face of the land; for they did prick their hearts with the word, continually stirring them up unto repentance.

And it came to pass that two hundred and thirty and eight years had passed away—after the manner of wars, and contentions, and dissensions, for the space of much of the time.

And I, Jarom, do not write more, for the plates are small. But behold, my brethren, ye can go to the other plates of Nephi; for behold, upon them the records of our wars are engraven, according to the writings of the kings, or those which they caused to be written.

And I deliver these plates into the hands of my son Omni, that they may be kept according to the commandments of my fathers.



## ओमनी की पुस्तक

- 1 देखो, ऐसा हुआ कि मैं, ओमनी, अपने पिता द्वारा आज्ञा दिए जाने के कारण अपनी वंशावली को सुरक्षित रखने के लिए इन पट्टियों पर कुछ लिख रहा हूँ—
- 2 इसलिए, मैं यह चाहता हूँ कि तुम यह जानो कि, अपने समय में, नफी के लोगों को, उनके शत्रु लमनाइयों के हाथों से बचाने के लिए मैंने तलवार से बहुत युद्ध किये। लेकिन देखो, मैं स्वयं एक दुष्ट मनुष्य हूँ, और प्रभु के नियमों और आज्ञाओं का पालन जिस प्रकार मुझे करना चाहिए था, वैसा मैंने नहीं किया।
- 3 और ऐसा हुआ कि दो सौ छहत्तर वर्ष गुजर चुके थे और हमें शांति के कई युग प्राप्त हुए; और कई बार गंभीर युद्ध और रक्तपात हुआ। हां, कुल दो सौ बयासी वर्ष गुजर चुके थे, और मैंने इन पट्टियों को अपने पूर्वजों की आज्ञा के अनुसार रखा; और मैंने इन्हें अपने पुत्र अम्मरोन को प्रदान कर दिया था। और मैं समाप्त करता हूँ।
- 4 और अब मैं, अम्मरोन, अपने पिता की पुस्तक में थोड़ी सी वे बातें लिख रहा हूँ जो कि मुझे लिखनी हैं।
- 5 देखो, ऐसा हुआ कि तीन सौ वर्ष गुजर चुके थे, और नफाइयों के अधिक दुष्ट हिस्से को नष्ट कर दिया गया था।
- 6 क्योंकि प्रभु उन्हें यरूशलेम देश से निकाल कर लाने और शत्रुओं के हाथों में पड़ने से बचाने के कारण, हां, वह यह सहन नहीं कर सकता कि उसका यह वचन प्रमाणित न हो जिसको उसने हमारे पूर्वजों से कहा था: जितना तुम हमारी आज्ञा का पालन नहीं करोगे उतना ही तुम उस प्रदेश में प्रगति नहीं करोगे।
- 7 इसलिए, प्रभु महान न्याय के लिए उनके बीच आया; फिर भी उसने धार्मिकों को छोड़ दिया कि वे नष्ट न हों, बल्कि शत्रुओं के हाथों से उन्हें मुक्त कराया।
- 8 और ऐसा हुआ कि मैंने पट्टियां अपने भाई केमिश को दे दीं।

## The Book of Omni

Behold, it came to pass that I, Omni, being commanded by my father, Jarom, that I should write somewhat upon these plates, to preserve our genealogy—

Wherefore, in my days, I would that ye should know that I fought much with the sword to preserve my people, the Nephites, from falling into the hands of their enemies, the Lamanites. But behold, I of myself am a wicked man, and I have not kept the statutes and the commandments of the Lord as I ought to have done.

And it came to pass that two hundred and seventy and six years had passed away, and we had many seasons of peace; and we had many seasons of serious war and bloodshed. Yea, and in fine, two hundred and eighty and two years had passed away, and I had kept these plates according to the commandments of my fathers; and I conferred them upon my son Amaron. And I make an end.

And now I, Amaron, write the things whatsoever I write, which are few, in the book of my father.

Behold, it came to pass that three hundred and twenty years had passed away, and the more wicked part of the Nephites were destroyed.

For the Lord would not suffer, after he had led them out of the land of Jerusalem and kept and preserved them from falling into the hands of their enemies, yea, he would not suffer that the words should not be verified, which he spake unto our fathers, saying that: Inasmuch as ye will not keep my commandments ye shall not prosper in the land.

Wherefore, the Lord did visit them in great judgment; nevertheless, he did spare the righteous that they should not perish, but did deliver them out of the hands of their enemies.

And it came to pass that I did deliver the plates unto my brother Chemish.

- 9 अब मैं, केमिश, उन थोड़ी सी बातों को, जो मुझे लिखनी है, उसी पुस्तक में लिख रहा हूँ जिसमें मेरे भाई ने लिखा है; क्योंकि मैंने उसे देखा है जिसे मेरे भाई ने अपने हाथ से अंत में लिखा; और उसने यह उसी दिन लिखा जिस दिन उसने इन पट्टियों को मुझे दिया। हम इन अभिलेखों को अपने पूर्वजों के आज्ञा के अनुसार रख रहे हैं। और मैं लिखना समाप्त करता हूँ।
- 10 देखो, मैं, अबिनादॉम, केमिश का पुत्र हूँ। देखो, ऐसा हुआ कि मैंने अपने, नफी के लोगों और लमनाइयों के बीच बहुत युद्ध और विवाद देखे हैं; और मैंने अपने भाइयों की रक्षा के लिए अपनी तलवार से कई लमनाइयों की जानें ली हैं।
- 11 और देखो, इन लोगों का अभिलेख उन पट्टियों पर अंकित किया गया है जो पीढ़ी दर पीढ़ी से राजाओं के पास हैं, और जो प्रकटीकरण और भविष्यवाणी लिखी जा चुकी है, उन्हें छोड़ मैं और कोई प्रकटीकरण और भविष्यवाणी नहीं जानता; इस कारण जो पर्याप्त है वह लिखा जा चुका है। और मैं लिखना समाप्त करता हूँ।
- 12 देखो, मैं अबिनादॉम का पुत्र अमालेकी हूँ। देखो, मैं उस मुसायाह के विषय में कुछ कहूँगा जिसे जराहेमला प्रदेश का राजा बनाया गया था; क्योंकि देखो, उसे प्रभु द्वारा यह चेतावनी मिली थी कि जितने लोग प्रभु की बातों पर ध्यान देंगे उन सबको साथ ले कर वह नफी के प्रदेश से निर्जन प्रदेश में भाग जाए—
- 13 और ऐसा हुआ कि उसने वैसा ही किया जैसा कि उसको प्रभु ने आज्ञा दी थी। और जितने लोग प्रभु के आज्ञाकारी थे वे सब निर्जन प्रदेश में चले गए; उनका मार्गदर्शन अनेक उपदेश और भविष्यवाणियों द्वारा किया गया। और उन्हें लगातार परमेश्वर की वाणी द्वारा चेतावनी और उपदेश मिलते रहे; और उसके बाहुबल द्वारा निर्जन प्रदेश में उनका मार्गदर्शन तब तक होता रहा, जब तक कि वे उस प्रदेश में पहुंच न गए जिसे जराहेमला कहा जाता है।
- 14 और उन्होंने वहां उन लोगों को पाया जो जराहेमला के लोग कहलाते थे। अब, जराहेमला के लोगों में बहुत आनंद मनाया गया था; और जराहेमला में इसलिए भी बहुत आनंद मनाया गया क्योंकि मुसायाह के लोगों को प्रभु ने पीतल की उन पट्टियों के साथ भेजा था जिनमें यहूदियों का अभिलेख था।

Now I, Chemish, write what few things I write, in the same book with my brother; for behold, I saw the last which he wrote, that he wrote it with his own hand; and he wrote it in the day that he delivered them unto me. And after this manner we keep the records, for it is according to the commandments of our fathers. And I make an end.

Behold, I, Abinadom, am the son of Chemish. Behold, it came to pass that I saw much war and contention between my people, the Nephites, and the Lamanites; and I, with my own sword, have taken the lives of many of the Lamanites in the defence of my brethren.

And behold, the record of this people is engraven upon plates which is had by the kings, according to the generations; and I know of no revelation save that which has been written, neither prophecy; wherefore, that which is sufficient is written. And I make an end.

Behold, I am Amaleki, the son of Abinadom. Behold, I will speak unto you somewhat concerning Mosiah, who was made king over the land of Zarahemla; for behold, he being warned of the Lord that he should flee out of the land of Nephi, and as many as would hearken unto the voice of the Lord should also depart out of the land with him, into the wilderness—

And it came to pass that he did according as the Lord had commanded him. And they departed out of the land into the wilderness, as many as would hearken unto the voice of the Lord; and they were led by many preachings and prophesyings. And they were admonished continually by the word of God; and they were led by the power of his arm, through the wilderness until they came down into the land which is called the land of Zarahemla.

And they discovered a people, who were called the people of Zarahemla. Now, there was great rejoicing among the people of Zarahemla; and also Zarahemla did rejoice exceedingly, because the Lord had sent the people of Mosiah with the plates of brass which contained the record of the Jews.

- 15 देखो, ऐसा हुआ कि मुसायाह को पता लगा कि जराहेमला के लोग यरूशलेम से उस समय आए थे जिस समय यहूदा के राजा सिदकियाह को बंदी बनाकर बाबुल ले जाया गया था ।
- 16 और उन्होंने निर्जन प्रदेश से होकर यात्रा की, और प्रभु का हाथ उन्हें समुद्र के पार उस प्रदेश में लाया जहां पर उन्होंने मुसायाह को पाया; वे उस समय से वहां रहते आए थे ।
- 17 और जिस समय मुसायाह ने उन्हें पाया, उस समय उनकी संख्या बहुत अधिक बढ़ चुकी थी । फिर भी, उनमें कई युद्ध हो चुके थे और उनके बीच गंभीर मतभेद थे, और समय समय पर तलवार से कटकर गिर चुके थे; और उनकी भाषा भ्रष्ट हो चुकी थी और वे कोई अभिलेख अपने साथ नहीं लाए थे; और उन्होंने अपने सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को अस्वीकार कर दिया था; और न मुसायाह, न ही मुसायाह के लोग, उन्हें समझ पाए थे ।
- 18 लेकिन ऐसा हुआ कि मुसायाह ने उन्हें अपनी भाषा में सीखाने के लिए राजी किया । और ऐसा हुआ कि मुसायाह की भाषा में शिक्षा देने के पश्चात जराहेमला ने अपनी याददाशत के अनुसार अपने पूर्वजों की वंशावली को बताया; और उन्हें लिखा गया, लेकिन इन पट्टियों पर नहीं ।
- 19 और ऐसा हुआ कि जराहेमला के लोग, और मुसायाह के लोग मिलकर एक हो गए; और मुसायाह उनका राजा नियुक्त किया गया ।
- 20 और ऐसा हुआ कि मुसायाह के समय में, उसके पास एक बड़ा पत्थर लाया गया जिस पर लिपि खुदी हुई थी; और उसने उस लिपि का अनुवाद परमेश्वर के उपहार और शक्ति द्वारा किया ।
- 21 और उनमें कोरियन्तमर, और उसके मारे गए लोगों का वर्णन था । और कोरियन्तमर जराहेमला के लोगों द्वारा खोजा गया था; और वह उन लोगों के साथ नौ माह तक रहा ।
- 22 उसमें उसके पूर्वजों के विषय में भी कुछ शब्द लिखे थे । और उसके पूर्वज उस मीनार से आए थे जब कि प्रभु ने लोगों की भाषा में गड़बड़ी उत्पन्न की थी; और प्रभु की उग्रता उसके न्याय के अनुसार उनके ऊपर आई, जोकि उचित है; और उनकी हड्डियां उत्तर की ओर प्रदेश में बिखरी पड़ी हैं ।
- 23 देखो, मैं, अमालेकी ने, मुसायाह के समय जन्म लिया था; और मैंने उसकी मृत्यु भी देखी; और उसके स्थान पर उसका पुत्र बिन्यामीन शासन करने लगा है ।

Behold, it came to pass that Mosiah discovered that the people of Zarahemla came out from Jerusalem at the time that Zedekiah, king of Judah, was carried away captive into Babylon.

And they journeyed in the wilderness, and were brought by the hand of the Lord across the great waters, into the land where Mosiah discovered them; and they had dwelt there from that time forth.

And at the time that Mosiah discovered them, they had become exceedingly numerous. Nevertheless, they had had many wars and serious contentions, and had fallen by the sword from time to time; and their language had become corrupted; and they had brought no records with them; and they denied the being of their Creator; and Mosiah, nor the people of Mosiah, could understand them.

But it came to pass that Mosiah caused that they should be taught in his language. And it came to pass that after they were taught in the language of Mosiah, Zarahemla gave a genealogy of his fathers, according to his memory; and they are written, but not in these plates.

And it came to pass that the people of Zarahemla, and of Mosiah, did unite together; and Mosiah was appointed to be their king.

And it came to pass in the days of Mosiah, there was a large stone brought unto him with engravings on it; and he did interpret the engravings by the gift and power of God.

And they gave an account of one Coriantumr, and the slain of his people. And Coriantumr was discovered by the people of Zarahemla; and he dwelt with them for the space of nine moons.

It also spake a few words concerning his fathers. And his first parents came out from the tower, at the time the Lord confounded the language of the people; and the severity of the Lord fell upon them according to his judgments, which are just; and their bones lay scattered in the land northward.

Behold, I, Amaleki, was born in the days of Mosiah; and I have lived to see his death; and Benjamin, his son, reigneth in his stead.

- 24 और देखो, मैंने राजा बिन्यामीन के समय में नफाइयों और लमनाइयों के बीच में गंभीर युद्ध और बहुत अधिक रक्तपात होते देखा है। लेकिन देखो नफाई अधिक शक्तिशाली ठहरे; हां, इतने अधिक कि राजा बिन्यामीन ने लमनाइयों को जराहेमला प्रदेश से बाहर खदेड़ दिया।
- 25 और ऐसा हुआ कि मैं वृद्ध हो गया हूँ; और, कोई वंश न होने के कारण, और राजा बिन्यामीन के प्रभु के सामने न्यायी पुरुष ठहरने के कारण, मैं इन पट्टियों को उसे दे दूंगा जिससे सब लोगों को इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर के पास आने का उपदेश मिलेगा, और भविष्यवाणी, और प्रकटीकरणों, और स्वर्गदूतों द्वारा उपदेश, और भाषाओं में बोलने का उपहार, और भाषाओं का अनुवाद करने का उपहार, और सभी भली बातों में विश्वास करने की शिक्षा मिलेगी; क्योंकि जो भली बातें हैं वे केवल प्रभु को छोड़कर कहीं और से नहीं आती: और जो बुरी बातें हैं वे शैतान से आती हैं।
- 26 और अब मेरे प्रिय भाइयों, मैं चाहता हूँ कि तुम मसीह के पास आओ, जो कि इस्राएल का एकमेव पवित्र परमेश्वर है, और उसके उद्धार, और उसकी मुक्ति की शक्ति में भागीदार बनो। हां, उसके पास आओ, और अपनी पूरी आत्मा को उसे भेंट चढ़ा दो और उपवास और प्रार्थना में लगे रहो और अंत तक धीरज धरो; और जब तक प्रभु जीवित है तुम बचा लिए जाओगे।
- 27 और अब मैं उन लोगों के संबंध में कुछ कहूंगा जो कि निर्जन प्रदेश में गए हैं ताकि वे वापस नफी के प्रदेश में लौट सकें; क्योंकि उनमें एक बहुत बड़ी संख्या उन लोगों की थी जिनकी इच्छा थी कि वे अपने पैतृक प्रदेश के अधिकारी हों।
- 28 इसलिए, वे निर्जन प्रदेश में गए। और उनका मार्गदर्शक बलवान और शक्तिशाली, और एक जिद्दी पुरुष था, इसलिए उसने उन लोगों में विवाद पैदा कर दिया; और पचास लोगों को छोड़कर बाकी सब निर्जन प्रदेश में मारे गए, और वे जराहेमला के प्रदेश में वापस लौट गए।
- 29 और ऐसा हुआ कि उन लोगों ने, बहुत से अन्य लोगों को भी अपने साथ लिया, और फिर से निर्जन प्रदेश में अपनी यात्रा की।
- 30 और मेरा, अमालेकी का, एक भाई था, वह भी उनके साथ गया था; और तब से मैं उनके विषय में कुछ भी नहीं जानता। और अब मैं अपनी कब्र में लेटे जाने के निकट हूँ; और ये पट्टियां भी भर चुकी हैं। और अब मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

And behold, I have seen, in the days of king Benjamin, a serious war and much bloodshed between the Nephites and the Lamanites. But behold, the Nephites did obtain much advantage over them; yea, insomuch that king Benjamin did drive them out of the land of Zarahemla.

And it came to pass that I began to be old; and, having no seed, and knowing king Benjamin to be a just man before the Lord, wherefore, I shall deliver up these plates unto him, exhorting all men to come unto God, the Holy One of Israel, and believe in prophesying, and in revelations, and in the ministering of angels, and in the gift of speaking with tongues, and in the gift of interpreting languages, and in all things which are good; for there is nothing which is good save it comes from the Lord: and that which is evil cometh from the devil.

And now, my beloved brethren, I would that ye should come unto Christ, who is the Holy One of Israel, and partake of his salvation, and the power of his redemption. Yea, come unto him, and offer your whole souls as an offering unto him, and continue in fasting and praying, and endure to the end; and as the Lord liveth ye will be saved.

And now I would speak somewhat concerning a certain number who went up into the wilderness to return to the land of Nephi; for there was a large number who were desirous to possess the land of their inheritance.

Wherefore, they went up into the wilderness. And their leader being a strong and mighty man, and a stiffnecked man, wherefore he caused a contention among them; and they were all slain, save fifty, in the wilderness, and they returned again to the land of Zarahemla.

And it came to pass that they also took others to a considerable number, and took their journey again into the wilderness.

And I, Amaleki, had a brother, who also went with them; and I have not since known concerning them. And I am about to lie down in my grave; and these plates are full. And I make an end of my speaking.

## मॉरमन के वचन

- 1 और अब मैं, मॉरमन, जिस अभिलेख को लिख रहा हूँ उसे अपने पुत्र मरोनी के हाथों में देने वाला हूँ। देखो, मैंने लगभग अपने सारे नफाई लोगों को नष्ट होते देखा है।
- 2 और मसीह के आने के कई सौ वर्ष पश्चात मैं इन पट्टियों को अपने पुत्र के हाथों में दे रहा हूँ। और मुझे महसूस हो रहा है कि वह मेरे लोगों के संपूर्ण विनाश को देखेगा। परन्तु परमेश्वर कृपा करके उसे बचा ले जिससे कि वह उन लोगों और मसीह के विषय में लिख सके, जिससे कि किसी समय उनको लाभ मिल सके।
- 3 और अब, मैं उस संबंध में कुछ बोलूंगा जो मैंने लिखा है; क्योंकि जब मैंने नफी की पट्टियों से राजा बिन्यामीन के समय तक के विवरण को संक्षिप्त कर लिया, जिसके विषय में अमालेकी ने कहा था, मैंने उन अभिलेखों के बीच खोजा जो मुझे दिए गए थे, और मुझे ये पट्टियाँ मिली, जिनमें याकूब से ले कर, राजा बिन्यामीन के शासन तक के भविष्यवक्ताओं का यह थोड़ा विवरण और नफी के बहुत से वचन भी मिले हैं।
- 4 और जो बातें इन पट्टियों पर हैं मुझे पसंद हैं, क्योंकि इनमें मसीह के आने की भविष्यवाणियाँ हैं; और हमारे पूर्वजों को यह पता था कि इनकी बहुत सी भविष्यवाणियाँ पूरी हो चुकी हैं; हाँ और मैं यह भी जानता हूँ कि आज तक बहुत सी बातें जिनके संबंध में भविष्यवाणियों की गई थी वे पूरी हो चुकी हैं, और बहुत सी बातें आगे चलकर अवश्य पूरी होंगी—
- 5 इसलिए, मैंने इन बातों के विषय में अपने अभिलेख को समाप्त करना चुना है, अपने अभिलेख की शेष बातें मैं नफी की पट्टियों में से लूंगा; और अपने लोगों की बातों का सौवां भाग भी मैं नहीं लिख सकता।
- 6 लेकिन देखो, मैं इन पट्टियों को लूंगा, जिनमें ये भविष्यवाणियाँ और प्रकटीकरण हैं, और अपने अन्य अभिलेख के साथ रखूंगा, क्योंकि वे मुझे पसंद हैं; और मैं जानता हूँ कि वे मेरे भाइयों को भी पसंद होंगे।
- 7 और ऐसा मैं एक सही उद्देश्य के लिए कर रहा हूँ; क्योंकि प्रभु की आत्मा जो मेरे अंदर है मुझे ऐसा करने के लिए उकसा रही है। और अब, मैं सब बातें नहीं जानता; लेकिन प्रभु सब बातों को जानता है जो होने वाली हैं; इसलिए, वह अपनी इच्छा के अनुसार मुझ में कार्य कर रहा है।

## The Words of Mormon

And now I, Mormon, being about to deliver up the record which I have been making into the hands of my son Moroni, behold I have witnessed almost all the destruction of my people, the Nephites.

And it is many hundred years after the coming of Christ that I deliver these records into the hands of my son; and it supposeth me that he will witness the entire destruction of my people. But may God grant that he may survive them, that he may write somewhat concerning them, and somewhat concerning Christ, that perhaps some day it may profit them.

And now, I speak somewhat concerning that which I have written; for after I had made an abridgment from the plates of Nephi, down to the reign of this king Benjamin, of whom Amaleki spake, I searched among the records which had been delivered into my hands, and I found these plates, which contained this small account of the prophets, from Jacob down to the reign of this king Benjamin, and also many of the words of Nephi.

And the things which are upon these plates pleasing me, because of the prophecies of the coming of Christ; and my fathers knowing that many of them have been fulfilled; yea, and I also know that as many things as have been prophesied concerning us down to this day have been fulfilled, and as many as go beyond this day must surely come to pass—

Wherefore, I chose these things, to finish my record upon them, which remainder of my record I shall take from the plates of Nephi; and I cannot write the hundredth part of the things of my people.

But behold, I shall take these plates, which contain these prophesyings and revelations, and put them with the remainder of my record, for they are choice unto me; and I know they will be choice unto my brethren.

And I do this for a wise purpose; for thus it whispereth me, according to the workings of the Spirit of the Lord which is in me. And now, I do not know all things; but the Lord knoweth all things which are to come; wherefore, he worketh in me to do according to his will.

- 8 और परमेश्वर से मैं अपने भाइयों के लिए यही प्रार्थना करता हूँ कि वे परमेश्वर के ज्ञान को फिर से प्राप्त करें, हाँ, मसीह की मुक्ति को; कि वे फिर से आनंदित लोग बन जाएं ।
- 9 और अब मैं, मॉरमन, अपने उस अभिलेख को पूरा करने जा रहा हूँ जिसे मैं नफी की पट्टियों से लिख रहा हूँ; और जिसे मैं परमेश्वर के दिए ज्ञान और समझ के अनुसार बना रहा हूँ ।
- 10 इसलिए, ऐसा हुआ कि इन पट्टियों को अमालेकी द्वारा राजा बिन्यामीन के हाथों में देने के पश्चात उसने उन्हें लेकर उन अन्य पट्टियों के साथ रख दिया जिसमें वे अभिलेख थे जिसे राजाओं की एक पीढ़ी, दूसरी पीढ़ी को राजा बिन्यामीन के समय तक देती आई थी ।
- 11 और राजा बिन्यामीन द्वारा दिए जाने के समय से उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी दिया जाता रहा था और अंत में वे मेरे हाथ में आई हैं, और मैं, मॉरमन, परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे अब सुरक्षित रहें । और मैं जानता हूँ कि वे सुरक्षित रखी जाएंगी; क्योंकि उनमें महान बातें लिखी हैं जिनके अनुसार उस महान और अंतिम दिन हम लोगों और उनके भाइयों का न्याय परमेश्वर के वचनों के अनुसार होगा ।
- 12 और अब इस राजा बिन्यामीन के संबंध में—उसके लोगों के बीच में कुछ विवाद था ।
- 13 और ऐसा भी हुआ कि लमनाइयों की सेना नफी के प्रदेश से निकलकर, उसके लोगों से युद्ध करने आई । लेकिन देखो, राजा बिन्यामीन ने अपनी सेना को एकत्रित किया, और वह उनके विरुद्ध खड़ा हो गया; और उसने अपनी भुजा की शक्ति के साथ लाबान की तलवार से युद्ध किया ।
- 14 और प्रभु की शक्ति से उन्होंने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की और कई हजार लमनाइयों को मार डाला । और ऐसा हुआ कि वे लमनाइयों के साथ तब तक संघर्ष करते रहे जब तक कि उन्होंने उन्हें अपने पैतृक देश से पूरी तरह बाहर नहीं खदेड़ दिया ।
- 15 और ऐसा हुआ कि इसके बाद झूठे मसीह हुए, और उनके मुह बंद कर दिए गए थे, और उन्हें उनके अपराधों के अनुसार दंड दिया गया;

And my prayer to God is concerning my brethren, that they may once again come to the knowledge of God, yea, the redemption of Christ; that they may once again be a delightsome people.

And now I, Mormon, proceed to finish out my record, which I take from the plates of Nephi; and I make it according to the knowledge and the understanding which God has given me.

Wherefore, it came to pass that after Amaleki had delivered up these plates into the hands of king Benjamin, he took them and put them with the other plates, which contained records which had been handed down by the kings, from generation to generation until the days of king Benjamin.

And they were handed down from king Benjamin, from generation to generation until they have fallen into my hands. And I, Mormon, pray to God that they may be preserved from this time henceforth. And I know that they will be preserved; for there are great things written upon them, out of which my people and their brethren shall be judged at the great and last day, according to the word of God which is written.

And now, concerning this king Benjamin—he had somewhat of contentions among his own people.

And it came to pass also that the armies of the Lamanites came down out of the land of Nephi, to battle against his people. But behold, king Benjamin gathered together his armies, and he did stand against them; and he did fight with the strength of his own arm, with the sword of Laban.

And in the strength of the Lord they did contend against their enemies, until they had slain many thousands of the Lamanites. And it came to pass that they did contend against the Lamanites until they had driven them out of all the lands of their inheritance.

And it came to pass that after there had been false Christs, and their mouths had been shut, and they punished according to their crimes;

16 और वहां लोगों के बीच झूठे भविष्यवक्ता, और झूठे प्रचारक और शिक्षक होने, और उन सभी को उनके अपराधों के अनुसार दंड देने के पश्चात; और लमनाइयों के प्रति कई तरह के विवाद और मतभेद होने के बाद, देखो, ऐसा हुआ कि राजा बिन्यामीन, ने पवित्र भविष्यवक्ताओं की सहायता से जो उसके लोगों के बीच थे—

17 क्योंकि देखो, राजा बिन्यामीन एक पवित्र मनुष्य था और उसने अपने लोगों पर धार्मिकता से शासन किया; और प्रदेश में बहुत से पवित्र मनुष्य थे; और वे शक्ति और अधिकार के साथ परमेश्वर के वचन को बोलते थे; और लोगों के जिद्दीपन के कारण वे अधिक स्पष्टता से बोलते थे—

18 इसलिए, इनकी सहायता से, राजा बिन्यामीन ने, अपने शरीर की संपूर्ण शक्ति और अपने संपूर्ण प्राण की क्षमता, और भविष्यवक्ताओं के भी परिश्रम द्वारा, प्रदेश में शांति स्थापित की थी ।

And after there had been false prophets, and false preachers and teachers among the people, and all these having been punished according to their crimes; and after there having been much contention and many dissensions away unto the Lamanites, behold, it came to pass that king Benjamin, with the assistance of the holy prophets who were among his people—

For behold, king Benjamin was a holy man, and he did reign over his people in righteousness; and there were many holy men in the land, and they did speak the word of God with power and with authority; and they did use much sharpness because of the stiffneckedness of the people—

Wherefore, with the help of these, king Benjamin, by laboring with all the might of his body and the faculty of his whole soul, and also the prophets, did once more establish peace in the land.

# मुसायाह की पुस्तक

## मुसायाह 1

- 1 और अब संपूर्ण जराहेमला के प्रदेश में, राजा बिन्यामीन के लोगों के बीच कोई विवाद नहीं था, इसलिए राजा बिन्यामीन के बाकी बचे हुए दिनों में निरंतर शांति थी ।
- 2 और ऐसा हुआ कि उसके तीन बेटे हुए; और उसने उनके नाम मुसायाह, और हीलोरम और हिलामन रखा । और उसने उनको अपने पूर्वजों की सारी भाषाओं को सीखाने का निश्चय किया, ताकि वे समझदार मनुष्य बनें; और वे अपने पूर्वजों के मुंह से बोली गई भविष्यवाणियों के संबंध में जान सकें, जो उन्हें प्रभु के द्वारा प्राप्त हुई थी ।
- 3 और उसने यह कहकर उन्हें उन अभिलेखों के संबंध में भी सीखाया जो पीतल की पट्टियों पर लिखे हुए थे: मेरे बेटों, मैं चाहता हूँ कि तुम याद रखो यदि ये पट्टियाँ न होती, जिसमें ये अभिलेख और ये आज्ञाएँ हैं, तो हम अज्ञानता में कष्ट झेलते और आज तक परमेश्वर के रहस्यों से अनजान रहते ।
- 4 क्योंकि यह संभव नहीं था कि बिना इन पट्टियों के हमारे पिता, लेही, ये सब बातें अपने बच्चों को सीखाने के लिए याद रख पाते; क्योंकि उन्होंने मिस्री भाषा सीखी थी इसलिए वह इन अभिलेखों को पढ़ सकते और अपने बच्चों को सीखा सकते थे, ताकि वे इन्हें अपने बच्चों को सीखा सकें, और इस प्रकार परमेश्वर की आज्ञाओं का आज तक पालन होता रहा है ।
- 5 मेरे बेटों, मैं तुम से कहता हूँ कि यदि परमेश्वर द्वारा ये सब सुरक्षित नहीं रखे जाते, जिनको पढ़ कर हम उसके रहस्यों को समझ सकते हैं, और उसकी आज्ञाएँ सदा हमारी आंखों के सामने रहती हैं, वरना हमारे पूर्वज भी अविश्वास में नष्ट हो जाते और हम अपने लमनाई भाइयों के समान होते जिन्हें इन बातों की कोई जानकारी नहीं है, और इन बातों की शिक्षा देने पर भी जो अपने पूर्वजों की अनुचित परंपरा के कारण विश्वास नहीं करते ।

# The Book of Mosiah

## Mosiah 1

And now there was no more contention in all the land of Zarahemla, among all the people who belonged to king Benjamin, so that king Benjamin had continual peace all the remainder of his days.

And it came to pass that he had three sons; and he called their names Mosiah, and Helorum, and Helaman. And he caused that they should be taught in all the language of his fathers, that thereby they might become men of understanding; and that they might know concerning the prophecies which had been spoken by the mouths of their fathers, which were delivered them by the hand of the Lord.

And he also taught them concerning the records which were engraven on the plates of brass, saying: My sons, I would that ye should remember that were it not for these plates, which contain these records and these commandments, we must have suffered in ignorance, even at this present time, not knowing the mysteries of God.

For it were not possible that our father, Lehi, could have remembered all these things, to have taught them to his children, except it were for the help of these plates; for he having been taught in the language of the Egyptians therefore he could read these engravings, and teach them to his children, that thereby they could teach them to their children, and so fulfilling the commandments of God, even down to this present time.

I say unto you, my sons, were it not for these things, which have been kept and preserved by the hand of God, that we might read and understand of his mysteries, and have his commandments always before our eyes, that even our fathers would have dwindled in unbelief, and we should have been like unto our brethren, the Lamanites, who know nothing concerning these things, or even do not believe them when they are taught them, because of the traditions of their fathers, which are not correct.



- 6 हे मेरे बेटों, मैं चाहता हूँ, कि तुम यह याद रखो कि ये सब बातें सच्ची हैं और ये अभिलेख भी सच्चे हैं। और देखो, नफी की पट्टियाँ भी सच्ची हैं जिसमें यरूशलेम से निकलने के समय से लेकर आज तक के हमारे पूर्वजों के विवरण और कथन हैं, और हम इनकी सच्चाई पर इसलिए विश्वास कर सकते हैं क्योंकि वह हमारी आंखों के सामने हैं।
- 7 और अब मेरे बेटों, मैं चाहता हूँ कि तुम निष्ठापूर्वक इनका अध्ययन करो, ताकि तुम उनसे लाभ उठा सको; और मैं यह भी चाहता हूँ कि तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करो, जिससे कि तुम प्रभु के द्वारा हमारे पूर्वजों को दिए गए प्रतिज्ञाओं के देश में उन्नति करो।
- 8 और राजा बिन्यामीन ने अपने बेटों को बहुत सी अन्य बातों की शिक्षा दी, जो इस पुस्तक में नहीं लिखी जा रही है।
- 9 और ऐसा हुआ कि जब राजा बिन्यामीन ने अपने लड़कों को शिक्षा देना समाप्त किया, तब तक वह वृद्ध हो चला था, और वह समझ गया था कि बहुत जल्द वह इस पृथ्वी से चला जाएगा; इसलिए, उसने इसे उचित समझा कि वह राज्य का शासन अपने एक बेटे को प्रदान कर दे।
- 10 उसने मुसायाह को अपने सामने बुलवाया और उसने उससे इन शब्दों को कहा: मेरे बेटे, मैं चाहता हूँ कि तुम इस देश के सभी लोगों अर्थात् जराहेमला और मुसायाह के लोगों में, जो देश में रहते हैं, घोषणा करो कि वे सब इकट्ठे हों; क्योंकि कल मैं अपने इन लोगों में स्वयं अपने मुख से घोषणा करूँगा कि इन लोगों के जिन्हें प्रभु परमेश्वर ने हमें दिया है, तुम राजा और शासक हो।
- 11 और इसके अलावा, मैं इन लोगों को एक नाम दूँगा जिसके द्वारा इनकी पहचान उन सारे लोगों में की जाएगी, जिन्हें प्रभु परमेश्वर ने यरूशलेम के प्रदेश से निकाल कर लाया था; और मैं यह इसलिए करूँगा क्योंकि ये लोग प्रभु की आज्ञाओं का पालन निष्ठा से करते हैं।
- 12 और मैं उनको एक ऐसा नाम दूँगा जो पाप के अलावा अन्य किसी कारण से कभी भी नहीं मिटाया जा सकेगा।

O my sons, I would that ye should remember that these sayings are true, and also that these records are true. And behold, also the plates of Nephi, which contain the records and the sayings of our fathers from the time they left Jerusalem until now, and they are true; and we can know of their surety because we have them before our eyes.

And now, my sons, I would that ye should remember to search them diligently, that ye may profit thereby; and I would that ye should keep the commandments of God, that ye may prosper in the land according to the promises which the Lord made unto our fathers.

And many more things did king Benjamin teach his sons, which are not written in this book.

And it came to pass that after king Benjamin had made an end of teaching his sons, that he waxed old, and he saw that he must very soon go the way of all the earth; therefore, he thought it expedient that he should confer the kingdom upon one of his sons.

Therefore, he had Mosiah brought before him; and these are the words which he spake unto him, saying: My son, I would that ye should make a proclamation throughout all this land among all this people, or the people of Zarahemla, and the people of Mosiah who dwell in the land, that thereby they may be gathered together; for on the morrow I shall proclaim unto this my people out of mine own mouth that thou art a king and a ruler over this people, whom the Lord our God hath given us.

And moreover, I shall give this people a name, that thereby they may be distinguished above all the people which the Lord God hath brought out of the land of Jerusalem; and this I do because they have been a diligent people in keeping the commandments of the Lord.

And I give unto them a name that never shall be blotted out, except it be through transgression.

- 13 हां, और मैं तुम से यह भी कहता हूँ कि ये परमेश्वर के अत्याधिक कृपापात्र लोग यदि दुष्कर्म में गिर कर पापी और व्यभिचारी हो जाएं तब प्रभु उनका त्याग कर देगा और वे अपने भाइयों की तरह दुर्बल हो जाएंगे; और वह अपनी अद्वितीय और आश्चर्यमय शक्ति के द्वारा उनकी रक्षा भी नहीं करेगा, जिस तरह उसने अब तक हमारे पूर्वजों की रक्षा की है ।
- 14 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि यदि वह अपने हाथ बढ़ाकर हमारे पूर्वजों की रक्षा नहीं करता, तो वे लमनाइयों के हाथों में पड़ जाते और उनकी घृणा के पात्र बन जाते ।
- 15 और ऐसा हुआ कि जब राजा बिन्यामीन ने अपने बेटे से यह कहना समाप्त किया, तब उसने अपने बेटे को राज्य का शासन दे दिया ।
- 16 और इसके अलावा, उसने उसे उन अभिलेखों, जो पीतल की पट्टियों पर अंकित थे; और नफी की पट्टियों; और लाबान की तलवार भी, और गेंद यानि दिगदर्शक यंत्र, जिसे प्रभु ने हमारे पूर्वजों का निर्जन प्रदेश में उनके विश्वास और निष्ठा के अनुसार मार्गदर्शन करने के लिए अपने हाथों से तैयार किया था, का अधिकार भी उसे दे दिया ।
- 17 इसलिए, जब वे अविश्वासी थे वे न तो संपन्न हुए न ही अपनी यात्रा में प्रगति की, उल्टे वे पीछे ढकेल दिए गए, और परमेश्वर उनसे नाराज हो गया; और इसलिए उन पर अकाल और भारी कष्टों की मार पड़ी, ताकि उन्हें अपने कर्तव्यों को पूरा करने की चेतावनी मिले ।
- 18 और अब, ऐसा हुआ कि मुसायाह गया और अपने पिता की आज्ञा के अनुसार काम किया, और जराहेमला देश के लोगों को एकत्रित होने की घोषणा की और उनसे कहा वे मंदिर जाकर उसके पिता के उन शब्दों को सुने जो वह उनसे कहेगा ।

Yea, and moreover I say unto you, that if this highly favored people of the Lord should fall into transgression, and become a wicked and an adulterous people, that the Lord will deliver them up, that thereby they become weak like unto their brethren; and he will no more preserve them by his matchless and marvelous power, as he has hitherto preserved our fathers.

For I say unto you, that if he had not extended his arm in the preservation of our fathers they must have fallen into the hands of the Lamanites, and become victims to their hatred.

And it came to pass that after king Benjamin had made an end of these sayings to his son, that he gave him charge concerning all the affairs of the kingdom.

And moreover, he also gave him charge concerning the records which were engraven on the plates of brass; and also the plates of Nephi; and also, the sword of Laban, and the ball or director, which led our fathers through the wilderness, which was prepared by the hand of the Lord that thereby they might be led, every one according to the heed and diligence which they gave unto him.

Therefore, as they were unfaithful they did not prosper nor progress in their journey, but were driven back, and incurred the displeasure of God upon them; and therefore they were smitten with famine and sore afflictions, to stir them up in remembrance of their duty.

And now, it came to pass that Mosiah went and did as his father had commanded him, and proclaimed unto all the people who were in the land of Zarahemla that thereby they might gather themselves together, to go up to the temple to hear the words which his father should speak unto them.

## मुसायाह 2

- 1 और ऐसा हुआ कि जब मुसायाह अपने पिता की आज्ञानुसार सारे देश में घोषणा कर चुका, तब सारे देश के लोग एकत्रित हुए ताकि वे मंदिर जाकर राजा बिन्यामीन की उन बातों को सुन सकें जो वह उनसे कहना चाहता था ।
- 2 और उनकी संख्या बहुत अधिक थी, इतनी अधिक कि उन्होंने उनकी गिनती नहीं की; क्योंकि उनकी जनसंख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई थी और वे बहुत संपन्न हुए थे ।
- 3 और वे अपने पशुओं के पहिलौठों को भी साथ लाए थे, ताकि वे मूसा की व्यवस्था के अनुसार बलि और होम बलि चढ़ा सकें;
- 4 और कि वे प्रभु अपने परमेश्वर को धन्यवाद भी दे सकें, जो उन्हें यरूशलेम देश से निकाल कर लाया था, और जिसने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथों से बचाया था, और उनके लिए धार्मिक पुरुषों को उनका शिक्षक, और एक धार्मिक पुरुष को उनका राजा नियुक्त किया था, जिसने जराहेमला के देश में शांति की स्थापना की और जिसने उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना सीखाया, ताकि वे आनंद मनाएं और परमेश्वर और सब मनुष्यों के प्रति प्रेम से भर जाएं ।
- 5 और ऐसा हुआ कि जब वे मंदिर के पास आए, उन्होंने चारों ओर अपने तंबू लगा दिए, प्रत्येक पुरुष अपने परिवार के अनुसार, जिसमें उसकी पत्नी, और उसके बेटे, और उसकी बेटियां, और उनके बेटे, और उनकी बेटियां, बड़े से लेकर छोटे तक, प्रत्येक परिवार एक दूसरे से अलग था ।
- 6 और उन्होंने अपने तंबू मंदिर के चारों ओर लगा दिए, प्रत्येक पुरुष के तंबू का द्वार मंदिर की ओर था, ताकि वे अपने तंबूओं में ही रहें और उन शब्दों को सुनें जो राजा बिन्यामीन उनसे बोलने वाला था;
- 7 क्योंकि भीड़ इतनी अधिक थी कि राजा बिन्यामीन उन सबों को मंदिर के अंदर शिक्षा नहीं दे सकता था, इसलिए उसने एक मिनार को बनवाया था, ताकि उसके लोग उन शब्दों को सुन सकें जो वह उनसे बोलना चाहता था ।

## Mosiah 2

And it came to pass that after Mosiah had done as his father had commanded him, and had made a proclamation throughout all the land, that the people gathered themselves together throughout all the land, that they might go up to the temple to hear the words which king Benjamin should speak unto them.

And there were a great number, even so many that they did not number them; for they had multiplied exceedingly and waxed great in the land.

And they also took of the firstlings of their flocks, that they might offer sacrifice and burnt offerings according to the law of Moses;

And also that they might give thanks to the Lord their God, who had brought them out of the land of Jerusalem, and who had delivered them out of the hands of their enemies, and had appointed just men to be their teachers, and also a just man to be their king, who had established peace in the land of Zarahemla, and who had taught them to keep the commandments of God, that they might rejoice and be filled with love towards God and all men.

And it came to pass that when they came up to the temple, they pitched their tents round about, every man according to his family, consisting of his wife, and his sons, and his daughters, and their sons, and their daughters, from the eldest down to the youngest, every family being separate one from another.

And they pitched their tents round about the temple, every man having his tent with the door thereof towards the temple, that thereby they might remain in their tents and hear the words which king Benjamin should speak unto them;

For the multitude being so great that king Benjamin could not teach them all within the walls of the temple, therefore he caused a tower to be erected, that thereby his people might hear the words which he should speak unto them.

- 8 और ऐसा हुआ कि उसने मीनार से अपने लोगों से बोलना आरंभ किया; और वे सब उसके शब्दों को नहीं सुन सकते थे क्योंकि भीड़ बहुत अधिक थी; इसलिए उसने जो शब्द बोले थे उन्हें लिखवाया और उन लोगों को दिए जो उसके शब्दों को नहीं सुन सकते थे, ताकि वे भी उसके शब्दों को प्राप्त कर सकें ।
- 9 और ये उसके शब्द थे जो उसने बोले और लिखवाए थे: मेरे भाइयों, तुम जो यहां पर एकत्रित हुए हो, तुम जो मेरे शब्दों को सुन रहे हो जो मैं तुम से आज बोल रहा हूँ; मैंने तुम्हें यहां आने की आज्ञा इसलिए नहीं दी कि तुम मेरे उन शब्दों को अनादर करो जो मैं तुम से बोलने जा रहा हूँ; परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी बातों पर ध्यान दो, और अपने कान खोल दो ताकि तुम सुन सको, और अपने हृदयों को खोल दो ताकि तुम समझ सको, और अपने मनों से पर्दा हटा दो ताकि परमेश्वर के रहस्यों को तुम्हारी दृष्टि के सामने खोला जाए ।
- 10 मैंने तुम्हें यहां आने की आज्ञा इसलिए नहीं दी कि तुम मुझ से भय खाओ, या तुम सोचो कि मैं एक नश्वर मनुष्य से अधिक हूँ ।
- 11 लेकिन मैं भी तुम्हारे समान शरीर और मन से दुर्बल हूँ; फिर भी मैं इन लोगों द्वारा चुना गया हूँ, और अपने पिता द्वारा समर्पित किया गया हूँ, और प्रभु के हाथों के द्वारा मैं इन लोगों का शासक और राजा बनाया गया; और उसकी अद्वितीय शक्ति द्वारा पूरी शक्ति, मन और ताकत से जो प्रभु ने मुझे दी है, तुम्हारी सेवा करने के लिए सुरक्षित रखा गया ।
- 12 मैं तुम से कहता हूँ कि जैसे मैंने अपने दिनों को अब तक तुम्हारी सेवा में बिताया है, और तुम्हारे सोने या चांदी या किसी भी प्रकार की संपत्ति की चाहत नहीं की ।
- 13 न ही मैंने तुम्हें काल कोठरी में कैद किया, न ही तुम्हें एक दूसरे को गुलाम बनाने दिया, न ही तुम्हें हत्या करने दी, या लूटने, या चोरी करने, या व्यभिचार करने दिया; यहां तक कि मैंने तुम्हें किसी भी प्रकार के दुष्ट काम करने दिए, और तुम्हें सीखाया कि तुम सब बातों में प्रभु की उन आज्ञाओं का पालन करो जो उसने तुम्हें दी हैं—

And it came to pass that he began to speak to his people from the tower; and they could not all hear his words because of the greatness of the multitude; therefore he caused that the words which he spake should be written and sent forth among those that were not under the sound of his voice, that they might also receive his words.

And these are the words which he spake and caused to be written, saying: My brethren, all ye that have assembled yourselves together, you that can hear my words which I shall speak unto you this day; for I have not commanded you to come up hither to trifle with the words which I shall speak, but that you should hearken unto me, and open your ears that ye may hear, and your hearts that ye may understand, and your minds that the mysteries of God may be unfolded to your view.

I have not commanded you to come up hither that ye should fear me, or that ye should think that I of myself am more than a mortal man.

But I am like as yourselves, subject to all manner of infirmities in body and mind; yet I have been chosen by this people, and consecrated by my father, and was suffered by the hand of the Lord that I should be a ruler and a king over this people; and have been kept and preserved by his matchless power, to serve you with all the might, mind and strength which the Lord hath granted unto me.

I say unto you that as I have been suffered to spend my days in your service, even up to this time, and have not sought gold nor silver nor any manner of riches of you;

Neither have I suffered that ye should be confined in dungeons, nor that ye should make slaves one of another, nor that ye should murder, or plunder, or steal, or commit adultery; nor even have I suffered that ye should commit any manner of wickedness, and have taught you that ye should keep the commandments of the Lord, in all things which he hath commanded you—

- 14 और यहां तक कि मैंने, स्वयं अपने हाथों से मेहनत की ताकि मैं तुम्हारी सेवा कर सकूँ, और तुम पर कर का बोझ न डाला जाए, और तुम्हारे साथ ऐसा कुछ भी न किया जाए जिससे कष्ट पैदा हो—और ये सब बातें जो मैंने तुम से बोली हैं, आज तुम स्वयं इसके गवाह हो ।
- 15 फिर भी, मेरे भाइयों, मैंने ये काम इसलिए नहीं किये कि मैं घमंड करूँ, न ही मैं इसलिए इन बातों को बोल रहा हूँ कि मैं तुम पर दोष लगा सकूँ; लेकिन मैं तुम्हें ये बातें इसलिए बोल रहा हूँ कि मैं आज परमेश्वर के सम्मुख निर्दोष खड़ा हो सकता हूँ ।
- 16 देखो, मैं तुम से कहना चाहता हूँ क्योंकि मैंने तुम से कहा है कि मैंने तुम्हारी सेवा में अपने दिन बिताए हैं, मैं घमंड नहीं करना चाहता, क्योंकि मैं केवल परमेश्वर की सेवा करता रहा हूँ ।
- 17 और देखो, मैं तुम से यह बातें इसलिए बोल रहा हूँ ताकि तुम ज्ञान प्राप्त कर सको; ताकि तुम सीख सको कि जब तुम अपने साथियों की सेवा करते हो, तुम अपने परमेश्वर की सेवा करते हो ।
- 18 देखो, तुमने मुझे अपना राजा कहा है; और यदि मैं, जिसे तुम अपना राजा कहते हो, तुम्हारी सेवा करने के लिए मेहनत करता है, तब क्या तुम्हें एक दूसरे की सेवा करने के लिए मेहनत नहीं करनी चाहिए ?
- 19 और यह भी देखो, यदि मैं, जिसे तुम अपना राजा कहते हो, उसने अपने दिन तुम्हारी सेवा में बिता दिए, और फिर भी परमेश्वर की सेवा करता रहा, इसके लिए मैं तुम्हारे धन्यवाद का अधिकारी हूँ, तो तुम्हें अपने स्वर्गीय राजा का कितना धन्यवाद प्रकट करना चाहिए !
- 20 मैं तुमसे कहता हूँ, मेरे भाइयों, कि जिस परमेश्वर ने तुम्हें रचा, और तुम्हें संभाला और सुरक्षित रखा, और तुम्हें आनंद मनाने का कारण दिया, और एक दूसरे के साथ शांति से रहने का अवसर दिया, यदि तुमने अपनी आत्मा की पूरी शक्ति से उसका धन्यवाद और प्रशंसा की—
- 21 मैं तुम से कहता हूँ कि यदि तुम उसकी सेवा करो जिसने तुम्हें आरंभ से रचा, और सांस देकर दिन प्रतिदिन तुम्हें बचाया, कि तुम जीवित रहो और अपनी इच्छा के अनुसार चलो-फिरो और कार्य करो, और यहां तक कि तुम्हें हर क्षण संभाले रहा—मैं कहता हूँ, यदि तुम संपूर्ण आत्मा से भी उसकी सेवा करो फिर भी तुम उसके लाभहीन सेवक रहोगे ।

And even I, myself, have labored with mine own hands that I might serve you, and that ye should not be laden with taxes, and that there should nothing come upon you which was grievous to be borne—and of all these things which I have spoken, ye yourselves are witnesses this day.

Yet, my brethren, I have not done these things that I might boast, neither do I tell these things that thereby I might accuse you; but I tell you these things that ye may know that I can answer a clear conscience before God this day.

Behold, I say unto you that because I said unto you that I had spent my days in your service, I do not desire to boast, for I have only been in the service of God.

And behold, I tell you these things that ye may learn wisdom; that ye may learn that when ye are in the service of your fellow beings ye are only in the service of your God.

Behold, ye have called me your king; and if I, whom ye call your king, do labor to serve you, then ought not ye to labor to serve one another?

And behold also, if I, whom ye call your king, who has spent his days in your service, and yet has been in the service of God, do merit any thanks from you, O how you ought to thank your heavenly King!

I say unto you, my brethren, that if you should render all the thanks and praise which your whole soul has power to possess, to that God who has created you, and has kept and preserved you, and has caused that ye should rejoice, and has granted that ye should live in peace one with another—

I say unto you that if ye should serve him who has created you from the beginning, and is preserving you from day to day, by lending you breath, that ye may live and move and do according to your own will, and even supporting you from one moment to another—I say, if ye should serve him with all your whole souls yet ye would be unprofitable servants.

- 22 और देखो, वह तुम से केवल इतना चाहता है कि तुम उसकी आज्ञाओं का पालन करो; और उसने तुम से वादा किया है कि यदि तुमने उसकी आज्ञाओं का पालन करोगे तो तुम देश में उन्नति करोगे; और वह अपनी बात से कभी मुकरता नहीं है; इसलिए, यदि तुम उसकी आज्ञाओं का पालन करोगे तो वह अवश्य ही तुम्हें आशीष देगा और तुम्हारी उन्नति करेगा।
- 23 और अब, सबसे पहले, उसने तुम्हारी रचना की और तुम्हें जीवन दिया जिसके लिए तुम उसके ऋणी हो।
- 24 और दूसरा, वह चाहता है कि जैसी वह आज्ञा देता है तुम वैसा ही करो और यदि तुम वैसा ही करते हो तब वह शीघ्र ही तुम्हें आशीष देता है; इस तरह वह तुम्हारा ऋण चुका देता है। तब भी तुम उसके ऋणी रहते हो, ऋणी रहोगे और सदा के लिए ऋणी बने रहोगे; इसलिए तुम किस बात पर घमंड करते हो ?
- 25 और अब मैं पूछता हूँ, तुम अपने विषय में क्या कह सकते हो ? तुम्हारी तरफ से मैं जवाब देता हूँ कि कुछ भी नहीं। तुम्हें पृथ्वी की धूल से बनाया गया है फिर भी तुम इतना भी नहीं कह सकते कि तुम पृथ्वी की धूल के बराबर हो; क्योंकि वह तो उसकी है जिसने तुम्हें बनाया है।
- 26 और मैं, यहां तक कि मैं भी, जिसे तुम अपना राजा कहते हो, तुमसे किसी भी तरह सर्वश्रेष्ठ नहीं हूँ; क्योंकि मैं भी धूल से ही बना हूँ, और तुम देखते हो कि मैं बुढ़ा हो चला हूँ और इस नश्वर शरीर को धरती माता को सौंपने वाला हूँ।
- 27 इसलिए, जैसा कि मैंने कहा कि मैंने तुम्हारी सेवा की है जिससे मैं परमेश्वर के समक्ष शुद्ध विवेक से जा सकूँ। यहां तक कि इस समय मैंने तुम्हें इसलिए एकत्रित करवाया है कि जिससे मैं निर्दोष ठहराया जाऊँ और जब मैं परमेश्वर के सामने न्याय के लिए खड़ा होऊँ और तुम्हारे विषय में उसने मुझे जो आज्ञा दी थी उसके संबंध में मेरा न्याय करे, तब तुम्हारा लहू मेरे ऊपर न रहे।
- 28 मैं तुम से कहता हूँ कि मैंने तुम्हें इसलिए एकत्रित करवाया है जिससे कि इस समय जब कि मैं अपनी कब्र में जाने वाला हूँ, तब मैं अपने वस्त्रों से तुम्हारे लहू छुड़ा लूँ, जिससे कि मैं शांति से जा सकूँ और मेरी अमर आत्मा न्यायप्रिय परमेश्वर के गुणगान गाने वालों के साथ हो जाए।
- 29 और इसके अतिरिक्त, मैं तुम से कहता हूँ कि मैंने तुम्हें इसलिए एकत्रित करवाया है, जिससे मैं तुम्हारे लिए घोषणा कर सकूँ कि अब मैं तुम्हारा न तो शिक्षक ही रह सकता हूँ और न तुम्हारा राजा ही;

And behold, all that he requires of you is to keep his commandments; and he has promised you that if ye would keep his commandments ye should prosper in the land; and he never doth vary from that which he hath said; therefore, if ye do keep his commandments he doth bless you and prosper you.

And now, in the first place, he hath created you, and granted unto you your lives, for which ye are indebted unto him.

And secondly, he doth require that ye should do as he hath commanded you; for which if ye do, he doth immediately bless you; and therefore he hath paid you. And ye are still indebted unto him, and are, and will be, forever and ever; therefore, of what have ye to boast?

And now I ask, can ye say aught of yourselves? I answer you, Nay. Ye cannot say that ye are even as much as the dust of the earth; yet ye were created of the dust of the earth; but behold, it belongeth to him who created you.

And I, even I, whom ye call your king, am no better than ye yourselves are; for I am also of the dust. And ye behold that I am old, and am about to yield up this mortal frame to its mother earth.

Therefore, as I said unto you that I had served you, walking with a clear conscience before God, even so I at this time have caused that ye should assemble yourselves together, that I might be found blameless, and that your blood should not come upon me, when I shall stand to be judged of God of the things whereof he hath commanded me concerning you.

I say unto you that I have caused that ye should assemble yourselves together that I might rid my garments of your blood, at this period of time when I am about to go down to my grave, that I might go down in peace, and my immortal spirit may join the choirs above in singing the praises of a just God.

And moreover, I say unto you that I have caused that ye should assemble yourselves together, that I might declare unto you that I can no longer be your teacher, nor your king;

- 30 क्योंकि इस समय, भी तुम से बोलने के प्रयत्न में, मेरा पूरा शरीर कांप रहा है; लेकिन प्रभु परमेश्वर मुझे सहारा दे रहा है और तुम से बोलने की जिम्मेदारी दी है और मुझे आज्ञा दी है कि मैं आज तुम्हारे लिए यह घोषणा करूँ कि मेरा बेटा मुसायाह तुम्हारा राजा और शासक है ।
- 31 और अब, मेरे भाइयों, मैं चाहता हूँ कि तुम वही करो जो अभी तक करते आए हो । जिस तरह तुमने मेरी और मेरे पिता की आज्ञाओं का पालन करके उन्नति की है, और अपने शत्रुओं के हाथों में पड़ने से अपने को सुरक्षित रखा, ठीक उसी तरह यदि तुमने मेरे बेटे की या परमेश्वर की उन आज्ञाओं का पालन किया, जो तुम्हें उसके द्वारा प्राप्त होंगी, तब तुम देश में उन्नति करोगे, और तुम्हारे ऊपर तुम्हारे शत्रुओं की कोई शक्ति काम न करेगी ।
- 32 लेकिन हे मेरे लोगों, सावधान रहो, तुम लोगों में विवाद न उठ खड़ा हो, और तुम कहीं उस बुरी आत्मा के आज्ञाकारी न बन जाओ जिसकी चर्चा मेरे पिता मुसायाह ने की थी ।
- 33 क्योंकि देखो, जो उस आत्मा की सुनता और उसकी बातों को मानता है उस पर घोर दुख पड़ता है, और जो उसकी सुन कर उसकी आज्ञा मानता है वह पाप में रह कर मरता है, वह अपनी स्वयं की आत्मा को नरकदंड पिलाता है; क्योंकि वह अपने ज्ञान के विपरीत परमेश्वर के नियम का उल्लंघन करने के लिए, अनंत दंड पाता है ।
- 34 मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हारे छोटे बच्चों को छोड़कर तुम लोगों में और कोई नहीं है जिन्हें इन बातों की शिक्षा न दी गई हो, किंतु क्या तुम यह जानते हो कि तुम अपने स्वर्गीय पिता के अनंत ऋणी हो, और तुम्हारे पास जो कुछ है और भविष्य में जो रहेगा वह सब कुछ उसकी सेवा में लगा देना चाहिए ? तुम्हें उन अभिलेखों के विषय में भी शिक्षा मिली है जिनमें वे भविष्यवाणियाँ हैं जिन्हें लेही के यरूशलेम छोड़ने के समय तक के पवित्र भविष्यवक्ताओं ने कहा था ।
- 35 और हमारे पूर्वजों ने जो कुछ आज तक कहा वह सब भी उन अभिलेखों में है । और देखो, उन्होंने वह भी कहा, जिसकी प्रभु ने उनको आज्ञा दी थी, इसलिए वे सब उचित और सत्य हैं ।
- 36 और अब, मेरे भाइयों मैं तुमसे कहता हूँ कि इन बातों का ज्ञान प्राप्त करने और शिक्षा मिलने के पश्चात यदि तुमने पाप किया और जो कुछ कहा गया है उसके विरुद्ध गए तो तुम प्रभु की आत्मा से अलग हो जाओगे और वह तुम्हारे अंदर रह कर तुम्हें विवेक के उस मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन न कर सकेगा जिस पर चला कर तुम्हें आशीष द्वारा संपन्न और सुरक्षित रख सके ।

For even at this time, my whole frame doth tremble exceedingly while attempting to speak unto you; but the Lord God doth support me, and hath suffered me that I should speak unto you, and hath commanded me that I should declare unto you this day, that my son Mosiah is a king and a ruler over you.

And now, my brethren, I would that ye should do as ye have hitherto done. As ye have kept my commandments, and also the commandments of my father, and have prospered, and have been kept from falling into the hands of your enemies, even so if ye shall keep the commandments of my son, or the commandments of God which shall be delivered unto you by him, ye shall prosper in the land, and your enemies shall have no power over you.

But, O my people, beware lest there shall arise contentions among you, and ye list to obey the evil spirit, which was spoken of by my father Mosiah.

For behold, there is a wo pronounced upon him who listeth to obey that spirit; for if he listeth to obey him, and remaineth and dieth in his sins, the same drinketh damnation to his own soul; for he receiveth for his wages an everlasting punishment, having transgressed the law of God contrary to his own knowledge.

I say unto you, that there are not any among you, except it be your little children that have not been taught concerning these things, but what knoweth that ye are eternally indebted to your heavenly Father, to render to him all that you have and are; and also have been taught concerning the records which contain the prophecies which have been spoken by the holy prophets, even down to the time our father, Lehi, left Jerusalem;

And also, all that has been spoken by our fathers until now. And behold, also, they spake that which was commanded them of the Lord; therefore, they are just and true.

And now, I say unto you, my brethren, that after ye have known and have been taught all these things, if ye should transgress and go contrary to that which has been spoken, that ye do withdraw yourselves from the Spirit of the Lord, that it may have no place in you to guide you in wisdom's paths that ye may be blessed, prospered, and preserved—

- 37 मैं तुम से कहता हूँ, कि जो मनुष्य ऐसा करता है वह खुले रूप में परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करता है; इसलिए वह बुरी आत्मा की आज्ञा मानने वालों में अपना नाम लिखता है और सभी धार्मिकता का शत्रु बन जाता है; इसलिए उसके अंदर परमेश्वर के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता, क्योंकि वह अपवित्र मंदिरों के अंदर निवास नहीं करता है ।
- 38 इसलिए यदि वह मनुष्य पश्चाताप नहीं करता है, और परमेश्वर का शत्रु ही रह कर मरता है तब दिव्य न्याय की मांग उसकी अमर आत्मा को अपने दोषों से अगवत कराती है जिससे कि वह प्रभु की उपस्थिति से डरता है और वह उसके हृदय को अपराध, पीड़ा, कष्ट से ऐसे भर देती है जैसे न बुझने वाली आग हो जिसकी लपटें सदैव उठती ही रहती हैं ।
- 39 और अब मैं तुमसे कहता हूँ कि उस पर दया का कोई अधिकार नहीं; इसलिए उसकी अंतिम स्थिति है कभी भी समाप्त न होने वाला संताप ।
- 40 हे, तुम सभी वृद्ध मनुष्यों, और तुम युवकों, और तुम छोटे बच्चों जो मेरी बातों को समझ सकते हो, क्योंकि मैंने स्पष्ट बातें तुमसे इसलिए कही है कि तुम समझ सको, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम उन लोगों की भयानक परिस्थिति के प्रति जागरूक रहो जो पाप में पतित हो चुके हैं ।
- 41 और इसके अलावा, मैं इस बात का इच्छुक हूँ कि तुम उन आशीष प्राप्त और आनंदित लोगों की स्थिति को ध्यान में रखो जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं । क्योंकि देखो, उनको सभी बातों में आशीष प्राप्त है चाहे वह शारीरिक हो या आत्मिक; और यदि वे अंत तक सच्चे रहे, तब उनको स्वर्ग में लिया जाएगा, ताकि वे अनंत सुख की स्थिति में परमेश्वर के साथ रहेंगे । ओह याद रखो, याद रखो कि ये बातें सत्य हैं; क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने इसे कहा है ।

I say unto you, that the man that doeth this, the same cometh out in open rebellion against God; therefore he listeth to obey the evil spirit, and becometh an enemy to all righteousness; therefore, the Lord has no place in him, for he dwelleth not in unholy temples.

Therefore if that man repenteth not, and remaineth and dieth an enemy to God, the demands of divine justice do awaken his immortal soul to a lively sense of his own guilt, which doth cause him to shrink from the presence of the Lord, and doth fill his breast with guilt, and pain, and anguish, which is like an unquenchable fire, whose flame ascendeth up forever and ever.

And now I say unto you, that mercy hath no claim on that man; therefore his final doom is to endure a never-ending torment.

O, all ye old men, and also ye young men, and you little children who can understand my words, for I have spoken plainly unto you that ye might understand, I pray that ye should awake to a remembrance of the awful situation of those that have fallen into transgression.

And moreover, I would desire that ye should consider on the blessed and happy state of those that keep the commandments of God. For behold, they are blessed in all things, both temporal and spiritual; and if they hold out faithful to the end they are received into heaven, that thereby they may dwell with God in a state of never-ending happiness. O remember, remember that these things are true; for the Lord God hath spoken it.



### मुसायाह 3

- 1 और फिर से मेरे भाइयों, मैं तुम्हारा ध्यान अपनी ओर चाहता हूँ, क्योंकि मेरे पास तुम्हें बोलने के लिए और कुछ है; क्योंकि देखो, मैं तुमसे आने वाली घटनाओं के संबंध में कहना चाहता हूँ ।
- 2 और जिन बातों की जानकारी मुझे तुम्हें देनी है उन बातों को परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने मुझे बताया है । और उसने मुझसे कहा: जागो; और मैं जागा और देखो मेरे सामने वह खड़ा था ।
- 3 और उसने मुझ से कहा: जागो, और उन बातों को सुनो जिन्हें मैं तुम्हें बताऊंगा; क्योंकि देखो, मैं तुम्हें महान आनंद की बातों को बताने के लिए आया हूँ ।
- 4 क्योंकि प्रभु ने तुम्हारी प्रार्थनाओं को सुना है, और तुम्हारी धार्मिकता पर निर्णय दिया है, और उसने मुझे तुम्हारे पास भेज कर यह घोषणा करने को कहा है कि तुम आनंद मनाओ; और कि तुम अपने लोगों में भी घोषणा कर सकते हो, कि वे भी आनंद से भर जाएं ।
- 5 क्योंकि देखो, वह समय निकट है, और अधिक दूर नहीं है, कि शक्ति के साथ, सर्वशक्तिमान प्रभु जो राज करता है, जो अनंतकाल से अनंतकाल तक राज करता था, वह स्वर्ग से उतर कर मानव संतान के बीच, और मिट्टी के शरीर में रहेगा, और मनुष्यों के बीच, बड़े बड़े चमत्कार के काम करेगा, जैसा रोगियों को स्वस्थ करना, मृतकों को जीवित करना, लंगड़ों को चलाना, अंधों को दृष्टि देना, और बहरों को सुनने की शक्ति देना और सब प्रकार के रोगों को ठीक करना ।
- 6 और वह मानव संतान के हृदयों में रहने वाले शैतान या बुरी आत्माओं को निकाल फेंकेगा ।
- 7 और देखो, वह मृत्यु के अतिरिक्त इतना अधिक प्रलोभन, शारीरिक पीड़ा, उपवास, प्यास, थकान झेलेगा कि जितना कि मनुष्य सहन नहीं कर सकता; क्योंकि देखो, अपने लोगों की दुष्टता और घृणित कार्यों के कारण उसके शरीर के हर एक रोम से लहू बहेगा ।
- 8 और वह यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, स्वर्ग और पृथ्वी का पिता, आरंभ से सभी वस्तुओं का सृष्टिकर्ता कहलाएगा; और उसकी मां मरियम कहलाएगी ।
- 9 और देखो, वह अपने स्वयं के लोगों के पास आया, ताकि उस पर विश्वास करने से मानव संतान को उद्धार मिल सके; और इतना सब होने पर भी वे उसे एक मनुष्य मानेंगे, और कहा कहेंगे कि उसमें शैतान है, और वे उसको यातनाएं देंगे, और क्रूस पर चढ़ा देंगे ।

### Mosiah 3

And again my brethren, I would call your attention, for I have somewhat more to speak unto you; for behold, I have things to tell you concerning that which is to come.

And the things which I shall tell you are made known unto me by an angel from God. And he said unto me: Awake; and I awoke, and behold he stood before me.

And he said unto me: Awake, and hear the words which I shall tell thee; for behold, I am come to declare unto you the glad tidings of great joy.

For the Lord hath heard thy prayers, and hath judged of thy righteousness, and hath sent me to declare unto thee that thou mayest rejoice; and that thou mayest declare unto thy people, that they may also be filled with joy.

For behold, the time cometh, and is not far distant, that with power, the Lord Omnipotent who reigneth, who was, and is from all eternity to all eternity, shall come down from heaven among the children of men, and shall dwell in a tabernacle of clay, and shall go forth amongst men, working mighty miracles, such as healing the sick, raising the dead, causing the lame to walk, the blind to receive their sight, and the deaf to hear, and curing all manner of diseases.

And he shall cast out devils, or the evil spirits which dwell in the hearts of the children of men.

And lo, he shall suffer temptations, and pain of body, hunger, thirst, and fatigue, even more than man can suffer, except it be unto death; for behold, blood cometh from every pore, so great shall be his anguish for the wickedness and the abominations of his people.

And he shall be called Jesus Christ, the Son of God, the Father of heaven and earth, the Creator of all things from the beginning; and his mother shall be called Mary.

And lo, he cometh unto his own, that salvation might come unto the children of men even through faith on his name; and even after all this they shall consider him a man, and say that he hath a devil, and shall scourge him, and shall crucify him.

- 10 और वह तीसरे दिन मरे हुए में से जी उठेगा; और देखो, वह संसार का न्याय करने के लिए खड़ा होगा; और देखो, यह सब इसलिए किया जाएगा कि ताकि मानव संतान पर धार्मिक न्याय आ सके ।
- 11 क्योंकि देखो, और उसका लहू उन सब के पापों का भी प्रायश्चित्त करता है जो आदम के उल्लंघन के द्वारा पतित हुए, जो अपने संबंध में परमेश्वर की इच्छा जाने बिना मर गए, या जिन्होंने अनजाने में पाप किया है ।
- 12 लेकिन हाय, हाय उस पर जो यह जानता है कि वह परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रहा है ! क्योंकि उद्धार पश्चाताप करने और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किये बिना किसी को नहीं मिलता ।
- 13 और प्रभु परमेश्वर ने सारी मानव संतान के बीच अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं को भेज कर इन बातों की घोषणा हर एक जाति, राष्ट्र और भाषा में की है, कि जो कोई यह विश्वास करेगा कि मसीह आएगा, उसी के पापों को क्षमा किया जाएगा, और वह महान आनंद से हर्षित होगा, मानो वह उन के बीच आ ही गया हो ।
- 14 फिर भी प्रभु परमेश्वर ने देखा कि उसके लोग जिद्दी हैं, और उसने उनके लिए एक व्यवस्था नियुक्त की, यहां तक की मूसा की व्यवस्था ।
- 15 और अनेक चिन्ह, और आश्चर्य, और प्रकार, और छाया उसने अपने आगमन के संबंध में उन्हें दिखाए; और पवित्र भविष्यवक्ताओं ने भी उनके आगमन के संबंध में बातें उनसे बोली थी; फिर भी उन्होंने अपने हृदयों को कठोर कर लिया; और वह यह नहीं समझे कि मूसा की व्यवस्था बिना उसके लहू के प्रायश्चित्त के बिना कुछ उपलब्ध नहीं हो सकता है ।
- 16 और यदि छोटे बच्चों के लिए पाप करना संभव होता तो वे भी बचाए नहीं जा सकते थे; लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि वे आशीषित हैं; क्योंकि देखो, जैसे आदम में, या प्राकृतिक स्वभाव द्वारा, वे पतित होते हैं तो उनके पापों का प्रायश्चित्त मसीह का लहू करता है ।
- 17 और फिर भी, मैं तुमसे कहता हूं, कि कोई दूसरा नाम, या रास्ता या माध्यम नहीं है जिसके द्वारा मानव संतान का उद्धार हो सके, सिवाय सर्वशक्तिमान प्रभु मसीह के नाम को छोड़ कर ।

And he shall rise the third day from the dead; and behold, he standeth to judge the world; and behold, all these things are done that a righteous judgment might come upon the children of men.

For behold, and also his blood atoneth for the sins of those who have fallen by the transgression of Adam, who have died not knowing the will of God concerning them, or who have ignorantly sinned.

But wo, wo unto him who knoweth that he rebelleth against God! For salvation cometh to none such except it be through repentance and faith on the Lord Jesus Christ.

And the Lord God hath sent his holy prophets among all the children of men, to declare these things to every kindred, nation, and tongue, that thereby whosoever should believe that Christ should come, the same might receive remission of their sins, and rejoice with exceedingly great joy, even as though he had already come among them.

Yet the Lord God saw that his people were a stiff-necked people, and he appointed unto them a law, even the law of Moses.

And many signs, and wonders, and types, and shadows showed he unto them, concerning his coming; and also holy prophets spake unto them concerning his coming; and yet they hardened their hearts, and understood not that the law of Moses availeth nothing except it were through the atonement of his blood.

And even if it were possible that little children could sin they could not be saved; but I say unto you they are blessed; for behold, as in Adam, or by nature, they fall, even so the blood of Christ atoneth for their sins.

And moreover, I say unto you, that there shall be no other name given nor any other way nor means whereby salvation can come unto the children of men, only in and through the name of Christ, the Lord Omnipotent.

- 18 क्योंकि देखो, वह न्याय करता है, और उसका न्याय उचित होता है; और वे शिशु नष्ट नहीं होते जो अपनी शैशव अवस्था में ही मर जाते हैं; लेकिन मनुष्य अपनी स्वयं की आत्माओं को नरकदंड पिलाते हैं सिवाय इसके कि वे अपने आपको विनम्र करें और छोटे बच्चों के समान बन जाएं, और विश्वास करें कि उद्धार सर्वशक्तिमान प्रभु मसीह के प्रायश्चित लहू से मिला था, और मिलता है, और मिलेगा।
- 19 क्योंकि प्राकृतिक मनुष्य परमेश्वर का शत्रु है, और आदम के पतन के समय से ही शत्रु था, और हमेशा हमेशा के लिए रहेगा, जब तक वह पवित्र आत्मा के आकर्षणों से आकर्षित नहीं होता, और अपनी स्वाभाविक प्रकृति का त्याग कर प्रभु मसीह के प्रायश्चित द्वारा संत बन कर, और बच्चों की तरह आज्ञाकारी, विनम्र, दीन, सहनशील, प्रेम से परिपूर्ण हो कर उन सारी बातों को जिन्हें प्रभु उनके लाभ के लिए लागू करता है, उसी तरह स्वीकार नहीं करता जैसे एक बच्चा अपने पिता की बातों को स्वीकार करता है।
- 20 और इसके अलावा, मैं तुमसे यह भी कहता हूँ, कि वह समय आएगा जब कि उद्धारकर्ता का ज्ञान हर एक राष्ट्र, जाति, भाषा, और लोगों में आएगा।
- 21 और देखो, जब वह समय आएगा, कोई भी परमेश्वर के सामने निर्दोष नहीं ठहराया जाएगा, सिवाय छोटे बच्चों के, और पश्चाताप करने और सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर के नाम पर विश्वास करने वालों को छोड़कर।
- 22 और यहां तक कि इस समय में भी, जब तुम्हें अपने लोगों को वह सीखाना चाहिए जिसे प्रभु तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें आज्ञा दी है, जबकि वे परमेश्वर की दृष्टि में केवल उन शब्दों के अनुसार निर्दोष नहीं ठहरते, जो मैंने तुम से कहे थे।
- 23 और अब मैंने उन बातों को कह दिया जिन्हें कहने की आज्ञा प्रभु परमेश्वर ने मुझे दी थी।
- 24 और प्रभु इस प्रकार कहता है: वे न्याय के दिन इन लोगों के विरुद्ध स्पष्ट गवाह के रूप में खड़े होंगे; इसलिए उनका न्याय किया जाएगा, हर एक मनुष्य का उसके कामों के अनुसार, चाहे वे भले हों, या वे बुरे।
- 25 और यदि वे बुरे ठहरे तब उन्हें अपने अपराधों और घृणित कार्यों को स्वयं देखने का भयकर दंड दिया जाएगा, जिससे वे प्रभु की उपस्थिति में संकोच करेंगे और दुर्गति और अंतहीन यातना सहेंगे, जहां तक उनके लिए वापस लौटना संभव नहीं; इसलिए उन्होंने अपनी आत्माओं को नरकदंड पिलाया है।

For behold he judgeth, and his judgment is just; and the infant perisheth not that dieth in his infancy; but men drink damnation to their own souls except they humble themselves and become as little children, and believe that salvation was, and is, and is to come, in and through the atoning blood of Christ, the Lord Omnipotent.

For the natural man is an enemy to God, and has been from the fall of Adam, and will be, forever and ever, unless he yields to the enticings of the Holy Spirit, and putteth off the natural man and becometh a saint through the atonement of Christ the Lord, and becometh as a child, submissive, meek, humble, patient, full of love, willing to submit to all things which the Lord seeth fit to inflict upon him, even as a child doth submit to his father.

And moreover, I say unto you, that the time shall come when the knowledge of a Savior shall spread throughout every nation, kindred, tongue, and people.

And behold, when that time cometh, none shall be found blameless before God, except it be little children, only through repentance and faith on the name of the Lord God Omnipotent.

And even at this time, when thou shalt have taught thy people the things which the Lord thy God hath commanded thee, even then are they found no more blameless in the sight of God, only according to the words which I have spoken unto thee.

And now I have spoken the words which the Lord God hath commanded me.

And thus saith the Lord: They shall stand as a bright testimony against this people, at the judgment day; whereof they shall be judged, every man according to his works, whether they be good, or whether they be evil.

And if they be evil they are consigned to an awful view of their own guilt and abominations, which doth cause them to shrink from the presence of the Lord into a state of misery and endless torment, from whence they can no more return; therefore they have drunk damnation to their own souls.

26      इसलिए, उन्होंने परमेश्वर के क्रोध के प्याले से पिया है, जिससे कि न्याय से वे उसी प्रकार नहीं बच सकते जिस प्रकार आदम वर्जित फल खाकर पतन के न्याय से नहीं बच सका; इसलिए, वे कभी भी दया के पात्र नहीं बन सकते ।

27      और उनकी यातना ठीक उसी प्रकार होगी जैसे कि कभी न बुझने वाली आग और गंधक की झील, जिसका धुआं हमेशा हमेशा के लिए उठता रहता है । इस प्रकार प्रभु ने मुझे आज्ञा दी है । आमीन ।

Therefore, they have drunk out of the cup of the wrath of God, which justice could no more deny unto them than it could deny that Adam should fall because of his partaking of the forbidden fruit; therefore, mercy could have claim on them no more forever.

And their torment is as a lake of fire and brimstone, whose flames are unquenchable, and whose smoke ascendeth up forever and ever. Thus hath the Lord commanded me. Amen.

## मुसायाह 4

- 1 और अब, ऐसा हुआ कि जब राजा बिन्यामीन प्रभु के स्वर्गदूत द्वारा बताए हुए शब्दों को कह चुका तब उसने भीड़ पर अपनी दृष्टि डाली, और देखो, वे सब धरती पर गिर पड़े, क्योंकि उनके ऊपर प्रभु का भय आ गया था ।
- 2 और उन्होंने अपने पार्थिव शरीर को धरती की धूल से भी अधिक बदतर अवस्था में देखा, और वे सब एक स्वर में चिल्लाए: ओह हम पर दया करो, और मसीह के प्रायश्चित के लहू को हम पर लगाओ जिससे हमारे पापों को क्षमा किया जाए, और हमारे हृदयों को शुद्ध किया जाए; क्योंकि हम यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, जो परमेश्वर का पुत्र है और जिसने स्वर्ग और पृथ्वी, और सब वस्तुओं की रचना की है, और जो मानव संतान के बीच में आएगा ।
- 3 और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने ये शब्द कहे तब प्रभु की आत्मा उनके ऊपर आई, और राजा बिन्यामीन के कहे अनुसार, भविष्य में आने वाले यीशु मसीह पर अपने भारी विश्वास के कारण वे अपने पापों से मुक्त होकर और अंतरात्मा में शांति पाकर वे महान आनंद से भर गए ।
- 4 और राजा बिन्यामीन ने पुनः बोलने के लिए मुंह खोला और कहा: मेरे मित्रों और मेरे भाइयों, मेरे बंधुओं और मेरे लोगों, मैं फिर से तुम्हारा ध्यान अपनी ओर चाहता हूँ कि जिससे तुम मेरी उन शेष बातों को सुनो और समझो जिन्हें मैं कहने जा रहा हूँ ।
- 5 क्योंकि देखो, परमेश्वर की महानता से यदि तुम्हें तुम्हारी हीनता, तुच्छता और पतन का ज्ञान हुआ है—
- 6 मैं तुम से कहता हूँ, यदि तुम्हें परमेश्वर की उदारता, और उसकी अद्वितीय शक्ति, और उसके विवेक, और उसकी सहनशीलता, मानव संतान के लिए दीर्घकाल के कष्टों का ज्ञान हुआ है; और यह भी ज्ञान हुआ है कि संसार की नींव के समय से प्रायश्चित की जो व्यवस्था है उससे तुम्हें उद्धार मिलता है और इस व्यवस्था से तुमको प्रभु पर विश्वास करना चाहिए, और लगन के साथ उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए अपने जीवन के अंत तक, पार्थिव शरीर के जीवन तक, विश्वास करते रहना चाहिए—

## Mosiah 4

And now, it came to pass that when king Benjamin had made an end of speaking the words which had been delivered unto him by the angel of the Lord, that he cast his eyes round about on the multitude, and behold they had fallen to the earth, for the fear of the Lord had come upon them.

And they had viewed themselves in their own carnal state, even less than the dust of the earth. And they all cried aloud with one voice, saying: O have mercy, and apply the atoning blood of Christ that we may receive forgiveness of our sins, and our hearts may be purified; for we believe in Jesus Christ, the Son of God, who created heaven and earth, and all things; who shall come down among the children of men.

And it came to pass that after they had spoken these words the Spirit of the Lord came upon them, and they were filled with joy, having received a remission of their sins, and having peace of conscience, because of the exceeding faith which they had in Jesus Christ who should come, according to the words which king Benjamin had spoken unto them.

And king Benjamin again opened his mouth and began to speak unto them, saying: My friends and my brethren, my kindred and my people, I would again call your attention, that ye may hear and understand the remainder of my words which I shall speak unto you.

For behold, if the knowledge of the goodness of God at this time has awakened you to a sense of your nothingness, and your worthless and fallen state—

I say unto you, if ye have come to a knowledge of the goodness of God, and his matchless power, and his wisdom, and his patience, and his long-suffering towards the children of men; and also, the atonement which has been prepared from the foundation of the world, that thereby salvation might come to him that should put his trust in the Lord, and should be diligent in keeping his commandments, and continue in the faith even unto the end of his life, I mean the life of the mortal body—

- 7 मैं कहता हूँ, कि यही वह मनुष्य है जो प्रायश्चित से उद्धार पाता है, जिसकी व्यवस्था संसार की नींव से सारी मानवजाति के लिए तैयार की गई थी; जो व्यवस्था आदम के पतन के समय से थी और जो लोग वर्तमान समय में हैं और जो संसार के अंत तक रहेंगे उन सभी के लिए है ।
- 8 और यही वह माध्यम है जिसके द्वारा उद्धार आता है । और जिस उद्धार की चर्चा यहां की गई है उस उद्धार को छोड़कर और कोई उद्धार है ही नहीं और जिन स्थितियों को मैंने तुम्हें बताया है उनको छोड़कर और कोई स्थिति है ही नहीं जिसके द्वारा मनुष्य बचाया जा सके ।
- 9 परमेश्वर पर विश्वास करो; विश्वास करो कि वह है, और यह भी विश्वास करो कि स्वर्ग और पृथ्वी दोनों जगह सब वस्तुओं को उसने रचा है; विश्वास करो कि स्वर्ग और पृथ्वी पर उसमें संपूर्ण विवेक है और वह सर्वशक्तिमान है; विश्वास करो कि जो कुछ प्रभु जानता है, वह मनुष्य नहीं जान सकता ।
- 10 और फिर से, विश्वास करो कि तुम्हें अपने पापों पर पश्चाताप करना है और उनका त्याग कर दो; और परमेश्वर के सामने अपने आप को विनम्र कर लो; और अपने सच्चे हृदय से क्षमा याचना करो, और अब, यदि तुम इन बातों पर विश्वास करते हो तब तुम इनके अनुसार आचरण करो ।
- 11 और मैं तुम से फिर कहता हूँ जैसा मैंने पहले कहा था, कि जब तुमने, प्रभु के यश की जानकारी प्राप्त कर ली है, या तुमने उसके उपकारों और प्रेम को अनुभव किया, और अपने पापों की क्षमा प्राप्त की जिससे तुम्हारी आत्मा को महान आनंद प्राप्त होता है, तब मैं चाहता हूँ कि तुम महत्वहीन प्राणियों, हमेशा परमेश्वर की महानता, और अपनी तुच्छता, और अपने लिए उसकी दयालुता और अति-सहनशीलता याद रखो और अपने आपको अति दीन बना कर प्रति-दिन प्रभु का नाम पुकारो और भविष्य की उन बातों पर विश्वास में दृढ़ रहो जो स्वर्गदूत के मुख से कही गई थी ।
- 12 और देखो, मैं तुम से कहता हूँ, कि यदि तुमने ऐसा किया, तब तुम सदैव आनंद मनाओगे, और परमेश्वर के प्रेम से भरे रहोगे और सदैव अपने पापों की क्षमा प्राप्त करोगे; और जिसने तुम्हें रचा है, उसके यश के ज्ञान में, या उस ज्ञान में जोकि सत्य और न्याययुक्त, तुम उन्नति करोगे ।

I say, that this is the man who receiveth salvation, through the atonement which was prepared from the foundation of the world for all mankind, which ever were since the fall of Adam, or who are, or who ever shall be, even unto the end of the world.

And this is the means whereby salvation cometh. And there is none other salvation save this which hath been spoken of; neither are there any conditions whereby man can be saved except the conditions which I have told you.

Believe in God; believe that he is, and that he created all things, both in heaven and in earth; believe that he has all wisdom, and all power, both in heaven and in earth; believe that man doth not comprehend all the things which the Lord can comprehend.

And again, believe that ye must repent of your sins and forsake them, and humble yourselves before God; and ask in sincerity of heart that he would forgive you; and now, if you believe all these things see that ye do them.

And again I say unto you as I have said before, that as ye have come to the knowledge of the glory of God, or if ye have known of his goodness and have tasted of his love, and have received a remission of your sins, which causeth such exceedingly great joy in your souls, even so I would that ye should remember, and always retain in remembrance, the greatness of God, and your own nothingness, and his goodness and long-suffering towards you, unworthy creatures, and humble yourselves even in the depths of humility, calling on the name of the Lord daily, and standing steadfastly in the faith of that which is to come, which was spoken by the mouth of the angel.

And behold, I say unto you that if ye do this ye shall always rejoice, and be filled with the love of God, and always retain a remission of your sins; and ye shall grow in the knowledge of the glory of him that created you, or in the knowledge of that which is just and true.

- 13 और तुम एक दूसरे को हानि पहुंचाने की नहीं सोचोगे, लेकिन शांति से रहने, और एक दूसरे के अधिकारों का सम्मान करने का विचार करोगे
- 14 और तुम अपने बच्चों को भूखे और नंगे नहीं रहने दोगे; और न ही तुम उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करने दोगे, और न ही एक दूसरे के साथ लड़ाई और झगड़ा करने दोगे, और न शैतान की सेवा करने दोगे, जो कि पापों का स्वामी है, या जो कि बुरी आत्मा है जिसके बारे में हमारे पूर्वजों द्वारा बोला गया है, वह सभी धार्मिकता का शत्रु है।
- 15 लेकिन तुम उन्हें सत्य और संयम के मार्ग पर चलने की शिक्षा दोगे; तुम उन्हें एक दूसरे से प्रेम करने और सेवा करने की शिक्षा दोगे।
- 16 और तुम भी, स्वयं उनकी सहायता करोगे जिनको तुम्हारी सहायता की आवश्यकता होगी; और जिनको किसी वस्तु की आवश्यकता होगी, तुम उनको अपनी संपत्ति से सहायता करोगे; और किसी भिखारी को मरने के लिए निराश नहीं लौटाओगे।
- 17 शायद तुम कहो: उस मनुष्य ने अपने ऊपर विपत्ति स्वयं लाई है; इसलिए मैं सहायता का हाथ उसकी ओर नहीं बढ़ाऊंगा और मैं उसको अपना भोजन, न ही अन्य कोई वस्तु उसे दूंगा जिससे उसका कष्ट दूर हो क्योंकि उसका दंड न्यायपूर्ण है।
- 18 लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, हे मनुष्य, जो कोई ऐसा करता है उसके लिए पश्चाताप का कारण बन जाता है; और यदि इसके लिए उसने पश्चाताप नहीं किया तब वह सदा के लिए नष्ट हो जाएगा, और उसको परमेश्वर के राज्य में कोई रूचि नहीं होगी।
- 19 क्योंकि देखो, क्या हम सब भिखारी नहीं हैं? क्या हम भोजन, वस्त्र, सोना चांदी आदि अन्य मूल्यवान संपत्तियां जो हमारे पास है उन सबके लिए हम उसी व्यक्ति, जो परमेश्वर है, पर आश्रित नहीं हैं?
- 20 और देखो, इस समय में भी, तुम उसके नाम को पुकार कर, अपने पापों को क्षमा करने की भीख मांग रहे थे। और क्या उसने तुम्हारा भीख मांगना व्यर्थ नहीं किया? नहीं; उसने तो अपनी आत्मा को तुम्हारे ऊपर उंडेला दिया और हृदयों को आनंद से परिपूर्ण कर दिया और उसने तुम्हें इतना अधिक आनंद दिया कि तुम और अधिक कुछ कह न सके और तुम्हारे मुंह बंद हो गए।

And ye will not have a mind to injure one another, but to live peaceably, and to render to every man according to that which is his due.

And ye will not suffer your children that they go hungry, or naked; neither will ye suffer that they transgress the laws of God, and fight and quarrel one with another, and serve the devil, who is the master of sin, or who is the evil spirit which hath been spoken of by our fathers, he being an enemy to all righteousness.

But ye will teach them to walk in the ways of truth and soberness; ye will teach them to love one another, and to serve one another.

And also, ye yourselves will succor those that stand in need of your succor; ye will administer of your substance unto him that standeth in need; and ye will not suffer that the beggar putteth up his petition to you in vain, and turn him out to perish.

Perhaps thou shalt say: The man has brought upon himself his misery; therefore I will stay my hand, and will not give unto him of my food, nor impart unto him of my substance that he may not suffer, for his punishments are just—

But I say unto you, O man, whosoever doeth this the same hath great cause to repent; and except he repenteth of that which he hath done he perisheth forever, and hath no interest in the kingdom of God.

For behold, are we not all beggars? Do we not all depend upon the same Being, even God, for all the substance which we have, for both food and raiment, and for gold, and for silver, and for all the riches which we have of every kind?

And behold, even at this time, ye have been calling on his name, and begging for a remission of your sins. And has he suffered that ye have begged in vain? Nay; he has poured out his Spirit upon you, and has caused that your hearts should be filled with joy, and has caused that your mouths should be stopped that ye could not find utterance, so exceedingly great was your joy.

- 21 और अब, यदि परमेश्वर, जिसने तुम्हारी रचना की है, जिस पर तुम अपने जीवन के लिए निर्भर रहते हो और जिसने तुम्हें उन वस्तुओं को दिया जो तुम्हारे पास हैं, और तुम्हारी है, जो तुम्हें वह सब कुछ देता है, जो उचित है, जिसे तुम विश्वास के साथ उससे मांगते हो कि वह मिलेगा: ओह फिर, तुम्हें भी वह वस्तु जो तुम्हारे पास है, दूसरों को देनी चाहिए ।
- 22 और यदि तुम उस मनुष्य को दोषी ठहराते हो जो अपने को नष्ट होने से बचाने के लिए तुम्हारी वस्तु तुमसे मांगता है, तब तुम स्वयं अपनी वस्तु को न देने के लिए कितने बड़े दोषी ठहरोगे, क्योंकि वह वस्तु परमेश्वर की है, जिसका अधिकार तुम्हारे जीवन पर भी है; और फिर भी तुम कोई याचना नहीं करते, न ही उन कामों के लिए पश्चात्ताप करते हो जो तुमने किये हैं ।
- 23 मैं तुमसे कहता हूँ, हाय उस मनुष्य पर, क्योंकि उसकी वस्तु उसी के साथ नष्ट हो जाएगी; मैं इन बातों को उनसे कह रहा हूँ जो इस संसार की वस्तुओं में धनी है ।
- 24 और फिर, मैं उस गरीब से कहता हूँ, तुम्हारे पास अधिक नहीं है लेकिन फिर भी पर्याप्त है, कि तुम्हारी स्थिति वैसी ही दिन पर दिन बनी रहती है; मेरा अर्थ तुम सबसे है जो भिखारी को इसलिए नहीं दे सकते, क्योंकि उनके पास देने के लिए है ही नहीं; मैं चाहता हूँ कि तुम अपने मन में कहो: मैं इसलिए नहीं दे रहा हूँ क्योंकि मेरे पास है ही नहीं, लेकिन यदि मेरे पास होता, तो मैं अवश्य देता ।
- 25 और अब, यदि तुमने अपने हृदयों में ऐसा कहते हो तो तुम निर्दोष ठहरोगे, नहीं तो दोषी ठहराए जाओगे, क्योंकि जो तुम्हारा नहीं है, तुमने उसका लोभ किया है ।
- 26 और अब, उन बातों के लिए जो मैंने तुम से कहीं है—यानि, दिन प्रतिदिन अपने पापों को क्षमा करवाने की व्याख्या को स्थिर रखने के लिए, ताकि तुम परमेश्वर के सक्षम निर्दोष जा सको—मैं चाहता हूँ कि तुम अपनी परिस्थिति के अनुसार गरीबों को अपनी वस्तुओं को दो, जैसे भूखों को भोजन देना, नंगों को वस्त्र देना, रोगियों को देखने जाना और उनकी आत्मिक और शारीरिक दिलासा के लिए उनकी आश्यकताओं के अनुसार सहायता पहुंचाना ।
- 27 और देखो यह सब बातें विवेक और व्यवस्था के अनुसार की जानी चाहिए; क्योंकि किसी व्यक्ति को अपनी शक्ति से अधिक तेज गति से दौड़ने की आवश्यकता नहीं है । और फिर, यह भी आवश्यक है कि मनुष्य परिश्रम करे, ताकि वह अपने परिश्रम का फल पाए; इसलिए, सब कार्य व्यवस्थित तरीके से होने चाहिए ।

And now, if God, who has created you, on whom you are dependent for your lives and for all that ye have and are, doth grant unto you whatsoever ye ask that is right, in faith, believing that ye shall receive, O then, how ye ought to impart of the substance that ye have one to another.

And if ye judge the man who putteth up his petition to you for your substance that he perish not, and condemn him, how much more just will be your condemnation for withholding your substance, which doth not belong to you but to God, to whom also your life belongeth; and yet ye put up no petition, nor repent of the thing which thou hast done.

I say unto you, wo be unto that man, for his substance shall perish with him; and now, I say these things unto those who are rich as pertaining to the things of this world.

And again, I say unto the poor, ye who have not and yet have sufficient, that ye remain from day to day; I mean all you who deny the beggar, because ye have not; I would that ye say in your hearts that: I give not because I have not, but if I had I would give.

And now, if ye say this in your hearts ye remain guiltless, otherwise ye are condemned; and your condemnation is just for ye covet that which ye have not received.

And now, for the sake of these things which I have spoken unto you—that is, for the sake of retaining a remission of your sins from day to day, that ye may walk guiltless before God—I would that ye should impart of your substance to the poor, every man according to that which he hath, such as feeding the hungry, clothing the naked, visiting the sick and administering to their relief, both spiritually and temporally, according to their wants.

And see that all these things are done in wisdom and order; for it is not requisite that a man should run faster than he has strength. And again, it is expedient that he should be diligent, that thereby he might win the prize; therefore, all things must be done in order.



28 और मैं चाहता हूँ कि तुम यह स्मरण रखो कि तुम में से जो कोई भी अपने पड़ोसी से कोई वस्तु मांग कर लाता है, मांगते समय लौटाने का जो वादा करता है उसके अनुसार उसे उस वस्तु को लौटा कर वचन पूरा करना चाहिए; अन्यथा तुम पाप करते हो; और हो सकता है तुम अपने पड़ोसी से भी पाप करवाते हो ।

29 और अंत में, मैं उन सब बातों को नहीं बता सकता जिनके द्वारा तुम पाप कर सकते हो; क्योंकि उनके इतने अधिक तरीके और प्रकार हैं कि मैं उनकी गिनती भी नहीं सकता ।

30 लेकिन मैं तुमको इतना बता सकता हूँ कि यदि तुम सावधान नहीं रहोगे और अपने विचारों, वाणी, कर्म और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में असावधान हो जाओगे और जो बातें तुमने हमारे प्रभु के आने के विषय में सुनी हैं, उन पर अंत तक विश्वास नहीं करोगे, तब तुम अवश्य ही नष्ट हो जाओगे । और अब, हे मनुष्य इनको स्मरण रखो, और नष्ट मत हो ।

And I would that ye should remember, that whosoever among you borroweth of his neighbor should return the thing that he borroweth, according as he doth agree, or else thou shalt commit sin; and perhaps thou shalt cause thy neighbor to commit sin also.

And finally, I cannot tell you all the things whereby ye may commit sin; for there are divers ways and means, even so many that I cannot number them.

But this much I can tell you, that if ye do not watch yourselves, and your thoughts, and your words, and your deeds, and observe the commandments of God, and continue in the faith of what ye have heard concerning the coming of our Lord, even unto the end of your lives, ye must perish. And now, O man, remember, and perish not.

## मुसायाह 5

- 1 और अब, ऐसा हुआ कि जब राजा बिन्यामीन अपने लोगों से इस प्रकार कह चुका तब उसने उनमें कुछ लोगों को भेज कर पता लगाया कि जो बातें उसने उनसे कही थी क्या उसके लोग उन पर विश्वास कर रहे हैं या नहीं ।
- 2 और वे सब एक स्वर से चिल्ला कर बोले: हां, हम उन सभी बातों पर विश्वास करते हैं जिन्हें आपने हमसे कहा; और हम जानते हैं कि वे सब उचित और सत्य है क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु की आत्मा ने हमारे भीतर यानि हमारे हृदय में एक महान परिवर्तन कर दिया है, कि हम शैतान के कार्यों को नहीं करेंगे, लेकिन निरंतर भले कार्य ही करेंगे ।
- 3 और हम, स्वयं, भी परमेश्वर की असीम भलाई, और उसकी आत्मा के दर्शन द्वारा भविष्य के दृश्यों को देख रहे हैं; और उपयुक्त होने पर, हम सभी विषयों पर भविष्यवाणी भी कर सकते हैं ।
- 4 और जिन बातों को हमारे राजा ने हमसे कहा उन बातों पर अपने विश्वास के कारण ही हम इस महान ज्ञान तक पहुंचे हैं, जिसके द्वारा हम इस प्रकार के अत्याधिक आनंद से विभोर हो रहे हैं ।
- 5 और हम अपने शेष जीवन भर, परमेश्वर की इच्छा पूरी करने और हर एक बात में जो कुछ वह आज्ञा देगा, उन सभी आज्ञाओं को पूरा करने के लिए, परमेश्वर के साथ अनुबंध करने को तैयार है, जिससे कि हम अपने ऊपर कभी भी समाप्त न होने वाली घोर पीड़ा न लें बैठें जैसा कि स्वर्गदूत ने कहा है, ताकि कहीं हमें परमेश्वर के क्रोध के प्याले में से न पीना पड़े ।
- 6 और अब, ये ही वे बातें थी जो राजा बिन्यामीन उनके लिए चाहता था; और इसलिए उसने उनसे कहा: तुमने वही बातें कही जो मैं सुनना चाहता था; और जो अनुबंध तुमने किया है वह न्यायोचित अनुबंध है ।
- 7 और अब, जो अनुबंध तुमने किया है उसके कारण तुम मसीह की संतान, मसीह के बेटे और बेटियां कहलाओगे, क्योंकि देखो, आज उसने तुम्हें आत्मिकरूप से प्रजात किया है; क्योंकि तुम कहते हो कि उसके नाम पर विश्वास करने से तुम्हारे हृदय बदल चुके हैं; इसलिए तुमने उससे जन्म लिया और उसके बेटे और बेटियां बन गए ।

## Mosiah 5

And now, it came to pass that when king Benjamin had thus spoken to his people, he sent among them, desiring to know of his people if they believed the words which he had spoken unto them.

And they all cried with one voice, saying: Yea, we believe all the words which thou hast spoken unto us; and also, we know of their surety and truth, because of the Spirit of the Lord Omnipotent, which has wrought a mighty change in us, or in our hearts, that we have no more disposition to do evil, but to do good continually.

And we, ourselves, also, through the infinite goodness of God, and the manifestations of his Spirit, have great views of that which is to come; and were it expedient, we could prophesy of all things.

And it is the faith which we have had on the things which our king has spoken unto us that has brought us to this great knowledge, whereby we do rejoice with such exceedingly great joy.

And we are willing to enter into a covenant with our God to do his will, and to be obedient to his commandments in all things that he shall command us, all the remainder of our days, that we may not bring upon ourselves a never-ending torment, as has been spoken by the angel, that we may not drink out of the cup of the wrath of God.

And now, these are the words which king Benjamin desired of them; and therefore he said unto them: Ye have spoken the words that I desired; and the covenant which ye have made is a righteous covenant.

And now, because of the covenant which ye have made ye shall be called the children of Christ, his sons, and his daughters; for behold, this day he hath spiritually begotten you; for ye say that your hearts are changed through faith on his name; therefore, ye are born of him and have become his sons and his daughters.

- 8 और इस नाम के अंतर्गत तुम स्वतंत्र किये गए हो, और इसके अतिरिक्त दूसरा कोई नाम नहीं जिसके द्वारा तुम स्वतंत्र हो सको। दूसरा और कोई नाम नहीं दिया गया है, जिसके द्वारा उद्धार प्राप्त हो सके; इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम सब मसीह के नाम को ग्रहण करो, जिन्होंने परमेश्वर के साथ अनुबंध किया है कि अपने जीवन के अंत तक उसके आज्ञाकारी बने रहोगे।
- 9 और ऐसा होगा कि जो कोई ऐसा करेगा वह अपने आपको परमेश्वर के दाहिने हाथ की ओर ले जाएगा, क्योंकि वह जान लेगा कि किस नाम से उसे पुकारा जाता है; क्योंकि वह मसीह के नाम द्वारा पुकारा जाएगा।
- 10 और अब ऐसा होगा, कि जो मसीह का नाम नहीं अपनाएगा उसे किसी अन्य नाम से पुकारा जाएगा; इसलिए, वह अपने आपको परमेश्वर के बाएँ हाथ की ओर पाएगा।
- 11 और मैं चाहता हूँ कि तुम यह भी स्मरण रखो कि यही वह नाम है जिसे तुम्हें देने को मैंने कहा था जो कि पाप के सिवाय किसी अन्य कारण से कभी नहीं मिटाया जाएगा; इसलिए, ध्यान रखो कि तुम पाप न कर बैठो, कि तुम्हारे हृदयों से यह नाम मिट जाए।
- 12 मैं तुम से कहता हूँ, मैं चाहता हूँ कि जो नाम तुम्हारे हृदय में लिखा जा चुका है, उसे सदैव बनाए रखने को स्मरण रखो, जिससे कि तुम अपने आपको परमेश्वर के बाएँ हाथ की ओर न पाओ, लेकिन तुम उस वाणी को और उस नाम को सुनो और जानो जिसके द्वारा वह तुमको पुकारेगा।
- 13 क्योंकि एक मनुष्य अपने स्वामी को कैसे जानेगा जिसकी सेवा उसने पहले न की हो, और जो उसके लिए अंजान हो, और उसके विचारों और हृदय की अभिलाषाओं से परे हो?
- 14 और फिर, क्या कोई मनुष्य अपने पड़ोसी के गधे को लेता है, और अपने यहां रख लेता है? मैं तुम से कहता हूँ कि नहीं, वह उसे अपने पशुओं के साथ चारा भी नहीं देगा और उसे खदेड़ कर बाहर कर देगा। मैं तुम से कहता हूँ, कि तुम्हारी भी यही दशा होगी, यदि तुम, उस नाम को नहीं जानोगे जिसके द्वारा तुम बुलाए गए हो।

And under this head ye are made free, and there is no other head whereby ye can be made free. There is no other name given whereby salvation cometh; therefore, I would that ye should take upon you the name of Christ, all you that have entered into the covenant with God that ye should be obedient unto the end of your lives.

And it shall come to pass that whosoever doeth this shall be found at the right hand of God, for he shall know the name by which he is called; for he shall be called by the name of Christ.

And now it shall come to pass, that whosoever shall not take upon him the name of Christ must be called by some other name; therefore, he findeth himself on the left hand of God.

And I would that ye should remember also, that this is the name that I said I should give unto you that never should be blotted out, except it be through transgression; therefore, take heed that ye do not transgress, that the name be not blotted out of your hearts.

I say unto you, I would that ye should remember to retain the name written always in your hearts, that ye are not found on the left hand of God, but that ye hear and know the voice by which ye shall be called, and also, the name by which he shall call you.

For how knoweth a man the master whom he has not served, and who is a stranger unto him, and is far from the thoughts and intents of his heart?

And again, doth a man take an ass which belongeth to his neighbor, and keep him? I say unto you, Nay; he will not even suffer that he shall feed among his flocks, but will drive him away, and cast him out. I say unto you, that even so shall it be among you if ye know not the name by which ye are called.

15      इसलिए, मैं चाहता हूँ कि तुम अटल और अचल रहते हुए सदैव भले कार्य करते जाओ, कि मसीह, सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, मुहर लगा कर तुम्हें अपना बना ले और तुम्हें स्वर्ग में लाया जा सके, और तुम, विवेक, शक्ति, और न्याय, और उसकी दया के द्वारा तुम अनंत उद्धार और अनंत जीवन प्राप्त कर सको, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी पर सब वस्तुओं को रचा, जो परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ है। आमीन।

Therefore, I would that ye should be steadfast and immovable, always abounding in good works, that Christ, the Lord God Omnipotent, may seal you his, that you may be brought to heaven, that ye may have everlasting salvation and eternal life, through the wisdom, and power, and justice, and mercy of him who created all things, in heaven and in earth, who is God above all. Amen.

## मुसायाह 6

- 1 और अब, राजा बिन्यामीन ने लोगों से बोलना समाप्त करने के पश्चात सोचा, कि उन लोगों का नाम लिखना उचित होगा जिन्होंने परमेश्वर के साथ उसकी आज्ञाओं का पालन करने का अनुबंध बनाया हो ।
- 2 और ऐसा हुआ कि एक भी व्यक्ति ऐसा न निकला, सिवाय छोटे बच्चों को छोड़कर, जिसने अनुबंध बनाया हो और अपने ऊपर मसीह का नाम ग्रहण किया हो ।
- 3 और फिर, ऐसा हुआ कि राजा बिन्यामीन ये सब बातें पूरी कर ली, और अपने बेटे मुसायाह को अपने लोगों के ऊपर शासक और राजा समर्पित करने, और उसे राज्य से संबंधित सारा कार्यभार सौंपने, और लोगों को शिक्षा देने के लिए याजकों को नियुक्त करने, ताकि वे परमेश्वर की आज्ञाओं को सुन और समझ सकें, और उन्हें उस प्रतिज्ञा को याद करने के लिए एकसा सकें जो उन्होंने बनाई थी, के बाद उसने भीड़ को विदा किया, और वे, हर एक, अपने परिवार के साथ, अपने स्वयं के घर को वापस लौट गया ।
- 4 और मुसायाह अपने पिता के स्थान पर शासन करने लगा । और उसने अपनी आयु के तीसवें वर्ष में, लेही के यरूशलेम छोड़ने के समय से, कुल मिलाकर, चार सौ छियत्तर वर्ष के पश्चात, शासन करना आरंभ किया था ।
- 5 और राजा बिन्यामीन तीन वर्ष तक जीवित रहा और उसकी मृत्यु हो गई ।
- 6 और ऐसा हुआ कि राजा मुसायाह प्रभु के मार्ग पर चलता रहा, और उसकी व्यवस्था और उसके नियमों को मानता रहा, और सब बातों में उसकी आज्ञाओं का पालन करता रहा जो कुछ भी उसने उसे आज्ञा दी ।
- 7 और राजा मुसायाह ने अपने लोगों को खेत में हल लगवाए । और उसने स्वयं भी हल लगाया, कि वह अपने लोगों पर बोझ न बन जाए, कि वह सभी कामों को वैसा ही करता रहा जैसा उसके पिता किया करते थे । और उसके लोगों के बीच तीन वर्ष तक कोई विवाद न नहीं था ।

## Mosiah 6

And now, king Benjamin thought it was expedient, after having finished speaking to the people, that he should take the names of all those who had entered into a covenant with God to keep his commandments.

And it came to pass that there was not one soul, except it were little children, but who had entered into the covenant and had taken upon them the name of Christ.

And again, it came to pass that when king Benjamin had made an end of all these things, and had consecrated his son Mosiah to be a ruler and a king over his people, and had given him all the charges concerning the kingdom, and also had appointed priests to teach the people, that thereby they might hear and know the commandments of God, and to stir them up in remembrance of the oath which they had made, he dismissed the multitude, and they returned, every one, according to their families, to their own houses.

And Mosiah began to reign in his father's stead. And he began to reign in the thirtieth year of his age, making in the whole, about four hundred and seventy-six years from the time that Lehi left Jerusalem.

And king Benjamin lived three years and he died.

And it came to pass that king Mosiah did walk in the ways of the Lord, and did observe his judgments and his statutes, and did keep his commandments in all things whatsoever he commanded him.

And king Mosiah did cause his people that they should till the earth. And he also, himself, did till the earth, that thereby he might not become burdensome to his people, that he might do according to that which his father had done in all things. And there was no contention among all his people for the space of three years.

## मुसायाह 7

- 1 और अब, ऐसा हुआ कि लगातार तीन वर्षों तक राजा मुसायाह के शांतिपूर्वक राज करने के पश्चात, वह उन लोगों के बारे में जानना चाहता था जो लेही-नफी के प्रदेश, या लेही-नफी के शहर में रहने चले गए थे; क्योंकि उसके लोगों ने उनके विषय में कुछ नहीं सुना था जब से वे जराहेमला के प्रदेश से चले गए थे; इसलिए, वे उसे उनके बारे में पूछताछ करके बार-बार तंग करते थे।
- 2 और ऐसा हुआ कि राजा मुसायाह ने उनके सोलह मजबूत पुरुषों को अनुमति दी ताकि वे लेही-नफी के प्रदेश जाकर, उनके भाइयों के संबंध में पता लगाएं।
- 3 और ऐसा हुआ कि अगले दिन उन्होंने चलना आरंभ किया, अम्मोन उनमें से एक था, वह अधिक बलवान और शक्तिशाली पुरुष, और जराहेमला के वंश का था; और वह उनका मार्गदर्शक भी था।
- 4 और अब, वे लेही-नफी प्रदेश की यात्रा करने के लिए निर्जन प्रदेश में गुजरने वाले मार्ग को नहीं जानते थे; इसलिए वे निर्जन प्रदेश में कई दिनों तक भटकते रहे, वे चालीस दिनों तक भटकते रहे थे।
- 5 और जब वे चालीस दिनों तक भटक चुके वे एक पहाड़ के निकट पहुंचे, जो कि शिलोम प्रदेश से उत्तर की ओर है, और वहां उन्होंने अपने तंबूओं को लगाया।
- 6 और अम्मोन ने अपने तीन भाइयों को लिया, और उनके नाम अमालेकी, हीलम, और हेम थे, और वे नफी के प्रदेश में गए।
- 7 और देखो, वे उन लोगों के राजा से मिले जो नफी के प्रदेश, और शिलोम के प्रदेश में थे; और उनको राजा के सिपाहियों ने घेर लिया, और पकड़ लिए गए, और बांधे गए, और बंदीगृह में डाल दिए गए।
- 8 और ऐसा हुआ जब वे दो दिनों से बंदीगृह में थे उन्हें राजा के सामने लाया गया, और उनके बंधनों को खोल दिया गया; और वे राजा के सामने खड़े थे, और अनुमति दी गई, या असल में आदेश दिया गया, कि वे उन प्रश्नों के उत्तर दें जो वह उन से पूछेगा।
- 9 और उसने उन से कहा: देखो, मैं लिमही, नूह का बेटा हूँ, जो जी-निफ का बेटा था, जो जराहेमला के प्रदेश बाहर निकल कर इस प्रदेश को विरासत में पाने के लिए आया था, जोकि उसके पूर्वजों का पैतृक प्रदेश था, जिसे लोगों के मताधिकार द्वारा राजा बनाया गया था।

## Mosiah 7

And now, it came to pass that after king Mosiah had had continual peace for the space of three years, he was desirous to know concerning the people who went up to dwell in the land of Lehi-Nephi, or in the city of Lehi-Nephi; for his people had heard nothing from them from the time they left the land of Zarahemla; therefore, they wearied him with their teasings.

And it came to pass that king Mosiah granted that sixteen of their strong men might go up to the land of Lehi-Nephi, to inquire concerning their brethren.

And it came to pass that on the morrow they started to go up, having with them one Ammon, he being a strong and mighty man, and a descendant of Zarahemla; and he was also their leader.

And now, they knew not the course they should travel in the wilderness to go up to the land of Lehi-Nephi; therefore they wandered many days in the wilderness, even forty days did they wander.

And when they had wandered forty days they came to a hill, which is north of the land of Shilom, and there they pitched their tents.

And Ammon took three of his brethren, and their names were Amaleki, Helem, and Hem, and they went down into the land of Nephi.

And behold, they met the king of the people who were in the land of Nephi, and in the land of Shilom; and they were surrounded by the king's guard, and were taken, and were bound, and were committed to prison.

And it came to pass when they had been in prison two days they were again brought before the king, and their bands were loosed; and they stood before the king, and were permitted, or rather commanded, that they should answer the questions which he should ask them.

And he said unto them: Behold, I am Limhi, the son of Noah, who was the son of Zeniff, who came up out of the land of Zarahemla to inherit this land, which was the land of their fathers, who was made a king by the voice of the people.

- 10 और अब, मैं जानना चाहता हूँ किस कारण से तुमने इतना साहस किया कि नगर की चार दीवारी के निकट आ पहुंचे, जबकि मैं स्वयं, अपने सिपाहियों के साथ द्वार के बाहर था ?
- 11 और अब, इसलिए मैंने तुम्हें जीवित रखा है, कि मैं तुम्हारे बारे में पता करूँ, वरना मैं तुम्हें अपने सिपाहियों से मरवा डालता। तुम्हें बोलने की अनुमति है।
- 12 और अब, जब अम्मोन ने देखा कि उसे बोलने की अनुमति दी गई थी, वह आगे बढ़ा और उसने अपने आपको राजा के सामने झुकाया; और फिर ऊपर उठते हुए उसने कहा: हे राजा, मैं आज के दिन के लिए परमेश्वर का बहुत धन्यवाद देता हूँ कि मैं इस दिन तक जीवित हूँ, और मुझे बोलने की अनुमति दी गई है; और मैं साहस से बोलने का प्रयास करूँगा;
- 13 क्योंकि मैं निश्चित हूँ कि यदि आप मुझे जानते तो मैं इन बेड़ियों को नहीं पहने होता। क्योंकि मैं अम्मोन जराहेमला का वंशज हूँ, और जराहेमला के प्रदेश से अपने भाइयों के संबंध में पता करने आया हूँ, जिन्हें जीनिफ उस प्रदेश से निकाल कर लाया था।
- 14 और अब, ऐसा हुआ कि जब लिमही ने अम्मोन की बातों को सुना, तो वह बहुत ही प्रसन्न हुआ, और बोला: अब, मैं निश्चितरूप से जानता हूँ कि मेरे भाई जो जराहेमला प्रदेश के हैं अभी जीवित हैं। और अब, मैं आनंद मनाऊँगा; और कल मैं अपने लोगों को भी आनंद मनाने के लिए कहूँगा।
- 15 क्योंकि देखो, लमनाइयों की गुलामी में हैं, और हम पर इतना कर लगाया जाता है कि जिसे उठाना कठिन है। और अब, देखो, हमारे भाई हमारी गुलामी से हमें मुक्त करेंगे, या लमनाइयों के हाथों से छुड़ाएंगे, और हम उनके गुलाम हो जाएंगे; क्योंकि नफाइयों के गुलाम होना लमनाइयों के राजा को कर देने से बेहतर है।
- 16 और अब, राजा लिमही ने अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि वे न तो अम्मोन को न ही उसके भाइयों को बांधें, लेकिन उन्हें पहाड़ी पर जाने को कहा जोकि शिलोम के उत्तर में थी, और उनके भाइयों को शहर में लाने को कहा, कि वे खा और पी, और अपनी यात्रा की थकान मिटा सकें; क्योंकि उन्होंने बहुत कुछ सहा था; उन्होंने भूख, प्यास, और थकान सही थी।

And now, I desire to know the cause whereby ye were so bold as to come near the walls of the city, when I, myself, was with my guards without the gate?

And now, for this cause have I suffered that ye should be preserved, that I might inquire of you, or else I should have caused that my guards should have put you to death. Ye are permitted to speak.

And now, when Ammon saw that he was permitted to speak, he went forth and bowed himself before the king; and rising again he said: O king, I am very thankful before God this day that I am yet alive, and am permitted to speak; and I will endeavor to speak with boldness;

For I am assured that if ye had known me ye would not have suffered that I should have worn these bands. For I am Ammon, and am a descendant of Zarahemla, and have come up out of the land of Zarahemla to inquire concerning our brethren, whom Zeniff brought up out of that land.

And now, it came to pass that after Limhi had heard the words of Ammon, he was exceedingly glad, and said: Now, I know of a surety that my brethren who were in the land of Zarahemla are yet alive. And now, I will rejoice; and on the morrow I will cause that my people shall rejoice also.

For behold, we are in bondage to the Lamanites, and are taxed with a tax which is grievous to be borne. And now, behold, our brethren will deliver us out of our bondage, or out of the hands of the Lamanites, and we will be their slaves; for it is better that we be slaves to the Nephites than to pay tribute to the king of the Lamanites.

And now, king Limhi commanded his guards that they should no more bind Ammon nor his brethren, but caused that they should go to the hill which was north of Shilom, and bring their brethren into the city, that thereby they might eat, and drink, and rest themselves from the labors of their journey; for they had suffered many things; they had suffered hunger, thirst, and fatigue.

- 17 और अब, ऐसा हुआ कि अगले दिन राजा लिमही ने अपने लोगों के बीच एक घोषणा करवाई, कि वे उसके उन शब्दों को सुनने के लिए मंदिर में एकत्रित हो जाएं, जो वह उनसे कहना चाहता है।
- 18 और ऐसा हुआ कि जब वे एकत्रित हो गए तब उसने उनसे इस प्रकार कहा: ओ तुम, मेरे लोगों, अपने सिरों को उठाओ और धीरज रखो; क्योंकि देखो, समय निकट है, या अधिक दूर नहीं है, जब हम अपने शत्रुओं के अधीन बिलकुल भी नहीं होंगे, बेशक हमारे बहुत से संघर्ष, अभी तक व्यर्थ साबित हुए हैं; फिर भी मुझे भरोसा है कि अभी एक अंतिम सफल संघर्ष किया जाना बाकी है।
- 19 इसलिए, अपने सिरों को ऊपर उठाओ, और आनंद मनाओ, और परमेश्वर में अपना भरोसा रखो, उस परमेश्वर में जो इब्राहीम, और इसहाक, और याकूब का परमेश्वर है; वह परमेश्वर जो इस्राएल की संतान को मिस्र प्रदेश से बाहर निकाल कर लाया था, और उन्हें लाल सागर की सूखी भूमि पर चलाया था, और उन्हें मन्ना खिलाया था ताकि वे निर्जन प्रदेश में नष्ट न हों; और उसने उनके लिए बहुत सी बातें की थी।
- 20 और फिर, वही परमेश्वर हमारे पूर्वजों को यरूशलेम प्रदेश से निकाल कर लाया था, और अभी तक अपने लोगों को सुरक्षित रखा है; और देखो, यह हमारे पापों और घृणित कार्यों के कारण हुआ है कि उसने हमें गुलामी में रखा।
- 21 और आज तुम सब इस बात के गवाह हो, कि जीनिफ, जो अपने लोगों के ऊपर राजा बनाया गया था, वह अपने पूर्वजों की भूमि को पाने के लिए जरूरत से ज्यादा इच्छुक था, इसलिए उसने राजा लमान की चालाकी और धूर्तता से धोखा खाकर, जिसने राजा जीनिफ के साथ संधि कर ली, और प्रदेश का एक हिस्सा अपने कब्जे में कर लिया, अर्थात् लेही-नफी शहर और शिलोम के शहर को; और आस-पास के हिस्से को—
- 22 और उसने यह सब इन लोगों को अपने अधीन करने यानि गुलाम बनाने के एकमात्र उद्देश्य के लिए किया था। और देखो, हम इस समय लमनाइयों के राजा को, हमारी मक्का, हमारी जौ, और यहां तक की हर प्रकार के अनाज का आधा, और हमारे पक्षी के झुण्डों और पशु के रेवड़ों की वृद्धि का आधा, भाग कर के रूप में देते हैं; और यहां तक की जो कुछ भी हमारे पास या हमारे अधिकार में है उसका आधा भाग भी लमनाइयों का राजा हमसे ले लेता है, वरना वह हमारी जान ले लेगा।

And now, it came to pass on the morrow that king Limhi sent a proclamation among all his people, that thereby they might gather themselves together to the temple, to hear the words which he should speak unto them.

And it came to pass that when they had gathered themselves together that he spake unto them in this wise, saying: O ye, my people, lift up your heads and be comforted; for behold, the time is at hand, or is not far distant, when we shall no longer be in subjection to our enemies, notwithstanding our many strugglings, which have been in vain; yet I trust there remaineth an effectual struggle to be made.

Therefore, lift up your heads, and rejoice, and put your trust in God, in that God who was the God of Abraham, and Isaac, and Jacob; and also, that God who brought the children of Israel out of the land of Egypt, and caused that they should walk through the Red Sea on dry ground, and fed them with manna that they might not perish in the wilderness; and many more things did he do for them.

And again, that same God has brought our fathers out of the land of Jerusalem, and has kept and preserved his people even until now; and behold, it is because of our iniquities and abominations that he has brought us into bondage.

And ye all are witnesses this day, that Zeniff, who was made king over this people, he being overzealous to inherit the land of his fathers, therefore being deceived by the cunning and craftiness of king Laman, who having entered into a treaty with king Zeniff, and having yielded up into his hands the possessions of a part of the land, or even the city of Lehi-Nephi, and the city of Shilom; and the land round about—

And all this he did, for the sole purpose of bringing this people into subjection or into bondage. And behold, we at this time do pay tribute to the king of the Lamanites, to the amount of one half of our corn, and our barley, and even all our grain of every kind, and one half of the increase of our flocks and our herds; and even one half of all we have or possess the king of the Lamanites doth exact of us, or our lives.



- 23 और अब, क्या यह दुख सहने योग्य है ? और क्या यह, हमारा कष्ट, बहुत बड़ा नहीं है ? अब देखो, हमारे पास शोक मनाने का कितना बड़ा कारण है ।
- 24 हां, मैं तुम से कहता हूँ, हमारे शोक मनाने के बहुत बड़े कारण हैं; क्योंकि देखो हमारे कितने भाइयों की हत्या की गई, और उनका लहू व्यर्थ में बहाया गया, और यह सब पाप के कारण हुआ ।
- 25 क्योंकि यदि ये लोग बुराई में न गिरे नहीं होते तो प्रभु उन पर यह बड़े कष्ट नहीं आने देता । लेकिन देखो, उन्होंने उसके वचनों को नहीं सुना; लेकिन उनके आपस में विवाद होते रहे, इतने अधिक कि उन्होंने एक दूसरे का लहू बहाया ।
- 26 और उन्होंने प्रभु के एक भविष्यवक्ता की हत्या कर दी; हां, परमेश्वर के चुने हुए पुरुष की, जिसने उन्हें उनके दुष्टता और घृणित कार्यों के बारे में बताया, और आने वाली बहुत सी बातों की भविष्यवाणी की थी, हां, मसीह के आने के विषय में भी ।
- 27 और क्योंकि उसने उनसे कहा कि मसीह परमेश्वर, सभी बातों का पिता था, और कहा कि वह मनुष्य के स्वरूप में आएगा, और यह वह स्वरूप होगा जिसके अनुसार आरंभ में मनुष्य की रचना की गई थी; या अन्य शब्दों में, उसने कहा कि वह मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया था, और कि परमेश्वर मानव संतान के बीच आएगा, और अपने ऊपर मांस और लहू का शरीर धारण करेगा, और पूरी पृथ्वी में जाएगा—
- 28 और अब, क्योंकि उसने यह कहा था, उन्होंने उसे मार डाला; और उन्होंने बहुत से अन्य कार्य किये थे जिससे उनके ऊपर परमेश्वर का क्रोध भड़का था । इसलिए, किसे आश्चर्य है कि वे गुलामी में हैं, और कि वे घोर कष्टों से पीड़ित हैं ?
- 29 क्योंकि देखो, प्रभु ने कहा है: मैं अपने लोगों की उनके उल्लघनों के दिन सहायता नहीं करूँगा; लेकिन मैं उनके मार्गों में बाड़ा लगाऊँगा ताकि वे उन्नति न करें; और उनके कार्य उनके आगे अवरोध पैदा करेंगे ।
- 30 और फिर, वह कहता है: यदि मेरे लोग बुरे काम करेंगे तो वे में बँडर भूसा ही काटेंगे; और जिसका परिणाम जहर है ।
- 31 और वह फिर कहता है: यदि मेरे लोग बुरे काम बोते हैं वे पूरब की हवा काटेंगे, जोकि तुरन्त विनाश लाती है ।

And now, is not this grievous to be borne? And is not this, our affliction, great? Now behold, how great reason we have to mourn.

Yea, I say unto you, great are the reasons which we have to mourn; for behold how many of our brethren have been slain, and their blood has been spilt in vain, and all because of iniquity.

For if this people had not fallen into transgression the Lord would not have suffered that this great evil should come upon them. But behold, they would not hearken unto his words; but there arose contentions among them, even so much that they did shed blood among themselves.

And a prophet of the Lord have they slain; yea, a chosen man of God, who told them of their wickedness and abominations, and prophesied of many things which are to come, yea, even the coming of Christ.

And because he said unto them that Christ was the God, the Father of all things, and said that he should take upon him the image of man, and it should be the image after which man was created in the beginning; or in other words, he said that man was created after the image of God, and that God should come down among the children of men, and take upon him flesh and blood, and go forth upon the face of the earth—

And now, because he said this, they did put him to death; and many more things did they do which brought down the wrath of God upon them. Therefore, who wondereth that they are in bondage, and that they are smitten with sore afflictions?

For behold, the Lord hath said: I will not succor my people in the day of their transgression; but I will hedge up their ways that they prosper not; and their doings shall be as a stumbling block before them.

And again, he saith: If my people shall sow filthiness they shall reap the chaff thereof in the whirlwind; and the effect thereof is poison.

And again he saith: If my people shall sow filthiness they shall reap the east wind, which bringeth immediate destruction.

32 और अब, देखो, प्रभु की प्रतिज्ञा पूरी हुई, और तुम्हें दणित किया गया और कष्टों में फंसे हो ।

33 लेकिन यदि तुम संपूर्ण हृदय से प्रभु की ओर लौटोगे, और उस में अपना भरोसा रखोगे, और पूरे मन से उसकी सेवा करोगे, यदि तुम ऐसा करते हो, वह, अपनी स्वयं की इच्छा और खुशी से, तुम्हें गुलामी से छुड़ाएगा ।

And now, behold, the promise of the Lord is fulfilled, and ye are smitten and afflicted.

But if ye will turn to the Lord with full purpose of heart, and put your trust in him, and serve him with all diligence of mind, if ye do this, he will, according to his own will and pleasure, deliver you out of bondage.

## मुसायाह 8

- 1 और ऐसा हुआ कि राजा लिमही ने अपने लोगों से बोलना समाप्त किया, क्योंकि उसने उनसे बहुत सी बातें कही और उनमें से केवल कुछ को मैंने इस पुस्तक में लिखा है, उसने अपने लोगों से उनके भाइयों के संबंध में सब बातों को कहा था जो जराहेमला के प्रदेश में थे।
- 2 और उसने अम्मोन को भीड़ के सामने बोलने, और उन्हें जीनिफ के उस प्रदेश से बाहर निकलने से लेकर उसके स्वयं प्रदेश से बाहर निकलने तक उनके भाइयों के साथ जो हुआ था उसे बताने के लिए कहा।
- 3 और उसने उनको उन अंतिम शब्दों को भी बताया जो राजा बिन्यामीन ने उन्हें सीखाए थे, और उन्हें राजा लिमही के लोगों को समझाया, ताकि वे उन सभी शब्दों को समझ सकें जो उसने बोले थे।
- 4 और ऐसा हुआ कि वह जब यह सब कर चुका, कि राजा लिमही ने भीड़ को विदा किया, और हर एक को अपने-अपने घर वापस जाने को कहा।
- 5 और ऐसा हुआ कि उसने ऐसा किया कि जिन पट्टियों में उसके लोगों का अभिलेख उस समय से शामिल था जब उन्होंने जराहेमला के प्रदेश को छोड़ा था, उन्हें अम्मोन के सामने लाया जाए, ताकि वह उन्हें पढ़ सकें।
- 6 अब, जैसे ही अम्मोन ने उस अभिलेख को पढ़ा, राजा ने उससे पूछा क्या वह भाषाओं को अनुवाद कर सकता था, और अम्मोन ने उसे बोला कि वह नहीं कर सकता।
- 7 और राजा ने उससे कहा: अपने लोगों के कष्टों के लिए दुखी होने के कारण, मैंने अपने तैंतालीस लोगों को निर्जन प्रदेश में यात्रा करने को कहा, कि इस प्रकार वे जराहेमला के प्रदेश की खोज कर सकें, कि हम अपने भाइयों से हमें गुलामी से छुड़ाने के लिए अनुरोध कर सकें।
- 8 और वे कई दिनों की अवधि के लिए निर्जन प्रदेश में खो गए, कई तलाबों और नदियों वाले प्रदेश की यात्रा करने के पश्चात्, एक ऐसा प्रदेश मिला जो मनुष्य, और जानवरों की हड्डियों, और हर प्रकार के भवनों के खंडरों से भरा पड़ा था, और ऐसे प्रदेश को पाने के बाद जो बहुत से लोगों से भरा पड़ा था जो इस्राएल की सेना के समान असंख्य थे, वे परिश्रमी थे, फिर भी जराहेमला के प्रदेश को नहीं खोज पाए लेकिन इस प्रदेश को लौट गए।

## Mosiah 8

And it came to pass that after king Limhi had made an end of speaking to his people, for he spake many things unto them and only a few of them have I written in this book, he told his people all the things concerning their brethren who were in the land of Zarahemla.

And he caused that Ammon should stand up before the multitude, and rehearse unto them all that had happened unto their brethren from the time that Zeniff went up out of the land even until the time that he himself came up out of the land.

And he also rehearsed unto them the last words which king Benjamin had taught them, and explained them to the people of king Limhi, so that they might understand all the words which he spake.

And it came to pass that after he had done all this, that king Limhi dismissed the multitude, and caused that they should return every one unto his own house.

And it came to pass that he caused that the plates which contained the record of his people from the time that they left the land of Zarahemla, should be brought before Ammon, that he might read them.

Now, as soon as Ammon had read the record, the king inquired of him to know if he could interpret languages, and Ammon told him that he could not.

And the king said unto him: Being grieved for the afflictions of my people, I caused that forty and three of my people should take a journey into the wilderness, that thereby they might find the land of Zarahemla, that we might appeal unto our brethren to deliver us out of bondage.

And they were lost in the wilderness for the space of many days, yet they were diligent, and found not the land of Zarahemla but returned to this land, having traveled in a land among many waters, having discovered a land which was covered with bones of men, and of beasts, and was also covered with ruins of buildings of every kind, having discovered a land which had been peopled with a people who were as numerous as the hosts of Israel.

- 9 और यह गवाही देने के लिए कि जो बातें उन्होंने कहीं थी सच हैं वे चौबीस पट्टियों को लाए थे जो खुदे हुए लेखों से भरी थी, और वे शुद्ध सोने की बनी थी ।
- 10 और देखो, वे कवच भी लाए, जो बड़े थे, और वे पीतल और तांबे के थे, और बहुत अच्छी हालत में थे ।
- 11 और फिर, वे तलवार लाए, उनके मूठ नष्ट हो गए थे, और फल जंग से खराब हो गए थे; और उस प्रदेश में पट्टियों की खुदाई का अनुवाद करने के योग्य कोई नहीं था । इसलिए मैं तुम से कहता हूँ: क्या तुम अनुवाद नहीं कर सकते ?
- 12 और मैं तुम से फिर कहता हूँ: क्या तुम किसी को जानते हो जो अनुवाद कर सकता है ? क्योंकि मैं चाहता हूँ कि इन अभिलेखों का हमारी भाषा में अनुवाद किया जाए; क्योंकि, शायद, वे हमें उन बचे हुए लोगों के विषय में बता सकें जो नष्ट किये गए थे, जहां से ये अभिलेख लाए गए थे; या, शायद, वे हमें उन लोगों के विषय में बता सकें जो नष्ट किये गए थे; और मैं उनके विनाश का कारण जानने का इच्छुक हूँ ।
- 13 अब अम्मोन ने उससे कहा: मैं तुम्हें निश्चितरूप से, हे राजा, एक पुरुष के बारे में बता सकता हूँ जो इन अभिलेखों का अनुवाद कर सकता है; क्योंकि वह उसे देख सकता है, और सभी प्राचीन अभिलेखों का अनुवाद कर सकता है; और यह परमेश्वर का एक उपहार है । और वे चीजें अनुवाद कहलाती हैं, और कोई मनुष्य उन्हें नहीं देख सकता सिवाय उसके जिसे आज्ञा दी जाती है, कहीं उसने उस वस्तु को देख लिया जो उसे नहीं देखनी चाहिए तो वह नष्ट हो जाएगा । और जिसे उन्हें देखने की आज्ञा है, उसे दिव्यदर्शी कहते हैं ।
- 14 और देखो, जराहेमला के प्रदेश में जो लोगों का राजा है वह पुरुष है जिसे इन कामों को करने की आज्ञा है, और जिसके पास परमेश्वर का यह उच्च उपहार है ।
- 15 और राजा ने कहा कि दिव्यदर्शी भविष्यवक्ता से बड़ा होता है ।
- 16 और अम्मोन ने कहा कि दिव्यदर्शी एक प्रकटीकर्ता और भविष्यवक्ता भी होता है; और उपहार जो कि अधिक महान है किसी मनुष्य के पास नहीं होता, सिवाय जिसके पास परमेश्वर की शक्ति होती है, जो किसी के पास नहीं हो सकती; फिर भी किसी मनुष्य के पास परमेश्वर से मिली महान शक्ति हो सकती है ।

And for a testimony that the things that they had said are true they have brought twenty-four plates which are filled with engravings, and they are of pure gold.

And behold, also, they have brought breastplates, which are large, and they are of brass and of copper, and are perfectly sound.

And again, they have brought swords, the hilts thereof have perished, and the blades thereof were cankered with rust; and there is no one in the land that is able to interpret the language or the engravings that are on the plates. Therefore I said unto thee: Canst thou translate?

And I say unto thee again: Knowest thou of any one that can translate? For I am desirous that these records should be translated into our language; for, perhaps, they will give us a knowledge of a remnant of the people who have been destroyed, from whence these records came; or, perhaps, they will give us a knowledge of this very people who have been destroyed; and I am desirous to know the cause of their destruction.

Now Ammon said unto him: I can assuredly tell thee, O king, of a man that can translate the records; for he has wherewith that he can look, and translate all records that are of ancient date; and it is a gift from God. And the things are called interpreters, and no man can look in them except he be commanded, lest he should look for that he ought not and he should perish. And whosoever is commanded to look in them, the same is called seer.

And behold, the king of the people who are in the land of Zarahemla is the man that is commanded to do these things, and who has this high gift from God.

And the king said that a seer is greater than a prophet.

And Ammon said that a seer is a revelator and a prophet also; and a gift which is greater can no man have, except he should possess the power of God, which no man can; yet a man may have great power given him from God.

- 17 लेकिन दिव्यदर्शी उन बातों को जान सकता है जो अतीत में थी, और उन बातों को भी जो होने वाली हैं, और उनके द्वारा सब बातों को प्रकट किया जाएगा, या, असल में, गुप्त बातों को प्रकट किया जाएगा, और छिपी हुई वस्तुएं प्रकाश में लाई जाएंगी, और जो बातें पता नहीं हैं उनके द्वारा बताई जाएंगी, और उनके द्वारा बताई भी जाएंगी जो अन्य प्रकार से जानी नहीं जा सकती थी ।
- 18 इस प्रकार परमेश्वर ने एक माध्यम उपलब्ध कराया है कि मनुष्य, विश्वास के द्वारा, महान चमत्कार कर सके; इसलिए वह अपने साथियों के लिए अधिक लाभकारी हो सकता है ।
- 19 और अब, जब अम्मोन ने इन शब्दों को बोलना समाप्त किया राजा अत्याधिक आनंदित हुआ, और परमेश्वर का यह कहकर धन्यवाद दिया: निसंदेह इन पट्टियों में महान रहस्य छिपा हुआ है, और ये अनुवाद निसंदेह मानव संतान को इस प्रकार के भेदों को प्रकट करने के उद्देश्य के लिए तैयार किये गए हैं ।
- 20 ओह प्रभु के काम कितने आश्चर्यजनक हैं, और कितने दिनों तक वह अपने लोगों को सहता रहता; हां, और मानव संतान की बुद्धि कितनी अंधी और ना समझ है; क्योंकि वे ज्ञान को नहीं पाना चाहते, न ही वे चाहते हैं कि बुद्धि उन पर हावी हो !
- 21 हां, वे उस जंगली झुंड के समान हैं जो चरवाहे से भाग निकलता है, और बिखर जाता है, और जंगल के जानवरों द्वारा खदेड़ा, और खालिया जाता है ।

But a seer can know of things which are past, and also of things which are to come, and by them shall all things be revealed, or, rather, shall secret things be made manifest, and hidden things shall come to light, and things which are not known shall be made known by them, and also things shall be made known by them which otherwise could not be known.

Thus God has provided a means that man, through faith, might work mighty miracles; therefore he becometh a great benefit to his fellow beings.

And now, when Ammon had made an end of speaking these words the king rejoiced exceedingly, and gave thanks to God, saying: Doubtless a great mystery is contained within these plates, and these interpreters were doubtless prepared for the purpose of unfolding all such mysteries to the children of men.

O how marvelous are the works of the Lord, and how long doth he suffer with his people; yea, and how blind and impenetrable are the understandings of the children of men; for they will not seek wisdom, neither do they desire that she should rule over them!

Yea, they are as a wild flock which fleeth from the shepherd, and scattereth, and are driven, and are devoured by the beasts of the forest.

**जीनिफ का अभिलेख**—उसके लोगों का जराहेमला के प्रदेश को छोड़ने के समय से लेकर लमनाइयों के हाथों से मुक्त कराए जाने तक का विवरण ।

## मुसायाह 9

- 1 मुझ, जीनिफ, को नफाइयों की सभी भाषाओं में शिक्षा मिली थी, और नफी के प्रदेश, या हमारे पूर्वजों के प्रथम विरासत के प्रदेश का ज्ञान था, और लमनाइयों के बीच गुप्तचर भेजे ताकि मैं उनकी सेनाओं का भेद ले सकूँ, ताकि हमारी सेना उन पर आक्रमण कर दे और उन्हें नष्ट कर दे—लेकिन जब मैंने उनके बीच में वह देखा जोकि अच्छा था तो मेरी इच्छा हुई कि वे नष्ट नहीं किये जाने चाहिए ।
- 2 इसलिए, मैंने निर्जन प्रदेश में अपने भाइयों से विवाद किया, क्योंकि मैं चाहता था कि हमारा शासक उनके साथ संधि करे; लेकिन उसने कठोर और खून का प्यासा होने के कारण आज्ञा दी कि मेरी हत्या कर दी जाए; लेकिन काफी खून बहाए जाने के द्वारा मुझे बचा लिया गया था; क्योंकि पिता ने पिता के विरुद्ध युद्ध किया, और भाई ने भाई के विरुद्ध, निर्जन प्रदेश में हमारी सेना का बहुत अधिक संख्या में विनाश हुआ था; और हम वापस लौट गए, जो बच गए थे, जराहेमला के प्रदेश को, अपनी पत्नियों और बच्चों को कहानी सुनाने के लिए ।
- 3 और फिर भी, मैं अपने पूर्वजों के प्रदेश को पाने के लिए जरूरत से ज्यादा इच्छुक होने के कारण, ऐसे अधिक से अधिक लोगों को एकत्रित किया जो प्रदेश पर अधिकार करने के इच्छुक थे, और हमने निर्जन प्रदेश में उस प्रदेश को जाने की अपनी यात्रा फिर से आरंभ की; लेकिन हमें अकाल और घोर कठिनाइयों से दंडित किया गया; क्योंकि हम प्रभु हमारे परमेश्वर को याद करने में मंद थे ।
- 4 फिर भी, काफी दिनों तक निर्जन प्रदेश में भटकने के पश्चात हमने उस स्थान पर अपने तंबू लगाए जहां हमारे भाइयों को मारा गया था, जोकि हमारे पूर्वजों के प्रदेश के निकट था ।
- 5 और ऐसा हुआ कि मैं फिर से अपने चार पुरुषों के साथ शहर में गया, राजा के पास गया, कि मैं राजा के व्यवहार को जान सकूँ, और कि मैं जान सकूँ कि क्या मुझे अपने लोगों के साथ अंदर जाऊँ और शांति से प्रदेश को अधिकार में ले लूँ ।
- 6 और मैं राजा के पास गया, और उसने मेरे साथ अनुबंध किया कि मैं लेही-नफी के प्रदेश, और शिलोम के प्रदेश को अधिकार में ले सकता हूँ ।

*THE RECORD OF ZENIFF—An account of his people, from the time they left the land of Zarahemla until the time that they were delivered out of the hands of the Lamanites.*

## Mosiah 9

I, Zeniff, having been taught in all the language of the Nephites, and having had a knowledge of the land of Nephi, or of the land of our fathers' first inheritance, and having been sent as a spy among the Lamanites that I might spy out their forces, that our army might come upon them and destroy them—but when I saw that which was good among them I was desirous that they should not be destroyed.

Therefore, I contended with my brethren in the wilderness, for I would that our ruler should make a treaty with them; but he being an austere and a blood-thirsty man commanded that I should be slain; but I was rescued by the shedding of much blood; for father fought against father, and brother against brother, until the greater number of our army was destroyed in the wilderness; and we returned, those of us that were spared, to the land of Zarahemla, to relate that tale to their wives and their children.

And yet, I being over-zealous to inherit the land of our fathers, collected as many as were desirous to go up to possess the land, and started again on our journey into the wilderness to go up to the land; but we were smitten with famine and sore afflictions; for we were slow to remember the Lord our God.

Nevertheless, after many days' wandering in the wilderness we pitched our tents in the place where our brethren were slain, which was near to the land of our fathers.

And it came to pass that I went again with four of my men into the city, in unto the king, that I might know of the disposition of the king, and that I might know if I might go in with my people and possess the land in peace.

And I went in unto the king, and he covenanted with me that I might possess the land of Lehi-Nephi, and the land of Shilom.

- 7 और उसने यह भी आज्ञा दी कि उसके लोगों को प्रदेश से बाहर निकल जाना चाहिए, और मैं और मेरे लोग प्रदेश के अंदर गए ताकि हम इस पर अधिकार कर सकें ।
- 8 और हमने भवनों का निर्माण आरंभ किया, और नगर की चार दीवारी की मरम्मत की, हां, लेही-नफी के शहर की दीवारों, और शिलोम के शहर की भी ।
- 9 और हमने मैदान पर हल लगाना शुरू किया, हां, सब प्रकार के बीज, मकई के बीज, और गेहूं के, और जौ के, और नह के, और शअम के, और हर प्रकार के फलों के बीज; और हमने प्रदेश में बढ़ना और उन्नति करना आरंभ कर दिया था ।
- 10 अब यह राजा लमान की धूर्तता और चालाकी थी, मेरे लोगों को गुलाम बनाने की, कि उसने उस प्रदेश से अपने अधिकार से हटा दिया कि हम उस पर अधिकार कर लें ।
- 11 इसलिए ऐसा हुआ, कि हमारे बारह वर्ष तक उस प्रदेश में रहने के बाद राजा लमान ने चिन्तित होना आरंभ कर दिया, कहीं ऐसा न हो कि मेरे लोग प्रदेश में किसी तरह शक्तिशाली न हो जाएं, और कि वे उन पर आक्रमण न कर दें और उन्हें गुलाम न बना लें ।
- 12 अब वे सुस्त और मूर्तिपूजके लोग थे; इसलिए वे हमें गुलाम बनाने के इच्छुक थे, ताकि वे हमारे हाथों की मेहनत से अपने पेट को भर सकें; हां, ताकि वे हमारे खेतों के जानवरों के झुंड को खा कर दावत उड़ा सकें ।
- 13 इसलिए ऐसा हुआ कि राजा लमान अपने लोगों को मेरे लोगों के साथ विवाद करने के लिए उकसाने लगा; इसलिए प्रदेश में युद्ध और विवाद आरंभ हो गए ।
- 14 क्योंकि, नफी के प्रदेश में मेरे शासन के तेरहवें वर्ष में, शिलोम के प्रदेश के सदूर दक्षिण में, जब मेरे लोग अपने जानवरों को पानी और चारा खिला रहे थे, और अपनी भूमि में हल चला रहे थे, असंख्य लमानाइयों ने उन पर धावा बोल दिया और उनकी हत्या करनी आरंभ कर दी, और उनके जानवरों को, और उनके खेतों की मकई को लूट लिया ।
- 15 हां, और ऐसा हुआ कि वे भाग खड़े हुए, सब कुछ जिस पर कब्जा नहीं किया था, नफी के शहर में भी, और मुझे सुरक्षा के लिए पूकारा ।

And he also commanded that his people should depart out of the land, and I and my people went into the land that we might possess it.

And we began to build buildings, and to repair the walls of the city, yea, even the walls of the city of Lehi-Nephi, and the city of Shilom.

And we began to till the ground, yea, even with all manner of seeds, with seeds of corn, and of wheat, and of barley, and with neas, and with sheum, and with seeds of all manner of fruits; and we did begin to multiply and prosper in the land.

Now it was the cunning and the craftiness of king Laman, to bring my people into bondage, that he yielded up the land that we might possess it.

Therefore it came to pass, that after we had dwelt in the land for the space of twelve years that king Laman began to grow uneasy, lest by any means my people should wax strong in the land, and that they could not overpower them and bring them into bondage.

Now they were a lazy and an idolatrous people; therefore they were desirous to bring us into bondage, that they might glut themselves with the labors of our hands; yea, that they might feast themselves upon the flocks of our fields.

Therefore it came to pass that king Laman began to stir up his people that they should contend with my people; therefore there began to be wars and contentions in the land.

For, in the thirteenth year of my reign in the land of Nephi, away on the south of the land of Shilom, when my people were watering and feeding their flocks, and tilling their lands, a numerous host of Lamanites came upon them and began to slay them, and to take off their flocks, and the corn of their fields.

Yea, and it came to pass that they fled, all that were not overtaken, even into the city of Nephi, and did call upon me for protection.

- 16 और ऐसा हुआ कि मैंने उन्हें धनुष से, और तीरों से, तलवारों से, और कृपाणों से, और गदों से, और गुल्लियों से, और हर प्रकार के हथियारों से लैस किया जिसका अविष्कार हम कर सकते थे, और मेरे लोगों ने आगे बढ़कर लमनाइयों के विरुद्ध युद्ध किया ।
- 17 हां, प्रभु की शक्ति में हमने आगे बढ़कर लमनाइयों के विरुद्ध युद्ध किया; क्योंकि मैंने और मेरे लोगों ने प्रभु को पूरी शक्ति से पूकार था कि वह हमें हमारे शत्रुओं के हाथों से मुक्ति दिलाए, क्योंकि हमें अपने पूर्वजों की मुक्ति की याद आयी थी ।
- 18 और परमेश्वर ने अवश्य ही हमारी पूकार को सुना और हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया था; और हम उसकी शक्ति के साथ आगे बढ़े; हां, हम लमनाइयों के विरुद्ध आगे बढ़े, और एक दिन और एक रात में हमने तीन हजार और तैंतालिस को मार गिराया; और हम उन्हें तब तक मारते रहे जब तक हमने उन्हें अपने प्रदेश से बाहर नहीं खदेड़ दिया ।
- 19 और मैंने, स्वयं, अपने हाथों से उनके मृतकों को दफनाने में मदद की थी । और देखो, बहुत दुख और पीड़ा के साथ, हमारे दो सौ उनत्तर भाई मारे गए थे ।

And it came to pass that I did arm them with bows, and with arrows, with swords, and with cimeters, and with clubs, and with slings, and with all manner of weapons which we could invent, and I and my people did go forth against the Lamanites to battle.

Yea, in the strength of the Lord did we go forth to battle against the Lamanites; for I and my people did cry mightily to the Lord that he would deliver us out of the hands of our enemies, for we were awakened to a remembrance of the deliverance of our fathers.

And God did hear our cries and did answer our prayers; and we did go forth in his might; yea, we did go forth against the Lamanites, and in one day and a night we did slay three thousand and forty-three; we did slay them even until we had driven them out of our land.

And I, myself, with mine own hands, did help to bury their dead. And behold, to our great sorrow and lamentation, two hundred and seventy-nine of our brethren were slain.



## मुसायाह 10

- 1 और ऐसा हुआ कि हमने फिर से राज्य स्थापित करना आरंभ कर दिया और हमने फिर से प्रदेश में शांति हासिल करना आरंभ कर दिया। और मैंने युद्ध के सभी प्रकार के हथियारों को बनवाया, ताकि मेरे पास अपने लोगों के लिए लमनाइयों के विरुद्ध सामना करने के लिए हथियार हों यदि वे मेरे लोगों के साथ फिर से युद्ध करने आते हैं।
- 2 और मैंने देश के चारों ओर प्रहरी नियुक्त कर दिए, ताकि लमानायटी अचानक हम पर हमला करके हमें नष्ट न कर सकें; और इस प्रकार मैंने अपने लोगों को और अपने पशु-पक्षियों को सुरक्षा प्रदान की, और उन्हें अपने शत्रुओं के हाथों में पड़ने से बचाया।
- 3 और ऐसा हुआ कि इस प्रकार हमने अपने पूर्वजों के देश पर कई वर्षों तक शासन किया, हां, बाईस वर्ष की अवधि तक।
- 4 और मैंने पुरुषों से खेत पर हल चलवा कर हर एक प्रकार के अनाजों और फलों को उत्पन्न करवाया।
- 5 और मैंने स्त्रियों से कपड़े बनवाए, और परिश्रम करवाया, और काम करवाया, और सभी प्रकार के सन द्वारा उत्तम वस्त्र और सब प्रकार वस्त्र बनवाए, ताकि हम अपने वस्त्रहीन शरीर पर वस्त्र धारण कर सकें; और इस प्रकार हमने प्रदेश में उन्नति की—इस प्रकार प्रदेश में हम बाईस वर्षों की अवधि तक शांति से रहे।
- 6 और ऐसा हुआ कि राजा लमान की मृत्यु हो गई, और उसका पुत्र उसके स्थान पर शासन करने लगा। और वह अपने लोगों को मेरे लोगों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उकसाने लगा; इसलिए वे आकर मेरे लोगों के विरुद्ध युद्ध की तैयारी करने लगे।
- 7 लेकिन मैंने शेमलोन देश के आस-पास अपने भेदियों को भेजा, ताकि मैं उनके युद्ध की तैयारी की स्थिति का पता पा सकूँ, कि उनके विरुद्ध अपनी रक्षा कर सकूँ, ताकि वे हमारे लोगों पर चढ़ाई न कर दें और उन्हें नष्ट कर दें।
- 8 और ऐसा हुआ कि उन्होंने शिलोम के उत्तर की ओर से, बहुत बड़ी सेना लेकर, धनुष-बाण, तलवार, गदा, पत्थर और गुल्लक लेकर, आक्रमण किया; और उनके सिर मुड़े हुए थे और वे वस्त्रहीन थे; और वे चर्म के कमरबंद बांधे हुए थे।

## Mosiah 10

And it came to pass that we again began to establish the kingdom and we again began to possess the land in peace. And I caused that there should be weapons of war made of every kind, that thereby I might have weapons for my people against the time the Lamanites should come up again to war against my people.

And I set guards round about the land, that the Lamanites might not come upon us again unawares and destroy us; and thus I did guard my people and my flocks, and keep them from falling into the hands of our enemies.

And it came to pass that we did inherit the land of our fathers for many years, yea, for the space of twenty and two years.

And I did cause that the men should till the ground, and raise all manner of grain and all manner of fruit of every kind.

And I did cause that the women should spin, and toil, and work, and work all manner of fine linen, yea, and cloth of every kind, that we might clothe our nakedness; and thus we did prosper in the land—thus we did have continual peace in the land for the space of twenty and two years.

And it came to pass that king Laman died, and his son began to reign in his stead. And he began to stir his people up in rebellion against my people; therefore they began to prepare for war, and to come up to battle against my people.

But I had sent my spies out round about the land of Shemlon, that I might discover their preparations, that I might guard against them, that they might not come upon my people and destroy them.

And it came to pass that they came up upon the north of the land of Shilom, with their numerous hosts, men armed with bows, and with arrows, and with swords, and with cimeters, and with stones, and with slings; and they had their heads shaved that they were naked; and they were girded with a leathern girdle about their loins.

- 9 और ऐसा हुआ कि मैंने अपने लोगों की स्त्रियों और बच्चों को निर्जन प्रदेश में छिपा दिया और अपने सभी नौजवानों और उन वृद्धों को जो हथियार चला सकते थे, एकत्रित करके युद्ध में चलने की आज्ञा दी; और मैंने हर एक को उनकी आयु के अनुसार नियुक्त किया ।
- 10 और ऐसा हुआ कि प्रभु के बल से बलशाली होकर हमने लमनाइयों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए प्रस्थान किया और यहां तक कि इस वृद्धा-अवस्था में भी मैं स्वयं युद्ध में भाग लेने के लिए चला ।
- 11 अब, लमनाइयों को प्रभु और उसके बल के विषय में कोई जानकारी नहीं थी इसलिए वे स्वयं अपने ही बल पर आश्रित थे । फिर भी मनुष्य की दृष्टि से वे बलवान लोग थे ।
- 12 वे जंगली, क्रूर, और रक्त के प्यासे लोग थे जो अपने पूर्वजों की परंपराओं में विश्वास करते थे, जो इस प्रकार—विश्वास करते थे कि वे अपने पूर्वजों के पापों के कारण यरूशलेम देश से निकाले गए, निर्जन प्रदेश में अपने भाइयों द्वारा छले गए, और सागर को पार करते समय भी उनके साथ छल किया गया ।
- 13 और फिर, कि जब वे सागर को पार करके अपने प्रथम पैतृक प्रदेश में आए, तब उनके साथ विश्वासघात किया गया, और यह सब नफी द्वारा प्रभु की आज्ञाओं का पालन अधिक सच्चाई के साथ करने के कारण ही हुआ—इसलिए वह प्रभु का प्यारा था क्योंकि प्रभु ने उसकी आज्ञाओं को सुना और उनका उत्तर दिया, और उसने निर्जन प्रदेश में उनकी यात्राओं की अगुवाई की ।
- 14 और उसके भाई उस पर क्रोधित इसलिए हुए कि वे प्रभु के व्यवहार से अनजान थे; वे सागर में इसलिए भी उस पर क्रोधित हुए थे क्योंकि उन्होंने प्रभु के विरुद्ध अपने हृदयों को कठोर बना लिया था ।
- 15 और फिर, उस पर वे इसलिए क्रोधित हुए जब वे प्रतिज्ञा के प्रदेश में पहुंचे, क्योंकि उनके अनुसार उसने उनके हाथों से शासन का अधिकार ले लिया था; और वे उसको मार डालना चाहते थे ।
- 16 और फिर, वे उस पर क्रोधित हुए क्योंकि वह प्रभु की आज्ञा के अनुसार उन अभिलेखों को लेकर निर्जन प्रदेश में चला गया जो पीतल की पट्टियों पर खुदे हुए थे; क्योंकि वे कहते थे कि उसने उनको लूट लिया था ।

And it came to pass that I caused that the women and children of my people should be hid in the wilderness; and I also caused that all my old men that could bear arms, and also all my young men that were able to bear arms, should gather themselves together to go to battle against the Lamanites; and I did place them in their ranks, every man according to his age.

And it came to pass that we did go up to battle against the Lamanites; and I, even I, in my old age, did go up to battle against the Lamanites. And it came to pass that we did go up in the strength of the Lord to battle.

Now, the Lamanites knew nothing concerning the Lord, nor the strength of the Lord, therefore they depended upon their own strength. Yet they were a strong people, as to the strength of men.

They were a wild, and ferocious, and a blood-thirsty people, believing in the tradition of their fathers, which is this—Believing that they were driven out of the land of Jerusalem because of the iniquities of their fathers, and that they were wronged in the wilderness by their brethren, and they were also wronged while crossing the sea;

And again, that they were wronged while in the land of their first inheritance, after they had crossed the sea, and all this because that Nephi was more faithful in keeping the commandments of the Lord—therefore he was favored of the Lord, for the Lord heard his prayers and answered them, and he took the lead of their journey in the wilderness.

And his brethren were wroth with him because they understood not the dealings of the Lord; they were also wroth with him upon the waters because they hardened their hearts against the Lord.

And again, they were wroth with him when they had arrived in the promised land, because they said that he had taken the ruling of the people out of their hands; and they sought to kill him.

And again, they were wroth with him because he departed into the wilderness as the Lord had commanded him, and took the records which were engraven on the plates of brass, for they said that he robbed them.

- 17 और इस प्रकार उन्होंने अपने बच्चों को शिक्षा दी जिससे वे उनसे घृणा करें, उनकी हत्या करें, उनको लूटें और उनको नष्ट करने के लिए सब कुछ करें; इसलिए नफी की संतान के प्रति उनके हृदयों में अंतहीन घृणा है ।
- 18 इसी उद्देश्य से राजा लमान ने चालाकी, झूठ, छल, और प्रतिज्ञाओं द्वारा मुझे धोखा दिया कि मैं अपने लोगों को इस प्रदेश में लाया, कि वे हमें नष्ट कर सकें; हां, और हम इतने वर्षों से इस प्रदेश में कष्ट झेलते रहे हैं ।
- 19 और अब मैं, जीनिफ, ने अपने लोगों को लमनायाटियों के विषय में इन सभी बातों को बताने के पश्चात्, उन्हें प्रभु पर विश्वास करके अपनी पूरी शक्ति से उनके विरुद्ध युद्ध करने के लिए उत्साहित किया; इसलिए हमने आमने-सामने उनसे सघर्ष किया ।
- 20 और ऐसा हुआ कि हमने फिर से उन्हें अपने प्रदेश से बाहर निकाल दिया; और हमने उनके सैनिकों को इतनी बड़ी संख्या में मारा कि हम उनकी गिनती नहीं कर पाए ।
- 21 और ऐसा हुआ कि हम फिर से अपने प्रदेश को लौट आए, और मेरे लोगों ने फिर से अपने जानवरों की देखभाल शुरू कर दी, और अपने खेतों में हल चलाया ।
- 22 और अब, मैंने वृद्ध होने के कारण, अपने राज्य को अपने बेटों में से एक को प्रदान कर दिया; इसलिए अब मैं और कुछ नहीं कहता । और प्रभु मेरे लोगों को आशीष दे । आमीन ।

And thus they have taught their children that they should hate them, and that they should murder them, and that they should rob and plunder them, and do all they could to destroy them; therefore they have an eternal hatred towards the children of Nephi.

For this very cause has king Laman, by his cunning, and lying craftiness, and his fair promises, deceived me, that I have brought this my people up into this land, that they may destroy them; yea, and we have suffered these many years in the land.

And now I, Zeniff, after having told all these things unto my people concerning the Lamanites, I did stimulate them to go to battle with their might, putting their trust in the Lord; therefore, we did contend with them, face to face.

And it came to pass that we did drive them again out of our land; and we slew them with a great slaughter, even so many that we did not number them.

And it came to pass that we returned again to our own land, and my people again began to tend their flocks, and to till their ground.

And now I, being old, did confer the kingdom upon one of my sons; therefore, I say no more. And may the Lord bless my people. Amen.

## मुसायाह 11

- 1 और अब ऐसा हुआ कि जैनिफ, अपने बेटों में से एक, नूह को राज्य प्रदान कर देता है; इसलिए नूह उसके स्थान पर शासन करने लगता है और वह अपने पिता के मार्ग पर नहीं चलता ।
- 2 क्योंकि देखो, वह परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करता, लेकिन वह अपनी मन-मर्जी करता है । और वह कई पत्नियां और रखैलों को रखता है । और वह अपने लोगों को पाप करने के लिए उकसाता, और वह करता है जो प्रभु की दृष्टि में घृणित था । हां, और वे वेश्यावृत्ति और हर प्रकार के भ्रष्ट काम करते हैं ।
- 3 और वह उनकी संपत्ति के पांचवे हिस्से का कर वसूलता है, उनके सोने और उनकी चांदी का पांचवां हिस्सा, और उनके जिफ, और उनके तांबे का, और उनके पीतल और उनके लोहे का पांचवां हिस्सा; और उनके जानवरों का पांचवां हिस्सा; और उनके सारे अनाज का भी पांचवां हिस्सा ।
- 4 और वह यह सब उसने अपने आपको, और अपनी पत्नियों और अपनी रखैलों के भरण-पोषण के लिए किया था; और अपने याजकों, और उनकी पत्नियों और उनकी रखैलों के लिए भी; इस प्रकार उसने राज्य के प्रशासन को ही बदल दिया था ।
- 5 क्योंकि उसने उन सभी याजकों को हटा दिया था जो उसके पिता द्वारा समर्पित किये गए थे, और उनके स्थान पर नए याजकों को समर्पित किया था, जो अपने हृदयों के घमंड से फूले हुए थे ।
- 6 हां, और इस प्रकार उनके आलसीपन में, और उनके मूर्तिपूजा में, और उनके व्यभिचार में, उनका समर्थन किया गया था, उन करों के द्वारा जो राजा नूह ने अपने लोगों पर लगाए थे; इस प्रकार लोग अधर्म का समर्थन करने के लिए बहुत अधिक परिश्रम करते थे ।
- 7 हां, और वे भी मूर्तिपूजक बन गए, क्योंकि उन्हें राजा और याजकों के निरर्थक और चिकनी चुपड़ी बातों से धोखा दिया गया था; क्योंकि वे उनसे बहकाने वाली बातें कहते थे ।
- 8 और ऐसा हुआ कि राजा नूह ने बहुत से शानदार और विशाल भवनों का निर्माण किया था; और उसने उन्हें लकड़ी की सुंदर कारीगरी, और सोने की, और चांदी की, और लोहे की, और पीतल की, और जिफ की, और तांबे की, और सभी प्रकार की बहुमूल्य वस्तुओं से सजाया था ।

## Mosiah 11

And now it came to pass that Zeniff conferred the kingdom upon Noah, one of his sons; therefore Noah began to reign in his stead; and he did not walk in the ways of his father.

For behold, he did not keep the commandments of God, but he did walk after the desires of his own heart. And he had many wives and concubines. And he did cause his people to commit sin, and do that which was abominable in the sight of the Lord. Yea, and they did commit whoredoms and all manner of wickedness.

And he laid a tax of one fifth part of all they possessed, a fifth part of their gold and of their silver, and a fifth part of their ziff, and of their copper, and of their brass and their iron; and a fifth part of their fatlings; and also a fifth part of all their grain.

And all this did he take to support himself, and his wives and his concubines; and also his priests, and their wives and their concubines; thus he had changed the affairs of the kingdom.

For he put down all the priests that had been consecrated by his father, and consecrated new ones in their stead, such as were lifted up in the pride of their hearts.

Yea, and thus they were supported in their laziness, and in their idolatry, and in their whoredoms, by the taxes which king Noah had put upon his people; thus did the people labor exceedingly to support iniquity.

Yea, and they also became idolatrous, because they were deceived by the vain and flattering words of the king and priests; for they did speak flattering things unto them.

And it came to pass that king Noah built many elegant and spacious buildings; and he ornamented them with fine work of wood, and of all manner of precious things, of gold, and of silver, and of iron, and of brass, and of ziff, and of copper;

- 9 और उसने अपने लिए एक विशाल महल बनवाया था, और उसके मध्य में सिंहासन रखा, जिसे पूरी तरह से शानदार लकड़ी से बना था और सोने और चांदी और मूल्यवान वस्तुओं से सजाया गया था ।
- 10 और उसने आज्ञा दी कि उसके कारीगर मंदिर की दीवारों को, लकड़ी की, और तांबे की, और पीतल की सुंदर कारीगरी से सजाएं ।
- 11 और ऐसा हुआ कि अन्य आसनों से ऊंचे आसन जो कि उच्च याजकों के लिए थे, उसने उन्हें शुद्ध सोने से सजाया; और उसने उनेक सामने एक परकोटा सा बनवाया, ताकि वह अपने शरीर और बांहों को उसके लोगों से झूठ और बेकार की बातों को बोलते समय उस पर टेक सकें ।
- 12 और ऐसा हुआ कि उसने मंदिर के निकट एक मीनार बनाई; हां, एक बहुत ऊंची मीनार, इतनी ऊंची की वह उसके ऊपर खड़ा हो सकता था और शिलोम के प्रदेश पर, और शेमलोन के प्रदेश को भी देख सकता था, जो कि लमनाइयों के कब्जे में था; और यहां तक कि वह आस-पास के सारे प्रदेश को देख सकता था ।
- 13 और ऐसा हुआ कि उसने शिलोम प्रदेश में कई भवनों का निर्माण किया; और उसने शिलोम के उत्तर में पहाड़ी पर एक विशाल मीनार को बनवाया, जोकि नफी की संतान के लिए प्रदेश से भागने के समय एक शरण स्थल था; और इस प्रकार उसने अपने लोगों से कर द्वारा प्राप्त संपत्ति का उपयोग किया था ।
- 14 और ऐसा हुआ कि उसने अपने हृदय को अपनी संपत्ति पर लगाया था, और वह अपना समय अपनी पत्नियों और रखैलों के साथ विलासता में बीताता था; और ऐसे ही उसके याजक अपना समय वेश्यों के साथ बीताते थे ।
- 15 और ऐसा हुआ कि उसने प्रदेश के आस-पास अंगूर के बगीचे लगाए; और उसने मदिरा के कुंड बनावाए, और बहुत अधिक मदिरा बनाई; और इसलिए वह और उसके लोग भी शराबी हो गए ।
- 16 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों ने उसके लोगों पर कम संख्या में धावा बोलना शुरू किया, और उनको उनके खेतों में मार डालते जब वे अपने जानवरों को चरा रहे होते थे ।

And he also built him a spacious palace, and a throne in the midst thereof, all of which was of fine wood and was ornamented with gold and silver and with precious things.

And he also caused that his workmen should work all manner of fine work within the walls of the temple, of fine wood, and of copper, and of brass.

And the seats which were set apart for the high priests, which were above all the other seats, he did ornament with pure gold; and he caused a breast-work to be built before them, that they might rest their bodies and their arms upon while they should speak lying and vain words to his people.

And it came to pass that he built a tower near the temple; yea, a very high tower, even so high that he could stand upon the top thereof and overlook the land of Shilom, and also the land of Shemlon, which was possessed by the Lamanites; and he could even look over all the land round about.

And it came to pass that he caused many buildings to be built in the land Shilom; and he caused a great tower to be built on the hill north of the land Shilom, which had been a resort for the children of Nephi at the time they fled out of the land; and thus he did do with the riches which he obtained by the taxation of his people.

And it came to pass that he placed his heart upon his riches, and he spent his time in riotous living with his wives and his concubines; and so did also his priests spend their time with harlots.

And it came to pass that he planted vineyards round about in the land; and he built wine-presses, and made wine in abundance; and therefore he became a wine-bibber, and also his people.

And it came to pass that the Lamanites began to come in upon his people, upon small numbers, and to slay them in their fields, and while they were tending their flocks.

- 17 और राजा नूह ने उन्हें दूर रखने के लिए सिपाहियों को प्रदेश के आस-पास भेजा; लेकिन उसने पर्याप्त संख्या में नहीं भेजे, और लमनाइयों ने उनके ऊपर धावा बोला और उनको मार डाला, और उनके बहुत से जानवरों को प्रदेश के बाहर खदेड़ कर ले गए; इस प्रकार लमनाइयों ने उन्हें नष्ट करना और उनके प्रति अपना द्वेष प्रकट करना आरंभ कर दिया ।
- 18 और ऐसा हुआ कि राजा नूह ने उनके विरुद्ध अपनी सेना को भेजा, और वे पीछे खदेड़ दिए गए, या उन्होंने उन्हें कुछ समय के लिए पीछे खदेड़ दिया था; इसलिए, वे उनके विनाश पर आनंद मनाते हुए लौटे ।
- 19 और अब, इस बड़ी विजय के कारण अपने हृदयों में अहंकार से फूले हुए थे; वे अपनी ताकत पर यह कहकर घमंड करने लगे थे, कि उनके पचास लमनाइयों के हजारों का सामना कर सकते हैं; इस प्रकार वे घमंड करने लगे, और रक्तपात, और अपने भाइयों के रक्त को बहाने वे आनंद मनाते लगे, और ऐसा उनके राजा और याजकों की दुष्टता के कारण हुआ था ।
- 20 और ऐसा हुआ कि उनके बीच एक पुरुष था जिसका नाम अबिनादी था; और वह उनके बीच आगे बढ़ा, और यह कहते हुए भविष्यवाणी करने लगा: देखो, प्रभु इस प्रकार कहता है, और उसने मुझे ऐसा कहकर आज्ञा दी है, आगे बढ़ो, और इन लोगों से कहो, प्रभु इस प्रकार कहता है—हाय इन लोगों पर, क्योंकि मैंने इनके घृणित कार्यों को, और इनकी दुष्टता को, और इनके व्यभिचार को देखा है; और जब तक ये पश्चाताप नहीं करते मैंने अपने क्रोध में इनके पास आऊंगा ।
- 21 और जब तक वे पश्चाताप नहीं करते और प्रभु अपने परमेश्वर के पास नहीं लौटते, देखो, मैं इन्हें इनके शत्रुओं के हाथों में सौंप दूंगा; हां, और वे गुलाम बना लिए जाएंगे; और वे अपने शत्रुओं के हाथों कष्ट उठाएंगे ।
- 22 और ऐसा होगा कि वे जानेंगे कि मैं उनका प्रभु परमेश्वर हूँ, और मैं एक ईष्यालु परमेश्वर हूँ, जो कि अपने लोगों को पापों के लिए दंड देता है ।
- 23 और ऐसा होगा कि जब यह लोग पश्चाताप नहीं करते और प्रभु अपने परमेश्वर की ओर नहीं लौटते, वे गुलाम बना लिए जाएंगे; और उन्हें कोई नहीं छुड़ाएगा, सिवाय सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर के ।
- 24 हां, और ऐसा होगा कि जब वे मुझे पुकारेंगे मैं उनकी पुकार को सुनने में देर करूंगा; हां, और मैं उन्हें उनके शत्रुओं द्वारा दंड दिलवाऊंगा ।

And king Noah sent guards round about the land to keep them off; but he did not send a sufficient number, and the Lamanites came upon them and killed them, and drove many of their flocks out of the land; thus the Lamanites began to destroy them, and to exercise their hatred upon them.

And it came to pass that king Noah sent his armies against them, and they were driven back, or they drove them back for a time; therefore, they returned rejoicing in their spoil.

And now, because of this great victory they were lifted up in the pride of their hearts; they did boast in their own strength, saying that their fifty could stand against thousands of the Lamanites; and thus they did boast, and did delight in blood, and the shedding of the blood of their brethren, and this because of the wickedness of their king and priests.

And it came to pass that there was a man among them whose name was Abinadi; and he went forth among them, and began to prophesy, saying: Behold, thus saith the Lord, and thus hath he commanded me, saying, Go forth, and say unto this people, thus saith the Lord—Wo be unto this people, for I have seen their abominations, and their wickedness, and their whoredoms; and except they repent I will visit them in mine anger.

And except they repent and turn to the Lord their God, behold, I will deliver them into the hands of their enemies; yea, and they shall be brought into bondage; and they shall be afflicted by the hand of their enemies.

And it shall come to pass that they shall know that I am the Lord their God, and am a jealous God, visiting the iniquities of my people.

And it shall come to pass that except this people repent and turn unto the Lord their God, they shall be brought into bondage; and none shall deliver them, except it be the Lord the Almighty God.

Yea, and it shall come to pass that when they shall cry unto me I will be slow to hear their cries; yea, and I will suffer them that they be smitten by their enemies.

- 25 और जब तक वे टाट और राख मल कर पश्चाताप नहीं करते, और पूरी शक्ति से प्रभु अपने परमेश्वर को नहीं पुकारते, मैं उनकी प्रार्थनाओं को नहीं सुनूंगा, न ही मैं उन्हें उनके कष्टों से बाहर निकालूंगा; और प्रभु इस प्रकार कहता है, और इस प्रकार उसने मुझे आज्ञा दी है ।
- 26 अब ऐसा हुआ कि जब अबिनादी इन शब्दों को कह चुका तो वे उस पर क्रोधित हुए, और उसको जान से मारने का प्रयास करने लगे; लेकिन प्रभु ने उसे उनके हाथों से बचाया था ।
- 27 अब राजा नूह ने उन शब्दों को सुना जो अबिनादी ने लोगों से कहे थे, वह क्रोधित हो गया; और वह बोला: अबिनादी कौन होता है, कि वह मेरा और मेरे लोगों का न्याय करे, या प्रभु कौन है, जो मेरे लोगों पर इतने घोर कष्ट लाएगा ?
- 28 मैं तुम्हें अबिनादी को यहां लाने की आज्ञा देता हूं, कि मैं उसे मार डालूं, क्योंकि उसने ये बातें बोली हैं जो कि मेरे लोगों का एक दूसरे के विरुद्ध क्रोध भड़का सकती हैं, और मेरे लोगों के बीच में विवाद पैदा कर सकती हैं; इसलिए मैं उसे मार डालूंगा ।
- 29 अब लोगों की आंखें अंधी हो गई थी; इसलिए उन्होंने अपने हृदयों को अबिनादी के शब्दों के विरुद्ध कठोर बना लिया था, और उस समय के बाद से वे उसे पकड़ने का प्रयास करने लगे । और राजा नूह ने अपने हृदय को प्रभु के वचन के विरुद्ध कठोर बना लिया था, और उसने अपने गलत कार्यों के लिए पश्चाताप नहीं किया ।

And except they repent in sackcloth and ashes, and cry mightily to the Lord their God, I will not hear their prayers, neither will I deliver them out of their afflictions; and thus saith the Lord, and thus hath he commanded me.

Now it came to pass that when Abinadi had spoken these words unto them they were wroth with him, and sought to take away his life; but the Lord delivered him out of their hands.

Now when king Noah had heard of the words which Abinadi had spoken unto the people, he was also wroth; and he said: Who is Abinadi, that I and my people should be judged of him, or who is the Lord, that shall bring upon my people such great affliction?

I command you to bring Abinadi hither, that I may slay him, for he has said these things that he might stir up my people to anger one with another, and to raise contentions among my people; therefore I will slay him.

Now the eyes of the people were blinded; therefore they hardened their hearts against the words of Abinadi, and they sought from that time forward to take him. And king Noah hardened his heart against the word of the Lord, and he did not repent of his evil doings.

## मुसायाह 12

- 1 और ऐसा हुआ कि दो वर्ष बीत जाने पर उनके बीच भेष बदल आता है, ताकि वे उसे पहचान न पाएं, और उनके बीच यह कह कहते हुए, भविष्यवाणी देना आरंभ करता है: प्रभु ने मुझे इस प्रकार कहते हुए आज्ञा दी है—अबिनादी, जाओ और मेरे इन लोगों को भविष्यवाणी बताओ, क्योंकि उन्होंने अपने हृदयों को मेरे वचनों के विरुद्ध कठोर कर लिया है; उन्होंने अपने बुरे कामों से पश्चाताप नहीं किया है; इसलिए, मैं उन्हें क्रोध से दंड दूंगा, हां, अपने भीषण क्रोध से मैं उनके पापों और घृणित कार्यों के लिए दंड दूंगा।
- 2 हां, इस पीढ़ी पर हाय ! और प्रभु ने मुझे कहा है: अपने हाथों और भविष्यवाणी को यह कहते हुए आगे बढ़ा: प्रभु इस प्रकार कहता है, ऐसा होगा कि यह पीढ़ी, अपने पापों के कारण, गुलाम बना ली जाएगी, और गालों पर थप्पड़ लगेगी; हां, और मनुष्य द्वारा खदेड़े, और मारे जाएंगे; और हवा के गिद्ध, और कुत्ते, हां, और जंगली जानवर, उनके मांस को खाएंगे।
- 3 और ऐसा होगा कि राजा नूह का जीवन का मूल्य गर्म भट्टी में जलते हुए कपड़े के समान होगा; क्योंकि वह जानेगा कि मैं प्रभु हूँ।
- 4 और ऐसा होगा कि मैं अपने इन लोगों को अत्यंत कष्टों से दंडित करूंगा, हां, अकाल और महामारी से; और मैं ऐसा करूंगा कि वे दिन भर कराहाएंगे।
- 5 हां, और मैं उनकी पीठों पर भारी बोझ लदावाऊंगा; और वे मूक गधे के समान हांके जाएंगे।
- 6 और ऐसा होगा कि मैं उन के बीच ओले बरसाऊंगा, और यह उन्हें नष्ट करेगा; और वे पुरवैया हवा द्वारा भी कष्ट झेलेंगे; और कीड़े भी उनके प्रदेश का विनाश करेंगे, और उनके अनाज को खा जाएंगे।
- 7 और उन पर बहुत भयंकर महामारी की मार होगी—और यह सब मैं उनके पापों और घृणित कार्यों के कारण करूंगा।
- 8 और ऐसा होगा कि जब तक वे पश्चाताप नहीं करते मैं उन्हें समस्त पृथ्वी से पूरी तरह से नष्ट कर दूंगा; फिर भी वे अपने पीछे एक अभिलेख छोड़ जाएंगे, और मैं इन्हें इस प्रदेश पर कब्जा करने वाले राष्ट्रों के लिए सुरक्षित रखूंगा; हां, मैं ऐसा इसलिए करूंगा ताकि मैं अन्य राष्ट्रों को इन लोगों के घृणित कार्यों को बता सकूँ। और अबिनादी ने इन लोगों के विरुद्ध अनेक बातों की भविष्यवाणी की।

## Mosiah 12

And it came to pass that after the space of two years that Abinadi came among them in disguise, that they knew him not, and began to prophesy among them, saying: Thus has the Lord commanded me, saying —Abinadi, go and prophesy unto this my people, for they have hardened their hearts against my words; they have repented not of their evil doings; therefore, I will visit them in my anger, yea, in my fierce anger will I visit them in their iniquities and abominations.

Yea, wo be unto this generation! And the Lord said unto me: Stretch forth thy hand and prophesy, saying: Thus saith the Lord, it shall come to pass that this generation, because of their iniquities, shall be brought into bondage, and shall be smitten on the cheek; yea, and shall be driven by men, and shall be slain; and the vultures of the air, and the dogs, yea, and the wild beasts, shall devour their flesh.

And it shall come to pass that the life of king Noah shall be valued even as a garment in a hot furnace; for he shall know that I am the Lord.

And it shall come to pass that I will smite this my people with sore afflictions, yea, with famine and with pestilence; and I will cause that they shall howl all the day long.

Yea, and I will cause that they shall have burdens lashed upon their backs; and they shall be driven before like a dumb ass.

And it shall come to pass that I will send forth hail among them, and it shall smite them; and they shall also be smitten with the east wind; and insects shall pester their land also, and devour their grain.

And they shall be smitten with a great pestilence—and all this will I do because of their iniquities and abominations.

And it shall come to pass that except they repent I will utterly destroy them from off the face of the earth; yet they shall leave a record behind them, and I will preserve them for other nations which shall possess the land; yea, even this will I do that I may discover the abominations of this people to other nations. And many things did Abinadi prophesy against this people.



- 9 और ऐसा हुआ कि वे उस पर क्रोधित हुए; और उन्होंने उसे पकड़ा और राजा के सामने बांध कर ले गए, और राजा से कहा: देखो, हम आपके सामने एक पुरुष को लाएं हैं जो तुम्हारे लोगों के संबंध में बुरी बातों की भविष्यवाणी कर रहा है, और कहता है कि परमेश्वर उन्हें नष्ट करेगा ।
- 10 और उसने आपके जीवन के संबंध में बुरी बात की भविष्यवाणी की है, और कहा है कि आपका जीवन आग की भट्टी में कपड़े के समान होगा ।
- 11 और फिर, वह कहता है कि आप डंठल के समान होंगे, यहां तक कि खेत की उस सूखी डंठल के समान, जो जानवरों और पैरों के नीचे कुचली जाती है ।
- 12 और फिर, वह कहता है कि आप गोखरू के फूल के समान खिलोगे, जो, पूरा पकने पर, हवा के साथ बहकर, भूमि पर गिरा दिया जाता है । और वह दावा करता है यह प्रभु ने कहा है । और वह कहता है यह सबकुछ आपके साथ आपके पापों के कारण होगा, यदि आप पश्चाताप नहीं करते हैं ।
- 13 और अब, ओ राजा, आप ने कौन सा बुरा काम किया, या आपके लोगों ने कौन से पाप किये हैं, कि हम परमेश्वर के अपराधी ठहरें या इस पुरुष द्वारा न्याय किये जाएं ?
- 14 और अब, ओ राजा, देखो, हम निर्दोष हैं, और आपने, ओ राजा, पाप नहीं किया है; इसलिए, यह पुरुष आपके संबंध में झूठ बोला है, और उसकी भविष्यवाणी व्यर्थ है ।
- 15 और देखो, हम शक्तिशाली हैं, हम गुलामी में पड़ सकते, या हमारे शत्रुओं द्वारा गुलाम नहीं बनाए जा सकते; हां, और आपने इस प्रदेश में प्रगति की है, और आप भविष्य में भी प्रगति करोगे ।
- 16 देखो, यह वह पुरुष है, हम इसे आपके हाथों में सौंपते हैं; आपके इसके साथ जो आपको उचित लगता है कर सकते हैं ।
- 17 और ऐसा हुआ कि राजा नूह ने अबिनादी को जेल में डाल दिया; और उसने आज्ञा दी कि याजक एकत्रित हों ताकि वह उनके साथ परिषद बैठा सके कि उसके साथ उसे क्या करना चाहिए ।
- 18 और ऐसा हुआ कि उन्होंने राजा से कहा: उसे यहां लाओ ताकि हम उससे प्रश्न कर सकें; और राजा ने आज्ञा दी कि वह उनके सामने लाया जाए ।

And it came to pass that they were angry with him; and they took him and carried him bound before the king, and said unto the king: Behold, we have brought a man before thee who has prophesied evil concerning thy people, and saith that God will destroy them.

And he also prophesieth evil concerning thy life, and saith that thy life shall be as a garment in a furnace of fire.

And again, he saith that thou shalt be as a stalk, even as a dry stalk of the field, which is run over by the beasts and trodden under foot.

And again, he saith thou shalt be as the blossoms of a thistle, which, when it is fully ripe, if the wind bloweth, it is driven forth upon the face of the land. And he pretendeth the Lord hath spoken it. And he saith all this shall come upon thee except thou repent, and this because of thine iniquities.

And now, O king, what great evil hast thou done, or what great sins have thy people committed, that we should be condemned of God or judged of this man?

And now, O king, behold, we are guiltless, and thou, O king, hast not sinned; therefore, this man has lied concerning you, and he has prophesied in vain.

And behold, we are strong, we shall not come into bondage, or be taken captive by our enemies; yea, and thou hast prospered in the land, and thou shalt also prosper.

Behold, here is the man, we deliver him into thy hands; thou mayest do with him as seemeth thee good.

And it came to pass that king Noah caused that Abinadi should be cast into prison; and he commanded that the priests should gather themselves together that he might hold a council with them what he should do with him.

And it came to pass that they said unto the king: Bring him hither that we may question him; and the king commanded that he should be brought before them.

- 19 और उन्होंने उससे प्रश्न पूछ आरंभ किये, कि वे उसकी बात को काट सकें, ताकि इस प्रकार वे उसे दोषी ठहरा सकें; लेकिन उसने उनका साहस से जवाब दिया, और उनके सभी प्रश्नों का सामना किया, हां, वे आश्चर्यचकित थे; क्योंकि उसने उनके सभी प्रश्नों का सामना किया था, और उन्हें उनके सभी शब्दों में उलझा दिया था ।
- 20 और ऐसा हुआ कि उनमें से एक ने उससे कहा: जो शब्द लिखे गए हैं उनका क्या अर्थ है, और जोकि हमारे पूर्वजों द्वारा, यह कहते हुए, सीखाए गए हैं:
- 21 पहाड़ों पर उसके पांव कितने सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाते हैं; जो शांति की घोषणा करते हैं; जो भलाई का शुभ समाचार लाते हैं; जो उद्धार की घोषणा करते हैं; जो सिय्योन से कहते हैं, तुम्हारा परमेश्वर राज करेगा;
- 22 तुम्हारे पहरेदार जोर से पूकारेंगे; एकसाथ स्वर मिलाकर वे गाएंगे; क्योंकि वे अपनी स्वयं की आंखों से देखेंगे जब प्रभु फिर से सिय्योन को वापस लाएगा;
- 23 खुशी से झूमो; हे यरूशलेम के खंडहरों तुम एकसाथ मिलकर गीत गाओ, क्योंकि प्रभु ने अपने लोगों को शांति दी है, उसने यरूशलेम को मुक्त करा लिया है ।
- 24 प्रभु ने राष्ट्रों के समझ अपनी पवित्र भुजाओं को प्रकट किया है, और समस्त पृथ्वी के लोग हमारे परमेश्वर के उद्धार को देखेंगे ?
- 25 और अब अबिनादी ने उनसे कहा: क्या तुम याजक हो, और इन लोगों को सीखाने, और भविष्यवाणी की आत्मा को समझाने का ढोंग करते हो, और फिर भी मुझ से जानना चाहते हो इन बातों का क्या अर्थ है ?
- 26 मैं तुम से कहता हूं, प्रभु के मार्गों को दूषित करने के लिए तुम पर हाय ! क्योंकि यदि तुमने इन बातों को समझते तो तुम उन्हें इनकी शिक्षा नहीं देते; इसलिए, तुमने प्रभु के मार्गों को दूषित किया है ।
- 27 तुमने समझने के लिए अपने हृदयों को नहीं लगाया; इसलिए, तुम बुद्धिमान नहीं हो । इसलिए, तुम इन लोगों को क्या सीखाते हो ?
- 28 और उन्होंने कहा: हम मूसा की व्यवस्था सीखाते हैं ।

And they began to question him, that they might cross him, that thereby they might have wherewith to accuse him; but he answered them boldly, and withstood all their questions, yea, to their astonishment; for he did withstand them in all their questions, and did confound them in all their words.

And it came to pass that one of them said unto him: What meaneth the words which are written, and which have been taught by our fathers, saying:

How beautiful upon the mountains are the feet of him that bringeth good tidings; that publisheth peace; that bringeth good tidings of good; that publisheth salvation; that saith unto Zion, Thy God reigneth;

Thy watchmen shall lift up the voice; with the voice together shall they sing; for they shall see eye to eye when the Lord shall bring again Zion;

Break forth into joy; sing together ye waste places of Jerusalem; for the Lord hath comforted his people, he hath redeemed Jerusalem;

The Lord hath made bare his holy arm in the eyes of all the nations, and all the ends of the earth shall see the salvation of our God?

And now Abinadi said unto them: Are you priests, and pretend to teach this people, and to understand the spirit of prophesying, and yet desire to know of me what these things mean?

I say unto you, wo be unto you for perverting the ways of the Lord! For if ye understand these things ye have not taught them; therefore, ye have perverted the ways of the Lord.

Ye have not applied your hearts to understanding; therefore, ye have not been wise. Therefore, what teach ye this people?

And they said: We teach the law of Moses.

- 29 और उसने उनसे से फिर कहा: यदि तुम मूसा की व्यवस्था सीखाते हो तो तुम उसका पालन क्यों नहीं करते ? क्यों तुम अपने हृदयों को संपत्ति पर लगाते हो ? क्यों तुम व्यभिचार करते हो और अपनी शक्ति वेश्याओं पर व्यर्थ करते हो, हां, और इन लोगों को पाप करने के लिए उकसाते हो, कि प्रभु को इन लोगों के विरुद्ध भविष्यवाणी करने के लिए मुझे भेजना पड़ा, हां, यहां तक कि इन लोगों के विरुद्ध घोर बुराई ?
- 30 क्या तुम नहीं जानते कि मैं सच्चाई बताता हूं ? हां तुम जानते हो कि मैं सच्चाई बताता हूं; और तुम्हें परमेश्वर के सामने कांपना चाहिए ।
- 31 और ऐसा होगा कि तुम्हें अपने पापों के लिए दंड मिलेगा, क्योंकि तुमने कहा कि तुम मूसा की व्यवस्था सीखाते हो । और मूसा की व्यवस्था के संबंध में तुम क्या जानते हो ? क्या मूसा की व्यवस्था के द्वारा उद्धार आ सकता है ? तुम क्या कहते हो ?
- 32 और उन्होंने जवाब दिया और कहा कि मूसा की व्यवस्था के द्वारा उद्धार अवश्य आ सकता है ।
- 33 लेकिन अब अबिनादी ने उनसे कहा: मैं जानता हूं यदि तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करोगे तुम बचाए जाओगे; हां, यदि तुम उन आज्ञाओं का पालन करते हो जो प्रभु ने मूसा को सीनै पर्वत पर, यह कहते हुए दी थी:
- 34 मैं प्रभु तुम्हारा परमेश्वर हूं, जो तुम्हें मिस्र प्रदेश से बाहर, गुलामी के घर से निकाल कर लाया है ।
- 35 तुम मेरे सिवाय किसी अन्य को परमेश्वर न मानना ।
- 36 तुम खोद कर अपने लिए कोई मूर्ति न बनाना, या न ही कोई ऐसी वस्तु जो ऊपर आकाश में, या न कोई वस्तु जो नीचे पृथ्वी पर है ।
- 37 अब अबिनादी ने उनसे कहा, क्या तुमने यह सब किया है ? मैं तुमसे कहता हूं, नहीं, तुमने नहीं किया है । और क्या तुमने इन लोगों को सीखाया है कि वे ये सब करें ? मैं तुम से कहता हूं, नहीं, तुमने नहीं सीखाया ।

And again he said unto them: If ye teach the law of Moses why do ye not keep it? Why do ye set your hearts upon riches? Why do ye commit whoredoms and spend your strength with harlots, yea, and cause this people to commit sin, that the Lord has cause to send me to prophesy against this people, yea, even a great evil against this people?

Know ye not that I speak the truth? Yea, ye know that I speak the truth; and you ought to tremble before God.

And it shall come to pass that ye shall be smitten for your iniquities, for ye have said that ye teach the law of Moses. And what know ye concerning the law of Moses? Doth salvation come by the law of Moses? What say ye?

And they answered and said that salvation did come by the law of Moses.

But now Abinadi said unto them: I know if ye keep the commandments of God ye shall be saved; yea, if ye keep the commandments which the Lord delivered unto Moses in the mount of Sinai, saying:

I am the Lord thy God, who hath brought thee out of the land of Egypt, out of the house of bondage.

Thou shalt have no other God before me.

Thou shalt not make unto thee any graven image, or any likeness of any thing in heaven above, or things which are in the earth beneath.

Now Abinadi said unto them, Have ye done all this? I say unto you, Nay, ye have not. And have ye taught this people that they should do all these things? I say unto you, Nay, ye have not.

## मुसायाह 13

- 1 और अब जब राजा ने इन बातों को सुना, उसने अपने याजकों से कहा: इस व्यक्ति को ले जाओ, और इसे मार डालो; क्योंकि हम इसके साथ क्या कर सकते हैं, यह तो पागल है।
- 2 और वे आगे बढ़े और उस पर हाथ उठाने की कोशिश की; लेकिन उसने उनका सामना किया, और उनसे कहा:
- 3 मुझे मत छूओ, क्योंकि परमेश्वर तुम्हें दंड देगा यदि तुम मुझ पर हाथ उठाते हो, क्योंकि मैंने वह संदेश नहीं दिया है जिसे देने के लिए प्रभु ने मुझे भेजा है; न ही मैंने तुम्हें वह बताया है जिसका तुमने अनुरोध किया है; इसलिए, परमेश्वर नहीं चाहेगा कि इस समय मुझे नष्ट किया जाए।
- 4 लेकिन मुझे वे आज्ञाएं पूरी करनी होंगी जो परमेश्वर ने कहीं हैं; क्योंकि मैंने तुम्हें सच्चाई बताई है इसलिए तुम मुझ पर क्रोधित हो। और फिर, क्योंकि मैंने परमेश्वर की बात को कहा है इसलिए तुम समझते हो कि मैं पागल हूँ।
- 5 अब ऐसा हुआ अबिनादी द्वारा इन शब्दों को कहने के बाद राजा नहू के लोगों ने उसे हाथ लगाने का साहस नहीं किया, क्योंकि प्रभु की आत्मा उसके ऊपर थी; और उसका चेहरा अत्याधिक तेज से दमक रहा था, जैसा कि मूसा का था जब वह सीनै पर्वत पर प्रभु के साथ बातें कर रहा था।
- 6 और उसने परमेश्वर की शक्ति और अधिकार के साथ बोला; और उसने अपनी बातें कहना जारी रखा:
- 7 तुम देखते हो कि तुम्हारे पास मुझे मारने की शक्ति नहीं है, इसलिए मैं अपना संदेश समाप्त करता हूँ। हां, और मैं देख सकता हूँ कि यह तुम्हारे हृदयों को भेद गया है क्योंकि मैं तुम्हारे पापों के संबंध तुम्हें सच्चाई बता रहा हूँ।
- 8 हां, और मेरे शब्दों ने तुम्हें आश्चर्य और अचंभे, और गुस्से से भर दिया है।
- 9 लेकिन मैं अपने संदेश को समाप्त करता हूँ; और फिर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मेरा क्या होगा, हो सकता है कि मैं बचा लिया जाऊँ।
- 10 लेकिन मैं तुम्हें यह बता देता हूँ, तुम जो कुछ भी मेरे साथ करते हो, उसके बाद जो होगा, वह उन बातों का चिन्ह और छाया होगी जो आने वाली हैं।

## Mosiah 13

And now when the king had heard these words, he said unto his priests: Away with this fellow, and slay him; for what have we to do with him, for he is mad.

And they stood forth and attempted to lay their hands on him; but he withstood them, and said unto them:

Touch me not, for God shall smite you if ye lay your hands upon me, for I have not delivered the message which the Lord sent me to deliver; neither have I told you that which ye requested that I should tell; therefore, God will not suffer that I shall be destroyed at this time.

But I must fulfil the commandments wherewith God has commanded me; and because I have told you the truth ye are angry with me. And again, because I have spoken the word of God ye have judged me that I am mad.

Now it came to pass after Abinadi had spoken these words that the people of king Noah durst not lay their hands on him, for the Spirit of the Lord was upon him; and his face shone with exceeding luster, even as Moses' did while in the mount of Sinai, while speaking with the Lord.

And he spake with power and authority from God; and he continued his words, saying:

Ye see that ye have not power to slay me, therefore I finish my message. Yea, and I perceive that it cuts you to your hearts because I tell you the truth concerning your iniquities.

Yea, and my words fill you with wonder and amazement, and with anger.

But I finish my message; and then it matters not whither I go, if it so be that I am saved.

But this much I tell you, what you do with me, after this, shall be as a type and a shadow of things which are to come.

- 11 और अब मैं तुम्हारे लिए परमेश्वर की आज्ञाओं का अंतिम भाग पढ़ता हूँ, क्योंकि मैं देखता हूँ कि वे तुम्हारे हृदयों में नहीं लिखीं हैं; मैं देखता हूँ कि तुमने अपने अधिकांश जीवन में पाप का अध्ययन किया और सीखाया ।
- 12 और अब, तुम याद रखना कि मैंने तुमसे कहा था: तुम खोद कर अपने लिए कोई मूर्ति न बनाना, या न ही उनकी समानता में ऐसी वस्तुएं बनाना जो ऊपर आकाश में, या नीचे पृथ्वी पर, या पृथ्वी पर जल के भीतर हैं ।
- 13 और फिर: तुम अपने-आपको उनके सामने न झुकाना, न उनकी सेवा करना; क्योंकि प्रभु तुम्हारा परमेश्वर ईर्ष्यालु परमेश्वर है, पिता के पाप दंड संतान को देता है, उनकी तीसरी और चौथी पीढ़ियों तक जो मुझ से नफरत करते हैं ।
- 14 और उन हजारों पर दया दिखाता है जो मुझ से प्रेम करते और मेरी आज्ञाओं का पालन करते हैं ।
- 15 तुम प्रभु अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ में न लेना; क्योंकि प्रभु उसे निदोष न ठहराएगा जो उसका नाम व्यर्थ में लेते हैं ।
- 16 विश्राम दिन को पवित्र रखने के लिए इसे याद रखना ।
- 17 तू छह दिनों तक परिश्रम करना, और अपने सभी काम करना ।
- 18 लेकिन सातवें दिन, प्रभु तुम्हारे परमेश्वर के सब्त को, तू कोई काम न करना, न तेरा बेटा, न ही तेरी बेटी, तेरा नौकर, न ही तेरी नौकरानी, न ही तेरे जानवर, न ही तेरा मेहमान जो तेरे द्वार के भीतर है;
- 19 क्योंकि छह दिनों में प्रभु स्वर्ग और पृथ्वी, और समुद्र, और हर वस्तु को जो उनमें है; इसलिए प्रभु ने विश्राम दिन को आशीषित किया, और इसे पवित्र ठहराया ।
- 20 अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, ताकि तुम्हारा जीवन उस भूमि पर जो प्रभु तेरा परमेश्वर तुझे देता है लंबे हों ।
- 21 तू हत्या न करना ।
- 22 तू व्यभिचार न करना । तुम चोरी न करना ।
- 23 तू अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना ।
- 24 तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना, तू अपने पड़ोसी की पत्नी का लालच न करना, न ही उसकी नौकरानी का, न ही उसके नौकर का, न ही उसके बैल का, न ही उसके गधे का लालच करना, न ही अपने पड़ोसी की किसी वस्तु का लालच करना ।

And now I read unto you the remainder of the commandments of God, for I perceive that they are not written in your hearts; I perceive that ye have studied and taught iniquity the most part of your lives.

And now, ye remember that I said unto you: Thou shalt not make unto thee any graven image, or any likeness of things which are in heaven above, or which are in the earth beneath, or which are in the water under the earth.

And again: Thou shalt not bow down thyself unto them, nor serve them; for I the Lord thy God am a jealous God, visiting the iniquities of the fathers upon the children, unto the third and fourth generations of them that hate me;

And showing mercy unto thousands of them that love me and keep my commandments.

Thou shalt not take the name of the Lord thy God in vain; for the Lord will not hold him guiltless that taketh his name in vain.

Remember the sabbath day, to keep it holy.

Six days shalt thou labor, and do all thy work;

But the seventh day, the sabbath of the Lord thy God, thou shalt not do any work, thou, nor thy son, nor thy daughter, thy man-servant, nor thy maid-servant, nor thy cattle, nor thy stranger that is within thy gates;

For in six days the Lord made heaven and earth, and the sea, and all that in them is; wherefore the Lord blessed the sabbath day, and hallowed it.

Honor thy father and thy mother, that thy days may be long upon the land which the Lord thy God giveth thee.

Thou shalt not kill.

Thou shalt not commit adultery. Thou shalt not steal.

Thou shalt not bear false witness against thy neighbor.

Thou shalt not covet thy neighbor's house, thou shalt not covet thy neighbor's wife, nor his man-servant, nor his maid-servant, nor his ox, nor his ass, nor anything that is thy neighbor's.

- 25 और ऐसा हुआ कि अबिनादी के यह सब बातें कहने के बाद उसने उनसे कहा: क्या तुमने इन लोगों को सीखाया है कि इन आज्ञाओं का पालन करने के लिए उन्हें इन सब बातों को मानना चाहिए ?
- 26 मैं तुम से कहता हूँ, नहीं; क्योंकि यदि तुम ऐसा करते, तो प्रभु इन लोगों की बुराई के संबंध में भविष्यवाणी करने के लिए मुझे न भेजता ।
- 27 और अब तुम कहते हो कि उद्धार मूसा की व्यवस्था के द्वारा आता है । मैं तुम से कहता हूँ कि यह जरूरी है कि तुम अभी मूसा की व्यवस्था का पालन करो; लेकिन मैं तुम से कहता हूँ, कि समय आएगा जब मूसा की व्यवस्था का पालन करना जरूरी नहीं होगा ।
- 28 और इसके अलावा, मैं तुम से कहता हूँ, कि उद्धार मात्र व्यवस्था द्वारा नहीं आता है; और क्या यह प्रायश्चित्त नहीं है, जिसे परमेश्वर, मूसा की व्यवस्था के बावजूद, स्वयं अपने लोगों के पापों और अपराधों के लिए उपलब्ध करवाएगा, वरना वे अवश्य ही नष्ट हो जाएंगे ।
- 29 और अब मैं तुम से कहता हूँ कि यह जरूरी था कि इस्राएल की संतान को व्यवस्था दी जाती, हां, यहां तक कि बहुत कठोर व्यवस्था; क्योंकि हठी लोग थे, अपराध करने में तेज, और प्रभु अपने परमेश्वर को याद रखने में धीमे;
- 30 इसलिए उन्हें एक व्यवस्था दी गई, हां, काम करने और विधियों की व्यवस्था, एक ऐसी व्यवस्था जिसका उन्हें, परमेश्वर और उसके प्रति अपने कर्तव्य को याद करने के लिए, प्रतिदिन कड़ाई से पालन करना था,
- 31 लेकिन देखो, मैं तुम से कहता हूँ, कि यह सब बातें उन बातों के चिन्ह हैं जो होने वाली हैं ।
- 32 और अब, क्या उन्होंने व्यवस्था को समझा था? मैं तुम से कहता हूँ, नहीं, उन सबने व्यवस्था को नहीं समझा था; और यह उनके हृदय की कठोरता के कारण; क्योंकि वे नहीं समझते थे कि कोई भी मनुष्य बिना परमेश्वर की मुक्ति के बचाया नहीं जा सकता है ।
- 33 क्योंकि देखो, क्या मूसा ने उन्हें मसीहा के आने के संबंध में भविष्यवाणी की थी, और कि परमेश्वर अपने लोगों को मुक्त करेगा ? हां, और यहां तक कि सभी भविष्यवक्ताओं ने जिन्होंने संसार के आरंभ से भविष्यवाणी की थी—उन्होंने इन बातों के संबंध में नहीं बोला या कम बोला है ?
- 34 क्या उन्होंने नहीं कहा था कि परमेश्वर स्वयं मानव संतान के बीच नीचे आएगा, और मनुष्य का रूप अपने ऊपर धारण करेगा, और अत्याधिक शक्ति के साथ पृथ्वी पर आएगा ?

And it came to pass that after Abinadi had made an end of these sayings that he said unto them: Have ye taught this people that they should observe to do all these things for to keep these commandments?

I say unto you, Nay; for if ye had, the Lord would not have caused me to come forth and to prophesy evil concerning this people.

And now ye have said that salvation cometh by the law of Moses. I say unto you that it is expedient that ye should keep the law of Moses as yet; but I say unto you, that the time shall come when it shall no more be expedient to keep the law of Moses.

And moreover, I say unto you, that salvation doth not come by the law alone; and were it not for the atonement, which God himself shall make for the sins and iniquities of his people, that they must unavoidably perish, notwithstanding the law of Moses.

And now I say unto you that it was expedient that there should be a law given to the children of Israel, yea, even a very strict law; for they were a stiffnecked people, quick to do iniquity, and slow to remember the Lord their God;

Therefore there was a law given them, yea, a law of performances and of ordinances, a law which they were to observe strictly from day to day, to keep them in remembrance of God and their duty towards him.

But behold, I say unto you, that all these things were types of things to come.

And now, did they understand the law? I say unto you, Nay, they did not all understand the law; and this because of the hardness of their hearts; for they understood not that there could not any man be saved except it were through the redemption of God.

For behold, did not Moses prophesy unto them concerning the coming of the Messiah, and that God should redeem his people? Yea, and even all the prophets who have prophesied ever since the world began—have they not spoken more or less concerning these things?

Have they not said that God himself should come down among the children of men, and take upon him the form of man, and go forth in mighty power upon the face of the earth?

35 हां, और क्या उन्होंने यह भी नहीं कहा था कि वह मृतक के लिए पुनरुत्थान संभव करेगा, और कि वह, स्वयं, कुचला जाएगा और कष्ट उठाएगा ?

Yea, and have they not said also that he should bring to pass the resurrection of the dead, and that he, himself, should be oppressed and afflicted?

## मुसायाह 14

- 1 हां, क्या यशायाह ये नहीं कहता है: हमारे विवरण पर किसने विश्वास किया, और किस पर प्रभु की भुजा प्रकट हुई थी ?
- 2 क्योंकि वह उसके समाने एक नाजूक पौधे के समान विकसित होगा, और जिसकी जड़ सूखी भूमि पर है; उसके पास किसी तरह की सुंदरता नहीं है; और जब हम उसे देखेंगे उसमें ऐसा कोई आकर्षण नहीं होगा कि हम उसे चाहें ।
- 3 उसे मनुष्यों द्वारा तुच्छ और बहिष्कृत किया गया; एक शोकित पुरुष, और दुखों को जानता है; और हमने अपने मुंह उससे फेर लिए; वह तुच्छ समझा गया, और हमने उसका आदर नहीं किया ।
- 4 अवश्य ही उसने हमारे दुखों को सह लिया था, और हमारे दुखों को उठा लिया था; फिर भी हमने उसे परमेश्वर द्वारा पीड़ित, दंडित, और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा ।
- 5 लेकिन वह हमारे उल्लंघनों के लिए घायल किया, वह हमारे अपराधों के लिए कुचला गया; हमारी शांति का दंड उसके ऊपर था; और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए थे ।
- 6 हम सब, भेड़ों के समान, भटक गए हैं; हम सब अपने अपने मार्ग पर चल लगे; और प्रभु ने हम सबों के अपराधों का बोझ अपने ऊपर ले लिया ।
- 7 वह सताया गया, और वह पीड़ित किया गया, फिर भी उसने अपना मुंह नहीं खोला; उसे वध करने के लिए मेमने के समान लाया गया, और उस भेड़ के समान उसने अपना मुंह नहीं खोला जो अपना ऊन कतरने वाले सामने चुप रहती है ।
- 8 वह कारागार से लाया गया और न्याय से वंचित रखा गया; और कौन उसकी पीढ़ी की घोषणा करेगा ? क्योंकि उसे जीवितों की भूमि से अलग कर दिया गया; क्योंकि मेरे लोगों के उल्लंघनों के कारण वह पीड़ित हुआ था ।
- 9 और वह दुष्टों के बीच मरा, और धनवान की कब्र में उसे दफनाया गया; क्योंकि उसने कोई बुराई नहीं की थी, न ही अपने मुंह से कोई छल किया था ।
- 10 फिर भी प्रभु को यह अच्छा लगा कि घायल करे; उसने उसे कष्ट दिए; जब तुम पाप के लिए उसके प्राण की भेंट दोगे वह अपने वंश को देखेगा, वह समय को बढ़ाएगा, और प्रभु की इच्छा उसके हाथों में समृद्ध होगी ।
- 11 वह अपने प्राण के घोर कष्ट को देखेगा, और संतुष्ट होगा; उसके ज्ञान के द्वारा मेरा धार्मिक सेवक कई का न्याय करेगा; क्योंकि वह उनके अपराधों को सहेगा ।

## Mosiah 14

Yea, even doth not Isaiah say: Who hath believed our report, and to whom is the arm of the Lord revealed?

For he shall grow up before him as a tender plant, and as a root out of dry ground; he hath no form nor comeliness; and when we shall see him there is no beauty that we should desire him.

He is despised and rejected of men; a man of sorrows, and acquainted with grief; and we hid as it were our faces from him; he was despised, and we esteemed him not.

Surely he has borne our griefs, and carried our sorrows; yet we did esteem him stricken, smitten of God, and afflicted.

But he was wounded for our transgressions, he was bruised for our iniquities; the chastisement of our peace was upon him; and with his stripes we are healed.

All we, like sheep, have gone astray; we have turned every one to his own way; and the Lord hath laid on him the iniquities of us all.

He was oppressed, and he was afflicted, yet he opened not his mouth; he is brought as a lamb to the slaughter, and as a sheep before her shearers is dumb so he opened not his mouth.

He was taken from prison and from judgment; and who shall declare his generation? For he was cut off out of the land of the living; for the transgressions of my people was he stricken.

And he made his grave with the wicked, and with the rich in his death; because he had done no evil, neither was any deceit in his mouth.

Yet it pleased the Lord to bruise him; he hath put him to grief; when thou shalt make his soul an offering for sin he shall see his seed, he shall prolong his days, and the pleasure of the Lord shall prosper in his hand.

He shall see the travail of his soul, and shall be satisfied; by his knowledge shall my righteous servant justify many; for he shall bear their iniquities.



12 इसलिये मैं महान लोगों के साथ उसे एक भाग दूंगा, और वह संपत्ति सर्मथ लोगों के साथ बांटेगा; क्योंकि उसने अपने प्राण मृत्यु पर न्यौछावर कर दिए हैं; और अपराधियों के साथ उसकी गिनती की गई; और उसने बहुतों के पापों को सहा, और अपराध करने वालों के लिए मध्यस्थ बना ।

Therefore will I divide him a portion with the great, and he shall divide the spoil with the strong; because he hath poured out his soul unto death; and he was numbered with the transgressors; and he bore the sins of many, and made intercession for the transgressors.

## मुसायाह 15

- 1 और अब अबिनादी ने उनसे कहा: मैं चाहता हूँ कि तुम यह समझो कि स्वयं परमेश्वर मानव संतान के बीच नीचे आएगा, और अपने लोगों को मुक्त करेगा।
- 2 और शरीर में रहने के कारण वह परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा, और पिता की इच्छा के अनुसार शरीर के अधीन होने से, पिता और पुत्र दोनों हैं—
- 3 पिता, क्योंकि वह परमेश्वर की शक्ति से गर्भ में आया; और पुत्र, शरीर के कारण; इस प्रकार वह पिता और पुत्र हुआ—
- 4 और वे एक ही परमेश्वर हैं, हां, वही स्वर्ग और पृथ्वी का अनंत पिता।
- 5 और इस प्रकार शरीर आत्मा के अधीन हुआ, यानि एक परमेश्वर होकर, पिता का पुत्र, प्रलोभन को सहता है, और प्रलोभन से हार नहीं मानता, लेकिन स्वयं अपने ही लोगों के द्वारा उसका मजाक उड़ाया जाता है, और कष्ट दिया जाता है, और अस्वीकार किया जाता है।
- 6 और मानव संतान के बीच में बड़े-बड़े चमत्कार करने के बाद, उसे, यशायाह के वचन के अनुसार, जैसे भेड़ ऊन कतरने के समय चुप रहती है, उसी प्रकार उसे ले जाया जाएगा और वह अपना मुंह नहीं खोलेगा।
- 7 हां, उसी प्रकार वह ले जाया जाएगा, क्रूस पर चढ़ाया जाएगा, और मारा जाएगा, शरीर मृत्यु के अधीन हो जाएगा, और पुत्र की इच्छा पिता की इच्छा में समा जाएगी।
- 8 और इस प्रकार परमेश्वर मृत्यु की जंजीर को तोड़ता है, मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हुए; पुत्र को मानव संतान के लिए मध्यस्थ बनने का अधिकार देता है।
- 9 स्वर्ग में ऊपर उठाए जाने पर, मानव संतान के लिए करुणा से भरा हुआ दया का प्याला लेकर, न्याय और उनके मध्य खड़े होकर; मृत्यु की जंजीर को तोड़ कर, अपने ऊपर मनुष्य के पापों और अपराधों को लेकर, उन्हें मुक्त किया, और न्याय की मांगों को पूरा किया।
- 10 और अब मैं तुमसे कहता हूँ कि उसकी पीढ़ी को घोषणा कौन करेगा? देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि पापों के लिए जब उसके प्राणों की भेंट चढ़ाई जाएगी तब वह अपने वंश को देखेगा। और अब तुम क्या कहते हो? और उसके वंश कौन होंगे?

## Mosiah 15

And now Abinadi said unto them: I would that ye should understand that God himself shall come down among the children of men, and shall redeem his people.

And because he dwelleth in flesh he shall be called the Son of God, and having subjected the flesh to the will of the Father, being the Father and the Son—

The Father, because he was conceived by the power of God; and the Son, because of the flesh; thus becoming the Father and Son—

And they are one God, yea, the very Eternal Father of heaven and of earth.

And thus the flesh becoming subject to the Spirit, or the Son to the Father, being one God, suffereth temptation, and yieldeth not to the temptation, but suffereth himself to be mocked, and scourged, and cast out, and disowned by his people.

And after all this, after working many mighty miracles among the children of men, he shall be led, yea, even as Isaiah said, as a sheep before the shearer is dumb, so he opened not his mouth.

Yea, even so he shall be led, crucified, and slain, the flesh becoming subject even unto death, the will of the Son being swallowed up in the will of the Father.

And thus God breaketh the bands of death, having gained the victory over death; giving the Son power to make intercession for the children of men—

Having ascended into heaven, having the bowels of mercy; being filled with compassion towards the children of men; standing betwixt them and justice; having broken the bands of death, taken upon himself their iniquity and their transgressions, having redeemed them, and satisfied the demands of justice.

And now I say unto you, who shall declare his generation? Behold, I say unto you, that when his soul has been made an offering for sin he shall see his seed. And now what say ye? And who shall be his seed?

- 11 सुनो, मैं तुमसे कहता हूँ कि जिन्होंने भविष्यवक्ताओं के शब्दों को सुना है, हां, उन सभी पवित्र भविष्यवक्ता जिन्होंने प्रभु के आने के संबंध में भविष्यवाणी की है—मैं तुम से कहता हूँ, कि वे सभी जिन्होंने उनके शब्दों पर ध्यान दिया है, और विश्वास किया है कि प्रभु अपने लोगों को मुक्त करेगा, और जो अपने पापों को क्षमा किये जाने वाले दिन की प्रतीक्षा में है, तब, मैं तुमसे कहता हूँ कि वे उसके वंश हैं, या वे परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी होंगे ।
- 12 क्योंकि यही वे लोग हैं जिनके पापों के बोझ को उसने उठाया; यही वे लोग हैं, जिनको अपराधों से मुक्त करने के लिए वह मरा । और अब, क्या वे उसके वंश नहीं हैं ?
- 13 हां, और क्या वह प्रत्येक भविष्यवक्ता, जिसने भविष्यवाणी करने के लिए अपना मुंह खोला, कि अपराधों से पतित नहीं हुआ, मेरा अर्थ उन सभी पवित्र भविष्यवक्ताओं से है जो संसार के आरंभ से हुए हैं ? मैं तुमसे कहता हूँ कि वे उसके वंश हैं ।
- 14 और यही वे हैं जिन्होंने शांति की घोषणा की, जो आनंद का सुसमाचार लाए, जिन्होंने उद्धार की घोषणा की, और सिय्योन से कहा: तुम्हारा परमेश्वर राज कर रहा है !
- 15 और ओह पहाड़ों पर उनके पांव कितने सुहावने लगते हैं !
- 16 और फिर, पहाड़ों पर उनके पांव कितने सुहावने लगते हैं जोकि अभी भी शांति की घोषणा करते हैं !
- 17 और फिर, पहाड़ों पर उनके पांव कितने सुहावने लगते हैं जो इस के बाद भी शांति की घोषणा करते रहेंगे, हां, इस समय से आगे और हमेशा के लिए !
- 18 और देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, यही सब कुछ नहीं है । क्योंकि ओह पहाड़ों पर उसके पांव कितने सुहावने हैं जो सुसमाचार लाता है, जो शांति का संस्थापक है, हां, यहां तक कि वह प्रभु, जिन्होंने अपने लोगों को मुक्ति दिलाई है; हां, वह जिन्होंने अपने लोगों को उद्धार दिया है ।
- 19 क्योंकि यदि वह मुक्ति नहीं होती जो उसने अपने लोगों के बनाई थी, जिसे संसार के आरंभ से तैयार किया गया था, मैं तुमसे कहता हूँ, यदि ऐसा नहीं होता, तो सारी मानवजाति नष्ट हो जाती ।
- 20 लेकिन देखो, मृत्यु की जंजीर तोड़ दी जाएगी और पुत्र राज करेगा, और मृतकों पर अधिकार होगा; इसलिए, वह मृतक का पुनरुत्थान संभव करेगा ।

Behold I say unto you, that whosoever has heard the words of the prophets, yea, all the holy prophets who have prophesied concerning the coming of the Lord—I say unto you, that all those who have hearkened unto their words, and believed that the Lord would redeem his people, and have looked forward to that day for a remission of their sins, I say unto you, that these are his seed, or they are the heirs of the kingdom of God.

For these are they whose sins he has borne; these are they for whom he has died, to redeem them from their transgressions. And now, are they not his seed?

Yea, and are not the prophets, every one that has opened his mouth to prophesy, that has not fallen into transgression, I mean all the holy prophets ever since the world began? I say unto you that they are his seed.

And these are they who have published peace, who have brought good tidings of good, who have published salvation; and said unto Zion: Thy God reigneth!

And O how beautiful upon the mountains were their feet!

And again, how beautiful upon the mountains are the feet of those that are still publishing peace!

And again, how beautiful upon the mountains are the feet of those who shall hereafter publish peace, yea, from this time henceforth and forever!

And behold, I say unto you, this is not all. For O how beautiful upon the mountains are the feet of him that bringeth good tidings, that is the founder of peace, yea, even the Lord, who has redeemed his people; yea, him who has granted salvation unto his people;

For were it not for the redemption which he hath made for his people, which was prepared from the foundation of the world, I say unto you, were it not for this, all mankind must have perished.

But behold, the bands of death shall be broken, and the Son reigneth, and hath power over the dead; therefore, he bringeth to pass the resurrection of the dead.

- 21 और फिर आएगा पुनरुत्थान; यहां तक कि प्रथम पुनरुत्थान; हां, उनका भी पुनरुत्थान जो पहले थे, और जो वर्तमान में हैं, और जो मसीह के पुनरुत्थान होने के समय तक रहेंगे—क्योंकि वह इसी नाम से पुकारा जाएगा ।
- 22 और अब, सभी भविष्यवक्ताओं का पुनरुत्थान, और वे सभी जो उनके शब्दों पर विश्वास करते, या वे सभी जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, प्रथम पुनरुत्थान में जी उठेंगे; इसलिए, वे प्रथम पुनरुत्थान हैं ।
- 23 उन्हें ऊपर उस परमेश्वर के साथ रहने के लिए ले जाया जाएगा जिसने कि उन्हें मुक्त किया; इस प्रकार उन्हें मसीह के द्वारा अनंत जीवन मिलता है, जिसने मृत्यु की जंजीर को तोड़ दिया है ।
- 24 और ये वे लोग हैं जो प्रथम पुनरुत्थान के भाग हैं; और ये वे हैं जो मसीह के आने से पूर्व अपनी अज्ञानता में मर चुके हैं और जिनके उद्धार की घोषणा नहीं की गई है । और इस प्रकार प्रभु इनकी पुनः-स्थापना को लाता है; और वे प्रथम पुनरुत्थान में भाग लेते हैं, या अनंत जीवन पाते हैं, प्रभु द्वारा मुक्ति पाकर ।
- 25 और छोटे बच्चों को भी अनंत जीवन मिलता है ।
- 26 लेकिन देखो, और भय खाओ, और परमेश्वर के सामने कांपो, क्योंकि तुम्हें कांपना चाहिए; क्योंकि प्रभु उनमें से किसी को भी मुक्त नहीं करता जो उसके विरुद्ध विद्रोह करते और अपने पापों में मरते हैं; हां, यहां तक कि जब से संसार का आरंभ हुआ तब से वे सब जो अपने पाप में नष्ट हुए हैं, जिन्होंने जानबूझ कर परमेश्वर का विरोध किया, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को जानते थे, और फिर भी उनका पालन नहीं किया; यही वे लोग हैं जिनकी प्रथम पुनरुत्थान में कोई भागीदारी नहीं है ।
- 27 इसलिए क्या तुम्हें कांपना नहीं चाहिए ? क्योंकि ऐसे लोगों का उद्धार नहीं होता; क्योंकि प्रभु ने ऐसे किसी भी व्यक्ति को मुक्ति नहीं दी; हां, न ही ऐसे किसी को प्रभु मुक्त कर सकता है; क्योंकि वह अपनी व्यवस्था के विरुद्ध नहीं चल सकता; क्योंकि वह न्याय की मांग को नहीं ठुकरा सकता ।
- 28 और अब मैं तुमसे कहता हूँ कि वह समय आएगा जबकि प्रभु के उद्धार की घोषणा हर एक राष्ट्र, जाति, भाषा, और लोगों में की जाएगी ।
- 29 हां, प्रभु, तुम्हारे पहरेदार जोर से पुकारेंगे; वे एक साथ जयजयकार करेंगे; क्योंकि वे अपनी आंखों से देखेंगे, जब प्रभु फिर से सियोन को लाएगा ।

And there cometh a resurrection, even a first resurrection; yea, even a resurrection of those that have been, and who are, and who shall be, even until the resurrection of Christ—for so shall he be called.

And now, the resurrection of all the prophets, and all those that have believed in their words, or all those that have kept the commandments of God, shall come forth in the first resurrection; therefore, they are the first resurrection.

They are raised to dwell with God who has redeemed them; thus they have eternal life through Christ, who has broken the bands of death.

And these are those who have part in the first resurrection; and these are they that have died before Christ came, in their ignorance, not having salvation declared unto them. And thus the Lord bringeth about the restoration of these; and they have a part in the first resurrection, or have eternal life, being redeemed by the Lord.

And little children also have eternal life.

But behold, and fear, and tremble before God, for ye ought to tremble; for the Lord redeemeth none such that rebel against him and die in their sins; yea, even all those that have perished in their sins ever since the world began, that have wilfully rebelled against God, that have known the commandments of God, and would not keep them; these are they that have no part in the first resurrection.

Therefore ought ye not to tremble? For salvation cometh to none such; for the Lord hath redeemed none such; yea, neither can the Lord redeem such; for he cannot deny himself; for he cannot deny justice when it has its claim.

And now I say unto you that the time shall come that the salvation of the Lord shall be declared to every nation, kindred, tongue, and people.

Yea, Lord, thy watchmen shall lift up their voice; with the voice together shall they sing; for they shall see eye to eye, when the Lord shall bring again Zion.

- 30 एक साथ आनंद में आकर, जयजयकार करो, हे यरूशलेम के खण्डहरों; क्योंकि प्रभु ने अपने लोगों को दिलासा दी है, उसने यरूशलेम को मुक्त किया है ।
- 31 प्रभु ने राष्ट्रों की आंखों के सामने अपनी पवित्र भुजा प्रकट की है; और संपूर्ण पृथ्वी हमारे परमेश्वर के उद्धार को देखेगी ।

Break forth into joy, sing together, ye waste places of Jerusalem; for the Lord hath comforted his people, he hath redeemed Jerusalem.

The Lord hath made bare his holy arm in the eyes of all the nations; and all the ends of the earth shall see the salvation of our God.

## मुसायाह 16

- 1 और अब, ऐसा हुआ कि अबिनादी ने जब इन बातों को कह लिया तब उन्होंने अपने हाथ आगे फैलाए और बोला: वह समय आएगा जब कि सब प्रभु के उद्धार को देखेंगे; जब सभी राष्ट्र, जाति, भाषा, और लोग अपनी आंखों से देखेंगे और परमेश्वर के समक्ष यह अंगीकार करेंगे कि उसका न्याय उचित है।
- 2 और तब दुष्टों को निकाल बाहर किया जाएगा, और उनके चिल्लाने, और रोने, और विलाप करने, और दांत पीसने का कारण होगा; और ऐसा इसलिए होगा क्योंकि उन्होंने प्रभु की वाणी पर ध्यान नहीं दिया; इसलिए प्रभु उनको मुक्त नहीं करेगा।
- 3 क्योंकि वे दैहिक और दुराचारी बातों में लिप्त हैं, और उनके ऊपर शैतान का प्रभाव है; हां, उस बूढ़े सांप का प्रभाव है जिसने हमारे प्रथम माता-पिता को बहकाया; जोकि उनके पतन का कारण था; जो सारी मानवजाति के लिए के दैहिक, कामुक, दुराचारी होने का कारण बना, बुराई से भलाई को जानते हुए, अपने-आपको शैतान के अधीन किया।
- 4 इस प्रकार सारी मानवजाति नष्ट हो गई; और देखो, वे सदा के लिए नष्ट हो जाते यदि परमेश्वर अपने लोगों का उस नष्ट और पतित अवस्था से मुक्त नहीं करता।
- 5 लेकिन याद रखो कि जो अपनी दैहिक प्रकृति में ही दृढ़ रहता है, और पाप के मार्ग पर चलता, और परमेश्वर का विद्रोही बना रहता है, और अपनी पतित अवस्था में ही रहता है और उसके ऊपर शैतान का पूरा अधिकार रहता है। इसलिए, परमेश्वर का शत्रु होने के कारण मानो उसके लिए मुक्ति नहीं बनी है; और शैतान भी परमेश्वर का शत्रु है।
- 6 और अब यदि मसीह इस संसार में नहीं आया होता, होने वाली बातों के विषय में बोलते हुए मानो वे घट चुकी होती, तब कोई मुक्ति नहीं हुई होती।
- 7 और यदि मसीह मर कर जीवित नहीं होता, अर्थात् मृत्यु की जंजीरों को तोड़ देता ताकि कब्र विजयी न हो, और मृत्यु का डंक न रहे, तो पुनरुत्थान भी नहीं होता।
- 8 लेकिन पुनरुत्थान है, इसलिए कब्र विजयी नहीं हुई, और मृत्यु का डंक मसीह में समा गया।
- 9 वह संसार की ज्योति और जीवन है; हां, वह ज्योति जो अंतहीन है, और जो कभी बुझ नहीं सकती; और हां, ऐसा जीवन जो अंतहीन है, कि जिसकी कोई मृत्यु नहीं हो सकती।

## Mosiah 16

And now, it came to pass that after Abinadi had spoken these words he stretched forth his hand and said: The time shall come when all shall see the salvation of the Lord; when every nation, kindred, tongue, and people shall see eye to eye and shall confess before God that his judgments are just.

And then shall the wicked be cast out, and they shall have cause to howl, and weep, and wail, and gnash their teeth; and this because they would not hearken unto the voice of the Lord; therefore the Lord redeemeth them not.

For they are carnal and devilish, and the devil has power over them; yea, even that old serpent that did beguile our first parents, which was the cause of their fall; which was the cause of all mankind becoming carnal, sensual, devilish, knowing evil from good, subjecting themselves to the devil.

Thus all mankind were lost; and behold, they would have been endlessly lost were it not that God redeemed his people from their lost and fallen state.

But remember that he that persists in his own carnal nature, and goes on in the ways of sin and rebellion against God, remaineth in his fallen state and the devil hath all power over him. Therefore he is as though there was no redemption made, being an enemy to God; and also is the devil an enemy to God.

And now if Christ had not come into the world, speaking of things to come as though they had already come, there could have been no redemption.

And if Christ had not risen from the dead, or have broken the bands of death that the grave should have no victory, and that death should have no sting, there could have been no resurrection.

But there is a resurrection, therefore the grave hath no victory, and the sting of death is swallowed up in Christ.

He is the light and the life of the world; yea, a light that is endless, that can never be darkened; yea, and also a life which is endless, that there can be no more death.

- 10 यहां तक कि यह नश्वरता अमरत्व धारण करेगी, और यह नाश-  
वान अवस्था अविनाशी रूप धारण करेगी, और परमेश्वर के कठघरे के  
सामने, अपने कामों के अनुसार उसका न्याय पाने के लिए चाहे वे  
भले हों या बुरे, लाई जाएगी—
- 11 यदि वे भले हुए, तो अंतहीन जीवन और आनंद का पुनरुत्थान है;  
और यदि वे बुरे हुए, तो अंतहीन नरकदंड का पुनरुत्थान है, उस शै-  
तान को सौंप दिया जाएगा, जिसने उन्हें अधीन किया था, जोकि नर-  
कदंड है—
- 12 वे स्वयं अपनी दैहिक इच्छाओं और आकांशाओं के अनुसार चलते  
रहे; कभी प्रभु को नहीं पुकारा जबकि दया की बाहें उनकी ओर बढ़ी  
हुई थी; क्योंकि दया की बाहें उनकी ओर बढ़ी हुई थी, और उन्होंने  
नहीं पुकारा; उन्हें उनके पापों के विरुद्ध चेतावनी दी गई पर फिर भी वे  
उनसे दूर नहीं हुए; और उन्हें पश्चाताप करने की आज्ञा दी गई पर फिर  
भी उन्होंने पश्चाताप नहीं किया ।
- 13 और क्या तुम्हें अपने पापों के लिए कांपना और पश्चाताप नहीं  
करना चाहिए और क्या यह स्मरण नहीं रखना चाहिए कि केवल  
मसीह के द्वारा ही तुम बचाए जा सकते हो?
- 14 इसलिए, यदि तुम मूसा की व्यवस्था की शिक्षा देते हो, यह भी  
शिक्षा दो कि यह होने वाली बातों की परछाई हैं—
- 15 उन्हें सिखाओ कि मुक्ति प्रभु मसीह के द्वारा आती है, जोकि  
सच्चा अनंत पिता है । आमीन ।

Even this mortal shall put on immortality, and this  
corruption shall put on incorruption, and shall be  
brought to stand before the bar of God, to be judged  
of him according to their works whether they be  
good or whether they be evil—

If they be good, to the resurrection of endless life  
and happiness; and if they be evil, to the resurrection  
of endless damnation, being delivered up to the  
devil, who hath subjected them, which is damna-  
tion—

Having gone according to their own carnal wills  
and desires; having never called upon the Lord while  
the arms of mercy were extended towards them; for  
the arms of mercy were extended towards them, and  
they would not; they being warned of their iniquities  
and yet they would not depart from them; and they  
were commanded to repent and yet they would not  
repent.

And now, ought ye not to tremble and repent of  
your sins, and remember that only in and through  
Christ ye can be saved?

Therefore, if ye teach the law of Moses, also teach  
that it is a shadow of those things which are to  
come—

Teach them that redemption cometh through  
Christ the Lord, who is the very Eternal Father.  
Amen.

## मुसायाह 17

- 1 और अब ऐसा हुआ कि जब अबिनादी ने इन बातों को कहना समाप्त किया, तब राजा ने आज्ञा दी कि याजक उसे ले जाएं और आदेश दिया कि उसे मार दिया जाए।
- 2 लेकिन उनके बीच में अलमा नाम का एक पुरुष था, वह नफी का वंशज भी था। और वह एक नवयुवक था, और उसने बातों पर विश्वास किया था जो अबिनादी ने कही थी, क्योंकि उनके पापों के संबंध में जो प्रमाण अबिनादी ने दिए थे, वे सब उसे मालूम थे; इसलिए उसने राजा से अनुरोध किया कि वह अबिनादी पर क्रोध न करे, लेकिन उसे शांति के साथ जाने दे।
- 3 लेकिन राजा अधिक क्रोधित हो गया, और उसने अलमा को उन के बीच से हटा दिया, और अपने सेवकों को उसके पीछे भेजा कि वे उसे मार डालें।
- 4 लेकिन वह उनके सामने से भाग गया और अपने आपको छिपा दिया ताकि वे उसे ढूंढ न सके। और कई दिनों तक छिपे रहते हुए उसने उन सभी शब्दों को लिखा जो अबिनादी ने कहे थे।
- 5 और ऐसा हुआ कि राजा ने आज्ञा दी कि उसके प्रहरी अबिनादी को घेर कर पकड़ लें; और उन्होंने उसे बांध लिया और कारागार में डाल दिया।
- 6 और तीन दिनों के बाद, अपने याजकों से सलाह करके, उसने आज्ञा दी कि उसे फिर से उसके सामने लाया जाए।
- 7 और उसने उससे कहा: अबिनादी, हमने तुम्हारे विरुद्ध एक अभियोग पाया है, और तुम मृत्यु दंड के योग्य हो।
- 8 क्योंकि तुमने कहा था कि स्वयं परमेश्वर मानव संतान के बीच में आएगा; और अब, इस कारण तुम्हें मृत्युदंड दिया जाएगा, अन्यथा तुम्हें उन सभी शब्दों को वापस लेना होगा जो तुमने मेरे और लोगों की बुराई के संबंध में कहे हैं।
- 9 अब अबिनादी ने उससे कहा: मैं तुम से कहता हूँ, मैं उन शब्दों को वापस नहीं लूंगा जो मैंने तुम्हें इन लोगों के संबंध में कहे हैं, क्योंकि वे सत्य हैं; और तुम्हें उनकी सत्यता मालूम होनी चाहिए क्योंकि उसी के कारण मैं तुम्हारे हाथों में आया हूँ।

## Mosiah 17

And now it came to pass that when Abinadi had finished these sayings, that the king commanded that the priests should take him and cause that he should be put to death.

But there was one among them whose name was Alma, he also being a descendant of Nephi. And he was a young man, and he believed the words which Abinadi had spoken, for he knew concerning the iniquity which Abinadi had testified against them; therefore he began to plead with the king that he would not be angry with Abinadi, but suffer that he might depart in peace.

But the king was more wroth, and caused that Alma should be cast out from among them, and sent his servants after him that they might slay him.

But he fled from before them and hid himself that they found him not. And he being concealed for many days did write all the words which Abinadi had spoken.

And it came to pass that the king caused that his guards should surround Abinadi and take him; and they bound him and cast him into prison.

And after three days, having counseled with his priests, he caused that he should again be brought before him.

And he said unto him: Abinadi, we have found an accusation against thee, and thou art worthy of death.

For thou hast said that God himself should come down among the children of men; and now, for this cause thou shalt be put to death unless thou wilt recall all the words which thou hast spoken evil concerning me and my people.

Now Abinadi said unto him: I say unto you, I will not recall the words which I have spoken unto you concerning this people, for they are true; and that ye may know of their surety I have suffered myself that I have fallen into your hands.



- 10 हां, और मैं मृत्यु का सामना करूंगा, और मैं अपने शब्दों को वापस नहीं लूंगा, और वे तुम्हारे विरुद्ध साक्षी के रूप में होंगे। और यदि तुमने मुझे मार डाला तब तुम एक निर्दोष का रक्त बहाओगे और यह भी अंतिम दिन तुम्हारे विरुद्ध साक्ष्य होगा।
- 11 और अब राजा नूह उसे मुक्त करने ही वाला था, क्योंकि उसके शब्दों से वह डर गया था; क्योंकि उसे डर था कि परमेश्वर का न्याय उसके ऊपर पड़ेगा।
- 12 लेकिन याजकों ने उसके विरुद्ध आवाज़ उठाई, और उस पर दोष लगाते हुए कहा: इसने राजा की निंदा की है। इसलिए राजा उसके विरुद्ध क्रोध से भड़क उठा, और उसे मारे जाने के लिए दे दिया।
- 13 और ऐसा हुआ कि उन्होंने उसे पकड़ा और उसे बांध दिया, और उसकी त्वचा को जलती लकड़ियों से जला दिया, हां, यहां तक कि उसे मार डाला।
- 14 और अब जब आग से वह जलने लगा, वह चिल्लाकर उनसे बोला:
- 15 देखो, जैसा तुमने मेरे साथ किया है, इसलिए ऐसा होगा कि तुम्हारे वंश के बहुतों को उन्हीं कष्टों को भोगना पड़ेगा जो मैं भोगता हूँ; यहां तक कि आग से जल कर मरने का कष्ट; और यह इसलिए होगा कि वे प्रभु अपने परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले उद्धार में विश्वास करते हैं।
- 16 और ऐसा होगा कि अपने पाप की अवस्था के कारण तुम सभी प्रकार के रोगों से पीड़ित होंगे।
- 17 हां, और तुम सब तरफ से दंडित किये जाओगे, और इधर-उधर ऐसे खदेड़े जाओगे जिस प्रकार जंगली जानवर, भयानक हिंसक जानवरों द्वारा खदेड़े जाते हैं।
- 18 और उस समय तुम्हें खोजा जाएगा, और तुम अपने शत्रुओं के हाथों द्वारा पकड़े जाओगे, और तब तुम भी मेरी ही तरह आग से जलकर मरने की पीड़ा सहोगे।
- 19 इस प्रकार परमेश्वर उनसे बदला लेता है जो उसके लोगों को नष्ट करते हैं। हे परमात्मा, मेरी आत्मा स्वीकार करो।
- 20 और अब, जब अबिनादी ने इन शब्दों को कहा, वैसे ही वह आग से जलकर मरकर गिर पड़ा; हां, परमेश्वर की आज्ञाओं को अस्वीकार न करने के कारण उसे मार डाला गया, और वह अपनी बातों की सत्यता पर अपनी मृत्यु से मुहर लगा दी।

Yea, and I will suffer even until death, and I will not recall my words, and they shall stand as a testimony against you. And if ye slay me ye will shed innocent blood, and this shall also stand as a testimony against you at the last day.

And now king Noah was about to release him, for he feared his word; for he feared that the judgments of God would come upon him.

But the priests lifted up their voices against him, and began to accuse him, saying: He has reviled the king. Therefore the king was stirred up in anger against him, and he delivered him up that he might be slain.

And it came to pass that they took him and bound him, and scourged his skin with faggots, yea, even unto death.

And now when the flames began to scorch him, he cried unto them, saying:

Behold, even as ye have done unto me, so shall it come to pass that thy seed shall cause that many shall suffer the pains that I do suffer, even the pains of death by fire; and this because they believe in the salvation of the Lord their God.

And it will come to pass that ye shall be afflicted with all manner of diseases because of your iniquities.

Yea, and ye shall be smitten on every hand, and shall be driven and scattered to and fro, even as a wild flock is driven by wild and ferocious beasts.

And in that day ye shall be hunted, and ye shall be taken by the hand of your enemies, and then ye shall suffer, as I suffer, the pains of death by fire.

Thus God executeth vengeance upon those that destroy his people. O God, receive my soul.

And now, when Abinadi had said these words, he fell, having suffered death by fire; yea, having been put to death because he would not deny the commandments of God, having sealed the truth of his words by his death.

## मुसायाह 18

- 1 और अब, ऐसा हुआ कि अलमा, जो राजा नूह के सेवकों से जान बचा कर भाग गया था, ने अपनी पापों और अपराधों के लिए पश्चाताप किया, और गुप्त रूप से लोगों के बीच गया, और अबिनादी की बातों का प्रचार करना आरंभ किया—
- 2 हां, उन बातों के संबंध में जो आने वाली थी, और मृतकों के पुनरुत्थान, और लोगों के मुक्ति के संबंध में भी, जोकि मसीह की शक्ति, और कष्टों, और मृत्यु, और उसके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के द्वारा आने वाली थी।
- 3 और जितने लोग उसके शब्द को सुनना चाहते वह उन्हें सीखता था। और वह उन्हें गुप्त रूप से शिक्षा देता, ताकि राजा को पता न लगे। और बहुतों ने उसके शब्दों पर विश्वास किया।
- 4 और ऐसा हुआ कि जितने लोगों ने उसका विश्वास किया वे मॉरमन नामक स्थान पर गए, जिसे इसका नाम राजा के नाम से मिला था, जो उस देश की सीमा पर था जहां विभिन्न मौसम या समयों पर जंगली जानवर सताया करते थे।
- 5 अब, मॉरमन में शुद्ध जल का एक सोता था, और उसके निकट छोटे वृक्षों का एक घना जंगल था, जहां अलमा दिन में राजा के खोजने वालों से छिप कर रहता था।
- 6 और ऐसा हुआ कि जितने लोगों ने उसका विश्वास करते थे वहां उसके शब्दों को सुनने के लिए जाते।
- 7 और ऐसा हुआ कि बहुत दिनों के पश्चात मॉरमन में अच्छी संख्या में लोग अलमा के शब्दों को सुनने के लिए एकत्रित हुए। हां, वे सभी, उसे सुनने के लिए वहां एकत्रित हुए जो उसकी बातों पर विश्वास करते थे। उसने उन्हें शिक्षा दी, और उन्हें पश्चाताप, और मुक्ति, और प्रभु पर विश्वास करने का प्रचार किया।
- 8 और ऐसा हुआ कि उसने उनसे कहा: देखो, यहां, मॉरमन का जल है (क्योंकि वे ऐसा ही कहते थे) और अब, जबकि तुम परमेश्वर के बाड़े में आने की इच्छा रखते हो, और उसके लोग कहलाना चाहते हो, और तुम एक दूसरे के बोझ उठाने में मदद करना चाहते हो, ताकि वे हल्के हो जाएं।

## Mosiah 18

And now, it came to pass that Alma, who had fled from the servants of king Noah, repented of his sins and iniquities, and went about privately among the people, and began to teach the words of Abinadi—

Yea, concerning that which was to come, and also concerning the resurrection of the dead, and the redemption of the people, which was to be brought to pass through the power, and sufferings, and death of Christ, and his resurrection and ascension into heaven.

And as many as would hear his word he did teach. And he taught them privately, that it might not come to the knowledge of the king. And many did believe his words.

And it came to pass that as many as did believe him did go forth to a place which was called Mormon, having received its name from the king, being in the borders of the land having been infested, by times or at seasons, by wild beasts.

Now, there was in Mormon a fountain of pure water, and Alma resorted thither, there being near the water a thicket of small trees, where he did hide himself in the daytime from the searches of the king.

And it came to pass that as many as believed him went thither to hear his words.

And it came to pass after many days there were a goodly number gathered together at the place of Mormon, to hear the words of Alma. Yea, all were gathered together that believed on his word, to hear him. And he did teach them, and did preach unto them repentance, and redemption, and faith on the Lord.

And it came to pass that he said unto them: Behold, here are the waters of Mormon (for thus were they called) and now, as ye are desirous to come into the fold of God, and to be called his people, and are willing to bear one another's burdens, that they may be light;

- 9 हां, और उनके दुःख से दुखी होने को तैयार हो जो दुखी हैं, हां, और उन्हें दिलासा देना चाहते हो जिन्हें दिलासे की जरूरत है, और सभी मौकों पर और सभी बातों में, और सभी स्थानों में चाहे जहां भी तुम हो, यहां तक कि मृत्यु तक परमेश्वर के गवाह के रूप में खड़े होना चाहते हो, ताकि तुम परमेश्वर द्वारा मुक्ति पा सको, और तुम्हारी गिनती प्रथम पुनरुत्थान पाने वालों में हो, ताकि तुम्हें अनंत जीवन प्राप्त हो सके—
- 10 अब मैं तुमसे कहता हूं, यदि तुम्हारे हृदयों की यही इच्छा है, तब प्रभु के नाम पर बपतिस्मा लेकर उसके सामने एक गवाह के रूप में कि तुमने उसके साथ अनुबंध किया है, के विरुद्ध तुम्हारे पास क्या कारण है, कि तुम उसकी सेवा करोगे और उसकी आज्ञाओं का पालन करोगे, ताकि वह तुम्हारे ऊपर अपनी आत्मा अधिकता से उड़ेल सके ?
- 11 और अब जब लोगों ने इन शब्दों को सुना, उन्होंने आनंदित होकर अपने हाथों से ताली बजाई, और चिल्लाए: यही हमारे हृदयों की इच्छा है ।
- 12 और ऐसा हुआ कि अलमा ने हेलाम को लिया, वह सबसे पहला था, और गया और जल में खड़ा हुआ, और पुकारते हुए कहा: हे प्रभु, अपनी आत्मा को अपने सेवक के ऊपर उड़ेल दे, ताकि वह इस कार्य को अपने हृदय की पवित्रता के साथ करे ।
- 13 और जब उसने इन शब्दों को कहा, तब प्रभु की आत्मा उसके ऊपर आई, और उसने कहा: हेलाम, सर्वशक्तिमान परमेश्वर से अधिकार प्राप्त करके मैं तुम्हें बपतिस्मा देता हूं, इस गवाही के रूप में कि तुमने तब तक उसकी सेवा करने का अनुबंध किया है जब तक तुम नश्वर शरीर में मरते नहीं हो; और प्रभु की आत्मा तुम्हारे ऊपर उड़ेल दी जाए; और वह तुम्हें मसीह की मुक्ति के द्वारा अनंत जीवन प्रदान करे, जिसे उसने संसार के आरंभ से तैयार किया है ।
- 14 और अलमा के इन शब्दों को कहने के बाद, अलमा और हेलाम दोनों जल में डूब गए; और वे खड़े हुए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर आनंद मनाते हुए जल में से निकले ।
- 15 और पुनः अलमा ने दूसरे व्यक्ति को लिया, और दूसरी बार जल में गया, और उसी प्रकार बपतिस्मा दिया, लेकिन इस बार उसने अपने को जल में नहीं डुबोया ।
- 16 और इसी प्रकार उसने उन सभी लोगों को बपतिस्मा दिया जो मॉरमन गए थे; और उनकी संख्या दो सौ चार की थी; हां, और उन सभी ने मॉरमन के जल में बपतिस्मा लिया, और परमेश्वर के अनुग्रह से भर उठे ।

Yea, and are willing to mourn with those that mourn; yea, and comfort those that stand in need of comfort, and to stand as witnesses of God at all times and in all things, and in all places that ye may be in, even until death, that ye may be redeemed of God, and be numbered with those of the first resurrection, that ye may have eternal life—

Now I say unto you, if this be the desire of your hearts, what have you against being baptized in the name of the Lord, as a witness before him that ye have entered into a covenant with him, that ye will serve him and keep his commandments, that he may pour out his Spirit more abundantly upon you?

And now when the people had heard these words, they clapped their hands for joy, and exclaimed: This is the desire of our hearts.

And now it came to pass that Alma took Helam, he being one of the first, and went and stood forth in the water, and cried, saying: O Lord, pour out thy Spirit upon thy servant, that he may do this work with holiness of heart.

And when he had said these words, the Spirit of the Lord was upon him, and he said: Helam, I baptize thee, having authority from the Almighty God, as a testimony that ye have entered into a covenant to serve him until you are dead as to the mortal body; and may the Spirit of the Lord be poured out upon you; and may he grant unto you eternal life, through the redemption of Christ, whom he has prepared from the foundation of the world.

And after Alma had said these words, both Alma and Helam were buried in the water; and they arose and came forth out of the water rejoicing, being filled with the Spirit.

And again, Alma took another, and went forth a second time into the water, and baptized him according to the first, only he did not bury himself again in the water.

And after this manner he did baptize every one that went forth to the place of Mormon; and they were in number about two hundred and four souls; yea, and they were baptized in the waters of Mormon, and were filled with the grace of God.

- 17 और वे उसी समय से परमेश्वर का गिरजा, या मसीह का गिरजा कहलाए जाने लगे । और ऐसा हुआ कि जिस किसी को परमेश्वर की शक्ति और अधिकार द्वारा बपतिस्मा दिया गया उसे उसके गिरजे में शामिल किया गया ।
- 18 और ऐसा हुआ कि अलमा ने, परमेश्वर से अधिकार प्राप्त करके, याजकों को नियुक्त किया; यहां तक कि उन्हें शिक्षा देने और परमेश्वर के राज्य के संबंध में सीखाने के लिए, हर पचास लोगों पर एक याजक को नियुक्त किया ।
- 19 और उसने उन्हें आज्ञा दी कि जो कुछ उसने उन्हें सिखाया और जो बातें पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुख से कही गई हैं, सिवाय उन बातों के वे किसी अन्य बात की शिक्षा न दें ।
- 20 हां, उसने उन्हें यहां तक यह आज्ञा दी कि वे पश्चाताप करने और उस प्रभु पर विश्वास करने जिसने अपने लोगों को मुक्त किया था, के सिवाय अन्य किसी बात का प्रचार न करें ।
- 21 और उसने आज्ञा दी कि उन का एक दूसरे के साथ कोई विवाद नहीं होना चाहिए, लेकिन उन्हें एक ही दृष्टि से देखना, एक ही विश्वास और एक ही बपतिस्मा होते हुए, उनके हृदय एकता के बंधन और एक दूसरे के प्रति प्रेम से बंधे होने चाहिए ।
- 22 और इस प्रकार का प्रचार करने की आज्ञा उसने उन्हें दी । और इस प्रकार वे परमेश्वर की संतान बन गए ।
- 23 और उसने उनको आज्ञा दी कि वे विश्राम दिन का पालन करें और उसे पवित्र रखें, और प्रतिदिन प्रभु अपने परमेश्वर का धन्यवाद भी दें ।
- 24 और उसने उनको यह भी आज्ञा दी कि जिन याजकों को उसने नियुक्त किया है उनको अपनी जीविका के लिए स्वयं अपने हाथों से परिश्रम करना चाहिए ।
- 25 और निश्चय हुआ कि प्रति सप्ताह में एक दिन वे एकत्रित होकर लोगों को शिक्षा दें, और प्रभु अपने परमेश्वर की आराधना करें; और जितनी बार उनकी क्षमता हो, अपने आपको मिलकर एकत्रित करें ।
- 26 और याजकों अपनी जीविका के लिए लोगों पर निर्भर नहीं होना चाहिए; लेकिन अपने काम के लिए उन्हें परमेश्वर से अनुग्रह प्राप्त होगा, कि परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त करते हुए, वे आत्मा में मजबूत होंगे, ताकि वे लोगों को परमेश्वर से प्राप्त शक्ति और अधिकार के साथ शिक्षा दे सकें ।

And they were called the church of God, or the church of Christ, from that time forward. And it came to pass that whosoever was baptized by the power and authority of God was added to his church.

And it came to pass that Alma, having authority from God, ordained priests; even one priest to every fifty of their number did he ordain to preach unto them, and to teach them concerning the things pertaining to the kingdom of God.

And he commanded them that they should teach nothing save it were the things which he had taught, and which had been spoken by the mouth of the holy prophets.

Yea, even he commanded them that they should preach nothing save it were repentance and faith on the Lord, who had redeemed his people.

And he commanded them that there should be no contention one with another, but that they should look forward with one eye, having one faith and one baptism, having their hearts knit together in unity and in love one towards another.

And thus he commanded them to preach. And thus they became the children of God.

And he commanded them that they should observe the sabbath day, and keep it holy, and also every day they should give thanks to the Lord their God.

And he also commanded them that the priests whom he had ordained should labor with their own hands for their support.

And there was one day in every week that was set apart that they should gather themselves together to teach the people, and to worship the Lord their God, and also, as often as it was in their power, to assemble themselves together.

And the priests were not to depend upon the people for their support; but for their labor they were to receive the grace of God, that they might wax strong in the Spirit, having the knowledge of God, that they might teach with power and authority from God.

27 और फिर अलमा ने आज्ञा दी कि गिरजे के लोगों को अपनी वस्तुओं को, हर एक को जो उसके पास उसके अनुसार देना चाहिए; यदि किसी के पास अधिक है तो वह अधिक दे; और जिसके पास कम है वह कम दे; और जिसके पास नहीं है उसको दिया जाना चाहिए ।

28 और इस प्रकार उन्हें अपनी वस्तुओं को अपनी स्वेच्छा और परमेश्वर के प्रति सदभावना के साथ ज़रूरतमंद याजकों, हां, और प्रत्येक गरीब, वस्त्रहीन, को देना चाहिए ।

29 और परमेश्वर की आज्ञा पाकर, उसने उन से कहा; और वे परमेश्वर की राह पर चलते हुए, एक दूसरे की शारीरिक और आत्मिक दोनों आवश्यकताओं और जरूरतों के अनुसार देने लगे ।

30 और अब ऐसा हुआ कि यह सब कार्य मॉरमन में किया गया, हां, मॉरमन के उस सोते के निकट, जंगल में जो मॉरमन के सोते के निकट था; हां, मॉरमन का स्थान, मॉरमन का जल और, मॉरमन का जंगल उनकी दृष्टि में कितने सुहावने हैं जिन्हें वहां पर अपने मुक्तिदाता का ज्ञान मिला था; हां, और कितने आशीषित हैं वे, क्योंकि वे हमेशा उसकी प्रशंसा में गाएंगे ।

31 और ये सब कार्य प्रदेश की सीमा पर किये गए, ताकि इनके बारे में राजा को पता न चल सके ।

32 लेकिन देखो, ऐसा हुआ कि राजा को लोगों के बीच में कुछ हलचल का पता लगा, उन पर दृष्टि रखने के लिए उसने अपने नौकरों को भेजा । इसलिए जिस दिन वे प्रभु के वचन को सुनने के लिए एकत्रित हो रहे थे तब राजा को उनका पता लग गया ।

33 और तब राजा ने कहा कि अलमा लोगों को मेरे विरुद्ध विद्रोह करने के लिए भड़का रहा है; इसलिए उनको नष्ट करने के लिए उसने अपनी सेना को भेजा ।

34 और ऐसा हुआ कि राजा की सेना के आने की सूचना अलमा और प्रभु के लोगों को मिल गई; इसलिए वे अपने तम्बुओं को उखाड़ कर और अपने अपने परिवारों को लेकर निर्जन प्रदेश में चले गए ।

35 और वे संख्या में लगभग चार सौ पचास लोग थे ।

And again Alma commanded that the people of the church should impart of their substance, every one according to that which he had; if he have more abundantly he should impart more abundantly; and of him that had but little, but little should be required; and to him that had not should be given.

And thus they should impart of their substance of their own free will and good desires towards God, and to those priests that stood in need, yea, and to every needy, naked soul.

And this he said unto them, having been commanded of God; and they did walk uprightly before God, imparting to one another both temporally and spiritually according to their needs and their wants.

And now it came to pass that all this was done in Mormon, yea, by the waters of Mormon, in the forest that was near the waters of Mormon; yea, the place of Mormon, the waters of Mormon, the forest of Mormon, how beautiful are they to the eyes of them who there came to the knowledge of their Redeemer; yea, and how blessed are they, for they shall sing to his praise forever.

And these things were done in the borders of the land, that they might not come to the knowledge of the king.

But behold, it came to pass that the king, having discovered a movement among the people, sent his servants to watch them. Therefore on the day that they were assembling themselves together to hear the word of the Lord they were discovered unto the king.

And now the king said that Alma was stirring up the people to rebellion against him; therefore he sent his army to destroy them.

And it came to pass that Alma and the people of the Lord were apprised of the coming of the king's army; therefore they took their tents and their families and departed into the wilderness.

And they were in number about four hundred and fifty souls.

## मुसायाह 19

- 1 और ऐसा हुआ कि राजा की सेना, प्रभु के लोगों को खोजने में असफल होकर वापस लौट गई ।
- 2 और अब देखो, राजा की सेना कम होने से छोटी हो गई, और उसके बचे हुए लोगों के बीच में फूट पड़नी आरंभ हो गई थी ।
- 3 और कुछ लोगों ने राजा के विरुद्ध धमकियां देना आरंभ कर दिया, और उनके बीच भारी विवाद होना आरंभ हो गया ।
- 4 और अब उनके बीच में एक पुरुष था जिसका नाम गिदोन था, और वह शक्तिशाली और राजा का शत्रु था, इसलिए उसने अपनी तलवार खींची, और इसलिए उसने अपने क्रोध में प्रतिज्ञा की कि वह राजा को मार डालेगा ।
- 5 और ऐसा हुआ कि उसने राजा से युद्ध किया; और जब राजा ने देखा कि वह उसे पराजित करने ही वाला है, उसने लड़ना छोड़ा और भाग गया और उस मीनार पर चढ़ गया जो मंदिर के निकट थी ।
- 6 और गिदोन ने उसका पीछा किया और राजा को मारने के लिए मिनार पर चढ़ने ही वाला था, और राजा ने अपनी दृष्टि शिमलोन प्रदेश के चारों ओर दौड़ाई, और देखा, लमनाइयों की सेना प्रदेश की सीमा के अंदर घुस आई है ।
- 7 और अब राजा ने अपनी आत्मा से दुखी होकर पुकारते हुए कहा: गिदोन, तुम मुझे छोड़ दो, क्योंकि लमनाइयों ने हमारे ऊपर चढ़ाई कर दी है, और वे हमें नष्ट कर देंगे; हां, वे हमारे लोगों को नष्ट कर देंगे ।
- 8 और अब राजा को अपने लोगों के लिए उतनी चिन्ता नहीं थी जितनी कि उसे अपने स्वयं के जीवन के लिए थी; फिर भी, गिदोन ने उसके जीवन को छोड़ दिया ।
- 9 और राजा ने लोगों को आज्ञा दी कि वे लमनाइयों के आने से पहले भाग जाएं और वह स्वयं उनसे पहले भाग गया, और वे अपनी स्त्रियों और बच्चों के साथ, निर्जन प्रदेश में भाग गए ।
- 10 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों ने उनका पीछा किया, और उन्हें पकड़ लिया, और उन्हें मारना शुरू कर दिया ।
- 11 अब ऐसा हुआ कि राजा ने उन्हें आज्ञा दी कि सभी पुरुष अपनी अपनी पत्नियों और बच्चों को छोड़ दें, और लमनाइयों के सामने से भाग जाएं ।

## Mosiah 19

And it came to pass that the army of the king returned, having searched in vain for the people of the Lord.

And now behold, the forces of the king were small, having been reduced, and there began to be a division among the remainder of the people.

And the lesser part began to breathe out threatenings against the king, and there began to be a great contention among them.

And now there was a man among them whose name was Gideon, and he being a strong man and an enemy to the king, therefore he drew his sword, and swore in his wrath that he would slay the king.

And it came to pass that he fought with the king; and when the king saw that he was about to overpower him, he fled and ran and got upon the tower which was near the temple.

And Gideon pursued after him and was about to get upon the tower to slay the king, and the king cast his eyes round about towards the land of Shemlon, and behold, the army of the Lamanites were within the borders of the land.

And now the king cried out in the anguish of his soul, saying: Gideon, spare me, for the Lamanites are upon us, and they will destroy us; yea, they will destroy my people.

And now the king was not so much concerned about his people as he was about his own life; nevertheless, Gideon did spare his life.

And the king commanded the people that they should flee before the Lamanites, and he himself did go before them, and they did flee into the wilderness, with their women and their children.

And it came to pass that the Lamanites did pursue them, and did overtake them, and began to slay them.

Now it came to pass that the king commanded them that all the men should leave their wives and their children, and flee before the Lamanites.

- 12 अब बहुत से ऐसे थे जो उन्हें छोड़ना नहीं चाहते थे, लेकिन इसकी अपेक्षा ठहरना और उनके साथ मरना चाहते थे। और बाकी लोगों ने अपनी पत्नियों और बच्चों को छोड़ दिया और भाग गए।
- 13 और ऐसा हुआ कि जो लोग अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ ठहर गए थे उन्होंने अपनी सुन्दर बेटियों को आगे किया और लमनाटियों से याचना की कि वे उनकी जान न लें।
- 14 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों को उन पर दया आ गई, क्योंकि वे उनकी स्त्रियों की सुंदरता से प्रभावित हो गए थे।
- 15 इसलिए लमनाइयों ने उनकी जान नहीं ली और उन्हें बंदी बना कर नफी के प्रदेश में ले गए, और उन्हें उस देश में बसने का अधिकार इन शर्तों पर दिया कि वे राजा नूह को लनायटियों के हाथों में दे देंगे, और अपनी संपत्ति है, और जो कुछ भी उनके पास है उसका आधा, उनके सोने, और उनकी चांदी, और उनकी सभी मूल्यवान वस्तुओं का आधा उन्हें देंगे, और इस प्रकार वे लमनाइयों के राजा को हर वर्ष कर देते रहेंगे।
- 16 और जो बंदी बना कर लाए गए थे उनमें राजा के पुत्रों में से एक था, जिस का नाम लिमही था।
- 17 और अब लिमही की इच्छा थी कि उसके पिता को न मारा जाए; हालांकि, लिमही अपने पिता के अपराधों से अंजान नहीं था, वह स्वयं एक न्यायसंगत पुरुष था।
- 18 और ऐसा हुआ कि गिदोन ने गुप्त रूप, से राजा और उसके साथियों का पता लगाने के लिए सैनिकों को निर्जन प्रदेश में भेजा। और ऐसा हुआ कि निर्जन प्रदेश में उनकी भेंट राजा और उसके याजकों के सिवाय अन्य सभी लोगों से हुई।
- 19 अब उन लोगों ने अपने हृदयों से नफी के प्रदेश में वापस लौटने की प्रतिज्ञा की, और यदि उनकी पत्नियां और उनके बच्चे मार डाले गए होंगे, और वे भी जो उनके साथ जो रह गए थे, तो वे बदला लेंगे, और उन्हीं के साथ नष्ट हो जाएंगे।
- 20 और राजा ने उन्हें आज्ञा दी कि वे वापस न लौटें; और वे राजा से क्रोधित हो उठे, और उसे बहुत सताया, यहां तक कि आग से जला कर मार डाला।
- 21 और वे याजकों को भी पकड़ना और मार डालना चाहते थे, लेकिन वे उनसे बचकर भाग गए।

Now there were many that would not leave them, but had rather stay and perish with them. And the rest left their wives and their children and fled.

And it came to pass that those who tarried with their wives and their children caused that their fair daughters should stand forth and plead with the Lamanites that they would not slay them.

And it came to pass that the Lamanites had compassion on them, for they were charmed with the beauty of their women.

Therefore the Lamanites did spare their lives, and took them captives and carried them back to the land of Nephi, and granted unto them that they might possess the land, under the conditions that they would deliver up king Noah into the hands of the Lamanites, and deliver up their property, even one half of all they possessed, one half of their gold, and their silver, and all their precious things, and thus they should pay tribute to the king of the Lamanites from year to year.

And now there was one of the sons of the king among those that were taken captive, whose name was Limhi.

And now Limhi was desirous that his father should not be destroyed; nevertheless, Limhi was not ignorant of the iniquities of his father, he himself being a just man.

And it came to pass that Gideon sent men into the wilderness secretly, to search for the king and those that were with him. And it came to pass that they met the people in the wilderness, all save the king and his priests.

Now they had sworn in their hearts that they would return to the land of Nephi, and if their wives and their children were slain, and also those that had tarried with them, that they would seek revenge, and also perish with them.

And the king commanded them that they should not return; and they were angry with the king, and caused that he should suffer, even unto death by fire.

And they were about to take the priests also and put them to death, and they fled before them.

22 और ऐसा हुआ कि वे नफी के देश में वापस लौटने ही वाले थे, और वे गिदोन के सैनिकों से मिले। और गिदोन के सैनिकों ने उन्हें वह सब बताया जो उनकी पत्नियों और बच्चे के साथ हुआ था; और कि लमनाइयों ने अनुमति दी है कि वे अपनी सभी वस्तुओं का आधा लमनाइयों को कर रूप में देकर उस प्रदेश में बस सकते हैं।

23 और लोगों ने गिदोन के सैनिकों को बताया कि उन्होंने राजा को मार डाला है, और उसके याजक उनके सामने से निर्जन प्रदेश के और अंदर भाग गए हैं।

24 और ऐसा हुआ कि समारोह समाप्त करने के पश्चात वे नफी के प्रदेश वापस लौटे, आनंद मनाते हुए, क्योंकि उनकी पत्नियां और बच्चे मारे नहीं गए थे; और उन्होंने गिदोन को बताया जो उन्होंने राजा के साथ किया था।

25 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों के राजा ने उन्हें यह शपथ दी, कि उसके लोग उन्हें नहीं मारेंगे।

26 और लिमही ने भी, राजा का बेटा होने, और लोगों द्वारा उसे राज्य प्रदान कर दिए जाने पर, लमनाइयों के राजा को यह शपथ दी कि उसके लोगों के पास जो कुछ भी होगा उसका आधा वे कर के रूप उसे देंगे।

27 और ऐसा हुआ कि लिमही ने राज्य की स्थापना और अपने लोगों में शांति की स्थापना करना शुरू कर दिया।

28 और लमनाइयों के राजा ने प्रदेश के चारों ओर प्रहरी नियुक्त कर दिए, ताकि वह लिमही के लोगों को उस देश के अन्दर ही रख सके, और वे निर्जन प्रदेश में न चले जाएं; और नफाइयों से जो कर वह प्राप्त करता था, उसी में से उन प्रहरियों का भरण-पोषण करता था।

29 और अब दो वर्षों तक राजा लिमही ने अपने राज्य में निरंतर शांति बनाए रखी, क्योंकि लमनाइयों ने न तो उन्हें सताया और न उन्हें नष्ट करने का प्रयास किया।

And it came to pass that they were about to return to the land of Nephi, and they met the men of Gideon. And the men of Gideon told them of all that had happened to their wives and their children; and that the Lamanites had granted unto them that they might possess the land by paying a tribute to the Lamanites of one half of all they possessed.

And the people told the men of Gideon that they had slain the king, and his priests had fled from them farther into the wilderness.

And it came to pass that after they had ended the ceremony, that they returned to the land of Nephi, rejoicing, because their wives and their children were not slain; and they told Gideon what they had done to the king.

And it came to pass that the king of the Lamanites made an oath unto them, that his people should not slay them.

And also Limhi, being the son of the king, having the kingdom conferred upon him by the people, made oath unto the king of the Lamanites that his people should pay tribute unto him, even one half of all they possessed.

And it came to pass that Limhi began to establish the kingdom and to establish peace among his people.

And the king of the Lamanites set guards round about the land, that he might keep the people of Limhi in the land, that they might not depart into the wilderness; and he did support his guards out of the tribute which he did receive from the Nephites.

And now king Limhi did have continual peace in his kingdom for the space of two years, that the Lamanites did not molest them nor seek to destroy them.



## मुसायाह 20

- 1 अब शिमलोन में एक स्थान था जहां पर लमनाइयों की बेटियां गाने, नाचने और आनंद मनाने के लिए एक साथ एकत्रित होती थीं ।
- 2 और ऐसा हुआ कि एक दिन गाने और नाचने के लिए वे कम संख्या में एकत्रित हुई ।
- 3 और अब राजा नूह के याजक, नफी के शहर में वापस लौटने से लजाते थे, हां, और उन्हें यह भय भी था कि लोग उनको मार डालेंगे, इसलिए उन्होंने अपनी पत्नियों और बच्चों के पास लौटने का साहस नहीं किया ।
- 4 और वे निर्जन प्रदेश में ठहरने पर, और लमनाइयों की बेटियों के विषय में पता लगने पर, वे छिप गए और उन पर निगाह रखने लगे ।
- 5 और जब कम संख्या में वे नृत्य करने के लिए आईं तब वे अपने गुप्त स्थानों से निकल आए और उन्हें पकड़ा और उन्हें निर्जन प्रदेश में ले गए; हां, वे लमनाइयों की चौबीस बेटियों को निर्जन प्रदेश में उठा कर ले गए ।
- 6 और ऐसा हुआ जब लमनाइयों को पता लगा कि उनकी बेटियां खो गई हैं, वे लिमही के लोगों पर क्रोधित हो उठे, क्योंकि उन्होंने सोचा कि वे लिमही के लोग थे ।
- 7 इसलिए उन्होंने अपनी सेना को भेजा; हां, यहां तक कि राजा स्वयं अपने लोगों के आगे गया; और वे नफी के देश में लिमही के लोगों को नष्ट करने के लिए पहुंच गए ।
- 8 और अब लिमही ने मीनार से उनका पता कर लिया, यहां तक कि वह उनकी सारी युद्ध की तैयारियों को जान चुका था; इसलिए उसने अपने लोगों को एकत्रित किया और खेतों और वनों में छिप कर उनकी प्रतिक्षा करने लगे ।
- 9 और ऐसा हुआ कि जब लमनाई आए, तब लिमही के लोगों ने अपने छिपने के स्थानों से निकल कर उन पर आक्रमण कर दिया, और उन्हें मारना शुरू किया ।
- 10 और ऐसा हुआ कि युद्ध बहुत ही भयंकर हो गया था, क्योंकि वे ऐसे युद्ध कर रहे थे जैसे शेर अपने शिकार के लिए लड़ते हैं ।

## Mosiah 20

Now there was a place in Shemlon where the daughters of the Lamanites did gather themselves together to sing, and to dance, and to make themselves merry.

And it came to pass that there was one day a small number of them gathered together to sing and to dance.

And now the priests of king Noah, being ashamed to return to the city of Nephi, yea, and also fearing that the people would slay them, therefore they durst not return to their wives and their children.

And having tarried in the wilderness, and having discovered the daughters of the Lamanites, they laid and watched them;

And when there were but few of them gathered together to dance, they came forth out of their secret places and took them and carried them into the wilderness; yea, twenty and four of the daughters of the Lamanites they carried into the wilderness.

And it came to pass that when the Lamanites found that their daughters had been missing, they were angry with the people of Limhi, for they thought it was the people of Limhi.

Therefore they sent their armies forth; yea, even the king himself went before his people; and they went up to the land of Nephi to destroy the people of Limhi.

And now Limhi had discovered them from the tower, even all their preparations for war did he discover; therefore he gathered his people together, and laid wait for them in the fields and in the forests.

And it came to pass that when the Lamanites had come up, that the people of Limhi began to fall upon them from their waiting places, and began to slay them.

And it came to pass that the battle became exceedingly sore, for they fought like lions for their prey.

- 11 और ऐसा हुआ कि लिमही के लोग लमनाइयों को अपने सामने से खदेड़ने लगे; यद्यपि उनकी संख्या लमनाइयों की आधी भी नहीं थी। लेकिन वे अपने प्राणों के लिए, और अपनी पत्नियों के लिए, और अपने बच्चों के लिए लड़े; इसलिए उन्होंने अपनी पूरी ताकत लगा दी और वे अजगरों की तरह लड़े।
- 12 और ऐसा हुआ कि उन्होंने उनके मृतकों में लमनाइयों के राजा को भी पाया; यद्यपि वह मरा नहीं था, घायल हुआ था और जमीन पर छोड़ दिया गया था, और उसके लोग बहुत शीघ्रता के साथ भाग गए थे।
- 13 और उन्होंने उसे उठाया और उसके घावों पर पट्टी बांधी, और उसे लिमही के पास ले गए, और बोले; देखो, यह लमनाइयों का राजा है; एक चोट लगने के कारण अपने मृतकों में गिर पड़ा था, और वे इसे छोड़ गए हैं, और देखो हम इसे आपके सामने लाए हैं; और अब आओ हम इसे मार डालें।
- 14 लेकिन लिमही ने उनसे कहा: तुम उसे नहीं मारोगे, लेकिन उसे मेरे पास लाओ ताकि मैं उसे देख सकूँ। और वे उसे उसके पास ले गए। और लिमही ने उससे कहा: किस कारण तुमने मेरे लोगों के विरुद्ध युद्ध किया? देखो, जो शपथ मैंने तुम्हारे साथ ली थी वह मेरे लोगों ने नहीं तोड़ी है; इसलिए जो शपथ तुमने मेरे लोगों को दी थी, उसे तुमने क्यों तोड़ा?
- 15 और अब राजा ने कहा: मैंने अपनी शपथ इसलिए तोड़ी है क्योंकि तुम्हारे लोगों ने मेरे लोगों की बेटियों को उठाकर ले गए थे; इसलिए, मैंने क्रोध में आकर अपने लोगों को तुम्हारे लोगों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए उकसाया।
- 16 और अब इस संबंध में लिमही ने कुछ सुना; इसलिए उसने कहा: मैं अपने लोगों के बीच में खोज करूँगा और जिसने यह किया होगा नष्ट कर दिया जाएगा। इसलिए उसने अपने लोगों के बीच में खोज करवाई।
- 17 अब जब गिदोन ने यह बात सुनी, राजा का सेनाध्यक्ष होने के कारण, वह राजा के पास गया और बोला: मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि धीरज रखो, और इन लोगों को मत ढूँढो, और इन पर यह आरोप मत लगाओ।
- 18 क्योंकि क्या तुमने अपने पिता के याजकों की याद नहीं है, जिन्हें ये लोग नष्ट करना चाहते थे? और क्या वे निर्जन प्रदेश में नहीं हैं? क्या ये वही नहीं हैं जिन्होंने लमनाइयों की बेटियों को चुराया है?

And it came to pass that the people of Limhi began to drive the Lamanites before them; yet they were not half so numerous as the Lamanites. But they fought for their lives, and for their wives, and for their children; therefore they exerted themselves and like dragons did they fight.

And it came to pass that they found the king of the Lamanites among the number of their dead; yet he was not dead, having been wounded and left upon the ground, so speedy was the flight of his people.

And they took him and bound up his wounds, and brought him before Limhi, and said: Behold, here is the king of the Lamanites; he having received a wound has fallen among their dead, and they have left him; and behold, we have brought him before you; and now let us slay him.

But Limhi said unto them: Ye shall not slay him, but bring him hither that I may see him. And they brought him. And Limhi said unto him: What cause have ye to come up to war against my people? Behold, my people have not broken the oath that I made unto you; therefore, why should ye break the oath which ye made unto my people?

And now the king said: I have broken the oath because thy people did carry away the daughters of my people; therefore, in my anger I did cause my people to come up to war against thy people.

And now Limhi had heard nothing concerning this matter; therefore he said: I will search among my people and whosoever has done this thing shall perish. Therefore he caused a search to be made among his people.

Now when Gideon had heard these things, he being the king's captain, he went forth and said unto the king: I pray thee forbear, and do not search this people, and lay not this thing to their charge.

For do ye not remember the priests of thy father, whom this people sought to destroy? And are they not in the wilderness? And are not they the ones who have stolen the daughters of the Lamanites?

- 19 और अब, देखो, और यह बातें राजा को बताओ, कि वह अपने लोगों को इन्हें बताए ताकि वे हमारे प्रति शांत हों; क्योंकि देखो वे हमारे विरुद्ध आक्रमण की तैयारी कर रहे हैं; और देखो हम संख्या में बहुत कम है ।
- 20 और देखो, वे बहुत बड़ी सेना के साथ बढ़े चले आ रहे हैं; और जब तक राजा उन्हें हमारे प्रति शांत नहीं करेगा हम अवश्य ही नष्ट हो जाएंगे ।
- 21 क्योंकि क्या अबिनादी के वे शब्द परिपूर्ण नहीं हुए, जो उसने हमारे विरुद्ध भविष्यवाणी की थी—और यह सब कुछ इसलिए क्योंकि हमने प्रभु के वचनों पर ध्यान नहीं दिया, और अपने अपराधों से नहीं फिरे ?
- 22 और अब आओ हम राजा को शांत करें, और उसके साथ बनाई अपनी शपथ को पूरा करें; क्योंकि अपने जीवन को खोने से अच्छा है कि हम गुलाम बन कर रहें; इसलिए, आओ हम इतना अधिक रक्त बहाना बंद करें ।
- 23 और अब लिमही ने राजा से अपने पिता, और उसके उन याजकों के संबंध में सारी बातें बताईं जो निर्जन प्रदेश में भाग गए थे, और उनकी बेटियों को उठाकर ले जाने के लिए उन्हें उत्तरदायी ठहराया था ।
- 24 और ऐसा हुआ कि राजा उसके लोगों के प्रति शांत हुआ, और उसने उनसे कहा: आओ, निशस्त्र होकर मेरे लोगों से मिलने चलो; और मैं शपथ ले कर तुम से प्रतिज्ञा करता हूँ कि मेरे लोग तुम्हारे लोगों को नहीं मारेंगे ।
- 25 और ऐसा हुआ कि वे राजा पीछे चले; और निशस्त्र होकर लमनाइयों से मिलने गए; और ऐसा हुआ कि वे लमनाइयों से मिले; और लमनाइयों के राजा ने अपने आपको उनके सामने झुकाया, और लिमही के लोगों की ओर से याचना की ।
- 26 और जब लमनाइयों ने लिमही के लोगों को देखा, कि वे निशस्त्र थे, उनको उन पर उन्हें दया आ गई और वे उनके प्रति शांत हो गए, और अपने राजा के साथ शांति से अपने प्रदेश लौट गए ।

And now, behold, and tell the king of these things, that he may tell his people that they may be pacified towards us; for behold they are already preparing to come against us; and behold also there are but few of us.

And behold, they come with their numerous hosts; and except the king doth pacify them towards us we must perish.

For are not the words of Abinadi fulfilled, which he prophesied against us—and all this because we would not hearken unto the words of the Lord, and turn from our iniquities?

And now let us pacify the king, and we fulfil the oath which we have made unto him; for it is better that we should be in bondage than that we should lose our lives; therefore, let us put a stop to the shedding of so much blood.

And now Limhi told the king all the things concerning his father, and the priests that had fled into the wilderness, and attributed the carrying away of their daughters to them.

And it came to pass that the king was pacified towards his people; and he said unto them: Let us go forth to meet my people, without arms; and I swear unto you with an oath that my people shall not slay thy people.

And it came to pass that they followed the king, and went forth without arms to meet the Lamanites. And it came to pass that they did meet the Lamanites; and the king of the Lamanites did bow himself down before them, and did plead in behalf of the people of Limhi.

And when the Lamanites saw the people of Limhi, that they were without arms, they had compassion on them and were pacified towards them, and returned with their king in peace to their own land.

## मुसायाह 21

- 1 और ऐसा हुआ कि लिमही और उसके लोग नफी के नगर में लौट आए, और प्रदेश में फिर से शांति के साथ रहना आरंभ किया ।
- 2 और ऐसा हुआ कि बहुत दिनों के पश्चात लमनाई फिर से नफाइयों के विरुद्ध क्रोध से अशांत हो गए, और उन्होंने चारों ओर से प्रदेश की सीमा के अंदर घुसना आरंभ किया ।
- 3 अब वे अपने राजा द्वारा लिमही से की गई शपथ के कारण लोगों को मारने का साहस न कर पाए; लेकिन वे उनके गालों पर थप्पड़ मारते, और उनके ऊपर अधिकार दिखाते; और उनकी पीठ पर भारी बोझ रखते, और उन्हें मूक गधों की तरह हांकते—
- 4 हां, यह सब इसलिए हुआ ताकि प्रभु का वचन पूरा हो सके ।
- 5 और अब नफाइयों के कष्ट बहुत अधिक थे, और कोई मार्ग नहीं था कि वे अपने आपको उनके हाथों से बचा सकते थे, क्योंकि लमनाइयों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया था ।
- 6 और ऐसा हुआ कि अपने कष्टों के कारण लोग राजा से असंतोष प्रकट करने लगे; और उन्होंने उनके साथ युद्ध करने की इच्छा करनी आरंभ कर दी । और उन्होंने अपने राजा को अपनी शिकायतों से भारी कष्ट दिया; इसलिए उसने उन्हें आज्ञा दे दी कि वे अपनी इच्छानुसार कार्य करें ।
- 7 और उन्होंने फिर से अपने आपको एकत्रित किया, और अपने कवच को पहना, और लमनाइयों को अपने प्रदेश से बाहर खदेड़ने के लिए चल पड़े ।
- 8 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों ने उन्हें पराजित कर दिया, और पीछे खदेड़ दिया, और उन में से बहुतों को मार डाला ।
- 9 और अब लिमही के लोगों के बीच भारी शोक और विलाप हुआ; विधवाएं अपने पतियों के लिए रो रही थीं, बेटे और बेटियां अपने पिताओं के लिए रो रही थीं, और भाई अपने भाइयों के लिए रो रहे थे ।
- 10 अब प्रदेश में बहुत विधवाएं हो गई थीं, और वे दिन प्रतिदिन बहुत रोती थीं, क्योंकि उन पर लमनाइयों का बहुत भय छा गया था ।

## Mosiah 21

And it came to pass that Limhi and his people returned to the city of Nephi, and began to dwell in the land again in peace.

And it came to pass that after many days the Lamanites began again to be stirred up in anger against the Nephites, and they began to come into the borders of the land round about.

Now they durst not slay them, because of the oath which their king had made unto Limhi; but they would smite them on their cheeks, and exercise authority over them; and began to put heavy burdens upon their backs, and drive them as they would a dumb ass—

Yea, all this was done that the word of the Lord might be fulfilled.

And now the afflictions of the Nephites were great, and there was no way that they could deliver themselves out of their hands, for the Lamanites had surrounded them on every side.

And it came to pass that the people began to murmur with the king because of their afflictions; and they began to be desirous to go against them to battle. And they did afflict the king sorely with their complaints; therefore he granted unto them that they should do according to their desires.

And they gathered themselves together again, and put on their armor, and went forth against the Lamanites to drive them out of their land.

And it came to pass that the Lamanites did beat them, and drove them back, and slew many of them.

And now there was a great mourning and lamentation among the people of Limhi, the widow mourning for her husband, the son and the daughter mourning for their father, and the brothers for their brethren.

Now there were a great many widows in the land, and they did cry mightily from day to day, for a great fear of the Lamanites had come upon them.

- 11 और ऐसा हुआ कि उनके निरंतर रोने से लिमही के शेष लोग अशांत होकर लमनाइयों के विरुद्ध क्रोधित हुए; और वे फिर से युद्ध करने के लिए गए, लेकिन उन्हें बहुत नुकसान के साथ, फिर से वापस खदेड़ दिया गया ।
- 12 हां, वे तीसरी बार फिर से गए, और उसी प्रकार नुकसान उठाना पड़ा; और जो मारे नहीं गए थे वे नफी के नगर को वापस लौट आए ।
- 13 और उन्होंने अपने आप को धूल के समान दीन बना लिया, मार खाने, और इधर-उधर खदेड़े जाने और अपने शत्रुओं की इच्छानुसार बोझा ढोने के लिए अपने-आपको समर्पित करते हुए स्वयं को गुलामी के जुए के अधीन कर लिया ।
- 14 और उन्होंने अपने-आपको दीनता की गहराइयों तक विनम्र कर लिया, और उन्होंने अपनी पूरी शक्ति से परमेश्वर को पुकारा; हां, वे सारा दिन अपने परमेश्वर को पुकारते रहे कि वह उन्हें उनके कष्टों से छुटकारा दिलाएगा ।
- 15 और अब उनके पापों के कारण प्रभु उनकी पुकार को सुनने में देर कर रहा था; फिर भी प्रभु ने उनकी पुकार को सुना, और लमनाइयों के हृदयों को वह कोमल करने लगा कि वे उनके भार को हलका करने लगे; फिर भी प्रभु ने उस समय उन्हें गुलामी से छुटकारा देना उचित नहीं समझा ।
- 16 और ऐसा हुआ कि वे धीरे धीरे उस प्रदेश में प्रगति करने लगे, और अनाज अधिकता से पैदा करने लगे, और जानवर, और पक्षी भी, कि वे भूखे नहीं रहते ।
- 17 अब वहां नारियों की संख्या बहुत थी, पुरुषों से अधिक; इसलिए राजा लिमही ने आज्ञा दी कि प्रत्येक पुरुष विधवाओं और उनके बच्चों की जीविका के लिए दान दें, ताकि वे भूख से मरें नहीं; और उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे बड़ी संख्या में मारे डाले गए थे ।
- 18 अब लिमही के लोग जहां तक हो सकता था एक साथ संगठित होकर दल में रहते, और अपने अनाज और पशु को सुरक्षित रखते ।
- 19 और राजा नगर की चार दीवारी के बाहर अपने व्यक्ति पर भरोसा नहीं करता था, जब तक कि उसके साथ उसके अंगरक्षक न हों, उसे भय था कि कहीं वह किसी तरह लमनाइयों के हाथों में न पड़ जाए ।

And it came to pass that their continual cries did stir up the remainder of the people of Limhi to anger against the Lamanites; and they went again to battle, but they were driven back again, suffering much loss.

Yea, they went again even the third time, and suffered in the like manner; and those that were not slain returned again to the city of Nephi.

And they did humble themselves even to the dust, subjecting themselves to the yoke of bondage, submitting themselves to be smitten, and to be driven to and fro, and burdened, according to the desires of their enemies.

And they did humble themselves even in the depths of humility; and they did cry mightily to God; yea, even all the day long did they cry unto their God that he would deliver them out of their afflictions.

And now the Lord was slow to hear their cry because of their iniquities; nevertheless the Lord did hear their cries, and began to soften the hearts of the Lamanites that they began to ease their burdens; yet the Lord did not see fit to deliver them out of bondage.

And it came to pass that they began to prosper by degrees in the land, and began to raise grain more abundantly, and flocks, and herds, that they did not suffer with hunger.

Now there was a great number of women, more than there was of men; therefore king Limhi commanded that every man should impart to the support of the widows and their children, that they might not perish with hunger; and this they did because of the greatness of their number that had been slain.

Now the people of Limhi kept together in a body as much as it was possible, and secured their grain and their flocks;

And the king himself did not trust his person without the walls of the city, unless he took his guards with him, fearing that he might by some means fall into the hands of the Lamanites.

- 20 और उसने आदेश दिया कि उसके लोग प्रदेश के चारों ओर निगरानी रखें, ताकि वे उन याजकों को किसी तरह से पकड़ लें जो निर्जन प्रदेश में भाग गए थे, जिन्होंने लमनाइयों की बेटियों को चुरा लिया था, और जिसके कारण उनका इतना विनाश हुआ था।
- 21 क्योंकि वे उन्हें पकड़ने के इच्छुक थे ताकि वे उन्हें दंड दे सकें; क्योंकि वे रात को नफी के प्रदेश में आते, और उनके अनाज और बहुत सी मूल्यवान वस्तुओं को लेकर चले जाते थे; इसलिए वे उनकी प्रतीक्षा में थे।
- 22 और ऐसा हुआ कि तब से लमनाइयों और लिमही के लोगों के बीच, अम्मोन और उसके भाइयों के प्रदेश में आने के समय तक कोई गड़बड़ी नहीं हुई।
- 23 और जब राजा अपने सिपाहियों के साथ नगर के द्वार के बाहर था तब उसने अम्मोन और उसके भाइयों को पाया; और उन्हें नूह के याजक समझकर पकड़वा कर बंधवा लिया और उन्हें जेल में डाल दिया। और यदि वे नूह के याजक होते तो वह उन्हें मरवा डालता।
- 24 लेकिन जब उसे पता लगा कि वे उसके याजक नहीं थे, लेकिन वे उसके भाई थे, और जराहेमला प्रदेश से आए थे, वह अत्याधिक आनंद से भर गया।
- 25 अब अम्मोन के आने से पहले राजा लिमही ने कुछ लोगों को जराहेमला प्रदेश खोजने को भेजा, लेकिन वे इसे नहीं खोज सके, और वे निर्जन प्रदेश में भटक गए।
- 26 फिर भी, उन्होंने एक ऐसा प्रदेश पाया था जो कभी आबाद था; हां, एक ऐसा प्रदेश जहां सूखी हुई हड्डियां बिखरी पड़ी थीं; हां, वह प्रदेश जहां लोग रहते थे और जो नष्ट हो चुका था; और वे, उसे जराहेमला समझकर, नफी के प्रदेश लौट गए, उन्हें प्रदेश की सीमा में पहुंचे अम्मोन के आने से पहले अधिक दिन नहीं हुए थे।
- 27 और वे अपने साथ एक अभिलेख लाए, उन लोगों का अभिलेख जिनकी हड्डियां उन्हें मिली थी; और यह कच्ची धातु की पट्टियों पर खुदा हुआ था।
- 28 और अब लिमही अम्मोन के मुख से यह जानकर आनंद से भर उठा कि राजा मुसायाह के पास परमेश्वर का उपहार था, जिसके द्वारा वह इस प्रकार की खुदी लिपियों का अनुवाद कर सकता था; हां, और अम्मोन भी आनंदित हुआ।

And he caused that his people should watch the land round about, that by some means they might take those priests that fled into the wilderness, who had stolen the daughters of the Lamanites, and that had caused such a great destruction to come upon them.

For they were desirous to take them that they might punish them; for they had come into the land of Nephi by night, and carried off their grain and many of their precious things; therefore they laid wait for them.

And it came to pass that there was no more disturbance between the Lamanites and the people of Limhi, even until the time that Ammon and his brethren came into the land.

And the king having been without the gates of the city with his guard, discovered Ammon and his brethren; and supposing them to be priests of Noah therefore he caused that they should be taken, and bound, and cast into prison. And had they been the priests of Noah he would have caused that they should be put to death.

But when he found that they were not, but that they were his brethren, and had come from the land of Zarahemla, he was filled with exceedingly great joy.

Now king Limhi had sent, previous to the coming of Ammon, a small number of men to search for the land of Zarahemla; but they could not find it, and they were lost in the wilderness.

Nevertheless, they did find a land which had been peopled; yea, a land which was covered with dry bones; yea, a land which had been peopled and which had been destroyed; and they, having supposed it to be the land of Zarahemla, returned to the land of Nephi, having arrived in the borders of the land not many days before the coming of Ammon.

And they brought a record with them, even a record of the people whose bones they had found; and it was engraven on plates of ore.

And now Limhi was again filled with joy on learning from the mouth of Ammon that king Mosiah had a gift from God, whereby he could interpret such engravings; yea, and Ammon also did rejoice.

- 29 फिर भी अम्मोन और उसके भाइयों को दुख हुआ क्योंकि उसके बहुत से भाई मारे गए थे;
- 30 और यह भी कि राजा नूह और उसके याजकों ने जो पाप और परमेश्वर के विरुद्ध कार्य लोगों से करवाए थे; और उन्हें अबिनादी की मृत्यु का भी शोक हुआ; और उन्हें अलमा और जो लोग उसके साथ गए थे उनके जाने का भी दुख हुआ, जिन्होंने परमेश्वर के गिरजे की स्थापना परमेश्वर की शक्ति और अधिकार से, और उन शब्दों पर विश्वास करके की थी जो अबिनादी ने कहे थे ।
- 31 हां, उन्होंने उनके जाने का शोक मनाया, क्योंकि उनको पता नहीं था कि वे कहां भाग गए थे । अब वे आनंदपूर्वक उनके साथ सम्मिलित हो गए थे, क्योंकि उन्होंने उसकी सेवा करने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने का परमेश्वर के साथ अनुबंध किया था ।
- 32 और अब अम्मोन के आने के समय से, राजा लिमही ने भी, और उसके बहुत से लोगों ने भी, उसकी सेवा करने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने का परमेश्वर के साथ अनुबंध किया था ।
- 33 और ऐसा हुआ कि राजा लिमही और उसके बहुत से लोग बपतिस्मा लेने के इच्छुक थे; लेकिन प्रदेश में कोई नहीं था जिसके पास परमेश्वर की ओर से अधिकार हो । और अम्मोन ने अपने आप को अयोग्य सेवक समझकर यह काम करने से मना कर दिया ।
- 34 इसलिए वे अपने आपको उस समय गिरजे में स्थापित नहीं कर पाए, क्योंकि वे प्रभु की आत्मा की प्रतीक्षा कर रहे थे । अब वे अलमा और उसके उन भाइयों की तरह बनने के इच्छुक थे, जो निर्जन प्रदेश में भाग गए थे ।
- 35 वे बपतिस्मा लेने के इच्छुक थे ताकि यह गवाही और प्रमाण हो कि वे अपने संपूर्ण हृदय से परमेश्वर की सेवा करने के इच्छुक थे; फिर भी वे इस समय को आगे बढ़ाते रहे; और उनके बपतिस्मा लेने का विवरण आगे दिया जाएगा ।
- 36 और अब अम्मोन और उसके लोगों की, और राजा लिमही और उसके लोगों की सारी योजना अपने आपको लमनाइयों के हाथों और गुलामी से निकलने की थी ।

Yet Ammon and his brethren were filled with sorrow because so many of their brethren had been slain;

And also that king Noah and his priests had caused the people to commit so many sins and iniquities against God; and they also did mourn for the death of Abinadi; and also for the departure of Alma and the people that went with him, who had formed a church of God through the strength and power of God, and faith on the words which had been spoken by Abinadi.

Yea, they did mourn for their departure, for they knew not whither they had fled. Now they would have gladly joined with them, for they themselves had entered into a covenant with God to serve him and keep his commandments.

And now since the coming of Ammon, king Limhi had also entered into a covenant with God, and also many of his people, to serve him and keep his commandments.

And it came to pass that king Limhi and many of his people were desirous to be baptized; but there was none in the land that had authority from God. And Ammon declined doing this thing, considering himself an unworthy servant.

Therefore they did not at that time form themselves into a church, waiting upon the Spirit of the Lord. Now they were desirous to become even as Alma and his brethren, who had fled into the wilderness.

They were desirous to be baptized as a witness and a testimony that they were willing to serve God with all their hearts; nevertheless they did prolong the time; and an account of their baptism shall be given hereafter.

And now all the study of Ammon and his people, and king Limhi and his people, was to deliver themselves out of the hands of the Lamanites and from bondage.

## मुसायाह 22

- 1 और अब ऐसा हुआ कि अम्मोन और राजा लिमही लोगों से सलाह करने लगे कि गुलामी से वे किस प्रकार निकल सकते हैं; और यहां तक कि उन्होंने सब लोगों को एकत्रित किया; और उन्होंने यह इसलिए किया ताकि इस संबंध में वे लोगों के विचार जान सकें ।
- 2 और ऐसा हुआ कि उनको केवल अपनी स्त्रियों और बच्चों, और जानवर, और पक्षी, और तंबूओं को लेकर निर्जन प्रदेश में चले जाने के अलावा अपने आपको गुलामी से बचाने का कोई मार्ग नहीं मिल पा रहा था; क्योंकि लमनाई इतनी अधिक संख्या में थे, लिमही के लोगों के लिए यह सोचकर उनसे युद्ध करना असंभव था, कि वे तलवार के द्वारा अपने आपको गुलामी से बचा लेंगे ।
- 3 अब ऐसा हुआ कि गिदोन आगे बढ़ा और राजा के सम्मुख खड़ा हुआ, और उससे बोला: अब हे राजा, तुमने बहुत बार मेरी बातों को सुना था जब हम अपने भाइयों, लमनाइयों से युद्ध कर रहे थे ।
- 4 और अब हे राजा, यदि आपने, मुझे अपना निकम्मा सेवक नहीं समझा है, या यदि आपने मेरी बातों पर थोड़ा सा भी ध्यान दिया है, और उनसे आपको कोई भी मदद मिली हो, तो मैं चाहता हूँ कि इस समय भी आप उसी तरह मेरी बातों को सुनें, और मैं आपका सेवक बनकर इन लोगों को गुलामी से मुक्त कराऊंगा ।
- 5 और राजा ने उसे बोलने की अनुमति दे दी । और गिदोन ने उससे कहा:
- 6 नगर के पिछवाड़े उस रास्ते को देखो जो पिछली दीवार के साथ है । रात में लमनाई, या लमनाइयों के पहरेदार नशे में होते हैं; इसलिए हम इन सभी लोगों के बीच घोषणा कर दें कि वे अपने जानवरों के समूहों और झुंडों को एकत्रित कर लें, ताकि वे रात को उन्हें निर्जन प्रदेश में खदेड़ सकें ।
- 7 और मैं आपके आदेशानुसार जाऊंगा और लमनाइयों को मदिरा की अंतिम भेंट दूंगा, और वे नशे में चूर हो जाएंगे, और हम उनके तंबू के बाएं ओर के उस गुप्त रास्ते से निकल जाएंगे जब वे नशे में चूर और सोए होंगे ।
- 8 इस प्रकार हम अपनी स्त्रियों और अपने बच्चों, अपने जानवरों, और अपने पक्षियों के साथ निर्जन प्रदेश में चले जाएंगे; और शिलोम प्रदेश की सीमा से होकर निकल जाएंगे ।

## Mosiah 22

And now it came to pass that Ammon and king Limhi began to consult with the people how they should deliver themselves out of bondage; and even they did cause that all the people should gather themselves together; and this they did that they might have the voice of the people concerning the matter.

And it came to pass that they could find no way to deliver themselves out of bondage, except it were to take their women and children, and their flocks, and their herds, and their tents, and depart into the wilderness; for the Lamanites being so numerous, it was impossible for the people of Limhi to contend with them, thinking to deliver themselves out of bondage by the sword.

Now it came to pass that Gideon went forth and stood before the king, and said unto him: Now O king, thou hast hitherto hearkened unto my words many times when we have been contending with our brethren, the Lamanites.

And now O king, if thou hast not found me to be an unprofitable servant, or if thou hast hitherto listened to my words in any degree, and they have been of service to thee, even so I desire that thou wouldst listen to my words at this time, and I will be thy servant and deliver this people out of bondage.

And the king granted unto him that he might speak. And Gideon said unto him:

Behold the back pass, through the back wall, on the back side of the city. The Lamanites, or the guards of the Lamanites, by night are drunken; therefore let us send a proclamation among all this people that they gather together their flocks and herds, that they may drive them into the wilderness by night.

And I will go according to thy command and pay the last tribute of wine to the Lamanites, and they will be drunken; and we will pass through the secret pass on the left of their camp when they are drunken and asleep.

Thus we will depart with our women and our children, our flocks, and our herds into the wilderness; and we will travel around the land of Shilom.



- 9 और ऐसा हुआ कि राजा ने गिदोन की बातों को माना ।
- 10 और राजा लिमही ने आदेश दिया कि उसके लोग अपने जानवरों को एकत्रित करें; और उसने भेंट के रूप में दी जाने वाली मदिरा लमनाइयों को भिजवाई; और उसने उपहार के रूप में और भी मदिरा भिजवायी; और उन्होंने उस मदिरा को जी भरकर पिया जो राजा लिमही ने भिजवायी थी ।
- 11 और ऐसा हुआ कि राजा लिमही के लोग अपने जानवरों और अपने पक्षियों को लेकर रात में शिलोम प्रदेश की सीमा से होकर निर्जन प्रदेश में चले गए, और जहां से उन्होंने अपना मार्ग, अम्मोन और उसके भाइयों के मार्गदर्शन में जराहेमला प्रदेश की ओर मोड़ लिया ।
- 12 और उन्होंने अपना सारा सोना, और चांदी, और अपनी मूल्यवान वस्तुओं को लिया, जिन्हें वे ले जा सकते थे, और वे अपनी खाने पीने की वस्तुओं को लेकर, निर्जन प्रदेश में गए; और उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी ।
- 13 और कई दिनों तक निर्जन प्रदेश में यात्रा करने के पश्चात वे जराहेमला प्रदेश में पहुंचे, और मुसायाह के लोगों में सम्मिलित हो गए, और उसके अधीन हो गए ।
- 14 और ऐसा हुआ कि मुसायाह ने उन्हें आनंद से साथ स्वीकार किया; और उसने उनके अभिलेखों, और लिमही के लोगों द्वारा पाये गए अभिलेखों को भी स्वीकार किया ।
- 15 और ऐसा हुआ कि जब लमनाइयों को पता लगा कि लिमही के लोग रात को प्रदेश से निकलकर निर्जन प्रदेश में चले गए हैं, तब उन्होंने निर्जन प्रदेश में उनका पीछा करने के लिए एक सेना भेजी;
- 16 और दो दिनों तक उनका पीछा करने के पश्चात, वे उनके मार्ग को खोज न सके; इसलिए वे निर्जन प्रदेश में खो गए ।

And it came to pass that the king hearkened unto the words of Gideon.

And king Limhi caused that his people should gather their flocks together; and he sent the tribute of wine to the Lamanites; and he also sent more wine, as a present unto them; and they did drink freely of the wine which king Limhi did send unto them.

And it came to pass that the people of king Limhi did depart by night into the wilderness with their flocks and their herds, and they went round about the land of Shilom in the wilderness, and bent their course towards the land of Zarahemla, being led by Ammon and his brethren.

And they had taken all their gold, and silver, and their precious things, which they could carry, and also their provisions with them, into the wilderness; and they pursued their journey.

And after being many days in the wilderness they arrived in the land of Zarahemla, and joined Mosiah's people, and became his subjects.

And it came to pass that Mosiah received them with joy; and he also received their records, and also the records which had been found by the people of Limhi.

And now it came to pass when the Lamanites had found that the people of Limhi had departed out of the land by night, that they sent an army into the wilderness to pursue them;

And after they had pursued them two days, they could no longer follow their tracks; therefore they were lost in the wilderness.

अलमा और प्रभु के उन लोगों का विवरण, जो राजा नूह के लोगों द्वारा निर्जन प्रदेश में खदेड़े गए थे।

*An account of Alma and the people of the Lord, who were driven into the wilderness by the people of King Noah.*

## मुसायाह 23

- 1 अब अलमा को प्रभु द्वारा चेतावनी मिलने पर कि राजा नूह की सेना उस पर आक्रमण करेगी, और उसने यह बात अपने लोगों को बता दी, ताकि वे अपने जानवरों को एकत्रित कर लें, और अपने अनाज को लेकर, राजा नूह की सेना के आने से पहले ही निर्जन प्रदेश में चले गए।
- 2 और प्रभु ने उन्हें शक्तिशाली बना दिया, कि राजा नूह के लोग उन्हें नष्ट करने के लिए पकड़ नहीं पाए।
- 3 और वे आठ दिनों तक निर्जन प्रदेश में भागते रहे।
- 4 और वे एक प्रदेश, हां, एक अति सुंदर और आनंदमय, एक शुद्ध जल वाले प्रदेश पर पहुंचे।
- 5 और उन्होंने अपने तंबूओं को लगाया, और भूमि पर हल चलाने, और भवन बनाने लगे; हां, वे परिश्रमी थे, और उन्होंने अत्याधिक परिश्रम किया।
- 6 और लोगों की इच्छा थी कि अलमा को उनका राजा होना चाहिए, क्योंकि वह लोगों का प्रिय था।
- 7 लेकिन उसने उनसे कहा: देखो, यह उचित नहीं कि हमारे पास राजा हो, क्योंकि प्रभु इस प्रकार कहता है: तुम एक को दूसरे से अधिक मत समझो, या किसी भी व्यक्ति को अपने आपको दूसरों से अधिक नहीं समझना चाहिए; इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि यह उचित नहीं है तुम्हारे पास राजा हो।
- 8 फिर भी, यदि यह संभव होता कि तुम्हारे राजा हमेशा धार्मिक व्यक्ति ही हुआ करते थे, तब तुम्हारे लिए राजा का होना ठीक होता।
- 9 लेकिन राजा नूह और उसके याजकों के पापों को याद करो; और मैं स्वयं जाल में फंस गया था, और ऐसे बहुत से काम किये जो प्रभु की दृष्टि में घृणित थे, जिसके कारण मुझे अत्याधिक पश्चाताप करना पड़ा;
- 10 फिर भी, भारी दुःख झेलने के पश्चात, प्रभु ने मेरी याचनाओं को सुना, और मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया, और उसने मुझे अपने हाथों का औजार बना कर तुम में से बहुतों को उसकी सच्चाई में लाया है।
- 11 फिर भी, इस में मैं अपनी महिमा नहीं मानता, क्योंकि मैं अपनी स्वयं की महिमा के योग्य नहीं हूँ।

## Mosiah 23

Now Alma, having been warned of the Lord that the armies of king Noah would come upon them, and having made it known to his people, therefore they gathered together their flocks, and took of their grain, and departed into the wilderness before the armies of king Noah.

And the Lord did strengthen them, that the people of king Noah could not overtake them to destroy them.

And they fled eight days' journey into the wilderness.

And they came to a land, yea, even a very beautiful and pleasant land, a land of pure water.

And they pitched their tents, and began to till the ground, and began to build buildings; yea, they were industrious, and did labor exceedingly.

And the people were desirous that Alma should be their king, for he was beloved by his people.

But he said unto them: Behold, it is not expedient that we should have a king; for thus saith the Lord: Ye shall not esteem one flesh above another, or one man shall not think himself above another; therefore I say unto you it is not expedient that ye should have a king.

Nevertheless, if it were possible that ye could always have just men to be your kings it would be well for you to have a king.

But remember the iniquity of king Noah and his priests; and I myself was caught in a snare, and did many things which were abominable in the sight of the Lord, which caused me sore repentance;

Nevertheless, after much tribulation, the Lord did hear my cries, and did answer my prayers, and has made me an instrument in his hands in bringing so many of you to a knowledge of his truth.

Nevertheless, in this I do not glory, for I am unworthy to glory of myself.

- 12 और अब मैं तुमसे कहता हूँ, तुम राजा नूह द्वारा सताए गए थे, और तुम उसके और उसके याजकों की गुलामी में थे, और उन्हीं के द्वारा तुम पाप में लाए गए; इसलिए तुम पापों के बंधनों से बांधे गए थे ।
- 13 और अब जबकि तुम्हें इन बंधनों से परमेश्वर की शक्ति के द्वारा मुक्त किया गया है; हां, यहां तक कि राजा नूह और उसके लोगों के हाथों से, और पापों के बंधनों से भी मुक्त किया गया है, इस पर मैं चाहता हूँ कि जिस स्वाधीनता में तुम्हें मुक्त किया गया है उसमें तुम दृढ़ रहो, और कि तुम अपने ऊपर राजा होने के लिए किसी मनुष्य का विश्वास मत करो ।
- 14 और किसी भी मनुष्य का अपना शिक्षक या मार्गदर्शक होने के लिए विश्वास मत करो, सिवाय परमेश्वर के उस मनुष्य के, जो उसके मार्ग पर चलता और जो उसकी आज्ञाओं का पालन करता है ।
- 15 इस प्रकार अलमा ने अपने लोगों को शिक्षा दी, कि प्रत्येक मनुष्य अपने पड़ोसियों से वैसा ही प्रेम करे जैसा वह स्वयं अपने आपसे प्रेम करता है, कि उनके बीच में किसी प्रकार का विवाद न हो ।
- 16 और अब, उनके गिरजे का संस्थापक होने के कारण, अलमा उनका उच्च याजक था ।
- 17 और ऐसा हुआ कि बिना परमेश्वर से अधिकार प्राप्त किये, किसी को भी प्रचार करने या शिक्षा देने की अनुमति नहीं थी । इसलिए उसने अपने सभी याजकों और शिक्षकों को नियुक्त किया; और धर्मी लोगों के सिवाय अन्य किसी को भी समर्पित नहीं किया गया ।
- 18 इसलिए वे अपने लोगों की देखभाल करते रहे, और उन्हें धर्मिकता से संबंधित बातों का पोषण देते रहे ।
- 19 और ऐसा हुआ कि वे उस प्रदेश में अत्याधिक उन्नति करने लगे; और उन्होंने उस प्रदेश का नाम हेलाम रखा ।
- 20 और ऐसा हुआ कि हेलाम प्रदेश में उनकी जनसंख्या में बहुत वृद्धि हुई और उन्होंने बहुत उन्नति की; वहां पर उन्होंने एक शहर निर्माण किया, जिसका नाम उन्होंने हेलाम का शहर रखा ।
- 21 फिर भी प्रभु ने अपने लोगों को सुधारना उचित समझा; हां, उसने उनकी सहनशीलता और विश्वास की परीक्षा ली ।
- 22 फिर भी—जो कोई उस में अपना भरोसा रखता है, उसे अंतिम दिन उत्कर्ष प्राप्त होगा । और हां, और ऐसा ही इन लोगों के साथ हुआ था ।

And now I say unto you, ye have been oppressed by king Noah, and have been in bondage to him and his priests, and have been brought into iniquity by them; therefore ye were bound with the bands of iniquity.

And now as ye have been delivered by the power of God out of these bonds; yea, even out of the hands of king Noah and his people, and also from the bonds of iniquity, even so I desire that ye should stand fast in this liberty wherewith ye have been made free, and that ye trust no man to be a king over you.

And also trust no one to be your teacher nor your minister, except he be a man of God, walking in his ways and keeping his commandments.

Thus did Alma teach his people, that every man should love his neighbor as himself, that there should be no contention among them.

And now, Alma was their high priest, he being the founder of their church.

And it came to pass that none received authority to preach or to teach except it were by him from God. Therefore he consecrated all their priests and all their teachers; and none were consecrated except they were just men.

Therefore they did watch over their people, and did nourish them with things pertaining to righteousness.

And it came to pass that they began to prosper exceedingly in the land; and they called the land Helam.

And it came to pass that they did multiply and prosper exceedingly in the land of Helam; and they built a city, which they called the city of Helam.

Nevertheless the Lord seeth fit to chasten his people; yea, he trieth their patience and their faith.

Nevertheless—whosoever putteth his trust in him the same shall be lifted up at the last day. Yea, and thus it was with this people.

- 23 क्योंकि मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि उन्हें गुलामी में लाया गया था, और कोई भी उन्हें गुलामी से मुक्त नहीं कर सका सिवाय प्रभु उनके परमेश्वर के, हां, इब्राहीम और इसहाक और याकूब का परमेश्वर ।
- 24 और ऐसा हुआ कि उसने ही उन्हें मुक्त किया; और अपनी असीम शक्ति भी उन्हें दिखाई, और वे अत्याधिक आनंदित थे ।
- 25 क्योंकि देखो, ऐसा हुआ कि जब वे हेलाम के प्रदेश, हां, हेलाम शहर में थे, जबकि वे आस-पास की भूमि हल चला रहे थे, तब देखो लमनाइयों की एक सेना प्रदेश की सीमा पर थी ।
- 26 तब ऐसा हुआ कि हेलाम के भाई अपने खेतों में से भागे, और हे-लाम शहर में एकत्रित हुए; और वे लमनाइयों की उपस्थिति के कारण बहुत भयभीत हो गए थे ।
- 27 लेकिन अलमा आगे बढ़ा और उनके बीच में खड़ा हो गया, और उन्हें हिम्मत दी कि वे भयभीत न हो, बल्कि वे प्रभु अपने परमेश्वर को याद करें, और वह उन्हें बचाएगा ।
- 28 इसलिए उन्होंने अपने भय को छिपाया, और प्रभु को लगे कि वह लमनाइयों के हृदयों को कोमल करे, ताकि वे उनको, और उनकी पत्नियों, और उनके बच्चों को न मारें ।
- 29 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने लमनाइयों के हृदयों को कोमल कर दिया । और अलमा और उसके भाइयों ने जाकर अपने आपको उनके हाथों में सौंप दिया; और लमनाइयों ने हेलाम प्रदेश को अपने अधिकार में ले लिया ।
- 30 अब लमनाइयों की सेना, जो राजा लिमही के लोगों का पीछा कर रही थी, कई दिनों तक निर्जन प्रदेश में भटकती रही ।
- 31 और देखो, उन्होंने राजा नूह के उन याजकों को, उस स्थान पर पाया जिसे वे अमुलोन पुकारते थे, और उन्होंने अमुलोन के प्रदेश पर कब्जा कर लिया और भूमि पर हल चलाने लगे ।
- 32 अब उन याजकों के मार्गदर्शक का नाम अमुलोन था ।
- 33 और ऐसा हुआ कि अमुलोन ने लमनाइयों से प्रार्थना की; और उसने उनकी पत्नियों को, जो कि लमनाइयों की बेटियां थीं, अपने भाइयों से याचना करने के लिए भी भेजा, कि वे उनके पतियों को नष्ट न करें ।
- 34 और लमनाइयों को उनकी पत्नियों के कारण अमुलोन और उसके भाइयों पर दया आ गई, और उन्होंने उन्हें नष्ट नहीं किया ।

For behold, I will show unto you that they were brought into bondage, and none could deliver them but the Lord their God, yea, even the God of Abraham and Isaac and of Jacob.

And it came to pass that he did deliver them, and he did show forth his mighty power unto them, and great were their rejoicings.

For behold, it came to pass that while they were in the land of Helam, yea, in the city of Helam, while tilling the land round about, behold an army of the Lamanites was in the borders of the land.

Now it came to pass that the brethren of Alma fled from their fields, and gathered themselves together in the city of Helam; and they were much frightened because of the appearance of the Lamanites.

But Alma went forth and stood among them, and exhorted them that they should not be frightened, but that they should remember the Lord their God and he would deliver them.

Therefore they hushed their fears, and began to cry unto the Lord that he would soften the hearts of the Lamanites, that they would spare them, and their wives, and their children.

And it came to pass that the Lord did soften the hearts of the Lamanites. And Alma and his brethren went forth and delivered themselves up into their hands; and the Lamanites took possession of the land of Helam.

Now the armies of the Lamanites, which had followed after the people of king Limhi, had been lost in the wilderness for many days.

And behold, they had found those priests of king Noah, in a place which they called Amulon; and they had begun to possess the land of Amulon and had begun to till the ground.

Now the name of the leader of those priests was Amulon.

And it came to pass that Amulon did plead with the Lamanites; and he also sent forth their wives, who were the daughters of the Lamanites, to plead with their brethren, that they should not destroy their husbands.

And the Lamanites had compassion on Amulon and his brethren, and did not destroy them, because of their wives.

- 35 और अमुलोन और उसके भाई लमनाइयों के साथ मिल गए और वे नफी के प्रदेश की खोज में निर्जन प्रदेश से होकर यात्रा कर रहे थे जबकि उन्होंने हेलाम प्रदेश को पाया जिस पर अलमा और उसके भाइयों द्वारा कब्जा किया गया था ।
- 36 और ऐसा हुआ कि लमनयाटियों ने अलमा और उसके भाइयों से यह प्रतिज्ञा की, कि यदि वे उन्हें नफी के प्रदेश जाने वाले मार्ग को दिखा देंगे तब वे उन्हें उनका जीवन-दान और उनकी स्वाधीनता दे देंगे ।
- 37 लेकिन अलमा के नफी के प्रदेश में जाने वाले मार्ग को दिखा देने के पश्चात लमनाइयों ने अपनी प्रतिज्ञा का पालन नहीं किया; अपितु उन्होंने हेलाम प्रदेश के चारों ओर, अलमा और उसके भाइयों पर पहरेदार नियुक्त कर दिए ।
- 38 और उनमें से बचे हुए लोग नफी के प्रदेश चले गए; और उनमें से कुछ हेलाम के प्रदेश लौट गए, और अपने साथ पहरेदारों की पत्नियों और बच्चों को भी ले आए जो प्रदेश में छोड़ दिए गए थे ।
- 39 और लमनाइयों के राजा ने अमुलोन को अनुमति दे दी कि वह राजा बने और अपने लोगों पर शासन करे, जो कि हेलाम प्रदेश में थे; फिर भी उसे लमनाइयों के राजा की इच्छा के विरुद्ध कुछ भी करने का अधिकार नहीं था ।

And Amulon and his brethren did join the Lamanites, and they were traveling in the wilderness in search of the land of Nephi when they discovered the land of Helam, which was possessed by Alma and his brethren.

And it came to pass that the Lamanites promised unto Alma and his brethren, that if they would show them the way which led to the land of Nephi that they would grant unto them their lives and their liberty.

But after Alma had shown them the way that led to the land of Nephi the Lamanites would not keep their promise; but they set guards round about the land of Helam, over Alma and his brethren.

And the remainder of them went to the land of Nephi; and a part of them returned to the land of Helam, and also brought with them the wives and the children of the guards who had been left in the land.

And the king of the Lamanites had granted unto Amulon that he should be a king and a ruler over his people, who were in the land of Helam; nevertheless he should have no power to do anything contrary to the will of the king of the Lamanites.

## मुसायाह 24

- 1 और ऐसा हुआ कि अमुलोन ने लमनाइयों के राजा का समर्थन प्राप्त किया; इसलिए, लमनाइयों के राजा ने उसे और उसके भाइयों को अनुमति दी कि वे उसके लोगों के लिए, हां, उन लोगों के लिए भी जो शिमलोन प्रदेश, और शिलोम प्रदेश, और अमुलोन प्रदेश में रहते हैं शिक्षक नियुक्त करें।
- 2 क्योंकि लमनाइयों ने इन सभी प्रदेशों पर कब्जा कर लिया था; इसलिए लमनाइयों के राजा ने इन सभी प्रदेशों पर राजाओं को नियुक्त किया था।
- 3 और अब लमनाइयों के राजा का नाम लमान था, उसे अपने पिता के नाम पर बुलाया जाता था; और इसलिए वह राजा लमान कहलाता था। और वह बहुत से लोगों का राजा था।
- 4 और उसने उन सभी प्रदेशों में अमुलोन के भाइयों को शिक्षक नियुक्त किया जो उसके लोगों के कब्जे में थे; और इस प्रकार नफी की भाषा सभी लमनाई लोगों के बीच सिखाई जाने लगी।
- 5 और वे एक दूसरे के साथ मित्रवत लोग थे; फिर भी वे परमेश्वर को नहीं जानते थे; न ही अमुलोन के भाई उन्हें प्रभु उनके परमेश्वर के विषय में ही कुछ सिखाते थे, न ही मूसा की व्यवस्था के विषय में; न ही वे उन्हें अबिनादी के शब्दों को सिखाते थे।
- 6 लेकिन उन्होंने उन्हें अपना अभिलेख रखना सिखाया, और कि वे एक दूसरे को लिख सकें।
- 7 और इस प्रकार लमनाई धन-संपत्ति में बढ़ने लगे; और एक दूसरे के साथ व्यापार करने लगे और बहुत विकास किया, और सांसारिक ज्ञान में धूर्त और में चतुर होने लगे, हां, बहुत ही धूर्त, जिन्हें हर किसी के साथ दुष्टता और लूटपाट करने में आनंद मिलता था, सिवाय अपने स्वयं के भाइयों को छोड़कर।
- 8 और अब ऐसा हुआ कि अमुलोन अलमा और उसके भाइयों पर अधिकार दिखाने लगा, और उस पर अत्याचार करने लगा, और उसने अपने बच्चों को उनके बच्चों पर अत्याचार करने के लिए उकसाया।
- 9 क्योंकि अमुलोन अलमा को जानता था, कि वह राजा के याजकों में से एक था और कि वह व्यक्ति था जिसने अबिनादी के शब्दों का विश्वास किया और राजा के सामने से भगाया गया था, और इसलिए वह उस पर क्रोधित था; क्योंकि वह राजा लमान के अधीन था, फिर भी वह उन पर अपना अधिकार दिखाता, और उनसे काम करवाता, और उनके ऊपर उसने काम-करवाने वालों को रखा था।

## Mosiah 24

And it came to pass that Amulon did gain favor in the eyes of the king of the Lamanites; therefore, the king of the Lamanites granted unto him and his brethren that they should be appointed teachers over his people, yea, even over the people who were in the land of Shemlon, and in the land of Shilom, and in the land of Amulon.

For the Lamanites had taken possession of all these lands; therefore, the king of the Lamanites had appointed kings over all these lands.

And now the name of the king of the Lamanites was Laman, being called after the name of his father; and therefore he was called king Laman. And he was king over a numerous people.

And he appointed teachers of the brethren of Amulon in every land which was possessed by his people; and thus the language of Nephi began to be taught among all the people of the Lamanites.

And they were a people friendly one with another; nevertheless they knew not God; neither did the brethren of Amulon teach them anything concerning the Lord their God, neither the law of Moses; nor did they teach them the words of Abinadi;

But they taught them that they should keep their record, and that they might write one to another.

And thus the Lamanites began to increase in riches, and began to trade one with another and wax great, and began to be a cunning and a wise people, as to the wisdom of the world, yea, a very cunning people, delighting in all manner of wickedness and plunder, except it were among their own brethren.

And now it came to pass that Amulon began to exercise authority over Alma and his brethren, and began to persecute him, and cause that his children should persecute their children.

For Amulon knew Alma, that he had been one of the king's priests, and that it was he that believed the words of Abinadi and was driven out before the king, and therefore he was wroth with him; for he was subject to king Laman, yet he exercised authority over them, and put tasks upon them, and put taskmasters over them.

- 10 और ऐसा हुआ कि उनके कष्ट इतने अधिक थे कि वे परमेश्वर को पूरी शक्ति से पुकारने लगे ।
- 11 और अमुलोन ने उन्हें आज्ञा दी कि वे पुकारना बंद करें; और उन पर ध्यान रखने के लिए उसने पहरेदारों को नियुक्त किया, ताकि जो कोई परमेश्वर को पुकारता हुआ पाया जाए वह मार डाला जाए ।
- 12 और अलमा और उसके लोगों ने प्रभु अपने परमेश्वर को पुकारने के लिए अपनी आवाज नहीं निकाली, लेकिन उन्होंने अपने हृदयों को उसके सामने खोल दिया; और वह उनके हृदयों के विचारों को जानता था ।
- 13 और ऐसा हुआ कि उनके कष्टों के बीच प्रभु की वाणी उन्हें यह कहते हुए सुनाई दी: अपने सिरों को ऊपर उठाओ और दिलासा ग्रहण करो, क्योंकि मैं उस अनुबंध को जानता हूँ जो तुमने मेरे साथ बनाया है; और मैं अपने लोगों से अनुबंध करूँगा और उन्हें गुलामी से मुक्त करूँगा ।
- 14 और मैं उस बोझ को हल्का करूँगा जो तुम्हारे कांधों पर लादा जाता है, कि गुलामी में होते हुए भी, तुम इन्हें अपनी पीठ पर महसूस नहीं करोगे; और यह मैं इसलिए करूँगा कि तुम इसके पश्चात मेरे लिए गवाह बन कर खड़े हो सको, और कि तुम जान सको कि मैं, प्रभु परमेश्वर अपने लोगों से उनके कष्टों के समय भेंट करता हूँ ।
- 15 और अब ऐसा हुआ कि जो बोझ अलमा और उसके भाइयों के ऊपर लादे जाते थे हल्के हो गए; हाँ, प्रभु ने उन्हें शक्ति दी कि वे अपने बोझों को सरलता के साथ ढो सकें, और वे आनंदपूर्वक और धैर्य के साथ प्रभु की सभी इच्छाओं के अधीन हो गए ।
- 16 और ऐसा हुआ कि उनका विश्वास और उनका धैर्य इतना अधिक था कि प्रभु की वाणी उन्हें यह कहते हुए फिर से सुनाई दी: तुम्हें दिलासा मिले, क्योंकि कल मैं तुम्हें गुलामी से मुक्त करूँगा ।
- 17 और उसने अलमा से कहा: तुम इन लोगों के आगे चलो, और मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और इन लोगों को गुलामी से मुक्त करूँगा ।
- 18 अब ऐसा हुआ कि अलमा और उसके लोगों ने रात को अपने जानवरों और अनाज को एकत्रित किया; हाँ, वे रात भर अपने जानवरों को एकत्रित करते रहे ।
- 19 और सुबह के समय प्रभु ने लमनाइयों को गहरी नींद सुला दिया, हाँ, और उनसे काम करवाने वाले सभी गहरी नींद सो गए ।

And it came to pass that so great were their afflictions that they began to cry mightily to God.

And Amulon commanded them that they should stop their cries; and he put guards over them to watch them, that whosoever should be found calling upon God should be put to death.

And Alma and his people did not raise their voices to the Lord their God, but did pour out their hearts to him; and he did know the thoughts of their hearts.

And it came to pass that the voice of the Lord came to them in their afflictions, saying: Lift up your heads and be of good comfort, for I know of the covenant which ye have made unto me; and I will covenant with my people and deliver them out of bondage.

And I will also ease the burdens which are put upon your shoulders, that even you cannot feel them upon your backs, even while you are in bondage; and this will I do that ye may stand as witnesses for me hereafter, and that ye may know of a surety that I, the Lord God, do visit my people in their afflictions.

And now it came to pass that the burdens which were laid upon Alma and his brethren were made light; yea, the Lord did strengthen them that they could bear up their burdens with ease, and they did submit cheerfully and with patience to all the will of the Lord.

And it came to pass that so great was their faith and their patience that the voice of the Lord came unto them again, saying: Be of good comfort, for on the morrow I will deliver you out of bondage.

And he said unto Alma: Thou shalt go before this people, and I will go with thee and deliver this people out of bondage.

Now it came to pass that Alma and his people in the night-time gathered their flocks together, and also of their grain; yea, even all the night-time were they gathering their flocks together.

And in the morning the Lord caused a deep sleep to come upon the Lamanites, yea, and all their taskmasters were in a profound sleep.

- 20 और अलमा और उसके लोग निर्जन प्रदेश में चले गए; और पूरे दिन यात्रा करने के बाद उन्होंने एक घाटी में तंबू लगाया और उस घाटी का नाम अलमा रखा, क्योंकि उसने निर्जन प्रदेश में उनका मार्गदर्शन किया था ।
- 21 हां, और अलमा की घाटी में उन्होंने परमेश्वर के प्रति अपना धन्यवाद प्रकट किया क्योंकि वह उनके प्रति दयावान था, और उसने उनके बोझों को हलका किया था; और उन्हें गुलामी से मुक्त किया था; क्योंकि वे गुलामी में थे, और सिवाय प्रभु उनके परमेश्वर के उन्हें कोई दूसरा मुक्त न कर सका था ।
- 22 और उन्होंने, हां, उनके सभी पुरुष और उनकी सभी स्त्रियां और उनके सभी बच्चों ने, जो अपने परमेश्वर की प्रशंसा में अपनी आवाज़ उठा सकते थे, परमेश्वर के प्रति धन्यवाद प्रकट किया ।
- 23 और अब प्रभु ने अलमा से कहा: तुम जल्दी करो और अपने आपको और इन लोगों को इस स्थान से निकाल ले जाओ, क्योंकि लमनाई जाग गए हैं और वे तुम्हारा पीछा कर रहे हैं; इसलिए तुम इस स्थान से निकल जाओ, और मैं लमनाइयों को इस घाटी में रोक दूंगा ताकि इस से आगे वे तुम्हारा पीछा न कर सकें ।
- 24 और ऐसा हुआ कि वे घाटी से बाहर निकल आए, और निर्जन प्रदेश में अपनी यात्रा की ।
- 25 और निर्जन प्रदेश में बारह दिनों तक रहने के पश्चात वे जराहेमला प्रदेश में पहुंचें; और राजा मुसायाह ने आनंद के साथ उनका स्वागत किया ।

And Alma and his people departed into the wilderness; and when they had traveled all day they pitched their tents in a valley, and they called the valley Alma, because he led their way in the wilderness.

Yea, and in the valley of Alma they poured out their thanks to God because he had been merciful unto them, and eased their burdens, and had delivered them out of bondage; for they were in bondage, and none could deliver them except it were the Lord their God.

And they gave thanks to God, yea, all their men and all their women and all their children that could speak lifted their voices in the praises of their God.

And now the Lord said unto Alma: Haste thee and get thou and this people out of this land, for the Lamanites have awakened and do pursue thee; therefore get thee out of this land, and I will stop the Lamanites in this valley that they come no further in pursuit of this people.

And it came to pass that they departed out of the valley, and took their journey into the wilderness.

And after they had been in the wilderness twelve days they arrived in the land of Zarahemla; and king Mosiah did also receive them with joy.



## मुसायाह 25

- 1 और अब राजा मुसायाह ने आदेश दिया कि सभी लोग एकत्रित हों ।
- 2 अब नफी की संतान, या नफी के वंशज उतनी अधिक संख्या में नहीं थे, जितने कि जराहेमला के लोग थे, जोकि मूलक के, और उनके वंशज थे जो उसके साथ निर्जन प्रदेश में आए थे ।
- 3 और नफी के लोग और जराहेमला के लोग उतने नहीं थे जितने लमनाई थे; हां, वे आधी संख्या में भी नहीं थे ।
- 4 और अब नफी के सारे लोग, और जराहेमला के सारे लोग भी एकत्रित हुए, और वे दो अलग-अलग दलों में एकत्रित हुए ।
- 5 और ऐसा हुआ कि जीनिफ के अभिलेख को मुसायाह ने पढ़ा, और अपने लोगों को पढ़कर सुनाया; हां, उसने जीनिफ के लोगों का जराहेमला प्रदेश छोड़ने के समय से लेकर उनके वापस लौटने तक का अभिलेख पढ़ा ।
- 6 और उसने अलमा और उसके भाइयों, और उनके जराहेमला प्रदेश छोड़ने के समय से लेकर वापस लौटने तक के सब कष्टों का विवरण पढ़ा ।
- 7 और अब, जब मुसायाह ने उन अभिलेखों को पढ़ना समाप्त किया तब जो लोग प्रदेश में रुके हुए थे आश्चर्यचकित और अचम्भीत हो उठे ।
- 8 क्योंकि वे नहीं जानते थे कि क्या सोचें; क्योंकि जब उन्होंने उन्हें देखा जो गुलामी से मुक्त किये गए थे वे अत्याधिक आनंद से भर गए ।
- 9 और फिर, जब उन्हें अपने उन भाइयों को याद किया जो लमनाइयों द्वारा मार दिए गए थे तो वे दुख से भर गए, और बहुत आंसू भी बहाए ।
- 10 और फिर, जब उन्होंने परमेश्वर की अविलंब भलाई, और अलमा और उसके भाइयों को लमनाइयों के हाथों और गुलामी से मुक्त करने की उसकी शक्ति पर विचार किया, तो उन्होंने अपनी आवाज उठाई और परमेश्वर को धन्यवाद दिया ।
- 11 और फिर, जब उन्होंने लमनाइयों, जोकि उन के भाई थे, की पापी और दूषित अवस्था के विषय में सोचा, तब वे उनकी आत्माओं के कल्याण के लिए दुख और पीड़ा से भर उठे ।

## Mosiah 25

And now king Mosiah caused that all the people should be gathered together.

Now there were not so many of the children of Nephi, or so many of those who were descendants of Nephi, as there were of the people of Zarahemla, who was a descendant of Mulek, and those who came with him into the wilderness.

And there were not so many of the people of Nephi and of the people of Zarahemla as there were of the Lamanites; yea, they were not half so numerous.

And now all the people of Nephi were assembled together, and also all the people of Zarahemla, and they were gathered together in two bodies.

And it came to pass that Mosiah did read, and caused to be read, the records of Zeniff to his people; yea, he read the records of the people of Zeniff, from the time they left the land of Zarahemla until they returned again.

And he also read the account of Alma and his brethren, and all their afflictions, from the time they left the land of Zarahemla until the time they returned again.

And now, when Mosiah had made an end of reading the records, his people who tarried in the land were struck with wonder and amazement.

For they knew not what to think; for when they beheld those that had been delivered out of bondage they were filled with exceedingly great joy.

And again, when they thought of their brethren who had been slain by the Lamanites they were filled with sorrow, and even shed many tears of sorrow.

And again, when they thought of the immediate goodness of God, and his power in delivering Alma and his brethren out of the hands of the Lamanites and of bondage, they did raise their voices and give thanks to God.

And again, when they thought upon the Lamanites, who were their brethren, of their sinful and polluted state, they were filled with pain and anguish for the welfare of their souls.

- 12 और ऐसा हुआ कि जो अमुलोन और उसके भाइयों, जिन्होंने लमनाइयों की बेटियों को पत्नियों के लिए ले लिया था, की संतान अपने पिताओं की व्यवहार से दुखी थे, और वे अपने पिताओं के नामों द्वारा नहीं बुलाए जाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने अपने ऊपर नफी का नाम धारण कर लिया, ताकि वे नफी की संतान कहलाए जाएं और उनकी गिनती उन लोगों में हो सके जो नफाई कहलाते थे ।
- 13 और अब जराहेमला के सभी लोगों की गिनती नफाइयों में होती थी, और ऐसा इसलिए था क्योंकि उस राज्य को नफी के वंशजों को छोड़कर किसी अन्य को प्रदान नहीं किया गया था ।
- 14 और अब ऐसा हुआ कि जब मुसायाह ने बोलना और लोगों को पढ़ कर सुनाना समाप्त किया, तब उसने इच्छा प्रकट की कि अलमा भी लोगों से कुछ बोले ।
- 15 और अलमा ने उनसे बात की, जब वे बड़े-बड़े दलों में एकत्रित हुए थे, और तब उसने एक दल से दूसरे दल जाते हुए, लोगों को पश्चाताप और प्रभु पर विश्वास करने का प्रचार किया ।
- 16 और उसने लिमही के लोगों और अपने भाइयों को उपदेश दिया, वे सब जो गुलामी से मुक्त किये गए थे, कि उन्हें याद रखना चाहिए कि वह प्रभु था जिसने उनको मुक्त किया था ।
- 17 और ऐसा हुआ कि जब अलमा लोगों को अनेक बातों की शिक्षा दे चुका, और उनसे बोलना समाप्त किया, तो राजा लिमही इच्छुक था कि उसका बपतिस्मा किया जाए; और उसके सब लोग इच्छुक थे कि उनका भी बपतिस्मा किया जाए ।
- 18 इसलिए, अलमा जल में गया और उन्हें बपतिस्मा दिया; हां, उसने उनको उसी प्रकार बपतिस्मा दिया जिस प्रकार उसके भाइयों का मॉरमन के जल में हुआ था; हां, और जितने लोगों को उसने बपतिस्मा दिया वे सब परमेश्वर के गिरजे के सदस्य हुए; और ऐसा अलमा के शब्दों पर उनके विश्वास के कारण हुआ ।
- 19 और ऐसा हुआ कि राजा मुसायाह ने अलमा को अनुमति दे दी कि वह संपूर्ण जराहेमला प्रदेश में गिरजे की स्थापना कर सके; और उसे प्रत्येक गिरजे के लिए याजकों और शिक्षकों को नियुक्त करने का अधिकार भी दिया ।
- 20 अब यह इसलिए किया गया क्योंकि इतने अधिक लोग थे जिन्हें एक ही शिक्षक द्वारा न तो नियंत्रित किया जा सकता था; और न ही एक ही समय में वे सब परमेश्वर के वचन को सुन सकते थे ।

And it came to pass that those who were the children of Amulon and his brethren, who had taken to wife the daughters of the Lamanites, were displeased with the conduct of their fathers, and they would no longer be called by the names of their fathers, therefore they took upon themselves the name of Nephi, that they might be called the children of Nephi and be numbered among those who were called Nephites.

And now all the people of Zarahemla were numbered with the Nephites, and this because the kingdom had been conferred upon none but those who were descendants of Nephi.

And now it came to pass that when Mosiah had made an end of speaking and reading to the people, he desired that Alma should also speak to the people.

And Alma did speak unto them, when they were assembled together in large bodies, and he went from one body to another, preaching unto the people repentance and faith on the Lord.

And he did exhort the people of Limhi and his brethren, all those that had been delivered out of bondage, that they should remember that it was the Lord that did deliver them.

And it came to pass that after Alma had taught the people many things, and had made an end of speaking to them, that king Limhi was desirous that he might be baptized; and all his people were desirous that they might be baptized also.

Therefore, Alma did go forth into the water and did baptize them; yea, he did baptize them after the manner he did his brethren in the waters of Mormon; yea, and as many as he did baptize did belong to the church of God; and this because of their belief on the words of Alma.

And it came to pass that king Mosiah granted unto Alma that he might establish churches throughout all the land of Zarahemla; and gave him power to ordain priests and teachers over every church.

Now this was done because there were so many people that they could not all be governed by one teacher; neither could they all hear the word of God in one assembly;

- 21 इसलिए वे सब अलग-अलग दलों में अपने आपको एकत्रित करते थे, जिन्हें गिरजा कहा जाता था; और प्रत्येक गिरजे का अपना याजक और शिक्षक था, और प्रत्येक याजक अलमा के मुख से निकले शब्दों के अनुसार ही उपदेश देता था।
- 22 और इस प्रकार, अनेक गिरजाओं के होते हुए भी वे सब एक ही गिरजे थे, हां, यहां तक कि परमेश्वर के गिरजा था; क्योंकि उन सभी गिरजाओं में पश्चाताप करने और परमेश्वर पर विश्वास करने के सिवाय और कुछ नहीं सिखाया जाता था।
- 23 और अब जराहेमला प्रदेश में सात गिरजे थे। और ऐसा हुआ कि जो लोग मसीह का, या परमेश्वर का नाम अपने ऊपर लेना चाहते थे, वे सब परमेश्वर के गिरजे में शामिल हो जाते थे।
- 24 और वे परमेश्वर के लोग कहलाते थे। और प्रभु ने उनके ऊपर अपनी आत्मा को उड़ला था, और वे प्रदेश में आशीषित, और संपन्न थे।

Therefore they did assemble themselves together in different bodies, being called churches; every church having their priests and their teachers, and every priest preaching the word according as it was delivered to him by the mouth of Alma.

And thus, notwithstanding there being many churches they were all one church, yea, even the church of God; for there was nothing preached in all the churches except it were repentance and faith in God.

And now there were seven churches in the land of Zarahemla. And it came to pass that whosoever were desirous to take upon them the name of Christ, or of God, they did join the churches of God;

And they were called the people of God. And the Lord did pour out his Spirit upon them, and they were blessed, and prospered in the land.

## मुसायाह 26

- 1 अब ऐसा हुआ कि बहुत-सी उभरती पीढ़ियां थीं जो राजा बिन्यामीन की बातों को समझ नहीं पाई थीं, क्योंकि जब उसने अपने लोगों से बातें की थीं तब वे छोटे बच्चे थे; और वे अपने पिताओं की परंपराओं पर विश्वास नहीं करते थे।
- 2 वे, न तो उस पर विश्वास करते थे जो मृतक के पुनरुत्थान के संबंध कहा गया था, न ही वे मसीह के आने के संबंध में विश्वास करते थे।
- 3 और अब अपने अविश्वास के कारण वे परमेश्वर के वचन को समझ नहीं सके थे; और उनके हृदय कठोर हो गए थे।
- 4 और वे न तो बपतिस्मा लेना चाहते थे; न वे गिरजे में शामिल होना चाहते थे। और वे अपने विश्वास की तरह अलग थे, और इसके बाद वे हमेशा वैसे ही, यहां तक कि अपनी सांसारिक और पापपूर्ण अवस्था में रहे; क्योंकि उन्होंने प्रभु अपने परमेश्वर को कभी नहीं पुकारा था।
- 5 और अब मुसायाह के शासन के समय वे परमेश्वर के लोगों की संख्या के आधे भी नहीं थे; लेकिन अपने भाइयों के साथ मतभेद होने के कारण उनकी संख्या में वृद्धि हुई।
- 6 क्योंकि ऐसा हुआ कि उनमें से बहुतों को इन्होंने अपनी चापलूसी की बातों से धोखा दिया था, जो गिरजे में थे, और उन्हें बहुत से पाप करने के लिए उकसाया; इसलिए यह उचित हो गया था कि जिन्होंने गिरजे में रहते हुए पाप किये थे, उन्हें गिरजे के द्वारा चेतावनी दी जाए।
- 7 और ऐसा हुआ कि उन्हें याजकों के सम्मुख लाया गया, और शिक्षकों द्वारा उन्हें याजकों को सौंपा गया; और याजक उन्हें अलमा के सम्मुख ले गए, जोकि उच्च याजक था।
- 8 अब राजा मुसायाह ने अलमा को गिरजे पर अधिकार दे रखा था।
- 9 और ऐसा हुआ कि अलमा उनके संबंध में कुछ जानता नहीं था; लेकिन उनके विरुद्ध बहुत से गवाह थे; हां, लोग खड़े हुए और उनके अत्याधिक पापों की गवाही दी।
- 10 अब गिरजे में ऐसी घटना पहले कभी नहीं हुई थी; इसलिए अलमा अपनी आत्मा में दुखी था, और उसने आदेश दिया कि उन्हें राजा के सम्मुख ले जाया जाए।

## Mosiah 26

Now it came to pass that there were many of the rising generation that could not understand the words of king Benjamin, being little children at the time he spake unto his people; and they did not believe the tradition of their fathers.

They did not believe what had been said concerning the resurrection of the dead, neither did they believe concerning the coming of Christ.

And now because of their unbelief they could not understand the word of God; and their hearts were hardened.

And they would not be baptized; neither would they join the church. And they were a separate people as to their faith, and remained so ever after, even in their carnal and sinful state; for they would not call upon the Lord their God.

And now in the reign of Mosiah they were not half so numerous as the people of God; but because of the dissensions among the brethren they became more numerous.

For it came to pass that they did deceive many with their flattering words, who were in the church, and did cause them to commit many sins; therefore it became expedient that those who committed sin, that were in the church, should be admonished by the church.

And it came to pass that they were brought before the priests, and delivered up unto the priests by the teachers; and the priests brought them before Alma, who was the high priest.

Now king Mosiah had given Alma the authority over the church.

And it came to pass that Alma did not know concerning them; but there were many witnesses against them; yea, the people stood and testified of their iniquity in abundance.

Now there had not any such thing happened before in the church; therefore Alma was troubled in his spirit, and he caused that they should be brought before the king.

- 11 और उसने राजा से कहा: देखो, यहां बहुत से हैं जिन्हें हम आपके सम्मुख लाए हैं, जिन पर उनके भाइयों ने आरोप लगाया है; हां, और वे विभिन्न पापों में पकड़े गए हैं। और वे अपने पापों के लिए पश्चात्ताप नहीं करते हैं; इसलिए हम इन्हें आपके सम्मुख लाए हैं, ताकि आप इनके अपराधों के अनुसार इनका न्याय करें।
- 12 लेकिन राजा मुसायाह ने अलमा से कहा: देखो, मैं इनका न्याय नहीं करूंगा; इसलिए न्याय किये जाने के लिए मैं इन्हें तुम्हारे हाथों में सौंपता हूँ।
- 13 और अब अलमा की आत्मा फिर से परेशान हो गई; और वह गया और प्रभु से पूछा कि इस संबंध में उसे क्या करना चाहिए, क्योंकि उसे भय था कि कहीं वह परमेश्वर की दृष्टि में कोई गलती न कर बैठे।
- 14 और ऐसा हुआ कि जब उसने परमेश्वर के सामने अपने संपूर्ण प्राण को उडेल दिया, तब प्रभु की वाणी उसे यह कहते हुए सुनाई दी:
- 15 तुम आशीषित हो, अलमा, और आशीषित हैं वे लोग जिन्होंने मॉरमन के जल में बपतिस्मा लिया था। तुम आशीषित हो क्योंकि तुमने मेरे सेवक अबिनादी के शब्दों मात्र पर अत्याधिक विश्वास किया।
- 16 और वे लोग आशीषित हैं क्योंकि उन्होंने मात्र तुम्हारे उन शब्दों पर अत्याधिक विश्वास किया जो तुमने उनसे कहे थे।
- 17 और तुम आशीषित हो क्योंकि तुमने इन लोगों के बीच में गिरजे की स्थापना की है; और इन्हें स्थापित किया जाएगा, और ये मेरे लोग होंगे।
- 18 हां, आशीषित हैं ये लोग जो मेरा नाम धारण करने को तैयार हैं; क्योंकि वे मेरे नाम से पुकारे जाएंगे; और वे मेरे हैं।
- 19 और तुमने इन पापियों के विषय में मेरी जो सम्मति मांगी है उसके लिए तुमको आशीष दी जाती है।
- 20 तुम मेरे सेवक हो; और मैं तुम से अनुबंध बनाता हूँ कि तुम्हें अनंत जीवन प्राप्त होगा; और तुम मेरी सेवा करोगे और मेरे नाम में आगे बढ़ोगे, और मेरी भेड़ों को एकत्रित करोगे।
- 21 और वह जो मेरी वाणी सुनेगा मेरी भेड़ होगा; और तुम उसे गिरजे में स्वीकार करोगे, और मैं भी उसे स्वीकार करूंगा।
- 22 क्योंकि देखो, यह मेरा गिरजा है; जो कोई बपतिस्मा लेता है, उसे पश्चात्ताप का बपतिस्मा दिया जाएगा। और जिसे तुम मेरे नाम में स्वीकार करोगे; और उसे मैं उदारता से क्षमा करूंगा।

And he said unto the king: Behold, here are many whom we have brought before thee, who are accused of their brethren; yea, and they have been taken in divers iniquities. And they do not repent of their iniquities; therefore we have brought them before thee, that thou mayest judge them according to their crimes.

But king Mosiah said unto Alma: Behold, I judge them not; therefore I deliver them into thy hands to be judged.

And now the spirit of Alma was again troubled; and he went and inquired of the Lord what he should do concerning this matter, for he feared that he should do wrong in the sight of God.

And it came to pass that after he had poured out his whole soul to God, the voice of the Lord came to him, saying:

Blessed art thou, Alma, and blessed are they who were baptized in the waters of Mormon. Thou art blessed because of thy exceeding faith in the words alone of my servant Abinadi.

And blessed are they because of their exceeding faith in the words alone which thou hast spoken unto them.

And blessed art thou because thou hast established a church among this people; and they shall be established, and they shall be my people.

Yea, blessed is this people who are willing to bear my name; for in my name shall they be called; and they are mine.

And because thou hast inquired of me concerning the transgressor, thou art blessed.

Thou art my servant; and I covenant with thee that thou shalt have eternal life; and thou shalt serve me and go forth in my name, and shalt gather together my sheep.

And he that will hear my voice shall be my sheep; and him shall ye receive into the church, and him will I also receive.

For behold, this is my church; whosoever is baptized shall be baptized unto repentance. And whosoever ye receive shall believe in my name; and him will I freely forgive.

- 23 क्योंकि वह मैं हूँ जो संसार के पापों को अपने ऊपर लेता है; क्योंकि वह मैं हूँ जिसने उन्हें रचा है; और वह मैं हूँ जो उसे अपने दाहिने हाथ की ओर स्थान देता हूँ जो अंत तक विश्वास करता है ।
- 24 क्योंकि देखो, मेरे नाम में वे बुलाए जाते हैं; और यदि वे मुझे जानते हैं तब वे आगे आएंगे, और मेरे दाहिने हाथ की ओर अनंत काल के लिए स्थान पाएंगे ।
- 25 और ऐसा होगा कि जब दूसरी बार तुरही बजेगी तब वे जो मुझे कभी जानते नहीं थे आगे आएंगे और मेरे सम्मुख खड़े होंगे ।
- 26 और तब वे जानेंगे कि मैं प्रभु उनका परमेश्वर हूँ, और मैं ही उनका मुक्तिदाता हूँ; लेकिन वे मुक्ति नहीं पाएंगे ।
- 27 और तब मैं उनसे यह अंगीकार करूंगा कि मैं उनको कभी नहीं जानता था; और तब वे उस अनंत आग में ले जाएंगे जिसे शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार किया गया है ।
- 28 इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, कि जो कोई मेरी वाणी को नहीं सुनेगा, उसे तुम मेरे गिरजे में स्वीकार मत करना, क्योंकि मैं उसे अंतिम दिन में स्वीकार नहीं करूंगा ।
- 29 इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, जाओ; और जो कोई मेरे विरुद्ध उल्लंघन करता है, तुम उसका न्याय उन पापों के अनुसार करना जो उसने किये हैं; और यदि वह अपने पापों को तुम्हारे और मेरे समक्ष अंगीकार करता, और अपने सच्चे हृदय से पश्चाताप करता है, तुम उसे क्षमा करोगे और मैं भी उसे क्षमा करूंगा ।
- 30 हां, और जितनी बार मेरे लोग पश्चाताप करेंगे मैं उतनी बार उन्हें मेरे विरुद्ध उनके अपराधों के लिए क्षमा करूंगा ।
- 31 और तुम एक दूसरे के अपराधों को भी क्षमा करोगे, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, वह जो अपने पड़ोसी के अपराधों को, पश्चाताप करने पर भी क्षमा नहीं करता, वह अपने ऊपर दंडाज्ञा लाता है ।
- 32 अब मैं तुम से कहता हूँ, जाओ; और जो कोई अपने पापों के लिए पश्चाताप नहीं करेगा उसकी गिनती मेरे लोगों में नहीं की जाएगी; और इसका पालन इसी समय से किया जाएगा ।
- 33 और ऐसा हुआ जब इन शब्दों को अलमा ने सुना उसने इनको लिख लिया ताकि वह इन्हें अपने पास रख सके, और जिससे कि वह उस गिरजे के लोगों का परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार न्याय कर सके ।

For it is I that taketh upon me the sins of the world; for it is I that hath created them; and it is I that granteth unto him that believeth unto the end a place at my right hand.

For behold, in my name are they called; and if they know me they shall come forth, and shall have a place eternally at my right hand.

And it shall come to pass that when the second trump shall sound then shall they that never knew me come forth and shall stand before me.

And then shall they know that I am the Lord their God, that I am their Redeemer; but they would not be redeemed.

And then I will confess unto them that I never knew them; and they shall depart into everlasting fire prepared for the devil and his angels.

Therefore I say unto you, that he that will not hear my voice, the same shall ye not receive into my church, for him I will not receive at the last day.

Therefore I say unto you, Go; and whosoever transgresseth against me, him shall ye judge according to the sins which he has committed; and if he confess his sins before thee and me, and repenteth in the sincerity of his heart, him shall ye forgive, and I will forgive him also.

Yea, and as often as my people repent will I forgive them their trespasses against me.

And ye shall also forgive one another your trespasses; for verily I say unto you, he that forgiveth not his neighbor's trespasses when he says that he repents, the same hath brought himself under condemnation.

Now I say unto you, Go; and whosoever will not repent of his sins the same shall not be numbered among my people; and this shall be observed from this time forward.

And it came to pass when Alma had heard these words he wrote them down that he might have them, and that he might judge the people of that church according to the commandments of God.

- 34 और ऐसा हुआ कि अलमा गया और जो पाप में पकड़े गए थे उनका न्याय, प्रभु की वाणी के अनुसार किया ।
- 35 और जिस किसी ने अपने पापों का पश्चाताप किया और उनका अंगीकार किया, उनकी गिनती उसने गिरजे के लोगों में की ।
- 36 और जिन्होंने अपने पापों का अंगीकार नहीं किया और अपने अपराधों से पश्चाताप नहीं किया, उनकी गिनती गिरजे के लोगों में नहीं की गई, और उनके नाम मिटा दिए गए ।
- 37 और ऐसा हुआ कि अलमा ने गिरजे के सभी कामों को नियंत्रित किया; और परमेश्वर के सम्मुख सावधानीपूर्वक काम करते हुए, वे गिरजे के कामों में फिर से अत्याधिक शांति और उन्नति करने लगे, और बहुतों को स्वीकार किया और बहुतों को बपतिस्मा दिया ।
- 38 और अब इन सब कामों को अलमा और उसके साथियों ने, संपूर्ण परिश्रम में चलते हुए, सब कामों में परमेश्वर के वचनों को सीखाते हुए, हर प्रकार के कष्टों को सहते हुए, उनके द्वारा सताए जाते हुए जो परमेश्वर के गिरजे से संबंध नहीं रखते थे, किया जो गिरजे का कामकाज देखते थे ।
- 39 और उन्होंने अपने भाइयों को चेतावनी दी; और उन्हें भी, प्रत्येक को उसके पापों, या उन पापों के लिए जो उसने किये थे, उसके अनुसार प्रभु की वाणी के द्वारा चेतावनी दी गई, निरंतर प्रार्थना करने, और प्रत्येक काम में धन्यवाद देने की आज्ञा परमेश्वर की ओर से दी गई ।

And it came to pass that Alma went and judged those that had been taken in iniquity, according to the word of the Lord.

And whosoever repented of their sins and did confess them, them he did number among the people of the church;

And those that would not confess their sins and repent of their iniquity, the same were not numbered among the people of the church, and their names were blotted out.

And it came to pass that Alma did regulate all the affairs of the church; and they began again to have peace and to prosper exceedingly in the affairs of the church, walking circumspectly before God, receiving many, and baptizing many.

And now all these things did Alma and his fellow laborers do who were over the church, walking in all diligence, teaching the word of God in all things, suffering all manner of afflictions, being persecuted by all those who did not belong to the church of God.

And they did admonish their brethren; and they were also admonished, every one by the word of God, according to his sins, or to the sins which he had committed, being commanded of God to pray without ceasing, and to give thanks in all things.

## मुसायाह 27

- 1 और अब ऐसा हुआ कि अत्याचार जो गिरजे पर अविश्वासियों द्वारा किया गया था इतना अधिक हो गया कि गिरजे के सदस्य बड़बड़ाने, और अपने मार्गदर्शकों से इस विषय के संबंध में शिकायत करने लगे; और उन्होंने अलमा को शिकायत की। और अलमा ने राजा मुसायाह के सम्मुख इस बात को रखा। और मुसायाह ने अपने याजकों के साथ सलाह की।
- 2 और ऐसा हुआ कि राजा मुसायाह ने प्रदेश में चारों ओर यह घोषणा करवाई कि कोई भी अविश्वासी उनमें से किसी को भी न सताए जो परमेश्वर के गिरजे से संबंध रखते थे।
- 3 और सभी गिरजों में यह कड़ा आदेश दे दिया गया कि उनके बीच में किसी प्रकार का अत्याचार नहीं होना चाहिए, कि सब मनुष्यों के बीच में समानता होनी चाहिए;
- 4 कि उन्हें न तो अहंकार को और न ही घमंड को उनकी शांति भंग करने देना चाहिए; कि प्रत्येक व्यक्ति अपने पालन-पोषण के लिए अपने हाथों से परिश्रम करते हुए, अपने पड़ोसी का अपने समान आदर करना चाहिए।
- 5 हां, और उनके सभी याजकों और शिक्षकों को अपने पालन-पोषण के लिए, सभी परिस्थितियों में सिवाय बीमारी, या बहुत निर्धनता को छोड़कर, अपने हाथों से परिश्रम करना चाहिए, और यह सब करने से, उन पर परमेश्वर का बहुत अधिक अनुग्रह हुआ।
- 6 और प्रदेश में फिर से शांति होने लगी; और लोगों की संख्या बहुत अधिक होने लगी, और पृथ्वी पर फैलने लगे, हां, उत्तर में और दक्षिण में, पूरब में और पश्चिम में, प्रदेश के चारों कोनों में बड़े शहरों और गांवों का निर्माण करने लगे।
- 7 और प्रभु ने उनसे भेंट की और उन्हें समृद्ध किया, और वे बड़े और धनवान लोग बन गए।
- 8 अब मुसायाह के बेटों की गिनती अविश्वासियों में की जाती थी; और अलमा का एक बेटा भी उनमें गिना जाता था, उसे अपने पिता के नाम के कारण अलमा ही बुलाया जाता था; हालांकि, वह बहुत दुष्ट और मूर्तिपूजक बन गया था; और वह बहुत वाकपटुक पुरुष था, और लोगों से बहुत चापलूसी की बातें बोलता था; इसलिए उसने कई लोगों से अपने समान अपराध कराए थे।

## Mosiah 27

And now it came to pass that the persecutions which were inflicted on the church by the unbelievers became so great that the church began to murmur, and complain to their leaders concerning the matter; and they did complain to Alma. And Alma laid the case before their king, Mosiah. And Mosiah consulted with his priests.

And it came to pass that king Mosiah sent a proclamation throughout the land round about that there should not any unbeliever persecute any of those who belonged to the church of God.

And there was a strict command throughout all the churches that there should be no persecutions among them, that there should be an equality among all men;

That they should let no pride nor haughtiness disturb their peace; that every man should esteem his neighbor as himself, laboring with their own hands for their support.

Yea, and all their priests and teachers should labor with their own hands for their support, in all cases save it were in sickness, or in much want; and doing these things, they did abound in the grace of God.

And there began to be much peace again in the land; and the people began to be very numerous, and began to scatter abroad upon the face of the earth, yea, on the north and on the south, on the east and on the west, building large cities and villages in all quarters of the land.

And the Lord did visit them and prosper them, and they became a large and wealthy people.

Now the sons of Mosiah were numbered among the unbelievers; and also one of the sons of Alma was numbered among them, he being called Alma, after his father; nevertheless, he became a very wicked and an idolatrous man. And he was a man of many words, and did speak much flattery to the people; therefore he led many of the people to do after the manner of his iniquities.



- 9 और वह परमेश्वर के गिरजे की प्रगति में बहुत बड़ा बाधक बना; क्योंकि वह लोगों के हृदयों को चुरा कर; लोगों के बीच में बहुत अधिक अनबन पैदा करके; परमेश्वर के शत्रु को उनके ऊपर अपना अधिकार जमाने का अवसर देता ।
- 10 और अब ऐसा हुआ कि जब वह परमेश्वर के गिरजे को नष्ट करने जा रहा था, क्योंकि वह मुसायाह के बेटों के साथ गुप्तरूप से इधर-उधर जाकर गिरजे को नष्ट करने का प्रयास करने लगा, और परमेश्वर, अथवा राजा की आज्ञाओं के विपरीत, प्रभु के लोगों को भटकाने के लिए—
- 11 और जैसा कि मैंने तुम से कहा, जब वे इधर-उधर जा कर परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे, प्रभु का एक स्वर्गदूत उन्हें दिखाई दिया; वह उनके सामने बादल के समान नीचे उतरा; और वह उनसे ऐसे बोला मानो बिजली कड़कने की आवाज हो, जिससे वह धरती जिस पर वे खड़े थे हिलने लगी;
- 12 और उनका आश्चर्य इतना अधिक था, कि वे धरती पर गिर पड़े, और उन शब्दों को नहीं समझ पाए जो वह उनसे बोल रहा था ।
- 13 फिर भी उसने यह कहते हुए फिर से पुकारा: अलमा, उठ और खड़ा हो, तुम परमेश्वर की गिरजे को क्यों सताते हो ? क्योंकि प्रभु ने कहा है: यह मेरा गिरजा है, और मैं इसको स्थापित करूंगा; और सिवाय मेरे लोगों के अपराध के, कोई इसे नष्ट नहीं कर सकेगा ।
- 14 और फिर, स्वर्गदूत ने कहा: देखो, प्रभु ने अपने लोगों की प्रार्थनाओं, और अपने सेवकों की प्रार्थनाओं को भी सुना है, अलमा, जो कि तुम्हारा पिता है; क्योंकि उसने भारी विश्वास के साथ तुम्हारे संबंध में प्रार्थना की है कि तुम्हें सत्य का ज्ञान कराया जाए, इसलिए, परमेश्वर की शक्ति और अधिकार का तुम्हें विश्वास दिलाने के उद्देश्य से मैं आया हूँ, कि उसके सेवकों की प्रार्थनाओं का उत्तर उनके विश्वास के अनुसार दिया जा सकता है ।
- 15 और अब देखो, क्या तुम परमेश्वर की शक्ति पर संदेह कर सकते हो ? क्योंकि देखो, क्या मेरी वाणी धरती को नहीं कंपकंपाती है ? और क्या तुम मुझे अपने सामने नहीं देख रहे हो ? और मैं परमेश्वर की ओर से भेजा गया हूँ ।

And he became a great hinderment to the prosperity of the church of God; stealing away the hearts of the people; causing much dissension among the people; giving a chance for the enemy of God to exercise his power over them.

And now it came to pass that while he was going about to destroy the church of God, for he did go about secretly with the sons of Mosiah seeking to destroy the church, and to lead astray the people of the Lord, contrary to the commandments of God, or even the king—

And as I said unto you, as they were going about rebelling against God, behold, the angel of the Lord appeared unto them; and he descended as it were in a cloud; and he spake as it were with a voice of thunder, which caused the earth to shake upon which they stood;

And so great was their astonishment, that they fell to the earth, and understood not the words which he spake unto them.

Nevertheless he cried again, saying: Alma, arise and stand forth, for why persecutest thou the church of God? For the Lord hath said: This is my church, and I will establish it; and nothing shall overthrow it, save it is the transgression of my people.

And again, the angel said: Behold, the Lord hath heard the prayers of his people, and also the prayers of his servant, Alma, who is thy father; for he has prayed with much faith concerning thee that thou mightest be brought to the knowledge of the truth; therefore, for this purpose have I come to convince thee of the power and authority of God, that the prayers of his servants might be answered according to their faith.

And now behold, can ye dispute the power of God? For behold, doth not my voice shake the earth? And can ye not also behold me before you? And I am sent from God.

- 16 अब मैं तुमसे कहता हूँ: जाओ, और हेलाम के प्रदेश में, और नफी के प्रदेश में अपने पूर्वजों की गुलामी को याद करो; और याद करो कि उनके लिए उसने कितने महान कार्य किये हैं; क्योंकि वे गुलामी में थे, और उसने उन्हें मुक्त किया है, और अब मैं तुमसे कहता हूँ, अलमा, अपने रास्ते जाओ, और गिरजे को नष्ट करने का प्रयास मत करना, जिससे कि उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया जाए; और फिर भी तुम अपनी मर्जी करोगे तो निकाल बाहर कर दिए जाओगे।
- 17 और ऐसा हुआ कि ये अंतिम शब्द थे जिन्हें स्वर्गदूत ने अलमा से कहा था, और वह चला गया।
- 18 और अब अलमा और जो उसके साथ थे फिर से धरती पर गिर पड़े, क्योंकि वे बहुत आश्चर्यचकित हुए थे; क्योंकि उन्होंने अपनी स्वयं की आंखों से प्रभु के स्वर्गदूत को देखा था; और उसकी आवाज बिजली कड़कने के समान थी, जिसने धरती को हिला दिया था; और वे जानते थे कि परमेश्वर की शक्ति के सिवाय वहां कुछ नहीं था जो धरती को हिला और इसे कंपकंपा सकती थी मानो वह फट जाएगी।
- 19 और अलमा का आश्चर्य इतना अधिक था कि वह मूक बन गया, कि वह अपना मुंह न खोल सका; हां, और निर्बल हो गया, इतना कि वह अपने हाथों को भी न हिला सका; इसलिए वह उनके द्वारा निसहाय और सहारा दे कर ले जाया गया जो उसके साथ थे, यहां तक कि उसे उसके पिता के सम्मुख लिटा दिया गया।
- 20 और उन्होंने उसके पिता को वह सब दोहराया जो उनके साथ हुआ था; और उसके पिता आनंदित हुए, क्योंकि वह जानते थे कि वह परमेश्वर की शक्ति थी।
- 21 और उसने आदेश दिया कि एक भारी भीड़ को एकत्रित किया जाया ताकि वे इसके साक्षी हों कि प्रभु ने उसके बेटे, और जो उसके साथ थे उनके लिए भी क्या किया था।
- 22 और उसने आदेश दिया कि याजकों को भी एकत्रित किया जाए; और वे उपवास, और प्रभु अपने परमेश्वर से प्रार्थना करने लगे कि वह अलमा का मुख खोले, ताकि वह बोल सके, और उसके अंगों को उनका बल मिल सके—कि परमेश्वर की भलाई और महिमा को देखने और समझने के लिए लोगों की आंखें खुल सकें।
- 23 और ऐसा हुआ कि जब वे दो दिन और दो रात उपवास करते हुए प्रार्थना कर चुके, अलमा के अंगों को उनका बल मिला, और वह उठ कर खड़ा हुआ और उन्हें दिलासा देते हुए, उसने उनसे बातें की।

Now I say unto thee: Go, and remember the captivity of thy fathers in the land of Helam, and in the land of Nephi; and remember how great things he has done for them; for they were in bondage, and he has delivered them. And now I say unto thee, Alma, go thy way, and seek to destroy the church no more, that their prayers may be answered, and this even if thou wilt of thyself be cast off.

And now it came to pass that these were the last words which the angel spake unto Alma, and he departed.

And now Alma and those that were with him fell again to the earth, for great was their astonishment; for with their own eyes they had beheld an angel of the Lord; and his voice was as thunder, which shook the earth; and they knew that there was nothing save the power of God that could shake the earth and cause it to tremble as though it would part asunder.

And now the astonishment of Alma was so great that he became dumb, that he could not open his mouth; yea, and he became weak, even that he could not move his hands; therefore he was taken by those that were with him, and carried helpless, even until he was laid before his father.

And they rehearsed unto his father all that had happened unto them; and his father rejoiced, for he knew that it was the power of God.

And he caused that a multitude should be gathered together that they might witness what the Lord had done for his son, and also for those that were with him.

And he caused that the priests should assemble themselves together; and they began to fast, and to pray to the Lord their God that he would open the mouth of Alma, that he might speak, and also that his limbs might receive their strength—that the eyes of the people might be opened to see and know of the goodness and glory of God.

And it came to pass after they had fasted and prayed for the space of two days and two nights, the limbs of Alma received their strength, and he stood up and began to speak unto them, bidding them to be of good comfort:

- 24 क्योंकि, उसने कहा, मैंने अपने पापों का पश्चाताप कर लिया, और प्रभु द्वारा मुक्त किया गया हूँ; देखो, मैंने आत्मा में जन्म लिया है।
- 25 और प्रभु ने मुझसे कहा: आश्चर्य मत करो कि सारी मानवजाति, हां, सभी पुरुषों और स्त्रियों, सभी राष्ट्रों, जातियां, भाषाओं और लोगों को फिर से जन्म लेना चाहिए; हां, परमेश्वर से जन्मा, अपनी सांसारिक और पतित अवस्था से बदल कर, धार्मिक अवस्था, परमेश्वर द्वारा मुक्त किये गए, उसके बेटे और बेटियां बन कर;
- 26 और इस प्रकार वे नए प्राणी हो जाते हैं; और जब तक वे ऐसा नहीं करते, वे किसी भी प्रकार से परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी नहीं हो सकते।
- 27 मैं तुमसे कहता हूँ, यदि ऐसा नहीं होता है, तो उन्हें निकाल कर फेंक दिया जाएगा; क्योंकि मैं स्वयं भी फेंका जाने वाला था।
- 28 फिर भी, बहुत कष्टों को पार करने के बाद, मृत्यु के निकट पहुंचने तक पश्चाताप करते हुए, प्रभु ने मुझे अनंत जलन से बचाने की कर्षणा के लिए उपयुक्त समझा, और मैं परमेश्वर का जन्मा हूँ।
- 29 मेरी आत्मा को कठोर पीड़ा और पापों के चुंगल से बचा लिया गया है। मैं अंधकार के कुंड में था; लेकिन अब मैं परमेश्वर का अद्भुत प्रकाश देखता हूँ। मेरी आत्मा अनंत पीड़ा से व्याकुल थी; लेकिन मैं बचा लिया गया हूँ, और मेरी आत्मा को कोई दर्द नहीं है।
- 30 मैंने अपने मुक्तिदाता को अस्वीकार कर दिया था, और उसे इन्कार कर दिया था जो हमारे पूर्वजों के द्वारा कहा गया था; लेकिन अब वे आगे देख सकते हैं कि वह आएगा, और कि वह अपने रचे हुए प्रत्येक प्राणी को याद करता है, वह अपने को सब पर प्रकट करेगा।
- 31 हां, उसके सामने हर एक घुटना झुकेगा, और हर एक जीभ उसके सम्मुख पाप का अंगीकार करेगी, और हां, यहां तक कि उस अंतिम दिन, जब सभी मनुष्य उसके न्याय के लिए खड़े होंगे, तब वे अंगीकार करेंगे कि वह परमेश्वर है; तब वे भी अंगीकार करेंगे, जो बिना परमेश्वर के संसार में रहते हैं, कि अनंत दंड की दंडाज्ञा उनके लिए उचित है; और वे उसकी सब कुछ खोजने वाली आंख की नजर के सामने थरथराएंगे, और कंपकंपाएंगे, और सकुचाएंगे।

For, said he, I have repented of my sins, and have been redeemed of the Lord; behold I am born of the Spirit.

And the Lord said unto me: Marvel not that all mankind, yea, men and women, all nations, kindreds, tongues and people, must be born again; yea, born of God, changed from their carnal and fallen state, to a state of righteousness, being redeemed of God, becoming his sons and daughters;

And thus they become new creatures; and unless they do this, they can in nowise inherit the kingdom of God.

I say unto you, unless this be the case, they must be cast off; and this I know, because I was like to be cast off.

Nevertheless, after wading through much tribulation, repenting nigh unto death, the Lord in mercy hath seen fit to snatch me out of an everlasting burning, and I am born of God.

My soul hath been redeemed from the gall of bitterness and bonds of iniquity. I was in the darkest abyss; but now I behold the marvelous light of God. My soul was racked with eternal torment; but I am snatched, and my soul is pained no more.

I rejected my Redeemer, and denied that which had been spoken of by our fathers; but now that they may foresee that he will come, and that he remembereth every creature of his creating, he will make himself manifest unto all.

Yea, every knee shall bow, and every tongue confess before him. Yea, even at the last day, when all men shall stand to be judged of him, then shall they confess that he is God; then shall they confess, who live without God in the world, that the judgment of an everlasting punishment is just upon them; and they shall quake, and tremble, and shrink beneath the glance of his all-searching eye.

- 32 और अब ऐसा हुआ कि उसी समय से अलमा और वे जो स्वर्गदूत के प्रकट को होने के समय अलमा के साथ थे, लोगो को सीखाने लगे, पूरे प्रदेश में चारों तरफ यात्रा करते हुए, सब लोगों में उन बातों को फैलाने लगे जो उन्होंने सुनी और देखी थी, और बहुत कष्ट में, उनके द्वारा अत्याधिक सताए गए जो अविश्वासी थे, उनमें से बहुतों द्वारा दंडित होते हुए, उन्होंने परमेश्वर के वचन का प्रचार किया।
- 33 लेकिन यह सब होते हुए भी, उन्होंने गिरजे के सदस्यों को, उनके विश्वास का समर्थन करते हुए, बहुत दिलासा दी, और लंबे समय से कष्ट झेलते हुए और अत्याधिक पीड़ा सहते हुए परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए उत्साहित किया।
- 34 और उनमें से चार मुसायाह के बेटे थे; और उनके नाम अम्मोन, और हारून, और ओमनार, और हिमनी थे; ये मुसायाह के बेटों के नाम थे।
- 35 और उन्होंने पूरे जराहेमला प्रदेश में, और उन सभी लोगों के बीच में जो राजा मुसायाह के राज्य में थे, गिरजे को पहुंचाई हानि को उत्साहपूर्वक ठीक करने का प्रयास करते हुए, अपने सभी पापों का अंगीकार करते हुए, और जो कुछ उन्होंने देखा उसको फैलाते हुए, उन्होंने की थी, उसका बड़े परिश्रम और उत्साह से सुधार करते हुए, और जो उनको सुनने को इच्छुक थे सभी को भविष्यवाणियों और धर्मशास्त्रों को समझाते हुए, यात्रा की।
- 36 और वे इस प्रकार बहुतों के लिए सत्य का ज्ञान, हां, उनके मुक्ति-दाता का ज्ञान, लाने में परमेश्वर के हाथों में साधन थे।
- 37 और वे कितने आशीषित हैं ! क्योंकि उन्होंने शांति को फैलाया; उन्होंने भलाई के सुसमाचार को फैलाया, और उन्होंने लोगों में घोषणा की कि प्रभु शासन करता है।

And now it came to pass that Alma began from this time forward to teach the people, and those who were with Alma at the time the angel appeared unto them, traveling round about through all the land, publishing to all the people the things which they had heard and seen, and preaching the word of God in much tribulation, being greatly persecuted by those who were unbelievers, being smitten by many of them.

But notwithstanding all this, they did impart much consolation to the church, confirming their faith, and exhorting them with long-suffering and much travail to keep the commandments of God.

And four of them were the sons of Mosiah; and their names were Ammon, and Aaron, and Omner, and Himni; these were the names of the sons of Mosiah.

And they traveled throughout all the land of Zarahemla, and among all the people who were under the reign of king Mosiah, zealously striving to repair all the injuries which they had done to the church, confessing all their sins, and publishing all the things which they had seen, and explaining the prophecies and the scriptures to all who desired to hear them.

And thus they were instruments in the hands of God in bringing many to the knowledge of the truth, yea, to the knowledge of their Redeemer.

And how blessed are they! For they did publish peace; they did publish good tidings of good; and they did declare unto the people that the Lord reigneth.

## मुसायाह 28

- 1 और अब ऐसा हुआ कि मुसायाह के बेटों के यह सब काम करने के बाद, उन्होंने अपने साथ कुछ लोगों को लिया और अपने पिता, राजा, के पास लौट गए, और उससे इच्छा जाहिर की कि वह उन्हें अनुमति दे कि वे, जिन्हें उन्होंने चुना था उनके साथ, नफी के प्रदेश में जाएं ताकि वे इन बातों का जो उन्होंने सुनी थी प्रचार कर सकें, और वे अपने भाइयों, लमनाइयों, को परमेश्वर के वचन दे सकें—
- 2 ताकि शायद वे उन्हें भी प्रभु उनके परमेश्वर के ज्ञान में ला सकें, और उन्हें उनके पूर्वजों के अपराधों को समझा सकें; और ताकि वे शायद नफाइयों के प्रति उनके द्वेष को ठीक कर सकें, ताकि वे भी प्रभु अपने परमेश्वर के आनंद में लाए जा सकें, ताकि वे एक दूसरे के साथ मित्रवत हो सकें, और कि उस पूरे प्रदेश में बिलकुल भी विवाद न हो जो प्रभु उनके परमेश्वर ने उन्हें दिया था ।
- 3 अब वे इच्छुक थे कि प्रत्येक प्राणी से उद्धार की घोषणा की जाए, क्योंकि वे सहन नहीं कर सकते थे कि किसी भी मनुष्य के प्राण नष्ट हों; हां, यहां तक कि यह विचार भी कि कोई प्राणी अंतहीन पीड़ा सहेगा उन्हें कंपकंपा और थरथरा देता था ।
- 4 और इस प्रकार प्रभु की आत्मा ने उनके ऊपर काम किया, क्योंकि वे अत्याधिक दुष्ट पापी थे । और प्रभु ने अपने असीम अनुग्रह में यह उचित जाना कि उन्हें क्षमा किया जाए; फिर भी अपने अपराधों के कारण उन्होंने आत्मा का अत्याधिक पीड़ा सही थी, बहुत दर्द सहते हुए और डरते हुए कि वे हमेशा के लिए निकाल दिए जाएंगे ।
- 5 और ऐसा हुआ कि उन्होंने कई दिनों तक अपने पिता से निवेदन किया ताकि वे नफी के प्रदेश में जा सकें ।
- 6 और राजा मुसायाह गया और प्रभु से पूछा कि क्या उसे अपने पुत्रों को वचन का प्रचार करने के लिए लमनाइयों के बीच जाने देना चाहिए ।
- 7 और प्रभु ने मुसायाह से कहा: उन्हें जाने दो, क्योंकि उनमें से बहुत से लोग उनकी बातों पर विश्वास करेंगे, और उन्हें अनंत जीवन मिलेगा; और मैं तुम्हारे बेटों को लमनाइयों के हाथों से मुक्त करूंगा ।
- 8 और ऐसा हुआ कि मुसायाह ने उनको अनुमति दी कि वे जा सकते हैं और अपनी इच्छा के अनुसार काम कर सकते हैं ।

## Mosiah 28

Now it came to pass that after the sons of Mosiah had done all these things, they took a small number with them and returned to their father, the king, and desired of him that he would grant unto them that they might, with these whom they had selected, go up to the land of Nephi that they might preach the things which they had heard, and that they might impart the word of God to their brethren, the Lamanites—

That perhaps they might bring them to the knowledge of the Lord their God, and convince them of the iniquity of their fathers; and that perhaps they might cure them of their hatred towards the Nephites, that they might also be brought to rejoice in the Lord their God, that they might become friendly to one another, and that there should be no more contentions in all the land which the Lord their God had given them.

Now they were desirous that salvation should be declared to every creature, for they could not bear that any human soul should perish; yea, even the very thoughts that any soul should endure endless torment did cause them to quake and tremble.

And thus did the Spirit of the Lord work upon them, for they were the very vilest of sinners. And the Lord saw fit in his infinite mercy to spare them; nevertheless they suffered much anguish of soul because of their iniquities, suffering much and fearing that they should be cast off forever.

And it came to pass that they did plead with their father many days that they might go up to the land of Nephi.

And king Mosiah went and inquired of the Lord if he should let his sons go up among the Lamanites to preach the word.

And the Lord said unto Mosiah: Let them go up, for many shall believe on their words, and they shall have eternal life; and I will deliver thy sons out of the hands of the Lamanites.

And it came to pass that Mosiah granted that they might go and do according to their request.

- 9 और उन्होंने लमनाइयों के बीच वचन का प्रचार करने के विचार से निर्जन प्रदेश में यात्रा की; और मैं उनकी यात्रा का विवरण आगे दूंगा ।
- 10 अब राज्य को प्रदान करने के लिए राजा मुसायाह के पास कोई नहीं था, क्योंकि उसके बेटों में से कोई वहां नहीं था जो उसके राज्य को स्वीकार करता ।
- 11 इस कारण उसने उस अभिलेख को लिया जो पीतल की पट्टियों पर खुदा हुआ था, और नफी की पट्टियों को भी, और सभी बातों को जो उसने परमेश्वर की आज्ञा अनुसार रखा और संभाला था, अनुवाद के पश्चात और उन अभिलेखों को लिखे जाने के लिए जो स्वर्ण पट्टियों पर थे जो लिमही के लोगों द्वारा पाई गई थीं, जिन्हें लिमही के हाथ द्वारा उसे दिया गया था ।
- 12 और यह उसने अपने लोगों की बहुत उत्सुकता के कारण किया था; क्योंकि वे उन लोगों के संबंध में जानने के बहुत इच्छुक थे जो नष्ट कर दिए गए थे ।
- 13 और अब उसने उनका अनुवाद उन दो पत्थरों के माध्यम से किया जो धनुष के दो किनारों से बंधे हुए थे ।
- 14 अब ये वस्तुएं भाषाओं का अनुवाद करने के लिए आरंभ से तैयार की गई थी और पीढ़ी दर पीढ़ी सौंपी गई थीं ।
- 15 और इन्हें प्रभु के हाथों द्वारा रखा और संभाला गया था, ताकि वह प्रत्येक प्राणी जो उस प्रदेश पर कब्जा करता है अपने लोगों के अपराधों और घृणित कार्यों को खोज सके ।
- 16 और जिनके पास ये वस्तुएं होती हैं उसे प्राचीन काल के अनुसार, दिव्यदर्शी कहा जाता है ।
- 17 अब मुसायाह के इन अभिलेखों का अनुवाद करने के पश्चात, देखो, इसने उन लोगों का विवरण दिया जो नष्ट किये गए थे, उनके नष्ट होने के समय से लेकर उस महान मीनार के बनाए जाने के समय तक, जब कि प्रभु ने लोगों की भाषा में गड़बड़ी उत्पन्न कर दी और वे पूरी पृथ्वी में बिखर गए थे, हां, और उस समय से लेकर आदम की रचना के समय तक ।
- 18 अब इस विवरण से मुसायाह के लोगों को अत्याधिक शोक हुआ; हां वे दुख से भर उठे; फिर भी इसने उन्हें बहुत ज्ञान दिया, जिससे वे आनंदित हुए थे ।

And they took their journey into the wilderness to go up to preach the word among the Lamanites; and I shall give an account of their proceedings hereafter.

Now king Mosiah had no one to confer the kingdom upon, for there was not any of his sons who would accept of the kingdom.

Therefore he took the records which were engraved on the plates of brass, and also the plates of Nephi, and all the things which he had kept and preserved according to the commandments of God, after having translated and caused to be written the records which were on the plates of gold which had been found by the people of Limhi, which were delivered to him by the hand of Limhi;

And this he did because of the great anxiety of his people; for they were desirous beyond measure to know concerning those people who had been destroyed.

And now he translated them by the means of those two stones which were fastened into the two rims of a bow.

Now these things were prepared from the beginning, and were handed down from generation to generation, for the purpose of interpreting languages;

And they have been kept and preserved by the hand of the Lord, that he should discover to every creature who should possess the land the iniquities and abominations of his people;

And whosoever has these things is called seer, after the manner of old times.

Now after Mosiah had finished translating these records, behold, it gave an account of the people who were destroyed, from the time that they were destroyed back to the building of the great tower, at the time the Lord confounded the language of the people and they were scattered abroad upon the face of all the earth, yea, and even from that time back until the creation of Adam.

Now this account did cause the people of Mosiah to mourn exceedingly, yea, they were filled with sorrow; nevertheless it gave them much knowledge, in the which they did rejoice.

- 19 और यह विवरण इसके बाद लिखा जाएगा; क्योंकि देखो, यह उचित है कि सब लोग उन बातों को जाने जो इस विवरण में लिखी हुई हैं ।
- 20 और अब, जैसा मैंने तुम्हें कहा था, कि जब राजा मुसायाह ने इन कामों को कर लिया, उसने पीतल की पट्टियां, और सब वस्तुएं ली जो उसके पास थीं, और अलमा को प्रदान कर दी, जो कि अलमा का बेटा था; हां, सारे अभिलेख, और अनुवाद भी, और उन्हें उसे प्रदान कर दिया, और उसे आज्ञा दी कि वह उन्हें रखे और बचाए, और लोगों का अभिलेख भी रखते हुए, उन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को देते जाए, जैसे कि इन्हें लेही के यरूशलेम को छोड़ने के समय से दिया जाता रहा है ।

And this account shall be written hereafter; for behold, it is expedient that all people should know the things which are written in this account.

And now, as I said unto you, that after king Mosiah had done these things, he took the plates of brass, and all the things which he had kept, and conferred them upon Alma, who was the son of Alma; yea, all the records, and also the interpreters, and conferred them upon him, and commanded him that he should keep and preserve them, and also keep a record of the people, handing them down from one generation to another, even as they had been handed down from the time that Lehi left Jerusalem.

## मुसायाह 29

- 1 अब जब मुसायाह ने इसे सौंप दिया उसने सारे प्रदेश में जारी कर दिया, सब लोगों के बीच, उनकी इच्छा जानने के लिए कि वे किसे अपना राजा बनाना चाहते हैं ।
- 2 और ऐसा हुआ कि लोगों ने यह कहते हुए अपने मत को प्रकट किया: हमारी इच्छा है कि आपका बेटा हारून हमारा राजा और शासक हो ।
- 3 अभी हारून नफी के प्रदेश गया हुआ था, इसलिए राजा उसको राज्य नहीं प्रदान कर सकता था; न ही हारून राज्य लेना चाहता था; न ही मुसायाह का कोई बेटा अपने ऊपर राज्य लेना चाहता था ।
- 4 इसलिए राजा मुसायाह ने फिर से लोगों में जारी किया; हां, यहां तक कि उसने लिखित शब्द लोगों के बीच भेजा । और वे लिखित शब्द इस प्रकार थे:
- 5 देखो, ओ तुम मेरे लोगों, या मेरे भाइयों, क्योंकि मैं तुम्हें वही आदर देता हूं, मैं चाहता हूं कि तुम उस बात पर विचार करो जिसे तुम्हें विचार करने के लिए तुम्हें बुलाया गया है—क्योंकि तुम एक राजा पाने के इच्छुक हो ।
- 6 अब मैं तुम से घोषणा करता हूं कि उचितरूप से जिसे राज्य मिलना चाहिए उसने लेने से मना कर दिया है, और राज्य को अपने ऊपर नहीं लेगा ।
- 7 और अब यदि किसी दूसरे को उसके स्थान पर नियुक्त किया गया, देखो मुझे डर है तुम्हारे बीच में विवाद होगा । और कौन जाने कि मेरा बेटा जो इस राज्य का उत्तराधिकारी है, वह क्रोधित होकर इन लोगों में से कुछ को अपने साथ कर ले, जिससे कि तुम लोगों में युद्ध और कलह हो जाए, जिससे बहुत रक्तपात होगा और प्रभु का मार्ग दूषित हो जाएगा, हां, और बहुत से लोगों के प्राण नष्ट हो जाएंगे ।
- 8 अब मैं तुम से कहता हूं हमें बुद्धिमान बनना चाहिए और इन बातों पर विचार करना चाहिए, क्योंकि हमें मेरे बेटे को नष्ट करने का कोई अधिकार नहीं है, न ही हमें किसी अन्य को नष्ट करने का अधिकार होना चाहिए यदि वह उसके स्थान पर नियुक्त हो जाता है ।
- 9 और यदि मेरा बेटा फिर से अंहकार और व्यर्थ की बातों में लौटता है वह उन बातों को याद करेगा जो उसने कही थीं, और राज्य पर अपने अधिकार का दावा करेगा, जिससे वह और ये लोग भी बहुत से पाप करेंगे ।

## Mosiah 29

Now when Mosiah had done this he sent out throughout all the land, among all the people, desiring to know their will concerning who should be their king.

And it came to pass that the voice of the people came, saying: We are desirous that Aaron thy son should be our king and our ruler.

Now Aaron had gone up to the land of Nephi, therefore the king could not confer the kingdom upon him; neither would Aaron take upon him the kingdom; neither were any of the sons of Mosiah willing to take upon them the kingdom.

Therefore king Mosiah sent again among the people; yea, even a written word sent he among the people. And these were the words that were written, saying:

Behold, O ye my people, or my brethren, for I esteem you as such, I desire that ye should consider the cause which ye are called to consider—for ye are desirous to have a king.

Now I declare unto you that he to whom the kingdom doth rightly belong has declined, and will not take upon him the kingdom.

And now if there should be another appointed in his stead, behold I fear there would rise contentions among you. And who knoweth but what my son, to whom the kingdom doth belong, should turn to be angry and draw away a part of this people after him, which would cause wars and contentions among you, which would be the cause of shedding much blood and perverting the way of the Lord, yea, and destroy the souls of many people.

Now I say unto you let us be wise and consider these things, for we have no right to destroy my son, neither should we have any right to destroy another if he should be appointed in his stead.

And if my son should turn again to his pride and vain things he would recall the things which he had said, and claim his right to the kingdom, which would cause him and also this people to commit much sin.



- 10 और अब हम बुद्धिमान बनें और इन बातों पर विचार करें, और उसे करें जो इन लोगों के लिए शांति लाएगा ।
- 11 इसलिए अपने शेष जीवन भर मैं तुम्हारा राजा रहूंगा; फिर भी, हम न्यायाधीशों को नियुक्त कर दें, जो इन लोगों का न्याय हमारी व्यवस्था के अनुसार करेंगे; और हम इन लोगों के मामलों को नए सिरे से व्यवस्थित करेंगे, क्योंकि हम बुद्धिमान लोगों को न्यायाधीश नियुक्त करेंगे, जो इन लोगों का न्याय परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार करेंगे ।
- 12 यह अच्छा है कि एक मनुष्य का न्याय मनुष्य की जगह परमेश्वर करे, क्योंकि परमेश्वर के न्याय हमेशा उचित होते हैं, लेकिन मनुष्य के न्याय हमेशा उचित नहीं होते ।
- 13 इसलिए, यदि यह संभव होता कि तुम्हारे राजा होने के लिए तुम्हारे पास धर्मी पुरुष होते, जो परमेश्वर की व्यवस्था को स्थापित करते, और उसकी आज्ञाओं के अनुसार इन लोगों का न्याय करते, हां, यदि तुम्हारे पास पुरुष होते जो वैसा करते जैसा मेरे पिता बिन्यामीन ने इन लोगों के लिए किया था—मैं तुम से कहता हूँ, यदि हमेशा ऐसा ही होता तब यह उचित होता कि तुम्हारे ऊपर शासन करने के लिए तुम्हारे पास हमेशा राजा हो ।
- 14 और मैंने स्वयं भी उन सभी शक्ति और योग्यताओं के साथ जो मेरे पास हैं, तुम्हें परमेश्वर की आज्ञाओं को सीखाया है, और पूरे प्रदेश में शांति स्थापित की है, ताकि न कोई युद्ध, न ही विवाद, न चोरी, न ही लूटपाट, न ही हत्या, न ही किसी प्रकार का अपराध हो ।
- 15 और जिस किसी ने अपराध किया हो, उसे मैंने जो अपराध उसने किया है उसके अनुसार दंडित किया है, उस व्यवस्था के अनुसार जो हमें पूर्वजों द्वारा दी गई है ।
- 16 अब मैं तुम से कहता हूँ, क्योंकि सभी मनुष्य धर्मी नहीं होते इसलिए यह उचित नहीं है कि तुम्हारे ऊपर शासन करने के लिए राजा या राजाओं को होना चाहिए ।
- 17 क्योंकि देखो, एक दुष्ट राजा कितने अधिक पाप कर सकता है, हां, और कितना बड़ा विनाश कर सकता है ।
- 18 हां, राजा नूह को याद करो, उसकी दुष्टता और उसके घृणित कार्यों, और उसके लोगों की दुष्टता और घृणित कार्यों को भी । देखो उन पर कितना बड़ा विनाश आया था; और उनके पापों के कारण वे गुलामी में लाए गए थे ।

And now let us be wise and look forward to these things, and do that which will make for the peace of this people.

Therefore I will be your king the remainder of my days; nevertheless, let us appoint judges, to judge this people according to our law; and we will newly arrange the affairs of this people, for we will appoint wise men to be judges, that will judge this people according to the commandments of God.

Now it is better that a man should be judged of God than of man, for the judgments of God are always just, but the judgments of man are not always just.

Therefore, if it were possible that you could have just men to be your kings, who would establish the laws of God, and judge this people according to his commandments, yea, if ye could have men for your kings who would do even as my father Benjamin did for this people—I say unto you, if this could always be the case then it would be expedient that ye should always have kings to rule over you.

And even I myself have labored with all the power and faculties which I have possessed, to teach you the commandments of God, and to establish peace throughout the land, that there should be no wars nor contentions, no stealing, nor plundering, nor murdering, nor any manner of iniquity;

And whosoever has committed iniquity, him have I punished according to the crime which he has committed, according to the law which has been given to us by our fathers.

Now I say unto you, that because all men are not just it is not expedient that ye should have a king or kings to rule over you.

For behold, how much iniquity doth one wicked king cause to be committed, yea, and what great destruction!

Yea, remember king Noah, his wickedness and his abominations, and also the wickedness and abominations of his people. Behold what great destruction did come upon them; and also because of their iniquities they were brought into bondage.

- 19 और यदि उनके सर्व-बुद्धिमान रचयिता की मध्यस्थता न होती, और यह उनके यह सच्चे पश्चात्ताप के कारण हुआ, तो वे अवश्य ही अभी तक गुलामी में ही होते ।
- 20 लेकिन देखो, उसने उन्हें मुक्त किया क्योंकि उन्होंने अपने आपको उसके सम्मुख दीन बना लिया; और क्योंकि उन्होंने उसको बहुत पुकारा इसलिए उसने उन्हें गुलामी से मुक्त किया; और इस प्रकार प्रभु मानव संतान के बीच सभी दशा में अपनी शक्ति से काम करता है, दया की भुजा उनकी ओर बढ़ाते हुए जो अपना भरोसा उस में रखते हैं ।
- 21 और सुनो, अब मैं तुमसे कहता हूँ, तुम एक पापी राजा को सिंहासन से नहीं हटा सकते सिवाय इसके कि बहुत अधिक विवाद हो, और बहुत अधिक रक्तपात किया जाए ।
- 22 क्योंकि देखो, उसके पास पाप में उसके मित्र होते हैं, और वह अपने साथ अपने पहरेदार रखता है; और वह उनकी उस व्यवस्था की धज्जियां उड़ाता है जिन्होंने उससे पहले धार्मिकता से शासन किया है; और अपने पैरों तले परमेश्वर की आज्ञाओं को रौंदता है;
- 23 और वह व्यवस्था बनाता है, और उन्हें अपने लोगों के बीच जारी करता है, हां, उसकी स्वयं की दुष्टता के अनुसार व्यवस्था; और जो कोई उसकी व्यवस्था का पालन नहीं करता वह उसे नष्ट करवा देता है; और जो कोई उसका विरोध करता है वह उनके विरुद्ध युद्ध करने के लिए अपनी सेनाएं भेजेगा, और यदि वह कर सका तो वह उन्हें नष्ट कर देगा; और इस प्रकार अधर्मी राजा धार्मिकता के मार्ग को दूषित कर देता है ।
- 24 और अब देखो मैं तुमसे कहता हूँ, यह उचित नहीं है कि इस प्रकार के घृणित परिस्थितियां तुम्हारे ऊपर आएँ ।
- 25 इसलिए, तुम इन लोगों के मताधिकार द्वारा, न्यायाधीशों को चुन लो, ताकि तुम्हारा न्याय उस व्यवस्था के अनुसार हो जो तुम्हें हमारे पूर्वजों द्वारा दी गई है, जोकि सही है, और जिसे प्रभु के हाथों द्वारा उन्हें दिया गया था ।
- 26 अब यह सामान्य नहीं कि लोगों का मताधिकार ऐसी किसी बात की इच्छा करे जो उसके विपरित हो जो सही है; लेकिन लोगों के कम हिस्से के लिए उसकी इच्छा करना सामान्य है जो सही नहीं है; इसलिए तुम इसका पालन करोगे और इसे अपनी व्यवस्था बनाओगे—कि लोगों के मताधिकार के द्वारा अपना काम करना ।

And were it not for the interposition of their all-wise Creator, and this because of their sincere repentance, they must unavoidably remain in bondage until now.

But behold, he did deliver them because they did humble themselves before him; and because they cried mightily unto him he did deliver them out of bondage; and thus doth the Lord work with his power in all cases among the children of men, extending the arm of mercy towards them that put their trust in him.

And behold, now I say unto you, ye cannot dethrone an iniquitous king save it be through much contention, and the shedding of much blood.

For behold, he has his friends in iniquity, and he keepeth his guards about him; and he teareth up the laws of those who have reigned in righteousness before him; and he trampleth under his feet the commandments of God;

And he enacteth laws, and sendeth them forth among his people, yea, laws after the manner of his own wickedness; and whosoever doth not obey his laws he causeth to be destroyed; and whosoever doth rebel against him he will send his armies against them to war, and if he can he will destroy them; and thus an unrighteous king doth pervert the ways of all righteousness.

And now behold I say unto you, it is not expedient that such abominations should come upon you.

Therefore, choose you by the voice of this people, judges, that ye may be judged according to the laws which have been given you by our fathers, which are correct, and which were given them by the hand of the Lord.

Now it is not common that the voice of the people desireth anything contrary to that which is right; but it is common for the lesser part of the people to desire that which is not right; therefore this shall ye observe and make it your law—to do your business by the voice of the people.

- 27 और यदि ऐसा समय आता है कि लोगों का मताधिकार पाप का चुनाव करता है, तब वह समय होगा जबकि परमेश्वर का न्याय तुम्हारे ऊपर आएगा; हां, तब वह समय होगा वह तुम्हें बहुत बड़ा विनाश भेजेगा जैसा कि वह पहले भी इस प्रदेश में भेज चुका है ।
- 28 और अब यदि तुम्हारे पास न्यायाधीश हैं, और वे उसके अनुसार तुम्हारा न्याय नहीं करते जो व्यवस्था दी गई है, तुम ऐसा कर सकते हो कि उनका न्याय उच्च न्यायाधीश द्वारा किया जा सके ।
- 29 यदि तुम्हारे उच्च न्यायाधीश धार्मिक न्याय नहीं करते, तब तुम अपने निम्न न्यायाधीशों को कुछ संख्या में एकत्रित करोगे, और वे लोगों के मताधिकार के अनुसार, तुम्हारे उच्च न्यायाधीशों का न्याय करेंगे ।
- 30 और मैं प्रभु के भय से तुम्हें यह सब करने की आज्ञा देता हूँ; और मैं तुम्हें इन कामों को करने की आज्ञा देता हूँ, और कि तुम्हारे ऊपर कोई राजा न हो; कि यदि ये लोग पाप और अपराध करते हैं तब वे स्वयं इसके लिए उत्तरदायी होंगे ।
- 31 क्योंकि देखो मैं तुमसे कहता हूँ, बहुत से लोगों के पाप उनके राजाओं के अपराधों के कारण हुए हैं; इसलिए उनके अपराधों के लिए उनके राजा उत्तरदायी होंगे ।
- 32 और अब मैं इच्छुक हूँ कि यह असमानता इस प्रदेश में बिलकुल न हो, विशेषकर मेरे इन लोगों के बीच में; लेकिन मैं इच्छुक हूँ कि यह स्वाधीनता का प्रदेश हो, और प्रत्येक मनुष्य अपने अधिकारों और सुविधाओं का पूरा उपभोग तब तक कर सके, जब तक प्रभु इसे उचित देखता है कि हम इस प्रदेश में रहें और इसे विरासत में पाएं, हां, जब तक कि हमारा कोई भी वंशज इस प्रदेश में रहता है ।
- 33 और राजा मुसायाह ने उन्हें बहुत सी बातें लिखीं, उन्हें धर्मी राजा की सभी परिक्षाओं और कठिनाइयों को बताते हुए, हां, उसके लोगों के प्राण के सभी कष्ट, और लोगों का अपने राजा के प्रति बड़बड़ाना भी; और उसने यह सब उन्हें समझाया भी ।
- 34 और उसने उन्हें बताया कि ये बातें नहीं होनी चाहिए; लेकिन बोझ सब लोगों के ऊपर होना चाहिए, ताकि हर एक मनुष्य अपने बोझ को उठा सके ।
- 35 और उसने उन्हें उन सब नुकसान के बारे में भी बताया, जो अधर्मी राजा के उनके ऊपर शासन करने से उन्हें मिल सकती हैं ।

And if the time comes that the voice of the people doth choose iniquity, then is the time that the judgments of God will come upon you; yea, then is the time he will visit you with great destruction even as he has hitherto visited this land.

And now if ye have judges, and they do not judge you according to the law which has been given, ye can cause that they may be judged of a higher judge.

If your higher judges do not judge righteous judgments, ye shall cause that a small number of your lower judges should be gathered together, and they shall judge your higher judges, according to the voice of the people.

And I command you to do these things in the fear of the Lord; and I command you to do these things, and that ye have no king; that if these people commit sins and iniquities they shall be answered upon their own heads.

For behold I say unto you, the sins of many people have been caused by the iniquities of their kings; therefore their iniquities are answered upon the heads of their kings.

And now I desire that this inequality should be no more in this land, especially among this my people; but I desire that this land be a land of liberty, and every man may enjoy his rights and privileges alike, so long as the Lord sees fit that we may live and inherit the land, yea, even as long as any of our posterity remains upon the face of the land.

And many more things did king Mosiah write unto them, unfolding unto them all the trials and troubles of a righteous king, yea, all the travails of soul for their people, and also all the murmurings of the people to their king; and he explained it all unto them.

And he told them that these things ought not to be; but that the burden should come upon all the people, that every man might bear his part.

And he also unfolded unto them all the disadvantages they labored under, by having an unrighteous king to rule over them;

- 36 हां, उसके सभी अपराध और घृणित कार्य, और सभी युद्ध, और विवाद, और रक्तपात, और चोरी, और लूटपाट, और वेश्यावृत्ति का होना, और सभी प्रकार के अपराध जिन्हें गिना नहीं जा सकता—उन्हें बताया कि ये बातें नहीं होनी चाहिए, क्योंकि वे परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति अत्याधिक घृणास्पद हैं ।
- 37 और अब ऐसा हुआ, जब राजा मुसायाह ने इन बातों को लोगों के बीच जारी किया तब वे उसकी बातों की सच्चाई से संतुष्ट हो गए ।
- 38 इसलिए उन्होंने राजा के लिए अपनी इच्छाओं को छोड़ दिया, और वे इस बात के अत्याधिक इच्छुक हो गए कि प्रत्येक मनुष्य को पूरे प्रदेश में एक समान अवसर प्राप्त होना चाहिए; हां, और प्रत्येक मनुष्य ने अपने पापों का उत्तरदायी होने की इच्छा व्यक्त की ।
- 39 इसलिए, ऐसा हुआ कि पूरे प्रदेश में उन्होंने अपने आपको दलों में एकत्रित किया, अपने न्यायाधीशों के संबंध में अपने मताधिकार के लिए कि कौन उनका न्यायाधीश हो, जो उस व्यवस्था के अनुसार उनका न्याय करेगा जो उन्हें दिया गया था; और वे उस स्वाधीनता को पाकर अत्याधिक आनंदित थे जो उन्हें दी गयी थी ।
- 40 और वे मुसायाह के प्रति प्रेम में मजबूत हुए; हां, उन्होंने उसका किसी भी अन्य मनुष्य से अधिक आदर किया; क्योंकि उन्होंने उसे तानाशाह जैसा नहीं देखा जो लाभ पाना चाहता था, हां, क्योंकि यह लोभ है जो प्राण को भ्रष्ट करता है, क्योंकि उसने उनकी संपत्ति को नहीं लिया, न ही वह रक्तपात में आनंदित हुआ; लेकिन उसने प्रदेश में शांति स्थापित की, और उसने अनुमति दी कि उसके लोगों को हर प्रकार की गुलामी से मुक्त किया जाए; इसलिए वे उसका आदर करते थे, हां, इतना अधिक, जिसे नापा नहीं सकता ।
- 41 और ऐसा हुआ कि उन्होंने अपने ऊपर शासन करने के लिए न्यायाधीशों को नियुक्त किया, या व्यवस्था के अनुसार उनका न्याय करने के लिए; और यह उन्होंने पूरे प्रदेश में किया ।
- 42 और ऐसा हुआ कि अलमा को पहला मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया, वह उच्च याजक भी था, उसके पिता ने उसे यह पद, गिरजे के सभी कामों की देखरेख करने के लिए प्रदान कर दिया था ।
- 43 और अब ऐसा हुआ कि अलमा प्रभु के मार्ग पर चला, और उसने उसकी आज्ञाओं का पालन किया, और उसने न्यायपूर्ण धार्मिक न्याय किये; और प्रदेश में निरंतर शांति बनी रही ।

Yea, all his iniquities and abominations, and all the wars, and contentions, and bloodshed, and the stealing, and the plundering, and the committing of whoredoms, and all manner of iniquities which cannot be enumerated—telling them that these things ought not to be, that they were expressly repugnant to the commandments of God.

And now it came to pass, after king Mosiah had sent these things forth among the people they were convinced of the truth of his words.

Therefore they relinquished their desires for a king, and became exceedingly anxious that every man should have an equal chance throughout all the land; yea, and every man expressed a willingness to answer for his own sins.

Therefore, it came to pass that they assembled themselves together in bodies throughout the land, to cast in their voices concerning who should be their judges, to judge them according to the law which had been given them; and they were exceedingly rejoiced because of the liberty which had been granted unto them.

And they did wax strong in love towards Mosiah; yea, they did esteem him more than any other man; for they did not look upon him as a tyrant who was seeking for gain, yea, for that lucre which doth corrupt the soul; for he had not exacted riches of them, neither had he delighted in the shedding of blood; but he had established peace in the land, and he had granted unto his people that they should be delivered from all manner of bondage; therefore they did esteem him, yea, exceedingly, beyond measure.

And it came to pass that they did appoint judges to rule over them, or to judge them according to the law; and this they did throughout all the land.

And it came to pass that Alma was appointed to be the first chief judge, he being also the high priest, his father having conferred the office upon him, and having given him the charge concerning all the affairs of the church.

And now it came to pass that Alma did walk in the ways of the Lord, and he did keep his commandments, and he did judge righteous judgments; and there was continual peace through the land.

44 और इस प्रकार पूरे जराहेमला प्रदेश में, और उन सभी लोगों के बीच जो नफाई कहलाते थे, न्यायाधीशों का शासन आरंभ हुआ; और अलमा पहला और मुख्य न्यायाधीश था ।

45 और अब ऐसा हुआ कि उसके पिता बयासी वर्ष का होकर, परमेश्वर की आज्ञाओं को पूरा कर, मृत्यु को प्राप्त हुआ ।

46 और ऐसा हुआ कि मुसायाह भी मर गया, अपने शासन के तैंतीस-वें वर्ष में, तिरसठ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई; उस समय ले-ही को यरूशलेम छोड़े हुए पूरे पांच सौ नौ वर्ष हो गए थे ।

47 और इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर राजाओं का शासन समाप्त हो गया; और इस प्रकार अलमा के दिनों का अंत हुआ, जोकि उनके गिरजे का संस्थापक था ।

And thus commenced the reign of the judges throughout all the land of Zarahemla, among all the people who were called the Nephites; and Alma was the first and chief judge.

And now it came to pass that his father died, being eighty and two years old, having lived to fulfil the commandments of God.

And it came to pass that Mosiah died also, in the thirty and third year of his reign, being sixty and three years old; making in the whole, five hundred and nine years from the time Lehi left Jerusalem.

And thus ended the reign of the kings over the people of Nephi; and thus ended the days of Alma, who was the founder of their church.

# अलमा की पुस्तक

## अलमा का पुत्र

उस अलमा का विवरण, जो कि अलमा का पुत्र था, नफी के लोगों के लिए प्रथम और मुख्य न्यायी, और गिरजे का उच्च याजक भी था। न्यायियों के शासन, और लोगों के बीच युद्धों और विवादों का एक विवरण। और प्रथम और मुख्य न्यायी अलमा के अभिलेखानुसार नफाइयों और लमनाइयों के बीच युद्ध का एक विवरण भी है।

### अलमा 1

- 1 अब ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के प्रथम वर्ष में, इस समय से आगे, राजा मुसायाह संसार के मार्ग से होकर निकल गया, एक अच्छे संघर्ष की लड़ाई लड़ते हुए, परमेश्वर के समक्ष सीधे पथ पर चलते हुए, अपने स्थान पर किसी को भी शासन न करने देते हुए; फिर भी उसने नियम बनाए, और लोगों ने उन्हें स्वीकार किया; इसलिए उन्हें उन नियमों का पालन करना पड़ा जिसे उसने बनाया था।
- 2 और ऐसा हुआ कि न्याय के आसन पर अलमा के बैठने के प्रथम वर्ष में, एक मनुष्य को न्याय के लिए उसके समक्ष लाया गया, मनुष्य जो कि लम्बा-चौड़ा था और अपने बल के लिए जाना जाता था।
- 3 और वह लोगों के बीच गया, उन्हें उस बात का प्रचार करते हुए जिसे वह परमेश्वर का वचन कहता था, गिरजे की छवि को गिराते हुए; लोगों के बीच घोषित करते हुए कि हर याजक और शिक्षक को लोकप्रिय बनना चाहिए; और अपने हाथों से परिश्रम नहीं करना चाहिए, परन्तु उनका भरण-पोषण लोगों के द्वारा होना चाहिए।
- 4 और उसने लोगों से यह भी कहा कि सभी मानवजाति को अंतिम दिन में बचा लिया जाएगा, और यह कि उन्हें न तो डरने की आवश्यकता है न ही कांपने की, बल्कि उन्हें अपने सिर को ऊपर उठाकर आनंद मनाना चाहिए; क्योंकि प्रभु ने सभी मनुष्यों को बनाया है और सभी मनुष्यों को मुक्ति भी दी है और अंत में, सभी मनुष्यों को अनंत जीवन मिलना चाहिए।

# The Book of Alma

## the Son of Alma

*The account of Alma, who was the son of Alma, the first and chief judge over the people of Nephi, and also the high priest over the Church. An account of the reign of the judges, and the wars and contentions among the people. And also an account of a war between the Nephites and the Lamanites, according to the record of Alma, the first and chief judge.*

### Alma 1

Now it came to pass that in the first year of the reign of the judges over the people of Nephi, from this time forward, king Mosiah having gone the way of all the earth, having warred a good warfare, walking uprightly before God, leaving none to reign in his stead; nevertheless he had established laws, and they were acknowledged by the people; therefore they were obliged to abide by the laws which he had made.

And it came to pass that in the first year of the reign of Alma in the judgment-seat, there was a man brought before him to be judged, a man who was large, and was noted for his much strength.

And he had gone about among the people, preaching to them that which he termed to be the word of God, bearing down against the church; declaring unto the people that every priest and teacher ought to become popular; and they ought not to labor with their hands, but that they ought to be supported by the people.

And he also testified unto the people that all mankind should be saved at the last day, and that they need not fear nor tremble, but that they might lift up their heads and rejoice; for the Lord had created all men, and had also redeemed all men; and, in the end, all men should have eternal life.

- 5 और ऐसा हुआ कि उसने इन बातों का इतना अधिक प्रचार किया कि बहुत से लोग उसकी बातों का विश्वास करने लगे, इसलिए कई लोगों ने उसकी सहायता करनी आरंभ कर दी और उसे धन देने लगे ।
- 6 और वह अपने मन ही मन घमंड से फूलने लगा, और मूल्यवान वस्त्र पहनने लगा, हां, यहां तक कि अपने प्रचार के अनुसार एक गिरजे की स्थापना भी आरंभ कर दी ।
- 7 और ऐसा हुआ कि जब वह अपनी बातों का प्रचार उन लोगों में करने जा रहा था जो उसका विश्वास करते थे, उसकी भेंट एक पुरुष से हुई जो परमेश्वर के गिरजे का था, हां, उनके शिक्षकों में से एक था और वह उसके साथ घोर वाद-विवाद करने लगा, ताकि वह गिरजे के लोगों को अलग राह पर ले जा सके; परन्तु परमेश्वर के शब्दों से उसे फटकारते हुए पुरुष ने उसका प्रतिरोध किया ।
- 8 अब उस पुरुष का नाम गिदोन था; और यही वह व्यक्ति था जो लिमही के लोगों को दासता से मुक्त कराने के लिए परमेश्वर के हाथों का एक औजार बना था ।
- 9 अब, क्योंकि गिदोन ने परमेश्वर के वचनों से उसका प्रतिरोध किया, वह गिदोन पर क्रोधित हो गया, और अपनी तलवार खींचकर उस पर वार करने लगा । अब गिदोन वृद्ध हो चुका था, इसलिए वह उसके वारों का सामना करने में असमर्थ था, इसलिए उसकी तलवार से मारा गया ।
- 10 और जिस पुरुष ने उसका वध किया था उसे गिरजे के लोग ले गए, और जो अपराध उसने किया था उसके अनुसार न्याय के लिए उसे अलमा के समक्ष लाया गया ।
- 11 और ऐसा हुआ कि वह अलमा के समक्ष खड़ा हुआ और निर्भिकता के साथ अपने लिए बहस की ।
- 12 परन्तु अलमा ने उससे कहा: देखो, पहली बार है कि पुरोहिती छल-कपट का प्रचार लोगों के बीच हुआ है । और देखो, तुम न केवल पुरोहिती छल-कपट के अपराधी हो, बल्कि तुमने ऐसा तलवार के बल पर करने का प्रयास किया है; और लोगों में पुरोहिती छल-कपट बलपूर्वक लाया गया जो कि इनके पूरे विनाश को सिद्ध करेगा ।
- 13 और तुमने एक धर्मी मनुष्य का रक्त बहाया है, हां, उस मनुष्य का जिसने इन लोगों के लिए बहुत अच्छे काम किये हैं; और यदि हम तुम्हें छोड़ दें तो उसका रक्त क्रोध में हम पर बदला लेने आएगा ।

And it came to pass that he did teach these things so much that many did believe on his words, even so many that they began to support him and give him money.

And he began to be lifted up in the pride of his heart, and to wear very costly apparel, yea, and even began to establish a church after the manner of his preaching.

And it came to pass as he was going, to preach to those who believed on his word, he met a man who belonged to the church of God, yea, even one of their teachers; and he began to contend with him sharply, that he might lead away the people of the church; but the man withstood him, admonishing him with the words of God.

Now the name of the man was Gideon; and it was he who was an instrument in the hands of God in delivering the people of Limhi out of bondage.

Now, because Gideon withstood him with the words of God he was wroth with Gideon, and drew his sword and began to smite him. Now Gideon being stricken with many years, therefore he was not able to withstand his blows, therefore he was slain by the sword.

And the man who slew him was taken by the people of the church, and was brought before Alma, to be judged according to the crimes which he had committed.

And it came to pass that he stood before Alma and pled for himself with much boldness.

But Alma said unto him: Behold, this is the first time that priestcraft has been introduced among this people. And behold, thou art not only guilty of priestcraft, but hast endeavored to enforce it by the sword; and were priestcraft to be enforced among this people it would prove their entire destruction.

And thou hast shed the blood of a righteous man, yea, a man who has done much good among this people; and were we to spare thee his blood would come upon us for vengeance.

- 14 इसलिए तुम्हें मरना होगा, उस नियम के अनुसार जिसे हमारे अंतिम राजा मुसायाह द्वारा हमें दिया गया है; और इसे इन लोगों द्वारा स्वीकार किया गया है; इसलिए इन लोगों को नियम का पालन करना होगा।
- 15 और ऐसा हुआ कि वे उसे ले गए; और उसका नाम निहोर था; और वे उसे मण्टी नामक पहाड़ी की चोटी पर ले गए, और वहां उससे ऐसा करवाया गया, या स्वर्ग और पृथ्वी के बीच उसने स्वयं स्वीकार किया कि जो कुछ भी उसने लोगों की सिखाया था वह परमेश्वर के वचन के विरुद्ध था; और वहां उसने एक घृणित मृत्यु प्राप्त की।
- 16 फिर भी, इससे देश में फैल रही पुरोहिती छल-कपट का अंत नहीं हुआ; क्योंकि कई लोग ऐसे थे जो व्यर्थ की सांसारिक वस्तुओं से प्रेम करते थे, और झूठे सिद्धांतों का प्रचार करते थे; और ऐसा उन्होंने धन और प्रतिष्ठा के लिए किया।
- 17 फिर भी, कानून के भय के कारण कि किसी को पता न चल जाए उन्होंने झूठ बोलने का साहस नहीं किया, क्योंकि झूठ बोलने वालों को दंड दिया जाता था; इसलिए वे अपने विश्वास के अनुसार प्रचार करने का दिखावा करते रहे; और इसलिए किसी भी मनुष्य के विश्वास पर कानून का कोई अधिकार न रहा।
- 18 और कानून के भय के कारण उन्होंने चोरी करने का साहस नहीं किया, क्योंकि ऐसे लोगों को दंड दिया जाता था; न तो उन्होंने लूटने, और न ही हत्या करने का साहस किया, क्योंकि जो हत्या करता था उसे मृत्युदंड दिया जाता।
- 19 परन्तु ऐसा हुआ कि जो भी परमेश्वर के गिरजे का सदस्य नहीं था उन्होंने उन लोगों को सताना आरंभ कर दिया जो परमेश्वर के गिरजे के सदस्य थे, और जिन्होंने मसीह के नाम को ग्रहण किया था।
- 20 हां, उन्होंने उन्हें सताया, और व्यंगों द्वारा उन्हें कष्ट पहुंचाया, और ऐसा उन्होंने उनकी विनम्रता के कारण किया; क्योंकि उनकी आंखों में अहंकार नहीं था, और क्योंकि उन्होंने बिना धन और मूल्य के, एक दूसरे के साथ परमेश्वर के वचन को बांटा था।
- 21 अब गिरजे के लोगों में एक कठोर नियम था, कि गिरजे का कोई भी मनुष्य, आगे आकर उन लोगों को नहीं सताएगा जो गिरजे के सदस्य नहीं हैं, और यह कि उनके स्वयं के बीच भी कोई अत्याचार नहीं होगा।

Therefore thou art condemned to die, according to the law which has been given us by Mosiah, our last king; and it has been acknowledged by this people; therefore this people must abide by the law.

And it came to pass that they took him; and his name was Nehor; and they carried him upon the top of the hill Manti, and there he was caused, or rather did acknowledge, between the heavens and the earth, that what he had taught to the people was contrary to the word of God; and there he suffered an ignominious death.

Nevertheless, this did not put an end to the spreading of priestcraft through the land; for there were many who loved the vain things of the world, and they went forth preaching false doctrines; and this they did for the sake of riches and honor.

Nevertheless, they durst not lie, if it were known, for fear of the law, for liars were punished; therefore they pretended to preach according to their belief; and now the law could have no power on any man for his belief.

And they durst not steal, for fear of the law, for such were punished; neither durst they rob, nor murder, for he that murdered was punished unto death.

But it came to pass that whosoever did not belong to the church of God began to persecute those that did belong to the church of God, and had taken upon them the name of Christ.

Yea, they did persecute them, and afflict them with all manner of words, and this because of their humility; because they were not proud in their own eyes, and because they did impart the word of God, one with another, without money and without price.

Now there was a strict law among the people of the church, that there should not any man, belonging to the church, arise and persecute those that did not belong to the church, and that there should be no persecution among themselves.



- 22 फिर भी, उनमें कई ऐसे थे जो अहंकारी होने लगे थे, और अपने विरोधियों से भारी वाद-विवाद करने लगे थे, यहां तक कि मार-पीट भी करने लगे थे; हां, अपने मुक्कों से एक दूसरे पर प्रहार करने लगे थे।
- 23 ऐसा अलमा के शासन के दूसरे वर्ष में हुआ था, और यह गिरजे के कष्ट का भारी कारण बना था; हां, यह गिरजे के लिए भारी परीक्षा का कारण बना था।
- 24 क्योंकि बहुतों के हृदय कठोर हो गए थे, और उनके नाम कलंकित हो गए, यह कि उन्हें परमेश्वर के लोगों ने याद नहीं रखा। और उनमें से कई लोगों ने स्वयं को अलग भी कर लिया।
- 25 अब यह उनके लिए कठिन परीक्षा का समय था जो विश्वास में दृढ़ थे, फिर भी, वे दृढ़ और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने में अडिग रहे, और उन्होंने अपने ऊपर हो रहे भारी उत्पीड़न को धैर्य से सहन किया।
- 26 और जब पुरोहितों ने लोगों में परमेश्वर के वचन का प्रचार बंद कर दिया, लोगों ने भी परमेश्वर के वचन को सुनने के प्रति प्रयास करना बंद कर दिया। और जब याजक ने उन्हें परमेश्वर का वचन सुनाना आरंभ कर दिया तब वे सारे निष्ठापूर्वक फिर से सुनने लगे और याजक स्वयं को सुननेवालों से ऊपर नहीं समझता था, क्योंकि प्रचारक सुननेवालों से बेहतर नहीं होता, न ही सीखनेवालों से कोई शिक्षक बेहतर होता है; और इस प्रकार वे सब एक समान थे, और सभी ने परिश्रम किया, अपने सामर्थ्य के अनुसार हर मनुष्य ने परिश्रम किया।
- 27 और हर मनुष्य ने जितना उसके पास था उसके अनुसार अपने वस्तुओं को गरीबों, और जरूरतमंदों, और बीमारों, और कष्ट में पड़े लोगों को बांटा; और उन्होंने मूल्यवान वस्त्र नहीं पहने, फिर भी वे साफ-सुथरे और मनोरम थे।
- 28 और इस प्रकार उन्होंने गिरजे के कार्यों को स्थापित किया और उनके ऊपर हो रहे उत्पीड़न के बावजूद फिर से वे निरंतर शांति प्राप्त करने लगे।
- 29 और अब, गिरजे की स्थिरता के कारण वे बहुत ही संपन्न हो गए, अपनी अवश्यकता की सारी वस्तुओं को प्रचुरता में प्राप्त करते हुए—जानवरों के समूहों और झुंडों की प्रचुरता, और हर प्रकार के पाले हुए जानवर, और अनाज, और सोना, और चांदी, और मूल्यवान वस्तुओं की अधिकता भी, और रेशमी और सन के कपड़े, और हर प्रकार के अच्छे घरेलू कपड़ों की अधिकता से संपन्न हुए।

Nevertheless, there were many among them who began to be proud, and began to contend warmly with their adversaries, even unto blows; yea, they would smite one another with their fists.

Now this was in the second year of the reign of Alma, and it was a cause of much affliction to the church; yea, it was the cause of much trial with the church.

For the hearts of many were hardened, and their names were blotted out, that they were remembered no more among the people of God. And also many withdrew themselves from among them.

Now this was a great trial to those that did stand fast in the faith; nevertheless, they were steadfast and immovable in keeping the commandments of God, and they bore with patience the persecution which was heaped upon them.

And when the priests left their labor to impart the word of God unto the people, the people also left their labors to hear the word of God. And when the priest had imparted unto them the word of God they all returned again diligently unto their labors; and the priest, not esteeming himself above his hearers, for the preacher was no better than the hearer, neither was the teacher any better than the learner; and thus they were all equal, and they did all labor, every man according to his strength.

And they did impart of their substance, every man according to that which he had, to the poor, and the needy, and the sick, and the afflicted; and they did not wear costly apparel, yet they were neat and comely.

And thus they did establish the affairs of the church; and thus they began to have continual peace again, notwithstanding all their persecutions.

And now, because of the steadiness of the church they began to be exceedingly rich, having abundance of all things whatsoever they stood in need—an abundance of flocks and herds, and fatlings of every kind, and also abundance of grain, and of gold, and of silver, and of precious things, and abundance of silk and fine-twined linen, and all manner of good homely cloth.

- 30 और इस प्रकार, अपने संपन्न समय में, उन्होंने किसी नंगे, भूखे, प्यासे, रोगी या जिसको सेवा की आवश्यकता हो उसे कभी भी निराश नहीं लौटाया; और उन्होंने अपने हृदय को धन पर नहीं लगाया इसलिए वे सभी के प्रति उदार थे, चाहे बूढ़ा हो या युवा, चाहे दासता में हो या स्वतंत्र, चाहे पुरुष हो या महिला, चाहे गिरजे का सदस्य हो या न हो, चाहे जरूरतमंदों के प्रति उसके मन में आदर हो या न हो ।
- 31 और इस प्रकार वे फलते-फूलते गए और उन लोगों से बहुत अधिक धनी बन गए जो उनके गिरजे के सदस्य नहीं थे ।
- 32 वे लोग जो उनके गिरजे के सदस्य नहीं थे उन्होंने स्वयं को टोना-टोटका, मूर्तिपूजा, आलस, बकवास, द्वेष और विवाद में उलझा रखा था; मूल्यवान वस्त्रों को पहनते हुए अत्याचार करते हुए; झूठ बोलते हुए, चोरी करते हुए, लूटते हुए, व्यभिचार और हत्या, और हर प्रकार की दुष्टता करते हुए वे अपने ही अहंकार में डूबे रहते; फिर भी, जहां तक हो सकता था उन लोगों पर नियम को बलपूर्वक लागू किया गया जो इसका उल्लंघन करते थे ।
- 33 और ऐसा हुआ कि उन पर नियम को लागू करने के कारण, हर मनुष्य को उसके किये अनुसार दंड दिया जाता, वे कुछ शांत हो गए, और दूसरों की जानकारी में किसी भी प्रकार की दुष्टता करने का साहस नहीं करते; इसलिए न्यायियों के शासन के पांचवें वर्ष तक नफी के लोगों में बहुत अधिक शांति बनी रही ।

And thus, in their prosperous circumstances, they did not send away any who were naked, or that were hungry, or that were athirst, or that were sick, or that had not been nourished; and they did not set their hearts upon riches; therefore they were liberal to all, both old and young, both bond and free, both male and female, whether out of the church or in the church, having no respect to persons as to those who stood in need.

And thus they did prosper and become far more wealthy than those who did not belong to their church.

For those who did not belong to their church did indulge themselves in sorceries, and in idolatry or idleness, and in babblings, and in envyings and strife; wearing costly apparel; being lifted up in the pride of their own eyes; persecuting, lying, thieving, robbing, committing whoredoms, and murdering, and all manner of wickedness; nevertheless, the law was put in force upon all those who did transgress it, inasmuch as it was possible.

And it came to pass that by thus exercising the law upon them, every man suffering according to that which he had done, they became more still, and durst not commit any wickedness if it were known; therefore, there was much peace among the people of Nephi until the fifth year of the reign of the judges.

## अलमा 2

- 1 और उनके शासन के पांचवे वर्ष के आरंभ में, एक पुरुष था जो अमलिसी कहलाता था जिसके कारण लोगों के बीच विवाद होने लगा; वह बहुत ही धूर्त पुरुष था, हां, वह सांसारिक ज्ञान में समझदार था, वह उस आदमी की रीति के अनुसार था जिसने तलवार से गिदोन का वध किया था, जिसे कानून के तहत दंड दिया गया था—
- 2 अब अमलिसी ने अपनी धूर्तता से बहुत लोगों को अपनी ओर खींच लिया इतना कि वे बहुत शक्तिशाली होने लगे; और उन्होंने अमलिसी को लोगों का राजा बनाने का प्रयास करना आरंभ कर दिया ।
- 3 अब यह गिरजे के लोगों के लिए चेतावनी थी, और उन लोगों के लिए जो अमलिसी के समझाने बुझाने के पश्चात भी उसकी तरफ नहीं हुए थे; क्योंकि वे जानते थे कि उनके कानून के अनुसार ऐसी चीजें लोगों के द्वारा ही स्थापित होनी चाहिए ।
- 4 इसलिए, दुष्ट मनुष्य होने के नाते यदि ऐसा होता कि अमलिसी लोगों का समर्थन प्राप्त कर लेता, तो वह उन्हें उनके अधिकारों और गिरजे की सुविधाओं से वंचित कर देता; क्योंकि वह परमेश्वर के गिरजे का विनाश करना चाहता था ।
- 5 और ऐसा हुआ कि सारे देश के लोग, अपने मन की इच्छानुसार अलग-अलग दलों में एक साथ एकत्रित हो गए, चाहे वे अमलिसी के पक्ष में हों या न हों, अधिक मतभेद और एक दूसरे के साथ विलक्षण वाद-विवाद करते हुए ।
- 6 और इस प्रकार संबंधित मामलों में अपने मतों को रखने के लिए वे एक साथ एकत्रित हुए; और उन्हें न्यायियों के समक्ष रखा गया ।
- 7 और ऐसा हुआ कि लोगों की आवाज अमलिसी के विरुद्ध थी, कि उसे लोगों का राजा नहीं बनाया गया ।
- 8 इसके कारण उन लोगों के हृदयों में खुशी की लहर जाग उठी जो उसके विरुद्ध थे परन्तु जो लोग उसके पक्ष में नहीं थे उनके विरुद्ध अमलिसी ने उन लोगों को भड़काया जो उसके पक्ष में थे ।
- 9 और ऐसा हुआ कि वे एकत्रित हुए, और अपने राजा के रूप में अमलिसी को समर्पित किया ।
- 10 अब जब कि अमलिसी उनका राजा बन गया था उसने उन्हें उनके ही भाइयों के विरुद्ध हथियार उठाने की आज्ञा दी; और ऐसा उसने इसलिए किया ताकि वे उसके अधीन हो जाएं ।

## Alma 2

And it came to pass in the commencement of the fifth year of their reign there began to be a contention among the people; for a certain man, being called Amlici, he being a very cunning man, yea, a wise man as to the wisdom of the world, he being after the order of the man that slew Gideon by the sword, who was executed according to the law—

Now this Amlici had, by his cunning, drawn away much people after him; even so much that they began to be very powerful; and they began to endeavor to establish Amlici to be a king over the people.

Now this was alarming to the people of the church, and also to all those who had not been drawn away after the persuasions of Amlici; for they knew that according to their law that such things must be established by the voice of the people.

Therefore, if it were possible that Amlici should gain the voice of the people, he, being a wicked man, would deprive them of their rights and privileges of the church; for it was his intent to destroy the church of God.

And it came to pass that the people assembled themselves together throughout all the land, every man according to his mind, whether it were for or against Amlici, in separate bodies, having much dispute and wonderful contentions one with another.

And thus they did assemble themselves together to cast in their voices concerning the matter; and they were laid before the judges.

And it came to pass that the voice of the people came against Amlici, that he was not made king over the people.

Now this did cause much joy in the hearts of those who were against him; but Amlici did stir up those who were in his favor to anger against those who were not in his favor.

And it came to pass that they gathered themselves together, and did consecrate Amlici to be their king.

Now when Amlici was made king over them he commanded them that they should take up arms against their brethren; and this he did that he might subject them to him.

- 11 अब अमलिसी के लोग जो अमलिसी कहलाते थे, वे अब अमलिसियों कहलाने लगे; और बाकी बचे हुए लोग नफाई या परमेश्वर के लोग कहलाने लगे ।
- 12 इसलिए नफाइयों के लोग अमलिसियों की इच्छा से अवगत थे, और इसलिए उन्होंने उनसे लड़ने की तैयारी की; हां, किसी भी प्रकार के युद्ध के लिए उन्होंने स्वयं को तलवारों, छुरियों, और तीर और कमानों, और पत्थरों और गुलेलों, और युद्ध के सभी तरह के हथियारों से लैस किया ।
- 13 और इस प्रकार अमलिसियों के आने के समय पर वे उनसे लड़ने के लिए तैयार थे । और उनकी गिनती के अनुसार सेनापति, उच्च सेनापति, और मुख्य सेनापति नियुक्त किये गए ।
- 14 और ऐसा हुआ कि हर प्रकार के युद्ध के लिए अमलिसी ने अपने आदमियों को युद्ध के सभी तरह के हथियारों से लैस किया; और उनके भाइयों के विरुद्ध लड़ने में उनके मार्गदर्शन के लिए उसने शासकों और मार्गदर्शकों को नियुक्त किया ।
- 15 और ऐसा हुआ कि अमलिसी अमनिहू नामक पहाड़ी पर पहुंचे, जो कि सिदोम नदी के पूरब में थी, जो जराहेमला देश से होकर बहती थी, और वहां उन्होंने नफाइयों के साथ युद्ध आरंभ किया ।
- 16 अब अलमा, मुख्य न्यायी और नफी के लोगों का राज्यपाल होने के नाते वह अपने लोगों के साथ गया, हां, अपने सेनापतियों और मुख्य सेनापतियों के साथ, हां, युद्ध में अमलिसियों के विरुद्ध अपनी सेना का मुखिया बनकर ।
- 17 और सिदोम के पूरब की पहाड़ी पर उन्होंने अमलिसियों का वध करना आरंभ किया । और अमलिसियों ने पूरी ताकत के साथ नफाइयों से संघर्ष किया, इतनी प्रबलता से कि कई नफाई अमलिसियों द्वारा मारे गए ।
- 18 फिर भी प्रभु ने नफाइयों के हाथों को मजबूत किया जिससे वे अधिक से अधिक अमलिसियों का वध करने लगे, और वे उनके सामने से भागने लगे ।
- 19 और ऐसा हुआ कि नफाई पूरे दिन अमलिसियों का पीछा करते रहे, और अधिक से अधिक लोगों का वध किया, इतनी प्रबलता से कि उन्होंने बारह हजार पांच सौ तीस और दो अमलिसियों का वध कर दिया और छह हजार पांच सौ साठ और दो नफाई मारे गए ।

Now the people of Amlici were distinguished by the name of Amlici, being called Amlicites; and the remainder were called Nephites, or the people of God.

Therefore the people of the Nephites were aware of the intent of the Amlicites, and therefore they did prepare to meet them; yea, they did arm themselves with swords, and with cimeters, and with bows, and with arrows, and with stones, and with slings, and with all manner of weapons of war, of every kind.

And thus they were prepared to meet the Amlicites at the time of their coming. And there were appointed captains, and higher captains, and chief captains, according to their numbers.

And it came to pass that Amlici did arm his men with all manner of weapons of war of every kind; and he also appointed rulers and leaders over his people, to lead them to war against their brethren.

And it came to pass that the Amlicites came upon the hill Amnihu, which was east of the river Sidon, which ran by the land of Zarahemla, and there they began to make war with the Nephites.

Now Alma, being the chief judge and the governor of the people of Nephi, therefore he went up with his people, yea, with his captains, and chief captains, yea, at the head of his armies, against the Amlicites to battle.

And they began to slay the Amlicites upon the hill east of Sidon. And the Amlicites did contend with the Nephites with great strength, insomuch that many of the Nephites did fall before the Amlicites.

Nevertheless the Lord did strengthen the hand of the Nephites, that they slew the Amlicites with great slaughter, that they began to flee before them.

And it came to pass that the Nephites did pursue the Amlicites all that day, and did slay them with much slaughter, insomuch that there were slain of the Amlicites twelve thousand five hundred thirty and two souls; and there were slain of the Nephites six thousand five hundred sixty and two souls.

- 20 और ऐसा हुआ कि जब अलमा अमलिसियों का और पीछा न कर सका तब उसने अपने लोगों को गिदोन की घाटी में तंबू लगाने को कहा, खाड़ी का नाम उस गिदोन के नाम पर रखा गया था जो निहोर के हाथों से तलवार द्वारा मारा गया था; और इसी खाड़ी में नफाड़्यों ने रात बिताने के लिए तंबू लगाया ।
- 21 और अलमा ने बचे हुए अमलिसियों का पीछा करने के लिए भेदियों को भेजा, कि वह उनकी योजनाओं और षडयंत्रों को जान सके, जिससे वह स्वयं को उनसे बचा सके, ताकि वह अपने लोगों को विनाश से बचा सके ।
- 22 अब जिन लोगों को उसने अमलिसियों की छावनी को देखने के लिए भेजा वे जीराम, और अमनोर, और मण्टी, और लिमहर कहलाए ये वही लोग थे जो अमलिसियों की छावनी पर नजर रखने के लिए अपने लोगों के साथ गए थे ।
- 23 और ऐसा हुआ कि अगले दिन वे नफाड़्यों की छावनी में तीव्र गति से वापस आए, बहुत विस्मित, और भयभीत होकर यह कहते हुए:
- 24 देखो, हमने अमलिसियों की छावनी का पीछा किया, और जराहेमला देश के ऊपर मिनोन देश में, नफी के देश के मार्ग पर, आश्चर्य से हमने लमनाड़्यों की कई सेना को देखा; और देखो, अमलिसियों उनसे मिल गए;
- 25 और उन्होंने प्रदेश में हमारे भाड़्यों पर चढ़ाई कर दी और वे अपने पशुओं, और अपनी पत्नियों, और अपने बच्चों के साथ हमारे नगर की ओर आ रहे हैं; और यदि हम लोगों ने शीघ्रता नहीं दिखाई तो वे हमारे नगर पर अधिकार कर लेंगे, और हमारे पिता, और हमारी पत्नियों, और हमारे बच्चों को मार देंगे ।
- 26 और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों ने अपने तंबुओं का उखाड़ा, और गिदोन की खाड़ी से अपने नगर को चल दिए, जो कि जराहेमला का नगर था ।
- 27 और देखो, जब वे सिदोन की नदी पार कर रहे थे, लमनाड़्यों और अमलिसियों, जो कि समुद्र के बालू के समान लगभग बहुत बड़ी संख्या में थे, उनका विनाश करने के लिए उन पर चढ़ाई कर दी ।

And it came to pass that when Alma could pursue the Amlicites no longer he caused that his people should pitch their tents in the valley of Gideon, the valley being called after that Gideon who was slain by the hand of Nehor with the sword; and in this valley the Nephites did pitch their tents for the night.

And Alma sent spies to follow the remnant of the Amlicites, that he might know of their plans and their plots, whereby he might guard himself against them, that he might preserve his people from being destroyed.

Now those whom he had sent out to watch the camp of the Amlicites were called Zeram, and Amnor, and Manti, and Limher; these were they who went out with their men to watch the camp of the Amlicites.

And it came to pass that on the morrow they returned into the camp of the Nephites in great haste, being greatly astonished, and struck with much fear, saying:

Behold, we followed the camp of the Amlicites, and to our great astonishment, in the land of Minon, above the land of Zarahemla, in the course of the land of Nephi, we saw a numerous host of the Lamanites; and behold, the Amlicites have joined them;

And they are upon our brethren in that land; and they are fleeing before them with their flocks, and their wives, and their children, towards our city; and except we make haste they obtain possession of our city, and our fathers, and our wives, and our children be slain.

And it came to pass that the people of Nephi took their tents, and departed out of the valley of Gideon towards their city, which was the city of Zarahemla.

And behold, as they were crossing the river Sidon, the Lamanites and the Amlicites, being as numerous almost, as it were, as the sands of the sea, came upon them to destroy them.

- 28 फिर भी, नफाइयों ने प्रभु के हाथों द्वारा बल प्राप्त किया, उससे बहुत ही गंभीरता से प्रार्थना की कि वह उन्हें उनके शत्रुओं के हाथों से बचा ले, इसलिए प्रभु ने उनकी विनती को सुना, और उन्हें बल दिया, और लमनाइयों और अमलिसियों उनसे परास्त हुए ।
- 29 और ऐसा हुआ कि अलमा ने आमने-सामने, तलवार से अमलिसी के साथ युद्ध किया और उन्होंने भी एक दूसरे के साथ भारी संघर्ष किया ।
- 30 और ऐसा हुआ कि अलमा ने, परमेश्वर का मनुष्य होने के नाते, बहुत ही विश्वास से यह कहते हुए प्रार्थना की: हे प्रभु, दया कर और मेरा जीवन बचा ले, ताकि इन लोगों को बचाने और सुरक्षित रखने में मैं तुम्हारे हाथों का एक औजार बन सकूँ ।
- 31 अब जब अलमा ने इन शब्दों को कहा उसने अमलिसी के साथ फिर से युद्ध किया; और उसने बल प्राप्त किया, इतना अधिक कि उसने तलवार से अमलिसी का वध कर दिया ।
- 32 और उसने लमनाइयों के राजा से भी युद्ध किया; परन्तु लमनाइयों का राजा अलमा के सामने से भाग गया और अलमा के साथ युद्ध करने के लिए अपने रक्षकों को भेजा ।
- 33 परन्तु अलमा ने, अपने रक्षकों के साथ लमनाइयों के राजा के रक्षकों से तब तक युद्ध किया जब तक कि उसने उन्हें मारकर वापस न भगा दिया ।
- 34 और इस प्रकार उसने सिदोन के पानी में मारे गए लमनाइयों के शरीरों को फिंकवाकर, सिदोन नदी के पश्चिम की धरती, या किनारे को साफ कर दिया, ताकि इसके पश्चात उसके लोग नदी को पार कर सकें और सिदोन नदी के पश्चिम में लमनाइयों और अमलिसियों के साथ युद्ध कर सकें ।
- 35 और ऐसा हुआ कि जब उन सब ने सिदोन नदी पार कर लिया तब लमनाइयों और अमलिसियों जिनकी संख्या इतनी अधिक थी कि उन्हें गिना भी नहीं जा सकता था, उनका सामना न करते हुए उनके सामने से भागने लगे ।
- 36 और वे नफाइयों के सामने से जंगल की ओर भाग गए जो कि प्रदेश की सीमाओं से बहुत आगे, पश्चिम और उत्तर में था और नफाइयों ने अपनी पूरी ताकत से उनका पीछा किया, और उन्हें मार गिराया ।

Nevertheless, the Nephites being strengthened by the hand of the Lord, having prayed mightily to him that he would deliver them out of the hands of their enemies, therefore the Lord did hear their cries, and did strengthen them, and the Lamanites and the Amlicites did fall before them.

And it came to pass that Alma fought with Amlici with the sword, face to face; and they did contend mightily, one with another.

And it came to pass that Alma, being a man of God, being exercised with much faith, cried, saying: O Lord, have mercy and spare my life, that I may be an instrument in thy hands to save and preserve this people.

Now when Alma had said these words he contended again with Amlici; and he was strengthened, insomuch that he slew Amlici with the sword.

And he also contended with the king of the Lamanites; but the king of the Lamanites fled back from before Alma and sent his guards to contend with Alma.

But Alma, with his guards, contended with the guards of the king of the Lamanites until he slew and drove them back.

And thus he cleared the ground, or rather the bank, which was on the west of the river Sidon, throwing the bodies of the Lamanites who had been slain into the waters of Sidon, that thereby his people might have room to cross and contend with the Lamanites and the Amlicites on the west side of the river Sidon.

And it came to pass that when they had all crossed the river Sidon that the Lamanites and the Amlicites began to flee before them, notwithstanding they were so numerous that they could not be numbered.

And they fled before the Nephites towards the wilderness which was west and north, away beyond the borders of the land; and the Nephites did pursue them with their might, and did slay them.

37 हां, उन्होंने चारों ओर से घेरकर उन्हें तब तक मारा और भगाया जब तक कि वे पश्चिम और उत्तर में तितर-बितर न हो गए, जब तक कि वे उस जंगल में न पहुंच गए, जिसे हरमंतस कहा जाता था; और यह जंगल का वह हिस्सा था जहां जंगली और खूंखार जानवर फैले हुए थे ।

38 और ऐसा हुआ कि कई घायल लोग जंगल में मर गए, और उन्हें जानवरों और हवा में उड़ने वाले गिद्धों ने खा लिया; और उनकी हड्डियां पाई गईं, और धरती पर ढेर लग गया ।

Yea, they were met on every hand, and slain and driven, until they were scattered on the west, and on the north, until they had reached the wilderness, which was called Hermounts; and it was that part of the wilderness which was infested by wild and ravenous beasts.

And it came to pass that many died in the wilderness of their wounds, and were devoured by those beasts and also the vultures of the air; and their bones have been found, and have been heaped up on the earth.

### अलमा 3

- 1 और ऐसा हुआ कि जो नफाई युद्ध के शस्त्रों द्वारा नहीं मारे गए थे, मारे गए लोगों को दफनाने के पश्चात—मारे गए लोगों को गिना नहीं गया था, क्योंकि उनकी संख्या बहुत अधिक थी—वे सब अपने प्रदेश, और अपने घरों को, और अपनी पत्नियों, और अपने बच्चों के पास लौट गए ।
- 2 कई स्त्री और बच्चे तलवार द्वारा मारे गए थे, और उनके कई झुंड और समूह भी मारे गए थे; और उनके अनाजों के कई खेतों को नष्ट कर दिया गया था, क्योंकि वे लोगों की सेनाओं द्वारा कुचले गए थे ।
- 3 और अब कई लमनाई और अमलिसियों को सिदोन नदी के किनारे मार कर सिदोन के पानी में फेंक दिया गया था; और देखो उनकी हड्डियां समुद्र की गहराई में हैं, और वे बहुत हैं ।
- 4 और अमलिसियों नफाइयों से अलग थे, क्योंकि उन्होंने लमनाइयों के समान अपने माथे पर लाल चिन्ह लगाया था; फिर भी उन्होंने लमनाइयों के समान अपने सिरों को मुंडाया नहीं ।
- 5 लमनाइयों के सिर मुंडे हुए थे; और उनके कमर पर कपड़े लिपटे हुए थे और उनका बाकी शरीर नंगा था, और उनका कवच भी उन पर लिपटा हुआ था, और उनके कमान, और उनके तीर, और उनके पत्थर, और उनकी गुलेल इत्यादि भी लिपटे हुए थे ।
- 6 और लमनाइयों का रंग उनके पिता के चिन्ह स्वरूप काला था, जो कि उनके उल्लंघन और अपने भाइयों के विरुद्ध विरोध के कारण उन पर एक श्राप था, जिसमें नफी, याकूब, और यूसुफ, और साम शामिल थे जो न्यायी और पवित्र थे ।
- 7 और उनके भाइयों ने उनका विनाश करना चाहा, इसलिए वे श्रापित थे; और प्रभु परमेश्वर ने उन पर एक चिन्ह लगाया, हां, लमान और लमूएल पर, और इश्माएल के पुत्रों, और इश्माएली स्त्रियों पर भी ।
- 8 और ऐसा इसलिए किया गया ताकि उनका वंश उनके भाइयों के वंश से अलग हो सके, कि इसके पश्चात प्रभु परमेश्वर अपने लोगों को बचा सके, कि वे एक साथ मिल न जाएं और गलत परंपराओं में विश्वास करने लगें जो कि उनके विनाश का कारण बने ।

### Alma 3

And it came to pass that the Nephites who were not slain by the weapons of war, after having buried those who had been slain—now the number of the slain were not numbered, because of the greatness of their number—after they had finished burying their dead they all returned to their lands, and to their houses, and their wives, and their children.

Now many women and children had been slain with the sword, and also many of their flocks and their herds; and also many of their fields of grain were destroyed, for they were trodden down by the hosts of men.

And now as many of the Lamanites and the Amlicites who had been slain upon the bank of the river Sidon were cast into the waters of Sidon; and behold their bones are in the depths of the sea, and they are many.

And the Amlicites were distinguished from the Nephites, for they had marked themselves with red in their foreheads after the manner of the Lamanites; nevertheless they had not shorn their heads like unto the Lamanites.

Now the heads of the Lamanites were shorn; and they were naked, save it were skin which was girded about their loins, and also their armor, which was girded about them, and their bows, and their arrows, and their stones, and their slings, and so forth.

And the skins of the Lamanites were dark, according to the mark which was set upon their fathers, which was a curse upon them because of their transgression and their rebellion against their brethren, who consisted of Nephi, Jacob, and Joseph, and Sam, who were just and holy men.

And their brethren sought to destroy them, therefore they were cursed; and the Lord God set a mark upon them, yea, upon Laman and Lemuel, and also the sons of Ishmael, and Ishmaelitish women.

And this was done that their seed might be distinguished from the seed of their brethren, that thereby the Lord God might preserve his people, that they might not mix and believe in incorrect traditions which would prove their destruction.



- 9 और ऐसा हुआ कि जो भी अपने वंश को लमनाइयों से मिलाएगा, अपने वंश पर भी वही श्राप लाएगा ।
- 10 इसलिए, जो कोई भी लमनाइयों के बहकावे में आ जाता वह भी उन्हीं में गिना जाता, और उस पर भी चिन्ह होता ।
- 11 और ऐसा हुआ कि जो कोई भी लमनाइयों की परंपराओं में विश्वास नहीं करते, परन्तु यरूशलेम से लाए गए अभिलेखों पर विश्वास करते, और अपने पिता की परंपरा में जो कि सही थीं, जो परमेश्वर की आज्ञाओं में विश्वास करते और उनका पालन करते, उस समय से नफाई, या नफी के लोग कहलाये—
- 12 और यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने लोगों और लमनाइयों के लोगों के सच्चे अभिलेखों को रखा था ।
- 13 अब हम फिर से अमलिसियों की बात करेंगे, क्योंकि उन पर भी चिन्ह लगाया गया था हां, उन्होंने स्वयं पर चिन्ह लगाया था, हां, अपने माथे पर लाल चिन्ह भी लगाया था ।
- 14 इस प्रकार परमेश्वर का वचन पूरा हुआ, क्योंकि यही वे शब्द हैं जिसे उसने नफी से कहा था: देखो, मैंने लमनाइयों को श्राप दिया है, और मैं उन पर चिन्ह लगाऊंगा ताकि इस समय से और हमेशा के लिए वे और उनके वंश तुमसे और तुम्हारे वंश से अलग हो सकें, सिवाय इसके कि वे अपने पापों का पश्चाताप करें और मेरे पास आएँ कि मैं उन पर दया कर सकूँ।
- 15 और फिर से, मैं उस पर चिन्ह लगाऊंगा जो अपने वंश को तुम्हारे भाइयों से मिलाएगा, कि वे भी श्रापित हो सकें ।
- 16 और फिर से, मैं उस पर चिन्ह लगाऊंगा जो तुम्हारे और तुम्हारे वंश के विरुद्ध लड़ेगा ।
- 17 और फिर से, मैं कहता हूँ कि वो जो तुमसे अलग होगा तुम्हारा वंश नहीं कहलाएगा; और अभी से और हमेशा के लिए, मैं तुम्हें आशीष दूंगा, और उसे भी जो तुम्हारा वंश कहलाएगा; और प्रभु की ये प्रतिज्ञाएं नफी और उसके वंश से थीं ।
- 18 अब अमलिसियों नहीं जानते थे कि वे परमेश्वर के वचन को पूरा कर रहे थे जब उन्होंने अपने माथे पर चिन्ह लगाना आरंभ किया; फिर भी वे खुलेआम परमेश्वर के विरुद्ध हो गए; इसलिए यह आवश्यक था कि श्राप उन पर आए ।

And it came to pass that whosoever did mingle his seed with that of the Lamanites did bring the same curse upon his seed.

Therefore, whosoever suffered himself to be led away by the Lamanites was called under that head, and there was a mark set upon him.

And it came to pass that whosoever would not believe in the tradition of the Lamanites, but believed those records which were brought out of the land of Jerusalem, and also in the tradition of their fathers, which were correct, who believed in the commandments of God and kept them, were called the Nephites, or the people of Nephi, from that time forth—

And it is they who have kept the records which are true of their people, and also of the people of the Lamanites.

Now we will return again to the Amlicites, for they also had a mark set upon them; yea, they set the mark upon themselves, yea, even a mark of red upon their foreheads.

Thus the word of God is fulfilled, for these are the words which he said to Nephi: Behold, the Lamanites have I cursed, and I will set a mark on them that they and their seed may be separated from thee and thy seed, from this time henceforth and forever, except they repent of their wickedness and turn to me that I may have mercy upon them.

And again: I will set a mark upon him that minglenth his seed with thy brethren, that they may be cursed also.

And again: I will set a mark upon him that fighteth against thee and thy seed.

And again, I say he that departeth from thee shall no more be called thy seed; and I will bless thee, and whomsoever shall be called thy seed, henceforth and forever; and these were the promises of the Lord unto Nephi and to his seed.

Now the Amlicites knew not that they were fulfilling the words of God when they began to mark themselves in their foreheads; nevertheless they had come out in open rebellion against God; therefore it was expedient that the curse should fall upon them.

- 19 अब मैं चाहता हूँ कि तुम यह देखो कि वे स्वयं अपने ऊपर श्राप लाए; और इसी प्रकार हर वो मनुष्य जो श्रापित है स्वयं अपने ऊपर दंड लाएगा ।
- 20 अब ऐसा हुआ कि लमनाइयों और अमलिसियों द्वारा जराहेमला की धरती पर लड़ाई लड़ने के पश्चात बहुत दिन नहीं बीते थे, कि नफी के लोगों पर लमनाइयों की दूसरी सेना ने चढ़ाई की दी, उसी स्थान पर जहां पहली सेना अमलिसियों से मिली थी ।
- 21 और ऐसा हुआ कि उन्हें प्रदेश से भगाने के लिए एक सेना को भेजा गया ।
- 22 अब अलमा स्वयं घायल होने के कारण इस बार लमनाइयों के विरुद्ध युद्ध करने न जा सका;
- 23 परन्तु उसने उनके विरुद्ध कई सेनाओं को भेजा; और वे गए और कई लमनाइयों को मार गिराया, और उनमें से बचे हुए लोगों को अपने प्रदेश की सीमा से बाहर भगा दिया ।
- 24 और फिर वे वापस आए और देश में शांति स्थापित करने लगे, कुछ समय तक अपने शत्रुओं से कोई भी कष्ट न पाते हुए ।
- 25 अब ये सब बातें हो चुकी थीं, हां, न्यायियों के शासन के पांचवे वर्ष में ये सभी युद्ध और वाद-विवाद शुरू होकर खत्म हो गए थे ।
- 26 और एक वर्ष के भीतर हजारों और हजारों की संख्या में जीवात्माओं को अनंत संसार में भेज दिया गया, ताकि वे अपने कर्मों के अनुसार अपना फल पा सकें, चाहे वे फल अच्छे हों या बुरे, चाहे अनंत प्रसन्नता हो या अनंत कष्ट, उस आत्मा के अनुसार जिसका पालन करना उन्होंने चुना था, चाहे अच्छी आत्मा का या बुरी आत्मा का ।
- 27 क्योंकि हर मनुष्य उसी के अनुसार अपना वेतन पाता है जिसकी आज्ञा को वह पालन करता है, और ऐसा भविष्यवाणी की आत्मा के शब्दों के अनुसार होता है; इसलिए इसे सत्य के अनुसार होने दो । और इस प्रकार न्यायियों के शासन का पांचवां वर्ष समाप्त हुआ ।

Now I would that ye should see that they brought upon themselves the curse; and even so doth every man that is cursed bring upon himself his own condemnation.

Now it came to pass that not many days after the battle which was fought in the land of Zarahemla, by the Lamanites and the Amlicites, that there was another army of the Lamanites came in upon the people of Nephi, in the same place where the first army met the Amlicites.

And it came to pass that there was an army sent to drive them out of their land.

Now Alma himself being afflicted with a wound did not go up to battle at this time against the Lamanites;

But he sent up a numerous army against them; and they went up and slew many of the Lamanites, and drove the remainder of them out of the borders of their land.

And then they returned again and began to establish peace in the land, being troubled no more for a time with their enemies.

Now all these things were done, yea, all these wars and contentions were commenced and ended in the fifth year of the reign of the judges.

And in one year were thousands and tens of thousands of souls sent to the eternal world, that they might reap their rewards according to their works, whether they were good or whether they were bad, to reap eternal happiness or eternal misery, according to the spirit which they listed to obey, whether it be a good spirit or a bad one.

For every man receiveth wages of him whom he listeth to obey, and this according to the words of the spirit of prophecy; therefore let it be according to the truth. And thus endeth the fifth year of the reign of the judges.

## अलमा 4

- 1 अब ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के छठवें वर्ष में, जराहेमला के देश में न तो कोई वाद-विवाद हुआ और न ही कोई युद्ध;
- 2 परन्तु लोग कष्ट में थे, हां, अपने भाइयों, और अपने जानवरों के समूहों और झुंडों, और अनाज के अपने खेतों के नुकसान से अत्याधिक कष्ट में थे, जिन्हें लमनाइयों ने अपने पैरों तले रौंद दिया था और नष्ट कर दिया था ।
- 3 और उनका कष्ट इतना अधिक था कि दुखी होने के लिए हर व्यक्ति के पास कारण था; और उन्होंने इस बात पर विश्वास किया कि उनकी दुष्टता और उनके घृणित कार्य के कारण यह उन पर परमेश्वर का न्याय था; इसलिए वे अपने कर्तव्य के प्रति सजग हो गए ।
- 4 और उन्होंने गिरजे की स्थापना अधिक पूर्णता के साथ करना आरंभ कर दिया; हां, और सिदोन के पानी में कई लोगों का बपतिस्मा हुआ और वे परमेश्वर के गिरजे से जुड़ गए; हां, उनका बपतिस्मा अलमा के हाथों से हुआ था, जो गिरजे के लोगों पर, अपने पिता अलमा के हाथों द्वारा उच्च याजक के रूप में समर्पित किया गया था ।
- 5 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के सातवें वर्ष में लगभग तीन हजार पांच सौ लोग परमेश्वर के गिरजे में एकत्रित हुए और उनका बपतिस्मा हुआ । और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का सातवां वर्ष समाप्त हुआ; और इस समय निरंतर शांति बनी रही ।
- 6 और न्यायियों के शासन के आठवें वर्ष में ऐसा हुआ कि गिरजे के लोग अपने बढ़ रहे धन, और अपने बढ़िया रेशम, और अपने लिपटे हुए उत्तम सन के वस्त्रों, और अपने जानवरों के कई समूहों और झुंडों के कारण, और अपने सोने और चांदी, और हर प्रकार की मूल्यवान वस्तुओं के कारण घमण्डी होने लगे, जिसे उन्होंने अपने उद्योगों से प्राप्त किया था; और इन सभी चीजों के कारण वे अहंकारी हो गए, क्योंकि उन्होंने अत्याधिक महंगे वस्त्र पहनना आरंभ कर दिया था ।
- 7 अब अलमा के कष्ट का यही कारण था, हां, और उन कई लोगों के लिए भी जिन्हें अलमा ने गिरजे के शिक्षक, और याजक, और एल्डर के रूप में समर्पित किया था; हां, उनमें से कई लोग अत्याधिक दुखी हुए क्योंकि जिस दुष्टता को उन्होंने देखा था वह उनके लोगों के बीच आ चुकी थी ।

## Alma 4

Now it came to pass in the sixth year of the reign of the judges over the people of Nephi, there were no contentions nor wars in the land of Zarahemla;

But the people were afflicted, yea, greatly afflicted for the loss of their brethren, and also for the loss of their flocks and herds, and also for the loss of their fields of grain, which were trodden under foot and destroyed by the Lamanites.

And so great were their afflictions that every soul had cause to mourn; and they believed that it was the judgments of God sent upon them because of their wickedness and their abominations; therefore they were awakened to a remembrance of their duty.

And they began to establish the church more fully; yea, and many were baptized in the waters of Sidon and were joined to the church of God; yea, they were baptized by the hand of Alma, who had been consecrated the high priest over the people of the church, by the hand of his father Alma.

And it came to pass in the seventh year of the reign of the judges there were about three thousand five hundred souls that united themselves to the church of God and were baptized. And thus ended the seventh year of the reign of the judges over the people of Nephi; and there was continual peace in all that time.

And it came to pass in the eighth year of the reign of the judges, that the people of the church began to wax proud, because of their exceeding riches, and their fine silks, and their fine-twined linen, and because of their many flocks and herds, and their gold and their silver, and all manner of precious things, which they had obtained by their industry; and in all these things were they lifted up in the pride of their eyes, for they began to wear very costly apparel.

Now this was the cause of much affliction to Alma, yea, and to many of the people whom Alma had consecrated to be teachers, and priests, and elders over the church; yea, many of them were sorely grieved for the wickedness which they saw had begun to be among their people.

- 8 और उन्होंने दुख के साथ देखा और ध्यान दिया कि गिरजे के लोग अहंकारी होने लगे, और अपने हृदयों को धन संपत्ति और व्यर्थ की सांसारिक चीजों पर लगाना आरंभ कर दिया था, कि वे एक दूसरे का तिरस्कार करने लगे, और उन्होंने उन लोगों को सताना आरंभ कर दिया जो उनकी इच्छा और अभिलाषा के अनुसार नहीं रहते थे ।
- 9 और इस प्रकार, न्यायियों के शासन के आठवें वर्ष में, गिरजे के लोगों के बीच भारी वाद-विवाद होने लगे; हां, उनमें ईर्ष्या, विवाद, और द्वेष, और अत्याचार, और घमंड उन लोगों से भी अधिक आ गया जो परमेश्वर के गिरजे के नहीं थे ।
- 10 और इस प्रकार न्यायियों के शासन का आठवां वर्ष समाप्त हुआ; और गिरजे की दुष्टता उन लोगों के लिए भारी-बाधा बन गई जो गिरजे के नहीं थे; और इस प्रकार गिरजे की उन्नति रुकने लगी ।
- 11 और नौवें वर्ष के आरंभ में ऐसा हुआ कि अलमा ने गिरजे की दुष्टता को देखा, और उसने यह भी देखा कि गिरजे का उदाहरण अविश्वास करनेवालों को एक दुराचार से दूसरे दुराचार की ओर ले जाने लगा, इस प्रकार लोगों के ऊपर विनाश लाते हुए ।
- 12 हां, उसने लोगों में बहुत असामनता देखी, कुछ लोग अहंकार से भरे रहते, दूसरों की अवहेलना करते, जरूरतमंद और नंगे और उन लोगों की तरफ पीठ फेर लेते जो भूखे और प्यासे थे, और जो बीमार और कष्ट में थे ।
- 13 अब यह लोगों के बीच विलाप का बहुत बड़ा कारण था, जब कि दूसरे स्वयं को दीन बनाकर, उन लोगों की सहायता कर रहे थे जिनको उनकी मदद की आवश्यकता थी, जैसे कि अपने वस्तुओं को गरीब और जरूरतमंद लोगों के साथ बांटना, भूखों को खाना खिला-ना, और उस मसीह की खातिर सभी प्रकार के कष्टों को झेलना जिसका आना भविष्यवाणी की आत्मा के अनुसार निश्चित था
- 14 उस दिन की प्रतीक्षा में, मृत्यु के बंधन से यीशु मसीह की इच्छा और शक्ति और मुक्ति के अनुसार, मरे हुए लोगों के पुनरुत्थान के कारण वे अपने पापों का पश्चाताप कर, महान आनंद से भर गए ।

For they saw and beheld with great sorrow that the people of the church began to be lifted up in the pride of their eyes, and to set their hearts upon riches and upon the vain things of the world, that they began to be scornful, one towards another, and they began to persecute those that did not believe according to their own will and pleasure.

And thus, in this eighth year of the reign of the judges, there began to be great contentions among the people of the church; yea, there were envyings, and strife, and malice, and persecutions, and pride, even to exceed the pride of those who did not belong to the church of God.

And thus ended the eighth year of the reign of the judges; and the wickedness of the church was a great stumbling-block to those who did not belong to the church; and thus the church began to fail in its progress.

And it came to pass in the commencement of the ninth year, Alma saw the wickedness of the church, and he saw also that the example of the church began to lead those who were unbelievers on from one piece of iniquity to another, thus bringing on the destruction of the people.

Yea, he saw great inequality among the people, some lifting themselves up with their pride, despising others, turning their backs upon the needy and the naked and those who were hungry, and those who were athirst, and those who were sick and afflicted.

Now this was a great cause for lamentations among the people, while others were abasing themselves, succoring those who stood in need of their succor, such as imparting their substance to the poor and the needy, feeding the hungry, and suffering all manner of afflictions, for Christ's sake, who should come according to the spirit of prophecy;

Looking forward to that day, thus retaining a remission of their sins; being filled with great joy because of the resurrection of the dead, according to the will and power and deliverance of Jesus Christ from the bands of death.

- 15 और ऐसा हुआ कि अलमा, परमेश्वर के विनम्र अनुयाइयों के कष्टों को देखकर, और उन अत्याचारों को जो उसके शेष लोगों द्वारा उनके ऊपर लाद दिए गए थे, और उनकी सभी असामनता को देखकर, बहुत दुखी होने लगा; फिर भी प्रभु की आत्मा ने उसे निराश नहीं किया।
- 16 और उसने एक बुद्धिमान पुरुष को चुना जो कि गिरजे के एल्डरों में से एक था, और लोगों के मतानुसार उसे अधिकार दे दिया, कि बनाए गए कानून के अनुसार नियमों को पूरा करने का, और लोगों की दुष्टता और अपराधों के अनुसार उन्हें लागू करने का अधिकार उसके पास हो सके।
- 17 अब इस पुरुष का नाम नफीहा था, और उसे मुख्य न्यायी नियुक्त किया गया; और न्याय करने और लोगों का संचालन करने के लिए वह न्याय के आसन पर बैठ गया।
- 18 अब अलमा ने उसे गिरजे के उच्च याजक का पद नहीं दिया, परन्तु उच्च याजक के पद को उसने स्वयं के पास ही रखा; लेकिन उसने न्याय का आसन नफीहा को दे दिया।
- 19 और उसने ऐसा इसलिए किया ताकि वह स्वयं अपने लोगों या नफी के लोगों के बीच जा सके, कि वह उन्हें उनके कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने के लिए उन्हें परमेश्वर का वचन सिखा सके, और परमेश्वर के बचन द्वारा सारे अहंकार और छल-कपट और उसके लोगों के बीच हो रहे सभी वाद-विवाद को मिटा सके, यह देखते हुए कि उनके विरुद्ध शुद्ध गवाही को बचाने का और कोई तरीका नहीं था।
- 20 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के नौवें वर्ष के आरंभ में, अलमा ने न्याय का आसन नफीहा को दे दिया, और प्रकटीकरण और भविष्यवाणी की आत्मा के अनुसार, वचन की गवाही के लिए, परमेश्वर की पवित्र रीति के अनुसार उच्च पौरोहित्य को पूरी तरह से स्वयं तक सीमित रखा।

And now it came to pass that Alma, having seen the afflictions of the humble followers of God, and the persecutions which were heaped upon them by the remainder of his people, and seeing all their inequality, began to be very sorrowful; nevertheless the Spirit of the Lord did not fail him.

And he selected a wise man who was among the elders of the church, and gave him power according to the voice of the people, that he might have power to enact laws according to the laws which had been given, and to put them in force according to the wickedness and the crimes of the people.

Now this man's name was Nephiah, and he was appointed chief judge; and he sat in the judgment-seat to judge and to govern the people.

Now Alma did not grant unto him the office of being high priest over the church, but he retained the office of high priest unto himself; but he delivered the judgment-seat unto Nephiah.

And this he did that he himself might go forth among his people, or among the people of Nephi, that he might preach the word of God unto them, to stir them up in remembrance of their duty, and that he might pull down, by the word of God, all the pride and craftiness and all the contentions which were among his people, seeing no way that he might reclaim them save it were in bearing down in pure testimony against them.

And thus in the commencement of the ninth year of the reign of the judges over the people of Nephi, Alma delivered up the judgment-seat to Nephiah, and confined himself wholly to the high priesthood of the holy order of God, to the testimony of the word, according to the spirit of revelation and prophecy.

शब्द जिसे अलमा, उच्च याजक ने परमेश्वर की पवित्र रीति के अनुसार, पूरे देश के उनके नगरों और गांवों में लोगों को सुनाया ।

## अलमा 5

- 1 और ऐसा हुआ कि अलमा ने लोगों को परमेश्वर का वचन सुनाना आरंभ किया, पहले जराहेमला के देश में, और फिर पूरे देश में ।
- 2 और यही वे शब्द हैं जिसे उसने अपने स्वयं के अभिलेखानुसार उस गिरजे के लोगों से कहा जो जराहेमला नगर में स्थापित था, कहते हुए:
- 3 मैं, अलमा, अपने पिता अलमा द्वारा जिनके पास इन चीजों को करने के लिए परमेश्वर से प्राप्त सामर्थ्य और अधिकार था, उससे परमेश्वर के गिरजे का उच्च याजक समर्पित किया गया, देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि उन्होंने उस देश में एक गिरजा स्थापित करना आरंभ कर दिया जो कि नफी की सीमाओं में था; हां, वह देश जिसे मॉरमन कहा जाता था हां, और उन्होंने मॉरमन के पानी में अपने भाइयों को बपतिस्मा दिया ।
- 4 और देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, परमेश्वर की दया और सामर्थ्य द्वारा उन्हें राजा नूह के लोगों के हाथों से बचाया गया ।
- 5 और देखो, इसके पश्चात, जंगल में लमनाइयों के हाथों द्वारा उन्हें दासता में लाया गया हां, मैं तुमसे कहता हूँ, वे गुलामी में थे, और फिर से प्रभु ने अपने वचन के सामर्थ्य द्वारा उन्हें दासता से बचाया और हम इस देश में लाए गए, और यहां पर भी हमने पूरे देश में परमेश्वर के गिरजे को स्थापित करना आरंभ किया ।
- 6 और अब देखो, मेरे भाइयों, मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम इस गिरजे के सदस्य हो, क्या तुमने अपने पिता की दासता को योग्य रीति से याद रखा है ? हां, क्या तुमने उनके प्रति उसकी दया और लंबे समय तक उत्पीड़न को योग्य रीति से याद रखा है ? और इससे अधिक, क्या तुमने योग्य रीति से याद रखा है कि उसने उनकी आत्माओं को नरक से बचाया था ?

*The words which Alma, the High Priest according to the holy order of God, delivered to the people in their cities and villages throughout the land.*

## Alma 5

Now it came to pass that Alma began to deliver the word of God unto the people, first in the land of Zarahemla, and from thence throughout all the land.

And these are the words which he spake to the people in the church which was established in the city of Zarahemla, according to his own record, saying:

I, Alma, having been consecrated by my father, Alma, to be a high priest over the church of God, he having power and authority from God to do these things, behold, I say unto you that he began to establish a church in the land which was in the borders of Nephi; yea, the land which was called the land of Mormon; yea, and he did baptize his brethren in the waters of Mormon.

And behold, I say unto you, they were delivered out of the hands of the people of king Noah, by the mercy and power of God.

And behold, after that, they were brought into bondage by the hands of the Lamanites in the wilderness; yea, I say unto you, they were in captivity, and again the Lord did deliver them out of bondage by the power of his word; and we were brought into this land, and here we began to establish the church of God throughout this land also.

And now behold, I say unto you, my brethren, you that belong to this church, have you sufficiently retained in remembrance the captivity of your fathers? Yea, and have you sufficiently retained in remembrance his mercy and long-suffering towards them? And moreover, have ye sufficiently retained in remembrance that he has delivered their souls from hell?

- 7 देखो, उसने उनके हृदयों को बदल दिया; हां, उसने उन्हें गहरी नींद से जगा दिया, और वे परमेश्वर के प्रति जागृत हुए। देखो, वे अंधकार के बीच में थे; फिर भी, उनकी आत्माएं अनंत वचन के प्रकाश द्वारा प्रकाशित हुईं; हां, वे मृत्यु के बंधन और नरक की जंजीरों से जकड़ी हुई थीं, और सदैव के लिए सर्वनाश उनकी प्रतीक्षा में था।
- 8 और अब मेरे भाइयों, मैं तुमसे पूछता हूँ, क्या उनका सर्वनाश हुआ ? देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं, उनका सर्वनाश नहीं हुआ।
- 9 और मैं फिर से पूछता हूँ, क्या मृत्यु के बंधन टूट गए, और नरक की जंजीरें खुल गईं जिनसे वे जकड़े हुए थे ? मैं तुमसे कहता हूँ, हां, वे खुल गईं, और उनकी आत्माएं विकसित हुईं, और उन्होंने मुक्तिदायक प्रेम गीत गाया। और मैं तुमसे कहता हूँ कि उन्हें बचा लिया गया।
- 10 और अब मैं तुमसे पूछता हूँ कि उन्हें किन परिस्थितियों में बचाया गया ? हां, किस आधार पर उन्होंने उद्धार की आशा की थी ? हां, मृत्यु के बंधन और नरक की जंजीरों से उनके बचने का कारण क्या था ?
- 11 देखो, मैं तुमसे कह सकता हूँ—क्या मेरे पिता अलमा ने उन शब्दों पर विश्वास नहीं किया जो अबिनादी के मुंह से निकली थीं ? और क्या वह एक पवित्र भविष्यवक्ता नहीं था ? क्या उसने परमेश्वर का वचन नहीं सुनाया था, और मेरे पिता अलमा ने उन पर विश्वास किया था ?
- 12 और उनके विश्वास के अनुसार उनके हृदय में एक महान परिवर्तन हुआ था। देखो मैं तुमसे कहता हूँ कि ये सब सच है।
- 13 और देखो, उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों को वचन सुनाया था, और उनके हृदयों में भी एक महान परिवर्तन हुआ था, और उन्होंने स्वयं को विनम्र किया और सच्चे और जीवित परमेश्वर में अपना विश्वास बनाया। और देखो, वे अंत तक विश्वासी बने रहे: इसलिए वे बचा लिए गए।
- 14 और अब देखो, गिरजे के मेरे भाइयों, मैं तुमसे पूछता हूँ, क्या तुमने परमेश्वर में आत्मिक रूप से जन्म लिया है ? क्या तुमने अपनी चेहरों में उसके प्रतिबिंब को पाया है ? क्या तुमने इस महान परिवर्तन को अपने हृदयों में अनुभव किया है ?
- 15 क्या तुमने उसकी मुक्ति में विश्वास बढ़ाया है जिसने तुम्हारी रचना की है ? नश्वर शरीर में किये गए कर्मों के अनुसार न्याय पाने के प्रति परमेश्वर के समक्ष खड़े होने के लिए, क्या तुम विश्वास भरी आंख से, और इस नश्वर शरीर को अमरत्व में ऊपर उठते, और इस भ्रष्टता को शुद्ध होते हुए देखते हो ?

Behold, he changed their hearts; yea, he awakened them out of a deep sleep, and they awoke unto God. Behold, they were in the midst of darkness; nevertheless, their souls were illuminated by the light of the everlasting word; yea, they were encircled about by the bands of death, and the chains of hell, and an everlasting destruction did await them.

And now I ask of you, my brethren, were they destroyed? Behold, I say unto you, Nay, they were not.

And again I ask, were the bands of death broken, and the chains of hell which encircled them about, were they loosed? I say unto you, Yea, they were loosed, and their souls did expand, and they did sing redeeming love. And I say unto you that they are saved.

And now I ask of you on what conditions are they saved? Yea, what grounds had they to hope for salvation? What is the cause of their being loosed from the bands of death, yea, and also the chains of hell?

Behold, I can tell you—did not my father Alma believe in the words which were delivered by the mouth of Abinadi? And was he not a holy prophet? Did he not speak the words of God, and my father Alma believe them?

And according to his faith there was a mighty change wrought in his heart. Behold I say unto you that this is all true.

And behold, he preached the word unto your fathers, and a mighty change was also wrought in their hearts, and they humbled themselves and put their trust in the true and living God. And behold, they were faithful until the end; therefore they were saved.

And now behold, I ask of you, my brethren of the church, have ye spiritually been born of God? Have ye received his image in your countenances? Have ye experienced this mighty change in your hearts?

Do ye exercise faith in the redemption of him who created you? Do you look forward with an eye of faith, and view this mortal body raised in immortality, and this corruption raised in incorruption, to stand before God to be judged according to the deeds which have been done in the mortal body?

- 16 मैं तुमसे कहता हूँ, क्या तुम उस दिन स्वयं के प्रति यह कहते हुए प्रभु की आवाज को सुनने की कल्पना कर सकते हो: मेरे पास आओ तुम आशीषित मनुष्य, क्योंकि देखो, पृथ्वी पर तुम्हारा कार्य नेकता का कार्य रहा है ?
- 17 या तुमने स्वयं के प्रति कल्पना की है कि उस दिन तुम प्रभु से झूठ बोल सकते हो, और कह सकते हो—प्रभु, पृथ्वी पर हमारा कार्य नेकता का कार्य रहा है—और यह कि वह तुम्हें बचाएगा ?
- 18 या अन्यथा, क्या अपने सारे अपराध को याद करते हुए, अपराध और पछतावे से भरी हुई अपनी आत्माओं को परमेश्वर के सामने न्याय पाने के लिए स्वयं को लाने की कल्पना की है, हां, अपनी दुष्टता को पूरी तरह से याद रखकर, हां, एक स्मृति कि तुमने परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना की है ?
- 19 मैं तुमसे कहता हूँ, क्या तुम उस दिन एक शुद्ध हृदय और स्वच्छ हाथों के साथ परमेश्वर की तरफ देख सकते हो ? मैं तुमसे कहता हूँ, क्या तुम अपने चेहरों में परमेश्वर के प्रतिबिंब को प्राप्त करते हुए देख सकते हो ?
- 20 मैं तुमसे कहता हूँ, क्या तुम बचने की कल्पना कर सकते हो जब कि तुमने शैतान के वशीभूत होकर स्वयं को उसके अधीन किया है ?
- 21 मैं तुमसे कहता हूँ, उस दिन तुम जानोगे कि तुम्हें नहीं बचाया जा सकता है; क्योंकि अपने वस्त्रों को बिना स्वच्छता से धोए कोई भी मनुष्य नहीं बच सकता है; हां, उसका वस्त्र उस व्यक्ति के लहू द्वारा तब तक धुलना चाहिए जब तक कि दागरहित न हो जाए जिसके विषय में हमारे पूर्वजों ने बताया है, जो कि अपने लोगों को उनके पापों से मुक्त कराने के लिए आएगा ।
- 22 और अब मेरे भाइयों, मैं तुमसे पूछता हूँ, कि तुम कैसा महसूस करोगे, यदि तुम अपने वस्त्रों पर लहू और हर प्रकार की अपवित्रता के साथ परमेश्वर की अदालत में खड़े रहोगे ? देखो, ये चीजें तुम्हारे विरुद्ध क्या गवाही देंगी ?
- 23 देखो क्या ये गवाही नहीं देंगी कि तुम हत्यारे हो, हां, और यह भी कि तुम सभी प्रकार की दुष्टता के दोषी हो ?
- 24 देखो, मेरे भाइयों, क्या तुम समझते हो कि वह व्यक्ति इब्राहीम, इसहाक, और याकूब, और सभी पवित्र भविष्यवक्ताओं के साथ परमेश्वर के राज्य में बैठने का स्थान पा सकता है जिसके वस्त्र स्वच्छ और दागरहित, साफ और सफेद हों ?

I say unto you, can you imagine to yourselves that ye hear the voice of the Lord, saying unto you, in that day: Come unto me ye blessed, for behold, your works have been the works of righteousness upon the face of the earth?

Or do ye imagine to yourselves that ye can lie unto the Lord in that day, and say—Lord, our works have been righteous works upon the face of the earth—and that he will save you?

Or otherwise, can ye imagine yourselves brought before the tribunal of God with your souls filled with guilt and remorse, having a remembrance of all your guilt, yea, a perfect remembrance of all your wickedness, yea, a remembrance that ye have set at defiance the commandments of God?

I say unto you, can ye look up to God at that day with a pure heart and clean hands? I say unto you, can you look up, having the image of God engraven upon your countenances?

I say unto you, can ye think of being saved when you have yielded yourselves to become subjects to the devil?

I say unto you, ye will know at that day that ye cannot be saved; for there can no man be saved except his garments are washed white; yea, his garments must be purified until they are cleansed from all stain, through the blood of him of whom it has been spoken by our fathers, who should come to redeem his people from their sins.

And now I ask of you, my brethren, how will any of you feel, if ye shall stand before the bar of God, having your garments stained with blood and all manner of filthiness? Behold, what will these things testify against you?

Behold will they not testify that ye are murderers, yea, and also that ye are guilty of all manner of wickedness?

Behold, my brethren, do ye suppose that such an one can have a place to sit down in the kingdom of God, with Abraham, with Isaac, and with Jacob, and also all the holy prophets, whose garments are cleansed and are spotless, pure and white?



- 25 मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं; आरंभ से तुम अपने सृष्टिकर्ता को झूठा ठहराते हो, या आरंभ से समझते हो कि वह झूठा है, तुम नहीं समझ सकते कि उस प्रकार के व्यक्ति को राज्य में स्थान मिल सकता है; परन्तु उन्हें बाहर निकाल दिया जाएगा क्योंकि वे शैतान के राज्य के बच्चे हैं
- 26 और अब देखो, मेरे भाइयों, मैं तुमसे कहता हूँ, यदि तुमने हृदय में परिवर्तन अनुभव किया है, और मुक्तिभरे प्रेमगीत गाने की इच्छा की है, मैं पूछता हूँ, क्या अब भी तुम्हारी यही इच्छा है ?
- 27 क्या तुमने परमेश्वर के सामने स्वयं को निर्दोष रखकर प्रवेश किया है ? इस समय यदि तुम्हें मन ही मन मरने के लिए कहा जाए, तो क्या तुम कह सकते हो कि तुम पर्याप्त मात्रा में विनीत रहे हो ? कि तुम्हारे वस्त्र साफ-सुथरे हैं और मसीह के लहू द्वारा सफेद किये गए हैं, जो अपने लोगों को उनके पापों से मुक्ति दिलाने के लिए आएगा ?
- 28 देखो, क्या तुम अहंकार से बाहर निकल गए हो ? मैं तुमसे कहता हूँ, यदि तुम नहीं निकले हो तो तुम परमेश्वर से मिलने के लिए तैयार नहीं हो । देखो तुम्हें शीघ्र ही तैयार हो जाना चाहिए; क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है, और इस प्रकार के व्यक्ति के लिए अनंत जीवन नहीं है ।
- 29 देखो, मैं कहता हूँ, क्या तुममें से कोई ऐसा है जो ईर्ष्या से बाहर नहीं निकला है ? मैं तुमसे कहता हूँ कि इस प्रकार का व्यक्ति तैयार नहीं है; और मैं कहता हूँ कि उसे शीघ्र ही तैयार हो जाना चाहिए, क्योंकि समय निकट है, और वो नहीं जानता है कि समय कब आएगा; क्योंकि इस प्रकार का व्यक्ति निर्दोष नहीं है ।
- 30 और फिर मैं तुमसे कहता हूँ, क्या तुममें से कोई है जो अपने भाई का मजाक उड़ाता है, या यह कि उसे बहुत कष्ट पहुंचाता है ?
- 31 उस व्यक्ति पर हाय, क्योंकि वह तैयार नहीं है, और समय निकट है कि उसे पश्चाताप कर लेना चाहिए वरना वह बच नहीं सकता!
- 32 हां, अधर्म के कार्य करनेवाले तुम सभी पर हाय; पश्चाताप करो, पश्चाताप करो, क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने ऐसा कहा है!
- 33 देखो, वह सभी मनुष्यों को निमंत्रण भेजता है, क्योंकि दया का हाथ उनकी ओर फैलाया गया है, और वह कहता है: पश्चाताप करो, और मैं तुम्हें स्वीकार करूंगा ।
- 34 हां, वह कहता है: मेरे पास आओ और तुम्हें जीवन के वृक्ष का फल ग्रहण करने मिलेगा; हां, तुम स्वतंत्र होकर जीवन की रोटी खाओगे और पानी पीओगे;

I say unto you, Nay; except ye make our Creator a liar from the beginning, or suppose that he is a liar from the beginning, ye cannot suppose that such can have place in the kingdom of heaven; but they shall be cast out for they are the children of the kingdom of the devil.

And now behold, I say unto you, my brethren, if ye have experienced a change of heart, and if ye have felt to sing the song of redeeming love, I would ask, can ye feel so now?

Have ye walked, keeping yourselves blameless before God? Could ye say, if ye were called to die at this time, within yourselves, that ye have been sufficiently humble? That your garments have been cleansed and made white through the blood of Christ, who will come to redeem his people from their sins?

Behold, are ye stripped of pride? I say unto you, if ye are not ye are not prepared to meet God. Behold ye must prepare quickly; for the kingdom of heaven is soon at hand, and such an one hath not eternal life.

Behold, I say, is there one among you who is not stripped of envy? I say unto you that such an one is not prepared; and I would that he should prepare quickly, for the hour is close at hand, and he knoweth not when the time shall come; for such an one is not found guiltless.

And again I say unto you, is there one among you that doth make a mock of his brother, or that heapeth upon him persecutions?

Wo unto such an one, for he is not prepared, and the time is at hand that he must repent or he cannot be saved!

Yea, even wo unto all ye workers of iniquity; repent, repent, for the Lord God hath spoken it!

Behold, he sendeth an invitation unto all men, for the arms of mercy are extended towards them, and he saith: Repent, and I will receive you.

Yea, he saith: Come unto me and ye shall partake of the fruit of the tree of life; yea, ye shall eat and drink of the bread and the waters of life freely;

- 35 हां, मेरे पास आओ और धार्मिकता के कार्य करो, और तुम्हें अलग कर आग में नहीं डाला जाएगा—
- 36 क्योंकि देखो, समय निकट है और जो कोई अच्छा फल नहीं लाएगा, या जो कोई धार्मिकता के कार्य नहीं करेगा, वही उसके रोने-चिल्लाने और विलाप का कारण बनेगा ।
- 37 ओ तुम अधर्म के कार्य करनेवाले; तुम जो संसार की व्यर्थ की चीजों में फूले हुए हो, तुम जो धार्मिकता के तरीकों को जानने का दावा करते हो फिर भी बिना चरवाहे की भेड़ के समान पथ से भटक गए हो, इस पर भी चरवाहे ने तुम्हें बुलाया है और अब भी तुम्हें बुला रहा है, परन्तु तुम्हें उसकी आवाज नहीं सुनाई देगी !
- 38 देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, कि अच्छा चरवाहा तुम्हें पुकार रहा है; हां, वह अपने ही नाम पर तुम्हें पुकार रहा है, जो नाम है मसीह और यदि तुम उस नाम द्वारा जिससे तुम्हें पुकारा जाता है, अच्छे चरवाहे की आवाज को नहीं सुनोगे, तो देखो, तुम अच्छे चरवाहे की भेड़ नहीं हो ।
- 39 और अब यदि तुम अच्छे चरवाहे की भेड़ नहीं हो, तो तुम किस बाड़े के हो ? देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, कि शैतान तुम्हारा चरवाहा है, और तुम उसके बाड़े के हो; और अब, इसे कौन इन्कार कर सकता है ? देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, कि जो कोई इसे इन्कार करता है वह झूठा और शैतान का बच्चा है ।
- 40 क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कुछ अच्छा है वह परमेश्वर की तरफ से है, और जो कुछ बुरा है वह शैतान की तरफ से है ।
- 41 इसलिए, यदि कोई मनुष्य अच्छा कार्य करता है तो वह अच्छे चरवाहे की आवाज सुनता है, और वह उसका ही अनुसरण करता है परन्तु जो कोई बुरा कार्य करता है वह शैतान का बच्चा बन जाता है, क्योंकि वह उसकी आवाज सुनता है, और उसका ही अनुसरण करता है ।
- 42 और जो कोई ऐसा करता है वह उसी के अनुसार अपना वेतन पाता है; इसलिए उसका वेतन मृत्यु है क्योंकि धार्मिकता संबंधी सभी अच्छे कार्य उसके लिए निरर्थक हो चुके होते हैं ।
- 43 और अब, मेरे भाइयों, मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे सुनो, क्योंकि मैं अपनी आत्मा की शक्ति से कहता हूँ; क्योंकि देखो, मैंने तुमसे साधारण रूप से, या परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार बात की है कि तुम भटक न जाओ ।

Yea, come unto me and bring forth works of righteousness, and ye shall not be hewn down and cast into the fire—

For behold, the time is at hand that whosoever bringeth forth not good fruit, or whosoever doeth not the works of righteousness, the same have cause to wail and mourn.

O ye workers of iniquity; ye that are puffed up in the vain things of the world, ye that have professed to have known the ways of righteousness nevertheless have gone astray, as sheep having no shepherd, notwithstanding a shepherd hath called after you and is still calling after you, but ye will not hearken unto his voice!

Behold, I say unto you, that the good shepherd doth call you; yea, and in his own name he doth call you, which is the name of Christ; and if ye will not hearken unto the voice of the good shepherd, to the name by which ye are called, behold, ye are not the sheep of the good shepherd.

And now if ye are not the sheep of the good shepherd, of what fold are ye? Behold, I say unto you, that the devil is your shepherd, and ye are of his fold; and now, who can deny this? Behold, I say unto you, whosoever denieth this is a liar and a child of the devil.

For I say unto you that whatsoever is good cometh from God, and whatsoever is evil cometh from the devil.

Therefore, if a man bringeth forth good works he hearkeneth unto the voice of the good shepherd, and he doth follow him; but whosoever bringeth forth evil works, the same becometh a child of the devil, for he hearkeneth unto his voice, and doth follow him.

And whosoever doeth this must receive his wages of him; therefore, for his wages he receiveth death, as to things pertaining unto righteousness, being dead unto all good works.

And now, my brethren, I would that ye should hear me, for I speak in the energy of my soul; for behold, I have spoken unto you plainly that ye cannot err, or have spoken according to the commandments of God.

- 44 क्योंकि मुझे इसी तरीके से बात करने के लिए बुलाया गया है, परमेश्वर की पवित्र रीति अनुसार, जो यीशु मसीह का है; हां, मुझे लोगों को उन चीजों की गवाही देने की आज्ञा मिली है जिनके विषय में हमारे पूर्वजों ने बताया है जो कि होनेवाली हैं ।
- 45 और यही सब कुछ नहीं है । क्या तुम नहीं समझते हो कि मैं स्वयं इन चीजों को जानता हूँ ? देखो, मैं तुम्हें गवाही देता हूँ कि मैं जानता हूँ कि ये चीजें सही हैं जिनके विषय में मैंने कहा है । और तुम कैसे जानते हो कि मैं इनकी निश्चितता को जानता हूँ ?
- 46 देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि ये बातें मुझे परमेश्वर की पवित्र आत्मा द्वारा पता चली हैं । देखो, मैंने कई दिनों तक उपवास रखा है और प्रार्थना की है ताकि मैं स्वयं इन चीजों को जान सकूँ । और अब मैं स्वयं जानता हूँ कि ये सच्ची हैं; क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने इन बातों को अपने पवित्र आत्मा के द्वारा मुझ पर प्रकट की हैं और यही प्रकटीकरण की आत्मा है जो मुझ में है ।
- 47 और इससे अधिक, मैं तुमसे कहता हूँ कि इस प्रकार इन्हें मुझ पर प्रकट किया गया है, कि जो बातें हमारे पूर्वजों ने कहा है वे सच्ची हैं, यहां तक कि भविष्यवाणी की आत्मा के अनुसार भी जो मुझ में है, जो कि परमेश्वर की आत्मा के प्रकटीकरण के द्वारा भी है ।
- 48 मैं तुमसे कहता हूँ, कि मैं स्वयं को जानता हूँ कि आनेवाली बातों से संबंधित जो भी मैं तुमसे कहूंगा, वह सच है; और मैं तुमसे कहता हूँ, कि मैं जानता हूँ कि यीशु मसीह आएगा, हां, अनुग्रह, दया और सच्चाई से भरा हुआ पिता का एकलौता पुत्र । और देखो, वही है जो संसार के पापों को लेने के लिए आएगा, हां, हर उस मनुष्य के पाप को जो दृढ़तापूर्वक उसके नाम में विश्वास करता है ।
- 49 और अब मैं तुमसे कहता हूँ कि यही वह तरीका है जिसके अनुसार मुझे बुलाया गया है, हां, अपने प्रिय भाइयों को सीखाने के लिए, हां, और हर उस व्यक्ति को जो देश में रहता है; हां, सभी को सीखाने के लिए, चाहे वह बूढ़ा हो या युवा, चाहे वह दासता में हो या आजाद हो; हां, मैं तुमसे कहता हूँ कि बुजुर्गों, और मध्यम आयु वर्ग वालों, और उभरती हुई पीढ़ी; हां, उन लोगों को बताओ कि उन्हें पश्चाताप करना चाहिए और फिर से जन्म लेना चाहिए ।

For I am called to speak after this manner, according to the holy order of God, which is in Christ Jesus; yea, I am commanded to stand and testify unto this people the things which have been spoken by our fathers concerning the things which are to come.

And this is not all. Do ye not suppose that I know of these things myself? Behold, I testify unto you that I do know that these things whereof I have spoken are true. And how do ye suppose that I know of their surety?

Behold, I say unto you they are made known unto me by the Holy Spirit of God. Behold, I have fasted and prayed many days that I might know these things of myself. And now I do know of myself that they are true; for the Lord God hath made them manifest unto me by his Holy Spirit; and this is the spirit of revelation which is in me.

And moreover, I say unto you that it has thus been revealed unto me, that the words which have been spoken by our fathers are true, even so according to the spirit of prophecy which is in me, which is also by the manifestation of the Spirit of God.

I say unto you, that I know of myself that whatsoever I shall say unto you, concerning that which is to come, is true; and I say unto you, that I know that Jesus Christ shall come, yea, the Son, the Only Begotten of the Father, full of grace, and mercy, and truth. And behold, it is he that cometh to take away the sins of the world, yea, the sins of every man who steadfastly believeth on his name.

And now I say unto you that this is the order after which I am called, yea, to preach unto my beloved brethren, yea, and every one that dwelleth in the land; yea, to preach unto all, both old and young, both bond and free; yea, I say unto you the aged, and also the middle aged, and the rising generation; yea, to cry unto them that they must repent and be born again.

50 हां, इस प्रकार आत्मा कहती है: पृथ्वी के सभी छोर के लोगों, पश्चाताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है; हां, परमेश्वर का पुत्र अपनी महिमा, पराक्रम, गौरव, बल, और अधिकार में आएगा। हां, मेरे प्रिय भाइयों, मैं तुमसे कहता हूँ कि आत्मा कहती है: देखो सारे पृथ्वी के, और स्वर्ग के राजा की महिमा शीघ्र ही मानव संतान में चमकने वाली है।

51 और आत्मा मुझसे यह भी कहती है, हां, एक शक्तिशाली आवाज में मुझसे कहती है: जाओ और इसे लोगों को बताओ—पश्चाताप करो, क्योंकि बिना पश्चाताप किये तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।

52 और मैं फिर से कहता हूँ, आत्मा कहती है: देखो, कुल्हाड़ी वृक्ष की जड़ पर रखी गई है; इसलिए हर वृक्ष जो अच्छा फल नहीं देगा उसे काटकर अग्नि में डाल दिया जाएगा, हां, उस अग्नि में जो कभी तृप्त नहीं होती, यहां तक कि कभी बुझती भी नहीं है। देखो, और याद रखो, पवित्र आत्मा ने इसके बारे में कहा है।

53 और अब मेरे प्रिय भाइयों, मैं तुमसे कहता हूँ, क्या तुम इन बातों का सामना कर सकते हो; हां, क्या इन चीजों को अलग रखकर आत्मा को अपने पैरों तले कुचल सकते हो; हां, क्या तुम अपने हृदय के अहंकार में फूल सकते हो; हां, क्या तुम अब भी महंगे वस्त्र पहनने और अपने मन को संसार की व्यर्थ चीजों, और अपनी धन-संपत्ति पर लगाने में दृढ़ हो ?

54 हां, क्या तुम यह मानने में दृढ़ हो कि तुम एक दूसरे से बेहतर हो; हां, क्या तुम अपने भाइयों को सताने में लगे हुए हो जो स्वयं को विनम्र कर परमेश्वर की पवित्र रीति के अनुसार चलते हैं, जिनको पवित्र आत्मा द्वारा शुद्ध कर गिरजे में लाया गया है, और जो पश्चाताप के अनुकूल कार्य करते हैं—

55 हां, और क्या तुम गरीब और जरूरतमंद लोगों की ओर अपनी पीठ फेरने में, और अपनी वस्तुओं को उन्हें न देने में दृढ़ हो ?

56 और अंततः जो कुछ भी तुम दुष्टता में करते हो, मैं तुमसे कहता हूँ कि ये वही लोग हैं जिन्हें निकाल दिया जाएगा और यदि उन्होंने शीघ्र पश्चाताप नहीं किया तो उन्हें आग में फेंक दिया जाएगा।

Yea, thus saith the Spirit: Repent, all ye ends of the earth, for the kingdom of heaven is soon at hand; yea, the Son of God cometh in his glory, in his might, majesty, power, and dominion. Yea, my beloved brethren, I say unto you, that the Spirit saith: Behold the glory of the King of all the earth; and also the King of heaven shall very soon shine forth among all the children of men.

And also the Spirit saith unto me, yea, crieth unto me with a mighty voice, saying: Go forth and say unto this people—Repent, for except ye repent ye can in nowise inherit the kingdom of heaven.

And again I say unto you, the Spirit saith: Behold, the ax is laid at the root of the tree; therefore every tree that bringeth not forth good fruit shall be hewn down and cast into the fire, yea, a fire which cannot be consumed, even an unquenchable fire. Behold, and remember, the Holy One hath spoken it.

And now my beloved brethren, I say unto you, can ye withstand these sayings; yea, can ye lay aside these things, and trample the Holy One under your feet; yea, can ye be puffed up in the pride of your hearts; yea, will ye still persist in the wearing of costly apparel and setting your hearts upon the vain things of the world, upon your riches?

Yea, will ye persist in supposing that ye are better one than another; yea, will ye persist in the persecution of your brethren, who humble themselves and do walk after the holy order of God, wherewith they have been brought into this church, having been sanctified by the Holy Spirit, and they do bring forth works which are meet for repentance—

Yea, and will you persist in turning your backs upon the poor, and the needy, and in withholding your substance from them?

And finally, all ye that will persist in your wickedness, I say unto you that these are they who shall be hewn down and cast into the fire except they speedily repent.

57 और अब मैं तुमसे कहता हूँ, तुम सभी लोग जो अच्छे चरवाहे की आवाज के अनुसरण की इच्छा रखते हो, दुष्ट लोगों के पास से हट जाओ, और अलग हो जाओ, और उनकी अशुद्ध वस्तुओं को मत छुओ; और देखो, उनके नाम दागदार हो जाएंगे, क्योंकि दुष्ट लोगों का नाम धर्मी लोगों के नामों में नहीं गिना जाएगा, कि परमेश्वर का वचन पूरा होगा जो कहता है: दुष्ट लोगों का नाम मेरे लोगों के नामों में नहीं मिलाया जाएगा;

58 क्योंकि धर्मी लोगों का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा जाएगा, और उन्हें मैं अपने दाहिने हाथ का राज्य दूंगा। और अब, मेरे भाइयों, इसके विरुद्ध कहने के लिए तुम्हारे पास क्या है? मैं तुमसे कहता हूँ, यदि तुम इसके विरुद्ध बोलते हो तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि परमेश्वर का वचन पूरा होगा।

59 क्योंकि तुममें से कौन ऐसा चरवाहा है जिसके पास कई भेड़े हैं और जो उनकी देखभाल नहीं करता है, कि कोई भेड़िया प्रवेश न कर उसके झुंड को खत्म कर दे? और देखो, यदि कोई भेड़िया उसके झुंड में प्रवेश करता है तो क्या वह उसे बाहर नहीं निकालेगा? हां, अंत में यदि वह कर सकता है तो वह उसे मार डालेगा।

60 और अब मैं तुमसे कहता हूँ कि अच्छा चरवाहा तुम्हें पुकारता है; और यदि तुम उसकी आवाज सुनोगे तो वह तुम्हें अपने बाड़े में लाएगा, और तुम उसकी भेड़ हो; और वह तुम्हें आज्ञा देता है कि तुम अपने बीच में किसी भी खूंखार भेड़िये को नहीं आने दोगे, जिससे कि तुम्हारा नाश न हो।

61 और अब मैं, अलमा, उसी की भाषा में तुम्हें आज्ञा देता हूँ जिसने मुझे आज्ञा दी है, कि तुम उन बातों को मानो जिसे मैंने तुमसे कहा है।

62 मैं आज्ञा के रूप में तुमसे, गिरजे के सदस्यों से बात करता हूँ; और जो लोग गिरजे के सदस्य नहीं हैं मैं उन्हें यह कहते हुए निमंत्रण देता हूँ: आओ और पश्चाताप कर बपतिस्मा लो, ताकि तुम भी जीवन के वृक्ष का फल खा सको।

And now I say unto you, all you that are desirous to follow the voice of the good shepherd, come ye out from the wicked, and be ye separate, and touch not their unclean things; and behold, their names shall be blotted out, that the names of the wicked shall not be numbered among the names of the righteous, that the word of God may be fulfilled, which saith: The names of the wicked shall not be mingled with the names of my people;

For the names of the righteous shall be written in the book of life, and unto them will I grant an inheritance at my right hand. And now, my brethren, what have ye to say against this? I say unto you, if ye speak against it, it matters not, for the word of God must be fulfilled.

For what shepherd is there among you having many sheep doth not watch over them, that the wolves enter not and devour his flock? And behold, if a wolf enter his flock doth he not drive him out? Yea, and at the last, if he can, he will destroy him.

And now I say unto you that the good shepherd doth call after you; and if you will hearken unto his voice he will bring you into his fold, and ye are his sheep; and he commandeth you that ye suffer no ravenous wolf to enter among you, that ye may not be destroyed.

And now I, Alma, do command you in the language of him who hath commanded me, that ye observe to do the words which I have spoken unto you.

I speak by way of command unto you that belong to the church; and unto those who do not belong to the church I speak by way of invitation, saying: Come and be baptized unto repentance, that ye also may be partakers of the fruit of the tree of life.

## अलमा 6

- 1 और अब ऐसा हुआ कि जब अलमा ने गिरजे के लोगों से बात करना खत्म कर दिया, जो कि जराहेमला के नगर में स्थापित था, गिरजे पर अध्यक्षता और देखभाल करने के लिए उसने परमेश्वर के तरीके से हाथों को रखने के द्वारा याजक और एल्डर नियुक्त किये ।
- 2 और ऐसा हुआ कि जो भी गिरजे के सदस्य नहीं थे उन्होंने अपने पापों से पश्चाताप कर पश्चाताप में बपतिस्मा लिया, और गिरजे में स्वीकारे गए ।
- 3 और ऐसा भी हुआ कि जो गिरजे के सदस्य नहीं थे उन्होंने अपनी दुष्टता से न तो पश्चाताप किया और न ही परमेश्वर के समक्ष विनम्र बने—मेरा अर्थ उन लोगों से है जो अपने हृदय के अहंकार से भरे हुए थे—वे अस्वीकार किये गए, और उनके नाम दागदार हुए, जिससे उनके नाम धर्मी लोगों के नाम में नहीं लिए गए ।
- 4 और इस प्रकार उन्होंने जराहेमला के नगर में गिरजे को स्थापित करना आरंभ कर दिया ।
- 5 अब मैं चाहता हूँ कि तुम्हें समझना चाहिए कि परमेश्वर का वचन सबके लिए है, कि परमेश्वर का वचन सुनने के लिए कोई भी स्वयं को एकत्रित करने के सुअवसर से वंचित न कर सके ।
- 6 फिर भी परमेश्वर के बच्चों को आज्ञा दी गई है कि उन्हें बार-बार एकत्रित होना चाहिए, और उन लोगों की आत्माओं के हित के लिए उपवास और प्रबल प्रार्थना में जुड़ना चाहिए जो परमेश्वर को नहीं जानते हैं ।
- 7 और अब ऐसा हुआ कि जब अलमा ने इन नियमों को बना दिया तब वह वहां से प्रस्थान कर गया, हां, उस गिरजे से जो कि जराहेमला के नगर में था, और गिदोन की घाटी में स्थित, सिदोन नदी के पूर्व चला गया जहां एक नगर बन रहा था, जो गिदोन का नगर कहलाया, जो कि उस घाटी में स्थित था और जिसका नाम उस मनुष्य के नाम पर गिदोन रखा गया था, जो निहोर के हाथों द्वारा तलवार से मारा गया था ।

## Alma 6

And now it came to pass that after Alma had made an end of speaking unto the people of the church, which was established in the city of Zarahemla, he ordained priests and elders, by laying on his hands according to the order of God, to preside and watch over the church.

And it came to pass that whosoever did not belong to the church who repented of their sins were baptized unto repentance, and were received into the church.

And it also came to pass that whosoever did belong to the church that did not repent of their wickedness and humble themselves before God—I mean those who were lifted up in the pride of their hearts—the same were rejected, and their names were blotted out, that their names were not numbered among those of the righteous.

And thus they began to establish the order of the church in the city of Zarahemla.

Now I would that ye should understand that the word of God was liberal unto all, that none were deprived of the privilege of assembling themselves together to hear the word of God.

Nevertheless the children of God were commanded that they should gather themselves together oft, and join in fasting and mighty prayer in behalf of the welfare of the souls of those who knew not God.

And now it came to pass that when Alma had made these regulations he departed from them, yea, from the church which was in the city of Zarahemla, and went over upon the east of the river Sidon, into the valley of Gideon, there having been a city built, which was called the city of Gideon, which was in the valley that was called Gideon, being called after the man who was slain by the hand of Nehor with the sword.

8 और अलमा चला गया और उसके पिता द्वारा कहे गए वचन की सच्चाई के प्रकटीकरण के अनुसार, और भविष्यवाणी की उस आत्मा के अनुसार जो कि उसमें थी, परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की गवाही के अनुसार जो अपने लोगों को उनके पापों से मुक्ति दिलाने आएगा, और उस पवित्र रीति के अनुसार जिससे उसे नियुक्त किया गया था, गिरजे में परमेश्वर के वचन को बताना आरंभ कर दिया जो कि गिदोन की घाटी में स्थापित था । और इस प्रकार इसे लिखा गया है । आमीन ।

And Alma went and began to declare the word of God unto the church which was established in the valley of Gideon, according to the revelation of the truth of the word which had been spoken by his fathers, and according to the spirit of prophecy which was in him, according to the testimony of Jesus Christ, the Son of God, who should come to redeem his people from their sins, and the holy order by which he was called. And thus it is written. Amen.

अलमा के शब्द जिसे उसने अपने अभिलेखानुसार, गिदोन में लोगों को बताया ।

## अलमा 7

- 1 देखो मेरे प्रिय भाइयों, यह देखते हुए कि मुझे तुम्हारे पास आने का मौका मिला है, इसलिए मैं अपनी भाषा में बताने का प्रयास कर रहा हूँ; हाँ, मेरे अपने मुंह से, यह देखते हुए कि ऐसा पहली बार है जब मेरे मुंह से निकले हुए शब्दों के द्वारा मैंने बोला है, पूरी तरह से न्याय-आसन पर लगे रहने और काम की अधिकता के कारण मैं तुम्हारे पास नहीं आ सका ।
- 2 और यदि मेरे स्थान पर शासन करने के लिए न्याय-आसन को किसी और को नहीं दिया जाता तो मैं इस समय नहीं आ सकता था; और प्रभु ने अत्यंत दया कर मुझे मौका दिया है कि मैं तुम्हारे पास आ सकूँ ।
- 3 और देखो, मैं बड़ी आशा और इच्छा लेकर आया हूँ कि तुम्हें परमेश्वर के समक्ष विनम्र होते हुए पाऊँ, और यह कि तुमने उसके अनुग्रह में याचना करना जारी रखा है, कि मैं पा सकूँ कि तुम उसके समक्ष निर्दोष हो, कि मैं पा सकूँ कि तुम भयानक चिंता में नहीं हो कि हमारे भाई जराहेमला में थे ।
- 4 परन्तु परमेश्वर का नाम आशीषित हो, कि उसने मुझे जानकारी दी है, हाँ, उसने मुझे आश्चर्यजनक जानकारी दी है यह बताते हुए कि उन्हें फिर से धार्मिकता के तरीके से स्थापित किया जाएगा ।
- 5 और मैं परमेश्वर की उस आत्मा द्वारा विश्वास करता हूँ जो मुझमें है, कि मुझे तुमसे भी आनन्द प्राप्त होगा; फिर भी मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे कष्ट और दुखों के कारण मुझे आनन्द प्राप्त हो जैसा मुझे जराहेमला के भाइयों के कारण मिला था, क्योंकि देखो, उनके कारण मुझे आनन्द बहुत ही कष्ट और दुख से होकर मिला था ।
- 6 परन्तु देखो, मुझे विश्वास है कि तुम अपने भाइयों के समान अधिक अविश्वास की स्थिति में नहीं हो; मुझे विश्वास है कि तुम अपने हृदय के अहंकार में फूले हुए नहीं हो; हाँ, मुझे विश्वास है कि तुमने अपने मन को धन-संपत्ति और संसार की व्यर्थ की चीजों पर नहीं लगा रखा है; हाँ, मुझे विश्वास है कि तुम मूर्तिपूजा नहीं करते हो, परन्तु तुम सच्चे और जीवित परमेश्वर की आराधना करते हो, और यह कि उस अनंत विश्वास से अपने पापों की क्षमा चाहते हो जो कि आनेवाला है ।

*The words of Alma which he delivered to the people in Gideon, according to his own record.*

## Alma 7

Behold my beloved brethren, seeing that I have been permitted to come unto you, therefore I attempt to address you in my language; yea, by my own mouth, seeing that it is the first time that I have spoken unto you by the words of my mouth, I having been wholly confined to the judgment-seat, having had much business that I could not come unto you.

And even I could not have come now at this time were it not that the judgment-seat hath been given to another, to reign in my stead; and the Lord in much mercy hath granted that I should come unto you.

And behold, I have come having great hopes and much desire that I should find that ye had humbled yourselves before God, and that ye had continued in the supplicating of his grace, that I should find that ye were blameless before him, that I should find that ye were not in the awful dilemma that our brethren were in at Zarahemla.

But blessed be the name of God, that he hath given me to know, yea, hath given unto me the exceedingly great joy of knowing that they are established again in the way of his righteousness.

And I trust, according to the Spirit of God which is in me, that I shall also have joy over you; nevertheless I do not desire that my joy over you should come by the cause of so much afflictions and sorrow which I have had for the brethren at Zarahemla, for behold, my joy cometh over them after wading through much affliction and sorrow.

But behold, I trust that ye are not in a state of so much unbelief as were your brethren; I trust that ye are not lifted up in the pride of your hearts; yea, I trust that ye have not set your hearts upon riches and the vain things of the world; yea, I trust that you do not worship idols, but that ye do worship the true and the living God, and that ye look forward for the remission of your sins, with an everlasting faith, which is to come.



- 7 क्योंकि देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि बहुत सी बातें होनेवाली हैं; और देखो, एक चीज है जो सब से अधिक महत्वपूर्ण है—क्योंकि देखो, वह समय दूर नहीं है जब मुक्तिदाता अपने लोगों में आकर रहेगा ।
- 8 देखो, मैं यह नहीं कहता कि वह उस समय अपने नश्वर शरीर में रहते हुए हमारे बीच आएगा; क्योंकि देखो, आत्मा ने मुझसे नहीं कहा है कि यह होगा । अब इस बारे में मुझे नहीं पता है परन्तु इतना मैं अवश्य जानता हूँ कि प्रभु परमेश्वर के शब्द के अनुसार सारी चीजों को करने का सामर्थ्य उसमें है ।
- 9 परन्तु देखो, आत्मा ने यह कहते हुए मुझसे इतना कहा: इन लोगों से कहो, तुम पश्चात्ताप करो, और प्रभु के मार्ग की तैयारी करो, और उसके मार्ग पर चलो जो सीधा है; क्योंकि देखो, स्वर्ग का राज्य निकट है, और परमेश्वर का पुत्र पृथ्वी पर आनेवाला है ।
- 10 और देखो, वह यरूशलेम में मरियम से जन्म लेगा जो कि हमारे पूर्वजों का प्रदेश है, एक कुंवारी, मूल्यवान और चुनी हुई पात्र होने के नाते, उस पर पवित्र आत्मा की छाया होगी और वह उसके द्वारा गर्भवती होगी, और एक पुत्र को जन्म देगी, हां, परमेश्वर के पुत्र को ।
- 11 और वह पीड़ा और कष्ट और हर प्रकार के प्रलोभन झेलेगा; और ऐसा इसलिए होगा ताकि वचन पूरा हो सके जिसके अनुसार वह अपने लोगों की पीड़ा और बीमारी को अपने ऊपर ले लेगा ।
- 12 और वह अपने ऊपर मृत्यु ले लेगा, ताकि वह मृत्यु के बंधन को खोल सके जो उसके लोगों को बांधे हुए है; और वह अपने ऊपर उनकी दुर्बलताओं को ले लेगा, ताकि मानव शरीर के अनुसार उसका कटोरा दया से भर सके, कि वह शरीर में जान सके कि किस प्रकार दुर्बलताओं के अनुसार अपने लोगों की सहायता कर सके ।
- 13 अब आत्मा सारी बातों को जानती है; फिर भी परमेश्वर के पुत्र ने शरीर में पीड़ा सहन की ताकि वह अपने लोगों के पापों को स्वयं सह सके, कि वह अपने छुड़ानेवाले सामर्थ्य के अनुसार उनके अपराध को मिटा सके; और अब देखो, यही वह गवाही है जो मुझमें है ।

For behold, I say unto you there be many things to come; and behold, there is one thing which is of more importance than they all—for behold, the time is not far distant that the Redeemer liveth and cometh among his people.

Behold, I do not say that he will come among us at the time of his dwelling in his mortal tabernacle; for behold, the Spirit hath not said unto me that this should be the case. Now as to this thing I do not know; but this much I do know, that the Lord God hath power to do all things which are according to his word.

But behold, the Spirit hath said this much unto me, saying: Cry unto this people, saying—Repent ye, and prepare the way of the Lord, and walk in his paths, which are straight; for behold, the kingdom of heaven is at hand, and the Son of God cometh upon the face of the earth.

And behold, he shall be born of Mary, at Jerusalem which is the land of our forefathers, she being a virgin, a precious and chosen vessel, who shall be overshadowed and conceive by the power of the Holy Ghost, and bring forth a son, yea, even the Son of God.

And he shall go forth, suffering pains and afflictions and temptations of every kind; and this that the word might be fulfilled which saith he will take upon him the pains and the sicknesses of his people.

And he will take upon him death, that he may loose the bands of death which bind his people; and he will take upon him their infirmities, that his bowels may be filled with mercy, according to the flesh, that he may know according to the flesh how to succor his people according to their infirmities.

Now the Spirit knoweth all things; nevertheless the Son of God suffereth according to the flesh that he might take upon him the sins of his people, that he might blot out their transgressions according to the power of his deliverance; and now behold, this is the testimony which is in me.

- 14 अब मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हें पश्चाताप करना चाहिए, और फिर से जन्म लेना चाहिए; क्योंकि आत्मा ने कहा कि यदि तुम फिर से जन्म नहीं लेते हो तो तुम स्वर्ग के राज्य का उत्तराधिकारी नहीं हो सकते; इसलिए आओ और पश्चाताप कर बपतिस्मा लो, कि तुम्हें अपने पापों से मुक्ति मिल सके, कि तुम्हें परमेश्वर के मेमने पर विश्वास हो सके जो संसार के पापों को हर लेता है, जिसमें बचाने और सारी अधार्मिकता से शुद्ध करने का सामर्थ्य है।
- 15 हां, मैं तुमसे कहता हूँ कि आओ और डरो नहीं, और अपने हर पाप को भूल जाओ, जो कि आसानी से तुम पर आक्रमण करते हैं, जो तुम्हें विनाश की तरफ ढकेलते हैं, हां, आओ और आगे बढ़ो, और अपने परमेश्वर को दिखा दो कि तुम अपने पापों का पश्चाताप करना चाहते हो और उसकी आज्ञाओं को मानने के लिए उसके साथ अनुबंध करना चाहते हो, और बपतिस्मा के पानी में जाने के द्वारा इस दिन उसकी गवाही देना चाहते हो।
- 16 और जो भी ऐसा करता है, और तब से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है, वो याद रखेगा कि मैं उससे कहता हूँ, हां, वह याद रखेगा कि मैंने उससे कहा है, पवित्र आत्मा की गवाही के अनुसार उसे अनंत जीवन मिलेगा, जिसकी गवाही मुझमें है।
- 17 और अब मेरे प्रिय भाइयों, क्या तुम इन बातों में विश्वास करते हो? देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, हां, मैं जानता हूँ कि तुम उनमें विश्वास करते हो; और मैं उस आत्मा के प्रकटीकरण के द्वारा जो मुझमें है, जानता हूँ कि तुम उनमें विश्वास करते हो। और अब क्योंकि इसके संबंध में तुम्हारा विश्वास मजबूत है, हां, उन बातों से संबंधित जिनके विषय में मैंने कहा है, मेरा आनन्द महान है।
- 18 क्योंकि जैसा मैंने आरंभ से तुमसे कहा है, कि मेरी मनोकामना थी कि तुम अपने भाइयों के समान भंवरजाल की स्थिति में न रहो, इसलिए मैंने पाया है कि मेरी मनोकामना तृप्त हुई है।
- 19 क्योंकि मैं देखता हूँ कि तुम धार्मिकता की राह पर हो; मैं देखता हूँ कि तुम उस राह पर हो जो परमेश्वर के राज्य की तरफ जाती है; हां, मैं देखता हूँ कि तुम उसके राह को सीधा बनाते हो।
- 20 मैं देखता हूँ कि उसके शब्दों की गवाही के द्वारा तुम्हें बताया गया है कि न तो वह टेढ़े-मेढ़े राह पर चल सकता है; न ही वह अपनी कही गई बात से पलट सकता है; न ही वह एक छाया है जो दाएं से बाएं घूम जाए, या सही से गलत की तरफ हो जाए; इसलिए, उसका मार्ग एक अनंत चक्र है

Now I say unto you that ye must repent, and be born again; for the Spirit saith if ye are not born again ye cannot inherit the kingdom of heaven; therefore come and be baptized unto repentance, that ye may be washed from your sins, that ye may have faith on the Lamb of God, who taketh away the sins of the world, who is mighty to save and to cleanse from all unrighteousness.

Yea, I say unto you come and fear not, and lay aside every sin, which easily doth beset you, which doth bind you down to destruction, yea, come and go forth, and show unto your God that ye are willing to repent of your sins and enter into a covenant with him to keep his commandments, and witness it unto him this day by going into the waters of baptism.

And whosoever doeth this, and keepeth the commandments of God from thenceforth, the same will remember that I say unto him, yea, he will remember that I have said unto him, he shall have eternal life, according to the testimony of the Holy Spirit, which testifieth in me.

And now my beloved brethren, do you believe these things? Behold, I say unto you, yea, I know that ye believe them; and the way that I know that ye believe them is by the manifestation of the Spirit which is in me. And now because your faith is strong concerning that, yea, concerning the things which I have spoken, great is my joy.

For as I said unto you from the beginning, that I had much desire that ye were not in the state of dilemma like your brethren, even so I have found that my desires have been gratified.

For I perceive that ye are in the paths of righteousness; I perceive that ye are in the path which leads to the kingdom of God; yea, I perceive that ye are making his paths straight.

I perceive that it has been made known unto you, by the testimony of his word, that he cannot walk in crooked paths; neither doth he vary from that which he hath said; neither hath he a shadow of turning from the right to the left, or from that which is right to that which is wrong; therefore, his course is one eternal round.

21 और न तो वह अपवित्र मंदिरों में रहता है; न ही गन्दे या किसी ऐसे स्थान पर रह सकता है जो कि परमेश्वर के राज्य में रहने के प्रति अशुद्ध हो; इसलिए, मैं तुमसे कहता हूँ कि समय आएगा, हां, और वह अंतिम दिन होगा जब वह जो अशुद्ध है अपनी अशुद्धता में ही रह जाएगा ।

22 और अब मेरे प्रिय भाइयों, मैंने तुमसे ये बातें कही हैं कि मैं परमेश्वर के प्रति तुम्हारे कर्तव्यों को सजग कर सकूँ, कि तुम उसके समक्ष निर्दोष होकर चल सको, कि तुम परमेश्वर की उस पवित्र रीति के अनुसार चल सको जिसे तुमने प्राप्त किया है ।

23 और अब मैं चाहता हूँ कि तुम्हें विनम्र, और आज्ञाकारी और सभ्य होना चाहिए; अनुरोध करनेवाला होना चाहिए; पूरी तरह से सहनशील और कष्ट सहनेवाला होना चाहिए; सारी बातों में संयम बरतनेवाला, हर समय परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने में परिश्रमी होना चाहिए, आत्मिक या लौकिक, जिसकी भी तुम्हें आवश्यकता हो उसे मांगनेवाला होना चाहिए; जो भी चीजें तुम्हें मिलती हैं उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद देनेवाला होना चाहिए ।

24 और देखो कि तुममें विश्वास, आशा, और उदारता हो, और तब तुम सदैव अच्छे कार्यों में लगे रहोगे ।

25 और प्रभु तुम्हें आशीष दे, और तुम्हारे वस्त्रों को बेदाग रखे, ताकि अंत में तुम्हें इब्राहीम, इसहाक, और याकूब, और उन पवित्र भविष्यवक्ताओं के साथ बैठने के लिए लाया जा सके जो संसार के आरंभ से अपने वस्त्रों को बेदाग रखे हुए हैं जैसे कि उनके वस्त्र बेदाग हैं, स्वर्ग के राज्य से कभी भी अलग न होने के लिए ।

26 और अब मेरे प्रिय भाइयों, मैंने तुमसे ये शब्द उस आत्मा के द्वारा कहा है जो मुझमें गवाही देती है; और क्योंकि तुमने मेरी बातों को तत्परता से और ध्यानपूर्वक सुना है, मेरी आत्मा बहुत आनंदित हुई है ।

27 और अब, परमेश्वर की शांति तुम पर हो, और तुम्हारे घरों और तुम्हारी जमीनों पर, और तुम्हारे जानवरों के समूहों और झुंडों पर, और उन सब पर जो तुम्हारे पास है, तुम्हारे विश्वास और अच्छे कार्यों के अनुसार इस समय से और सदा के लिए तुम्हारी स्त्रियों और तुम्हारे बच्चों पर हो । आमीन ।

And he doth not dwell in unholy temples; neither can filthiness or anything which is unclean be received into the kingdom of God; therefore I say unto you the time shall come, yea, and it shall be at the last day, that he who is filthy shall remain in his filthiness.

And now my beloved brethren, I have said these things unto you that I might awaken you to a sense of your duty to God, that ye may walk blameless before him, that ye may walk after the holy order of God, after which ye have been received.

And now I would that ye should be humble, and be submissive and gentle; easy to be entreated; full of patience and long-suffering; being temperate in all things; being diligent in keeping the commandments of God at all times; asking for whatsoever things ye stand in need, both spiritual and temporal; always returning thanks unto God for whatsoever things ye do receive.

And see that ye have faith, hope, and charity, and then ye will always abound in good works.

And may the Lord bless you, and keep your garments spotless, that ye may at last be brought to sit down with Abraham, Isaac, and Jacob, and the holy prophets who have been ever since the world began, having your garments spotless even as their garments are spotless, in the kingdom of heaven to go no more out.

And now my beloved brethren, I have spoken these words unto you according to the Spirit which testifieth in me; and my soul doth exceedingly rejoice, because of the exceeding diligence and heed which ye have given unto my word.

And now, may the peace of God rest upon you, and upon your houses and lands, and upon your flocks and herds, and all that you possess, your women and your children, according to your faith and good works, from this time forth and forever. And thus I have spoken. Amen.

## अलमा 8

- 1 और अब ऐसा हुआ कि अलमा गिदोन के प्रदेश से वापस आया, गिदोन के लोगों को कई उन बातों को सीखाने के पश्चात जिन्हें लिखा नहीं जा सकता था, गिरजे को सुव्यवस्थित करने के पश्चात जैसा कि उसने पहले जराहेमला के प्रदेश में किया था, हां, अपने कार्य को करने के बाद आराम करने के लिए वह जराहेमला के अपने घर वापस आ गया ।
- 2 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के नौवें वर्ष का अंत हुआ ।
- 3 और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के दसवें वर्ष के आरंभ में, अलमा वहां से चला गया और जंगल की सीमाओं से लगे पश्चिम की ओर, सिदोन नदी के पूर्व, मेलेक की धरती पर यात्रा की ।
- 4 और उसने मेलेक देश में लोगों को परमेश्वर की उस पवित्र रीति के अनुसार सिखाना आरंभ कर दिया जिसके द्वारा उसकी नियुक्ति हुई थी और उसने पूरे मेलेक प्रदेश में लोगों को सिखाना आरंभ कर दिया ।
- 5 और ऐसा हुआ कि जंगल की सारी सीमाओं पर बसे हुए लोग उसके पास आए । और प्रदेश भर में उनको बपतिस्मा दिया गया;
- 6 इसलिए जब मेलेक में उसका कार्य पूरा हुआ वह वहां से चला गया, और तीन दिनों तक मेलेक प्रदेश के उत्तर में यात्रा की और वह एक नगर को आया जो अम्मोनिहा कहलाता था ।
- 7 अब नफी के लोगों की प्रथा थी कि वे अपने प्रदेश, अपने नगर, और अपने गांव, यहां तक कि अपने छोटे-छोटे गांवों का नाम भी उस व्यक्ति के नाम पर रखते थे जो उनका प्रथम अधिकारी होता था; और ऐसा ही अम्मोनिहा के प्रदेश के साथ हुआ ।
- 8 और ऐसा हुआ कि जब अलमा अम्मोनिहा के नगर को आया उसने उन्हें परमेश्वर का वचन सुनाना आरंभ कर दिया ।
- 9 अब अम्मोनिहा नगर के लोगों का हृदय पूरी तरह से शैतान के वश में था; इसलिए उन्होंने अलमा की बातों को नहीं सुना ।

## Alma 8

And now it came to pass that Alma returned from the land of Gideon, after having taught the people of Gideon many things which cannot be written, having established the order of the church, according as he had before done in the land of Zarahemla, yea, he returned to his own house at Zarahemla to rest himself from the labors which he had performed.

And thus ended the ninth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

And it came to pass in the commencement of the tenth year of the reign of the judges over the people of Nephi, that Alma departed from thence and took his journey over into the land of Melek, on the west of the river Sidon, on the west by the borders of the wilderness.

And he began to teach the people in the land of Melek according to the holy order of God, by which he had been called; and he began to teach the people throughout all the land of Melek.

And it came to pass that the people came to him throughout all the borders of the land which was by the wilderness side. And they were baptized throughout all the land;

So that when he had finished his work at Melek he departed thence, and traveled three days' journey on the north of the land of Melek; and he came to a city which was called Ammonihah.

Now it was the custom of the people of Nephi to call their lands, and their cities, and their villages, yea, even all their small villages, after the name of him who first possessed them; and thus it was with the land of Ammonihah.

And it came to pass that when Alma had come to the city of Ammonihah he began to preach the word of God unto them.

Now Satan had gotten great hold upon the hearts of the people of the city of Ammonihah; therefore they would not hearken unto the words of Alma.

- 10 फिर भी अलमा ने आत्मा में रहते हुए बहुत मेहनत की, प्रबल प्रार्थना में परमेश्वर के साथ कड़ा संघर्ष करते हुए, ताकि वह उन लोगों पर अपनी आत्मा उंडेल सके जो नगरवासी थे; कि उसे भी अनुमति मिले कि वह पश्चाताप कराकर उन्हें बपतिस्मा दे सके ।
- 11 फिर भी, उन्होंने उससे यह कहते हुए अपने हृदयों को कठोर कर लिया: देखो, हम जानते हैं कि तुम अलमा हो; और हम जानते हैं कि तुम्हारी परंपरा के अनुसार तुम उस गिरजे के उच्च याजक हो जिसे तुमने प्रदेश के कई हिस्सों में स्थापित किया है; और हम तुम्हारे गिरजे के नहीं हैं, और हम इस प्रकार की मूर्खतापूर्ण परंपराओं में विश्वास नहीं करते हैं ।
- 12 और अब हम जानते हैं, क्योंकि हम तुम्हारे गिरजे के नहीं हैं तुम्हारा हम पर कोई अधिकार नहीं है; और तुमने न्याय-आसन नफीहा को दे दिया है; इसलिए तुम हमारे मुख्य न्यायी नहीं हो ।
- 13 अब जब लोगों ने ऐसा कहा, और उसकी सारी बातों का प्रतिरोध किया, और उसे गालियां दी, और उस पर थूका, और ऐसी स्थिति पैदा की कि उसे नगर से निकाल दिया जाए, वह वहां से चला गया और आरोन नामक नगर की ओर यात्रा की ।
- 14 और ऐसा हुआ कि जब वो दुख के बोझ से दबे हुए वहां की यात्रा कर रहा था, अम्मोनिहा के नगर के लोगों की दृष्टता के कारण आत्मा की अत्याधिक तकलीफ और वेदना से चला जा रहा था, जब अलमा इस प्रकार दुख के बोझ से दबा हुआ था तब ऐसा हुआ कि, देखो उसे प्रभु का एक स्वर्गादूत दिखाई दिया, यह कहते हुए:
- 15 तुम आशीषित हो, अलमा; इसलिए अपना सिर उठाओ और आनंदित हो, क्योंकि तुम्हारे पास आनंदित होने का महान कारण है; तुम परमेश्वर की आज्ञाओं को तब से मानने में विश्वासी रहे हो जब से तुमने उससे अपना पहला संदेश प्राप्त किया । देखो, मैं वही हूँ जिसने तुम्हें इसे दिया था ।
- 16 और देखो, मुझे तुम्हें आज्ञा देने के लिए भेजा गया है कि तुम अम्मोनिहा के नगर को वापस चले जाओ, और नगर के लोगों में फिर से प्रचार करो; हां, उनमें प्रचार करो । हां, उनसे कहो कि यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो प्रभु परमेश्वर उन्हें नष्ट कर देगा ।
- 17 क्योंकि देखो, इस समय वे सोच-विचार कर रहे हैं ताकि तुम्हारे लोगों की स्वतंत्रता को नष्ट कर सकें (क्योंकि इस प्रकार प्रभु कहता है) जो कि नियम, और न्याय, और उन आज्ञाओं के विरुद्ध है जिसे उसने अपने लोगों को दिया है ।

Nevertheless Alma labored much in the spirit, wrestling with God in mighty prayer, that he would pour out his Spirit upon the people who were in the city; that he would also grant that he might baptize them unto repentance.

Nevertheless, they hardened their hearts, saying unto him: Behold, we know that thou art Alma; and we know that thou art high priest over the church which thou hast established in many parts of the land, according to your tradition; and we are not of thy church, and we do not believe in such foolish traditions.

And now we know that because we are not of thy church we know that thou hast no power over us; and thou hast delivered up the judgment-seat unto Nephiah; therefore thou art not the chief judge over us.

Now when the people had said this, and withstood all his words, and reviled him, and spit upon him, and caused that he should be cast out of their city, he departed thence and took his journey towards the city which was called Aaron.

And it came to pass that while he was journeying thither, being weighed down with sorrow, wading through much tribulation and anguish of soul, because of the wickedness of the people who were in the city of Ammonihah, it came to pass while Alma was thus weighed down with sorrow, behold an angel of the Lord appeared unto him, saying:

Blessed art thou, Alma; therefore, lift up thy head and rejoice, for thou hast great cause to rejoice; for thou hast been faithful in keeping the commandments of God from the time which thou receivedst thy first message from him. Behold, I am he that delivered it unto you.

And behold, I am sent to command thee that thou return to the city of Ammonihah, and preach again unto the people of the city; yea, preach unto them. Yea, say unto them, except they repent the Lord God will destroy them.

For behold, they do study at this time that they may destroy the liberty of thy people, (for thus saith the Lord) which is contrary to the statutes, and judgments, and commandments which he has given unto his people.

- 18 अब ऐसा हुआ कि प्रभु के स्वर्गदूत से अपने संदेश को प्राप्त करने के पश्चात अलमा शीघ्रता से अम्मोनिहा के प्रदेश वापस चला गया । और उसने दूसरे मार्ग से नगर में प्रवेश किया, हां, उस मार्ग से जो कि अम्मोनिहा नगर के दक्षिण में था ।
- 19 और जैसे ही उसने नगर में प्रवेश किया उसे भूख लगी, और उसने एक पुरुष से कहा: क्या तुम परमेश्वर के विनम्र सेवक को कुछ खाने को दोगे ?
- 20 और पुरुष ने उससे कहा: मैं एक नफाई हूं, और मैं जानता हूं कि तुम परमेश्वर के एक पवित्र भविष्यवक्ता हो, क्योंकि तुम ही वह पुरुष हो जिसके विषय में स्वर्गदूत ने एक दिव्यदर्शन में कहा था: तुम एक अतिथि को स्वीकार करना । इसलिए, मेरे साथ मेरे घर चलो और मैं तुम्हें अपना भोजन दूंगा; और मैं जानता हूं कि तुम मेरे और मेरे घर के लिए आशीष बनोगे ।
- 21 और ऐसा हुआ कि वह पुरुष उसे अपने घर ले गया; और उस पुरुष का नाम अमूलेक था; और वह रोटी और मांस लाया और अलमा के सामने रख दिया ।
- 22 और ऐसा हुआ कि अलमा ने रोटी खाई और तृप्त हुआ; और उसने अमूलेक और उसके घर को आशीष दी, और उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया ।
- 23 और जब उसने खा लिया और तृप्त हुआ तब उसने अमूलेक से कहा: मैं अलमा हूं, और पूरे देश में परमेश्वर के गिरजे का उच्च याजक हूं ।
- 24 और देखो, प्रकटीकरण और भविष्यवाणी की आत्मा के अनुसार, मुझे इन सभी लोगों के बीच में परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए नियुक्त किया गया है; और मैं इस प्रदेश में था और उन्होंने मुझे स्वीकार नहीं किया, परन्तु उन्होंने मुझे बाहर निकाल दिया और मैं इस प्रदेश से सदा के लिए अपनी पीठ फेर लेनेवाला था ।
- 25 परन्तु देखो, मुझे आज्ञा मिली है कि मुझे वापस जाना चाहिए और इन लोगों के लिए भविष्यवाणी करनी चाहिए, हां, और इनकी दुष्टता से संबंधित इनके विरुद्ध गवाही देनी चाहिए ।
- 26 और अब, अमूलेक, क्योंकि तुमने मुझे खिलाया है और मुझे अंदर आने दिया है, तुम आशीषित हो; क्योंकि मैं भूखा था, क्योंकि मैंने कई दिनों तक उपवास किया था ।
- 27 और लोगों के प्रति प्रचार-कार्य आरंभ करने से पहले अलमा कई दिनों तक अमूलेक के साथ रुका रहा ।
- 28 और ऐसा हुआ कि लोग और भी घोर दुष्टता करने लगे ।

Now it came to pass that after Alma had received his message from the angel of the Lord he returned speedily to the land of Ammonihah. And he entered the city by another way, yea, by the way which is on the south of the city of Ammonihah.

And as he entered the city he was an hungered, and he said to a man: Will ye give to an humble servant of God something to eat?

And the man said unto him: I am a Nephite, and I know that thou art a holy prophet of God, for thou art the man whom an angel said in a vision: Thou shalt receive. Therefore, go with me into my house and I will impart unto thee of my food; and I know that thou wilt be a blessing unto me and my house.

And it came to pass that the man received him into his house; and the man was called Amulek; and he brought forth bread and meat and set before Alma.

And it came to pass that Alma ate bread and was filled; and he blessed Amulek and his house, and he gave thanks unto God.

And after he had eaten and was filled he said unto Amulek: I am Alma, and am the high priest over the church of God throughout the land.

And behold, I have been called to preach the word of God among all this people, according to the spirit of revelation and prophecy; and I was in this land and they would not receive me, but they cast me out and I was about to set my back towards this land forever.

But behold, I have been commanded that I should turn again and prophesy unto this people, yea, and to testify against them concerning their iniquities.

And now, Amulek, because thou hast fed me and taken me in, thou art blessed; for I was an hungered, for I had fasted many days.

And Alma tarried many days with Amulek before he began to preach unto the people.

And it came to pass that the people did wax more gross in their iniquities.

- 29 और अलमा को शब्द सुनाई दिया, कहते हुए: जाओ और मेरे से-  
वक अमूलेक से भी कहो, जाओ और यह कहते हुए लोगों को भवि-  
ष्यवाणी दो—तुम पश्चाताप करो, क्योंकि ऐसा प्रभु ने कहा है, यदि  
तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो मैं इन लोगों पर अपना क्रोध प्रकट करूँ-  
गा हां, और मैं अपने भयानक क्रोध को वापस नहीं लूँगा ।
- 30 और लोगों को परमेश्वर का वचन सुनाने के लिए अलमा और अमू-  
लेक उनके बीच गए; और वे पवित्र आत्मा से भरे हुए थे ।
- 31 और उन्हें शक्ति दी गई, इतना अधिक कि न तो उन्हें कालकोठरी  
में बंद किया जा सकता था; न ही ऐसा संभव था कि कोई मनुष्य उन्हें  
मार सके; फिर भी उन्होंने अपनी शक्ति का उपयोग तब तक नहीं  
किया जब तक कि उन्हें बेड़ियों से बांधकर बंदीगृह में न डाल दिया  
गया । अब, ऐसा इसलिए हुआ था ताकि प्रभु अपने सामर्थ्य को उन-  
के द्वारा दिखा सके ।
- 32 और ऐसा हुआ कि वे गए और प्रचार-कार्य किया, और लोगों को  
उस आत्मा और सामर्थ्य के द्वारा भविष्यवाणी देना आरंभ किया जि-  
से प्रभु ने उन्हें दिया था ।

And the word came to Alma, saying: Go; and also say unto my servant Amulek, go forth and prophesy unto this people, saying—Repent ye, for thus saith the Lord, except ye repent I will visit this people in mine anger; yea, and I will not turn my fierce anger away.

And Alma went forth, and also Amulek, among the people, to declare the words of God unto them; and they were filled with the Holy Ghost.

And they had power given unto them, insomuch that they could not be confined in dungeons; neither was it possible that any man could slay them; nevertheless they did not exercise their power until they were bound in bands and cast into prison. Now, this was done that the Lord might show forth his power in them.

And it came to pass that they went forth and began to preach and to prophesy unto the people, according to the spirit and power which the Lord had given them.

अलमा के शब्द, और अमूलेक के शब्द भी, जिन्हें उन लोगों को सुनाया गया जो अम्मोनिहा के देश में रहते थे। और उन्हें बंदीगृह में भी डाला गया, और अलमा के अभिलेखानुसार उन्हें परमेश्वर के उस चमत्कारिक सामर्थ्य के द्वारा बचाया गया जो उनमें था।

## अलमा 9

- 1 और फिर, मुझे, अलमा को परमेश्वर द्वारा आज्ञा मिली है कि मैं अपने साथ अमूलेक को लूं और जाकर इन लोगों में, या अम्मोनिहा नगर में रह रहे लोगों में फिर से प्रचार करूं, ऐसा हुआ कि जब मैंने उनके बीच प्रचार करना आरंभ किया, वे मुझसे वाद-विवाद करने लगे, यह कहते हुए:
- 2 तुम कौन हो ? क्या तुम समझते हो कि हम एक पुरुष की गवाही पर विश्वास करेंगे, चाहे वह यही क्यों न प्रचार करे कि पृथ्वी नष्ट हो जाएगी ?
- 3 अब उन्होंने जो बातें बताई उसका अर्थ वे स्वयं भी नहीं समझ पाए; क्योंकि वे नहीं जानते थे कि पृथ्वी नष्ट हो जाएगी।
- 4 और उन्होंने यह भी कहा: हम तुम्हारे शब्दों पर तब भी विश्वास नहीं करेंगे जब तुम भविष्यवाणी करोगे कि यह महान नगर एक दिन में नाश हो जाएगा।
- 5 अब वे नहीं जानते थे कि परमेश्वर इस प्रकार के चमत्कारिक कार्य कर सकता है, क्योंकि उनके हृदय कठोर और वे हठी हो गए थे।
- 6 और उन्होंने कहा: परमेश्वर कौन है जिसने इस प्रकार के महान और चमत्कारिक बातों की सच्चाई की घोषणा करने के लिए, इन लोगों में से केवल एक मनुष्य को छोड़कर अन्य अधिकारियों को नहीं भेजा ?
- 7 और वे मुझ पर हाथ छोड़ने के लिए आगे आए; परन्तु देखो, वो ऐसा नहीं कर सके। और मैं निडरता से प्रचार करने के लिए खड़ा रहा, हां, मैंने उन्हें निडर गवाही दी, यह कहते हुए:
- 8 देखो, ओ तुम दुष्ट और हठी पीढ़ी, कैसे तुम अपने पिता की परंपरा को भूल गए; हां, कैसे तुम इतनी जल्दी परमेश्वर की आज्ञाओं को भूल गए।
- 9 क्या तुम्हें याद नहीं है कि हमारा पिता, लेही, परमेश्वर के हाथों द्वारा यरूशलेम से बाहर लाया गया था ? क्या तुम्हें याद नहीं है कि उन सभी ने जंगल में उसके द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त किया था ?

*The words of Alma, and also the words of Amulek, which were declared unto the people who were in the land of Ammonihah. And also they are cast into prison, and delivered by the miraculous power of God which was in them, according to the record of Alma.*

## Alma 9

And again, I, Alma, having been commanded of God that I should take Amulek and go forth and preach again unto this people, or the people who were in the city of Ammonihah, it came to pass as I began to preach unto them, they began to contend with me, saying:

Who art thou? Suppose ye that we shall believe the testimony of one man, although he should preach unto us that the earth should pass away?

Now they understood not the words which they spake; for they knew not that the earth should pass away.

And they said also: We will not believe thy words if thou shouldst prophesy that this great city should be destroyed in one day.

Now they knew not that God could do such marvelous works, for they were a hard-hearted and a stiffnecked people.

And they said: Who is God, that sendeth no more authority than one man among this people, to declare unto them the truth of such great and marvelous things?

And they stood forth to lay their hands on me; but behold, they did not. And I stood with boldness to declare unto them, yea, I did boldly testify unto them, saying:

Behold, O ye wicked and perverse generation, how have ye forgotten the tradition of your fathers; yea, how soon ye have forgotten the commandments of God.

Do ye not remember that our father, Lehi, was brought out of Jerusalem by the hand of God? Do ye not remember that they were all led by him through the wilderness?



- 10 और क्या तुम इतनी जल्दी भूल गए कि कितनी बार उसने हमारे पिताओं को उनके शत्रुओं के हाथों से निकाला है, और नाश होने से उन्हें बचाया है, यहां तक कि उनके अपने भाइयों के हाथों से भी ।
- 11 हां, और यदि हमारे प्रति उसकी अद्वितीय शक्ति, और उसकी दया, और उसका लंबे समय तक का उत्पीड़न नहीं होता, निश्चय ही इस समय से बहुत पहले ही हमें पृथ्वी पर से मिटा दिया जाता, और शायद अंतहीन कष्ट और वेदना में झोंक दिए जाते ।
- 12 देखो, अब मैं तुमसे कहता हूं कि उसने तुम्हें पश्चाताप करने की आज्ञा दी है; और बिना पश्चाताप के तुम परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकारी किसी भी तरह से नहीं हो सकते । परन्तु देखो, इतना ही नहीं—उसने तुम्हें पश्चाताप करने की आज्ञा दी है, या वह तुम्हें पृथ्वी पर से पूरी तरह नष्ट कर देगा; हां, वह अपने क्रोध में आएगा, और अपने भयानक क्रोध को वापस नहीं लेगा ।
- 13 देखो, क्या तुम्हें वे शब्द याद नहीं हैं जिसे उसने लेही से कहा था, यह कहते हुए: जितना तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे, उतना ही तुम देश में संपन्न होगे ? और फिर से ऐसा कहा गया कि: जितना तुम मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे, तुम्हें प्रभु की उपस्थिति से अलग कर दिया जाएगा ।
- 14 अब मैं चाहता हूं कि तुम्हें याद रखना चाहिए, कि जितना लमनाइयों ने परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं माना, उन्हें प्रभु की उपस्थिति से अलग कर दिया गया । अब हम देखते हैं कि प्रभु का वचन इस चीज की पुष्टि करता है, और देश में लमनाइयों के अतिक्रमण के कारण आरंभ से ही उन्हें उसकी उपस्थिति से अलग कर दिया गया ।
- 15 फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि यदि तुम अपने पाप में पड़े रहे तो न्याय के दिन जितना वे सहन कर सकेंगे उतना तुम नहीं कर सकोगे, हां, और यदि तुम पश्चाताप नहीं करते हो तो इस जीवन में भी जितना वे सहन कर सकेंगे उतना तुम नहीं कर सकोगे ।
- 16 क्योंकि कई प्रतिज्ञाएं हैं जो लमनाइयों से की गईं; क्योंकि उनके पिता की परंपराओं के कारण ऐसा हुआ कि वे अज्ञानता की स्थिति में ही रह गए; इसलिए प्रभु उन पर दया करेगा और उन्हें देश में अधिक दिनों तक बनाए रखेगा ।
- 17 और किसी समय उन्हें उसके वचन पर विश्वास कराया जाएगा, और उन्हें उनके पिता की परंपराओं की त्रुटियों का ज्ञान कराएगा; और उनमें से कई बचाए जाएंगे, क्योंकि प्रभु उन सब पर दया करेगा जो उसके नाम से बुलाए जाएंगे ।

And have ye forgotten so soon how many times he delivered our fathers out of the hands of their enemies, and preserved them from being destroyed, even by the hands of their own brethren?

Yea, and if it had not been for his matchless power, and his mercy, and his long-suffering towards us, we should unavoidably have been cut off from the face of the earth long before this period of time, and perhaps been consigned to a state of endless misery and woe.

Behold, now I say unto you that he commandeth you to repent; and except ye repent, ye can in nowise inherit the kingdom of God. But behold, this is not all—he has commanded you to repent, or he will utterly destroy you from off the face of the earth; yea, he will visit you in his anger, and in his fierce anger he will not turn away.

Behold, do ye not remember the words which he spake unto Lehi, saying that: Inasmuch as ye shall keep my commandments, ye shall prosper in the land? And again it is said that: Inasmuch as ye will not keep my commandments ye shall be cut off from the presence of the Lord.

Now I would that ye should remember, that inasmuch as the Lamanites have not kept the commandments of God, they have been cut off from the presence of the Lord. Now we see that the word of the Lord has been verified in this thing, and the Lamanites have been cut off from his presence, from the beginning of their transgressions in the land.

Nevertheless I say unto you, that it shall be more tolerable for them in the day of judgment than for you, if ye remain in your sins, yea, and even more tolerable for them in this life than for you, except ye repent.

For there are many promises which are extended to the Lamanites; for it is because of the traditions of their fathers that caused them to remain in their state of ignorance; therefore the Lord will be merciful unto them and prolong their existence in the land.

And at some period of time they will be brought to believe in his word, and to know of the incorrectness of the traditions of their fathers; and many of them will be saved, for the Lord will be merciful unto all who call on his name.

18 परन्तु देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि तुम अपनी दुष्टता में लगे रहे तब तुम देश में लंबे समय तक नहीं रह सकोगे, क्योंकि तुम पर लमनाइयों को भेजा जाएगा; और यदि तुमने पश्चाताप नहीं किया तो तुम नहीं जान पाओगे कि वे कब आएंगे, और तुम पर पूर्ण विनाश आएगा; और यह प्रभु के भयानक क्रोध के कारण होगा।

19 क्योंकि वह यह नहीं सह सकता कि तुम, उसके लोगों का विनाश करते हुए अपनी दुष्टता में पड़े रहो। मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं वह यह नहीं सह सकता कि लमनाई उसके उन लोगों का विनाश कर सकें जो नफी के लोग कहलाते हैं, यदि वे प्रभु अपने परमेश्वर द्वारा प्राप्त इतने अधिक प्रकाश और इतने अधिक ज्ञान के पश्चात भी पाप और उल्लंघन में पड़े रहते हैं।

20 हां, प्रभु की अधिकतम कृपादृष्टि प्राप्त लोग होने के पश्चात; हां, हर अन्य राष्ट्र, जाति, भाषा, या लोगों से अधिक कृपादृष्टि प्राप्त लोग होने के पश्चात; उन्हें सारी बातों का ज्ञान कराने के पश्चात, उनकी इच्छा, और उनके विश्वास, और प्रार्थनाओं के अनुसार जो कि रहा है, और जो कि है, और जो कि आनेवाला है;

21 परमेश्वर की आत्मा द्वारा भेंट होने पर; स्वर्गदूतों से बात करने पर, और परमेश्वर की वाणी द्वारा उनसे बातचीत किये जाने पर; और भविष्यवाणी की आत्मा, और प्रकटीकरण की आत्मा, और कई उपहार जैसे कि अन्य भाषा बोलने का उपहार, और प्रचार का उपहार, और पवित्र आत्मा का उपहार, और अनुवाद का उपहार होने पर;

22 हां, और प्रभु के हाथों से, यरूशलेम के देश से परमेश्वर द्वारा बचाए जाने पर; अकाल, और बीमारी, और हर प्रकार की सभी बीमारियों से ग्रसित होने के बावजूद बचाए जाने पर; और वे युद्ध में पूरी तरह से डटे रहे, ताकि उनका विनाश न हो सके; समयानुसार दासता से बाहर लाए जाने पर, और अब तक बचाकर रखे जाने पर; और वे तब तक फलते-फूलते गए जब तक कि सभी प्रकार की वस्तुओं में संपन्न न हो गए—

23 और अब देखो मैं तुमसे कहता हूँ, कि यदि ये लोग जिन्होंने प्रभु के हाथों से इतनी सारी आशीषों को प्राप्त किया है, जो प्रकाश और ज्ञान उनके पास है उसके विरुद्ध पाप किया है, मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि ऐसा है, कि उन्हें पाप में पड़ना है, तो यह उनकी बजाय लमनाइयों के लिए सहना आसान होगा।

But behold, I say unto you that if ye persist in your wickedness that your days shall not be prolonged in the land, for the Lamanites shall be sent upon you; and if ye repent not they shall come in a time when you know not, and ye shall be visited with utter destruction; and it shall be according to the fierce anger of the Lord.

For he will not suffer you that ye shall live in your iniquities, to destroy his people. I say unto you, Nay; he would rather suffer that the Lamanites might destroy all his people who are called the people of Nephi, if it were possible that they could fall into sins and transgressions, after having had so much light and so much knowledge given unto them of the Lord their God;

Yea, after having been such a highly favored people of the Lord; yea, after having been favored above every other nation, kindred, tongue, or people; after having had all things made known unto them, according to their desires, and their faith, and prayers, of that which has been, and which is, and which is to come;

Having been visited by the Spirit of God; having conversed with angels, and having been spoken unto by the voice of the Lord; and having the spirit of prophecy, and the spirit of revelation, and also many gifts, the gift of speaking with tongues, and the gift of preaching, and the gift of the Holy Ghost, and the gift of translation;

Yea, and after having been delivered of God out of the land of Jerusalem, by the hand of the Lord; having been saved from famine, and from sickness, and all manner of diseases of every kind; and they having waxed strong in battle, that they might not be destroyed; having been brought out of bondage time after time, and having been kept and preserved until now; and they have been prospered until they are rich in all manner of things—

And now behold I say unto you, that if this people, who have received so many blessings from the hand of the Lord, should transgress contrary to the light and knowledge which they do have, I say unto you that if this be the case, that if they should fall into transgression, it would be far more tolerable for the Lamanites than for them.

24 क्योंकि देखो, प्रभु की प्रतिज्ञाएं लमनाइयों के लिए है, परन्तु वे तुम्हारे लिए नहीं है यदि तुम अपराध करते हो; क्योंकि क्या प्रभु ने यह स्पष्ट प्रतिज्ञा और दृढ़ नियम नहीं दिया है कि यदि तुम उसके विरुद्ध जाओगे तो तुम्हें निश्चित तौर पर पृथ्वी से मिटा दिया जाएगा ?

25 और अब इस कारण, कि तुम नष्ट न किये जाओ, प्रभु ने अपने स्वर्गदूत को अपने लोगों से मिलने के लिए भेजा है, उन्हें यह घोषित करते हुए कि उन्हें जाना चाहिए और पूरी ताकत से इन लोगों को कहना चाहिए: तुम पश्चाताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है;

26 और अब बहुत दिन नहीं है जब परमेश्वर का पुत्र अपनी महिमा में आएगा; और उसके अनुग्रह कृपा, समानता, सच्चाई, धैर्यता, दयालुता, और लंबे उत्पीड़न से भरी हुई पिता के एकलौते पुत्र के अनुग्रह होगी जो अपने लोगों की याचना शीघ्रता से सुनेगा और उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा ।

27 और देखो, वह उन लोगों को मुक्ति देने आएगा जो उसके नाम में विश्वास करने के द्वारा पश्चाताप कर बपतिस्मा लेंगे ।

28 इसलिए, तुम प्रभु का मार्ग तैयार करो, क्योंकि समय निकट है जब सारे मनुष्य अपने उन कर्मों के अनुसार फल काटेंगे जैसा कि वे करते आए हैं—यदि वे नेक रहे होंगे तो यीशु मसीह के सामर्थ्य और मुक्ति के अनुसार वे अपनी आत्माओं के उद्धार को काटेंगे; और यदि वे बुरे रहे होंगे तो शैतान के सामर्थ्य और लालच के अनुसार वे अपनी आत्माओं का नरकदंड काटेंगे ।

29 अब देखो, लोगों को कहते हुए यह स्वर्गदूत की आवाज है ।

30 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, क्योंकि तुम मेरे भाई हो, और तुम्हें प्रिय होना चाहिए, और तुम्हें वैसे काम करने चाहिए जो पश्चाताप के लिए आवश्यक है, यह देखते हुए कि परमेश्वर के वचन के विरुद्ध तुम्हारे हृदय बुरी तरह से कठोर हो गए हैं, और यह देखते हुए कि तुम खोए हुए और गिरे हुए लोग हो ।

31 और अब ऐसा हुआ कि जब मैंने, अलमा ने इन शब्दों को कहा, देखो, लोग मुझ पर क्रोधित हो गए क्योंकि मैंने उनसे कहा कि उनके हृदय कठोर और वे हठी हो गए हैं ।

32 और क्योंकि मैंने उनसे यह भी कहा कि वे खोए हुए और गिरे हुए लोग हैं, वे मुझ पर क्रोधित हो गए, और मुझ पर हाथ उठाने का प्रयास किया, ताकि वे मुझे बंदीगृह में डाल सकें ।

For behold, the promises of the Lord are extended to the Lamanites, but they are not unto you if ye transgress; for has not the Lord expressly promised and firmly decreed, that if ye will rebel against him that ye shall utterly be destroyed from off the face of the earth?

And now for this cause, that ye may not be destroyed, the Lord has sent his angel to visit many of his people, declaring unto them that they must go forth and cry mightily unto this people, saying: Repent ye, for the kingdom of heaven is nigh at hand;

And not many days hence the Son of God shall come in his glory; and his glory shall be the glory of the Only Begotten of the Father, full of grace, equity, and truth, full of patience, mercy, and long-suffering, quick to hear the cries of his people and to answer their prayers.

And behold, he cometh to redeem those who will be baptized unto repentance, through faith on his name.

Therefore, prepare ye the way of the Lord, for the time is at hand that all men shall reap a reward of their works, according to that which they have been—if they have been righteous they shall reap the salvation of their souls, according to the power and deliverance of Jesus Christ; and if they have been evil they shall reap the damnation of their souls, according to the power and captivity of the devil.

Now behold, this is the voice of the angel, crying unto the people.

And now, my beloved brethren, for ye are my brethren, and ye ought to be beloved, and ye ought to bring forth works which are meet for repentance, seeing that your hearts have been grossly hardened against the word of God, and seeing that ye are a lost and a fallen people.

Now it came to pass that when I, Alma, had spoken these words, behold, the people were wroth with me because I said unto them that they were a hard-hearted and a stiffnecked people.

And also because I said unto them that they were a lost and a fallen people they were angry with me, and sought to lay their hands upon me, that they might cast me into prison.

33 परन्तु ऐसा हुआ कि उस समय प्रभु ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया कि वे मुझे ले जाएं और बंदीगृह में डाल दें ।

But it came to pass that the Lord did not suffer them that they should take me at that time and cast me into prison.

34 और ऐसा हुआ कि अमूलेक गया और उनके सामने खड़ा हो गया, और उन्हें भी प्रचार करने लगा । और अब अमूलेक की सारी बातें नहीं लिखी गई हैं, फिर भी उसकी बातों का कुछ हिस्सा इस पुस्तक में लिखा गया है ।

And it came to pass that Amulek went and stood forth, and began to preach unto them also. And now the words of Amulek are not all written, nevertheless a part of his words are written in this book.

## अलमा 10

- 1 अब ये वही बातें हैं जिनका प्रचार अमूलेक ने लोगों में किया था जो कि अम्मोनिहा के प्रदेश में रहते थे, यह कहते हुए:
- 2 मैं अमूलेक हूँ; मैं गिडोना का पुत्र हूँ, जो कि अमिनादी के वंशज इश्माएल का पुत्र था, और यह वही अमिनादी है जिसने मंदिर की दीवार पर लिखे हुए लेख का अनुवाद किया था, जो कि परमेश्वर की उंगलियों द्वारा लिखे गए थे।
- 3 और अमिनादी नफी का वंशज था, जो कि लेही का पुत्र था जो यरूशलेम के देश से बाहर आया था, जो कि उस यूसुफ के पुत्र मन-शे का वंशज था जिसे उसके भाइयों ने मिस्र में बेच दिया था।
- 4 और देखो, मैं उन लोगों में कम प्रतिष्ठित भी नहीं हूँ जो मुझे जानते हैं; हां, और देखो, मेरे कई रिश्तेदार और मित्र हैं, और मैंने अपने व्यवसाय के द्वारा बहुत अधिक धन-संपत्ति भी अर्जित कर लिया है।
- 5 फिर भी, इतना सब कुछ होने के बावजूद, मुझे कभी भी प्रभु के मार्ग, और उसके रहस्यों और अदभुत शक्ति के बारे में नहीं पता था। मैंने कहा कि मुझे कभी भी इन बातों का ज्ञात नहीं कराया जाता परन्तु देखो, मुझसे गलती हुई, क्योंकि मैंने उसके बहुत से रहस्यों और अदभुत शक्ति को देखा है; हां, यहां तक कि इन लोगों के जीवन को बचते हुए भी देखा है।
- 6 फिर भी, मैंने अपने हृदय को कठोर किया, क्योंकि मुझे कई बार पुकारा गया और मैंने नहीं सुना; इसलिए मैं इन संबंधित बातों को जानकर भी नहीं जानता था; इसलिए मैं अपने हृदय की दृष्टता में परमेश्वर के विरुद्ध हो गया था, इस माह के चौथे दिन तक जो कि न्यायियों के शासन के दसवें वर्ष में है।
- 7 जब मैं अपने एक नजदीकी रिश्तेदार से मिलने जा रहा था, देखो प्रभु का एक स्वर्गदूत दिखाई दिया और मुझसे कहा: अमूलेक अपने घर वापस जाओ, क्योंकि तुम प्रभु के भविष्यवक्ता को खाना खिलाओगे; हां, एक पवित्र व्यक्ति को जो कि परमेश्वर का चुना हुआ व्यक्ति है; क्योंकि उसने इन लोगों के पापों के कारण कई दिनों तक उपवास रखा है, और वह भूखा है, और तुम उसे अपने घर ले जाओगे और उसे खाना खिलाओगे, और वह तुम्हें और तुम्हारे घर को आशीष देगा; और प्रभु की आशीष तुमपर और तुम्हारे घर पर होगी।

## Alma 10

Now these are the words which Amulek preached unto the people who were in the land of Ammonihah, saying:

I am Amulek; I am the son of Giddonah, who was the son of Ishmael, who was a descendant of Aminadi; and it was that same Aminadi who interpreted the writing which was upon the wall of the temple, which was written by the finger of God.

And Aminadi was a descendant of Nephi, who was the son of Lehi, who came out of the land of Jerusalem, who was a descendant of Manasseh, who was the son of Joseph who was sold into Egypt by the hands of his brethren.

And behold, I am also a man of no small reputation among all those who know me; yea, and behold, I have many kindreds and friends, and I have also acquired much riches by the hand of my industry.

Nevertheless, after all this, I never have known much of the ways of the Lord, and his mysteries and marvelous power. I said I never had known much of these things; but behold, I mistake, for I have seen much of his mysteries and his marvelous power; yea, even in the preservation of the lives of this people.

Nevertheless, I did harden my heart, for I was called many times and I would not hear; therefore I knew concerning these things, yet I would not know; therefore I went on rebelling against God, in the wickedness of my heart, even until the fourth day of this seventh month, which is in the tenth year of the reign of the judges.

As I was journeying to see a very near kindred, behold an angel of the Lord appeared unto me and said: Amulek, return to thine own house, for thou shalt feed a prophet of the Lord; yea, a holy man, who is a chosen man of God; for he has fasted many days because of the sins of this people, and he is an hungered, and thou shalt receive him into thy house and feed him, and he shall bless thee and thy house; and the blessing of the Lord shall rest upon thee and thy house.

- 8 और ऐसा हुआ कि मैंने स्वर्गदूत की आवाज को माना, और अपने घर की तरफ वापस हो लिया। और जब मैं जा रहा था मैंने उस व्यक्ति को पाया जिसके विषय में स्वर्गदूत ने मुझसे कहा था: तुम उसे अपने घर ले जाओगे—और देखो यह वही व्यक्ति था जो तुम्हें परमेश्वर से संबंधित बातें बता रहा था।
- 9 और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा कि वह एक पवित्र व्यक्ति है; इस कारण मैं जानता था कि वह एक पवित्र व्यक्ति है क्योंकि ऐसा परमेश्वर के स्वर्गदूत द्वारा कहा गया था।
- 10 और फिर से, मैं जानता हूँ कि जिन बातों की गवाही उसने दी है वह सच्ची हैं; क्योंकि देखो मैं तुमसे कहता हूँ, कि जैसे प्रभु जीवित है, वैसे ही इन बातों को मुझ पर प्रकट करने के लिए उसने अपने स्वर्गदूत को भेजा और ऐसा उसने तब किया जब यह अलमा मेरे घर में था।
- 11 क्योंकि देखो, उसने मेरे घर को आशीषित किया, उसने मुझे, और मेरी स्त्री, और मेरे बच्चों, और और मेरे पिता और मेरे सगे-संबंधियों को भी आशीषित किया; हां, यहां तक कि उसने मेरे रिश्तेदारों को भी आशीषित किया, और उसके कहे गए शब्दों के अनुसार हम पर प्रभु की आशीष हुई।
- 12 और अब, जब अमूलेक ये बातें कह रहा था लोग आश्चर्यचकित होने लगे, यह देखते हुए कि वहां पर एक से अधिक साक्षी थे जिन्होंने इन बातों की गवाही दी थी जिसका दोष उनपर लगा था, और भविष्यवाणी की जो आत्मा उनके अन्दर थी उसके अनुसार उन बातों की भी गवाही दी जो होनेवाली थीं।
- 13 फिर भी, उनमें से कई लोग थे जिन्होंने अपने धूर्त उपाय के द्वारा उनसे प्रश्न पूछने पर विचार किया ताकि वे उन्हें उनकी बातों में फंसा सकें, ताकि वे उनके विरुद्ध साक्षी ढूँढ सकें, ताकि वे उन्हें अपने न्यायियों को सौंप सकें जिससे कानून के अनुसार उनका न्याय हो सके, और ताकि उस अपराध के तहत जिसे करते हुए वे पकड़े जाएं या उनके विरुद्ध गवाहियों के अनुसार या तो उन्हें मारा जा सके या बंदी-गृह में डाला जा सके।
- 14 अब ये वही लोग थे जो उनका नाश करना चाहते थे, जो कि वकील थे, जिन्हें किराये पर लिया गया था या उनकी जांच के समय, या न्यायियों के सामने लोगों के अपराध की जांच के प्रति कानून की सहायता करने के लिए जिन्हें लोगों द्वारा नियुक्त किया गया था।
- 15 अब ये वकील मनुष्य के सब छल-प्रपंचों और धूर्तता में प्रवीण थे; और ऐसा उन्हें समर्थ बनाने के लिए था ताकि वे अपने काम में दक्ष हो सकें।

And it came to pass that I obeyed the voice of the angel, and returned towards my house. And as I was going thither I found the man whom the angel said unto me: Thou shalt receive into thy house—and behold it was this same man who has been speaking unto you concerning the things of God.

And the angel said unto me he is a holy man; wherefore I know he is a holy man because it was said by an angel of God.

And again, I know that the things whereof he hath testified are true; for behold I say unto you, that as the Lord liveth, even so has he sent his angel to make these things manifest unto me; and this he has done while this Alma hath dwelt at my house.

For behold, he hath blessed mine house, he hath blessed me, and my women, and my children, and my father and my kinsfolk; yea, even all my kindred hath he blessed, and the blessing of the Lord hath rested upon us according to the words which he spake.

And now, when Amulek had spoken these words the people began to be astonished, seeing there was more than one witness who testified of the things whereof they were accused, and also of the things which were to come, according to the spirit of prophecy which was in them.

Nevertheless, there were some among them who thought to question them, that by their cunning devices they might catch them in their words, that they might find witness against them, that they might deliver them to their judges that they might be judged according to the law, and that they might be slain or cast into prison, according to the crime which they could make appear or witness against them.

Now it was those men who sought to destroy them, who were lawyers, who were hired or appointed by the people to administer the law at their times of trials, or at the trials of the crimes of the people before the judges.

Now these lawyers were learned in all the arts and cunning of the people; and this was to enable them that they might be skilful in their profession.

- 16 और ऐसा हुआ कि उन्होंने अमूलेक से प्रश्न पूछना आरंभ कर दिया, ताकि इसके पश्चात वे उसके शब्दों को काट सकें, या उसकी कही गई बातों का विरोध कर सकें ।
- 17 अब वे नहीं जानते थे कि अमूलेक उनकी युक्तियों के जानता था । परन्तु ऐसा हुआ कि जब उन्होंने उससे प्रश्न पूछना आरंभ किया, वह उनके विचारों को समझ गया, और उसने उनसे कहा: ओ तुम दुष्ट और हठी पीढ़ी, तुम वकील और ढोंगी हो, क्योंकि तुम शैतान का नींव रख रहे हो; क्योंकि परमेश्वर के पवित्र जनों को पकड़ने के लिए तुम जाल और फंदे बिछा रहे हो ।
- 18 तुम धर्मी लोगों के मार्ग को दूषित करने की, और अपने ऊपर परमेश्वर के क्रोध को लाने की, यहां तक कि इन लोगों पर निश्चित विनाश लाने की योजना बना रहे हो ।
- 19 हां, मुसायाह ने सही कहा था, जो कि हमारा अंतिम राजा था, जब वह राज्य को किसी को प्रदान न करते हुए छोड़नेवाला था, ऐसा करते हुए कि ये लोग अपने स्वयं की आवाज द्वारा नियंत्रित किये जाएं—हां, उसने सही कहा कि यदि समय आएगा तो इन लोगों की आवाज अधर्म को चुनेगी, जो कि, यदि समय आएगा तो ये लोग पाप में पड़ेंगे, और वे विनाश को काटेंगे ।
- 20 और अब मैं तुमसे कहता हूं कि प्रभु तुम्हारे अत्याचारों का न्याय भली-भांति करेगा; अपने स्वर्गदूतों की आवाज द्वारा वह भली-भांति लोगों को फटकारेगा: तुम पश्चाताप करो, पश्चाताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है ।
- 21 हां, अपने स्वर्गदूतों की आवाज द्वारा वह भली-भांति फटकारेगा कि: मैं अपने लोगों के बीच समानता में आऊंगा और अपने हाथों से न्याय करूंगा ।
- 22 हां, और मैं तुमसे कहता हूं कि यदि उन धर्मी लोगों की प्रार्थनाएं नहीं होतीं जो कि इस समय देश में हैं, तो अब तक तुम लोगों पर निश्चित विनाश आ चुका होता; वैसा नहीं जैसा कि नूह के समय में लोगों पर प्रलय के द्वारा आया था, परन्तु आकाल, और महामारी, और तलवार द्वारा ऐसा हो सकता था ।
- 23 परन्तु धर्मी लोगों की प्रार्थनाओं के द्वारा तुम बचाए गए हो; अब इसलिए, यदि तुम अपने बीच से धर्मी लोगों को निकाल दोगे तब प्रभु अपने हाथ को रोक नहीं सकेगा परन्तु अपने भयानक क्रोध में वह तुम्हारे विरुद्ध हो जाएगा; फिर आकाल, और महामारी, और तलवार द्वारा तुम्हें दंड दिया जाएगा और यदि तुम पश्चाताप नहीं करते हो तो समय निकट है ।

And it came to pass that they began to question Amulek, that thereby they might make him cross his words, or contradict the words which he should speak.

Now they knew not that Amulek could know of their designs. But it came to pass as they began to question him, he perceived their thoughts, and he said unto them: O ye wicked and perverse generation, ye lawyers and hypocrites, for ye are laying the foundations of the devil; for ye are laying traps and snares to catch the holy ones of God.

Ye are laying plans to pervert the ways of the righteous, and to bring down the wrath of God upon your heads, even to the utter destruction of this people.

Yea, well did Mosiah say, who was our last king, when he was about to deliver up the kingdom, having no one to confer it upon, causing that this people should be governed by their own voices—yea, well did he say that if the time should come that the voice of this people should choose iniquity, that is, if the time should come that this people should fall into transgression, they would be ripe for destruction.

And now I say unto you that well doth the Lord judge of your iniquities; well doth he cry unto this people, by the voice of his angels: Repent ye, repent, for the kingdom of heaven is at hand.

Yea, well doth he cry, by the voice of his angels that: I will come down among my people, with equity and justice in my hands.

Yea, and I say unto you that if it were not for the prayers of the righteous, who are now in the land, that ye would even now be visited with utter destruction; yet it would not be by flood, as were the people in the days of Noah, but it would be by famine, and by pestilence, and the sword.

But it is by the prayers of the righteous that ye are spared; now therefore, if ye will cast out the righteous from among you then will not the Lord stay his hand; but in his fierce anger he will come out against you; then ye shall be smitten by famine, and by pestilence, and by the sword; and the time is soon at hand except ye repent.

- 24 और अब ऐसा हुआ कि लोग अमूलेक से और अधिक क्रोधित हो गए, और वे यह कहते हुए चिल्ला उठे: यह मनुष्य हमारे न्याय संगत नियम, और हमारे उन समझदार वकीलों के विरुद्ध बोल रहा है जिन्हें हमने चुना है ।
- 25 परन्तु अमूलेक ने अपने हाथ को फैलाया, और यह कहते हुए उनसे भी ऊंची आवाज में कहा: ओ तुम दुष्ट और हठी पीढ़ी, क्यों शैतान ने तुम्हारे हृदयों को इतनी मजबूती से पकड़ रखा है ? तुम उसे अपना फायदा क्यों उठाने दे रहे हो कि तुम्हारी आंखों पर पट्टी बांधने के लिए तुम पर उसका सामर्थ्य हो सके, कि तुम सच्चाई के अनुसार बोली गई बातों को न समझ सको ?
- 26 क्योंकि देखो, क्या मैंने तुम्हारे कानून के विरुद्ध गवाही दी है ? तुम नहीं समझते हो; तुम कहते हो कि मैंने तुम्हारे कानून के विरुद्ध बोला है; परन्तु मैंने नहीं बोला है, परन्तु तुम्हारे दोष के अनुसार मैंने तुम्हारे कानून के पक्ष में बोला है ।
- 27 और अब देखो, मैं तुमसे कहता हूं, कि तुम्हारे वकीलों और न्यायियों की अधार्मिकता के द्वारा इन लोगों के विनाश का आधार आरंभ हो चुका है ।
- 28 और अब ऐसा हुआ कि जब अमूलेक ने लोगों से इन शब्दों को कहा तो लोग यह कहते हुए उसके विरुद्ध चिल्लाने लगे: अब हमें पता चल गया है कि यह मनुष्य शैतान का बच्चा है, क्योंकि इसने हमसे झूठ कहा है क्योंकि इसने हमारे कानून के विरुद्ध कहा है । और अब यह कहता है कि इसने इसके विरुद्ध नहीं कहा है ।
- 29 और फिर से, इसने हमारे वकीलों, और हमारे न्यायियों के लिए बुरा कहा है ।
- 30 और ऐसा हुआ कि वकीलों ने अपने हृदय में इस बात को रख लिया ताकि वे इस बात को उसके विरुद्ध याद रख सकें ।
- 31 और उनमें एक व्यक्ति था जिसका नाम जीजरोम था । अब उन लोगों में अत्याधिक निपुण होने, और लोगों के बीच अधिक काम करने के कारण अलमा और अमूलेक पर दोष लगाने वालों में वह सबसे आगे था ।
- 32 और इन वकीलों का उद्देश्य फायदा उठाना था; और अपने काम के अनुसार उन्होंने फायदा उठाया ।

And now it came to pass that the people were more angry with Amulek, and they cried out, saying: This man doth revile against our laws which are just, and our wise lawyers whom we have selected.

But Amulek stretched forth his hand, and cried the mightier unto them, saying: O ye wicked and perverse generation, why hath Satan got such great hold upon your hearts? Why will ye yield yourselves unto him that he may have power over you, to blind your eyes, that ye will not understand the words which are spoken, according to their truth?

For behold, have I testified against your law? Ye do not understand; ye say that I have spoken against your law; but I have not, but I have spoken in favor of your law, to your condemnation.

And now behold, I say unto you, that the foundation of the destruction of this people is beginning to be laid by the unrighteousness of your lawyers and your judges.

And now it came to pass that when Amulek had spoken these words the people cried out against him, saying: Now we know that this man is a child of the devil, for he hath lied unto us; for he hath spoken against our law. And now he says that he has not spoken against it.

And again, he has reviled against our lawyers, and our judges.

And it came to pass that the lawyers put it into their hearts that they should remember these things against him.

And there was one among them whose name was Zeezrom. Now he was the foremost to accuse Amulek and Alma, he being one of the most expert among them, having much business to do among the people.

Now the object of these lawyers was to get gain; and they got gain according to their employ.



## अलमा 11

- 1 अब यह मुसायाह की व्यवस्था में था कि हर व्यक्ति जो कानून का न्यायी था, या जिन्हें न्यायी के पद पर नियुक्त किया जाता था, उस काम के समय के अनुसार वेतन प्राप्त करते थे जितना वे उन लोगों के न्याय करने में व्यतीत करते थे जिन्हें उनके सामने न्याय के लिए लाया जाता था ।
- 2 अब यदि कोई व्यक्ति किसी से ऋण लेता, और लिए हुए ऋण को नहीं चुकाता, तो उसकी शिकायत न्यायी से की जाती; और न्यायी अधिकार को अमल में लाता, और वह अधिकारियों को भेजता कि वे उसे उसके सामने लाएं; और वह उस व्यक्ति का न्याय कानून और उन प्रमाणों के आधार पर करता जो उसके विरुद्ध लाए गए होते, और इस प्रकार लिया हुआ ऋण वापस करने के लिए उस व्यक्ति को विवश किया जाता, या उसकी सारी संपत्ति उससे ले ली जाती, या चोर-लुटेरों के समान लोगों में से बाहर निकाल दिया जाता ।
- 3 और न्यायी अपने काम के समय के अनुसार अपना वेतन पाता—एक दिन के लिए सोने का एक सेनिन, या चांदी का एक सेनम जो कि सोने की एक सेनिन के बराबर होता था; और यह दिए गए नियम के अनुसार था ।
- 4 अब सोने और चांदी के मूल्य के अनुसार ये उनके सोने और चांदी के विभिन्न सिक्कों के नाम हैं । और ये नाम नफाइयों द्वारा रखे गए हैं, क्योंकि वे इनकी गिनती न तो यरूशलेम में रह रहे यहूदियों के समान करते थे; न ही यहूदियों के तरीकों से नापते थे; परन्तु हर पीढ़ी में, उन्होंने लोगों के विचार और उनकी परिस्थितियों के अनुसार इनकी गिनती और इनके नाप को बदल दिया, न्यायियों के शासन तक जब तक कि इन्हें राजा मुसायाह द्वारा स्थाई न कर दिया गया ।
- 5 अब गणना इस प्रकार है—सोने का एक सेनिन, सोने का एक सियोन, सोने का एक शम, और सोने का एक लिमनाह ।
- 6 चांदी का एक सेनम, चांदी का एक अमनोर, चांदी का एक इजरोम, और चांदी का एक ओण्टी ।
- 7 चांदी का एक सेनम सोने के एक सेनिन के बराबर था, जो कि जौ और हर प्रकार के अनाज के नाप-तोल के लिए था ।
- 8 अब सोने के एक सियोन का मूल्य एक सेनिन के मूल्य से दुगुना था ।
- 9 और सोने का एक शम एक सियोन के मूल्य से दुगुना था ।
- 10 और सोने के एक लिमनाह का मूल्य उन सबके बराबर था ।

## Alma 11

Now it was in the law of Mosiah that every man who was a judge of the law, or those who were appointed to be judges, should receive wages according to the time which they labored to judge those who were brought before them to be judged.

Now if a man owed another, and he would not pay that which he did owe, he was complained of to the judge; and the judge executed authority, and sent forth officers that the man should be brought before him; and he judged the man according to the law and the evidences which were brought against him, and thus the man was compelled to pay that which he owed, or be stripped, or be cast out from among the people as a thief and a robber.

And the judge received for his wages according to his time—a senine of gold for a day, or a senum of silver, which is equal to a senine of gold; and this is according to the law which was given.

Now these are the names of the different pieces of their gold, and of their silver, according to their value. And the names are given by the Nephites, for they did not reckon after the manner of the Jews who were at Jerusalem; neither did they measure after the manner of the Jews; but they altered their reckoning and their measure, according to the minds and the circumstances of the people, in every generation, until the reign of the judges, they having been established by king Mosiah.

Now the reckoning is thus—a senine of gold, a seon of gold, a shum of gold, and a limnah of gold.

A senum of silver, an amnor of silver, an ezrom of silver, and an onti of silver.

A senum of silver was equal to a senine of gold, and either for a measure of barley, and also for a measure of every kind of grain.

Now the amount of a seon of gold was twice the value of a senine.

And a shum of gold was twice the value of a seon.

And a limnah of gold was the value of them all.

11 और चांदी का एक अमनोर दो सेनम के बराबर था ।

And an amnor of silver was as great as two senums.

12 और चांदी का एक इजरोम चार सेनम के बराबर था ।

And an ezrom of silver was as great as four senums.

13 और एक ओण्टी का मूल्य इन सबके बराबर था ।

And an onti was as great as them all.

14 अब उनकी छोटी गणनाओं का मूल्य इस प्रकार है—

Now this is the value of the lesser numbers of their reckoning—

15 एक शिबलोन एक सेनम का आधा होता है; इसलिए जौ के आधे वजन के लिए एक शिबलोन ।

A shiblon is half of a senum; therefore, a shiblon for half a measure of barley.

16 और एक शिबलम एक शिबलोन के आधे मूल्य का है ।

And a shiblum is a half of a shiblon.

17 और एक लिआ एक शिबलम के आधे मूल्य का ।

And a Leah is the half of a shiblum.

18 अब उनकी गणना के अनुसार ये उनकी गिनती है ।

Now this is their number, according to their reckoning.

19 अब सोने का एक एण्टियन तीन शिबलोन के बराबर है ।

Now an antion of gold is equal to three shiblons.

20 अब, एकमात्र उद्देश्य था लाभ प्राप्त करना, क्योंकि उन्होंने अपने काम के अनुसार अपना वेतन पाया था, इसलिए, दंगा फसाद करने के लिए, और हर प्रकार की गड़बड़ी और दुष्टता के लिए उन्होंने लोगों को भड़काया, ताकि उनके पास अधिक काम हो और वे उन मुकदमों के अनुसार वेतन पा सकें जो उनके सामने लाए जाएं; इसलिए उन्होंने लोगों को अलमा और अमूलेक के विरुद्ध भड़काया ।

Now, it was for the sole purpose to get gain, because they received their wages according to their employ, therefore, they did stir up the people to riotings, and all manner of disturbances and wickedness, that they might have more employ, that they might get money according to the suits which were brought before them; therefore they did stir up the people against Alma and Amulek.

21 और इस जीजरोम ने अमूलेक से प्रश्न पूछना आरंभ किया, यह कहते हुए: क्या तुम मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर दोगे जो मैं तुमसे पुछूंगा ? अब जीजरोम एक ऐसा मनुष्य था जो शैतान की विधियों में दक्ष था, जिससे वह अच्छी चीजों को नष्ट कर सके; इसलिए, उसने अमूलेक से कहा: क्या तुम उन प्रश्नों का उत्तर दोगे जो मैं तुमसे पुछूंगा ?

And this Zeezrom began to question Amulek, saying: Will ye answer me a few questions which I shall ask you? Now Zeezrom was a man who was expert in the devices of the devil, that he might destroy that which was good; therefore, he said unto Amulek: Will ye answer the questions which I shall put unto you?

22 और अमूलेक ने उससे कहा: हां, यदि ऐसा प्रभु की उस आत्मा के अनुसार होगा जो कि मुझमें है; तो मैं प्रभु की आत्मा के विरुद्ध कुछ भी नहीं कहूंगा । और जीजरोम ने उससे कहा: देखो, ये चांदी की छह ओण्टियां हैं, और ये सब मैं तुम्हें दे दूंगा यदि तुम परमात्मा के अस्तित्व का इन्कार करोगे ।

And Amulek said unto him: Yea, if it be according to the Spirit of the Lord, which is in me; for I shall say nothing which is contrary to the Spirit of the Lord. And Zeezrom said unto him: Behold, here are six onties of silver, and all these will I give thee if thou wilt deny the existence of a Supreme Being.

23 अब अमूलेक ने कहा: ओ तुम नरक की संतान, क्यों तुम मुझे लालच देते हो ? क्या तुम नहीं जानते कि धर्मी लोग इस प्रकार के प्रलोभन में नहीं पड़ा करते ?

Now Amulek said: O thou child of hell, why tempt ye me? Knowest thou that the righteous yieldeth to no such temptations?

24 क्या तुम यह विश्वास करते हो कि परमेश्वर नहीं है ? मैं तुमसे कहता हूं, नहीं, तुम जानते हो कि परमेश्वर है, परन्तु तुम परमेश्वर से अधिक उस धन से प्रेम करते हो ।

Believest thou that there is no God? I say unto you, Nay, thou knowest that there is a God, but thou lovest that lucre more than him.

- 25 और अब परमेश्वर के सामने तुमने मुझसे झूठ कहा है। तुमने मुझसे कहा—देखो ये छह ओण्टी, जिनका मूल्य अधिक है, मैं तुम्हें दूंगा—तुम्हारे हृदय में उन्हें मुझसे लेकर अपने ही पास रखने की इच्छा थी; और यह तुम्हारी ही इच्छा थी कि मैं सच्चे और जीवित परमेश्वर को अस्वीकार करूं, जिससे मुझे नष्ट करने का कारण तुम्हें मिल सके। और अब देखो, इस महान बुराई के लिए तुम्हें तुम्हारा पुरस्कार मिलेगा।
- 26 और जीजरोम ने उससे कहा: तुम कहते हो कि एक सच्चा और जीवित परमेश्वर है ?
- 27 और अमूलेक ने कहा: हां, एक सच्चा और जीवित परमेश्वर है।
- 28 अब जीजरोम ने कहा: क्या एक से अधिक परमेश्वर है ?
- 29 और उसने उत्तर दिया, नहीं।
- 30 अब जीजरोम ने फिर से उससे कहा: तुम ये बातें कैसे जानते हो ?
- 31 और उसने कहा: एक स्वर्गदूत ने मुझे इन बातों की जानकारी दी है।
- 32 और जीजरोम ने फिर से कहा: वह कौन है जो आनेवाला है ? क्या वह परमेश्वर का पुत्र है ?
- 33 और उसने उससे कहा: हां।
- 34 और जीजरोम ने फिर से कहा: क्या वह अपने लोगों को उनके पापों में रहते हुए बचाएगा ? और अमूलेक ने उत्तर दिया और उससे कहा: मैं तुमसे कहता हूँ कि वह ऐसा नहीं करेगा, क्योंकि अपने शब्द को अस्वीकार करना उसके लिए असंभव है।
- 35 अब जीजरोम ने लोगों से कहा: देखो तुम इन बातों को याद रखना; क्योंकि उसने कहा कि केवल एक परमेश्वर है; फिर भी उसने कहा कि परमेश्वर का पुत्र आएगा, परन्तु वह अपने लोगों को नहीं बचाएगा—ऐसा लगता है कि इसके पास परमेश्वर को आज्ञा देने का अधिकार है।
- 36 अब अमूलेक ने फिर से उससे कहा: देखो तुमने झूठ कहा है, क्योंकि तुमने कहा है कि मुझे परमेश्वर को आज्ञा देने का अधिकार है क्योंकि मैंने कहा कि वह अपने लोगों को उनके पापों में रहते हुए नहीं बचाएगा।
- 37 और मैं फिर से तुमसे कहता हूँ कि वह उन्हें उनके पापों में रहते हुए उन्हें नहीं बचा सकता; क्योंकि मैं उसके शब्द को अस्वीकार नहीं कर सकता और उसने कहा है कि कोई भी अशुद्ध वस्तु स्वर्ग के राज्य का उत्तराधिकारी नहीं हो सकती; इसलिए, बिना स्वर्ग के राज्य का उत्तराधिकारी हुए तुम कैसे बचाए जा सकते हो ? इसलिए, तुम्हें तुम्हारे पापों में रहते हुए नहीं बचाया जा सकता।

And now thou hast lied before God unto me. Thou saidst unto me—Behold these six onties, which are of great worth, I will give unto thee—when thou hadst it in thy heart to retain them from me; and it was only thy desire that I should deny the true and living God, that thou mightest have cause to destroy me. And now behold, for this great evil thou shalt have thy reward.

And Zeezrom said unto him: Thou sayest there is a true and living God?

And Amulek said: Yea, there is a true and living God.

Now Zeezrom said: Is there more than one God?

And he answered, No.

Now Zeezrom said unto him again: How knowest thou these things?

And he said: An angel hath made them known unto me.

And Zeezrom said again: Who is he that shall come? Is it the Son of God?

And he said unto him, Yea.

And Zeezrom said again: Shall he save his people in their sins? And Amulek answered and said unto him: I say unto you he shall not, for it is impossible for him to deny his word.

Now Zeezrom said unto the people: See that ye remember these things; for he said there is but one God; yet he saith that the Son of God shall come, but he shall not save his people—as though he had authority to command God.

Now Amulek saith again unto him: Behold thou hast lied, for thou sayest that I spake as though I had authority to command God because I said he shall not save his people in their sins.

And I say unto you again that he cannot save them in their sins; for I cannot deny his word, and he hath said that no unclean thing can inherit the kingdom of heaven; therefore, how can ye be saved, except ye inherit the kingdom of heaven? Therefore, ye cannot be saved in your sins.

- 38 अब जीजरोम ने फिर से उससे कहा: क्या परमेश्वर का पुत्र ही अनंत पिता है ?
- 39 और अमूलेक ने उससे कहा: हां, वही स्वर्ग और पृथ्वी, और उनमें सारी वस्तुओं का अनंत पिता है; वही आदि और अंत है, पहला और आखिरी;
- 40 और वह संसार में अपने लोगों को मुक्ति दिलाने आएगा; और वह उन सभी के पापों को अपने ऊपर ले लेगा जो उसके नाम में विश्वास करते हैं; और ये वही लोग हैं जिन्हें अनंत जीवन मिलेगा और उद्धार किसी और के पास नहीं आएगा ।
- 41 इसलिए पापी लोग वैसे ही रह जाएंगे जैसे कि मुक्ति उनके लिए है ही नहीं, केवल मृत्यु के बंधन खोले जाएंगे; क्योंकि देखो, वह दिन आएगा जब सभी मृतक जीवित होकर परमेश्वर के सामने खड़े होंगे, और अपने कर्मों के अनुसार न्याय पाएंगे ।
- 42 अब, एक मृत्यु होगी जिसे शारीरिक मृत्यु कहते हैं; और मसीह की मृत्यु इस शारीरिक मृत्यु के बंधन को खोलेगी, ताकि सभी इस शारीरिक मृत्यु से जिलाए जा सकें ।
- 43 आत्मा और शरीर को फिर से उसके पूरे आकार में मिलाया जाएगा; अंगों और जोड़ों को फिर से उसके पूरे ढांचे में मिलाया जाएगा, बिल्कुल वैसे ही जैसे कि इस समय हमारा शरीर है; और हमें परमेश्वर के सामने खड़ा किया जाएगा, सब कुछ जानते हुए जैसे कि हमें अभी पता है, और हमारे सारे अपराध हमें भली-भांति याद दिलाए जाएंगे ।
- 44 अब, यह पुनर्जीवन सबके लिए होगा, चाहे बूढ़ा हो या युवा, चाहे दासता में हो या आजाद, चाहे पुरुष हो या स्त्री, चाहे दुष्ट हो या धर्मी; और यहां तक कि उनके सिर का एक बाल भी कम नहीं होगा; परन्तु हर चीज को उसके पूरे ढांचे में मिलाया जाएगा, जैसा कि अब, शरीर में है, और उनके कर्मों के अनुसार न्याय पाने के लिए, पुत्र मसीह, और पिता परमेश्वर, और पवित्र आत्मा, जोकि एक अनंत परमेश्वर हैं, की अदालत में न्याय के लिए लाया जाएगा, चाहे वे अच्छे हों या बुरे ।
- 45 अब, देखो, मैंने तुमसे नश्वर शरीर की मृत्यु से संबंधित बातें कही हैं, और नश्वर शरीर के पुनरुत्थान से संबंधित भी । मैं तुमसे कहता हूँ कि इस नश्वर शरीर को अमरत्व में उठाया जाएगा, जो कि मृत्यु है, यहां तक कि पहली मृत्यु से जीवन तक, ताकि वे फिर मर न सकें; उनकी आत्माओं को उनके शरीरों से मिलाते हुए, कभी भी अलग न होने के लिए; इस प्रकार वे पूरी तरह से आत्मिक और अमर हो जाएंगी, ताकि वे फिर से भ्रष्टता न देख सकें ।

Now Zeezrom saith again unto him: Is the Son of God the very Eternal Father?

And Amulek said unto him: Yea, he is the very Eternal Father of heaven and of earth, and all things which in them are; he is the beginning and the end, the first and the last;

And he shall come into the world to redeem his people; and he shall take upon him the transgressions of those who believe on his name; and these are they that shall have eternal life, and salvation cometh to none else.

Therefore the wicked remain as though there had been no redemption made, except it be the loosing of the bands of death; for behold, the day cometh that all shall rise from the dead and stand before God, and be judged according to their works.

Now, there is a death which is called a temporal death; and the death of Christ shall loose the bands of this temporal death, that all shall be raised from this temporal death.

The spirit and the body shall be reunited again in its perfect form; both limb and joint shall be restored to its proper frame, even as we now are at this time; and we shall be brought to stand before God, knowing even as we know now, and have a bright recollection of all our guilt.

Now, this restoration shall come to all, both old and young, both bond and free, both male and female, both the wicked and the righteous; and even there shall not so much as a hair of their heads be lost; but every thing shall be restored to its perfect frame, as it is now, or in the body, and shall be brought and be arraigned before the bar of Christ the Son, and God the Father, and the Holy Spirit, which is one Eternal God, to be judged according to their works, whether they be good or whether they be evil.

Now, behold, I have spoken unto you concerning the death of the mortal body, and also concerning the resurrection of the mortal body. I say unto you that this mortal body is raised to an immortal body, that is from death, even from the first death unto life, that they can die no more; their spirits uniting with their bodies, never to be divided; thus the whole becoming spiritual and immortal, that they can no more see corruption.

46 अब, जब अमूलेक ने इन शब्दों को कह लिया तो लोग फिर से आश्चर्यचकित होने लगे, और जीजरोम कांपने लगा । और इस प्रकार अमूलेक की बातें खत्म हुईं, या यही वे सब बातें हैं जिन्हें मैंने लिखा है ।

Now, when Amulek had finished these words the people began again to be astonished, and also Zeezrom began to tremble. And thus ended the words of Amulek, or this is all that I have written.

## अलमा 12

- 1 अब अलमा, यह देखते हुए कि अमूलेक की बातों ने जीजरुम को चुप कर दिया, क्योंकि उसने देखा कि अमूलेक ने उसे उसके झूठ और उसे नष्ट करने के प्रति उसके ही धोखे में पकड़ लिया, और यह देखते हुए वह अपने अपराधबोध में कांपने लगा, उसने अपना मुंह खोला और उससे बात करने लगा, और अमूलेक की बातों को स्थापित करने लगा, और इसके आगे की बातों को समझाने लगा, या अमूलेक द्वारा बताई गई बातों से आगे के धर्मशास्त्रों का भेद खोलने लगा ।
- 2 अब जिन बातों को अलमा ने जीजरुम से कहा था उसे वहां के सभी लोगों ने सुना; क्योंकि भीड़ बहुत थी, और उसने इस प्रकार कहा:
- 3 अब जीजरुम, यह देखते हुए कि तुम अपने ही झूठ और छल-कपट में फंस गए हो, क्योंकि तुमने केवल मनुष्य के प्रति ही झूठ नहीं बोला है बल्कि परमेश्वर के प्रति भी झूठ बोला है; क्योंकि देखो, वह तुम्हारे सारे विचारों को जानता है, और तुम देख सकते हो कि उसकी आत्मा द्वारा तुम्हारे विचार हम पर प्रकट किये गए हैं;
- 4 और तुम देख सकते हो कि हम जानते हैं कि तुम्हारी योजना, शैतान की धूर्तता के समान एक बहकाने वाली योजना थी, जिससे कि तुम इन लोगों से झूठ बोल सको और इन्हें धोखा दे सको जिसे तुमने हमारे विरुद्ध रचा था, हमारी निंदा करने के लिए और हमें बाहर निकालने के लिए ।
- 5 अब यह तुम्हारे शैतान की योजना थी, और उसने तुममें अपनी शक्ति का प्रयोग किया है । अब मैं चाहूंगा कि तुम याद रखो कि मैं जो तुमसे कहता हूँ वही मैं सबसे कहता हूँ ।
- 6 और देखो मैं तुम सबसे कहता हूँ कि यह शैतान का एक फंदा था, जिसे उसने इन लोगों को पकड़ने के लिए रखा था, ताकि वह तुम्हें अपने अधीन कर सके, ताकि वह तुम्हें अपनी बेड़ियों से जकड़ सके, ताकि अपने दासत्व की शक्ति के अनुसार वह तुम्हें तेजी से अनंत विनाश की तरफ ले जा सके ।
- 7 अब जब अलमा ने इन बातों को कह लिया, जीजरुम और भी अधिक कांपने लगा, क्योंकि उसे परमेश्वर की शक्ति का और भी अधिक विश्वास होने लगा था; और उसे इस बात का भी विश्वास हो गया था कि अलमा और अमूलेक उसके बारे में जानते थे, उसे यह भी विश्वास हो गया था कि वे उसके विचारों को और उसके मन की इच्छा को जानते थे; क्योंकि उन्हें शक्ति दी गई थी कि भविष्यवाणी की आत्मा द्वारा वे इन बातों को जान सकें ।

## Alma 12

Now Alma, seeing that the words of Amulek had silenced Zeezrom, for he beheld that Amulek had caught him in his lying and deceiving to destroy him, and seeing that he began to tremble under a consciousness of his guilt, he opened his mouth and began to speak unto him, and to establish the words of Amulek, and to explain things beyond, or to unfold the scriptures beyond that which Amulek had done.

Now the words that Alma spake unto Zeezrom were heard by the people round about; for the multitude was great, and he spake on this wise:

Now Zeezrom, seeing that thou hast been taken in thy lying and craftiness, for thou hast not lied unto men only but thou hast lied unto God; for behold, he knows all thy thoughts, and thou seest that thy thoughts are made known unto us by his Spirit;

And thou seest that we know that thy plan was a very subtle plan, as to the subtlety of the devil, for to lie and to deceive this people that thou mightest set them against us, to revile us and to cast us out—

Now this was a plan of thine adversary, and he hath exercised his power in thee. Now I would that ye should remember that what I say unto thee I say unto all.

And behold I say unto you all that this was a snare of the adversary, which he has laid to catch this people, that he might bring you into subjection unto him, that he might encircle you about with his chains, that he might chain you down to everlasting destruction, according to the power of his captivity.

Now when Alma had spoken these words, Zeezrom began to tremble more exceedingly, for he was convinced more and more of the power of God; and he was also convinced that Alma and Amulek had a knowledge of him, for he was convinced that they knew the thoughts and intents of his heart; for power was given unto them that they might know of these things according to the spirit of prophecy.

- 8 और जीजरोम ने निष्ठापूर्वक उनसे पूछताछ करना आरंभ कर दिया, ताकि वह परमेश्वर के राज्य से संबंधित बातों को और अधिक जान सके। और उसने अलमा से कहा: इसका क्या अर्थ है जिसके विषय में अमूलेक ने बताया कि मरे हुए लोगों का पुनरुत्थान होगा, कि सारे लोग चाहे न्यायी हो या अन्यायी, दोनों ही मृत्यु से जी उठेंगे, और उनके कर्मों के अनुसार न्याय के लिए उन्हें परमेश्वर के सामने लाया जाएगा ?
- 9 और अब अलमा ने उसे इन बातों को समझाना आरंभ किया, यह कहते हुए: बहुतों को परमेश्वर के रहस्यों की जानकारी दी गई है; फिर भी, उन्हें कड़ी आज्ञा दी गई है कि वे उस भेद को न खोलें, उसके वचन के केवल उस भेद को खोलें जिसे वह मानव संतान को उसके प्रति दिखाए गए ध्यान और निष्ठा के आधार पर देता है।
- 10 और इसलिए, वह जो अपने हृदय को कठोर करेगा, उसे उसके वचन का कम अंश प्राप्त होगा; और वह जो अपने हृदय को कठोर नहीं करेगा, उसे वचन का अधिक अंश दिया जाएगा, उसे परमेश्वर के रहस्यों की जानकारी तभी दी जाएगी जब वह उन्हें अच्छी तरह समझ जाएगा।
- 11 और वे जो अपने हृदय को कठोर करेंगे, उन्हें तब तक वचन का कम अंश भी नहीं दिया जाएगा जब तक कि वे उसके रहस्यों के विषय में कुछ भी नहीं जान लेते; और तब वे शैतान द्वारा बंदी बनाए जाएंगे, और उसकी इच्छा द्वारा विनाश की ओर ले जाए जाएंगे। अब नरक की जंजीरों द्वारा जकड़े जाने का यही अर्थ है।
- 12 और अमूलेक ने मृत्यु, और इस नश्वरता से अमरत्व की दशा में उठा लिए जाने, और हमारे कर्मों के अनुसार न्याय पाने के लिए परमेश्वर की अदालत में लाए जाने के विषय में स्पष्ट रूप से कहा।
- 13 फिर यदि हमारा हृदय कठोर होता है, हां, हम अपने हृदय को वचन के विरुद्ध इतना कठोर कर लेते हैं जैसे कि वह हमारे भीतर है ही नहीं, तो हमारी दशा भयंकर होगी, तब हमारी निंदा की जाएगी।
- 14 क्योंकि हमारी बातें ही हमें दोषी ठहराएंगी, हां, हमारे सभी कार्य हमें दोषी ठहराएंगे; हम निष्कलंक नहीं होंगे; और हमारे विचार भी हमें दोषी ठहराएंगे; और इस भयंकर दशा में हमें अपने परमेश्वर की तरफ देखने का साहस नहीं होगा; और हमें प्रसन्नता होगी यदि हम पर्वतों और चट्टानों को आज्ञा दे सकें कि परमेश्वर की उपस्थिति से छुपाने के लिए वे हम पर गिर जाएं।

And Zeezrom began to inquire of them diligently, that he might know more concerning the kingdom of God. And he said unto Alma: What does this mean which Amulek hath spoken concerning the resurrection of the dead, that all shall rise from the dead, both the just and the unjust, and are brought to stand before God to be judged according to their works?

And now Alma began to expound these things unto him, saying: It is given unto many to know the mysteries of God; nevertheless they are laid under a strict command that they shall not impart only according to the portion of his word which he doth grant unto the children of men, according to the heed and diligence which they give unto him.

And therefore, he that will harden his heart, the same receiveth the lesser portion of the word; and he that will not harden his heart, to him is given the greater portion of the word, until it is given unto him to know the mysteries of God until he know them in full.

And they that will harden their hearts, to them is given the lesser portion of the word until they know nothing concerning his mysteries; and then they are taken captive by the devil, and led by his will down to destruction. Now this is what is meant by the chains of hell.

And Amulek hath spoken plainly concerning death, and being raised from this mortality to a state of immortality, and being brought before the bar of God, to be judged according to our works.

Then if our hearts have been hardened, yea, if we have hardened our hearts against the word, inasmuch that it has not been found in us, then will our state be awful, for then we shall be condemned.

For our words will condemn us, yea, all our works will condemn us; we shall not be found spotless; and our thoughts will also condemn us; and in this awful state we shall not dare to look up to our God; and we would fain be glad if we could command the rocks and the mountains to fall upon us to hide us from his presence.

15 परन्तु ऐसा नहीं हो सकता है; हमें आना होगा और उसकी महिमा में, और उसके सामर्थ्य में, और उसके बल, प्रताप, और अधिकार में उसके सामने खड़ा होना होगा, और अपनी अनंत लज्जा को स्वीकार करेंगे कि उसके सारे न्याय सही हैं; कि वह अपने सभी कार्यों में न्यायी है, और वह मानव संतान के प्रति दयालु है, और हर उस मनुष्य को बचाने का सामर्थ्य उसके पास है जो उसके नाम में विश्वास करते हैं और पश्चात्ताप कर फल प्राप्त करते हैं।

16 और अब देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि मृत्यु फिर से आती है, दूसरी मृत्यु, जो कि आत्मिक मृत्यु है; फिर वह समय आता है जब वो जो अपने शारीरिक मृत्यु के रूप में, अपने पापों में ही मर जाता है, उसकी भी आत्मिक मृत्यु होगी; हां, धार्मिकता के प्रति उसकी मृत्यु होगी।

17 फिर वह समय आता है जब उनकी यातना आग और गंधक के उस झील के समान होगी, जिसकी लपटें सदैव उठती ही रहती हैं; और तब वह समय आता है जब शैतान की इच्छा के वशीभूत होकर, उसकी शक्ति और दासत्व के अनुसार अनंत विनाश के लिए उन्हें जजिरों में बांध दिया जाएगा।

18 फिर, मैं तुमसे कहता हूँ, वे वैसे ही होंगे जैसे कि उनके लिए मुक्ति नहीं है; क्योंकि परमेश्वर के न्याय के अनुसार उन्हें मुक्त नहीं किया जा सकेगा; और कोई भ्रष्टाचार नहीं होगा इसलिए वे मर भी नहीं सकेंगे।

19 अब ऐसा हुआ कि जब अलमा ने इन बातों को कहना बंद किया, तो लोग और अधिक आश्चर्यचकित होने लगे;

20 परन्तु एक अंतीओना था, जो उनका मुख्य शासक था, आगे आकर उससे कहा: यह क्या है जिसे तुमने कहा है, कि मनुष्य मरे हुआओं में से जी उठेगा और इस नश्वरता से अमरत्व की दशा में आ जाएगा, कि आत्मा की मृत्यु कभी नहीं हो सकती ?

21 उस धर्मशास्त्र का अर्थ क्या है, जो कहती है कि परमेश्वर ने अदन की वाटिका के पूर्व में केरुबीम और जलती हुई तलवार रखी है, ताकि कहीं ऐसा न हो कि हमारे प्रथम माता-पिता उसमें प्रवेश कर जीवन के वृक्ष का फल खा लें, और सदा के लिए अमर हो जाएं ? और इस प्रकार हम देखते हैं कि यह संभव नहीं था कि वे सदा के लिए जीवित रह सकें।

22 अब अलमा ने उससे कहा: यही वह बात है जिसे मैं अभी समझाने वाला था। अब हम देखते हैं कि परमेश्वर के वचन के अनुसार, मना किये गए फल को खाने के पश्चात् आदम का पतन हुआ था; और इस प्रकार हम देखते हैं कि इस पतन के द्वारा, सारी मानवजाति एक खोई हुई और पतित कहलाई।

But this cannot be; we must come forth and stand before him in his glory, and in his power, and in his might, majesty, and dominion, and acknowledge to our everlasting shame that all his judgments are just; that he is just in all his works, and that he is merciful unto the children of men, and that he has all power to save every man that believeth on his name and bringeth forth fruit meet for repentance.

And now behold, I say unto you then cometh a death, even a second death, which is a spiritual death; then is a time that whosoever dieth in his sins, as to a temporal death, shall also die a spiritual death; yea, he shall die as to things pertaining unto righteousness.

Then is the time when their torments shall be as a lake of fire and brimstone, whose flame ascendeth up forever and ever; and then is the time that they shall be chained down to an everlasting destruction, according to the power and captivity of Satan, he having subjected them according to his will.

Then, I say unto you, they shall be as though there had been no redemption made; for they cannot be redeemed according to God's justice; and they cannot die, seeing there is no more corruption.

Now it came to pass that when Alma had made an end of speaking these words, the people began to be more astonished;

But there was one Antionah, who was a chief ruler among them, came forth and said unto him: What is this that thou hast said, that man should rise from the dead and be changed from this mortal to an immortal state, that the soul can never die?

What does the scripture mean, which saith that God placed cherubim and a flaming sword on the east of the garden of Eden, lest our first parents should enter and partake of the fruit of the tree of life, and live forever? And thus we see that there was no possible chance that they should live forever.

Now Alma said unto him: This is the thing which I was about to explain. Now we see that Adam did fall by the partaking of the forbidden fruit, according to the word of God; and thus we see, that by his fall, all mankind became a lost and fallen people.



- 23 और अब देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि उस समय यदि ऐसा संभव होता कि आदम जीवन के वृक्ष का फल खा लेता, तो कोई मृत्यु नहीं होती, और परमेश्वर को झूठा साबित करते हुए वचन व्यर्थ हो जाता, क्योंकि उसने कहा है: यदि तुम खाओगे तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है।
- 24 और हम देखते हैं कि मृत्यु मानवजाति पर आती है, हां, वह मृत्यु जिसके विषय में अमूलेक ने बताया है, जो कि शारीरिक मृत्यु है; फिर भी मनुष्य को एक मौका दिया गया है जिसमें वह पश्चात्ताप कर सके; इसलिए यह जीवन परीक्षा का एक समय है; परमेश्वर से मिलने की तैयारी का एक समय; उस अंतहीन अवस्था की तैयारी का एक समय जिसके विषय में हमें बताया गया है, जो कि मरे हुएों के पुनरुत्थान के पश्चात् होगी।
- 25 अब, संसार की नींव के समय से यदि मुक्ति की योजना नहीं बनाई गई होती, तो मरे हुएों का पुनरुत्थान नहीं होता; परन्तु मुक्ति की योजना बनाई गई थी, जो कि मरे हुएों पर पुनरुत्थान लाएगी, जिसके विषय में कहा गया है।
- 26 और अब देखो, यदि ऐसा संभव होता कि हमारे प्रथम माता-पिता जाकर जीवन के वृक्ष का फल खा लेते तो वे सदा के लिए दुर्दशा की स्थिति में ही रह जाते, तैयारी की किसी भी अवस्था को न प्राप्त करते हुए; और इस प्रकार कोई भी प्रभाव न लाते हुए मुक्ति की योजना निरर्थक होती और परमेश्वर का वचन व्यर्थ हो जाता।
- 27 लेकिन देखो, ऐसा नहीं है; परन्तु इसे लोगों के लिए नियुक्त किया गया था कि उनकी मृत्यु हो; और मृत्यु के पश्चात्, वे न्याय पाने के लिए आएँ, वही न्याय जिसके विषय में हमने कहा है, जो कि अंत है।
- 28 और परमेश्वर द्वारा नियुक्त करने के पश्चात् कि ये चीजें मनुष्य के प्रति हों, देखो, फिर उसने देखा कि यह आवश्यक था कि मनुष्य उन चीजों से संबंधित बातों को जाने जिसे उसने उनके लिए नियुक्त किया है;
- 29 इसलिए उनसे बात करने के लिए उसने स्वर्गदूतों को भेजा, जिन्होंने मनुष्यों को उसकी महिमा दिखाई।
- 30 और उसी समय से वे उसका नाम पुकारने लगे; इसलिए परमेश्वर ने मनुष्यों से बातें की, और उन्हें मुक्ति की उस योजना के विषय में जानकारी दी जिसे संसार की नींव के समय ही बना लिया गया था; और इसकी जानकारी उसने उन्हें उनके विश्वास और पश्चात्ताप और उनके पवित्र कार्यों के अनुसार दी।

And now behold, I say unto you that if it had been possible for Adam to have partaken of the fruit of the tree of life at that time, there would have been no death, and the word would have been void, making God a liar, for he said: If thou eat thou shalt surely die.

And we see that death comes upon mankind, yea, the death which has been spoken of by Amulek, which is the temporal death; nevertheless there was a space granted unto man in which he might repent; therefore this life became a probationary state; a time to prepare to meet God; a time to prepare for that endless state which has been spoken of by us, which is after the resurrection of the dead.

Now, if it had not been for the plan of redemption, which was laid from the foundation of the world, there could have been no resurrection of the dead; but there was a plan of redemption laid, which shall bring to pass the resurrection of the dead, of which has been spoken.

And now behold, if it were possible that our first parents could have gone forth and partaken of the tree of life they would have been forever miserable, having no preparatory state; and thus the plan of redemption would have been frustrated, and the word of God would have been void, taking none effect.

But behold, it was not so; but it was appointed unto men that they must die; and after death, they must come to judgment, even that same judgment of which we have spoken, which is the end.

And after God had appointed that these things should come unto man, behold, then he saw that it was expedient that man should know concerning the things whereof he had appointed unto them;

Therefore he sent angels to converse with them, who caused men to behold of his glory.

And they began from that time forth to call on his name; therefore God conversed with men, and made known unto them the plan of redemption, which had been prepared from the foundation of the world; and this he made known unto them according to their faith and repentance and their holy works.

- 31 इसलिए, उसने लोगों को आज्ञाएं दी, लौकिक बातों से संबंधित पहली आज्ञाओं का उन्होंने पहले उल्लंघन किया था, और अच्छे और बुरे को जानते हुए, परमेश्वर के समान बनते हुए, अपनी इच्छाओं और खुशियों के अनुसार स्वयं को कर्म करने की दशा में रखते हुए, या ये कहें कि बुराई या अच्छाई करने के प्रति उन्हें कर्म करने की दशा में रखा गया था ।
- 32 इसलिए मुक्ति की योजना की जानकारी उन्हें देने के पश्चात, परमेश्वर ने उन्हें आज्ञाएं दी, ताकि वे बुरे कर्म न करें, जिसका दंड है दूसरी मृत्यु, जो कि धार्मिकता से संबंधित बातों की अनंत मृत्यु थी; जिस पर मुक्ति की योजना का कोई अधिकार नहीं था, क्योंकि परमेश्वर की सर्वोच्च अच्छाई के अनुसार, न्याय के कार्यों को नष्ट नहीं किया जा सकता ।
- 33 परन्तु परमेश्वर ने अपने पुत्र के नाम में मनुष्यों को बुलाया, (रखी गई मुक्ति की इस योजना के आधार पर) यह कहते हुए: यदि तुम पश्चाताप करोगे और अपने हृदयों को कठोर नहीं करोगे, तो मैं अपने एकलौते पुत्र के द्वारा तुम पर दया करूंगा;
- 34 इसलिए, जो कोई भी पश्चाताप करता है, और अपने हृदय को कठोर नहीं करता है, अपने पापों की क्षमा के लिए वह मेरे एकलौते पुत्र के द्वारा दया का अधिकारी है; और यही मेरे आरामगाह में प्रवेश कर सकते हैं ।
- 35 और जो कोई अपने हृदय को कठोर करेगा और दुष्टता करेगा, देखो, मैं क्रोध में शपथ लेकर कहता हूं कि वह मेरे आरामगाह में प्रवेश नहीं करेगा ।
- 36 और अब, मेरे भाइयों, देखो मैं तुमसे कहता हूं, कि यदि तुम अपने हृदय को कठोर करोगे तो तुम प्रभु के आरामगाह में प्रवेश नहीं करोगे; इसलिए तुम्हारी दुष्टता उसे उत्तेजित करती है जिससे कि वह पहली उत्तेजना में तुम पर अपना क्रोध भेजता है, हां, तुम्हारी आत्माओं के अनंत विनाश के लिए, पहली और आखिरी उत्तेजना में दिए गए उसके वचन के अनुसार; इसलिए, उसके वचन के अनुसार अंतिम और यहां तक कि पहली मृत्यु के लिए भी ।
- 37 और अब, मेरे भाइयों, यह देखते हुए कि हम इन बातों को जानते हैं, और ये सच्ची हैं, चलो पश्चाताप करें, और अपने हृदय को कठोर न करें, ताकि उसकी दूसरी आज्ञाओं में जिसे उसने हमें दिया है, हम प्रभु अपने परमेश्वर को हमारे ऊपर उसके क्रोध के प्रति उत्तेजित न करें; परन्तु चलो हम परमेश्वर के आरामगाह में प्रवेश करें, जिसे उसके वचन के अनुसार बनाया गया है ।

Wherefore, he gave commandments unto men, they having first transgressed the first commandments as to things which were temporal, and becoming as gods, knowing good from evil, placing themselves in a state to act, or being placed in a state to act according to their wills and pleasures, whether to do evil or to do good—

Therefore God gave unto them commandments, after having made known unto them the plan of redemption, that they should not do evil, the penalty thereof being a second death, which was an everlasting death as to things pertaining unto righteousness; for on such the plan of redemption could have no power, for the works of justice could not be destroyed, according to the supreme goodness of God.

But God did call on men, in the name of his Son, (this being the plan of redemption which was laid) saying: If ye will repent, and harden not your hearts, then will I have mercy upon you, through mine Only Begotten Son;

Therefore, whosoever repenteth, and hardeneth not his heart, he shall have claim on mercy through mine Only Begotten Son, unto a remission of his sins; and these shall enter into my rest.

And whosoever will harden his heart and will do iniquity, behold, I swear in my wrath that he shall not enter into my rest.

And now, my brethren, behold I say unto you, that if ye will harden your hearts ye shall not enter into the rest of the Lord; therefore your iniquity provoketh him that he sendeth down his wrath upon you as in the first provocation, yea, according to his word in the last provocation as well as the first, to the everlasting destruction of your souls; therefore, according to his word, unto the last death, as well as the first.

And now, my brethren, seeing we know these things, and they are true, let us repent, and harden not our hearts, that we provoke not the Lord our God to pull down his wrath upon us in these his second commandments which he has given unto us; but let us enter into the rest of God, which is prepared according to his word.

## अलमा 13

- 1 और फिर से, मेरे भाइयों, मैं तुम्हारे मन में उस समय को दिखाना चाहता हूँ जब प्रभु परमेश्वर ने अपने बच्चों को इन आज्ञाओं को दिया था; और मैं चाहूँगा कि तुम याद रखो कि प्रभु परमेश्वर ने अपनी पवित्र रीति के अनुसार, लोगों को इन बातों को सिखाने के लिए याजकों को नियुक्त किया है, जो कि उसके पुत्र की रीति के अनुसार थी।
- 2 और उन याजकों को उसके पुत्र की रीति के अनुसार नियुक्त किया गया था, इस तरीके से जिससे कि इसके पश्चात लोग जान सकें कि मुक्ति के लिए उसके पुत्र की तरफ किस प्रकार से देखना है।
- 3 और यही वह तरीका है जिससे उन्हें नियुक्त किया गया था—परमेश्वर के पूर्व ज्ञान के अनुसार संसार की नींव से ही बुलाए और तैयार किये गए थे; उनके अत्याधिक विश्वास और अच्छे कार्यों के आधार पर, पहले ही स्थान पर अच्छे और बुरे का चुनाव करने के लिए; इसलिए अच्छा चुनाव करने और अत्याधिक महान विश्वास करने के कारण उन्हें पवित्र बुलाहट दी गई थी, हाँ, इस प्रकार के प्रथम मुक्ति के प्रति उस पवित्र बुलाहट से जिसे तैयार किया गया था।
- 4 और इस प्रकार उनके विश्वास के आधार पर इस पवित्र बुलाहट के लिए उन्हें चुना गया था, जब कि दूसरों ने अपने हृदय की कठोरता और अपने मन के अन्धेपन के कारण परमेश्वर की आत्मा को अस्वीकार किया था, और यदि ऐसा नहीं होता तो उनके पास भी उनके भाइयों के समान महान सुअवसर था।
- 5 या फिर, पहले स्थान पर वे अपने भाइयों के समान ही होते; इस प्रकार इस पवित्र बुलाहट की तैयारी संसार की नींव से ही उन लोगों के लिए है जो अपने हृदयों को कठोर नहीं करते, पश्चाताप में रहते हुए और एकलौते पुत्र के प्रायश्चित के द्वारा, जिसे तैयार किया गया था—
- 6 और इस प्रकार वे इस पवित्र बुलाहट द्वारा बुलाए जाते, और मानव संतानों को उसकी आज्ञाओं को सिखाने के लिए परमेश्वर की पवित्र रीति के अनुसार उच्च पौरोहित्य के पद पर नियुक्त किये जाते, ताकि वे भी उसके आरामगाह में प्रवेश कर सकें—
- 7 यह उच्च पौरोहित्य उसके पुत्र की रीति के अनुसार था, जो रीति संसार की नींव से ही थी; या अन्य शब्दों में, जो बिना दिनों के आरंभ और वर्षों के अंत से थी, सारी बातों को उसके पूर्व ज्ञान के अनुसार जिसे अनंतता से अनंतकाल तक के लिए तैयार किया गया था—

## Alma 13

And again, my brethren, I would cite your minds forward to the time when the Lord God gave these commandments unto his children; and I would that ye should remember that the Lord God ordained priests, after his holy order, which was after the order of his Son, to teach these things unto the people.

And those priests were ordained after the order of his Son, in a manner that thereby the people might know in what manner to look forward to his Son for redemption.

And this is the manner after which they were ordained—being called and prepared from the foundation of the world according to the foreknowledge of God, on account of their exceeding faith and good works; in the first place being left to choose good or evil; therefore they having chosen good, and exercising exceedingly great faith, are called with a holy calling, yea, with that holy calling which was prepared with, and according to, a preparatory redemption for such.

And thus they have been called to this holy calling on account of their faith, while others would reject the Spirit of God on account of the hardness of their hearts and blindness of their minds, while, if it had not been for this they might have had as great privilege as their brethren.

Or in fine, in the first place they were on the same standing with their brethren; thus this holy calling being prepared from the foundation of the world for such as would not harden their hearts, being in and through the atonement of the Only Begotten Son, who was prepared—

And thus being called by this holy calling, and ordained unto the high priesthood of the holy order of God, to teach his commandments unto the children of men, that they also might enter into his rest—

This high priesthood being after the order of his Son, which order was from the foundation of the world; or in other words, being without beginning of days or end of years, being prepared from eternity to all eternity, according to his foreknowledge of all things—

- 8 और अब इस रीति के अनुसार उन्हें नियुक्त किया गया—उन्हें पवित्र बुलाहट के द्वारा बुलाया गया, और वे पवित्र विधि से नियुक्त किये गए, और स्वयं पवित्र रीति के अनुसार उच्च पौरोहित्य ग्रहण किया, जो कि वह बुलाहट, और विधि और उच्च पौरोहित्य है जिसका कोई आरंभ और अंत नहीं है ।
- 9 इस प्रकार वे पिता के उस एकलौते पुत्र की रीति के अनुसार सदा के लिए उच्च याजक बन गए जो कि दिनों के आरंभ और वर्षों के अंत से परे है, जो कि अनुग्रह, समानता, और सच्चाई से परिपूर्ण है । और इस प्रकार ऐसा ही है । आमीन ।
- 10 अब, जैसा कि मैंने पवित्र रीति से संबंधित, या इस उच्च पौरोहित्य से संबंधित कहा है, कई लोग थे जिन्हें नियुक्त किया गया और परमेश्वर के उच्च याजक बने; और ऐसा उनके अत्याधिक विश्वास और पश्चाताप, और परमेश्वर के सामने उनकी धार्मिकता के आधार पर हुआ था, उनके द्वारा विनाश की बजाय पश्चाताप और धार्मिक कार्य को चुनते हुए ।
- 11 इसलिए उन्हें उसके पवित्र रीति के द्वारा नियुक्त किया गया, और उनका पवित्रीकरण हुआ, और मेमने के लहू द्वारा उनके वस्त्रों को स्वच्छ किया गया ।
- 12 अब पवित्र आत्मा द्वारा पवित्रीकरण होने, और उनके वस्त्रों को स्वच्छ किये जाने के पश्चात वे परमेश्वर के सामने शुद्ध और बेदाग थे, पाप की तरफ केवल घृणा से देखते; और कई लोग थे, बहुत बड़ी संख्या में, जिन्हें शुद्ध किया गया और जिन्होंने प्रभु अपने परमेश्वर के आरामगाह में प्रवेश किया ।
- 13 और अब, मेरे भाइयों, मैं चाहूंगा कि तुम स्वयं को परमेश्वर के सामने विनम्र करो, और पश्चाताप का फल लाओ, ताकि तुम भी आरामगाह में प्रवेश कर सको ।
- 14 हां, तुम अपने आपको वैसा ही दीन करो जैसा कि उस मेल्कीसेदेक के समय में लोगों ने किया था, जो कि इसी रीति से एक उच्च याजक भी बनाया गया था जिसके बारे में मैंने कहा है, जिसने सदा के लिए उच्च पौरोहित्य भी ग्रहण किया था ।
- 15 और यह वही मेल्कीसेदेक था जिसे इब्राहीम ने दसमांश दिया था; हां, हमारे पिता इब्राहीम ने भी अपनी सारी संपत्ति का दसवां हिस्सा दसमांश के रूप में दिया था ।

Now they were ordained after this manner—being called with a holy calling, and ordained with a holy ordinance, and taking upon them the high priesthood of the holy order, which calling, and ordinance, and high priesthood, is without beginning or end—

Thus they become high priests forever, after the order of the Son, the Only Begotten of the Father, who is without beginning of days or end of years, who is full of grace, equity, and truth. And thus it is. Amen.

Now, as I said concerning the holy order, or this high priesthood, there were many who were ordained and became high priests of God; and it was on account of their exceeding faith and repentance, and their righteousness before God, they choosing to repent and work righteousness rather than to perish;

Therefore they were called after this holy order, and were sanctified, and their garments were washed white through the blood of the Lamb.

Now they, after being sanctified by the Holy Ghost, having their garments made white, being pure and spotless before God, could not look upon sin save it were with abhorrence; and there were many, exceedingly great many, who were made pure and entered into the rest of the Lord their God.

And now, my brethren, I would that ye should humble yourselves before God, and bring forth fruit meet for repentance, that ye may also enter into that rest.

Yea, humble yourselves even as the people in the days of Melchizedek, who was also a high priest after this same order which I have spoken, who also took upon him the high priesthood forever.

And it was this same Melchizedek to whom Abraham paid tithes; yea, even our father Abraham paid tithes of one-tenth part of all he possessed.

- 16 अब इसी तरीके से इन विधियों को दिया गया, ताकि इसके पश्चात लोग परमेश्वर के पुत्र की ओर देख सकें, उसी के तरीके के समान, या उसी के तरीके से, और यह कि अपने पापों के पश्चाताप के लिए वे उसकी तरफ देख सकें, जिससे कि वे प्रभु के आरामगाह में प्रवेश कर सकें ।
- 17 अब यही मेल्कीसेदेक शालेम प्रदेश का राजा था; और उसके लोग दुष्टता और घृणित कार्यों में लगे हुए थे; हां, वे सब भटक गए थे; वे हर प्रकार की दुष्टता से भरे हुए थे;
- 18 परन्तु मेल्कीसेदेक ने महान विश्वास बढ़ाया, और परमेश्वर की पवित्र रीति के अनुसार उच्च पौरोहित्य के पद को प्राप्त किया, और अपने लोगों के लिए पश्चाताप का प्रचार भी किया । और देखो, उन्होंने पश्चाताप किया; और मेल्कीसेदेक ने अपने समय में अपने देश में शांति स्थापित किया; इसलिए, उसे शांति का राजकुमार कहा गया, क्योंकि वह शालेम का राजा था; और उसने अपने पिता की देखरेख में शासन किया था ।
- 19 अब, उससे पहले भी कई थे, और उसके बाद भी कई हुए, परन्तु कोई भी उससे महान नहीं था; इसलिए, विशेषकर उसके बारे में अधिक वर्णन किया गया है ।
- 20 अब मैं इस बात को दोहराने की आवश्यकता नहीं समझता; जितना मैंने कहा उतना पर्याप्त है । देखो, धर्मशास्त्र तुम्हारे सामने है; यदि तुम उसे तोड़-मरोड़ करोगे तो वह तुम्हारे विनाश का कारण बनेगा ।
- 21 और अब ऐसा हुआ कि जब अलमा ने उनसे इन शब्दों को कहा, उसने अपने हाथ को उनके सामने फैलाया और शक्तिशाली आवाज में यह कहते हुए चिल्लाया: अब पश्चाताप करने का समय है, क्योंकि उद्धार का समय नजदीक है ।
- 22 हां, और स्वर्गदूतों के मुंह द्वारा, प्रभु की आवाज ने सभी राष्ट्रों के लिए घोषित किया है; हां, घोषित किया है, ताकि उनके पास महान आनंद का सुसमाचार हो सके; हां, और उसने अपने सारे लोगों के बीच में इस सुसमाचार को सुनाया, हां, उनके लिए भी जो लोग पृथ्वी पर दूर-दूर तक तितर-बितर हो गए हैं; इस कारण वे हमारे पास आ गए ।
- 23 और स्पष्ट रूप से हमें उनकी जानकारी दी गई है, कि हम समझ सकें, ताकि हम गलती न करें; और ऐसा अनजान प्रदेश में हमारे बंजारों के कारण है; इसलिए, हम विशेष कृपापात्र हैं, क्योंकि हमारे अंगूर के बगीचे के हर भाग में यह सुसमाचार हमारे लिए है ।

Now these ordinances were given after this manner, that thereby the people might look forward on the Son of God, it being a type of his order, or it being his order, and this that they might look forward to him for a remission of their sins, that they might enter into the rest of the Lord.

Now this Melchizedek was a king over the land of Salem; and his people had waxed strong in iniquity and abomination; yea, they had all gone astray; they were full of all manner of wickedness;

But Melchizedek having exercised mighty faith, and received the office of the high priesthood according to the holy order of God, did preach repentance unto his people. And behold, they did repent; and Melchizedek did establish peace in the land in his days; therefore he was called the prince of peace, for he was the king of Salem; and he did reign under his father.

Now, there were many before him, and also there were many afterwards, but none were greater; therefore, of him they have more particularly made mention.

Now I need not rehearse the matter; what I have said may suffice. Behold, the scriptures are before you; if ye will wrest them it shall be to your own destruction.

And now it came to pass that when Alma had said these words unto them, he stretched forth his hand unto them and cried with a mighty voice, saying: Now is the time to repent, for the day of salvation draweth nigh;

Yea, and the voice of the Lord, by the mouth of angels, doth declare it unto all nations; yea, doth declare it, that they may have glad tidings of great joy; yea, and he doth sound these glad tidings among all his people, yea, even to them that are scattered abroad upon the face of the earth; wherefore they have come unto us.

And they are made known unto us in plain terms, that we may understand, that we cannot err; and this because of our being wanderers in a strange land; therefore, we are thus highly favored, for we have these glad tidings declared unto us in all parts of our vineyard.

- 24 क्योंकि देखो, हमारे प्रदेश में इस समय स्वर्गदूत इसकी घोषणा कई लोगों को कर रहे हैं; और इसका उद्देश्य है कि उसकी महिमा में उसके आगमन के समय, उसके वचन को प्राप्त करने के लिए मानव संतानों के हृदयों को तैयार किया जा सके ।
- 25 और अब हम स्वर्गदूतों के मुंह द्वारा, उसके आगमन के बारे में घोषित आनंदपूर्ण सुसमाचार को सुनने की केवल प्रतीक्षा कर सकते हैं; क्योंकि समय आता है, पर हमें नहीं पता कि कितना शीघ्र । परमेश्वर से विनती करता हूँ कि ऐसा मेरे समय में हो; परन्तु चाहे वह दिन शीघ्र आए या बाद में, उसमें मैं आनंदित होऊँगा ।
- 26 और उसके आगमन के समय, स्वर्गदूतों के मुंह द्वारा इसकी जानकारी न्यायी और पवित्र लोगों को दी जाएगी, ताकि हमारे पिता की बातें उसके अनुसार पूरी हो सकें जिसके संबंध में कही गई हैं, जो कि उनमें उपस्थित भविष्यवाणी की आत्मा के अनुसार थी ।
- 27 और अब, मेरे भाइयों, मैं अपने हृदय की गहराई से, हां, पीड़ा की अत्याधिक व्यग्रता से चाहता हूँ, कि तुम मेरी बातों पर ध्यान दो, और अपने पापों को छोड़ दो, और अपने पश्चाताप के दिन को न टालो;
- 28 परन्तु यह कि तुम अपने आपको प्रभु के सामने विनम्र करो, और उसके नाम में बुलाओ, और ध्यान दो और निरंतर प्रार्थना करते रहो, ताकि जितना तुम सह सको उससे अधिक लालच में न पड़ो, और इस प्रकार विनम्र, कोमल, आज्ञाकारी, धैर्यवान, प्रेम से परिपूर्ण और लंबे समय तक सहनेवाले बनते हुए, पवित्र आत्मा के द्वारा मार्गदर्शित हो ।
- 29 प्रभु पर विश्वास रखते हुए; आशा रखते हुए कि तुम्हें अनंत जीवन मिलेगा; सदैव अपने हृदय में परमेश्वर का प्रेम रखते हुए, ताकि अंतिम दिन तुम उत्कर्ष पा सको और उसके आरामगाह में प्रवेश कर सको ।
- 30 और प्रभु तुम्हें पश्चाताप दे दे, कि तुम पर उसका क्रोध न आ सके, कि तुम नरक की जंजीरों से न बांधे जाओ, ताकि तुम दूसरी मृत्यु न सहो ।
- 31 और अलमा ने लोगों से और भी बहुत सी बातें की, जिसे इस पुस्तक में नहीं लिखा गया है ।

For behold, angels are declaring it unto many at this time in our land; and this is for the purpose of preparing the hearts of the children of men to receive his word at the time of his coming in his glory.

And now we only wait to hear the joyful news declared unto us by the mouth of angels, of his coming; for the time cometh, we know not how soon. Would to God that it might be in my day; but let it be sooner or later, in it I will rejoice.

And it shall be made known unto just and holy men, by the mouth of angels, at the time of his coming, that the words of our fathers may be fulfilled, according to that which they have spoken concerning him, which was according to the spirit of prophecy which was in them.

And now, my brethren, I wish from the inmost part of my heart, yea, with great anxiety even unto pain, that ye would hearken unto my words, and cast off your sins, and not procrastinate the day of your repentance;

But that ye would humble yourselves before the Lord, and call on his holy name, and watch and pray continually, that ye may not be tempted above that which ye can bear, and thus be led by the Holy Spirit, becoming humble, meek, submissive, patient, full of love and all long-suffering;

Having faith on the Lord; having a hope that ye shall receive eternal life; having the love of God always in your hearts, that ye may be lifted up at the last day and enter into his rest.

And may the Lord grant unto you repentance, that ye may not bring down his wrath upon you, that ye may not be bound down by the chains of hell, that ye may not suffer the second death.

And Alma spake many more words unto the people, which are not written in this book.

## अलमा 14

- 1 और ऐसा हुआ कि जब उसने लोगों से बोलना समाप्त किया तब उनमें से कई लोगों ने उसकी बातों में विश्वास किया, और पश्चाताप करने लगे, और धर्मशास्त्रों की खोज करने लगे ।
- 2 परन्तु उनमें से अधिकतर लोग अलमा और अमूलेक को नष्ट करने की इच्छा रखते थे; क्योंकि जीजरुम को स्पष्ट शब्दों में कहे जाने के कारण वे अलमा से क्रोधित थे; और उन्होंने यह भी कहा कि अमूलेक ने उनसे झूठ कहा था, और कानून और उनके वकीलों और न्यायियों का विरोध किया था ।
- 3 और वे अलमा और अमूलेक से भी क्रोधित थे; और क्योंकि उन्होंने उनकी दुष्टता के खिलाफ बोला था, वे उन्हें दूर गुप्त में मारना चाहते थे ।
- 4 परन्तु ऐसा हुआ कि वे इसे नहीं कर सके; परन्तु उन्होंने उन्हें ले जाकर मजबूत रस्सियों से बांध दिया और उन्हें प्रदेश के मुख्य न्यायी के सामने ले गए ।
- 5 और लोगों ने जाकर उनके विरुद्ध साक्षी दी—गवाही देते हुए कि उन्होंने कानून और देश के उनके वकीलों और न्यायियों का विरोध किया था, और उस प्रदेश में रह रहे लोगों का भी; और यह भी गवाही दी कि केवल एक ही परमेश्वर था, और यह कि लोगों के बीच वह अपने पुत्र को भेजेगा, परन्तु वह उन्हें बचाएगा नहीं; और इस प्रकार की कई बातों की गवाही लोगों ने अलमा और अमूलेक के विरुद्ध दी । अब यह प्रदेश के मुख्य न्यायी के सामने हुआ था ।
- 6 और ऐसा हुआ कि बोली गई बातों से जीजरुम आश्चर्यचकित था; और वह मन के अन्धेपन को भी जानता था, जिसे उसने अपने झूठ द्वारा लोगों के बीच उत्पन्न किया था; और उसकी आत्मा उसके स्वयं के अपराधबोध से दुखी होने लगी थी; हां, वह नरक की पीड़ा से घिरने लगा था ।
- 7 और ऐसा हुआ कि वह लोगों से याचना करने लगा, यह कहते हुए: देखो, मैं अपराधी हूँ, और ये लोग परमेश्वर के सामने बेदाग हैं । और इस समय के बाद से वह उनके लिए याचना करने लगा; परन्तु उन्होंने उसका भी विरोध किया, यह कहते हुए: क्या तुम भी शैतान के अधीन हो गए हो ? और उन्होंने उस पर थूका, और अपने बीच से उसे बाहर निकाल दिया, और उन लोगों को भी जिन्होंने अलमा और अमूलेक की बातों पर विश्वास किया था; और उन्होंने उन्हें बाहर निकाल दिया, और उन पर पत्थरवाह के लिए लोगों को भेजा ।

## Alma 14

And it came to pass after he had made an end of speaking unto the people many of them did believe on his words, and began to repent, and to search the scriptures.

But the more part of them were desirous that they might destroy Alma and Amulek; for they were angry with Alma, because of the plainness of his words unto Zeezrom; and they also said that Amulek had lied unto them, and had reviled against their law and also against their lawyers and judges.

And they were also angry with Alma and Amulek; and because they had testified so plainly against their wickedness, they sought to put them away privily.

But it came to pass that they did not; but they took them and bound them with strong cords, and took them before the chief judge of the land.

And the people went forth and witnessed against them—testifying that they had reviled against the law, and their lawyers and judges of the land, and also of all the people that were in the land; and also testified that there was but one God, and that he should send his Son among the people, but he should not save them; and many such things did the people testify against Alma and Amulek. Now this was done before the chief judge of the land.

And it came to pass that Zeezrom was astonished at the words which had been spoken; and he also knew concerning the blindness of the minds, which he had caused among the people by his lying words; and his soul began to be harrowed up under a consciousness of his own guilt; yea, he began to be encircled about by the pains of hell.

And it came to pass that he began to cry unto the people, saying: Behold, I am guilty, and these men are spotless before God. And he began to plead for them from that time forth; but they reviled him, saying: Art thou also possessed with the devil? And they spit upon him, and cast him out from among them, and also all those who believed in the words which had been spoken by Alma and Amulek; and they cast them out, and sent men to cast stones at them.

- 8 और वे अपने साथ अपनी पत्नियों और बच्चों को ले आए, और जिन्होंने उन पर विश्वास किया था या जिन्हें परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना सिखाया गया था उन्हें आग में डाल दिया गया; और वे उनके अभिलेखों को भी ले आए जिनमें पवित्र धर्मशास्त्र थे, और उन्हें भी आग में डाल दिया, ताकि वे जलकर आग द्वारा नष्ट हो जाएं ।
- 9 और ऐसा हुआ कि वे अलमा और अमूलेक को बलिदान वाले स्थान पर ले गए, ताकि वे उन लोगों का विनाश देख सकें जिन्हें आग में डाल दिया गया था ।
- 10 और जब अमूलेक ने आग में जल रही स्त्रियों और बच्चों की पीड़ाओं को देखा, उसे भी पीड़ा हुई; और उसने अलमा से कहा: कैसे हम इस भयानक दृश्य को देख सकते हैं ? इसलिए चलो अपने हाथों को ऊपर उठाएं, और हममें विराजमान परमेश्वर के सामर्थ्य का उपयोग करें, और उन्हें आग की लपटों से बचाएं ।
- 11 परन्तु अलमा ने उससे कहा: आत्मा मुझे विवश कर रही है कि मैं अपने हाथों को न फैलाऊं; क्योंकि देखो प्रभु उन्हें महिमा में अपने पास बुला रहा है; और उसे इससे कष्ट होता है कि शायद वे इस काम को कर सकें, या अपने हृदय की कठोरता के कारण लोग ऐसा उनके साथ कर रहे हैं, ताकि अपने क्रोध में जो न्याय वह उनके ऊपर करेगा वह उचित हो सके; और मासूम लोगों का लहू उनके विरुद्ध साक्षी बने, हां, अंतिम दिनों में उनके विरुद्ध बलपूर्वक चिल्ला सकें ।
- 12 अब अमूलेक ने अलमा से कहा: देखो, हो सकता है कि वे हमें भी जला देंगे ।
- 13 और अलमा ने कहा: प्रभु की इच्छानुसार हो । परन्तु, देखो, हमारा कार्य पूरा नहीं हुआ है; इसलिए वे हमें नहीं जला सकते ।
- 14 अब ऐसा हुआ कि जब उन लोगों के शरीर नष्ट हो गए जिन्हें आग में डाल दिया गया था, और उनके साथ जलाए गए अभिलेख भी नष्ट हो गए, तब प्रदेश का मुख्य न्यायी बन्धे हुए अलमा और अमूलेक के सामने आकर खड़ा हो गया; और अपने हाथों से उनके गालों पर तमाचा मारा, और उनसे कहा: यह सब देखने के पश्चात भी क्या तुम फिर से लोगों में प्रचार करोगे, ताकि उन्हें भी आग और गंधक की झील में झोंक दिया जाए ?

And they brought their wives and children together, and whosoever believed or had been taught to believe in the word of God they caused that they should be cast into the fire; and they also brought forth their records which contained the holy scriptures, and cast them into the fire also, that they might be burned and destroyed by fire.

And it came to pass that they took Alma and Amulek, and carried them forth to the place of martyrdom, that they might witness the destruction of those who were consumed by fire.

And when Amulek saw the pains of the women and children who were consuming in the fire, he also was pained; and he said unto Alma: How can we witness this awful scene? Therefore let us stretch forth our hands, and exercise the power of God which is in us, and save them from the flames.

But Alma said unto him: The Spirit constraineth me that I must not stretch forth mine hand; for behold the Lord receiveth them up unto himself, in glory; and he doth suffer that they may do this thing, or that the people may do this thing unto them, according to the hardness of their hearts, that the judgments which he shall exercise upon them in his wrath may be just; and the blood of the innocent shall stand as a witness against them, yea, and cry mightily against them at the last day.

Now Amulek said unto Alma: Behold, perhaps they will burn us also.

And Alma said: Be it according to the will of the Lord. But, behold, our work is not finished; therefore they burn us not.

Now it came to pass that when the bodies of those who had been cast into the fire were consumed, and also the records which were cast in with them, the chief judge of the land came and stood before Alma and Amulek, as they were bound; and he smote them with his hand upon their cheeks, and said unto them: After what ye have seen, will ye preach again unto this people, that they shall be cast into a lake of fire and brimstone?



- 15 देखो, तुमने देखा है कि जिन लोगों को आग में डाल दिया गया था उन्हें बचाने की शक्ति तुममें नहीं थी; न ही तुम्हारे विश्वास का होने के कारण उन्हें परमेश्वर ने बचाया। और न्यायी ने फिर से उनके गालों पर तमाचा मारा, और पूछा: तुम अपने लिए क्या कहते हो ?
- 16 अब यह न्यायी उस निहोर के विश्वास की रीति के अनुसार काम कर रहा था, जिसने गिदोन को मारा था।
- 17 और ऐसा हुआ कि अलमा और अमूलेक ने उसे कोई भी जवाब नहीं दिया; और उसने उन्हें फिर से तमाचा मारा, और बंदीगृह में डालने के लिए उन्हें अधिकारियों को सौंप दिया।
- 18 और जब वे तीन दिनों तक बंदीगृह में पड़े रहे, निहोर के पेशे के कई वकील, न्यायी, याजक, और शिक्षक वहां आए; वे वहां बंदीगृह में उन्हें देखने आए थे, और उन्होंने उनसे बहुत सी बातों पर प्रश्न पूछा; परन्तु उन्होंने उन्हें कोई भी जवाब नहीं दिया।
- 19 और ऐसा हुआ कि न्यायी उनके सामने खड़ा हुआ, और कहा: तुम इन लोगों की बातों का जवाब क्यों नहीं देते हो ? क्या तुम नहीं जानते कि तुम लोगों को आग में डालने का अधिकार मेरे पास है ? और उसने उन्हें बोलने की आज्ञा दी; परन्तु उन्होंने कोई भी जवाब नहीं दिया।
- 20 और ऐसा हुआ कि वे वहां से अपने रास्ते चले गए, परन्तु अगले दिन फिर से आए; और न्यायी ने फिर से उनके गालों पर तमाचा मारा। और कई लोग आए और उन्हें मारा, यह कहते हुए: क्या तुम फिर से खड़े होकर इन लोगों का न्याय, और हमारे कानून की निंदा करोगे ? यदि तुम्हारे पास कोई ऐसी महान शक्ति है तो तुम अपने आपको क्यों नहीं बचाते ?
- 21 और उन्होंने उनसे इस प्रकार की कई बातें कहीं, उन पर अपने दांत किचकिचाते हुए, और उन पर थूकते हुए, और यह कहते हुए: जब हम अभिशापित होंगे तो कैसे दिखेंगे ?
- 22 और इस प्रकार की कई बातें, हां, इस प्रकार की कई बातों को उन्होंने उनसे कहा; और इस प्रकार उन्होंने कई दिनों तक उनका मजाक उड़ाया। और उन्होंने उन्हें भोजन और पानी भी नहीं दिया ताकि वे भूखे और प्यासे रह सकें; और उन्होंने उनका वस्त्र भी ले लिया ताकि वे निर्बस्त्र हो जाएं; और इस प्रकार उन्हें मजबूत रस्सियों से बान्धकर बंदीगृह में डाल दिया गया।

Behold, ye see that ye had not power to save those who had been cast into the fire; neither has God saved them because they were of thy faith. And the judge smote them again upon their cheeks, and asked: What say ye for yourselves?

Now this judge was after the order and faith of Nehor, who slew Gideon.

And it came to pass that Alma and Amulek answered him nothing; and he smote them again, and delivered them to the officers to be cast into prison.

And when they had been cast into prison three days, there came many lawyers, and judges, and priests, and teachers, who were of the profession of Nehor; and they came in unto the prison to see them, and they questioned them about many words; but they answered them nothing.

And it came to pass that the judge stood before them, and said: Why do ye not answer the words of this people? Know ye not that I have power to deliver you up unto the flames? And he commanded them to speak; but they answered nothing.

And it came to pass that they departed and went their ways, but came again on the morrow; and the judge also smote them again on their cheeks. And many came forth also, and smote them, saying: Will ye stand again and judge this people, and condemn our law? If ye have such great power why do ye not deliver yourselves?

And many such things did they say unto them, gnashing their teeth upon them, and spitting upon them, and saying: How shall we look when we are damned?

And many such things, yea, all manner of such things did they say unto them; and thus they did mock them for many days. And they did withhold food from them that they might hunger, and water that they might thirst; and they also did take from them their clothes that they were naked; and thus they were bound with strong cords, and confined in prison.

23 और ऐसा हुआ कि कई दिनों तक इस प्रकार का उत्पीड़न सहने के पश्चात, (और यह नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के दसवें वर्ष के नौवें महीने का बारहवां दिन था) जब अम्मोनिहा के प्रदेश का मुख्य न्यायी और उनके कई शिक्षक और उनके वकील उस बंदीगृह में गए जहां अलमा और अमूलेक को रस्सियों से बान्धा गया था ।

24 और मुख्य न्यायी उनके सामने खड़ा हुआ, और उन्हें मारा, और उनसे कहा: यदि तुम्हारे पास परमेश्वर की शक्ति है तो अपने आपको इन बन्धनों से मुक्त करो, और तब हम विश्वास करेंगे कि तुम्हारे वचन के अनुसार प्रभु इन लोगों को नष्ट करेगा ।

25 और ऐसा हुआ कि उन सभी ने जाकर उन्हें मारा, आखिर तक उन्हीं शब्दों को कहते हुए; और जब अंतिम व्यक्ति उनसे यह सब कह रहा था तब परमेश्वर का सामर्थ्य अलमा और अमूलेक पर था, और वे उठे और अपने पैरों पर खड़े हो गए ।

26 और अलमा यह कहते हुए चिल्ला उठा: हे प्रभु, कब तक हम इन महान कष्टों को सहेंगे ? हे प्रभु, मसीह में हमारा जो विश्वास है उसके अनुसार हमें बल दो, यहां तक कि हमें मुक्त करो । और उन्होंने उन रस्सियों को तोड़ दिया जिससे वे बन्धे थे; और जब लोगों ने इसे देखा, अपने ऊपर आनेवाले विनाश के डर से वे भागने लगे ।

27 और ऐसा हुआ कि वे इतने अधिक भयभीत थे कि बंदीगृह की बाहरी द्वार पर पहुंचने से पहले ही गिर पड़े; और पृथ्वी बलपूर्वक कंपने लगी, और बंदीगृह की दीवारें दो भागों में फट गईं, इसलिए वे धरती पर गिर गए; और मुख्य न्यायी, वकील, याजक, और शिक्षक दीवार के गिरने से मारे गए जिन्होंने अलमा और अमूलेक को तमाचा मारा था ।

28 और अलमा और अमूलेक बंदीगृह से बाहर आ गए, और उन्हें कोई चोट नहीं लगी; क्योंकि मसीह में उनके विश्वास के कारण प्रभु ने उन्हें शक्ति प्रदान की थी । और वे सीधे बंदीगृह से बाहर आ गए; और उनके बन्धन खुल गए; और बंदीगृह जमीन पर गिर गया था, और अलमा और अमूलेक को छोड़कर बाकी सारे लोग मारे गए जो दीवार के अन्दर थे; और वे सीधे नगर में आ गए ।

And it came to pass after they had thus suffered for many days, (and it was on the twelfth day, in the tenth month, in the tenth year of the reign of the judges over the people of Nephi) that the chief judge over the land of Ammonihah and many of their teachers and their lawyers went in unto the prison where Alma and Amulek were bound with cords.

And the chief judge stood before them, and smote them again, and said unto them: If ye have the power of God deliver yourselves from these bands, and then we will believe that the Lord will destroy this people according to your words.

And it came to pass that they all went forth and smote them, saying the same words, even until the last; and when the last had spoken unto them the power of God was upon Alma and Amulek, and they rose and stood upon their feet.

And Alma cried, saying: How long shall we suffer these great afflictions, O Lord? O Lord, give us strength according to our faith which is in Christ, even unto deliverance. And they broke the cords with which they were bound; and when the people saw this, they began to flee, for the fear of destruction had come upon them.

And it came to pass that so great was their fear that they fell to the earth, and did not obtain the outer door of the prison; and the earth shook mightily, and the walls of the prison were rent in twain, so that they fell to the earth; and the chief judge, and the lawyers, and priests, and teachers, who smote upon Alma and Amulek, were slain by the fall thereof.

And Alma and Amulek came forth out of the prison, and they were not hurt; for the Lord had granted unto them power, according to their faith which was in Christ. And they straightway came forth out of the prison; and they were loosed from their bands; and the prison had fallen to the earth, and every soul within the walls thereof, save it were Alma and Amulek, was slain; and they straightway came forth into the city.

29 अब वे लोग जिन्होंने ऊंची आवाज सुनी वे इसका कारण जानने के लिए भीड़ के रूप में एक साथ भागते हुए आए; और जब उन्होंने अलमा और अमूलेक को बंदीगृह से बाहर आते देखा, और इसके पश्चात जमीन पर गिरी हुई दीवारों को देखा, वे अत्याधिक भय से दंग रह गए, और वे अलमा और अमूलेक के सामने से ऐसे भागे जैसे कि अपने छोटे बच्चों के साथ एक बकरी दो शेरों को सामने से भाग जाती है; और इस प्रकार वे अलमा और अमूलेक के सामने से भाग गए ।

Now the people having heard a great noise came running together by multitudes to know the cause of it; and when they saw Alma and Amulek coming forth out of the prison, and the walls thereof had fallen to the earth, they were struck with great fear, and fled from the presence of Alma and Amulek even as a goat fleeth with her young from two lions; and thus they did flee from the presence of Alma and Amulek.

## अलमा 15

- 1 और ऐसा हुआ कि अलमा और अमूलेक को उस नगर से जाने की आज्ञा मिलती है; और वे चले जाते हैं, और सिदोम के प्रदेश में पहुंचते हैं; और देखो, वहां वे उन सभी लोगों को पाते हैं जो अम्मोनिहा के नगर से चले गए थे, जिन्हें बाहर निकाला गया था और पत्थरों से मारा गया था क्योंकि उन्होंने अलमा की बातों पर विश्वास किया था ।
- 2 और उन्होंने उन्हें वह सब बताया जो उनकी पत्नियों और बच्चों के साथ हुआ था, और स्वयं के बारे में और बचाए जाने की उनकी शक्ति के बारे में भी ।
- 3 और जीजरोम भी सिदोम में तेज ज्वर से पीड़ित था, जो उसकी दुष्टता की वजह से उसके मन के महान दुख का कारण हुआ, क्योंकि उसने मान लिया था कि अलमा और अमूलेक अब जीवित नहीं रहे; और उसने मान लिया था कि उसकी दुष्टता के कारण उन्हें मार दिया गया था । और यह महान पाप और अन्य पाप उसके मन पर तब तक हावी रहे जब तक कि इससे मुक्ति न पाते हुए वह अत्यंत कष्ट में रहा; इसलिए वह तीव्र ज्वर से जलने लगा ।
- 4 अब, जब उसने सुना कि अलमा और अमूलेक सिदोम प्रदेश में थे, वह साहसी होने लगा; और उसने उन्हें अपने पास बुलाने की इच्छा जताते हुए शीघ्र ही उन्हें एक संदेश भेजा ।
- 5 और ऐसा हुआ कि उस संदेश के अनुसार वे शीघ्र ही पहुंच गए जिसे उसने उन तक पहुंचाया था; और वे जीजरोम के घर पहुंचे; और उन्होंने उसे तेज ज्वर में उसके बिस्तर पर बीमार पाया; और उसकी दुष्टता के कारण उसका मन भी बहुत दुखी था; और जब उसने उन्हें देखा तब अपने हाथों को फैलाया और उनसे चंगाई पाने की विनती की ।
- 6 और ऐसा हुआ कि अलमा ने उसके हाथ को पकड़ते हुए उससे कहा: उद्धार के लिए क्या तुम मसीह की शक्ति में विश्वास करते हो ?
- 7 और उसने उत्तर दिया और कहा: हां, मैं उन सभी बातों पर विश्वास करता हूं जिसे तुमने सिखाया है ।
- 8 और अलमा ने कहा: यदि तुम मसीह की मुक्ति में विश्वास करते हो तो तुम चंगे हो सकते हो ।
- 9 और उसने कहा: हां, मैं तुम्हारी बातों में विश्वास करता हूं ।

## Alma 15

And it came to pass that Alma and Amulek were commanded to depart out of that city; and they departed, and came out even into the land of Sidom; and behold, there they found all the people who had departed out of the land of Ammonihah, who had been cast out and stoned, because they believed in the words of Alma.

And they related unto them all that had happened unto their wives and children, and also concerning themselves, and of their power of deliverance.

And also Zeezrom lay sick at Sidom, with a burning fever, which was caused by the great tribulations of his mind on account of his wickedness, for he supposed that Alma and Amulek were no more; and he supposed that they had been slain because of his iniquity. And this great sin, and his many other sins, did harrow up his mind until it did become exceedingly sore, having no deliverance; therefore he began to be scorched with a burning heat.

Now, when he heard that Alma and Amulek were in the land of Sidom, his heart began to take courage; and he sent a message immediately unto them, desiring them to come unto him.

And it came to pass that they went immediately, obeying the message which he had sent unto them; and they went in unto the house unto Zeezrom; and they found him upon his bed, sick, being very low with a burning fever; and his mind also was exceedingly sore because of his iniquities; and when he saw them he stretched forth his hand, and besought them that they would heal him.

And it came to pass that Alma said unto him, taking him by the hand: Believest thou in the power of Christ unto salvation?

And he answered and said: Yea, I believe all the words that thou hast taught.

And Alma said: If thou believest in the redemption of Christ thou canst be healed.

And he said: Yea, I believe according to thy words.

- 10 और फिर अलमा ने यह कहते हुए प्रभु से विनती की: ओ प्रभु हमारे परमेश्वर, इस मनुष्य पर दया करो, और मसीह में उसके विश्वास के अनुसार इसे चंगाई दो ।
- 11 और जब अलमा ने इन शब्दों को कहा, जीजरुम उछलकर अपने पैरों पर खड़ा हो गया, और चलने लगा; और यह सारे लोगों के लिए महान आश्चर्य था; और इस बात की जानकारी सारे सिदोम प्रदेश में फैल गई ।
- 12 और अलमा ने प्रभु में जीजरुम का बपतिस्मा किया; और इस समय से उसने लोगों के लिए प्रचार करना आरंभ किया ।
- 13 और अलमा ने सिदोम के प्रदेश में एक गिरजे की स्थापना की, और देश में जो लोग प्रभु में बपतिस्मा लेना चाहते थे उन्हें बपतिस्मा देने के लिए उसने याजकों और शिक्षकों का समर्पित किया ।
- 14 और ऐसा हुआ कि लोग बहुत थे; क्योंकि वे सिदोम के आसपास के सभी क्षेत्रों से समूह में एकत्रित थे, और उनका बपतिस्मा हुआ ।
- 15 परन्तु वे लोग जो अम्मोनिहा के प्रदेश के थे, अभी भी कठोर-हृदय और जिद्दी थे; और उन्होंने अपने पापों का पश्चाताप नहीं किया, अलमा और अमूलेक की सारी शक्तियों को शैतान की शक्ति बताते हुए; क्योंकि वे निहोर के पेशे के थे, और अपने पापों के पश्चाताप में विश्वास नहीं करते थे ।
- 16 और ऐसा हुआ कि अलमा और अमूलेक, अमूलेक ने परमेश्वर के वचन के लिए अम्मोनिहा के प्रदेश में अपने पूरे सोने और चांदी और अपनी मूल्यवान चीजों का परित्याग कर दिया, वह उन लोगों के द्वारा अस्वीकार किया गया जो कभी उसके मित्र थे और अपने पिता और अपने रिश्तेदारों द्वारा भी अस्वीकार किया गया;
- 17 इसलिए, अलमा द्वारा सिदोम में गिरजा स्थापित करने के पश्चात, एक महान अधीनता देखते हुए, हां देखते हुए कि लोगों ने अपने मन के अहंकार को अपने अधीन कर लिया था, और परमेश्वर के सामने विनम्र होने लगे थे, और निरंतर देखते और प्रार्थना करते हुए, वेदी के समक्ष परमेश्वर की उपासना के लिए उन्होंने स्वयं को पवित्र स्थान पर एकत्रित करना आरंभ किया, ताकि वे शैतान, मृत्यु, और विनाश से बचाए जा सकें—
- 18 अब जैसा कि मैंने कहा है, इन सब चीजों को देखने के पश्चात, अलमा ने अमूलेक को लिया और जराहेमला के प्रदेश पहुंचा, और उसे अपने घर ले गया, और अपने कष्ट में रहते हुए उसकी सेवा की, और प्रभु में उसे मजबूत किया ।

And then Alma cried unto the Lord, saying: O Lord our God, have mercy on this man, and heal him according to his faith which is in Christ.

And when Alma had said these words, Zeezrom leaped upon his feet, and began to walk; and this was done to the great astonishment of all the people; and the knowledge of this went forth throughout all the land of Sidom.

And Alma baptized Zeezrom unto the Lord; and he began from that time forth to preach unto the people.

And Alma established a church in the land of Sidom, and consecrated priests and teachers in the land, to baptize unto the Lord whosoever were desirous to be baptized.

And it came to pass that they were many; for they did flock in from all the region round about Sidom, and were baptized.

But as to the people that were in the land of Ammonihah, they yet remained a hard-hearted and a stiffnecked people; and they repented not of their sins, ascribing all the power of Alma and Amulek to the devil; for they were of the profession of Nehor, and did not believe in the repentance of their sins.

And it came to pass that Alma and Amulek, Amulek having forsaken all his gold, and silver, and his precious things, which were in the land of Ammonihah, for the word of God, he being rejected by those who were once his friends and also by his father and his kindred;

Therefore, after Alma having established the church at Sidom, seeing a great check, yea, seeing that the people were checked as to the pride of their hearts, and began to humble themselves before God, and began to assemble themselves together at their sanctuaries to worship God before the altar, watching and praying continually, that they might be delivered from Satan, and from death, and from destruction—

Now as I said, Alma having seen all these things, therefore he took Amulek and came over to the land of Zarahemla, and took him to his own house, and did administer unto him in his tribulations, and strengthened him in the Lord.

19 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का दसवां वर्ष समाप्त हुआ ।

And thus ended the tenth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

## अलमा 16

- 1 और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के ग्यारहवें वर्ष के, दूसरे महीने के पांचवे दिन पर, जराहेमला के प्रदेश में बहुत शांति थी, कुछ वर्षों तक कोई भी युद्ध या वाद-विवाद नहीं हुआ, यहां तक कि ग्यारहवें वर्ष के दूसरे महीने के पांचवे दिन तक भी, इसके पश्चात पूरे देश में युद्ध की एक पुकार सुनाई दी ।
- 2 क्योंकि देखो, लमनाइयों की सेना प्रदेश की सीमाओं पर जंगल की ओर आ गई थी, यहां तक कि अम्मोनिहा के नगर में भी, और लोगों का वध करना और नगर को नष्ट करना आरंभ कर दिया ।
- 3 और अब ऐसा हुआ कि प्रदेश से उन्हें बाहर निकालने के लिए नफाई पर्याप्त मात्रा में सेना बना पाते इससे पहले ही, उन्होंने अम्मोनिहा के नगर में रह रहे सारे लोगों, और नूह की सीमाओं के आसपास के कुछ लोगों का विनाश कर दिया, और बाकी लोगों को जंगल में बंधक बना लिया ।
- 4 और ऐसा हुआ कि नफाई उन लोगों को वापस पाना चाहते थे जिन्हें बंधक बनाकर जंगल ले जाया गया था ।
- 5 इसलिए, वह जिसे नफाइयों की सेना का मुख्य कप्तान नियुक्त किया गया था, (और उसका नाम जोराम था, और उसके दो पुत्र थे, लेही और अहा)—अब जोराम और उसके दो पुत्र, यह जानते हुए कि अलमा गिरजे का उच्च याजक था, और यह सुन रहा था कि उसके पास भविष्यवाणी की आत्मा थी, इसलिए वे उसके पास गए और उस पर यह जानने की इच्छा जताई कि क्या प्रभु चाहेगा कि उन्हें जंगल में अपने उन भाइयों की खोज में जाना चाहिए जिन्हें लमनाइयों ने बंधक बना लिया था ।
- 6 और ऐसा हुआ कि अलमा ने इस मामले से संबंधित प्रभु से पूछ-ताछ की । और अलमा ने वापस आकर उनसे कहा: देखो, लमनाई मण्टी प्रदेश की सीमाओं से परे, दक्षिणी जंगल में सिदोन नदी पार करेंगे । और देखो सिदोन नदी के पूर्व में वहां पर तुम उनसे मिलोगे, और वहां पर प्रभु तुम्हारे उन भाइयों को मुक्त करेगा जिन्हें लमनाइयों ने बंधक बना लिया है ।

## Alma 16

And it came to pass in the eleventh year of the reign of the judges over the people of Nephi, on the fifth day of the second month, there having been much peace in the land of Zarahemla, there having been no wars nor contentions for a certain number of years, even until the fifth day of the second month in the eleventh year, there was a cry of war heard throughout the land.

For behold, the armies of the Lamanites had come in upon the wilderness side, into the borders of the land, even into the city of Ammonihah, and began to slay the people and destroy the city.

And now it came to pass, before the Nephites could raise a sufficient army to drive them out of the land, they had destroyed the people who were in the city of Ammonihah, and also some around the borders of Noah, and taken others captive into the wilderness.

Now it came to pass that the Nephites were desirous to obtain those who had been carried away captive into the wilderness.

Therefore, he that had been appointed chief captain over the armies of the Nephites, (and his name was Zoram, and he had two sons, Lehi and Aha)—now Zoram and his two sons, knowing that Alma was high priest over the church, and having heard that he had the spirit of prophecy, therefore they went unto him and desired of him to know whither the Lord would that they should go into the wilderness in search of their brethren, who had been taken captive by the Lamanites.

And it came to pass that Alma inquired of the Lord concerning the matter. And Alma returned and said unto them: Behold, the Lamanites will cross the river Sidon in the south wilderness, away up beyond the borders of the land of Manti. And behold there shall ye meet them, on the east of the river Sidon, and there the Lord will deliver unto thee thy brethren who have been taken captive by the Lamanites.

- 7 और ऐसा हुआ कि जोराम और उसके पुत्रों ने अपनी सेनाओं के साथ सिदोन नदी पार कर ली और दक्षिणी जंगल की ओर मण्टी की सीमाओं से परे मार्च किया, जो कि सिदोन नदी के पूर्व में थी ।
- 8 और उन्होंने लमनाइयों की सेना पर आक्रमण कर दिया, और लमनाई तितर-बितर हो गए और जंगल में भगा दिए गए; और उन्होंने लमनाइयों द्वारा बंधक बनाए गए अपने भाइयों को साथ लिया और बंधक बनाए गए लोगों में से एक भी व्यक्ति लुप्त नहीं हुआ था । और अपने स्वयं के प्रदेशों में रहने के लिए वे अपने भाइयों द्वारा लाए गए ।
- 9 और इस प्रकार न्यायियों के ग्यारहवें वर्ष का अंत हुआ, लमनाइयों को प्रदेश से निकाल दिया गया, और अम्मोनिहा के लोगों को नष्ट कर दिया गया, हां, अम्मोनिहियों के हर जीवित प्राणी को नष्ट कर दिया गया, और उनके महान नगर को भी, जिसे उन्होंने कहा था कि उसकी महानता के कारण परमेश्वर उसे नष्ट नहीं कर सकता ।
- 10 परन्तु देखो, एक दिन में उसे उजाड़ दिया गया; और कुत्तों और जंगली पशुओं ने शवों के चिथड़े कर डाले ।
- 11 फिर भी, कई दिनों तक उनके मृत शरीरों का ढेर जमीन पर पड़ा रहा, और उन पर हल्की परत जम गई । और अब इतनी अधिक गंध आने लगी कि इसके पश्चात कई वर्षों तक लोग अम्मोनिहा की जमीन को लेने नहीं गए । और यह निहोरों का उजाड़ कहलाया; क्योंकि वे निहोर के पेशे के थे, जिन्हें मार दिया गया था; और उनकी जमीन उजाड़ ही रही ।
- 12 और नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के चौदहवें वर्ष तक लमनाई फिर से नफाइयों से युद्ध करने नहीं आए । और इस प्रकार तीन वर्षों के लिए पूरे प्रदेश में नफी के लोग निरंतर शांतिपूर्वक रहे ।
- 13 और अलमा और अमूलेक लोगों को उनके मंदिरों, और उनके पवित्र स्थान, और उनके आराधनालयों में पश्चाताप का प्रचार करते रहे, जिन्हें यहूदियों के ढांचों में बनाया गया था ।
- 14 और अधिक से अधिक जितने लोग उनके वचनों को सुन सकते थे, उन लोगों को उन्होंने बिना भेदभाव के निरंतर परमेश्वर का वचन सुनाया ।
- And it came to pass that Zoram and his sons crossed over the river Sidon, with their armies, and marched away beyond the borders of Manti into the south wilderness, which was on the east side of the river Sidon.
- And they came upon the armies of the Lamanites, and the Lamanites were scattered and driven into the wilderness; and they took their brethren who had been taken captive by the Lamanites, and there was not one soul of them had been lost that were taken captive. And they were brought by their brethren to possess their own lands.
- And thus ended the eleventh year of the judges, the Lamanites having been driven out of the land, and the people of Ammonihah were destroyed; yea, every living soul of the Ammonihahites was destroyed, and also their great city, which they said God could not destroy, because of its greatness.
- But behold, in one day it was left desolate; and the carcasses were mangled by dogs and wild beasts of the wilderness.
- Nevertheless, after many days their dead bodies were heaped up upon the face of the earth, and they were covered with a shallow covering. And now so great was the scent thereof that the people did not go in to possess the land of Ammonihah for many years. And it was called Desolation of Nehors; for they were of the profession of Nehor, who were slain; and their lands remained desolate.
- And the Lamanites did not come again to war against the Nephites until the fourteenth year of the reign of the judges over the people of Nephi. And thus for three years did the people of Nephi have continual peace in all the land.
- And Alma and Amulek went forth preaching repentance to the people in their temples, and in their sanctuaries, and also in their synagogues, which were built after the manner of the Jews.
- And as many as would hear their words, unto them they did impart the word of God, without any respect of persons, continually.



- 15 और इस प्रकार अलमा और अमूलेक आगे बढ़ते रहे, और कई अन्य लोग भी जिन्हें पूरे देश में वचन के प्रचार-कार्य के लिए चुना गया था। और पूरे प्रदेश में गिरजे की स्थापना सामान्य हो गई, नफाइयों के सारे लोगों के बीच, लगभग आसपास के सारे प्रांतों में।
- 16 और उनके बीच कोई असमानता नहीं थी; मानव संतान के मन को तैयार करने के लिए, या उस वचन को प्राप्त करने के प्रति जिसे उसके आगमन के समय उनके मध्य सीखाना था, उनके हृदयों को तैयार करने के लिए प्रभु ने पूरे प्रदेश में अपनी आत्मा उंडेल दी—
- 17 ताकि वे वचन के विरुद्ध कठोर न हो सकें, ताकि वे अविश्वासी न हो सकें, और विनाश की तरफ जाएं, बल्कि वे खुशी से वचन को प्राप्त कर सकें, और एक शाखा के रूप में सच्ची दाखलता से जुड़ सकें, ताकि वे प्रभु परमेश्वर के आरामगाह में प्रवेश कर सकें।
- 18 अब जो याजक लोगों के बीच सीखाने गए थे उन्होंने सारे झूठ, छल-कपट, ईर्ष्या, शत्रुता, दुर्भावना, गाली-गलौज, चोरी, डाका, लूट-मार, व्यभिचार, और हर प्रकार की कामुकता के विरुद्ध प्रचार किया, यह याचना करते हुए कि ये चीजें नहीं होनी चाहिए—
- 19 उन चीजों को बताते हुए जो शीघ्र ही होनेवाली थीं, हां, परमेश्वर के पुत्र के आगमन, उसके उत्पीड़न और उसकी मृत्यु, और मरे हुए लोगों के पुनरुत्थान के बारे में भी बताते हुए।
- 20 और कई लोगों ने उस स्थान से संबंधित पूछताछ की जहां परमेश्वर के पुत्र को आना था; और उन्हें सीखाया गया कि वह उन्हें अपने पुनरुत्थान के पश्चात दिखाई देगा; और लोगों ने इसे महान आनंद और प्रसन्नता से सुना।
- 21 और अब पूरे प्रदेश में गिरजे की स्थापना के पश्चात—शैतान पर विजय प्राप्त की, और पूरे प्रदेश में परमेश्वर के वचन को उसकी शुद्धता में प्रचार किया, और लोगों पर प्रभु ने अपनी आशीषों को उंडेला—इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का चौदहवां वर्ष समाप्त हुआ।

And thus did Alma and Amulek go forth, and also many more who had been chosen for the work, to preach the word throughout all the land. And the establishment of the church became general throughout the land, in all the region round about, among all the people of the Nephites.

And there was no inequality among them; the Lord did pour out his Spirit on all the face of the land to prepare the minds of the children of men, or to prepare their hearts to receive the word which should be taught among them at the time of his coming—

That they might not be hardened against the word, that they might not be unbelieving, and go on to destruction, but that they might receive the word with joy, and as a branch be grafted into the true vine, that they might enter into the rest of the Lord their God.

Now those priests who did go forth among the people did preach against all lyings, and deceivings, and envyings, and strifes, and malice, and revilings, and stealing, robbing, plundering, murdering, committing adultery, and all manner of lasciviousness, crying that these things ought not so to be—

Holding forth things which must shortly come; yea, holding forth the coming of the Son of God, his sufferings and death, and also the resurrection of the dead.

And many of the people did inquire concerning the place where the Son of God should come; and they were taught that he would appear unto them after his resurrection; and this the people did hear with great joy and gladness.

And now after the church had been established throughout all the land—having got the victory over the devil, and the word of God being preached in its purity in all the land, and the Lord pouring out his blessings upon the people—thus ended the fourteenth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

मुसायाह के पुत्रों का एक विवरण, जिन्होंने परमेश्वर के वचन के लिए राज्य के अपने अधिकारों को अस्वीकार किया, और लमनाइयों के प्रति प्रचार के लिए नफी के प्रदेश गए; उनका उत्पीड़न हुआ और बचाए गए—अलमा के अभिलेखानुसार ।

## अलमा 17

- 1 और ऐसा हुआ कि जब अलमा मण्टी की धरती की तरफ, गिदोन की धरती के दक्षिण की ओर यात्रा कर रहा था, देखो, जराहेमला प्रदेश की यात्रा में मुसायाह के पुत्रों से मिलकर वह आश्चर्यचकित हुआ ।
- 2 अब मुसायाह के ये पुत्र अलमा के साथ थे जब स्वर्गदूत पहली बार उसके सामने प्रकट हुआ था; इसलिए अपने भाइयों को देखकर अलमा को अत्याधिक खुशी हुई; और उसकी खुशी में बढ़ोतरी उस बात से हुई कि वे अब भी प्रभु में उसके भाई थे; हां, वे सच्चाई के ज्ञान में मजबूत हुए थे; क्योंकि वे बहुत ही समझदार थे और उन्होंने निष्ठापूर्वक धर्मशास्त्रों में खोज की थी, ताकि वे परमेश्वर के वचन को जान सकें ।
- 3 परन्तु यही सब कुछ नहीं था; उन्होंने बहुत प्रार्थना, और उपवास किया था; इसलिए उनके पास भविष्यवाणी की आत्मा, और प्रकटीकरण की आत्मा थी, और जब उन्होंने बोला तब उन्होंने परमेश्वर के सामर्थ्य और अधिकार से बोला ।
- 4 और उन्होंने लमनाइयों के बीच चौदह वर्षों तक परमेश्वर के वचन को सीखाया था, कई लोगों को सच्चाई के ज्ञान में लाने में सफलता प्राप्त की थी; हां, उनके वचन की शक्ति के द्वारा कई लोग परमेश्वर की वेदी के सामने लाए गए थे, उसके नाम में बुलाने के लिए और उसके सामने अपने पापों का अंगीकार करने के लिए ।
- 5 अब ये वे परिस्थितियां हैं जिनका सामना उन्होंने अपनी यात्रा में किया था, क्योंकि उन्होंने बहुत कष्ट झेला; उन्होंने शरीर और मन दोनों में बहुत सहा, जैसे कि भूख, प्यास और थकावट, और आत्मा में रहते हुए बहुत मेहनत की ।
- 6 अब ये उनकी यात्राएं थीं: न्यायियों के प्रथम वर्ष में, अपने पिता मुसायाह से जाने की अनुमति ली थी; उस राज्य को ठुकराते हुए जिसे उनका पिता उन्हें प्रदान कर देना चाहता था, और यही लोगों के मन में भी था;

*An account of the sons of Mosiah, who rejected their rights to the kingdom for the word of God, and went up to the land of Nephi to preach to the Lamanites; their sufferings and deliverance—according to the record of Alma.*

## Alma 17

And now it came to pass that as Alma was journeying from the land of Gideon southward, away to the land of Manti, behold, to his astonishment, he met with the sons of Mosiah journeying towards the land of Zarahemla.

Now these sons of Mosiah were with Alma at the time the angel first appeared unto him; therefore Alma did rejoice exceedingly to see his brethren; and what added more to his joy, they were still his brethren in the Lord; yea, and they had waxed strong in the knowledge of the truth; for they were men of a sound understanding and they had searched the scriptures diligently, that they might know the word of God.

But this is not all; they had given themselves to much prayer, and fasting; therefore they had the spirit of prophecy, and the spirit of revelation, and when they taught, they taught with power and authority of God.

And they had been teaching the word of God for the space of fourteen years among the Lamanites, having had much success in bringing many to the knowledge of the truth; yea, by the power of their words many were brought before the altar of God, to call on his name and confess their sins before him.

Now these are the circumstances which attended them in their journeyings, for they had many afflictions; they did suffer much, both in body and in mind, such as hunger, thirst and fatigue, and also much labor in the spirit.

Now these were their journeyings: Having taken leave of their father, Mosiah, in the first year of the judges; having refused the kingdom which their father was desirous to confer upon them, and also this was the minds of the people;

- 7 फिर भी वे जराहेमला प्रदेश से चले जाते हैं, और अपने तलवार, भाले, और कमान, तीर, और गुल्ले लिए; और ऐसा उन्होंने इसलिए किया ताकि जंगल में स्वयं के लिए भोजन जुटा सकें।
- 8 और इस प्रकार लमनाइयों को परमेश्वर का वचन सुनाने के प्रति, नफी प्रदेश तक जाने के लिए, अपने द्वारा चुनी हुई गिनतियों के साथ वे जंगल के लिए निकल पड़े।
- 9 और ऐसा हुआ कि उन्होंने जंगल में कई दिनों तक यात्रा की, और उन्होंने बहुत उपवास और प्रार्थना की ताकि प्रभु अपनी थोड़ी सी आत्मा उन्हें दे दे, और उनके साथ बना रहे, ताकि यदि संभव हो तो वे अपने भाइयों, लमनाइयों को उनके पिता की नीच परंपराओं से जो कि गलत थीं, सच्चाई के ज्ञान में लाने के लिए परमेश्वर के हाथों का औजार बन सकें।
- 10 और ऐसा हुआ कि प्रभु अपनी आत्मा के साथ उनसे मिला, और उनसे कहा: सांत्वना प्राप्त हो। और उन्हें सांत्वना प्राप्त हुई।
- 11 और प्रभु ने उनसे यह भी कहा: अपने भाइयों, लमनाइयों के बीच जाओ, और मेरे वचन को प्रमाणित करो; तब भी तुम लंबे समय तक उत्पीड़न और कष्ट में धैर्यवान बने रहोगे, ताकि मुझमें तुम उन्हें अच्छा उदाहरण दिखा सको, और कई आत्माओं के उद्धार के लिए मैं तुम्हें अपने हाथों का औजार बनाऊंगा।
- 12 और ऐसा हुआ कि मुसायाह के पुत्रों के हृदय में, और जो उनके साथ थे उनके हृदय में, परमेश्वर का वचन सुनाने के प्रति लमनाइयों के पास जाने का साहस हुआ।
- 13 और ऐसा हुआ कि जब वे लमनाइयों के प्रदेश की सीमाओं में पहुंचे, वे एक दूसरे से अलग हो गए, प्रभु में भरोसा रखते हुए चले गए कि अपने अभियान के अंत में वे फिर से मिलेंगे; क्योंकि उन्होंने मान लिया था कि जिस काम को उन्होंने करने की ठानी थी वह महान कार्य था।

Nevertheless they departed out of the land of Zarahemla, and took their swords, and their spears, and their bows, and their arrows, and their slings; and this they did that they might provide food for themselves while in the wilderness.

And thus they departed into the wilderness with their numbers which they had selected, to go up to the land of Nephi, to preach the word of God unto the Lamanites.

And it came to pass that they journeyed many days in the wilderness, and they fasted much and prayed much that the Lord would grant unto them a portion of his Spirit to go with them, and abide with them, that they might be an instrument in the hands of God to bring, if it were possible, their brethren, the Lamanites, to the knowledge of the truth, to the knowledge of the baseness of the traditions of their fathers, which were not correct.

And it came to pass that the Lord did visit them with his Spirit, and said unto them: Be comforted. And they were comforted.

And the Lord said unto them also: Go forth among the Lamanites, thy brethren, and establish my word; yet ye shall be patient in long-suffering and afflictions, that ye may show forth good examples unto them in me, and I will make an instrument of thee in my hands unto the salvation of many souls.

And it came to pass that the hearts of the sons of Mosiah, and also those who were with them, took courage to go forth unto the Lamanites to declare unto them the word of God.

And it came to pass when they had arrived in the borders of the land of the Lamanites, that they separated themselves and departed one from another, trusting in the Lord that they should meet again at the close of their harvest; for they supposed that great was the work which they had undertaken.

- 14 और निश्चित तौर पर यह महान कार्य था, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचन को उन लोगों को सुनाने की ठानी थी जो कि जंगली और कठोर और अति उग्र लोग थे; वे लोग जो नफाइयों की हत्या कर, डाका डालकर, लूट-मार कर खुश होते थे, और उनका मन धन-संपत्तियों पर, या सोने और चांदी, और मूल्यवान पत्थरों पर लगा रहता था; तब भी उन्होंने इन चीजों को हत्या और लूट-मार के द्वारा प्राप्त करना चाहा, ताकि इन सब चीजों के लिए उन्हें अपने हाथों से मेहनत न करनी पड़े।
- 15 और इस प्रकार वे अत्याधिक आलसी लोग थे, उनमें से कई लोग मूर्तिपूजक थे, और उनके पिता की परंपराओं के कारण उन पर परमेश्वर का श्राप था; फिर भी पश्चाताप के आधार पर प्रभु की प्रतिज्ञा इन लोगों के लिए थी।
- 16 इसलिए, यही कारण था कि मुसायाह के पुत्रों ने इस कार्य को करने की ठानी, कि वे उन्हें पश्चाताप के लिए ला सकें; ताकि वे उन्हें मुक्ति की योजना की जानकारी दे सकें।
- 17 इसलिए वे स्वयं एक दूसरे से अलग हो गए, और उनके बीच में हर व्यक्ति अकेला गया, परमेश्वर के उस वचन और सामर्थ्य के अनुसार जो उन्हें दिया गया था।
- 18 अब अम्मोन उन लोगों का मुखिया था, या ये कहें कि उसने उन पर शासन किया, और उनके विभिन्न कार्यक्षेत्रों के अनुसार उन्हें आशीष देने, उन्हें परमेश्वर का वचन सुनाने, या अपने प्रस्थान से पहले उन पर प्रशासन करने के पश्चात वह उनसे अलग हो गया; और इस प्रकार पूरे प्रदेश में उन्होंने अपनी कई यात्राएं की।
- 19 और अम्मोन इश्माएल प्रदेश गया, वह भूमि जिसका नाम इश्माएल के पुत्रों के नाम पर था, जो लमनाई भी बन गए थे।
- 20 और जैसे ही अम्मोन इश्माएल प्रदेश गया, लमनाइयों ने उसे पकड़कर बांध दिया, अपनी प्रथा के अनुसार जिसमें जो भी नफाई उनके हाथ लगता उसे बांध दिया जाता, और उसे राजा के सामने ले जाते; और इस प्रकार इसे राजा की खुशी पर छोड़ दिया जाता कि उन्हें मार दिया जाए, या बंधक बना लिया जाए, या उन्हें बंदीगृह में डाल दिया जाता, या उसकी इच्छा और खुशी के अनुसार उसे देश से बाहर निकाल दिया जाता।

And assuredly it was great, for they had undertaken to preach the word of God to a wild and a hardened and a ferocious people; a people who delighted in murdering the Nephites, and robbing and plundering them; and their hearts were set upon riches, or upon gold and silver, and precious stones; yet they sought to obtain these things by murdering and plundering, that they might not labor for them with their own hands.

Thus they were a very indolent people, many of whom did worship idols, and the curse of God had fallen upon them because of the traditions of their fathers; notwithstanding the promises of the Lord were extended unto them on the conditions of repentance.

Therefore, this was the cause for which the sons of Mosiah had undertaken the work, that perhaps they might bring them unto repentance; that perhaps they might bring them to know of the plan of redemption.

Therefore they separated themselves one from another, and went forth among them, every man alone, according to the word and power of God which was given unto him.

Now Ammon being the chief among them, or rather he did administer unto them, and he departed from them, after having blessed them according to their several stations, having imparted the word of God unto them, or administered unto them before his departure; and thus they took their several journeys throughout the land.

And Ammon went to the land of Ishmael, the land being called after the sons of Ishmael, who also became Lamanites.

And as Ammon entered the land of Ishmael, the Lamanites took him and bound him, as was their custom to bind all the Nephites who fell into their hands, and carry them before the king; and thus it was left to the pleasure of the king to slay them, or to retain them in captivity, or to cast them into prison, or to cast them out of his land, according to his will and pleasure.

- 21 और इस प्रकार अम्मोन को इश्माएल प्रदेश के राजा के सामने ले जाया गया; और उसका नाम लमोनी था; और वह इश्माएल का वंशज था ।
- 22 और राजा ने अम्मोन से पूछताछ की कि क्या वह लमनाइयों के बीच प्रदेश में, या उसके लोगों के बीच रहना चाहता है ।
- 23 और अम्मोन ने उससे कहा: हां, मैं कुछ समय के लिए इन लोगों के बीच रहना चाहता हूँ; हां, शायद अपनी मृत्यु के दिन तक ।
- 24 और ऐसा हुआ कि राजा लमोनी अम्मोन से बहुत प्रभावित हुआ, और उसने ऐसा कारण उत्पन्न किया जिससे उसके बंधन खोल दिए गए; और वह चाहता था कि अम्मोन उसकी बेटियों में से एक को पत्नी बना ले ।
- 25 परन्तु अम्मोन ने उससे कहा: नहीं, लेकिन मैं तुम्हारा सेवक रहूँगा । इसलिए अम्मोन राजा लमोनी का सेवक बन गया । और ऐसा हुआ कि लमनाइयों की प्रथा के अनुसार, उसे लमोनी के पशुओं की देखभाल करने के लिए अन्य सेवकों के बीच रख लिया गया ।
- 26 और तीन दिनों तक राजा की सेवा में लगे रहने के पश्चात्, जब वह लमनाई सेवकों के साथ उनके पशुओं को लेकर जल वाले स्थान पर जा रहा था, जिसे सेबुस का जल कहते थे, और सारे लमनाई अपने पशुओं को वहाँ हांकने लगे जिससे कि वे पानी पी सकें—
- 27 इसलिए, जब अम्मोन और राजा के सेवक अपने पशुओं को जल के उस स्थान की तरफ हांक रहे थे, देखो, कुछ लमनाई जो पानी में पहले से ही अपने पशुओं के साथ थे, खड़े हो गए और अम्मोन और राजा के सेवकों के पशुओं को तितर-बितर करने लगे, और उन्होंने उन्हें इतना तितर-बितर किया कि वे चारों ओर भाग खड़े हुए ।
- 28 अब राजा के सेवक बड़बड़ाने लगे, यह कहते हुए: अब राजा हमें उसी प्रकार मार डालेगा जैसे कि उसने हमारे भाइयों को, इन लोगों की दुष्टता के द्वारा उनके पशुओं को तितर-बितर किये जाने के कारण मार डाला था । और वे रोने लगे, यह कहते हुए: देखो, अभी तक तो हमारे पशु तितर-बितर हो चुके हैं ।

And thus Ammon was carried before the king who was over the land of Ishmael; and his name was Lamoni; and he was a descendant of Ishmael.

And the king inquired of Ammon if it were his desire to dwell in the land among the Lamanites, or among his people.

And Ammon said unto him: Yea, I desire to dwell among this people for a time; yea, and perhaps until the day I die.

And it came to pass that king Lamoni was much pleased with Ammon, and caused that his bands should be loosed; and he would that Ammon should take one of his daughters to wife.

But Ammon said unto him: Nay, but I will be thy servant. Therefore Ammon became a servant to king Lamoni. And it came to pass that he was set among other servants to watch the flocks of Lamoni, according to the custom of the Lamanites.

And after he had been in the service of the king three days, as he was with the Lamanitish servants going forth with their flocks to the place of water, which was called the water of Sebus, and all the Lamanites drive their flocks hither, that they may have water—

Therefore, as Ammon and the servants of the king were driving forth their flocks to this place of water, behold, a certain number of the Lamanites, who had been with their flocks to water, stood and scattered the flocks of Ammon and the servants of the king, and they scattered them insomuch that they fled many ways.

Now the servants of the king began to murmur, saying: Now the king will slay us, as he has our brethren because their flocks were scattered by the wickedness of these men. And they began to weep exceedingly, saying: Behold, our flocks are scattered already.

- 29 अब मारे जाने के डर से वे रोने लगे। अब जब अम्मोन ने यह देखा तो उसका हृदय खुशी के मारे फूल गया; क्योंकि, उसने कहा, राजा के पास इन पशुओं को वापस लाने के लिए, मैं अपने इन साथी-सेवकों को अपनी शक्ति दिखाऊंगा या वह शक्ति दिखाऊंगा जो मुझमें है, ताकि मैं अपने साथी-सेवकों का दिल जीत सकूँ, ताकि मैं उन्हें अपनी बातों पर विश्वास करा सकूँ।
- 30 और अब, ये अम्मोन के विचार थे, जब उसने उन लोगों को कष्ट में देखा जिन्हें वह अपना भाई कहता था।
- 31 और ऐसा हुआ कि उसने अपनी बातों से उन लोगों को फुसलाया, यह कहते हुए: मेरे भाइयों, ढाढ़स बांधो और चलो हम पशुओं की खोज में चलें, और हम उन्हें एकत्रित करेंगे और जल के स्थान पर वापस लाएंगे; और इस प्रकार हम राजा के पशुओं को बचाएंगे और वह हमें नहीं मारेगा।
- 32 और ऐसा हुआ कि वे पशुओं की खोज में निकल पड़े, और उन्होंने अम्मोन का अनुसरण किया, और वे तेजी से गए और राजा के पशुओं को शान्त किया, और उन्हें फिर से एकत्रित कर जल के स्थान पर ले आए।
- 33 और वे लोग फिर से उनके पशुओं को तितर-बितर करने के लिए खड़े हो गए; परन्तु अम्मोन ने अपने भाइयों से कहा: पशुओं को चारों ओर से घेर लो ताकि वे भाग न सकें; और मैं जाकर उन लोगों के साथ संघर्ष करता हूँ जो हमारे पशुओं को तितर-बितर कर रहे हैं।
- 34 इसलिए, उन्होंने वही किया जिसकी आज्ञा अम्मोन ने उन्हें दी, और वह गया और उन लोगों के सामने संघर्ष करने के लिए खड़ा हो गया जो सेबुस के जल के निकट खड़े थे; और वे संख्या में कम नहीं थे।
- 35 इसलिए वे अम्मोन से नहीं डरे, क्योंकि उन्होंने समझा कि उनमें से कोई भी व्यक्ति अपने आनंद के अनुसार उसे मार डालेगा, क्योंकि वे नहीं जानते थे कि प्रभु ने मुसायाह से प्रतिज्ञा की थी कि वह उसके पुत्रों को उनके हाथों से बचाएगा; न ही वे प्रभु से संबंधित किसी भी बात को जानते थे; इसलिए वे अपने भाइयों के विनाश में आनंदित थे; और इस कारण वे राजा के पशुओं को तितर-बितर करने के लिए खड़े हो गए।

Now they wept because of the fear of being slain. Now when Ammon saw this his heart was swollen within him with joy; for, said he, I will show forth my power unto these my fellow-servants, or the power which is in me, in restoring these flocks unto the king, that I may win the hearts of these my fellow-servants, that I may lead them to believe in my words.

And now, these were the thoughts of Ammon, when he saw the afflictions of those whom he termed to be his brethren.

And it came to pass that he flattered them by his words, saying: My brethren, be of good cheer and let us go in search of the flocks, and we will gather them together and bring them back unto the place of water; and thus we will preserve the flocks unto the king and he will not slay us.

And it came to pass that they went in search of the flocks, and they did follow Ammon, and they rushed forth with much swiftness and did head the flocks of the king, and did gather them together again to the place of water.

And those men again stood to scatter their flocks; but Ammon said unto his brethren: Encircle the flocks round about that they flee not; and I go and contend with these men who do scatter our flocks.

Therefore, they did as Ammon commanded them, and he went forth and stood to contend with those who stood by the waters of Sebus; and they were in number not a few.

Therefore they did not fear Ammon, for they supposed that one of their men could slay him according to their pleasure, for they knew not that the Lord had promised Mosiah that he would deliver his sons out of their hands; neither did they know anything concerning the Lord; therefore they delighted in the destruction of their brethren; and for this cause they stood to scatter the flocks of the king.

36 परन्तु अम्मोन खड़ा हो गया और अपनी गुलेल से उन पर पत्थर मारने लगा; हां, बड़ी ही शक्ति से उसने उन पर गुलेल से पत्थर मारा; और इस प्रकार उसने इन लोगों में से कुछ को इतनी जल्दी ढेर कर दिया कि वे उसकी शक्ति से आश्चर्यचकित होने लगे; फिर भी, वे अपने भाइयों के मारे जाने के कारण क्रोधित थे, और उन्होंने उसे गिराने का निश्चय कर लिया; इसलिए, यह देखते हुए कि वे उसे अपने पत्थरों से नहीं मार पा रहे थे, वे अपनी लाठी लेकर उसे मारने दौड़े ।

37 परन्तु देखो, अम्मोन को दंड देने के लिए हर उस व्यक्ति ने जिसने अपनी लाठी उठाई, उनके हाथों को अम्मोन ने अपनी तलवार से काट डाला; क्योंकि उसने अपनी तलवार की धार से उनके हाथों को काटकर उनके प्रहार का बलपूर्वक सामना किया कि वे आश्चर्यचकित होने लगे, और उसके सामने से भागने लगे; हां, और वे संख्या में कम नहीं थे; और उसने अपनी बांह के बल द्वारा उन्हें भगा दिया ।

38 अब गुलेल द्वारा छह लोग गिराए जा चुके थे, परन्तु उसने अपनी तलवार से उनको अगुआ को छोड़कर किसी और को ढेर नहीं किया; और जितने भी हाथ उसके विरुद्ध खड़े हुए उसने उन्हें काट दिया, और वे कम नहीं थे ।

39 और इस प्रकार उसने उन्हें दूर भगा दिया, वह वापस आया, और उन्होंने अपने पशुओं को पानी पिलाया और उन्हें राजा के चारागाह में वापस ले गए, और फिर राजा के पास गए, उन लोगों के हाथों को दिखाते हुए जो अम्मोन की तलवार द्वारा काट दिए गए थे जिन्होंने उसे मारने का प्रयास किया था; और जो उन्होंने किया था उसकी गवाही के रूप में वे इन चीजों को राजा के पास ले गए ।

But Ammon stood forth and began to cast stones at them with his sling; yea, with mighty power he did sling stones amongst them; and thus he slew a certain number of them insomuch that they began to be astonished at his power; nevertheless they were angry because of the slain of their brethren, and they were determined that he should fall; therefore, seeing that they could not hit him with their stones, they came forth with clubs to slay him.

But behold, every man that lifted his club to smite Ammon, he smote off their arms with his sword; for he did withstand their blows by smiting their arms with the edge of his sword, insomuch that they began to be astonished, and began to flee before him; yea, and they were not few in number; and he caused them to flee by the strength of his arm.

Now six of them had fallen by the sling, but he slew none save it were their leader with his sword; and he smote off as many of their arms as were lifted against him, and they were not a few.

And when he had driven them afar off, he returned and they watered their flocks and returned them to the pasture of the king, and then went in unto the king, bearing the arms which had been smitten off by the sword of Ammon, of those who sought to slay him; and they were carried in unto the king for a testimony of the things which they had done.

## अलमा 18

- 1 और ऐसा हुआ कि राजा लमोनी ने उकसाया कि उसके सेवक खड़े हो जाएं और इस मामले से संबंधित जो भी उन्होंने देखा था उसकी गवाही दें ।
- 2 और जब उन सब ने देखी हुई बातों की गवाही दे दी, और उसने उसके पशुओं को बचाने में अम्मोन की विश्वसनीयता को जान लिया, और जो उसे मारना चाहते थे उनके विरुद्ध सामना करने में उसकी महान शक्ति को भी जान लिया, वह बहुत आश्चर्यचकित हुआ, और कहा: निश्चित तौर पर यह एक साधारण मनुष्य से कुछ अधिक है । देखो, क्या यह महान आत्मा नहीं है जिसने उनकी हत्याओं के कारण इन लोगों को कठोर दंड दिया है ?
- 3 और उन्होंने राजा को उत्तर दिया, और कहा: चाहे यह महान आत्मा हो या एक साधारण मनुष्य, हम नहीं जानते: परन्तु हम इतना अवश्य जानते हैं कि जब तक यह हमारे साथ है तब तक इसकी निपुणता और महान बल के कारण, न तो इसे राजा के शत्रु मार सकते हैं और न ही वे राजा के पशुओं को तितर-बितर कर सकते हैं । इसलिए, हम जानते हैं कि वह राजा का मित्र है । और अब, हे राजा, हमें विश्वास नहीं होता कि एक मनुष्य के पास इतनी महान शक्ति है, क्योंकि हम जानते हैं कि इसे मारा नहीं जा सकता है ।
- 4 और अब, जब राजा ने इन बातों को सुना, उसने उनसे कहा: अब मैं जानता हूँ कि यह एक महान आत्मा है; और इस समय यह तुम्हारे जीवन को बचाने के लिए आया है, ताकि मैं तुम्हें न मार सकूँ जैसा कि मैंने तुम्हारे भाइयों के साथ किया है । अब यह वही महान आत्मा है जिसके विषय में हमारे पूर्वजों ने कहा है ।
- 5 अब यह लमोनी की परंपरा थी, जिसे उसने अपने पिता से पाया था, कि एक महान आत्मा थी । इसके बावजूद भी उन्होंने महान आत्मा पर विश्वास किया था, उन्होंने मान लिया था कि जो भी उन्होंने किया वह सही था; फिर भी, लमोनी उस बात से भयभीत हुआ कि उसने अपने सेवकों को मारकर कुछ गलत तो नहीं किया है;
- 6 उसने कई लोगों को मारा था क्योंकि जल के स्थान पर उनके भाइयों ने उनके पशुओं को तितर-बितर कर दिया था; और इस प्रकार, उनके द्वारा पशुओं के तितर-बितर किये जाने के कारण वे मारे गए थे ।

## Alma 18

And it came to pass that king Lamoni caused that his servants should stand forth and testify to all the things which they had seen concerning the matter.

And when they had all testified to the things which they had seen, and he had learned of the faithfulness of Ammon in preserving his flocks, and also of his great power in contending against those who sought to slay him, he was astonished exceedingly, and said: Surely, this is more than a man. Behold, is not this the Great Spirit who doth send such great punishments upon this people, because of their murders?

And they answered the king, and said: Whether he be the Great Spirit or a man, we know not; but this much we do know, that he cannot be slain by the enemies of the king; neither can they scatter the king's flocks when he is with us, because of his expertness and great strength; therefore, we know that he is a friend to the king. And now, O king, we do not believe that a man has such great power, for we know he cannot be slain.

And now, when the king heard these words, he said unto them: Now I know that it is the Great Spirit; and he has come down at this time to preserve your lives, that I might not slay you as I did your brethren. Now this is the Great Spirit of whom our fathers have spoken.

Now this was the tradition of Lamoni, which he had received from his father, that there was a Great Spirit. Notwithstanding they believed in a Great Spirit, they supposed that whatsoever they did was right; nevertheless, Lamoni began to fear exceedingly, with fear lest he had done wrong in slaying his servants;

For he had slain many of them because their brethren had scattered their flocks at the place of water; and thus, because they had had their flocks scattered they were slain.



- 7 अब लोगों के पशुओं को तितर-बितर करने के लिए सेबुस के जल के निकट खड़े होने की इन लमनाइयों की आदत थी, ताकि इसके पश्चात वे तितर-बितर हुए पशुओं को हांक कर अपने स्थान पर ले जा सकें, उनमें लूटपाट करने की यह प्रथा प्रचलित थी ।
- 8 और ऐसा हुआ कि राजा लमोनी ने अपने सेवकों से जांच पड़ताल की, यह कहते हुए: वह व्यक्ति कहां है जिसके पास इतनी महान शक्ति है ?
- 9 और उन्होंने उससे कहा: देखो, वह तुम्हारे घोड़ों को खाना खिला रहा है । अब राजा ने अपने सेवकों को उनके पशुओं को पानी पिलाने से पहले आज्ञा दी थी कि वे उसके घोड़ों और रथों को तैयार करें, और उसे नफी के प्रदेश ले जाएं; क्योंकि नफी के प्रदेश में लमोनी के पिता द्वारा एक महान भोज का आयोजन किया था, जो कि पूरे प्रदेश का राजा था ।
- 10 अब राजा लमोनी ने जब सुना कि अम्मोन उसके घोड़ों और उसके रथों को तैयार कर रहा है तो अम्मोन की विश्वसनीयता के कारण वह और अधिक आश्चर्यचकित हुआ, यह कहते हुए: निश्चित तौर पर मेरे सारे सेवकों में से इस मनुष्य के जितना विश्वासी कोई भी नहीं रहा है; इसे तो मेरी सभी आज्ञाओं का पालन करना याद है ।
- 11 अब मैं निश्चित तौर पर जानता हूँ कि यह एक महान आत्मा है, और मैं चाहता हूँ कि वह मेरे पास आए परन्तु ऐसा करने का साहस मुझमें नहीं है ।
- 12 और ऐसा हुआ कि जब अम्मोन ने राजा और उसके सेवकों के लिए घोड़ों और रथों को तैयार कर लिया, वह राजा के पास गया, और उसने देखा कि राजा का मुखड़ा बदल गया था; इसलिए वह उसके सामने से वापस जानेवाला था ।
- 13 और राजा के सेवकों में से एक ने उससे कहा, रबाना, जिसकी व्याख्या की जाए तो इसका अर्थ है शक्तिशाली या महान राजा, अपने राजाओं को शक्तिशाली मानते हुए; और इस प्रकार उसने उससे कहा: रबाना, राजा चाहता है कि तुम रुको ।
- 14 इसलिए अम्मोन राजा की तरफ घूम गया, और उससे कहा: हे राजा, तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ ? और तब उनके समय के अनुसार, एक घण्टे तक राजा ने उसे कोई भी उत्तर नहीं दिया, क्योंकि वह नहीं जानता था कि उससे क्या कहे ।
- 15 और ऐसा हुआ कि अम्मोन ने उससे फिर कहा: मेरे लिए तुम्हारी क्या इच्छा है ? परन्तु राजा ने उसे कोई भी उत्तर नहीं दिया ।

Now it was the practice of these Lamanites to stand by the waters of Sebus to scatter the flocks of the people, that thereby they might drive away many that were scattered unto their own land, it being a practice of plunder among them.

And it came to pass that king Lamoni inquired of his servants, saying: Where is this man that has such great power?

And they said unto him: Behold, he is feeding thy horses. Now the king had commanded his servants, previous to the time of the watering of their flocks, that they should prepare his horses and chariots, and conduct him forth to the land of Nephi; for there had been a great feast appointed at the land of Nephi, by the father of Lamoni, who was king over all the land.

Now when king Lamoni heard that Ammon was preparing his horses and his chariots he was more astonished, because of the faithfulness of Ammon, saying: Surely there has not been any servant among all my servants that has been so faithful as this man; for even he doth remember all my commandments to execute them.

Now I surely know that this is the Great Spirit, and I would desire him that he come in unto me, but I durst not.

And it came to pass that when Ammon had made ready the horses and the chariots for the king and his servants, he went in unto the king, and he saw that the countenance of the king was changed; therefore he was about to return out of his presence.

And one of the king's servants said unto him, Rabbanah, which is, being interpreted, powerful or great king, considering their kings to be powerful; and thus he said unto him: Rabbanah, the king desireth thee to stay.

Therefore Ammon turned himself unto the king, and said unto him: What wilt thou that I should do for thee, O king? And the king answered him not for the space of an hour, according to their time, for he knew not what he should say unto him.

And it came to pass that Ammon said unto him again: What desirest thou of me? But the king answered him not.

- 16 और ऐसा हुआ कि अम्मोन परमेश्वर की आत्मा से भर गया, इसलिए वह राजा के विचार जान गया। और उसने उससे कहा: क्या ऐसा इस कारण है कि तुमने सुना कि मैंने तुम्हारे सेवकों और तुम्हारे पशुओं को बचाया है, और गुलेल और तलवार से उनके सात भाइयों को मार डाला, और तुम्हारे पशुओं और तुम्हारे सेवकों को बचाने के लिए दूसरों के हाथों को काट डाला; देखो, क्या यही तुम्हारे अचम्भीत होने का कारण है ?
- 17 मैं तुमसे कहता हूँ, यह क्या है, कि तुम इतने अधिक अचम्भीत हो ? देखो, मैं एक साधारण मनुष्य, और तुम्हारा एक सेवक हूँ; इसलिए तुम्हारी जो इच्छा है वही सही है, और मैं उसे करूँगा।
- 18 अब जब राजा ने इन बातों को सुन लिया, वह फिर से आश्चर्यचिकित्त हुआ, क्योंकि उसने देखा कि अम्मोन उसके विचारों को जान सकता था; परन्तु इसके बावजूद, राजा लमोनी ने अपना मुँह खोला, और उससे कहा: तुम कौन हो ? क्या तुम वही महान आत्मा हो, जो सारी बातों को जानता है ?
- 19 अम्मोन ने उत्तर दिया और उससे कहा: मैं वह नहीं हूँ।
- 20 और राजा ने कहा: तुम मेरे हृदय की बातों को कैसे जानते हो ? तुम निडर होकर बोलो और मुझे इन चीजों से संबंधित बातें बताओ; और यह भी बताओ कि वो कौन सी शक्ति है जिसके द्वारा तुमने मेरे उन भाइयों को मारा और उनके हाथ काटे जिन्होंने मेरे पशुओं को तितर-बितर कर दिया था—
- 21 और अब, यदि मुझे इन चीजों से संबंधित बातें बताओगे, तुम्हारी जो भी इच्छा होगी मैं तुम्हें वह दूँगा; और यदि आवश्यक होगा, तो मैं अपनी सोनाओं से तुम्हारी रक्षा करूँगा; परन्तु मैं जानता हूँ कि तुम इन सबसे अधिक शक्तिशाली हो; फिर भी, तुम मुझसे जो चाहोगे मैं तुम्हें वह दूँगा।
- 22 अब, अम्मोन समझदार था, अभी तक सुरक्षित था, उसने लमोनी से कहा: क्या तुम मेरी बातों को ध्यान से सुनोगे, यदि मैं बताऊँ कि मैंने इन चीजों को कौन सी शक्ति द्वारा किया है ? और यही वह बात है जो मैं तुमसे चाहता हूँ।
- 23 और राजा ने उत्तर दिया, और कहा: हां, मैं तुम्हारी सारी बातों पर विश्वास करूँगा। और इस प्रकार चतुराई से वह वश में आ गया।
- 24 और अम्मोन उससे निडरता से बात करने लगा, और उससे कहा: क्या तुम विश्वास करते हो कि परमेश्वर है ?
- 25 और उसने उत्तर दिया, और उससे कहा: मुझे नहीं पता कि इसका क्या अर्थ है।

And it came to pass that Ammon, being filled with the Spirit of God, therefore he perceived the thoughts of the king. And he said unto him: Is it because thou hast heard that I defended thy servants and thy flocks, and slew seven of their brethren with the sling and with the sword, and smote off the arms of others, in order to defend thy flocks and thy servants; behold, is it this that causeth thy marvelings?

I say unto you, what is it, that thy marvelings are so great? Behold, I am a man, and am thy servant; therefore, whatsoever thou desirest which is right, that will I do.

Now when the king had heard these words, he marveled again, for he beheld that Ammon could discern his thoughts; but notwithstanding this, king Lamoni did open his mouth, and said unto him: Who art thou? Art thou that Great Spirit, who knows all things?

Ammon answered and said unto him: I am not.

And the king said: How knowest thou the thoughts of my heart? Thou mayest speak boldly, and tell me concerning these things; and also tell me by what power ye slew and smote off the arms of my brethren that scattered my flocks—

And now, if thou wilt tell me concerning these things, whatsoever thou desirest I will give unto thee; and if it were needed, I would guard thee with my armies; but I know that thou art more powerful than all they; nevertheless, whatsoever thou desirest of me I will grant it unto thee.

Now Ammon being wise, yet harmless, he said unto Lamoni: Wilt thou hearken unto my words, if I tell thee by what power I do these things? And this is the thing that I desire of thee.

And the king answered him, and said: Yea, I will believe all thy words. And thus he was caught with guile.

And Ammon began to speak unto him with boldness, and said unto him: Believest thou that there is a God?

And he answered, and said unto him: I do not know what that meaneth.

- 26 और फिर अम्मोन ने कहा: क्या तुम विश्वास करते हो कि एक महान आत्मा है ?
- 27 और उसने कहा, हां ।
- 28 और अम्मोन ने कहा: वही परमेश्वर है । और अम्मोन ने फिर से उससे कहा: क्या तुम विश्वास करते हो कि इस महान आत्मा ने जो कि परमेश्वर है, स्वर्ग और पृथ्वी की सारी चीजों की रचना की है ?
- 29 और उसने कहा: हां, मैं विश्वास करता हूँ कि उसने पृथ्वी की सारी चीजों की रचना की है; परन्तु मैं स्वर्ग के बारे में नहीं जानता ।
- 30 और अम्मोन ने उससे कहा: स्वर्ग वह स्थान है जहां परमेश्वर और उसके सारे पवित्र स्वर्गदूत रहते हैं ।
- 31 और राजा लमोनी ने कहा: क्या यह पृथ्वी के ऊपर है ?
- 32 और अम्मोन ने कहा: हां, और वह नीचे सारे मानव संतानों को देखता है; और वह मन के सारे विचार और इच्छाओं को जानता है; क्योंकि सभी लोगों की रचना आरंभ से ही उसके हाथों द्वारा हुई है ।
- 33 और राजा लमोनी ने कहा: मैं उन सारी बातों पर विश्वास करता हूँ जिसे तुमने कहा है । क्या तुम परमेश्वर द्वारा भेजे गए हो ?
- 34 अम्मोन ने उससे कहा: मैं एक साधारण मनुष्य हूँ; और प्रारंभ में मनुष्य को परमेश्वर की समानता में बनाया गया था, और लोगों को इन सब बातों को सीखाने के लिए मुझे पवित्र आत्मा द्वारा नियुक्त किया गया है, कि उन लोगों को न्याय और सच्चाई की बातों की जानकारी दी जा सके;
- 35 और उस आत्मा का एक अंश मुझमें है, जो कि मेरे विश्वास और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मुझे ज्ञान और शक्ति देता है ।
- 36 अब जब अम्मोन ने इन बातों को कह लिया, वह संसार की रचना और आदम की रचना के बारे में बताने लगा, और उसे मनुष्य के पतन से संबंधित सारी बातों को बताया, और लोगों के उन अभिलेखों और पवित्र धर्मशास्त्रों को दोहराया और उसके सामने रखा, जिसके बारे में यरूशलेम छोड़ते समय, उनके पूर्वज लेही के समय में भी भविष्य-वक्ताओं ने कहा था ।
- 37 और उसने उन लोगों (यह राजा और उसके सेवकों के लिए था) को जंगल में उनके पूर्वजों की यात्राओं, और भूख और प्यास से उनके सारे उत्पीड़न, और उनकी प्रसव-पीड़ा, इत्यादि के बारे में भी फिर से बताया ।

And then Ammon said: Believest thou that there is a Great Spirit?

And he said, Yea.

And Ammon said: This is God. And Ammon said unto him again: Believest thou that this Great Spirit, who is God, created all things which are in heaven and in the earth?

And he said: Yea, I believe that he created all things which are in the earth; but I do not know the heavens.

And Ammon said unto him: The heavens is a place where God dwells and all his holy angels.

And king Lamoni said: Is it above the earth?

And Ammon said: Yea, and he looketh down upon all the children of men; and he knows all the thoughts and intents of the heart; for by his hand were they all created from the beginning.

And king Lamoni said: I believe all these things which thou hast spoken. Art thou sent from God?

Ammon said unto him: I am a man; and man in the beginning was created after the image of God, and I am called by his Holy Spirit to teach these things unto this people, that they may be brought to a knowledge of that which is just and true;

And a portion of that Spirit dwelleth in me, which giveth me knowledge, and also power according to my faith and desires which are in God.

Now when Ammon had said these words, he began at the creation of the world, and also the creation of Adam, and told him all the things concerning the fall of man, and rehearsed and laid before him the records and the holy scriptures of the people, which had been spoken by the prophets, even down to the time that their father, Lehi, left Jerusalem.

And he also rehearsed unto them (for it was unto the king and to his servants) all the journeyings of their fathers in the wilderness, and all their sufferings with hunger and thirst, and their travail, and so forth.

38 और उसने लमान और लमूएल, और इश्माएल के पुत्रों के विरोध से संबंधित बातों को भी बताया, हां, उनके सारे विरोध को उसने उन्हें बताया; और लेही द्वारा यरूशलेम छोड़ने के समय से लेकर वर्तमान समय तक के सारे अभिलेखों और धर्मशास्त्रों को उन्हें समझाया ।

39 परन्तु यह सारी बातें नहीं थीं; क्योंकि उसने उन्हें मुक्ति की उस योजना को समझाया, जिसे संसार की नींव के समय ही तैयार कर लिया गया था; और उसने उन्हें मसीह के आगमन से संबंधित बातों की भी जानकारी दी, और उसने उन्हें प्रभु के सारे कार्यों के बारे में बताया ।

40 और ऐसा हुआ कि जब उसने इन सारी बातों को कह लिया, और उन्हें राजा को समझा दिया, तब राजा ने उसकी सारी बातों पर विश्वास किया ।

41 और वह प्रभु से याचना करने लगा, यह कहते हुए: हे प्रभु, दया कर; नफी के लोगों पर जो तुमने असीम दया दिखाई है, वही दया मुझ पर और मेरे लोगों पर भी कर ।

42 और अब, जब उसने ऐसा कहा, वह मुर्दे के समान जमीन पर गिर गया ।

43 और ऐसा हुआ कि उसके सेवक उसे उठाकर उसकी पत्नी के पास ले गए, और उसे बिस्तर पर रख दिया; और दो दिन और दो रातों तक वह मुर्दे के समान लेटा रहा; और उसे खोने पर लमनाइयों की तरह उसकी पत्नी, और उसके बेटे, और उसकी बोटियों ने उसके लिए शोक मनाया ।

And he also rehearsed unto them concerning the rebellions of Laman and Lemuel, and the sons of Ishmael, yea, all their rebellions did he relate unto them; and he expounded unto them all the records and scriptures from the time that Lehi left Jerusalem down to the present time.

But this is not all; for he expounded unto them the plan of redemption, which was prepared from the foundation of the world; and he also made known unto them concerning the coming of Christ, and all the works of the Lord did he make known unto them.

And it came to pass that after he had said all these things, and expounded them to the king, that the king believed all his words.

And he began to cry unto the Lord, saying: O Lord, have mercy; according to thy abundant mercy which thou hast had upon the people of Nephi, have upon me, and my people.

And now, when he had said this, he fell unto the earth, as if he were dead.

And it came to pass that his servants took him and carried him in unto his wife, and laid him upon a bed; and he lay as if he were dead for the space of two days and two nights; and his wife, and his sons, and his daughters mourned over him, after the manner of the Lamanites, greatly lamenting his loss.

## अलमा 19

- 1 और ऐसा हुआ कि दो दिन और दो रात के पश्चात वे उसके शरीर को ले जाकर उस कब्र में रखने वाले थे, जिसे उन्होंने अपने मरे हुए लोगों को दफनाने के लिए बनाया था ।
- 2 अब रानी ने अम्मोन की प्रसिद्धि को सुना, इसलिए उसने संदेश भेजा और चाहती थी कि वह आकर उससे मिले ।
- 3 और ऐसा हुआ कि अम्मोन ने आज्ञा का पालन किया, और रानी के पास गया, और जानने का प्रयास किया कि रानी उससे क्या करवाना चाहती थी ।
- 4 और उसने उससे कहा: मेरे पति के सेवकों ने मुझे बताया कि तुम पवित्र परमेश्वर के एक भविष्यवक्ता हो, और तुम्हारे पास उसके नाम में कई महान कार्य करने का सामर्थ्य है;
- 5 इसलिए, यदि ऐसा है, तो मैं चाहूंगी कि तुम जाओ और मेरे पति को देखो, क्योंकि दो दिन और दो रातों से वह अपने बिस्तर पर लेटा हुआ है; और कुछ लोग कहते हैं कि वह मरा नहीं है, परन्तु कुछ लोग कहते हैं कि वह मर गया है और उससे दुर्गन्ध आ रही है, और उसे कब्र में गाड़ देना चाहिए; परन्तु मुझे उससे दुर्गन्ध नहीं आती है ।
- 6 अब, यही तो अम्मोन चाहता था, क्योंकि वह जानता था कि राजा लमोनी परमेश्वर के प्रभाव में था; वह जानता था कि अविश्वास का गहरा पर्दा उसके मन से हट गया है, और उसका मन उस प्रकाश से प्रकाशित हो गया है, जो परमेश्वर की महिमा का प्रकाश था, जो कि उसकी अच्छाई का अदभूत प्रकाश था—हां, इस प्रकाश ने उसकी आत्मा को आनंद से भर दिया है, अन्धकार का बादल छंट गया है, और उसकी आत्मा में अनंत जीवन का प्रकाश जल उठा है, हां, वह जानता था कि उसका स्वाभाविक शरीर पराजित हो गया है, और वह परमेश्वर में खोया हुआ है—
- 7 इसलिए, जो रानी उससे चाहती थी वही वह भी चाहता था । इसलिए, रानी की इच्छानुसार वह राजा को देखने चला गया; और उसने राजा को देखा, और वह जानता था कि वह मरा नहीं है ।
- 8 और उसने रानी से कहा: वह मरा नहीं है, परन्तु वह परमेश्वर में सोया हुआ है, और अगले दिन वह फिर से उठेगा; इसलिए उसे दफनाना नहीं ।

## Alma 19

And it came to pass that after two days and two nights they were about to take his body and lay it in a sepulchre, which they had made for the purpose of burying their dead.

Now the queen having heard of the fame of Ammon, therefore she sent and desired that he should come in unto her.

And it came to pass that Ammon did as he was commanded, and went in unto the queen, and desired to know what she would that he should do.

And she said unto him: The servants of my husband have made it known unto me that thou art a prophet of a holy God, and that thou hast power to do many mighty works in his name;

Therefore, if this is the case, I would that ye should go in and see my husband, for he has been laid upon his bed for the space of two days and two nights; and some say that he is not dead, but others say that he is dead and that he stinketh, and that he ought to be placed in the sepulchre; but as for myself, to me he doth not stink.

Now, this was what Ammon desired, for he knew that king Lamoni was under the power of God; he knew that the dark veil of unbelief was being cast away from his mind, and the light which did light up his mind, which was the light of the glory of God, which was a marvelous light of his goodness—yea, this light had infused such joy into his soul, the cloud of darkness having been dispelled, and that the light of everlasting life was lit up in his soul, yea, he knew that this had overcome his natural frame, and he was carried away in God—

Therefore, what the queen desired of him was his only desire. Therefore, he went in to see the king according as the queen had desired him; and he saw the king, and he knew that he was not dead.

And he said unto the queen: He is not dead, but he sleepeth in God, and on the morrow he shall rise again; therefore bury him not.

- 9 और अम्मोन ने उससे कहा: क्या तुम्हें इस बात पर विश्वास है ? और उसने उससे कहा: तुम्हारे और अपने सेवकों की बातों के अलावा मेरे पास कोई गवाही नहीं है; फिर भी, मुझे विश्वास है कि जैसा तुमने कहा है वैसा ही होगा ।
- 10 और अम्मोन ने उससे कहा: अपने अत्याधिक विश्वास के कारण तुम आशीषित हो; मैं तुमसे कहता हूँ, हे स्त्री, नफाड़ियों के लोगों के बीच इतना महान विश्वास नहीं है ।
- 11 और ऐसा हुआ कि उसने अपने पति के बिस्तर की ओर इसी समय से लेकर अगले दिन के उस समय तक देखा जिस समय को अम्मोन ने उसके उठने के लिए निर्धारित किया था ।
- 12 और ऐसा हुआ कि अम्मोन के कहे अनुसार वह उठ गया; और जैसे ही वह उठा, उसने स्त्री की तरफ अपने हाथों को फैलाया, और कहा: परमेश्वर का नाम धन्य हो, और तुम आशीषित हो ।
- 13 जिस प्रकार तुम मुझे जीवित दिखाई दे रही हो, जैसे ही मैंने अपने मुक्तिदाता को देखा है; और वह आएगा, और एक स्त्री से जन्म लेगा, और वह उन सारी मानवजाति को मुक्ति देगा जो उसके नाम में विश्वास करते हैं । अब, जब उसने इन बातों को कहा तो उसका हृदय उसके अन्दर फूल गया, और वह फिर से आनंद विभोर हो उठा; और आत्मा द्वारा वशीभूत होने के कारण रानी भी आनंद विभोर हो उठी ।
- 14 अब जब अम्मोन ने देखा कि उसकी प्रार्थना के अनुसार प्रभु की आत्मा लमनाइयों यानि उसके उन भाइयों पर थी, जो अपनी दुष्टता और अपनी परंपराओं के कारण, नफाड़ियों यानि परमेश्वर के लोगों के बीच दुख का बहुत बड़ा कारण थे, वह अपने घुटनों के बल गिर गया, और जो भी परमेश्वर ने उसके भाइयों के लिए किया था उसके प्रति प्रार्थना और धन्यवाद में उसने अपनी आत्मा उंडेली; और वह भी आनंद से भर उठा; और इस प्रकार वे तीनों जमीन पर गिर गए ।
- 15 अब, जब राजा के सेवकों ने देखा कि वे गिरे पड़े हैं, वे भी परमेश्वर से याचना करने लगे, क्योंकि उनमें प्रभु का भय समा गया था, और ये वही लोग थे जिन्होंने राजा के सामने खड़े होकर अम्मोन की महान शक्ति की गवाही दी थी ।
- 16 और ऐसा हुआ कि अपने सामर्थ्य के अनुसार उन्होंने भी प्रभु का नाम तब तक लिया जब तक कि वे जमीन पर गिर न पड़े, केवल एक लमनाई स्त्री को छोड़कर जिसका नाम अबिश था जो कि अपने पिता के असाधारण दिव्यदर्शन के आधार पर कई वर्षों से प्रभु में परिवर्तित हो चुकी थी—

And Ammon said unto her: Believest thou this? And she said unto him: I have had no witness save thy word, and the word of our servants; nevertheless I believe that it shall be according as thou hast said.

And Ammon said unto her: Blessed art thou because of thy exceeding faith; I say unto thee, woman, there has not been such great faith among all the people of the Nephites.

And it came to pass that she watched over the bed of her husband, from that time even until that time on the morrow which Ammon had appointed that he should rise.

And it came to pass that he arose, according to the words of Ammon; and as he arose, he stretched forth his hand unto the woman, and said: Blessed be the name of God, and blessed art thou.

For as sure as thou livest, behold, I have seen my Redeemer; and he shall come forth, and be born of a woman, and he shall redeem all mankind who believe on his name. Now, when he had said these words, his heart was swollen within him, and he sunk again with joy; and the queen also sunk down, being overpowered by the Spirit.

Now Ammon seeing the Spirit of the Lord poured out according to his prayers upon the Lamanites, his brethren, who had been the cause of so much mourning among the Nephites, or among all the people of God because of their iniquities and their traditions, he fell upon his knees, and began to pour out his soul in prayer and thanksgiving to God for what he had done for his brethren; and he was also overpowered with joy; and thus they all three had sunk to the earth.

Now, when the servants of the king had seen that they had fallen, they also began to cry unto God, for the fear of the Lord had come upon them also, for it was they who had stood before the king and testified unto him concerning the great power of Ammon.

And it came to pass that they did call on the name of the Lord, in their might, even until they had all fallen to the earth, save it were one of the Lamanitish women, whose name was Abish, she having been converted unto the Lord for many years, on account of a remarkable vision of her father—

- 17 इस प्रकार, प्रभु में परिवर्तित हो गई थी, और इसके बारे में किसी को नहीं बताया था, इसलिए, जब उसने देखा कि लमोनी के सारे सेवक, और उसकी सेविकाएं, रानी, और राजा, और अम्मोन जमीन पर औंधे मुंह गिरे पड़े हैं, वह जानती थी कि यह परमेश्वर की शक्ति थी; और इस अवसर पर उसने विचार किया कि जो कुछ भी हुआ है उसे लोगों को बताया जाए, ताकि इस दृश्य को देखकर वे परमेश्वर की शक्ति में विश्वास करने लगें, इसलिए लोगों को इस बात की जानकारी देते हुए वह एक घर से दूसरे घर गई ।
- 18 और वे राजा के घर पर एकत्रित होने लगे । और वहां एक भीड़ आई, और उन्होंने आश्चर्यचकित होकर राजा, रानी, और उनके सेवकों को जमीन पर औंधे मुंह गिरा हुआ पाया, और वे सारे मुर्दों के समान लेटे हुए थे; और उन्होंने अम्मोन को भी देखा, और देखो, वह एक नफाई था ।
- 19 और अब लोग आपस में बड़बड़ाने लगे; कुछ लोग कहने लगे कि उन पर, या राजा और उसके घर पर शैतान हावी है क्योंकि उसने एक नफाई को प्रदेश में रहने दिया ।
- 20 परन्तु दूसरों ने उन्हें यह कहते हुए फटकारा: राजा अपने घर पर इस बुराई को लाया है, क्योंकि उसने उसके उन सेवकों को मारा था जिन्होंने सेबुस के जल के निकट उनके पशुओं के तितर-बितर किया था ।
- 21 और वे उन लोगों के द्वारा भी डांटे-फटकारे गए थे जो सेबुस के जल के निकट खड़े थे और जिन्होंने राजा के पशुओं को तितर-बितर किया था, और क्योंकि अम्मोन ने सेबुस के जल के निकट राजा के पशुओं के बचाते समय बड़ी संख्या में उनके भाइयों को मारा था, वे उससे क्रोधित थे ।
- 22 अब, उनमें से एक ने, जिसके भाई को अम्मोन ने तलवार से मार दिया था, अम्मोन से अत्याधिक क्रोधित होते हुए अपनी तलवार को निकाला और अम्मोन को मारने के लिए आगे बढ़ा; और जैसे ही उसने उसे मारने के लिए तलवार उठाई, देखो, वह मर गया ।
- 23 अब हम देखते हैं कि अम्मोन मारा नहीं जा सकता, क्योंकि प्रभु ने उसके पिता मुसायाह से कहा था: मैं उसे बचाऊंगा, और ऐसा उसके विश्वास के अनुसार होगा—इसलिए, मुसायाह ने उसे प्रभु को सौंप दिया था ।

Thus, having been converted to the Lord, and never having made it known, therefore, when she saw that all the servants of Lamoni had fallen to the earth, and also her mistress, the queen, and the king, and Ammon lay prostrate upon the earth, she knew that it was the power of God; and supposing that this opportunity, by making known unto the people what had happened among them, that by beholding this scene it would cause them to believe in the power of God, therefore she ran forth from house to house, making it known unto the people.

And they began to assemble themselves together unto the house of the king. And there came a multitude, and to their astonishment, they beheld the king, and the queen, and their servants prostrate upon the earth, and they all lay there as though they were dead; and they also saw Ammon, and behold, he was a Nephite.

And now the people began to murmur among themselves; some saying that it was a great evil that had come upon them, or upon the king and his house, because he had suffered that the Nephite should remain in the land.

But others rebuked them, saying: The king hath brought this evil upon his house, because he slew his servants who had had their flocks scattered at the waters of Sebus.

And they were also rebuked by those men who had stood at the waters of Sebus and scattered the flocks which belonged to the king, for they were angry with Ammon because of the number which he had slain of their brethren at the waters of Sebus, while defending the flocks of the king.

Now, one of them, whose brother had been slain with the sword of Ammon, being exceedingly angry with Ammon, drew his sword and went forth that he might let it fall upon Ammon, to slay him; and as he lifted the sword to smite him, behold, he fell dead.

Now we see that Ammon could not be slain, for the Lord had said unto Mosiah, his father: I will spare him, and it shall be unto him according to thy faith—therefore, Mosiah trusted him unto the Lord.

- 24 और ऐसा हुआ कि जब भीड़ ने देखा कि वह मनुष्य मर गया जिसने अम्मोन को मारने के लिए तलवार निकाली थी, उन सब में भय समा गया, और उनमें उसे या जो जमीन पर गिरे पड़े थे उनमें से किसी को भी छूने का साहस नहीं हुआ; और वे फिर से आश्चर्य करने लगे कि इस शक्ति का कारण क्या होगा, या इन सब चीजों का अर्थ क्या होगा ।
- 25 और ऐसा हुआ कि उनमें से कई लोग थे जिन्होंने कहा कि अम्मोन एक महान आत्मा था, और दूसरों ने कहा कि वह महान आत्मा द्वारा भेजा गया था;
- 26 परन्तु दूसरों ने उन्हें यह कहते हुए डांट दिया कि वह एक दानव था, जो उन्हें यातना देने के लिए नफाइयों द्वारा भेजा गया था ।
- 27 और कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने कहा कि उनकी दुष्टता के कारण उन्हें सताने के लिए महान आत्मा ने अम्मोन को भेजा था; और महान आत्मा ही है जिसने सदैव नफाइयों का ध्यान रखा है, जिसने सदैव उनके हाथों से उन्हें बचाया है; और उन्होंने कहा कि यही वह महान आत्मा है जिसने उनके कई भाइयों, लमनाइयों का विनाश किया है ।
- 28 और इस प्रकार उनके बीच में वाद-विवाद अधिक गहराने लगा । और जब वे इस प्रकार वाद-विवाद कर रहे थे, वह आई सेविका जिसने भीड़ एकत्रित की थी, और जब उसने भीड़ में हो रहे वाद-विवाद को देखा तो बहुत दुखी हुई, और उसकी आंखों में आंसू आ गए ।
- 29 और ऐसा हुआ कि वह गई और उसने रानी को हाथों से पकड़ा कि शायद वह उसे जमीन से उठा सके; और जैसे ही उसने उसके हाथ को छुआ वह उठी और अपने पैरों पर खड़ी हो गई, और यह कहते हुए ऊंची आवाज में याचना करने लगी: हे आशीषित यीशु, तूने मुझे डरावने नरक से बचा लिया है ! हे धन्य परमेश्वर, इन लोगों पर दया कर !
- 30 और जब उसने ऐसा कहा, खुशी के मारे उसने अपने हाथों को जोर से जकड़ा, कई बातें कहते हुए जिसे समझ नहीं पाया; और जब उसने ऐसा किया, उसने हाथ से राजा लमोनी को पकड़ा, और देखो वह उठा और अपने पैरों पर खड़ा हो गया ।
- 31 और जैसे ही उसने अपने लोगों में वाद-विवाद देखा, वह गया और उन्हें डांटने लगा, और उन्हें वह बातें सीखाने लगा जो उसने अम्मोन के मुंह से सुनी थीं; और जितने लोगों ने उसे सुना, उसकी बातों पर विश्वास किया, और प्रभु में परिवर्तित हुए ।

And it came to pass that when the multitude beheld that the man had fallen dead, who lifted the sword to slay Ammon, fear came upon them all, and they durst not put forth their hands to touch him or any of those who had fallen; and they began to marvel again among themselves what could be the cause of this great power, or what all these things could mean.

And it came to pass that there were many among them who said that Ammon was the Great Spirit, and others said he was sent by the Great Spirit;

But others rebuked them all, saying that he was a monster, who had been sent from the Nephites to torment them.

And there were some who said that Ammon was sent by the Great Spirit to afflict them because of their iniquities; and that it was the Great Spirit that had always attended the Nephites, who had ever delivered them out of their hands; and they said that it was this Great Spirit who had destroyed so many of their brethren, the Lamanites.

And thus the contention began to be exceedingly sharp among them. And while they were thus contending, the woman servant who had caused the multitude to be gathered together came, and when she saw the contention which was among the multitude she was exceedingly sorrowful, even unto tears.

And it came to pass that she went and took the queen by the hand, that perhaps she might raise her from the ground; and as soon as she touched her hand she arose and stood upon her feet, and cried with a loud voice, saying: O blessed Jesus, who has saved me from an awful hell! O blessed God, have mercy on this people!

And when she had said this, she clasped her hands, being filled with joy, speaking many words which were not understood; and when she had done this, she took the king, Lamoni, by the hand, and behold he arose and stood upon his feet.

And he, immediately, seeing the contention among his people, went forth and began to rebuke them, and to teach them the words which he had heard from the mouth of Ammon; and as many as heard his words believed, and were converted unto the Lord.



- 32 परन्तु उनमें से कई ऐसे थे जिन्होंने उसकी बातों को नहीं सुना; इसलिए वे अपनी राह चले गए ।
- 33 और ऐसा हुआ कि जब अम्मोन उठा तब उसने भी उनकी सहायता की, और ऐसा ही लमोनी के सारे सेवकों ने किया; और उन सभी ने लोगों को एक ही बात बताई—कि उनका हृदय बदल गया था; कि उनमें अब बुरे काम करने की कोई इच्छा नहीं थी ।
- 34 और देखो, कई लोगों ने लोगों को बताया कि उन्होंने स्वर्गदूतों को देखा और उनसे बातचीत की; और इस प्रकार उन्होंने उन्हें परमेश्वर और उसकी धार्मिकता की बातें बताईं ।
- 35 और ऐसा हुआ कि कई थे जिन्होंने उनकी बातों पर विश्वास किया; जितने लोगों ने विश्वास किया उनका बपतिस्मा हुआ; और वे धर्मी बन गए, और उन्होंने उनके बीच एक गिरजा स्थापित किया ।
- 36 और इस प्रकार प्रभु का कार्य लमनाइयों के बीच आरंभ हुआ; इस प्रकार प्रभु ने उन पर अपनी आत्मा उंडेलनी शुरू की; और हम देखते हैं कि उसका हाथ उन सारे लोगों तक पहुंचता है जो पश्चाताप करते हैं और उसके नाम में विश्वास करते हैं ।

But there were many among them who would not hear his words; therefore they went their way.

And it came to pass that when Ammon arose he also administered unto them, and also did all the servants of Lamoni; and they did all declare unto the people the selfsame thing—that their hearts had been changed; that they had no more desire to do evil.

And behold, many did declare unto the people that they had seen angels and had conversed with them; and thus they had told them things of God, and of his righteousness.

And it came to pass that there were many that did believe in their words; and as many as did believe were baptized; and they became a righteous people, and they did establish a church among them.

And thus the work of the Lord did commence among the Lamanites; thus the Lord did begin to pour out his Spirit upon them; and we see that his arm is extended to all people who will repent and believe on his name.

## अलमा 20

- 1 और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने उस प्रदेश में गिरजे की स्थापना कर ली, राजा लमोनी ने इच्छा जाहिर की कि अम्मोन उसके साथ नफी के प्रदेश जाए, ताकि वह उसे अपने पिता को दिखा सके ।
- 2 और अम्मोन को प्रभु की आवाज सुनाई दी, यह कहते हुए: तुम्हें नफी के प्रदेश नहीं जाना है, क्योंकि देखो, राजा तुम्हारी जान लेना चाहेगा; परन्तु तुम्हें मिदोनी के प्रदेश जाना है; क्योंकि देखो, तुम्हारा भाई हारून, और मुलोकी और अम्मा बंदीगृह में हैं ।
- 3 अब ऐसा हुआ कि जब अम्मोन ने इसे सुना, उसने लमोनी से कहा: देखो, मेरे भाई और बन्धु मिदोनी के बंदीगृह में हैं, और मैं जाऊंगा ताकि मैं उन्हें बचा सकूँ ।
- 4 अब लमोनी ने अम्मोन से कहा: मैं जानता हूँ, प्रभु के बल में तुम हर काम कर सकते हो । परन्तु देखो, मिदोनी के प्रदेश मैं तुम्हारे साथ चलूंगा; क्योंकि मिदोनी प्रदेश का राजा जिसका नाम अंतीओमनोहै, मेरा मित्र है; इसलिए मैं मिदोनी के प्रदेश चलूंगा, ताकि मैं प्रदेश के राजा को फुसला सकूँ, और वह तुम्हारे भाइयों को बंदीगृह से निकाल देगा । अब लमोनी ने उससे कहा: तुमसे किसने कहा कि तुम्हारे भाई बंदीगृह में हैं ?
- 5 और अम्मोन ने उससे कहा: परमेश्वर के सिवाय मुझे किसी और ने नहीं बताया; और उसने मुझसे कहा—जाओ और अपने भाइयों को बचाओ, क्योंकि वे मिदोनी प्रदेश के बंदीगृह में हैं ।
- 6 अब जब लमोनी ने इसे सुना तो अपने सेवकों से घोड़ों और रथों को तैयार करने के लिए कहा ।
- 7 और उसने अम्मोन से कहा: आओ, मैं मिदोनी के प्रदेश तुम्हारे साथ चलूंगा, और वहाँ मैं राजा से याचना करूंगा कि वह तुम्हारे भाइयों को बंदीगृह से बाहर निकाल दे ।
- 8 और ऐसा हुआ कि जब अम्मोन और लमोनी वहाँ की यात्रा कर रहे थे, वे लमोनी के पिता से मिले जो सारे प्रदेश का राजा था ।
- 9 और देखो, लमोनी के पिता ने उससे कहा: उस महान दिन के भोज पर तुम क्यों नहीं आए जब मैंने अपने बेटों और अपने लोगों के लिए भोज का आयोजन किया था ?
- 10 और उसने यह भी कहा: तुम इस नफाई के साथ कहां जा रहे हो, जो कि झूठ बोलने वालों के बच्चों में से एक है ?

## Alma 20

And it came to pass that when they had established a church in that land, that king Lamoni desired that Ammon should go with him to the land of Nephi, that he might show him unto his father.

And the voice of the Lord came to Ammon, saying: Thou shalt not go up to the land of Nephi, for behold, the king will seek thy life; but thou shalt go to the land of Middoni; for behold, thy brother Aaron, and also Muloki and Ammah are in prison.

Now it came to pass that when Ammon had heard this, he said unto Lamoni: Behold, my brother and brethren are in prison at Middoni, and I go that I may deliver them.

Now Lamoni said unto Ammon: I know, in the strength of the Lord thou canst do all things. But behold, I will go with thee to the land of Middoni; for the king of the land of Middoni, whose name is Antiomno, is a friend unto me; therefore I go to the land of Middoni, that I may flatter the king of the land, and he will cast thy brethren out of prison. Now Lamoni said unto him: Who told thee that thy brethren were in prison?

And Ammon said unto him: No one hath told me, save it be God; and he said unto me—Go and deliver thy brethren, for they are in prison in the land of Middoni.

Now when Lamoni had heard this he caused that his servants should make ready his horses and his chariots.

And he said unto Ammon: Come, I will go with thee down to the land of Middoni, and there I will plead with the king that he will cast thy brethren out of prison.

And it came to pass that as Ammon and Lamoni were journeying thither, they met the father of Lamoni, who was king over all the land.

And behold, the father of Lamoni said unto him: Why did ye not come to the feast on that great day when I made a feast unto my sons, and unto my people?

And he also said: Whither art thou going with this Nephite, who is one of the children of a liar?

- 11 और ऐसा हुआ कि लमोनी ने उसे बता दिया कि वह कहां जा रहा था, क्योंकि उसे डर था कि कहीं वह उसे नाराज न कर दे ।
- 12 और उसने अपने स्वयं के राज्य में रुके रहने का सारा कारण भी उसे बताया, जिससे वह अपने पिता द्वारा तैयार किये गए भोज पर नहीं आ सका था ।
- 13 और अब जब लमोनी उसे ये सारी बातें बता रहा था, देखो, वह आश्चर्यचकित हुआ कि उसका पिता उससे क्रोधित हो गया, और कहा: लमोनी, तुम उन नफाइयों को बचाने जा रहे हो जो झूठ बोलने वालों के बेटे हैं । देखो, उसने हमारे पूर्वजों को लूटा है; और अब उसके बच्चे भी हमारे बीच में आ गए हैं, कि वे भी अपनी धूर्तता और झूठ के द्वारा हमें धोखा दे सकें, ताकि वे फिर से हमारी संपत्तियों को लूट सकें ।
- 14 अब लमोनी के पिता ने उसे आज्ञा दी कि वह अपनी तलवार से अम्मोन को मार दे । और उसने उसे यह भी आज्ञा दी कि वह मिदोनी के देश न जाए, परन्तु वह उसके साथ इश्माएल प्रदेश वापस जाए ।
- 15 परन्तु लमोनी ने उससे कहा: न तो मैं अम्मोन को मारूंगा, न ही इश्माएल प्रदेश वापस जाऊंगा, परन्तु मैं मिदोनी के प्रदेश जाऊंगा ताकि मैं अम्मोन के भाइयों को छोड़ा सकूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि वे न्यायी पुरुष हैं और सच्चे परमेश्वर के पवित्र भविष्यवक्ता हैं ।
- 16 अब जब उसके पिता ने इन बातों को सुना, वह उससे क्रोधित हो उठा, और उसने अपनी तलवार निकाली ताकि उसे मार सके ।
- 17 परन्तु अम्मोन आगे खड़ा हो गया और उससे कहा: देखो, तुम्हें अपने बेटे को नहीं मारना चाहिए; फिर भी, यह अच्छा है कि तुम्हारे गिरने की बजाय वह गिरे, क्योंकि देखो, उसने अपने पापों का पश्चात्ताप कर लिया है; परन्तु अपने क्रोध में इस समय यदि तुम गिर जाते हो तो तुम्हारी आत्मा को नहीं बचाया जा सकता है ।
- 18 और फिर से, यह आवश्यक है कि तुम अपने आपको रोको; क्योंकि यदि तुम अपने निर्दोष बेटे को मारोगे, तुमसे प्रतिशोध लेने के लिए धरती से उसका लहू प्रभु अपने परमेश्वर को पुकारेगा; और तब शायद तुम अपनी आत्मा को खो बैठोगे ।
- 19 अब जब अम्मोन ने उससे इन बातों को कहा, तब उसने यह कहते हुए उसे उत्तर दिया: मैं जानता हूँ कि यदि मैं अपने बेटे को मारूंगा तो मैं निर्दोष का लहू बहाऊंगा; क्योंकि वह तुम हो जिसने उसका विनाश चाहा है ।

And it came to pass that Lamoni rehearsed unto him whither he was going, for he feared to offend him.

And he also told him all the cause of his tarrying in his own kingdom, that he did not go unto his father to the feast which he had prepared.

And now when Lamoni had rehearsed unto him all these things, behold, to his astonishment, his father was angry with him, and said: Lamoni, thou art going to deliver these Nephites, who are sons of a liar. Behold, he robbed our fathers; and now his children are also come amongst us that they may, by their cunning and their lyings, deceive us, that they again may rob us of our property.

Now the father of Lamoni commanded him that he should slay Ammon with the sword. And he also commanded him that he should not go to the land of Middoni, but that he should return with him to the land of Ishmael.

But Lamoni said unto him: I will not slay Ammon, neither will I return to the land of Ishmael, but I go to the land of Middoni that I may release the brethren of Ammon, for I know that they are just men and holy prophets of the true God.

Now when his father had heard these words, he was angry with him, and he drew his sword that he might smite him to the earth.

But Ammon stood forth and said unto him: Behold, thou shalt not slay thy son; nevertheless, it were better that he should fall than thee, for behold, he has repented of his sins; but if thou shouldst fall at this time, in thine anger, thy soul could not be saved.

And again, it is expedient that thou shouldst forbear; for if thou shouldst slay thy son, he being an innocent man, his blood would cry from the ground to the Lord his God, for vengeance to come upon thee; and perhaps thou wouldst lose thy soul.

Now when Ammon had said these words unto him, he answered him, saying: I know that if I should slay my son, that I should shed innocent blood; for it is thou that hast sought to destroy him.

20 और उसने अम्मोन को मारने के लिए अपना हाथ उठाया। परन्तु अम्मोन ने उसके वार को रोका, और उसके हाथ पर ऐसा प्रहार किया कि वह उसका उपयोग न कर सके।

21 अब जब राजा ने देखा कि अम्मोन उसे मार सकता है, वह अम्मोन से अपने जीवनदान की याचना करने लगा।

22 परन्तु अम्मोन ने अपनी तलवार निकाली, और उससे कहा: देखो, यदि तुम मेरे भाइयों को बंदीगृह से निकलवाने का वचन नहीं दोगे तो मैं तुम्हें मार दूंगा।

23 अब अपने जीवन को खोने के डर से राजा ने कहा: यदि तुम मुझे छोड़ दोगे तो तुम जो चाहोगे मैं तुम्हें दूंगा, यहां तक कि आधा राज्य भी।

24 अब जब अम्मोन ने देखा कि उसने वृद्ध राजा को अपनी इच्छा के अनुसार वश में कर लिया है, उसने उससे कहा: यदि तुम मेरे भाइयों को बंदीगृह से निकलवाने का वचन दोगे, और लमोनी के पास उसका राज्य रहने दोगे, और तुम उस पर क्रोध नहीं करोगे, परन्तु तुम उसे उसकी इच्छानुसार कार्य करने का वचन दोगे तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा; नहीं तो मैं तुम्हें यहीं धरती पर दंड दूंगा।

25 अब जब अम्मोन ने इन बातों को कह लिया, जीवन दान पाने के कारण राजा आनंदित हुआ।

26 और जब उसने देखा कि अम्मोन की इच्छा उसे मारने की नहीं है, और उसने उसके बेटे लमोनी के प्रति उसके महान प्रेम को भी देखा, वह बहुत आश्चर्यचकित हुआ, और कहा: क्योंकि तुम्हारी केवल यही इच्छा है कि मैं तुम्हारे भाइयों को छोड़वाऊं, और लमोनी का राज्य उसके पास रहे, देखो, मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि अभी से और सदा के लिए मेरे बेटे का राज्य उसके पास रहे; और अब मैं उस पर शासन नहीं करूंगा—

27 और मैं तुम्हें यह भी वचन देता हूँ कि तुम्हारे भाई बंदीगृह से निकाले जाएंगे, और तुम और तुम्हारे भाई मेरे राज्य में आओगे; क्योंकि तुम्हें देखने की मेरी बड़ी इच्छा है। क्योंकि उसके द्वारा बोली गई बातों से, और अपने बेटे लमोनी द्वारा बोली गई बातों से भी राजा बहुत अचम्भीत था, इसलिए वह उन्हें जानना चाहता था।

28 और ऐसा हुआ कि अम्मोन और लमोनी मिदोनी के प्रदेश की अपनी यात्रा पर निकल पड़े। और लमोनी ने उस प्रदेश के राजा की कृपा प्राप्त की; इसलिए अम्मोन के भाई बंदीगृह से बाहर निकाले गए।

And he stretched forth his hand to slay Ammon. But Ammon withstood his blows, and also smote his arm that he could not use it.

Now when the king saw that Ammon could slay him, he began to plead with Ammon that he would spare his life.

But Ammon raised his sword, and said unto him: Behold, I will smite thee except thou wilt grant unto me that my brethren may be cast out of prison.

Now the king, fearing he should lose his life, said: If thou wilt spare me I will grant unto thee whatsoever thou wilt ask, even to half of the kingdom.

Now when Ammon saw that he had wrought upon the old king according to his desire, he said unto him: If thou wilt grant that my brethren may be cast out of prison, and also that Lamoni may retain his kingdom, and that ye be not displeased with him, but grant that he may do according to his own desires in whatsoever thing he thinketh, then will I spare thee; otherwise I will smite thee to the earth.

Now when Ammon had said these words, the king began to rejoice because of his life.

And when he saw that Ammon had no desire to destroy him, and when he also saw the great love he had for his son Lamoni, he was astonished exceedingly, and said: Because this is all that thou hast desired, that I would release thy brethren, and suffer that my son Lamoni should retain his kingdom, behold, I will grant unto you that my son may retain his kingdom from this time and forever; and I will govern him no more—

And I will also grant unto thee that thy brethren may be cast out of prison, and thou and thy brethren may come unto me, in my kingdom; for I shall greatly desire to see thee. For the king was greatly astonished at the words which he had spoken, and also at the words which had been spoken by his son Lamoni, therefore he was desirous to learn them.

And it came to pass that Ammon and Lamoni proceeded on their journey towards the land of Middoni. And Lamoni found favor in the eyes of the king of the land; therefore the brethren of Ammon were brought forth out of prison.

29 और जब अम्मोन उनसे मिला तब वह बहुत दुखी था, क्योंकि देखो वे नंगे थे, और मजबूत रस्सियों से बांधे जाने के कारण उनकी त्वचा कट गई थी। और उन्होंने भूख, प्यास, और हर प्रकार के कष्ट को सहा था; फिर भी, अपनी सारी उत्पीड़न में वे धैर्यवान रहे थे।

30 और, जैसा कि हुआ था, वे अपने दुर्भाग्य के कारण निर्दयी और हठी लोगों के हाथों में पड़ गए थे; इसलिए उन्होंने उनकी बातों को नहीं सुना, और उन्हें बाहर निकाल दिया, और उन्हें मारा-पीटा, और उन्हें एक घर से दूसरे घर तक और एक जगह से दूसरी जगह तक तब तक खदेड़ते रहे जब तक कि वे मिदोनी के प्रदेश में न पहुंच गए; और वहां उन्हें पकड़कर बंदीगृह में डाल दिया गया, और मजबूत रस्सियों से बांधकर कई दिनों तक बंदीगृह में रखा गया, और वे लमोनी और अम्मोन द्वारा छुड़ाए गए।

And when Ammon did meet them he was exceedingly sorrowful, for behold they were naked, and their skins were worn exceedingly because of being bound with strong cords. And they also had suffered hunger, thirst, and all kinds of afflictions; nevertheless they were patient in all their sufferings.

And, as it happened, it was their lot to have fallen into the hands of a more hardened and a more stiff-necked people; therefore they would not hearken unto their words, and they had cast them out, and had smitten them, and had driven them from house to house, and from place to place, even until they had arrived in the land of Middoni; and there they were taken and cast into prison, and bound with strong cords, and kept in prison for many days, and were delivered by Lamoni and Ammon.

हारून, और मुलोकी, और उनके भाइयों द्वारा लमनाइयों के लिए प्रचार का एक विवरण ।

## अलमा 21

- 1 अब जब अम्मोन और उसके भाई लमनाइयों के प्रदेश की सीमा पर अलग हुए, देखो हारून ने उस प्रदेश की यात्रा की जो लमनाइयों द्वारा यरूशलेम कहलाता था, जिसका नाम उनके पूर्वजों के जन्मस्थान के नाम पर था; और यह मॉरमन की सीमा से दूर था ।
- 2 अब लमनाई और अमालेकियों और अमुलोन के लोगों ने एक महान नगर बनाया, जिसे यरूशलेम कहा गया ।
- 3 अब लमनाई स्वयं ही बहुत निर्दयी थे, परन्तु अमालेकियों और अमुलोनियों और अधिक कठोर थे; इसलिए उन्होंने लमनाइयों के प्रति कारण उत्पन्न किया कि वे अपने हृदयों को कठोर करें, ताकि वे दुष्टता और घृणित कार्यों में और मजबूत हो जाएं ।
- 4 और ऐसा हुआ कि हारून यरूशलेम के नगर आया, और सबसे पहले उसने अमालेकियों को सिखाना आरंभ किया । और उसने उन्हें उनके आराधनालयों में सिखाना आरंभ किया, क्योंकि उन्होंने निहोरों की रीति के अनुसार आराधनालयों का निर्माण किया था; क्योंकि बहुत से अमालेकी और अमुलोनी निहोरों की रीति के अनुसार थे ।
- 5 इसलिए, जब हारून ने लोगों को सिखाने के लिए उनके आराधनालयों में से एक में प्रवेश किया, और जब वह उनसे बात कर रहा था, देखो वहां पर एक अमालेकी खड़ा हुआ और उससे विवाद करने लगा, यह कहते हुए: तुमने किस चीज की गवाही दी है ? क्या तुमने स्वर्गदूत को देखा है ? स्वर्गदूत हमें क्यों नहीं दिखाई देते हैं ? देखो क्या ये लोग तुम्हारे लोगों के समान अच्छे नहीं हैं ?
- 6 तुम यह भी कहते हो कि यदि हमने पश्चाताप नहीं किया तो हम नष्ट हो जाएंगे । तुम हमारे मन के विचार और इच्छा को कैसे जानते हो ? तुम कैसे जानते हो कि हमारे पास पश्चाताप करने का कारण है ? तुम कैसे जानते हो कि हम धर्मी लोग नहीं हैं ? देखो, हमने पवित्र स्थान का निर्माण किया है, और परमेश्वर की आराधना के लिए हम भी एकत्रित होते हैं । हम भी विश्वास करते हैं कि परमेश्वर सारे लोगों को बचाएगा ।

*An account of the preaching of Aaron, and Muloki, and their brethren, to the Lamanites.*

## Alma 21

Now when Ammon and his brethren separated themselves in the borders of the land of the Lamanites, behold Aaron took his journey towards the land which was called by the Lamanites, Jerusalem, calling it after the land of their fathers' nativity; and it was away joining the borders of Mormon.

Now the Lamanites and the Amalekites and the people of Amulon had built a great city, which was called Jerusalem.

Now the Lamanites of themselves were sufficiently hardened, but the Amalekites and the Amulonites were still harder; therefore they did cause the Lamanites that they should harden their hearts, that they should wax strong in wickedness and their abominations.

And it came to pass that Aaron came to the city of Jerusalem, and first began to preach to the Amalekites. And he began to preach to them in their synagogues, for they had built synagogues after the order of the Nehors; for many of the Amalekites and the Amulonites were after the order of the Nehors.

Therefore, as Aaron entered into one of their synagogues to preach unto the people, and as he was speaking unto them, behold there arose an Amalekite and began to contend with him, saying: What is that thou hast testified? Hast thou seen an angel? Why do not angels appear unto us? Behold are not this people as good as thy people?

Thou also sayest, except we repent we shall perish. How knowest thou the thought and intent of our hearts? How knowest thou that we have cause to repent? How knowest thou that we are not a righteous people? Behold, we have built sanctuaries, and we do assemble ourselves together to worship God. We do believe that God will save all men.

- 7 अब हारून ने उससे कहा: क्या तुम विश्वास करते हो कि मानव-जाति को उनके पापों से मुक्ति दिलाने के लिए परमेश्वर का पुत्र आएगा ?
- 8 और व्यक्ति ने उससे कहा: हम नहीं विश्वास करते हैं कि तुम इस प्रकार की किसी भी बात को जानते हो । हम इन मूर्खतापूर्ण परंपराओं में विश्वास नहीं करते हैं । हम विश्वास नहीं करते हैं कि तुम आने-वाली चीजों के बारे में जानते हो, न ही हम विश्वास करते हैं कि तुम्हारे पूर्वज और हमारे पूर्वज भी स्वयं के द्वारा कही गई भविष्य में होनेवाली बातों के विषय में जानते थे ।
- 9 अब हारून ने मसीह के आगमन से संबंधित, और मरे हुए लोगों के पुनरुत्थान से संबंधित बातों के लिए धर्मशास्त्रों को खोलना आरंभ किया, और वहां पर मसीह की मृत्यु और उत्पीड़न, और उसके लहू के प्रायश्चित के अलावा मानवजाति के लिए कोई मुक्ति नहीं थी ।
- 10 और ऐसा हुआ कि जैसे ही उसने उन लोगों को इन बातों को समझाना आरंभ किया वो उससे क्रोधित हो गए, और उसका मजाक उड़ाने लगे; और जो कुछ भी वह कह रहा था उसे अनसुना करने लगे ।
- 11 इसलिए, जब उसने देखा कि वे उसकी बातों को अनसुना कर रहे हैं, तो वह उनके आराधनालय से चला गया, और वह एक एनी-अंती नामक गांव पहुंचा, और वहां उसने मुलोकी को; और अम्मा और उसके भाइयों के उन लोगों को सिखाते पाया । और उनमें से कई लोगों ने वचन पर विवाद किया ।
- 12 और ऐसा हुआ कि उन्होंने देखा कि लोग अपने हृदयों को कठोर कर रहे थे, इसलिए वे वहां से चले गए और मिदोनी के प्रदेश पहुंचे । और उन्होंने कई लोगों को वचन सिखाया, और कुछ ही लोगों ने उनके सिखाए गए वचन पर विश्वास किया ।
- 13 फिर भी, हारून और उसके कुछ भाइयों को पकड़कर बंदीगृह में डाल दिया गया, और उनमें से बचे हुए लोग मिदोनी प्रदेश छोड़कर उसके आसपास के क्षेत्रों में भाग गए ।
- 14 और उन लोगों ने बहुत सहा जिन्हें बंदीगृह में डाला गया था, और वे लमोनी और अम्मोन द्वारा बचाए गए, और उन्हें भोजन और कपड़ा दिया गया ।
- 15 और वे फिर से वचन सुनाने के लिए आगे बढ़ गए, और इस प्रकार पहली बार उन्हें बंदीगृह से बाहर निकाला गया; और इस प्रकार उन्हें यातनाएं झेलनी पड़ी ।

Now Aaron said unto him: Believest thou that the Son of God shall come to redeem mankind from their sins?

And the man said unto him: We do not believe that thou knowest any such thing. We do not believe in these foolish traditions. We do not believe that thou knowest of things to come, neither do we believe that thy fathers and also that our fathers did know concerning the things which they spake, of that which is to come.

Now Aaron began to open the scriptures unto them concerning the coming of Christ, and also concerning the resurrection of the dead, and that there could be no redemption for mankind save it were through the death and sufferings of Christ, and the atonement of his blood.

And it came to pass as he began to expound these things unto them they were angry with him, and began to mock him; and they would not hear the words which he spake.

Therefore, when he saw that they would not hear his words, he departed out of their synagogue, and came over to a village which was called Ani-Anti, and there he found Muloki preaching the word unto them; and also Ammah and his brethren. And they contended with many about the word.

And it came to pass that they saw that the people would harden their hearts, therefore they departed and came over into the land of Middoni. And they did preach the word unto many, and few believed on the words which they taught.

Nevertheless, Aaron and a certain number of his brethren were taken and cast into prison, and the remainder of them fled out of the land of Middoni unto the regions round about.

And those who were cast into prison suffered many things, and they were delivered by the hand of Lamoni and Ammon, and they were fed and clothed.

And they went forth again to declare the word, and thus they were delivered for the first time out of prison; and thus they had suffered.

- 16 और अमालेकियों के हर आराधनालय में, या लमनाइयों के हर सभा में जहां भी उन्हें प्रवेश करने का मौका मिला, परमेश्वर के वचन को सिखाते हुए वे जहां भी गए उन्हें प्रभु की आत्मा द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ ।
- 17 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने उन्हें इतना अधिक आशीष देना आरंभ किया कि उन्होंने कई लोगों को सच्चाई के ज्ञान से अवगत कराया; हां, उन्होंने कई लोगों को उनके पापों को, और उनके पूर्वजों की परंपराओं को स्वीकार कराया जो कि सही नहीं थीं ।
- 18 और ऐसा हुआ कि अम्मोन और लमोनी मिदोनी प्रदेश से वापस इश्माएल प्रदेश लौट आए, जो कि उनका अपना प्रदेश था ।
- 19 और राजा लमोनी नहीं चाहता था कि अम्मोन उसकी सेवा करे, या उसका सेवक रहे ।
- 20 परन्तु उसने ऐसा होने दिया कि इश्माएल प्रदेश में आराधनालय बनवाए गए; और उसने अपने लोगों को, या अपने शासन के अधीन लोगों को वहां पर एक साथ एकत्रित करवाया ।
- 21 और वह इस वजह से आनंदित हुआ, और उसने उन्हें कई बातें सिखायीं । और उसने उन्हें यह भी बताया कि ये वही लोग थे जो उसके अधीन थे, और यह कि वे स्वतंत्र लोग थे, और वे राजा और उसके पिता के दमन से भी मुक्त थे; क्योंकि उसके पिता ने उसे अधिकार दिया था कि वह इश्माएल प्रदेश में रह रहे लोगों पर, और उसके आसपास के लोगों पर शासन कर सकता है ।
- 22 और उसने उन्हें यह भी बताया कि यदि वे राजा लमोनी के शासनाधीन प्रदेश में हैं, तो वे अपनी इच्छा के अनुसार जहां चाहे वहां प्रभु अपने परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं ।
- 23 अम्मोन ने राजा लमोनी के लोगों को सिखाया; और ऐसा हुआ कि धार्मिकता से संबंधित सारी बातों को उसने उन्हें सिखाया । और वह उन्हें बड़ी ही निष्ठा से नियमित रूप से उपदेश देता; और वे उसकी बातों को सुनते, और वे परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के प्रति उत्साही थे ।
- And they went forth whithersoever they were led by the Spirit of the Lord, preaching the word of God in every synagogue of the Amalekites, or in every assembly of the Lamanites where they could be admitted.
- And it came to pass that the Lord began to bless them, insomuch that they brought many to the knowledge of the truth; yea, they did convince many of their sins, and of the traditions of their fathers, which were not correct.
- And it came to pass that Ammon and Lamoni returned from the land of Middoni to the land of Ishmael, which was the land of their inheritance.
- And king Lamoni would not suffer that Ammon should serve him, or be his servant.
- But he caused that there should be synagogues built in the land of Ishmael; and he caused that his people, or the people who were under his reign, should assemble themselves together.
- And he did rejoice over them, and he did teach them many things. And he did also declare unto them that they were a people who were under him, and that they were a free people, that they were free from the oppressions of the king, his father; for that his father had granted unto him that he might reign over the people who were in the land of Ishmael, and in all the land round about.
- And he also declared unto them that they might have the liberty of worshiping the Lord their God according to their desires, in whatsoever place they were in, if it were in the land which was under the reign of king Lamoni.
- And Ammon did preach unto the people of king Lamoni; and it came to pass that he did teach them all things concerning things pertaining to righteousness. And he did exhort them daily, with all diligence; and they gave heed unto his word, and they were zealous for keeping the commandments of God.



## अलमा 22

- 1 अब, जब अम्मोन निरंतर लमोनी के लोगों को सिखा रहा था, हम हारून और उसके भाइयों के विवरण पर चलेंगे; क्योंकि मिदोनी के प्रदेश से चले जाने के पश्चात वह आत्मा द्वारा नफी के प्रदेश ले जाया गया, यहां तक कि राजा के घर पर भी जो कि इश्माएल प्रदेश को छोड़कर बाकी प्रदेशों का राजा था; और वह लमोनी का पिता था ।
- 2 और ऐसा हुआ कि जब वह अपने भाइयों के साथ राजा के महल के भीतर पहुंचा, और राजा के सामने नतमस्तक हुआ, और उससे कहा: देखो, हे राजा, हम अम्मोन के वे भाई हैं जिन्हें तुमने बंदीगृह से बाहर निकाला है ।
- 3 और अब, हे राजा, यदि तुम हमें जीवनदान दोगे, हम तुम्हारे सेवक बन जाएंगे । और राजा ने उनसे कहा: उठो, क्योंकि मैं तुम्हें जीवनदान देता हूँ, और मैं नहीं चाहता कि तुम मेरे सेवक बनो; परन्तु मैं आग्रह करूंगा कि तुम मुझे उपदेश दो; क्योंकि मैं तुम्हारे भाई अम्मोन की उदारता और उसकी महान बातों से कुछ व्याकुल था; और मैं कारण भी जानना चाहता हूँ कि वह तुम्हारे साथ मिदोनी से क्यों नहीं आया ।
- 4 और हारून ने राजा से कहा: देखो, प्रभु की आत्मा ने उसे दूसरे मार्ग पर भेज दिया; लमोनी के लोगों को सिखाने के लिए वह इश्माएल प्रदेश चला गया ।
- 5 अब राजा ने उससे कहा: यह क्या है जिसे तुमने प्रभु की आत्मा कहा है ? देखो, यही बात है जो मुझे व्याकुल किये हुए है ।
- 6 और यह भी, यह क्या है जिसे अम्मोन ने कहा था—यदि तुम पश्चाताप करोगे तो बचाए जाओगे, और यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे, अंतिम दिन में तुम्हें निकाल दिया जाएगा ?
- 7 और हारून ने उसे उत्तर दिया और उससे कहा: क्या तुम विश्वास करते हो कि परमेश्वर है ? और राजा ने कहा: मैं जानता हूँ कि अमालेकी कहते हैं कि परमेश्वर है, और मैंने उन्हें अनुमति दी है कि वे पवित्र स्थानों का निर्माण करें, ताकि उसकी आराधना के लिए वे एकत्रित हो सकें । और अब जब तुम कहते हो कि परमेश्वर है, देखो मैं विश्वास करूंगा ।
- 8 और अब जब हारून ने इसे सुना, उसका हृदय आनंद मनाने लगे, और उसने कहा: देखो, जैसे कि तुम वास्तव में जीवित हो, हे राजा, वैसे ही परमेश्वर भी है ।

## Alma 22

Now, as Ammon was thus teaching the people of Lamoni continually, we will return to the account of Aaron and his brethren; for after he departed from the land of Middoni he was led by the Spirit to the land of Nephi, even to the house of the king which was over all the land save it were the land of Ishmael; and he was the father of Lamoni.

And it came to pass that he went in unto him into the king's palace, with his brethren, and bowed himself before the king, and said unto him: Behold, O king, we are the brethren of Ammon, whom thou hast delivered out of prison.

And now, O king, if thou wilt spare our lives, we will be thy servants. And the king said unto them: Arise, for I will grant unto you your lives, and I will not suffer that ye shall be my servants; but I will insist that ye shall administer unto me; for I have been somewhat troubled in mind because of the generosity and the greatness of the words of thy brother Ammon; and I desire to know the cause why he has not come up out of Middoni with thee.

And Aaron said unto the king: Behold, the Spirit of the Lord has called him another way; he has gone to the land of Ishmael, to teach the people of Lamoni.

Now the king said unto them: What is this that ye have said concerning the Spirit of the Lord? Behold, this is the thing which doth trouble me.

And also, what is this that Ammon said—If ye will repent ye shall be saved, and if ye will not repent, ye shall be cast off at the last day?

And Aaron answered him and said unto him: Believest thou that there is a God? And the king said: I know that the Amalekites say that there is a God, and I have granted unto them that they should build sanctuaries, that they may assemble themselves together to worship him. And if now thou sayest there is a God, behold I will believe.

And now when Aaron heard this, his heart began to rejoice, and he said: Behold, assuredly as thou livest, O king, there is a God.

- 9 और राजा ने कहा: क्या परमेश्वर वही महान आत्मा है जो हमारे पूर्वजों को यरूशलेम की धरती से बाहर लाया था ?
- 10 और हारून ने उससे कहा: हां, यही वह आत्मा है, और उसी ने स्वर्ग और पृथ्वी का सारी चीजों को बनाया है। क्या तुम विश्वास करते हो ?
- 11 और उसने कहा: हां, मैं विश्वास करता हूँ कि महान आत्मा ने सारी चीजों को बनाया है, और मेरी इच्छा है कि तुम मुझे इन सारी चीजों से संबंधित बातें बताओ, और मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास करूँगा।
- 12 और ऐसा हुआ कि जब हारून ने देखा कि राजा उसकी बातों पर विश्वास कर रहा है, वह धर्मशास्त्रों को पढ़कर राजा को आदम की रचना के बारे में सुनाने लगा—कि किस प्रकार परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी समानता में बनाया है, और यह कि परमेश्वर ने उसे आज्ञाएं दी, और यह कि उल्लंघन के कारण मनुष्य का पतन हुआ।
- 13 और हारून ने आदम की रचना से संबंधित धर्मशास्त्रों को उसे समझाया, मनुष्य के पतन को, और उनकी शारीरिक अवस्था को और मुक्ति की उस योजना को भी समझाया जिसे उन लोगों के लिए मसीह के द्वारा संसार की नींव के समय ही बना लिया गया था जो उसके नाम में विश्वास करेंगे।
- 14 और क्योंकि मनुष्य का पतन हो चुका था इसलिए वह स्वयं किसी भी वस्तु के योग्य नहीं हो सकता था; परन्तु विश्वास और पश्चात्ताप के द्वारा, मसीह के उत्पीड़न और उसकी मृत्यु से उनके पाप क्षमा हो सकते हैं, और इससे आगे; यह कि वह मृत्यु के बंधन को तोड़ता है, ताकि मृत्यु विजय प्राप्त न कर सके, और यह कि मृत्यु की टीस महिमा की आशा द्वारा निगल ली जाएगी; और हारून ने इन सारी बातों को राजा को समझाया।
- 15 और ऐसा हुआ कि जब हारून ने इन बातों को उसे समझा लिया, राजा ने कहा: मुझे क्या करना होगा जिससे मैं इस अनंत जीवन को पा सकूँ जिसके बारे में तुमने बताया है ? हां, मुझे क्या करना होगा कि मैं परमेश्वर में जन्म लूँ, अपने हृदय से इस दुष्ट जमी हुआ आत्मा को बाहर निकालते हुए, और उसकी आत्मा को प्राप्त करते हुए, ताकि मैं आनंद से भर सकूँ, ताकि आखिरी समय में मुझे बाहर निकाला जाए ? देखो, उसने कहा, मैं अपनी सारी संपत्ति छोड़ दूँगा, हां, मैं अपना राज्य छोड़ दूँगा, ताकि मैं इस महान खुशी को प्राप्त कर सकूँ।

And the king said: Is God that Great Spirit that brought our fathers out of the land of Jerusalem?

And Aaron said unto him: Yea, he is that Great Spirit, and he created all things both in heaven and in earth. Believest thou this?

And he said: Yea, I believe that the Great Spirit created all things, and I desire that ye should tell me concerning all these things, and I will believe thy words.

And it came to pass that when Aaron saw that the king would believe his words, he began from the creation of Adam, reading the scriptures unto the king—how God created man after his own image, and that God gave him commandments, and that because of transgression, man had fallen.

And Aaron did expound unto him the scriptures from the creation of Adam, laying the fall of man before him, and their carnal state and also the plan of redemption, which was prepared from the foundation of the world, through Christ, for all whosoever would believe on his name.

And since man had fallen he could not merit anything of himself; but the sufferings and death of Christ atone for their sins, through faith and repentance, and so forth; and that he breaketh the bands of death, that the grave shall have no victory, and that the sting of death should be swallowed up in the hopes of glory; and Aaron did expound all these things unto the king.

And it came to pass that after Aaron had expounded these things unto him, the king said: What shall I do that I may have this eternal life of which thou hast spoken? Yea, what shall I do that I may be born of God, having this wicked spirit rooted out of my breast, and receive his Spirit, that I may be filled with joy, that I may not be cast off at the last day? Behold, said he, I will give up all that I possess, yea, I will forsake my kingdom, that I may receive this great joy.

- 16 परन्तु हारून ने उससे कहा: यदि तुम ऐसा चाहते हो, यदि तुम परमेश्वर के सामने नतमस्तक होगे, हां यदि तुम अपने सारे पापों से पश्चाताप करोगे, और परमेश्वर के सामने झुकोगे, और विश्वास में रहते हुए उसका नाम पुकारोगे यह मानते हुए कि तुम पाओगे, तब तुम वह आशा प्राप्त करोगे जिसकी तुम इच्छा रखते हो ।
- 17 और ऐसा हुआ कि जब हारून ने इन बातों को कह लिया, राजा अपने घुटनों पर प्रभु के सामने झुक गया; हां, यहां तक कि वह जमीन पर औंधे मुंह गिर गया और जोर से यह कहते हुए याचना की:
- 18 हे परमेश्वर, हारून ने मुझसे कहा है कि परमेश्वर है; और यदि परमेश्वर है, और यदि तुम परमेश्वर हो, तो क्या तुम स्वयं को मुझ पर प्रकट करोगे, और तुम्हें जानने के लिए मैं अपने सारे पाप त्याग दूंगा, ताकि मुझे मरे हुआओं में से जिलाया जा सके, और अंतिम दिन मुझे बाचाया जा सके । और जब राजा ने इन बातों को कह लिया, तब वह मृत व्यक्ति के समान हो गया ।
- 19 और ऐसा हुआ कि उसके सेवक दौड़कर गए और रानी को वह सारी बातें बताईं जो राजा के साथ हुई थीं । और वह राजा के पास आई; और जब उसने उसे मरे हुए व्यक्ति के समान देखा, और हारून और उसके भाई को ऐसे खड़ा देखा जैसे कि उसके गिरने का कारण वही लोग हैं, तो वह उनसे क्रोधित हो गई, और उसने अपने सेवकों को, या राजा के सेवकों को आज्ञा दी कि वे उन्हें ले जाकर मार दें ।
- 20 अब सेवकों ने राजा के गिरने का कारण देखा था, इसलिए, उनमें हारून और उसके भाइयों को हाथ लगाने का साहस नहीं हुआ; और उन्होंने रानी से यह कहते हुए याचना की: तुम हमें इन लोगों को मारने की आज्ञा क्यों देती हो, जब कि देखो उनमें से एक हम सबसे अधिक शक्तिशाली है ? इसलिए हम उनके सामने पराजित हो जाएंगे ।
- 21 अब जब रानी ने सेवकों के डर को देखा तो वह भी अत्याधिक भयभीत होने लगी, कि कहीं उसके ऊपर कोई बुराई न आ जाए । और उसने सेवकों को आज्ञा दी कि वे जाकर लोगों को बुला लाएं, ताकि वे हारून और उसके भाइयों को मार सकें ।
- 22 अब जब हारून ने रानी का संकल्प देखा, और वह भी लोगों के हृदय की कठोरता को जानता था, तो भयभीत हो गया कि भीड़ एकत्रित हो जाएगी, और उनमें भारी वाद-विवाद और गड़बड़ी हो सकती है; इसलिए उसने अपने हाथ आगे कर राजा को जमीन से उठाया, और उससे कहा: खड़े हो जाओ । और वह अपना बल प्राप्त करते हुए अपने पैरों पर खड़ा हो गया ।

But Aaron said unto him: If thou desirest this thing, if thou wilt bow down before God, yea, if thou wilt repent of all thy sins, and will bow down before God, and call on his name in faith, believing that ye shall receive, then shalt thou receive the hope which thou desirest.

And it came to pass that when Aaron had said these words, the king did bow down before the Lord, upon his knees; yea, even he did prostrate himself upon the earth, and cried mightily, saying:

O God, Aaron hath told me that there is a God; and if there is a God, and if thou art God, wilt thou make thyself known unto me, and I will give away all my sins to know thee, and that I may be raised from the dead, and be saved at the last day. And now when the king had said these words, he was struck as if he were dead.

And it came to pass that his servants ran and told the queen all that had happened unto the king. And she came in unto the king; and when she saw him lay as if he were dead, and also Aaron and his brethren standing as though they had been the cause of his fall, she was angry with them, and commanded that her servants, or the servants of the king, should take them and slay them.

Now the servants had seen the cause of the king's fall, therefore they durst not lay their hands on Aaron and his brethren; and they pled with the queen saying: Why commandest thou that we should slay these men, when behold one of them is mightier than us all? Therefore we shall fall before them.

Now when the queen saw the fear of the servants she also began to fear exceedingly, lest there should some evil come upon her. And she commanded her servants that they should go and call the people, that they might slay Aaron and his brethren.

Now when Aaron saw the determination of the queen, he, also knowing the hardness of the hearts of the people, feared lest that a multitude should assemble themselves together, and there should be a great contention and a disturbance among them; therefore he put forth his hand and raised the king from the earth, and said unto him: Stand. And he stood upon his feet, receiving his strength.

- 23 अब यह रानी और कई सेवकों की उपस्थिति में हुआ था। और जब उन्होंने इसे देखा तो बहुत अचम्भीत हुए, और डरने लगे। और राजा खड़ा हो गया और उन्हें उपदेश देने लगा। और उसने उन्हें इतना अधिक उपदेश दिया कि उसका पूरा घराना प्रभु में परिवर्तित हो गया।
- 24 अब रानी की आज्ञा के कारण वहां पर एक भारी भीड़ एकत्रित हो गई, और हारून और उसके भाइयों के कारण उन लोगों ने बड़बड़ाना शुरू कर दिया।
- 25 परन्तु राजा उनके बीच खड़ा हुआ और उन्हें उपदेश दिया। और उनका क्रोध हारून और उसके लोगों के लिए शान्त हो गया।
- 26 और ऐसा हुआ कि जब राजा ने देखा कि लोग शान्त हो गए, तब उसने हारून और उसके भाइयों को लोगों के बीच खड़े होने, और उन्हें वचन का प्रचार करने के लिए कहा।
- 27 और ऐसा हुआ कि राजा ने पूरे प्रदेश में घोषणा की, उसके अपने प्रदेश के लोगों में, अपने आसपास के क्षेत्रों में, समुद्र की सीमाओं पर, पूर्व और पश्चिम में, और निर्जन स्थान में पतली सड़क द्वारा जराहेमला से विभाजित क्षेत्रों में जो कि पश्चिम के समुद्रतट से पूर्व के समुद्रतट की ओर, और समुद्र के किनारे से लगी सीमा पर जा रही थी, और निर्जन स्थान की सीमाओं पर जो कि पूर्व से पश्चिम की ओर बहते हुए सिदोन नदी के उद्गम से मण्टी की सीमाओं द्वारा होकर जराहेमला के प्रदेश के उत्तर में था—और इस प्रकार लमनाई और नफाई विभाजित थे।
- 28 अब, अधिक आलसी लमनाई निर्जन स्थान में, तंबुओं में रहते थे; और वे नफी के प्रदेश में पश्चिमी के निर्जन स्थान में फैले हुए थे; हां, और समुद्र के किनारे की सीमाओं में जराहेमला प्रदेश के पश्चिम में भी रहते थे, और नफी के प्रदेश के पश्चिम में अपने पूर्वजों के पहले निवास-स्थान में रहते थे, और इस प्रकार समुद्र के किनारे की सीमाओं पर रहते थे।

Now this was done in the presence of the queen and many of the servants. And when they saw it they greatly marveled, and began to fear. And the king stood forth, and began to minister unto them. And he did minister unto them, insomuch that his whole household were converted unto the Lord.

Now there was a multitude gathered together because of the commandment of the queen, and there began to be great murmurings among them because of Aaron and his brethren.

But the king stood forth among them and administered unto them. And they were pacified towards Aaron and those who were with him.

And it came to pass that when the king saw that the people were pacified, he caused that Aaron and his brethren should stand forth in the midst of the multitude, and that they should preach the word unto them.

And it came to pass that the king sent a proclamation throughout all the land, amongst all his people who were in all his land, who were in all the regions round about, which was bordering even to the sea, on the east and on the west, and which was divided from the land of Zarahemla by a narrow strip of wilderness, which ran from the sea east even to the sea west, and round about on the borders of the seashore, and the borders of the wilderness which was on the north by the land of Zarahemla, through the borders of Manti, by the head of the river Sidon, running from the east towards the west—and thus were the Lamanites and the Nephites divided.

Now, the more idle part of the Lamanites lived in the wilderness, and dwelt in tents; and they were spread through the wilderness on the west, in the land of Nephi; yea, and also on the west of the land of Zarahemla, in the borders by the seashore, and on the west in the land of Nephi, in the place of their fathers' first inheritance, and thus bordering along by the seashore.

- 29 और समुद्रतट के पूर्व में भी कई लमनाई रहते थे, जहां नफाइयों ने उन्हें भगा दिया था। और इस प्रकार नफाई लगभग लमनाइयों द्वारा घिरे हुए थे; फिर भी, नफाइयों ने निर्जन स्थान की सीमाओं से लगे प्रदेश के सारे उत्तरी भाग पर अधिकार कर लिया था जो कि उत्तर में निर्जन प्रदेश के आसपास के क्षेत्रों में पूर्व से पश्चिम की ओर बहती हुई सिदोन नदी के उद्गम पर था, यहां तक कि वे उस प्रदेश में आए जिसे वे संपन्न प्रदेश कहते थे।
- 30 और उनके प्रदेश की सीमा यहां तक थी जिसे वे उजाड़ कहते थे जो कि उत्तर में दूर तक फैला था जिसमें लोग बसे हुए थे और बाद में नष्ट हो गए थे, जिनकी हड्डियों के विषय में हम बता चुके हैं जिसे जराहेमला के लोगों ने पाया था क्योंकि यह वह स्थान था जहां वे पहले पहुंचे थे।
- 31 और वहां से वे दक्षिण के निर्जन स्थान पर आए। इस प्रकार उत्तरी प्रदेश उजाड़ प्रदेश कहलाया, और दक्षिणी प्रदेश संपन्न प्रदेश कहलाया, क्योंकि यह निर्जन स्थान में स्थित था जो हर प्रकार के सारे जंगली जानवरों से भरा हुआ था, जिसमें से कुछ उत्तरी प्रदेश के लोग वहां भोजन प्राप्त करने आ गए थे।
- 32 और अब, पूर्व से पश्चिमी समुद्र की ओर, संपन्न प्रदेश और उजाड़ प्रदेश की यात्रा के लिए एक नफाई को डेढ़ दिन लगते थे; और इस प्रकार नफी और जराहेमला के प्रदेश लगभग पानी से घिरे हुए थे, जहां उत्तरी और दक्षिणी भूमि एक छोटे से स्थान द्वारा जुड़े हुए थे।
- 33 और ऐसा हुआ कि नफाई संपन्न प्रदेश में बस गए थे, यहां तक कि पूर्वी समुद्रतट से पश्चिमी समुद्रतट तक, और इस प्रकार अपने ज्ञान, अपने सिपाही और अपनी सेना के साथ नफाइयों ने दक्षिण की तरफ लमनाइयों को घेर लिया था, ताकि इसके पश्चात उनके पास उत्तर में कोई भी संपत्ति न हो सके, और वे उत्तर के प्रदेश की तरफ न आ सकें।
- 34 इसलिए लमनाइयों के पास केवल नफी के प्रदेश और उसके आसपास के निर्जन स्थान में कोई भी संपत्ति नहीं रह गई थी। अब यह नफाइयों की बुद्धिमानी थी—जब कि लमनाई उनके शत्रु थे, और वे चारों तरफ उनके द्वारा किये गए उपद्रवों को सह नहीं सकते थे, और यह कि अपनी इच्छानुसार आवश्यकता पड़ने पर उनके पास एक प्रदेश हो जहां वे भाग सकें।

And also there were many Lamanites on the east by the seashore, whither the Nephites had driven them. And thus the Nephites were nearly surrounded by the Lamanites; nevertheless the Nephites had taken possession of all the northern parts of the land bordering on the wilderness, at the head of the river Sidon, from the east to the west, round about on the wilderness side; on the north, even until they came to the land which they called Bountiful.

And it bordered upon the land which they called Desolation, it being so far northward that it came into the land which had been peopled and been destroyed, of whose bones we have spoken, which was discovered by the people of Zarahemla, it being the place of their first landing.

And they came from there up into the south wilderness. Thus the land on the northward was called Desolation, and the land on the southward was called Bountiful, it being the wilderness which is filled with all manner of wild animals of every kind, a part of which had come from the land northward for food.

And now, it was only the distance of a day and a half's journey for a Nephite, on the line Bountiful and the land Desolation, from the east to the west sea; and thus the land of Nephi and the land of Zarahemla were nearly surrounded by water, there being a small neck of land between the land northward and the land southward.

And it came to pass that the Nephites had inhabited the land Bountiful, even from the east unto the west sea, and thus the Nephites in their wisdom, with their guards and their armies, had hemmed in the Lamanites on the south, that thereby they should have no more possession on the north, that they might not overrun the land northward.

Therefore the Lamanites could have no more possessions only in the land of Nephi, and the wilderness round about. Now this was wisdom in the Nephites—as the Lamanites were an enemy to them, they would not suffer their afflictions on every hand, and also that they might have a country whither they might flee, according to their desires.

35 और अब, यह सब कहने के पश्चात मैं, फिर से अम्मोन और हारून, ओमनर और हिम्नी, और उनके भाइयों के विवरण पर लौट आया ।

And now I, after having said this, return again to the account of Ammon and Aaron, Omner and Himni, and their brethren.

## अलमा 23

- 1 देखो, अब ऐसा हुआ कि लमनाइयों के राजा ने अपने सारे लोगों में घोषणा करवा दी कि कोई भी न तो अम्मोन, हारून, ओमनोर, या हिम्नी को हाथ लगाएगा और न ही उनके भाइयों को जो प्रदेश के किसी भी भाग में और किसी भी स्थान पर परमेश्वर के वचन का प्रचार करने वाले हैं।
- 2 हां, उसने उनमें आदेश भिजवाया कि उन्हें बांधने, या बंदीगृह में डालने के लिए कोई भी उन्हें न तो हाथ लगाएगा; और न ही वे उन पर थूकेंगे, न उन्हें दंड देंगे, न उन्हें अपने आराधनालयों से बाहर निकालेंगे, न उन पर कोड़े बरसाएंगे, न उन पर पत्थर मारेंगे, परन्तु उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक अपने घरों, मंदिरों, और अपने पवित्र स्थानों पर जाने देंगे।
- 3 और इस प्रकार वे आगे जाकर अपनी इच्छा के अनुसार वचन का प्रचार कर सकते थे, क्योंकि राजा और उसका पूरा घराना प्रभु में परिवर्तित हो चुका था; इसलिए उसने पूरे प्रदेश में अपने लोगों के लिए घोषणा करवा दी, कि परमेश्वर के वचन का विरोध न हो, लेकिन इसका संपूर्ण प्रदेश में प्रचार किया जाए, ताकि लोग अपने पूर्वजों की भ्रष्ट परंपराओं को मान सकें, और वे यह भी मान सकें कि वे सब उनके भाई थे, और उन्हें न तो हत्या करनी चाहिए, न ही लूटपाट, चोरी करनी चाहिए, न ही व्यभिचार, या किसी भी प्रकार की दुष्टता करनी चाहिए।
- 4 और अब ऐसा हुआ कि जब राजा ने घोषणा करवा दी, तब हारून और उसके भाई उनके बीच परमेश्वर का वचन सुनाने और सिखाने के लिए एक नगर से दूसरे नगर गए, और प्रार्थना के एक भवन से दूसरे भवन गए, गिरजों को स्थापित करते हुए, और लमनाइयों के बीच पूरे प्रदेश में याजकों और शिक्षकों का पवित्रीकरण करते हुए, और इस प्रकार उन्होंने महान सफलता प्राप्त करना शुरू कर दिया।
- 5 और हजारों लोगों को परमेश्वर का ज्ञान दिया गया, हां, हजारों लोगों ने नफाइयों की परंपराओं पर विश्वास किया; और उन्हें वर्तमान समय तक के अभिलेखों और भविष्यवाणियों से परिचित कराया गया।

## Alma 23

Behold, now it came to pass that the king of the Lamanites sent a proclamation among all his people, that they should not lay their hands on Ammon, or Aaron, or Omner, or Himni, nor either of their brethren who should go forth preaching the word of God, in whatsoever place they should be, in any part of their land.

Yea, he sent a decree among them, that they should not lay their hands on them to bind them, or to cast them into prison; neither should they spit upon them, nor smite them, nor cast them out of their synagogues, nor scourge them; neither should they cast stones at them, but that they should have free access to their houses, and also their temples, and their sanctuaries.

And thus they might go forth and preach the word according to their desires, for the king had been converted unto the Lord, and all his household; therefore he sent his proclamation throughout the land unto his people, that the word of God might have no obstruction, but that it might go forth throughout all the land, that his people might be convinced concerning the wicked traditions of their fathers, and that they might be convinced that they were all brethren, and that they ought not to murder, nor to plunder, nor to steal, nor to commit adultery, nor to commit any manner of wickedness.

And now it came to pass that when the king had sent forth this proclamation, that Aaron and his brethren went forth from city to city, and from one house of worship to another, establishing churches, and consecrating priests and teachers throughout the land among the Lamanites, to preach and to teach the word of God among them; and thus they began to have great success.

And thousands were brought to the knowledge of the Lord, yea, thousands were brought to believe in the traditions of the Nephites; and they were taught the records and prophecies which were handed down even to the present time.

- 6 और जैसे कि निश्चित तौर पर प्रभु जीवित है वैसे ही कई लोगों ने विश्वास किया, या अम्मोन और उसके भाइयों के प्रचार द्वारा कई लोगों को परमेश्वर का ज्ञान दिया गया, प्रकटीकरण और भविष्यवाणी की आत्मा के अनुसार, परमेश्वर की शक्ति उनके बीच चमत्कार करने लगी—हां, मैं तुमसे कहता हूं, जैसे कि प्रभु जीवित है वैसे ही कई लमनाइयों ने उनकी बातों में विश्वास किया, और कभी भी पथभ्रष्ट न होने के लिए प्रभु में परिवर्तित हो गए ।
- 7 क्योंकि वे धर्मी लोग बन गए थे; उन्होंने अपने विद्रोह का शस्त्र फेंक दिया, ताकि वे फिर से न तो परमेश्वर के विरुद्ध, न ही अपने भाइयों के विरुद्ध लड़ सकें ।
- 8 अब, ये वही लोग थे जो प्रभु में परिवर्तित हुए थे:
- 9 लमनाइयों के लोग जो इश्माएल प्रदेश में रहते थे;
- 10 और लमनाइयों के वे लोग भी जो मिदोनी प्रदेश में रहते थे;
- 11 और लमनाइयों के वे लोग भी जो नफी के नगर में रहते थे;
- 12 और लमनाइयों के वे लोग भी जो शिलोम प्रदेश में रहते थे, और जो शेमलोन प्रदेश, और लमूल के नगर में, और शिमनिलोम के नगर में रहते थे ।
- 13 और ये लमनाइयों के उन नगरों का नाम है जो प्रभु में परिवर्तित हुए थे; और ये वही थे जिन्होंने अपने विद्रोह का शस्त्र फेंक दिया था, हां, युद्ध के अपने सारे शस्त्रों को; और वे सारे लमनाई थे ।
- 14 और केवल एक को छोड़कर न तो कोई अमालेकी परिवर्तित हुआ था; न ही कोई अमुलोनी; परन्तु उन्होंने अपने हृदयों को कठोर कर लिया था, और उस स्थान के सारे गावों और सारे नगरों के रहने वाले लमनाइयों ने भी अपने हृदयों को कठोर कर लिया था ।
- 15 इसलिए, हमने लमनाइयों के सारे नगरों का नाम बता दिया है जिसमें उन्होंने पश्चाताप किया और सच्चाई के ज्ञान को जाना, और परिवर्तित हुए ।

And as sure as the Lord liveth, so sure as many as believed, or as many as were brought to the knowledge of the truth, through the preaching of Ammon and his brethren, according to the spirit of revelation and of prophecy, and the power of God working miracles in them—yea, I say unto you, as the Lord liveth, as many of the Lamanites as believed in their preaching, and were converted unto the Lord, never did fall away.

For they became a righteous people; they did lay down the weapons of their rebellion, that they did not fight against God any more, neither against any of their brethren.

Now, these are they who were converted unto the Lord:

The people of the Lamanites who were in the land of Ishmael;

And also of the people of the Lamanites who were in the land of Middoni;

And also of the people of the Lamanites who were in the city of Nephi;

And also of the people of the Lamanites who were in the land of Shilom, and who were in the land of Shemlon, and in the city of Lemuel, and in the city of Shimnilom.

And these are the names of the cities of the Lamanites which were converted unto the Lord; and these are they that laid down the weapons of their rebellion, yea, all their weapons of war; and they were all Lamanites.

And the Amalekites were not converted, save only one; neither were any of the Amulonites; but they did harden their hearts, and also the hearts of the Lamanites in that part of the land wheresoever they dwelt, yea, and all their villages and all their cities.

Therefore, we have named all the cities of the Lamanites in which they did repent and come to the knowledge of the truth, and were converted.



16 और अब ऐसा हुआ कि राजा और जो लोग परिवर्तित हुए थे उनकी इच्छा थी कि उनका एक नाम हो, ताकि इसके पश्चात वे अपने भाइयों से अलग पहचाने जाएं; इसलिए अपने ऊपर लिए जाने वाले नाम से संबंधित राजा ने हारून और अपने कई याजकों से विचार-विमर्श किया ताकि वे अलग पहचाने जाएं ।

17 और ऐसा हुआ कि उन्होंने अपना नाम अंती-नफी-लेहियों रखा; और वे लमनाइयों की बजाय इस नाम से पहचाने जाने लगे ।

18 और वे बहुत परिश्रमी लोग बनने लगे; हां, और वे नफाइयों से मित्रतापूर्वक थे; इसलिए, वे उनसे पत्र व्यवहार करने लगे, और अब उन पर परमेश्वर का श्राप नहीं था ।

And now it came to pass that the king and those who were converted were desirous that they might have a name, that thereby they might be distinguished from their brethren; therefore the king consulted with Aaron and many of their priests, concerning the name that they should take upon them, that they might be distinguished.

And it came to pass that they called their names Anti-Nephi-Lehies; and they were called by this name and were no more called Lamanites.

And they began to be a very industrious people; yea, and they were friendly with the Nephites; therefore, they did open a correspondence with them, and the curse of God did no more follow them.

## अलमा 24

- 1 और ऐसा हुआ कि अमालेकियों और अमुलोनियों और लमनाइयों जो कि अमुलोन के प्रदेश, हेलाम के प्रदेश, और यरूशलेम और अन्य प्रदेशों में, उसके आसपास के प्रदेशों में रहते थे जो कि परिवर्तित नहीं हुए थे और जिन्होंने अपना नाम अंती-नफी-लेही रखा था, उन्हें अमालेकियों और अमुलोनियों ने भड़काया ताकि वे अपने भाइयों से क्रोधित हो सकें ।
- 2 और उनका द्वेष बहुत अधिक बढ़ गया, यहां तक कि वे अपने राजा के खिलाफ इतना विद्रोह करने लगे क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि वह उनका राजा रहे; इसलिए, अंती-नफी-लेही के लोगों के प्रति उन्होंने शस्त्र उठा लिया ।
- 3 अब राजा ने अपना राज्य अपने बेटे को प्रदान कर दिया, और उसने उसका नाम अंती-नफी-लेही रखा ।
- 4 और राजा की मृत्यु उसी वर्ष हो गई जब परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध लमनाइयों ने युद्ध की तैयारी शुरू कर दी ।
- 5 अब अम्मोन और उसके भाई जो वहां आए थे उन्होंने उनके भाइयों को नष्ट करने की लमनाइयों की तैयारी देखी, वे मिद्यान के प्रदेश आए और वहां पर अम्मोन अपने सारे भाइयों से मिला; और वहां से वे इश्माएल प्रदेश आए ताकि वे लमोनी और उसके भाई अंती-नफी-लेही के साथ विचार-विमर्श कर सकें कि अपने आपको लमनाइयों से बचाने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए ।
- 6 अब प्रभु में परिवर्तित उन सारे लोगों में से ऐसा कोई नहीं था जिसने अपने भाइयों के प्रति शस्त्र उठाना चाहा; नहीं, उन्होंने युद्ध की कोई तैयारी भी नहीं की थी; हां, उनके राजा ने भी उन्हें ऐसा न करने की आज्ञा दी थी ।
- 7 अब, ये वही शब्द हैं जिसे उसने इस मामले से संबंधित लोगों से कहा था: मैं अपने परमेश्वर, अपने प्रिय लोगों का धन्यवाद करता हूं, कि हमारे महान परमेश्वर ने अच्छाई में हमारे इन भाइयों, नफाइयों को हमारे पास भेजा है, ताकि वे हमें सीखाएं, और हमारे दुष्ट पूर्वजों की परंपराओं पर हमें विश्वास दिलाएं ।
- 8 और देखो, मैं अपने महान परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उसने अपनी आत्मा का अंश हमारे हृदय को कोमल करने के लिए दिया है, ताकि हम इन भाइयों, नफाइयों से बाचतीच कर सकें ।

## Alma 24

And it came to pass that the Amalekites and the Amulonites and the Lamanites who were in the land of Amulon, and also in the land of Helam, and who were in the land of Jerusalem, and in fine, in all the land round about, who had not been converted and had not taken upon them the name of Anti-Nephi-Lehi, were stirred up by the Amalekites and by the Amulonites to anger against their brethren.

And their hatred became exceedingly sore against them, even insomuch that they began to rebel against their king, insomuch that they would not that he should be their king; therefore, they took up arms against the people of Anti-Nephi-Lehi.

Now the king conferred the kingdom upon his son, and he called his name Anti-Nephi-Lehi.

And the king died in that selfsame year that the Lamanites began to make preparations for war against the people of God.

Now when Ammon and his brethren and all those who had come up with him saw the preparations of the Lamanites to destroy their brethren, they came forth to the land of Midian, and there Ammon met all his brethren; and from thence they came to the land of Ishmael that they might hold a council with Lamoni and also with his brother Anti-Nephi-Lehi, what they should do to defend themselves against the Lamanites.

Now there was not one soul among all the people who had been converted unto the Lord that would take up arms against their brethren; nay, they would not even make any preparations for war; yea, and also their king commanded them that they should not.

Now, these are the words which he said unto the people concerning the matter: I thank my God, my beloved people, that our great God has in goodness sent these our brethren, the Nephites, unto us to preach unto us, and to convince us of the traditions of our wicked fathers.

And behold, I thank my great God that he has given us a portion of his Spirit to soften our hearts, that we have opened a correspondence with these brethren, the Nephites.

- 9 और देखो, मैं अपने परमेश्वर का इसलिए भी धन्यवाद करता हूँ कि इस बातचीत के द्वारा हमने अपने पापों को, और हमारे द्वारा की गई कई हत्याओं को भी स्वीकार किया है।
- 10 और मैं अपने परमेश्वर, हां, अपने महान परमेश्वर को इसलिए भी धन्यवाद देता हूँ कि उसने हमें यह मौका दिया है कि हम इन चीजों का पश्चाताप कर सकें, और इसलिए भी कि उसने हमारे पापों और हमारे द्वारा की गई कई हत्याओं को भी क्षमा किया है, और अपने पुत्र की अच्छाइयों के द्वारा हमारे हृदय से अपराध की भावना को मिटाया है।
- 11 और अब देखो, मेरे भाइयों, अपने पापों का, और उन कई हत्याओं का पश्चाताप करने के लिए जिसे हमने किया है, क्योंकि हम केवल ऐसा ही कर सकते थे (जब कि हम सारी मानवजाति में सबसे अधिक पथभ्रष्ट थे), और जिसे परमेश्वर हमारे हृदयों से हटा दे, क्योंकि परमेश्वर के सामने उचित पश्चाताप के लिए हम केवल ऐसा ही कर सकते थे जिससे कि वह हमारे धब्बों को मिटा दे।
- 12 अब, मेरे प्रिय भाइयों, क्योंकि परमेश्वर ने हमारे धब्बों को मिटा दिया है, और हमारी तलवारें चमकीली हो गई हैं, तब हम अपने भाइयों के लहू से अपनी तलवारों को फिर से गंदा न करें।
- 13 देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं, हमें अपने भाइयों के लहू से अपनी तलवारों को गंदा नहीं करना चाहिए; क्योंकि शायद, यदि हम अपनी तलवारों को फिर से गंदा करते हैं तो उन्हें हमारे महान परमेश्वर के पुत्र के लहू द्वारा भी साफ नहीं किया जा सकता है, जो कि हमारे पापों के पश्चाताप के लिए बहाया जाएगा।
- 14 और महान परमेश्वर ने हम पर दया दिखाई है, और हमें इन चीजों का ज्ञात कराया है ताकि हम नष्ट न हों; हां, उसने हमें इन चीजों का ज्ञात पहले से ही कराया है, क्योंकि उसने हमारी आत्माओं और हमारे बच्चों से प्रेम किया है; इसलिए, अपनी दया में वह अपने स्वर्गदूतों द्वारा हमें दर्शन देता है, ताकि उद्धार की योजना की जानकारी हमें और हमारी पीढ़ी को दी जा सके।
- 15 ओह, हमारा परमेश्वर कितना दयालु है! और अब देखो, हमने अपने धब्बों को अपने से दूर करने के लिए, और हमारी तलवारों को चमकीला बनाने के लिए जितना हम कर सकते थे हमने उतना किया है, चलो उन्हें छिपा दें ताकि वे चमकदार रह सकें, अंतिम दिन में अपने परमेश्वर की गवाही के रूप में, या न्याय के लिए उसके सामने लाए जानेवाले दिन के रूप में, कि हमने अपनी तलवारों को अपने भाइयों के लहू से नहीं रंगा है क्योंकि उसने हमें अपना वचन दिया है और इसके पश्चात हमें स्वच्छ रखा है।

And behold, I also thank my God, that by opening this correspondence we have been convinced of our sins, and of the many murders which we have committed.

And I also thank my God, yea, my great God, that he hath granted unto us that we might repent of these things, and also that he hath forgiven us of those our many sins and murders which we have committed, and taken away the guilt from our hearts, through the merits of his Son.

And now behold, my brethren, since it has been all that we could do (as we were the most lost of all mankind) to repent of all our sins and the many murders which we have committed, and to get God to take them away from our hearts, for it was all we could do to repent sufficiently before God that he would take away our stain—

Now, my best beloved brethren, since God hath taken away our stains, and our swords have become bright, then let us stain our swords no more with the blood of our brethren.

Behold, I say unto you, Nay, let us retain our swords that they be not stained with the blood of our brethren; for perhaps, if we should stain our swords again they can no more be washed bright through the blood of the Son of our great God, which shall be shed for the atonement of our sins.

And the great God has had mercy on us, and made these things known unto us that we might not perish; yea, and he has made these things known unto us beforehand, because he loveth our souls as well as he loveth our children; therefore, in his mercy he doth visit us by his angels, that the plan of salvation might be made known unto us as well as unto future generations.

Oh, how merciful is our God! And now behold, since it has been as much as we could do to get our stains taken away from us, and our swords are made bright, let us hide them away that they may be kept bright, as a testimony to our God at the last day, or at the day that we shall be brought to stand before him to be judged, that we have not stained our swords in the blood of our brethren since he imparted his word unto us and has made us clean thereby.

16 और अब, मेरे भाइयों, यदि हमारे भाई हमें नष्ट करना चाहते हैं, देखो, हम अपनी तलवारों को छुपा देंगे, हां, यहां तक कि हम उन्हें जमीन की गहराई में गाड़ देंगे, ताकि अंतिम दिन में, वे उस गवाही के रूप में चमकदार रह सकें कि हमने कभी भी उनका उपयोग नहीं किया है; और यदि हमारे भाई हमें नष्ट करते हैं, देखो, हम अपने परमेश्वर के पास जाएंगे और बचाए जाएंगे।

17 और अब ऐसा हुआ कि जब राजा ने इन बातों को कहना समाप्त किया, और सारे लोग एकत्रित थे, उन्होंने अपनी तलवारों को और अपने सारे हथियारों को लिया जिसका उपयोग मानव लहू को बहाने में किया जाता था, और उन्होंने उन्हें जमीन की गहराई में गाड़ दिया।

18 और ऐसा उन्होंने किया, ऐसा परमेश्वर की गवाही के प्रति उनके और लोगों के दृष्टिकोण के रूप में किया, ताकि मनुष्य के लहू को बहाने के लिए वे उनका उपयोग कभी नहीं करेंगे; और ऐसा उन्होंने परमेश्वर को समर्थन देते हुए और अनुबंध बनाते हुए किया, कि अपने भाइयों के लहू को बहाने की बजाय वे अपना जीवन दे देंगे; और भाई से लेने की बजाय उसे देंगे; और आलस्य में अपने दिन बिताने की बजाय अपने हाथों से बहुत मेहनत करेंगे।

19 और इस प्रकार हम देखते हैं कि जब इन लमनाइयों को विश्वास दिलाया गया और सच्चाई की जानकारी दी गई तो वे दृढ़ रहे, और पाप करने की बजाय मर जाना उचित समझा; और इस प्रकार हम देखते हैं कि उन्होंने शांति के अपने हथियारों को गाड़ दिया, या शांति के लिए युद्ध के हथियारों को गाड़ दिया।

20 और ऐसा हुआ कि उनके भाई, लमनाइयों ने युद्ध की तैयारी की, और राजा को नष्ट करने, और उसके स्थान पर किसी और को नियुक्त करने के उद्देश्य से, और अंती-नफी-लेही के लोगों को नष्ट कर प्रदेश से बाहर निकालने के लिए वे नफी के प्रदेश आए।

21 अब उन्होंने देखा कि वे उनके विरुद्ध लड़ने आ रहे हैं तो वे उनसे मिलने गए, और उनके सामने जमीन पर औंधे मुंह लेट गए, और प्रभु के नाम को पुकारने लगे; और इस प्रकार जब वे ऐसा आचरण कर रहे थे तब लमनाइयों ने उन पर हमला बोल दिया और उन्हें तलवार से काटने लगे।

And now, my brethren, if our brethren seek to destroy us, behold, we will hide away our swords, yea, even we will bury them deep in the earth, that they may be kept bright, as a testimony that we have never used them, at the last day; and if our brethren destroy us, behold, we shall go to our God and shall be saved.

And now it came to pass that when the king had made an end of these sayings, and all the people were assembled together, they took their swords, and all the weapons which were used for the shedding of man's blood, and they did bury them up deep in the earth.

And this they did, it being in their view a testimony to God, and also to men, that they never would use weapons again for the shedding of man's blood; and this they did, vouching and covenanting with God, that rather than shed the blood of their brethren they would give up their own lives; and rather than take away from a brother they would give unto him; and rather than spend their days in idleness they would labor abundantly with their hands.

And thus we see that, when these Lamanites were brought to believe and to know the truth, they were firm, and would suffer even unto death rather than commit sin; and thus we see that they buried their weapons of peace, or they buried the weapons of war, for peace.

And it came to pass that their brethren, the Lamanites, made preparations for war, and came up to the land of Nephi for the purpose of destroying the king, and to place another in his stead, and also of destroying the people of Anti-Nephi-Lehi out of the land.

Now when the people saw that they were coming against them they went out to meet them, and prostrated themselves before them to the earth, and began to call on the name of the Lord; and thus they were in this attitude when the Lamanites began to fall upon them, and began to slay them with the sword.

- 22 और इस प्रकार किसी भी बाधा में न पड़ते हुए, उन्होंने उनमें से एक हजार पांच लोगों को मार डाला; और हम जानते हैं कि वे आशीषित हैं, क्योंकि वे अपने परमेश्वर के साथ रहने चले गए ।
- 23 अब जब लमनाइयों ने देखा कि उनके भाई न तो उनकी तलवारों से भागे, न ही वे इधर-उधर भागे, परन्तु वे लेट गए और नष्ट हो गए, और तलवार के काटे जाने पर भी उन्होंने परमेश्वर की बड़ाई की—
- 24 अब जब लमनाइयों ने इसे देखा तो उन्होंने उनका वध करने से अपने आपको रोक लिया; और उनमें से कई ऐसे थे जो बहुत दुखी हो गए क्योंकि उन्होंने जमीन पर लेटे हुए अपने भाइयों को मारा था, और जो उन्होंने किया था उसके लिए उन्हें बहुत पछतावा हुआ ।
- 25 और ऐसा हुआ कि उन्होंने युद्ध के अपने हथियारों को फेंक दिया, और उसे फिर से नहीं उठाया, क्योंकि उन्होंने जो हत्याएं की थी उस-के लिए बहुत चिढ़चिढ़ाहट महसूस कर रहे थे; और वे अपने भाइयों के समान नीचे आए, उन लोगों की दया पर निर्भर होते हुए जिनके हथियार उन्हें मारने के लिए उठे हुए थे ।
- 26 और ऐसा हुआ कि जितनी संख्या में लोग मारे गए थे उनसे अधिक संख्या में लोग परमेश्वर के लोगों से जुड़े; और जो लोग मारे गए थे वे धर्मी लोग थे, इसलिए हमारे पास संदेह का कोई कारण नहीं था कि वे लोग बचाए गए थे ।
- 27 और मारे गए लोगों में कोई भी दुष्ट व्यक्ति नहीं था; परन्तु सच्चाई के ज्ञान में हजारों लोग आए गए थे; इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रभु अपने लोगों के उद्धार के लिए कई तरीकों से काम करता है ।
- 28 अब लमनाइयों की वो बड़ी संख्या जिन्होंने अपने भाइयों को मारा था वे अमालेकियों और अमुलोनियों थे, जिनमें से बड़ी संख्या में लोग निहोरों की रीति के अनुसार थे ।
- 29 अब, जो लोग प्रभु के लोगों से जुड़े थे उनके बीच कोई भी अमोलेकी या अमुलोनी नहीं था, या वे निहोर के ढंग के थे, परन्तु वास्तव में वे लमान और लमूल के वंशज थे ।
- 30 और इस प्रकार साधारण रूप से हम जान सकते हैं कि एक बार जब लोग परमेश्वर की आत्मा से आलोकित हो गए, और धार्मिकता से संबंधित चीजों का ज्ञान प्राप्त कर लिया, और फिर से पाप और उल्लंघन में पड़ गए तो इसके पश्चात वे और अधिक कठोर हो जाते हैं, और इस प्रकार उनकी स्थिति उन लोगों से भी अधिक खराब हो जाती है जिन्हें इन बातों के बारे में कभी पता ही नहीं था ।

And thus without meeting any resistance, they did slay a thousand and five of them; and we know that they are blessed, for they have gone to dwell with their God.

Now when the Lamanites saw that their brethren would not flee from the sword, neither would they turn aside to the right hand or to the left, but that they would lie down and perish, and praised God even in the very act of perishing under the sword—

Now when the Lamanites saw this they did forbear from slaying them; and there were many whose hearts had swollen in them for those of their brethren who had fallen under the sword, for they repented of the things which they had done.

And it came to pass that they threw down their weapons of war, and they would not take them again, for they were stung for the murders which they had committed; and they came down even as their brethren, relying upon the mercies of those whose arms were lifted to slay them.

And it came to pass that the people of God were joined that day by more than the number who had been slain; and those who had been slain were righteous people, therefore we have no reason to doubt but what they were saved.

And there was not a wicked man slain among them; but there were more than a thousand brought to the knowledge of the truth; thus we see that the Lord worketh in many ways to the salvation of his people.

Now the greatest number of those of the Lamanites who slew so many of their brethren were Amalekites and Amulonites, the greatest number of whom were after the order of the Nehors.

Now, among those who joined the people of the Lord, there were none who were Amalekites or Amulonites, or who were of the order of Nehor, but they were actual descendants of Laman and Lemuel.

And thus we can plainly discern, that after a people have been once enlightened by the Spirit of God, and have had great knowledge of things pertaining to righteousness, and then have fallen away into sin and transgression, they become more hardened, and thus their state becomes worse than though they had never known these things.

## अलमा 25

- 1 और देखो, अब ऐसा हुआ कि वे लमनाई अधिक क्रोधित थे क्योंकि उन्होंने अपने भाइयों को मारा था; इसलिए नफाइयों से बदला लेने की उन्होंने शपथ ली; और उस समय से उन्होंने अंती-नफी-लेही के लोगों को मारने का कोई प्रयास नहीं किया ।
- 2 परन्तु उन्होंने अपनी सेना ली और जराहेमला प्रदेश की सीमाओं पर चले गए, और अम्मोनिहा के लोगों पर टूट पड़े और उन्हें नष्ट कर दिया ।
- 3 और इसके पश्चात, उन्होंने नफाइयों के साथ कई युद्ध किया जिसमें वे भगा दिए गए और मार दिए गए ।
- 4 और जो लमनाई मारे गए थे वे अधिकतर अमुलोन और उसके भाइयों के वंश के थे, जो कि नूह के याजक थे, और वे नफाइयों के हाथों द्वारा मारे गए थे;
- 5 और बाकी बचे हुए लोग पूर्व के निर्जन स्थान में भाग गए, और लमनाइयों की शक्ति और अधिकार को छीन लिया था, और अपने विश्वास के कारण कई लमनाइयों को जलाकर नष्ट कर दिया ।
- 6 इनमें से कई लोगों का बहुत नुकसान हुआ और बहुत से कष्ट झेलने के पश्चात, उन बातों को याद करना आरंभ कर दिया जिसे हारून और उसके भाइयों ने उनके प्रदेश में उन्हें सीखाया था; इसलिए उन्होंने अपने पूर्वजों की परंपराओं पर अविश्वास, और प्रभु में विश्वास किया, और यह कि उसने नफाइयों को महान शक्ति दी; और इस प्रकार उनमें से कई लोगों का निर्जन स्थान में परिवर्तन हुआ ।
- 7 और ऐसा हुआ कि वे शासक जो कि अमुलोन के वंश से बचे हुए थे उन्होंने उन लोगों को मार डालना चाहा, हां, उन सभी को जिन्होंने इन बातों में विश्वास किया था ।
- 8 अब इस शहादत के कारण उनके कई भाई क्रोधित हो गए; और निर्जन स्थान में विवाद शुरू हो गया; और लमनाइयों ने अमुलोन और उसके भाइयों के वंशों को खोजा और उन्हें मारना शुरू कर दिया; और वे पूर्व के निर्जन स्थान में भाग गए ।
- 9 और देखो वे लमनाइयों द्वारा आज तक ढूँढ कर मारे जाते हैं । इस प्रकार अबिनादी की बातें पूरी हुईं, जिसे उसने याजकों के उस वंश से संबंधित कहा था जिन्होंने उसकी मृत्यु जलने के द्वारा करवाई ।

## Alma 25

And behold, now it came to pass that those Lamanites were more angry because they had slain their brethren; therefore they swore vengeance upon the Nephites; and they did no more attempt to slay the people of Anti-Nephi-Lehi at that time.

But they took their armies and went over into the borders of the land of Zarahemla, and fell upon the people who were in the land of Ammonihah and destroyed them.

And after that, they had many battles with the Nephites, in the which they were driven and slain.

And among the Lamanites who were slain were almost all the seed of Amulon and his brethren, who were the priests of Noah, and they were slain by the hands of the Nephites;

And the remainder, having fled into the east wilderness, and having usurped the power and authority over the Lamanites, caused that many of the Lamanites should perish by fire because of their belief—

For many of them, after having suffered much loss and so many afflictions, began to be stirred up in remembrance of the words which Aaron and his brethren had preached to them in their land; therefore they began to disbelieve the traditions of their fathers, and to believe in the Lord, and that he gave great power unto the Nephites; and thus there were many of them converted in the wilderness.

And it came to pass that those rulers who were the remnant of the children of Amulon caused that they should be put to death, yea, all those that believed in these things.

Now this martyrdom caused that many of their brethren should be stirred up to anger; and there began to be contention in the wilderness; and the Lamanites began to hunt the seed of Amulon and his brethren and began to slay them; and they fled into the east wilderness.

And behold they are hunted at this day by the Lamanites. Thus the words of Abinadi were brought to pass, which he said concerning the seed of the priests who caused that he should suffer death by fire.

- 10 क्योंकि उसने उनसे कहा था: जो तुम मेरे साथ करोगे वही चीजें भविष्य में होंगी ।
- 11 और अब अबिनादी पहला व्यक्ति था जिसे परमेश्वर में उसके विश्वास के कारण जलाकर उसे मृत्युदंड दिया गया था; अब यही उसका अर्थ था, कि जैसा उसने सहा है वैसे ही कई लोगों की मृत्यु जलकर होगी ।
- 12 और उसने नूह के याजकों से कहा था कि जैसे उसे जलाया गया है वैसे ही उनके वंश जलकर मृत्यु प्राप्त करेंगे, और यह कि वे तितर-बितर होंगे और मारे जाएंगे, वैसे ही जैसे कि बिना चरवाहे की भेड़ को जंगली पशु दौड़ाकर मार देते हैं; और अब देखो, ये बातें सिद्ध हुईं, क्योंकि वे लमनाइयों द्वारा भगाए गए, और उन्हें ढूंढकर दण्डित किया गया ।
- 13 और ऐसा हुआ कि जब लमनाइयों ने देखा कि नफाइयों पर उनका कोई अधिकार नहीं रहा तो वे अपने प्रदेश वापस लौट आए; और उनमें से कई लोग इश्माएल और नफी के प्रदेश में रहने आए, और वे परमेश्वर के लोगों से जुड़ गए जो कि अंती-नफी-लेही के लोग थे ।
- 14 और जैसा कि उनके भाइयों ने किया था उन्होंने भी युद्ध के हथियारों को गाड़ दिया, और वे धर्मी लोग होने लगे; और वे प्रभु के मार्ग पर चले, और उसकी आज्ञाओं और नियमों का पालन किया ।
- 15 हां, और उन्होंने मूसा के नियम का पालन किया; क्योंकि यह आवश्यक था कि वे अब भी मूसा के नियम का पालन करें, क्योंकि सारी बातें पूरी नहीं हुई थीं । परन्तु मूसा के नियम के पालन के बावजूद, उन्होंने मसीह के आगमन की तरफ देखा, इस बात को मानते हुए कि मूसा का नियम उसके आगमन के समान था और विश्वास करते हुए कि उन्हें उन नियमों का पालन तब तक करना चाहिए जब तक कि वह उनके सामने प्रकट न हो जाए ।
- 16 अब उन्होंने इस बात को नहीं माना कि उद्धार मूसा की नियम के द्वारा आएगा; परन्तु मूसा के नियम के कारण मसीह में उनका विश्वास मजबूत हुआ; और इस प्रकार अनंत उद्धार के प्रति उन्होंने विश्वास के द्वारा आशा बनाए रखा, भविष्यवाणी की उस आत्मा पर निर्भर होते हुए जो आनेवाली बातों के बारे में बताता है ।

For he said unto them: What ye shall do unto me shall be a type of things to come.

And now Abinadi was the first that suffered death by fire because of his belief in God; now this is what he meant, that many should suffer death by fire, according as he had suffered.

And he said unto the priests of Noah that their seed should cause many to be put to death, in the like manner as he was, and that they should be scattered abroad and slain, even as a sheep having no shepherd is driven and slain by wild beasts; and now behold, these words were verified, for they were driven by the Lamanites, and they were hunted, and they were smitten.

And it came to pass that when the Lamanites saw that they could not overpower the Nephites they returned again to their own land; and many of them came over to dwell in the land of Ishmael and the land of Nephi, and did join themselves to the people of God, who were the people of Anti-Nephi-Lehi.

And they did also bury their weapons of war, according as their brethren had, and they began to be a righteous people; and they did walk in the ways of the Lord, and did observe to keep his commandments and his statutes.

Yea, and they did keep the law of Moses; for it was expedient that they should keep the law of Moses as yet, for it was not all fulfilled. But notwithstanding the law of Moses, they did look forward to the coming of Christ, considering that the law of Moses was a type of his coming, and believing that they must keep those outward performances until the time that he should be revealed unto them.

Now they did not suppose that salvation came by the law of Moses; but the law of Moses did serve to strengthen their faith in Christ; and thus they did retain a hope through faith, unto eternal salvation, relying upon the spirit of prophecy, which spake of those things to come.

17 और अब देखो, अम्मोन, और हारून, और ओमनर, और हिम्नी, और उनके भाइयों ने लमनाइयों में जो सफलता प्राप्त की थी उसके लिए वे अत्याधिक आनंदित हुए, यह देखते हुए कि प्रभु ने उनकी प्रार्थनाओं के अनुसार उन्हें सफलता दी है, और यह कि उसने हर बात में अपने वचन को सिद्ध किया है।

And now behold, Ammon, and Aaron, and Omner, and Himni, and their brethren did rejoice exceedingly, for the success which they had had among the Lamanites, seeing that the Lord had granted unto them according to their prayers, and that he had also verified his word unto them in every particular.



## अलमा 26

- 1 और अब, ये अम्मोन और उसके भाइयों के शब्द हैं, जो इस प्रकार कहता है: मेरे भाई-बन्धुओं, देखो मैं तुमसे कहता हूँ, हमारे पास आनंदित होने का कितना महान कारण है; क्योंकि जब हम जराहेमला प्रदेश से चले थे तो क्या हमें पता था कि परमेश्वर हमें इतनी महान आशीषें देगा ?
- 2 और अब, मैं पूछता हूँ, कितनी महान आशीषें उसने हमें प्रदान की हैं ? क्या तुम बता सकते हो ?
- 3 देखो, मैं तुम्हारे लिए उत्तर देता हूँ; क्योंकि हमारे भाई, लमनाई अंधकार में थे, हां, यहां तक कि अंधे नरक कुंड में थे, परन्तु देखो, कितने लोगों को परमेश्वर के अदभुत प्रकाश में लाया गया है! और यही वह आशीष है जिसे हमें प्रदान किया गया है, ताकि इस महान कार्य को पूरा करने के लिए हमें परमेश्वर के हाथों का औजार बनाया जा सके ।
- 4 देखो, उनमें से हजारों आनंदित होते हैं, और परमेश्वर के बाड़े में लाए गए हैं ।
- 5 देखो, फसल पक चुकी थी, और आशीषित हो तुम, क्योंकि तुमने अपनी योग्यता के अनुसार हंसिए की नोक से इसे काटा, हां, तुमने पूरे दिन परिश्रम किया; और अपने गठुर की संख्या को देखो! और उन्हें अनाज की गोदाम में लाया जाएगा, ताकि वे व्यर्थ न हो सकें ।
- 6 हां, अंतिम दिन में न तो वे तूफान द्वारा नष्ट होंगे; हां, न ही वे बवंडर द्वारा रौंदे जाएंगे; परन्तु जब आंधी-तूफान आएगा तब वे एक साथ अपने स्थान पर एकत्रित हो जाएंगे, ताकि तूफान का प्रकोप उन तक न पहुंच सके; हां, न ही व्यग्र हवाएं उन्हें शत्रुओं के स्थान पर ले जाएंगी ।
- 7 परन्तु देखो, वे प्रभु के हाथों की कटी फसल हैं, और वे उसके हैं; और वह उन्हें अंतिम दिन में उठाएगा ।
- 8 हमारे परमेश्वर का नाम आशीषित है; चलो उसके स्तुतिगीत गाएं, हां, चलो उसके पवित्र नाम को धन्यवाद दें, क्योंकि वह सदा धार्मिकता का कार्य करता है ।
- 9 क्योंकि यदि हम जराहेमला के प्रदेश से बाहर नहीं आए होते, तो ये हमारे प्रिय भाई जो कि हमें बहुत ही प्रिय हैं, अब भी हमारे प्रति ईर्ष्या में जल रहे होते, हां, और वे परमेश्वर के लिए भी अपरिचित होते ।

## Alma 26

And now, these are the words of Ammon to his brethren, which say thus: My brothers and my brethren, behold I say unto you, how great reason have we to rejoice; for could we have supposed when we started from the land of Zarahemla that God would have granted unto us such great blessings?

And now, I ask, what great blessings has he bestowed upon us? Can ye tell?

Behold, I answer for you; for our brethren, the Lamanites, were in darkness, yea, even in the darkest abyss, but behold, how many of them are brought to behold the marvelous light of God! And this is the blessing which hath been bestowed upon us, that we have been made instruments in the hands of God to bring about this great work.

Behold, thousands of them do rejoice, and have been brought into the fold of God.

Behold, the field was ripe, and blessed are ye, for ye did thrust in the sickle, and did reap with your might, yea, all the day long did ye labor; and behold the number of your sheaves! And they shall be gathered into the garners, that they are not wasted.

Yea, they shall not be beaten down by the storm at the last day; yea, neither shall they be harrowed up by the whirlwinds; but when the storm cometh they shall be gathered together in their place, that the storm cannot penetrate to them; yea, neither shall they be driven with fierce winds whithersoever the enemy listeth to carry them.

But behold, they are in the hands of the Lord of the harvest, and they are his; and he will raise them up at the last day.

Blessed be the name of our God; let us sing to his praise, yea, let us give thanks to his holy name, for he doth work righteousness forever.

For if we had not come up out of the land of Zarahemla, these our dearly beloved brethren, who have so dearly beloved us, would still have been racked with hatred against us, yea, and they would also have been strangers to God.

- 10 और ऐसा हुआ कि जब अम्मोन ने इन शब्दों को कह लिया, उसके भाई हारून ने उसे डांटा, यह कहते हुए: अम्मोन, मुझे डर है कि तुम्हारी प्रसन्नता तुम्हें अहंकार में न डाल दे ।
- 11 परन्तु अम्मोन ने उससे कहा: मैं न तो अपने बल में अहंकारी बनूंगा, न ही अपने ज्ञान में; परन्तु देखो, मेरी प्रसन्नता परिपूर्ण है, हां, मेरा हृदय आनंद से भरा हुआ है, और मैं अपने परमेश्वर में आनंदित होऊंगा ।
- 12 हां, मैं जानता हूँ कि मैं कुछ भी नहीं हूँ; अपने बल के अनुसार मैं कमजोर हूँ; इसलिए मैं स्वयं अहंकारी नहीं बनूंगा, परन्तु मैं अपने परमेश्वर में गर्व करूंगा, क्योंकि उसके सामर्थ्य में मैं सब कुछ कर सकता हूँ; हां, देखो, इस प्रदेश में हमने कई शक्तिशाली चमत्कार किये हैं, जिसके लिए हम सदा उसके नाम की बड़ाई करेंगे ।
- 13 देखो, उसने हमारे कई हजार भाइयों को नरक की पीड़ा से छुड़ाया है; और उन्होंने मुक्तिभरे गीत गाए हैं, और ऐसा उसके वचन के उस सामर्थ्य के कारण हुआ है जो हममें विद्यमान है, इसलिए आनंदित होने का क्या हमारे पास महान कारण नहीं है ?
- 14 हां, हमारे पास सदा उसकी बड़ाई करने का कारण है, क्योंकि वह सर्वोच्च परमेश्वर है, और हमारे भाइयों को नरक की जंजीरों से छुड़ाया है ।
- 15 हां, वे अनंत अंधकार और विनाश से घिरे हुए थे; परन्तु देखो, वह उन्हें अपने अनंत प्रकाश में लेकर आया, हां, अनंत उद्धार में; और वे उसके प्रेम के अद्वितीय इनाम से घिरे हुए हैं; हां, और इस महान और अदभुत कार्य को करने के लिए हम उसके हाथों का औजार बने हैं ।
- 16 इसलिए, चलो आनंद मनाएं, हां, हम प्रभु में आनंद मनाएंगे; हां, हम आनंदित होंगे, क्योंकि हमारा आनंद परिपूर्ण है, हां, हम अपने परमेश्वर की सदा बड़ाई करेंगे । देखो, प्रभु में इतना अधिक आनंदित कौन हो सकता है ? हां, उसके सामर्थ्य, और उसकी दया, और मानव संतान के प्रति लंबे समय तक उसके उत्पीड़न के बारे में इतना अधिक कौन बता सकता है ? देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, मैं जो कुछ भी महसूस करता हूँ उसके विषय में मैं मामूली ढंग से नहीं कह सकता ।
- 17 यह कौन सोच सकता था कि हमारा परमेश्वर हम पर इतनी दया दिखाएगा कि हमें हमारे डरावने, पापरहित, और भ्रष्ट स्थिति से उबारेगा ?
- 18 देखो, उसके गिरजे को नष्ट करने के लिए, बलपूर्वक धमकाते हुए क्रोध में हम और भी आगे बढ़ते गए ।

And it came to pass that when Ammon had said these words, his brother Aaron rebuked him, saying: Ammon, I fear that thy joy doth carry thee away unto boasting.

But Ammon said unto him: I do not boast in my own strength, nor in my own wisdom; but behold, my joy is full, yea, my heart is brim with joy, and I will rejoice in my God.

Yea, I know that I am nothing; as to my strength I am weak; therefore I will not boast of myself, but I will boast of my God, for in his strength I can do all things; yea, behold, many mighty miracles we have wrought in this land, for which we will praise his name forever.

Behold, how many thousands of our brethren has he loosed from the pains of hell; and they are brought to sing redeeming love, and this because of the power of his word which is in us, therefore have we not great reason to rejoice?

Yea, we have reason to praise him forever, for he is the Most High God, and has loosed our brethren from the chains of hell.

Yea, they were encircled about with everlasting darkness and destruction; but behold, he has brought them into his everlasting light, yea, into everlasting salvation; and they are encircled about with the matchless bounty of his love; yea, and we have been instruments in his hands of doing this great and marvelous work.

Therefore, let us glory, yea, we will glory in the Lord; yea, we will rejoice, for our joy is full; yea, we will praise our God forever. Behold, who can glory too much in the Lord? Yea, who can say too much of his great power, and of his mercy, and of his long-suffering towards the children of men? Behold, I say unto you, I cannot say the smallest part which I feel.

Who could have supposed that our God would have been so merciful as to have snatched us from our awful, sinful, and polluted state?

Behold, we went forth even in wrath, with mighty threatenings to destroy his church.

- 19 ओह फिर, उसने हमें भयानक विनाश में क्यों नहीं धकेल दिया, हां, क्यों नहीं उसने अपने न्याय की तलवार हम पर गिरा दी, और हमें अनंत कष्ट में डाल दिया ?
- 20 ओह, यह विचार आते ही मानो मेरी आत्मा मेरे शरीर से बाहर हो जाती है। देखो, उसने हम पर अपना न्याय लागू नहीं किया, परन्तु मृत्यु और दुर्भाग्य के उस अनंत कुंड से हमें अपनी महान दया द्वारा बाहर निकालकर हमारी आत्माओं का उद्धार किया है।
- 21 और अब देखो, मेरे भाइयों, वह कौन सा प्राकृतिक मनुष्य है जो इन बातों को जानता है ? मैं तुमसे कहता हूँ कि पश्चाताप करनेवाले लोगों के अलावा ऐसा कोई नहीं है जो इन बातों को जानता है।
- 22 हां, वह जो पश्चाताप करता है और विश्वास को बढ़ाता है, और अच्छे कार्य करता है, और बिना रुकावट के निरंतर प्रार्थना करता है—ऐसे व्यक्ति को परमेश्वर के भेद की जानकारी दी जाती है; हां, ऐसे व्यक्ति पर वे बातें प्रकट की जाती हैं जिसे कभी भी प्रकट नहीं की गई हैं; हां, और ऐसा व्यक्ति हजारों लोगों को पश्चाताप की स्थिति में लाएगा, यहां तक कि हमें भी अपने इन भाइयों को पश्चाताप में लाने का अवसर दिया गया है।
- 23 अब मेरे भाइयों, क्या तुम्हें याद है कि हमने जराहेमला के अपने भाइयों से कहा था कि हम अपने लमनाई भाइयों को सिखाने के लिए नफी के प्रदेश जाएंगे, और वे मजाक उड़ाते हुए हम पर हंसे थे।
- 24 उन्होंने हमसे कहा था: क्या तुम मानते हो कि तुम लमनाइयों को सच्चाई के ज्ञान में ला सकते हो ? क्या तुम मानते हो कि तुम लमनाइयों को उनके पूर्वजों की भ्रष्ट परंपराओं को मनवा सकते हो जो कि इतने हठी लोग हैं; जिनका हृदय लहू बहाने पर खुश होता है; जिनके दिन भीषण पाप में गुजर चुके हैं; जिनका मार्ग आरंभ से ही पापियों का मार्ग रहा है ? अब मेरे भाइयों, तुम याद रखो कि यही उनकी भाषा थी।
- 25 इससे भी अधिक उन्होंने कहा था: चलो उनसे युद्ध करें, ताकि हम प्रदेश से उन्हें और उनकी दुष्टता को नष्ट कर सकें, नहीं तो वे हम पर हमला कर हमें नष्ट कर देंगे।
- 26 परन्तु देखो, मेरे प्रिय भाइयों, हम निर्जन स्थान में अपने भाइयों को नष्ट करने के उद्देश्य से नहीं आए हैं, परन्तु हम इस उद्देश्य से आए हैं कि शायद उनमें से कुछ लोगों की आत्माओं को बचा सकें।

Oh then, why did he not consign us to an awful destruction, yea, why did he not let the sword of his justice fall upon us, and doom us to eternal despair?

Oh, my soul, almost as it were, fleeth at the thought. Behold, he did not exercise his justice upon us, but in his great mercy hath brought us over that everlasting gulf of death and misery, even to the salvation of our souls.

And now behold, my brethren, what natural man is there that knoweth these things? I say unto you, there is none that knoweth these things, save it be the penitent.

Yea, he that repenteth and exerciseth faith, and bringeth forth good works, and prayeth continually without ceasing—unto such it is given to know the mysteries of God; yea, unto such it shall be given to reveal things which never have been revealed; yea, and it shall be given unto such to bring thousands of souls to repentance, even as it has been given unto us to bring these our brethren to repentance.

Now do ye remember, my brethren, that we said unto our brethren in the land of Zarahemla, we go up to the land of Nephi, to preach unto our brethren, the Lamanites, and they laughed us to scorn?

For they said unto us: Do ye suppose that ye can bring the Lamanites to the knowledge of the truth? Do ye suppose that ye can convince the Lamanites of the incorrectness of the traditions of their fathers, as stiffnecked a people as they are; whose hearts delight in the shedding of blood; whose days have been spent in the grossest iniquity; whose ways have been the ways of a transgressor from the beginning? Now my brethren, ye remember that this was their language.

And moreover they did say: Let us take up arms against them, that we destroy them and their iniquity out of the land, lest they overrun us and destroy us.

But behold, my beloved brethren, we came into the wilderness not with the intent to destroy our brethren, but with the intent that perhaps we might save some few of their souls.

- 27 अब जब हमारा हृदय दुखी था, और हम लगभग वापस जानेवाले ही वाले थे, देखो, प्रभु ने हमें सांत्वना दी, और कहा: अपने भाइयों, लमनाइयों के बीच जाओ, और अपने कष्टों को सहनशीलता के साथ झेलो, और मैं तुम्हें सफलता दूंगा ।
- 28 और अब देखो, हम आ गए हैं, और उनके बीच में हैं; और हम अपने कष्टों में सहनशील हैं, और हमने हर अभाव को झेला है; हां, संसार की दया पर निर्भर होते हुए हमने एक घर से दूसरे घर की यात्रा की है—केवल संसार की दया पर ही नहीं बल्कि परमेश्वर की दया पर भी निर्भर होते हुए ।
- 29 और हमने घरों में प्रवेश किया है और उन्हें सिखाया है, और हमने उन्हें गलियारों में भी सिखाया है, हां, और उन्हें उनकी पहाड़ी पर भी सिखाया है; और हमने उनके मंदिरों और आराधनालयों में प्रवेश कर उन्हें सिखाया है; और हमें निकाला गया, और हमारा मजाक उड़ाया गया, और हम पर थूका गया, और हमारे गालों पर थप्पड़ मारे गए; और हम पर पत्थर फेंके गए, और हमें पकड़कर रस्सियों से बांधा गया और बंदीगृह में डाला गया; और परमेश्वर के सामर्थ्य और ज्ञान के द्वारा हम फिर से छुड़ाये गए ।
- 30 और हमने हर प्रकार के कष्टों को सहा, और यह सब इसलिए था ताकि हम कुछ आत्माओं को बचाने का जरिया बन सकें; और हमारा मानना था कि हमारा आनंद परिपूर्ण होगा यदि हम कुछ लोगों को बचाने का जरिया बन सकें ।
- 31 अब देखो, इससे आगे हम हमारी मेहनत के फलों को देख सकते हैं; और क्या वे कम हैं ? मैं तुमसे कहता हूं, नहीं, वे बहुत हैं; हां, और अपने भाइयों के प्रति और हमारे प्रति उनके प्रेम के कारण हम उनकी सच्चाई की गवाही दे सकते हैं ।
- 32 क्योंकि देखो, उन्होंने अपने शत्रुओं का जीवन लेने की बजाय अपने जीवन का बलिदान करना चाहा था; और अपने भाइयों के प्रति उनके प्रेम के कारण उन्होंने जमीन की गहराई में युद्ध के अपने हथियारों को गाड़ दिया था ।
- 33 और अब देखो मैं तुमसे कहता हूं, क्या पूरे प्रदेश में इससे महान कोई प्रेम है ? देखो, मैं तुमसे कहता हूं, नहीं, यहां तक कि नफाइयों के बीच भी ऐसा कोई प्रेम नहीं है ।
- 34 क्योंकि देखो, वे अपने भाइयों के विरुद्ध हथियार उठा सकते हैं; वे स्वयं को मरने नहीं दे सकते । परन्तु देखो इनमें से कितनों ने अपना जीवन दे दिया; और हम जानते हैं कि अपने प्रेम और पाप के प्रति अपनी ईर्ष्या के कारण वे परमेश्वर के पास चले गए ।

Now when our hearts were depressed, and we were about to turn back, behold, the Lord comforted us, and said: Go amongst thy brethren, the Lamanites, and bear with patience thine afflictions, and I will give unto you success.

And now behold, we have come, and been forth amongst them; and we have been patient in our sufferings, and we have suffered every privation; yea, we have traveled from house to house, relying upon the mercies of the world—not upon the mercies of the world alone but upon the mercies of God.

And we have entered into their houses and taught them, and we have taught them in their streets; yea, and we have taught them upon their hills; and we have also entered into their temples and their synagogues and taught them; and we have been cast out, and mocked, and spit upon, and smote upon our cheeks; and we have been stoned, and taken and bound with strong cords, and cast into prison; and through the power and wisdom of God we have been delivered again.

And we have suffered all manner of afflictions, and all this, that perhaps we might be the means of saving some soul; and we supposed that our joy would be full if perhaps we could be the means of saving some.

Now behold, we can look forth and see the fruits of our labors; and are they few? I say unto you, Nay, they are many; yea, and we can witness of their sincerity, because of their love towards their brethren and also towards us.

For behold, they had rather sacrifice their lives than even to take the life of their enemy; and they have buried their weapons of war deep in the earth, because of their love towards their brethren.

And now behold I say unto you, has there been so great love in all the land? Behold, I say unto you, Nay, there has not, even among the Nephites.

For behold, they would take up arms against their brethren; they would not suffer themselves to be slain. But behold how many of these have laid down their lives; and we know that they have gone to their God, because of their love and of their hatred to sin.

35 अब क्या हमारे पास आनंदित होने का कारण नहीं है ? हां, मैं तुमसे कहता हूं, संसार के आरंभ से, कभी भी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं रहा है जिसके पास हमारे जैसा आनंदित होने का कारण हो; हां, और परमेश्वर में गर्व करते हुए मेरा आनंद संचारित है; क्योंकि उसके पास सारी शक्ति, सारा ज्ञान, और सारी समझ है; वह सारी बातें समझाता है, और यहां तक कि उन लोगों के प्रति उद्धार के लिए वह दयालु है जो पश्चाताप करेंगे और उसके नाम में विश्वास करेंगे ।

36 अब यदि यह अहंकार है, तो मैं और अहंकारी बनूंगा; क्योंकि यही मेरा जीवन, मेरा प्रकाश, मेरा आनंद, मेरा उद्धार, और अनंत दुखों से मेरी मुक्ति है । हां, मेरे परमेश्वर का नाम आशीषित है, जो इन लोगों के लिए सचेत है, जो कि इस्राएल के पेड़ का एक शाखा हैं, और अपनी काया से एक अपरिचित प्रदेश में अलग हो गए हैं; हां, मैं कहता हूं, मेरे परमेश्वर का नाम आशीषित है जो कि एक अपरिचित प्रदेश में हम बंजारों के लिए सचेत है ।

37 अब मेरे भाइयों, हम देखते हैं कि परमेश्वर हर एक के लिए सचेत है चाहे वे किसी भी प्रदेश के निवासी हों, वह अपने लोगों को गिनता है, और उसकी दया का कटोरा पूरी पृथ्वी पर है । अब यही मेरा आनंद, और मेरा महान आभार है; हां, और मैं सदा अपने परमेश्वर को धन्यवाद देता रहूंगा । आमीन ।

Now have we not reason to rejoice? Yea, I say unto you, there never were men that had so great reason to rejoice as we, since the world began; yea, and my joy is carried away, even unto boasting in my God; for he has all power, all wisdom, and all understanding; he comprehendeth all things, and he is a merciful Being, even unto salvation, to those who will repent and believe on his name.

Now if this is boasting, even so will I boast; for this is my life and my light, my joy and my salvation, and my redemption from everlasting wo. Yea, blessed is the name of my God, who has been mindful of this people, who are a branch of the tree of Israel, and has been lost from its body in a strange land; yea, I say, blessed be the name of my God, who has been mindful of us, wanderers in a strange land.

Now my brethren, we see that God is mindful of every people, whatsoever land they may be in; yea, he numbereth his people, and his bowels of mercy are over all the earth. Now this is my joy, and my great thanksgiving; yea, and I will give thanks unto my God forever. Amen.

## अलमा 27

- 1 अब ऐसा हुआ कि जब उन लमनाइयों को जो नफाइयों के विरुद्ध युद्ध करने गए थे, पता चला कि उन्होंने उन्हें नष्ट करने के बहुत से प्रयास किये और जो उनके विनाश का व्यर्थ प्रयास था, तो वे फिर से नफी के प्रदेश वापस लौट आए ।
- 2 और ऐसा हुआ कि अमालेकी अपने नुकसान के कारण अत्याधिक क्रोध में थे । और जब उन्होंने देखा कि वे नफाइयों से बदला नहीं ले सके तो वे क्रोध में अपने भाइयों, अंती-नफी-लेही के लोगों के प्रति दूसरे लोगों को भड़काने लगे; इसलिए उन्होंने फिर से उन्हें नष्ट करना आरंभ कर दिया ।
- 3 अब इन लोगों ने फिर से अपने हथियार उठाने से मना कर दिया, और अपने शत्रुओं की इच्छा के अनुसार स्वयं का बलिदान करना चाहा ।
- 4 अब जब अम्मोन और उसके भाइयों ने उन लोगों के बीच विनाश के इस कार्य को देखा जिनसे वे बहुत प्रेम करते थे, और उन लोगों के बीच भी जिन्होंने इनसे बहुत प्रेम किया था—क्योंकि उन्होंने उनके साथ ऐसा व्यवहार किया था जैसे कि उन्हें अनंत विनाश से बचाने के लिए वे परमेश्वर द्वारा भेजे गए स्वर्गदूत हों—इसलिए, जब अम्मोन और उसके भाइयों ने विनाश के इस महान कार्य को देखा तो वे करुणा से भर गए, और उन्होंने राजा से कहा:
- 5 चलो प्रभु के इन लोगों को एक साथ एकत्रित करें, और अपने नफाई भाइयों के पास जराहेमला प्रदेश चलें, और अपने शत्रुओं से भाग जाएं ताकि हम मारे न जा सकें ।
- 6 परन्तु राजा ने उनसे कहा: देखो, नफाई हमें नष्ट कर देंगे क्योंकि हमने उनके विरुद्ध कई हत्याएं और पाप किया है ।
- 7 और अम्मोन ने कहा: मैं जाऊंगा और प्रभु से पूछताछ करूंगा, और यदि वह कहता है कि अपने भाइयों के पास जाओ तो क्या तुम जाओगे ?
- 8 और राजा ने उससे कहा: हां, यदि प्रभु हमें जाने के लिए कहता है, हम अपने भाइयों के पास जाएंगे, और हम तब तक उनकी दासता में रहेंगे जब तक कि हमारे द्वारा उनके प्रति की गई कई हत्याओं और पापों का हम पश्चाताप न कर लें ।

## Alma 27

Now it came to pass that when those Lamanites who had gone to war against the Nephites had found, after their many struggles to destroy them, that it was in vain to seek their destruction, they returned again to the land of Nephi.

And it came to pass that the Amalekites, because of their loss, were exceedingly angry. And when they saw that they could not seek revenge from the Nephites, they began to stir up the people in anger against their brethren, the people of Anti-Nephi-Lehi; therefore they began again to destroy them.

Now this people again refused to take their arms, and they suffered themselves to be slain according to the desires of their enemies.

Now when Ammon and his brethren saw this work of destruction among those whom they so dearly beloved, and among those who had so dearly beloved them—for they were treated as though they were angels sent from God to save them from everlasting destruction—therefore, when Ammon and his brethren saw this great work of destruction, they were moved with compassion, and they said unto the king:

Let us gather together this people of the Lord, and let us go down to the land of Zarahemla to our brethren the Nephites, and flee out of the hands of our enemies, that we be not destroyed.

But the king said unto them: Behold, the Nephites will destroy us, because of the many murders and sins we have committed against them.

And Ammon said: I will go and inquire of the Lord, and if he say unto us, go down unto our brethren, will ye go?

And the king said unto him: Yea, if the Lord saith unto us go, we will go down unto our brethren, and we will be their slaves until we repair unto them the many murders and sins which we have committed against them.

- 9 परन्तु अम्मोन ने उससे कहा: यह मेरे पिता द्वारा स्थापित, उनके बीच दास रखने के हमारे भाइयों के नियम के विरुद्ध है; इसलिए वहां चलो और अपने भाइयों की दया पर निर्भर रहो ।
- 10 परन्तु राजा ने उससे कहा: प्रभु से पूछताछ करो, और यदि वह हमसे जाने के लिए कहता है, हम जाएंगे; या फिर इसी प्रदेश में नष्ट हो जाएंगे ।
- 11 और ऐसा हुआ कि अम्मोन गया और प्रभु से पूछताछ की, और प्रभु ने उससे कहा:
- 12 इन लोगों को प्रदेश से बाहर निकालो ताकि वे नष्ट न हों; क्योंकि अमालेकियों के हृदयों पर शैतान की मजबूत पकड़ है, जो लमनाइयों के क्रोध को भड़का सकते हैं कि वे अपने भाइयों को मारें; इसलिए उन्हें इस प्रदेश से निकालो; और इस पीढ़ी के लोग आशीषित हैं क्योंकि मैं उन्हें बचाऊंगा ।
- 13 और अब ऐसा हुआ कि अम्मोन गया और राजा को वे सारी बातें बताईं जिसे प्रभु ने उससे कहा था ।
- 14 और उन्होंने अपने सारे लोगों को एकत्रित किया, हां, प्रभु के सारे लोगों को, और उनके जानवरों के समूहों और झुंडों को एकत्रित किया, और प्रदेश से चले गए और उस निर्जन स्थान में आए जो नफी के प्रदेश और जराहेमला के प्रदेश को विभाजित करता था, और प्रदेश की सीमाओं के पास आए ।
- 15 और ऐसा हुआ कि अम्मोन ने उनसे कहा: देखो, मैं और मेरे भाई जराहेमला के प्रदेश जाएंगे, और तुम लोग यहां तब तक रुकोगे जब तक कि हम वापस नहीं आ जाते; और हम अपने भाई-बन्धुओं के हृदयों को टटोलेंगे कि क्या वे चाहते हैं कि तुम सब उनके प्रदेश में आओ ।
- 16 और ऐसा हुआ कि जब अम्मोन प्रदेश में जा रहा था तो वह और उसके भाई अलमा से उसी स्थान पर मिले जिसके विषय में पहले से ही बताया जा चुका था; और देखो, यह एक आनंदपूर्ण भेंट थी ।
- 17 अब अम्मोन की खुशी इतनी अधिक थी कि वह परिपूर्ण हुआ; हां, वह अपने परमेश्वर के आनंद में समा गया था, यहां तक कि वह बलहीन महसूस करने लगा; और फिर से जमीन पर गिर गया ।
- 18 अब क्या यह अत्याधिक खुशी नहीं थी ? देखो, यही वह आनंद है जिसे सच्चे पश्चाताप करनेवाले और प्रसन्नता के विनम्र खोजकर्ता के अलावा किसी और को प्राप्त नहीं होता है ।

But Ammon said unto him: It is against the law of our brethren, which was established by my father, that there should be any slaves among them; therefore let us go down and rely upon the mercies of our brethren.

But the king said unto him: Inquire of the Lord, and if he saith unto us go, we will go; otherwise we will perish in the land.

And it came to pass that Ammon went and inquired of the Lord, and the Lord said unto him:

Get this people out of this land, that they perish not; for Satan has great hold on the hearts of the Amalekites, who do stir up the Lamanites to anger against their brethren to slay them; therefore get thee out of this land; and blessed are this people in this generation, for I will preserve them.

And now it came to pass that Ammon went and told the king all the words which the Lord had said unto him.

And they gathered together all their people, yea, all the people of the Lord, and did gather together all their flocks and herds, and departed out of the land, and came into the wilderness which divided the land of Nephi from the land of Zarahemla, and came over near the borders of the land.

And it came to pass that Ammon said unto them: Behold, I and my brethren will go forth into the land of Zarahemla, and ye shall remain here until we return; and we will try the hearts of our brethren, whether they will that ye shall come into their land.

And it came to pass that as Ammon was going forth into the land, that he and his brethren met Alma, over in the place of which has been spoken; and behold, this was a joyful meeting.

Now the joy of Ammon was so great even that he was full; yea, he was swallowed up in the joy of his God, even to the exhausting of his strength; and he fell again to the earth.

Now was not this exceeding joy? Behold, this is joy which none receiveth save it be the truly penitent and humble seeker of happiness.

- 19 अब अपने भाइयों से मिलने पर अलमा का आनंद वास्तव में महान था, और हारून, ओमनर, और हिम्नी का आनंद भी; परन्तु उनका आनंद उतना नहीं था कि वे बलहीन महसूस करने लगे ।
- 20 और अब ऐसा हुआ कि अलमा अपनी अगुवाई में अपने भाइयों को वापस जराहेमला के प्रदेश, अपने घर ले गया । और वे गए और मुख्य न्यायी को वे सारी बातें बताईं जो नफी के प्रदेश में उनके लमनाई भाइयों के बीच हुआ था ।
- 21 और ऐसा हुआ कि मुख्य न्यायी ने पूरे प्रदेश में, अंती-नफी-लेही के लोगों को अन्य लोगों के द्वारा स्वीकार किये जाने के विषय पर एक घोषणा करवा दी ।
- 22 और ऐसा हुआ कि लोगों की आवाज आई, यह कहते हुए: देखो, समुद्र से लगे पूर्व के जेरशान प्रदेश को हम दे देंगे, जो कि संपन्न प्रदेश से जुड़ा हुआ है, और जो संपन्न प्रदेश के दक्षिण में है; और जेरशान प्रदेश ही वह प्रदेश है जिसे हम धरोहर के रूप में अपने भाइयों को दे देंगे ।
- 23 और देखो, हम जेरशान और नफी प्रदेश के बीच में अपनी सेना स्थापित करेंगे, ताकि हम जेरशान प्रदेश में रह रहे अपने भाइयों की सुरक्षा कर सकें; और ऐसा हम अपने भाइयों के लिए करेंगे जिससे कि उनमें अपने भाइयों के विरुद्ध हथियार उठाने का डर न हो नहीं तो वे पाप में पड़ जाएंगे; और यह भयानक डर उनके भीतर उन्हीं के द्वारा की गई कई हत्याओं और नृशंस दुष्टता के आधार पर उनके दर्दनाक पश्चाताप के कारण आया ।
- 24 और अब देखो, ऐसा हम अपने भाइयों के लिए करेंगे, ताकि वे जेरशान प्रदेश के उत्तराधिकारी हो सकें और हम अपनी सेनाओं द्वारा उनकी शत्रुओं से रक्षा इस शर्त पर करेंगे ताकि वे अपनी पूंजी का कुछ हिस्सा हमारी सहायता के लिए देंगे जिसका उपयोग हम अपनी सेनाओं के रख-रखाव पर करेंगे ।
- 25 अब, ऐसा हुआ कि जब अम्मोन ने इसे सुना तो वह अलमा के साथ निर्जन स्थान में अंती-नफी-लेही के लोगों के पास वापस गया जहां उन्होंने पड़ाव डाला था, और उन्हें इन सारी बातों की जानकारी दी । और अलमा ने भी अम्मोन और हारून, और उसके भाइयों के साथ उनसे इस विषय पर बातचीत की ।

Now the joy of Alma in meeting his brethren was truly great, and also the joy of Aaron, of Omner, and Himni; but behold their joy was not that to exceed their strength.

And now it came to pass that Alma conducted his brethren back to the land of Zarahemla; even to his own house. And they went and told the chief judge all the things that had happened unto them in the land of Nephi, among their brethren, the Lamanites.

And it came to pass that the chief judge sent a proclamation throughout all the land, desiring the voice of the people concerning the admitting their brethren, who were the people of Anti-Nephi-Lehi.

And it came to pass that the voice of the people came, saying: Behold, we will give up the land of Jershon, which is on the east by the sea, which joins the land Bountiful, which is on the south of the land Bountiful; and this land Jershon is the land which we will give unto our brethren for an inheritance.

And behold, we will set our armies between the land Jershon and the land Nephi, that we may protect our brethren in the land Jershon; and this we do for our brethren, on account of their fear to take up arms against their brethren lest they should commit sin; and this their great fear came because of their sore repentance which they had, on account of their many murders and their awful wickedness.

And now behold, this will we do unto our brethren, that they may inherit the land Jershon; and we will guard them from their enemies with our armies, on condition that they will give us a portion of their substance to assist us that we may maintain our armies.

Now, it came to pass that when Ammon had heard this, he returned to the people of Anti-Nephi-Lehi, and also Alma with him, into the wilderness, where they had pitched their tents, and made known unto them all these things. And Alma also related unto them his conversion, with Ammon and Aaron, and his brethren.



26 और ऐसा हुआ कि इसके कारण उन्हें महान आनंद हुआ। और वे जेरशान प्रदेश गए, और जेरशान प्रदेश को अधिकार में ले लिया; और वे नफाई यानी कि अम्मोन के लोग कहलाए; इसलिए इसके पश्चात वे उसी नाम से पहचाने जाने लगे।

27 और वे नफी के लोगों के बीच थे, और उन लोगों के बीच में भी उनकी गिनती होने लगी जो परमेश्वर के गिरजे के थे। और वे परमेश्वर के प्रति, और लोगों के प्रति भी अपने उत्साह के लिए प्रसिद्ध हो गए; क्योंकि वे पूरी तरह से ईमानदार और सारी बातों में धर्मी थे; और वे अंत तक मसीह में दृढ़ विश्वासी रहे।

28 और उन्होंने अपने भाइयों के रक्तपात को एक बहुत ही घृणित कार्य के रूप में देखा; और वे फिर कभी भी अपने भाइयों के विरुद्ध हथियार उठाने में प्रबल नहीं हो सके; और उन्होंने कभी भी मृत्यु को भय की किसी भी अवस्था के रूप में नहीं देखा, क्योंकि उनकी आशा और समझ मसीह और उसके पुनरुत्थान पर निर्भर थी; इसलिए, मृत्यु पर मसीह की जीत द्वारा उन्होंने उसे सह लिया था।

29 इसलिए, अपने भाइयों को मारने के प्रति वे तलवार या छुरी उठा पाते, इससे पहले ही वे उनके द्वारा तीव्र पीड़ा और कष्टदायक मृत्यु को प्राप्त हो गए।

30 और इस प्रकार वे उत्साही और प्रिय लोग, प्रभु के सबसे अधिक कृपापात्र लोग थे।

And it came to pass that it did cause great joy among them. And they went down into the land of Jershon, and took possession of the land of Jershon; and they were called by the Nephites the people of Ammon; therefore they were distinguished by that name ever after.

And they were among the people of Nephi, and also numbered among the people who were of the church of God. And they were also distinguished for their zeal towards God, and also towards men; for they were perfectly honest and upright in all things; and they were firm in the faith of Christ, even unto the end.

And they did look upon shedding the blood of their brethren with the greatest abhorrence; and they never could be prevailed upon to take up arms against their brethren; and they never did look upon death with any degree of terror, for their hope and views of Christ and the resurrection; therefore, death was swallowed up to them by the victory of Christ over it.

Therefore, they would suffer death in the most aggravating and distressing manner which could be inflicted by their brethren, before they would take the sword or cimeter to smite them.

And thus they were a zealous and beloved people, a highly favored people of the Lord.

## अलमा 28

- 1 और अब ऐसा हुआ कि जेरशान प्रदेश में अम्मोन के लोगों के स्थापित होने के पश्चात, जेरशान प्रदेश में गिरजे के भी स्थापित होने के पश्चात, और जेरशान प्रदेश के आसपास के क्षेत्रों में नफाइयों की सेना के स्थापित होने के पश्चात, हां, जराहेमला प्रदेश की आसपास की सीमाओं में स्थापित होने के पश्चात; देखो लमनाइयों की सेना अपने भाइयों का अनुसरण करते हुए निर्जन प्रदेश में गई ।
- 2 और इस प्रकार वहां पर एक भयानक युद्ध हुआ; हां, यहां तक कि लेही द्वारा यरूशलेम छोड़ने के समय से ऐसा युद्ध प्रदेश के लोगों में कभी भी नहीं हुआ था; हां, और हजारों लमनाई मारे गए और प्रदेश से बाहर तितर-बितर हो गए ।
- 3 हां, और नफी के लोगों में भयानक नर संहार भी हुआ था; फिर भी, लमनाइयों को भगा दिया गया और वे तितर-बितर हो गए, और नफी के लोग फिर से अपने प्रदेश वापस आ गए ।
- 4 और अब यही वह समय था जब सारे प्रदेश के नफी के लोगों में महान शोक और विलाप सुनाई दिया था ।
- 5 हां, विधवाएं अपने पतियों के लिए रो रही थीं, और पिता अपने बेटों को लिए रो रहे थे, और बहनें अपने भाइयों के लिए, हां, भाई अपने पिता के लिए रो रहे थे; और इस प्रकार अपने मारे गए रिश्तेदारों के लिए शोक मनाते हुए, उन सबमें शोक-विलाप सुनाई दे रहा था ।
- 6 और अब निश्चित तौर पर यह एक दुखभरा दिन था; हां, गंभीरता का एक समय, और उपवास और प्रार्थना का एक समय ।
- 7 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के पंद्रहवें वर्ष का अंत हुआ ।
- 8 और यह अम्मोन और उसके भाइयों का विवरण है, नफी के प्रदेश में उनकी यात्रा का, प्रदेश में उनके उत्पीड़न, उनके दुखों, और उनके कष्टों, और समझ से परे उनकी प्रसन्नता का, और जेरशान प्रदेश में भाइयों को स्वीकारे जाने और उनकी सुरक्षा का विवरण है । और अब प्रभु, सारी मनुष्यजाति का मुक्तिदाता, उनकी आत्माओं को सदा के लिए आशीषित करे ।
- 9 और यह नफाइयों में युद्ध और वाद-विवादों का विवरण है, और नफाइयों और लमनाइयों के बीच युद्धों का भी; और न्यायियों के शासन का पंद्रहवां वर्ष समाप्त हुआ ।

## Alma 28

And now it came to pass that after the people of Ammon were established in the land of Jershon, and a church also established in the land of Jershon, and the armies of the Nephites were set round about the land of Jershon, yea, in all the borders round about the land of Zarahemla; behold the armies of the Lamanites had followed their brethren into the wilderness.

And thus there was a tremendous battle; yea, even such an one as never had been known among all the people in the land from the time Lehi left Jerusalem; yea, and tens of thousands of the Lamanites were slain and scattered abroad.

Yea, and also there was a tremendous slaughter among the people of Nephi; nevertheless, the Lamanites were driven and scattered, and the people of Nephi returned again to their land.

And now this was a time that there was a great mourning and lamentation heard throughout all the land, among all the people of Nephi—

Yea, the cry of widows mourning for their husbands, and also of fathers mourning for their sons, and the daughter for the brother, yea, the brother for the father; and thus the cry of mourning was heard among all of them, mourning for their kindred who had been slain.

And now surely this was a sorrowful day; yea, a time of solemnity, and a time of much fasting and prayer.

And thus endeth the fifteenth year of the reign of the judges over the people of Nephi;

And this is the account of Ammon and his brethren, their journeyings in the land of Nephi, their sufferings in the land, their sorrows, and their afflictions, and their incomprehensible joy, and the reception and safety of the brethren in the land of Jershon. And now may the Lord, the Redeemer of all men, bless their souls forever.

And this is the account of the wars and contentions among the Nephites, and also the wars between the Nephites and the Lamanites; and the fifteenth year of the reign of the judges is ended.

- 10 और पहले वर्ष से लेकर पंद्रहवें वर्ष तक हजारों लोगों के जीवन नष्ट हो गए, हां, इसी समय भीषण रक्तपात हुआ ।
- 11 और हजारों लोगों के शरीरों को जमीन में दफना दिया गया, जब कि हजारों लोगों के शरीर जमीन पर ढेर के रूप में पड़े हुए सड़ रहे हैं; हां, कई हजार लोग अपने रिश्तेदारों को खोने के कारण शोक मना रहे हैं, क्योंकि प्रभु की प्रतिज्ञाओं के अनुसार उनके पास डरने का कारण है ताकि वे अंतहीन दुःख की स्थिति के हवाले न किये जाएं ।
- 12 जब कि बाकी हजारों लोग वास्तव में अपने रिश्तेदारों के खोने पर शोक मनाते हैं, फिर भी वे आनंदित होते हैं और आशा में हर्षित होते हैं, और प्रभु की प्रतिज्ञा के अनुसार यह भी जानते हैं कि कभी भी समाप्त न होनेवाली प्रसन्नता की एक अवस्था में, परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान होने के लिए वे उठाए जा रहे हैं ।
- 13 और इस प्रकार हम देखते हैं कि पाप और उल्लंघन के कारण मनुष्य में कितनी महान असमानता है, और शैतान की शक्ति उन धूर्त योजनाओं द्वारा आती है जिसे उसने लोगों के हृदयों को लुभाने के लिए बनाया है ।
- 14 और इस प्रकार प्रभु के अंगूर के बाग में परिश्रम के प्रति हम मनुष्यों की निष्ठा की महान बुलाहट को देखते हैं; और इसी प्रकार दुख, और प्रसन्नता के महान कारण को भी देखते हैं—मनुष्यों के बीच में मृत्यु और विनाश के कारण दुख को, और जीवन के प्रति मसीह के प्रकाश के कारण प्रसन्नता को ।

And from the first year to the fifteenth has brought to pass the destruction of many thousand lives; yea, it has brought to pass an awful scene of bloodshed.

And the bodies of many thousands are laid low in the earth, while the bodies of many thousands are moldering in heaps upon the face of the earth; yea, and many thousands are mourning for the loss of their kindred, because they have reason to fear, according to the promises of the Lord, that they are consigned to a state of endless wo.

While many thousands of others truly mourn for the loss of their kindred, yet they rejoice and exult in the hope, and even know, according to the promises of the Lord, that they are raised to dwell at the right hand of God, in a state of never-ending happiness.

And thus we see how great the inequality of man is because of sin and transgression, and the power of the devil, which comes by the cunning plans which he hath devised to ensnare the hearts of men.

And thus we see the great call of diligence of men to labor in the vineyards of the Lord; and thus we see the great reason of sorrow, and also of rejoicing—sorrow because of death and destruction among men, and joy because of the light of Christ unto life.

## अलमा 29

- 1 ओह यदि मैं एक स्वर्गदूत होता, और अपने हृदय की इच्छा पूरी कर सकता, तो मैं आगे बढ़ता और पृथ्वी को झंझोड़ने के लिए परमेश्वर की तुरही से बोलता, और हर एक से पश्चाताप करने की याचना करता!
- 2 हां, पश्चाताप और मुक्ति की योजना के प्रति, मैं गर्जन भरी आवाज के साथ हर आत्मा के लिए घोषणा करता कि उन्हें पश्चाताप कर अपने परमेश्वर के पास आना चाहिए, कि पृथ्वी पर और अधिक दुख न हो सके।
- 3 परन्तु देखो, मैं एक मनुष्य हूँ, और अपनी इच्छा से पाप करता हूँ; क्योंकि मुझे उन्हीं चीजों से संतुष्ट होना चाहिए जिसे प्रभु ने मुझे दिया है।
- 4 मुझे एक न्यायी परमेश्वर के दृढ़ नियम में अपनी इच्छाओं के लिए दुख नहीं उठाना चाहिए, क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह मनुष्यों को उनकी इच्छा के अनुसार ही देता है, चाहे वह इस जीवन में हो या मृत्युपरान्त; हां, मैं जानता हूँ कि वह मनुष्यों को देता है, हां, उनकी इच्छा के अनुसार उस नियम के तहत जिसे बदला नहीं जा सकता है, चाहे वह उद्धार हो या विनाश।
- 5 हां, और मैं जानता हूँ कि अच्छाई और बुराई सभी मनुष्यों के सामने आती है; जो अच्छे और बुरे में भिन्नता नहीं जानता वह निर्दोष है; परन्तु जो अच्छे और बुरे में भिन्नता जानता है, उसे उसकी इच्छा के अनुसार दिया जाता है, चाहे वह अच्छा चाहता हो या बुरा, जीवन चाहता हो या मृत्यु, प्रसन्नता चाहता हो या सच्चा पश्चाताप।
- 6 अब, यह देखते हुए कि मैं इन बातों को जानता हूँ, मैं उस कार्य से अधिक की इच्छा क्यों रखूँ जिसे करने के लिए मुझे नियुक्त किया गया है ?
- 7 मैं एक स्वर्गदूत बनने की इच्छा क्यों रखूँ, ताकि मैं पृथ्वी के छोर तक लोगों से बातें कर सकूँ ?
- 8 क्योंकि देखो, अपने वचन को सिखाने के लिए प्रभु उनके राष्ट्र और उनकी भाषा के अनुसार सभी को देता है, हां, ज्ञान में वह सब कुछ देता है जिसे वह देखता है कि उनके पास होना चाहिए; इसलिए हम देखते हैं कि न्याय और सच्चाई के अनुसार प्रभु ज्ञान में उपदेश देता है।
- 9 प्रभु ने मुझे जो आज्ञा दी है उसे मैं जानता हूँ, और उसमें मैं आनंदित होता हूँ। मैं स्वयं पर नहीं परन्तु प्रभु ने मुझे जो आज्ञा दी है उसमें आनंदित होता हूँ; हां, और यही मेरा आनंद है, कि शादय पश्चाताप के लिए कुछ आत्माओं को लाने में मैं परमेश्वर के हाथों का एक औजार हो सकूँ; और यही मेरा आनंद है।

## Alma 29

O that I were an angel, and could have the wish of mine heart, that I might go forth and speak with the trump of God, with a voice to shake the earth, and cry repentance unto every people!

Yea, I would declare unto every soul, as with the voice of thunder, repentance and the plan of redemption, that they should repent and come unto our God, that there might not be more sorrow upon all the face of the earth.

But behold, I am a man, and do sin in my wish; for I ought to be content with the things which the Lord hath allotted unto me.

I ought not to harrow up in my desires the firm decree of a just God, for I know that he granteth unto men according to their desire, whether it be unto death or unto life; yea, I know that he alloteth unto men, yea, decreeth unto them decrees which are unalterable, according to their wills, whether they be unto salvation or unto destruction.

Yea, and I know that good and evil have come before all men; he that knoweth not good from evil is blameless; but he that knoweth good and evil, to him it is given according to his desires, whether he desireth good or evil, life or death, joy or remorse of conscience.

Now, seeing that I know these things, why should I desire more than to perform the work to which I have been called?

Why should I desire that I were an angel, that I could speak unto all the ends of the earth?

For behold, the Lord doth grant unto all nations, of their own nation and tongue, to teach his word, yea, in wisdom, all that he seeth fit that they should have; therefore we see that the Lord doth counsel in wisdom, according to that which is just and true.

I know that which the Lord hath commanded me, and I glory in it. I do not glory of myself, but I glory in that which the Lord hath commanded me; yea, and this is my glory, that perhaps I may be an instrument in the hands of God to bring some soul to repentance; and this is my joy.

- 10 और देखो, जब मैं अपने बहुत से भाइयों को सच्चा पश्चाताप करते, और प्रभु अपने परमेश्वर के पास आते हुए देखता हूँ, तो मेरी आत्मा आनंद से भर जाती है; तो मैं उसे अवश्य याद करता हूँ जिसे प्रभु ने मेरे लिए किया है, हां, यहां तक कि उसने मेरी प्रार्थना को सुना है; हां, तो मैं अवश्य उसकी करुणामयी बांह को याद करता हूँ जो उसने मेरे लिए फैलाई है।
- 11 हां, और मैं अपने पूर्वजों की दासता को भी अवश्य याद करता हूँ; क्योंकि मैं निश्चित तौर पर जानता हूँ कि प्रभु ने उन्हें दासता से मुक्त किया था, और ऐसा करके उसने अपना गिरजा स्थापित किया; हां, प्रभु परमेश्वर, इब्राहीम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, और याकूब के परमेश्वर ने उन्हें दासता से मुक्त किया था।
- 12 हां, मैंने सदा से अपने पूर्वजों की दासता को याद रखा है; और उसी परमेश्वर ने जिसने उन्हें मिस्रियों के हाथों से बचाया था उसी ने उन्हें दासता से मुक्त किया।
- 13 हां, और उसी परमेश्वर ने उनके बीच गिरजा स्थापित किया; हां, और उसी परमेश्वर ने इन लोगों के प्रति वचन का प्रचार करने के लिए मुझे एक पवित्र बुलाहट दी है, और उसने मुझे इतनी सफलता दी है जिसमें मेरा आनंद परिपूर्ण है।
- 14 परन्तु मेरा आनंद केवल मेरे स्वयं की सफलता में ही नहीं है, परन्तु मेरा आनंद मेरे उन भाइयों की सफलता में परिपूर्ण है जो कि नफी के प्रदेश तक गए थे।
- 15 देखो, उन्होंने बहुत ही परिश्रम किया है, और अधिक फल लाए हैं; और कितना महान उनका पुरस्कार होगा!
- 16 अब, जब मैं इन भाइयों की सफलता के बारे में सोचता हूँ तो मेरी आत्मा आपे से बाहर हो जाती है, मानो यह शरीर से बाहर निकल जाएगी, इतना महान है मेरा आनंद।
- 17 और अब परमेश्वर मेरे इन भाइयों के साथ ऐसा होने दे कि वे परमेश्वर के राज्य में बैठ सकें; हां, और जो लोग इनके परिश्रम का फल हैं वो कहीं और न जाएं, बल्कि सदा उसकी बड़ाई कर सकें। और परमेश्वर ऐसा होने दे कि जैसा मैंने कहा है वैसा ही होने दे। आमीन।

And behold, when I see many of my brethren truly penitent, and coming to the Lord their God, then is my soul filled with joy; then do I remember what the Lord has done for me, yea, even that he hath heard my prayer; yea, then do I remember his merciful arm which he extended towards me.

Yea, and I also remember the captivity of my fathers; for I surely do know that the Lord did deliver them out of bondage, and by this did establish his church; yea, the Lord God, the God of Abraham, the God of Isaac, and the God of Jacob, did deliver them out of bondage.

Yea, I have always remembered the captivity of my fathers; and that same God who delivered them out of the hands of the Egyptians did deliver them out of bondage.

Yea, and that same God did establish his church among them; yea, and that same God hath called me by a holy calling, to preach the word unto this people, and hath given me much success, in the which my joy is full.

But I do not joy in my own success alone, but my joy is more full because of the success of my brethren, who have been up to the land of Nephi.

Behold, they have labored exceedingly, and have brought forth much fruit; and how great shall be their reward!

Now, when I think of the success of these my brethren my soul is carried away, even to the separation of it from the body, as it were, so great is my joy.

And now may God grant unto these, my brethren, that they may sit down in the kingdom of God; yea, and also all those who are the fruit of their labors that they may go no more out, but that they may praise him forever. And may God grant that it may be done according to my words, even as I have spoken. Amen.

## अलमा 30

- 1 देखो, अब ऐसा हुआ कि जेरशान प्रदेश में अम्मोन के लोगों द्वारा स्थापित होने के पश्चात, हां, लमनाइयों को प्रदेश से बाहर खदेड़ने, और प्रदेश के लोगों द्वारा उनके मृतकों को दफनाने के पश्चात—
- 2 अब उनके मृतकों की संख्या अत्याधित होने के कारण न तो उन्हें गिना जा सकता था; न ही नफाइयों के मृतकों को गिना जा सकता था—परन्तु ऐसा हुआ कि उनके मृतकों को दफनाने के पश्चात, और उपवास, शोक, और प्रार्थना के दिनों के पश्चात भी (और ऐसा नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के सोलहवें वर्ष में हुआ था) वहां पूरे प्रदेश में निरंतर शांति स्थापित होने लगी ।
- 3 हां, और लोगों ने प्रभु की आज्ञाओं का पालन किया; और मूसा की व्यवस्था के अनुसार परमेश्वर की विधियों को मानने में वे बहुत ही पक्के थे; क्योंकि उन्हें सिखाया गया था कि वे मूसा की व्यवस्था का पालन तब तक करें जब तक कि यह पूरी नहीं हो जाती ।
- 4 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के सोलहवें वर्ष में लोगों में किसी भी प्रकार की अशांति नहीं फैली ।
- 5 और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के सत्रहवें वर्ष के आरंभ में, वहां निरंतर शांति थी ।
- 6 परन्तु ऐसा हुआ कि सत्रहवें वर्ष के आखिर में, जराहेमला के प्रदेश में एक मनुष्य आया, और वह मसीह-विरोधी था, क्योंकि उसने लोगों को मसीह के आगमन से संबंधित उन भविष्यवाणियों के विरोध में सिखाना आरंभ किया जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने बताया था ।
- 7 अब एक मनुष्य के विश्वास के विपरित कोई भी नियम नहीं था; क्योंकि यह परमेश्वर की आज्ञाओं के सख्त खिलाफ था कि एक नियम ऐसा होना चाहिए जो लोगों में असमानता लाए ।
- 8 इसलिए धर्मशास्त्र इस प्रकार कहता है: आज ही चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे ।
- 9 अब यदि कोई मनुष्य परमेश्वर की सेवा करना चाहता, यह उसके लिए सौभाग्य की बात होती; या इसकी बजाय, यदि उसे परमेश्वर में विश्वास होता तो सेवा करने का यह उसका सौभाग्य होता; परन्तु यदि वह उसमें विश्वास नहीं करता तो उसे दंड देने के लिए कोई नियम नहीं था ।

## Alma 30

Behold, now it came to pass that after the people of Ammon were established in the land of Jershon, yea, and also after the Lamanites were driven out of the land, and their dead were buried by the people of the land—

Now their dead were not numbered because of the greatness of their numbers; neither were the dead of the Nephites numbered—but it came to pass after they had buried their dead, and also after the days of fasting, and mourning, and prayer, (and it was in the sixteenth year of the reign of the judges over the people of Nephi) there began to be continual peace throughout all the land.

Yea, and the people did observe to keep the commandments of the Lord; and they were strict in observing the ordinances of God, according to the law of Moses; for they were taught to keep the law of Moses until it should be fulfilled.

And thus the people did have no disturbance in all the sixteenth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

And it came to pass that in the commencement of the seventeenth year of the reign of the judges, there was continual peace.

But it came to pass in the latter end of the seventeenth year, there came a man into the land of Zarahemla, and he was Anti-Christ, for he began to preach unto the people against the prophecies which had been spoken by the prophets, concerning the coming of Christ.

Now there was no law against a man's belief; for it was strictly contrary to the commands of God that there should be a law which should bring men on to unequal grounds.

For thus saith the scripture: Choose ye this day, whom ye will serve.

Now if a man desired to serve God, it was his privilege; or rather, if he believed in God it was his privilege to serve him; but if he did not believe in him there was no law to punish him.

10 परन्तु यदि वह हत्या करता तो उसे मृत्युदंड दिया जाता; और यदि वह लूटपाट करता तो भी उसे दंड दिया जाता; और यदि वह चोरी करता तो भी उसे दंड दिया जाता; और यदि वह व्यभिचार करता तो भी उसे दंड दिया जाता; हां, इन सभी दुष्ट कार्यों के लिए उन्हें सजा दी जाती ।

11 क्योंकि लोगों को उनके अपराधों के अनुसार दंड देने का नियम था । फिर भी, एक मनुष्य के विश्वास के विपरित कोई भी नियम नहीं था; इसलिए, किसी मनुष्य को केवल उसके द्वारा किये गए अपराध के लिए ही दंड दिया जाता; इसलिए सारे लोग एक समान थे ।

12 और इस मसीह-विरोधी ने जिसका नाम कोरिहर था, (और जिस पर कानून की कोई पकड़ नहीं थी) लोगों को सिखाना शुरू कर दिया कि मसीह नहीं है । और इसी तरीके से उसने प्रचार किया, यह कहते हुए:

13 हे लोगों तुम जो बुद्धिहीन और व्यर्थ की आशा में लगे हुए हो, तुम इन अविवेकपूर्ण बातों का बोझ अपने ऊपर क्यों लादे हुए हो ? तुम मसीह की प्रतीक्षा क्यों कर रहे हो ? क्योंकि कोई भी मनुष्य आनेवाली बातों के बारे में नहीं जान सकता है ।

14 देखो, ये बातें जिन्हें तुम भविष्यवाणियों कहते हो, जिसे तुम कहते हो कि पवित्र भविष्यवक्ताओं द्वारा बताई गई हैं, देखो, ये तुम्हारे पूर्वजों की मूर्ख परंपराएं हैं ।

15 इनकी निश्चितता के विषय में तुम कैसे जानते हो ? देखो, तुम उन बातों के बारे में नहीं जान सकते जिसे तुमने देखा न हो; इसलिए तुम नहीं जान सकते कि मसीह आएगा ।

16 तुम भविष्य की तरफ देखते हो और कहते हो कि तुम अपने पापों की क्षमा देखते हो । परन्तु देखो, यह एक उन्मत्त मन का प्रभाव है; और तुम्हारा यह पागलपन तुम्हारे पूर्वजों की परंपराओं के कारण है, जो तुम्हें उन बातों पर विश्वास करने पर विवश करती है जो है ही नहीं ।

17 और इसी प्रकार की कई बातें उसने उनसे कहा, उन्हें यह बताते हुए कि लोगों के पापों के लिए कोई भी प्रायश्चित नहीं हो सकता है परन्तु हर व्यक्ति जीव प्रबंधन के अनुसार इस जीवन में सफल होता है; इसलिए हर व्यक्ति अपनी बुद्धि के अनुसार उन्नति करता है, और यह कि हर व्यक्ति अपने बल के अनुसार विजयी होता है; और जो कुछ भी एक मनुष्य ने किया वह अपराध नहीं था ।

But if he murdered he was punished unto death; and if he robbed he was also punished; and if he stole he was also punished; and if he committed adultery he was also punished; yea, for all this wickedness they were punished.

For there was a law that men should be judged according to their crimes. Nevertheless, there was no law against a man's belief; therefore, a man was punished only for the crimes which he had done; therefore all men were on equal grounds.

And this Anti-Christ, whose name was Korihor, (and the law could have no hold upon him) began to preach unto the people that there should be no Christ. And after this manner did he preach, saying:

O ye that are bound down under a foolish and a vain hope, why do ye yoke yourselves with such foolish things? Why do ye look for a Christ? For no man can know of anything which is to come.

Behold, these things which ye call prophecies, which ye say are handed down by holy prophets, behold, they are foolish traditions of your fathers.

How do ye know of their surety? Behold, ye cannot know of things which ye do not see; therefore ye cannot know that there shall be a Christ.

Ye look forward and say that ye see a remission of your sins. But behold, it is the effect of a frenzied mind; and this derangement of your minds comes because of the traditions of your fathers, which lead you away into a belief of things which are not so.

And many more such things did he say unto them, telling them that there could be no atonement made for the sins of men, but every man fared in this life according to the management of the creature; therefore every man prospered according to his genius, and that every man conquered according to his strength; and whatsoever a man did was no crime.

- 18 और इस प्रकार उसने कई लोगों के मन को बहकाते हुए, और दुष्टता में उन्हें घमंडी बनाते हुए उनमें प्रचार किया, हां, कई स्त्रियों और पुरुषों को भी वेश्यावृत्ति की तरफ ले जाते हुए—और उन्हें यह बताते हुए कि जब एक मनुष्य की मृत्यु हो जाती है तो वहीं सब कुछ समाप्त हो जाता है ।
- 19 अब यह मनुष्य अम्मोन के उन लोगों में इन बातों का प्रचार करते हुए जेरशान प्रदेश भी गया जो कि एक समय पर लमनाइयों के लोग थे ।
- 20 परन्तु देखो वे कई नफाइयों से अधिक बुद्धिमान थे; क्योंकि उन्होंने उसे पकड़ लिया और बांधकर उसे अम्मोन के सामने ले गए, जो कि उन लोगों का उच्च याजक था ।
- 21 और ऐसा हुआ कि उसे प्रदेश से बाहर खदेड़ दिया गया । और वह गिदोन के प्रदेश आ गया, और उन्हें भी सिखाने लगा; और यहां पर उसे अधिक सफलता प्राप्त नहीं हुई क्योंकि उसे पकड़कर, बांधकर उच्च याजक, और प्रदेश के मुख्य न्यायी के सामने भी ले जाया गया ।
- 22 और ऐसा हुआ कि उच्च याजक ने उससे कहा: तुम प्रभु के मार्ग को क्यों दूषित करते हो ? तुम लोगों के आनंद में बाधा डालने के लिए उन्हें क्यों सिखाते हो कि मसीह नहीं आएगा ? क्यों तुम पवित्र भविष्यवक्ताओं की सारी भविष्यवाणियों के विरुद्ध बोलते हो ?
- 23 अब उच्च याजक का नाम गिडोना था । और कोरिहर ने उससे कहा: क्योंकि मैं तुम्हारे पूर्वजों की मूर्ख परंपराओं के विषय में नहीं सिखाता हूं, और क्योंकि लोगों की शक्ति और अधिकार छीनने के लिए और उन्हें अज्ञानता में रखने के लिए मैं उन लोगों को उन मूर्ख विधियों और कार्यों के तहत स्वयं को बांधना भी नहीं सिखाता हूं जो कि प्राचीन याजकों के द्वारा स्थापित किये गए हैं, ताकि वे अपना सिर उंचा न कर सकें बल्कि तुम्हारे कहे अनुसार ही चलें ।
- 24 तुम कहते हो कि ये लोग आजाद हैं । देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि ये दासता में हैं । तुम कहते हो कि वे प्राचीन भविष्यवाणियां सच्ची हैं । देखो, मैं कहता हूं कि तुम नहीं जानते कि वे सच्ची हैं ।
- 25 तुम कहते हो कि एक माता-पिता के पाप के कारण ये लोग अपराधी और गिरे हुए लोग हैं । परन्तु देखो, मैं कहता हूं कि एक बच्चा अपने माता-पिता के कारण अपराधी नहीं है ।

And thus he did preach unto them, leading away the hearts of many, causing them to lift up their heads in their wickedness, yea, leading away many women, and also men, to commit whoredoms —telling them that when a man was dead, that was the end thereof.

Now this man went over to the land of Jerushon also, to preach these things among the people of Ammon, who were once the people of the Lamanites.

But behold they were more wise than many of the Nephites; for they took him, and bound him, and carried him before Ammon, who was a high priest over that people.

And it came to pass that he caused that he should be carried out of the land. And he came over into the land of Gideon, and began to preach unto them also; and here he did not have much success, for he was taken and bound and carried before the high priest, and also the chief judge over the land.

And it came to pass that the high priest said unto him: Why do ye go about perverting the ways of the Lord? Why do ye teach this people that there shall be no Christ, to interrupt their rejoicings? Why do ye speak against all the prophecies of the holy prophets?

Now the high priest's name was Giddonah. And Korihor said unto him: Because I do not teach the foolish traditions of your fathers, and because I do not teach this people to bind themselves down under the foolish ordinances and performances which are laid down by ancient priests, to usurp power and authority over them, to keep them in ignorance, that they may not lift up their heads, but be brought down according to thy words.

Ye say that this people is a free people. Behold, I say they are in bondage. Ye say that those ancient prophecies are true. Behold, I say that ye do not know that they are true.

Ye say that this people is a guilty and a fallen people, because of the transgression of a parent. Behold, I say that a child is not guilty because of its parents.



- 26 और तुम यह भी कहते हो कि मसीह आएगा। परन्तु देखो, मैं कहता हूँ कि तुम नहीं जानते हो कि कोई मसीह आएगा। और तुम यह भी कहते हो कि वह संसार के पापों के लिए मारा जाएगा।
- 27 और इस प्रकार तुम अपने पूर्वजों की मूर्ख परंपराओं और अपनी इच्छाओं के अनुसार इन लोगों को गुमराह करते हो; और तुम उन्हें दबाकर रखते हो जैसे कि वो दासता में हों, ताकि तुम उनकी मेहनत का खा सको, ताकि वे निडरता से तुम्हारी तरफ देखने का साहस न कर सकें, और ताकि वे अपने अधिकार और सौभाग्य में आनंदित होने का साहस न कर सकें।
- 28 हां, वे अपनी ही चीजों का उपयोग करने का साहस न कर सकें नहीं तो कहीं ऐसा न हो कि वे अपने ही याजकों को ठेस पहुंचा दें, जो कि अपनी इच्छाओं के अनुसार उन पर बोझ डालते हैं, और अपनी परंपराओं और अपने सपने और अपनी मरजी और अपने दिव्यदर्शनों और अपनी मिथ्या रहस्यों के द्वारा उन्हें विश्वास दिलाया जाता है कि यदि वे उनकी बातों के अनुसार नहीं चलेंगे तो किसी अज्ञान अस्तित्व को ठेस पहुंचा सकते हैं, जिसे वे परमेश्वर कहते हैं—एक ऐसा अस्तित्व जिसे न तो कभी देखा या जाना गया है, जो कि न तो कभी था और न ही कभी होगा।
- 29 अब जब उच्च याजक और मुख्य न्यायी ने उसके हृदय की कठोरता को देखा, हां, जब उन्होंने देखा कि वह परमेश्वर के विरुद्ध भी भला-बुरा कह सकता है, उन्होंने उसकी बातों का कोई भी उत्तर नहीं दिया; परन्तु उन्होंने ऐसा किया कि उसे पकड़कर बांध दिया गया; और उन्होंने उसे अधिकारियों के हाथों में सौंपकर उसे जराहेमला के प्रदेश भेज दिया, ताकि उसे अलमा और उस मुख्य न्यायी के पास ले जाया जा सके जो पूरे प्रदेश का राज्यपाल था।
- 30 और ऐसा हुआ कि जब उसे अलमा और मुख्य न्यायी के पास लाया गया, वह उसी प्रकार की बातें करता रहा जैसा कि उसने गिदोन के प्रदेश में किया था; हां, वह निंदा करता रहा।
- 31 और इस प्रकार उसने अलमा के सामने और भी क्रोधित करनेवाली बातें कहीं, और याजकों और शिक्षकों के विरुद्ध बोला, उन पर दोष लगाते हुए कि लोगों की मेहनत का खाने के लिए वो लोगों को उनके पूर्वजों की मूर्ख परंपराओं के कारण उन्हें पथभ्रष्ट कर रहे हैं।

And ye also say that Christ shall come. But behold, I say that ye do not know that there shall be a Christ. And ye say also that he shall be slain for the sins of the world—

And thus ye lead away this people after the foolish traditions of your fathers, and according to your own desires; and ye keep them down, even as it were in bondage, that ye may glut yourselves with the labors of their hands, that they durst not look up with boldness, and that they durst not enjoy their rights and privileges.

Yea, they durst not make use of that which is their own lest they should offend their priests, who do yoke them according to their desires, and have brought them to believe, by their traditions and their dreams and their whims and their visions and their pretended mysteries, that they should, if they did not do according to their words, offend some unknown being, who they say is God—a being who never has been seen or known, who never was nor ever will be.

Now when the high priest and the chief judge saw the hardness of his heart, yea, when they saw that he would revile even against God, they would not make any reply to his words; but they caused that he should be bound; and they delivered him up into the hands of the officers, and sent him to the land of Zarahemla, that he might be brought before Alma, and the chief judge who was governor over all the land.

And it came to pass that when he was brought before Alma and the chief judge, he did go on in the same manner as he did in the land of Gideon; yea, he went on to blaspheme.

And he did rise up in great swelling words before Alma, and did revile against the priests and teachers, accusing them of leading away the people after the silly traditions of their fathers, for the sake of glutting on the labors of the people.

- 32 अब अलमा ने उससे कहा: तुम जानते हो कि हम इन लोगों की मेहनत का नहीं खाते हैं; क्योंकि देखो अपने भरण-पोषण के लिए मैंने अपने स्वयं के हाथों से न्यायियों के शासन के आरंभ से लेकर अब तक मेहनत की है, इसके बावजूद अपने लोगों को परमेश्वर का वचन सुनाने के लिए मैंने प्रदेश के आसपास कई यात्राएं की हैं।
- 33 और इसके बावजूद मैंने गिरजे में कई कार्यों को किया है, न्याय-आसन को छोड़कर न तो मैंने अपनी मेहनत के बदले में कभी भी एक सेनिन से अधिक पाया है; न ही मेरे किसी भाई ने पाया है; और फिर हमने केवल अपने समय के नियम के अनुसार ही पाया है।
- 34 और अब, यदि गिरजे में हम अपनी मेहनत के बदले कुछ भी नहीं प्राप्त करते हैं, तो सच्चाई बताकर हम अपने भाइयों के आनंद में खुशी मना सकें, इसके अलावा गिरजे में हमारी मेहनत के बदले क्या फायदा है ?
- 35 फिर तुम क्यों कहते हो कि हम लाभ के लिए गिरजाघर में प्रचार करते हैं, जब कि तुम स्वयं जानते हो कि हमें कोई लाभ नहीं होता है ? और अब, क्या तुम विश्वास करते हो कि हम इन लोगों को धोखा दे रहे हैं जिसके कारण इनके हृदयों में इस प्रकार का आनंद भर जाता है ?
- 36 और कोरिहोर ने उसे उत्तर दिया, हां।
- 37 और फिर अलमा ने उससे कहा: क्या तुम विश्वास करते हो कि परमेश्वर है ?
- 38 और उसने उत्तर दिया, नहीं।
- 39 अब अलमा ने उससे कहा: क्या तुम फिर से अस्वीकार करोगे कि परमेश्वर है, और यह भी अस्वीकार करोगे कि मसीह है ? क्योंकि देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, मैं जानता हूँ कि परमेश्वर है, और यह भी कि मसीह आएगा।
- 40 और अब तुम्हारे पास क्या प्रमाण है कि परमेश्वर नहीं है, या यह कि मसीह नहीं आएगा ? मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हारी बातों के अलावा तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं है।
- 41 परन्तु देखो, मेरे पास इन सभी बातों की गवाही है कि ये सच्ची हैं; और तुम्हारे पास भी इन सब बातों की गवाही है कि ये सच्ची हैं; और क्या तुम उन्हें अस्वीकार करोगे ? क्या तुम विश्वास करते हो कि ये बातें सच्ची हैं ?

Now Alma said unto him: Thou knowest that we do not glut ourselves upon the labors of this people; for behold I have labored even from the commencement of the reign of the judges until now, with mine own hands for my support, notwithstanding my many travels round about the land to declare the word of God unto my people.

And notwithstanding the many labors which I have performed in the church, I have never received so much as even one senine for my labor; neither has any of my brethren, save it were in the judgment-seat; and then we have received only according to law for our time.

And now, if we do not receive anything for our labors in the church, what doth it profit us to labor in the church save it were to declare the truth, that we may have rejoicings in the joy of our brethren?

Then why sayest thou that we preach unto this people to get gain, when thou, of thyself, knowest that we receive no gain? And now, believest thou that we deceive this people, that causes such joy in their hearts?

And Korihor answered him, Yea.

And then Alma said unto him: Believest thou that there is a God?

And he answered, Nay.

Now Alma said unto him: Will ye deny again that there is a God, and also deny the Christ? For behold, I say unto you, I know there is a God, and also that Christ shall come.

And now what evidence have ye that there is no God, or that Christ cometh not? I say unto you that ye have none, save it be your word only.

But, behold, I have all things as a testimony that these things are true; and ye also have all things as a testimony unto you that they are true; and will ye deny them? Believest thou that these things are true?

- 42 देखो, मैं जानता हूँ कि तुम विश्वास करते हो, परन्तु तुम एक झूठ बोलनेवाली आत्मा से ग्रसित हो, और तुमने अपने आप से परमेश्वर की आत्मा को अलग कर दिया है; परन्तु तुम पर शैतान का अधिकार है, और वह अपनी युक्तियों से तुम्हें चलाता है ताकि वह परमेश्वर के बच्चों का विनाश कर सके ।
- 43 और अब कोरिहर ने अलमा से कहा: यदि तुम मुझे चिन्ह दिखा सको तो मैं मान सकती हूँ कि परमेश्वर है, हां, मुझे दिखाओ कि उसके पास शक्ति है, और तब मैं तुम्हारी बातों की सच्चाई को मान लूंगा ।
- 44 परन्तु अलमा ने उससे कहा: तुमने पर्याप्त चिन्ह पाया है; क्या तुम अपने परमेश्वर को लालच दोगे ? क्या तुम कहोगे कि मुझे चिन्ह दिखाओ जब कि तुम्हारे पास तुम्हारे इन सभी भाइयों की, और सभी पवित्र भविष्यवक्ताओं की गवाही है ? धर्मशास्त्र तुम्हारे सामने रखे हुए हैं, हां, और सभी चीजें सूचित करती हैं कि परमेश्वर है; हां, यहां तक कि पृथ्वी और इसके ऊपर की सारी चीजें, हां, इसकी गति, हां, और ग्रह जो कि अपने नियमित धूरी पर चलते हैं वे सभी साक्षी हैं कि सर्वोच्च सृष्टिकर्ता है ।
- 45 और फिर भी तुम क्यों इन लोगों के हृदयों को पथभ्रष्ट किये जा रहो हो, उन्हें यह बताते हुए कि परमेश्वर नहीं है ? और फिर भी क्या तुम इन साक्षियों के विरुद्ध असत्य कहोगे ? और उसने कहा: हां, यदि तुम मुझे चिन्ह नहीं दोगे तो मैं असत्य कहूंगा ।
- 46 और अब ऐसा हुआ कि अलमा ने उससे कहा: देखो, मैं तुम्हारे हृदय की कठोरता के कारण दुखी हूँ, हां, कि तुम अब भी सच्चाई की आत्मा का विरोध करोगे, ताकि तुम्हारी आत्मा नष्ट हो सके ।
- 47 परन्तु देखो, अपने झूठ और फुसलानेवाली बातों के द्वारा तुम कई लोगों की आत्माओं को नष्ट करने का साधन बनो, इससे बेहतर है कि तुम्हारी ही आत्मा नष्ट हो जाए; इसलिए यदि तुम फिर से असत्य बोलोगे, देखो परमेश्वर तुम्हें दंड देगा, ताकि तुम गूंगे हो जाओ, ताकि तुम अपना मुंह फिर कभी न खोल सको, और ताकि तुम इन लोगों को कभी भी धोखा न दे सको ।
- 48 अब कोरिहर ने उससे कहा: मैं परमेश्वर के अस्तित्व को नहीं नकारता हूँ, परन्तु मैं विश्वास नहीं करता हूँ कि परमेश्वर है; और मैं यह भी कहता हूँ कि तुम नहीं जानते हो कि परमेश्वर है; और यदि तुम मुझे चिन्ह नहीं दोगे तो मैं विश्वास नहीं करूंगा ।

Behold, I know that thou believest, but thou art possessed with a lying spirit, and ye have put off the Spirit of God that it may have no place in you; but the devil has power over you, and he doth carry you about, working devices that he may destroy the children of God.

And now Korihor said unto Alma: If thou wilt show me a sign, that I may be convinced that there is a God, yea, show unto me that he hath power, and then will I be convinced of the truth of thy words.

But Alma said unto him: Thou hast had signs enough; will ye tempt your God? Will ye say, Show unto me a sign, when ye have the testimony of all these thy brethren, and also all the holy prophets? The scriptures are laid before thee, yea, and all things denote there is a God; yea, even the earth, and all things that are upon the face of it, yea, and its motion, yea, and also all the planets which move in their regular form do witness that there is a Supreme Creator.

And yet do ye go about, leading away the hearts of this people, testifying unto them there is no God? And yet will ye deny against all these witnesses? And he said: Yea, I will deny, except ye shall show me a sign.

And now it came to pass that Alma said unto him: Behold, I am grieved because of the hardness of your heart, yea, that ye will still resist the spirit of the truth, that thy soul may be destroyed.

But behold, it is better that thy soul should be lost than that thou shouldst be the means of bringing many souls down to destruction, by thy lying and by thy flattering words; therefore if thou shalt deny again, behold God shall smite thee, that thou shalt become dumb, that thou shalt never open thy mouth any more, that thou shalt not deceive this people any more.

Now Korihor said unto him: I do not deny the existence of a God, but I do not believe that there is a God; and I say also, that ye do not know that there is a God; and except ye show me a sign, I will not believe.

- 49 अब अलमा ने उससे कहा: यह मैं तुम्हें चिन्ह के रूप में देता हूँ कि मेरी बातों के अनुसार तुम गूंगे हो जाओ; और यह मैं परमेश्वर के नाम में कहता हूँ, तुम गूंगे हो जाओ, ताकि तुम कभी भी बोल न सको ।
- 50 अब जब अलमा ने इन बातों को कह लिया, कोरिहर गूंगा हो गया, कि वह अलमा की बातों के अनुसार बोल न सका ।
- 51 और अब जब मुख्य न्यायी ने इसे देखा, उसने अपने हाथ आगे किये और कोरिहर से लिखकर पूछा, यह कहते हुए: क्या तुम्हें परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास हुआ ? उसमें विश्वास हुआ जिसके होने के विषय में तुमने अलमा से चिन्ह मांगा था ? क्या तुम चाहते हो कि तुम्हें चिन्ह दिखाने के लिए वह दूसरों को कष्ट दे ? देखो, उसने तुम्हें चिन्ह दिखा दिया है; और क्या तुम अब भी विवाद करोगे ?
- 52 और फिर कोरिहर ने अपने हाथ आगे किये और लिखकर कहा: मैं जानता हूँ कि मैं गूंगा हूँ क्योंकि मैं बोल नहीं सकता; और मुझे पता है कि ऐसा मेरे साथ परमेश्वर की शक्ति के अलावा किसी और चीज के कारण नहीं हुआ है; हां, मैं सदा से जानता था कि परमेश्वर था ।
- 53 परन्तु देखो, शैतान ने मुझे छला था; क्योंकि वह मुझे एक स्वर्गदूत के रूप में दिखाई दिया था, और मुझसे कहा: जाओ और इन लोगों को सही मार्ग दिखाओ क्योंकि ये सब एक अज्ञात परमेश्वर के कारण पथभ्रष्ट हो गए हैं । और उसने मुझसे कहा: कोई परमेश्वर नहीं है, हां, और उसने मुझे वह सिखाया जो मुझे कहना चाहिए । और मैंने उसी की बातों को सिखाया है; और मैंने उन बातों को सिखाया क्योंकि वे शारीरिक मन को आनंद देती थीं; और मैंने उन्हें तब तक सिखाया जब तक कि मैंने अत्याधिक सफलता नहीं प्राप्त कर ली जिसे वास्तव में मैंने भी विश्वास कर लिया कि वे सच्ची हैं; और इसी कारण मैंने सच्चाई का तब तक प्रतिरोध किया जब तक कि मैंने इस महान श्राप को अपने ऊपर न ले लिया ।
- 54 अब जब उसने यह सब कह लिया, उसने अलमा से विनती की कि वह परमेश्वर से प्रार्थना करे ताकि वह श्रापमुक्त हो सके ।
- 55 परन्तु अलमा ने उससे कहा: यदि तुम पर से यह श्राप हट जाए तो तुम फिर से इन लोगों को बहकाओगे; इसलिए, यह तुम पर प्रभु की इच्छानुसार रहेगा ।
- 56 और ऐसा हुआ कि कोरिहर पर से श्राप नहीं हटा; परन्तु उसे बाहर खदेड़ दिया गया, और वह भोजन के लिए भीख मांगते हुए एक घर से दूसरे घर गया ।

Now Alma said unto him: This will I give unto thee for a sign, that thou shalt be struck dumb, according to my words; and I say, that in the name of God, ye shall be struck dumb, that ye shall no more have utterance.

Now when Alma had said these words, Korihor was struck dumb, that he could not have utterance, according to the words of Alma.

And now when the chief judge saw this, he put forth his hand and wrote unto Korihor, saying: Art thou convinced of the power of God? In whom did ye desire that Alma should show forth his sign? Would ye that he should afflict others, to show unto thee a sign? Behold, he has showed unto you a sign; and now will ye dispute more?

And Korihor put forth his hand and wrote, saying: I know that I am dumb, for I cannot speak; and I know that nothing save it were the power of God could bring this upon me; yea, and I always knew that there was a God.

But behold, the devil hath deceived me; for he appeared unto me in the form of an angel, and said unto me: Go and reclaim this people, for they have all gone astray after an unknown God. And he said unto me: There is no God; yea, and he taught me that which I should say. And I have taught his words; and I taught them because they were pleasing unto the carnal mind; and I taught them, even until I had much success, insomuch that I verily believed that they were true; and for this cause I withstood the truth, even until I have brought this great curse upon me.

Now when he had said this, he besought that Alma should pray unto God, that the curse might be taken from him.

But Alma said unto him: If this curse should be taken from thee thou wouldst again lead away the hearts of this people; therefore, it shall be unto thee even as the Lord will.

And it came to pass that the curse was not taken off of Korihor; but he was cast out, and went about from house to house begging for his food.

57 अब जो कुछ भी कोरिहर के साथ हुआ था उसकी जानकारी शीघ्र ही पूरे प्रदेश में फैलाई गई; हां, पूरे प्रदेश के लोगों में मुख्य न्यायी द्वारा इसका ऐलान कराया गया, उन लोगों को बताते हुए जिन लोगों ने कोरिहर की बातों में विश्वास किया था ताकि वे जल्दी ही पश्चाताप कर लें नहीं तो उन पर भी इसी प्रकार का न्याय आ सकता है ।

58 और ऐसा हुआ कि उन सभी ने कोरिहर की दुष्टता पर विश्वास किया; इसलिए वे सब फिर से प्रभु में परिवर्तित हो गए; और कोरिहर के दंड के पश्चात दुष्टता का अंत हुआ । और भरण-पोषण के लिए भीख मांगते हुए कोरिहर एक घर से दूसरे घर जाता रहा ।

59 और ऐसा हुआ कि जब वह लोगों के बीच गया, हां, उन लोगों के बीच जिन्होंने स्वयं को नफाइयों से अलग कर लिया था और जिनका नेतृत्व एक जोराम नामक व्यक्ति कर रहा और जिन्हें जोरामाई कहा जाता था—और जब वह उनके बीच गया, देखो, तब वह लोगों के पैरों तले तब तक कुचला गया जब तक कि वह मर न गया ।

60 और इस प्रकार हम उस व्यक्ति का अंत देखते हैं जो प्रभु के मार्ग को दूषित करता है; और इस प्रकार हम देखते हैं कि अंतिम-दिनों में शैतान अपने बच्चों की सहायता नहीं करेगा, बल्कि तेजी से उन्हें नरक की तरफ खींच लेगा ।

Now the knowledge of what had happened unto Korihor was immediately published throughout all the land; yea, the proclamation was sent forth by the chief judge to all the people in the land, declaring unto those who had believed in the words of Korihor that they must speedily repent, lest the same judgments would come unto them.

And it came to pass that they were all convinced of the wickedness of Korihor; therefore they were all converted again unto the Lord; and this put an end to the iniquity after the manner of Korihor. And Korihor did go about from house to house, begging food for his support.

And it came to pass that as he went forth among the people, yea, among a people who had separated themselves from the Nephites and called themselves Zoramites, being led by a man whose name was Zoram—and as he went forth amongst them, behold, he was run upon and trodden down, even until he was dead.

And thus we see the end of him who perverteth the ways of the Lord; and thus we see that the devil will not support his children at the last day, but doth speedily drag them down to hell.

## अलमा 31

- 1 अब ऐसा हुआ कि कोरिहोर की मृत्यु के पश्चात, अलमा ने जब सुना कि जोरामाई प्रभु के मार्ग को दूषित कर रहे थे, और यह कि उनका मार्गदर्शक जोराम मूक मूर्तियों की पूजा करने के लिए लोगों का मन बहका रहा था तो लोगों की दुष्टता के कारण उसका हृदय फिर से अत्याधिक दुखी होने लगा ।
- 2 क्योंकि अपने ही लोगों में दुष्टता की बात जानना अलमा के दुख का महान कारण था; इसलिए नफाइयों से जोरामाइयों के अलग होने के कारण उसका हृदय अत्याधिक दुखी हो गया था ।
- 3 अब जोरामाइयों ने अपने आपको उस प्रदेश में एकत्रित किया जिसे वे अंतीओनम कहते थे जो जराहेमला प्रदेश के पूर्व में था, जो कि जेरशान प्रदेश के दक्षिण से लगे समुद्रतट की सीमा के लगभग पास था, जो दक्षिण के निर्जन प्रदेश की सीमा पर भी था, वह निर्जन प्रदेश जिस में लमनाई बहुतायत में थे ।
- 4 अब नफाइयों को बहुत डर था कि जोरामाई लमनाइयों से मेल-मिलाप करना आरंभ करेंगे, और इससे नफाइयों को बहुत अधिक नुकसान हुआ ।
- 5 और अब, वचन के प्रचार का महान तात्पर्य लोगों से उचित कार्य करवाना था—हां, तलवार या किसी भी और चीज से अधिक इसका प्रभाव लोगों के मन पर हो सकता था, जैसा कि उनके साथ हुआ था—इसलिए अलमा ने सोचा कि यह आवश्यक था कि परमेश्वर के वचन की नैतिकता को अमल में लाएं ।
- 6 इसलिए वह अम्मोन, और हारून, और ओमनर को साथ ले गया; और हिमनी को जराहेमला के गिरजे में छोड़ दिया; परन्तु वह उन तीनों के साथ-साथ, मेलेक में रह रहे अमूलेक और जीजरोम को भी, और अपने बेटों में से दो को साथ ले गया ।
- 7 अब वह अपने बड़े बेटे को साथ नहीं ले गया जिसका नाम हिलामन था; परन्तु वह जिन दो बेटों को साथ ले गया था उनका नाम शिब्लोन और कोरियन्टम था; और ये सब वे नाम हैं जिन्हें उसने जोरामाइयों के बीच प्रचार करने के लिए अपने साथ ले गया था ।
- 8 अब जोरामाई नफाई थे पर विरोधी मत के थे; इसलिए उनके पास पहले से ही परमेश्वर का वचन था ।

## Alma 31

Now it came to pass that after the end of Korihor, Alma having received tidings that the Zoramites were perverting the ways of the Lord, and that Zoram, who was their leader, was leading the hearts of the people to bow down to dumb idols, his heart again began to sicken because of the iniquity of the people.

For it was the cause of great sorrow to Alma to know of iniquity among his people; therefore his heart was exceedingly sorrowful because of the separation of the Zoramites from the Nephites.

Now the Zoramites had gathered themselves together in a land which they called Antionum, which was east of the land of Zarahemla, which lay nearly bordering upon the seashore, which was south of the land of Jershon, which also bordered upon the wilderness south, which wilderness was full of the Lamanites.

Now the Nephites greatly feared that the Zoramites would enter into a correspondence with the Lamanites, and that it would be the means of great loss on the part of the Nephites.

And now, as the preaching of the word had a great tendency to lead the people to do that which was just—yea, it had had more powerful effect upon the minds of the people than the sword, or anything else, which had happened unto them—therefore Alma thought it was expedient that they should try the virtue of the word of God.

Therefore he took Ammon, and Aaron, and Omner; and Himni he did leave in the church in Zarahemla; but the former three he took with him, and also Amulek and Zeezrom, who were at Melek; and he also took two of his sons.

Now the eldest of his sons he took not with him, and his name was Helaman; but the names of those whom he took with him were Shiblon and Corianton; and these are the names of those who went with him among the Zoramites, to preach unto them the word.

Now the Zoramites were dissenters from the Nephites; therefore they had had the word of God preached unto them.

- 9 परन्तु वे महान अशुद्धता में पड़े थे, क्योंकि मूसा की व्यवस्था के अनुसार वे परमेश्वर की आज्ञाओं और उसके अधिनियमों का पालन नहीं करते थे ।
- 10 न ही वे गिरजे में कोई काम-काज करते, और न ही नियमित रूप से परमेश्वर से प्रार्थना और याचना करते थे ताकि वे प्रलोभन में न पड़ सकें ।
- 11 हां, भली-भांति उन्होंने कई अवस्थाओं में प्रभु के मार्गों को दूषित किया था; इसलिए, इस कारण से, अलमा और उसके भाई उन्हें वचन सुनाने के लिए प्रदेश में गए ।
- 12 अब, जब वे प्रदेश में पहुंच गए, देखो, विस्मय में उन्होंने पाया कि जोरामाइयों ने आराधनालय बनाए थे, और यह कि सप्ताह में वे एक दिन एकत्रित होते थे जिसे वे प्रभु का दिन कहते; और वे उस रीति से उपासना करते जिसे अलमा और उसके भाइयों ने कभी भी नहीं देखा था;
- 13 क्योंकि उन्होंने अपने आराधनालय के बीच में खड़े होने के लिए एक स्थान बना रखा था, जो कि सिर से ऊंचा था; और वहां ऊपर केवल एक ही व्यक्ति जा सकता था ।
- 14 इसलिए, जो भी उपासना करना चाहता वह जाकर उसके ऊपर खड़ा हो जाता, और स्वर्ग की तरफ अपने हाथों को उठाता, और ऊंची आवाज में कहता:
- 15 पवित्र, पवित्र परमेश्वर; हम विश्वास करते हैं कि तुम परमेश्वर हो, और हम विश्वास करते हैं कि तुम पवित्र हो, और यह कि तुम एक आत्मा थे, और तुम एक आत्मा हो, और यह कि तुम सदा एक आत्मा रहोगे ।
- 16 पवित्र परमेश्वर, हम विश्वास करते हैं कि तुमने हमें हमारे भाइयों से अलग कर दिया है; और हम अपने भाइयों की परंपरा में विश्वास नहीं करते हैं, जो कि उन्हें उनके पूर्वजों की बचकानी हरकतों के द्वारा मिली है; परन्तु हम विश्वास करते हैं कि तुमने हमें अपने पवित्र बच्चों के रूप में चुना है; और तुमने हमें यह भी ज्ञात कराया है कि कोई मसीह नहीं होगा ।

But they had fallen into great errors, for they would not observe to keep the commandments of God, and his statutes, according to the law of Moses.

Neither would they observe the performances of the church, to continue in prayer and supplication to God daily, that they might not enter into temptation.

Yea, in fine, they did pervert the ways of the Lord in very many instances; therefore, for this cause, Alma and his brethren went into the land to preach the word unto them.

Now, when they had come into the land, behold, to their astonishment they found that the Zoramites had built synagogues, and that they did gather themselves together on one day of the week, which day they did call the day of the Lord; and they did worship after a manner which Alma and his brethren had never beheld;

For they had a place built up in the center of their synagogue, a place for standing, which was high above the head; and the top thereof would only admit one person.

Therefore, whosoever desired to worship must go forth and stand upon the top thereof, and stretch forth his hands towards heaven, and cry with a loud voice, saying:

Holy, holy God; we believe that thou art God, and we believe that thou art holy, and that thou wast a spirit, and that thou art a spirit, and that thou wilt be a spirit forever.

Holy God, we believe that thou hast separated us from our brethren; and we do not believe in the tradition of our brethren, which was handed down to them by the childishness of their fathers; but we believe that thou hast elected us to be thy holy children; and also thou hast made it known unto us that there shall be no Christ.

- 17 परन्तु तुम कल भी वही थे, आज भी वही हो, और सदा वही रहोगे; और तुमने हमें चुना है ताकि हम बचाए जाएं, जब कि हमारे आसपास के लोग तुम्हारे क्रोध द्वारा नरक में फेंके जाने के लिए चुने गए हैं; हे परमेश्वर, तुम्हारी उस पवित्रता के लिए हम धन्यवाद देते हैं; और हम धन्यवाद देते हैं कि तुमने हमें चुना है, ताकि हम अपने भाइयों की मूर्ख परंपराओं द्वारा पथभ्रष्ट न हो सकें, जो उन्हें मसीह की धारणा में बांधता है और जिसके कारण हमारे परमेश्वर, तुमसे उनका मन बहुत दूर हो जाता है।
- 18 और हम फिर से धन्यवाद देते हैं, हे परमेश्वर, कि हम चुने हुए और पवित्र लोग हैं। आमीन।
- 19 अब ऐसा हुआ कि जब अलमा और उसके भाइयों और उसके बेटों ने इन प्रार्थनाओं को सुना तो वे अत्याधिक अचम्भीत हुए।
- 20 क्योंकि देखो, हर व्यक्ति ने जाकर एक ही प्रार्थना की।
- 21 अब उस स्थान को राम्यूमटम कहा जाता था, जिसका अर्थ पवित्र स्थान था।
- 22 अब, इस स्थान पर खड़े होकर हर व्यक्ति ने परमेश्वर से वही प्रार्थना की, अपने परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए कि वे उसके चुने हुए लोग थे, और यह कि उसने उन्हें उनके भाइयों की परंपराओं का पालन नहीं करने दिया, और यह कि आनेवाली बातों में उनके हृदयों को नहीं फिराया गया जिसके बारे में वे कुछ भी नहीं जानते थे।
- 23 अब, जब सारे लोगों ने इसी रीति से धन्यवाद की प्रार्थना कह ली, वे अपने घर वापस चले गए, अपने परमेश्वर के विषय में फिर से तब तक के लिए बिल्कुल भी बात न करते हुए जब तक कि वे उस पवित्र स्थान पर इसी रीति से धन्यवाद देने के लिए फिर से एकत्रित नहीं हुए।
- 24 अब जब अलमा ने इसे देखा तो उसका हृदय दुखी हुआ; क्योंकि उसने देखा कि वे दुष्ट और हठी लोग थे; हां, उसने देखा कि उनका मन सोने, चांदी, और हर प्रकार की अच्छी वस्तुओं पर लगा हुआ था।
- 25 हां, और उसने यह भी देखा कि उनके हृदय उनके घमंड से भरे हुए थे।
- 26 और उसने स्वर्ग की ओर अपनी आवाज कर पुकारा, और यह कहते हुए याचना की: हे प्रभु, मानव संतानों में इतनी भारी दुष्टता को देखने और सहने के लिए यहां नीचे अपने सेवकों को कब तक शरीर में रखोगे?

But thou art the same yesterday, today, and forever; and thou hast elected us that we shall be saved, whilst all around us are elected to be cast by thy wrath down to hell; for the which holiness, O God, we thank thee; and we also thank thee that thou hast elected us, that we may not be led away after the foolish traditions of our brethren, which doth bind them down to a belief of Christ, which doth lead their hearts to wander far from thee, our God.

And again we thank thee, O God, that we are a chosen and a holy people. Amen.

Now it came to pass that after Alma and his brethren and his sons had heard these prayers, they were astonished beyond all measure.

For behold, every man did go forth and offer up these same prayers.

Now the place was called by them Rameumptom, which, being interpreted, is the holy stand.

Now, from this stand they did offer up, every man, the selfsame prayer unto God, thanking their God that they were chosen of him, and that he did not lead them away after the tradition of their brethren, and that their hearts were not stolen away to believe in things to come, which they knew nothing about.

Now, after the people had all offered up thanks after this manner, they returned to their homes, never speaking of their God again until they had assembled themselves together again to the holy stand, to offer up thanks after their manner.

Now when Alma saw this his heart was grieved; for he saw that they were a wicked and a perverse people; yea, he saw that their hearts were set upon gold, and upon silver, and upon all manner of fine goods.

Yea, and he also saw that their hearts were lifted up unto great boasting, in their pride.

And he lifted up his voice to heaven, and cried, saying: O, how long, O Lord, wilt thou suffer that thy servants shall dwell here below in the flesh, to behold such gross wickedness among the children of men?



- 27 देखो, हे परमेश्वर, वो तुमसे याचना करते हैं, और फिर भी उनके हृदय उनके घमंड से भरे हुए हैं। देखो, हे परमेश्वर, वे अपने मुंह से तुमसे याचना करते हैं, जब कि वे संसार की व्यर्थ की चीजों से बुरी तरह फूले हुए हैं।
- 28 देखो, हे मेरे परमेश्वर, उनके महंगे वस्त्र, और उनके छल्ले, और उनके कंगन, और उनके सोने के गहने, और उनकी वे सारी मूल्यवान वस्तुएं जिसे उन्होंने गहनों में जड़ा हुआ है; और देखो, उनका मन उन्हीं पर लगा हुआ है, और फिर भी वे तुमसे याचना करते हैं और कहते हैं—हे परमेश्वर, हम धन्यवाद देते हैं कि हम तुम्हारे द्वारा चुने हुए लोग हैं, जब कि दूसरे लोगों का विनाश होगा।
- 29 हां, और वो कहते हैं कि तुमने उन्हें ज्ञात कराया है कि कोई मसीह नहीं होगा।
- 30 हे प्रभु परमेश्वर, इन लोगों के बीच की इस दुष्टता और अधर्म को तुम कब तक सहोगे? हे प्रभु, क्या तुम मुझे बल दोगे ताकि मैं अपनी दुर्बलता को सह सकूँ। क्योंकि मैं दुर्बल हूँ, और इन लोगों के बीच की ये दुष्टता मेरी आत्मा को पीड़ा देती है।
- 31 हे प्रभु, मेरा हृदय अत्याधिक दुखी है; क्या तुम मसीह में मेरी आत्मा को दिलासा दोगे। हे प्रभु, क्या तुम ऐसा होने दोगे कि मुझे बल प्राप्त हो सके, ताकि इन लोगों की दुष्टता के कारण मुझ पर आई इन परेशानियों को मैं धैर्य के साथ सह सकूँ।
- 32 हे प्रभु, क्या तुम मेरी आत्मा को दिलासा दोगे, और मुझे और मेरे साथियों को सफल होने दोगे जो मेरे साथ हैं—हां, अम्मोन, और हारून, और ओमनर, और अमूलेक और जीजरोम, और मेरे दोनों बेटों को भी—हां, हे प्रभु, क्या इन लोगों को भी तुम दिलासा दोगे। हां, क्या तुम मसीह में इनकी आत्माओं को दिलासा दोगे।
- 33 क्या तुम ऐसा होने दोगे कि इन्हें भी बल प्राप्त हो सके, ताकि इन लोगों के अन्याय के कारण इन पर आई हुई परेशानियों को ये सह सकें।
- 34 हे प्रभु, क्या तुम हमारे साथ ऐसा होने दोगे कि उन्हें फिर से मसीह में लाने में हम सफलता प्राप्त कर सकें।
- 35 देखो, हे प्रभु, उनकी आत्माएं अमूल्य हैं, और उनमें से कई लोग हमारे भाई हैं; इसलिए, हे प्रभु, हमें सामर्थ्य और ज्ञान दो ताकि हम फिर से अपने इन भाइयों को तुम्हारे पास ला सकें।

Behold, O God, they cry unto thee, and yet their hearts are swallowed up in their pride. Behold, O God, they cry unto thee with their mouths, while they are puffed up, even to greatness, with the vain things of the world.

Behold, O my God, their costly apparel, and their ringlets, and their bracelets, and their ornaments of gold, and all their precious things which they are ornamented with; and behold, their hearts are set upon them, and yet they cry unto thee and say—We thank thee, O God, for we are a chosen people unto thee, while others shall perish.

Yea, and they say that thou hast made it known unto them that there shall be no Christ.

O Lord God, how long wilt thou suffer that such wickedness and infidelity shall be among this people? O Lord, wilt thou give me strength, that I may bear with mine infirmities. For I am infirm, and such wickedness among this people doth pain my soul.

O Lord, my heart is exceedingly sorrowful; wilt thou comfort my soul in Christ. O Lord, wilt thou grant unto me that I may have strength, that I may suffer with patience these afflictions which shall come upon me, because of the iniquity of this people.

O Lord, wilt thou comfort my soul, and give unto me success, and also my fellow laborers who are with me—yea, Ammon, and Aaron, and Omner, and also Amulek and Zeezrom, and also my two sons—yea, even all these wilt thou comfort, O Lord. Yea, wilt thou comfort their souls in Christ.

Wilt thou grant unto them that they may have strength, that they may bear their afflictions which shall come upon them because of the iniquities of this people.

O Lord, wilt thou grant unto us that we may have success in bringing them again unto thee in Christ.

Behold, O Lord, their souls are precious, and many of them are our brethren; therefore, give unto us, O Lord, power and wisdom that we may bring these, our brethren, again unto thee.

- 36 अब ऐसा हुआ कि जब अलमा ने इन बातों को कह लिया, उसने अपने हाथों को उन सब पर रखा जो उसके साथ थे। और देखो, जैसे ही उसने अपने हाथों को उन पर रखा, वे पवित्र आत्मा से भर गए।
- 37 और इसके पश्चात वे सब एक दूसरे से अलग हो गए, अपने बारे में चिंता न करते हुए कि वे क्या खाएंगे, क्या पीएंगे, या क्या पहनेंगे।
- 38 और प्रभु ने उन्हें उपलब्ध कराया ताकि न तो वे भूखे रहें, न ही प्यासे; हां, उसने उन्हें बल भी प्रदान किया ताकि मसीह के आनंद में भरे रहने के अलावा उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट न सहना पड़े। अब ऐसा अलमा की प्रार्थना के अनुसार हुआ था; और ऐसा इसलिए हुआ था क्योंकि उसने विश्वास से प्रार्थना की था।

Now it came to pass that when Alma had said these words, that he clapped his hands upon all them who were with him. And behold, as he clapped his hands upon them, they were filled with the Holy Spirit.

And after that they did separate themselves one from another, taking no thought for themselves what they should eat, or what they should drink, or what they should put on.

And the Lord provided for them that they should hunger not, neither should they thirst; yea, and he also gave them strength, that they should suffer no manner of afflictions, save it were swallowed up in the joy of Christ. Now this was according to the prayer of Alma; and this because he prayed in faith.

## अलमा 32

- 1 और ऐसा हुआ कि वे आगे गए, और लोगों के आराधनालयों, और उनके घरों में जाकर उनमें परमेश्वर के वचन का प्रचार आरंभ किया; हां, और यहां तक कि उन्होंने वचन का प्रचार उनके सड़कों पर भी किया ।
- 2 और ऐसा हुआ कि उनमें बहुत परिश्रम करने के पश्चात्, उन्होंने गरीब श्रेणी के लोगों में सफलता प्राप्त करना आरंभ किया; क्योंकि देखो, उनके फटे-पुराने कपड़ों के कारण उन्हें आराधनालयों से बाहर निकाला गया था ।
- 3 इसलिए गन्दे माने जाने के कारण, परमेश्वर की उपसाना के प्रति उनके आराधनालयों में प्रवेश करने की अनुमति उन्हें नहीं थी; इसलिए वे गरीब थे; हां, उनके भाई उन्हें साधारण समझते थे; इसलिए वे सांसारिक वस्तुओं में गरीब थे; और वे अपने हृदय से भी मलिन थे ।
- 4 अब, अलमा ओनिदा पहाड़ी पर लोगों को सीखा रहा था और उनसे बातें कर रहा था, वहां पर एक भारी भीड़ एकत्रित हो गई, जो वही लोग थे जिनके विषय में हम बता रहे थे, जो कि सांसारिक वस्तुओं में अपनी गरीबी के कारण अपने हृदय से मलिन थे ।
- 5 और वे अलमा के पास आए; और जो उनमें प्रधान था उसने उससे कहा: देखो, ये मेरे भाई क्या करेंगे क्योंकि इन्हें इनकी गरीबी के कारण सारे लोगों में से तिरस्कृत कर दिया गया है, हां, और अधिकतर हमारे याजकों के द्वारा; क्योंकि उन्होंने हमारे उन आराधनालयों से हमें निकाल दिया है जिसे हमने अपने हाथों से मेहनत करके बनाया है; और उन्होंने हमें हमारी अत्याधिक निर्धनता के कारण निकाल दिया है; और हमारे पास हमारे परमेश्वर की उपासना के लिए कोई भी जगह नहीं है; और देखो, हम क्या करेंगे ?
- 6 और अब जब अलमा ने इसे सुना, तो वह अपना चेहरा उसकी तरफ करते हुए घूम गया, और उसने बड़ी प्रसन्नता से देखा; क्योंकि उसने देखा कि उनके कष्टों ने उन्हें वास्तव में विनम्र बना दिया था, और यह कि वे वचन सुनने की तैयारी में थे ।
- 7 इसलिए उसने अन्य लोगों से कुछ भी नहीं कहा; परन्तु उसने अपने हाथों को फैलाया, और उन लोगों को पुकारा जिन्हें उसने देखा था जो कि सच्चे पश्चातापी थे, और उनसे कहा:
- 8 मैंने देखा है कि तुम हृदय से नम्र हो; और यदि ऐसा है, तो तुम आशीषित हो ।

## Alma 32

And it came to pass that they did go forth, and began to preach the word of God unto the people, entering into their synagogues, and into their houses; yea, and even they did preach the word in their streets.

And it came to pass that after much labor among them, they began to have success among the poor class of people; for behold, they were cast out of the synagogues because of the coarseness of their apparel—

Therefore they were not permitted to enter into their synagogues to worship God, being esteemed as filthiness; therefore they were poor; yea, they were esteemed by their brethren as dross; therefore they were poor as to things of the world; and also they were poor in heart.

Now, as Alma was teaching and speaking unto the people upon the hill Onidah, there came a great multitude unto him, who were those of whom we have been speaking, of whom were poor in heart, because of their poverty as to the things of the world.

And they came unto Alma; and the one who was the foremost among them said unto him: Behold, what shall these my brethren do, for they are despised of all men because of their poverty, yea, and more especially by our priests; for they have cast us out of our synagogues which we have labored abundantly to build with our own hands; and they have cast us out because of our exceeding poverty; and we have no place to worship our God; and behold, what shall we do?

And now when Alma heard this, he turned him about, his face immediately towards him, and he beheld with great joy; for he beheld that their afflictions had truly humbled them, and that they were in a preparation to hear the word.

Therefore he did say no more to the other multitude; but he stretched forth his hand, and cried unto those whom he beheld, who were truly penitent, and said unto them:

I behold that ye are lowly in heart; and if so, blessed are ye.

- 9 देखो तुम्हारे भाई ने कहा है कि हम क्या करेंगे ?—क्योंकि हमें हमारे आराधनालयों से निकाल दिया गया है ताकि हम अपने परमेश्वर की उपासना न कर सकें ।
- 10 देखो मैं तुमसे कहता हूँ, क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि केवल अपने आराधनालयों के अलावा तुम अपने परमेश्वर की उपासना कहीं और नहीं कर सकते हो ?
- 11 और इससे भी अधिक, मैं पूछना चाहूँगा, क्या तुम्हें सप्ताह में केवल एक बार ही परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए ?
- 12 मैं तुमसे कहता हूँ, अच्छा ही हुआ कि तुम्हें तुम्हारे आराधनालयों से निकाल दिया गया, कि तुम विनम्र हो सको, और ताकि तुम्हें ज्ञान हो सके; क्योंकि यह आवश्यक है कि तुम्हें ज्ञान हो; क्योंकि ऐसा इसलिए है कि तुम्हें निकाल दिया गया है, तुम्हारी अत्याधिक निर्धनता के कारण तुम्हें तुम्हारे भाइयों ने तिरस्कृत किया है, कि तुम्हें हृदय से विनम्र किया गया क्योंकि तुम वास्तव में विनम्र हो गए हो ।
- 13 और अब, क्योंकि तुम विनम्र होने के लिए विवश किये गए हो इसलिए तुम आशीषित हो; क्योंकि कभी-कभी यदि किसी मनुष्य को विनम्र होने के लिए विवश किया जाता है तो वह पश्चाताप करता है; और निश्चित तौर पर जो कोई भी पश्चाताप करता है उस पर दया की जाएगी; और जिस पर दया की जाती है और जो अंत तक सहनशील रहता है उसे बचाया जाएगा ।
- 14 और अब, जैसा मैंने तुमसे कहा है, कि तुम विनम्र होने के लिए विवश किये गए हो इसलिए तुम आशीषित हो, क्या तुम नहीं मानते हो कि जो वचन के कारण स्वयं को वास्तव में विनम्र करते हैं वो अधिक धन्य हैं ?
- 15 हां, वह जो स्वयं को वास्तव में विनम्र करता है, और जो अपने पापों का पश्चाताप करता है, और जो अंत तक सहनशील रहता है, वही आशीषित होगा—हां, उन लोगों से भी अधिक आशीषित होगा जो अपनी अत्याधिक निर्धनता के कारण विनम्र होने के लिए विवश किये गए हैं ।
- 16 इसलिए, आशीषित हैं वे जो विनम्र होने के लिए विवश किये जाने की बजाय खुद को स्वयं ही विनम्र करते हैं; या अन्य शब्दों में, आशीषित हैं वे जो परमेश्वर के वचन में विश्वास करते हैं, और बिना हृदय के हठ के बपतिस्मा लेते हैं, हां, जो बिना वचन को जाने या विवश कर ज्ञान कराए जाने के बिना, पहले विश्वास करते हैं ।
- 17 हां, कई लोग ऐसे हैं जो कहते हैं: यदि तुम हमें स्वर्ग का एक चिन्ह दिखाओगे तो हम निश्चित तौर पर जान जाएंगे; तब हम विश्वास करेंगे ।

Behold thy brother hath said, What shall we do?—for we are cast out of our synagogues, that we cannot worship our God.

Behold I say unto you, do ye suppose that ye cannot worship God save it be in your synagogues only?

And moreover, I would ask, do ye suppose that ye must not worship God only once in a week?

I say unto you, it is well that ye are cast out of your synagogues, that ye may be humble, and that ye may learn wisdom; for it is necessary that ye should learn wisdom; for it is because that ye are cast out, that ye are despised of your brethren because of your exceeding poverty, that ye are brought to a lowliness of heart; for ye are necessarily brought to be humble.

And now, because ye are compelled to be humble blessed are ye; for a man sometimes, if he is compelled to be humble, seeketh repentance; and now surely, whosoever repenteth shall find mercy; and he that findeth mercy and endureth to the end the same shall be saved.

And now, as I said unto you, that because ye were compelled to be humble ye were blessed, do ye not suppose that they are more blessed who truly humble themselves because of the word?

Yea, he that truly humbleth himself, and repenteth of his sins, and endureth to the end, the same shall be blessed—yea, much more blessed than they who are compelled to be humble because of their exceeding poverty.

Therefore, blessed are they who humble themselves without being compelled to be humble; or rather, in other words, blessed is he that believeth in the word of God, and is baptized without stubbornness of heart, yea, without being brought to know the word, or even compelled to know, before they will believe.

Yea, there are many who do say: If thou wilt show unto us a sign from heaven, then we shall know of a surety; then we shall believe.

- 18 अब मैं पूछता हूँ, क्या यह विश्वास है ? देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं; यदि एक मनुष्य किसी चीज को जानता है तो उसके पास विश्वास करने का कोई कारण नहीं है क्योंकि वह उसके विषय में जानता है ।
- 19 और अब, जो परमेश्वर की इच्छा को जानता तो है पर उसका पालन नहीं करता है, वह उस व्यक्ति से कितना अधिक श्रापित होगा जो केवल विश्वास करता है, या जिसके पास विश्वास करने का कारण होते हुए भी पाप में पड़ जाता है ?
- 20 अब इसका न्याय तुम्हें ही करना होगा । देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, कि जैसा एक हाथ के साथ है वैसा ही दूसरे के साथ भी है; और हर व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार फल मिलेगा ।
- 21 और अब जैसा मैंने विश्वास के संबंध में कहा है—विश्वास किसी भी चीज का पूरा ज्ञान होना नहीं है; इसलिए यदि तुम्हें विश्वास है तो तुम उन अनदेखी चीजों की आशा रखते हो जो कि सच है ।
- 22 और अब, देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, और मैं चाहूँगा कि तुम याद रखो कि परमेश्वर उन सब पर दया करता है जो उसके नाम में विश्वास करते हैं; इसलिए वह चाहता है कि पहले ही चरण में तुम्हें विश्वास करना चाहिए, हां, यहां तक कि उसके वचन पर भी ।
- 23 और अब, वह मनुष्यों को स्वर्गदूतों के द्वारा वचन देता है, हां, केवक पुरुषों को नहीं बल्कि स्त्रियों को भी । अब इतना ही नहीं, कई बार छोटे बच्चों से वे बातें कही गई हैं जो कि बुद्धिमान और ज्ञानियों को पराजित कर सकती हैं ।
- 24 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, जैसा कि तुमने मुझसे जानना चाहा है कि तुम कष्ट में हो और निकाले जाने के कारण तुम्हें क्या करना होगा—अब मैं नहीं चाहता हूँ कि तुम मानो कि जो सत्य है उसके अनुसार मैं तुम्हारा निर्णय करना चाहता हूँ—
- 25 मेरे कहने का अर्थ यह नहीं है कि तुम सभी को विनम्र होने के लिए विवश किया गया है; क्योंकि मुझे विश्वास है कि तुममें से कुछ लोग हैं जिन्होंने स्वयं को विनम्र किया है, चाहे उनकी कोई भी परिस्थितियां क्यों न रही हों ।
- 26 अब, जैसा कि मैंने विश्वास से संबंधित कहा है—वहां पूरा ज्ञान नहीं था—ऐसा ही मेरी बातों के साथ भी है । पहले ही चरण में, पूर्णता होने तक तुम इनकी निश्चितता को नहीं जान सकते हो, किसी भी विश्वास के आगे पूर्ण ज्ञान होता है ।

Now I ask, is this faith? Behold, I say unto you, Nay; for if a man knoweth a thing he hath no cause to believe, for he knoweth it.

And now, how much more cursed is he that knoweth the will of God and doeth it not, than he that only believeth, or only hath cause to believe, and falleth into transgression?

Now of this thing ye must judge. Behold, I say unto you, that it is on the one hand even as it is on the other; and it shall be unto every man according to his work.

And now as I said concerning faith—faith is not to have a perfect knowledge of things; therefore if ye have faith ye hope for things which are not seen, which are true.

And now, behold, I say unto you, and I would that ye should remember, that God is merciful unto all who believe on his name; therefore he desireth, in the first place, that ye should believe, yea, even on his word.

And now, he imparteth his word by angels unto men, yea, not only men but women also. Now this is not all; little children do have words given unto them many times, which confound the wise and the learned.

And now, my beloved brethren, as ye have desired to know of me what ye shall do because ye are afflicted and cast out—now I do not desire that ye should suppose that I mean to judge you only according to that which is true—

For I do not mean that ye all of you have been compelled to humble yourselves; for I verily believe that there are some among you who would humble themselves, let them be in whatsoever circumstances they might.

Now, as I said concerning faith—that it was not a perfect knowledge—even so it is with my words. Ye cannot know of their surety at first, unto perfection, any more than faith is a perfect knowledge.

- 27 परन्तु देखो, यदि तुम अपने मन की शक्ति को जगाओगे और उभारोगे, यहां तक कि मेरी बातों की जांच करोगे और कण मात्र भी विश्वास करोगे, हां, यदि तुम इस पर विश्वास करने की केवल इच्छा करोगे, तब इस इच्छा को अपने अंदर तब तक रहने देना जब तक कि तुम इस प्रकार विश्वास करने लगो कि तुम मेरी बातों के एक अंश को स्थान दे सको ।
- 28 अब, हम वचन की तुलना एक बीज से करेंगे । अब, यदि तुम स्थान दो तो तुम्हारे हृदय में एक बीज बोया जा सकता है, देखो, यदि वह सच्चा और अच्छा बीज है, यदि तुम उसे अपने अविश्वास के कारण फेंकते नहीं हो तो तुम प्रभु की आत्मा का सामना कर सकोगे, देखो, वह तुम्हारी छाती में बढ़ने लगेगा; और जब तुम इस बढ़ती हुई गति को महसूस करोगे तो तुम स्वयं ही कहने लगोगे—यह एक अच्छा बीज है, या वचन अच्छा है क्योंकि यह मेरी आत्मा को विकसित करने लगा है; हां, यह मेरी समझ को बढ़ाने लगा है, हां, इसका स्वाद मुझे अच्छा लग रहा है ।
- 29 अब देखो, क्या इससे तुम्हारा विश्वास नहीं बढ़ेगा ? मैं तुमसे कहता हूं, हां, फिर भी यह संपूर्ण ज्ञान तक नहीं बढ़ा है ।
- 30 परन्तु देखो, जैसे-जैसे बीज उगता है, और अंकुरित होता है, और बढ़ने लगता है, तो तुम्हें कहना होगा कि बीज अच्छा है; क्योंकि देखो यह उगने लगा है, और अंकुरित होने लगा है, और बढ़ने लगा है । और अब, देखो, क्या इससे तुम्हारा विश्वास नहीं बढ़ेगा ? हां, यह तुम्हारे विश्वास को मजबूत करेगा: क्योंकि तुम कहोगे कि मैं जानता हूं कि यह एक अच्छा बीज है; क्योंकि देखो यह अंकुरित होने लगा है और बढ़ने लगा है ।
- 31 और अब, देखो, क्या तुम्हें विश्वास है कि यह एक अच्छा बीज है ? मैं तुमसे कहता हूं, हां, क्योंकि हर बीज अपने ही समान फल लाता है ।
- 32 इसलिए, यदि एक बीज बढ़ता है तो अच्छा है, परन्तु यदि वह नहीं बढ़ता है तो देखो वह अच्छा नहीं है, इसलिए इसे फेंक दिया जाता है ।
- 33 और अब, देखो, क्योंकि तुमने जांच की है, और बीज बोया है, और वह उगा है और अंकुरित हुआ है, और बढ़ने लगा है, तो तुम्हें जानने की आवश्यकता है कि बीज अच्छा है ।

But behold, if ye will awake and arouse your faculties, even to an experiment upon my words, and exercise a particle of faith, yea, even if ye can no more than desire to believe, let this desire work in you, even until ye believe in a manner that ye can give place for a portion of my words.

Now, we will compare the word unto a seed. Now, if ye give place, that a seed may be planted in your heart, behold, if it be a true seed, or a good seed, if ye do not cast it out by your unbelief, that ye will resist the Spirit of the Lord, behold, it will begin to swell within your breasts; and when you feel these swelling motions, ye will begin to say within yourselves—It must needs be that this is a good seed, or that the word is good, for it beginneth to enlarge my soul; yea, it beginneth to enlighten my understanding, yea, it beginneth to be delicious to me.

Now behold, would not this increase your faith? I say unto you, Yea; nevertheless it hath not grown up to a perfect knowledge.

But behold, as the seed swelleth, and sprouteth, and beginneth to grow, then you must needs say that the seed is good; for behold it swelleth, and sprouteth, and beginneth to grow. And now, behold, will not this strengthen your faith? Yea, it will strengthen your faith: for ye will say I know that this is a good seed; for behold it sprouteth and beginneth to grow.

And now, behold, are ye sure that this is a good seed? I say unto you, Yea; for every seed bringeth forth unto its own likeness.

Therefore, if a seed groweth it is good, but if it groweth not, behold it is not good, therefore it is cast away.

And now, behold, because ye have tried the experiment, and planted the seed, and it swelleth and sprouteth, and beginneth to grow, ye must needs know that the seed is good.

- 34 और अब, देखो, क्या तुम्हारा ज्ञान पूर्ण है ? हां, उस चीज में तुम्हारा ज्ञान पूर्ण है, और तुम्हारा विश्वास स्थिर है; और ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम जानते हो, तुम जानते हो कि वचन ने तुम्हारी आत्मा को विकसित किया है, और तुम यह भी जानते हो कि यह अंकुरित हुआ है ताकि तुम्हारी समझ बढ़ने लगे, और तुम्हारा मन विकसित होने लगे ।
- 35 ओह फिर, क्या यह सच नहीं है ? मैं तुमसे कहता हूँ, हां, क्योंकि यह प्रकाश है; और जो प्रकाश है वह अच्छा है क्योंकि यह समझने योग्य है, इसलिए तुम्हें जानना चाहिए कि यह अच्छा है; और देखो, अब जब कि तुमने इस प्रकाश को चख लिया है तो क्या तुम्हारा ज्ञान पूर्ण है ?
- 36 देखो मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं; तुम्हें अपने विश्वास को अलग नहीं रखना चाहिए क्योंकि तुमने केवल बीज को लगाने के लिए विश्वास किया है ताकि तुम जांचकर देख सको कि बीज अच्छा है ।
- 37 और देखो, जैसे-जैसे पेड़ बढ़ने लगता है, तुम कहोगे: चलो इसकी देखभाल ध्यानपूर्वक करें, कि यह जड़ पकड़ सके ताकि यह बढ़ सके, और हमारे लिए फल ला सके । और अब देखो, यदि तुम इसकी देखभाल ध्यानपूर्वक करोगे तो यह जड़ पकड़ेगा और उगेगा, और अच्छा फल लाएगा ।
- 38 परन्तु यदि तुम पेड़ की उपेक्षा करोगे, और उसकी देखभाल पर विचार नहीं करोगे, देखो यह जड़ नहीं पकड़ेगा; और जब सूर्य की गर्मी आएगी और उसे झुलसाएगी तो क्योंकि उसने जड़ नहीं पकड़ा है वह सूख जाएगा, और तुम उसे उखाड़कर फेंक दोगे ।
- 39 अब, यह इसलिए नहीं है क्योंकि बीज अच्छा नहीं था, न ही इसलिए है क्योंकि उसका फल मन मुताबिक नहीं होगा; परन्तु ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम्हारा धरातल बंजर है, और तुम पेड़ की देखभाल नहीं करोगे, इसलिए इसके पश्चात तुम फल नहीं पा सकोगे ।
- 40 और इसी प्रकार, यदि तुम वचन की देखभाल नहीं करोगे, फल की आशा करते हुए उसकी तरफ देखते रहोगे, तो तुम जीवन के वृक्ष का फल कभी भी नहीं तोड़ सकोगे ।
- 41 परन्तु यदि तुम वचन की देखभाल करोगे, हां, इसके पश्चात फल की तरफ देखते हुए महान निष्ठा, और धैर्य के साथ अपने विश्वास के द्वारा तुम तभी से पेड़ की देखभाल करने लगोगे जब से वह बढ़ने लगता है, तो वह जड़ पकड़ेगा; और देखो अनंत जीवन के प्रति यह एक हरा-भरा पेड़ बन जाएगा ।

And now, behold, is your knowledge perfect? Yea, your knowledge is perfect in that thing, and your faith is dormant; and this because you know, for ye know that the word hath swelled your souls, and ye also know that it hath sprouted up, that your understanding doth begin to be enlightened, and your mind doth begin to expand.

O then, is not this real? I say unto you, Yea, because it is light; and whatsoever is light, is good, because it is discernible, therefore ye must know that it is good; and now behold, after ye have tasted this light is your knowledge perfect?

Behold I say unto you, Nay; neither must ye lay aside your faith, for ye have only exercised your faith to plant the seed that ye might try the experiment to know if the seed was good.

And behold, as the tree beginneth to grow, ye will say: Let us nourish it with great care, that it may get root, that it may grow up, and bring forth fruit unto us. And now behold, if ye nourish it with much care it will get root, and grow up, and bring forth fruit.

But if ye neglect the tree, and take no thought for its nourishment, behold it will not get any root; and when the heat of the sun cometh and scorcheth it, because it hath no root it withers away, and ye pluck it up and cast it out.

Now, this is not because the seed was not good, neither is it because the fruit thereof would not be desirable; but it is because your ground is barren, and ye will not nourish the tree, therefore ye cannot have the fruit thereof.

And thus, if ye will not nourish the word, looking forward with an eye of faith to the fruit thereof, ye can never pluck of the fruit of the tree of life.

But if ye will nourish the word, yea, nourish the tree as it beginneth to grow, by your faith with great diligence, and with patience, looking forward to the fruit thereof, it shall take root; and behold it shall be a tree springing up unto everlasting life.

42 और वचन की देखभाल में तुम्हारी निष्ठा और तुम्हारे विश्वास और तुम्हारे धैर्य के कारण उसने तुममें जड़ पकड़ ली है, देखो, इसके पश्चात तुम उस फल को तोड़ते रहोगे जो सबसे मूल्यवान है, जो सभी मीठी वस्तुओं से अधिक मीठा है, और सभी श्वेत वस्तुओं से अधिक श्वेत है, हां, और सभी शुद्ध वस्तुओं से अधिक शुद्ध है; और तुम इसे तब तक खाते रहोगे जब तक कि पूर्ण न हो जाओ, ताकि न तो तुम्हें भूख लगे और न ही प्यास ।

43 फिर, मेरे भाइयों, इस बात की प्रतीक्षा करते हुए कि पेड़ तुम्हारे लिए और फल लाएगा, तुम अपने विश्वास, अपनी निष्ठा, और धैर्य और लंबे समय तक के उत्पीड़न का पुरस्कार पाओगे ।

And because of your diligence and your faith and your patience with the word in nourishing it, that it may take root in you, behold, by and by ye shall pluck the fruit thereof, which is most precious, which is sweet above all that is sweet, and which is white above all that is white, yea, and pure above all that is pure; and ye shall feast upon this fruit even until ye are filled, that ye hunger not, neither shall ye thirst.

Then, my brethren, ye shall reap the rewards of your faith, and your diligence, and patience, and long-suffering, waiting for the tree to bring forth fruit unto you.



## अलमा 33

- 1 अब अलमा द्वारा इन बातों को कह लेने के पश्चात्, वे उसके पास यह जानने की इच्छा से गए कि क्या उन्हें केवल एक परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए ताकि वे उसके द्वारा बताए गए फल को प्राप्त कर सकें, या किस प्रकार उन्हें बीज या उस वचन को बोना चाहिए जिसके विषय में उसने बताया था, जिसे उसने कहा था कि उनके हृदयों में बोया जाना चाहिए; या किस प्रकार उन्हें अपना विश्वास बढ़ाना चाहिए।
- 2 और अलमा ने उनसे कहा: देखो, तुम कहते हो कि तुम अपने परमेश्वर की उपासना नहीं कर सकते क्योंकि तुम्हें तुम्हारे आराधनालयों से निकाल दिया गया है। परन्तु देखो, मैं तुमसे कहता हूँ यदि तुम मानते हो कि तुम परमेश्वर की उपासना नहीं कर सकते, तुम भारी भूल कर रहो हो, और तुम्हें धर्मशास्त्रों में खोजना चाहिए; यदि तुम मानते हो कि तुम्हें यह सिखाया गया है और तुम उन्हें समझ नहीं पाए हो।
- 3 क्या तुम्हें प्राचीन भविष्यवक्ता जीनस द्वारा प्रार्थना या उपासना से संबंधित कही गई बातों को पढ़ना याद है ?
- 4 क्योंकि उसने कहा था: हे परमेश्वर, तुम दयालु हो, क्योंकि तुमने मेरी प्रार्थना को तब भी सुना था जब मैं निर्जन प्रदेश में थे; हां, तुमने मुझ पर दया दिखाई थी जब मैंने अपने शत्रुओं के संबंधित तुमसे प्रार्थना की थी, और तुमने उन्हें मेरी ओर किया था।
- 5 हां, हे परमेश्वर, और तुमने मुझ पर तब भी दया दिखाई थी जब मैंने अपने खेत में तुम्हें पुकारा था; जब मैंने अपनी प्रार्थना में तुम्हें पुकारा था, और तुमने मेरी प्रार्थना सुनी थी।
- 6 और फिर से, हे परमेश्वर, जब मैं अपने घर गया तब तुमने मेरी प्रार्थना में मुझे सुना।
- 7 और हे प्रभु, जब मैं अपनी कोठरी में गया, और तुमसे प्रार्थना की, तुमने मुझे सुना।
- 8 हां, तुम अपने बच्चों के प्रति दयालु रहे हो जब भी उन्होंने तुम्हें पुकारा है, तुम्हें सुनने के लिए न कि मनुष्यों को, और तुम उनकी पुकार को सुनते हो।
- 9 हां, हे परमेश्वर, तुम मेरे लिए दयालु रहे हो, और अपने लोगों के बीच में मेरी याचनाओं को सुना है।
- 10 हां, और तुमने मेरी पुकार को तब भी सुना था जब मुझे निकाल दिया गया था और मेरे शत्रुओं ने मेरा तिरस्कार किया था; हां, तुमने मेरी याचनाओं को सुना था, और मेरे शत्रुओं पर क्रोधित हुए थे, और तुमने अपने क्रोध में उनका शीघ्र ही विनाश किया था।

## Alma 33

Now after Alma had spoken these words, they sent forth unto him desiring to know whether they should believe in one God, that they might obtain this fruit of which he had spoken, or how they should plant the seed, or the word of which he had spoken, which he said must be planted in their hearts; or in what manner they should begin to exercise their faith.

And Alma said unto them: Behold, ye have said that ye could not worship your God because ye are cast out of your synagogues. But behold, I say unto you, if ye suppose that ye cannot worship God, ye do greatly err, and ye ought to search the scriptures; if ye suppose that they have taught you this, ye do not understand them.

Do ye remember to have read what Zenos, the prophet of old, has said concerning prayer or worship?

For he said: Thou art merciful, O God, for thou hast heard my prayer, even when I was in the wilderness; yea, thou wast merciful when I prayed concerning those who were mine enemies, and thou didst turn them to me.

Yea, O God, and thou wast merciful unto me when I did cry unto thee in my field; when I did cry unto thee in my prayer, and thou didst hear me.

And again, O God, when I did turn to my house thou didst hear me in my prayer.

And when I did turn unto my closet, O Lord, and prayed unto thee, thou didst hear me.

Yea, thou art merciful unto thy children when they cry unto thee, to be heard of thee and not of men, and thou wilt hear them.

Yea, O God, thou hast been merciful unto me, and heard my cries in the midst of thy congregations.

Yea, and thou hast also heard me when I have been cast out and have been despised by mine enemies; yea, thou didst hear my cries, and wast angry with mine enemies, and thou didst visit them in thine anger with speedy destruction.

- 11 और तुमने मेरे कष्टों और मेरी सच्चाई के कारण मेरी पुकार सुनी थी; और अपने पुत्र के कारण मुझ पर दयालु रहे हो, इसलिए मैं अपनी सारी परेशानियों में तुम्हें पुकारता रहूँगा, क्योंकि मेरा आनंद तुममें है; क्योंकि अपने पुत्र के कारण तुमने अपना न्याय मुझ पर से हटा लिया ।
- 12 और अब अलमा ने उनसे कहा: क्या तुम प्राचीन लोगों द्वारा लिखे गए धर्मशास्त्रों पर विश्वास करते हो ?
- 13 देखो, यदि तुम विश्वास करते हो तो तुम्हें उस पर विश्वास करना चाहिए जिसे जीनस ने कहा था; क्योंकि देखो उसने कहा था: तुमने अपने पुत्र के कारण अपना न्याय हटा लिया है ।
- 14 अब देखो, मेरे भाइयों, मैं पूछना चाहूँगा कि क्या तुमने धर्मशास्त्रों को पढ़ा है ? यदि तुमने पढ़ा है, कैसे तुम परमेश्वर के पुत्र पर अविश्वास कर सकते हो ?
- 15 क्योंकि यह नहीं लिखा है कि केवल जीनस ने इन बातों को कहा था, परन्तु जीनस ने भी इन बातों को कहा था—
- 16 क्योंकि देखो, उसने कहा था: हे प्रभु, तुम इन लोगों पर इस कारण क्रोधित हो क्योंकि ये उस दया को नहीं समझेंगे जिसे तुमने इन पर अपने पुत्र के कारण किया है ।
- 17 और अब, मेरे भाइयों, तुम देखते हो कि प्राचीन के एक दूसरे भविष्यवक्ता ने परमेश्वर के पुत्र की गवाही दी है, और क्योंकि लोग उसकी बातों को नहीं समझ पाए इसलिए उस पर पथराव कर उसे मार दिया ।
- 18 परन्तु देखो, यही सब नहीं है; केवल यही लोग नहीं हैं जिन्होंने परमेश्वर के पुत्र से संबंधित बातें कही हैं ।
- 19 देखो, उसके विषय में मूसा ने भी कहा था; हां, और देखो उसे उसी के समान निर्जन प्रदेश में खड़ा किया गया था, ताकि जो भी उसकी तरफ देखे वे जीवित रहें । और कई लोगों ने देखा और जीवित रहे ।
- 20 परन्तु कुछ ही लोग उन बातों के अर्थ को समझ पाए थे, और ऐसा उनकी हृदयों की कठोरता के कारण था । परन्तु कई लोग ऐसे थे जिनके हृदय इतने कठोर हो गए थे कि वे नहीं देखना चाहते थे, इसलिए उनका विनाश हुआ । अब उनके नहीं देखने का कारण यह था कि उन्होंने विश्वास नहीं किया था कि इससे उनके दुख दूर होंगे ।
- 21 हे मेरे भाइयों, यदि केवल नजर उठाकर देखने से ही तुम्हारे दुख दूर हो जाते तो क्या तुम शीघ्रता से नहीं देखते, या इसकी बजाय क्या तुम अविश्वास में अपने हृदयों को कठोर करते, और आलसी होते कि तुमने नजर उठाकर देखा भी नहीं ताकि तुम्हारा विनाश हो सके ?

And thou didst hear me because of mine afflictions and my sincerity; and it is because of thy Son that thou hast been thus merciful unto me, therefore I will cry unto thee in all mine afflictions, for in thee is my joy; for thou hast turned thy judgments away from me, because of thy Son.

And now Alma said unto them: Do ye believe those scriptures which have been written by them of old?

Behold, if ye do, ye must believe what Zenos said; for, behold he said: Thou hast turned away thy judgments because of thy Son.

Now behold, my brethren, I would ask if ye have read the scriptures? If ye have, how can ye disbelieve on the Son of God?

For it is not written that Zenos alone spake of these things, but Zenock also spake of these things—

For behold, he said: Thou art angry, O Lord, with this people, because they will not understand thy mercies which thou hast bestowed upon them because of thy Son.

And now, my brethren, ye see that a second prophet of old has testified of the Son of God, and because the people would not understand his words they stoned him to death.

But behold, this is not all; these are not the only ones who have spoken concerning the Son of God.

Behold, he was spoken of by Moses; yea, and behold a type was raised up in the wilderness, that whosoever would look upon it might live. And many did look and live.

But few understood the meaning of those things, and this because of the hardness of their hearts. But there were many who were so hardened that they would not look, therefore they perished. Now the reason they would not look is because they did not believe that it would heal them.

O my brethren, if ye could be healed by merely casting about your eyes that ye might be healed, would ye not behold quickly, or would ye rather harden your hearts in unbelief, and be slothful, that ye would not cast about your eyes, that ye might perish?

22 यदि ऐसा है, तुम पर हाथ हो; परन्तु यदि ऐसा नहीं है तो अपनी नजर को उठाओ और परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करना आरंभ कर दो, कि वह अपने लोगों की मुक्ति के लिए आएगा, और यह कि उनके पापों के प्रायश्चित के लिए वह सहेगा और मर जाएगा; और यह कि वह मुर्दों में से फिर से जी उठेगा, जिससे पुनरुत्थान होगा, ताकि अंतिम और न्याय वाले दिन, अपने कर्मों के अनुसार न्याय पाने के लिए सारे लोग उसके सामने खड़े हो सकें ।

23 और अब, मेरे भाइयों, मैं चाहता हूँ कि उसके वचन को अपने हृदयों में उगने दो, और जैसे-जैसे वह बढ़ने लगे अपने विश्वास के द्वारा उसकी देखभाल करो । और देखो, अनंत जीवन देने के प्रति वह तुममें एक हरा-भरा पेड़ बन जाएगा । और फिर परमेश्वर ऐसा होने दे कि उसके पुत्र की प्रसन्नता द्वारा तुम्हारे बोझ हलके हो सकें । और यदि तुम्हारी इच्छा होगी तो तुम यह सब कर सकते हो । आमीन ।

If so, wo shall come upon you; but if not so, then cast about your eyes and begin to believe in the Son of God, that he will come to redeem his people, and that he shall suffer and die to atone for their sins; and that he shall rise again from the dead, which shall bring to pass the resurrection, that all men shall stand before him, to be judged at the last and judgment day, according to their works.

And now, my brethren, I desire that ye shall plant this word in your hearts, and as it beginneth to swell even so nourish it by your faith. And behold, it will become a tree, springing up in you unto everlasting life. And then may God grant unto you that your burdens may be light, through the joy of his Son. And even all this can ye do if ye will. Amen.

## अलमा 34

- 1 और अब ऐसा हुआ कि उनसे इन बातों को कह लेने के पश्चात वह जमीन पर बैठ गया, और अमूलेक उठा और उन्हें यह कहते हुए सीखाने लगा:
- 2 मेरे भाइयों, मेरे विचार से यह असंभव है कि मसीह के आगमन से संबंधित बताई गई बातों की तुम्हें उपेक्षा नहीं करनी चाहिए जो हमें परमेश्वर के पुत्र द्वारा सीखाई गई है; हां, मैं जानता हूँ कि हमारे बीच के विवाद के पहले तुम्हें इन बातों को प्रचुरता में सीखाया गया था।
- 3 और अब जब तुम्हारी इच्छा है कि मेरा प्रिय भाई तुम्हें बताए कि तुम्हारे कष्टों के कारण तुम्हें क्या करना चाहिए; और उसने तुमसे तुम्हारे मन को तैयार करने के लिए कहा है; हां, और उसने तुम्हें विश्वास और धैर्य का उपदेश दिया है।
- 4 हां, तुम्हारे अंदर इतना विश्वास होना चाहिए कि तुम अपने हृदय में वचन को उगा सको, ताकि तुम इसकी अच्छाई की जांच कर सको।
- 5 और हमने उस बड़े प्रश्न को देखा है जो तुम्हारे मन में है कि क्या वचन परमेश्वर के पुत्र में है, या कोई मसीह नहीं होगा।
- 6 और तुमने यह भी देखा कि मेरे भाई ने तुम्हें कई उदाहरणों से प्रमाणित किया है कि उद्धार के प्रति वचन मसीह में ही है।
- 7 मेरे भाई ने जीनस की बातों को बताया है, कि मुक्ति परमेश्वर के पुत्र द्वारा आती है, और जीनस की बातों द्वारा भी आती है; और इन बातों की सच्चाई को सिद्ध करने के लिए उसने मूसा से भी अनुरोध किया है।
- 8 और अब, देखो, मैं तुम्हें अपनी गवाही दूंगा कि ये बातें सच्ची हैं। देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं अवश्य जानता हूँ कि मसीह मानव संतान में अपने लोगों के पापों को अपने ऊपर लेने के लिए आएगा, और यह कि वह संसार के पापों के लिए प्रायश्चित्त करेगा; क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने इसके बारे में बताया है।
- 9 क्योंकि यह आवश्यक है कि प्रायश्चित्त हो; क्योंकि अनंत परमेश्वर की महान योजना के अनुसार प्रायश्चित्त होना ही चाहिए, या फिर सारी मानवजाति का विनाश अनिवार्य है; हां, सबके हृदय कठोर हो गए हैं; हां, सभी पतित और खोए हुए लोग हैं, और सबका विनाश निश्चित है सिवाय उस प्रायश्चित्त के अलावा जो कि आवश्यक है और जिसे होना ही होगा।

## Alma 34

And now it came to pass that after Alma had spoken these words unto them he sat down upon the ground, and Amulek arose and began to teach them, saying:

My brethren, I think that it is impossible that ye should be ignorant of the things which have been spoken concerning the coming of Christ, who is taught by us to be the Son of God; yea, I know that these things were taught unto you bountifully before your dissension from among us.

And as ye have desired of my beloved brother that he should make known unto you what ye should do, because of your afflictions; and he hath spoken somewhat unto you to prepare your minds; yea, and he hath exhorted you unto faith and to patience—

Yea, even that ye would have so much faith as even to plant the word in your hearts, that ye may try the experiment of its goodness.

And we have beheld that the great question which is in your minds is whether the word be in the Son of God, or whether there shall be no Christ.

And ye also beheld that my brother has proved unto you, in many instances, that the word is in Christ unto salvation.

My brother has called upon the words of Zenos, that redemption cometh through the Son of God, and also upon the words of Zenock; and also he has appealed unto Moses, to prove that these things are true.

And now, behold, I will testify unto you of myself that these things are true. Behold, I say unto you, that I do know that Christ shall come among the children of men, to take upon him the transgressions of his people, and that he shall atone for the sins of the world; for the Lord God hath spoken it.

For it is expedient that an atonement should be made; for according to the great plan of the Eternal God there must be an atonement made, or else all mankind must unavoidably perish; yea, all are hardened; yea, all are fallen and are lost, and must perish except it be through the atonement which it is expedient should be made.

- 10 क्योंकि यह आवश्यक है कि महान और आखिरी बलिदान हो; हां, न ही किसी मनुष्य का बलिदान, न ही किसी पशु का, न ही किसी भी प्रकार के पक्षी का; क्योंकि यह एक मानव बलिदान नहीं होगा; परन्तु यह एक असीम और अनंत बलिदान होगा ।
- 11 अब ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो अपने स्वयं के लहू का बलिदान दे जो कि दूसरे के पापों के लिए प्रायश्चित्त होगा । अब, यदि कोई मनुष्य हत्या करता है, देखो क्या हमारा कानून जो कि न्यायी है वह उसके भाई का जीवन ले लेगा ? मैं तुमसे कहता हूं, नहीं ।
- 12 परन्तु कानून को उसका जीवन चाहिए जिसने हत्या की है; इसलिए ऐसा कोई भी बलिदान नहीं है जो असीम प्रायश्चित्त के समान थोड़ा बहुत भी हो जो कि संसार के पापों के लिए पर्याप्त हो ।
- 13 इसलिए, यह आवश्यक है कि महान और आखिरी बलिदान हो, और फिर ऐसा होगा या फिर होना चाहिए कि रक्तपात खत्म हो; फिर मूसा की व्यवस्था पूरी होगी; हां, वह सब जो लिखा हुआ है वह पूरा होगा, और कुछ भी नहीं छूटेगा ।
- 14 और देखो, उस महान और आखिरी बलिदान की तरफ हर कण द्वारा संकेत करते हुए यही कानून का संपूर्ण अर्थ है; और महान और आखिरी बलिदान परमेश्वर का पुत्र होगा, हां, असीम और अनंत ।
- 15 और इस प्रकार वह उन सभी के लिए उद्धार लाएगा जो उसके नाम में विश्वास करेंगे; दया के कोमल भाव को लाने के लिए आखिरी बलिदान का यही उद्देश्य है, जो न्याय पर विजय प्राप्त करता है, और जो लोगों के प्रति साधन लाता है ताकि पश्चाताप के लिए उनमें विश्वास हो सके ।
- 16 और इस प्रकार दया न्याय की मांग को पूरा कर सकता है, और सुरक्षा के शस्त्रों से उन्हें घेरता है, जब कि वो जो पश्चाताप के प्रति विश्वास नहीं बढ़ाता है उसे न्याय की मांग के पूरे नियम के लिए उजागर कर दिया जाता है; इसलिए केवल उसके लिए मुक्ति की महान और अनंत योजना है जो पश्चाताप के प्रति विश्वास करता है ।
- 17 इसलिए मेरे भाइयों परमेश्वर तुम्हें प्रेरणा दे कि पश्चाताप के प्रति तुम अपने विश्वास को बढ़ा सको, कि तुम उसके पवित्र नाम को पुकारने लगे ताकि वह तुम पर दया कर सके ।
- 18 हां, दया के लिए उसे पुकारो; क्योंकि बचाने में वह प्रबल है ।
- 19 हां, स्वयं को विनम्र करो, और उससे निरंतर प्रार्थना करते रहो ।

For it is expedient that there should be a great and last sacrifice; yea, not a sacrifice of man, neither of beast, neither of any manner of fowl; for it shall not be a human sacrifice; but it must be an infinite and eternal sacrifice.

Now there is not any man that can sacrifice his own blood which will atone for the sins of another. Now, if a man murdereth, behold will our law, which is just, take the life of his brother? I say unto you, Nay.

But the law requireth the life of him who hath murdered; therefore there can be nothing which is short of an infinite atonement which will suffice for the sins of the world.

Therefore, it is expedient that there should be a great and last sacrifice, and then shall there be, or it is expedient there should be, a stop to the shedding of blood; then shall the law of Moses be fulfilled; yea, it shall be all fulfilled, every jot and tittle, and none shall have passed away.

And behold, this is the whole meaning of the law, every whit pointing to that great and last sacrifice; and that great and last sacrifice will be the Son of God, yea, infinite and eternal.

And thus he shall bring salvation to all those who shall believe on his name; this being the intent of this last sacrifice, to bring about the bowels of mercy, which overpowereth justice, and bringeth about means unto men that they may have faith unto repentance.

And thus mercy can satisfy the demands of justice, and encircles them in the arms of safety, while he that exercises no faith unto repentance is exposed to the whole law of the demands of justice; therefore only unto him that has faith unto repentance is brought about the great and eternal plan of redemption.

Therefore may God grant unto you, my brethren, that ye may begin to exercise your faith unto repentance, that ye begin to call upon his holy name, that he would have mercy upon you;

Yea, cry unto him for mercy; for he is mighty to save.

Yea, humble yourselves, and continue in prayer unto him.

- 20 उसे पुकारो जब तुम अपने खेतों में होते हो, हां, अपने पूरे झुंड के साथ ।  
 Cry unto him when ye are in your fields, yea, over all your flocks.
- 21 अपने घरों में उसे पुकारो, हां, अपने पूरे परिवार के साथ, सुबह, दोपहर, और संध्या को ।  
 Cry unto him in your houses, yea, over all your household, both morning, mid-day, and evening.
- 22 हां, अपने शत्रुओं की शक्ति के विरुद्ध उसे पुकारो ।  
 Yea, cry unto him against the power of your enemies.
- 23 हां, उसे शैतान के विरुद्ध पुकारो जो कि सारी धार्मिकता का शत्रु है ।  
 Yea, cry unto him against the devil, who is an enemy to all righteousness.
- 24 अपने खेतों की फसलों के साथ उसे पुकारो, ताकि उनमें बढ़ोतरी हो सके ।  
 Cry unto him over the crops of your fields, that ye may prosper in them.
- 25 अपने खेतों में काम कर रहे लोगों के साथ पुकारो, ताकि उनमें बढ़ोतरी हो सके ।  
 Cry over the flocks of your fields, that they may increase.
- 26 परन्तु यह सब कुछ नहीं है; तुम्हें अपनी कोठरियों में, अपने गुप्त स्थानों पर, और अपने निर्जन प्रदेशों में अपनी आत्माओं को उंडेलना होगा ।  
 But this is not all; ye must pour out your souls in your closets, and your secret places, and in your wilderness.
- 27 हां, और जब तुम प्रभु को नहीं पुकारते हो, अपने कल्याण और अपने आसपास रह रहे लोगों के कल्याण के प्रति भी निरंतर उससे प्रार्थना करने के लिए अपने हृदयों को परिपूर्ण होने दो ।  
 Yea, and when you do not cry unto the Lord, let your hearts be full, drawn out in prayer unto him continually for your welfare, and also for the welfare of those who are around you.
- 28 और अब देखो, मेरे प्रिय भाइयों, मैं तुमसे कहता हूँ, मत मानो कि यही सब कुछ है; क्योंकि इन सारी चीजों को कर लेने के पश्चात, यदि तुम जरूरतमंद और वस्त्रहीन लोगों से मुंह फेरोगे, और बीमार और कष्ट में पड़े हुए लोगों से नहीं मिलोगे, और यदि तुम्हारे पास वस्तुएं हैं जिसे तुम उन लोगों को नहीं दोगे जिन्हें इनकी आवश्यकता है—मैं तुमसे कहता हूँ, यदि तुम इनमें से किसी भी चीज को नहीं दोगे, देखो, तुम्हारी प्रार्थना व्यर्थ है, और तुम्हें कोई फल नहीं देगी, और तुम उन ढोंगियों के समान हो जो विश्वास को नकारते हैं ।  
 And now behold, my beloved brethren, I say unto you, do not suppose that this is all; for after ye have done all these things, if ye turn away the needy, and the naked, and visit not the sick and afflicted, and impart of your substance, if ye have, to those who stand in need—I say unto you, if ye do not any of these things, behold, your prayer is vain, and availeth you nothing, and ye are as hypocrites who do deny the faith.
- 29 इसलिए, यदि तुम उदार रहना याद नहीं रखते हो तो तुम बेकार हो, जिसे साफ-सफाई करनेवाले फेंक देते हैं (जिसका कोई मोल न हो) और जो लोगों के पैरों तले कुचला जाता है ।  
 Therefore, if ye do not remember to be charitable, ye are as dross, which the refiners do cast out, (it being of no worth) and is trodden under foot of men.
- 30 और अब मेरे भाइयों, मैं चाहूंगा कि इतनी सारी साक्षियों को प्राप्त करने के पश्चात, यह देखने के पश्चात कि धर्मशास्त्र इन बातों की गवाही देते हैं, तुम आगे आओ और पश्चाताप के प्रति फल लाओ ।  
 And now, my brethren, I would that, after ye have received so many witnesses, seeing that the holy scriptures testify of these things, ye come forth and bring fruit unto repentance.
- 31 हां, मैं चाहूंगा कि तुम आगे आओ और अपने हृदयों को अब और कठोर मत करो; क्योंकि देखो, अब तुम्हारे उद्धार का समय और दिन है; और इसलिए, यदि तुम पश्चाताप करोगे और अपने हृदयों को कठोर नहीं करोगे, तो तुरन्त मुक्ति की महान योजना तुम्हारे पास लायी जाएगी ।  
 Yea, I would that ye would come forth and harden not your hearts any longer; for behold, now is the time and the day of your salvation; and therefore, if ye will repent and harden not your hearts, immediately shall the great plan of redemption be brought about unto you.

- 32 क्योंकि देखो, यह समय परमेश्वर से मिलने के प्रति लोगों की तैयारी का समय है; हां, देखो इस जीवन का समय लोगों के परिश्रम करने का समय है ।
- 33 और अब, जैसा मैंने तुमसे पहले कहा है, जैसे तुमने कई साक्षियां देखी है, इसलिए, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम अपने पश्चाताप के दिन को अंतिम दिन तक न टालो; क्योंकि जीवन के इस दिन के पश्चात, जिसे हमें अनंतकाल की तैयारी के लिए दिया गया है, देखो यदि इस जीवन में हम अपने समय को नहीं सुधारेंगे तो फिर काली रात आएगी जिसमें कोई भी परिश्रम नहीं किया जा सकता है ।
- 34 तुम नहीं कह सकते हो कि कब तुम भयंकर संकट में लाए जाओगे, कि मैं पश्चाताप करूंगा, ताकि मैं अपने परमेश्वर के पास जाऊंगा । नहीं, तुम ऐसा नहीं कह सकते हो; क्योंकि जब इस जीवन से प्रस्थान करते समय जो आत्मा तुम लोगों के शरीर में रहती है वही आत्मा इस अनंत जीवन में भी तुम्हारे शरीर पर कब्जा करेगी ।
- 35 क्योंकि देखो, यदि तुमने मृत्यु होने तक पश्चाताप के अपने समय को टाला, देखो, शैतान की आत्मा तुम्हें अपने वश में कर लेगी, और वह तुम पर अपना मुहर लगा देगा; इसलिए, प्रभु की आत्मा की तुमसे हटा ली गई है, और तुम्हारे अंदर कोई स्थान नहीं रह जाता है, और तुम्हारे ऊपर शैतान का सारा अधिकार हो जाता है; और दुष्ट की यह आखिरी अवस्था होती है ।
- 36 और इसे मैं जानता हूँ क्योंकि प्रभु ने कहा है कि वह अपवित्र मंदिरों में नहीं रहता है, परन्तु वह धर्मी लोगों के हृदयों में वास करता है; हां, और उसने यह भी कहा है कि धर्मी लोग उसके राज्य में रहेंगे फिर से कभी भी बाहर नहीं जाने के लिए; परन्तु मेमने के लहू द्वारा उनके वस्त्र श्वेत किये जाएंगे ।
- 37 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, मैं चाहता हूँ कि तुम इन बातों को याद रखो, और यह कि परमेश्वर के डर से अपने उद्धार के प्रति कार्य करो, और तुम्हें मसीह के आगमन को अब और नहीं नकारना चाहिए ।
- 38 ताकि तुम पवित्र आत्मा के विरुद्ध अब कोई और विवाद न करो, परन्तु तुम उसे स्वीकार करो, और मसीह के नाम को अपने ऊपर ग्रहण करो; कि अपने आपको धूल के समान विनम्र करो, और किसी भी स्थान पर, आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की उपासना करो; और यह कि नियमित रूप से तुम आभारी जीवन जीओ क्योंकि वह तुम पर बहुत दया करता और आशीर्ष देता है ।

For behold, this life is the time for men to prepare to meet God; yea, behold the day of this life is the day for men to perform their labors.

And now, as I said unto you before, as ye have had so many witnesses, therefore, I beseech of you that ye do not procrastinate the day of your repentance until the end; for after this day of life, which is given us to prepare for eternity, behold, if we do not improve our time while in this life, then cometh the night of darkness wherein there can be no labor performed.

Ye cannot say, when ye are brought to that awful crisis, that I will repent, that I will return to my God. Nay, ye cannot say this; for that same spirit which doth possess your bodies at the time that ye go out of this life, that same spirit will have power to possess your body in that eternal world.

For behold, if ye have procrastinated the day of your repentance even until death, behold, ye have become subjected to the spirit of the devil, and he doth seal you his; therefore, the Spirit of the Lord hath withdrawn from you, and hath no place in you, and the devil hath all power over you; and this is the final state of the wicked.

And this I know, because the Lord hath said he dwelleth not in unholy temples, but in the hearts of the righteous doth he dwell; yea, and he has also said that the righteous shall sit down in his kingdom, to go no more out; but their garments should be made white through the blood of the Lamb.

And now, my beloved brethren, I desire that ye should remember these things, and that ye should work out your salvation with fear before God, and that ye should no more deny the coming of Christ;

That ye contend no more against the Holy Ghost, but that ye receive it, and take upon you the name of Christ; that ye humble yourselves even to the dust, and worship God, in whatsoever place ye may be in, in spirit and in truth; and that ye live in thanksgiving daily, for the many mercies and blessings which he doth bestow upon you.

- 39 हां, और मेरे भाइयों मैं तुम्हें यह भी उपदेश देता हूं कि तुम निरंतर प्रार्थना में ध्यान लगाओ, कि शैतान के प्रलोभन द्वारा तुम पथभ्रष्ट न हो सको, कि तुम पर उसका कोई अधिकार न हो सके, ताकि आखिरी दिन तुम उसके वश में न हो सको; क्योंकि देखो, वह तुम्हें कोई भी अच्छा पुरस्कार नहीं देता है ।
- 40 और अब मेरे प्रिय भाइयों, मैं तुम्हें धैर्य रखने का उपदेश दूंगा, और तुम हर प्रकार के कष्टों को सहोगे; ताकि तुम उन लोगों को बुरा न कहो जिन्होंने तुम्हें तुम्हारे अत्याधिक निर्धनता के कारण निकाल दिया था, कहीं ऐसा न हो कि तुम उन्हीं के समान पापी बन जाओ;
- 41 परन्तु तुम में धैर्य हो, और दृढ़ आशा के साथ उन कष्टों को सहो कि एक दिन तुम्हें तुम्हारे सारे कष्टों से आराम मिलेगा ।

Yea, and I also exhort you, my brethren, that ye be watchful unto prayer continually, that ye may not be led away by the temptations of the devil, that he may not overpower you, that ye may not become his subjects at the last day; for behold, he rewardeth you no good thing.

And now my beloved brethren, I would exhort you to have patience, and that ye bear with all manner of afflictions; that ye do not revile against those who do cast you out because of your exceeding poverty, lest ye become sinners like unto them;

But that ye have patience, and bear with those afflictions, with a firm hope that ye shall one day rest from all your afflictions.



## अलमा 35

- 1 अब ऐसा हुआ कि अमूलेक द्वारा इन बातों को कह लेने के पश्चात, वे भीड़ से निकल गए और जेरशान प्रदेश चले गए ।
- 2 हां, और जोरामाइयों के लिए वचन का प्रचार करने के पश्चात, बाकी बचे भाई भी जेरशान प्रदेश चले गए ।
- 3 और ऐसा हुआ कि जोरामाइयों के लोकप्रिय लोगों ने उस वचन के विषय पर एक साथ मिलकर सोच-विचार किया जिसे उन्हें सीखाया गया था, और वे वचन के कारण क्रोधित थे, क्योंकि इसकी वजह से उनके व्यवसाय नष्ट हुए थे; इसलिए उन्होंने वचन को नहीं सुना ।
- 4 और उन्होंने प्रदेश में संदेश भिजवाकर सारे लोगों को एकत्रित किया, और उनके साथ उस वचन के विषय पर सोच-विचार किया जिसे सुनाया गया था ।
- 5 अब उनके शासकों और उनके याजकों और उनके शिक्षकों ने इस बात से संबंधित अपनी इच्छाओं को उन पर प्रकट नहीं होने दिया; इसलिए उन्होंने गुप्त रूप से सारे लोगों के विचारों का पता लगा लिया ।
- 6 और ऐसा हुआ कि सारे लोगों के विचारों का पता लगा लेने के पश्चात, जो लोग अलमा और उसके भाइयों द्वारा सिखाए गए वचन के पक्ष में थे उन्हें प्रदेश से बाहर निकाल दिया गया; और वे बहुत थे; और वे भी जेरशान प्रदेश चले गए ।
- 7 और ऐसा हुआ कि अलमा और उसके भाइयों ने उनकी सहायता की ।
- 8 अब जोरामाइयों के लोग अम्मोन के उन लोगों से क्रोधित थे जो जेरशान में रह रहे थे, और जोरामाइयों का मुख्य शासक जो कि बहुत ही दुष्ट व्यक्ति था, उसने अम्मोन के लोगों को यह बताते हुए संदेश भेजा कि वे उन सारे लोगों को प्रदेश से बाहर निकाल दें जो अपने प्रदेश से उनके पास आए हैं ।
- 9 और उसने उनके विरुद्ध कई धमकियों की घोषणा की । और अब अम्मोन के लोग उनकी बातों से नहीं डरते थे; इसलिए उन्होंने उन्हें बाहर नहीं निकाला बल्कि उन्होंने जोरामाइयों के उन सारे गरीबों को अपने पास रखा जो उनके पास आए थे; और उन्होंने उनकी देखभाल की, और उन्हें वस्त्र दिए, और अपनी विरासत की जमीनें दीं; और उन्होंने उनकी जरूरतों के मुताबिक उनकी सहायता की ।

## Alma 35

Now it came to pass that after Amulek had made an end of these words, they withdrew themselves from the multitude and came over into the land of Jershon.

Yea, and the rest of the brethren, after they had preached the word unto the Zoramites, also came over into the land of Jershon.

And it came to pass that after the more popular part of the Zoramites had consulted together concerning the words which had been preached unto them, they were angry because of the word, for it did destroy their craft; therefore they would not hearken unto the words.

And they sent and gathered together throughout all the land all the people, and consulted with them concerning the words which had been spoken.

Now their rulers and their priests and their teachers did not let the people know concerning their desires; therefore they found out privily the minds of all the people.

And it came to pass that after they had found out the minds of all the people, those who were in favor of the words which had been spoken by Alma and his brethren were cast out of the land; and they were many; and they came over also into the land of Jershon.

And it came to pass that Alma and his brethren did minister unto them.

Now the people of the Zoramites were angry with the people of Ammon who were in Jershon, and the chief ruler of the Zoramites, being a very wicked man, sent over unto the people of Ammon desiring them that they should cast out of their land all those who came over from them into their land.

And he breathed out many threatenings against them. And now the people of Ammon did not fear their words; therefore they did not cast them out, but they did receive all the poor of the Zoramites that came over unto them; and they did nourish them, and did clothe them, and did give unto them lands for their inheritance; and they did administer unto them according to their wants.

- 10 अब इस बात के कारण अम्मोन के लोगों के विरुद्ध जोरामाई क्रोध से भड़क उठे, और वे लमनाइयों के साथ मिल गए और उन्हें भी उनके विरुद्ध क्रोध में भड़काने लगे ।
- 11 और इस प्रकार जोरामाइयों और लमनाइयों ने अम्मोन के लोगों के विरुद्ध, और नफाइयों के विरुद्ध भी युद्ध की तैयारी आरंभ कर दी ।
- 12 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का सत्रहवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 13 और अम्मोन के लोग जेरशान प्रदेश से चले गए, और मेलेक प्रदेश पहुंचे, और नफाइयों की सेनाओं को जेरशान प्रदेश में रहने के लिए जगह दी, ताकि वे लमनाइयों और जोरामाइयों की सेनाओं के साथ लड़ सकें; और इस प्रकार लमनाइयों और नफाइयों के बीच युद्ध आरंभ हुआ; और इसके पश्चात उनके युद्धों का विवरण दिया जाएगा ।
- 14 और कई जोरामाइयों को पश्चाताप करवाने में परमेश्वर के हाथों का औजार बनने के पश्चात, अलमा, और अम्मोन, और उनके भाई, और अलमा के दो बेटे जराहेमला प्रदेश वापस लौट आए; और जितने लोगों ने पश्चाताप किया था उन्हें प्रदेश से बाहर निकाल दिया गया; परन्तु जेरशान प्रदेश में उनकी अपनी विरासत में मिली हुई जमीनें थीं, और स्वयं को और अपनी पत्नियों और बच्चों और अपने प्रदेश को बचाने के लिए उन्होंने शस्त्र उठा लिया ।
- 15 अब अलमा, अपने लोगों की दुष्टता के कारण दुखी होते हुए, हां, उनके बीच के युद्धों और रक्तपात और मतभेदों के कारण; और हर नगर में लोगों के बीच वचन की घोषणा करते हुए या वचन की घोषणा करवाते हुए; और यह देखते हुए कि लोगों के हृदय कठोर होने लगे थे, और वचन की कड़ाई के कारण कई लोग नाराज होने लगे हैं, तो उसका हृदय अत्याधिक दुखी हुआ ।
- 16 इसलिए, उसने ऐसा किया कि उसके बेटे एकत्रित हों, ताकि धार्मिकता के कार्यों से संबंधित वह हर किसी को अलग से काम दे सके । और हमारे पास उन आज्ञाओं का विवरण है जिसे उनसे उन्हें अपने स्वयं के अभिलेखानुसार दिया था ।
- Now this did stir up the Zoramites to anger against the people of Ammon, and they began to mix with the Lamanites and to stir them up also to anger against them.
- And thus the Zoramites and the Lamanites began to make preparations for war against the people of Ammon, and also against the Nephites.
- And thus ended the seventeenth year of the reign of the judges over the people of Nephi.
- And the people of Ammon departed out of the land of Jershon, and came over into the land of Melek, and gave place in the land of Jershon for the armies of the Nephites, that they might contend with the armies of the Lamanites and the armies of the Zoramites; and thus commenced a war betwixt the Lamanites and the Nephites, in the eighteenth year of the reign of the judges; and an account shall be given of their wars hereafter.
- And Alma, and Ammon, and their brethren, and also the two sons of Alma returned to the land of Zarahemla, after having been instruments in the hands of God of bringing many of the Zoramites to repentance; and as many as were brought to repentance were driven out of their land; but they have lands for their inheritance in the land of Jershon, and they have taken up arms to defend themselves, and their wives, and children, and their lands.
- Now Alma, being grieved for the iniquity of his people, yea for the wars, and the bloodsheds, and the contentions which were among them; and having been to declare the word, or sent to declare the word, among all the people in every city; and seeing that the hearts of the people began to wax hard, and that they began to be offended because of the strictness of the word, his heart was exceedingly sorrowful.
- Therefore, he caused that his sons should be gathered together, that he might give unto them every one his charge, separately, concerning the things pertaining unto righteousness. And we have an account of his commandments, which he gave unto them according to his own record.

## अलमा 36

## Alma 36

- 1 मेरे बेटे, मेरी बातों पर कान लगाओ; क्योंकि मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि जितना तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करोगे उतना ही तुम प्रदेश में उन्नति करोगे ।
- 2 मैं चाहूँगा कि अपने पूर्वजों की दासता को याद करते हुए, तुम वैसा ही करो जैसा मैंने किया था; क्योंकि वे दासता में थे, और इब्राहीम के परमेश्वर, और इसहाक के परमेश्वर, और याकूब के परमेश्वर की बजाय उन्हें और कोई नहीं बचा सकता था; और निश्चित रूप से उसने उन्हें उनके कष्टों से उबारा था ।
- 3 और अब, हे मेरे बेटे हिलामन, देखो, तुम अपनी युवावस्था में हो, और इसलिए, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम मेरी बातों को सुनो और मुझसे सीखो; क्योंकि मैं जानता हूँ कि जो कोई भी परमेश्वर में अपना विश्वास दिखाएगा, तो वह उनकी सहायता उनकी परेशानियों, और उनके दुखों, और उनके कष्टों में करेगा, और अंतिम दिन में वे उत्कर्षित किये जाएंगे ।
- 4 और मैं नहीं चाहूँगा कि तुम सोचो कि मैं अपने बारे में जानता हूँ—लौकिक बातों को नहीं परन्तु आत्मिक बातों को, सांसारिक बातों को नहीं परन्तु परमेश्वर की बातों को ।
- 5 अब, देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, यदि मैंने परमेश्वर में जन्म नहीं लिया होता तो मैं इन बातों को नहीं जान सकता था; परन्तु परमेश्वर ने मुझे इन बातों का ज्ञात मेरी किसी भी योग्यता के कारण नहीं बल्कि अपने पवित्र स्वर्गदूत के द्वारा कराया है ।
- 6 क्योंकि परमेश्वर के गिरजे को नष्ट करने के उद्देश्य से मैं मुसायाह के बेटों के साथ गया था; परन्तु देखो, मार्ग में हमें रोकने के लिए परमेश्वर ने अपने पवित्र स्वर्गदूत को भेजा ।
- 7 और देखो, उसने हमसे गर्जन की आवाज में बात की, और हमारे पैरों तले की पूरी पृथ्वी थरथराने लगी; और हम सब धरती पर गिर गए क्योंकि हम पर प्रभु का डर आ गया था ।
- 8 परन्तु देखो, आवाज ने मुझसे कहा; उठो । और मैं उठा और खड़ा हो गया, और स्वर्गदूत को देखा ।
- 9 और उसने मुझसे कहा: यदि तुम परमेश्वर के गिरजे को नष्ट करना चाहोगे तो तुम स्वयं नष्ट हो जाओगे ।

My son, give ear to my words; for I swear unto you, that inasmuch as ye shall keep the commandments of God ye shall prosper in the land.

I would that ye should do as I have done, in remembering the captivity of our fathers; for they were in bondage, and none could deliver them except it was the God of Abraham, and the God of Isaac, and the God of Jacob; and he surely did deliver them in their afflictions.

And now, O my son Helaman, behold, thou art in thy youth, and therefore, I beseech of thee that thou wilt hear my words and learn of me; for I do know that whosoever shall put their trust in God shall be supported in their trials, and their troubles, and their afflictions, and shall be lifted up at the last day.

And I would not that ye think that I know of myself—not of the temporal but of the spiritual, not of the carnal mind but of God.

Now, behold, I say unto you, if I had not been born of God I should not have known these things; but God has, by the mouth of his holy angel, made these things known unto me, not of any worthiness of myself;

For I went about with the sons of Mosiah, seeking to destroy the church of God; but behold, God sent his holy angel to stop us by the way.

And behold, he spake unto us, as it were the voice of thunder, and the whole earth did tremble beneath our feet; and we all fell to the earth, for the fear of the Lord came upon us.

But behold, the voice said unto me: Arise. And I arose and stood up, and beheld the angel.

And he said unto me: If thou wilt of thyself be destroyed, seek no more to destroy the church of God.

- 10 और ऐसा हुआ कि मैं जमीन पर गिर गया; और तीन दिनों और तीन रातों तक मैं अपना मुंह न खोल सका, न ही मैं अपने किसी अंग का उपयोग कर सका ।
- 11 और स्वर्गदूत ने मुझसे और भी बातें की, जिसे मेरे भाइयों ने सुना, परन्तु मैंने नहीं सुना; क्योंकि जब मैंने इन बातों को सुना—यदि तुम परमेश्वर के गिरजे को नष्ट करना चाहोगे तो तुम स्वयं नष्ट हो जाओगे—मैं डर और आश्चर्य से दंग रह गया था कि कहीं ऐसा न हो कि मैं नष्ट हो जाऊं, जिसके कारण मैं जमीन पर गिर पड़ा और कुछ भी न सुन सका ।
- 12 परन्तु मैं अनंत यातना की पीड़ा में था, क्योंकि मेरी आत्मा बुरी तरह से झकझोर दी गई थी और मेरे सारे पापों से पीड़ित हुई थी ।
- 13 हां, मैंने अपने सारे पापों और दुष्ट कर्मों को याद किया जिनके कारण मैंने नरक की पीड़ा को सहा था; हां, मैंने देखा कि मैं परमेश्वर के विरुद्ध खड़ा हुआ था, और यह कि मैंने उसकी पवित्र आज्ञाओं को नहीं माना था ।
- 14 हां, और मैंने उसके कई बच्चों की हत्या की थी, या यों कहें कि मैंने उन्हें विनाश की तरफ ढकेल दिया था; हां, और इतने महान थे मेरे दुष्कर्म, कि परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के विचार मात्र से ही अकथनीय भय के कारण मेरी आत्मा पीड़ित हुई थी ।
- 15 ओह, मैंने सोचा, कि मुझे बाहर निकाल दिया जाएगा और दोनों शरीर और आत्मा में नष्ट हो जाऊंगा, ताकि अपने कर्मों का न्याय पाने के लिए, मुझे परमेश्वर की उपस्थिति में न लाया जा सके ।
- 16 और अब, मैं तीन दिनों और तीन रातों तक पीड़ा में था, यहां तक कि एक श्रापित आत्मा की पीड़ा में था ।
- 17 और ऐसा हुआ कि जब मैं इस प्रकार श्राप से पीड़ित हुआ था, जब मैं अपने कई पापों को याद कर झकझोरा गया था, देखो, मैंने याद किया था कि मेरे पिता ने संसार के पापों के प्रति प्रायश्चित के लिए परमेश्वर के पुत्र, किसी यीशु मसीह के आगमन से संबंधित भविष्यवाणी की थी ।
- 18 अब, जब मेरे मन ने मेरे विचार पर कब्जा कर लिया, मैं अपने हृदय में रोया था; हे यीशु, परमेश्वर के पुत्र, मुझ पर दया करो, जो कि मैं कटुता में सताया जा रहा हूं, और मैं मृत्यु की अनंत जंजीरों में जकड़ा हुआ हूं ।
- 19 और अब, देखो, जब मैंने इसे सोचा, मुझे मेरी पीड़ा याद नहीं रही; हां, अब मैं अपने पापों की याद से झकझोरा नहीं गया ।

And it came to pass that I fell to the earth; and it was for the space of three days and three nights that I could not open my mouth, neither had I the use of my limbs.

And the angel spake more things unto me, which were heard by my brethren, but I did not hear them; for when I heard the words—If thou wilt be destroyed of thyself, seek no more to destroy the church of God—I was struck with such great fear and amazement lest perhaps I should be destroyed, that I fell to the earth and I did hear no more.

But I was racked with eternal torment, for my soul was harrowed up to the greatest degree and racked with all my sins.

Yea, I did remember all my sins and iniquities, for which I was tormented with the pains of hell; yea, I saw that I had rebelled against my God, and that I had not kept his holy commandments.

Yea, and I had murdered many of his children, or rather led them away unto destruction; yea, and in fine so great had been my iniquities, that the very thought of coming into the presence of my God did rack my soul with inexpressible horror.

Oh, thought I, that I could be banished and become extinct both soul and body, that I might not be brought to stand in the presence of my God, to be judged of my deeds.

And now, for three days and for three nights was I racked, even with the pains of a damned soul.

And it came to pass that as I was thus racked with torment, while I was harrowed up by the memory of my many sins, behold, I remembered also to have heard my father prophesy unto the people concerning the coming of one Jesus Christ, a Son of God, to atone for the sins of the world.

Now, as my mind caught hold upon this thought, I cried within my heart: O Jesus, thou Son of God, have mercy on me, who am in the gall of bitterness, and am encircled about by the everlasting chains of death.

And now, behold, when I thought this, I could remember my pains no more; yea, I was harrowed up by the memory of my sins no more.

- 20 और ओह, मैंने कितना अदभुत आनंद और प्रकाश देखा; हां, जितनी अत्याधिक पीड़ा मेरी आत्मा में थी उतना ही आनंद मेरी आत्मा में भर गया ।
- 21 हां, मेरे बेटे, मैं तुमसे कहता हूं, कि मेरी पीड़ा जितनी कोई भी चीज अत्यंत तीव्र और दुखद नहीं थी । हां, और मेरे बेटे, मैं फिर से कहता हूं कि दूसरी तरफ मेरी प्रसन्नता जितनी कोई भी चीज अत्यंत तीव्र और मधुर नहीं थी ।
- 22 हां, मेरे विचार से मैंने अपने पिता लेही के समान परमेश्वर को उसके सिंहासन पर बैठे हुए देखा जो अनगिनत स्वर्गदूतों के जमावड़ों से घिरा हुआ था और वे गा रहे थे और अपने परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे; हां, और मेरी आत्मा वहां जाने के लिए व्याकुल हो उठी ।
- 23 परन्तु देखो, मेरे अंगों ने फिर से बल प्राप्त किया, और मैं अपने पैरों पर खड़ा हो गया, और लोगों पर प्रकट किया कि मैंने परमेश्वर में जन्म लिया है ।
- 24 हां, और उस समय से लेकर अब तक, बिना रुके मैंने परिश्रम किया है, कि मैं लोगों को पश्चाताप के लिए बुला सकूँ; ताकि मैं उन लोगों को उस अत्याधिक प्रसन्नता का स्वाद चखा सकूँ जिसे मैंने चखा है; कि वे भी परमेश्वर में जन्म ले सकें, और पवित्र आत्मा से भर सकें ।
- 25 हां, और अब देखो, हे मेरे बेटे, प्रभु मेरे परिश्रम के फल में मुझे अत्याधिक प्रसन्नता देता है;
- 26 क्योंकि जो वचन मुझमें लगाया गया है उसके कारण, देखो, बहुत सारे लोगों ने परमेश्वर में जन्म लिया है, और स्वाद चखा है जैसा मैंने चखा है, और आमने-सामने देखा है जैसा मैंने देखा है; इसलिए वे उन बातों के बारे में जानते हैं जिसे मैंने बताया है, जिसे मैं भी जानता हूँ; और जो ज्ञान मुझमें है वो परमेश्वर का है ।
- 27 और मेरे हर प्रकार के कष्टों और दुखों में मुझे सहायता मिली है, हां, और हर प्रकार की परेशानियों में भी; हां, परमेश्वर ने मुझे बंदीगृह से, दासता से, और मृत्यु से बचाया है; हां, और उसमें मैं विश्वास करता हूँ, और वह मुझे अब भी बचाएगा ।
- 28 और मैं जानता हूँ कि उसके साथ महिमा में रहने के लिए, वह अंतिम दिन में मुझे उठाएगा; हां, और मैं सदा ही उसकी स्तुति करता रहूँगा क्योंकि उसने हमारे पूर्वजों को मिस्र से निकाला है, और उसने मिस्रियों को लाल सागर में निगल लिया है; और वह उन्हें प्रतिज्ञा किया हुआ प्रदेश में अपने बल के द्वारा ले गया था; हां, और समय-समय पर उसने उन्हें दासता और अधीनता से बचाया है ।

And oh, what joy, and what marvelous light I did behold; yea, my soul was filled with joy as exceeding as was my pain!

Yea, I say unto you, my son, that there could be nothing so exquisite and so bitter as were my pains. Yea, and again I say unto you, my son, that on the other hand, there can be nothing so exquisite and sweet as was my joy.

Yea, methought I saw, even as our father Lehi saw, God sitting upon his throne, surrounded with numberless concourses of angels, in the attitude of singing and praising their God; yea, and my soul did long to be there.

But behold, my limbs did receive their strength again, and I stood upon my feet, and did manifest unto the people that I had been born of God.

Yea, and from that time even until now, I have labored without ceasing, that I might bring souls unto repentance; that I might bring them to taste of the exceeding joy of which I did taste; that they might also be born of God, and be filled with the Holy Ghost.

Yea, and now behold, O my son, the Lord doth give me exceedingly great joy in the fruit of my labors;

For because of the word which he has imparted unto me, behold, many have been born of God, and have tasted as I have tasted, and have seen eye to eye as I have seen; therefore they do know of these things of which I have spoken, as I do know; and the knowledge which I have is of God.

And I have been supported under trials and troubles of every kind, yea, and in all manner of afflictions; yea, God has delivered me from prison, and from bonds, and from death; yea, and I do put my trust in him, and he will still deliver me.

And I know that he will raise me up at the last day, to dwell with him in glory; yea, and I will praise him forever, for he has brought our fathers out of Egypt, and he has swallowed up the Egyptians in the Red Sea; and he led them by his power into the promised land; yea, and he has delivered them out of bondage and captivity from time to time.

29 हां, और उसने हमारे पूर्वजों को यरूशलेम के प्रदेश से भी बाहर निकाला है; और उसने अपनी अनंत शक्ति के द्वारा समय-समय पर उन्हें दासता और अधीनता से बचाया है, यहां तक की वर्तमान समय में भी; और मैंने उनकी दासता को सदैव स्मरण रखा है; हां, और तुम्हें भी उनकी दासता को स्मरण रखना चाहिए जैसा कि मैंने रखा है ।

30 परन्तु देखो, मेरे बेटे, यह सब कुछ नहीं है; क्योंकि तुम्हें भी जानना चाहिए जैसा कि मैंने जाना है, कि जितना तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करोगे उतना ही प्रदेश में उन्नति करोगे; और तुम्हें यह भी जानना चाहिए कि जितना तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे उतना ही तुम्हें उसकी उपस्थिति से अलग किया जाएगा । अब ऐसा उसके वचन के अनुसार है ।

Yea, and he has also brought our fathers out of the land of Jerusalem; and he has also, by his everlasting power, delivered them out of bondage and captivity, from time to time even down to the present day; and I have always retained in remembrance their captivity; yea, and ye also ought to retain in remembrance, as I have done, their captivity.

But behold, my son, this is not all; for ye ought to know as I do know, that inasmuch as ye shall keep the commandments of God ye shall prosper in the land; and ye ought to know also, that inasmuch as ye will not keep the commandments of God ye shall be cut off from his presence. Now this is according to his word.

## अलमा 37

- 1 और अब, मेरे बेटे हिलामन, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम उन अभिलेखों को ले लो जिसे मुझे सौंपा गया है;
- 2 और मैं तुम्हें यह भी आज्ञा देता हूँ कि तुम इन लोगों का अभिलेख रखो, नफी की पट्टियों पर जैसा कि मैंने रखा है, और इन सारी चीजों को मेरे समान ही पवित्र रखो जिसे मैंने रखा है; क्योंकि इन्हें किसी सही उद्देश्य के लिए रखा गया है।
- 3 और पीतल की ये पट्टियाँ जिन पर इन्हें अंकित किया गया है, जो कि पवित्र धर्मशास्त्रों का अभिलेख हैं, जो आरंभ से लेकर हमारे पूर्वजों की वंशावली है—
- 4 देखो, इसकी भविष्यवाणी हमारे पूर्वजों द्वारा की गई है, कि उन्हें रखना चाहिए और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपना चाहिए, और ये तब तक प्रभु के हाथों द्वारा बचाकर रखी जाएंगी जब कि यह हर राष्ट्र, जाति, भाषा, और लोगों में न पहुंच जाए, ताकि वे उसमें शामिल भेदों को जानेंगे।
- 5 और अब देखो, यदि इन्हें रखा जाता है तो इनकी चमक को बनाए रखना चाहिए; हां, और वे उनकी चमक को बनाए रखेंगे; हां, और वे पट्टियाँ भी पवित्र होंगी जिन पर इन्हें अंकित किया गया है।
- 6 अब तुम मान सकते हो कि यह मेरी मूर्खता है; परन्तु देखो मैं तुमसे कहता हूँ, कि छोटी और साधारण बातों से ही बड़ी बातें होती हैं; और कभी-कभी छोटे माध्यम ज्ञानी को भ्रम में डाल देते हैं।
- 7 और प्रभु परमेश्वर अपने महान और अनंत उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी न किसी माध्यम से काम करता है; और छोटे-छोटे माध्यमों से प्रभु ज्ञानी को भ्रम में डालता है और कई आत्माओं के लिए उद्धार लाता है।
- 8 और अब, परमेश्वर में यह ज्ञान अभी तक रहा है कि इन चीजों को बचाकर रखना चाहिए; क्योंकि देखो, इससे इन लोगों की बुद्धि बढ़ी है, हां, और कई लोगों ने इससे अपनी भूल को माना है, और अपनी आत्माओं के उद्धार के प्रति स्वयं में अपने परमेश्वर का ज्ञान बढ़ाया है।

## Alma 37

And now, my son Helaman, I command you that ye take the records which have been entrusted with me;

And I also command you that ye keep a record of this people, according as I have done, upon the plates of Nephi, and keep all these things sacred which I have kept, even as I have kept them; for it is for a wise purpose that they are kept.

And these plates of brass, which contain these engravings, which have the records of the holy scriptures upon them, which have the genealogy of our forefathers, even from the beginning—

Behold, it has been prophesied by our fathers, that they should be kept and handed down from one generation to another, and be kept and preserved by the hand of the Lord until they should go forth unto every nation, kindred, tongue, and people, that they shall know of the mysteries contained thereon.

And now behold, if they are kept they must retain their brightness; yea, and they will retain their brightness; yea, and also shall all the plates which do contain that which is holy writ.

Now ye may suppose that this is foolishness in me; but behold I say unto you, that by small and simple things are great things brought to pass; and small means in many instances doth confound the wise.

And the Lord God doth work by means to bring about his great and eternal purposes; and by very small means the Lord doth confound the wise and bringeth about the salvation of many souls.

And now, it has hitherto been wisdom in God that these things should be preserved; for behold, they have enlarged the memory of this people, yea, and convinced many of the error of their ways, and brought them to the knowledge of their God unto the salvation of their souls.

- 9 हां, मैं तुमसे कहता हूं, इन पट्टियों पर लिखी हुई ये बातें नहीं होतीं जो कि इन पट्टियों पर हैं तो अम्मोन और उसके भाई उन कई हजार लमनाइयों को उनके पूर्वजों की गलत परंपरा को नहीं मनवा पाते; हां, इन अभिलेखों और इन बातों के कारण ही उन्होंने पश्चाताप किया; जिससे उनमें उनके प्रभु परमेश्वर का ज्ञान बढ़ा, और उन्होंने अपने मुक्तिदाता यीशु मसीह में आनंद मनाया ।
- 10 और कौन जानता है कि क्या उनमें से हजारों लोगों को, हां, और हमारे कई हजार उन हठी, नफाई भाइयों को, अपने मुक्तिदाता के ज्ञान में लाने का वे साधन बन पाएंगे, जो कि इस समय पाप और दुष्टता में अपने हृदयों को कठोर किये जा रहे हैं ?
- 11 अब इन भेदों को अभी पूरी तरह से मुझ पर प्रकट नहीं किया गया है; इसलिए मैं धीरज रखूंगा ।
- 12 और मेरा इतना कहना ही पर्याप्त हो सकता है कि इन्हें एक सही उद्देश्य के लिए बचाकर रखा गया है, जो उद्देश्य परमेश्वर जानता है; क्योंकि वह अपने सभी कार्यों पर ज्ञान में सलाह देता है, और उसके मार्ग सीधे हैं और उसका मार्ग एक अनंत चक्र है ।
- 13 ओह याद रखो, मेरे बेटे हिलामन याद रखो, कि परमेश्वर की आज्ञाएं कितनी कड़ी हैं । और उसने कहा है: यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे तो तुम प्रदेश में उन्नति करोगे—परन्तु यदि तुम उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे तो तुम्हें उसकी उपस्थिति से अलग कर दिया जाएगा ।
- 14 और अब मेरे बेटे याद रखो कि परमेश्वर ने तुम्हें इन चीजों को सौंपा है जो कि पावन हैं, जिसे उसने पावन रखा है, और वह स्वयं में सही उद्देश्य के लिए इन्हें रखेगा और बचाएगा, ताकि वह अपना सामर्थ्य भावी पीढ़ियों को दिखा सके ।
- 15 और अब देखो, मैं भविष्यवाणी की आत्मा द्वारा तुमसे कहता हूं, कि यदि तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करते हो, देखो, जो ये चीजें पावन हैं उन्हें परमेश्वर के सामर्थ्य द्वारा तुमसे ले लिया जाएगा, और तुम्हें शैतान को सौंप दिया जाएगा, ताकि वह तुम्हें हवा के सामने भूसे के समान छान सके ।
- 16 परन्तु यदि तुम परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हो, और तुम इन पवित्र चीजों को वैसे ही करोगे जैसे कि प्रभु ने तुम्हें करने की आज्ञा दी है, (क्योंकि तुम्हें प्रभु से उन सारी चीजों को करने के लिए निवेदन करना चाहिए जिसे तुम्हें करना हो) देखो, धरती और नरक की कोई भी शक्ति तुमसे उन चीजों को नहीं छीन सकती है, क्योंकि अपनी सारी बातों को पूरा करने के लिए परमेश्वर सामर्थ्यवान है ।

Yea, I say unto you, were it not for these things that these records do contain, which are on these plates, Ammon and his brethren could not have convinced so many thousands of the Lamanites of the incorrect tradition of their fathers; yea, these records and their words brought them unto repentance; that is, they brought them to the knowledge of the Lord their God, and to rejoice in Jesus Christ their Redeemer.

And who knoweth but what they will be the means of bringing many thousands of them, yea, and also many thousands of our stiffnecked brethren, the Nephites, who are now hardening their hearts in sin and iniquities, to the knowledge of their Redeemer?

Now these mysteries are not yet fully made known unto me; therefore I shall forbear.

And it may suffice if I only say they are preserved for a wise purpose, which purpose is known unto God; for he doth counsel in wisdom over all his works, and his paths are straight, and his course is one eternal round.

O remember, remember, my son Helaman, how strict are the commandments of God. And he said: If ye will keep my commandments ye shall prosper in the land—but if ye keep not his commandments ye shall be cut off from his presence.

And now remember, my son, that God has entrusted you with these things, which are sacred, which he has kept sacred, and also which he will keep and preserve for a wise purpose in him, that he may show forth his power unto future generations.

And now behold, I tell you by the spirit of prophecy, that if ye transgress the commandments of God, behold, these things which are sacred shall be taken away from you by the power of God, and ye shall be delivered up unto Satan, that he may sift you as chaff before the wind.

But if ye keep the commandments of God, and do with these things which are sacred according to that which the Lord doth command you, (for you must appeal unto the Lord for all things whatsoever ye must do with them) behold, no power of earth or hell can take them from you, for God is powerful to the fulfilling of all his words.



- 17 क्योंकि वह तुमसे की गई अपनी सारी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा, क्योंकि उसने उन सारी प्रतिज्ञाओं को पूरा किया है जो उसने हमारे पूर्वजों से की थीं ।
- 18 क्योंकि उसने उनसे प्रतिज्ञा की थी कि वह स्वयं में सही उद्देश्य के लिए इन्हें बचाएगा, ताकि वह अपना सामर्थ्य भावी पीढ़ियों को दिखा सके ।
- 19 और अब देखो, एक उद्देश्य को उसने पूरा किया है, यहां तक कि कई हजार लमनाइयों को सच्चाई का ज्ञान कराया है; और उसने उनमें अपना सामर्थ्य दिखाया है, और वह उनमें अपना सामर्थ्य भावी पीढ़ियों को भी दिखाएगा; इसलिए उन्हें बचाया जाएगा ।
- 20 इसलिए मेरे बेटे हिलामन, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि मेरी सारी बातों को पूरा करने में तुम निष्ठावान रहो, और जैसा कि लिखा गया है, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने में भी निष्ठावान रहो ।
- 21 और अब, मैं उन चौबीस पट्टियों से संबंधित तुमसे बातें करूंगा, जिन्हें तुम रखोगे, कि भेद और अंधकार के कार्य, और उनके गुप्त कार्य, या उन लोगों के गुप्त कार्य जिन्हें खत्म कर दिया गया था, इन लोगों पर प्रकट किये जा सकें; हां, उनकी सारी हत्याएं और चोरी, और उनके लूट-मार, और उनकी सारी दुष्टताएं और घृणित कार्य, इन लोगों पर प्रकट किये जा सकें; हां, और यह कि तुम इन अनुवादकों को बचाकर रखोगे ।
- 22 क्योंकि देखो, प्रभु ने देखा था कि उसके लोग अंधकार में कार्य करने लगे, हां, गुप्त हत्याएं और घृणित कार्य; इसलिए प्रभु ने कहा था, यदि वे पश्चाताप नहीं करते हैं तो उन्हें धरती से नष्ट कर देना चाहिए ।
- 23 और प्रभु ने कहा था: मैं अपने सेवक गजेलम के लिए एक पत्थर बनाऊंगा जो अंधकार में भी प्रकाशित होगा, कि मैं उन लोगों को खोज सकूँ जो मेरी सेवा करेंगे, ताकि मैं उन लोगों पर उनके भाइयों के कार्य को प्रकट कर सकूँ, हां, उनके गुप्त कार्य, उनके अंधकार के कार्य, और उनकी दुष्टता और उनके घृणित कार्य को भी ।
- 24 और अब, मेरे बेटे, इन अनुवादकों को तैयार किया गया है ताकि परमेश्वर का वचन पूरा हो सके, जिसे उसने यह कहते हुए बताया था:

For he will fulfil all his promises which he shall make unto you, for he has fulfilled his promises which he has made unto our fathers.

For he promised unto them that he would preserve these things for a wise purpose in him, that he might show forth his power unto future generations.

And now behold, one purpose hath he fulfilled, even to the restoration of many thousands of the Lamanites to the knowledge of the truth; and he hath shown forth his power in them, and he will also still show forth his power in them unto future generations; therefore they shall be preserved.

Therefore I command you, my son Helaman, that ye be diligent in fulfilling all my words, and that ye be diligent in keeping the commandments of God as they are written.

And now, I will speak unto you concerning those twenty-four plates, that ye keep them, that the mysteries and the works of darkness, and their secret works, or the secret works of those people who have been destroyed, may be made manifest unto this people; yea, all their murders, and robbings, and their plunderings, and all their wickedness and abominations, may be made manifest unto this people; yea, and that ye preserve these interpreters.

For behold, the Lord saw that his people began to work in darkness, yea, work secret murders and abominations; therefore the Lord said, if they did not repent they should be destroyed from off the face of the earth.

And the Lord said: I will prepare unto my servant Gazelem, a stone, which shall shine forth in darkness unto light, that I may discover unto my people who serve me, that I may discover unto them the works of their brethren, yea, their secret works, their works of darkness, and their wickedness and abominations.

And now, my son, these interpreters were prepared that the word of God might be fulfilled, which he spake, saying:

- 25 मैं उनके सारे गुप्त और घृणित कार्यों को अंधकार से प्रकाश में लाऊंगा; और यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे तो मैं उन्हें धरती से नष्ट कर दूंगा; और मैं हर एक राष्ट्र के लिए उनके गुप्त और घृणित कार्यों को प्रकाश में लाऊंगा जिनका इस समय से आगे प्रदेश पर अधिकार होगा ।
- 26 और अब, मेरे बेटे, हम देखते हैं कि वे पश्चाताप नहीं करते हैं; इसलिए उनका विनाश हो जाता है, और अब तक परमेश्वर का वचन पूरा होता है; हां, उनके गुप्त घृणित कार्यों को अंधकार से सामने लाया जाता है और हमें ज्ञात कराया जाता है ।
- 27 और अब, मेरे बेटे, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम उनके सारे वचनों, और उनके अनुबंधों, और गुप्त घृणित कार्यों के प्रति उनकी मंजूरी को बनाए रखना; हां, उनके सारे चिन्हों और अचम्भों को इन लोगों से दूर रखो, ताकि वे उन्हें जान न सकें, नहीं तो ये लोग भी अंधकार में गिर जाएंगे और इन्हें भी नष्ट कर दिया जाएगा ।
- 28 क्योंकि देखो, इस प्रदेश पर एक श्राप है, कि परमेश्वर के सामर्थ्य के अनुसार अंधकार का कार्य करनेवालों पर विनाश आएगा, जब उनके पापों का घड़ा भर चुका होगा; इसलिए मैं चाहता हूँ कि इन लोगों का विनाश न हो ।
- 29 इसलिए, तुम्हें इन लोगों से उनके वचनों और अनुबंधों की गुप्त योजनाओं को छिपाकर रखना है, और उन्हें केवल तुम उनकी दुष्टता और उनकी हत्याओं और उनके घृणित कार्यों की जानकारी दोगे; और तुम उन्हें इस प्रकार की दुष्टता और घृणित कार्य और हत्याओं से घृणा करना सिखाओगे; और तुम उन्हें यह भी सिखाओगे कि इन लोगों का विनाश उनकी दुष्टता और घृणित कार्य और उनकी हत्याओं के कारण हुआ था ।
- 30 क्योंकि देखो, उन्होंने प्रभु के उन सभी भविष्यवक्ताओं की हत्या की थी जो उनके बीच उनके अधर्म से संबंधित घोषणा करने आए थे; और जिनकी हत्या उन्होंने की थी उनके लहू ने प्रभु अपने परमेश्वर को पुकारा था कि उन लोगों से प्रतिशोध लिया जाए जिन लोगों ने उनकी हत्या की है; और इस प्रकार अंधकार और गुप्त मेल-मिलाप के इन कार्य करनेवालों पर परमेश्वर का न्याय आया ।
- 31 हां, और वह प्रदेश और गुप्त मेल-मिलाप के उन कार्य करनेवालों पर सदा के लिए श्राप आए, यहां तक कि विनाश भी यदि उनके पापों का घड़ा भरने से पहले वे पश्चाताप नहीं करते हैं ।

I will bring forth out of darkness unto light all their secret works and their abominations; and except they repent I will destroy them from off the face of the earth; and I will bring to light all their secrets and abominations, unto every nation that shall hereafter possess the land.

And now, my son, we see that they did not repent; therefore they have been destroyed, and thus far the word of God has been fulfilled; yea, their secret abominations have been brought out of darkness and made known unto us.

And now, my son, I command you that ye retain all their oaths, and their covenants, and their agreements in their secret abominations; yea, and all their signs and their wonders ye shall keep from this people, that they know them not, lest peradventure they should fall into darkness also and be destroyed.

For behold, there is a curse upon all this land, that destruction shall come upon all those workers of darkness, according to the power of God, when they are fully ripe; therefore I desire that this people might not be destroyed.

Therefore ye shall keep these secret plans of their oaths and their covenants from this people, and only their wickedness and their murders and their abominations shall ye make known unto them; and ye shall teach them to abhor such wickedness and abominations and murders; and ye shall also teach them that these people were destroyed on account of their wickedness and abominations and their murders.

For behold, they murdered all the prophets of the Lord who came among them to declare unto them concerning their iniquities; and the blood of those whom they murdered did cry unto the Lord their God for vengeance upon those who were their murderers; and thus the judgments of God did come upon these workers of darkness and secret combinations.

Yea, and cursed be the land forever and ever unto those workers of darkness and secret combinations, even unto destruction, except they repent before they are fully ripe.

- 32 और अब, मेरे बेटे, उन बातों को याद रखो जिसे मैंने तुम्हें बताया है; इन लोगों के प्रति उन गुप्त योजनाओं पर विश्वास मत करो, परन्तु उन्हें पाप और अधर्म के प्रति सदा ईर्ष्या करना सीखाओ ।
- 33 उन्हें पश्चाताप करना, और प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करना सीखाओ; उन्हें विनम्र होना और हृदय से विनम्र और दीन होना सीखाओ; उन्हें प्रभु यीशु मसीह पर उनके विश्वास के द्वारा शैतान के हर प्रलोभन का सामना करना सीखाओ ।
- 34 उन्हें सीखाओ कि कभी भी वे अच्छे कार्यों से न थकें, परन्तु हृदय से नम्र और दीन रहें; क्योंकि इसी प्रकार के लोगों को उनकी आत्माओं में आराम मिलेगा ।
- 35 ओह, मेरे बेटे, याद रखो, और अपनी युवावस्था में ज्ञान प्राप्त करो; हां, अपनी युवावस्था में परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना सीखो ।
- 36 हां, और अपनी सहायता के लिए परमेश्वर को पुकारो; हां, तुम्हारे सारे कार्य प्रभु के लिए हों, और जहां कहीं भी तुम जाओ इसे प्रभु में होने दो; हां, अपने सारे विचार को प्रभु के प्रति निर्देशित होने दो; हां, अपने हृदय का स्नेह सदा के लिए प्रभु पर लगाए रखो ।
- 37 अपने सारे कार्यों में प्रभु से सलाह लो, और अच्छा करने के लिए वह तुम्हें निर्देश देगा; हां, जब तुम रात को सोते हो तो प्रभु में सोओ, ताकि सोते समय वह तुम्हारी रक्षा कर सके; और जब तुम सुबह उठते हो तो परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए तुम्हारा हृदय भरा होना चाहिए; और यदि तुम इन कार्यों को करते हो तो अंतिम दिन में तुम उत्कर्ष पाओगे ।
- 38 और अब, मेरे बेटे, मेरे पास उस चीज से संबंधित कुछ कहने के लिए है जिसे हमारे पूर्वज गेंद या निर्देशक कहते थे—या जिसे हमारे पूर्वज लियाहोना कहते थे, जिसकी यदि व्याख्या की जाए तो एक दिशासूचक यंत्र है; और प्रभु ने उसे बनाया था ।
- 39 और देखो, इतनी अनोखी कारीगरी कोई भी मनुष्य नहीं कर सकता है । और देखो, इसे हमारे पूर्वजों को उस मार्ग को दिखाने के लिए बनाया गया था जिस पर चलकर उन्हें निर्जन प्रदेश की यात्रा करनी थी ।
- 40 और परमेश्वर में उनके विश्वास के अनुसार इस चीज ने उनके लिए काम किया; इसलिए, मानने के लिए उनके पास विश्वास था कि जिस ओर उन्हें जाना था उसी तरफ परमेश्वर उन कांटों को धुरी पर घुमाएगा, देखो, ऐसा ही हुआ था; इसलिए उनके प्रति यह चमत्कार हुआ था, और दिन-ब-दिन परमेश्वर के सामर्थ्य द्वारा और भी कई चमत्कार हुए ।

And now, my son, remember the words which I have spoken unto you; trust not those secret plans unto this people, but teach them an everlasting hatred against sin and iniquity.

Preach unto them repentance, and faith on the Lord Jesus Christ; teach them to humble themselves and to be meek and lowly in heart; teach them to withstand every temptation of the devil, with their faith on the Lord Jesus Christ.

Teach them to never be weary of good works, but to be meek and lowly in heart; for such shall find rest to their souls.

O, remember, my son, and learn wisdom in thy youth; yea, learn in thy youth to keep the commandments of God.

Yea, and cry unto God for all thy support; yea, let all thy doings be unto the Lord, and whithersoever thou goest let it be in the Lord; yea, let all thy thoughts be directed unto the Lord; yea, let the affections of thy heart be placed upon the Lord forever.

Counsel with the Lord in all thy doings, and he will direct thee for good; yea, when thou liest down at night lie down unto the Lord, that he may watch over you in your sleep; and when thou risest in the morning let thy heart be full of thanks unto God; and if ye do these things, ye shall be lifted up at the last day.

And now, my son, I have somewhat to say concerning the thing which our fathers call a ball, or director—or our fathers called it Liahona, which is, being interpreted, a compass; and the Lord prepared it.

And behold, there cannot any man work after the manner of so curious a workmanship. And behold, it was prepared to show unto our fathers the course which they should travel in the wilderness.

And it did work for them according to their faith in God; therefore, if they had faith to believe that God could cause that those spindles should point the way they should go, behold, it was done; therefore they had this miracle, and also many other miracles wrought by the power of God, day by day.

- 41 फिर भी, क्योंकि वे चमत्कार छोटे साधन द्वारा किये गए थे तब भी वह उनके लिए महान कार्य दिखाता था। वे आलसी थे, और विश्वास और निष्ठा बढ़ाना भूल गए और फिर चमत्कार के वे कार्य बंद हो गए, और तब वे अपनी यात्रा में आगे नहीं बढ़ पाए;
- 42 इसलिए, वे निर्जन प्रदेश में ही रुक गए, या सीधी यात्रा नहीं कर पाए, और अपने उल्लंघन के कारण भूख और प्यास से पीड़ित हुए।
- 43 और अब, मेरे बेटे, मैं चाहूंगा कि तुम समझो कि ये बातें प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहतीं; क्योंकि हमारे पूर्वज इस दिशासूचक यंत्र पर ध्यान लगाने में आलसी थे (अब ये चीजें लौकिक थीं) वे समृद्ध नहीं हो पाए; ऐसा आत्मिक चीजों के साथ भी है।
- 44 क्योंकि देखो, जिस प्रकार इस दिशासूचक यंत्र पर ध्यान लगाना हमारे पूर्वजों के लिए आसान था जो कि उन्हें प्रतिज्ञा की हुई भूमि पर सीधे जाने का संकेत करता था उसी प्रकार मसीह के वचन पर ध्यान देना भी आसान है जो तुम्हें अनंत स्वर्गसुख की तरफ सीधा संकेत करता है।
- 45 और अब, मैं कहता हूं, क्या यह वैसी ही बात नहीं है? क्योंकि प्रतिज्ञा की गई भूमि के मार्ग की तरफ संकेत दिखाने के द्वारा निश्चित तौर पर यह निर्देशक हमारे पूर्वजों को वहां ले आया था, उसी प्रकार यदि हम मसीह के वचन का अनुसरण मार्ग में करेंगे तो एक बेहतर प्रतिज्ञा की हुई भूमि की तरफ वह हमें दुख की इस घाटी से आगे ले जाएगा।
- 46 हे मेरे बेटे, राह की सरलता के कारण हमें आलसी नहीं होना है; क्योंकि ऐसा ही हमारे पूर्वजों के साथ था; क्योंकि ऐसा ही उनके लिए बनाया गया था, कि यदि वे देखते तो जीवित रहते; ऐसा ही हमारे साथ है। मार्ग तैयार है, और यदि हम देखेंगे तो हम सदा के लिए जीवित रह सकते हैं।
- 47 और अब, मेरे बेटे, देखो कि तुम इन पावन बातों का ध्यान रख सको, हां, ध्यान दो कि तुम परमेश्वर की तरफ देखो और जीओ। इन लोगों के पास जाओ और वचन का प्रचार करो, और शान्त रहो। मेरे बेटे, विदा हो।

Nevertheless, because those miracles were worked by small means it did show unto them marvelous works. They were slothful, and forgot to exercise their faith and diligence and then those marvelous works ceased, and they did not progress in their journey;

Therefore, they tarried in the wilderness, or did not travel a direct course, and were afflicted with hunger and thirst, because of their transgressions.

And now, my son, I would that ye should understand that these things are not without a shadow; for as our fathers were slothful to give heed to this compass (now these things were temporal) they did not prosper; even so it is with things which are spiritual.

For behold, it is as easy to give heed to the word of Christ, which will point to you a straight course to eternal bliss, as it was for our fathers to give heed to this compass, which would point unto them a straight course to the promised land.

And now I say, is there not a type in this thing? For just as surely as this director did bring our fathers, by following its course, to the promised land, shall the words of Christ, if we follow their course, carry us beyond this vale of sorrow into a far better land of promise.

O my son, do not let us be slothful because of the easiness of the way; for so was it with our fathers; for so was it prepared for them, that if they would look they might live; even so it is with us. The way is prepared, and if we will look we may live forever.

And now, my son, see that ye take care of these sacred things, yea, see that ye look to God and live. Go unto this people and declare the word, and be sober. My son, farewell.

## अलमा 38

- 1 मेरे बेटे, मेरी बातों को ध्यान से सुनो, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, जैसा मैंने हिलामन से कहा था, कि जितना तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करोगे उतना ही प्रदेश में समृद्ध होगे; और जितना तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे तो तुम्हें परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर दिया जाएगा ।
- 2 और अब, मेरे बेटे, मैं विश्वास करता हूँ कि तुम्हारी दृढ़ता और परमेश्वर में तुम्हारी विश्वसनीयता के कारण तुममें मैं बहुत आनंदित होऊंगा; क्योंकि जैसा तुमने अपनी युवावस्था में प्रभु परमेश्वर की तरफ देखना आरंभ किया है, वैसे ही मुझे आशा है कि तुम उसकी आज्ञाओं का पालन करोगे; क्योंकि आशीषित है वह जो अंत तक सहनशील है ।
- 3 मेरे बेटे, मैं तुमसे कहता हूँ, कि तुम्हारी विश्वसनीयता और तुम्हारी निष्ठा, और तुम्हारे धैर्य और जोरामाइयों के लोगों में तुम्हारे लंबे समय तक उत्पीड़न के कारण मैं तुममें पहले से ही महान आनंदित हो चुका हूँ ।
- 4 क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम दासता में थे; हां, और मैं यह भी जानता हूँ कि वचन के लिए तुम पर पथराव किया गया था और तुमने इन सारी चीजों को धैर्य से सहा क्योंकि प्रभु तुम्हारे साथ था; और अब तुम जानते हो कि प्रभु तुम्हें सदा बचाएगा ।
- 5 और अब मेरे बेटे, शिबलोन, मैं चाहूंगा कि तुम याद रखो कि जितना तुम परमेश्वर में अपना विश्वास बनाए रखोगे उतना ही तुम्हें तुम्हारी परेशानियों, और तुम्हारे कष्टों, और तुम्हारे दुखों से बचाया जाएगा, और अंतिम दिन में तुम उत्कर्ष पाओगे ।
- 6 अब, मेरे बेटे, मैं नहीं चाहूंगा कि तुम सोचो कि मैं इन चीजों को स्वयं ही जानता हूँ, परन्तु यह प्रभु की आत्मा है जो मुझमें है जो मुझ पर इन बातों को प्रकट करती है; क्योंकि यदि मैंने परमेश्वर में जन्म नहीं लिया होता तो मुझ पर इन बातों को प्रकट नहीं किया जाता ।
- 7 परन्तु देखो, प्रभु ने अपनी महान दया में मुझे बताने के लिए एक स्वर्गदूत भेजा कि उसके लोगों के बीच में विनाश के कार्य को मुझे रोकना चाहिए; हां, और मैंने स्वर्गदूत को आमने-सामने देखा है, और उसने मुझसे बात की, और उसकी आवाज गर्जन के समान थी, और उसने पूरी पृथ्वी को हिला दिया था ।

## Alma 38

My son, give ear to my words, for I say unto you, even as I said unto Helaman, that inasmuch as ye shall keep the commandments of God ye shall prosper in the land; and inasmuch as ye will not keep the commandments of God ye shall be cut off from his presence.

And now, my son, I trust that I shall have great joy in you, because of your steadiness and your faithfulness unto God; for as you have commenced in your youth to look to the Lord your God, even so I hope that you will continue in keeping his commandments; for blessed is he that endureth to the end.

I say unto you, my son, that I have had great joy in thee already, because of thy faithfulness and thy diligence, and thy patience and thy long-suffering among the people of the Zoramites.

For I know that thou wast in bonds; yea, and I also know that thou wast stoned for the word's sake; and thou didst bear all these things with patience because the Lord was with thee; and now thou knowest that the Lord did deliver thee.

And now my son, Shiblon, I would that ye should remember, that as much as ye shall put your trust in God even so much ye shall be delivered out of your trials, and your troubles, and your afflictions, and ye shall be lifted up at the last day.

Now, my son, I would not that ye should think that I know these things of myself, but it is the Spirit of God which is in me which maketh these things known unto me; for if I had not been born of God I should not have known these things.

But behold, the Lord in his great mercy sent his angel to declare unto me that I must stop the work of destruction among his people; yea, and I have seen an angel face to face, and he spake with me, and his voice was as thunder, and it shook the whole earth.

- 8 और ऐसा हुआ कि तीन दिनों और तीन रातों तक मैं अत्याधिक पीड़ा और आत्मा की वेदना में था; और जब तक कि मैंने प्रभु यीशु मसीह को दया के लिए नहीं पुकारा तब तक मैंने अपने पापों के लिए क्षमा नहीं प्राप्त की। परन्तु देखो, मैंने उसे पुकारा और अपनी आत्मा में शांति प्राप्त की।
- 9 और अब, मेरे बेटे, मैंने तुम्हें यह बताया है कि तुम ज्ञान प्राप्त कर सको ताकि मुझ से सीखो कि मसीह के अलावा कोई और रास्ता या साधन नहीं है जिससे मनुष्य को बचाया जा सके। देखो, वह जीवन और संसार की ज्योति है। देखो, वह सच्चाई और धार्मिकता का वचन है।
- 10 और अब, जैसे कि तुमने वचन को सीखाना आरंभ कर दिया है इसलिए मैं चाहूंगा कि तुम्हें सीखाते रहना चाहिए; और मैं चाहूंगा कि तुम सारी बातों में निष्ठावान और संयमी बने रहो।
- 11 देखो कि कहीं तुम घमंड से न भर जाओ; हां, देखो कि कहीं तुम अपने ज्ञान में और न ही अपने अधिक बल पर अहंकारी हो जाओ।
- 12 साहस से काम लो, परन्तु आवश्यकता से अधिक नहीं; और यह भी देखो कि तुम अपनी उत्तेजनाओं पर काबू रख सको, कि तुम प्रेम से परिपूर्ण हो सको; देखो कि आलस को रोक सको।
- 13 जोरामाइयों के समान प्रार्थना मत करो, क्योंकि तुमने देखा है कि वो लोगों को सुनाने के लिए, और अपने ज्ञान की प्रशंसा पाने के लिए प्रार्थना करते हैं।
- 14 मत कहो, हे परमेश्वर, मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ कि हम अपने भाइयों से बेहतर हैं; परन्तु इसकी बजाय कहो: हे प्रभु, मेरी अयोग्यता को क्षमा करो, और दया में मेरे भाइयों को याद रखो—हां, हर समय परमेश्वर के समाने अपनी अयोग्यता को स्वीकार करो।
- 15 और प्रभु तुम्हारी आत्मा को आशीषित करे, और शांति से रहने के लिए अंतिम दिन में तुम्हें अपने राज्य में प्राप्त करे। अब जाओ, मेरे बेटे, और इन लोगों को वचन सिखाओ। शान्त रहो। मेरे बेटे, विदा हो।

And it came to pass that I was three days and three nights in the most bitter pain and anguish of soul; and never, until I did cry out unto the Lord Jesus Christ for mercy, did I receive a remission of my sins. But behold, I did cry unto him and I did find peace to my soul.

And now, my son, I have told you this that ye may learn wisdom, that ye may learn of me that there is no other way or means whereby man can be saved, only in and through Christ. Behold, he is the life and the light of the world. Behold, he is the word of truth and righteousness.

And now, as ye have begun to teach the word even so I would that ye should continue to teach; and I would that ye would be diligent and temperate in all things.

See that ye are not lifted up unto pride; yea, see that ye do not boast in your own wisdom, nor of your much strength.

Use boldness, but not overbearance; and also see that ye bridle all your passions, that ye may be filled with love; see that ye refrain from idleness.

Do not pray as the Zoramites do, for ye have seen that they pray to be heard of men, and to be praised for their wisdom.

Do not say: O God, I thank thee that we are better than our brethren; but rather say: O Lord, forgive my unworthiness, and remember my brethren in mercy—yea, acknowledge your unworthiness before God at all times.

And may the Lord bless your soul, and receive you at the last day into his kingdom, to sit down in peace. Now go, my son, and teach the word unto this people. Be sober. My son, farewell.

## अलमा 39

- 1 और अब, मेरे बेटे, मैंने जो तुम्हारे भाई से कहा है उसके अलावा मुझे तुमसे कुछ और कहना है; क्योंकि देखो, परमेश्वर की आज्ञाओं के पालन के प्रति क्या तुमने अपने भाई की दृढ़ता, उसकी विश्वसनीयता, और उसकी निष्ठा को नहीं देखा है ? देखो, क्या उसने तुम्हारे लिए एक अच्छा उदाहरण नहीं रखा है ?
- 2 क्योंकि जोरामाई लोगों के बीच, तुमने मेरी बातों को उतने ध्यान से नहीं सुना है जितना तुम्हारे भाई ने सुना है । अब यही है जो मैं तुम्हारे विरुद्ध कहना चाहता हूँ; तुम अपने बल और अपने ज्ञान में अहंकारी हो गए हो ।
- 3 और मेरे बेटे, इतना ही नहीं । तुमने वो किया है जिससे मुझे बहुत दुख पहुंचा है; क्योंकि तुमने धार्मिकता का काम छोड़ दिया है, और तुम वेश्या इसाबेल के पीछे-पीछे लमनाइयों की सीमाओं के बीच सिरोन प्रदेश गए थे ।
- 4 हां, उसने कई लोगों के मन को चुराया है; परन्तु मेरे बेटे, तुम्हारे लिए यह कोई बहाना नहीं हो सकता । तुम्हें धार्मिकता के उस काम में लगे रहना चाहिए था जिसे तुम्हें सौंपा गया है ।
- 5 मेरे बेटे, क्या तुम नहीं जानते कि ये बातें प्रभु की नजर में घृणित हैं; हां, किसी मासूम का लहू बहाने या पवित्र आत्मा को अस्वीकार करने के अलावा यह सारे पापों से बड़ा पाप है ?
- 6 क्योंकि देखो, पवित्र आत्मा को प्राप्त करने के पश्चात यदि तुम उसे अस्वीकार करते हो, और तुम जानते हो कि तुमने उसे अस्वीकार किया है, देखो, तब यह पाप क्षमा योग्य नहीं है; हां, और जो कोई भी परमेश्वर के प्रकाश और ज्ञान के विरुद्ध हत्या करता है, क्षमा प्राप्त करना उसके लिए आसान नहीं होता है; हां, मैं तुमसे कहता हूँ, मेरे बेटे, कि क्षमा प्राप्त करना उसके लिए आसान नहीं होता है ।
- 7 और अब, मेरे बेटे, मैं परमेश्वर से कामना करूंगा कि इतने बड़े अपराध के लिए तुम्हें दोषी न ठहराया जाता । यदि यह तुम्हारी भलाई के लिए नहीं होता तो तुम्हारी आत्मा को दुख देने के लिए मैं तुम्हारे पापों में भागीदार नहीं होता ।
- 8 परन्तु देखो, तुम अपने अपराधों को परमेश्वर से छुपा नहीं सकते; और यदि तुम पश्चाताप नहीं करते हो तो वे अंतिम दिन में तुम्हारे विरुद्ध गवाही के रूप में खड़े होंगे ।

## Alma 39

And now, my son, I have somewhat more to say unto thee than what I said unto thy brother; for behold, have ye not observed the steadiness of thy brother, his faithfulness, and his diligence in keeping the commandments of God? Behold, has he not set a good example for thee?

For thou didst not give so much heed unto my words as did thy brother, among the people of the Zoramites. Now this is what I have against thee; thou didst go on unto boasting in thy strength and thy wisdom.

And this is not all, my son. Thou didst do that which was grievous unto me; for thou didst forsake the ministry, and did go over into the land of Siron among the borders of the Lamanites, after the harlot Isabel.

Yea, she did steal away the hearts of many; but this was no excuse for thee, my son. Thou shouldst have tended to the ministry wherewith thou wast entrusted.

Know ye not, my son, that these things are an abomination in the sight of the Lord; yea, most abominable above all sins save it be the shedding of innocent blood or denying the Holy Ghost?

For behold, if ye deny the Holy Ghost when it once has had place in you, and ye know that ye deny it, behold, this is a sin which is unpardonable; yea, and whosoever murdereth against the light and knowledge of God, it is not easy for him to obtain forgiveness; yea, I say unto you, my son, that it is not easy for him to obtain a forgiveness.

And now, my son, I would to God that ye had not been guilty of so great a crime. I would not dwell upon your crimes, to harrow up your soul, if it were not for your good.

But behold, ye cannot hide your crimes from God; and except ye repent they will stand as a testimony against you at the last day.

- 9 अब मेरे बेटे, मैं चाहूंगा कि तुम्हें पश्चाताप करना चाहिए और अपने पापों को छोड़ देना चाहिए, और जो तुम्हारी आंखों को लालच दे उन वस्तुओं के पीछे मत भागो, परन्तु स्वयं को इन सब चीजों से दूर रखो; क्योंकि यदि तुम ऐसा नहीं करते हो तो तुम परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकारी नहीं हो सकते। ओह, याद रखो, और इसे ग्रहण करो, और स्वयं को इन सब चीजों से दूर रखो।
- 10 और मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि अपने कार्यों में अपने बड़े भाइयों से सलाह-मशवरा किया करो; क्योंकि देखो, तुम अपनी युवावस्था में हो, और तुम्हें तुम्हारे भाइयों से सीखने की आवश्यकता है। और उनकी सलाह पर ध्यान दो।
- 11 किसी भी व्यर्थ या मूर्ख बातों में स्वयं को न पड़ने दो; फिर से उन दुष्ट वेश्याओं पर शैतान द्वारा अपने मन को न लगने दो। देखो, हे मेरे बेटे, जोरामाइयों पर तुम कितनी महान अधर्म लाए हो; क्योंकि जब उन्होंने तुम्हारे आचरण को देखा तब मेरी बातों पर विश्वास नहीं किया।
- 12 और अब प्रभु की आत्मा मुझसे कहती है: अपने बच्चों को भलाई करने की आज्ञा दो, नहीं तो वे कई लोगों के हृदय को विनाश की तरफ ले जाएंगे; इसलिए मेरे बेटे, परमेश्वर के डर में मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि अपने अधर्मों से दूर रहो;
- 13 कि तुम अपने मन, पराक्रम, और बल से प्रभु की तरफ हो जाओ; ताकि दुष्टता की तरफ और अधिक हृदयों को न ले जा सको; परन्तु इसकी बजाय उनका मन फिराओ, और अपनी गलतियों को स्वीकार करो और उन अपराधों को भी जिन्हें तुमने किया है।
- 14 धन-संपत्ति और संसार की व्यर्थ की चीजों के पीछे मत जाओ; क्योंकि देखो, तुम उन्हें अपने साथ लेकर नहीं जा सकते।
- 15 और अब, मेरे बेटे, मैं मसीह के आगमन से संबंधित कुछ बातें बताना चाहूंगा। देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि संसार के पापों को हरने के लिए वह निश्चित रूप से आएगा; हां, वह अपने लोगों को उद्धार का सुसमाचार सुनाने आएगा।
- 16 और अब, मेरे बेटे, यही वह कार्य था जिसके लिए तुम्हें बुलाया गया था, इन लोगों को इस सुसमाचार को सुनाने के लिए, उनके मन को तैयार करने के लिए; या इसकी बजाय उन पर उद्धार लाने के लिए, ताकि उसके आगमन पर वचन सुनाने के प्रति वे उनके बच्चों के मन को तैयार कर सकें।

Now my son, I would that ye should repent and forsake your sins, and go no more after the lusts of your eyes, but cross yourself in all these things; for except ye do this ye can in nowise inherit the kingdom of God. Oh, remember, and take it upon you, and cross yourself in these things.

And I command you to take it upon you to counsel with your elder brothers in your undertakings; for behold, thou art in thy youth, and ye stand in need to be nourished by your brothers. And give heed to their counsel.

Suffer not yourself to be led away by any vain or foolish thing; suffer not the devil to lead away your heart again after those wicked harlots. Behold, O my son, how great iniquity ye brought upon the Zoramites; for when they saw your conduct they would not believe in my words.

And now the Spirit of the Lord doth say unto me: Command thy children to do good, lest they lead away the hearts of many people to destruction; therefore I command you, my son, in the fear of God, that ye refrain from your iniquities;

That ye turn to the Lord with all your mind, might, and strength; that ye lead away the hearts of no more to do wickedly; but rather return unto them, and acknowledge your faults and that wrong which ye have done.

Seek not after riches nor the vain things of this world; for behold, you cannot carry them with you.

And now, my son, I would say somewhat unto you concerning the coming of Christ. Behold, I say unto you, that it is he that surely shall come to take away the sins of the world; yea, he cometh to declare glad tidings of salvation unto his people.

And now, my son, this was the ministry unto which ye were called, to declare these glad tidings unto this people, to prepare their minds; or rather that salvation might come unto them, that they may prepare the minds of their children to hear the word at the time of his coming.



17 और अब इस विषय पर मैं तुम्हारे मन को कुछ हलका करूंगा । देखो, तुम्हें आश्चर्य हो रहा होगा कि इन चीजों को इतनी जल्दी क्यों जानना चाहिए । देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, क्या इस समय के लोग परमेश्वर के लिए अनमोल नहीं हैं जितने कि उसके आगमन के समय के लोग होंगे ?

18 क्या यह आवश्यक नहीं है कि मुक्ति की योजना की जानकारी इन लोगों को और उनके बच्चों को भी देनी चाहिए ?

19 इन सुसमाचारों को हमें और हमारे बच्चों को सुनाने के लिए, या उसके आगमन के पश्चात सुनाने के लिए, क्या इस समय प्रभु के लिए अपना स्वर्गदूत भेजना आसान नहीं है ?

And now I will ease your mind somewhat on this subject. Behold, you marvel why these things should be known so long beforehand. Behold, I say unto you, is not a soul at this time as precious unto God as a soul will be at the time of his coming?

Is it not as necessary that the plan of redemption should be made known unto this people as well as unto their children?

Is it not as easy at this time for the Lord to send his angel to declare these glad tidings unto us as unto our children, or as after the time of his coming?

## अलमा 40

- 1 अब मेरे बेटे, मैं तुमसे इससे भी अधिक कुछ और कहना चाहता हूँ; क्योंकि मैं समझता हूँ कि मेरे हुए लोगों के पुनरुत्थान के विषय पर तुम्हारा मन चिंतित है।
- 2 देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, कि कोई पुनरुत्थान नहीं है—या, दूसरे शब्दों में मैं कहूँगा कि नश्वर अमरत्व प्राप्त नहीं करता है, यह भ्रष्टता शुद्धता में परिवर्तित नहीं होती है—तब तक जब तक कि मसीह का आगमन नहीं होता है।
- 3 देखो, वह मेरे हुए लोगों पर पुनरुत्थान लाता है। परन्तु देखो, मेरे बेटे, पुनरुत्थान अभी नहीं आया है। अब, यद्यपि कई भेद हैं जिसे छुपाकर रखा गया है और जिसे परमेश्वर के अलावा कोई भी नहीं जानता, पर मैं तुम्हें एक रहस्य की बात बताता हूँ। परन्तु मैं तुम्हें एक चीज दिखाता हूँ जिसे मैंने परमेश्वर से निष्ठापूर्वक प्रार्थना कर पूछताछ की है ताकि मैं जान सकूँ—जो कि पुनरुत्थान से संबंधित है।
- 4 देखो, एक समय निर्धारित किया गया है जब सब मृत लोगों को जीवित किया जाएगा। अब, यह समय कब आएगा कोई नहीं जानता है; परन्तु निर्धारित किये हुए समय के बारे में परमेश्वर जानता है।
- 5 अब, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मनुष्य मृत लोगों में से एक बार, दो बार, या तीन बार जीवित किये जाएंगे; क्योंकि परमेश्वर इन सारी बातों को जानता है; और मेरे लिए इतना जानना पर्याप्त है कि ऐसा ही है—कि एक समय निर्धारित किया गया है जब सारे लोग मृत्यु से जी उठेंगे।
- 6 अब मृत्यु के समय और पुनरुत्थान के समय के बीच में दूरी होना आवश्यक है।
- 7 और अब मैं पूछताछ करूँगा कि मृत्यु के समय से लेकर निर्धारित किये गए पुनरुत्थान के समय तक लोगों की आत्माओं का क्या होता है?
- 8 अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मनुष्यों के जीवित होने के लिए निर्धारित किया गया समय एक हो या उससे अधिक; क्योंकि सभी की मृत्यु एक समय पर नहीं होती है; सभी समय परमेश्वर के लिए एक समान है, और समय का नापतोल केवल मनुष्य के लिए ही है।

## Alma 40

Now my son, here is somewhat more I would say unto thee; for I perceive that thy mind is worried concerning the resurrection of the dead.

Behold, I say unto you, that there is no resurrection—or, I would say, in other words, that this mortal does not put on immortality, this corruption does not put on incorruption—until after the coming of Christ.

Behold, he bringeth to pass the resurrection of the dead. But behold, my son, the resurrection is not yet. Now, I unfold unto you a mystery; nevertheless, there are many mysteries which are kept, that no one knoweth them save God himself. But I show unto you one thing which I have inquired diligently of God that I might know—that is concerning the resurrection.

Behold, there is a time appointed that all shall come forth from the dead. Now when this time cometh no one knows; but God knoweth the time which is appointed.

Now, whether there shall be one time, or a second time, or a third time, that men shall come forth from the dead, it mattereth not; for God knoweth all these things; and it sufficeth me to know that this is the case—that there is a time appointed that all shall rise from the dead.

Now there must needs be a space betwixt the time of death and the time of the resurrection.

And now I would inquire what becometh of the souls of men from this time of death to the time appointed for the resurrection?

Now whether there is more than one time appointed for men to rise it mattereth not; for all do not die at once, and this mattereth not; all is as one day with God, and time only is measured unto men.

- 9 इसलिए, मनुष्यों के लिए एक समय निर्धारित किया गया है जब उन्हें मृत्यु से जीवित किया जाएगा; और मृत्यु के समय और पुनरुत्थान के समय के बीच में दूरी है। और अब, समय की इस दूरी से संबंधित, मनुष्य की आत्माओं का क्या होता है, यही वह बात है जिसके विषय में जानने के लिए मैंने प्रभु से निष्ठापूर्वक पूछताछ की है; और यही वह बात है जिसके बारे में मैं जानता हूँ।
- 10 और जब समय आएगा जब सारे लोग जीवित हो उठेंगे, तब वे जानेंगे कि परमेश्वर सारे समय को जानता है जिसे मनुष्यों के लिए निर्धारित किया गया है।
- 11 अब, मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच में आत्मा की दशा से संबंधित—देखो, इसकी जानकारी मुझे एक स्वर्गदूत द्वारा दी गई है, कि इस नश्वर शरीर से अलग होने के शीघ्र पश्चात्, सारे मनुष्यों की आत्माएं चाहे वे अच्छी हों या बुरी, उस परमेश्वर के पास ले जायी जाती हैं जिसने उन्हें जीवन दिया था।
- 12 और फिर ऐसा होगा, कि धर्मी लोगों की आत्माओं को प्रसन्नता की दशा में रखा जाएगा, जिसे स्वर्गधाम कहते हैं, आराम की एक दशा, शांति की एक दशा, जहां वे अपनी सारी परेशानियों, सारी जिम्मेदारियों, और सारे दुखों से आराम करेंगे।
- 13 और फिर ऐसा होगा कि दुष्ट लोगों की आत्माएं, हां, जो कि बुरी हैं—क्योंकि देखो, उनमें प्रभु की आत्मा का कोई भी भाग नहीं है; क्योंकि देखो, उन्होंने अच्छाई की बजाय बुराई को चुना था; इसलिए शैतान की आत्मा ने उनमें प्रवेश किया, और उनके घर पर कब्जा कर लिया—और उन्हें बाहरी अंधकार में ढकेल दिया जाएगा; वहां रोना-धोना होगा, और दर्दनाक आवाजें आएंगी, और दांतों का किचकिचाना होगा, और ऐसा शैतान की इच्छा के अधीन होकर उनकी स्वयं के अधर्म के कारण होगा।
- 14 अब दुष्ट लोगों की आत्माओं की यही दशा है, हां, अंधकार में, और डरावनी दशा में, अपने ऊपर परमेश्वर के क्रोध के अग्निमय रोष की तरफ डर से देखते हुए; इस प्रकार उनके पुनरुत्थान के समय तक वे इसी दशा में रहेंगे और धर्मी लोग स्वर्गधाम में रहेंगे।
- 15 अब, कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने समझ लिया है कि पुनरुत्थान के पहले, प्रसन्नता की यह दशा और आत्मा के विपदा की यह दशा पहला पुनरुत्थान था। हां, मैं मानता हूँ कि जो बातें बताई गई हैं उसके अनुसार इसे पुनरुत्थान कहा जा सकता है, आत्मा या प्राण का वापस लाया जाना और प्रसन्नता या विपदा में जाना कहा जा सकता है।

Therefore, there is a time appointed unto men that they shall rise from the dead; and there is a space between the time of death and the resurrection. And now, concerning this space of time, what becometh of the souls of men is the thing which I have inquired diligently of the Lord to know; and this is the thing of which I do know.

And when the time cometh when all shall rise, then shall they know that God knoweth all the times which are appointed unto man.

Now, concerning the state of the soul between death and the resurrection—Behold, it has been made known unto me by an angel, that the spirits of all men, as soon as they are departed from this mortal body, yea, the spirits of all men, whether they be good or evil, are taken home to that God who gave them life.

And then shall it come to pass, that the spirits of those who are righteous are received into a state of happiness, which is called paradise, a state of rest, a state of peace, where they shall rest from all their troubles and from all care, and sorrow.

And then shall it come to pass, that the spirits of the wicked, yea, who are evil—for behold, they have no part nor portion of the Spirit of the Lord; for behold, they chose evil works rather than good; therefore the spirit of the devil did enter into them, and take possession of their house—and these shall be cast out into outer darkness; there shall be weeping, and wailing, and gnashing of teeth, and this because of their own iniquity, being led captive by the will of the devil.

Now this is the state of the souls of the wicked, yea, in darkness, and a state of awful, fearful looking for the fiery indignation of the wrath of God upon them; thus they remain in this state, as well as the righteous in paradise, until the time of their resurrection.

Now, there are some that have understood that this state of happiness and this state of misery of the soul, before the resurrection, was a first resurrection. Yea, I admit it may be termed a resurrection, the raising of the spirit or the soul and their consignment to happiness or misery, according to the words which have been spoken.

16 और देखो, फिर से इसे बताया गया है कि पहला पुनरुत्थान है, मेरे हुए लोगों से मसीह के पुनरुत्थान तक उन सभी का पुनरुत्थान जो जीवित रहे हैं, या जो जीवित हैं, या जो जीवित होंगे।

17 अब, हम नहीं मानते हैं कि यह पहला पुनरुत्थान है जिसके बारे में इस प्रकार बताया गया है, वो आत्माओं का पुनरुत्थान और प्रसन्नता या उनकी विपदाओं का भुगतान हो सकता है। तुम यह नहीं मान सकते कि यही इसका अर्थ है।

18 देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं; परन्तु इसका अर्थ है कि आदम के समय से लेकर मसीह के पुनरुत्थान तक सारे लोगों के शरीरों और आत्माओं का फिर से मिलना।

19 अब, मैं नहीं कहता कि जिन दुष्ट और धर्मी लोगों के विषय में बताया गया है उनके शरीर और आत्मा का मिलन एक साथ होगा या नहीं; मेरे लिए इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि वे सब मिलेंगे; या अन्य शब्दों में, उन लोगों का पुनरुत्थान उनसे पहले होगा जो मसीह के पुनरुत्थान के पश्चात मरेंगे।

20 अब, मेरे बेटे, मैं यह नहीं कहता कि उनका पुनरुत्थान मसीह के पुनरुत्थान के साथ होगा; परन्तु देखो, मैं अपनी राय देता हूँ, कि मसीह के पुनरुत्थान और उसके स्वर्गारोहण के समय धर्मी लोगों की आत्मा और शरीर का मिलन होगा।

21 परन्तु ऐसा उसके पुनरुत्थान के समय होगा या उसके पश्चात, मैं नहीं कह सकता; परन्तु मैं इतना कहता हूँ कि मृत्यु और शरीर के जी उठने के बीच में समय है, और प्रसन्नता या दुख में आत्मा की दशा से लेकर परमेश्वर ने जो समय निर्धारित किया है, कि मरे हुए लोग जी उठेंगे, और आत्मा और शरीर दोनों का मिलन होगा, और परमेश्वर के सामने लाए जाएंगे, और अपने कर्मों के अनुसार न्याय पाएंगे।

22 हां, यह उन सारी चीजों को पुनःस्थापित करेगा जिसके विषय में भविष्यवक्ताओं ने बताया है।

23 आत्मा शरीर से मिलेगी, और शरीर आत्मा से; हां, और प्रत्येक अंग और जोड़ के साथ शरीर पहले जैसा हो जाएगा; हां, यहां तक सिर का एक बाल भी नष्ट नहीं होगा; परन्तु सारी चीजें उचित और पूर्ण ढांचे में पुनःस्थापित हो जाएंगी।

24 और अब, मेरे बेटे, यही वह पुनःस्थापना है जिसके विषय में भविष्यवक्ताओं ने बताया है—

25 और फिर धर्मी लोग परमेश्वर के राज्य में जगमगाएंगे।

And behold, again it hath been spoken, that there is a first resurrection, a resurrection of all those who have been, or who are, or who shall be, down to the resurrection of Christ from the dead.

Now, we do not suppose that this first resurrection, which is spoken of in this manner, can be the resurrection of the souls and their consignment to happiness or misery. Ye cannot suppose that this is what it meaneth.

Behold, I say unto you, Nay; but it meaneth the reuniting of the soul with the body, of those from the days of Adam down to the resurrection of Christ.

Now, whether the souls and the bodies of those of whom has been spoken shall all be reunited at once, the wicked as well as the righteous, I do not say; let it suffice, that I say that they all come forth; or in other words, their resurrection cometh to pass before the resurrection of those who die after the resurrection of Christ.

Now, my son, I do not say that their resurrection cometh at the resurrection of Christ; but behold, I give it as my opinion, that the souls and the bodies are reunited, of the righteous, at the resurrection of Christ, and his ascension into heaven.

But whether it be at his resurrection or after, I do not say; but this much I say, that there is a space between death and the resurrection of the body, and a state of the soul in happiness or in misery until the time which is appointed of God that the dead shall come forth, and be reunited, both soul and body, and be brought to stand before God, and be judged according to their works.

Yea, this bringeth about the restoration of those things of which has been spoken by the mouths of the prophets.

The soul shall be restored to the body, and the body to the soul; yea, and every limb and joint shall be restored to its body; yea, even a hair of the head shall not be lost; but all things shall be restored to their proper and perfect frame.

And now, my son, this is the restoration of which has been spoken by the mouths of the prophets—

And then shall the righteous shine forth in the kingdom of God.

26 परन्तु देखो, दुष्ट लोगों पर डरावनी मृत्यु आती है; क्योंकि धार्मिकता की बातों के लिए वे मृतक के समान होते हैं; क्योंकि वे अशुद्ध हैं, और कोई भी अशुद्ध वस्तु परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकारी नहीं हो सकती है; परन्तु उन्हें निकाल दिया जाता है, और अपनी मेहनत या अपने कर्मों के फलस्वरूप वे भुगतान करते हैं जिनके कर्म बुरे होते हैं; और वे कड़वे प्याले का मल पीते हैं ।

But behold, an awful death cometh upon the wicked; for they die as to things pertaining to things of righteousness; for they are unclean, and no unclean thing can inherit the kingdom of God; but they are cast out, and consigned to partake of the fruits of their labors or their works, which have been evil; and they drink the dregs of a bitter cup.

## अलमा 41

- 1 और अब, मेरे बेटे, मेरे पास उस पुनःस्थापना के संबंध में तुमसे कहने के लिए कुछ है जिसके विषय में बताया गया है; क्योंकि देखो, कुछ लोगों ने धर्मशास्त्रों को बदल दिया है, और इसके कारण पथभ्रष्ट हो गए हैं। और मेरे विचार से इस बात से संबंधित मैं भी चिन्तित हूँ। परन्तु देखो, मैं तुम्हें इसे समझाऊंगा।
- 2 मैं तुमसे कहता हूँ, मेरे बेटे, कि परमेश्वर के न्याय के साथ-साथ पुनःस्थापना की योजना आवश्यक है; क्योंकि यह आवश्यक है कि सभी चीजों को उनके उचित क्रम में पुनःस्थापित किया जाए। देखो, मसीह के सामर्थ्य और पुनरुत्थान के अनुसार यह आवश्यक और न्यायपूर्ण है, कि मनुष्य की आत्मा उसके शरीर से मिले, और यह कि शरीर का हर भाग पहले जैसा ही हो।
- 3 और परमेश्वर के न्याय के साथ-साथ यह आवश्यक है कि लोगों का न्याय उनके कर्मों के अनुसार होना चाहिए; और यदि उनके कार्य इस जीवन में अच्छे होते हैं, और उनके हृदय की इच्छाएं भली होती हैं तो अंतिम दिन पर उनकी पुनःस्थापना भी अच्छी ही होनी चाहिए।
- 4 और यदि उनके कार्य बुरे होते हैं तो उनकी पुनःस्थापना भी बुराई के लिए होगी। इसलिए, सारी चीजों को उनके उचित क्रम में पुनःस्थापित किया जाएगा, हर चीज को उसके स्वाभाविक ढांचों में—नश्वरता को अमरत्व में, भ्रष्टता को शुद्धता में—एक हाथ की तरफ परमेश्वर के राज्य में अंतहीन प्रसन्नता के उत्तराधिकार को, या दूसरे हाथ की तरफ शैतान के राज्य में अंतहीन दुख के उत्तराधिकार को पुनःस्थापित किया जाएगा।
- 5 वह जो अपनी प्रसन्नता की इच्छा के अनुसार प्रसन्नता में, या अपनी भलाई की इच्छा के अनुसार भलाई में पुनःस्थापित किया जाता है; और दूसरा जो अपनी बुराई की इच्छा के अनुसार बुराई में: क्योंकि उसने पूरा जीवन बुरा ही करने की इच्छा की है इसलिए जब अंधकार होगा तब उसे बुराई का ही पुरस्कार मिलेगा।
- 6 और इसलिए ऐसा ही दूसरी तरफ होगा। यदि उसने अपने पापों का पश्चाताप किया होगा, और अपने अंतिम दिन तक धार्मिकता की इच्छा की होगी, तो उसे भी धार्मिकता का पुरस्कार मिलेगा।
- 7 ये वे लोग हैं जो प्रभु में मुक्ति पाते हैं; हां, ये वे लोग हैं जिन्हें बाहर निकाला जाता है, जिन्हें उस अंतहीन अंधकार की रात से बचाया जाता है; और इस प्रकार वे या तो डटे रहते हैं या गिर जाते हैं; क्योंकि देखो, वे अपने स्वयं के न्यायी हैं, चाहे भलाई करना हो या बुराई।

## Alma 41

And now, my son, I have somewhat to say concerning the restoration of which has been spoken; for behold, some have wrested the scriptures, and have gone far astray because of this thing. And I perceive that thy mind has been worried also concerning this thing. But behold, I will explain it unto thee.

I say unto thee, my son, that the plan of restoration is requisite with the justice of God; for it is requisite that all things should be restored to their proper order. Behold, it is requisite and just, according to the power and resurrection of Christ, that the soul of man should be restored to its body, and that every part of the body should be restored to itself.

And it is requisite with the justice of God that men should be judged according to their works; and if their works were good in this life, and the desires of their hearts were good, that they should also, at the last day, be restored unto that which is good.

And if their works are evil they shall be restored unto them for evil. Therefore, all things shall be restored to their proper order, every thing to its natural frame—mortality raised to immortality, corruption to incorruption—raised to endless happiness to inherit the kingdom of God, or to endless misery to inherit the kingdom of the devil, the one on one hand, the other on the other—

The one raised to happiness according to his desires of happiness, or good according to his desires of good; and the other to evil according to his desires of evil; for as he has desired to do evil all the day long even so shall he have his reward of evil when the night cometh.

And so it is on the other hand. If he hath repented of his sins, and desired righteousness until the end of his days, even so he shall be rewarded unto righteousness.

These are they that are redeemed of the Lord; yea, these are they that are taken out, that are delivered from that endless night of darkness; and thus they stand or fall; for behold, they are their own judges, whether to do good or do evil.

- 8 अब, परमेश्वर के नियम अपरिवर्तनीय हैं; इसलिए, मार्ग तैयार किया गया है ताकि जो कोई भी उस पर चले उसे बचाया जा सके ।
- 9 और अब देखो, मेरे बेटे, सिद्धान्त की उन बातों पर अपने परमेश्वर के विरुद्ध एक और अपराध करने की भूल मत करना, जैसा कि अब तक तुमने पाप करने का साहस किया है ।
- 10 मत मानो, क्योंकि ऐसा पुनःस्थापना से संबंधित कहा गया है, कि तुम्हें वापस पाप से प्रसन्नता में लाया जाएगा । देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, दुष्टता कभी भी प्रसन्नता नहीं थी ।
- 11 और अब, मेरे बेटे, वे सारे लोग जो स्वाभाविक दशा में हैं, या मैं कहूँगा कि एक शारीरिक अवस्था में हैं, वे कटुता में सताए जा रहे हैं और अनैतिकता की दासता में हैं; वे संसार में बिना परमेश्वर के हैं, और वे परमेश्वर के स्वभाव के विरुद्ध हो गए हैं; इसलिए, वे प्रसन्नता के स्वभाव के विरुद्ध हैं ।
- 12 और अब देखो, क्या शब्द पुनःस्थापना का अर्थ है कि किसी भी स्वाभाविक अवस्था की चीज को लेकर उसे एक अस्वाभाविक अवस्था में रखना, या उसे उसके स्वाभाविक अवस्था के विपरित लाना ?
- 13 हे मेरे बेटे, यह ऐसा नहीं है; परन्तु शब्द पुनःस्थापना का अर्थ है कि फिर से जो बुरा है उसके लिए बुराई लाना, या भौतिक शरीर के लिए शरीर लाना, या दुराचारी के लिए दुराचार लाना—जो अच्छा है उसके लिए अच्छाई लाना; जो धार्मिक है उसके लिए धार्मिकता लाना; जो न्यायी है उसके लिए न्याय लाना; जो दयालु है उसके लिए दया लाना ।
- 14 इसलिए, मेरे बेटे, देखो कि तुम अपने भाइयों के लिए दयालु रहो; न्यायपूर्ण कार्य करो, नेकता से न्याय करो, और निरंतर अच्छाई करते रहो; और यदि तुम इन सारी बातों को मानते हो तो तुम्हें तुम्हारा पुरस्कार मिलेगा; हां, तुम पर फिर से दया की जाएगी; तुम पर फिर से न्याय किया जाएगा; तुम पर फिर से नेकता से न्याय किया जाएगा; और तुम्हें फिर से अच्छा पुरस्कार मिलेगा ।
- 15 क्योंकि जो तुम करते हो वही फिर से तुम पर वापस आएगा, और पहले जैसा हो जाएगा; इसलिए, शब्द पुनःस्थापना पूरी तरह से पापी की निंदा करता है, और उसे बिल्कुल भी उचित नहीं ठहराता है ।

Now, the decrees of God are unalterable; therefore, the way is prepared that whosoever will may walk therein and be saved.

And now behold, my son, do not risk one more offense against your God upon those points of doctrine, which ye have hitherto risked to commit sin.

Do not suppose, because it has been spoken concerning restoration, that ye shall be restored from sin to happiness. Behold, I say unto you, wickedness never was happiness.

And now, my son, all men that are in a state of nature, or I would say, in a carnal state, are in the gall of bitterness and in the bonds of iniquity; they are without God in the world, and they have gone contrary to the nature of God; therefore, they are in a state contrary to the nature of happiness.

And now behold, is the meaning of the word restoration to take a thing of a natural state and place it in an unnatural state, or to place it in a state opposite to its nature?

O, my son, this is not the case; but the meaning of the word restoration is to bring back again evil for evil, or carnal for carnal, or devilish for devilish—good for that which is good; righteous for that which is righteous; just for that which is just; merciful for that which is merciful.

Therefore, my son, see that you are merciful unto your brethren; deal justly, judge righteously, and do good continually; and if ye do all these things then shall ye receive your reward; yea, ye shall have mercy restored unto you again; ye shall have justice restored unto you again; ye shall have a righteous judgment restored unto you again; and ye shall have good rewarded unto you again.

For that which ye do send out shall return unto you again, and be restored; therefore, the word restoration more fully condemneth the sinner, and justifieth him not at all.

## अलमा 42

- 1 और अब, मेरे बेटे, मुझे ऐसा लगता है कि कुछ और है जो तुम्हें चिन्तित किये हुए है, जिसे तुम समझ नहीं सकते—जो कि पापियों की सजा के प्रति परमेश्वर के न्याय से संबंधित है; क्योंकि तुम यह मानने का प्रयास करते हो कि पापी को दुर्गति की दशा में लाना अन्याय है।
- 2 अब देखो, मेरे बेटे, मैं तुम्हें यह बात समझाऊंगा। क्योंकि देखो, जब प्रभु परमेश्वर ने हमारे पहले माता-पिता को अदन की वाटिका से जमीन जोतने के लिए भेजा था, वहां से वे ले जाए गए—हां, उसने पुरुष को निकाल दिया, और अदन की वाटिका के पूर्वी छोर पर जीवन के वृक्ष की रक्षा करने के लिए केरुबीम और जलती हुई तलवार रखी जो चारों तरफ घुमती थी।
- 3 अब, हम देखते हैं कि अच्छे और बुरे का ज्ञान प्राप्त करते हुए पुरुष परमेश्वर के समान बन गया था; और इससे पहले कि उसके हाथ जीवन के वृक्ष की तरफ बढ़ पाते, और वह उसे खाकर सदा के लिए जीवित रहता, प्रभु परमेश्वर ने केरुबीम और जलती हुई तलवार रख दी, ताकि वह उसका फल न खा सके।
- 4 और इस प्रकार हम देखते हैं कि पश्चाताप करने के लिए मनुष्य को एक समय दिया गया था, हां, परीक्षा का एक समय, पश्चाताप करने का और परमेश्वर की सेवा करने का एक समय।
- 5 क्योंकि देखो, यदि शीघ्र ही आदम ने अपना हाथ आगे बढ़ा लिया होता, और जीवन के वृक्ष का फल खा लिया होता, तो परमेश्वर के वचन के अनुसार, पश्चाताप न करते हुए वह सदा के लिए जीवित रहता; हां, और परमेश्वर का वचन भी निष्क्रिय हो जाता, और उद्धार की महान योजना कुंठित हो जाती।
- 6 परन्तु देखो, मनुष्य की नियुक्ति मरने के लिए हुई थी—इसलिए, जैसे उन्हें जीवन के वृक्ष से अलग कर दिया गया था वैसे ही उन्हें पृथ्वी से अलग कर दिया जाना चाहिए—और मनुष्य सदा के लिए खो जाता, हां, वे पतित मनुष्य बन जाते।
- 7 और अब, इससे तुम देखते हो कि हमारे पहले माता-पिता को प्रभु की उपस्थिति से शारीरिक और आत्मिक तौर पर अलग कर दिया गया था; और इस प्रकार हम देखते हैं कि वे स्वयं अपनी इच्छा के अनुगामी बन गए थे।
- 8 अब देखो, यह आवश्यक नहीं था कि मनुष्य को इस शारीरिक मृत्यु से बचाया जा सके, क्योंकि यह प्रसन्नता की महान योजना को नष्ट कर सकता था।

## Alma 42

And now, my son, I perceive there is somewhat more which doth worry your mind, which ye cannot understand—which is concerning the justice of God in the punishment of the sinner; for ye do try to suppose that it is injustice that the sinner should be consigned to a state of misery.

Now behold, my son, I will explain this thing unto thee. For behold, after the Lord God sent our first parents forth from the garden of Eden, to till the ground, from whence they were taken—yea, he drew out the man, and he placed at the east end of the garden of Eden, cherubim, and a flaming sword which turned every way, to keep the tree of life—

Now, we see that the man had become as God, knowing good and evil; and lest he should put forth his hand, and take also of the tree of life, and eat and live forever, the Lord God placed cherubim and the flaming sword, that he should not partake of the fruit—

And thus we see, that there was a time granted unto man to repent, yea, a probationary time, a time to repent and serve God.

For behold, if Adam had put forth his hand immediately, and partaken of the tree of life, he would have lived forever, according to the word of God, having no space for repentance; yea, and also the word of God would have been void, and the great plan of salvation would have been frustrated.

But behold, it was appointed unto man to die—therefore, as they were cut off from the tree of life they should be cut off from the face of the earth—and man became lost forever, yea, they became fallen man.

And now, ye see by this that our first parents were cut off both temporally and spiritually from the presence of the Lord; and thus we see they became subjects to follow after their own will.

Now behold, it was not expedient that man should be reclaimed from this temporal death, for that would destroy the great plan of happiness.



- 9 इसलिए, जैसे कि आत्मा कभी भी नहीं मर सकती, और पतन सारी मानवजाति पर एक आत्मिक और शारीरिक मृत्यु लाता है, यही है जिससे उन्हें प्रभु की उपस्थिति से अलग कर दिया गया था, यह आवश्यक था कि मानवजाति को इस आत्मिक मृत्यु से बचाया जा सके।
- 10 इसलिए, जब वे स्वभाव द्वारा सांसारिक, कामुक, और क्रूर बन गए थे, यह परीक्षा का समय उनकी तैयारी का समय बन गया; यह तैयारी का प्रारंभिक समय बन गया था।
- 11 और अब याद रखो, मेरे बेटे, जब उनकी मृत्यु हुई तब यदि यह मुक्ति की योजना के लिए नहीं होता, (इसको अलग रखते हुए) तो प्रभु की उपस्थिति से अलग रहते हुए उनकी आत्माएं दुर्गति में होतीं।
- 12 और अब, ऐसा कोई भी साधन नहीं था जिससे मनुष्यों को इस पतित अवस्था से बचाया जा सके, जिसे मनुष्य अपने स्वयं की अवज्ञाकारिता के कारण अपने ऊपर लाया था।
- 13 इसलिए, न्याय के अनुसार, परीक्षा के इस समय में मनुष्य द्वारा बिना पश्चाताप किये मुक्ति की योजना को अमल में नहीं लाया जा सकता था, हां, तैयारी की इस प्रारंभिक अवस्था के बिना; क्योंकि यही इसकी शर्त थी, अन्यथा दया निष्प्रभाव हो जाती और न्याय का कार्य नष्ट हो जाता। अब न्याय का कार्य नष्ट नहीं हो सकता था; यदि ऐसा होता, परमेश्वर का अंत हो जाता।
- 14 और इस प्रकार हम देखते हैं कि सारी मानवजाति पतित हो गई थी, और वे न्याय के चंगुल में थे; हां, परमेश्वर के न्याय के, जिसके कारण उन्हें सदा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर दिया गया था।
- 15 और अब, बिना प्रायश्चित के दया की योजना को अमल में नहीं लाया जा सकता था; इसलिए परमेश्वर ने स्वयं संसार के पापों के लिए प्रायश्चित किया, दया की योजना को लाने के लिए, न्याय की मांग को शान्त करने के लिए, ताकि परमेश्वर परिपूर्ण, न्यायी परमेश्वर हो सके, और दयावान परमेश्वर भी।
- 16 अब, बिना दण्ड के मनुष्य पश्चाताप नहीं कर सकता था, जो कि अनंत था जैसा कि आत्मा के जीवन को होना चाहिए था, प्रसन्नता की योजना के विरुद्ध जुड़ा हुआ, जो कि अनंत था जैसा कि आत्मा का जीवन अनंत था।
- 17 अब, बिना पाप किये मनुष्य पश्चाताप कैसे कर सकता था? यदि नियम नहीं होता तो वह पाप कैसे करता? यदि दण्ड नहीं होता तो नियम कैसे हो सकता था?

Therefore, as the soul could never die, and the fall had brought upon all mankind a spiritual death as well as a temporal, that is, they were cut off from the presence of the Lord, it was expedient that mankind should be reclaimed from this spiritual death.

Therefore, as they had become carnal, sensual, and devilish, by nature, this probationary state became a state for them to prepare; it became a preparatory state.

And now remember, my son, if it were not for the plan of redemption, (laying it aside) as soon as they were dead their souls were miserable, being cut off from the presence of the Lord.

And now, there was no means to reclaim men from this fallen state, which man had brought upon himself because of his own disobedience;

Therefore, according to justice, the plan of redemption could not be brought about, only on conditions of repentance of men in this probationary state, yea, this preparatory state; for except it were for these conditions, mercy could not take effect except it should destroy the work of justice. Now the work of justice could not be destroyed; if so, God would cease to be God.

And thus we see that all mankind were fallen, and they were in the grasp of justice; yea, the justice of God, which consigned them forever to be cut off from his presence.

And now, the plan of mercy could not be brought about except an atonement should be made; therefore God himself atoneth for the sins of the world, to bring about the plan of mercy, to appease the demands of justice, that God might be a perfect, just God, and a merciful God also.

Now, repentance could not come unto men except there were a punishment, which also was eternal as the life of the soul should be, affixed opposite to the plan of happiness, which was as eternal also as the life of the soul.

Now, how could a man repent except he should sin? How could he sin if there was no law? How could there be a law save there was a punishment?

- 18 अब, दण्ड जुड़ा हुआ था, और एक न्यापूर्ण नियम बनाया गया, जो मनुष्य के अंतःकरण पर पश्चाताप लाया ।
- 19 अब, यदि कोई नियम नहीं होता—कि एक हत्यारे को मृत्युदण्ड दिया जाए—तो क्या उसे डर होता कि यदि वह हत्या करेगा तो उसे मृत्युदण्ड दिया जाएगा ?
- 20 और यह भी, यदि पाप के विरुद्ध कोई नियम नहीं होता तो मनुष्य पाप करने से नहीं डरता ।
- 21 और यदि कोई नियम नहीं होता, यदि मनुष्य पाप करता तो न्याय, या दया क्या कर सकती थी, क्योंकि इनका मनुष्य पर कोई दावा नहीं होता ?
- 22 परन्तु एक नियम है, और उससे दण्ड जुड़ा हुआ है, और पश्चाताप दिया गया है; वह पश्चाताप जो दया का दावा करता है; या तो न्याय मनुष्य पर दावा करती है और नियम बनाती है, और नियम दण्ड देता है; यदि ऐसा नहीं है, न्याय के कार्य नष्ट किये जाएंगे, और परमेश्वर का अंत हो जाएगा ।
- 23 परन्तु परमेश्वर का अंत नहीं होता, और पश्चातापी दया का दावा करता है, और प्रायश्चित के कारण दया की जाती है; और प्रायश्चित मरे हुए लोगों पर पुनरुत्थान लाता है; और मरे हुए लोगों का पुनरुत्थान फिर से मनुष्यों को परमेश्वर की उपस्थिति में ले आता है; और इस प्रकार नियम और न्याय के मुताबिक अपने कर्मों के अनुसार न्याय पाने के लिए, वे फिर से उसकी उपस्थिति में आ जाते हैं ।
- 24 क्योंकि देखो, न्याय उसकी सारी मांगों के अनुसार काम करता है, और दया भी उस पर अपना अधिकार जताती है; और इस प्रकार, कोई और नहीं परन्तु सच्चे पश्चातापी बचाए जाते हैं ।
- 25 क्या तुम्हारे विचार से दया न्याय को अपने वश में कर सकती है ? मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं; कणमात्र भी नहीं । यदि ऐसा होता तो परमेश्वर का अंत हो जाता ।
- 26 और इस प्रकार परमेश्वर अपने महान और अनंत उद्देश्य को पूरा करता है, जिसे संसार की नींव के समय ही तैयार कर लिया गया था । और इस प्रकार मनुष्य पर उद्धार और मुक्ति आती है, और उन पर विनाश और दुख भी आता है ।
- 27 इसलिए, हे मेरे बेटे, जो कोई भी आएगा वह स्वतंत्र रूप से जीवन का जल ग्रहण कर सकेगा; और जो कोई नहीं आएगा उसे आने के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा; परन्तु अंतिम दिन में उसके कर्मों के अनुसार उसे न्याय मिलेगा ।

Now, there was a punishment affixed, and a just law given, which brought remorse of conscience unto man.

Now, if there was no law given—if a man murdered he should die—would he be afraid he would die if he should murder?

And also, if there was no law given against sin men would not be afraid to sin.

And if there was no law given, if men sinned what could justice do, or mercy either, for they would have no claim upon the creature?

But there is a law given, and a punishment affixed, and a repentance granted; which repentance, mercy claimeth; otherwise, justice claimeth the creature and executeth the law, and the law inflicteth the punishment; if not so, the works of justice would be destroyed, and God would cease to be God.

But God ceaseth not to be God, and mercy claimeth the penitent, and mercy cometh because of the atonement; and the atonement bringeth to pass the resurrection of the dead; and the resurrection of the dead bringeth back men into the presence of God; and thus they are restored into his presence, to be judged according to their works, according to the law and justice.

For behold, justice exerciseth all his demands, and also mercy claimeth all which is her own; and thus, none but the truly penitent are saved.

What, do ye suppose that mercy can rob justice? I say unto you, Nay; not one whit. If so, God would cease to be God.

And thus God bringeth about his great and eternal purposes, which were prepared from the foundation of the world. And thus cometh about the salvation and the redemption of men, and also their destruction and misery.

Therefore, O my son, whosoever will come may come and partake of the waters of life freely; and whosoever will not come the same is not compelled to come; but in the last day it shall be restored unto him according to his deeds.

- 28 यदि उसने बुरा करने की इच्छा की है, और अपने समय में पश्चा-  
ताप नहीं किया है, देखो, परमेश्वर की पुनःस्थापना के अनुसार उसके  
साथ बुरा ही होगा ।
- 29 और अब, मेरे बेटे, मैं चाहता हूँ कि तुम इन बातों से स्वयं को कष्ट  
न होने दो, और केवल अपने पाप से स्वयं को कष्ट होने दो, वह कष्ट  
जो तुम्हें पश्चाताप की तरफ ले जाएगा ।
- 30 हे मेरे बेटे, मैं चाहता हूँ कि तुम्हें अब और अधिक परमेश्वर के न्याय  
को अस्वीकार नहीं करना चाहिए । परमेश्वर के न्याय को अस्वीकार  
कर, अपने पापों के कारण थोड़ा सा भी बहाना बनाने का प्रयास मत  
करो; परन्तु परमेश्वर का न्याय, और उसकी दया होने दो, उसके लम्बे  
समय तक के उत्पीड़न से तुम्हारे अपने हृदय को झंझोड़ने दो; और  
उसे विनम्रता में तुम्हें झुकाने दो ।
- 31 और अब, हे मेरे बेटे, इन लोगों को वचन सुनाने के लिए तुम्हें पर-  
मेश्वर ने चुना है । और अब, मेरे बेटे, अपने मार्ग जाओ, सच्चाई और  
गंभीरता से वचन की घोषणा करो, कि तुम लोगों से पश्चाताप करवा  
सको, ताकि दया की महान योजना उनपर अपना दावा कर सके ।  
और मेरी बातों के अनुसार परमेश्वर तुम्हारे साथ ऐसा होने दे ।  
आमीन ।

If he has desired to do evil, and has not repented  
in his days, behold, evil shall be done unto him, ac-  
cording to the restoration of God.

And now, my son, I desire that ye should let these  
things trouble you no more, and only let your sins  
trouble you, with that trouble which shall bring you  
down unto repentance.

O my son, I desire that ye should deny the justice  
of God no more. Do not endeavor to excuse yourself  
in the least point because of your sins, by denying  
the justice of God; but do you let the justice of God,  
and his mercy, and his long-suffering have full sway  
in your heart; and let it bring you down to the dust in  
humility.

And now, O my son, ye are called of God to preach  
the word unto this people. And now, my son, go thy  
way, declare the word with truth and soberness, that  
thou mayest bring souls unto repentance, that the  
great plan of mercy may have claim upon them. And  
may God grant unto you even according to my  
words. Amen.

## अलमा 43

- 1 और अब ऐसा हुआ कि अलमा के बेटे वचन सुनाने के लिए लोगों के बीच गए। और अलमा, स्वयं भी आराम नहीं कर सका, और वह भी आगे बढ़ गया।
- 2 अब हम उनके प्रचार से संबंधित कोई भी बात नहीं कहेंगे, सिवाय इसके कि भविष्यवाणी की आत्मा और प्रकटीकरण के अनुसार उन्होंने वचन और सच्चाई का प्रचार किया; और उन्होंने परमेश्वर की पवित्र रीति के अनुसार प्रचार किया जिसके द्वारा उन्हें चुना गया था।
- 3 और अब मैं न्यायियों के शासन के अठारहवें वर्ष में, नफाड़ियों और लमनाड़ियों के बीच युद्ध के विवरण पर वापस आता हूँ।
- 4 क्योंकि देखो, ऐसा हुआ कि जोरामाई लमनाई बन गए थे; इसलिए, अठारहवें वर्ष के आरंभ में नफाड़ियों ने देखा कि लमनाई उनपर आक्रमण करने आ रहे थे; इसलिए उन्होंने युद्ध की तैयारी की; हां, उन्होंने जेरशान प्रदेश में अपनी सेनाओं को एकत्रित किया।
- 5 और ऐसा हुआ कि लमनाई अपने हजारों लोगों के साथ आए; और वे अंतीओनम नामक जगह पर आए, जो कि जोरामाड़ियों का प्रदेश था; और जीराहेमना नामक व्यक्ति उनका मार्गदर्शक था।
- 6 और अब, जैसा कि अमालेकियों लमनाड़ियों से अधिक दुष्ट और हत्यारे प्रवृत्ति के थे, इसलिए, जीराहेमना ने लमनाड़ियों के लिए मुख्य सेनापतियों को नियुक्त किया, और वे सभी अमालेकी और जोरामाई थे।
- 7 अब ऐसा उसने इसलिए किया कि नफाड़ियों के प्रति उनकी ईर्ष्या को कायम रख सके, ताकि उन्हें अपनी योजना के अनुसार पराधीन कर सके।
- 8 क्योंकि देखो, उसकी योजना थी कि वह नफाड़ियों के विरुद्ध लमनाड़ियों को भड़काए; ऐसा उसने इसलिए किया ताकि उनपर उसका शासन बना रहे, और यह भी कि नफाड़ियों को दासता में लाकर वह उन्हें पराधीन कर सके।
- 9 और नफाड़ियों की योजना अपने प्रदेशों को, अपने घरों को, और अपनी पत्नियों और बच्चों को सहारा देना था, ताकि वे उन्हें उनके शत्रुओं से बचा सकें; और यह भी कि वे अपने अधिकार और अपने सौभाग्य को बचा सकें, हां, और अपनी स्वतंत्रता को भी, ताकि वे अपनी इच्छानुसार परमेश्वर की उपासना कर सकें।

## Alma 43

And now it came to pass that the sons of Alma did go forth among the people, to declare the word unto them. And Alma, also, himself, could not rest, and he also went forth.

Now we shall say no more concerning their preaching, except that they preached the word, and the truth, according to the spirit of prophecy and revelation; and they preached after the holy order of God by which they were called.

And now I return to an account of the wars between the Nephites and the Lamanites, in the eighteenth year of the reign of the judges.

For behold, it came to pass that the Zoramites became Lamanites; therefore, in the commencement of the eighteenth year the people of the Nephites saw that the Lamanites were coming upon them; therefore they made preparations for war; yea, they gathered together their armies in the land of Jershon.

And it came to pass that the Lamanites came with their thousands; and they came into the land of Antionum, which is the land of the Zoramites; and a man by the name of Zerahemnah was their leader.

And now, as the Amalekites were of a more wicked and murderous disposition than the Lamanites were, in and of themselves, therefore, Zerahemnah appointed chief captains over the Lamanites, and they were all Amalekites and Zoramites.

Now this he did that he might preserve their hatred towards the Nephites, that he might bring them into subjection to the accomplishment of his designs.

For behold, his designs were to stir up the Lamanites to anger against the Nephites; this he did that he might usurp great power over them, and also that he might gain power over the Nephites by bringing them into bondage.

And now the design of the Nephites was to support their lands, and their houses, and their wives, and their children, that they might preserve them from the hands of their enemies; and also that they might preserve their rights and their privileges, yea, and also their liberty, that they might worship God according to their desires.

- 10 क्योंकि वे जानते थे कि यदि वे लमनाइयों के हाथों में पड़ जाते हैं तो जो कोई भी सच्चे और जीवित परमेश्वर की उपासना आत्मा और सच्चाई में करेगा, उसे लमनाई नष्ट कर देंगे ।
- 11 हां, और वे लमनाइयों की अत्याधिक ईर्ष्या को भी जानते थे जो उनके उन भाइयों के प्रति थी जो अंती-नफी-लेही के लोग थे, जो अम्मोन के लोग कहलाए—और वे शस्त्र नहीं उठा सकते थे, हां, उन्होंने एक अनुबंध में प्रवेश किया था और वे उसे तोड़ नहीं सकते थे—इसलिए, यदि वे लमनाइयों के हाथों में पड़ जाते तो उनका विनाश हो जाता ।
- 12 और नफाई नहीं चाहते थे कि वे नष्ट हो जाएं; इसलिए उन्होंने अपनी विरासत की भूमि उन्हें दे दी ।
- 13 और नफाइयों की सेनाओं की सहायता के लिए अम्मोन के लोगों ने उनको अपने सामान का बड़ा हिस्सा दे दिया था; और इस प्रकार नफाई अकेले ही बाध्य हुए थे उन लमनाइयों का सामना करने के लिए जिसमें लमान और लमूएल, और इश्माएल के बेटे और वे सारे लोग शामिल थे जो नफाइयों से असहमत थे, जो कि अमालेकी और जोरामाई थे, और नूह के याजकों के वंशज थे ।
- 14 और वे वंशज उतनी ही बड़ी संख्या में थे जितने कि नफाई थे; और इस प्रकार नफाई अपने भाइयों से युद्ध करने के लिए, और यहां तक कि लहू बहाने के लिए मजबूर थे ।
- 15 और ऐसा हुआ कि जैसे ही लमनाइयों की सेना अंतीओनम की भूमि पर एकत्रित हुई, देखो, नफाइयों की सेना जेरशान प्रदेश में उनसे युद्ध करने के लिए तैयार थी ।
- 16 अब, नफाइयों का मार्गदर्शक, या वह व्यक्ति जिसे नफाइयों का मुख्य सेनापति नियुक्त किया गया था—अब मुख्य सेनापति ने नफाइयों की पूरी सेना की कमान अपने हाथ में ले ली—और उसका नाम मोरोनी था;
- 17 और मोरोनी ने कमान अपने हाथ में ले ली, और उनके युद्ध के प्रबंध को भी । और वह केवल पच्चीस वर्ष का था जब उसे नफाइयों की सेनाओं का मुख्य सेनापति नियुक्त किया गया था ।
- 18 और ऐसा हुआ कि वह लमनाइयों से जेरशान की सीमाओं पर मिला, और उसके लोग तलवारों, कटारों, और हर प्रकार के हथियारों से सुसज्जित थे ।

For they knew that if they should fall into the hands of the Lamanites, that whosoever should worship God in spirit and in truth, the true and the living God, the Lamanites would destroy.

Yea, and they also knew the extreme hatred of the Lamanites towards their brethren, who were the people of Anti-Nephi-Lehi, who were called the people of Ammon—and they would not take up arms, yea, they had entered into a covenant and they would not break it—therefore, if they should fall into the hands of the Lamanites they would be destroyed.

And the Nephites would not suffer that they should be destroyed; therefore they gave them lands for their inheritance.

And the people of Ammon did give unto the Nephites a large portion of their substance to support their armies; and thus the Nephites were compelled, alone, to withstand against the Lamanites, who were a compound of Laman and Lemuel, and the sons of Ishmael, and all those who had dissented from the Nephites, who were Amalekites and Zoramites, and the descendants of the priests of Noah.

Now those descendants were as numerous, nearly, as were the Nephites; and thus the Nephites were obliged to contend with their brethren, even unto bloodshed.

And it came to pass as the armies of the Lamanites had gathered together in the land of Antionum, behold, the armies of the Nephites were prepared to meet them in the land of Jershon.

Now, the leader of the Nephites, or the man who had been appointed to be the chief captain over the Nephites—now the chief captain took the command of all the armies of the Nephites—and his name was Moroni;

And Moroni took all the command, and the government of their wars. And he was only twenty and five years old when he was appointed chief captain over the armies of the Nephites.

And it came to pass that he met the Lamanites in the borders of Jershon, and his people were armed with swords, and with cimeters, and all manner of weapons of war.

- 19 और जब लमनाइयों की सेनाओं ने देखा कि नफी के लोग, या यह कि मोरोनी ने अपने लोगों को कवच पहना रखा है और हाथों में ढाल थमा रखी है, हां, और उनके सिरों पर रक्षा-कवच पहना रखा है, और उन्होंने मोटे-मोटे कपड़े भी पहन रखे थे—
- 20 अब जीराहेमना की सेना इस प्रकार की किसी भी वस्तु से सुसज्जित नहीं थी; उनके पास केवल उनके तलवार, कटार, उनके तीर और कमान, उनके पत्थर और गुलेल ही थे; और केवल अपनी कमर के वस्त्र को छोड़कर उन्होंने और कुछ भी नहीं पहना था; हां, जोरामाइयों और अमालेकियों के अलावा सभी वस्त्रहीन थे।
- 21 परन्तु न तो उन्होंने कवच पहन रखा था और न ही ढाल पकड़ रखी थी—इसलिए, इसके बावजूद कि उनकी संख्या नफाइयों की संख्या से बहुत अधिक थी, वे नफाइयों के कवच के कारण अत्याधिक डरे हुए थे।
- 22 देखो, अब ऐसा हुआ कि वे जेरशान की सीमाओं पर नफाइयों के विरुद्ध लड़ने का साहस न कर सके; इसलिए वे अंतीओनम की भूमि से निकलकर निर्जन प्रदेश में चले गए, और जंगल में चारों तरफ घूमते रहे, और सिदोन नदी के सिरे से होते हुए आगे बढ़ गए, ताकि वे मण्टी के प्रदेश आकर वहां की भूमि पर कब्जा कर सकें; क्योंकि उन्होंने यह अनुमान नहीं लगाया था कि मोरोनी की सेना जान पाएगी कि वे कहाँ गए हैं।
- 23 परन्तु ऐसा हुआ कि जैसे ही वे निर्जन प्रदेश में चले गए मोरोनी ने उनकी छावनी पर नजर रखने के लिए भेदियों को भेजा; और अलमा की भविष्यवाणी को जानते हुए, मोरोनी ने कुछ लोगों को उसके पास भेजा, उससे यह चाहते हुए कि वह प्रभु से पूछताछ करे कि स्वयं को लमनाइयों से बचाने के लिए नफाइयों की सेना को कहाँ जाना चाहिए।
- 24 और ऐसा हुआ कि प्रभु का वचन अलमा को मिला, और अलमा ने मोरोनी के संदेशवाहकों को सूचना दी कि लमनाइयों की सेना निर्जन प्रदेश के चारों तरफ घूम रही है, ताकि वे मण्टी के प्रदेश आ सकें, और कमजोर लोगों पर हमला कर सकें। और संदेशवाहकों ने आकर मोरोनी को संदेश सुनाया।

And when the armies of the Lamanites saw that the people of Nephi, or that Moroni, had prepared his people with breastplates and with arm-shields, yea, and also shields to defend their heads, and also they were dressed with thick clothing—

Now the army of Zerahemnah was not prepared with any such thing; they had only their swords and their cimeters, their bows and their arrows, their stones and their slings; and they were naked, save it were a skin which was girded about their loins; yea, all were naked, save it were the Zoramites and the Amalekites;

But they were not armed with breastplates, nor shields—therefore, they were exceedingly afraid of the armies of the Nephites because of their armor, notwithstanding their number being so much greater than the Nephites.

Behold, now it came to pass that they durst not come against the Nephites in the borders of Jershon; therefore they departed out of the land of Antionum into the wilderness, and took their journey round about in the wilderness, away by the head of the river Sidon, that they might come into the land of Manti and take possession of the land; for they did not suppose that the armies of Moroni would know whither they had gone.

But it came to pass, as soon as they had departed into the wilderness Moroni sent spies into the wilderness to watch their camp; and Moroni, also, knowing of the prophecies of Alma, sent certain men unto him, desiring him that he should inquire of the Lord whither the armies of the Nephites should go to defend themselves against the Lamanites.

And it came to pass that the word of the Lord came unto Alma, and Alma informed the messengers of Moroni, that the armies of the Lamanites were marching round about in the wilderness, that they might come over into the land of Manti, that they might commence an attack upon the weaker part of the people. And those messengers went and delivered the message unto Moroni.

- 25 अब मोरोनी, जेरशान प्रदेश में अपनी सेना के एक भाग को वहीं छोड़ते हुए, कि कहीं ऐसा न हो कि किसी भी तरह से लमनाइयों का एक भाग वहां आए और नगर पर अधिकार कर ले, अपनी सेना के बाकी लोगों को लिया और मण्टी के प्रदेश की तरफ चल पड़ा ।
- 26 और उसने ऐसा किया कि प्रदेश के उस हिस्से के लोगों को लमनाइयों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए एकत्रित किया ताकि वे अपनी भूमि और अपने प्रदेश, अपने अधिकार और अपनी स्वतंत्रता को बचा सकें; इसलिए वे सब लमनाइयों के आक्रमण के लिए तैयार हो गए ।
- 27 और ऐसा हुआ कि मोरोनी ने अपनी सेना को गुप्त रूप से उस खाड़ी में छुपा दिया जो सिदोन नदी के किनारे से लगा हुआ था, जो कि निर्जन प्रदेश में सिदोन नदी के पश्चिम में था ।
- 28 और मोरोनी ने चारों तरफ गुप्तचर छिपा दिए, ताकि जब लमनाइयों की छावनी आए तो वह जान सके ।
- 29 और अब, जैसे कि मोरोनी लमनाइयों के उद्देश्य को जानता था, कि उनका उद्देश्य अपने भाइयों को नष्ट करना था, या उन्हें दासता में लाना था ताकि वे स्वयं के लिए पूरे प्रदेश में एक राज्य स्थापित कर सकें ।
- 30 और वह यह भी जानता था कि नफाइयों की इच्छा केवल अपने प्रदेशों को, और अपनी स्वतंत्रता को, और अपने गिरजे को बचाना था, इसलिए उसने सोचा कि छल-कपट के द्वारा उन्हें बचाना कोई पाप नहीं है; इसलिए, उसने अपने गुप्तचरों से जान लिया कि लमनाई कौन से मार्ग पर यात्रा करनेवाले थे ।
- 31 इसलिए, उसने अपनी सेना को विभाजित किया और उसके एक भाग को लेकर खाड़ी पर पहुंचा, और उन्हें पूर्व में, और पहाड़ी रिप्लाह के दक्षिण में छिपाकर रखा ।
- 32 और बाकी बची हुई सेना को सिदोन नदी के पश्चिम में स्थित पश्चिमी खाड़ी में छिपाकर रखा, और ऐसा ही मण्टी प्रदेश की सीमाओं पर भी किया ।
- 33 और इस प्रकार अपनी इच्छा के अनुसार अपनी सेना को स्थित कर, वह उनसे लड़ने के लिए तैयार था ।
- 34 और ऐसा हुआ कि लमनाई पहाड़ी के उत्तर दिशा की ओर आए, जहां मोरोनी की सेना के कुछ लोग छुपे हुए थे ।

Now Moroni, leaving a part of his army in the land of Jershon, lest by any means a part of the Lamanites should come into that land and take possession of the city, took the remaining part of his army and marched over into the land of Manti.

And he caused that all the people in that quarter of the land should gather themselves together to battle against the Lamanites, to defend their lands and their country, their rights and their liberties; therefore they were prepared against the time of the coming of the Lamanites.

And it came to pass that Moroni caused that his army should be secreted in the valley which was near the bank of the river Sidon, which was on the west of the river Sidon in the wilderness.

And Moroni placed spies round about, that he might know when the camp of the Lamanites should come.

And now, as Moroni knew the intention of the Lamanites, that it was their intention to destroy their brethren, or to subject them and bring them into bondage that they might establish a kingdom unto themselves over all the land;

And he also knowing that it was the only desire of the Nephites to preserve their lands, and their liberty, and their church, therefore he thought it no sin that he should defend them by stratagem; therefore, he found by his spies which course the Lamanites were to take.

Therefore, he divided his army and brought a part over into the valley, and concealed them on the east, and on the south of the hill Riplah;

And the remainder he concealed in the west valley, on the west of the river Sidon, and so down into the borders of the land Manti.

And thus having placed his army according to his desire, he was prepared to meet them.

And it came to pass that the Lamanites came up on the north of the hill, where a part of the army of Moroni was concealed.

- 35 और जैसे ही लमनाई पहाड़ी रिप्लाह से गुजरे, और खाड़ी पर आए, और सिदोन नदी पार करने लगे, तभी सेना जो पहाड़ी के दक्षिण में छुपी हुई थी, जिसका मार्गदर्शन एक लेही नामक व्यक्ति कर रहा था, और उसने अपनी सेना को लिया और नदी के तट पर लगभग पूर्व में लमनाइयों को चारों ओर से घेर लिया ।
- 36 और ऐसा हुआ कि जब लमनाइयों ने देखा कि किनारे से निकलकर नफाई उनकी ओर आ रहे हैं तो वे घुम गए और लेही की सेना के साथ युद्ध करने लगे ।
- 37 और दोनों तरफ से मौत का खेल आरंभ हुआ, परन्तु यह लमनाइयों के लिए अधिक भयावह था, क्योंकि तलवारों और कटारों द्वारा नफाइयों के भारी प्रहार से उनकी वस्त्रहीनता सामने आ गई, जिसके कारण लगभग हर प्रहार पर मृत्यु निश्चित थी ।
- 38 जब कि दूसरी तरफ, कभी-कभी तलवार और रक्तपात के द्वारा नफाइयों के बीच से भी कोई मरता था, उनके शरीर के महत्वपूर्ण भाग ढंके होने के बावजूद भी, या उनके कवच, उनके हाथों की ढाल, और उनके सिरों पर बंधी हुई पट्टियों के कारण उनके शरीर के महत्वपूर्ण भाग लमनाइयों के प्रहार से बच जाते थे; और इस प्रकार नफाइयों ने लमनाइयों के बीच मौत का खेल जारी रखा ।
- 39 और ऐसा हुआ कि अपने बीच अत्याधिक संहार को देखकर लमनाई डर गए, यहां तक कि वे सिदोन नदी की तरफ भागने लगे ।
- 40 और लेही और उसके लोगों ने उनका पीछा किया; और लेही ने उन्हें सिदोन नदी के जल में खदेड़ दिया, और उन्होंने सिदोन नदी को पार किया । और लेही ने सिदोन नदी के तट पर अपनी सेना को रोक लिया जिससे वे नदी को पार करके वापस न आ सकें ।
- 41 और ऐसा हुआ कि मोरोनी और उसकी सेना लमनाइयों से सिदोन नदी के दूसरी तरफ खाड़ी में टकराई, और उन पर आक्रमण कर दिया और उनका संहार करने लगे ।
- 42 और उनके सामने से लमनाई मण्टी प्रदेश की तरफ भागने लगे; और वे फिर से मोरोनी की सेनाओं से टकरा गए ।
- 43 अब इस बार लमनाइयों ने भीषण युद्ध किया; हां, इतने अधिक महान बल और साहस के साथ लमनाई पहले कभी भी नहीं लड़े थे, नहीं, यहां तक कि आरंभ से लेकर अब तक ।

And as the Lamanites had passed the hill Riplah, and came into the valley, and began to cross the river Sidon, the army which was concealed on the south of the hill, which was led by a man whose name was Lehi, and he led his army forth and encircled the Lamanites about on the east in their rear.

And it came to pass that the Lamanites, when they saw the Nephites coming upon them in their rear, turned them about and began to contend with the army of Lehi.

And the work of death commenced on both sides, but it was more dreadful on the part of the Lamanites, for their nakedness was exposed to the heavy blows of the Nephites with their swords and their cimeters, which brought death almost at every stroke.

While on the other hand, there was now and then a man fell among the Nephites, by their swords and the loss of blood, they being shielded from the more vital parts of the body, or the more vital parts of the body being shielded from the strokes of the Lamanites, by their breastplates, and their armshields, and their head-plates; and thus the Nephites did carry on the work of death among the Lamanites.

And it came to pass that the Lamanites became frightened, because of the great destruction among them, even until they began to flee towards the river Sidon.

And they were pursued by Lehi and his men; and they were driven by Lehi into the waters of Sidon, and they crossed the waters of Sidon. And Lehi retained his armies upon the bank of the river Sidon that they should not cross.

And it came to pass that Moroni and his army met the Lamanites in the valley, on the other side of the river Sidon, and began to fall upon them and to slay them.

And the Lamanites did flee again before them, towards the land of Manti; and they were met again by the armies of Moroni.

Now in this case the Lamanites did fight exceedingly; yea, never had the Lamanites been known to fight with such exceedingly great strength and courage, no, not even from the beginning.



44 और वे जोरामाइयों और अमालेकियों द्वारा प्रेरित थे, जो उनके मुख्य सेनापति और मार्गदर्शक थे, और जीराहेमना द्वारा जो कि उनका मुख्य कप्तान, या उनका मुख्य मार्गदर्शक और सेनापति था; हां, उन्होंने दैत्य के समान युद्ध किया, और उनके हाथों से कई नफाई मारे गए, हां, क्योंकि उन्होंने सिर की पट्टियों को दो टुकड़ों में काट दिया, और उन्होंने उनके कवच को छेद दिया, और उन्होंने उनके कई हाथों को काट दिया; और इस प्रकार लमनाइयों ने अपने भयानक क्रोध में मार-काट की।

45 फिर भी, नफाई एक अच्छे कार्य द्वारा प्रेरित थे, क्योंकि न तो वे राष्ट्र के लिए और न ही ताकत के लिए लड़ रहे थे परन्तु वे अपने घरों, अपनी स्वतंत्रता, अपनी पत्नियों और अपने बच्चों, और अपनी हर चीज के लिए लड़ रहे थे, हां, उपासना की अपनी रीति और अपने गिरजे के लिए लड़ रहे थे।

46 और वे ऐसा इसलिए कर रहे थे क्योंकि उन्होंने इसे परमेश्वर के प्रति अपना कर्तव्य समझा था; क्योंकि प्रभु ने उनसे कहा था, और उनके पूर्वजों से भी, कि जब तक तुम पहली और दूसरी भूल के दोषी नहीं रहोगे, तब तक तुम अपने शत्रुओं के हाथों से नहीं मारे जाओगे।

47 और फिर से, प्रभु ने कहा है कि: यदि लहू भी बहाना पड़े तो अपने परिवारों की रक्षा करो। इसलिए इस कारण से स्वयं की, अपने परिवारों, और अपनी भूमि, अपने देश, और अपने अधिकार, और धर्म की रक्षा के लिए नफाई लमनाइयों से युद्ध कर रहे थे।

48 और ऐसा हुआ कि जब मोरोनी के लोगों ने लमनाइयों की प्रचंडता और क्रोध को देखा, तो वे लगभग पीछे हटने लगे और भागने लगे। और उनके इरादे को भांपते हुए, इन विचारों से मोरोनी ने उन्हें भेजा और उनके हृदयों को प्रेरित किया—हां, उनके प्रदेशों, उनकी स्वतंत्रता, हां, दासता से उनकी आजादी के विचारों से।

49 और ऐसा हुआ कि उन्होंने लमनाइयों पर फिर से आक्रमण कर दिया, और उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर से एक आवाज में याचना की, अपनी स्वतंत्रता और दासता से अपनी आजादी के लिए।

50 और बलपूर्वक वे लमनाइयों के सामने डट गए; और उस एक क्षण में उन्होंने प्रभु से अपनी स्वतंत्रता की याचना की, तब लमनाई उनके सामने से भागने लगे; और यहां तक कि वे सिदोन नदी के जल में भागने लगे।

And they were inspired by the Zoramites and the Amalekites, who were their chief captains and leaders, and by Zerahemnah, who was their chief captain, or their chief leader and commander; yea, they did fight like dragons, and many of the Nephites were slain by their hands, yea, for they did smite in two many of their head-plates, and they did pierce many of their breastplates, and they did smite off many of their arms; and thus the Lamanites did smite in their fierce anger.

Nevertheless, the Nephites were inspired by a better cause, for they were not fighting for monarchy nor power but they were fighting for their homes and their liberties, their wives and their children, and their all, yea, for their rites of worship and their church.

And they were doing that which they felt was the duty which they owed to their God; for the Lord had said unto them, and also unto their fathers, that: Inasmuch as ye are not guilty of the first offense, neither the second, ye shall not suffer yourselves to be slain by the hands of your enemies.

And again, the Lord has said that: Ye shall defend your families even unto bloodshed. Therefore for this cause were the Nephites contending with the Lamanites, to defend themselves, and their families, and their lands, their country, and their rights, and their religion.

And it came to pass that when the men of Moroni saw the fierceness and the anger of the Lamanites, they were about to shrink and flee from them. And Moroni, perceiving their intent, sent forth and inspired their hearts with these thoughts—yea, the thoughts of their lands, their liberty, yea, their freedom from bondage.

And it came to pass that they turned upon the Lamanites, and they cried with one voice unto the Lord their God, for their liberty and their freedom from bondage.

And they began to stand against the Lamanites with power; and in that selfsame hour that they cried unto the Lord for their freedom, the Lamanites began to flee before them; and they fled even to the waters of Sidon.

51 अब, लमनाई अधिक संख्या में थे, हां, नफाइयों से दुगुनी संख्या में; फिर भी, उन्हें इतना दूर खदेड़ दिया गया कि वे सिदोन नदी के तट पर खाड़ी में एकत्रित हुए ।

52 इसलिए मोरोनी की सेना ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया, हां, यहां तक कि नदी के दोनों तरफ से, क्योंकि देखो, पूर्व की ओर लेही के लोग थे ।

53 इसलिए जब जीराहेमना ने सिदोन नदी के पूर्व में लेही के लोगों को, और सिदोन नदी के पश्चिम में मोरोनी की सेना को देखा कि नफाइयों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया है, तो वे डर से दंग रह गए ।

54 अब मोरोनी ने जब उनका आतंक देखा, तो अपने लोगों को आज्ञा दी कि उन्हें रक्तपात रोक देना चाहिए ।

Now, the Lamanites were more numerous, yea, by more than double the number of the Nephites; nevertheless, they were driven insomuch that they were gathered together in one body in the valley, upon the bank by the river Sidon.

Therefore the armies of Moroni encircled them about, yea, even on both sides of the river, for behold, on the east were the men of Lehi.

Therefore when Zerahemnah saw the men of Lehi on the east of the river Sidon, and the armies of Moroni on the west of the river Sidon, that they were encircled about by the Nephites, they were struck with terror.

Now Moroni, when he saw their terror, commanded his men that they should stop shedding their blood.

## अलमा 44

- 1 और ऐसा हुआ कि वे रुक गए और उनसे कुछ दूरी बना ली। और मोरोनी ने जीराहेमना से कहा: देखो, जीराहेमना, हम लहू बहानेवाले नहीं बनना चाहते हैं। तुम जानते हो कि तुम हमारे हाथों में हो, फिर भी हम तुम्हारा वध नहीं करना चाहते हैं।
- 2 देखो, हम यहां न तो तुम्हारे विरुद्ध लड़ाई लड़ने आए हैं कि हम सत्ता के लिए तुम्हारा लहू बहाएं; न ही हम किसी को दासता में रखना चाहते हैं। परन्तु यही वह कारण है जिसके लिए तुम हमसे लड़ने आए हो; हां, हमारे धर्म के कारण तुम हमसे क्रोधित हो।
- 3 परन्तु अब, तुमने देखा कि प्रभु हमारे साथ है; और तुमने यह भी देखा कि उसने तुम्हें हमारे हाथों में सौंप दिया है। और अब मैं चाहुंगा कि तुम समझो कि ऐसा हमारे साथ हमारे धर्म और मसीह में हमारे विश्वास के कारण हुआ है। और अब तुमने देखा कि तुम हमारे इस विश्वास को नष्ट नहीं कर सकते।
- 4 अब तुमने देखा कि यह परमेश्वर का सच्चा विश्वास है, तुम देखोगे कि परमेश्वर हमारी तब तक सहायता करेगा, और हमें बचाकर रखेगा जब तक कि हम उसमें, अपने विश्वास में, और अपने धर्म में विश्वासी रहते हैं; और यदि हम पाप में नहीं पड़ते हैं और अपने विश्वास को नहीं नकारते हैं तो प्रभु हमें कभी नष्ट नहीं होने देगा।
- 5 और अब, जीराहेमना, मैं तुम्हें उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर के नाम में आज्ञा देता हूँ, जिसने हमारे हाथों को मजबूत किया है ताकि हम अपने विश्वास, अपने धर्म, और उपासना की अपनी रीतियों, और अपने गिरजे, और उस पावन समर्थन के द्वारा तुम पर विजय प्राप्त कर सकें जिसके लिए हम अपनी पत्नियों और अपने बच्चों, और उस स्वतंत्रता के आभारी हैं जो हमें हमारी भूमि और हमारे प्रदेश से बांधे रखती है; हां, और परमेश्वर के उस पवित्र वचन के पोषण द्वारा भी जिसके प्रति हम अपनी प्रसन्नता के लिए आभारी हैं; और उन सबके द्वारा भी हमने तुम पर विजय प्राप्त किया है जो हमारे लिए अत्याधिक प्रिय हैं—
- 6 हां, और यही सब कुछ नहीं है; मैं जीवन के प्रति तुम्हारी उन सारी इच्छाओं से तुम्हें आज्ञा देता हूँ, कि तुम युद्ध के अपने हथियार हमें सौंप दो, और हम तुम्हें नहीं मारेंगे, परन्तु हम तुम्हें जीवनदान देंगे यदि तुम अपने रास्ते चले जाओगे और फिर से युद्ध के लिए लौटकर वापस नहीं आओगे।

## Alma 44

And it came to pass that they did stop and withdrew a pace from them. And Moroni said unto Zerahemnah: Behold, Zerahemnah, that we do not desire to be men of blood. Ye know that ye are in our hands, yet we do not desire to slay you.

Behold, we have not come out to battle against you that we might shed your blood for power; neither do we desire to bring any one to the yoke of bondage. But this is the very cause for which ye have come against us; yea, and ye are angry with us because of our religion.

But now, ye behold that the Lord is with us; and ye behold that he has delivered you into our hands. And now I would that ye should understand that this is done unto us because of our religion and our faith in Christ. And now ye see that ye cannot destroy this our faith.

Now ye see that this is the true faith of God; yea, ye see that God will support, and keep, and preserve us, so long as we are faithful unto him, and unto our faith, and our religion; and never will the Lord suffer that we shall be destroyed except we should fall into transgression and deny our faith.

And now, Zerahemnah, I command you, in the name of that all-powerful God, who has strengthened our arms that we have gained power over you, by our faith, by our religion, and by our rites of worship, and by our church, and by the sacred support which we owe to our wives and our children, by that liberty which binds us to our lands and our country; yea, and also by the maintenance of the sacred word of God, to which we owe all our happiness; and by all that is most dear unto us—

Yea, and this is not all; I command you by all the desires which ye have for life, that ye deliver up your weapons of war unto us, and we will seek not your blood, but we will spare your lives, if ye will go your way and come not again to war against us.

- 7 और अब, यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, देखो, तुम हमारे हाथों में हो, और मैं अपने लोगों को आज्ञा दूंगा कि वे तुम पर टूट पड़ें और तुम पर घातक प्रहार करें, ताकि तुम सदा के लिए खत्म हो जाओ; और फिर हम देखेंगे कि इन लोगों पर किसका अधिकार होगा; हां, हम देखेंगे कि दासता में किसे लाया जाएगा।
- 8 और अब ऐसा हुआ कि जब जीराहेमना ने इन बातों को सुना वह आगे आया और अपनी तलवार और कटार को सौंप दिया, और अपनी कमान को मोरोनी के हाथों में दे दिया, और उससे कहा: देखो, ये युद्ध के हथियार हैं; हम इन्हें तुम्हें सौंपेंगे, परन्तु हम तुम्हें कोई भी वचन नहीं देंगे जिसे हम जानते हैं कि हम और हमारे बच्चे तोड़ देंगे; परन्तु हम अपने अस्त्र-शस्त्र लेकर निर्जन प्रदेश में जाना चाहते हैं; अन्यथा हम अपनी तलवार अपने पास रखेंगे, और या तो हम नष्ट होंगे या विजयी होंगे।
- 9 देखो, हम तुम्हारे धर्म के नहीं हैं; हम विश्वास नहीं करते हैं कि परमेश्वर ने हमें तुम्हारे हाथों में सौंप दिया है; परन्तु हम विश्वास करते हैं कि तुम्हारी धूर्तता ने तुम्हें हमारी तलवारों से बचा लिया है। देखो, तुम्हारे कवच और तुम्हारे हाथों की ढाल ने तुम्हें बचा लिया है।
- 10 और अब जब जीराहेमना ने इन बातों को बोलना बन्द किया, मोरोनी ने तलवार और उन अस्त्र-शस्त्रों को यह कहते हुए वापस कर दिया जिसे उसने जीराहेमना से लिया था: देखो, हम अपनी लड़ाई समाप्त करते हैं।
- 11 अब मैं उन बातों को फिर से नहीं कह सकता जिसे मैंने कहा है, इसलिए जैसे प्रभु निश्चित रूप से जीवित है, वैसे ही तुम यहां से यह शपथ लिए बिना नहीं जा सकते कि तुम फिर से हमारे विरुद्ध लड़ाई लड़ने नहीं आओगे। अब जब कि तुम हमारे हाथों में हो, या तो हम तुम्हारा लहू धरती पर बहा देंगे या फिर तुम्हें मेरी शर्तों को मानना होगा।
- 12 और अब मोरोनी ने इन बातों को कह लिया, जीराहेमना ने अपनी तलवार को पकड़े रखा, और वह मोरोनी से क्रोधित हुआ, और वह आगे की तरफ ऐसे दौड़ा जैसे कि मोरोनी को मारना चाहता हो; परन्तु जैसे ही उसने अपनी तलवार निकाली, देखो, मोरोनी के एक सैनिक ने उसे जमीन पर गिरा दिया, और उसकी मूठ टूट गई; और उसने जीराहेमना पर भी प्रहार किया जिससे उसके सिर के बाल त्वचा सहित जमीन पर गिर पड़े। और जीराहेमना वहां से भागकर अपने सैनिकों के बीच चला गया।

And now, if ye do not this, behold, ye are in our hands, and I will command my men that they shall fall upon you, and inflict the wounds of death in your bodies, that ye may become extinct; and then we will see who shall have power over this people; yea, we will see who shall be brought into bondage.

And now it came to pass that when Zerahemnah had heard these sayings he came forth and delivered up his sword and his cimeter, and his bow into the hands of Moroni, and said unto him: Behold, here are our weapons of war; we will deliver them up unto you, but we will not suffer ourselves to take an oath unto you, which we know that we shall break, and also our children; but take our weapons of war, and suffer that we may depart into the wilderness; otherwise we will retain our swords, and we will perish or conquer.

Behold, we are not of your faith; we do not believe that it is God that has delivered us into your hands; but we believe that it is your cunning that has preserved you from our swords. Behold, it is your breastplates and your shields that have preserved you.

And now when Zerahemnah had made an end of speaking these words, Moroni returned the sword and the weapons of war, which he had received, unto Zerahemnah, saying: Behold, we will end the conflict.

Now I cannot recall the words which I have spoken, therefore as the Lord liveth, ye shall not depart except ye depart with an oath that ye will not return again against us to war. Now as ye are in our hands we will spill your blood upon the ground, or ye shall submit to the conditions which I have proposed.

And now when Moroni had said these words, Zerahemnah retained his sword, and he was angry with Moroni, and he rushed forward that he might slay Moroni; but as he raised his sword, behold, one of Moroni's soldiers smote it even to the earth, and it broke by the hilt; and he also smote Zerahemnah that he took off his scalp and it fell to the earth. And Zerahemnah withdrew from before them into the midst of his soldiers.

- 13 और ऐसा हुआ कि जो सैनिक खड़ा था, जिसने जीराहेमना के सिर के बाल उसकी त्वचा सहित जमीन पर गिरा दी थी, बालोंसहित त्वचा को जमीन से उठाया, और तलवार की नोक पर उसे रखा, और उन लोगों को उसे दिखाता हुआ ऊंची आवाज में बोला:
- 14 जैसे कि यह त्वचा जमीन पर गिरी हुई है, जो कि तुम्हारे सेनापति के सिर की त्वचा है, इसी प्रकार तुम भी जमीन पर गिरोगे यदि युद्ध के अपने अस्त्र-शस्त्रों को नहीं सौंपोगे और शांति स्थापित करने की प्रतिज्ञा करते हुए यहां से नहीं जाओगे।
- 15 अब उनकी संख्या बहुत थी जब उन्होंने इन बातों को सुना और तलवार की नोक पर रखी हुई त्वचा को देखा, जो कि डर से दंग रह गए थे; और कई आगे आए और मोरोनी के पैरों में युद्ध के अस्त्र-शस्त्रों को डाल दिया, और शांति स्थापित करने की प्रतिज्ञा की। और जितने लोगों ने प्रतिज्ञा की उन्हें निर्जन प्रदेश में जाने दिया गया।
- 16 अब ऐसा हुआ कि जीराहेमना अत्याधिक क्रोध में था, और क्रोध में उसने अपने बाकी बचे सैनिकों को नफाइयों के विरुद्ध भारी युद्ध के लिए भड़काया।
- 17 और अब लमनाइयों के जिद्ध के कारण मोरोनी क्रोधित हुआ; इसलिए उसने अपने लोगों को आज्ञा दी कि वे उन पर टूट पड़ें और उन्हें मार डालें। और ऐसा हुआ कि उन्होंने उन्हें मारना शुरू किया; हां, और लमनाइयों ने अपनी तलवारों और अपनी पूरी शक्ति से युद्ध किया।
- 18 परन्तु देखो, उनकी वस्त्रहीन त्वचा और उनके नंगे सिर नफाइयों की तेज तलवारों के सामने खुले हुए थे; हां, देखो उन्हें छेदा और काटा गया, हां, और नफाइयों की तलवारों के सामने वे तेजी से गिरते चले गए; और जैसा कि मोरोनी के सैनिक ने भविष्यवाणी की थी वैसे ही वे गिराए जाने लगे।
- 19 अब जीराहेमना ने जब देखा कि वे सब लगभग नष्ट होनेवाले हैं, मोरोनी के सामने जोर-जोर से याचना करने लगा, यह कहते हुए कि वह और उसके लोग प्रतिज्ञा करेंगे यदि वे बाकी बचे हुए लोगों को जीवनदान देते हैं, कि वे उनके विरुद्ध युद्ध करने के लिए कभी भी वापस नहीं आएंगे।
- 20 और ऐसा हुआ कि मोरोनी ने मौत के खेल को फिर से लोगों के बीच बन्द करवा दिया। और उसने लमनाइयों से युद्ध के अस्त्र-शस्त्रों को ले लिया; और जब उन्होंने उसके साथ शांति स्थापित करने की प्रतिज्ञा की तब उन्हें निर्जन प्रदेश में जाने दिया गया।

And it came to pass that the soldier who stood by, who smote off the scalp of Zerahemnah, took up the scalp from off the ground by the hair, and laid it upon the point of his sword, and stretched it forth unto them, saying unto them with a loud voice:

Even as this scalp has fallen to the earth, which is the scalp of your chief, so shall ye fall to the earth except ye will deliver up your weapons of war and depart with a covenant of peace.

Now there were many, when they heard these words and saw the scalp which was upon the sword, that were struck with fear; and many came forth and threw down their weapons of war at the feet of Moroni, and entered into a covenant of peace. And as many as entered into a covenant they suffered to depart into the wilderness.

Now it came to pass that Zerahemnah was exceedingly wroth, and he did stir up the remainder of his soldiers to anger, to contend more powerfully against the Nephites.

And now Moroni was angry, because of the stubbornness of the Lamanites; therefore he commanded his people that they should fall upon them and slay them. And it came to pass that they began to slay them; yea, and the Lamanites did contend with their swords and their might.

But behold, their naked skins and their bare heads were exposed to the sharp swords of the Nephites; yea, behold they were pierced and smitten, yea, and did fall exceedingly fast before the swords of the Nephites; and they began to be swept down, even as the soldier of Moroni had prophesied.

Now Zerahemnah, when he saw that they were all about to be destroyed, cried mightily unto Moroni, promising that he would covenant and also his people with them, if they would spare the remainder of their lives, that they never would come to war again against them.

And it came to pass that Moroni caused that the work of death should cease again among the people. And he took the weapons of war from the Lamanites; and after they had entered into a covenant with him of peace they were suffered to depart into the wilderness.

- 21 अब अत्याधिक संख्या होने के कारण उनके मरे हुए लोगों को गिनती नहीं की जा सकती थी; हां, दोनों नफाइयों और लमनाइयों के मरे हुए लोगों की संख्या अत्याधिक थी ।
- 22 और ऐसा हुआ कि उन्होंने अपने मरे हुए लोगों को सिदोन के जल में फेंक दिया, और वे आगे बह गए होंगे और समुद्र की गहराई में दफन हुए होंगे ।
- 23 और नफाइयों, या मोरोनी की सेनाएं वापस अपने घर और अपनी भूमि पर लौट आईं ।
- 24 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का अठारहवां वर्ष समाप्त हुआ । और इस प्रकार अलमा का अभिलेख समाप्त हुआ, जो कि नफी की पट्टियों पर लिखा हुआ था ।

Now the number of their dead was not numbered because of the greatness of the number; yea, the number of their dead was exceedingly great, both on the Nephites and on the Lamanites.

And it came to pass that they did cast their dead into the waters of Sidon, and they have gone forth and are buried in the depths of the sea.

And the armies of the Nephites, or of Moroni, returned and came to their houses and their lands.

And thus ended the eighteenth year of the reign of the judges over the people of Nephi. And thus ended the record of Alma, which was written upon the plates of Nephi.

हिलामन के समय में नफी के लोगों का, और उनके युद्धों और लड़ाइयों का विवरण, हिलामन के अभिलेखानुसार जिसे उसने अपने समय में रखा था ।

## अलमा 45

- 1 देखो, अब ऐसा हुआ कि नफी के लोग अत्याधिक प्रसन्न थे, क्योंकि प्रभु ने फिर से उन्हें उनके शत्रुओं के हाथों से बचाया था; इसलिए उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर को धन्यवाद दिया; हां, उन्होंने बहुत उपवास और प्रार्थना किया, और उन्होंने अत्याधिक प्रसन्नता के साथ परमेश्वर की उपासना की ।
- 2 और नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के उन्नीसवें वर्ष में ऐसा हुआ कि अलमा अपने बेटे हिलामन के पास आया और उससे कहा: क्या तुम उन बातों पर विश्वास करते हो जिसे मैंने तुम्हें उन अभिलेखों से संबंधित बताया है जिन्हें रखा गया है ?
- 3 और हिलामन ने उससे कहा: हां, मैं विश्वास करता हूँ ।
- 4 और अलमा ने फिर से कहा: क्या तुम उस यीशु मसीह में विश्वास करते हो जो आएगा ?
- 5 और उसने कहा: हां, मैं उन सारी बातों पर विश्वास करता हूँ जिसे तुमने बताया है ।
- 6 और अलमा ने फिर से उससे कहा: क्या तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे ?
- 7 और उसने कहा: हां, मैं तुम्हारी आज्ञाओं का पालन पूरे हृदय से करूँगा ।
- 8 फिर अलमा ने उससे कहा: तुम आशीषित हो; और प्रभु तुम्हें इस भूमि पर समृद्ध बनाएगा ।
- 9 परन्तु देखो, मुझे तुम्हारे लिए कुछ भविष्यवाणी करना है; परन्तु मैं जो भविष्यवाणी तुम्हारे लिए करनेवाला हूँ उसकी जानकारी तुम दूसरों को नहीं दोगे; हां, मैं जो भविष्यवाणी तुम्हारे लिए करनेवाला हूँ उसकी जानकारी तुम दूसरों को तब तक नहीं दोगे जब तक कि वह पूरी नहीं होती; इसलिए उन बातों को लिख लो जो मैं कहूँगा ।
- 10 और ये वे शब्द हैं: देखो, ये लोग जो नफाई हैं, प्रकटीकरण की जो आत्मा मुझमें है उसके अनुसार, यीशु मसीह द्वारा स्वयं को इन पर-कट करने के चार सौ वर्ष पश्चात्, ये अविश्वासी हो जाएंगे ।

*The account of the people of Nephi, and their wars and dissensions, in the days of Helaman, according to the record of Helaman, which he kept in his days.*

## Alma 45

Behold, now it came to pass that the people of Nephi were exceedingly rejoiced, because the Lord had again delivered them out of the hands of their enemies; therefore they gave thanks unto the Lord their God; yea, and they did fast much and pray much, and they did worship God with exceedingly great joy.

And it came to pass in the nineteenth year of the reign of the judges over the people of Nephi, that Alma came unto his son Helaman and said unto him: Believest thou the words which I spake unto thee concerning those records which have been kept?

And Helaman said unto him: Yea, I believe.

And Alma said again: Believest thou in Jesus Christ, who shall come?

And he said: Yea, I believe all the words which thou hast spoken.

And Alma said unto him again: Will ye keep my commandments?

And he said: Yea, I will keep thy commandments with all my heart.

Then Alma said unto him: Blessed art thou; and the Lord shall prosper thee in this land.

But behold, I have somewhat to prophesy unto thee; but what I prophesy unto thee ye shall not make known; yea, what I prophesy unto thee shall not be made known, even until the prophecy is fulfilled; therefore write the words which I shall say.

And these are the words: Behold, I perceive that this very people, the Nephites, according to the spirit of revelation which is in me, in four hundred years from the time that Jesus Christ shall manifest himself unto them, shall dwindle in unbelief.

- 11 हां, फिर वे युद्ध और महामारियां देखेंगे, हां, आकाल और रक्तपात देखेंगे, तब तक जब तक कि नफी के लोग दुर्लभ नहीं हो जाते—
- 12 हां, और ऐसा इनके अविश्वासी होने और स्वयं को अन्धकार के कार्य, और कामुक, और हर प्रकार की दुष्टता में गिराने के कारण होगा; हां, मैं तुमसे कहता हूँ, ऐसा इतने महान प्रकाश और ज्ञान के विरुद्ध उनके पाप के कारण होगा, हां, मैं तुमसे कहता हूँ कि इस महान दुष्टता के आने से पहले चौथी पीढ़ी भी पूरी तरह से नष्ट नहीं होगी।
- 13 और जब वह महान दिन आएगा, देखो, समय बड़ी शीघ्रता से आएगा जब वे लोग जो अभी जीवित हैं, या उन लोगों के वंश जीवित होंगे जो इस समय नफी के लोग कहलाते हैं, तब उनकी गिनती नफी के लोगों में नहीं की जाएगी।
- 14 परन्तु जो लोग बच जाएंगे, और उस बड़े और भयानक दिन नष्ट नहीं होंगे, उनकी गिनती लमनाइयों के बीच होगी, और वे उनके समान बन जाएंगे, सारे लोग, केवल कुछ उन लोगों को छोड़कर जो प्रभु के शिष्य कहलाएंगे; और उनका लमनाई तब तक पीछा करेंगे जब तक कि वे दुर्लभ नहीं हो जाते। और अब, दुष्टता के कारण यह भविष्यवाणी पूरी होगी।
- 15 और ऐसा हुआ कि जब अलमा ने इन बातों को हिलामन को बता दिया उसके पश्चात, उसने उसे आशीष दिया, और अपने अन्य बेटों को भी; और उसने धरती को भी धार्मिकता के लिए आशीषित किया।
- 16 और उसने कहा: इस प्रकार प्रभु परमेश्वर कहता है—धरती श्रापित हो, हां, यह धरती, जब लोगों के पापों का घड़ा भर जाएगा और वे दुष्कर्म करेंगे तब हर राष्ट्र, जाति, भाषा, और लोगों का विनाश होगा; और जैसा मैंने कहा है वैसा ही होगा; क्योंकि धरती पर यही परमेश्वर का श्राप और आशीष है, क्योंकि प्रभु पाप के लिए थोड़ी सी भी छूट नहीं दे सकता है।
- 17 और अब, जब अलमा ने इन बातों को कह लिया तब उसने गिरजे को आशीष दी, हां, उन सारे लोगों को जो इस समय से अपने विश्वास में दृढ़ रहेंगे।
- 18 और जब अलमा ने ऐसा कर लिया तब वह जराहेमला प्रदेश से बाहर चला गया, जैसे कि उसे मेलेक प्रदेश जाना था। और ऐसा हुआ कि उसके बारे में अधिक सुनाई नहीं दिया; उसकी मृत्यु या उसकी दफन-क्रिया के बारे में हम नहीं जानते हैं।

Yea, and then shall they see wars and pestilences, yea, famines and bloodshed, even until the people of Nephi shall become extinct—

Yea, and this because they shall dwindle in unbelief and fall into the works of darkness, and lasciviousness, and all manner of iniquities; yea, I say unto you, that because they shall sin against so great light and knowledge, yea, I say unto you, that from that day, even the fourth generation shall not all pass away before this great iniquity shall come.

And when that great day cometh, behold, the time very soon cometh that those who are now, or the seed of those who are now numbered among the people of Nephi, shall no more be numbered among the people of Nephi.

But whosoever remaineth, and is not destroyed in that great and dreadful day, shall be numbered among the Lamanites, and shall become like unto them, all, save it be a few who shall be called the disciples of the Lord; and them shall the Lamanites pursue even until they shall become extinct. And now, because of iniquity, this prophecy shall be fulfilled.

And now it came to pass that after Alma had said these things to Helaman, he blessed him, and also his other sons; and he also blessed the earth for the righteous' sake.

And he said: Thus saith the Lord God—Cursed shall be the land, yea, this land, unto every nation, kindred, tongue, and people, unto destruction, which do wickedly, when they are fully ripe; and as I have said so shall it be; for this is the cursing and the blessing of God upon the land, for the Lord cannot look upon sin with the least degree of allowance.

And now, when Alma had said these words he blessed the church, yea, all those who should stand fast in the faith from that time henceforth.

And when Alma had done this he departed out of the land of Zarahemla, as if to go into the land of Melek. And it came to pass that he was never heard of more; as to his death or burial we know not of.



- 19 देखो, हम यह जानते हैं कि वह एक धर्मी पुरुष था; और उसके कथन गिरजे में फैल गए कि अलमा आत्मा द्वारा उठा लिया गया होगा, या मूसा के समान प्रभु के हाथों से दफनाया गया होगा। परन्तु देखो, धर्मशास्त्र कहते हैं कि प्रभु मूसा को अपने साथ ले गया; और हमारा मानना है कि उसने अलमा को भी आत्मा में अपने पास बुला लिया है; इसलिए, यही कारण है कि हम उसकी मृत्यु और दफन-क्रिया के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं।
- 20 और अब ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के उन्नीसवें वर्ष के आरंभ में, वचन का प्रचार करने के लिए हिलामन लोगों के बीच गया।
- 21 क्योंकि देखो, लमनाइयों के साथ उनके युद्धों और कई छोटे-मोटे वाद-विवादों और लोगों के बीच में रहे उपद्रव के कारण, यह आवश्यक हो गया कि उनके बीच में परमेश्वर का वचन लाया जाए, हां, और पूरे गिरजे में एक नियम बनाया जाए।
- 22 इसलिए, हिलामन और उसके भाई फिर से पूरे प्रदेश में गिरजे की स्थापना के लिए गए, हां, पूरे प्रदेश के हर नगर में जिस पर नफी के लोगों का अधिकार था। और ऐसा हुआ कि उन्होंने पूरे प्रदेश में स्थापित, सभी गिरजों में याजकों और शिक्षकों की नियुक्ति की।
- 23 और ऐसा हुआ कि जब हिलामन और उसके भाइयों ने गिरजों में याजकों और शिक्षकों की नियुक्ति कर ली तो इसके पश्चात उनके बीच वाद-विवाद होने लगे, और वे हिलामन और उसके भाइयों की बातों पर ध्यान नहीं देते थे;
- 24 परन्तु अपनी अत्याधिक धन-संपत्तियों के कारण, अपने हृदयों में फूलते हुए वे घमंडी होने लगे; इसलिए वे अपनी नजर में धनवान होते गए, और परमेश्वर के सामने सीधे मार्ग पर चलने के लिए उनकी बातों पर ध्यान नहीं देते थे।

Behold, this we know, that he was a righteous man; and the saying went abroad in the church that he was taken up by the Spirit, or buried by the hand of the Lord, even as Moses. But behold, the scriptures saith the Lord took Moses unto himself; and we suppose that he has also received Alma in the spirit, unto himself; therefore, for this cause we know nothing concerning his death and burial.

And now it came to pass in the commencement of the nineteenth year of the reign of the judges over the people of Nephi, that Helaman went forth among the people to declare the word unto them.

For behold, because of their wars with the Lamanites and the many little dissensions and disturbances which had been among the people, it became expedient that the word of God should be declared among them, yea, and that a regulation should be made throughout the church.

Therefore, Helaman and his brethren went forth to establish the church again in all the land, yea, in every city throughout all the land which was possessed by the people of Nephi. And it came to pass that they did appoint priests and teachers throughout all the land, over all the churches.

And now it came to pass that after Helaman and his brethren had appointed priests and teachers over the churches that there arose a dissension among them, and they would not give heed to the words of Helaman and his brethren;

But they grew proud, being lifted up in their hearts, because of their exceedingly great riches; therefore they grew rich in their own eyes, and would not give heed to their words, to walk uprightly before God.

## अलमा 46

- 1 और ऐसा हुआ कि जितने लोगों ने हिलामन और उसके भाइयों की बातों को नहीं सुना वे अपने भाइयों के विरुद्ध एकत्रित होने लगे ।
- 2 और अब देखो, वे अत्याधिक क्रोध में थे, इतना अधिक कि वे उन्हें मार देना चाहते थे ।
- 3 अब जो लोग अपने भाइयों के विरुद्ध क्रोध में थे उनका मार्गदर्शक एक हट्टा-कट्टा और मजबूत व्यक्ति था; और उसका नाम अमालिकिया था ।
- 4 और अमालिकिया राजा बनना चाहता था; और जो लोग क्रोध में थे वे भी चाहते थे कि वह उनका राजा बने; और उनमें अधिकतर वे लोग थे जो प्रदेश के छोटे न्यायी थे, और वे शक्तिशाली बनना चाहते थे ।
- 5 और वे अमालिकिया के बहकावे में पड़ गए, कि यदि वे उसका समर्थन करेंगे और उसे अपना राजा बनाएंगे तो वह उन्हें लोगों का शासक बनाएगा ।
- 6 इस प्रकार हिलामन और उसके भाइयों के प्रचार के बावजूद वे अमालिकिया द्वारा वाद-विवाद में पड़ गए, हां, गिरजे के प्रति उनकी महान चिंता के बावजूद, क्योंकि वे गिरजे के उच्च याजक थे ।
- 7 और गिरजे में कई लोग थे जो अमालिकिया की बहकानेवाली बातों में पड़ गए, इसलिए उन्होंने गिरजे में भी वाद-विवाद किया; और इस प्रकार नफाइयों द्वारा लमनाइयों पर महान विजय प्राप्त करने के बावजूद, और प्रभु के हाथों द्वारा उनकी समर्पणता के कारण भी, नफी के लोगों के मामले अत्याधिक झोखिमभरे और खतरनाक होते गए ।
- 8 इस प्रकार हम देखते हैं कि कितनी शीघ्रता से मानव संतान अपने प्रभु परमेश्वर को भूल जाते हैं, हां, कितनी शीघ्रता से दुष्कर्म करने के लिए, और शैतान के बहकावे में आने के लिए ।
- 9 हां, और हम यह भी देखते हैं कि किसी दुष्ट व्यक्ति की महान दुष्टता मानव संतान के बीच पाप करवा सकती है ।

## Alma 46

And it came to pass that as many as would not hearken to the words of Helaman and his brethren were gathered together against their brethren.

And now behold, they were exceedingly wroth, in-somuch that they were determined to slay them.

Now the leader of those who were wroth against their brethren was a large and a strong man; and his name was Amalickiah.

And Amalickiah was desirous to be a king; and those people who were wroth were also desirous that he should be their king; and they were the greater part of them the lower judges of the land, and they were seeking for power.

And they had been led by the flatteries of Amalickiah, that if they would support him and establish him to be their king that he would make them rulers over the people.

Thus they were led away by Amalickiah to dissensions, notwithstanding the preaching of Helaman and his brethren, yea, notwithstanding their exceedingly great care over the church, for they were high priests over the church.

And there were many in the church who believed in the flattering words of Amalickiah, therefore they dissented even from the church; and thus were the affairs of the people of Nephi exceedingly precarious and dangerous, notwithstanding their great victory which they had had over the Lamanites, and their great rejoicings which they had had because of their deliverance by the hand of the Lord.

Thus we see how quick the children of men do forget the Lord their God, yea, how quick to do iniquity, and to be led away by the evil one.

Yea, and we also see the great wickedness one very wicked man can cause to take place among the children of men.

- 10 हां, हम देखते हैं कि कई बहकानेवाली बातें करनेवाला, और धूर्त प्रवृत्ति का मनुष्य होने के कारण उसने कई लोगों को दुष्टता में डाल दिया था; हां, और वह गिरजे को नष्ट करना चाहता था, और स्वतंत्रता के उस आधार को नष्ट करना चाहता था जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया था, या उस आशीष को नष्ट करना चाहता था जिसे परमेश्वर ने प्रदेश में धार्मिकता के लिए दिया था ।
- 11 और अब ऐसा हुआ कि जब मोरोनी जो कि नफाइयों की सेना का मुख्य सेनापति था, ने इन बाद-विवादों को सुना तो वह अमालिकिया से क्रोधित हुआ ।
- 12 और ऐसा हुआ कि उसने अपना वस्त्र फाड़ डाला; और उसका एक टुकड़ा लिया और उस पर लिखा—हमारे परमेश्वर, हमारे धर्म, हमारी स्वतंत्रता, और हमारी शांति, हमारी पत्नियों, और हमारे बच्चों की याद में—और उसने स्तम्भ के छोर पर उसे बांध दिया ।
- 13 और उसने अपने सिर की पट्टी, और अपने कवच, और अपना ढालों पर, और अपनी कमर पर लिपटी हुई कवच पर इसे बांध दिया; और उस स्तम्भ को अपने साथ लिया जिसकी छोर पर उसका फटा हुआ वस्त्र बंधा था, (और उसे उसने स्वाधीनता का झण्डा कहा) और वह जमीन पर झुका, और उसने अपने परमेश्वर से अपने भाइयों की स्वतंत्रता के प्रति आशीष के लिए गंभीरतापूर्वक प्रार्थना की, तब तक के लिए जब तक कि ईसाइयों का एक समूह प्रदेश पर अधिकार करने के लिए बचा रहे—
- 14 क्योंकि जो लोग गिरजे के सदस्य नहीं थे वे इसी प्रकार मसीह के उन सच्चे विश्वासियों को बुलाते थे जो परमेश्वर के गिरजे के सदस्य थे ।
- 15 और वे लोग विश्वासी थे जो गिरजे के सदस्य थे; हां, वे लोग जो मसीह में सच्चे विश्वासी थे उन्होंने स्वेच्छा से अपने ऊपर मसीह के नाम को ग्रहण किया था, या आनेवाले मसीह में अपने विश्वास के कारण वे ईसाई कहलाए ।
- 16 और इसलिए, इस समय पर, ईसाइयों के कल्याण और प्रदेश की स्वतंत्रता के प्रति कृपापात्र होने के लिए मोरोनी ने प्रार्थना की ।
- 17 और ऐसा हुआ कि जब उसने परमेश्वर के प्रति अपनी आत्मा उंडेल दी, प्रदेश के दक्षिण में स्थित सारी भूमि को उसने उजाड़ प्रदेश कहा, हां, और जो ठीक-ठाक थी, उत्तर और दक्षिण की सारी भूमि को—एक चुनी हुई भूमि, और स्वाधीनता का प्रदेश कहा ।

Yea, we see that Amalickiah, because he was a man of cunning device and a man of many flattering words, that he led away the hearts of many people to do wickedly; yea, and to seek to destroy the church of God, and to destroy the foundation of liberty which God had granted unto them, or which blessing God had sent upon the face of the land for the righteous' sake.

And now it came to pass that when Moroni, who was the chief commander of the armies of the Nephites, had heard of these dissensions, he was angry with Amalickiah.

And it came to pass that he rent his coat; and he took a piece thereof, and wrote upon it—In memory of our God, our religion, and freedom, and our peace, our wives, and our children—and he fastened it upon the end of a pole.

And he fastened on his head-plate, and his breast-plate, and his shields, and girded on his armor about his loins; and he took the pole, which had on the end thereof his rent coat, (and he called it the title of liberty) and he bowed himself to the earth, and he prayed mightily unto his God for the blessings of liberty to rest upon his brethren, so long as there should a band of Christians remain to possess the land—

For thus were all the true believers of Christ, who belonged to the church of God, called by those who did not belong to the church.

And those who did belong to the church were faithful; yea, all those who were true believers in Christ took upon them, gladly, the name of Christ, or Christians as they were called, because of their belief in Christ who should come.

And therefore, at this time, Moroni prayed that the cause of the Christians, and the freedom of the land might be favored.

And it came to pass that when he had poured out his soul to God, he named all the land which was south of the land Desolation, yea, and in fine, all the land, both on the north and on the south—A chosen land, and the land of liberty.

- 18 और उसने कहा: निश्चित तौर पर परमेश्वर नहीं चाहेगा कि मसीह का नाम ग्रहण करने के कारण हम लोग जो तिरस्कृत होते हैं, कुचले जाएं और विनाश हो, तब तक जब तक कि हम स्वयं इसे अपने ऊपर अपने पाप के द्वारा नहीं लाते हैं।
- 19 और जब मोरोनी ने इन बातों को कह लिया, हवा में अपने फटे हुए कपड़े को लहराते हुए, वह लोगों के बीच गया, ताकि जो उसने उस फटे हुए कपड़े पर लिखा था उसे सारे देख सकें, और जोर-जोर से यह कहा:
- 20 देखो, जो भी प्रदेश में इस झण्डे को बनाए रखेगा, वह प्रभु में बल प्राप्त कर आगे बढ़ेगा, और एक अनुबंध में प्रवेश करेगा कि वह अपने अधिकारों, और अपने धर्म को बचाकर रखेगा, ताकि प्रभु परमेश्वर उसे आशीष दे सके।
- 21 और ऐसा हुआ कि जब मोरोनी ने इन बातों की घोषणा कर ली, देखो, लोग अपनी कमर पर बंधे हुए अपने कवच के साथ भागते हुए आए, अपने वस्त्रों को चिन्ह या एक अनुबंध के रूप में फाड़ते हुए कि वे अपने प्रभु परमेश्वर को नहीं भूलेंगे; या दूसरे शब्दों में, यदि वे परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं, या पाप में पड़ जाते हैं, और मसीह के नाम को ग्रहण करने में लज्जा महसूस करते हैं तो प्रभु उन्हें वैसे ही चीर डालेगा जैसे कि उन्होंने अपने वस्त्रों को फाड़ा था।
- 22 अब यही वह अनुबंध था जिसे उन्होंने बनाया था, और उन्होंने यह कहते हुए मोरोनी के पैरों में अपने वस्त्र डाल दिए थे: हम अपने परमेश्वर के साथ अनुबंध करते हैं, कि हम भी उत्तरी प्रदेश में रह रहे अपने भाइयों के समान नष्ट हो जाएंगे यदि हम पाप में पड़ेंगे; हां, यदि हम पाप में पड़ेंगे तो वह हमें हमारे शत्रुओं के पैरों में डाल सकता है, वैसे ही जैसे कि हमने अपने वस्त्रों को कुचले जाने के लिए तुम्हारे पैरों के नीचे डाल दिया है।
- 23 मोरोनी ने उनसे कहा: देखो, हम याकूब के बचे हुए वंश हैं; हां, हम उस यूसुफ के बचे हुए वंश हैं जिसके लबादे को उसके भाइयों ने कई टुकड़ों में फाड़ डाला था; हां, और अब देखो, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना याद रखो, या हमारे वस्त्र हमारे भाइयों द्वारा फाड़े जाएंगे, और हमें बंदीगृह में डाल दिया जाएगा, या बेच दिया जाएगा, या हमारा वध कर दिया जाएगा।

And he said: Surely God shall not suffer that we, who are despised because we take upon us the name of Christ, shall be trodden down and destroyed, until we bring it upon us by our own transgressions.

And when Moroni had said these words, he went forth among the people, waving the rent part of his garment in the air, that all might see the writing which he had written upon the rent part, and crying with a loud voice, saying:

Behold, whosoever will maintain this title upon the land, let them come forth in the strength of the Lord, and enter into a covenant that they will maintain their rights, and their religion, that the Lord God may bless them.

And it came to pass that when Moroni had proclaimed these words, behold, the people came running together with their armor girded about their loins, rending their garments in token, or as a covenant, that they would not forsake the Lord their God; or, in other words, if they should transgress the commandments of God, or fall into transgression, and be ashamed to take upon them the name of Christ, the Lord should rend them even as they had rent their garments.

Now this was the covenant which they made, and they cast their garments at the feet of Moroni, saying: We covenant with our God, that we shall be destroyed, even as our brethren in the land northward, if we shall fall into transgression; yea, he may cast us at the feet of our enemies, even as we have cast our garments at thy feet to be trodden under foot, if we shall fall into transgression.

Moroni said unto them: Behold, we are a remnant of the seed of Jacob; yea, we are a remnant of the seed of Joseph, whose coat was rent by his brethren into many pieces; yea, and now behold, let us remember to keep the commandments of God, or our garments shall be rent by our brethren, and we be cast into prison, or be sold, or be slain.

- 24 हां, यूसुफ के बचे हुए लोग होने के नाते, चलो हम अपनी स्वाधीनता की रक्षा करें; हां, मृत्यु से पहले के याकूब के शब्दों को चलो याद रखें, क्योंकि देखो, उसने देखा था कि यूसुफ के लबादे के एक शेष टुकड़े को संभालकर रखा गया था और वह नष्ट नहीं हुआ था। और उसने कहा—जैसे मेरे बेटे के वस्त्र के इस शेष टुकड़े को संभालकर रखा गया है, वैसे ही मेरे बेटे के बचे हुए वंश को भी परमेश्वर के हाथों द्वारा बचाकर रखा गया है, और वह उसे अपने पास ले लेगा, जब कि यूसुफ के बचे वंश उसके वस्त्र के शेष टुकड़े के समान नष्ट हो जाएंगे।
- 25 अब देखो, इससे मेरी आत्मा दुखी होती है; फिर भी, मेरी आत्मा उसके उस वंश के कारण अपने बेटे में आनंदित होती है जिसे परमेश्वर के पास ले जाया जाएगा।
- 26 अब देखो, यह याकूब की भाषा थी।
- 27 और अब यह कौन जाने कि यूसुफ के बचे हुए वंश, जो उसके वस्त्र के समान ही नष्ट हो जाएंगे, वे वही लोग हैं जिन्होंने हमसे मतभेद किया था? हां, ऐसा ही हमारे साथ भी होगा यदि हम मसीह के विश्वास में दृढ़ नहीं होंगे।
- 28 और अब ऐसा हुआ कि जब मोरोनी ने इन बातों को कह लिया तब वह चला गया, और प्रदेश के उन सारे हिस्सों में लोगों को भेजा जहां मतभेद हो रहे थे, और जो लोग अपनी स्वाधीनता को बनाए रखना चाहते थे, उन सारे लोगों को अमालिकिया और उन लोगों के विरुद्ध एकत्रित किया जिन्होंने मतभेद किया था, और जो अमालिकियाओं कहलाते थे।
- 29 और ऐसा हुआ कि जब अमालिकियाओं ने देखा कि मोरोनी के लोगों की संख्या अमलिसियों से अधिक थी—और उसने यह भी देखा कि उसके लोग जिस कार्य के लिए आए थे उसमें वे संदिग्ध थे—इसलिए, पराजित होने के डर से, उसने उन लोगों को अपने साथ लिया जो जाना चाहते थे और नफी के प्रदेश चला गया।
- 30 अब मोरोनी ने सोचा कि लमनाइयों का और अधिक शक्तिशाली होना हितकर नहीं होगा; इसलिए उसने सोचा कि अमलिसियों के लोगों को उनसे मिलने न दिया जाए, या उन्हें बंदी बनाकर लाए और अमालिकिया को मृत्युदण्ड दे; हां, क्योंकि वह जानता था कि वह लमनाइयों को उनके विरुद्ध भड़का सकता था, और इनके विरुद्ध उनसे युद्ध करवा सकता था; और वो यह भी जानता था कि अमालिकिया ऐसा अपने उद्देश्य में कामयाब होने के लिए कर सकता था।

Yea, let us preserve our liberty as a remnant of Joseph; yea, let us remember the words of Jacob, before his death, for behold, he saw that a part of the remnant of the coat of Joseph was preserved and had not decayed. And he said—Even as this remnant of garment of my son hath been preserved, so shall a remnant of the seed of my son be preserved by the hand of God, and be taken unto himself, while the remainder of the seed of Joseph shall perish, even as the remnant of his garment.

Now behold, this giveth my soul sorrow; nevertheless, my soul hath joy in my son, because of that part of his seed which shall be taken unto God.

Now behold, this was the language of Jacob.

And now who knoweth but what the remnant of the seed of Joseph, which shall perish as his garment, are those who have dissented from us? Yea, and even it shall be ourselves if we do not stand fast in the faith of Christ.

And now it came to pass that when Moroni had said these words he went forth, and also sent forth in all the parts of the land where there were dissensions, and gathered together all the people who were desirous to maintain their liberty, to stand against Amalickiah and those who had dissented, who were called Amalickiahites.

And it came to pass that when Amalickiah saw that the people of Moroni were more numerous than the Amalickiahites—and he also saw that his people were doubtful concerning the justice of the cause in which they had undertaken—therefore, fearing that he should not gain the point, he took those of his people who would and departed into the land of Nephi.

Now Moroni thought it was not expedient that the Lamanites should have any more strength; therefore he thought to cut off the people of Amalickiah, or to take them and bring them back, and put Amalickiah to death; yea, for he knew that he would stir up the Lamanites to anger against them, and cause them to come to battle against them; and this he knew that Amalickiah would do that he might obtain his purposes.

- 31 इसलिए मोरोनी ने सोचा कि अपनी उस सेना को लेना उचित होगा जो एकत्रित हुई थी, और जिन्होंने अस्त्र-शस्त्र पहन रखा था, और जिन्होंने शांति स्थापित करने के अनुबंध में प्रवेश किया था—और ऐसा हुआ कि उसने अपनी सेना ली और निर्जन प्रदेश में अमालिकिया के रास्ते को रोकने के लिए अपने शिविरों से निकलकर जंगल की ओर गए ।
- 32 और ऐसा हुआ कि उसने अपनी इच्छा के अनुसार किया, और निर्जन प्रदेश की ओर प्रस्थान किया, और अमालिकिया की सेना को रोक लिया ।
- 33 और ऐसा हुआ कि अमालिकिया अपने कुछ लोगों के साथ भाग गया, और बाकी लोगों को मोरोनी ने बंदी बना लिया और उन्हें वापस जराहेमला प्रदेश ले गया ।
- 34 अब, मोरोनी वह व्यक्ति था जो मुख्य न्यायियों द्वारा, लोगों के लिए नियुक्त किया गया था, इसलिए नफाइयों की सेना को स्थापित करने के लिए और उनके उपयोग के लिए, उन पर अपनी इच्छानुसार वह अधिकार रखता था ।
- 35 और ऐसा हुआ कि अमालिकियाओं में से जिस किसी ने भी स्वतंत्रता के समर्थन के प्रति अनुबंध में प्रवेश नहीं किया, जिससे कि एक स्वतंत्र शासन को बनाकर रखा जा सके, तो उसे मृत्युदण्ड दिया गया; और कुछ ही लोग थे जिन्होंने स्वतंत्रता के अनुबंध को अस्वीकार किया था ।
- 36 और ऐसा भी हुआ कि पूरे प्रदेश में जितने भी मिनार नफाइयों के अधिकार में थे, उन सब पर उसने स्वाधीनता के झण्डे को फहराया; और इस प्रकार मोरोनी ने नफाइयों के बीच स्वाधीनता के स्तर को उत्पन्न किया ।
- 37 और देश में फिर से शांति स्थापित होने लगी; और इस प्रकार न्यायियों के शासन के उन्नीसवें वर्ष के लगभग अंत तक उन्होंने प्रदेश में शांति बनाए रखा ।
- 38 और हिलामन और उच्च याजकों ने भी गिरजे में नियमों को बनाए रखा; हां, यहां तक कि चार वर्ष के अंतराल पर भी गिरजे में बहुत शांति और प्रसन्नता थी ।
- 39 और ऐसा हुआ कि कई लोगों की इस दृढ़ विश्वास में मृत्यु हो गई कि उनकी आत्माएं प्रभु यीशु मसीह द्वारा मुक्त होंगी; इस प्रकार आनन्द मनाते हुए वे संसार से विदा हो गए ।

Therefore Moroni thought it was expedient that he should take his armies, who had gathered themselves together, and armed themselves, and entered into a covenant to keep the peace—and it came to pass that he took his army and marched out with his tents into the wilderness, to cut off the course of Amalickiah in the wilderness.

And it came to pass that he did according to his desires, and marched forth into the wilderness, and headed the armies of Amalickiah.

And it came to pass that Amalickiah fled with a small number of his men, and the remainder were delivered up into the hands of Moroni and were taken back into the land of Zarahemla.

Now, Moroni being a man who was appointed by the chief judges and the voice of the people, therefore he had power according to his will with the armies of the Nephites, to establish and to exercise authority over them.

And it came to pass that whomsoever of the Amalickiahites that would not enter into a covenant to support the cause of freedom, that they might maintain a free government, he caused to be put to death; and there were but few who denied the covenant of freedom.

And it came to pass also, that he caused the title of liberty to be hoisted upon every tower which was in all the land, which was possessed by the Nephites; and thus Moroni planted the standard of liberty among the Nephites.

And they began to have peace again in the land; and thus they did maintain peace in the land until nearly the end of the nineteenth year of the reign of the judges.

And Helaman and the high priests did also maintain order in the church; yea, even for the space of four years did they have much peace and rejoicing in the church.

And it came to pass that there were many who died, firmly believing that their souls were redeemed by the Lord Jesus Christ; thus they went out of the world rejoicing.

40 और कुछ लोग थे जिनकी मृत्यु ज्वर से हो गई जो कि वर्ष के कुछ मौसम में प्रदेश में बहुत होता था—परन्तु उन उत्तम पौधों और जड़ी-बुटियों के कारण बहुत कम लोग ज्वर से मरे जिसे परमेश्वर ने बीमारियों को जड़ से खत्म करने के लिए बनाया था, जो मौसम की प्रकृति के अनुसार लोगों पर असर करते थे—

41 परन्तु कई लोग वृद्ध होकर मरे; और जो लोग मसीह में विश्वास करते हुए मरे वे उसमें आनंदित हैं, जैसे कि हमें होना चाहिए ।

And there were some who died with fevers, which at some seasons of the year were very frequent in the land—but not so much so with fevers, because of the excellent qualities of the many plants and roots which God had prepared to remove the cause of diseases, to which men were subject by the nature of the climate—

But there were many who died with old age; and those who died in the faith of Christ are happy in him, as we must needs suppose.

## अलमा 47

- 1 अब हम अमालिकिया और उन लोगों के अपने अभिलेख पर वापस आएं जो उसके साथ निर्जन प्रदेश में भाग गए थे; क्योंकि, देखो, जो लोग उसके साथ जाना चाहते थे उन्हें उसने अपने साथ लिया, और लमनाइयों के बीच नफी के प्रदेश चला गया, और लमनाइयों के लोगों के विरुद्ध क्रोध में इतना अधिक भड़काया कि लमनाइयों के राजा ने पूरे प्रदेश में, अपने लोगों के बीच एक घोषणा करवाई, कि नफाइयों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए उन्हें फिर से एकत्रित होना पड़ेगा।
- 2 और ऐसा हुआ कि जब उन लोगों के बीच घोषणा कर दी गई तब वे अत्याधिक डर गए; हां, वे राजा को नाराज करने से डर गए, और वे अपना प्राण खोने और इस बात से भी डर गए कि उन्हें नफाइयों के विरुद्ध युद्ध करना होगा। और ऐसा हुआ कि उन्होंने, या उनमें से अधिकतर लोगों ने राजा की आज्ञाओं का पालन नहीं किया।
- 3 और अब ऐसा हुआ कि राजा उनकी अवज्ञाकारिता के कारण क्रोधित हुआ; इसलिए उसने अमालिकिया के हाथ में उस सेना की कमान थमा दी जिन्होंने उसकी आज्ञाओं को माना था, और उसे आज्ञा दी कि वह जाकर उन्हें सशस्त्र होने के लिए विवश करे।
- 4 अब देखो, अमालिकिया यही तो चाहता था; क्योंकि बुरे कार्य करनेवाला वह एक धूर्त व्यक्ति था इसलिए उसने अपने मन में लमनाइयों के राजा को राजगद्दी से हटाने की योजना बना ली।
- 5 और अब उसके हाथ में उन लमनाइयों की कमान थी जो राजा के पक्ष में थे; और वह उन लोगों को अपने पक्ष में करना चाहता था जो आज्ञाकारी नहीं थे; इसलिए वह उस स्थान पर गया जो ओनिदा कहा जाता था, क्योंकि वहीं सारे लमनाई भागकर गए थे; और क्योंकि उन्होंने सेना को आते हुए देख लिया था, और यह समझ लिया कि वे उन्हें नष्ट करने आ रहे हैं, इसलिए वे अस्त्र-शस्त्र के स्थान ओनिदा चले गए।
- 6 और उन्होंने अपने लिए एक राजा और एक मार्गदर्शक नियुक्त किया, अपने मन में एक संकल्प निर्धारित करते हुए कि वे नफाइयों के विरुद्ध युद्ध का पात्र नहीं बनेंगे।
- 7 और ऐसा हुआ कि युद्ध की तैयारी के लिए, वे सब अंतीपास नामक पहाड़ी की चोटी पर एकत्रित हुए।

## Alma 47

Now we will return in our record to Amalickiah and those who had fled with him into the wilderness; for, behold, he had taken those who went with him, and went up in the land of Nephi among the Lamanites, and did stir up the Lamanites to anger against the people of Nephi, insomuch that the king of the Lamanites sent a proclamation throughout all his land, among all his people, that they should gather themselves together again to go to battle against the Nephites.

And it came to pass that when the proclamation had gone forth among them they were exceedingly afraid; yea, they feared to displease the king, and they also feared to go to battle against the Nephites lest they should lose their lives. And it came to pass that they would not, or the more part of them would not, obey the commandments of the king.

And now it came to pass that the king was wroth because of their disobedience; therefore he gave Amalickiah the command of that part of his army which was obedient unto his commands, and commanded him that he should go forth and compel them to arms.

Now behold, this was the desire of Amalickiah; for he being a very subtle man to do evil therefore he laid the plan in his heart to dethrone the king of the Lamanites.

And now he had got the command of those parts of the Lamanites who were in favor of the king; and he sought to gain favor of those who were not obedient; therefore he went forward to the place which was called Onidah, for thither had all the Lamanites fled; for they discovered the army coming, and, supposing that they were coming to destroy them, therefore they fled to Onidah, to the place of arms.

And they had appointed a man to be a king and a leader over them, being fixed in their minds with a determined resolution that they would not be subjected to go against the Nephites.

And it came to pass that they had gathered themselves together upon the top of the mount which was called Antipas, in preparation to battle.



- 8 अब अमालिकिया की मंशा यह नहीं थी कि राजा की आज्ञानुसार उनसे युद्ध करवाया जाए; परन्तु देखो, वह लमनाई सेनाओं को अपने पक्ष में करना चाहता था, ताकि वह स्वयं उनका मार्गदर्शक बन सके और राजा को राजगद्दी से हटाकर राज्य को अपने अधिकार में ले सके ।
- 9 और देखो, ऐसा हुआ कि उसने अपनी सेना से अंतीपास पहाड़ी के निकट स्थित खाड़ी में उनके शिविर लगवाए ।
- 10 और ऐसा हुआ कि रात में उसने अंतीपास पहाड़ी पर एक भेदी राजदूत को भेजा, यह चाहते हुए कि जो लोग पहाड़ी पर थे उनका सेनापति जिसका नाम लेहोण्टी था, वह पहाड़ी के नीचे आ सके, क्योंकि वह उससे बात करना चाहता था ।
- 11 और ऐसा हुआ कि जब लेहोण्टी ने संदेश प्राप्त किया तब वह पहाड़ी के नीचे जाने का साहस नहीं कर पाया । और ऐसा हुआ कि अमालिकिया ने फिर से दूसरी बार संदेश भेजा यह चाहते हुए कि वह नीचे आए । और ऐसा हुआ कि लेहोण्टी नहीं आया; और उसने फिर से तीसरी बार संदेश भेजा ।
- 12 और ऐसा हुआ कि जब अमालिकिया ने पाया कि वह लेहोण्टी को पहाड़ी से नीचे नहीं बुला सकता तो वह पहाड़ी पर लेहोण्टी के शिविर के पास गया; और उसने लेहोण्टी के पास फिर से चौथी बार संदेश भेजा, यह चाहते हुए कि वह नीचे आए, और यह कि वह अपने अंगरक्षकों को अपने साथ ले आए ।
- 13 और ऐसा हुआ कि जब लेहोण्टी नीचे अमालिकिया के पास अपने अंगरक्षकों के साथ आया, तो अमालिकिया चाहता था कि वह रात के समय में अपनी सेना के साथ नीचे आए, और शिविर में रह रहे उन लोगों को चारों ओर से घेर ले जिनकी कमान राजा ने उसके हाथ में दी थी, और यह कि यदि वह उसे (अमालिकिया को) पूरी सेना का दूसरा बड़ा सेनापति बनाएगा तो वह उन्हें लेहोण्टी को सौंप देगा ।
- 14 और ऐसा हुआ कि लेहोण्टी अपने लोगों के साथ नीचे आया और अमालिकिया के लोगों को चारों ओर से घेर लिया, ताकि दिन की सुबुह जब वे जागें तो अपने आपको लेहोण्टी की सेनाओं से घिरा हुआ पाएं ।

Now it was not Amalickiah's intention to give them battle according to the commandments of the king; but behold, it was his intention to gain favor with the armies of the Lamanites, that he might place himself at their head and dethrone the king and take possession of the kingdom.

And behold, it came to pass that he caused his army to pitch their tents in the valley which was near the mount Antipas.

And it came to pass that when it was night he sent a secret embassy into the mount Antipas, desiring that the leader of those who were upon the mount, whose name was Lehonti, that he should come down to the foot of the mount, for he desired to speak with him.

And it came to pass that when Lehonti received the message he durst not go down to the foot of the mount. And it came to pass that Amalickiah sent again the second time, desiring him to come down. And it came to pass that Lehonti would not; and he sent again the third time.

And it came to pass that when Amalickiah found that he could not get Lehonti to come down off from the mount, he went up into the mount, nearly to Lehonti's camp; and he sent again the fourth time his message unto Lehonti, desiring that he would come down, and that he would bring his guards with him.

And it came to pass that when Lehonti had come down with his guards to Amalickiah, that Amalickiah desired him to come down with his army in the night-time, and surround those men in their camps over whom the king had given him command, and that he would deliver them up into Lehonti's hands, if he would make him (Amalickiah) a second leader over the whole army.

And it came to pass that Lehonti came down with his men and surrounded the men of Amalickiah, so that before they awoke at the dawn of day they were surrounded by the armies of Lehonti.

- 15 और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने देखा कि वे घिर चुके हैं, उन्होंने अमालिकिया से याचना की कि वह उन्हें उनके भाइयों के सुपुर्द कर दे जिससे कि वे नष्ट न हो सकें। अब यही वह बात थी जिसे अमालिकिया सुनना चाहता था।
- 16 और ऐसा हुआ कि राजा की आज्ञा के विरुद्ध उसने अपने लोगों को सौंप दिया। अब यही अमालिकिया चाहता था, ताकि राजा को राजगद्दी से हटाने की अपनी योजना को साकार कर सके।
- 17 अब लमनाइयों के बीच यह प्रथा थी कि यदि उनका मुख्य सेनापति मारा जाता, तो दूसरे बड़े सेनापति को उनका सेनापति बनाया जाता।
- 18 और ऐसा हुआ कि अमालिकिया ने अपने सेवकों में से एक सेवक द्वारा घात से लेहोण्टी को विष दिलवाया, कि वह मर गया।
- 19 अब, जब लेहोण्टी मर गया, लमनाइयों ने अमालिकिया को अपना मार्गदर्शक और मुख्य सेनापति नियुक्त किया।
- 20 और ऐसा हुआ कि अमालिकिया अपनी सेना के साथ नफी के प्रदेश, नफी के नगर गया जो कि मुख्य नगर था (क्योंकि उसकी इच्छा पूरी हुई थी)।
- 21 और राजा अपने अंगरक्षकों के साथ उससे मिलने बाहर आया, क्योंकि उसने समझा कि अमालिकिया ने उसकी आज्ञा का पालन किया है, और यह कि अमालिकिया ने इतनी बड़ी सेना को नफाइयों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए एकत्रित किया है।
- 22 परन्तु देखो, जैसे ही राजा उससे मिलने बाहर आया अमालिकिया ने अपने सेवकों को राजा से मिलने के लिए आगे भेजा। और वे गए और राजा के सामने नतमस्तक हुए, जैसे कि उसकी महानता के कारण उसे सम्मान दे रहे हों।
- 23 और ऐसा हुआ कि राजा ने उन्हें उठाने के लिए अपने हाथ आगे किये, जैसा कि शांति के चिन्ह के रूप में, लमनाइयों की प्रथा थी, वह प्रथा जिसे उन्होंने नफाइयों से ली थी।
- 24 और ऐसा हुआ कि जब उसने पहले सैनिक को जमीन से उठाया, देखो उसने राजा के दिल में छुरा भोंक दिया; और वह जमीन पर गिर पड़ा।
- 25 अब राजा के सेवक भाग गए; और अमालिकिया के सेवक जोर-जोर से चिल्लाने लगे, यह कहते हुए:

And it came to pass that when they saw that they were surrounded, they pled with Amalickiah that he would suffer them to fall in with their brethren, that they might not be destroyed. Now this was the very thing which Amalickiah desired.

And it came to pass that he delivered his men, contrary to the commands of the king. Now this was the thing that Amalickiah desired, that he might accomplish his designs in dethroning the king.

Now it was the custom among the Lamanites, if their chief leader was killed, to appoint the second leader to be their chief leader.

And it came to pass that Amalickiah caused that one of his servants should administer poison by degrees to Lehonti, that he died.

Now, when Lehonti was dead, the Lamanites appointed Amalickiah to be their leader and their chief commander.

And it came to pass that Amalickiah marched with his armies (for he had gained his desires) to the land of Nephi, to the city of Nephi, which was the chief city.

And the king came out to meet him with his guards, for he supposed that Amalickiah had fulfilled his commands, and that Amalickiah had gathered together so great an army to go against the Nephites to battle.

But behold, as the king came out to meet him Amalickiah caused that his servants should go forth to meet the king. And they went and bowed themselves before the king, as if to reverence him because of his greatness.

And it came to pass that the king put forth his hand to raise them, as was the custom with the Lamanites, as a token of peace, which custom they had taken from the Nephites.

And it came to pass that when he had raised the first from the ground, behold he stabbed the king to the heart; and he fell to the earth.

Now the servants of the king fled; and the servants of Amalickiah raised a cry, saying:

- 26 देखो, राजा के सेवकों ने उसके दिल में छुरा भोंक दिया है, और वह गिर पड़ा है और वे भाग गए हैं; देखो, आओ और देखो ।
- 27 और ऐसा हुआ कि अमालिकिया ने आज्ञा दी कि उसकी सेना आगे जाए और देखे कि राजा के साथ क्या हुआ है; और जब वे उस स्थान पर पहुंचे, और राजा को अपने ही लहू में लथपथ पाया, अमालिकिया ने क्रोधित होने का दिखावा किया, और कहा: जिसने से भी राजा से प्रेम किया है, वह आगे जाए, और उसके सेवकों का पीछा कर उन्हें मार डाले ।
- 28 और ऐसा हुआ कि जिन्होंने राजा से प्रेम किया था, जब उन्होंने इन बातों को सुना तो आगे आए और राजा के सेवकों का पीछा किया ।
- 29 अब जब राजा के सेवकों ने देखा कि एक सेना उनका पीछा कर रही है, तो वे फिर से डर गए, और निर्जन प्रदेश में भाग गए, और जराहेमला के प्रदेश पहुंचे और अम्मोन के लोगों से मिल गए ।
- 30 और जो सेना उनका पीछा कर रही थी, व्यर्थ में उनका पीछा करते हुए वापस लौट गई; और इस प्रकार अमालिकिया ने अपने छल-कपट के द्वारा लोगों के हृदयों को जीत लिया ।
- 31 और ऐसा हुआ कि अगले दिन वह अपनी सेना के साथ नफी के नगर पहुंचा, और नगर को अपने कब्जे में कर लिया ।
- 32 और ऐसा हुआ कि जब रानी ने सुना कि राजा का वध कर दिया गया है—क्योंकि अमालिकिया ने रानी को सूचना देने के लिए एक राजदूत भेजा कि राजा का वध उसी के सेवकों के द्वारा हुआ है, कि उसने अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया था, परन्तु वह व्यर्थ था, और उन्होंने अपने आपको बचा लिया—
- 33 इसलिए, जब रानी ने इस संदेश को सुना तो अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए यह संदेश भेजा कि वह नगर के लोगों की जान न ले; और वह यह भी चाहती थी कि वह उससे आकर मिले; और वह यह भी चाहती थी कि राजा की मृत्यु के संबंध में गवाही देने के लिए वह अपने साथ साक्षियां भी ले आए ।
- 34 और ऐसा हुआ कि अमालिकिया ने उसी सेवक को साथ लिया जिसने राजा को मारा था, और उन लोगों को भी जो उसके साथ थे, और रानी के पास उस स्थान पर गया जहां वह बैठी हुई थी; और उन सब ने गवाही दी कि राजा अपने ही सेवकों के द्वारा मारा गया था; और उन्होंने यह भी कहा: वे भाग गए हैं; क्या यह बात उनके विरुद्ध गवाही नहीं है ? और इस प्रकार राजा की मृत्यु के संबंध में उन्होंने रानी को संतुष्ट कर दिया ।

Behold, the servants of the king have stabbed him to the heart, and he has fallen and they have fled; behold, come and see.

And it came to pass that Amalickiah commanded that his armies should march forth and see what had happened to the king; and when they had come to the spot, and found the king lying in his gore, Amalickiah pretended to be wroth, and said: Whosoever loved the king, let him go forth, and pursue his servants that they may be slain.

And it came to pass that all they who loved the king, when they heard these words, came forth and pursued after the servants of the king.

Now when the servants of the king saw an army pursuing after them, they were frightened again, and fled into the wilderness, and came over into the land of Zarahemla and joined the people of Ammon.

And the army which pursued after them returned, having pursued after them in vain; and thus Amalickiah, by his fraud, gained the hearts of the people.

And it came to pass on the morrow he entered the city Nephi with his armies, and took possession of the city.

And now it came to pass that the queen, when she had heard that the king was slain—for Amalickiah had sent an embassy to the queen informing her that the king had been slain by his servants, that he had pursued them with his army, but it was in vain, and they had made their escape—

Therefore, when the queen had received this message she sent unto Amalickiah, desiring him that he would spare the people of the city; and she also desired him that he should come in unto her; and she also desired him that he should bring witnesses with him to testify concerning the death of the king.

And it came to pass that Amalickiah took the same servant that slew the king, and all them who were with him, and went in unto the queen, unto the place where she sat; and they all testified unto her that the king was slain by his own servants; and they said also: They have fled; does not this testify against them? And thus they satisfied the queen concerning the death of the king.

35 और ऐसा हुआ कि अमालिकिया ने रानी का अनुग्रह प्राप्त किया, और उसे अपनी पत्नी बना लिया; और इस प्रकार छल-कपट के द्वारा, और अपने धूर्त सेवकों की सहायता से उसने राज्य पर कब्जा कर लिया; हां, पूरे प्रदेश में उन लमनाइयों के सभी लोगों के बीच जो लमनाइयों, लमूएलियों और इश्माएलियों के वंश के लोग थे, और नफी के शासन से लेकर वर्तमान समय में सारे जो नफाइयों से मतभेद करनेवाले थे, उन सभी में उसे राजा के रूप में स्वीकार कर लिया गया ।

36 अब इन मतभेदियों को वही शिक्षाएं प्राप्त हुई थीं और नफाइयों की वही जानकारी थी, हां, प्रभु के ज्ञान में वही शिक्षाएं प्राप्त थीं, फिर भी, बताने में यह अजीब लगता है कि बहुत दिन नहीं हुए थे कि उनसे मतभेद के बाद वे बहुत कठोर हो गए और पश्चाताप नहीं करते थे, और लमनाइयों से अधिक जंगली, दुष्ट और क्रूर हो गए थे—लमनाइयों की परंपराओं के समान मद्यपान करते थे; आलस्य करते थे, और हां, अपने प्रभु परमेश्वर को पूरी तरह से भूलते हुए हर प्रकार की कामुकता में पड़े रहते थे ।

And it came to pass that Amalickiah sought the favor of the queen, and took her unto him to wife; and thus by his fraud, and by the assistance of his cunning servants, he obtained the kingdom; yea, he was acknowledged king throughout all the land, among all the people of the Lamanites, who were composed of the Lamanites and the Lemuelites and the Ishmaelites, and all the dissenters of the Nephites, from the reign of Nephi down to the present time.

Now these dissenters, having the same instruction and the same information of the Nephites, yea, having been instructed in the same knowledge of the Lord, nevertheless, it is strange to relate, not long after their dissensions they became more hardened and impenitent, and more wild, wicked and ferocious than the Lamanites—drinking in with the traditions of the Lamanites; giving way to indolence, and all manner of lasciviousness; yea, entirely forgetting the Lord their God.

## अलमा 48

- 1 और ऐसा हुआ कि जैसे ही अमालिकिया ने राज्य पर कब्जा किया वैसे ही वह लमनाइयों के हृदयों को नफी के लोगों के विरुद्ध उकसाने लगा; हां, नफाइयों के खिलाफ, लमनाइयों के मिनारों पर से उनसे बात करने के लिए उसने लोगों को नियुक्त किया ।
- 2 और इस प्रकार उसने नफाइयों के विरुद्ध उनके हृदयों को उकसाया, इतना अधिक कि न्यायियों के शासन के उन्नीसवें वर्ष के अंत तक उसने अपनी योजना को साकार कर लिया था, हां, लमनाइयों का राजा बन गया था, वह पूरे प्रदेश पर भी शासन करना चाहता था, हां, और उस प्रदेश में रह रहे पूरे नफाइयों और लमनाइयों पर भी ।
- 3 इसलिए उसने अपनी योजना को साकार कर लिया था, क्योंकि उसने लमनाइयों के हृदयों को कठोर कर लिया था और उनकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी थी, और उन्हें क्रोध के लिए इतना अधिक भड़काया कि नफाइयों के विरुद्ध युद्ध पर जाने के लिए उसने कई फौजों को एकत्रित कर लिया ।
- 4 नफाइयों पर शासन करने और उन्हें दासता में लाने के लिए, अपने लोगों की बड़ी संख्या के कारण उसका संकल्प दृढ़ था ।
- 5 और इस प्रकार उसने जोरामाइयों में से मुख्य सेनापति नियुक्त किये क्योंकि वे सबसे अधिक नफाइयों के बल से, उनके आश्रय वाले स्थानों, और उनके नगरों के कमजोर हिस्सों से परिचित थे; इसलिए उसने उन्हें अपनी सेना के मुख्य कप्तान बनाए ।
- 6 और ऐसा हुआ कि उन्होंने अपने शिविर समेटे, और आगे की तरफ निर्जन प्रदेश में जराहेमला के प्रदेश की तरफ गए ।
- 7 अब ऐसा हुआ कि जब अमालिकिया छल-कपट और धोखे से शक्ति प्राप्त कर रहा था, तो दूसरी तरफ, मोरोनी लोगों के मन को अपने प्रभु परमेश्वर में विश्वासी रहने के लिए तैयार कर रहा था ।
- 8 हां, वह नफाइयों की सेना को शक्तिशाली बना रहा था, और अपनी सेनाओं को चारों ओर से ढकने के लिए, मिट्टी और रेत से छोटे-छोटे किलों, या आश्रय के स्थानों का निर्माण कर रहा था, और उन्हें घेरने, उनके नगरों और सीमाओं को चारों ओर से घेरने के लिए पथरों की दीवारें भी बना रहा था; हां, पूरे प्रदेश को घेरने के लिए ।

## Alma 48

And now it came to pass that, as soon as Amalickiah had obtained the kingdom he began to inspire the hearts of the Lamanites against the people of Nephi; yea, he did appoint men to speak unto the Lamanites from their towers, against the Nephites.

And thus he did inspire their hearts against the Nephites, insomuch that in the latter end of the nineteenth year of the reign of the judges, he having accomplished his designs thus far, yea, having been made king over the Lamanites, he sought also to reign over all the land, yea, and all the people who were in the land, the Nephites as well as the Lamanites.

Therefore he had accomplished his design, for he had hardened the hearts of the Lamanites and blinded their minds, and stirred them up to anger, insomuch that he had gathered together a numerous host to go to battle against the Nephites.

For he was determined, because of the greatness of the number of his people, to overpower the Nephites and to bring them into bondage.

And thus he did appoint chief captains of the Zoramites, they being the most acquainted with the strength of the Nephites, and their places of resort, and the weakest parts of their cities; therefore he appointed them to be chief captains over his armies.

And it came to pass that they took their camp, and moved forth toward the land of Zarahemla in the wilderness.

Now it came to pass that while Amalickiah had thus been obtaining power by fraud and deceit, Moroni, on the other hand, had been preparing the minds of the people to be faithful unto the Lord their God.

Yea, he had been strengthening the armies of the Nephites, and erecting small forts, or places of resort; throwing up banks of earth round about to enclose his armies, and also building walls of stone to encircle them about, round about their cities and the borders of their lands; yea, all round about the land.

- 9 और उसने अपने कमजोर मोर्चे के स्थानों पर बड़ी संख्या में अपने लोगों को नियुक्त किया; और इस प्रकार उसने उस प्रदेश की किला-बंदी की और उसे मजबूत बनाया जिस पर नफाइयों का अधिकार था ।
- 10 और इस प्रकार वह अपनी स्वतंत्रता, अपने प्रदेश, अपनी पत्नियों और अपने बच्चों, और उनकी शांति को बचाने की तैयारी कर रहा था, और यह कि वे अपने प्रभु परमेश्वर में जी सकें, और वे उस ध्येय को बनाकर रख सकें जिसे उनके शत्रु ईसाई होने का कारण मानते थे ।
- 11 और मोरोनी एक मजबूत और शक्तिशाली व्यक्ति था; वह एक संपूर्ण बुद्धिवाला व्यक्ति था; हां, वह व्यक्ति जो रक्तपात से खुश नहीं होता था; वह व्यक्ति जिसकी आत्मा स्वतंत्रता और अपने देश की स्वतंत्रता में, और दासता और गुलामी से अपने भाइयों की मुक्ति में खुश होती थी ।
- 12 हां, वह व्यक्ति जिसका हृदय उसके लोगों के प्रति सौभाग्य और प्राप्त आशीषों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते समय घमंड से फूल जाता था; वह व्यक्ति जिसने अपने लोगों के कल्याण और सुरक्षा के लिए बहुत परिश्रम किया ।
- 13 हां, वह मसीह में दृढ़ विश्वासी था, और उसने शपथ ली थी कि यदि अपने लहू को बहाना पड़े तब भी वह अपने लोगों, अपने अधिकार, और अपने प्रदेश, और अपने धर्म की रक्षा करेगा ।
- 14 अब नफाइयों को उनके शत्रुओं के विरुद्ध लड़ना सिखाया गया, यहां तक कि यदि आवश्यक हो तो अपनी जान देना भी; हां, और उन्हें यह भी सिखाया गया कि कभी भी अपराध नहीं करना है, हां, और सिवाय अपने जीवन की रक्षा के प्रति, शत्रु के अलावा किसी और के खिलाफ तलवार नहीं निकालनी है ।
- 15 और यह उनका विश्वास था, कि ऐसा करने से प्रदेश में परमेश्वर उन्हें समृद्ध बनाएगा, या दूसरे शब्दों में, यदि वे परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने में विश्वासी रहे तो वह प्रदेश में उन्हें समृद्ध बनाएगा; हां, अपने खतरों के अनुसार उन्हें भागने या युद्ध की तैयारी की चोतावनी देगा ।
- 16 और यह भी कि परमेश्वर उन्हें ज्ञात कराएगा कि अपने शत्रुओं से बचने के लिए उन्हें किस तरफ जाना चाहिए, और ऐसा करने से प्रभु उन्हें बचाएगा; और यह मोरोनी का विश्वास था, और उसका हृदय उसमें गौरान्वित हुआ; रक्तपात में नहीं बल्कि भलाई करने में, अपने लोगों को बचाने में, हां, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने में, हां, और अनैतिकता का सामना करने में ।

And in their weakest fortifications he did place the greater number of men; and thus he did fortify and strengthen the land which was possessed by the Nephites.

And thus he was preparing to support their liberty, their lands, their wives, and their children, and their peace, and that they might live unto the Lord their God, and that they might maintain that which was called by their enemies the cause of Christians.

And Moroni was a strong and a mighty man; he was a man of a perfect understanding; yea, a man that did not delight in bloodshed; a man whose soul did joy in the liberty and the freedom of his country, and his brethren from bondage and slavery;

Yea, a man whose heart did swell with thanksgiving to his God, for the many privileges and blessings which he bestowed upon his people; a man who did labor exceedingly for the welfare and safety of his people.

Yea, and he was a man who was firm in the faith of Christ, and he had sworn with an oath to defend his people, his rights, and his country, and his religion, even to the loss of his blood.

Now the Nephites were taught to defend themselves against their enemies, even to the shedding of blood if it were necessary; yea, and they were also taught never to give an offense, yea, and never to raise the sword except it were against an enemy, except it were to preserve their lives.

And this was their faith, that by so doing God would prosper them in the land, or in other words, if they were faithful in keeping the commandments of God that he would prosper them in the land; yea, warn them to flee, or to prepare for war, according to their danger;

And also, that God would make it known unto them whither they should go to defend themselves against their enemies, and by so doing, the Lord would deliver them; and this was the faith of Moroni, and his heart did glory in it; not in the shedding of blood but in doing good, in preserving his people, yea, in keeping the commandments of God, yea, and resisting iniquity.

- 17 हां, मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि सारे मनुष्य मोरोनी के समान रहे होते, और थे, और कभी भी होंगे, तो देखो, नरक की शक्तियां सदा के लिए नष्ट हो जातीं; हां, शैतान मानव संतान के हृदयों को कभी भी अपने वश में नहीं कर पाता ।
- 18 देखो, वह व्यक्ति मुसायाह के बेटे अम्मोन के समान था, हां, मुसायाह के अन्य बेटों के समान भी, हां, और अलमा और उसके बेटों के समान भी, क्योंकि वे सब परमेश्वर के लोग थे ।
- 19 अब देखो, हिलामन और उसके भाई लोगों की सेवा करने में मोरोनी से कम नहीं थे; क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचन का प्रचार किया था, और उन सारे लोगों से पश्चाताप करवाकर उनका बपतिस्मा किया था जिन्होंने उनकी बातों को सुना था ।
- 20 और इस प्रकार वे आगे चले गए, और उनकी बातों के कारण लोगों ने अपने आपको विनम्र किया, इतना अधिक कि वे प्रभु के कृपापात्र बन गए, और इस प्रकार वे आपस में युद्ध और मतभेदों से दूर रहते थे, हां, चार वर्षों के अंतराल के बाद भी ।
- 21 परन्तु, जैसा मैंने कहा है, उन्नीसवें वर्ष के अंत में, हां, आपस में शांति होने के बावजूद, न चाहते हुए भी उन्हें अपने भाइयों, लमनाइयों के साथ वाद-विवाद करने पर विवश होना पड़ा ।
- 22 हां, यह स्पष्ट था कि उनके नहीं चाहने के बावजूद भी, कई वर्षों तक लमनाइयों के साथ उनका युद्ध समाप्त नहीं हुआ ।
- 23 अब, लमनाइयों के विरुद्ध अस्त्र-शस्त्र धारण करने से वे दुखी थे, क्योंकि रक्तपात से वे खुश नहीं थे; हां, और इतना ही नहीं—वे इस बात से भी दुखी थे कि वे अपने उन भाइयों को इस संसार से अनंत संसार में भेजने का साधन बने जो कि परमेश्वर से मिलने के लिए अभी तैयार नहीं थे ।
- 24 फिर भी, वे अपनी जान नहीं दे सकते थे, नहीं तो उनकी पत्नियों और उनके बच्चों का उन लोगों द्वारा निष्ठुरतापूर्वक पशु के समान नरसंहार हो जाता जो कभी उनके भाई थे, हां, और जिन्होंने उनके गिरजे में वाद-विवाद किया था, और उन्हें छोड़ दिया था और उन्हें नष्ट करने के लिए जो लमनाइयों के साथ मिल गए थे ।
- 25 हां, वे सह नहीं सकते थे कि जब तक उनमें से कोई भी व्यक्ति जीवित हो जो कि परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता हो तो उनके भाई नफाइयों का लहू बहाकर आनंदित हों, क्योंकि प्रभु की प्रतिज्ञा थी कि यदि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे तो वे प्रदेश में समृद्ध होंगे ।

Yea, verily, verily I say unto you, if all men had been, and were, and ever would be, like unto Moroni, behold, the very powers of hell would have been shaken forever; yea, the devil would never have power over the hearts of the children of men.

Behold, he was a man like unto Ammon, the son of Mosiah, yea, and even the other sons of Mosiah, yea, and also Alma and his sons, for they were all men of God.

Now behold, Helaman and his brethren were no less serviceable unto the people than was Moroni; for they did preach the word of God, and they did baptize unto repentance all men whosoever would hearken unto their words.

And thus they went forth, and the people did humble themselves because of their words, inso-much that they were highly favored of the Lord, and thus they were free from wars and contentions among themselves, yea, even for the space of four years.

But, as I have said, in the latter end of the nineteenth year, yea, notwithstanding their peace amongst themselves, they were compelled reluctantly to contend with their brethren, the Lamanites.

Yea, and in fine, their wars never did cease for the space of many years with the Lamanites, notwithstanding their much reluctance.

Now, they were sorry to take up arms against the Lamanites, because they did not delight in the shedding of blood; yea, and this was not all—they were sorry to be the means of sending so many of their brethren out of this world into an eternal world, unprepared to meet their God.

Nevertheless, they could not suffer to lay down their lives, that their wives and their children should be massacred by the barbarous cruelty of those who were once their brethren, yea, and had dissented from their church, and had left them and had gone to destroy them by joining the Lamanites.

Yea, they could not bear that their brethren should rejoice over the blood of the Nephites, so long as there were any who should keep the commandments of God, for the promise of the Lord was, if they should keep his commandments they should prosper in the land.

## अलमा 49

- 1 और ऐसा हुआ कि उन्नीसवें वर्ष के ग्यारहवें महीने में, महीने के दसवें दिन पर, लमनाइयों की सेना अम्मोनिहा प्रदेश की तरफ आती हुई दिखाई दी ।
- 2 और देखो, नगर को फिर से बनाया गया था, और मोरोनी ने नगर की सीमाओं पर एक सेना तैनात की थी, और उन्होंने लमनाइयों के बाणों और पत्थरों से स्वयं को बचाने के लिए चारों तरफ मिट्टी की एक दीवार सी बना रखी थी; क्योंकि देखो, उन्होंने पत्थरों और बाणों से युद्ध किया था ।
- 3 देखो, मैंने कहा कि अम्मोनिहा के नगर को फिर से बनाया गया था । मैं तुमसे कहता हूँ, हां, उसे हिस्से में फिर से बनाया गया था; और लोगों की दुष्टता के कारण लमनाइयों ने उसे एक बार नष्ट कर दिया था, उन्हें लगा कि उनके लिए इसे नष्ट करना फिर से आसान होगा ।
- 4 परन्तु देखो, उनकी निराशा कितनी अत्याधिक थी; क्योंकि देखो, नफाइयों ने अपने चारों तरफ खोदकर एक मेढ़ बनाया था, जो कि इतना ऊंचा था कि लमनाई न तो उन पर पत्थर फेंक सकते थे और न ही बाण चला सकते थे ताकि उन्हें चोट पहुंच सके, और न ही द्वार के अलावा कहीं और से उनके पास पहुंच सकते थे ।
- 5 अब इस समय पर सुरक्षा के स्थानों को बनाने में नफाइयों की बुद्धि के कारण, लमनाइयों के मुख्य सेनापति बहुत ही अचम्भीत हुए ।
- 6 अब लमनाइयों के मार्गदर्शकों ने माना था, क्योंकि उनकी संख्या बहुत थी, हां, उन्होंने माना था कि पहले के समान इस बार भी उन्हें ही सफलता मिलेगी; हां, और उन्होंने अपने आपको ढालों, और कवच से तैयार किया था; और उन्होंने अपने आपको चाम वस्त्रों से, हां, बहुत ही मोटे चाम वस्त्रों से अपनी वस्त्रहीनता को ढककर तैयार किया था ।
- 7 और इस प्रकार तैयारी कर उन्होंने माना था कि आसानी से वे जीत जाएंगे और अपने भाइयों को दासता के बोझ तले दबा देंगे, या अपनी इच्छानुसार उन्हें मार देंगे या उनका नरसंहार करेंगे ।
- 8 परन्तु देखो, उन्हें अत्याधिक आश्चर्य हुआ था, उन्होंने स्वयं को उस तरीके से तैयार किया था जिसकी जानकारी लेही के बच्चों को कभी नहीं थी । अब लमनाइयों से युद्ध करने के लिए उन्होंने मोरोनी के निर्देशानुसार तैयारी की थी ।

## Alma 49

And now it came to pass in the eleventh month of the nineteenth year, on the tenth day of the month, the armies of the Lamanites were seen approaching towards the land of Ammonihah.

And behold, the city had been rebuilt, and Moroni had stationed an army by the borders of the city, and they had cast up dirt round about to shield them from the arrows and the stones of the Lamanites; for behold, they fought with stones and with arrows.

Behold, I said that the city of Ammonihah had been rebuilt. I say unto you, yea, that it was in part rebuilt; and because the Lamanites had destroyed it once because of the iniquity of the people, they supposed that it would again become an easy prey for them.

But behold, how great was their disappointment; for behold, the Nephites had dug up a ridge of earth round about them, which was so high that the Lamanites could not cast their stones and their arrows at them that they might take effect, neither could they come upon them save it was by their place of entrance.

Now at this time the chief captains of the Lamanites were astonished exceedingly, because of the wisdom of the Nephites in preparing their places of security.

Now the leaders of the Lamanites had supposed, because of the greatness of their numbers, yea, they supposed that they should be privileged to come upon them as they had hitherto done; yea, and they had also prepared themselves with shields, and with breastplates; and they had also prepared themselves with garments of skins, yea, very thick garments to cover their nakedness.

And being thus prepared they supposed that they should easily overpower and subject their brethren to the yoke of bondage, or slay and massacre them according to their pleasure.

But behold, to their uttermost astonishment, they were prepared for them, in a manner which never had been known among the children of Lehi. Now they were prepared for the Lamanites, to battle after the manner of the instructions of Moroni.



- 9 और ऐसा हुआ कि युद्ध की उनकी इस प्रकार की तैयारी से लमनाइयों, और अमालिकियाओं को बहुत आश्चर्य हुआ ।
- 10 अब, यदि राजा अमालिकिया अपनी सेना का प्रधान बनकर नफी प्रदेश में आता, तो संभवतः वह लमनाइयों से अम्मोनिहा नगर के नफाइयों पर आक्रमण करवाता; क्योंकि देखो, वह अपने लोगों की जान की परवाह नहीं करता ।
- 11 परन्तु देखो, अमालिकिया युद्ध करने नहीं आया । और देखो, उसके मुख्य सेनापतियों ने अम्मोनिहा नगर के नफाइयों पर आक्रमण करने का साहस नहीं किया, क्योंकि मोरोनी ने नफाइयों के बीच कामकाज के प्रबंधन में बदलाव किया था, इतना अधिक कि लमनाई अपने शरण स्थानों से निराश हो गए और उन पर आक्रमण नहीं कर पाए ।
- 12 इसलिए वे निर्जन प्रदेश में भाग गए, और अपने शिविर लिए और नूह के प्रदेश की तरफ चले गए, यह मानते हुए कि यह अगला वह स्थान होगा जहां से वे नफाइयों पर आक्रमण करने आएंगे ।
- 13 क्योंकि वे नहीं जानते थे कि मोरोनी ने मजबूत किया था, या प्रदेश के आसपास हर नगर में सुरक्षा के किलों का निर्माण किया था; इसलिए, वे दृढ़ निश्चय के साथ नूह के प्रदेश की तरफ चल पड़े; हां, उनके मुख्य सेनापति आगे आए और उन्होंने शपथ ली कि वे उस नगर के लोगों को नष्ट कर देंगे ।
- 14 परन्तु देखो, उन्हें आश्चर्य हुआ, नूह का नगर जो कि अब तक एक कमजोर स्थान रहा था, अब, मोरोनी के कारण मजबूत बन गया था, हां, अम्मोनिहा के नगर से भी बहुत मजबूत बन गया था ।
- 15 और अब, देखो, यह मोरोनी की बुद्धि थी; क्योंकि उसने सोचा था कि वे अम्मोनिहा नगर से डर जाएंगे; और जैसा कि नूह का नगर अब तक प्रदेश का बहुत कमजोर हिस्सा माना जाता था, इसलिए वे युद्ध करने वहां आएंगे; और इस प्रकार उसकी इच्छा के अनुसार ऐसा हुआ था ।
- 16 और देखो, मोरोनी ने लेही को उस नगर के लोगों का मुख्य सेनापति नियुक्त किया था; और यह वह लेही था जिसने सिदोन नदी के पूर्व में स्थित खाड़ी में लमनाइयों से युद्ध किया था ।
- 17 और अब देखो ऐसा हुआ कि जब लमनाइयों को पता चला कि उस नगर की कमान लेही के हाथों में है तो वे फिर से निराश हो गए, क्योंकि वे लेही से अत्याधिक डरते थे; फिर भी उनके मुख्य सेनापतियों ने नगर पर आक्रमण करने की शपथ ली; इसलिए, वे अपनी सेना लेकर आए ।

And it came to pass that the Lamanites, or the Amalickiahites, were exceedingly astonished at their manner of preparation for war.

Now, if king Amalickiah had come down out of the land of Nephi, at the head of his army, perhaps he would have caused the Lamanites to have attacked the Nephites at the city of Ammonihah; for behold, he did care not for the blood of his people.

But behold, Amalickiah did not come down himself to battle. And behold, his chief captains durst not attack the Nephites at the city of Ammonihah, for Moroni had altered the management of affairs among the Nephites, insomuch that the Lamanites were disappointed in their places of retreat and they could not come upon them.

Therefore they retreated into the wilderness, and took their camp and marched towards the land of Noah, supposing that to be the next best place for them to come against the Nephites.

For they knew not that Moroni had fortified, or had built forts of security, for every city in all the land round about; therefore, they marched forward to the land of Noah with a firm determination; yea, their chief captains came forward and took an oath that they would destroy the people of that city.

But behold, to their astonishment, the city of Noah, which had hitherto been a weak place, had now, by the means of Moroni, become strong, yea, even to exceed the strength of the city Ammonihah.

And now, behold, this was wisdom in Moroni; for he had supposed that they would be frightened at the city Ammonihah; and as the city of Noah had hitherto been the weakest part of the land, therefore they would march thither to battle; and thus it was according to his desires.

And behold, Moroni had appointed Lehi to be chief captain over the men of that city; and it was that same Lehi who fought with the Lamanites in the valley on the east of the river Sidon.

And now behold it came to pass, that when the Lamanites had found that Lehi commanded the city they were again disappointed, for they feared Lehi exceedingly; nevertheless their chief captains had sworn with an oath to attack the city; therefore, they brought up their armies.

- 18 अब देखो, द्वार के अलावा लमनाई सुरक्षा के उनके किलों में किसी और मार्ग से प्रवेश नहीं कर सकते थे, क्योंकि द्वार के अलावा हर तरफ ऊंची दीवारें बनाई थीं, और गहरे नाले खोदे गए थे ।
- 19 और इस प्रकार उन पर पत्थर फेंकने और बाण चलाने के द्वारा, नफाई सब कुछ नष्ट करने के लिए तैयार थे यदि वे किसी भी प्रकार से किले के भीतर प्रवेश करने का प्रयास करते ।
- 20 इस प्रकार वे तैयार थे, हां, अपनी तलवारों और गुलेल के साथ हट्टे-कट्टे शरीर वाले लोग उन सारे लोगों को खत्म करने के लिए तैयार थे जो द्वार से सुरक्षा के उनके स्थानों पर आने का प्रयास करते; और इस प्रकार लमनाइयों से स्वयं को बचाने के लिए वे तैयार थे ।
- 21 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों के सेनापति अपनी सेनाओं को लेकर द्वार के सामने आए, और सुरक्षा के उनके स्थानों में प्रवेश करने के लिए नफाइयों से युद्ध करने लगे; परन्तु देखो, बार-बार उन्हें पीछे ढकेल दिया गया और बड़ी तादात में उन्हें मार डाला गया ।
- 22 अब जब उन्होंने पाया कि द्वार से होकर वे नफाइयों पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते, तब वे उनकी मिट्टी की दीवारों को खोदकर रास्ता बनाने लगे ताकि वे अपने शत्रुओं तक पहुंच सकें, ताकि उन्हें भी लड़ने का बराबर मौका मिल सके; परन्तु देखो, इन प्रयासों में भी उनपर पत्थर और बाण फेंककर उन्हें पीछे ढकेल दिया गया; और खुदे हुए नाले मिट्टी से भरने की बजाय उनके मरे हुए और घायल शरीरों से भर गए ।
- 23 इस प्रकार नफाइयों का शत्रुओं पर पूरा कब्जा था; और इस प्रकार लमनाई नफाइयों को तब तक नष्ट करने का प्रयास करते रहे जब तक कि उनके मुख्य सेनापति मारे नहीं गए; हां, और हजारों से भी अधिक संख्या में लमनाई मारे गए; जब कि दूसरी तरफ, नफाइयों में से एक भी व्यक्ति नहीं मारा गया था ।
- 24 लगभग पचास लोग थे जो घायल हुए थे, जो कि द्वार के भीतर प्रवेश करते समय लमनाइयों के बाणों के सामने आ गए थे, परन्तु उन्होंने अपनी ढाल ले रखी थी, और अपना कवच पहन रखा था, और अपने सिर की पट्टियों को पहन रखा था, इतने ढंके हुए थे कि उनके पैरों पर ही चोट लगी थी जिनमें से कई गंभीर रूप से घायल थे ।

Now behold, the Lamanites could not get into their forts of security by any other way save by the entrance, because of the highness of the bank which had been thrown up, and the depth of the ditch which had been dug round about, save it were by the entrance.

And thus were the Nephites prepared to destroy all such as should attempt to climb up to enter the fort by any other way, by casting over stones and arrows at them.

Thus they were prepared, yea, a body of their strongest men, with their swords and their slings, to smite down all who should attempt to come into their place of security by the place of entrance; and thus were they prepared to defend themselves against the Lamanites.

And it came to pass that the captains of the Lamanites brought up their armies before the place of entrance, and began to contend with the Nephites, to get into their place of security; but behold, they were driven back from time to time, insomuch that they were slain with an immense slaughter.

Now when they found that they could not obtain power over the Nephites by the pass, they began to dig down their banks of earth that they might obtain a pass to their armies, that they might have an equal chance to fight; but behold, in these attempts they were swept off by the stones and arrows which were thrown at them; and instead of filling up their ditches by pulling down the banks of earth, they were filled up in a measure with their dead and wounded bodies.

Thus the Nephites had all power over their enemies; and thus the Lamanites did attempt to destroy the Nephites until their chief captains were all slain; yea, and more than a thousand of the Lamanites were slain; while, on the other hand, there was not a single soul of the Nephites which was slain.

There were about fifty who were wounded, who had been exposed to the arrows of the Lamanites through the pass, but they were shielded by their shields, and their breastplates, and their head-plates, insomuch that their wounds were upon their legs, many of which were very severe.

- 25 और ऐसा हुआ कि जब लमनाइयों ने देखा कि उनके मुख्य सेनापति मारे जा चुके हैं तो वे निर्जन प्रदेश की ओर भाग गए। और ऐसा हुआ कि अपनी महान हानि से संबंधित सूचना देने के लिए वे अपने उस राजा, अमालिकिया के पास नफी के प्रदेश वापस आए जो कि जन्म से एक नफाई था।
- 26 और ऐसा हुआ कि वह अपने लोगों से बहुत क्रोधित था, क्योंकि वह नफाइयों को अपने कब्जे में लेने की अपनी इच्छा पूरी नहीं कर सका था; वह उन्हें दासता के बोझ तले नहीं दबा सका था।
- 27 हां, वह अत्याधिक क्रोध में था, और उसने परमेश्वर और मोरोनी को कोसा, एक शपथ लेते हुए कि वह उसका लहू पीएगा; और ऐसा इसलिए था क्योंकि मोरोनी ने अपने लोगों की सुरक्षा की तैयारी में परमेश्वर की आज्ञाओं को माना था।
- 28 और ऐसा हुआ कि दूसरी तरफ, नफी के लोगों ने अपने प्रभु परमेश्वर को, उनके शत्रुओं के हाथों से बचाने में उसके असाधारण सामर्थ्य के कारण उसे धन्यवाद दिया।
- 29 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का उन्नीसवां वर्ष समाप्त हुआ।
- 30 हां, और उनके बीच में निरंतर शांति बनी रही, और गिरजे में बहुत समृद्ध हुए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचन को ध्यानपूर्वक सुना था, जो कि हिलामन, और शिब्लोन, और कोरियण्टन, और अम्मोन और उसके भाइयों द्वारा उन्हें सुनाया गया था, हां, और उनके द्वारा जो परमेश्वर की पवित्र रीति के अनुसार नियुक्त किये गए थे, पश्चाताप कर बपतिस्मा लिया था, और लोगों के बीच प्रचार के लिए भेजे गए थे।

And it came to pass, that when the Lamanites saw that their chief captains were all slain they fled into the wilderness. And it came to pass that they returned to the land of Nephi, to inform their king, Amalickiah, who was a Nephite by birth, concerning their great loss.

And it came to pass that he was exceedingly angry with his people, because he had not obtained his desire over the Nephites; he had not subjected them to the yoke of bondage.

Yea, he was exceedingly wroth, and he did curse God, and also Moroni, swearing with an oath that he would drink his blood; and this because Moroni had kept the commandments of God in preparing for the safety of his people.

And it came to pass, that on the other hand, the people of Nephi did thank the Lord their God, because of his matchless power in delivering them from the hands of their enemies.

And thus ended the nineteenth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

Yea, and there was continual peace among them, and exceedingly great prosperity in the church because of their heed and diligence which they gave unto the word of God, which was declared unto them by Helaman, and Shiblön, and Corianton, and Ammon and his brethren, yea, and by all those who had been ordained by the holy order of God, being baptized unto repentance, and sent forth to preach among the people.

## अलमा 50

- 1 और ऐसा हुआ कि मोरोनी ने युद्ध की, या लमनाइयों के विरुद्ध अपने लोगों को बचाने की तैयारी को नहीं रोका; क्योंकि वह चाहता था कि उसकी सेना न्यायियों के शासन के बीसवें वर्ष के आरंभ में शुरू करे, कि वे पूरे प्रदेश के सभी नगरों के चारों तरफ खोदकर मिट्टी की ऊंची-ऊंची दीवारें खड़ी करें जिस पर नफाइयों का अधिकार था ।
- 2 और वह चाहता था कि मिट्टी के इन मेढ़ों के ऊपरी भाग पर लकड़ी लगा होना चाहिए, हां, नगरों के चारों तरफ लकड़ियों को एक व्यक्ति की ऊंचाई जितना होना चाहिए ।
- 3 और वह चाहता था कि चारों तरफ जिन लकड़ियों को लगाया जाए उनपर खूंटियों का एक ढांचा बिठाया जाए; और वे मजबूत और ऊंची हों ।
- 4 और उसने मीनारों बनवाईं जिनपर से इन खूंटियों को देखा जा सकता था, और उसने उन मीनारों पर सुरक्षा के स्थानों का निर्माण करवाया, ताकि लमनाइयों के पत्थर और बाण उन्हें नुकसान न पहुंचा सकें ।
- 5 और उन्होंने ऐसा तैयारी की थी कि वे अपनी इच्छानुसार और अपने बल के अनुसार वहां ऊपर से पत्थर बरसा सकें, और उसका वध कर दें जो भी नगर की चार दीवारी के नजदीक आने का प्रयास करे ।
- 6 इस प्रकार मोरोनी ने लगभग प्रदेश के हर नगर के चारों तरफ, अपने शत्रुओं के विरुद्ध एक किले का निर्माण किया ।
- 7 और ऐसा हुआ कि मोरोनी ने अपनी सेना को पूर्वी जंगल की तरफ भेज दिया; हां, और वे गए और उन सभी लमनाइयों को खदेड़ दिया जो उनके अपने प्रदेशों के पूर्वी निर्जन प्रदेश में रह रहे थे, जो कि जराहेमला प्रदेश के दक्षिण में स्थित था ।
- 8 और नफी का प्रदेश पूर्वी समुद्रतट से होकर पश्चिमी तट तक सीधा जाता था ।
- 9 और ऐसा हुआ कि जब मोरोनी ने पूर्वी निर्जन प्रदेश से जो कि उनके स्वयं के अधिकार क्षेत्र के उत्तर में स्थित था, सारे लमनाइयों को खदेड़ दिया तो उसने जराहेमला और उसके आसपास के निवासियों को पूर्वी निर्जन प्रदेश में, उस धरती पर अधिकार करने के लिए भेजा, और यहां तक कि समुद्रतट की सीमाओं पर भी ।

## Alma 50

And now it came to pass that Moroni did not stop making preparations for war, or to defend his people against the Lamanites; for he caused that his armies should commence in the commencement of the twentieth year of the reign of the judges, that they should commence in digging up heaps of earth round about all the cities, throughout all the land which was possessed by the Nephites.

And upon the top of these ridges of earth he caused that there should be timbers, yea, works of timbers built up to the height of a man, round about the cities.

And he caused that upon those works of timbers there should be a frame of pickets built upon the timbers round about; and they were strong and high.

And he caused towers to be erected that overlooked those works of pickets, and he caused places of security to be built upon those towers, that the stones and the arrows of the Lamanites could not hurt them.

And they were prepared that they could cast stones from the top thereof, according to their pleasure and their strength, and slay him who should attempt to approach near the walls of the city.

Thus Moroni did prepare strongholds against the coming of their enemies, round about every city in all the land.

And it came to pass that Moroni caused that his armies should go forth into the east wilderness; yea, and they went forth and drove all the Lamanites who were in the east wilderness into their own lands, which were south of the land of Zarahemla.

And the land of Nephi did run in a straight course from the east sea to the west.

And it came to pass that when Moroni had driven all the Lamanites out of the east wilderness, which was north of the lands of their own possessions, he caused that the inhabitants who were in the land of Zarahemla and in the land round about should go forth into the east wilderness, even to the borders by the seashore, and possess the land.

- 10 और उसने दक्षिण में, उनकी भूमि की सीमाओं पर भी सेना को नियुक्त किया, और उनसे किलों का निर्माण करने के लिए कहा ता-कि वे अपनी सेना और अपने लोगों को उनके शत्रुओं के हाथों से बचा सकें ।
- 11 और इस प्रकार उसने पूर्वी निर्जन प्रदेश में स्थित लमनाइयों के सारे किलों को नष्ट कर दिया, हां, और पश्चिम में स्थित किलों को भी, नफाइयों और लमनाइयों के बीच, जराहेमला प्रदेश और नफी प्रदेश के बीच किलाबंदी करते हुए, पूर्वी समुद्रतट से लेकर वहां तक जहां तक सिदोन नदी का सिरा था—नफाइयों ने सारे प्रदेश के उत्तरी भाग पर अधिकार किया, हां, अपनी इच्छानुसार उस प्रदेश पर अधिकार किया जो कि संपन्न प्रदेश के उत्तर में स्थित था ।
- 12 इस प्रकार मोरोनी ने अपनी सैनिक शक्ति से, जो कि उसके कार्य द्वारा सुरक्षा के आश्वासन के कारण निरंतर बढ़ रही थी, अपने अधिकार क्षेत्र से लमनाइयों की बल और शक्ति को नष्ट कर देने का प्रयास किया, ताकि उन लोगों का उनके अधिकार क्षेत्र पर कोई कब्जा न हो सके ।
- 13 और ऐसा हुआ कि नफाइयों ने नगर की नींव रखना आरंभ किया, और उन्होंने नगर का नाम मोरोनी रखा; और वह समुद्रीतट के पूर्व में था; और लमनाइयों के अधिकार क्षेत्र से जुड़े हुए दक्षिणी हिस्से में था ।
- 14 और उन्होंने नगर मोरोनी और नगर हारून के बीच में, हारून और मोरोनी की सीमाओं को जोड़ते हुए एक नगर की नींव रखना आरंभ किया; और नगर, या प्रदेश का नाम नफीहा रखा गया ।
- 15 और उन्होंने उसी वर्ष उत्तर में कई नगरों का निर्माण आरंभ किया, विशेषकर एक नगर का निर्माण किया जिसका नाम उन्होंने लेही रखा, जो कि समुद्रतट की सीमाओं पर उत्तर दिशा में था ।
- 16 और इस प्रकार बीसवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 17 और नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के इक्कीसवें वर्ष के आरंभ में, समृद्ध बनानेवाली इन परिस्थितियों में नफी के लोग रह रहे थे ।
- 18 और वे अत्याधिक समृद्ध हुए, और वे अत्याधिक धनी हुए, हां, और वे फले-फूले और प्रदेश में दृढ़ बने रहे ।

And he also placed armies on the south, in the borders of their possessions, and caused them to erect fortifications that they might secure their armies and their people from the hands of their enemies.

And thus he cut off all the strongholds of the Lamanites in the east wilderness, yea, and also on the west, fortifying the line between the Nephites and the Lamanites, between the land of Zarahemla and the land of Nephi, from the west sea, running by the head of the river Sidon—the Nephites possessing all the land northward, yea, even all the land which was northward of the land Bountiful, according to their pleasure.

Thus Moroni, with his armies, which did increase daily because of the assurance of protection which his works did bring forth unto them, did seek to cut off the strength and the power of the Lamanites from off the lands of their possessions, that they should have no power upon the lands of their possession.

And it came to pass that the Nephites began the foundation of a city, and they called the name of the city Moroni; and it was by the east sea; and it was on the south by the line of the possessions of the Lamanites.

And they also began a foundation for a city between the city of Moroni and the city of Aaron, joining the borders of Aaron and Moroni; and they called the name of the city, or the land, Nephiah.

And they also began in that same year to build many cities on the north, one in a particular manner which they called Lehi, which was in the north by the borders of the seashore.

And thus ended the twentieth year.

And in these prosperous circumstances were the people of Nephi in the commencement of the twenty and first year of the reign of the judges over the people of Nephi.

And they did prosper exceedingly, and they became exceedingly rich; yea, and they did multiply and wax strong in the land.

- 19 और इस प्रकार हम देखते हैं कि मानव संतान के प्रति अपनी सारी बातों को पूरा करने में, प्रभु का आचरण कितना कृपापूर्ण और न्यायपूर्ण है; हां, वर्तमान में भी हम देखते हैं कि उसके वे सारे वचन सत्य सिद्ध होते जा रहे हैं जिसे उसने लेही से इस प्रकार कहा था:
- 20 तुम और तुम्हारे बच्चे आशीषित हों; और वे धन्य होंगे, जब तक वे मेरी आज्ञाओं का पालन करेंगे वे प्रदेश में संपन्न होंगे। परन्तु याद रखो, जब वे मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे उन्हें प्रभु की उपस्थिति से अलग कर दिया जाएगा।
- 21 और हम देखते हैं कि इन प्रतिज्ञाओं को नफी के लोगों पर पूरा किया गया; क्योंकि यह तो उनके झगड़े और मतभेद थे, हां, उनकी हत्याएं और उनके लूटमार, उनके व्यभिचार, उनकी वेश्यावृत्ति, और उनके घृणित कार्य थे जो उनके बीच में उत्पन्न हो गए थे, जिसके कारण उनपर युद्ध और विनाश आया।
- 22 और जो लोग प्रभु की आज्ञाओं को मानने में विश्वासी थे उन्हें हर समय बचाया गया, जब कि उनके हजारों दुष्ट भाइयों को दासता के हवाले कर दिया गया, या उन्हें तलवार से मार दिया गया, या अविश्वास में पड़ने, और लमनाइयों के साथ मिल जाने के कारण उनकी संख्या कम हो गई।
- 23 परन्तु देखो मोरोनी के समय के अलावा, नफी के समय के लेकर अब तक इतना मंगलमय समय कभी नहीं था, हां, यहां तक कि न्यायियों के शासन के इक्कीसवें वर्ष में भी।
- 24 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन का बाइसवां वर्ष भी शांति से समाप्त हुआ; हां, और तेइसवां वर्ष भी।
- 25 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के चौबीसवें वर्ष के आरंभ में, नफी के लोगों में शांति बनी रहती यदि उन लोगों में लेही प्रदेश और मोरियण्टन प्रदेश को लेकर मतभेद नहीं होता, जो कि लेही की सीमाओं से जुड़े हुए थे; दोनों प्रदेश समुद्रतट की सीमाओं पर थे।
- 26 क्योंकि देखो, जिन लोगों का मोरियण्टन प्रदेश पर अधिकार था वे लेही के कुछ हिस्से की मांग कर रहे थे; इसलिए उनके बीच में इतना प्रचंड मतभेद होने लगा कि मोरियण्टन के लोगों ने अपने भाइयों के विरुद्ध अस्त्र-शस्त्र उठा लिया, और वे उन्हें तलवार से मार देना चाहते थे।

And thus we see how merciful and just are all the dealings of the Lord, to the fulfilling of all his words unto the children of men; yea, we can behold that his words are verified, even at this time, which he spake unto Lehi, saying:

Blessed art thou and thy children; and they shall be blessed, inasmuch as they shall keep my commandments they shall prosper in the land. But remember, inasmuch as they will not keep my commandments they shall be cut off from the presence of the Lord.

And we see that these promises have been verified to the people of Nephi; for it has been their quarrellings and their contentions, yea, their murderings, and their plunderings, their idolatry, their whoredoms, and their abominations, which were among themselves, which brought upon them their wars and their destructions.

And those who were faithful in keeping the commandments of the Lord were delivered at all times, whilst thousands of their wicked brethren have been consigned to bondage, or to perish by the sword, or to dwindle in unbelief, and mingle with the Lamanites.

But behold there never was a happier time among the people of Nephi, since the days of Nephi, than in the days of Moroni, yea, even at this time, in the twenty and first year of the reign of the judges.

And it came to pass that the twenty and second year of the reign of the judges also ended in peace; yea, and also the twenty and third year.

And it came to pass that in the commencement of the twenty and fourth year of the reign of the judges, there would also have been peace among the people of Nephi had it not been for a contention which took place among them concerning the land of Lehi, and the land of Morianton, which joined upon the borders of Lehi; both of which were on the borders by the seashore.

For behold, the people who possessed the land of Morianton did claim a part of the land of Lehi; therefore there began to be a warm contention between them, insomuch that the people of Morianton took up arms against their brethren, and they were determined by the sword to slay them.

- 27 परन्तु देखो, जिन लोगों का लेही प्रदेश पर अधिकार था वे भागकर मोरोनी के शिविर में चले गए, और उससे सहायता की याचना की; क्योंकि देखो वे गलत लोगों में शामिल नहीं थे ।
- 28 और ऐसा हुआ कि जब मोरियण्टन के लोग, जिनका मार्गदर्शन एक मोरियण्टन नामक व्यक्ति कर रहा था उसे पता चला कि लेही के लोग भागकर मोरोनी के शिविर में चले गए हैं तो वे अत्याधिक डर गए कि कहीं ऐसा न हो कि मोरोनी उनपर आक्रमण कर दे और उन्हें नष्ट कर दे ।
- 29 इसलिए, मोरियण्टन ने उनके मन में बात डाली कि उन्हें भागकर प्रदेश के उस उत्तरी दिशा में चले जाना चाहिए जो कि बहुत ही अधिक मात्रा में पानी से ढंका हुआ था, और उत्तरी प्रदेश पर कब्जा कर लेना चाहिए ।
- 30 और देखो, उन लोगों ने इस योजना को कारगर किया, (जो विलाप करने का एक भारी कारण हो सकता था) परन्तु देखो, मोरियण्टन एक उत्तेजित व्यक्ति था, इसलिए वह अपनी एक सेविका पर क्रोधित हो उठा, और उसे बहुत मारा ।
- 31 और ऐसा हुआ कि वह भाग गई, और मोरोनी के शिविर में आ गई, और मोरोनी को इस मामले से संबंधित सारी बातें बताईं, और उत्तरी प्रदेश में भागकर आने के अपने उद्देश्य को भी बताया ।
- 32 अब देखो, जो लोग संपन्न प्रदेश में थे, या ये कहें कि मोरोनी के प्रदेश में थे, डर गए कि वे मोरियण्टन की बात मानेंगे और उसके लोगों से मिल जाएंगे, और इस प्रकार वह प्रदेश के उस हिस्से पर कब्जा कर लेगा जो नफी के लोगों में गंभीर परिणामों को उत्पन्न करेगा, हां, वह परिणाम जो उनकी स्वतंत्रता को नष्ट कर देगा ।
- 33 इसलिए मोरोनी ने, उत्तरी प्रदेश में लड़ रहे मोरियण्टन के लोगों को रोकने के लिए अपने शिविर के साथ एक सेना भेजी ।
- 34 और ऐसा हुआ कि वे उन्हें तब तक नहीं रोक सके जब तक कि वे उजाड़ प्रदेश की सीमाओं पर नहीं आ गए; और वहां पर एक संकरे मार्ग से होकर जाते हुए उन्होंने उन्हें रोका जो समुद्रतट से होकर उत्तरी दिशा की तरफ जाता था, हां, जिसके पश्चिम और पूर्व में समुद्रतट था ।

But behold, the people who possessed the land of Lehi fled to the camp of Moroni, and appealed unto him for assistance; for behold they were not in the wrong.

And it came to pass that when the people of Morianton, who were led by a man whose name was Morianton, found that the people of Lehi had fled to the camp of Moroni, they were exceedingly fearful lest the army of Moroni should come upon them and destroy them.

Therefore, Morianton put it into their hearts that they should flee to the land which was northward, which was covered with large bodies of water, and take possession of the land which was northward.

And behold, they would have carried this plan into effect, (which would have been a cause to have been lamented) but behold, Morianton being a man of much passion, therefore he was angry with one of his maid servants, and he fell upon her and beat her much.

And it came to pass that she fled, and came over to the camp of Moroni, and told Moroni all things concerning the matter, and also concerning their intentions to flee into the land northward.

Now behold, the people who were in the land Bountiful, or rather Moroni, feared that they would hearken to the words of Morianton and unite with his people, and thus he would obtain possession of those parts of the land, which would lay a foundation for serious consequences among the people of Nephi, yea, which consequences would lead to the overthrow of their liberty.

Therefore Moroni sent an army, with their camp, to head the people of Morianton, to stop their flight into the land northward.

And it came to pass that they did not head them until they had come to the borders of the land Desolation; and there they did head them, by the narrow pass which led by the sea into the land northward, yea, by the sea, on the west and on the east.

35 और ऐसा हुआ कि जो सेना मोरोनी द्वारा भेजी गई थी, जिसका मार्गदर्शक एक टियंकम नामक व्यक्ति था, मोरियण्टन के लोगों से मिला; और मोरियण्टन के लोग इतने जिद्दी थे (उसकी दुष्टता और उसकी बहकाने वाली बातों से प्रेरित थे) कि उनमें युद्ध आरंभ हो गया, जिसमें टियंकम ने मोरियण्टन को मार डाला और उसकी सेना को पराजित कर दिया, और उन्हें बंदी बना लिया, और मोरोनी के शिविर में वापस चला गया। और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का चौबीसवां वर्ष समाप्त हुआ।

36 और इस प्रकार मोरियण्टन के लोगों को वापस लाया गया। और शांति के उनके अनुबंध बनाने के कारण उन्हें फिर से मोरियण्टन प्रदेश भेज दिया गया, और उनमें और लेही के लोगों में मेल-जोल हुआ; और उन्हें भी उनके प्रदेश भेज दिया गया।

37 और ऐसा हुआ कि उसी वर्ष नफी के लोगों में फिर से शांति स्थापित हुई, कि दूसरे बड़े मुख्य न्यायी नफीहा की मृत्यु हो गई, जिसने परमेश्वर के सामने उचित ढंग से अपने न्याय-आसन को संभाला था।

38 फिर भी, उसने उन अभिलेखों और वस्तुओं को अपने अधिकार में लेने से मना कर दिया था जिसे अलमा और उसके पूर्वज अत्याधिक पावन मानते थे; इसलिए अलमा ने उन्हें अपने बेटे हिलामन को प्रदान कर दिया था।

39 देखो, ऐसा हुआ कि नफीहा के बेटे को उसके पिता के स्थान पर न्याय-आसन पर नियुक्त किया गया; हां, उसे लोगों का मुख्य न्यायी और राज्यपाल नियुक्त किया गया, शपथ लेते हुए और पावन विधि के साथ कि वह धार्मिकता से न्याय करेगा, और लोगों में शांति और स्वतंत्रता बनाए रखेगा, और उन्हें अपने प्रभु परमेश्वर की आराधना के प्रति उन्हें पावन विशेषाधिकार देगा, हां, अपने सारे समय में परमेश्वर के ध्येय को समर्थन देगा और बनाए रखेगा, और दुष्ट लोगों का उनके अपराध के अनुसार न्याय करेगा।

40 अब देखो, उसका नाम फिरौन था। और फिरौन ने पिता की राजगद्दी संभाल ली, और नफी के लोगों पर, चौबीसवें वर्ष के अंत में अपना शासन आरंभ किया।

And it came to pass that the army which was sent by Moroni, which was led by a man whose name was Teancum, did meet the people of Morianton; and so stubborn were the people of Morianton, (being inspired by his wickedness and his flattering words) that a battle commenced between them, in the which Teancum did slay Morianton and defeat his army, and took them prisoners, and returned to the camp of Moroni. And thus ended the twenty and fourth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

And thus were the people of Morianton brought back. And upon their covenanting to keep the peace they were restored to the land of Morianton, and a union took place between them and the people of Lehi; and they were also restored to their lands.

And it came to pass that in the same year that the people of Nephi had peace restored unto them, that Nephiah, the second chief judge, died, having filled the judgment-seat with perfect uprightness before God.

Nevertheless, he had refused Alma to take possession of those records and those things which were esteemed by Alma and his fathers to be most sacred; therefore Alma had conferred them upon his son, Helaman.

Behold, it came to pass that the son of Nephiah was appointed to fill the judgment-seat, in the stead of his father; yea, he was appointed chief judge and governor over the people, with an oath and sacred ordinance to judge righteously, and to keep the peace and the freedom of the people, and to grant unto them their sacred privileges to worship the Lord their God, yea, to support and maintain the cause of God all his days, and to bring the wicked to justice according to their crime.

Now behold, his name was Pahoran. And Pahoran did fill the seat of his father, and did commence his reign in the end of the twenty and fourth year, over the people of Nephi.



## अलमा 51

- 1 और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के पच्चीसवें वर्ष के आरंभ में; जमीन से संबंधित मामलों में उन्होंने लेही के लोगों और मोरियण्टन के लोगों के बीच शांति बनाई रखी, और पच्चीसवां वर्ष शांति में आरंभ हुआ ।
- 2 फिर भी, प्रदेश में उन्होंने पूरी तरह से शांति नहीं बनाई, क्योंकि मुख्य न्यायी पहोरन को लेकर लोगों में मतभेद होने लगा; क्योंकि देखो, कुछ लोग थे जो चाहते थे कि नियम की कुछ विशिष्ट बातों में सुधार होना चाहिए ।
- 3 परन्तु देखो, न तो पहोरन ने नियम में कोई बदलाव किया और न ही बदलाव होने दिया; इसलिए, उसने उन लोगों की याचिकाओं को खारिज कर दिया जिन्होंने अपनी आवाज उस तक पहुंचाई थी ।
- 4 इसलिए, जो लोग चाहते थे कि नियम में बदलाव होना चाहिए वे उससे क्रोधित हो गए, और यह भी चाहते थे कि अब उसे प्रदेश का मुख्य न्यायी नहीं रहना चाहिए; इसलिए मामले से संबंधित एक प्रचंड मतभेद आरंभ हुआ, परन्तु रक्तपात तक बात नहीं पहुंची ।
- 5 और ऐसा हुआ कि जो लोग चाहते थे कि पहोरन को न्याय-आसन से हटा देना चाहिए वे लोग राजा के लोग कहलाए, क्योंकि वे चाहते थे कि नियम में इस प्रकार बदलाव होना चाहिए कि स्वतंत्र सरकार को हटा दिया जाए और प्रदेश पर एक राजा नियुक्त किया जाए ।
- 6 और जो लोग चाहते थे कि प्रदेश में पहोरन को उनका मुख्य न्यायी होना चाहिए उन्होंने अपना नाम स्वतंत्र लोग रख लिया; और इस प्रकार उनमें विभाजन हो गया, क्योंकि स्वतंत्र लोगों ने शपथ ली या एक स्वतंत्र सरकार द्वारा अपने अधिकारों को बनाए रखने और अपने धर्म के विशेष लाभ को बनाए रखने के प्रति अनुबंध बनाया ।
- 7 और ऐसा हुआ कि उनके मतभेद का यह मामला लोगों के मतों द्वारा निपट गया । और ऐसा हुआ कि लोगों का मत स्वतंत्र लोगों के पक्ष में था, और पहोरन न्याय-आसन पर बैठा रहा, जिसके कारण पहोरन के भाई और स्वाधीनता के कई लोग आनंदित हो उठे, जिन्होंने राजा के लोगों को भी शांत कर दिया था, कि वे विरोध करने का साहस न कर सके और स्वतंत्रता को बनाए रखने पर मजबूर हुए ।

## Alma 51

And now it came to pass in the commencement of the twenty and fifth year of the reign of the judges over the people of Nephi, they having established peace between the people of Lehi and the people of Morianton concerning their lands, and having commenced the twenty and fifth year in peace;

Nevertheless, they did not long maintain an entire peace in the land, for there began to be a contention among the people concerning the chief judge Pahoran; for behold, there were a part of the people who desired that a few particular points of the law should be altered.

But behold, Pahoran would not alter nor suffer the law to be altered; therefore, he did not hearken to those who had sent in their voices with their petitions concerning the altering of the law.

Therefore, those who were desirous that the law should be altered were angry with him, and desired that he should no longer be chief judge over the land; therefore there arose a warm dispute concerning the matter, but not unto bloodshed.

And it came to pass that those who were desirous that Pahoran should be dethroned from the judgment-seat were called king-men, for they were desirous that the law should be altered in a manner to overthrow the free government and to establish a king over the land.

And those who were desirous that Pahoran should remain chief judge over the land took upon them the name of freemen; and thus was the division among them, for the freemen had sworn or covenanted to maintain their rights and the privileges of their religion by a free government.

And it came to pass that this matter of their contention was settled by the voice of the people. And it came to pass that the voice of the people came in favor of the freemen, and Pahoran retained the judgment-seat, which caused much rejoicing among the brethren of Pahoran and also many of the people of liberty, who also put the king-men to silence, that they durst not oppose but were obliged to maintain the cause of freedom.

- 8 अब वे लोग जो राजाओं के शासन के पक्ष में थे वे ऊंची जाति के थे, और वे राजा बनना चाहते थे; और उन्हें उन लोगों का समर्थन प्राप्त था जो लोगों पर सत्ता और अधिकार चाहते थे ।
- 9 परन्तु देखो, नफी के लोगों में इस प्रकार के मतभेदों का यह एक नाजूक दौर था; क्योंकि देखो, अमालिकिया ने फिर से नफी के लोगों के विरुद्ध लमनाइयों के लोगों को भड़काना शुरू किया, और उसने प्रदेश के सारे हिस्सों से सैनिकों को एक साथ एकत्रित करना, उन्हें अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित करना, और निष्ठापूर्वक युद्ध की तैयारी करना आरंभ किया; क्योंकि उसने मोरोनी का लहू पीने की शपथ ली थी ।
- 10 परन्तु देखो, हम देखेंगे कि उसके द्वारा ली गई प्रतिज्ञा अविवेकपूर्ण थी; फिर भी, उसने नफाइयों के विरुद्ध युद्ध के लिए स्वयं को और अपनी सेना को तैयार किया ।
- 11 अब नफाइयों के हाथों से कई हजार लोगों के मारे जाने के कारण, उसकी सेना पहले जितनी बड़ी नहीं रही; परन्तु उनकी महान हानि के बावजूद, अमालिकिया ने बहुत ही अच्छे ढंग से एक बड़ी सेना को एकत्रित कर लिया, इतनी बड़ी कि उसे जराहेमला प्रदेश आने में कोई डर नहीं था ।
- 12 हां, यहां तक कि अमालिकिया, लमनाइयों का सेनापति बनकर स्वयं आया । और ऐसा न्यायियों के शासन के पच्चीसवें वर्ष में हुआ था; और यह वही समय था जब उन्होंने मुख्य न्यायी पहोरन से संबंधित मतभेद के अपने मामले को निपटाना आरंभ किया ।
- 13 और ऐसा हुआ कि जो लोग राजा के लोग कहलाते थे उन्होंने सुना कि लमनाई उनके विरुद्ध युद्ध करने आ रहे हैं तो वे मन ही मन खुश हुए; और उन्होंने शस्त्र उठाने से मना कर दिया, क्योंकि वे मुख्य न्यायी से अत्याधिक क्रोधित थे, और स्वतंत्रता के लोगों से भी, कि उन्होंने अपने देश को बचाने के लिए शस्त्र नहीं उठाया ।
- 14 और ऐसा हुआ कि जब मोरोनी ने इसे देखा, और यह भी देखा कि लमनाई प्रदेश की सीमा में आ रहे हैं तो वह उन लोगों की जिद्द के कारण अत्याधिक क्रोधित हुआ जिनको बचाने के लिए उसने निष्ठापूर्वक मेहनत की थी; हां, वह अत्याधिक क्रोधित हुआ; उसकी आत्मा उनके विरुद्ध क्रोध से भर गई ।

Now those who were in favor of kings were those of high birth, and they sought to be kings; and they were supported by those who sought power and authority over the people.

But behold, this was a critical time for such contentions to be among the people of Nephi; for behold, Amalickiah had again stirred up the hearts of the people of the Lamanites against the people of the Nephites, and he was gathering together soldiers from all parts of his land, and arming them, and preparing for war with all diligence; for he had sworn to drink the blood of Moroni.

But behold, we shall see that his promise which he made was rash; nevertheless, he did prepare himself and his armies to come to battle against the Nephites.

Now his armies were not so great as they had hitherto been, because of the many thousands who had been slain by the hand of the Nephites; but notwithstanding their great loss, Amalickiah had gathered together a wonderfully great army, insomuch that he feared not to come down to the land of Zarahemla.

Yea, even Amalickiah did himself come down, at the head of the Lamanites. And it was in the twenty and fifth year of the reign of the judges; and it was at the same time that they had begun to settle the affairs of their contentions concerning the chief judge, Pahoran.

And it came to pass that when the men who were called king-men had heard that the Lamanites were coming down to battle against them, they were glad in their hearts; and they refused to take up arms, for they were so wroth with the chief judge, and also with the people of liberty, that they would not take up arms to defend their country.

And it came to pass that when Moroni saw this, and also saw that the Lamanites were coming into the borders of the land, he was exceedingly wroth because of the stubbornness of those people whom he had labored with so much diligence to preserve; yea, he was exceedingly wroth; his soul was filled with anger against them.

- 15 और ऐसा हुआ कि उसने प्रदेश के राज्यपाल को लोगों की मत के साथ एक अर्जी भेजी, यह चाहते हुए कि वह उसे पढ़े, और उसे (मोरोनी को) अधिकार दे कि वह उन वाद-विवाद करनेवालों को अपने देश की रक्षा के लिए बाध्य कर सके या उन्हें मृत्युदंड दे सके।
- 16 क्योंकि लोगों में इस प्रकार के मतभेद और वाद-विवाद को समाप्त करना ही उसका प्रथम कर्तव्य था; क्योंकि देखो, अब तक उनके विनाश का यही कारण रहा था। और ऐसा हुआ कि लोगों की मत के अनुसार उसे अनुमति मिल गई।
- 17 और ऐसा हुआ कि मोरोनी ने आज्ञा दी कि उसकी सेना जाए और उन राजा के लोगों के अहंकार और उच्च जाति का होने के उनके घमंड को मिट्टी में मिला दे, या वे अस्त्र-शस्त्र उठाकर स्वतंत्रता की रक्षा करें।
- 18 और ऐसा हुआ कि सेना ने उसके विरुद्ध कूच किया; और उन्होंने उनके अहंकार और उच्च जाति का होने के उनके घमंड को नीचे कर दिया, इतना अधिक कि जब उन्होंने मोरोनी के लोगों के विरुद्ध युद्ध का हथियार उठाया तो उन्हें मारा-काटा गया और उन्हें मिट्टी में मिला दिया गया।
- 19 और ऐसा हुआ कि वाद-विवाद करनेवाले चार हजार लोग थे जिन्हें तलवार से काट दिया गया; और उनके मार्गदर्शक जो नहीं मारे गए थे उन्हें ले जाकर बंदीगृह में डाल दिया गया, क्योंकि उनकी सुनवाई करने के लिए समय नहीं था।
- 20 और उन बचे हुए मतभेदियों को तलवार से काटकर जमीन पर गिराये जाने की बजाय, स्वाधीनता के झंडे के सामने गिराया गया, और उन्हें बाध्य किया गया कि वे स्वाधीनता के झंडे को अपनी मीनारों पर, और अपने नगरों में फहरायें, और अपने देश की रक्षा के लिए हथियार उठाएं।
- 21 और इस प्रकार मोरोनी ने उन राजा के लोगों का अंत किया, ताकि फिर कोई भी व्यक्ति राजा-विरोधी के नाम से न जाना जाए; और इस प्रकार उसने उन लोगों के जिद्द और अहंकार का अंत किया जो स्वयं को ऊंची जाति के रूप में घोषित करते थे; परन्तु उन्हें उनके भाइयों के समान विनम्र बनाया गया, और उन्होंने दासता से अपनी स्वतंत्रता के लिए वीरतापूर्वक लड़ाई की।

And it came to pass that he sent a petition, with the voice of the people, unto the governor of the land, desiring that he should read it, and give him (Moroni) power to compel those dissenters to defend their country or to put them to death.

For it was his first care to put an end to such contentions and dissensions among the people; for behold, this had been hitherto a cause of all their destruction. And it came to pass that it was granted according to the voice of the people.

And it came to pass that Moroni commanded that his army should go against those king-men, to pull down their pride and their nobility and level them with the earth, or they should take up arms and support the cause of liberty.

And it came to pass that the armies did march forth against them; and they did pull down their pride and their nobility, insomuch that as they did lift their weapons of war to fight against the men of Moroni they were hewn down and leveled to the earth.

And it came to pass that there were four thousand of those dissenters who were hewn down by the sword; and those of their leaders who were not slain in battle were taken and cast into prison, for there was no time for their trials at this period.

And the remainder of those dissenters, rather than be smitten down to the earth by the sword, yielded to the standard of liberty, and were compelled to hoist the title of liberty upon their towers, and in their cities, and to take up arms in defence of their country.

And thus Moroni put an end to those king-men, that there were not any known by the appellation of king-men; and thus he put an end to the stubbornness and the pride of those people who professed the blood of nobility; but they were brought down to humble themselves like unto their brethren, and to fight valiantly for their freedom from bondage.

- 22 देखो, ऐसा हुआ कि जब मोरोनी अपने स्वयं के लोगों के बीच युद्ध और मतभेद खत्म कर रहा था, और उन्हें शांत और सभ्य बना रहा था, और लमनाइयों के विरुद्ध युद्ध के प्रति नियम बना रहा था, देखो, लमनाई मोरोनी के प्रदेश में घुस आए, जो कि समुद्रतट की सीमाओं पर था ।
- 23 और ऐसा हुआ कि मोरोनी के नगर में नफाई पर्याप्त रूप से मजबूत नहीं थे; इसलिए कई लोगों को मारते हुए, अमालिकिया ने उन्हें खदेड़ दिया । और ऐसा हुआ कि अमालिकिया ने नगर पर कब्जा कर लिया, हां, उनके सभी किलों पर कब्जा कर लिया ।
- 24 और जो लोग मोरोनी के नगर से भाग गए वे नफीहा के नगर पहुंचे; और लेही के नगर के लोगों ने स्वयं को एकत्रित भी किया, और तैयारी की और युद्ध में लमनाइयों का सामना करने के लिए तैयार हुए ।
- 25 परन्तु ऐसा हुआ कि नफीहा के नगर के खिलाफ युद्ध करने के लिए अमालिकिया ने लमनाइयों को नहीं जाने दिया, परन्तु उन्हें समुद्रतट के किनारे ही रखा, अपनी सुरक्षा को बनाए रखने के लिए हर नगर में अपने आदमियों को रखते हुए ।
- 26 और इस प्रकार नफीहा के नगर, और लेही के नगर, और मोरियण्टन के नगर, और ओमनर के नगर, और गिद के नगर, और मूलक के नगर जैसे कई नगरों पर कब्जा करते हुए वह आगे ही बढ़ता गया, जिसमें से सभी समुद्रतट की पूर्व सीमाओं पर स्थित थे ।
- 27 और इस प्रकार अमालिकिया की धूर्तता के द्वारा लमनाइयों ने अपनी अनगिनत फौज की सहायता से कई नगरों पर कब्जा कर लिया, जिनमें से सारे नगर मोरोनी की किलाबंदी के समान ही मजबूत किले थे; जिनको लमनाइयों ने किलों के रूप में उपयोग किया ।
- 28 और ऐसा हुआ कि वे नफाइयों को अपने सामने से मारते और खदेड़ते हुए संपन्न प्रदेश की सीमाओं की तरफ कूच करते गए ।
- 29 परन्तु ऐसा हुआ कि उनका सामना टियंकम से हुआ, जिसने मेरियण्टन का वध कर दिया और अपने युद्ध में अपने लोगों का नेतृत्व किया ।
- 30 और ऐसा हुआ कि जब अमालिकिया अपनी असंख्य सेना के साथ आगे की ओर कूच कर रहा था ताकि वह संपन्न प्रदेश, और उत्तरी प्रदेश पर भी कब्जा कर सके तो उसने उसे भी रोक दिया ।

Behold, it came to pass that while Moroni was thus breaking down the wars and contentions among his own people, and subjecting them to peace and civilization, and making regulations to prepare for war against the Lamanites, behold, the Lamanites had come into the land of Moroni, which was in the borders by the seashore.

And it came to pass that the Nephites were not sufficiently strong in the city of Moroni; therefore Amalickiah did drive them, slaying many. And it came to pass that Amalickiah took possession of the city, yea, possession of all their fortifications.

And those who fled out of the city of Moroni came to the city of Nephiah; and also the people of the city of Lehi gathered themselves together, and made preparations and were ready to receive the Lamanites to battle.

But it came to pass that Amalickiah would not suffer the Lamanites to go against the city of Nephiah to battle, but kept them down by the seashore, leaving men in every city to maintain and defend it.

And thus he went on, taking possession of many cities, the city of Nephiah, and the city of Lehi, and the city of Morianton, and the city of Omner, and the city of Gid, and the city of Mulek, all of which were on the east borders by the seashore.

And thus had the Lamanites obtained, by the cunning of Amalickiah, so many cities, by their numberless hosts, all of which were strongly fortified after the manner of the fortifications of Moroni; all of which afforded strongholds for the Lamanites.

And it came to pass that they marched to the borders of the land Bountiful, driving the Nephites before them and slaying many.

But it came to pass that they were met by Teancum, who had slain Morianton and had headed his people in his flight.

And it came to pass that he headed Amalickiah also, as he was marching forth with his numerous army that he might take possession of the land Bountiful, and also the land northward.

- 31 परन्तु देखो टियंकम और उसके लोगों द्वारा पराजित होने के पश्चात वह निराश हो गया, क्योंकि वे महान योद्धा थे; क्योंकि टियंकम के सैनिक अपनी शक्ति और अपनी युद्ध कला में लमनाइयों से अधिक कुशल थे, इतने अधिक कि वे लमनाइयों पर भारी पड़े ।
- 32 और ऐसा हुआ कि उन्होंने उन्हें इतना तंग किया कि अंधकार होने तक उन्होंने उन्हें मारा । और ऐसा हुआ कि टियंकम और उसके लोगों ने संपन्न प्रदेश की सीमाओं पर शिविर लगाया; और अमालिकिया ने समुद्रतट के किनारे स्थित सीमा पर अपना शिविर लगाया, और इस प्रकार उन्हें खदेड़ा गया ।
- 33 और ऐसा हुआ कि जब रात हुई, तब टियंकम और उसका एक सेवक गुप्त रूप से रात को अमालिकिया के शिविर में गए; और देखो, अत्याधिक थकावट के कारण वे नींद में डूबे हुए थे, जो कि उन पर अत्याधिक परिश्रम और दिन की गर्मी के कारण था । उठाए
- 34 और ऐसा हुआ कि टियंकम ने गुप्त रूप से राजा के शिविर में प्रवेश किया, और उसके दिल में भाला भोंक दिया; और उसने राजा को इतनी शीघ्रता से मार डाला कि वह अपने सेवकों को जगा नहीं पाया ।
- 35 और वह फिर से गुप्त रूप से अपने शिविर में वापस लौट आया, और देखो, उसके लोग सो रहे थे, और उसने उन्हें जगाया और जो कुछ भी हुआ था उसने उन्हें बताया ।
- 36 और उसने अपनी सेना को तैयार रहने के लिए कहा, कहीं ऐसा न हो कि लमनाई जाग जाएं और उन पर आक्रमण कर दें ।
- 37 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का पच्चीसवां वर्ष समाप्त हुआ; और इस प्रकार अमालिकिया के दिन समाप्त हुए ।

But behold he met with a disappointment by being repulsed by Teancum and his men, for they were great warriors; for every man of Teancum did exceed the Lamanites in their strength and in their skill of war, insomuch that they did gain advantage over the Lamanites.

And it came to pass that they did harass them, insomuch that they did slay them even until it was dark. And it came to pass that Teancum and his men did pitch their tents in the borders of the land Bountiful; and Amalickiah did pitch his tents in the borders on the beach by the seashore, and after this manner were they driven.

And it came to pass that when the night had come, Teancum and his servant stole forth and went out by night, and went into the camp of Amalickiah; and behold, sleep had overpowered them because of their much fatigue, which was caused by the labors and heat of the day.

And it came to pass that Teancum stole privily into the tent of the king, and put a javelin to his heart; and he did cause the death of the king immediately that he did not awake his servants.

And he returned again privily to his own camp, and behold, his men were asleep, and he awoke them and told them all the things that he had done.

And he caused that his armies should stand in readiness, lest the Lamanites had awakened and should come upon them.

And thus endeth the twenty and fifth year of the reign of the judges over the people of Nephi; and thus endeth the days of Amalickiah.

## अलमा 52

- 1 और अब, ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के छब्बीसवें वर्ष में, देखो, जब लमनाई पहले महीने की पहली सुबह को जागे, देखो, उन्होंने अमालिकिया को उसके शिविर में मरा हुआ पाया; और उन्होंने यह भी देखा कि टियंकम उस दिन उनसे युद्ध करने के लिए तैयार था ।
- 2 और अब, जब लमनाइयों ने इसे देखा तो वे डर गए; और उन्होंने उत्तरी प्रदेश में कूच करने के अपने विचार को त्याग दिया, और अपनी पूरी सेना के साथ मूलक के नगर वापस चले गए, और अपने किलों में शरण ली ।
- 3 और ऐसा हुआ कि अमालिकिया के भाई को लोगों का राजा नियुक्त किया गया; और उसका नाम अम्मोरोन था, जिसे उसके स्थान पर शासन के लिए नियुक्त किया गया था ।
- 4 और ऐसा हुआ कि उसने अपने लोगों को आज्ञा दी कि उन्हें उन नगरों को अपने ही अधिकार में रखना चाहिए जिसे उन्होंने अपने लहू को बहाकर हासिल किया था; क्योंकि अत्याधिक लहू बहाकर ही उन्होंने किसी भी नगर को हासिल किया था ।
- 5 और अब, टियंकम ने देखा कि लमनाई उन नगरों को अपने अधिकार में रखने के लिए दृढ़ थे जिसे उन्होंने हासिल किया था, और प्रदेश के उन भागों पर अपना अधिकार जताना चाहते थे जिसे उन्होंने हासिल किया था; और उनकी अत्याधिक संख्या को देखते हुए, टियंकम ने सोचा कि उनके किलों में जाकर उन पर आक्रमण करना उचित नहीं होगा ।
- 6 परन्तु उसने अपने लोगों को चारों तरफ नियुक्त कर दिया, जैसे कि युद्ध की तैयारी कर रहे हों; हां, और चारों तरफ दीवार बनाने और आश्रय के स्थानों को बनाने के द्वारा वास्तव में वह उनके विरुद्ध अपने बचाव की तैयारी कर रहा था ।
- 7 और ऐसा हुआ कि इस प्रकार उसने युद्ध की तैयारी तब तक जारी रखी जब तक कि उसकी सेना को मजबूत करने के लिए मोरोनी ने बड़ी संख्या में लोगों को नहीं भेजा ।
- 8 और मोरोनी ने उसके लिए यह आज्ञा भेजी कि जो लोग उसके हाथ लग गए हैं उन्हें वह बंदी बनाकर रखे; क्योंकि लमनाइयों ने कई लोगों को बंदी बनाया था, कि उसे लमनाइयों के सारे बंदियों को उन लोगों के बदले फिरौती के रूप में बचाकर रखना चाहिए जिन्हें लमनाइयों ने बंदी बनाकर रखा था ।

## Alma 52

And now, it came to pass in the twenty and sixth year of the reign of the judges over the people of Nephi, behold, when the Lamanites awoke on the first morning of the first month, behold, they found Amalickiah was dead in his own tent; and they also saw that Teancum was ready to give them battle on that day.

And now, when the Lamanites saw this they were affrighted; and they abandoned their design in marching into the land northward, and retreated with all their army into the city of Mulek, and sought protection in their fortifications.

And it came to pass that the brother of Amalickiah was appointed king over the people; and his name was Ammoron; thus king Ammoron, the brother of king Amalickiah, was appointed to reign in his stead.

And it came to pass that he did command that his people should maintain those cities, which they had taken by the shedding of blood; for they had not taken any cities save they had lost much blood.

And now, Teancum saw that the Lamanites were determined to maintain those cities which they had taken, and those parts of the land which they had obtained possession of; and also seeing the enormity of their number, Teancum thought it was not expedient that he should attempt to attack them in their forts.

But he kept his men round about, as if making preparations for war; yea, and truly he was preparing to defend himself against them, by casting up walls round about and preparing places of resort.

And it came to pass that he kept thus preparing for war until Moroni had sent a large number of men to strengthen his army.

And Moroni also sent orders unto him that he should retain all the prisoners who fell into his hands; for as the Lamanites had taken many prisoners, that he should retain all the prisoners of the Lamanites as a ransom for those whom the Lamanites had taken.

- 9 और उसने उसे यह भी आदेश दिया कि उसे संपन्न प्रदेश की किलाबंदी करनी चाहिए, और उस संकरे मार्ग पर और सुरक्षा बढ़ानी चाहिए जो उत्तरी दिशा के प्रदेश की ओर जाता हो, कहीं ऐसा न हो कि लमनाई उस स्थान तक पहुंच जाएं और उन्हें हर प्रकार से सताने का अधिकार मिल जाए ।
- 10 और उससे अपेक्षा करते हुए मोरोनी ने उसे यह भी संदेश भेजा कि प्रदेश की उस चौथाई धरती को अपने अधिकार में लेने के लिए वह विश्वासी रहेगा, और यह कि जितना उसके बस में हो उतना उस धरती पर वह लमनाइयों को दंड देने का हर अवसर खोजे, कि शायद उसे उनके हाथों से छीने गए उन नगरों को फिर से अपने अधिकार में लेने के लिए उसे दांव-पेच करना पड़े; और यह कि वह उसके आस-पास के नगरों की भी किलाबंदी करे और उन्हें मजबूत करे, जिन पर लमनाई कब्जा नहीं कर सके ।
- 11 और उसने उससे यह भी कहा, मैं तुम्हारे पास आता, परन्तु देखो, समुद्रीतट से लगे प्रदेश की सीमाओं पर लमनाई स्थित हैं; और देखो, मैं उनका सामना करने जा रहा हूं, इसलिए मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकता ।
- 12 अब, राजा (अम्मोरोन) जराहेमला प्रदेश से चला गया, और रानी को अपने भाई की मृत्यु की सूचना दी, और बड़ी संख्या में लोगों को एकत्रित किया, और पश्चिमी समुद्रतट की सीमाओं पर स्थित नफाइयों के विरुद्ध कूच किया ।
- 13 और इस प्रकार वह नफाइयों को तंग करने का प्रयास करता रहा, और प्रदेश की उस धरती पर उसने अपनी सेना भेजी, जब कि उसने जिन लोगों को अपने साथ नहीं लिया था उन्हें आज्ञा दी कि वे उन नगरों पर अधिकार बनाए रखें जिन पर उन्होंने कब्जा किया था, कि उन्हें भी पूर्वी समुद्रतट की सीमाओं पर नफाइयों को परेशान करना चाहिए ।
- 14 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के छब्बीसवें वर्ष के अंत में नफाई उन खतरनाक परिस्थितियों में रह रहे थे ।
- 15 परन्तु देखो, ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के सत्ताइसवें वर्ष में, मोरोनी की आज्ञा द्वारा—जिसने प्रदेश की दक्षिणी और पश्चिमी सीमाओं की सुरक्षा के लिए सेना नियुक्त किया था वह संपन्न प्रदेश की तरफ कूच कर गया, ताकि उन हारे हुए नगरों पर फिर से अधिकार करने के लिए वह अपने लोगों के साथ टियंकम की सहायता कर सके ।

And he also sent orders unto him that he should fortify the land Bountiful, and secure the narrow pass which led into the land northward, lest the Lamanites should obtain that point and should have power to harass them on every side.

And Moroni also sent unto him, desiring him that he would be faithful in maintaining that quarter of the land, and that he would seek every opportunity to scourge the Lamanites in that quarter, as much as was in his power, that perhaps he might take again by stratagem or some other way those cities which had been taken out of their hands; and that he also would fortify and strengthen the cities round about, which had not fallen into the hands of the Lamanites.

And he also said unto him, I would come unto you, but behold, the Lamanites are upon us in the borders of the land by the west sea; and behold, I go against them, therefore I cannot come unto you.

Now, the king (Ammoron) had departed out of the land of Zarahemla, and had made known unto the queen concerning the death of his brother, and had gathered together a large number of men, and had marched forth against the Nephites on the borders by the west sea.

And thus he was endeavoring to harass the Nephites, and to draw away a part of their forces to that part of the land, while he had commanded those whom he had left to possess the cities which he had taken, that they should also harass the Nephites on the borders by the east sea, and should take possession of their lands as much as it was in their power, according to the power of their armies.

And thus were the Nephites in those dangerous circumstances in the ending of the twenty and sixth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

But behold, it came to pass in the twenty and seventh year of the reign of the judges, that Teancum, by the command of Moroni—who had established armies to protect the south and the west borders of the land, and had begun his march towards the land Bountiful, that he might assist Teancum with his men in retaking the cities which they had lost—

- 16 और ऐसा हुआ कि टियंकम को आज्ञा मिली कि वह मूलक के नगर पर आक्रमण करे, और यदि संभव हो तो उन्हें फिर से कब्जे में ले ले।
- 17 और ऐसा हुआ कि टियंकम ने मूलक के नगर पर आक्रमण करने की तैयारी की, और लमनाइयों पर हमला करने के लिए अपनी सेना के साथ आगे की ओर कूच किया; परन्तु उसने देखा कि जब तक वे किले में हैं उन पर विजय प्राप्त करना असंभव था; इसलिए उसने अपना विचार त्याग दिया और मोरोनी के आने की प्रतीक्षा में फिर से संपन्न प्रदेश की तरफ वापस लौट गया, ताकि वह अपनी सेना को मजबूत कर सके।
- 18 और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के सत्ता-इसवें वर्ष के लगभग अंत में, मोरोनी संपन्न प्रदेश में अपनी सेना के साथ पहुंचा।
- 19 और अठ्ठाइसवें वर्ष के आरंभ में, मोरोनी और टियंकम और कई मुख्य सेनापतियों ने युद्ध पर विचार सभा रखी—उन्हें ऐसा क्या करना चाहिए जिससे लमनाई उनके विरुद्ध युद्ध करने आएँ; या यह कि किसी भी तरीके से उन्हें बहला-फुसलाकर उनके किलों से उन्हें बाहर लाया जाए, ताकि वे उनका फायदा उठा सकें और फिर से मूलक के नगर पर अधिकार कर सकें।
- 20 और ऐसा हुआ कि उन्होंने लमनाइयों की सेना के पास राजदूत भेजे, उनके सेनापति के पास जिसका नाम याकूब था, जिसने मूलक के नगर को सुरक्षित रखा था, और वे उससे चाहते थे कि वह उनसे मिलने के लिए अपनी सेना के साथ दो नगरों के बीच स्थित मैदानों पर आएँ। परन्तु देखो, याकूब, जो कि जोरामाई था, उनसे मिलने के लिए अपनी सेना के साथ उन मैदानों पर नहीं आया।
- 21 और ऐसा हुआ कि समतल भूमि पर मिलने की आशा अब मोरोनी को नहीं थी, इसलिए, उसने एक योजना बनाई जिससे झांसा देकर वह लमनाइयों को उनके किलों से बाहर ला सके।
- 22 इसलिए उसने टियंकम को कुछ लोगों के साथ समुद्रतट के नजदीक जाने की आज्ञा दी; और रात को मोरोनी अपनी सेना के साथ मूलक नगर के पश्चिम में निर्जन प्रदेश की ओर कूच कर गया; और इस प्रकार, अगले दिन जब लमनाइयों के अंगरक्षकों को टियंकम के बारे में पता चला तो वे भागकर गए और अपने सेनापति याकूब को बताया।

And it came to pass that Teancum had received orders to make an attack upon the city of Mulek, and retake it if it were possible.

And it came to pass that Teancum made preparations to make an attack upon the city of Mulek, and march forth with his army against the Lamanites; but he saw that it was impossible that he could overpower them while they were in their fortifications; therefore he abandoned his designs and returned again to the city Bountiful, to wait for the coming of Moroni, that he might receive strength to his army.

And it came to pass that Moroni did arrive with his army at the land of Bountiful, in the latter end of the twenty and seventh year of the reign of the judges over the people of Nephi.

And in the commencement of the twenty and eighth year, Moroni and Teancum and many of the chief captains held a council of war—what they should do to cause the Lamanites to come out against them to battle; or that they might by some means flatter them out of their strongholds, that they might gain advantage over them and take again the city of Mulek.

And it came to pass they sent embassies to the army of the Lamanites, which protected the city of Mulek, to their leader, whose name was Jacob, desiring him that he would come out with his armies to meet them upon the plains between the two cities. But behold, Jacob, who was a Zoramite, would not come out with his army to meet them upon the plains.

And it came to pass that Moroni, having no hopes of meeting them upon fair grounds, therefore, he resolved upon a plan that he might decoy the Lamanites out of their strongholds.

Therefore he caused that Teancum should take a small number of men and march down near the seashore; and Moroni and his army, by night, marched in the wilderness, on the west of the city Mulek; and thus, on the morrow, when the guards of the Lamanites had discovered Teancum, they ran and told it unto Jacob, their leader.



- 23 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों की सेना टियंकम पर आक्रमण करने के लिए आगे आई, उनकी संख्या को ध्यान में रखते हुए, टियंकम पर विजय प्राप्त करने के इरादे से क्योंकि उसके लोगों की संख्या कम थी। और जैसे ही टियंकम ने लमनाइयों की सेना को अपने सामने आते देखा तो वह उत्तर दिशा में समुद्रतट की तरफ पीछे हटने लगा।
- 24 और ऐसा हुआ कि जब लमनाइयों ने देखा कि वह भागने लगा, तो उनमें साहस आया और उन्होंने जोश से उनका पीछा किया। और जब इस प्रकार टियंकम उन लमनाइयों को अपने पीछे भगा रहा था जो व्यर्थ में उनका पीछा कर रहे थे, देखो, मोरोनी ने अपनी सेना को आज्ञा दी कि वे नगर में घुस जाएं और उसे अपने अधिकार में ले लें।
- 25 और उन्होंने वैसा ही किया, और उन सबको ढेर कर दिया जो नगर की सुरक्षा के लिए तैनात थे, हां, उन सबको जिन्होंने युद्ध के अपने हथियारों को नीचे नहीं रखा।
- 26 और इस प्रकार मोरोनी ने अपनी सेना के एक हिस्से के साथ मूलक नगर पर अधिकार कर लिया, जब कि वह अपने बाकी बचे हुए लोगों को साथ लेकर लमनाइयों का सामना करने गया जब वे टियंकम का पीछा करने के बाद वापस आएंगे।
- 27 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों ने टियंकम का पीछा तब तक किया जब तक कि वे संपन्न प्रदेश के नजदीक न पहुंच गए, और तब उनका सामना लेही और उसकी छोटी सी सेना के साथ हुआ, जो संपन्न प्रदेश की सुरक्षा के लिए तैनात थी।
- 28 और अब देखो, जब लमनाइयों के मुख्य सेनापतियों ने देखा कि लेही अपनी सेना के साथ उन पर आक्रमण करने आ रहा है तो वे अत्याधिक उलझन में भाग गए, कहीं ऐसा न हो कि मूलक नगर में प्रवेश करने से पहले ही लेही उन्हें पकड़ ले; क्योंकि अधिक दौड़ने-भागने के कारण वे थक गए थे, परन्तु लेही के लोग थके हुए नहीं थे।
- 29 अब लमनाइयों को नहीं पता था कि मोरोनी अपनी सेना के साथ उनके पीछे ही था; और उन्हें केवल लेही और उसके लोगों का डर था।
- 30 अब लेही उनके पास तब तक नहीं जाना चाहता था जब तक कि उनका सामना मोरोनी और उसकी सेना से नहीं हो जाता।

And it came to pass that the armies of the Lamanites did march forth against Teancum, supposing by their numbers to overpower Teancum because of the smallness of his numbers. And as Teancum saw the armies of the Lamanites coming out against him he began to retreat down by the seashore, northward.

And it came to pass that when the Lamanites saw that he began to flee, they took courage and pursued them with vigor. And while Teancum was thus leading away the Lamanites who were pursuing them in vain, behold, Moroni commanded that a part of his army who were with him should march forth into the city, and take possession of it.

And thus they did, and slew all those who had been left to protect the city, yea, all those who would not yield up their weapons of war.

And thus Moroni had obtained possession of the city Mulek with a part of his army, while he marched with the remainder to meet the Lamanites when they should return from the pursuit of Teancum.

And it came to pass that the Lamanites did pursue Teancum until they came near the city Bountiful, and then they were met by Lehi and a small army, which had been left to protect the city Bountiful.

And now behold, when the chief captains of the Lamanites had beheld Lehi with his army coming against them, they fled in much confusion, lest perhaps they should not obtain the city Mulek before Lehi should overtake them; for they were wearied because of their march, and the men of Lehi were fresh.

Now the Lamanites did not know that Moroni had been in their rear with his army; and all they feared was Lehi and his men.

Now Lehi was not desirous to overtake them till they should meet Moroni and his army.

- 31 और ऐसा हुआ कि लमनाई वापस जाते इससे पहले ही नफाइयों ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया, एक तरफ से मोरोनी के लोगों ने, और दूसरी तरफ से लेही के लोगों ने, जिनमें से कोई भी थका हुआ नहीं था और हर कोई जोश से भरा हुआ था; परन्तु अधिक दौड़ने-भागने के कारण लमनाई थके हुए थे ।
- 32 और मोरोनी ने अपने लोगों को आज्ञा दी कि वे उन्हें तब तक मारते रहें जब कि वे अपने युद्ध के हथियारों को उन्हें सौंप न दें ।
- 33 और ऐसा हुआ कि याकूब जो उनका सेनापति, और एक जोरामाई भी था, एक अजेय प्रवृत्ति लाते हुए, मोरोनी के विरुद्ध अत्याधिक क्रोध में उसने लमनाइयों को युद्ध करने के लिए प्रेरित किया ।
- 34 मोरोनी जो कि अपने मार्ग पर था, इसलिए याकूब उन्हें मार देना चाहता था और मूलक के नगर जानेवाले उसके मार्ग को काटकर रोक देना चाहता था । परन्तु देखो, मोरोनी और उसके लोग अधिक शक्तिशाली थे; इसलिए उन्होंने लमनाइयों को ऐसा करने का कोई भी तरीका नहीं अपनाने दिया ।
- 35 और ऐसा हुआ कि अत्याधिक क्रोध में उन्होंने दोनों हाथों से लड़ाई की; और दोनों तरफ से कई लोग मारे गए; हां, और मोरोनी घायल हुआ और याकूब मारा गया ।
- 36 और लेही ने अपने शक्तिशाली लोगों के साथ तीव्र गति से उन पर पीछे से आक्रमण किया, कि पिछले हिस्से में लड़ रहे लमनाइयों ने युद्ध के अपने हथियारों को सौंप दिया, अत्याधिक उलझन में पड़ते हुए, और नहीं जानते थे कि उन्हें किस तरफ जाना है या कहां से प्रहार करना है ।
- 37 अब उनकी उलझन को देखते हुए, मोरोनी ने उनसे कहा: यदि तुम युद्ध के अपने हथियारों को सौंप दोगे, तो देखो हम तुम्हारा लहू बहाना बंद कर देंगे ।
- 38 और ऐसा हुआ कि जब लमनाइयों ने इन बातों को सुना तो उनके बचे हुए सभी मुख्य सेनापति आगे आए और युद्ध के अपने हथियारों को मोरोनी के पैरों में डाल दिया, और उन्होंने अपने लोगों को भी ऐसा ही करने की आज्ञा दी ।
- 39 परन्तु देखो, उनमें से कई थे जिन्होंने ऐसा नहीं किया; और जिन्होंने अपनी तलवारों को नहीं सौंपा उन्हें पकड़कर बांध दिया गया, और उनसे उनके हथियार छीन लिए गए, और उन्हें विवश किया गया कि वे अपने भाइयों के साथ संपन्न प्रदेश की ओर आगे बढ़ें ।

And it came to pass that before the Lamanites had retreated far they were surrounded by the Nephites, by the men of Moroni on one hand, and the men of Lehi on the other, all of whom were fresh and full of strength; but the Lamanites were wearied because of their long march.

And Moroni commanded his men that they should fall upon them until they had given up their weapons of war.

And it came to pass that Jacob, being their leader, being also a Zoramite, and having an unconquerable spirit, he led the Lamanites forth to battle with exceeding fury against Moroni.

Moroni being in their course of march, therefore Jacob was determined to slay them and cut his way through to the city of Mulek. But behold, Moroni and his men were more powerful; therefore they did not give way before the Lamanites.

And it came to pass that they fought on both hands with exceeding fury; and there were many slain on both sides; yea, and Moroni was wounded and Jacob was killed.

And Lehi pressed upon their rear with such fury with his strong men, that the Lamanites in the rear delivered up their weapons of war; and the remainder of them, being much confused, knew not whither to go or to strike.

Now Moroni seeing their confusion, he said unto them: If ye will bring forth your weapons of war and deliver them up, behold we will forbear shedding your blood.

And it came to pass that when the Lamanites had heard these words, their chief captains, all those who were not slain, came forth and threw down their weapons of war at the feet of Moroni, and also commanded their men that they should do the same.

But behold, there were many that would not; and those who would not deliver up their swords were taken and bound, and their weapons of war were taken from them, and they were compelled to march with their brethren forth into the land Bountiful.

40 और अब मारे गए लोगों की संख्या से बंदी बनाए गए लोगों की संख्या अधिक थी, हां, दोनों तरफ के मारे गए लोगों से उनकी संख्या अधिक थी ।

And now the number of prisoners who were taken exceeded more than the number of those who had been slain, yea, more than those who had been slain on both sides.

## अलमा 53

- 1 और ऐसा हुआ कि उन्होंने लमनाई बंदियों पर रक्षक नियुक्त कर दिए, और उन्हें बाध्य किया कि वे जाकर अपने मृतकों को दफनाएं, हां, और नफाइयों के उन मृतकों को भी जिन्हें मार दिया गया था; जब वे लोग इस काम को कर रहे होंगे तब उन पर निगरानी के लिए मोरोनी ने रक्षकों को नियुक्त किया ।
- 2 और मोरोनी लेही के साथ मूलक के नगर चला गया, और नगर पर अधिकार कर लिया और उसे लेही को सौंप दिया । अब देखो, लेही वही व्यक्ति था जो ज्यादातर युद्ध में मोरोनी के साथ था; और वह व्यक्ति मोरोनी के समान था, और उन्होंने एक दूसरे की सुरक्षा में आनन्द मनाया; हां, वे एक दूसरे के प्रिय थे, और नफी के सारे लोगों के भी प्रिय थे ।
- 3 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों द्वारा अपने मृतकों और नफाइयों के मृतकों को भी दफनाने के पश्चात, उन्हें वापस संपन्न प्रदेश ले जाया गया; और मोरोनी की आज्ञानुसार टियंकम ने प्रदेश, या संपन्न प्रदेश के चारों ओर उनसे खाई की खुदाई का काम करवाना आरंभ किया ।
- 4 और उसने उनसे उस खाई के भीतर किनारे पर सुरक्षा के लिए लकड़ी की ऊंची दीवार बनवाई और उनसे खाई से मिट्टी निकलवाकर लकड़ी की दीवार के सामने फिंकवाया; और इस प्रकार उन्होंने लमनाइयों से तब तक काम करवाया जब तक कि उन्होंने संपन्न प्रदेश के चारों तरफ एक ऊंची, लकड़ी और मिट्टी से एक मजबूत दीवार न खड़ी कर दी ।
- 5 और इसके पश्चात यह नगर एक मजबूत किला बना रहा; और इस नगर में उन्होंने लमनाई बंदियों पर नजर रखी; हां, यहां तक कि उस दीवार के भीतर रह रहे बंदियों पर भी जिसे उन्होंने उन्ही के हाथों द्वारा बनवाया था । अब मोरोनी ने लमनाइयों को काम करने के लिए विवश किया, क्योंकि काम करते समय उन पर नजर रखना आसान था; और वह चाहता था कि उसके साथ उसकी पूरी सेना हो जब वह लमनाइयों पर आक्रमण करे ।
- 6 और ऐसा हुआ कि इस प्रकार मोरोनी ने लमनाइयों की महान सेनाओं में से एक पर विजय प्राप्त कर ली, और मूलक के नगर पर अधिकार कर लिया, जो नफी के प्रदेश में लमनाइयों का एक मजबूत गढ़ था; और इस प्रकार उसने अपने बंदियों को रखने के लिए भी एक किले का निर्माण किया ।

## Alma 53

And it came to pass that they did set guards over the prisoners of the Lamanites, and did compel them to go forth and bury their dead, yea, and also the dead of the Nephites who were slain; and Moroni placed men over them to guard them while they should perform their labors.

And Moroni went to the city of Mulek with Lehi, and took command of the city and gave it unto Lehi. Now behold, this Lehi was a man who had been with Moroni in the more part of all his battles; and he was a man like unto Moroni, and they rejoiced in each other's safety; yea, they were beloved by each other, and also beloved by all the people of Nephi.

And it came to pass that after the Lamanites had finished burying their dead and also the dead of the Nephites, they were marched back into the land Bountiful; and Teancum, by the orders of Moroni, caused that they should commence laboring in digging a ditch round about the land, or the city, Bountiful.

And he caused that they should build a breastwork of timbers upon the inner bank of the ditch; and they cast up dirt out of the ditch against the breastwork of timbers; and thus they did cause the Lamanites to labor until they had encircled the city of Bountiful round about with a strong wall of timbers and earth, to an exceeding height.

And this city became an exceeding stronghold ever after; and in this city they did guard the prisoners of the Lamanites; yea, even within a wall which they had caused them to build with their own hands. Now Moroni was compelled to cause the Lamanites to labor, because it was easy to guard them while at their labor; and he desired all his forces when he should make an attack upon the Lamanites.

And it came to pass that Moroni had thus gained a victory over one of the greatest of the armies of the Lamanites, and had obtained possession of the city of Mulek, which was one of the strongest holds of the Lamanites in the land of Nephi; and thus he had also built a stronghold to retain his prisoners.

- 7 और ऐसा हुआ कि उस वर्ष उसने लमनाइयों से युद्ध करने का और कोई प्रयास नहीं किया, परन्तु उसने युद्ध की तैयारी में अपने लोगों को लगाया, हां, और लमनाइयों से अपने किलों की सुरक्षा में, हां, और अपनी स्त्रियों और अपने बच्चों को आकाल और कष्टों से बचाने में और अपनी सेना के लिए भोजन उपलब्ध कराने में अपने लोगों का उपयोग किया ।
- 8 और ऐसा हुआ कि पश्चिमी समुद्रतट के दक्षिण में, मोरोनी की अनुपस्थिति में नफाइयों के बीच कुछ षडयंत्र होने से उनमें मतभेद हो गया, जिसके कारण लमनाइयों की सेना ने नफाइयों का फायदा उठाया, हां, इतना अधिक कि उन्होंने प्रदेश के उस हिस्से के कई नगरों को अपने कब्जे में ले लिया ।
- 9 और इस प्रकार उनके बीच अधर्म के कारण, हां, उनके बीच हो रहे मतभेद और षडयंत्रों के कारण वे खतरनाक परिस्थितियों में पड़ गए ।
- 10 और अब देखो, मैं अम्मोन के लोगों के संबंध में कुछ कहना चाहता हूं, जो कि प्रारंभ में लमनाई थे; परन्तु अम्मोन और उसके भाइयों द्वारा, या परमेश्वर के सामर्थ्य और वचन द्वारा, वे प्रभु में परिवर्तित हुए थे; और उन्हें जराहेमला के प्रदेश लाया गया था, और तभी से उन्हें नफाइयों द्वारा सुरक्षा प्राप्त थी ।
- 11 और वे अपनी शपथ के कारण अपने भाइयों के विरुद्ध हथियार नहीं उठाते थे; क्योंकि उन्होंने शपथ ली थी कि वे कभी भी और रक्तपात नहीं करेंगे; और अपनी शपथ के अनुसार वे नष्ट हो गए होते; हां, यदि उन पर अम्मोन और उसके भाइयों का अत्याधिक प्रेम न होता तो वे अपने भाइयों के हाथों में पड़ चुके होते ।
- 12 और इसलिए उन्हें जराहेमला के प्रदेश लाया गया था; और तभी से उन्हें नफाइयों द्वारा सुरक्षा प्राप्त थी ।
- 13 परन्तु ऐसा हुआ कि जब उन्होंने खतरा देखा, और उन परेशानियों और कष्टों को देखा जिसे नफाई उनके लिए सहते थे, तो वे करुणा से भर गए और अपने देश की रक्षा के लिए वे हथियार उठाना चाहते थे ।

And it came to pass that he did no more attempt a battle with the Lamanites in that year, but he did employ his men in preparing for war, yea, and in making fortifications to guard against the Lamanites, yea, and also delivering their women and their children from famine and affliction, and providing food for their armies.

And now it came to pass that the armies of the Lamanites, on the west sea, south, while in the absence of Moroni on account of some intrigue amongst the Nephites, which caused dissensions amongst them, had gained some ground over the Nephites, yea, insomuch that they had obtained possession of a number of their cities in that part of the land.

And thus because of iniquity amongst themselves, yea, because of dissensions and intrigue among themselves they were placed in the most dangerous circumstances.

And now behold, I have somewhat to say concerning the people of Ammon, who, in the beginning, were Lamanites; but by Ammon and his brethren, or rather by the power and word of God, they had been converted unto the Lord; and they had been brought down into the land of Zarahemla, and had ever since been protected by the Nephites.

And because of their oath they had been kept from taking up arms against their brethren; for they had taken an oath that they never would shed blood more; and according to their oath they would have perished; yea, they would have suffered themselves to have fallen into the hands of their brethren, had it not been for the pity and the exceeding love which Ammon and his brethren had had for them.

And for this cause they were brought down into the land of Zarahemla; and they ever had been protected by the Nephites.

But it came to pass that when they saw the danger, and the many afflictions and tribulations which the Nephites bore for them, they were moved with compassion and were desirous to take up arms in the defence of their country.

- 14 परन्तु देखो, जैसे ही वे युद्ध के अपने हथियार उठाना चाहते थे, हिलामन और उसके भाइयों के अनुनय के कारण वे विवश हो गए, क्योंकि वे अपनी ली हुई शपथ को तोड़नेवाले थे ।
- 15 और हिलामन डर गया कि ऐसा करने से वे अपनी आत्मा खो देंगे; इसलिए जिन लोगों ने इस अनुबंध में प्रवेश किया था, इस समय की अपनी खतरनाक परिस्थितियों में भी, वे अपने भाइयों को कष्ट में देखने पर विवश हुए थे ।
- 16 परन्तु देखो, ऐसा हुआ कि उनके कई बेटे थे, जिन्होंने अनुबंध में प्रवेश नहीं किया था कि वे अपने शत्रुओं के विरुद्ध आत्मरक्षा में युद्ध के हथियार नहीं उठाएंगे; इसलिए इस समय पर उन्होंने स्वयं को एकत्रित किया, और जितना हो सकता था उतने लोगों ने हथियार उठाया, और उन्होंने स्वयं को नफाई कहा ।
- 17 और उन्होंने नफाइयों की स्वतंत्रता के लिए लड़ने का अनुबंध बनाया, हां, अपने प्राणों की आहुति देकर अपने प्रदेश की रक्षा के लिए; हां, यहां तक कि उन्होंने अनुबंध बनाया कि वे कभी भी अपनी स्वतंत्रता नहीं खोएंगे, परन्तु नफाइयों की रक्षा के लिए और स्वयं को दासता से बाहर निकालने के लिए वे हर हाल में लड़ेंगे ।
- 18 अब देखो, ये दो हजार युवा लोग थे, जिन्होंने इस अनुबंध में प्रवेश किया था और अपने देश की रक्षा के लिए युद्ध के अपने हथियार उठाए थे ।
- 19 और अब देखो, इनके कारण अब तक नफाइयों को कभी भी नुकसान नहीं हुआ था, अब इस समय पर वे भारी सहायक सिद्ध हुए; क्योंकि उन्होंने युद्ध के अपने हथियार उठाए, और वे चाहते थे कि हिलामन उनका मार्गदर्शक बने ।
- 20 और वे सभी किशोर युवक थे, और धैर्य में, और बल और गतिविध में भी वे अत्याधिक साहसी थी; परन्तु देखो, यह सब कुछ नहीं था—ये वे लोग थे जो हर समय पर, किसी भी प्रकार के सौंपे गए कार्य में सच्चे रहते थे ।
- 21 हां, वे सच्चे और सचेत लोग थे, क्योंकि उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना और उसके सामने सीधे मार्ग पर चलना सीखाया गया था ।
- 22 और अब ऐसा हुआ कि पश्चिमी समुद्रतट से लगे दक्षिणी प्रदेश की सीमाओं पर रह रहे लोगों की सहायता के लिए, हिलामन अपने दो हजार किशोर सिपाहियों के आगे-आगे चला ।
- 23 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का अठ्ठाइसवां वर्ष समाप्त हुआ ।

But behold, as they were about to take their weapons of war, they were overpowered by the persuasions of Helaman and his brethren, for they were about to break the oath which they had made.

And Helaman feared lest by so doing they should lose their souls; therefore all those who had entered into this covenant were compelled to behold their brethren wade through their afflictions, in their dangerous circumstances at this time.

But behold, it came to pass they had many sons, who had not entered into a covenant that they would not take their weapons of war to defend themselves against their enemies; therefore they did assemble themselves together at this time, as many as were able to take up arms, and they called themselves Nephites.

And they entered into a covenant to fight for the liberty of the Nephites, yea, to protect the land unto the laying down of their lives; yea, even they covenanted that they never would give up their liberty, but they would fight in all cases to protect the Nephites and themselves from bondage.

Now behold, there were two thousand of those young men, who entered into this covenant and took their weapons of war to defend their country.

And now behold, as they never had hitherto been a disadvantage to the Nephites, they became now at this period of time also a great support; for they took their weapons of war, and they would that Helaman should be their leader.

And they were all young men, and they were exceedingly valiant for courage, and also for strength and activity; but behold, this was not all—they were men who were true at all times in whatsoever thing they were entrusted.

Yea, they were men of truth and soberness, for they had been taught to keep the commandments of God and to walk uprightly before him.

And now it came to pass that Helaman did march at the head of his two thousand stripling soldiers, to the support of the people in the borders of the land on the south by the west sea.

And thus ended the twenty and eighth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

## अलमा 54

- 1 और अब ऐसा हुआ कि न्यायियों के उनतीसवें वर्ष के आरंभ में, अम्मोरोन ने मोरोनी को संदेश भेजा कि वह बंदियों की अदला-बदली करेगा ।
- 2 और ऐसा हुआ कि इस निवेदन पर मोरोनी अत्याधिक आनंदित हुआ, क्योंकि वह चाहता था कि जिन सामग्रियों को वह लमनाई बंदियों को प्रदान कराता है उसे वह अपने लोगों को दे; और वह अपने उन लोगों से अपनी सेना को भी मजबूत करना चाहता था ।
- 3 अब लमनाइयों ने कई स्त्रियों और बच्चों को बंदी बनाया था, और मोरोनी के सारे बंदियों में एक भी स्त्री और बच्चा नहीं था, या उन लोगों में जिन्हें मोरोनी ने बंदी बनाया था; इसलिए मोरोनी ने दांव-पेच किया जिससे जितना संभव हो सके उतना लमनाइयों से नफाई बंदियों को वापस ले सके ।
- 4 इसलिए उसने एक पत्र लिखा, और अम्मोरोन के उसी सेवक द्वारा उसे भिजवाया जो मोरोनी के लिए पत्र लाया था । अब ये वे शब्द हैं जिसे उसने अम्मोरोन को लिखा:
- 5 देखो, अम्मोरोन, मैंने इस युद्ध से संबंधित तुम्हें कुछ लिखा था जिसे तुमने मेरे लोगों के विरुद्ध शुरू किया है, या इसकी बजाय ये कहें कि जिसे तुम्हारे भाई ने उनके विरुद्ध शुरू किया था, और जिसे तुम उसकी मृत्यु के पश्चात भी जारी रखना चाहते हो ।
- 6 देखो, मैं तुम्हें परमेश्वर के न्याय, और उसके ईश्वरीय क्रोध की तलवार के संबंध में कुछ बताना चाहता हूं, कि यदि तुम पश्चाताप नहीं करते हो और अपनी सेना को हमारे प्रदेश से, या अपने कब्जे में लिए हुए उस प्रदेश से जो कि नफी का प्रदेश है, वहां से नहीं बुलाते हो तो वह तुम्हारे सिर पर लटक रही है ।
- 7 हां, मैं तुम्हें ये बातें बताऊंगा यदि तुम उन्हें सुनने में सक्षम हो; हां, मैं तुम्हें उस भयावह नरक के बारे में बताऊंगा जो तुम्हारे और तुम्हारे भाई के समान हत्यारे लोगों का आसरा है, इससे बचने के लिए केवल तुम्हें पश्चाताप करना होगा और अपने हत्यावाले इरादे को छोड़ना होगा, और अपनी सेनाओं के साथ अपने प्रदेशों में लौटना होगा ।
- 8 परन्तु जैसा कि तुमने इन बातों को एक बार नकारा है, और प्रभु के लोगों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी है, तो मैं तुमसे आशा करता हूं कि तुम ऐसा फिर से कर सकते हो ।

## Alma 54

And now it came to pass in the commencement of the twenty and ninth year of the judges, that Ammoron sent unto Moroni desiring that he would exchange prisoners.

And it came to pass that Moroni felt to rejoice exceedingly at this request, for he desired the provisions which were imparted for the support of the Lamanite prisoners for the support of his own people; and he also desired his own people for the strengthening of his army.

Now the Lamanites had taken many women and children, and there was not a woman nor a child among all the prisoners of Moroni, or the prisoners whom Moroni had taken; therefore Moroni resolved upon a stratagem to obtain as many prisoners of the Nephites from the Lamanites as it were possible.

Therefore he wrote an epistle, and sent it by the servant of Ammoron, the same who had brought an epistle to Moroni. Now these are the words which he wrote unto Ammoron, saying:

Behold, Ammoron, I have written unto you somewhat concerning this war which ye have waged against my people, or rather which thy brother hath waged against them, and which ye are still determined to carry on after his death.

Behold, I would tell you somewhat concerning the justice of God, and the sword of his almighty wrath, which doth hang over you except ye repent and withdraw your armies into your own lands, or the land of your possessions, which is the land of Nephi.

Yea, I would tell you these things if ye were capable of hearkening unto them; yea, I would tell you concerning that awful hell that awaits to receive such murderers as thou and thy brother have been, except ye repent and withdraw your murderous purposes, and return with your armies to your own lands.

But as ye have once rejected these things, and have fought against the people of the Lord, even so I may expect you will do it again.

- 9 और अब देखो, हम तुम्हारा सामना करने के लिए तैयार हैं; हां, यदि तुम अपने इरादे नहीं त्यागते हो तो देखो, तुम उस परमेश्वर के क्रोध द्वारा मिट्टी में मिला दिए जाओगे जिसे तुमने ग्रहण करने से अस्वीकार किया था, यहां तक कि तुम्हारा विनाश भी हो सकता है ।
- 10 परन्तु, जैसे कि प्रभु जीवित है, हमारी सेना तुम पर आक्रमण करेगी यदि तुम पीछे नहीं हटते हो, और शीघ्र ही तुम्हारा सामना मृत्यु से होगा, क्योंकि हम अपने नगर और अपने प्रदेश को अपने अधिकार में रखेंगे; हां, और हम अपने धर्म और परमेश्वर के काम को बनाए रखेंगे ।
- 11 परन्तु देखो, मुझे ऐसा लग रहा है कि इन बातों के संबंध में मैं तुमसे व्यर्थ ही बात कर रहा हूँ; या मुझे ऐसा लग रहा है कि तुम नरक की संतान हो; इसलिए मैं यह कहने के द्वारा अपना पत्र समाप्त करूँगा कि मैं बंदियों की अदला-बदली नहीं करूँगा, मैं ऐसा केवल इस शर्त पर करूँगा कि तुम अपने एक बंदी के बदले में एक मनुष्य और उसकी पत्नी और उसके बच्चे को वापस करोगे; यदि तुम इस बात को मानोगे तो मैं अदला-बदली करूँगा ।
- 12 और देखो, यदि तुम ऐसा नहीं करते हो, मैं अपनी सेना के साथ तुम पर आक्रमण करूँगा; हां, यहां तक कि मैं अपनी स्त्रियों और बच्चों को भी अस्त्र-शस्त्र दूँगा, और तुम पर आक्रमण करूँगा, और मैं तुम्हारा पीछा तुम्हारे प्रदेश तक करूँगा जो कि हमारी विरासत की धरती है; हां, और लहू के बदले लहू बहाया जाएगा, हां, प्राण के बदले प्राण; और मैं तुम्हारे साथ तब तक लड़ूँगा जब तक कि धरती से तुम्हारा नामोनिशान समाप्त नहीं हो जाता ।
- 13 देखो, मैं क्रोध में हूँ, और मेरे लोग भी; तुमने हमें मारने का प्रयास किया है, और हमने केवल अपने आपको बचाया है । परन्तु देखो, यदि तुम हमें नष्ट करने का और प्रयास करोगे तो हम भी तुम्हें नष्ट करने का प्रयास करेंगे; हां, और हम हमारे प्रदेश को, अपने विरासत की धरती को प्राप्त करने का प्रयास करेंगे ।
- 14 अब मैं अपना पत्र समाप्त करता हूँ । मैं मोरोनी हूँ; मैं नफाई लोगों का मार्गदर्शक हूँ ।
- 15 ऐसा हुआ कि अम्मोरोन ने जब इस पत्र को प्राप्त किया, तो क्रोधित हुआ; और उसने मोरोनी को एक दूसरा पत्र लिखा, और ये वे शब्द हैं जिसे उसने लिखा:
- 16 मैं लमनाइयों का राजा, अम्मोरोन हूँ; मैं उस अमालिकिया का भाई हूँ जिसकी तुमने हत्या की है । देखो, मैं उसके लहू का प्रतिशोध लूँगा, हां, और मैं अपनी सेना के साथ तुम पर आक्रमण करूँगा, क्योंकि मैं तुम्हारी धमकियों से नहीं डरता हूँ ।

And now behold, we are prepared to receive you; yea, and except you withdraw your purposes, behold, ye will pull down the wrath of that God whom you have rejected upon you, even to your utter destruction.

But, as the Lord liveth, our armies shall come upon you except ye withdraw, and ye shall soon be visited with death, for we will retain our cities and our lands; yea, and we will maintain our religion and the cause of our God.

But behold, it supposeth me that I talk to you concerning these things in vain; or it supposeth me that thou art a child of hell; therefore I will close my epistle by telling you that I will not exchange prisoners, save it be on conditions that ye will deliver up a man and his wife and his children, for one prisoner; if this be the case that ye will do it, I will exchange.

And behold, if ye do not this, I will come against you with my armies; yea, even I will arm my women and my children, and I will come against you, and I will follow you even into your own land, which is the land of our first inheritance; yea, and it shall be blood for blood, yea, life for life; and I will give you battle even until you are destroyed from off the face of the earth.

Behold, I am in my anger, and also my people; ye have sought to murder us, and we have only sought to defend ourselves. But behold, if ye seek to destroy us more we will seek to destroy you; yea, and we will seek our land, the land of our first inheritance.

Now I close my epistle. I am Moroni; I am a leader of the people of the Nephites.

Now it came to pass that Ammoron, when he had received this epistle, was angry; and he wrote another epistle unto Moroni, and these are the words which he wrote, saying:

I am Ammoron, the king of the Lamanites; I am the brother of Amalickiah whom ye have murdered. Behold, I will avenge his blood upon you, yea, and I will come upon you with my armies for I fear not your threatenings.



- 17 क्योंकि देखो, तुम्हारे पूर्वजों ने अपने भाइयों के साथ गलत किया है, इतना अधिक कि उन्होंने उनके राज्य का अधिकार छीन लिया जब कि वास्तव में वह उनका अधिकार था ।
- 18 और अब देखो, यदि तुम अपना हथियार डाल दोगे, और अपने आप पर उन लोगों को शासन करने दोगे जो वास्तव में शासन करने के अधिकारी हैं, तो मैं अपने लोगों से हथियार डालने को कहूंगा और फिर कोई युद्ध नहीं होगा ।
- 19 देखो, तुमने मुझे और मेरे लोगों को बहुत सी धमकियां दी है; परन्तु देखो, हम तुम्हारी धमकियों से डरते नहीं हैं ।
- 20 फिर भी, मैं प्रसन्नता से बंदियों की अदला-बदली के तुम्हारे निवेदन को स्वीकार करूंगा, ताकि मैं अपनी भोजन सामग्रियों को लड़ाई लड़ रहे अपने सैनिकों के लिए बचाकर रख सकूँ; और फिर हम कभी भी समाप्त न होनेवाला युद्ध जारी रखेंगे, जिसमें या तो हम नफाड़्यों पर अपना अधिकार कर लेंगे या उन्हें सदा के लिए खत्म कर देंगे ।
- 21 और उस परमेश्वर के संबंध में जिसे तुमने कहा है कि हमने उसे त्याग दिया है, देखो, हम ऐसे किसी भी अस्तित्व को नहीं जानते हैं; न ही तुम जानते हो; परन्तु यदि ऐसा है कि इस प्रकार का कोई अस्तित्व है तो हम नहीं जानते हैं परन्तु उसी ने हमें और तुम्हें बनाया है ।
- 22 और यदि ऐसा है कि शैतान और नरक है, देखो, क्या वह तुम्हें वहां मेरे भाई के साथ रहने के लिए नहीं भेजेगा जिसकी तुमने हत्या की है, जिसे तुमने संकेत दिया है कि वह उस स्थान पर चला गया है ? परन्तु देखो इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता ।
- 23 मैं अम्मोरोन हूँ, और जोराम का एक वंशज, जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने दबाव डालकर यरूशलेम से बाहर निकाल दिया था ।
- 24 और अब देखो, मैं एक निर्भिक लमनाई हूँ; देखो, यह युद्ध उनके द्वारा की गई गलतियों के लिए है, और शासन करने के उनके अधिकार को बनाए रखने के लिए और प्राप्त करने के लिए; और मैं मोरोनी के लिए अपना पत्र समाप्त करता हूँ ।

For behold, your fathers did wrong their brethren, insomuch that they did rob them of their right to the government when it rightly belonged unto them.

And now behold, if ye will lay down your arms, and subject yourselves to be governed by those to whom the government doth rightly belong, then will I cause that my people shall lay down their weapons and shall be at war no more.

Behold, ye have breathed out many threatenings against me and my people; but behold, we fear not your threatenings.

Nevertheless, I will grant to exchange prisoners according to your request, gladly, that I may preserve my food for my men of war; and we will wage a war which shall be eternal, either to the subjecting the Nephites to our authority or to their eternal extinction.

And as concerning that God whom ye say we have rejected, behold, we know not such a being; neither do ye; but if it so be that there is such a being, we know not but that he hath made us as well as you.

And if it so be that there is a devil and a hell, behold will he not send you there to dwell with my brother whom ye have murdered, whom ye have hinted that he hath gone to such a place? But behold these things matter not.

I am Ammoron, and a descendant of Zoram, whom your fathers pressed and brought out of Jerusalem.

And behold now, I am a bold Lamanite; behold, this war hath been waged to avenge their wrongs, and to maintain and to obtain their rights to the government; and I close my epistle to Moroni.

## अलमा 55

- 1 अब ऐसा हुआ कि जब मोरोनी ने इस पत्र को प्राप्त किया तो वह और क्रोधित हुआ, क्योंकि वह जानता था कि अम्मोरोन को स्वयं के धोखे का पूरा ज्ञान था; हां, वह जानता था कि अम्मोरोन जानता था नफी के लोगों के विरुद्ध युद्ध करने का केवल यही कारण नहीं था ।
- 2 और उसने कहा: देखो, जैसा कि मैंने अपने पत्र में लिखा है, मैं बंदियों की अदला-बदली तब तक नहीं करूंगा जब तक कि अम्मोरोन अपने इरादे को त्याग नहीं देता; क्योंकि जितना उसने अधिकार कर लिया है उससे अधिक मैं उसे अब और अधिकार नहीं करने दूंगा ।
- 3 देखो, मैं उस स्थान को जानता हूँ जहां पर लमनाई मेरे लोगों को बंदी बनाकर उन पर नजर रखे हुए हैं; और जैसा कि मेरे पत्र पर लिखी मेरी बातों को अम्मोरोन नहीं मानेगा, देखो, मैं उसे अपने कहे अनुसार दूंगा; हां, मैं उन्हें तब तक मृत्यु देता रहूंगा जब तक कि वे शांति स्थापित करने का निवेदन नहीं करेंगे ।
- 4 और ऐसा हुआ कि जब मोरोनी ने इन बातों को कह लिया, उसने अपने लोगों में खोजबीन शुरू कर दी, ताकि वह उनमें किसी ऐसे व्यक्ति को खोज सके जो उनके बीच लमान का एक वंशज हो ।
- 5 और ऐसा हुआ कि उन्होंने एक व्यक्ति को खोज लिया, जिसका नाम लमान था; और वह उस राजा के सेवकों में से एक था जिसकी हत्या अमालिकिया द्वारा हुई थी ।
- 6 अब मोरोनी ने लमान और अपने कुछ लोगों को उन रक्षकों के पास भेजा जो नफाइयों पर नजर रखे हुए थे ।
- 7 अब गिद नगर में नफाइयों पर नजर रखी गई थी; इसलिए मोरोनी ने लमान को नियुक्त किया और उसके साथ कुछ लोगों को भेजा ।
- 8 और जब शाम हुई तब लमान नफाइयों पर नजर रखे हुए रक्षकों के पास गया, और देखो, उन्होंने उस पर पत्थरवाह किया; परन्तु उसने उनसे कहा: डरो नहीं; देखो, मैं एक लमनाई हूँ । देखो, हम नफाइयों से बचकर आये हैं, और वे सो रहे हैं; और देखो हम उनकी मदिरा अपने साथ लाए हैं ।
- 9 अब जब लमनाइयों ने इन बातों को सुना तो उन्होंने खुशी से उनका स्वागत किया; और उन्होंने उससे कहा: हमें अपनी मदिरा दो, ताकि हम पी सकें; हम खुश हैं कि तुम अपने साथ मदिरा लाए हो क्योंकि हम थके हुए हैं ।

## Alma 55

Now it came to pass that when Moroni had received this epistle he was more angry, because he knew that Ammoron had a perfect knowledge of his fraud; yea, he knew that Ammoron knew that it was not a just cause that had caused him to wage a war against the people of Nephi.

And he said: Behold, I will not exchange prisoners with Ammoron save he will withdraw his purpose, as I have stated in my epistle; for I will not grant unto him that he shall have any more power than what he hath got.

Behold, I know the place where the Lamanites do guard my people whom they have taken prisoners; and as Ammoron would not grant unto me mine epistle, behold, I will give unto him according to my words; yea, I will seek death among them until they shall sue for peace.

And now it came to pass that when Moroni had said these words, he caused that a search should be made among his men, that perhaps he might find a man who was a descendant of Laman among them.

And it came to pass that they found one, whose name was Laman; and he was one of the servants of the king who was murdered by Amalickiah.

Now Moroni caused that Laman and a small number of his men should go forth unto the guards who were over the Nephites.

Now the Nephites were guarded in the city of Gid; therefore Moroni appointed Laman and caused that a small number of men should go with him.

And when it was evening Laman went to the guards who were over the Nephites, and behold, they saw him coming and they hailed him; but he saith unto them: Fear not; behold, I am a Lamanite. Behold, we have escaped from the Nephites, and they sleep; and behold we have taken of their wine and brought with us.

Now when the Lamanites heard these words they received him with joy; and they said unto him: Give us of your wine, that we may drink; we are glad that ye have thus taken wine with you for we are weary.

- 10 लमान ने उनसे कहा: चलो इस मदिरा को तब तक अपने आप से दूर रखें जब तक कि हम नफाइयों से युद्ध नहीं कर लेते। परन्तु ऐसा कहने से वे मदिरा पीने के और अधिक इच्छुक हो गए।
- 11 क्योंकि, उन्होंने कहा: हम थके हुए हैं, इसलिए हमें मदिरा पीने दो, और बार-बार इस मदिरा को हम पीएंगे, जो नफाइयों के विरुद्ध लड़ने में हमें बल देगी।
- 12 और लमान ने उनसे कहा: तुम अपनी इच्छानुसार कर सकते हो।
- 13 और ऐसा हुआ कि उन्होंने खूब मदिरा पी; और उसका स्वाद उन्हें अच्छा लगा, इसलिए उन्होंने इसे जी भर कर पिया; और वह तेज थी, उसे तेज ही बनाया गया था।
- 14 और ऐसा हुआ कि उन्होंने पी और वे प्रसन्न हुए, और धीरे-धीरे सभी नशे में धुत्त हुए।
- 15 और जब लमान और उसके लोगों ने देखा कि वे सब नशे में धुत्त हैं, और गहरी नींद में सो गए हैं, तो वे वापस आए और मोरोनी को वह सब कह सुनाया जो हुआ था।
- 16 और अब ऐसा मोरोनी की योजनानुसार हुआ था। और मोरोनी ने अपने लोगों को हथियार से सुसज्जित कर दिया; और वह गिद के नगर गया, जब कि लमनाई गहरी नींद में सो रहे थे और नशे में धुत्त थे, और बंदियों के तरफ युद्ध के हथियार फेंके, इतना अधिक कि उन सबने अस्त्र-शस्त्र धारण कर लिया।
- 17 हां, जब मोरोनी ने उन सारे बंदियों को हथियार से सुसज्जित कर दिया, तो जो स्त्री और बच्चे हथियारों का उपयोग करने में समर्थ थे उन्होंने इसका उपयोग किया; और वह सब कुछ गंभीरतापूर्वक मौन रूप से किया गया था।
- 18 परन्तु यदि उन्होंने लमनाइयों को जगा दिया होता, देखो, वे नशे में धुत्त थे और नफाई उन्हें मार देते।
- 19 परन्तु देखो, मोरोनी ऐसा नहीं चाहता था; हत्या या रक्तपास से उसे प्रसन्नता नहीं होती थी, परन्तु विनाश से अपने लोगों को बचाने में उसे प्रसन्नता होती थी; और इस कारण वह स्वयं पर अन्याय नहीं होने दे सकता था, वह लमनाइयों पर आक्रमण नहीं करना चाहता था और उन्हें उनके नशे की स्थिति में नहीं मारना चाहता था।
- 20 परन्तु उसने अपनी इच्छानुसार फैसला लिया; क्योंकि उसने नफाई लोगों के बंदियों को हथियार से सुसज्जित किया जो नगर की दीवार के भीतर थे, और उन्हें उन हिस्सों पर कब्जा करने का अधिकार दिया जो दीवार के भीतर स्थित थे।

But Laman said unto them: Let us keep of our wine till we go against the Nephites to battle. But this saying only made them more desirous to drink of the wine;

For, said they: We are weary, therefore let us take of the wine, and by and by we shall receive wine for our rations, which will strengthen us to go against the Nephites.

And Laman said unto them: You may do according to your desires.

And it came to pass that they did take of the wine freely; and it was pleasant to their taste, therefore they took of it more freely; and it was strong, having been prepared in its strength.

And it came to pass they did drink and were merry, and by and by they were all drunken.

And now when Laman and his men saw that they were all drunken, and were in a deep sleep, they returned to Moroni and told him all the things that had happened.

And now this was according to the design of Moroni. And Moroni had prepared his men with weapons of war; and he went to the city Gid, while the Lamanites were in a deep sleep and drunken, and cast in weapons of war unto the prisoners, inso-much that they were all armed;

Yea, even to their women, and all those of their children, as many as were able to use a weapon of war, when Moroni had armed all those prisoners; and all those things were done in a profound silence.

But had they awakened the Lamanites, behold they were drunken and the Nephites could have slain them.

But behold, this was not the desire of Moroni; he did not delight in murder or bloodshed, but he delighted in the saving of his people from destruction; and for this cause he might not bring upon him injustice, he would not fall upon the Lamanites and destroy them in their drunkenness.

But he had obtained his desires; for he had armed those prisoners of the Nephites who were within the wall of the city, and had given them power to gain possession of those parts which were within the walls.

- 21 और फिर उसने उन लोगों को जो उसके साथ थे कुछ दूरी बनाने के लिए, और लमनाइयों की सेनाओं को घेर लेने के लिए कहा ।
- 22 अब देखो ऐसा रात के समय में हुआ था, जिससे कि जब लमनाई सुबह में जागे तो देखा कि बाहर से वे नफाइयों द्वारा घिरे हुए हैं, और यह कि उनके बंदी हथियार से सुसज्जित थे ।
- 23 और इस प्रकार उन्होंने देखा कि नफाइयों ने उन पर अधिकार कर लिया था; और इन परिस्थितियों में उन्हें लगा कि उनका नफाइयों से लड़ना उचित नहीं था; इसलिए उनके मुख्य सेनापतियों ने युद्ध के हथियारों की मांग की, और दया की भीख मांगते हुए, उन्होंने उन्हें लाकर नफाइयों के पैरों में डाल दिया ।
- 24 अब देखो, मोरोनी यही तो चाहता था । उसने उन्हें बंदी बना लिया, और नगर पर अधिकार कर लिया, और उन सारे बंदियों को आजाद कर दिया जो नफाई थे; और वे मोरोनी की सेना में भरती हो गए, और उसकी सेना को मजबूत किया ।
- 25 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों से, जिन्हें उसने बंदी बनाया था, गिद नगर के चारों तरफ किलाबंदी को मजबूत करने का काम आरंभ करवाया ।
- 26 और ऐसा हुआ कि जब उसने अपनी इच्छानुसार गिद नगर की किलाबंदी करवा ली, तो अपने बंदियों को संपन्न प्रदेश में भिजवाया; और उसने उस नगर की सुरक्षा अत्याधित मजबूत सैन्यदल से किया ।
- 27 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों के सारे षडयंत्रों के बावजूद उन्होंने ऐसा किया, बंदी बनाए गए उन सारे लोगों को सुरक्षित रखा, और उन सारे नगरों को बचाकर रखा जिन पर उन्होंने फिर से अधिकार किया था ।
- 28 और ऐसा हुआ कि नफाई फिर से विजयी होने लगे, और अपने अधिकारों और अपनी सुविधाओं को पुनः प्राप्त करने लगे ।
- 29 कई बार लमनाइयों ने रात के समय उन्हें घेरना चाहा, परन्तु इन प्रयासों में उन्होंने कई बंदियों को खो दिया ।
- 30 और कई बार उन्होंने नफाइयों को अपनी मदिरा पिलानी चाही, जिससे कि वे उन्हें जहर देकर या मतवाला कर उन्हें खतम कर सकें ।

And then he caused the men who were with him to withdraw a pace from them, and surround the armies of the Lamanites.

Now behold this was done in the night-time, so that when the Lamanites awoke in the morning they beheld that they were surrounded by the Nephites without, and that their prisoners were armed within.

And thus they saw that the Nephites had power over them; and in these circumstances they found that it was not expedient that they should fight with the Nephites; therefore their chief captains demanded their weapons of war, and they brought them forth and cast them at the feet of the Nephites, pleading for mercy.

Now behold, this was the desire of Moroni. He took them prisoners of war, and took possession of the city, and caused that all the prisoners should be liberated, who were Nephites; and they did join the army of Moroni, and were a great strength to his army.

And it came to pass that he did cause the Lamanites, whom he had taken prisoners, that they should commence a labor in strengthening the fortifications round about the city Gid.

And it came to pass that when he had fortified the city Gid, according to his desires, he caused that his prisoners should be taken to the city Bountiful; and he also guarded that city with an exceedingly strong force.

And it came to pass that they did, notwithstanding all the intrigues of the Lamanites, keep and protect all the prisoners whom they had taken, and also maintain all the ground and the advantage which they had retaken.

And it came to pass that the Nephites began again to be victorious, and to reclaim their rights and their privileges.

Many times did the Lamanites attempt to encircle them about by night, but in these attempts they did lose many prisoners.

And many times did they attempt to administer of their wine to the Nephites, that they might destroy them with poison or with drunkenness.

- 31 परन्तु देखो, इस कठिन समय में नफाई प्रभु अपने परमेश्वर को याद करने में आलसी नहीं हुए। वे उनकी जाल में नहीं फंसे; हां, उन्होंने अपनी मदिरा नहीं पी, जब तक कि उन्होंने कुछ लमनाई बंदियों को पहले पिला न दिया।
- 32 और इस प्रकार वे सजग थे कि उनके बीच कोई भी जहर का सेवन न हो; क्योंकि यदि उनकी मदिरा लमनाइयों के लिए जहरीली हो सकती थी तो वह किसी नफाई के लिए भी जहरीली हो सकती थी; और इस प्रकार वे उनके सारे मादक पदार्थों का परीक्षण करते।
- 33 और अब ऐसा हुआ कि मोरोनी के लिए यह आवश्यक हो गया था कि वह मोरियण्टन के नगर पर आक्रमण करे; क्योंकि देखो, लमनाइयों ने अपने मजदूरों से मोरियण्टन नगर की किलाबंदी का काम तब तक करवाया जब तक कि वह बहुत मजबूत न बन गया।
- 34 और वे निरंतर उस नगर में और सैन्यदल लाते गए, और भोजन सामग्री भी अधिक लाते गए।
- 35 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का उनतीसवां वर्ष समाप्त हुआ।

But behold, the Nephites were not slow to remember the Lord their God in this their time of affliction. They could not be taken in their snares; yea, they would not partake of their wine, save they had first given to some of the Lamanite prisoners.

And they were thus cautious that no poison should be administered among them; for if their wine would poison a Lamanite it would also poison a Nephite; and thus they did try all their liquors.

And now it came to pass that it was expedient for Moroni to make preparations to attack the city Morianton; for behold, the Lamanites had, by their labors, fortified the city Morianton until it had become an exceeding stronghold.

And they were continually bringing new forces into that city, and also new supplies of provisions.

And thus ended the twenty and ninth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

## अलमा 56

- 1 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के तीसवें वर्ष के आरंभ में, पहले माह के दूसरे दिन, मोरोनी ने हिलामन से एक पत्र प्राप्त किया जिसमें प्रदेश के उस भाग के लोगों की घटनाओं के बारे में लिखा था ।
- 2 और ये वे शब्द हैं जिसे उसने लिखा था, यह कहते हुए: मेरे प्रिय भाई मोरोनी, जैसे हमारे युद्ध की परेशानियों में वैसे ही प्रभु में; देखो, मेरे प्रिय भाई, मैं तुम्हें अपने प्रदेश के उस हिस्से के अपने युद्ध के बारे में कुछ बताता हूँ ।
- 3 देखो, उन लोगों के दो हजार बेटे जिन्हें अम्मोन नफी के प्रदेश से बाहर निकालकर लाया था—अब तो तुम्हें पता ही होगा कि ये उस लमान के वंशज थे, जो कि हमारे पूर्वज लेही का सबसे बड़ा बेटा था ।
- 4 अब मुझे उनकी परंपराओं या उनके अविश्वास को दोहराने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि तुम इन सारी बातों के बारे में जानते हो—
- 5 इसलिए मेरे लिए यही उचित है कि मैं तुम्हें बताऊँ कि इन दो हजार युवा लड़कों ने युद्ध के अपने हथियारों को उठा लिया है, और चाहते हैं कि मैं उनका सेनापति बनूँ; और हम अपने देश को बचाने आए हैं ।
- 6 और अब तुम उनके पूर्वजों द्वारा बनाए गए अनुबंध के बारे में भी जानते हो, कि वे अपने भाइयों का लहू बहाने के लिए उनके विरुद्ध अपना हथियार नहीं उठाएंगे ।
- 7 परन्तु छब्बीसवें वर्ष में, जब उन्होंने उनके लिए हमारे कष्टों और हमारी परेशानियों को देखा, तो लगभग वे अपने उस अनुबंध को तोड़ने वाले थे जिसे उन्होंने बनाया था और अपनी सुरक्षा के प्रति युद्ध के अपने हथियार को उठाना चाहते थे ।
- 8 परन्तु मैं नहीं चाहता हूँ कि वे उस अनुबंध को तोड़े जिसे उन्होंने बनाया था, यह मानते हुए कि जो शपथ उन्होंने ली थी उस पर अटल रहने के कारण परमेश्वर हमें अधिक बल देगा ताकि हमें और न सहना पड़े ।
- 9 परन्तु देखो, यहां पर एक बात है जिसमें हम महान आनन्द प्राप्त कर सकते हैं । क्योंकि देखो, छब्बीसवें वर्ष में, मैं, हिलामन उस अंतीपस की सहायता के लिए, इन दो हजार युवा लड़कों के आगे-आगे यहूदिया के नगर की ओर चला, जिसे तुमने प्रदेश के उस भाग के लोगों का मार्गदर्शक नियुक्त किया था ।

## Alma 56

And now it came to pass in the commencement of the thirtieth year of the reign of the judges, on the second day in the first month, Moroni received an epistle from Helaman, stating the affairs of the people in that quarter of the land.

And these are the words which he wrote, saying: My dearly beloved brother, Moroni, as well in the Lord as in the tribulations of our warfare; behold, my beloved brother, I have somewhat to tell you concerning our warfare in this part of the land.

Behold, two thousand of the sons of those men whom Ammon brought down out of the land of Nephi—now ye have known that these were descendants of Laman, who was the eldest son of our father Lehi;

Now I need not rehearse unto you concerning their traditions or their unbelief, for thou knowest concerning all these things—

Therefore it sufficeth me that I tell you that two thousand of these young men have taken their weapons of war, and would that I should be their leader; and we have come forth to defend our country.

And now ye also know concerning the covenant which their fathers made, that they would not take up their weapons of war against their brethren to shed blood.

But in the twenty and sixth year, when they saw our afflictions and our tribulations for them, they were about to break the covenant which they had made and take up their weapons of war in our defence.

But I would not suffer them that they should break this covenant which they had made, supposing that God would strengthen us, insomuch that we should not suffer more because of the fulfilling the oath which they had taken.

But behold, here is one thing in which we may have great joy. For behold, in the twenty and sixth year, I, Helaman, did march at the head of these two thousand young men to the city of Judea, to assist Antipus, whom ye had appointed a leader over the people of that part of the land.

- 10 और मैं अपने दो हजार बेटों के साथ (क्योंकि वे बेटे कहलाने योग्य हैं) अंतीपस की सेना में मिल गया, जिसके बल से अंतीपस अत्याधिक प्रसन्न हुआ, क्योंकि देखो, लमनाइयों द्वारा उसकी सेना घटा दी गई थी क्योंकि उनके सैन्यदलों ने हमारे बहुत से लोगों को मार डाला था, जिसके कारण हमें विलाप करना पड़ा था ।
- 11 फिर भी, इस समय हम अपने आपको दिलासा दे सकते हैं, कि वे अपने देश और अपने परमेश्वर के लिए मर गए हैं, हां, और वे प्रसन्न हैं ।
- 12 और लमनाइयों ने भी कई बंदियों को अपने पास रखा, जिनमें से सारे मुख्य सेनापति थे, क्योंकि बाकियों को उन्होंने जीवित नहीं रखा था । और हमारा मानना है कि यदि उन्हें नहीं मारा गया है तो वे इस समय नफी के प्रदेश में ही हैं ।
- 13 और अब ये वे नगर हैं जिन पर लमनाइयों ने हमारे कई शूरवीर लोगों का लहू बहाकर कब्जा कर लिया है ।
- 14 मण्टी प्रदेश, या मण्टी नगर, और जीजरोम नगर, और कुमेनी नगर, और अंतीपारा नगर ।
- 15 और ये वे नगर हैं जिन पर उन्होंने तब कब्जा किया जब वे यहूदिया के नगर पहुंचे; और मैंने पाया कि अंतीपस और उसके लोग नगर की किलाबंदी के लिए बहुत परिश्रम कर रहे थे ।
- 16 हां, और वे शरीर और आत्मा दोनों से दुखी थे, क्योंकि उन्होंने दिन में वीरता से लड़ाई की थी और अपने नगरों को बनाए रखने के लिए रात में परिश्रम किया था; और इस प्रकार उन्होंने हर प्रकार की महान कठिनाइयों का सामना किया था ।
- 17 और अब वे इस स्थान को अपने अधीन करने या इसके प्रति मरने के लिए दृढ़ थे; इसलिए तुम भली-भांति इस बात का अनुमान लगा सकते हो कि मैं इस छोटे से सैन्यदल को अपने साथ लाया हूँ, हां, अपने उन बेटों को, जिससे उन्हें महान आशा और प्रसन्नता हुई ।
- 18 और ऐसा हुआ कि जब लमनाइयों ने देखा कि अंतीपस ने अपनी सेना के लिए एक बल प्राप्त कर लिया है, तो उन्हें अम्मोरोन के आदेशानुसार विवश किया गया कि वे यहूदिया नगर पर, या हम पर आक्रमण न करें ।
- 19 और इस प्रकार हमें प्रभु का सहारा मिला; क्योंकि यदि वे हमारी इस कमजोरी में हम पर आक्रमण कर देते तो शायद हमारी छोटी सी सेना को खत्म कर सकते थे; परन्तु इस प्रकार हमें बचाया गया ।

And I did join my two thousand sons, (for they are worthy to be called sons) to the army of Antipus, in which strength Antipus did rejoice exceedingly; for behold, his army had been reduced by the Lamanites because their forces had slain a vast number of our men, for which cause we have to mourn.

Nevertheless, we may console ourselves in this point, that they have died in the cause of their country and of their God, yea, and they are happy.

And the Lamanites had also retained many prisoners, all of whom are chief captains, for none other have they spared alive. And we suppose that they are now at this time in the land of Nephi; it is so if they are not slain.

And now these are the cities of which the Lamanites have obtained possession by the shedding of the blood of so many of our valiant men:

The land of Manti, or the city of Manti, and the city of Zeezrom, and the city of Cumeni, and the city of Antiparah.

And these are the cities which they possessed when I arrived at the city of Judea; and I found Antipus and his men toiling with their might to fortify the city.

Yea, and they were depressed in body as well as in spirit, for they had fought valiantly by day and toiled by night to maintain their cities; and thus they had suffered great afflictions of every kind.

And now they were determined to conquer in this place or die; therefore you may well suppose that this little force which I brought with me, yea, those sons of mine, gave them great hopes and much joy.

And now it came to pass that when the Lamanites saw that Antipus had received a greater strength to his army, they were compelled by the orders of Ammoron to not come against the city of Judea, or against us, to battle.

And thus were we favored of the Lord; for had they come upon us in this our weakness they might have perhaps destroyed our little army; but thus were we preserved.

- 20 अम्मोरोन द्वारा उन्हें उन नगरों को बचाकर रखने की आज्ञा मिली जिस पर उन्होंने कब्जा किया था । और इस प्रकार छब्बीसवां वर्ष समाप्त हुआ । और सत्ताइसवें वर्ष के आरंभ में हमने अपने नगर और अपनी सुरक्षा के प्रति तैयारी की ।
- 21 अब हम चाहते थे कि लमनाई हम पर आक्रमण करें; क्योंकि हम उनके मजबूत किलों में जाकर उन पर आक्रमण नहीं करना चाहते थे ।
- 22 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए हमने चारों तरफ गुप्तचर लगा दिए, ताकि वे हमारे पास से न गुजरें और उत्तरी दिशा में स्थित हमारे अन्य नगरों पर न तो रात में और न ही दिन में आक्रमण कर सकें ।
- 23 क्योंकि हम जानते थे कि उन नगरों के लोग उनका सामना करने के लिए पर्याप्त मात्रा में मजबूत नहीं थे; इसलिए हम चाहते थे कि यदि वे हमारे पास से गुजरें तो हम पीछे से उन पर आक्रमण कर दें, और इस प्रकार एक ही समय पर हम उनसे पीछे और आगे दोनों तरफ से लड़े । हमारा अनुमान था कि हम उन पर विजय प्राप्त कर सकते थे; परन्तु देखो, हम अपनी इस इच्छा से निराश हुए ।
- 24 न ही अपनी पूरी सेना के साथ, और न ही कुछ लोगों के साथ उन्होंने वहां से गुजरने का साहस किया, शायद कहीं ऐसा न हो कि उनमें पर्याप्त शक्ति न हो और वे मारे न जाएं ।
- 25 न ही उन्होंने जराहेमला नगर की तरफ कूच करने का साहस किया; न ही नफीहा के नगर जाने के लिए उन्होंने सिदोन नदी का अगला भाग पार करने का साहस किया ।
- 26 और इस प्रकार, अपने सैन्यदल के साथ वे उन नगरों को बचाए रखने में ही दृढ़ थे जिस पर उन्होंने कब्जा किया था ।
- 27 और ऐसा हुआ कि इस वर्ष के दूसरे माह में, मेरे दो हजार बेटों के पिताओं द्वारा भेजी गई बहुत सी सामग्रियां हमारे पास लाई गईं ।
- 28 और हमारे पास जराहेमला प्रदेश से दो हजार आदमी भी भेजे गए । और इस प्रकार हम दस हजार आदमियों से तैयार हो गए, और उनके लिए, और उनकी पत्नियों और उनके बच्चों के लिए भी सामग्रियों से तैयार हो गए ।
- 29 और लमनाई, यह देखकर कि हमारा सैन्यदल नियमित बढ़ता जा रहा है, और हमारी सहायता के लिए सामग्रियां पहुंचायी जा रही हैं, तो वे भयभीत होने लगे, और उन्होंने इस उद्देश्य से हम पर आक्रमण करना शुरू कर दिया ताकि यदि संभव हो तो वे हमारी सामग्रियों और बल को बढ़ने से रोक सकें ।

They were commanded by Ammoron to maintain those cities which they had taken. And thus ended the twenty and sixth year. And in the commencement of the twenty and seventh year we had prepared our city and ourselves for defence.

Now we were desirous that the Lamanites should come upon us; for we were not desirous to make an attack upon them in their strongholds.

And it came to pass that we kept spies out round about, to watch the movements of the Lamanites, that they might not pass us by night nor by day to make an attack upon our other cities which were on the northward.

For we knew in those cities they were not sufficiently strong to meet them; therefore we were desirous, if they should pass by us, to fall upon them in their rear, and thus bring them up in the rear at the same time they were met in the front. We supposed that we could overpower them; but behold, we were disappointed in this our desire.

They durst not pass by us with their whole army, neither durst they with a part, lest they should not be sufficiently strong and they should fall.

Neither durst they march down against the city of Zarahemla; neither durst they cross the head of Sidon, over to the city of Nephihah.

And thus, with their forces, they were determined to maintain those cities which they had taken.

And now it came to pass in the second month of this year, there was brought unto us many provisions from the fathers of those my two thousand sons.

And also there were sent two thousand men unto us from the land of Zarahemla. And thus we were prepared with ten thousand men, and provisions for them, and also for their wives and their children.

And the Lamanites, thus seeing our forces increase daily, and provisions arrive for our support, they began to be fearful, and began to sally forth, if it were possible to put an end to our receiving provisions and strength.



- 30 अब जब हमने देखा कि वे इस जानकारी पर अशांत होने लगे हैं, तो हम भी उनसे चालाकी करना चाहते थे; इसलिए अंतीपस ने आज्ञा दी कि मैं अपने छोटे बेटों के साथ पड़ोस के नगर चला जाऊं, जैसे कि हम पड़ोस के नगर सामग्रियों को लेकर जा रहे हों।
- 31 और हमें अंतीपारा के नगर के नजदीक जाना था, जैसे कि हम नगर से आगे, समुद्रतट से लगी सीमाओं पर जा रहे हों।
- 32 और ऐसा हुआ कि हमने आगे की यात्रा की, जैसे कि हम उस नगर में अपनी सामग्रियों के साथ जा रहे हैं।
- 33 और ऐसा हुआ कि अंतीपस अपनी थोड़ी सी सेना के साथ आगे की ओर बढ़ा, बाकी बचे लोगों को नगर की सुरक्षा के लिए छोड़ते हुए। परन्तु वह आगे तब तक नहीं गया जब तक कि मैं अपनी छोटी सी सेना के साथ अंतीपारा नगर के पास न पहुंच गया।
- 34 और अब, अंतीपारा के नगर में लमनाइयों की मजबूत सेना स्थित थी; हां, अत्याधिक संख्या में।
- 35 और ऐसा हुआ कि जब उन्हें उनके गुप्तचरों ने इसकी सूचना दी, वे अपनी सेना के साथ हमारे विरुद्ध आगे बढ़े।
- 36 और ऐसा हुआ कि हम उनके सामने से उत्तरी दिशा की ओर भाग गए। और इस प्रकार हम लमनाइयों की सबसे शक्तिशाली सेना को पीछे ले गए।
- 37 हां, यहां तक कि काफी दूरी तक, इतना अधिक कि जब उन्होंने देखा कि अंतीपस की सेना अपनी पूरी शक्ति से उनका पीछा कर रही है, तो वे न तो दाहिनी ओर मुड़े और न ही बायीं ओर, परन्तु हमारा पीछा करते हुए वे सीधा आगे बढ़ते रहे; और, जैसा कि हमने अनुमान लगाया था, अंतीपस उन्हें पकड़ ले उससे पहले वे हमें मार देना चाहते थे, और ऐसा इसलिए करना चाहते थे ताकि वे हमारे लोगों से घिर न सकें।
- 38 और अब अंतीपस ने हमारे खतरे को भांपते हुए, अपनी सेना को तेजी से चलने के लिए कहा। परन्तु देखो, यह रात का समय था; इसलिए वे हमें नहीं पकड़ पाए, न ही अंतीपस उन्हें पकड़ पाया; इसलिए हमें रात में शिविर लगाना पड़ा।

Now when we saw that the Lamanites began to grow uneasy on this wise, we were desirous to bring a stratagem into effect upon them; therefore Antipus ordered that I should march forth with my little sons to a neighboring city, as if we were carrying provisions to a neighboring city.

And we were to march near the city of Antiparah, as if we were going to the city beyond, in the borders by the seashore.

And it came to pass that we did march forth, as if with our provisions, to go to that city.

And it came to pass that Antipus did march forth with a part of his army, leaving the remainder to maintain the city. But he did not march forth until I had gone forth with my little army, and came near the city Antiparah.

And now, in the city Antiparah were stationed the strongest army of the Lamanites; yea, the most numerous.

And it came to pass that when they had been informed by their spies, they came forth with their army and marched against us.

And it came to pass that we did flee before them, northward. And thus we did lead away the most powerful army of the Lamanites;

Yea, even to a considerable distance, insomuch that when they saw the army of Antipus pursuing them, with their might, they did not turn to the right nor to the left, but pursued their march in a straight course after us; and, as we suppose, it was their intent to slay us before Antipus should overtake them, and this that they might not be surrounded by our people.

And now Antipus, beholding our danger, did speed the march of his army. But behold, it was night; therefore they did not overtake us, neither did Antipus overtake them; therefore we did camp for the night.

- 39 और ऐसा हुआ कि सुबह से पहले, देखो, लमनाइयों ने हमारा पीछा करना शुरू किया। अब उनके साथ लड़ने के लिए हम पर्याप्त मात्रा में मजबूत नहीं थे; हां, मैं नहीं चाहता था कि मेरे छोटे-छोटे बेटे उनके हाथों में पड़ जाएं; इसलिए हमने आगे बढ़ना जारी रखा, और चलते-चलते हम निर्जन प्रदेश में पहुंचे।
- 40 अब न तो वे दाहिनी ओर मुड़ने का साहस कर पाए और न ही बायीं ओर जिससे कि वे घिर न जाएं; न ही मैं दाएं या बाएं मुड़ पाया कि कहीं वे मुझे पकड़ न लें, और हम उनका सामना न कर पाएं, परन्तु मारे जाएं, और वे अपने बचने का रास्ता बना लें; और इस प्रकार उस दिन हम निर्जन प्रदेश में भागते रहे, यहां तक कि रात होने तक भागते रहे।
- 41 और ऐसा हुआ कि फिर से, जब सुबह की रोशनी आई तब हमने लमनाइयों को अपनी ओर आते देखा, और हम उनके सामने से भाग गए।
- 42 परन्तु ऐसा हुआ कि वे हमारा और पीछा नहीं कर पाए और रुक गए; और यह सातवें महिने के तीसरे दिन की सुबह थी।
- 43 और अब, अंतीपस ने उन्हें पकड़ लिया था या नहीं, हम नहीं जानते थे परन्तु मैंने अपने लोगों से कहा: देखो, हम नहीं जानते हैं परन्तु वे किसी कारणवश रुके हैं जिससे कि हम उन पर आक्रमण करें ताकि वे हमें अपने जाल में फंसा सकें।
- 44 इसलिए मेरे बेटों, तुम क्या कहते हो, क्या तुम उनसे युद्ध करना चाहोगे ?
- 45 और अब मैं तुमसे कहता हूं, मेरे प्रिय भाई मोरोनी, यह कि मैंने सारे नफाइयों के बीच में भी कभी इतना महान साहस नहीं देखा है।
- 46 क्योंकि जैसा कि मैंने उन्हें सदा अपना बेटा कहा है (क्योंकि उनमें से सभी युवा थे) यहां तक कि उन्होंने मुझसे कहा था: पिता, देखो हमारा परमेश्वर हमारे साथ है, और वह नहीं चाहेगा कि हम पराजित हों; तो चलो आगे बढ़ें; हम अपने भाइयों को नहीं मारेंगे यदि वे हमें जाने दें इसलिए चलो आगे बढ़ें, कहीं ऐसा न हो कि वे अंतीपस की सेना को पराजित कर दें।
- 47 अब जब कि उन्होंने कभी भी लड़ाई नहीं की थी, फिर भी वे मृत्यु से नहीं डरते थे; और वे अपने प्राण से अधिक अपने पिताओं की स्वतंत्रता के बारे में सोचते थे; हां, उन्हें उनकी माताओं ने सिखाया था, कि यदि वे संदेह न करें तो परमेश्वर उन्हें बचाएगा।

And it came to pass that before the dawn of the morning, behold, the Lamanites were pursuing us. Now we were not sufficiently strong to contend with them; yea, I would not suffer that my little sons should fall into their hands; therefore we did continue our march, and we took our march into the wilderness.

Now they durst not turn to the right nor to the left lest they should be surrounded; neither would I turn to the right nor to the left lest they should overtake me, and we could not stand against them, but be slain, and they would make their escape; and thus we did flee all that day into the wilderness, even until it was dark.

And it came to pass that again, when the light of the morning came we saw the Lamanites upon us, and we did flee before them.

But it came to pass that they did not pursue us far before they halted; and it was in the morning of the third day of the seventh month.

And now, whether they were overtaken by Antipus we knew not, but I said unto my men: Behold, we know not but they have halted for the purpose that we should come against them, that they might catch us in their snare;

Therefore what say ye, my sons, will ye go against them to battle?

And now I say unto you, my beloved brother Moroni, that never had I seen so great courage, nay, not amongst all the Nephites.

For as I had ever called them my sons (for they were all of them very young) even so they said unto me: Father, behold our God is with us, and he will not suffer that we should fall; then let us go forth; we would not slay our brethren if they would let us alone; therefore let us go, lest they should overpower the army of Antipus.

Now they never had fought, yet they did not fear death; and they did think more upon the liberty of their fathers than they did upon their lives; yea, they had been taught by their mothers, that if they did not doubt, God would deliver them.

- 48 और उन्होंने यह कहते हुए अपनी माताओं के शब्दों को मेरे लिए दोहराया था: हमें इस बात पर संदेह नहीं है कि हमारी माताएं इसे जानती थी ।
- 49 और ऐसा हुआ कि मैं अपने दो हजार बेटों के साथ उन लमनाइयों पर आक्रमण करने गया जो हमारा पीछा कर रहे थे । और अब देखो, अंतीपस की सेनाओं ने उन्हें घेर लिया था, और एक भयानक युद्ध का आरंभ हुआ ।
- 50 थोड़े से समय में एक लम्बी यात्रा करने के कारण, अंतीपस की सेना बहुत थक चुकी थी, लगभग वे लमनाइयों के हाथों में पड़ने ही वाले थे; और यदि मैं अपने दो हजार बेटों के साथ वहां नहीं गया होता तो उन्होंने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया होता ।
- 51 क्योंकि अधिक थके होने के कारण अंतीपस और उसके कई सेनापति तलवार द्वारा मारे जा चुके थे, जो कि ऐसा उनके अधिक चलने के कारण हुआ था—इसलिए अंतीपस के लोग अपने सेनापतियों के मारे जाने के कारण उलझन में पड़ गए, और लमनाइयों के सामने से भागने लगे ।
- 52 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों में साहस आ गया, और वे उनका पीछा करने लगे; और इस प्रकार अधिक प्रबलता से लमनाई उनका पीछा करने लगे जब हिलामन ने पीछे से अपने दो हजार बेटों के साथ उन पर आक्रमण किया, और उन्हें बहुतायत में मारने लगे, इतना अधिक कि लमनाइयों की पूरी सेना रुक गई और पलटकर हिलामन पर आक्रमण करने लगी ।
- 53 अब जब अंतीपस के लोगों ने देखा कि लमनाइयों ने पलटकर उन पर आक्रमण कर दिया है, तो उन्होंने अपने लोगों को एकत्रित किया और फिर से लमनाइयों पर पीछे से हमला बोल दिया ।
- 54 और अब ऐसा हुआ कि हम, नफी के लोगों ने, अंतीपस के लोगों ने, और मैं अपने दो हजार बेटों के साथ, लमनाइयों को घेर लिया, और उन्हें मारा; हां, इतना अधिक कि वे युद्ध के अपने हथियार डालने के लिए और स्वयं को युद्ध में पकड़े गए बंदी होने के लिए विवश हुए ।
- 55 और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने हमारे सामने अपना आत्म-समर्पण कर दिया, देखो, मैंने उन युवकों की गिनती की जो लड़ाई में मेरे साथ थे, डरते हुए कि कहीं ऐसा न हो कि उनमें से कई मारे जा चुके हों ।

And they rehearsed unto me the words of their mothers, saying: We do not doubt our mothers knew it.

And it came to pass that I did return with my two thousand against these Lamanites who had pursued us. And now behold, the armies of Antipus had overtaken them, and a terrible battle had commenced.

The army of Antipus being weary, because of their long march in so short a space of time, were about to fall into the hands of the Lamanites; and had I not returned with my two thousand they would have obtained their purpose.

For Antipus had fallen by the sword, and many of his leaders, because of their weariness, which was occasioned by the speed of their march—therefore the men of Antipus, being confused because of the fall of their leaders, began to give way before the Lamanites.

And it came to pass that the Lamanites took courage, and began to pursue them; and thus were the Lamanites pursuing them with great vigor when Helaman came upon their rear with his two thousand, and began to slay them exceedingly, insomuch that the whole army of the Lamanites halted and turned upon Helaman.

Now when the people of Antipus saw that the Lamanites had turned them about, they gathered together their men and came again upon the rear of the Lamanites.

And now it came to pass that we, the people of Nephi, the people of Antipus, and I with my two thousand, did surround the Lamanites, and did slay them; yea, insomuch that they were compelled to deliver up their weapons of war and also themselves as prisoners of war.

And now it came to pass that when they had surrendered themselves up unto us, behold, I numbered those young men who had fought with me, fearing lest there were many of them slain.

56 परन्तु देखो, मुझे अत्याधिक प्रसन्नता हुई, उनमें से एक भी व्यक्ति धरती पर नहीं गिरा था; हां, और उन्होंने ऐसे लड़ाई लड़ी थी जैसे कि उनमें परमेश्वर की शक्ति हो; हां, कभी भी कोई भी व्यक्ति इतनी चमत्कारिक शक्ति के साथ लड़ने के लिए नहीं जाना गया था; और इस महान शक्ति के साथ उन्होंने लमनाइयों पर आक्रमण किया था, कि उन्होंने उन्हें भयभीत कर दिया; और इसी कारण लमनाई युद्ध में पकड़े गए बंदी हुए ।

57 और जैसा कि हमारे पास बंदियों को रखने का स्थान नहीं था, कि लमनाइयों की सेनाओं से उन्हें दूर रखने के लिए हम उन पर नजर रख सकें, इसलिए हमने उन्हें जराहेमला के प्रदेश भेज दिया, और अंती-पस के बचे हुए लोगों के साथ; और बाकी लोगों को मैंने अपने साथ लिया और अपने किशोर अम्मोनियों के साथ जा मिला, और हम वा-पस यहूदिया के नगर चले गये ।

But behold, to my great joy, there had not one soul of them fallen to the earth; yea, and they had fought as if with the strength of God; yea, never were men known to have fought with such miraculous strength; and with such mighty power did they fall upon the Lamanites, that they did frighten them; and for this cause did the Lamanites deliver themselves up as prisoners of war.

And as we had no place for our prisoners, that we could guard them to keep them from the armies of the Lamanites, therefore we sent them to the land of Zarahemla, and a part of those men who were not slain of Antipus, with them; and the remainder I took and joined them to my stripling Ammonites, and took our march back to the city of Judea.

## अलमा 57

- 1 और ऐसा हुआ कि मैंने अम्मोरोन, राजा से एक पत्र प्राप्त किया, यह संदेश प्राप्त करते हुए कि यदि मैं युद्ध में पकड़े गए बंदियों को छोड़ दूंगा तो वह अंतीपारा का नगर हमें दे देगा ।
- 2 परन्तु मैंने राजा को एक पत्र भेजा, कि हम सुनिश्चित हैं कि अंतीपारा पर अधिकार करने के लिए हमारे पास उचित सैन्यदल है; और उस नगर के लिए बंदियों को छोड़ना हमारे लिए समझदारी की बात नहीं है, और यह कि हम अपने बंदियों को केवल अदला-बदली पर छोड़ेंगे ।
- 3 और अम्मोरोन ने मेरे पत्र को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि अब वह बंदियों की अदला-बदली नहीं करना चाहता था; इसलिए हमने अंतीपारा के नगर के विरुद्ध युद्ध करने की तैयारी शुरू कर दी ।
- 4 परन्तु अंतीपारा के लोगों ने नगर छोड़ दिया, और अपने अन्य नगर, उनकी किलाबंदी के लिए चले गए जिन पर उनका अधिकार था; और इस प्रकार अंतीपारा का नगर हमारे कब्जे में आ गया ।
- 5 और इस प्रकार न्यायियों के शासन का अठ्ठाइसवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 6 और ऐसा हुआ कि उन्नतीसवें वर्ष के आरंभ में, हमने जराहेमला प्रदेश और आसपास के प्रदेशों से सामग्रियों की आपूर्ति प्राप्त की, और हमारी सेना में भी बढ़ोतरी हुई, छह हजार लोग हमसे जुड़े, अम्मोनियों के उन साठ बेटों के अलावा जो अपने उन भाइयों, मेरे छोटे-छोटे दो हजार बेटों के दलों से जुड़े । और अब देखो, हम मजबूत थे, हां, हमारे लिए बहुत सारी सामग्रियां भी भेजी गई थीं ।
- 7 और ऐसा हुआ कि हम उस सेना के साथ युद्ध करना चाहते थे जिसे कुमेनी नगर की सुरक्षा के लिए नियुक्त किया गया था ।
- 8 और अब देखो, मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि हमने शीघ्र ही अपनी इच्छाओं को पूरा कर लिया; हां, उनकी सामग्रियों को प्राप्त करने के थोड़े समय पहले, अपने मजबूत सैन्यदल, या अपने मजबूत अन्य सैन्यदलों की सहायता से हमने रात को कुमेनी नगर को घेर लिया,

## Alma 57

And now it came to pass that I received an epistle from Ammoron, the king, stating that if I would deliver up those prisoners of war whom we had taken that he would deliver up the city of Antiparah unto us.

But I sent an epistle unto the king, that we were sure our forces were sufficient to take the city of Antiparah by our force; and by delivering up the prisoners for that city we should suppose ourselves unwise, and that we would only deliver up our prisoners on exchange.

And Ammoron refused mine epistle, for he would not exchange prisoners; therefore we began to make preparations to go against the city of Antiparah.

But the people of Antiparah did leave the city, and fled to their other cities, which they had possession of, to fortify them; and thus the city of Antiparah fell into our hands.

And thus ended the twenty and eighth year of the reign of the judges.

And it came to pass that in the commencement of the twenty and ninth year, we received a supply of provisions, and also an addition to our army, from the land of Zarahemla, and from the land round about, to the number of six thousand men, besides sixty of the sons of the Ammonites who had come to join their brethren, my little band of two thousand. And now behold, we were strong, yea, and we had also plenty of provisions brought unto us.

And it came to pass that it was our desire to wage a battle with the army which was placed to protect the city Cumeni.

And now behold, I will show unto you that we soon accomplished our desire; yea, with our strong force, or with a part of our strong force, we did surround, by night, the city Cumeni, a little before they were to receive a supply of provisions.

- 9 और ऐसा हुआ कि कई रातों तक हमने नगर के आसपास शिविर लगाया; परन्तु हम अपनी तलवार की धार पर सोए रहे, और नजर रखा कि रात को कहीं लमनाई हम पर आक्रमण कर हमें मार न दें, जिसका प्रयास उन्होंने कई बार किया था; परन्तु जितनी बार भी उन्होंने प्रयास किया उतनी बार उनका लहू गिरा ।
- 10 एक समय पर उनकी सामग्रियां पहुंच गई, और वे रात को लगभग नगर में प्रवेश करने वाले थे । और हम, लमनाई होने की बजाय नफाई थे; इसलिए, हमने उनके और उनकी सामग्रियों को ले लिया ।
- 11 और इस प्रकार सहायता प्राप्त करना बंद होने के बावजूद भी, वे नगर को बचाकर रखने में दृढ़ थे; इसलिए यह आवश्यक हो गया था कि हम उन सामग्रियों को लेकर उन्हें यहूदिया, और जराहेमला प्रदेश के हमारे बंदियों को भेज दें ।
- 12 और ऐसा हुआ कि ज्यादा दिन नहीं बीते थे जब लमनाई सहायता प्राप्त करने की अपनी आशा खोने लगे थे; इसलिए उन्होंने नगर को हमारे हाथों में सौंप दिया; और इस प्रकार हमने कुमेनी नगर प्राप्त करने की अपनी योजना को साकार किया था ।
- 13 परन्तु ऐसा हुआ कि हमारे बंदियों की संख्या अत्याधिक थी, और हमारी संख्या अत्याधिक होने के बावजूद भी हमें अपनी पूरी शक्ति उनके रखरखाव में लगानी पड़ रही थी, या उन्हें मार डालना पड़ता ।
- 14 क्योंकि देखो, वे बड़ी संख्या में बाहर आ जाते, और पत्थरों, और डंडों, या जो भी चीज उनके हाथ लगती उससे इतना अधिक लड़ने लगते कि युद्ध के बंदियों के रूप में समर्पण करने के पश्चात हमने उनमें से दो हजार लोगों को मार डाला ।
- 15 इसलिए हमारे लिए यह आवश्यक हो गया था कि हम उनके जीवन को खत्म कर दें, या उन्हें जराहेमला के प्रदेश तक, हाथों में तलवार लेकर उन पर नजर रखते हुए जाए; और यह भी कि लमनाइयों से लेने के बावजूद भी, हमारी खाद्य सामग्रियां हमारे ही लोगों के लिए पर्याप्त नहीं थीं ।
- 16 और अब, उन कठिन परिस्थितियों में, युद्ध के इन बंदियों के बारे में निर्णय लेना एक गंभीर विषय बन गया था; फिर भी, हमने उन्हें जराहेमला प्रदेश भेजने की समस्या का समाधान किया था; इसलिए हमने अपने कुछ लोगों को चुना, और हमारे बंदियों को जराहेमला प्रदेश ले जाने का काम उन्हें सौंपा ।

And it came to pass that we did camp round about the city for many nights; but we did sleep upon our swords, and keep guards, that the Lamanites could not come upon us by night and slay us, which they attempted many times; but as many times as they attempted this their blood was spilt.

At length their provisions did arrive, and they were about to enter the city by night. And we, instead of being Lamanites, were Nephites; therefore, we did take them and their provisions.

And notwithstanding the Lamanites being cut off from their support after this manner, they were still determined to maintain the city; therefore it became expedient that we should take those provisions and send them to Judea, and our prisoners to the land of Zarahemla.

And it came to pass that not many days had passed away before the Lamanites began to lose all hopes of succor; therefore they yielded up the city unto our hands; and thus we had accomplished our designs in obtaining the city Cumeni.

But it came to pass that our prisoners were so numerous that, notwithstanding the enormity of our numbers, we were obliged to employ all our force to keep them, or to put them to death.

For behold, they would break out in great numbers, and would fight with stones, and with clubs, or whatsoever thing they could get into their hands, inasmuch that we did slay upwards of two thousand of them after they had surrendered themselves prisoners of war.

Therefore it became expedient for us, that we should put an end to their lives, or guard them, sword in hand, down to the land of Zarahemla; and also our provisions were not any more than sufficient for our own people, notwithstanding that which we had taken from the Lamanites.

And now, in those critical circumstances, it became a very serious matter to determine concerning these prisoners of war; nevertheless, we did resolve to send them down to the land of Zarahemla; therefore we selected a part of our men, and gave them charge over our prisoners to go down to the land of Zarahemla.

- 17 परन्तु ऐसा हुआ कि अगले दिन वे वापस आए । और अब देखो, हमने बंदियों के विषय में उनसे पूछताछ नहीं की; क्योंकि देखो, लमनाइयों ने हम पर आक्रमण कर दिया, और उन्होंने पहुंचकर हमें उनके हाथों में पड़ने से बचा लिया । क्योंकि देखो, अम्मोरोन ने उन्हें सामग्रियों की नई आपूर्ति के रूप में सहायता भेजी थी और कई सैनिकों को भी भेजा था ।
- 18 और ऐसा हुआ कि जिन लोगों को हमने बंदियों के साथ भेजा था, उन लोगों ने पहुंचकर उन्हें रोक दिया जैसे ही वे हमें पराजित करनेवाले थे ।
- 19 परन्तु देखो, मेरे दो हजार और साठ लोगों के दल ने अत्याधिक उग्रता से लड़ाई की; हां, वे लमनाइयों के सामने अटल थे, और उन सबको मौत के घाट उतार दिया था जिन्होंने उनका विरोध किया ।
- 20 और हमारी बाकी सेना जब लमनाइयों के सामने से पीछे हटने ही वाली थी, देखो, मेरे दो हजार और साठ बेटे अटल और निडर थे ।
- 21 हां, और हर एक आज्ञा को उन्होंने अच्छी तरह से सुना और उसका पालन किया; हां, और उनके विश्वास के अनुसार ही उनके साथ व्यवहार होता था; और मुझे वे शब्द याद हैं जिसे उन्होंने मुझसे कहा था कि उनकी माताओं ने उन्हें सिखाया था ।
- 22 और अब देखो, यही मेरे बेटे थे, और वे लोग थे जिन्हें बंदियों को ले जाने के लिए चुना गया था, जिनके कारण हमें महान विजय प्राप्त हुई थी; क्योंकि ये वही थे जिन्होंने लमनाइयों को हराया था; इसलिए उन्हें मण्टी नगर वापस भेज दिया गया था ।
- 23 और हमने अपने कुमेनी नगर को बचा लिया था, और सारे तलवार द्वारा मारे भी नहीं गए थे; फिर भी, हमें महान हानि हुई थी ।
- 24 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों के भाग जाने के पश्चात्, मैंने शीघ्र ही आदेश दिया कि मेरे जो लोग घायल हो गए हैं उन्हें मृतकों में से अलग कर देना चाहिए, और उनके घावों की मरहम-पट्टी होनी चाहिए ।
- 25 और ऐसा हुआ कि मेरे दो हजार और साठ बेटों में से दो सौ लोग लहू बहने के कारण बेहोश हो गए थे; फिर भी, हमें बहुत आश्चर्य हुआ, और परमेश्वर की दया से और हमारी पूरी सेना की सफलता से, एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो मारा गया हो; हां, और उनमें से ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो बुरी तरह घायल न हुआ हो ।

But it came to pass that on the morrow they did return. And now behold, we did not inquire of them concerning the prisoners; for behold, the Lamanites were upon us, and they returned in season to save us from falling into their hands. For behold, Ammoron had sent to their support a new supply of provisions and also a numerous army of men.

And it came to pass that those men whom we sent with the prisoners did arrive in season to check them, as they were about to overpower us.

But behold, my little band of two thousand and sixty fought most desperately; yea, they were firm before the Lamanites, and did administer death unto all those who opposed them.

And as the remainder of our army were about to give way before the Lamanites, behold, those two thousand and sixty were firm and undaunted.

Yea, and they did obey and observe to perform every word of command with exactness; yea, and even according to their faith it was done unto them; and I did remember the words which they said unto me that their mothers had taught them.

And now behold, it was these my sons, and those men who had been selected to convey the prisoners, to whom we owe this great victory; for it was they who did beat the Lamanites; therefore they were driven back to the city of Manti.

And we retained our city Cumeni, and were not all destroyed by the sword; nevertheless, we had suffered great loss.

And it came to pass that after the Lamanites had fled, I immediately gave orders that my men who had been wounded should be taken from among the dead, and caused that their wounds should be dressed.

And it came to pass that there were two hundred, out of my two thousand and sixty, who had fainted because of the loss of blood; nevertheless, according to the goodness of God, and to our great astonishment, and also the joy of our whole army, there was not one soul of them who did perish; yea, and neither was there one soul among them who had not received many wounds.

- 26 और अब, उनका सुरक्षित रहना पूरी सेना के लिए आश्चर्यजनक था, हां, यह कि उन्हें जीवनदान मिलना चाहिए जब कि हमारे मारे गए भाइयों की संख्या हजार में थी। और हम इसका कारण परमेश्वर की चमत्कारिक शक्ति को मानते हैं, क्योंकि वे उसमें बहुत विश्वास करते थे जिसमें उन्हें विश्वास करना सिखाया गया था—कि एक न्यायी परमेश्वर था, और जो लोग संदेह नहीं करते हैं उन्हें उसकी चमत्कारिक शक्ति द्वारा बचाया जाता है।
- 27 अब ये इन लोगों का विश्वास था जिनके बारे में मैंने बताया था; ये युवा हैं, और उनके मन दृढ़ हैं, और उन्होंने परमेश्वर में निरंतर अपना विश्वास बनाए रखा था।
- 28 और अब ऐसा हुआ कि जब हमने इस प्रकार अपने घायल लोगों की देखभाल कर ली, और अपने मरे हुए लोगों और लमनाइयों के मरे हुए लोगों को भी दफना लिया जो कि बड़ी संख्या में थे, देखो, गिद से हमने उन बंदियों के विषय में पूछताछ की जो उसके साथ जराहेमला प्रदेश गए थे।
- 29 अब प्रदेश तक ले जाने में उनकी सुरक्षा के लिए, गिद को उस दल का मुख्य सेनापति नियुक्त किया गया था।
- 30 और अब, ये वे शब्द हैं जिसे गिद ने मुझसे कहा था: देखो, हम अपने बंदियों के साथ जराहेमला प्रदेश जाने लगे थे। और ऐसा हुआ कि हमारी मुलाकात हमारी सेना के गुप्तचरों से हुई, जिन्हें लमनाइयों के शिविर पर नजर रखने के लिए भेजा गया था।
- 31 और उन्होंने यह कहते हुए हमें आवाज लगाई—देखो, लमनाई की सेनाएं कुमेनी नगर को ओर बढ़ रही हैं; और देखो, वे हम पर आक्रमण करेंगी, हां, और हमारे लोगों को खत्म कर देंगी।
- 32 और ऐसा हुआ कि हमारे बंदियों ने उनकी आवाज सुनी, जिससे उनमें साहस पैदा हुआ; और वे हमारे विरोध में खड़े हो गए।
- 33 और ऐसा हुआ कि उनके विरोध के कारण हमने उन पर अपनी तलवार उठाई। और ऐसा हुआ कि वे एक साथ हमारी तरफ दौड़ पड़े, जिसके कारण उनमें से बहुत से लोग मारे गए; और बाकी हमारे घेरे से बाहर निकलकर भाग गए।
- 34 और देखो, जब वे भाग चुके और हम उन्हें नहीं पकड़ पाए, तो हम कुमेनी नगर की तरफ तेजी से चलने लगे; और देखो, हम समय पर पहुंच गए ताकि नगर की सुरक्षा में हम अपने भाइयों की सहायता कर सकें।

And now, their preservation was astonishing to our whole army, yea, that they should be spared while there was a thousand of our brethren who were slain. And we do justly ascribe it to the miraculous power of God, because of their exceeding faith in that which they had been taught to believe—that there was a just God, and whosoever did not doubt, that they should be preserved by his marvelous power.

Now this was the faith of these of whom I have spoken; they are young, and their minds are firm, and they do put their trust in God continually.

And now it came to pass that after we had thus taken care of our wounded men, and had buried our dead and also the dead of the Lamanites, who were many, behold, we did inquire of Gid concerning the prisoners whom they had started to go down to the land of Zarahemla with.

Now Gid was the chief captain over the band who was appointed to guard them down to the land.

And now, these are the words which Gid said unto me: Behold, we did start to go down to the land of Zarahemla with our prisoners. And it came to pass that we did meet the spies of our armies, who had been sent out to watch the camp of the Lamanites.

And they cried unto us, saying—Behold, the armies of the Lamanites are marching towards the city of Cumeni; and behold, they will fall upon them, yea, and will destroy our people.

And it came to pass that our prisoners did hear their cries, which caused them to take courage; and they did rise up in rebellion against us.

And it came to pass because of their rebellion we did cause that our swords should come upon them. And it came to pass that they did in a body run upon our swords, in the which, the greater number of them were slain; and the remainder of them broke through and fled from us.

And behold, when they had fled and we could not overtake them, we took our march with speed towards the city Cumeni; and behold, we did arrive in time that we might assist our brethren in preserving the city.



35 और देखो, हम फिर से अपने शत्रुओं के हाथों से बच गए। और हमारे परमेश्वर का नाम आशीषित हो; क्योंकि देखो, वही है जिसने हमें बचाया है; हां, उसने इस महान कार्य को हमारे लिए किया है।

36 और ऐसा हुआ कि जब मैंने, हिलामन ने गिद से इन बातों को सुना, तो हमारी सुरक्षा में परमेश्वर की दया के कारण मैं अत्याधिक प्रसन्नता से भर गया, ताकि हम सब खत्म न हो सकें; हां, और मेरा विश्वास है कि जो लोग मारे गए हैं उनकी आत्माएं उनके परमेश्वर के आरामगाह में प्रवेश कर गई हैं।

And behold, we are again delivered out of the hands of our enemies. And blessed is the name of our God; for behold, it is he that has delivered us; yea, that has done this great thing for us.

Now it came to pass that when I, Helaman, had heard these words of Gid, I was filled with exceeding joy because of the goodness of God in preserving us, that we might not all perish; yea, and I trust that the souls of them who have been slain have entered into the rest of their God.

## अलमा 58

- 1 और देखो, अब ऐसा हुआ कि हमारा अगला लक्ष्य मण्टी नगर पर अधिकार करना था; परन्तु देखो, हम अपने छोटे छोटे दलों द्वारा उन्हें नगर से नहीं निकाल सकते थे। क्योंकि देखो, हमने जो भी अब तक किया था वह उन्हें याद था; इसलिए हम झांसा देकर उन्हें उनके मजबूत किलों से बाहर नहीं निकाल सकते थे।
- 2 और उनकी संख्या हमारी सेना से इतनी अधिक थी कि हम आगे बढ़कर उनके मजबूत किलों के भीतर उन पर आक्रमण करने का साहस नहीं कर पाए।
- 3 हां, और यह आवश्यक हो गया कि हम अपने लोगों को प्रदेश के उन भागों को संभालकर रखने के लिए लाएं जिन्हें हमने फिर से अपने अधिकार में ले लिया था; इसलिए यह आवश्यक हो गया कि हम प्रतीक्षा करें, कि हम जराहेमला प्रदेश से और बल प्राप्त कर सकें, और सामग्रियों की नई आपूर्ति भी प्राप्त कर सकें।
- 4 और ऐसा हुआ कि मैंने इस प्रकार अपने लोगों के मामलों की जानकारी देने के लिए हमारे प्रदेश के राज्यपाल के पास एक राजदूत भेजा। और ऐसा हुआ कि जराहेमला प्रदेश से बल और सामग्रियों को प्राप्त करने के लिए हमने प्रतीक्षा की।
- 5 परन्तु देखो, इससे हमें लाभ तो हुआ पर थोड़ा-बहुत; क्योंकि दिन-ब-दिन लमनाई भी बल प्राप्त करते जा रहे थे, और बहुत सी सामग्रियां भी; और इस समय हमारी परिस्थितियां ऐसी ही थीं।
- 6 और समय-समय पर लमनाई अपने छल-कपट के द्वारा, हमें खत्म करने के लिए हम पर धावा बोल देते थे; फिर भी उनके पीछे हटने और उनकी मजबूत किलाबंदी के कारण हम उनसे युद्ध करने नहीं आसके।
- 7 और ऐसा हुआ कि कई महीनों के अंतराल तक हमने इन कठिन परिस्थितियों में प्रतीक्षा की, तब तक जब तक कि हम भोजन न मिलने से लगभग खत्म ही होनेवाले थे।
- 8 परन्तु ऐसा हुआ कि हमने भोजन प्राप्त किया, जो कि हमारी सहायता के लिए उन दो हजार लोगों की सेना द्वारा लाया गया था जिन्हें हमारी सुरक्षा के लिए भेजा गया था; और यही वह सारा सहयोग था जिसे हमने स्वयं को बचाने के लिए प्राप्त किया था और इसलिए कि हम अपने देश को अपने शत्रुओं के हाथों में पड़ने से बचा सकें, हां, उस शत्रु से लड़ने के लिए जिनकी संख्या अनगिनत थी।

## Alma 58

And behold, now it came to pass that our next object was to obtain the city of Manti; but behold, there was no way that we could lead them out of the city by our small bands. For behold, they remembered that which we had hitherto done; therefore we could not decoy them away from their strongholds.

And they were so much more numerous than was our army that we durst not go forth and attack them in their strongholds.

Yea, and it became expedient that we should employ our men to the maintaining those parts of the land which we had regained of our possessions; therefore it became expedient that we should wait, that we might receive more strength from the land of Zarahemla and also a new supply of provisions.

And it came to pass that I thus did send an embassy to the governor of our land, to acquaint him concerning the affairs of our people. And it came to pass that we did wait to receive provisions and strength from the land of Zarahemla.

But behold, this did profit us but little; for the Lamanites were also receiving great strength from day to day, and also many provisions; and thus were our circumstances at this period of time.

And the Lamanites were sallying forth against us from time to time, resolving by stratagem to destroy us; nevertheless we could not come to battle with them, because of their retreats and their strongholds.

And it came to pass that we did wait in these difficult circumstances for the space of many months, even until we were about to perish for the want of food.

But it came to pass that we did receive food, which was guarded to us by an army of two thousand men to our assistance; and this is all the assistance which we did receive, to defend ourselves and our country from falling into the hands of our enemies, yea, to contend with an enemy which was innumerable.

- 9 और अब हमारी इन उलझनों का कारण, या उसका कारण कि उन्होंने हमारे लिए और बल क्यों नहीं भेजा, हम नहीं जानते थे; इसलिए हम दुखी थे और डरे हुए भी कि कहीं ऐसा न हो कि परमेश्वर का न्याय हमारे प्रदेश पर किसी भी प्रकार से आ जाए, जिसके कारण हमें पराजय और विनाश का मुंह देखना पड़े।
- 10 इसलिए हमने परमेश्वर से प्रार्थना में अपनी आत्माओं को उंडेल दिया, ताकि वह हमें मजबूती दे और हमें हमारे शत्रुओं के हाथों में पड़ने से बचा ले, हां, और हमें बल भी प्रदान करे ताकि हम अपने लोगों की सहायता के लिए अपने नगरों, अपने प्रदेशों, और अपनी संपत्तियों को संभालकर रख सकें।
- 11 हां, और ऐसा हुआ कि हमारा प्रभु परमेश्वर इस आश्वासन के साथ हमसे मिला कि वह हमें बचाएगा; हां, इतना अधिक आश्वासन दिया कि हमारी आत्माओं को शांति प्राप्त हुई, और हमें भारी विश्वास हुआ, और इसके कारण हमने अपने बचाव के लिए उसमें आशा रखी।
- 12 और जो छोटी सी सेना हमारे पास थी उससे हमें साहस मिला, और हम अपने शत्रुओं को परास्त करने में दृढ़ हुए, और अपने प्रदेश, और अपनी संपत्तियों, और अपनी पत्नियों और बच्चों, और अपनी स्वाधीनता को संभालकर रखने में दृढ़ हुए।
- 13 और इस प्रकार हम अपनी पूरी शक्ति से लमनाइयों का सामना करने गए, जो कि मण्टी के नगर में स्थित थे; और हमने निर्जन प्रदेश के किनारे अपने तंबू लगाए, जो नगर के पास ही था।
- 14 और ऐसा हुआ कि अगले दिन, जब लमनाइयों ने देखा कि हम नगर के नजदीक निर्जन प्रदेश से लगी सीमाओं में रह रहे हैं, तो उन्होंने हमारे चारों ओर अपने गुप्तचर भेज दिए ताकि वे हमारी सेना की संख्या और बल का पता लगा सकें।
- 15 और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने देखा कि हमारी संख्या छोटी थी जिसके कारण हम मजबूत नहीं थे और इस बात से डरते हुए कि हम उन्हें सहायता प्राप्त करने से रोक देंगे यदि वे हमसे युद्ध कर हमें मार नहीं डालते हैं, और यह भी मानते हुए कि अपनी असंख्य सेना की सहायता से वे हमें आसानी से खत्म कर सकते थे, तो वे हमसे युद्ध करने की तैयारी करने लगे।

And now the cause of these our embarrassments, or the cause why they did not send more strength unto us, we knew not; therefore we were grieved and also filled with fear, lest by any means the judgments of God should come upon our land, to our overthrow and utter destruction.

Therefore we did pour out our souls in prayer to God, that he would strengthen us and deliver us out of the hands of our enemies, yea, and also give us strength that we might retain our cities, and our lands, and our possessions, for the support of our people.

Yea, and it came to pass that the Lord our God did visit us with assurances that he would deliver us; yea, insomuch that he did speak peace to our souls, and did grant unto us great faith, and did cause us that we should hope for our deliverance in him.

And we did take courage with our small force which we had received, and were fixed with a determination to conquer our enemies, and to maintain our lands, and our possessions, and our wives, and our children, and the cause of our liberty.

And thus we did go forth with all our might against the Lamanites, who were in the city of Manti; and we did pitch our tents by the wilderness side, which was near to the city.

And it came to pass that on the morrow, that when the Lamanites saw that we were in the borders by the wilderness which was near the city, that they sent out their spies round about us that they might discover the number and the strength of our army.

And it came to pass that when they saw that we were not strong, according to our numbers, and fearing that we should cut them off from their support except they should come out to battle against us and kill us, and also supposing that they could easily destroy us with their numerous hosts, therefore they began to make preparations to come out against us to battle.

- 16 और जब हमने देखा कि वे हमसे युद्ध करने की तैयारी कर रहे थे, देखो, मैंने गिद को थोड़े से लोगों के साथ निर्जन प्रदेश में छिपने के लिए कहा, और यह भी चाहा कि टियमनर भी अपने थोड़े से लोगों के साथ जंगल में छिप जाए।
- 17 अब गिद और उसके लोग दाहिने तरफ थे और बाकी के लोग बा-र्यों ओर; और इस प्रकार जब उन्होंने अपने आपको छिपा लिया, देखो, मैं अपनी बची हुई सेना के साथ उसी जगह पर रुक गया जहां हमने सर्वप्रथम अपने तंबू लगाए थे कि लमनाई हमसे युद्ध करने वाले थे।
- 18 और ऐसा हुआ कि लमनाई अपनी असंख्य सेना के साथ हमसे युद्ध करने बाहर आए। और जब वे आए और लगभग अपनी तलवार से हम पर आक्रमण करने ही वाले थे, तो जो लोग मेरे साथ थे मैंने उन लोगों से कहा कि वे निर्जन प्रदेश में पीछे हट जाएं।
- 19 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों ने तेज गति से हमारा पीछा किया, क्योंकि वे हमसे आगे निकलना चाहते थे जिससे हमें मार सकें; इसलिए उन्होंने निर्जन प्रदेश में हमारा पीछा किया; और हम गिद और टियमनर के बीच से होकर निकल गए, इस तरह से कि लमनाइयों को इसका पता भी न चला।
- 20 और ऐसा हुआ कि जब लमनाई वहां से गुजरे, या जब सेना वहां से गुजरी, गिद और टियमनर अपने गुप्त स्थानों से बाहर निकले, और लमनाइयों के गुप्तचरों का रास्ता बंद कर दिया जिससे कि वे नगर में वापस न आ जाएं।
- 21 और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने उनका रास्ता बंद कर दिया तो वे नगर की ओर दौड़े और उन रक्षकों पर टूट पड़े जिन्हें नगर की सुरक्षा के लिए रखा गया था, वे इतने घातक थे कि उन्होंने उन्हें मार डाला और नगर पर अधिकार कर लिया।
- 22 अब ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि कुछ रक्षकों को छोड़कर लमनाइयों की पूरी सेना को दूर निर्जन प्रदेश में ले जाया गया था।
- 23 और ऐसा हुआ कि गिद और टियमनर ने इस तरह से उनके मजबूत किलों पर अधिकार कर लिया। और ऐसा हुआ कि हम निर्जन प्रदेश के रास्ते से होते हुए जराहेमला प्रदेश के अपने मार्ग पर चल दिए।

And when we saw that they were making preparations to come out against us, behold, I caused that Gid, with a small number of men, should secrete himself in the wilderness, and also that Teomner and a small number of men should secrete themselves also in the wilderness.

Now Gid and his men were on the right and the others on the left; and when they had thus secreted themselves, behold, I remained, with the remainder of my army, in that same place where we had first pitched our tents against the time that the Lamanites should come out to battle.

And it came to pass that the Lamanites did come out with their numerous army against us. And when they had come and were about to fall upon us with the sword, I caused that my men, those who were with me, should retreat into the wilderness.

And it came to pass that the Lamanites did follow after us with great speed, for they were exceedingly desirous to overtake us that they might slay us; therefore they did follow us into the wilderness; and we did pass by in the midst of Gid and Teomner, inso-much that they were not discovered by the Lamanites.

And it came to pass that when the Lamanites had passed by, or when the army had passed by, Gid and Teomner did rise up from their secret places, and did cut off the spies of the Lamanites that they should not return to the city.

And it came to pass that when they had cut them off, they ran to the city and fell upon the guards who were left to guard the city, insomuch that they did destroy them and did take possession of the city.

Now this was done because the Lamanites did suffer their whole army, save a few guards only, to be led away into the wilderness.

And it came to pass that Gid and Teomner by this means had obtained possession of their strongholds. And it came to pass that we took our course, after having traveled much in the wilderness towards the land of Zarahemla.

- 24 और जब लमनाइयों ने देखा कि वे जराहेमला प्रदेश की ओर जा रहे थे, तो वे अत्याधिक भयभीत हुए, कहीं ऐसा न हो कि उनके विनाश के लिए कोई योजना बनाई गई हो; इसलिए वे फिर से निर्जन प्रदेश की ओर खिसकने लगे, हां, यहां तक उसी रास्ते से वापस जाने लगे जहां से वे आए थे ।
- 25 और देखो, यह रात का समय था और उन्होंने अपना तंबू लगाया, क्योंकि लमनाइयों के मुख्य सेनापतियों का मानना था कि अधिक चलने के कारण नफाई थके हुए हैं; और यह मान रहे थे कि उन्होंने नफाइयों की पूरी सेना को खदेड़ दिया है इसलिए उन्होंने मण्टी नगर के बारे में नहीं सोचा ।
- 26 अब ऐसा हुआ कि जब रात हुई, मैंने अपने लोगों को सोने से मना कर दिया, परन्तु उन्हें दूसरे मार्ग से होते हुए मण्टी प्रदेश की तरफ जाना था ।
- 27 और रात के समय में हमारी इस यात्रा के कारण, देखो, अगले दिन हम लमनाइयों से इतना आगे निकल गए कि हम मण्टी नगर उनसे पहले पहुंच गए ।
- 28 और इस प्रकार ऐसा हुआ कि इस छल-कपट के द्वारा बिना रक्तपात किये हमने मण्टी नगर पर अधिकार कर लिया ।
- 29 और ऐसा हुआ कि जब लमनाइयों की सेनाएं नगर के नजदीक पहुंचीं, और देखा कि हम उनका सामना करने के लिए तैयार थे, वे बहुत आश्चर्यचकित हुए और वे अत्याधिक भयभीत हुए, इतना अधिक कि वे निर्जन प्रदेश में भाग गए ।
- 30 हां, और ऐसा हुआ कि लमनाइयों की सेनाएं प्रदेश के इस हिस्से से भाग खड़ी हुई । परन्तु देखो, वे बहुत सी स्त्रियों और बच्चों को अपने साथ प्रदेश के बाहर ले गए ।
- 31 और वे नगर जिन पर लमनाइयों का कब्जा था, इस समय उनमें से सारे हमारे अधिकार में थे; और हमारे पिता और हमारी पत्नियां और हमारे बच्चे अपने घरों को वापस आ रहे थे, केवल उन लोगों को छोड़कर जिन्हें लमनाई बंदी बनाकर अपने साथ ले गए थे ।
- 32 परन्तु देखो, हमारी सेनाएं इतने अधिक नगरों और इतने बड़े अधिकार-क्षेत्र को संभालकर रखने के लिए छोटी थीं ।
- 33 परन्तु देखो, हम अपने उस परमेश्वर में विश्वास करते हैं जिसके कारण हमें उन प्रदेशों पर विजय प्राप्ति हुई है, हमने उन नगरों और उन प्रदेशों पर अधिकार किया है जो कि हमारे अपने थे ।

And when the Lamanites saw that they were marching towards the land of Zarahemla, they were exceedingly afraid, lest there was a plan laid to lead them on to destruction; therefore they began to retreat into the wilderness again, yea, even back by the same way which they had come.

And behold, it was night and they did pitch their tents, for the chief captains of the Lamanites had supposed that the Nephites were weary because of their march; and supposing that they had driven their whole army therefore they took no thought concerning the city of Manti.

Now it came to pass that when it was night, I caused that my men should not sleep, but that they should march forward by another way towards the land of Manti.

And because of this our march in the night-time, behold, on the morrow we were beyond the Lamanites, insomuch that we did arrive before them at the city of Manti.

And thus it came to pass, that by this stratagem we did take possession of the city of Manti without the shedding of blood.

And it came to pass that when the armies of the Lamanites did arrive near the city, and saw that we were prepared to meet them, they were astonished exceedingly and struck with great fear, insomuch that they did flee into the wilderness.

Yea, and it came to pass that the armies of the Lamanites did flee out of all this quarter of the land. But behold, they have carried with them many women and children out of the land.

And those cities which had been taken by the Lamanites, all of them are at this period of time in our possession; and our fathers and our women and our children are returning to their homes, all save it be those who have been taken prisoners and carried off by the Lamanites.

But behold, our armies are small to maintain so great a number of cities and so great possessions.

But behold, we trust in our God who has given us victory over those lands, insomuch that we have obtained those cities and those lands, which were our own.

- 34 अब हम यह नहीं जानते हैं कि क्यों सरकार हमें अधिक बल नहीं देना चाहती है; न ही जो लोग हमारे साथ आए थे वे इस बात को जानते हैं कि क्यों हमने अधिक बल प्राप्त नहीं किया ।
- 35 देखो, हम इसकी बजाय और कुछ नहीं जानते हैं कि तुम असफल हुए हो, और तुमने प्रदेश के उस हिस्से से अपने सैन्यदलों को हटा लिया है; यदि ऐसा है, तो हम बड़बड़ाना नहीं चाहते ।
- 36 और यदि ऐसा नहीं है, देखो, हमें डर है कि सरकार में कुछ फूट पड़ी है, कि वे हमारी सहायता के लिए और लोगों को नहीं भेज रही है; क्योंकि हम जानते हैं कि जितने लोगों को भेजा गया था वे उससे कहीं अधिक संख्या में हैं ।
- 37 परन्तु, देखो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता—हमें विश्वास है कि परमेश्वर हमारी सेनाओं की कमजोरियों के बावजूद भी हमें बचाएगा, हां, और हमें हमारे शत्रुओं के हाथों में पड़ने से बचाएगा ।
- 38 देखो, यह उनतीसवां वर्ष का अंतिम भाग है, और हम अपने प्रदेश पर अधिकार किये हुए हैं; और लमनाई नफी के प्रदेश भाग गए हैं ।
- 39 और अम्मोन के लोगों के वे बेटे, जिनके विषय में मैंने बहुत बताया है, मेरे साथ मण्टी नगर में हैं; और प्रभु ने उनकी सहायता की है, हां, और उन्हें तलवारों द्वारा मरने से बचाया है, इतना अधिक उन्हें बचाया है कि एक भी व्यक्ति नहीं मारा गया ।
- 40 परन्तु देखो, उन्हें बहुत सी चोटें लगीं; फिर भी वे उस स्वीधीनता में दृढ़ थे जहां परमेश्वर ने उन्हें आजादी दी थी; और वे दिन-ब-दिन प्रभु अपने परमेश्वर को याद करने में सख्त हुए; हां, उन्होंने उसके नियमों का, उसके न्याय का, और उसकी आज्ञाओं का निरंतर पालन किया; और उस भविष्यवाणी में उनका विश्वास मजबूत हुआ जो कि पूरी होनेवाली थी ।
- 41 और अब, मेरे प्रिय भाई, मोरोनी, हमारा प्रभु परमेश्वर जिसने हमें मुक्ति दी है और हमें आजाद किया है, निरंतर तुम्हें अपनी उपस्थिति में रखे; हां, वह अपने लोगों पर अनुग्रह करे, यहां तक कि तुम उन सब पर अधिकार करने में सफलता प्राप्त करो जिसे लमनाइयों ने हमसे छीन लिया है, जो कि हमारी सहायता के लिए था । और अब, देखो, मैं अपना पत्र समाप्त करता हूं । मैं, अलमा का बेटा हिलामन हूं ।

Now we do not know the cause that the government does not grant us more strength; neither do those men who came up unto us know why we have not received greater strength.

Behold, we do not know but what ye are unsuccessful, and ye have drawn away the forces into that quarter of the land; if so, we do not desire to murmur.

And if it is not so, behold, we fear that there is some faction in the government, that they do not send more men to our assistance; for we know that they are more numerous than that which they have sent.

But, behold, it mattereth not—we trust God will deliver us, notwithstanding the weakness of our armies, yea, and deliver us out of the hands of our enemies.

Behold, this is the twenty and ninth year, in the latter end, and we are in the possession of our lands; and the Lamanites have fled to the land of Nephi.

And those sons of the people of Ammon, of whom I have so highly spoken, are with me in the city of Manti; and the Lord has supported them, yea, and kept them from falling by the sword, insomuch that even one soul has not been slain.

But behold, they have received many wounds; nevertheless they stand fast in that liberty wherewith God has made them free; and they are strict to remember the Lord their God from day to day; yea, they do observe to keep his statutes, and his judgments, and his commandments continually; and their faith is strong in the prophecies concerning that which is to come.

And now, my beloved brother, Moroni, may the Lord our God, who has redeemed us and made us free, keep you continually in his presence; yea, and may he favor this people, even that ye may have success in obtaining the possession of all that which the Lamanites have taken from us, which was for our support. And now, behold, I close mine epistle. I am Helaman, the son of Alma.

## अलमा 59

- 1 अब ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के तीसवें वर्ष में, जब मोरोनी ने हिलामन से पत्र प्राप्त किया और उसे पढ़ लिया, कल्याणकारी सहायता के कारण वह बहुत आनंदित हुआ, हां, उस अत्याधिक सफलता से जिसे हिलामन ने उन प्रदेशों पर अधिकार करके प्राप्त किया था जिसे वे हार चुके थे ।
- 2 हां, और वह जहां रह रहा था, उस भाग के चारों तरफ के अपने लोगों को उसने इस बात की जानकारी दी ताकि वे भी आनंदित हो सकें ।
- 3 और ऐसा हुआ कि उसने शीघ्र ही पहोरन को एक पत्र भेजा, इस बात की इच्छा व्यक्त करते हुए कि हिलामन को, या हिलामन की सेनाओं को मजबूत करने के लिए वह अपने लोगों को एकत्रित करे, इतनी अधिक संख्या में जिससे कि वह आसानी से प्रदेश के उस भाग को संभालकर रख सके जिसे उसने चमत्कारिक ढंग से पुनः प्राप्त किया है ।
- 4 और ऐसा हुआ कि जब मोरोनी ने इस पत्र को जराहेमला प्रदेश भेज दिया, उसने फिर से योजना बनानी शुरू कर दी जिससे कि वह बाकी की संपत्तियों और नगरों को अपने अधिकार में ले सके जिसे लमनाइयों ने उनसे छीन लिया था ।
- 5 और ऐसा हुआ कि जब मोरोनी लमनाइयों के विरुद्ध युद्ध करने की योजना बना रहा था, देखो, नफीहा के लोग, जो मोरोनी के नगर और लेही के नगर और मोरियण्टन के नगर से एकत्रित हुए थे, उन पर लमनाइयों ने आक्रमण कर दिया ।
- 6 हां, यहां तक कि प्रदेश के उस भाग में वे लोग आकर लमनाइयों के साथ हो गए जिन्हें मण्टी देश से, और उसके आसपास के प्रदेशों से भागने पर विवश किया गया था ।
- 7 और इस प्रकार उनकी संख्या बढ़ती गई, हां, और दिन-ब-दिन बल प्राप्त करते हुए, अम्मोरोन की आज्ञा से वे नफीहा के लोगों के विरुद्ध युद्ध करने आए, और उन्होंने अत्याधिक संख्या में लोगों की हत्या करनी शुरू कर दी ।
- 8 और उनकी सेना बहुत बड़ी थी जिसके कारण नफीहा के बाकी के लोग उनके सामने से भागने पर मजबूर हो गए; और वे आकर मोरोनी की सेना से जुड़ गए ।

## Alma 59

Now it came to pass in the thirtieth year of the reign of the judges over the people of Nephi, after Moroni had received and had read Helaman's epistle, he was exceedingly rejoiced because of the welfare, yea, the exceeding success which Helaman had had, in obtaining those lands which were lost.

Yea, and he did make it known unto all his people, in all the land round about in that part where he was, that they might rejoice also.

And it came to pass that he immediately sent an epistle to Pahoran, desiring that he should cause men to be gathered together to strengthen Helaman, or the armies of Helaman, insomuch that he might with ease maintain that part of the land which he had been so miraculously prospered in regaining.

And it came to pass when Moroni had sent this epistle to the land of Zarahemla, he began again to lay a plan that he might obtain the remainder of those possessions and cities which the Lamanites had taken from them.

And it came to pass that while Moroni was thus making preparations to go against the Lamanites to battle, behold, the people of Nephiah, who were gathered together from the city of Moroni and the city of Lehi and the city of Morianton, were attacked by the Lamanites.

Yea, even those who had been compelled to flee from the land of Manti, and from the land round about, had come over and joined the Lamanites in this part of the land.

And thus being exceedingly numerous, yea, and receiving strength from day to day, by the command of Ammoron they came forth against the people of Nephiah, and they did begin to slay them with an exceedingly great slaughter.

And their armies were so numerous that the remainder of the people of Nephiah were obliged to flee before them; and they came even and joined the army of Moroni.

- 9 और अब जब कि मोरोनी ने इस बात को मान लिया था कि नफीहा के नगर की देखभाल में लोगों की सहायता के लिए उस नगर में लोगों को भेजा गया होगा, और इस बात को जानते हुए कि नगर को लमनाइयों के हाथों से फिर से लेने की बजाय उसे उनके हाथों में पड़ने से बचाना आसान था, उसे लगा कि वे आसानी से नगर की देखभाल करेंगे ।
- 10 इसलिए उसने अपने सारे दलों को उन स्थानों पर स्थित किया जिस पर उसने फिर से अधिकार किया था ।
- 11 और अब, जब मोरोनी ने देखा कि नफीहा का नगर उसके हाथों से जा चुका है तो वह बहुत दुखी हुआ, और लोगों की दुष्टता के कारण संदेह करने लगा कि कहीं वे अपने भाइयों के हाथों में न पड़ गए हों ।
- 12 अब ऐसा ही उसके सारे मुख्य सेनापतियों के साथ था । उन्हें संदेह हुआ और लोगों की दुष्टता के कारण आश्चर्य भी, और ऐसा उन पर लमनाइयों की सफलता के कारण हुआ ।
- 13 और ऐसा हुआ कि देश की स्वतंत्रता की उपेक्षा करने के कारण, मोरोनी सरकार पर क्रोधित हो उठा ।

And now as Moroni had supposed that there should be men sent to the city of Nephiah, to the assistance of the people to maintain that city, and knowing that it was easier to keep the city from falling into the hands of the Lamanites than to retake it from them, he supposed that they would easily maintain that city.

Therefore he retained all his force to maintain those places which he had recovered.

And now, when Moroni saw that the city of Nephiah was lost he was exceedingly sorrowful, and began to doubt, because of the wickedness of the people, whether they should not fall into the hands of their brethren.

Now this was the case with all his chief captains. They doubted and marveled also because of the wickedness of the people, and this because of the success of the Lamanites over them.

And it came to pass that Moroni was angry with the government, because of their indifference concerning the freedom of their country.



## अलमा 60

- 1 और ऐसा हुआ कि उसने प्रदेश के शासक को, जो कि पहोरन था, फिर से लिखा, और ये वे शब्द हैं जिसे उसने लिखा: देखो, मैं जराहे-मला प्रदेश में, पहोरन को अपना पत्र भेज रहा हूँ, जो कि प्रदेश का मुख्य न्यायी और शासक है, और उन सब को भी भेज रहा हूँ जिन्हें लोगों ने इस युद्ध की कार्यवाहियों के शासन और प्रबंध के लिए चुना है।
- 2 क्योंकि देखो, निंदा करते हुए मुझे उनसे कुछ कहना है; क्योंकि देखो, तुम स्वयं जानते हो कि तुम्हें लोगों को एकत्रित करने, और उन्हें तलवारों, और कटारों, और युद्ध के हर प्रकार के हथियारों से सुसज्जित करने, और उन्हें लमनाइयों के विरुद्ध भेजने के लिए नियुक्त किया गया है, चाहे वे प्रदेश के किसी भी भाग में हम पर आक्रमण क्यों न करें।
- 3 और अब देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि मैंने, और मेरे लोगों ने भी, और हिलामन और उसके लोगों ने भी बहुत कष्ट सहा है; हां, यहां तक कि भूखमरी, प्यास, और थकान, और हर प्रकार के कष्ट झेले हैं।
- 4 परन्तु देखो, यदि हमने इतना ही सहा होता तो हम न ही बड़बड़ाते और न ही शिकायत करते।
- 5 परन्तु देखो, हमारे लोग भारी संख्या में मारे गए हैं; हां, हजारों की संख्या में लोगों को तलवारों से मारा गया है, जब कि ऐसा नहीं हुआ होता यदि तुमने हमारी सेनाओं को पर्याप्त मात्रा में बल और सहायता प्रदान की होती। हां, हमारे प्रति तुमने भारी उपेक्षा की है।
- 6 और अब देखो, हम इस भारी उपेक्षा का कारण जानना चाहते हैं; हां, तुम्हारी इस बेपरवाह दशा का कारण जानना चाहते हैं।
- 7 क्या तुम सोच सकते हो कि तुम अपनी इस बेपरवाह अचेतन दशा में अपनी राजगद्दियों पर बैठे रहोगे, जब कि तुम्हारे शत्रु तुम्हारे चारों ओर मृत्यु का प्रबंध कर रहे हैं? हां, जब कि वे तुम्हारे हजारों भाइयों की हत्या कर रहे हैं—
- 8 हां, यहां तक कि उन लोगों ने जिन्होंने तुम्हारी तरफ सुरक्षा के लिए देखा है, हां, तुम्हें ऐसी स्थिति में किया है ताकि तुम उनकी सहायता कर सको, हां, ताकि उन्हें बल देने के लिए तुम उनके पास सेना भेज सको, और हजारों की संख्या में लोगों को तलावर के घाट उतरने से बचा सको।

## Alma 60

And it came to pass that he wrote again to the governor of the land, who was Pahoran, and these are the words which he wrote, saying: Behold, I direct mine epistle to Pahoran, in the city of Zarahemla, who is the chief judge and the governor over the land, and also to all those who have been chosen by this people to govern and manage the affairs of this war.

For behold, I have somewhat to say unto them by the way of condemnation; for behold, ye yourselves know that ye have been appointed to gather together men, and arm them with swords, and with cimeters, and all manner of weapons of war of every kind, and send forth against the Lamanites, in whatsoever parts they should come into our land.

And now behold, I say unto you that myself, and also my men, and also Helaman and his men, have suffered exceedingly great sufferings; yea, even hunger, thirst, and fatigue, and all manner of afflictions of every kind.

But behold, were this all we had suffered we would not murmur nor complain.

But behold, great has been the slaughter among our people; yea, thousands have fallen by the sword, while it might have otherwise been if ye had rendered unto our armies sufficient strength and succor for them. Yea, great has been your neglect towards us.

And now behold, we desire to know the cause of this exceedingly great neglect; yea, we desire to know the cause of your thoughtless state.

Can you think to sit upon your thrones in a state of thoughtless stupor, while your enemies are spreading the work of death around you? Yea, while they are murdering thousands of your brethren—

Yea, even they who have looked up to you for protection, yea, have placed you in a situation that ye might have succored them, yea, ye might have sent armies unto them, to have strengthened them, and have saved thousands of them from falling by the sword.

- 9 परन्तु देखो, इतना ही नहीं—तुमने अपनी सामग्रियों को भी उन तक नहीं पहुंचने दिया, उनमें इन लोगों के कल्याण के लिए जो भारी इच्छा थी, उसके कारण कई लोगों ने युद्ध किया और अपनी जान दे दी; हां, और ऐसा उन्होंने तब किया जब उनके प्रति तुम्हारी इस भारी उपेक्षा के कारण लगभग वे भूख से मरने वाले थे ।
- 10 और अब, मेरे प्रिय भाइयों—क्योंकि तुम्हें प्रिय होना चाहिए; हां, और तुम्हें इन लोगों के कल्याण और स्वतंत्रता के लिए निष्ठापूर्वक अपने आपको लगाए रखना चाहिए था; परन्तु देखो, तुमने उनकी इतनी अधिक उपेक्षा की कि दंड के रूप में तुम्हारे सिर पर उन हजारों लोगों का लहू आएगा; हां, क्योंकि परमेश्वर उनकी चीख-पुकार और उनके सारे कष्टों को जानता है—
- 11 देखो, क्या तुमने ऐसा सोचा था कि तुम अपनी राज गद्दियों पर बैठे रहोगे, और परमेश्वर की अत्याधिक भलाई के कारण तुम कुछ भी नहीं करोगे और फिर भी बचाए जाओगे ? देखो, यदि तुमने ऐसा सोचा है तो तुम्हारा सोचना व्यर्थ है ।
- 12 क्या तुमने सोचा था कि तुम्हारे इतने सारे भाई अपनी दुष्टता के कारण मारे गए हैं ? मैं तुमसे कहता हूँ, यदि तुमने ऐसा सोचा है तो तुम्हारा सोचना व्यर्थ है; क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, कि कई लोग हैं जो तलवारों से मारे गए; और देखो यह तुम्हारे लिए निंदा की बात है;
- 13 क्योंकि प्रभु धर्मी लोगों को मरने देता है ताकि उसके इंसाफ में दुष्ट लोगों का न्याय हो सके; इसलिए तुम यह नहीं सोच सकते कि मारे जाने के कारण धर्मी लोगों का नाश हो गया; परन्तु देखो, उन्होंने प्रभु अपने परमेश्वर के आरामगाह में प्रवेश किया है ।
- 14 और अब देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, मैं बहुत डरा हुआ हूँ कि उनके अत्याधिक आलस्य के कारण परमेश्वर का न्याय इन लोगों पर आएगा, हां, यहां तक कि हमारे शासक, और उनके भाइयों के प्रति उनकी भारी उपेक्षा के कारण भी, हां, उन लोगों की अवहेलना के प्रति न्याय आएगा जो मारे गए हैं ।
- 15 क्योंकि दुष्टता जो सबसे पहले हमारे सिर पर सवार हुई, यदि नहीं हुई होती तो हम अपने शत्रुओं का सामना कर सकते थे और वे हम पर विजय प्राप्त नहीं कर पाते ।

But behold, this is not all—ye have withheld your provisions from them, insomuch that many have fought and bled out their lives because of their great desires which they had for the welfare of this people; yea, and this they have done when they were about to perish with hunger, because of your exceedingly great neglect towards them.

And now, my beloved brethren—for ye ought to be beloved; yea, and ye ought to have stirred yourselves more diligently for the welfare and the freedom of this people; but behold, ye have neglected them insomuch that the blood of thousands shall come upon your heads for vengeance; yea, for known unto God were all their cries, and all their sufferings—

Behold, could ye suppose that ye could sit upon your thrones, and because of the exceeding goodness of God ye could do nothing and he would deliver you? Behold, if ye have supposed this ye have supposed in vain.

Do ye suppose that, because so many of your brethren have been killed it is because of their wickedness? I say unto you, if ye have supposed this ye have supposed in vain; for I say unto you, there are many who have fallen by the sword; and behold it is to your condemnation;

For the Lord suffereth the righteous to be slain that his justice and judgment may come upon the wicked; therefore ye need not suppose that the righteous are lost because they are slain; but behold, they do enter into the rest of the Lord their God.

And now behold, I say unto you, I fear exceedingly that the judgments of God will come upon this people, because of their exceeding slothfulness, yea, even the slothfulness of our government, and their exceedingly great neglect towards their brethren, yea, towards those who have been slain.

For were it not for the wickedness which first commenced at our head, we could have withstood our enemies that they could have gained no power over us.

16 हां, यदि हम लोगों में आपसी युद्ध नहीं हुआ होता; हां, तो राजा के लोग हममें इतना रक्तपात नहीं करवाते; हां, एक समय पर हम आपस में ही लड़ रहे थे, यदि हमने स्वयं को मजबूत किया होता जैसा कि अब तक किया है; हां, तो राजा के उन लोगों ने हम पर सत्ता और अधिकार पाने की इच्छा न की होती; वे हमारी स्वतंत्रता के प्रति सच्चे रहते, और हमसे मिले रहते, हां, और हमारे विरुद्ध तलवार उठाने की बजाय वे हमारे शत्रुओं के विरुद्ध तलवार उठाते जिससे कि हमारे बीच इतना रक्तपात नहीं होता; हां, यदि हम प्रभु के बल में उनके विरुद्ध हुए होते, तो हम अपने शत्रुओं को भगा देते, क्योंकि ऐसा उसके वचन की परिपूर्णता के अनुसार हुआ होता ।

17 परन्तु देखो, अब लमनाई हमारे प्रदेश पर कब्जा करते हुए हम पर आक्रमण कर रहे हैं, और वे तलवारों से हमारे लोगों की हत्या कर रहे हैं, हां, हमारी स्त्रियों और हमारे बच्चों की, और उन्हें बंदी भी बनाकर ले जा रहे हैं, उन्हें हर प्रकार के कष्टों को झेलने पर मजबूर करते हुए, और ऐसा उन लोगों की महान दुष्टता के कारण हो रहा है जो सत्ता और अधिकार पाने का प्रयास कर रहे हैं, हां, उन राजा के लोगों के कारण भी हो रहा है ।

18 परन्तु मैं इस मामले से संबंधित इतना क्यों कहूँ ? क्योंकि हम नहीं जानते हैं परन्तु ऐसा तो नहीं कि तुम भी अधिकार पाने का प्रयास कर रहे हो । हम नहीं जानते हैं परन्तु कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम भी अपने देश के साथ विश्वासघात कर रहे हो ।

19 या फिर तुमने हमारी उपेक्षा इसलिए तो नहीं की है क्योंकि तुम हमारे देश के बीच में हो और सुरक्षित हो, जिसके कारण तुमने हमें भोजन नहीं भेजा, और हमारी सेनाओं को मजबूत करने के लिए लोगों को भी नहीं भेजा ?

20 क्या तुम प्रभु अपने परमेश्वर की आज्ञाओं को भूल गए हो ? हां, क्या तुम अपने पूर्वजों की दासता को भूल गए हो ? क्या तुम भूल गए हो कि हमें कई बार शत्रुओं के हाथों से बचाया गया है ?

21 या क्या तुम सोचते हो कि प्रभु हमें अब भी बचाएगा, जब कि प्रभु ने जो साधन हमें दिया है, हम उसका उपयोग न करते हुए अपनी राज गदियों पर बैठे रहें ?

22 हां, क्या तुम अब भी आलस्य में बैठे रहोगे जब कि तुम उन हजारों लोगों से घिरे हुए हो, हां, और हजारों की संख्या में लोग भी आलस्य में बैठे हैं, जब कि तुम्हारे आसपास प्रदेश की सीमाओं में हजारों की संख्या में वे लोग हैं जो तलावर के घाट उतारे जा रहे हैं, हां, चोटग्रस्त और लहलुहान हो रहे हैं ?

Yea, had it not been for the war which broke out among ourselves; yea, were it not for these king-men, who caused so much bloodshed among ourselves; yea, at the time we were contending among ourselves, if we had united our strength as we hitherto have done; yea, had it not been for the desire of power and authority which those king-men had over us; had they been true to the cause of our freedom, and united with us, and gone forth against our enemies, instead of taking up their swords against us, which was the cause of so much bloodshed among ourselves; yea, if we had gone forth against them in the strength of the Lord, we should have dispersed our enemies, for it would have been done, according to the fulfilling of his word.

But behold, now the Lamanites are coming upon us, taking possession of our lands, and they are murdering our people with the sword, yea, our women and our children, and also carrying them away captive, causing them that they should suffer all manner of afflictions, and this because of the great wickedness of those who are seeking for power and authority, yea, even those king-men.

But why should I say much concerning this matter? For we know not but what ye yourselves are seeking for authority. We know not but what ye are also traitors to your country.

Or is it that ye have neglected us because ye are in the heart of our country and ye are surrounded by security, that ye do not cause food to be sent unto us, and also men to strengthen our armies?

Have ye forgotten the commandments of the Lord your God? Yea, have ye forgotten the captivity of our fathers? Have ye forgotten the many times we have been delivered out of the hands of our enemies?

Or do ye suppose that the Lord will still deliver us, while we sit upon our thrones and do not make use of the means which the Lord has provided for us?

Yea, will ye sit in idleness while ye are surrounded with thousands of those, yea, and tens of thousands, who do also sit in idleness, while there are thousands round about in the borders of the land who are falling by the sword, yea, wounded and bleeding?

- 23 क्या तुम सोचते हो कि परमेश्वर तुम्हें निर्दोष ठहराएगा जब कि तुम बिना काम किये बैठे रहोगे और इन चीजों को देखते रहोगे ? मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं । अब मैं चाहूँगा कि तुम याद रखो कि परमेश्वर ने कहा है कि सबसे पहले बर्तन का भीतरी भाग साफ करना चाहिए, और तब बर्तन के बाहरी भाग को साफ करना चाहिए ।
- 24 और अब, जो कुछ भी तुमने किया है यदि उसका पश्चाताप नहीं करते हो, और उठकर काम नहीं करते हो, और हमारे, और हिलामन के लिए भी भोजन सामग्रियों और लोगों को नहीं भेजते हो जिससे कि वे देश के उन भागों को संभाल सके जिसे उसने पुनः प्राप्त किया है, और यह कि हम भी उन भागों की अपनी बची हुई संपत्तियों को फिर से प्राप्त कर सकें, देखो हमारे लिए यही उचित होगा कि हम लमनाइयों से तब तक न लड़े जब तक कि हम पहले अपने बर्तन के भीतरी भाग को साफ न कर लें, हाँ, यहाँ तक कि अपनी सरकार के बड़े अधिकारियों को भी ।
- 25 और यदि मेरे पत्र के अनुसार तुम कार्य नहीं करते हो, और बाहर आकर मुझे स्वतंत्रता की सच्ची आत्मा नहीं दिखाते हो, और हमारी सेनाओं को मजबूत और सशक्त करने का प्रयास नहीं करते हो, और उनकी सहायता के लिए उन्हें भोजन सामग्रियाँ नहीं देते हो, देखो मैं अपने कुछ स्वतंत्र लोगों को प्रदेश के उस भाग की देखभाल के लिए भेज दूँगा, और मैं उन्हें परमेश्वर का बल और आशीष दूँगा, जिससे कि कोई और शक्ति उनके विरुद्ध कार्य न कर सके ।
- 26 और ऐसा उनके अत्याधिक विश्वास, और उनके कष्टों में उनके धैर्य के कारण है—
- 27 और मैं तुम्हारे पास आऊँगा, और यदि तुममें कोई ऐसा है जो स्वतंत्रता चाहता हो, हाँ, यदि स्वतंत्रता की एक भी किरण बची हो, देखो मैं तुम्हारे बीच में विद्रोह करवाऊँगा, ऐसा तब तक होगा जब तक कि वे लोग सदा के लिए नष्ट न हो जाएँ जो सत्ता और अधिकार छीनना चाहते हैं ।
- 28 हाँ, देखो न तो मैं तुम्हारी सत्ता से डरता हूँ और न ही तुम्हारे अधिकार से, परन्तु मैं अपने परमेश्वर से डरता हूँ; और ऐसा उसकी आज्ञाओं के अनुसार ही है कि मैं अपने देश की रक्षा के लिए तलवार उठाता हूँ, और ऐसा तुम्हारे उस अधर्म के कारण भी है जिससे हमें बहुत नुकसान हुआ है ।
- 29 देखो यही वह समय है, हाँ, अब समय आ गया है कि यदि अपने देश, और अपने नन्हें बच्चों की रक्षा के लिए तुम स्वयं प्रेरित नहीं होते हो, न्याय की तलवार तुमपर लटक रही है; हाँ, और वह तुम पर गिर जाएगी और तुम्हारा विनाश कर देगी ।

Do ye suppose that God will look upon you as guiltless while ye sit still and behold these things? Behold I say unto you, Nay. Now I would that ye should remember that God has said that the inward vessel shall be cleansed first, and then shall the outer vessel be cleansed also.

And now, except ye do repent of that which ye have done, and begin to be up and doing, and send forth food and men unto us, and also unto Helaman, that he may support those parts of our country which he has regained, and that we may also recover the remainder of our possessions in these parts, behold it will be expedient that we contend no more with the Lamanites until we have first cleansed our inward vessel, yea, even the great head of our government.

And except ye grant mine epistle, and come out and show unto me a true spirit of freedom, and strive to strengthen and fortify our armies, and grant unto them food for their support, behold I will leave a part of my freemen to maintain this part of our land, and I will leave the strength and the blessings of God upon them, that none other power can operate against them—

And this because of their exceeding faith, and their patience in their tribulations—

And I will come unto you, and if there be any among you that has a desire for freedom, yea, if there be even a spark of freedom remaining, behold I will stir up insurrections among you, even until those who have desires to usurp power and authority shall become extinct.

Yea, behold I do not fear your power nor your authority, but it is my God whom I fear; and it is according to his commandments that I do take my sword to defend the cause of my country, and it is because of your iniquity that we have suffered so much loss.

Behold it is time, yea, the time is now at hand, that except ye do bestir yourselves in the defence of your country and your little ones, the sword of justice doth hang over you; yea, and it shall fall upon you and visit you even to your utter destruction.

- 30 देखो, मैं तुमसे सहायता की प्रतीक्षा कर रहा हूँ; और, यदि तुमने हमारे लिए सहायता नहीं भेजी, देखो, मैं तुम्हारे पास जराहेमला प्रदेश तक चला आऊंगा, और तुम लोगों को तलवार से इतना अधिक मारूंगा कि हमारी स्वतंत्रता के प्रति इन लोगों की प्रगति में तुम बाधा नहीं बन सकते ।
- 31 क्योंकि देखो, प्रभु नहीं चाहेगा कि उसके धर्मी लोगों के विनाश के लिए तुम अधर्म में जीओ और उसी में फलो-फूलो ।
- 32 देखो, क्या तुम मान सकते हो कि प्रभु तुम्हें छोड़ देगा और लमनाइयों के विरुद्ध न्याय करेगा, जब कि उनके पूर्वजों की परंपरा ही है जिसके कारण उनमें ईर्ष्या पैदा हुई, हां, और इसे उन लोगों ने दुगुना कर दिया जिन्होंने हमसे मतभेद किया, जब कि तुम्हारा अधर्म गौरव और संसार के व्यर्थ की चीजों को पाने के लिए है ?
- 33 तुम जानते हो कि तुमने परमेश्वर के नियम का उल्लंघन किया है, और तुम जानते हो कि तुम उन्हें अपने पैरों तले रौंदते हो । देखो, प्रभु ने मुझसे कहा है: यदि वे लोग अपने पापों और अधर्मों के लिए पश्चात्ताप नहीं करते हैं जिन्हें तुमने अपना राज्यपाल नियुक्त किया है, तुम उनके विरुद्ध युद्ध करोगे ।
- 34 और अब देखो, मैं, मोरोनी, अपने परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के अपने अनुबंध के तहत मजबूर हूँ: इसलिए, मैं चाहूंगा कि तुम परमेश्वर के वचन में लगे रहो, और मेरे और हिलामन के लिए शीघ्रता से भोजन सामग्रियों और अपने लोगों को भेजो ।
- 35 और देखो, यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं शीघ्रता से तुम्हारे पास आऊंगा; क्योंकि देखो, परमेश्वर नहीं चाहेगा कि हम भूख से मर जाएं; इसलिए वह हमें तुम्हारा भोजन देगा, चाहे वह तलवार के बल पर ही क्यों न हो । अब देखना कि तुम परमेश्वर का वचन पूरा कर सको ।
- 36 देखो, मैं मोरोनी, तुम्हारा मुख्य सेनापति हूँ । मैं सत्ता नहीं चाहता परन्तु उसे अलग करना चाहता हूँ । मैं संसार का गौरव नहीं, परन्तु अपने परमेश्वर की महिमा, और अपने देश की स्वतंत्रता और उसका कल्याण चाहता हूँ । और इस प्रकार मैं अपना पत्र समाप्त करता हूँ ।

Behold, I wait for assistance from you; and, except ye do administer unto our relief, behold, I come unto you, even in the land of Zarahemla, and smite you with the sword, insomuch that ye can have no more power to impede the progress of this people in the cause of our freedom.

For behold, the Lord will not suffer that ye shall live and wax strong in your iniquities to destroy his righteous people.

Behold, can you suppose that the Lord will spare you and come out in judgment against the Lamanites, when it is the tradition of their fathers that has caused their hatred, yea, and it has been redoubled by those who have dissented from us, while your iniquity is for the cause of your love of glory and the vain things of the world?

Ye know that ye do transgress the laws of God, and ye do know that ye do trample them under your feet. Behold, the Lord saith unto me: If those whom ye have appointed your governors do not repent of their sins and iniquities, ye shall go up to battle against them.

And now behold, I, Moroni, am constrained, according to the covenant which I have made to keep the commandments of my God; therefore I would that ye should adhere to the word of God, and send speedily unto me of your provisions and of your men, and also to Helaman.

And behold, if ye will not do this I come unto you speedily; for behold, God will not suffer that we should perish with hunger; therefore he will give unto us of your food, even if it must be by the sword. Now see that ye fulfil the word of God.

Behold, I am Moroni, your chief captain. I seek not for power, but to pull it down. I seek not for honor of the world, but for the glory of my God, and the freedom and welfare of my country. And thus I close mine epistle.

## अलमा 61

- 1 देखो, अब ऐसा हुआ कि मुख्य राज्यपाल को मोरोनी द्वारा पत्र भेजे जाने के शीघ्र पश्चात्, उसने मुख्य राज्यपाल पहोरन से एक पत्र प्राप्त किया। और ये वे शब्द हैं जो उसने प्राप्त किये:
- 2 मैं, पहोरन, इस प्रदेश का मुख्य राज्यपाल हूँ, मुख्य सेनापति मोरोनी को ये पत्र भेजता हूँ। देखो, मोरोनी, मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हारे महान कष्टों से मुझे प्रसन्नता नहीं होती है, हां, यह मेरी आत्मा को दुख देता है।
- 3 परन्तु देखो, ऐसे लोग भी हैं जिन्हें तुम्हारे कष्टों से प्रसन्नता होती है, हां, इतना अधिक कि वे मेरे खिलाफ विद्रोह करने लगे हैं, और मेरे उन लोगों के खिलाफ भी जो स्वतंत्र लोग हैं, हां, और विद्रोहियों की संख्या बहुत है।
- 4 और ये वही लोग हैं जिन्होंने मुझसे न्याय-आसन छीनना चाहा है जो कि इस महान अधर्म का कारण रहा है; क्योंकि उन्होंने चापलूसी की है, और बहुत से लोगों को बहकाया है, जो कि हमारे बीच अत्यंत दुख का कारण होगा; उन्होंने हमारे भोजन सामग्रियों को रोका है, और हमारे स्वतंत्र लोगों को धमकाया है जिससे कि वे तुम्हारे पास न आ सकें।
- 5 और देखो, उन्होंने अपने सामने से मुझे खदेड़ दिया है, और जितना संभव हो सका उतने लोगों के साथ मैं भागकर गिदोन प्रदेश आ गया।
- 6 और देखो, मैंने प्रदेश के इस पूरे भाग में एक घोषणा करवाई; और देखो, अपने प्रदेश और अपनी स्वतंत्रता को बचाने के लिए और हमारे साथ हुए अन्याय का बदला लेने के लिए वे प्रतिदिन अपने अस्त्र-शस्त्रों के साथ हमारी सहायता के लिए आ रहे हैं।
- 7 और वे हमारे पास इतनी अधिक संख्या में आ गए हैं कि वे उन लोगों को ललकारने लगे हैं जिन्होंने हमसे विद्रोह किया था, हां, इतना अधिक कि वे हमसे डरने लगे हैं और हमारे विरुद्ध युद्ध करने का साहस नहीं कर रहे हैं।

## Alma 61

Behold, now it came to pass that soon after Moroni had sent his epistle unto the chief governor, he received an epistle from Pahoran, the chief governor. And these are the words which he received:

I, Pahoran, who am the chief governor of this land, do send these words unto Moroni, the chief captain over the army. Behold, I say unto you, Moroni, that I do not joy in your great afflictions, yea, it grieves my soul.

But behold, there are those who do joy in your afflictions, yea, insomuch that they have risen up in rebellion against me, and also those of my people who are freemen, yea, and those who have risen up are exceedingly numerous.

And it is those who have sought to take away the judgment-seat from me that have been the cause of this great iniquity; for they have used great flattery, and they have led away the hearts of many people, which will be the cause of sore affliction among us; they have withheld our provisions, and have daunted our freemen that they have not come unto you.

And behold, they have driven me out before them, and I have fled to the land of Gideon, with as many men as it were possible that I could get.

And behold, I have sent a proclamation throughout this part of the land; and behold, they are flocking to us daily, to their arms, in the defence of their country and their freedom, and to avenge our wrongs.

And they have come unto us, insomuch that those who have risen up in rebellion against us are set at defiance, yea, insomuch that they do fear us and durst not come out against us to battle.

- 8 उन्होंने जराहेमला के प्रदेश, या नगर, कब्जा कर लिया है; उन्होंने अपने लिए एक राजा नियुक्त किया है, और उसने लमनाइयों के राजा को पत्र लिखकर, उससे समझौता कर लिया है, जिसमें उसने जराहेमला नगर को अपने पास रखने की बात को स्वीकार किया है, जिसके कारण उसे लगता है कि लमनाई देश के बाकी प्रदेश पर भी कब्जा कर लेंगे, और जब वे लमनाइयों के अधीन हो जाएंगे तब उसे इन लोगों का राजा बना दिया जाएगा।
- 9 और अब, तुमने अपने पत्र में मुझ पर दोष लगाया है, परन्तु इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; मैं क्रोधित नहीं हूँ, परन्तु तुम्हारे हृदय की महानता में आनंदित हूँ। मैं, पओरन, अपने न्याय-आसन को छोड़कर सत्ता नहीं चाहता हूँ ताकि मैं अपने लोगों के अधिकार और स्वाधीनता को बचा सकूँ। मेरी आत्मा उस स्वाधीनता में स्थिर है जिसके तहत परमेश्वर ने हमें आजाद किया है।
- 10 और अब, देखो, चाहे लहू बहाना पड़े तब भी हम दुष्टता का सामना करेंगे। यदि लमनाई अपनी भूमि पर रहते हैं तो हम उनका लहू नहीं बहाएंगे।
- 11 यदि हमारे भाई हमसे विद्रोह नहीं करेंगे और हमारे विरुद्ध तलवार नहीं उठाएंगे तो हम उनका लहू नहीं बहाएंगे।
- 12 हम अपने आपको दासता के अधीन कर लेंगे यदि परमेश्वर के न्याय के लिए यह आवश्यक हो, या यदि वह हमें ऐसा करने की आज्ञा दे।
- 13 परन्तु देखो उसने हमें आज्ञा नहीं दी है कि हम अपने आपको अपने शत्रुओं के हवाले कर दें, परन्तु हमें उसमें विश्वास रखना चाहिए, और वह हमें बचाएगा।
- 14 इसलिए, मेरे प्रिय भाई, मोरोनी, हमें बुराई का सामना करने दो, और जिस बुराई का सामना हम अपनी बातों से नहीं कर सकते हैं, हां, जैसे कि विद्रोह और मतभेद, तो हमें उनका सामना अपनी तलवार से करने दो, ताकि हम अपनी स्वतंत्रता को संभाल सकें, ताकि हम अपने गिरजे के महान सौभाग्य में, और अपने मुक्तिदाता और परमेश्वर में आनंदित हो सकें।
- 15 इसलिए, शीघ्रता से मेरे पास अपने कुछ लोगों को लेकर आ जाओ, और बाकी बचे लोगों को लेही और टियंकम की देखरेख में वहीं रहने दो; परमेश्वर की आत्मा के अनुसार, उन्हें प्रदेश के उस भाग में युद्ध के संचालन का अधिकार दे दो, जो स्वतंत्रता की आत्मा भी है जो कि उनमें विरजामान है।

They have got possession of the land, or the city, of Zarahemla; they have appointed a king over them, and he hath written unto the king of the Lamanites, in the which he hath joined an alliance with him; in the which alliance he hath agreed to maintain the city of Zarahemla, which maintenance he supposeth will enable the Lamanites to conquer the remainder of the land, and he shall be placed king over this people when they shall be conquered under the Lamanites.

And now, in your epistle you have censured me, but it mattereth not; I am not angry, but do rejoice in the greatness of your heart. I, Pahoran, do not seek for power, save only to retain my judgment-seat that I may preserve the rights and the liberty of my people. My soul standeth fast in that liberty in the which God hath made us free.

And now, behold, we will resist wickedness even unto bloodshed. We would not shed the blood of the Lamanites if they would stay in their own land.

We would not shed the blood of our brethren if they would not rise up in rebellion and take the sword against us.

We would subject ourselves to the yoke of bondage if it were requisite with the justice of God, or if he should command us so to do.

But behold he doth not command us that we shall subject ourselves to our enemies, but that we should put our trust in him, and he will deliver us.

Therefore, my beloved brother, Moroni, let us resist evil, and whatsoever evil we cannot resist with our words, yea, such as rebellions and dissensions, let us resist them with our swords, that we may retain our freedom, that we may rejoice in the great privilege of our church, and in the cause of our Redeemer and our God.

Therefore, come unto me speedily with a few of your men, and leave the remainder in the charge of Lehi and Teancum; give unto them power to conduct the war in that part of the land, according to the Spirit of God, which is also the spirit of freedom which is in them.

- 16 देखो मैंने उनके लिए कुछ सामग्रियां भेजी हैं, ताकि तुम्हारे मेरे पास आने तक वे नष्ट न हो जाएं ।
- 17 यहां पर आते समय जितना हो सके उतने सैन्यदलों को एकत्रित करो, और हममें जो विश्वास है उसके अनुसार अपने परमेश्वर के बल में, हम उन मतभेदियों के खिलाफ शीघ्रता से कार्यवाही करेंगे ।
- 18 और हम जराहेमला नगर पर अधिकार कर लेंगे, ताकि हम लेही और टियंकम को भेजने के लिए और भोजन प्राप्त कर सकें; हां, हम प्रभु के बल में उन पर आक्रमण करेंगे, और इस महान अधर्म का अंत करेंगे ।
- 19 और अब, मोरोनी, मैं तुम्हारे पत्र के कारण प्रसन्न हूं, क्योंकि मैं थोड़ा बहुत चिन्तित था कि हमें क्या करना चाहिए, क्या अपने ही भाइयों के खिलाफ जाना उचित है ।
- 20 परन्तु तुमने कहा है, यदि वे पश्चाताप नहीं करते हैं तो प्रभु ने आज्ञा दी है कि तुम्हें उनके विरुद्ध जाना चाहिए ।
- 21 देखो कि तुम लेही और टियंकम को प्रभु में मजबूत करो; उनसे कहो कि वे न डरें, क्योंकि परमेश्वर उन्हें बचाएगा, हां, और वे लोग भी न डरें जो उस स्वाधीनता में दृढ़ हैं जहां परमेश्वर ने उन्हें आजाद किया है । और अब मैं अपने प्रिय भाई, मोरोनी के लिए अपना पत्र समाप्त करता हूं ।

Behold I have sent a few provisions unto them, that they may not perish until ye can come unto me.

Gather together whatsoever force ye can upon your march hither, and we will go speedily against those dissenters, in the strength of our God according to the faith which is in us.

And we will take possession of the city of Zarahemla, that we may obtain more food to send forth unto Lehi and Teancum; yea, we will go forth against them in the strength of the Lord, and we will put an end to this great iniquity.

And now, Moroni, I do joy in receiving your epistle, for I was somewhat worried concerning what we should do, whether it should be just in us to go against our brethren.

But ye have said, except they repent the Lord hath commanded you that ye should go against them.

See that ye strengthen Lehi and Teancum in the Lord; tell them to fear not, for God will deliver them, yea, and also all those who stand fast in that liberty wherewith God hath made them free. And now I close mine epistle to my beloved brother, Moroni.



## अलमा 62

- 1 और अब ऐसा हुआ कि जब मोरोनी ने इस पत्र को प्राप्त किया तब उसके मन में साहस आया, और पहोरन की विश्वसनीयता के कारण वह अत्याधिक प्रसन्नता से भर गया, कि वह भी स्वतंत्रता और देश के प्रति विद्रोही नहीं था ।
- 2 परन्तु उसने उन लोगों के अधर्म के कारण शोक भी मनाया जिन्होंने पहोरन को न्याय-आसन से हटा दिया था, हां, उन लोगों के कारण जिन्होंने अपने देश और अपने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया था ।
- 3 और ऐसा हुआ कि पहोरन की इच्छानुसार, मोरोनी ने अपने साथ कुछ लोगों को लिया, और अपनी सेना के बाकी लोगों को लेही और टियंकम के हवाले कर दिया, और गिदोन प्रदेश की तरफ अपनी यात्रा आरंभ कर दी ।
- 4 और जहां पर भी उसने प्रवेश किया वहां पर स्वाधीनता का झंडा खड़ा कर दिया, और गिदोन प्रदेश की अपनी यात्रा में जितना भी सैन्यदल वह एकत्रित कर सकता था, उसने किया ।
- 5 और ऐसा हुआ कि हजारों लोग उसके झंडे के पास एकत्रित हुए, और अपनी स्वतंत्रता को बचाने के लिए तलवार उठाई, ताकि वे दासता में न पड़ जाएं ।
- 6 और इस प्रकार, अपनी पूरी यात्रा में जब उसने लोगों को एकत्रित कर लिया, तो वह गिदोन प्रदेश आया; और अपने सैन्यदलों को पहोरन के लोगों के साथ मिलाया जिससे वे अत्याधिक मजबूत हो गए, यहां तक कि पाकुस के लोगों से भी अधिक जो कि उन मतभेदियों का राजा था जिसने जराहेमला प्रदेश से स्वतंत्र लोगों को खदेड़ दिया था और उस पर कब्जा कर लिया था ।
- 7 और ऐसा हुआ कि मोरोनी और पहोरन अपनी सेनाओं के साथ जराहेमला प्रदेश गए, और नगर के सामने पहुंचे, और पाकुस के लोगों का सामना किया, इतना अधिक कि उन्होंने आक्रमण कर दिया ।
- 8 और देखो, पाकुस मारा गया और उसके लोगों को बंदी बना लिया गया, और पहोरन फिर से न्याय-आसन पर बैठ गया ।

## Alma 62

And now it came to pass that when Moroni had received this epistle his heart did take courage, and was filled with exceedingly great joy because of the faithfulness of Pahoran, that he was not also a traitor to the freedom and cause of his country.

But he did also mourn exceedingly because of the iniquity of those who had driven Pahoran from the judgment-seat, yea, in fine because of those who had rebelled against their country and also their God.

And it came to pass that Moroni took a small number of men, according to the desire of Pahoran, and gave Lehi and Teancum command over the remainder of his army, and took his march towards the land of Gideon.

And he did raise the standard of liberty in whatsoever place he did enter, and gained whatsoever force he could in all his march towards the land of Gideon.

And it came to pass that thousands did flock unto his standard, and did take up their swords in the defence of their freedom, that they might not come into bondage.

And thus, when Moroni had gathered together whatsoever men he could in all his march, he came to the land of Gideon; and uniting his forces with those of Pahoran they became exceedingly strong, even stronger than the men of Pachus, who was the king of those dissenters who had driven the freemen out of the land of Zarahemla and had taken possession of the land.

And it came to pass that Moroni and Pahoran went down with their armies into the land of Zarahemla, and went forth against the city, and did meet the men of Pachus, insomuch that they did come to battle.

And behold, Pachus was slain and his men were taken prisoners, and Pahoran was restored to his judgment-seat.

- 9 और नियम के अनुसार पाकुस के लोगों पर सुनवाई हुई, और राजा के उन लोगों पर भी जिन्हें पकड़कर बंदीगृह में डाल दिया गया था; हां, और पाकुस और राजा के लोगों पर नियम के अनुसार कार्यवाही हुई, जिसने भी अपने देश की सुरक्षा में हथियार नहीं उठाया, बल्कि उसके विरुद्ध लड़ाई की तो उन्हें मृत्यु के घाट उतार दिया गया ।
- 10 और इस प्रकार यह आवश्यक हो गया कि उनके देश की सुरक्षा के लिए इस नियम का सख्ती से पालन हो; हां, और जो कोई भी अपनी स्वतंत्रता को अस्वीकार करते हुए पाया जाता उसे शीघ्रता से नियम के अनुसार मार दिया जाता ।
- 11 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का तीसवां वर्ष समाप्त हुआ; और मोरोनी और पहोरन ने स्वतंत्रता के प्रति सच्चे न रहनेवाले लोगों को समाप्त कर जराहेमला प्रदेश में, और अपने लोगों में शांति स्थापित की ।
- 12 और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के इकतीसवें वर्ष के आरंभ में, मोरोनी ने शीघ्रता से सामग्रियों को भिजवाया, और प्रदेश के उस भाग की सुरक्षा में हिलामन की सहायता के लिए उसके पास छह हजार लोगों की एक सेना भी भिजवाई ।
- 13 और उसने पर्याप्त मात्रा में भोजन सामग्री के साथ छह हजार लोगों की एक सेना को लेही और टियंकम की सेनाओं के पास भी भेजा । और ऐसा हुआ कि लमनाइयों के विरुद्ध प्रदेश की किलाबंदी करने के लिए ऐसा किया गया ।
- 14 और ऐसा हुआ कि जराहेमला प्रदेश में लोगों की भारी संख्या को छोड़ते हुए, एक बड़ी सेना के साथ मोरोनी और पहोरन ने नफीहा प्रदेश की अपना यात्रा आरंभ की, उस नगर में लमनाइयों को पराजित करने का दृढ़ निश्चय करते हुए ।
- 15 और ऐसा हुआ कि जब वे प्रदेश की तरफ यात्रा कर रहे थे, उन्होंने लमनाइयों के बहुत से लोगों को अपने साथ ले लिया, और उनमें से कई लोगों को मार डाला, और उनकी भोजन सामग्रियों और युद्ध के उनके हथियारों को ले लिया ।
- 16 और ऐसा हुआ कि उन्हें पकड़ लेने के पश्चात, उन्होंने उन्हें एक अनुबंध में प्रवेश करने के लिए कहा कि अब वे युद्ध के अपने हथियार नफाइयों के विरुद्ध नहीं उठाएंगे ।

And the men of Pachus received their trial, according to the law, and also those king-men who had been taken and cast into prison; and they were executed according to the law; yea, those men of Pachus and those king-men, whosoever would not take up arms in the defence of their country, but would fight against it, were put to death.

And thus it became expedient that this law should be strictly observed for the safety of their country; yea, and whosoever was found denying their freedom was speedily executed according to the law.

And thus ended the thirtieth year of the reign of the judges over the people of Nephi; Moroni and Pahoran having restored peace to the land of Zarahemla, among their own people, having inflicted death upon all those who were not true to the cause of freedom.

And it came to pass in the commencement of the thirty and first year of the reign of the judges over the people of Nephi, Moroni immediately caused that provisions should be sent, and also an army of six thousand men should be sent unto Helaman, to assist him in preserving that part of the land.

And he also caused that an army of six thousand men, with a sufficient quantity of food, should be sent to the armies of Lehi and Teancum. And it came to pass that this was done to fortify the land against the Lamanites.

And it came to pass that Moroni and Pahoran, leaving a large body of men in the land of Zarahemla, took their march with a large body of men towards the land of Nephiah, being determined to overthrow the Lamanites in that city.

And it came to pass that as they were marching towards the land, they took a large body of men of the Lamanites, and slew many of them, and took their provisions and their weapons of war.

And it came to pass after they had taken them, they caused them to enter into a covenant that they would no more take up their weapons of war against the Nephites.

- 17 और जब उन्होंने इस अनुबंध में प्रवेश कर लिया तब उन्हें अम्मोन के लोगों को साथ रहने के लिए भेज दिया गया, और जिन्हें नहीं मारा गया था उनकी संख्या लगभग चार हजार थी ।
- 18 और ऐसा हुआ कि उन लोगों को वहां भेज देने के पश्चात उन्होंने नफीहा प्रदेश की अपना यात्रा को जारी रखा । और ऐसा हुआ कि जब वे नफीहा के नगर पहुंचे, उन्होंने नफीहा के मैदानों पर अपना तंबू लगाए, जो कि नफीहा नगर के पास ही था ।
- 19 अब मोरोनी चाहता था कि मैदानों पर लमनाई आकर उनके विरुद्ध युद्ध करें; परन्तु लमनाई उनके अत्याधिक हिम्मत, और उनकी बड़ी संख्या के बारे में जानते थे, इसलिए उन्होंने उन पर आक्रमण करने का साहस नहीं किया; इसलिए उस दिन वे उनसे युद्ध करने नहीं आए ।
- 20 और जब रात हुई, मोरोनी रात के अंधेरे में गया, और इस बात का भेद जानने के लिए वह दीवार के ऊपरी हिस्से पर चढ़ गया कि नगर के कौन से भाग में लमनाइयों ने अपनी सेना के साथ शिविर लगाया है ।
- 21 और ऐसा हुआ कि वे प्रवेश मार्ग के पूर्व में थे; और वे सब सो रहे थे । और अब मोरोनी अपनी सेना के पास वापस आ गया, और दीवार के ऊपरी हिस्से से दीवार के अन्दरवाले भाग में नीचे लटकाने के लिए, उनसे फूर्ती से मजबूत रस्सियां और सीढ़ियां तैयार करवाई ।
- 22 और ऐसा हुआ कि मोरोनी ने अपने लोगों से आगे बढ़ने और दीवार के ऊपरी हिस्से पर चढ़ने के लिए कहा, और उन्हें नगर के उस भाग में नीचे उतरने के लिए कहा, हां, पश्चिम में, जहां लमनाइयों ने अपनी सेनाओं के साथ शिविर नहीं लगाया था ।
- 23 और ऐसा हुआ कि रात को अपनी मजबूत रस्सियों और अपनी सीढ़ियों के द्वारा वे सब नगर में उतर गए; इस प्रकार जब सुबह हुई वे सब नगर की चार दीवारी के भीतर थे ।
- 24 और अब, जब लमनाई जागे और देखा कि मोरोनी की सेनाएं दीवार के भीतर थीं, वे अत्याधिक भयभीत हुए, इतना अधिक कि वे प्रवेश मार्ग से भाग गए ।

And when they had entered into this covenant they sent them to dwell with the people of Ammon, and they were in number about four thousand who had not been slain.

And it came to pass that when they had sent them away they pursued their march towards the land of Nephihah. And it came to pass that when they had come to the city of Nephihah, they did pitch their tents in the plains of Nephihah, which is near the city of Nephihah.

Now Moroni was desirous that the Lamanites should come out to battle against them, upon the plains; but the Lamanites, knowing of their exceedingly great courage, and beholding the greatness of their numbers, therefore they durst not come out against them; therefore they did not come to battle in that day.

And when the night came, Moroni went forth in the darkness of the night, and came upon the top of the wall to spy out in what part of the city the Lamanites did camp with their army.

And it came to pass that they were on the east, by the entrance; and they were all asleep. And now Moroni returned to his army, and caused that they should prepare in haste strong cords and ladders, to be let down from the top of the wall into the inner part of the wall.

And it came to pass that Moroni caused that his men should march forth and come upon the top of the wall, and let themselves down into that part of the city, yea, even on the west, where the Lamanites did not camp with their armies.

And it came to pass that they were all let down into the city by night, by the means of their strong cords and their ladders; thus when the morning came they were all within the walls of the city.

And now, when the Lamanites awoke and saw that the armies of Moroni were within the walls, they were affrighted exceedingly, insomuch that they did flee out by the pass.

- 25 और अब जब मोरोनी ने देखा कि वे उसके सामने से भाग रहे हैं, उसने अपने लोगों से उनका पीछा करने, और कई लोगों को मारने, और बहुत से लोगों को घेरकर, और बंदी बनाकर लाने के लिए कहा; और बचे हुए बाकी लोग मोरोनी के प्रदेश भाग गए, जो कि समुद्रतट से लगी सीमाओं पर स्थित था ।
- 26 इस प्रकार एक भी व्यक्ति को बिना खोए, मोरोनी और पहोरन ने नफीहा नगर पर अपना अधिकार कर लिया; और मारे गए लमनाइयों की संख्या बहुत थी ।
- 27 और ऐसा हुआ कि बंदियों में ऐसे कई लमनाई थे जो अम्मोन के लोगों में शामिल होकर स्वतंत्र लोग बनना चाहते थे ।
- 28 और ऐसा हुआ कि जितने लोगों की यह इच्छा थी, उतने लोगों को उनकी इच्छानुसार ऐसा करने की अनुमति दी गई ।
- 29 इसलिए, लमनाइयों के सारे बंदी अम्मोन के लोगों में शामिल हो गए, और जमीन जोतते हुए, हर प्रकार के अनाज उगाते हुए, और हर प्रकार के जानवरों के समूहों और झुंडों की देखभाल करते हुए अत्यधिक परिश्रम करने लगे; और इस प्रकार नफाई भार मुक्त हुए; हां, इतना अधिक कि उन्हें लमनाइयों के सारे बंदियों से सहायता मिली ।
- 30 अब ऐसा हुआ कि नफीहा के नगर पर अधिकार कर लेने के पश्चात, कई लोगों को बंदी बना लेने के पश्चात जिसके कारण लमनाइयों की बड़ी सेना छोटी हो गई, और बंदी बनाए गए उन कई नफाइयों को फिर से प्राप्त कर लेने के पश्चात मोरोनी की सेना को बहुत बल प्राप्त हुआ; इसलिए मोरोनी नफीहा के प्रदेश से लेही के प्रदेश चला गया ।
- 31 और ऐसा हुआ कि जब लमनाइयों ने देखा कि मोरोनी उन पर आक्रमण करने आ रहा है, तो वे डर गए और मोरोनी की सेना के सामने से भाग गए ।
- 32 और ऐसा हुआ कि मोरोनी और उसकी सेना ने उनका एक नगर से दूसरे नगर तक तब तक पीछा किया जब तक कि वे लेही और टियंकम की सेना से न मिल गए; और समुद्रतट से लगी सीमाओं से होकर लमनाई लेही और टियंकम से तब तक भागते रहे जब तक कि वे मोरोनी के प्रदेश न आ गए ।
- 33 और लमनाइयों की सारी सेनाएं एकत्रित हुईं, इतनी अधिक संख्या में कि वे एक गुट के रूप में मोरोनी प्रदेश में एकत्रित हुईं । अब लमनाइयों का राजा अम्मोरन भी उनके साथ था ।

And now when Moroni saw that they were fleeing before him, he did cause that his men should march forth against them, and slew many, and surrounded many others, and took them prisoners; and the remainder of them fled into the land of Moroni, which was in the borders by the seashore.

Thus had Moroni and Pahoran obtained the possession of the city of Nephihah without the loss of one soul; and there were many of the Lamanites who were slain.

Now it came to pass that many of the Lamanites that were prisoners were desirous to join the people of Ammon and become a free people.

And it came to pass that as many as were desirous, unto them it was granted according to their desires.

Therefore, all the prisoners of the Lamanites did join the people of Ammon, and did begin to labor exceedingly, tilling the ground, raising all manner of grain, and flocks and herds of every kind; and thus were the Nephites relieved from a great burden; yea, insomuch that they were relieved from all the prisoners of the Lamanites.

Now it came to pass that Moroni, after he had obtained possession of the city of Nephihah, having taken many prisoners, which did reduce the armies of the Lamanites exceedingly, and having regained many of the Nephites who had been taken prisoners, which did strengthen the army of Moroni exceedingly; therefore Moroni went forth from the land of Nephihah to the land of Lehi.

And it came to pass that when the Lamanites saw that Moroni was coming against them, they were again frightened and fled before the army of Moroni.

And it came to pass that Moroni and his army did pursue them from city to city, until they were met by Lehi and Teancum; and the Lamanites fled from Lehi and Teancum, even down upon the borders by the seashore, until they came to the land of Moroni.

And the armies of the Lamanites were all gathered together, insomuch that they were all in one body in the land of Moroni. Now Ammoron, the king of the Lamanites, was also with them.

34 और ऐसा हुआ कि मोरोनी प्रदेश की सीमाओं के आसपास मोरोनी और लेही और टियंकम की सेनाओं ने इतनी अधिक संख्या में शिविर लगाया कि लमनाई दक्षिणी जंगल में स्थित सीमाओं, और पूर्वी निर्जन प्रदेश में स्थित सीमाओं में घिर गए ।

35 और इस प्रकार उन्होंने रात के लिए शिविर लगाया । क्योंकि देखो, अधिक चलने के कारण नफाई और लमनाई भी थके हुए थे; इसलिए टियंकम के अलावा अन्य किसी ने भी षडयंत्र पर रात में विचार नहीं किया; क्योंकि वह अम्मोरोन से बहुत क्रोधित था, इतना अधिक कि उसने अम्मोरोन और उसके भाई अमालिकिया को उनके और लमनाइयों के बीच के इस भयंकर और आखिरी युद्ध का कारण मानता था, जिसके कारण बहुत युद्ध और रक्तपात हुआ, और अकाल पड़ा ।

36 और ऐसा हुआ कि अपने क्रोध में टियंकम लमनाइयों के शिविर की तरफ गया, और नगर की चार दीवारी के पास गया । और रस्सियों के सहारे एक स्थान से दूसरे स्थान गया, तब तक जब तक कि उसने राजा को खोज न लिया; उसने उस पर भाले से वार किया, जिससे उसके हृदय के नजदीक छेद हो गया । परन्तु देखो, मरने से पहले राजा ने अपने सेवकों को जगा दिया, ताकि वे टियंकम का पीछा कर उसे मार सकें ।

37 अब ऐसा हुआ कि जब लेही और मोरोनी को पता चला कि टियंकम मारा जा चुका है तो उन्हें बहुत दुख हुआ; क्योंकि देखो, वह ऐसा व्यक्ति था जिसने वीरता से अपने देश के लिए लड़ाई लड़ी थी, हां, स्वाधीनता का एक सच्चा मित्र; और उसने अत्यंत दुख से भरे हुए कष्टों को सहा था । परन्तु देखो, वह मर चुका था, और वह धरती से होकर चला गया था ।

38 और अब ऐसा हुआ कि अगले दिन मोरोनी ने यात्रा की, और लमनाइयों पर आक्रमण कर दिया, इतना अधिक कि उन्होंने भारी संख्या में लोगों को मारा; और उन्होंने उन्हें प्रदेश से खदेड़ दिया; और वे भाग गए, यहां तक कि फिर वे लौटकर नफाइयों पर आक्रमण करने नहीं आए ।

39 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का इकतीसवां वर्ष समाप्त हुआ; और इस प्रकार कई वर्षों के लिए उनमें युद्ध हुआ, रक्तपात हुआ, अकाल पड़ा, और परेशानियां आईं ।

And it came to pass that Moroni and Lehi and Teancum did encamp with their armies round about in the borders of the land of Moroni, insomuch that the Lamanites were encircled about in the borders by the wilderness on the south, and in the borders by the wilderness on the east.

And thus they did encamp for the night. For behold, the Nephites and the Lamanites also were weary because of the greatness of the march; therefore they did not resolve upon any stratagem in the night-time, save it were Teancum; for he was exceedingly angry with Ammoron, insomuch that he considered that Ammoron, and Amalickiah his brother, had been the cause of this great and lasting war between them and the Lamanites, which had been the cause of so much war and bloodshed, yea, and so much famine.

And it came to pass that Teancum in his anger did go forth into the camp of the Lamanites, and did let himself down over the walls of the city. And he went forth with a cord, from place to place, insomuch that he did find the king; and he did cast a javelin at him, which did pierce him near the heart. But behold, the king did awaken his servants before he died, insomuch that they did pursue Teancum, and slew him.

Now it came to pass that when Lehi and Moroni knew that Teancum was dead they were exceedingly sorrowful; for behold, he had been a man who had fought valiantly for his country, yea, a true friend to liberty; and he had suffered very many exceedingly sore afflictions. But behold, he was dead, and had gone the way of all the earth.

Now it came to pass that Moroni marched forth on the morrow, and came upon the Lamanites, insomuch that they did slay them with a great slaughter; and they did drive them out of the land; and they did flee, even that they did not return at that time against the Nephites.

And thus ended the thirty and first year of the reign of the judges over the people of Nephi; and thus they had had wars, and bloodsheds, and famine, and affliction, for the space of many years.

- 40 और नफी के लोगों में हत्याएं हुईं, और विवाद, और मतभेद हुए, और हर प्रकार के अधर्म हुए; फिर भी धार्मिकता के लिए, हां, धर्मी लोगों की प्रार्थनाओं के कारण वे बचाए गए ।
- 41 परन्तु देखो, नफाइयों और लमनाइयों के बीच के इस युद्ध की अत्याधिक लम्बी अवधि के कारण कई लोग कठोर हो गए थे, क्योंकि युद्ध की अवधि अत्याधिक लम्बी थी; और कई लोग अपने कष्टों के कारण नरम हो गए थे, इतना अधिक कि उन्होंने विनम्रता की गहराई में परमेश्वर के सामने स्वयं को विनम्र कर लिया था ।
- 42 और ऐसा हुआ कि प्रदेश के उन भागों को मोरोनी ने मजबूत कर दिया था जहां पर लमनाई उन पर आक्रमण कर सकते थे, उन्हें पर्याप्त मात्रा में मजबूत किया, इसके पश्चात वह जराहेमला के नगर वापस आ गया; और हिलामन भी अपनी धरोहर की भूमि पर वापस आ गया; और फिर से एक बार नफी के लोगों में शांति स्थापित हुई ।
- 43 और मोरोनी ने अपनी सेना की कमान अपने बेटे के हाथों में सौंप दी, जिसका नाम मोरोनिहा था; और वह अपने ही घर से सेवानिवृत्त हुआ ताकि वह अपने बाकी बचे दिनों को शांति से बिता सके ।
- 44 और पहोरन अपने न्याय-आसन पर वापस बैठ गया; और हिलामन ने फिर ने लोगों में परमेश्वर के वचन का प्रचार आरंभ किया; क्योंकि इतने सारे युद्धों और विवादों के पश्चात यह आवश्यक हो गया था कि फिर से गिरजे में नियम बनाया जाए ।
- 45 इसलिए, लोगों को उनकी दुष्टता मनवाने के लिए, हिलामन और उसके भाई अधिक क्षमता से परमेश्वर का वचन सुनाने के लिए गए, जिसके कारण उन्होंने अपने पापों का पश्चाताप किया और प्रभु अपने परमेश्वरमें बपतिस्मा लिया ।
- 46 और ऐसा हुआ कि पूरे प्रदेश में उन्होंने फिर से परमेश्वर का गिरजा स्थापित किया ।
- 47 हां, और कानून से संबंधित नियम बनाए गए । और उनके लिए न्यायियों, और मुख्य न्यायियों को नियुक्त किया गया ।
- 48 और नफी के लोग फिर से प्रदेश में उन्नति करने लगे, और बढ़ने लगे और फिर से प्रदेश में अत्याधिक मजबूत होने लगे । और वे अत्याधिक धनी होने लगे ।

And there had been murders, and contentions, and dissensions, and all manner of iniquity among the people of Nephi; nevertheless for the righteous' sake, yea, because of the prayers of the righteous, they were spared.

But behold, because of the exceedingly great length of the war between the Nephites and the Lamanites many had become hardened, because of the exceedingly great length of the war; and many were softened because of their afflictions, insomuch that they did humble themselves before God, even in the depth of humility.

And it came to pass that after Moroni had fortified those parts of the land which were most exposed to the Lamanites, until they were sufficiently strong, he returned to the city of Zarahemla; and also Helaman returned to the place of his inheritance; and there was once more peace established among the people of Nephi.

And Moroni yielded up the command of his armies into the hands of his son, whose name was Moronihah; and he retired to his own house that he might spend the remainder of his days in peace.

And Pahoran did return to his judgment-seat; and Helaman did take upon him again to preach unto the people the word of God; for because of so many wars and contentions it had become expedient that a regulation should be made again in the church.

Therefore, Helaman and his brethren went forth, and did declare the word of God with much power unto the convincing of many people of their wickedness, which did cause them to repent of their sins and to be baptized unto the Lord their God.

And it came to pass that they did establish again the church of God, throughout all the land.

Yea, and regulations were made concerning the law. And their judges, and their chief judges were chosen.

And the people of Nephi began to prosper again in the land, and began to multiply and to wax exceedingly strong again in the land. And they began to grow exceedingly rich.

49 परन्तु अपनी धन-संपत्तियों, या अपने बल, या अपनी समृद्धता के बावजूद भी वे घमण्डी नहीं हुए; न ही प्रभु अपने परमेश्वर को याद करने में उनका जोश कम हुआ; परन्तु उन्होंने उसके सामने स्वयं को और अधिक विनम्र कर लिया ।

50 हां, उन्होंने उन महान कार्यों को याद किया जिसे प्रभु ने उनके लिए किया था, कि उसने उन्हें मृत्यु से, दासता से, और बंदीगृह में जाने से बचाया था, और हर प्रकार के कष्टों से बचाया था, और उसने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथों से बचाया था ।

51 और उन्होंने निरंतर प्रभु अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, इतना अधिक कि प्रभु ने अपने वचन के अनुसार उन्हें आशीष दी, ताकि वे दृढ़ हुए और प्रदेश में उन्नति की ।

52 और ऐसा हुआ कि ये सारी बातें हुईं । और नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के पैंतीसवें वर्ष में हिलामन की मृत्यु हो गई ।

But notwithstanding their riches, or their strength, or their prosperity, they were not lifted up in the pride of their eyes; neither were they slow to remember the Lord their God; but they did humble themselves exceedingly before him.

Yea, they did remember how great things the Lord had done for them, that he had delivered them from death, and from bonds, and from prisons, and from all manner of afflictions, and he had delivered them out of the hands of their enemies.

And they did pray unto the Lord their God continually, insomuch that the Lord did bless them, according to his word, so that they did wax strong and prosper in the land.

And it came to pass that all these things were done. And Helaman died, in the thirty and fifth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

## अलमा 63

- 1 और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के छत्तीसवें वर्ष के आरंभ में, शिब्लोन उन पावन चीजों को अपने अधिकार में ले लेता है जिसे अलमा ने हिलामन को सौंपा था ।
- 2 और वह न्यायी मनुष्य था, और वह परमेश्वर के सामने सीधे मार्ग पर चलता था; और प्रभु अपने परमेश्वर, और अपने भाई की आज्ञाओं को मानने के लिए, वह निरंतर भलाई का कार्य करता था ।
- 3 और ऐसा हुआ कि मोरोनी की भी मृत्यु हो गई । और इस प्रकार न्यायियों के शासन का छत्तीसवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 4 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के सैंतीसवें वर्ष में, लोगों का एक बड़ा समूह हुआ, जिनकी संख्या उनकी पत्नियों और बच्चों को लेकर पांच हजार चार सौ थी, जो जराहेमला प्रदेश से उत्तरी दिशा में स्थित प्रदेश में गए ।
- 5 और ऐसा हुआ कि हागोथ, एक बहुत ही उत्सुक व्यक्ति था, इस-लिए उजाड़ प्रदेश से लगे, संपन्न प्रदेश की सीमाओं पर उसने एक बहुत बड़े जहाज का निर्माण किया, और पूर्वी समुद्र में उसे जलयात्रा के लिए उतार दिया जिसे एक संकरे मार्ग से होकर उत्तरी दिशा में स्थित प्रदेश में जाना था ।
- 6 और देखो, कई नफाइयों ने उस जहाज में प्रवेश किया और अपनी अधिक सामग्रियों के साथ यात्रा की, और कई स्त्रियां और बच्चे भी थे; और उन्होंने उत्तरी दिशा की यात्रा की । और इस प्रकार सैंतीसवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 7 और अड़तीसवें वर्ष में, इस मनुष्य ने एक और जहाज का निर्माण किया । और पहला जहाज भी वापस आ गया, और उसमें सवार होकर कई लोग वापस आए; और उन्होंने भी बहुत सी सामग्रियों को अपने साथ लिया, और फिर से उत्तरी दिशा में स्थित प्रदेश की यात्रा पर निकल पड़े ।
- 8 और ऐसा हुआ कि उनके विषय में फिर कभी भी कोई खबर नहीं आई । और हमारा मानना है कि वे समुद्र की गहराई में डूब गए । और ऐसा हुआ कि एक और जहाज ने आगे की यात्रा शुरू की; और हमें नहीं पता कि वे कहां गए ।
- 9 और ऐसा हुआ कि इस वर्ष में बहुत से लोगों ने उत्तरी दिशा में स्थित प्रदेश की यात्रा की । और इस प्रकार अड़तीसवां वर्ष समाप्त हुआ ।

## Alma 63

And it came to pass in the commencement of the thirty and sixth year of the reign of the judges over the people of Nephi, that Shiblón took possession of those sacred things which had been delivered unto Helaman by Alma.

And he was a just man, and he did walk uprightly before God; and he did observe to do good continually, to keep the commandments of the Lord his God; and also did his brother.

And it came to pass that Moroni died also. And thus ended the thirty and sixth year of the reign of the judges.

And it came to pass that in the thirty and seventh year of the reign of the judges, there was a large company of men, even to the amount of five thousand and four hundred men, with their wives and their children, departed out of the land of Zarahemla into the land which was northward.

And it came to pass that Hagoth, he being an exceedingly curious man, therefore he went forth and built him an exceedingly large ship, on the borders of the land Bountiful, by the land Desolation, and launched it forth into the west sea, by the narrow neck which led into the land northward.

And behold, there were many of the Nephites who did enter therein and did sail forth with much provisions, and also many women and children; and they took their course northward. And thus ended the thirty and seventh year.

And in the thirty and eighth year, this man built other ships. And the first ship did also return, and many more people did enter into it; and they also took much provisions, and set out again to the land northward.

And it came to pass that they were never heard of more. And we suppose that they were drowned in the depths of the sea. And it came to pass that one other ship also did sail forth; and whither she did go we know not.

And it came to pass that in this year there were many people who went forth into the land northward. And thus ended the thirty and eighth year.



- 10 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के उनतालीसवें वर्ष में, शिबलोन की भी मृत्यु हो गई, और जो लोग उत्तरी दिशा में स्थित प्रदेश में रह रहे थे, उनके लिए सामग्रियों को लेकर जहाज में सवार होकर कोरियन्टन उस प्रदेश की यात्रा पर गया ।
- 11 इसलिए शिबलोन के लिए यह आवश्यक हो गया था कि अपनी मृत्यु से पहले, वह उन पावन चीजों को हिलामन के बेटे को प्रदान कर दे जिसका नाम उसके पिता के नाम पर हिलामन ही रखा गया था ।
- 12 अब देखो, अंकित की गई सारी चीजें जो हिलामन के कब्जे में थीं उन्हें लिखा गया और सारे प्रदेश में मानव संतानों के बीच भेज दिया गया, केवल उन भागों को छोड़कर जहां पर अलमा ने न भेजने की आज्ञा दी थी ।
- 13 फिर भी, इन चीजों को पावन रखा गया, और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपा गया; इसलिए, इस वर्ष में, शिबलोन की मृत्यु से पहले, इन्हें हिलामन को प्रदान किया गया ।
- 14 और ऐसा हुआ कि इस वर्ष में भी कुछ मतभेदी हुए जो लमनाइयों के पास चले गए थे; और उन्हें फिर से नफाइयों के विरुद्ध भड़काया गया ।
- 15 और इसी वर्ष में वे बहुत सी सेनाओं के साथ मोरोनिहा के लोगों के विरुद्ध, या मोरोनिहा की सेना के विरुद्ध युद्ध करने आए, और उन्हें मारा गया और भारी नुकसान उठाते हुए उन्हें फिर से उनके प्रदेश वापस भेज दिया गया ।
- 16 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का उनतालीसवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 17 और इस प्रकार अलमा, और उसके बेटे हिलामन, और उसके बेटे शिबलोन का विवरण समाप्त हुआ ।

And it came to pass in the thirty and ninth year of the reign of the judges, Shiblon died also, and Corianton had gone forth to the land northward in a ship, to carry forth provisions unto the people who had gone forth into that land.

Therefore it became expedient for Shiblon to confer those sacred things, before his death, upon the son of Helaman, who was called Helaman, being called after the name of his father.

Now behold, all those engravings which were in the possession of Helaman were written and sent forth among the children of men throughout all the land, save it were those parts which had been commanded by Alma should not go forth.

Nevertheless, these things were to be kept sacred, and handed down from one generation to another; therefore, in this year, they had been conferred upon Helaman, before the death of Shiblon.

And it came to pass also in this year that there were some dissenters who had gone forth unto the Lamanites; and they were stirred up again to anger against the Nephites.

And also in this same year they came down with a numerous army to war against the people of Moronihah, or against the army of Moronihah, in the which they were beaten and driven back again to their own lands, suffering great loss.

And thus ended the thirty and ninth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

And thus ended the account of Alma, and Helaman his son, and also Shiblon, who was his son.

# हिलामन की पुस्तक

नफाइयों का विवरण । उनके युद्ध और वाद-विवाद, और उनके मत-भेद । मसीह के आगमन से पहले कई पवित्र भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियां भी, उस हिलामन के अभिलेख के अनुसार, जो कि हिलामन का पुत्र था, और उसके बेटों और मसीह के आगमन तक की उसकी पीढ़ियों के अभिलेख के अनुसार भी । और कई लमनाई भी परिवर्तित हुए । उनके परिवर्तन का विवरण । हिलामन और उसके बेटों और मसीह के आगमन तक की उसकी पीढ़ियों के उस अभिलेख के अनुसार लमनाइयों की धार्मिकता, और नफाइयों की दुष्टता और घृणित कार्यों का एक विवरण, जिसे हिलामन की पुस्तक कहा जाता है, और इत्यादि ।

## हिलामन 1

- 1 और अब देखो, नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के चालीसवें वर्ष के आरंभ में, नफाई लोगों में गंभीर कठिनाइयां आने लगीं ।
- 2 क्योंकि देखो, पहोरन मर गया, और संसार की रीति से गुजर गया; इसलिए न्याय-आसन पर बैठने के लिए भाइयों के बीच में गंभीर मतभेद होने लगे, जो कि पहोरन के बेटे थे ।
- 3 अब जिन लोगों ने न्याय-आसन के लिए मतभेद किया, और जिन्होंने लोगों में मतभेद पैदा किया उनके नाम थे: पहोरन, पांकी, और पाकुमनी ।
- 4 अब ये पहोरन के सारे बेटे नहीं थे (क्योंकि उसके कई बेटे थे), परन्तु ये वही थे जिन्होंने न्याय-आसन के लिए झगड़ा किया था; इसलिए, इनके कारण लोग तीन भागों में विभाजित हो गए ।
- 5 फिर भी, ऐसा हुआ कि पहोरन को लोगों के मतों द्वारा मुख्य न्यायी और नफी के लोगों का शासक नियुक्त किया गया ।
- 6 और ऐसा हुआ कि जब पाकुमनी ने देखा कि वह न्याय-आसन पर नहीं बैठ सकता, तो वह भी लोगों के साथ हो गया ।
- 7 परन्तु देखो, पांकी और वे लोग जो चाहते थे कि वह उनका शासक बने, वे अत्याधिक क्रोध में थे; इसलिए, अपने भाइयों के खिलाफ करने के लिए वह लोगों को लगभग फुसलाने ही वाला था ।

# The Book of Helaman

*An account of the Nephites. Their wars and contentions, and their dissensions. And also the prophecies of many holy prophets, before the coming of Christ, according to the records of Helaman, who was the son of Helaman, and also according to the records of his sons, even down to the coming of Christ. And also many of the Lamanites are converted. An account of their conversion. An account of the righteousness of the Lamanites, and the wickedness and abominations of the Nephites, according to the record of Helaman and his sons, even down to the coming of Christ, which is called the book of Helaman, and so forth.*

## Helaman 1

And now behold, it came to pass in the commencement of the fortieth year of the reign of the judges over the people of Nephi, there began to be a serious difficulty among the people of the Nephites.

For behold, Pahoran had died, and gone the way of all the earth; therefore there began to be a serious contention concerning who should have the judgment-seat among the brethren, who were the sons of Pahoran.

Now these are their names who did contend for the judgment-seat, who did also cause the people to contend: Pahoran, Paanchi, and Pacumeni.

Now these are not all the sons of Pahoran (for he had many), but these are they who did contend for the judgment-seat; therefore, they did cause three divisions among the people.

Nevertheless, it came to pass that Pahoran was appointed by the voice of the people to be chief judge and a governor over the people of Nephi.

And it came to pass that Pacumeni, when he saw that he could not obtain the judgment-seat, he did unite with the voice of the people.

But behold, Paanchi, and that part of the people that were desirous that he should be their governor, was exceedingly wroth; therefore, he was about to flatter away those people to rise up in rebellion against their brethren.

- 8 और ऐसा हुआ कि जब वह ऐसा करने ही वाला था, देखो, उसे पकड़ लिया गया, और लोगों के मतों के अनुसार उनका न्याय हुआ, और मृत्युदंड की सजा मिली; क्योंकि वह एक विरोधी के रूप में उभरा था और लोगों की स्वाधीनता को नष्ट करना चाहता था ।
- 9 अब जब उन लोगों ने जो चाहते थे कि वह उनका शासक बने, देखा कि उसे मृत्युदंड की सजा मिली है तो वे क्रोधित हो गए, और देखो, उन्होंने किशकूमन नामक व्यक्ति को पहोरन के न्याय-आसन के पास भेजा, और उसने पहोरन की हत्या कर दी जब वह न्याय-आसन पर बैठा था ।
- 10 और पहोरन के सेवकों ने उसका पीछा किया; परन्तु देखो, किशकूमन इतनी तेजी से भागा कि कोई भी व्यक्ति उसे पकड़ नहीं सका ।
- 11 और वह उन लोगों के पास गया जिन्होंने उसे भेजा था, और उन्होंने एक अनुबंध में प्रवेश किया, हां, अपने अनंत ईश्वर की शपथ ली कि वे किसी भी व्यक्ति को नहीं बताएंगे कि किशकूमन ने पहोरन की हत्या की है ।
- 12 इसलिए, नफी के लोग किशकूमन के बारे में नहीं जान पाए, क्योंकि जिस समय उसने पहोरन की हत्या की थी उस समय उसने अपना भेष बदला था । और किशकूमन और उसकी टोली, जिन्होंने उसके साथ अनुबंध बनाया था, अपने आपको लोगों में इस तरह से मिला लिया ताकि उन सबको खोजा न जा सके; परन्तु जितने भी लोग पाए गए उन्हें मृत्युदंड दिया गया ।
- 13 और अब देखो, लोगों के मतों के अनुसार पाकुमनी को अपने भाई पहोरन के स्थान पर शासन करने के लिए लोगों का मुख्य न्यायी और शासक बनाया गया; और ऐसा उसके अधिकार के अनुसार हुआ । और यह सब न्यायियों के शासन के चालीसवें वर्ष में किया गया; और यह समाप्त हो गया था ।
- 14 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के इकतालीसवें वर्ष में, लमनाइयों ने मिलकर अनगिनत पुरुषों की एक सेना एकत्रित की, और उन्हें तलवारों और कटारों और धनुष, और तीरों, और सिर की पट्टियों, और कवच, और हर प्रकार की ढाल से सुसज्जित किया ।
- 15 और वे फिर से नीचे आए ताकि नफाइयों के विरुद्ध युद्ध के लिए डेरा डाल सकें । और उनका मार्गदर्शक कोरियण्टुमर नामक एक व्यक्ति था; और वह जराहेमला का वंशज था; और नफाइयों के बीच मतभेद करानेवाला वही था; और वह लंबा-चौड़ा और शक्तिशाली व्यक्ति था ।

And it came to pass as he was about to do this, behold, he was taken, and was tried according to the voice of the people, and condemned unto death; for he had raised up in rebellion and sought to destroy the liberty of the people.

Now when those people who were desirous that he should be their governor saw that he was condemned unto death, therefore they were angry, and behold, they sent forth one Kishkumen, even to the judgment-seat of Pahoran, and murdered Pahoran as he sat upon the judgment-seat.

And he was pursued by the servants of Pahoran; but behold, so speedy was the flight of Kishkumen that no man could overtake him.

And he went unto those that sent him, and they all entered into a covenant, yea, swearing by their everlasting Maker, that they would tell no man that Kishkumen had murdered Pahoran.

Therefore, Kishkumen was not known among the people of Nephi, for he was in disguise at the time that he murdered Pahoran. And Kishkumen and his band, who had covenanted with him, did mingle themselves among the people, in a manner that they all could not be found; but as many as were found were condemned unto death.

And now behold, Pacumeni was appointed, according to the voice of the people, to be a chief judge and a governor over the people, to reign in the stead of his brother Pahoran; and it was according to his right. And all this was done in the fortieth year of the reign of the judges; and it had an end.

And it came to pass in the forty and first year of the reign of the judges, that the Lamanites had gathered together an innumerable army of men, and armed them with swords, and with cimeters and with bows, and with arrows, and with head-plates, and with breastplates, and with all manner of shields of every kind.

And they came down again that they might pitch battle against the Nephites. And they were led by a man whose name was Coriantumr; and he was a descendant of Zarahemla; and he was a dissenter from among the Nephites; and he was a large and a mighty man.

- 16 इसलिए, लमनाइयों का राजा जिसका नाम तुबलोथ था, जो कि अम्मोरोन का बेटा था, उसका मानना था कि एक शक्तिशाली व्यक्ति होने के नाते, अपनी ताकत और महान बुद्धि के बल पर कोरियण्टुमर नफाइयों के विरुद्ध इतनी मजबूती से खड़ा हो सकता था कि उसके द्वारा वह नफाइयों पर विजय प्राप्त कर लेगा—
- 17 इसलिए उसने उन्हें क्रोध में भड़काया, और उसने अपनी सेनाओं को एकत्रित किया, और कोरियण्टुमर को उनका मार्गदर्शक नियुक्त किया, और उनसे कहा कि नफाइयों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए उन्हें जराहेमला के प्रदेश जाना चाहिए ।
- 18 और ऐसा हुआ कि सरकार में इतने मतभेद और इतनी कठिनाइयों के कारण जराहेमला प्रदेश में पर्याप्त संख्या में प्रहरी नहीं रखे गए थे; क्योंकि उनका मानना था कि उनके प्रदेश के केन्द्र में आने और जराहेमला जैसे महान नगर पर आक्रमण करने का साहस लमनाई नहीं कर सकते हैं ।
- 19 परन्तु ऐसा हुआ कि कोरियण्टुमर अपनी असंख्य सेनाओं के आगे-आगे चला, और वह नगर वासियों तक पहुंच गया, और वे सब इतनी अधिक तेजी से चले कि नफाइयों को अपनी सेनाओं को एकत्रित करने का समय ही नहीं मिला ।
- 20 इसलिए कोरियण्टुमर ने नगर के प्रवेश द्वार पर खड़े प्रहरियों को मार गिराया, और अपनी पूरी सेना के साथ नगर में घुस गया, और जो भी उनके सामने आया उसे मारा, इतनी अधिक संख्या में कि उन्होंने पूरे नगर पर कब्जा कर लिया ।
- 21 और ऐसा हुआ कि पाकुमनी जो कि मुख्य न्यायी था, कोरियण्टुमर के सामने से भागता हुआ नगर की चार दीवारी तक पहुंच गया । और ऐसा हुआ कि कोरियण्टुमर ने दीवार पर उसे इतना मारा कि उसकी मृत्यु हो गई । और इस प्रकार पाकुमनी के दिन समाप्त हुए ।
- 22 और अब जब कोरियण्टुमर ने देखा कि उसने जराहेमला नगर पर कब्जा कर लिया था, और देखा कि नफाई उसके सामने से भाग गए थे, और मारे गए थे, और उन्हें बंदी बनाकर बंदीगृह में डाल दिया गया था, और यह कि उसने प्रदेश के सबसे मजबूत नगर पर कब्जा कर लिया था, तो उसकी हिम्मत इतनी अधिक बढ़ गई कि वह सभी प्रदेशों पर आक्रमण करनेवाला था ।

Therefore, the king of the Lamanites, whose name was Tubaloth, who was the son of Ammoron, supposing that Coriantumr, being a mighty man, could stand against the Nephites, with his strength and also with his great wisdom, insomuch that by sending him forth he should gain power over the Nephites—

Therefore he did stir them up to anger, and he did gather together his armies, and he did appoint Coriantumr to be their leader, and did cause that they should march down to the land of Zarahemla to battle against the Nephites.

And it came to pass that because of so much contention and so much difficulty in the government, that they had not kept sufficient guards in the land of Zarahemla; for they had supposed that the Lamanites durst not come into the heart of their lands to attack that great city Zarahemla.

But it came to pass that Coriantumr did march forth at the head of his numerous host, and came upon the inhabitants of the city, and their march was with such exceedingly great speed that there was no time for the Nephites to gather together their armies.

Therefore Coriantumr did cut down the watch by the entrance of the city, and did march forth with his whole army into the city, and they did slay every one who did oppose them, insomuch that they did take possession of the whole city.

And it came to pass that Pacumeni, who was the chief judge, did flee before Coriantumr, even to the walls of the city. And it came to pass that Coriantumr did smite him against the wall, insomuch that he died. And thus ended the days of Pacumeni.

And now when Coriantumr saw that he was in possession of the city of Zarahemla, and saw that the Nephites had fled before them, and were slain, and were taken, and were cast into prison, and that he had obtained the possession of the strongest hold in all the land, his heart took courage insomuch that he was about to go forth against all the land.

- 23 और अब अधिक दिनों तक वह जराहेमला प्रदेश में नहीं रुका, परन्तु एक बड़ी सेना के साथ संपन्न प्रदेश की ओर आगे बढ़ गया; क्योंकि उसने निश्चय किया था कि वह तलवार के बल पर अपना रास्ता बनाएगा, ताकि वह प्रदेश के उत्तरी भागों पर कब्जा कर सके ।
- 24 और, यह मानते हुए कि उनकी महान शक्ति प्रदेश के केन्द्र में थी, इसलिए छोटे दलों के अलावा उन्हें अधिक संख्या में एकत्रित होने का अवसर न देते हुए वह आगे की ओर बढ़ा; और इस तरह से वे उन पर टूट पड़े और मार-मार कर उन्हें धरती पर गिरा दिया ।
- 25 परन्तु देखो, नफाइयों के भारी संख्या में मारे जाने के बावजूद भी, प्रदेश के केन्द्र से कोरियण्टुमर की इस यात्रा के कारण मोरोनिहा को उन पर भारी सफलता प्राप्त हुई ।
- 26 क्योंकि देखो, मोरोनिहा ने सोचा था कि लमनाई प्रदेश के केन्द्र में आने का साहस नहीं करेंगे, परन्तु वे सीमाओं के आसपास के नगरों पर आक्रमण करेंगे जैसा कि उन्होंने अब तक किया है; इसलिए मोरोनिहा ने अपनी सेनाओं से उन नगरों की देख-रेख करने के लिए कहा जो सीमा पर स्थित थे ।
- 27 परन्तु देखो, जैसा उसने चाहा था वैसे लमनाई डरे नहीं, परन्तु वे प्रदेश के केन्द्र में आ गए, और उन्होंने जराहेमला नामक मुख्य नगर पर कब्जा कर लिया, और प्रदेश के मुख्य नगरों से होते हुए निकल गए, भारी संख्या में लोगों को मारते हुए जिसमें पुरुष, स्त्री, और बच्चे शामिल थे, और कई नगरों और मजबूत किलों पर कब्जा करते हुए आगे निकलते गए ।
- 28 परन्तु जब मोरोनिहा को इस बात का पता चला, तो उसने शीघ्र ही लेही को सेना के साथ भेजा ताकि वे उन्हें संपन्न प्रदेश में आने से रोक सकें ।
- 29 और उसने ऐसा ही किया; और उसने उन्हें संपन्न प्रदेश में आने से पहले रोका, और उनके साथ युद्ध किया, इतना अधिक कि वे जराहेमला प्रदेश की ओर पीछे हटने लगे ।
- 30 और ऐसा हुआ कि मोरोनिहा उन्हें और पीछे भगाता गया, और उनसे युद्ध किया, इतना अधिक कि यह एक रक्तरंजित युद्ध बन गया; हां, कई लोग मारे गए, और मरे हुए लोगों में कोरियण्टुमर भी पाया गया ।

And now he did not tarry in the land of Zarahemla, but he did march forth with a large army, even towards the city of Bountiful; for it was his determination to go forth and cut his way through with the sword, that he might obtain the north parts of the land.

And, supposing that their greatest strength was in the center of the land, therefore he did march forth, giving them no time to assemble themselves together save it were in small bodies; and in this manner they did fall upon them and cut them down to the earth.

But behold, this march of Coriantumr through the center of the land gave Moronihah great advantage over them, notwithstanding the greatness of the number of the Nephites who were slain.

For behold, Moronihah had supposed that the Lamanites durst not come into the center of the land, but that they would attack the cities round about in the borders as they had hitherto done; therefore Moronihah had caused that their strong armies should maintain those parts round about by the borders.

But behold, the Lamanites were not frightened according to his desire, but they had come into the center of the land, and had taken the capital city which was the city of Zarahemla, and were marching through the most capital parts of the land, slaying the people with a great slaughter, both men, women, and children, taking possession of many cities and of many strongholds.

But when Moronihah had discovered this, he immediately sent forth Lehi with an army round about to head them before they should come to the land Bountiful.

And thus he did; and he did head them before they came to the land Bountiful, and gave unto them battle, insomuch that they began to retreat back towards the land of Zarahemla.

And it came to pass that Moronihah did head them in their retreat, and did give unto them battle, insomuch that it became an exceedingly bloody battle; yea, many were slain, and among the number who were slain Coriantumr was also found.

31 और अब, देखो, लमनाई कहीं भी नहीं भाग सकते थे, न तो उत्तर में, न दक्षिण में, न पूर्व में, न ही पश्चिम में, क्योंकि नफाइयों ने उन्हें हर तरफ से घेर लिया था ।

32 और इस प्रकार कोरियण्टुमर ने लमनाइयों को नफाइयों के बीच में झोंक दिया था, इतनी बुरी तरह से कि वे नफाइयों के वश में थे, और वह स्वयं मारा गया, और लमनाइयों ने स्वयं को नफाइयों के अधीन कर दिया ।

33 और ऐसा हुआ कि मोरोनिहा ने फिर से जराहेमला नगर पर अधिकार कर लिया, और जिन लमनाइयों को बंदी बनाया गया था उन्हें शांतिपूर्वक प्रदेश से बाहर ले जाया गया ।

34 और इस प्रकार न्यायियों के शासन का इकतालीसवां वर्ष समाप्त हुआ ।

And now, behold, the Lamanites could not retreat either way, neither on the north, nor on the south, nor on the east, nor on the west, for they were surrounded on every hand by the Nephites.

And thus had Coriantumr plunged the Lamanites into the midst of the Nephites, insomuch that they were in the power of the Nephites, and he himself was slain, and the Lamanites did yield themselves into the hands of the Nephites.

And it came to pass that Moronihah took possession of the city of Zarahemla again, and caused that the Lamanites who had been taken prisoners should depart out of the land in peace.

And thus ended the forty and first year of the reign of the judges.

## हिलामन 2

- 1 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के बयालीसवें वर्ष में, जब मोरोनिहा ने नफाइयों और लमनाइयों के बीच फिर से शांति स्थापित कर दी, देखो न्याय-आसन पर बैठने के लिए कोई नहीं था; इसलिए न्याय-आसन पर किसे बैठना चाहिए, इस बात को लेकर लोगों के बीच मतभेद होने लगा ।
- 2 और ऐसा हुआ कि लोगों के मतानुसार हिलामन के बेटे हिलामन को न्याय-आसन पर बैठने के लिए नियुक्त किया गया ।
- 3 परन्तु देखो, किश्कूमन जिसने पहोरन की हत्या की थी, उसने हिलामन को भी मारने की योजना बनाई; और उसे उसकी टोली का भी समर्थन मिला, जिन्होंने एक अनुबंध में प्रवेश किया कि उसकी दुष्टता के बारे में किसी को पता नहीं चलना चाहिए ।
- 4 क्योंकि गडियन्टन नामक एक व्यक्ति था जो शब्दों से खेलने में निपुण था, और हत्या और लूटपाट जैसे गुप्त कार्यों को करने के प्रति अपनी धूर्तता में भी निपुण था; इसलिए वह किश्कूमन की टोली का मार्गदर्शक बन गया ।
- 5 इसलिए उसने उन्हें और किश्कूमन को भी फुसलाया, कि यदि वे उसे न्याय-आसन पर बिठाएंगे तो जो लोग उसकी टोली के सदस्य हैं उन्हें वह लोगों के बीच ताकतवर और अधिकारी बनाएगा; इसलिए किश्कूमन हिलामन को मारने का प्रयास करने लगा ।
- 6 और ऐसा हुआ कि जब वह हिलामन को मारने के लिए न्याय-आसन के ओर गया, देखो हिलामन के सेवकों में से एक जो कि रात के समय भेष बदलकर बाहर गया, और टोली द्वारा हिलामन को मारने की बनाई गई योजनाओं के बारे में पता लगाया ।
- 7 और ऐसा हुआ कि वह किश्कूमन से मिला, और उसे एक चिन्ह दिया; इसलिए किश्कूमन ने उस पर अपनी इच्छा प्रकट की, यह चाहते हुए कि वह उसे न्याय-आसन तक ले जाएगा जिससे कि वह हिलामन की हत्या कर सके ।

## Helaman 2

And it came to pass in the forty and second year of the reign of the judges, after Moronihah had established again peace between the Nephites and the Lamanites, behold there was no one to fill the judgment-seat; therefore there began to be a contention again among the people concerning who should fill the judgment-seat.

And it came to pass that Helaman, who was the son of Helaman, was appointed to fill the judgment-seat, by the voice of the people.

But behold, Kishkumen, who had murdered Pahoran, did lay wait to destroy Helaman also; and he was upheld by his band, who had entered into a covenant that no one should know his wickedness.

For there was one Gadianton, who was exceedingly expert in many words, and also in his craft, to carry on the secret work of murder and of robbery; therefore he became the leader of the band of Kishkumen.

Therefore he did flatter them, and also Kishkumen, that if they would place him in the judgment-seat he would grant unto those who belonged to his band that they should be placed in power and authority among the people; therefore Kishkumen sought to destroy Helaman.

And it came to pass as he went forth towards the judgment-seat to destroy Helaman, behold one of the servants of Helaman, having been out by night, and having obtained, through disguise, a knowledge of those plans which had been laid by this band to destroy Helaman—

And it came to pass that he met Kishkumen, and he gave unto him a sign; therefore Kishkumen made known unto him the object of his desire, desiring that he would conduct him to the judgment-seat that he might murder Helaman.

- 8 और जब हिलामन के सेवक को किशकूमन के हृदय की सारी बातें पता चल गईं, और यह कि उसका उद्देश्य हत्या करना है, और यह भी कि जो लोग उसकी टोली के सदस्य हैं उनका उद्देश्य हत्या करना, और लूटपाट करना, और सत्ता हासिल करना है (यही उनकी गुप्त योजना और उनकी मिलीभगत थी), हिलामन के सेवक ने किशकूमन से कहा: चलो न्याय-आसन की तरफ चलें ।
- 9 अब इससे किशकूमन अत्याधिक प्रसन्न हो गया, क्योंकि उसने मान लिया कि उसकी योजना साकार हो गई है; परन्तु देखो, जब वे न्याय-आसन की तरफ जा रहे थे तभी हिलामन के सेवक ने किशकूमन के हृदय में छुरी भोंक दी, जिससे वह बिना कराहे नीचे गिर पड़ा । और वह दौड़ कर गया और जो भी बातें उसने देखी, सुनी और की थी उसे हिलामन को कह सुनाया ।
- 10 और ऐसा हुआ कि हिलामन ने अपने लोगों को लूटपाट और गुप्त हत्याएं करने वाली टोली को पकड़कर लाने के लिए भेजा, ताकि नियम के अनुसार वह उनका न्याय कर सके ।
- 11 परन्तु देखो, जब गडियन्टन को पता चला कि किशकूमन वापस नहीं आया तो वह डर गया कि कहीं उसे खत्म न कर दिया जाए; इसलिए उसने अपनी टोली को अपने पीछे आने के लिए कहा । और वे तेजी से एक गुप्त मार्ग द्वारा उस प्रदेश से निर्जन प्रदेश की ओर भाग गए; और इस प्रकार जब हिलामन ने उन्हें पकड़ने के लिए भेजा तो वे कहीं भी नहीं मिले ।
- 12 और इसके पश्चात गडियन्टन के विषय में अधिक बताया जाएगा । और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का बयालिसवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 13 और देखो, इस पुस्तक के अंत में आप देखेंगे कि यही गडियन्टन नफी के लोगों की पराजय का, हां, लगभग उनके पूरे विनाश का कारण बना ।
- 14 देखो इससे मेरा तात्पर्य हिलामन की पुस्तक की समाप्ति नहीं है, परन्तु इससे मेरा तात्पर्य नफी की पुस्तक की समाप्ति है, जिससे मैंने सभी विवरणों को प्राप्त कर लिखा है ।

And when the servant of Helaman had known all the heart of Kishkumen, and how that it was his object to murder, and also that it was the object of all those who belonged to his band to murder, and to rob, and to gain power, (and this was their secret plan, and their combination) the servant of Helaman said unto Kishkumen: Let us go forth unto the judgment-seat.

Now this did please Kishkumen exceedingly, for he did suppose that he should accomplish his design; but behold, the servant of Helaman, as they were going forth unto the judgment-seat, did stab Kishkumen even to the heart, that he fell dead without a groan. And he ran and told Helaman all the things which he had seen, and heard, and done.

And it came to pass that Helaman did send forth to take this band of robbers and secret murderers, that they might be executed according to the law.

But behold, when Gadianton had found that Kishkumen did not return he feared lest that he should be destroyed; therefore he caused that his band should follow him. And they took their flight out of the land, by a secret way, into the wilderness; and thus when Helaman sent forth to take them they could nowhere be found.

And more of this Gadianton shall be spoken hereafter. And thus ended the forty and second year of the reign of the judges over the people of Nephi.

And behold, in the end of this book ye shall see that this Gadianton did prove the overthrow, yea, almost the entire destruction of the people of Nephi.

Behold I do not mean the end of the book of Helaman, but I mean the end of the book of Nephi, from which I have taken all the account which I have written.



### हिलामन 3

- 1 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के तैंतालीसवें वर्ष में, गिरजे में थोड़े-बहुत अहंकार के अलावा नफी के लोगों में कोई विवाद नहीं था, जिसके कारण लोगों में कुछ मतभेद उत्पन्न हो गया, जो कि तैंतालीसवें वर्ष के अंत में शांत हो गया ।
- 2 और चौवालीसवें वर्ष में लोगों में कोई मतभेद नहीं था; न ही पैतालीसवें वर्ष में कोई मतभेद था ।
- 3 और ऐसा हुआ कि छियालीसवें वर्ष में, हां, विवाद और मतभेद बहुत बढ़ गया; जिसमें बहुत बड़ी संख्या में लोग जराहेमला प्रदेश से बाहर चले गए, और अपना अधिकार क्षेत्र बनाने के लिए प्रदेश की उत्तरी दिशा की तरफ गए ।
- 4 और उन्होंने अत्याधिक लंबी दूरी की यात्रा तय की, इतनी अधिक कि वे उस स्थान पर पहुंचे जहां जल ही जल था और बहुत सी नदियां थीं ।
- 5 हां, और वे प्रदेश के कई भागों में भी फैल गए जो कि उजाड़ और बिना वृक्ष के भाग थे, क्योंकि वहां पर कई निवासी पहले भी अधिकार कर चुके थे ।
- 6 और अब वृक्षों के अलावा प्रदेश का कोई भी भाग उजाड़ नहीं था; परन्तु जो लोग प्रदेश के पूर्व निवासी थे, उन लोगों के अत्याधिक विनाश के कारण यह उजाड़ कहलाता था ।
- 7 और प्रदेश में थोड़े-बहुत वृक्ष थे, फिर भी जो लोग वहां गए वे सीमेंट के उपयोग में बहुत निपुण थे; इसलिए उन्होंने सीमेंट के घरों का निर्माण किया था, जिसमें वे रहते थे ।
- 8 और ऐसा हुआ कि वे फले-फुले और फैलते गए, और प्रदेश के दक्षिणी दिशा से उत्तरी दिशा की ओर गए, और इतनी अधिक संख्या में फैल गए कि वे पूरी धरती को ढकने लगे, दक्षिणी समुद्रतट से लेकर उत्तरी समुद्रतट तक, पश्चिमी समुद्रतट से लेकर पूर्वी समुद्रतट तक ।

### Helaman 3

And now it came to pass in the forty and third year of the reign of the judges, there was no contention among the people of Nephi save it were a little pride which was in the church, which did cause some little dissensions among the people, which affairs were settled in the ending of the forty and third year.

And there was no contention among the people in the forty and fourth year; neither was there much contention in the forty and fifth year.

And it came to pass in the forty and sixth, yea, there was much contention and many dissensions; in the which there were an exceedingly great many who departed out of the land of Zarahemla, and went forth unto the land northward to inherit the land.

And they did travel to an exceedingly great distance, insomuch that they came to large bodies of water and many rivers.

Yea, and even they did spread forth into all parts of the land, into whatever parts it had not been rendered desolate and without timber, because of the many inhabitants who had before inherited the land.

And now no part of the land was desolate, save it were for timber; but because of the greatness of the destruction of the people who had before inhabited the land it was called desolate.

And there being but little timber upon the face of the land, nevertheless the people who went forth became exceedingly expert in the working of cement; therefore they did build houses of cement, in the which they did dwell.

And it came to pass that they did multiply and spread, and did go forth from the land southward to the land northward, and did spread insomuch that they began to cover the face of the whole earth, from the sea south to the sea north, from the sea west to the sea east.

- 9 और जो लोग प्रदेश की उत्तरी दिशा में थे वे तंबूओं, और सीमेंट के घरों में रहे, और वे जो भी वृक्ष उग सकते थे उसे उन्होंने उगाया, ताकि उनके घरों के निर्माण के लिए उनके पास लकड़ियां हो सकें, हां, उनके नगरों, और उनके मंदिरों, और उनके आराधनालयों, और उनके पवित्र स्थानों, और हर प्रकार की उनकी इमारतों के लिए ।
- 10 और ऐसा हुआ कि प्रदेश के उत्तरी भाग में जब लकड़ियों की बहुत कमी होने लगी तब वे नाव द्वारा लकड़ियां भिजवाते ।
- 11 और इस प्रकार उन्होंने प्रदेश के उत्तरी भाग के लोगों को समर्थ बनाया ताकि वे लकड़ी और सीमेंट के कई नगरों का निर्माण कर सकें ।
- 12 और ऐसा हुआ कि अम्मोन के कई लोग भी जो कि जन्म से लमनाई थे, इस प्रदेश में गए ।
- 13 और अब इन लोगों की कार्यवाहियों के कई अभिलेख, इनमें से कई लोगों द्वारा रखे गए, जो कि बहुत अधिक अभिलेख हैं, और इनके संबंध में विस्तृत जानकारी देते हैं ।
- 14 परन्तु देखो, इस कार्य में इन लोगों की कार्यवाहियों के सौवें भाग को, हां, लमनाइयों और नफाइयों के विवरण को, उनकी लड़ाइयों, और विवादों, और मतभेदों, और उनके प्रचार-कार्य, और उनकी भविष्यवाणियों, और उनकी जल यात्राओं और उनके जहाजों के निर्माण, और उनके मंदिरों, और आराधनालय और उनके पवित्र स्थानों के निर्माण को, और उनकी धार्मिकता, और उनकी दुष्टता, और उनकी हत्याएं, और उनकी चोरियों, और उनकी लूट-मार, और हर प्रकार के घृणित कार्यों और वेश्यावृत्तियों को शामिल नहीं किया जा सकता है ।
- 15 परन्तु देखो, हर प्रकार की कई पुस्तकें और कई अभिलेख हैं, और मुख्यतः वे नफाइयों द्वारा रखे गए हैं ।
- 16 और उनकी देखभाल नफाइयों द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक की गई, यहां तक कि तब भी जब वे उल्लंघन में पड़ गए और उनकी हत्या हुई, उन्हें लूटा गया, उनका शिकार हुआ, और उन्हें भगाया और मारा गया, और वे धरती पर तितर-बितर हुए, और तब भी जब वे लमनाइयों में मिल गए और दुष्ट, जंगली, और उग्र, हां, यहां तक कि तब भी जब वे लमनाई बन गए, और अब वे नफाई नहीं कहलाए ।

And the people who were in the land northward did dwell in tents, and in houses of cement, and they did suffer whatsoever tree should spring up upon the face of the land that it should grow up, that in time they might have timber to build their houses, yea, their cities, and their temples, and their synagogues, and their sanctuaries, and all manner of their buildings.

And it came to pass as timber was exceedingly scarce in the land northward, they did send forth much by the way of shipping.

And thus they did enable the people in the land northward that they might build many cities, both of wood and of cement.

And it came to pass that there were many of the people of Ammon, who were Lamanites by birth, did also go forth into this land.

And now there are many records kept of the proceedings of this people, by many of this people, which are particular and very large, concerning them.

But behold, a hundredth part of the proceedings of this people, yea, the account of the Lamanites and of the Nephites, and their wars, and contentions, and dissensions, and their preaching, and their prophecies, and their shipping and their building of ships, and their building of temples, and of synagogues and their sanctuaries, and their righteousness, and their wickedness, and their murders, and their robberings, and their plundering, and all manner of abominations and whoredoms, cannot be contained in this work.

But behold, there are many books and many records of every kind, and they have been kept chiefly by the Nephites.

And they have been handed down from one generation to another by the Nephites, even until they have fallen into transgression and have been murdered, plundered, and hunted, and driven forth, and slain, and scattered upon the face of the earth, and mixed with the Lamanites until they are no more called the Nephites, becoming wicked, and wild, and ferocious, yea, even becoming Lamanites.

- 17 और अब मैं फिर से अपने विवरण पर वापस लौटता हूँ; इसलिए, मैंने जो कुछ भी कहा वह नफी के लोगों में भारी विवादों, और हंगामों, और लड़ाइयों, और मतभेदों के पश्चात हुआ ।
- 18 न्यायियों के शासन का छियालीसवां वर्ष समाप्त हुआ;
- 19 और ऐसा हुआ कि प्रदेश में फिर भी भारी विवाद रहा, हां, यहां तक कि सैंतालीसवें वर्ष में, और अड़तालीसवें वर्ष में भी ।
- 20 फिर भी अपक्षपात और समानता के साथ हिलामन न्याय-आसन पर बैठा रहा; हां, उसने नियमों, मतों और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया; और वह निरंतर वही करता रहा जो परमेश्वर की नजर में सही था; और वह अपने पिता के मार्गों पर चला, इतना अधिक कि प्रदेश में उसकी उन्नति हुई ।
- 21 और ऐसा हुआ कि उसके दो बेटे हुए । उसने बड़े बेटे का नाम नफी, और छोटे बेटे का नाम लेही रखा । और वे प्रभु में बढ़ने लगे ।
- 22 और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के अड़-तालीसवें वर्ष के अंत में, नफाइयों के लोगों में युद्ध और विवाद कुछ हद तक कम होने लगे ।
- 23 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के उनतालीसवें वर्ष में, प्रदेश में निरंतर शांति बनी रही, केवल उस गुप्त गठबंधन के अलावा जिसे गडियन्टन डाकू ने प्रदेश के अधिक आबादी वाले हिस्से में स्थापित किया था, जिसकी जानकारी उस समय शासन के अधिकारियों को नहीं थी; इसलिए वे प्रदेश से नष्ट नहीं किये जा सके ।
- 24 और ऐसा हुआ कि इसी वर्ष गिरजे में बहुत उन्नति हुई, इतना अधिक कि हजारों की संख्या में लोग गिरजे से जुड़े और पश्चाताप कर बपतिस्मा लिया ।
- 25 और गिरजे में बहुत उन्नति हुई, और लोगों पर बहुत आशीर्षें उंडेली गईं, कि उच्च याजक और शिक्षक भी अपनी सोच से परे अचम्भीत हुए ।

And now I return again to mine account; therefore, what I have spoken had passed after there had been great contentions, and disturbances, and wars, and dissensions, among the people of Nephi.

The forty and sixth year of the reign of the judges ended;

And it came to pass that there was still great contention in the land, yea, even in the forty and seventh year, and also in the forty and eighth year.

Nevertheless Helaman did fill the judgment-seat with justice and equity; yea, he did observe to keep the statutes, and the judgments, and the commandments of God; and he did do that which was right in the sight of God continually; and he did walk after the ways of his father, insomuch that he did prosper in the land.

And it came to pass that he had two sons. He gave unto the eldest the name of Nephi, and unto the youngest, the name of Lehi. And they began to grow up unto the Lord.

And it came to pass that the wars and contentions began to cease, in a small degree, among the people of the Nephites, in the latter end of the forty and eighth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

And it came to pass in the forty and ninth year of the reign of the judges, there was continual peace established in the land, all save it were the secret combinations which Gadianton the robber had established in the more settled parts of the land, which at that time were not known unto those who were at the head of government; therefore they were not destroyed out of the land.

And it came to pass that in this same year there was exceedingly great prosperity in the church, insomuch that there were thousands who did join themselves unto the church and were baptized unto repentance.

And so great was the prosperity of the church, and so many the blessings which were poured out upon the people, that even the high priests and the teachers were themselves astonished beyond measure.

26 और ऐसा हुआ कि प्रभु का कार्य उन्नति पर था जिससे कई लोगों ने बपतिस्मा लिया, हां, यहां तक कि हजारों की संख्या में लोग परमेश्वर के गिरजे से जुड़े ।

27 इस प्रकार हम देख सकते हैं कि प्रभु उन सब पर दया करता है जो अपने हृदय की सच्चाई से उसके पवित्र नाम को पुकारते हैं ।

28 हां, इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वर्ग का द्वार सभी के लिए खुला है, यहां तक कि उन लोगों के लिए भी जो कि परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह में भी विश्वास करते हैं ।

29 हां, हम देखते हैं कि जो कोई भी परमेश्वर के उस वचन का सहारा लेगा, जो जीवित और शक्तिशाली है, जो कि शैतान की सभी चालाकियों और फंदों और छलबल को चूर-चूर करेगा, और मसीह के लोगों को तंग और संकरे मार्ग से, दुखों की उस अनंत घाटी के पार ले जाएगा जिसे दुष्ट लोगों को निगलने के लिए तैयार किया गया है ।

30 और उनकी आत्माएं, हां उनकी अमर आत्माएं, इब्राहीम, और इसहाक, और याकूब, और अपने सभी पवित्र पूर्वजों के साथ, स्वर्ग के राज्य में परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठेंगी, कभी भी फिर से बाहर न जाने के लिए ।

31 और इसी वर्ष जराहेमला के प्रदेश, और उसके आसपास के क्षेत्रों में, और उस प्रदेश में भी जिस पर नफाइयों का अधिकार था, निरंतर आनंद रहा ।

32 और ऐसा हुआ कि उनतालीसवें वर्ष के शेष दिनों में शांति और बहुत ही आनंद बना रहा; हां, और न्यायियों के शासन के पचासवें वर्ष में भी निरंतर शांति और बहुत ही आनंद बना रहा ।

33 और न्यायियों के शासन के इक्यावनवें वर्ष में भी शांति बनी रही, केवल उस अहंकार को छोड़कर जो गिरजे में प्रवेश करने लगी थी— परमेश्वर के गिरजे में नहीं, परन्तु उन लोगों के हृदयों में जो परमेश्वर के गिरजे का सदस्य होने का ढोंग करते थे—

34 और वे अहंकार में फूले हुए थे, यहां तक कि अपने कई भाइयों को कष्ट दे रहे थे । अब यह घोर बुराई थी, जिसके कारण जो लोग विनम्र थे उन्होंने अत्याधिक उत्पीड़न सहा, और भारी कष्ट उठाया ।

And it came to pass that the work of the Lord did prosper unto the baptizing and uniting to the church of God, many souls, yea, even tens of thousands.

Thus we may see that the Lord is merciful unto all who will, in the sincerity of their hearts, call upon his holy name.

Yea, thus we see that the gate of heaven is open unto all, even to those who will believe on the name of Jesus Christ, who is the Son of God.

Yea, we see that whosoever will may lay hold upon the word of God, which is quick and powerful, which shall divide asunder all the cunning and the snares and the wiles of the devil, and lead the man of Christ in a strait and narrow course across that everlasting gulf of misery which is prepared to engulf the wicked—

And land their souls, yea, their immortal souls, at the right hand of God in the kingdom of heaven, to sit down with Abraham, and Isaac, and with Jacob, and with all our holy fathers, to go no more out.

And in this year there was continual rejoicing in the land of Zarahemla, and in all the regions round about, even in all the land which was possessed by the Nephites.

And it came to pass that there was peace and exceedingly great joy in the remainder of the forty and ninth year; yea, and also there was continual peace and great joy in the fiftieth year of the reign of the judges.

And in the fifty and first year of the reign of the judges there was peace also, save it were the pride which began to enter into the church—not into the church of God, but into the hearts of the people who professed to belong to the church of God—

And they were lifted up in pride, even to the persecution of many of their brethren. Now this was a great evil, which did cause the more humble part of the people to suffer great persecutions, and to wade through much affliction.

- 35 फिर भी अक्सर उन्होंने उपवास और प्रार्थना की, और अपनी विनम्रता में मजबूत और मजबूत होते गए, और अपनी आत्माओं को आनंद और आश्वासन से भरते हुए मसीह के विश्वास में दृढ़ और दृढ़ होते गए, हां, यहां तक कि अपने हृदयों का शुद्धिकरण और पवित्रीकरण किया, वो पवित्रीकरण जो परमेश्वर के प्रति अपने हृदयों की समर्पणता के कारण आती है।
- 36 और ऐसा हुआ कि लोगों के हृदयों में बढ़ रहे भारी अहंकार के अलावा, बावनवां वर्ष भी शांति से समाप्त हुआ; और ऐसा उनकी भारी संपत्तियों और प्रदेश में उनकी संपन्नता के कारण हुआ; और दिन प्रतिदिन यह उनमें बढ़ता ही गया।
- 37 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के तीरपनवें वर्ष में, हिलामन की मृत्यु हो गई, और उसके स्थान पर उसके बड़े बेटे नफी ने शासन करना आरंभ किया। और ऐसा हुआ कि न्याय और समानता के साथ वह न्याय-आसन पर बैठा रहा; हां, उसने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया, और अपने पिता के मार्ग पर चला।

Nevertheless they did fast and pray oft, and did wax stronger and stronger in their humility, and firmer and firmer in the faith of Christ, unto the filling their souls with joy and consolation, yea, even to the purifying and the sanctification of their hearts, which sanctification cometh because of their yielding their hearts unto God.

And it came to pass that the fifty and second year ended in peace also, save it were the exceedingly great pride which had gotten into the hearts of the people; and it was because of their exceedingly great riches and their prosperity in the land; and it did grow upon them from day to day.

And it came to pass in the fifty and third year of the reign of the judges, Helaman died, and his eldest son Nephi began to reign in his stead. And it came to pass that he did fill the judgment-seat with justice and equity; yea, he did keep the commandments of God, and did walk in the ways of his father.

## हिलामन 4

- 1 और ऐसा हुआ कि चौवनवें वर्ष में गिरजे में बहुत से मतभेद हुए, और लोगों के बीच में विवाद भी था, इतना अधिक कि बहुत रक्तपात हुआ ।
- 2 और विरोधी लोगों को मार दिया गया और प्रदेश से बाहर निकाल दिया गया, और वे लमनाइयों के राजा के पास गए ।
- 3 और ऐसा हुआ कि उन्होंने लमनाइयों को भड़काने का प्रयत्न किया कि वे नफाइयों से युद्ध करें; परन्तु देखो, लमनाई अत्याधिक डरे हुए थे, इतना अधिक कि उन्होंने उन विपक्षियों की बातों को नहीं सुना ।
- 4 परन्तु ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के छप्पनवें वर्ष में, कुछ ऐसे विपक्षी थे जो नफाइयों से अलग होकर लमनाइयों के पास चले गए; और उन अन्य लोगों के साथ मिलकर उन्हें नफाइयों के विरुद्ध भड़काने में सफल हुए; और उस वर्ष वे सब युद्ध की तैयारी में थे ।
- 5 और सत्तावनवें वर्ष में वे नफाइयों के विरुद्ध युद्ध करने आए, और उन्होंने मौत का खेल आरंभ किया; हां, इतना अधिक कि न्यायियों के शासन के अठ्ठावनवें वर्ष में, जराहेमला प्रदेश पर कब्जा करने में उन्हें सफलता प्राप्त हुई; हां, और सारे प्रदेशों पर, यहां तक कि उस प्रदेश पर कब्जा करने में भी सफलता प्राप्त की जो संपन्न प्रदेश के नजदीक था ।
- 6 और नफाइयों और मोरोनिहा की सेनाओं को संपन्न प्रदेश तक खदेड़ दिया गया ।
- 7 और वहां पर पश्चिमी समुद्रतट से लेकर पूर्वी समुद्रतट तक लमनाइयों के विरुद्ध उन्होंने किलाबंदी की; जो कि एक नफाई के लिए किलाबंदी के स्थान से लेकर उस स्थान तक एक दिन की यात्रा थी जहां पर उन्होंने अपने उत्तरी देश को बचाने के लिए अपनी सेनाओं को तैनात किया हुआ था ।
- 8 और इस प्रकार लमनाइयों की असंख्य सेना की सहायता से उन नफाई विपक्षियों ने नफाइयों के उन सभी अधिकार क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया था जो दक्षिणी दिशा में स्थित थे । और यह सब न्यायियों के शासन के अठ्ठावनवें वर्ष में हुआ था ।

## Helaman 4

And it came to pass in the fifty and fourth year there were many dissensions in the church, and there was also a contention among the people, insomuch that there was much bloodshed.

And the rebellious part were slain and driven out of the land, and they did go unto the king of the Lamanites.

And it came to pass that they did endeavor to stir up the Lamanites to war against the Nephites; but behold, the Lamanites were exceedingly afraid, insomuch that they would not hearken to the words of those dissenters.

But it came to pass in the fifty and sixth year of the reign of the judges, there were dissenters who went up from the Nephites unto the Lamanites; and they succeeded with those others in stirring them up to anger against the Nephites; and they were all that year preparing for war.

And in the fifty and seventh year they did come down against the Nephites to battle, and they did commence the work of death; yea, insomuch that in the fifty and eighth year of the reign of the judges they succeeded in obtaining possession of the land of Zarahemla; yea, and also all the lands, even unto the land which was near the land Bountiful.

And the Nephites and the armies of Moronihah were driven even into the land of Bountiful;

And there they did fortify against the Lamanites, from the west sea, even unto the east; it being a day's journey for a Nephite, on the line which they had fortified and stationed their armies to defend their north country.

And thus those dissenters of the Nephites, with the help of a numerous army of the Lamanites, had obtained all the possession of the Nephites which was in the land southward. And all this was done in the fifty and eighth and ninth years of the reign of the judges.

- 9 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के साठवें वर्ष में, मोरोनिहा अपनी सेना के साथ प्रदेश के कई भागों को पुनः प्राप्त करने में सफल हुआ; हां, उन्होंने कई नगरों पर फिर से अधिकार कर लिया था जो लमनाइयों के हाथों में पड़ चुके थे ।
- 10 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के इकसठवें वर्ष में उन्होंने अपने सभी अधिकार क्षेत्रों में से आधे पर फिर से अधिकार कर लिया ।
- 11 अब नफाइयों की यह महान हानि, और भारी नर-संहार जो उनके बीच हुआ था, नहीं हुआ होता यदि उन लोगों के बीच उनकी दुष्टता और उनका घृणित कार्य नहीं होता; हां, और ऐसा उन लोगों के साथ भी हुआ था जो परमेश्वर के गिरजे का सदस्य होने का ढोंग करते थे ।
- 12 और ऐसा उनके अहंकार के कारण हुआ था, उनकी अत्याधिक धन-संपत्तियों के कारण हुआ था, हां, ऐसा गरीबों के प्रति उनके दमन के कारण हुआ था, भूखे लोगों को भोजन नहीं दिया गया था, वस्त्र-हीन लोगों को वस्त्र नहीं दिए गए थे, और अपने विनम्र लोगों के गालों पर थप्पड़ मारा था, पावन चीजों का मजाक उड़ाया था, भविष्यवाणी और प्रकटीकरण की आत्मा को नकारा था, हत्या, लूट-मार, झूठ, चोरी, व्यभिचार किया था, उठ रहे भारी विवादों, और दूर नफी के प्रदेश, लमनाइयों के बीच में भाग जाने के कारण हुआ था—
- 13 और इस महान दुष्टता के कारण, और अपने स्वयं के बल में उनके घमंड के कारण, उन्हें उनके ही बल में छोड़ दिया गया था; इसलिए उन्होंने उन्नति नहीं की, परन्तु प्रताड़ित और दंडित किये गए, और लमनाइयों के सामने से भगाए गए, तब तक जब तक कि उन्होंने उनके सारे प्रदेशों पर लगभग कब्जा न कर लिया ।
- 14 परन्तु देखो, मोरोनिहा ने लोगों के अधर्म के कारण उन्हें कई बातें सिखाई, और हिलामन के बेटे नफी और लेही ने भी लोगों को कई बातें सिखाई, हां, और उनकी दुष्टता से संबंधित कई बातों की भविष्यवाणी उनके लिए की, और उन्हें यह बताया कि उनके साथ क्या होगा यदि वे अपने पापों का पश्चाताप नहीं करेंगे ।
- 15 और ऐसा हुआ कि उन्होंने पश्चाताप किया, और जैसे-जैसे वे पश्चाताप करने लगे वे उन्नति करने लगे ।

And it came to pass in the sixtieth year of the reign of the judges, Moronihah did succeed with his armies in obtaining many parts of the land; yea, they regained many cities which had fallen into the hands of the Lamanites.

And it came to pass in the sixty and first year of the reign of the judges they succeeded in regaining even the half of all their possessions.

Now this great loss of the Nephites, and the great slaughter which was among them, would not have happened had it not been for their wickedness and their abomination which was among them; yea, and it was among those also who professed to belong to the church of God.

And it was because of the pride of their hearts, because of their exceeding riches, yea, it was because of their oppression to the poor, withholding their food from the hungry, withholding their clothing from the naked, and smiting their humble brethren upon the cheek, making a mock of that which was sacred, denying the spirit of prophecy and of revelation, murdering, plundering, lying, stealing, committing adultery, rising up in great contentions, and deserting away into the land of Nephi, among the Lamanites—

And because of this their great wickedness, and their boastings in their own strength, they were left in their own strength; therefore they did not prosper, but were afflicted and smitten, and driven before the Lamanites, until they had lost possession of almost all their lands.

But behold, Moronihah did preach many things unto the people because of their iniquity, and also Nephi and Lehi, who were the sons of Helaman, did preach many things unto the people, yea, and did prophesy many things unto them concerning their iniquities, and what should come unto them if they did not repent of their sins.

And it came to pass that they did repent, and inasmuch as they did repent they did begin to prosper.

- 16 क्योंकि जब मोरोनिहा ने देखा कि उन्होंने पश्चाताप किया तो उसने उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान, और एक नगर से दूसरे नगर तक ले जाने का साहस किया, तब तक किया जब तक कि उन्होंने अपनी संपत्तियों और अपने प्रदेशों में से आधे को फिर से प्राप्त न कर लिया ।
- 17 और इस प्रकार न्यायियों के शासन का इकसठवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 18 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के बासठवें वर्ष में, मोरोनिहा लमनाइयों से और अधिक धन-संपत्ति और अधिकार प्राप्त न कर सका ।
- 19 इसलिए उन्होंने अपने प्रदेश के बाकी बचे हिस्से को प्राप्त करने की अपनी योजना को त्याग दिया, क्योंकि लमनाइयों की संख्या बहुत थी जिससे उन पर विजय प्राप्त करना नफाइयों के लिए असंभव हो गया था; इसलिए मोरोनिहा ने अपनी सारी सेना को उन हिस्सों की देखभाल में लगा दिया जिसे उसने प्राप्त किया था ।
- 20 और ऐसा हुआ कि, लमनाइयों की बड़ी संख्या के कारण नफाई अत्याधिक डरे हुए थे, कि कहीं ऐसा न हो कि उन्हें वश में कर लिया जाए, और वे कुचले, और मारे जाएं, और नष्ट किये जाएं ।
- 21 हां, उन्होंने अलमा की भविष्यवाणियों को याद करना शुरू किया, और मुसायाह के शब्दों को भी; और उन्होंने देखा कि वे हठी लोग थे, और यह कि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं को व्यर्थ मान लिया था ।
- 22 और यह कि उन्होंने मूसा की व्यवस्था में, या उसमें फेर-बदल किया और उसे अपने पैरों तले रौंद दिया जिसे प्रभु ने उसे लोगों को देने की आज्ञा दी थी; और उन्होंने देखा कि उनकी व्यवस्था दूषित हो चुकी थी, और यह कि वे लोग दुष्ट हो गए थे, इतना अधिक कि वे लमनाइयों के समान दुष्ट हो गए थे ।
- 23 और उनके अधर्म के कारण गिरजे में लोगों की संख्या कम होने लगी थी; और वे भविष्यवाणी की आत्मा में और प्रकटीकरण की आत्मा में अविश्वासी होने लगे थे; और परमेश्वर का न्याय टकटकी लगाए उनके चेहरे को देख रहा था ।
- 24 और उन्होंने देखा कि वे अपने लमनाई भाइयों के समान दुर्बल हो गए थे, और यह कि अब प्रभु की आत्मा उनकी रक्षा नहीं करती थी; हां, वह उनसे अलग हो चुकी थी क्योंकि प्रभु की आत्मा अपवित्र मंदिरों में निवास नहीं करती है—

For when Moronihah saw that they did repent he did venture to lead them forth from place to place, and from city to city, even until they had regained the one-half of their property and the one-half of all their lands.

And thus ended the sixty and first year of the reign of the judges.

And it came to pass in the sixty and second year of the reign of the judges, that Moronihah could obtain no more possessions over the Lamanites.

Therefore they did abandon their design to obtain the remainder of their lands, for so numerous were the Lamanites that it became impossible for the Nephites to obtain more power over them; therefore Moronihah did employ all his armies in maintaining those parts which he had taken.

And it came to pass, because of the greatness of the number of the Lamanites the Nephites were in great fear, lest they should be overpowered, and trodden down, and slain, and destroyed.

Yea, they began to remember the prophecies of Alma, and also the words of Mosiah; and they saw that they had been a stiffnecked people, and that they had set at naught the commandments of God;

And that they had altered and trampled under their feet the laws of Mosiah, or that which the Lord commanded him to give unto the people; and they saw that their laws had become corrupted, and that they had become a wicked people, insomuch that they were wicked even like unto the Lamanites.

And because of their iniquity the church had begun to dwindle; and they began to disbelieve in the spirit of prophecy and in the spirit of revelation; and the judgments of God did stare them in the face.

And they saw that they had become weak, like unto their brethren, the Lamanites, and that the Spirit of the Lord did no more preserve them; yea, it had withdrawn from them because the Spirit of the Lord doth not dwell in unholy temples—



25      इसलिए अपने चमत्कारिक और अद्वितीय शक्ति के द्वारा प्रभु ने उनकी रक्षा करनी बंद कर दी, क्योंकि वे अविश्वास और भयावह दुष्टता की स्थिति में चले गए थे; और उन्होंने देखा कि लमनाइयों की संख्या उनसे बहुत अधिक थी, और यदि वे प्रभु अपने परमेश्वर में नहीं लगे रहे तो निसंदेह नष्ट हो जाएंगे ।

26      क्योंकि देखो, उन्होंने देखा कि लमनाइयों का बल उनके बल के समान है, यहां तक कि इनके सैनिकों के समान ही उनके सैनिकों का बल था । और इस प्रकार वे भारी पाप में पड़ गए; हां, इस प्रकार थोड़े ही दिनों में, अपने पाप के कारण वे दुर्बल हो गए ।

Therefore the Lord did cease to preserve them by his miraculous and matchless power, for they had fallen into a state of unbelief and awful wickedness; and they saw that the Lamanites were exceedingly more numerous than they, and except they should cleave unto the Lord their God they must unavoidably perish.

For behold, they saw that the strength of the Lamanites was as great as their strength, even man for man. And thus had they fallen into this great transgression; yea, thus had they become weak, because of their transgression, in the space of not many years.

## हिलामन 5

- 1 और ऐसा हुआ कि उसी वर्ष में, देखो, नफी ने न्याय-आसन उस व्यक्ति को सौंप दिया जिसका नाम सिसोरम था ।
- 2 क्योंकि उनके नियम और शासन लोगों के मतों द्वारा प्रमाणित किये गए थे, और जिन्होंने बुराई को चुना था उनकी संख्या उन लोगों से अधिक थी जिन्होंने अच्छाई को चुना था, इसलिए उनका विनाश निश्चित था, क्योंकि उनकी व्यवस्था दूषित हो चुकी थी ।
- 3 हां, और यही सब नहीं था; वे हठी लोग थे, इतने अधिक कि उन पर शासन न तो नियम द्वारा किया जा सकता था और न ही न्याय द्वारा, वे तो केवल विनाश की तरफ ही बढ़ रहे थे ।
- 4 और ऐसा हुआ कि उनके अधर्म के कारण नफी थक चुका था; और उसने न्याय-आसन त्याग दिया, और अपने बाकी बचे हुए दिनों में उसने, और उसके भाई लेही ने भी परमेश्वर के वचन का प्रचार-कार्य अपने ऊपर ले लिया ।
- 5 क्योंकि उन्हें उनके पिता हिलामन की कही गई बातें याद थीं । और ये वे शब्द हैं जिसे उसने कहा था:
- 6 देखो, मेरे बेटों, मैं चाहता हूँ कि तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करो; और मैं चाहता हूँ कि तुम इन बातों को लोगों को बताओ । देखो, मैंने तुम्हारा नाम हमारे पहले पूर्वजों के नाम पर रखा है जो कि यरूशलेम प्रदेश से बाहर आए थे; और मैंने ऐसा इसलिए किया है ताकि जब तुम अपने नाम के बारे में सोचो तो उन्हें भी याद कर सको; और जब तुम उन्हें याद करो तब उनके कार्यों को भी याद कर सको; और जब तुम उनके कार्यों को याद करो तब तुम जान सको कि किस प्रकार इसे कहा गया था, और इसे लिखा गया था, कि ये अच्छी बातें हैं ।
- 7 इसलिए, मेरे बेटों, मैं चाहता हूँ कि तुम वही करो जो अच्छा है, मानो ये बातें तुम्हारे लिए कही और लिखी गई हैं, जैसे कि ये उनके लिए कही और लिखी गई थीं ।
- 8 और अब मेरे बेटों, देखो मैं तुम लोगों से इससे अधिक की इच्छा रखता हूँ, जो है कि तुम इन चीजों को इसलिए मत करो कि तुम अहंकार से भर जाओ, परन्तु तुम इन चीजों को इसलिए करो जिससे कि तुम स्वर्ग में अपने लिए धन इकट्ठा कर सको, हां, जो कि अनंत है, और जिसकी आभा कम नहीं होती; हां, जिससे कि तुम अनंत काल के लिए उस अमूल्य उपहार को पा सको, जिसका हमें विश्वास है कि इसे हमारे पूर्वजों को भी दिया गया होगा ।

## Helaman 5

And it came to pass that in this same year, behold, Nephi delivered up the judgment-seat to a man whose name was Cezoram.

For as their laws and their governments were established by the voice of the people, and they who chose evil were more numerous than they who chose good, therefore they were ripening for destruction, for the laws had become corrupted.

Yea, and this was not all; they were a stiffnecked people, insomuch that they could not be governed by the law nor justice, save it were to their destruction.

And it came to pass that Nephi had become weary because of their iniquity; and he yielded up the judgment-seat, and took it upon him to preach the word of God all the remainder of his days, and his brother Lehi also, all the remainder of his days;

For they remembered the words which their father Helaman spake unto them. And these are the words which he spake:

Behold, my sons, I desire that ye should remember to keep the commandments of God; and I would that ye should declare unto the people these words. Behold, I have given unto you the names of our first parents who came out of the land of Jerusalem; and this I have done that when you remember your names ye may remember them; and when ye remember them ye may remember their works; and when ye remember their works ye may know how that it is said, and also written, that they were good.

Therefore, my sons, I would that ye should do that which is good, that it may be said of you, and also written, even as it has been said and written of them.

And now my sons, behold I have somewhat more to desire of you, which desire is, that ye may not do these things that ye may boast, but that ye may do these things to lay up for yourselves a treasure in heaven, yea, which is eternal, and which fadeth not away; yea, that ye may have that precious gift of eternal life, which we have reason to suppose hath been given to our fathers.

- 9 याद रखो, मेरे बेटों याद रखो, बातें जिसे राजा बिन्यामीन ने अपने लोगों से कहा था; हां, याद रखो कि उस यीशु मसीह के प्रायश्चित्त वाले लहू के अलावा जो कि आएगा, और कोई भी तरीका या साधन नहीं है जिससे मनुष्य को बचाया जा सके; हां, याद रखो कि वह संसार को मुक्ति दिलाने आएगा ।
- 10 और उन बातों को भी याद रखो जिसे अमूलेक ने अम्मोनिहा के नगर में जीजरोम से कहा था; क्योंकि उसने उससे कहा था कि प्रभु निश्चित रूप से अपने लोगों को मुक्ति दिलाने आएगा, परन्तु यह कि वह उन्हें पाप में रहते हुए मुक्ति नहीं दिलाएगा, परन्तु उन्हें उनके पापों से मुक्ति दिलाएगा ।
- 11 और उसे पिता द्वारा सामर्थ्य दिया गया है कि पश्चाताप के कारण वह उन्हें उनके पापों से मुक्ति दिलाएगा; इसलिए पश्चाताप के नियमों के बारे में बताने के लिए उसने अपने स्वर्गदूतों को भेजा है, जो कि उनकी आत्माओं के उद्धार के प्रति मुक्तिदाता का सामर्थ्य लाता है ।
- 12 और अब, मेरे बेटों, याद रखो, याद रखो कि यह मुक्तिदाता की चट्टान पर है, जो कि परमेश्वर का पुत्र मसीह है, जिस पर तुम अपनी नींव रख सको; ताकि जब शैतान अपनी प्रबल हवाओं को फेंकेगा, हां, बवंडर में अपनी बिजली चमकाएगा, हां, जब उसके सारे ओले बरसेंगे और उसके प्रबल तूफान तुम्हें थपेड़े मारेंगे, तुम्हें दुखों की घाटी और अंतहीन श्राप में खींचने के लिए उसके पास बल नहीं होगा, क्योंकि जिस चट्टान पर तुम्हारा निर्माण हुआ है वह मजबूत आधार है, एक ऐसा आधार जिस पर यदि मनुष्यों का निर्माण हो तो वे गिर नहीं सकते ।
- 13 और ऐसा हुआ कि यही वे बातें हैं जिसे हिलामन ने अपने बेटों को सिखाया था; हां, उसने उन्हें और भी बहुत सी बातें सिखाईं जिसे लिखा नहीं गया है, और बहुत सी बातें सिखाईं जिसे लिखा गया है ।
- 14 और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए, उन्होंने उसकी बातों को याद रखा; और इसलिए संपन्न प्रदेश से आरंभ करते हुए, नफी के लोगों में परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए वे आगे बढ़े ।
- 15 और वहां से गिद के नगर गए; और गिद के नगर से मूलक के नगर गए;
- 16 और यहां तक कि एक नगर से दूसरे नगर गए, जब तक कि वे नफी के उन लोगों में न पहुंच गए जो कि प्रदेश की दक्षिणी दिशा में रहते थे; और वहां से लमनाइयों के बीच जराहेमला के प्रदेश गए ।

O remember, remember, my sons, the words which king Benjamin spake unto his people; yea, remember that there is no other way nor means whereby man can be saved, only through the atoning blood of Jesus Christ, who shall come; yea, remember that he cometh to redeem the world.

And remember also the words which Amulek spake unto Zeezrom, in the city of Ammonihah; for he said unto him that the Lord surely should come to redeem his people, but that he should not come to redeem them in their sins, but to redeem them from their sins.

And he hath power given unto him from the Father to redeem them from their sins because of repentance; therefore he hath sent his angels to declare the tidings of the conditions of repentance, which bringeth unto the power of the Redeemer, unto the salvation of their souls.

And now, my sons, remember, remember that it is upon the rock of our Redeemer, who is Christ, the Son of God, that ye must build your foundation; that when the devil shall send forth his mighty winds, yea, his shafts in the whirlwind, yea, when all his hail and his mighty storm shall beat upon you, it shall have no power over you to drag you down to the gulf of misery and endless wo, because of the rock upon which ye are built, which is a sure foundation, a foundation whereon if men build they cannot fall.

And it came to pass that these were the words which Helaman taught to his sons; yea, he did teach them many things which are not written, and also many things which are written.

And they did remember his words; and therefore they went forth, keeping the commandments of God, to teach the word of God among all the people of Nephi, beginning at the city Bountiful;

And from thenceforth to the city of Gid; and from the city of Gid to the city of Mulek;

And even from one city to another, until they had gone forth among all the people of Nephi who were in the land southward; and from thence into the land of Zarahemla, among the Lamanites.

- 17 और ऐसा हुआ कि उन्होंने महान शक्ति से इतना अधिक प्रचार-कार्य किया कि उन्होंने उन कई विपक्षियों में हड़बड़ी पैदा कर दी जो नफाइयों से अलग हो गए थे, इतना अधिक कि वे आगे आए और अपने पापों को स्वीकार किया और अंगीकार कर बपतिस्मा लिया, और जो भी गलत कार्य उन्होंने किये थे उन्हें सुधारने का प्रयास करने के लिए वे शीघ्र ही नफाइयों के पास वापस चले गए ।
- 18 और ऐसा हुआ कि नफी और लेही ने लमनाइयों को प्रबल सामर्थ्य और अधिकार के साथ सिखाया, क्योंकि उन्हें सामर्थ्य और अधिकार दिया गया था ताकि वे बोल सकें, और उन्हें वह भी बताया गया था कि उन्हें क्या बोलना चाहिए—
- 19 इसलिए उन्होंने बोला जिससे लमनाइयों को महान आश्चर्य हुआ, उन्हें इतना अधिक समझाते हुए कि जराहेमला प्रदेश और उसके आसपास के क्षेत्रों से आठ हजार लमनाइयों ने पश्चाताप कर बपतिस्मा लिया, और अपने पूर्वजों की भ्रष्ट परंपराओं को जान गए ।
- 20 और ऐसा हुआ कि नफी के प्रदेश जाने के लिए नफी और लेही वहां से आगे बढ़ गए ।
- 21 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों की सेना उन्हें पकड़कर ले गई और बंदीगृह में डाल दिया; हां, उसी बंदीगृह में डाल दिया जिसमें लिमही के सेवकों ने अम्मोन और उसके भाइयों को डाला था ।
- 22 और कई दिनों तक बिना भोजन के बंदीगृह में रहने के पश्चात, देखो, वे लोग उन्हें बंदीगृह से बाहर निकालने गए ताकि उन्हें मार सकें ।
- 23 और ऐसा हुआ कि नफी और लेही आग से घिर गए, आग इतनी अधिक थी कि जल जाने के भय से उन पर हाथ रखने का उनका साहस न हुआ । फिर भी, नफी और लेही नहीं जले; और वे आग के बीच में खड़े थे और नहीं जले ।
- 24 और जब उन्होंने देखा कि वे अग्नि के एक खम्भे से घिर हुए थे, और उसने उन्हें नहीं जलाया तो उनके हृदयों में साहस उत्पन्न हुआ ।
- 25 क्योंकि उन्होंने देखा कि न तो उन पर हाथ रखने का साहस लमनाइयों को हुआ; न ही उन्होंने उनके पास आने का साहस किया, परन्तु ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे आश्चर्य से हक्के-बक्के हो गए थे ।

And it came to pass that they did preach with great power, insomuch that they did confound many of those dissenters who had gone over from the Nephites, insomuch that they came forth and did confess their sins and were baptized unto repentance, and immediately returned to the Nephites to endeavor to repair unto them the wrongs which they had done.

And it came to pass that Nephi and Lehi did preach unto the Lamanites with such great power and authority, for they had power and authority given unto them that they might speak, and they also had what they should speak given unto them—

Therefore they did speak unto the great astonishment of the Lamanites, to the convincing them, insomuch that there were eight thousand of the Lamanites who were in the land of Zarahemla and round about baptized unto repentance, and were convinced of the wickedness of the traditions of their fathers.

And it came to pass that Nephi and Lehi did proceed from thence to go to the land of Nephi.

And it came to pass that they were taken by an army of the Lamanites and cast into prison; yea, even in that same prison in which Ammon and his brethren were cast by the servants of Limhi.

And after they had been cast into prison many days without food, behold, they went forth into the prison to take them that they might slay them.

And it came to pass that Nephi and Lehi were encircled about as if by fire, even insomuch that they durst not lay their hands upon them for fear lest they should be burned. Nevertheless, Nephi and Lehi were not burned; and they were as standing in the midst of fire and were not burned.

And when they saw that they were encircled about with a pillar of fire, and that it burned them not, their hearts did take courage.

For they saw that the Lamanites durst not lay their hands upon them; neither durst they come near unto them, but stood as if they were struck dumb with amazement.

- 26 और ऐसा हुआ कि नफी और लेही खड़े हो गए और उनसे बातें करने लगे, यह कहते हुए: डरो नहीं, क्योंकि देखो, परमेश्वर है जिसने तुम्हें यह अदभुत चीज दिखाई है, जिसमें तुम्हें यह दिखाया गया है कि हमें मारने के लिए तुम हमें पकड़ नहीं सकते ।
- 27 और देखो, जब उन्होंने ये बातें कहीं, धरती तेजी से हिलने लगी, और बंदीगृह की दीवारें ऐसे हिलने लगीं जैसे मानो धरती पर गिरने ही वाली हों; परन्तु देखो, वे गिरी नहीं । और देखो, जो बंदीगृह में थे वे लमनाई और नफाई थे जो विपक्षी थे ।
- 28 और ऐसा हुआ कि उन पर अंधकार का बादल छा गया, और एक गंभीर भय ने उन्हें घेर लिया ।
- 29 और ऐसा हुआ कि एक आवाज सुनाई दी जैसे कि अंधकार के बादल के ऊपर से आ रही हो, यह कहते हुए: तुम पश्चाताप करो, तुम पश्चाताप करो, और मेरे उन सेवकों को मारने का प्रयास मत करो जिन्हें मैंने तुम्हें सुसमाचार सुनाने के लिए भेजा है ।
- 30 और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने इस आवाज को सुना, और देखा कि न तो यह गर्जन की आवाज थी, न ही कोई भारी उपद्रवी आवाज थी, परन्तु देखो, यह पूरी तरह से मधुर आवाज थी, मानो जैसे फुस-फुसाकर बोला गया हो, और इसने प्रत्येक आत्मा पर असर किया—
- 31 और मधुर आवाज के बावजूद, देखो धरती तेजी से हिली, और बंदीगृह की दीवारें फिर से हिलीं, जैसे मानो धरती पर गिरने ही वाली हों; और देखो अंधकार का जो बादल उन पर छाया हुआ था, हटा नहीं—
- 32 और देखो फिर से आवाज सुनाई दी, यह कहते हुए: तुम पश्चाताप करो, तुम पश्चाताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है; और मेरे सेवकों को मारने का प्रयास मत करो । और ऐसा हुआ कि धरती फिर से हिली, और दीवारें हिल गईं ।
- 33 और फिर से आवाज तीसरी बार सुनाई दी, और उन्हें अदभुत बातें बताईं जो मनुष्य द्वारा नहीं बताई जा सकती हैं; और दीवारें भी फिर से हिलीं, और धरती ऐसे हिली जैसे मानो वह फटकर अलग हो जाएगी ।
- 34 और ऐसा हुआ कि लमनाई नहीं भाग सके क्योंकि अंधकार के बादल ने उन्हें घेर लिया था; और जो भय उन पर आया था उसके कारण भी वे हिल नहीं सके ।

And it came to pass that Nephi and Lehi did stand forth and began to speak unto them, saying: Fear not, for behold, it is God that has shown unto you this marvelous thing, in the which is shown unto you that ye cannot lay your hands on us to slay us.

And behold, when they had said these words, the earth shook exceedingly, and the walls of the prison did shake as if they were about to tumble to the earth; but behold, they did not fall. And behold, they that were in the prison were Lamanites and Nephites who were dissenters.

And it came to pass that they were overshadowed with a cloud of darkness, and an awful solemn fear came upon them.

And it came to pass that there came a voice as if it were above the cloud of darkness, saying: Repent ye, repent ye, and seek no more to destroy my servants whom I have sent unto you to declare good tidings.

And it came to pass when they heard this voice, and beheld that it was not a voice of thunder, neither was it a voice of a great tumultuous noise, but behold, it was a still voice of perfect mildness, as if it had been a whisper, and it did pierce even to the very soul—

And notwithstanding the mildness of the voice, behold the earth shook exceedingly, and the walls of the prison trembled again, as if it were about to tumble to the earth; and behold the cloud of darkness, which had overshadowed them, did not disperse—

And behold the voice came again, saying: Repent ye, repent ye, for the kingdom of heaven is at hand; and seek no more to destroy my servants. And it came to pass that the earth shook again, and the walls trembled.

And also again the third time the voice came, and did speak unto them marvelous words which cannot be uttered by man; and the walls did tremble again, and the earth shook as if it were about to divide asunder.

And it came to pass that the Lamanites could not flee because of the cloud of darkness which did overshadow them; yea, and also they were immovable because of the fear which did come upon them.

- 35 अब उनमें एक ऐसा व्यक्ति था जो जन्म से नफाई था, जो कि कभी परमेश्वर के गिरजे का सदस्य हुआ करता था परन्तु बाद में विपक्षी हो गया था
- 36 और ऐसा हुआ कि उसने उसे घुमाया, और देखो, उसने अंधकार के बादल में नफी और लेही का चेहरा देखा; और देखो, स्वर्गदूतों के चेहरों के समान उनके चेहरे बहुत दमक रहे थे। और उसने देखा कि उनकी आंखें स्वर्ग की ओर उठ गई हैं; और उन्हें देखकर ऐसा लगता था जैसे वे किसी दिव्य व्यक्ति से बातचीत कर रहे हों जिसे उन्होंने देखा था।
- 37 और ऐसा हुआ कि उस व्यक्ति ने भीड़ से चिल्लाकर कहा, ताकि वे घुमें और देखें। और देखो, उन्हें सामर्थ्य प्रदान किया गया जिससे वे घुमें और देखें; और उन्होंने नफी और लेही का चेहरा देखा।
- 38 और उन्होंने व्यक्ति से पूछा: देखो, इन सब बातों का क्या अर्थ है, और वह कौन है जिससे ये लोग बात कर रहे हैं ?
- 39 अब इस व्यक्ति का नाम अम्मीनादाब था। और अम्मीनादाब ने उनसे कहा: वे परमेश्वर के स्वर्गदूतों से बात कर रहे हैं।
- 40 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों ने उससे पूछा: हमें क्या करना होगा जिससे कि हमारे ऊपर से अंधकार का यह बादल हट जाए ?
- 41 और अम्मीनादाब ने उनसे कहा: तुम्हें पश्चाताप करना होगा, और आवाज से याचना करनी होगी, तब तक जब तक कि तुम्हें उस मसीह में विश्वास न हो जाए जिसके विषय में तुम्हें अलमा, अमूलेक, और जीजरोम ने सिखाया था; और जब तुम ऐसा करोगे, तो तुम्हारे ऊपर से अंधकार का बादल हट जाएगा।
- 42 और ऐसा हुआ कि उन लोगों ने उस आवाज से याचना करना आरंभ कर दिया जिसने धरती को हिला दिया था; हां, उन्होंने तब तक याचना की जब तक कि अंधकार का बादल हट नहीं गया।
- 43 और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने अपनी आंखों को ऊपर उठाया, और देखा कि अंधकार का बादल उन पर से हट गया था, देखो, उन्होंने देखा कि हर एक व्यक्ति आग के एक स्तम्भ द्वारा घिरा हुआ था।

Now there was one among them who was a Nephite by birth, who had once belonged to the church of God but had dissented from them.

And it came to pass that he turned him about, and behold, he saw through the cloud of darkness the faces of Nephi and Lehi; and behold, they did shine exceedingly, even as the faces of angels. And he beheld that they did lift their eyes to heaven; and they were in the attitude as if talking or lifting their voices to some being whom they beheld.

And it came to pass that this man did cry unto the multitude, that they might turn and look. And behold, there was power given unto them that they did turn and look; and they did behold the faces of Nephi and Lehi.

And they said unto the man: Behold, what do all these things mean, and who is it with whom these men do converse?

Now the man's name was Aminadab. And Aminadab said unto them: They do converse with the angels of God.

And it came to pass that the Lamanites said unto him: What shall we do, that this cloud of darkness may be removed from overshadowing us?

And Aminadab said unto them: You must repent, and cry unto the voice, even until ye shall have faith in Christ, who was taught unto you by Alma, and Amulek, and Zeezrom; and when ye shall do this, the cloud of darkness shall be removed from overshadowing you.

And it came to pass that they all did begin to cry unto the voice of him who had shaken the earth; yea, they did cry even until the cloud of darkness was dispersed.

And it came to pass that when they cast their eyes about, and saw that the cloud of darkness was dispersed from overshadowing them, behold, they saw that they were encircled about, yea every soul, by a pillar of fire.

- 44 और नफी और लेही उनके बीच में थे; हां, वे घिर हुए थे; हां, वे जल रही आग के बीच में थे, और फिर भी न तो उसने उन्हें नुकसान पहुंचाया, न ही बंदीगृह की दीवारों को पकड़ा; और वे उस आनंद और महिमा से भर गए जिसे व्यक्त नहीं जा सकता है ।
- 45 और देखो, परमेश्वर की पवित्र आत्मा स्वर्ग से नीचे आई, और उनके हृदयों में प्रवेश किया, और वे ऐसे भर गए जैसे मानो आग हों, और वे अदभुत कर देनेवाली बातें बोल सकते थे ।
- 46 और ऐसा हुआ कि उन्हें एक आवाज सुनाई दी, हां, एक लुभावनी आवाज, जैसे कि वह फुसफुसा रही हो, यह कहते हुए:
- 47 शांति, तुम्हें मेरे प्रिय पुत्र में विश्वास करने के कारण शांति प्राप्त हो, जो कि संसार की नींव से ही था ।
- 48 और अब, जब उन्होंने यह सुना तो उन्होंने अपनी आंखें ऊपर उठाईं जैसे कि सुनाई दे रही उस आवाज को सुनना चाहते हों; और देखो, उन्होंने आकाश को खुलते हुए देखा; और स्वर्गदूत स्वर्ग से बाहर आकर उन्हें उपदेश देने लगे ।
- 49 और लगभग तीन सौ लोग थे जिन्होंने इन बातों को देखा और सुना; और उन्हें जाने और अचम्भीत न होने, और संदेह न करने के लिए कहा गया ।
- 50 और ऐसा हुआ कि वे आगे बढ़े, और उन्होंने लोगों को उपदेश दिया, सारे क्षेत्रों में उन बातों की घोषणा करते हुए जिन्हें उन्होंने सुना और देखा था, इतना अधिक उपदेश दिया कि बहुत से प्रमाण देखने और सुनने के कारण अधिकतर क्षेत्रों के लमनाई उनमें विश्वास करने लगे ।
- 51 और जितने लोगों ने विश्वास किया उन्होंने अपने युद्ध के हथियार नीचे डाल दिए, और अपनी ईर्ष्या और अपने पूर्वजों की परंपराओं को भी त्याग दिया ।
- 52 और ऐसा हुआ कि उन्होंने नफाइयों को उनके प्रदेश समर्पित कर दिए ।

And Nephi and Lehi were in the midst of them; yea, they were encircled about; yea, they were as if in the midst of a flaming fire, yet it did harm them not, neither did it take hold upon the walls of the prison; and they were filled with that joy which is unspeakable and full of glory.

And behold, the Holy Spirit of God did come down from heaven, and did enter into their hearts, and they were filled as if with fire, and they could speak forth marvelous words.

And it came to pass that there came a voice unto them, yea, a pleasant voice, as if it were a whisper, saying:

Peace, peace be unto you, because of your faith in my Well Beloved, who was from the foundation of the world.

And now, when they heard this they cast up their eyes as if to behold from whence the voice came; and behold, they saw the heavens open; and angels came down out of heaven and ministered unto them.

And there were about three hundred souls who saw and heard these things; and they were bidden to go forth and marvel not, neither should they doubt.

And it came to pass that they did go forth, and did minister unto the people, declaring throughout all the regions round about all the things which they had heard and seen, insomuch that the more part of the Lamanites were convinced of them, because of the greatness of the evidences which they had received.

And as many as were convinced did lay down their weapons of war, and also their hatred and the tradition of their fathers.

And it came to pass that they did yield up unto the Nephites the lands of their possession.

## हिलामन 6

- 1 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन का बासठवां वर्ष समाप्त होते-होते ये सब बातें हुईं और अधिकांश लमनाई धर्मी हुए, इतना अधिक कि विश्वास में उनकी दृढ़ता और स्थिरता के कारण वे धार्मिकता में नफाइयों से भी आगे हो गए ।
- 2 क्योंकि देखो, कई नफाई ऐसे थे जो बुरी तरह से कठोर और अपश्चातापी हो गए थे, इतना अधिक कि उन्होंने परमेश्वर के वचन को अस्वीकार किया और उन्होंने उस उपदेश और भविष्यवाणी को भी अस्वीकार किया जिसे उन्होंने सीखा था ।
- 3 फिर भी, लमनाइयों के परिवर्तन के कारण गिरजे के लोगों को महान आनंद हुआ, हां, परमेश्वर के उस गिरजे के कारण जिसे उन के बीच स्थापित किया गया था । और उन्होंने एक दूसरे से मेलजोल बढ़ाया, और एक दूसरे के साथ आनंद मनाया, और बहुत खुशी हुई ।
- 4 और ऐसा हुआ कि कई लमनाई जराहेमला के प्रदेश आए, और नफाइयों को बताया कि किस प्रकार उनका परिवर्तन हुआ, और उन्हें विश्वास और पश्चाताप के लिए उपदेश दिया ।
- 5 हां, और लोगों को विनम्रता की गहराई में लाने, परमेश्वर और मेमने का विनम्र अनुयाई बनाने के लिए कई लोगों ने महान सामर्थ्य और अधिकार के साथ प्रचार-कार्य किया ।
- 6 और ऐसा हुआ कि कई लमनाई प्रदेश की उत्तरी दिशा में गए; और लोगों को सिखाने के लिए नफी और लेही भी प्रदेश की उत्तरी दिशा में गए । और इस प्रकार तीरसठवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 7 और देखो, पूरे प्रदेश में शांति थी, इतनी अधिक कि नफाइयों या लमनाइयों के बीच में, नफाई प्रदेश के किसी भी भाग में अपनी इच्छानुसार आ-जा सकते थे ।
- 8 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों और नफाइयों के बीच में, लमनाई भी अपनी इच्छानुसार कहीं भी आ-जा सकते थे; और इस प्रकार अपनी इच्छानुसार खरीदने और बेचने, और लाभ प्राप्ति के लिए वे एक दूसरे के साथ खुलकर बातचीत करते थे ।

## Helaman 6

And it came to pass that when the sixty and second year of the reign of the judges had ended, all these things had happened and the Lamanites had become, the more part of them, a righteous people, inasmuch that their righteousness did exceed that of the Nephites, because of their firmness and their steadiness in the faith.

For behold, there were many of the Nephites who had become hardened and impenitent and grossly wicked, insomuch that they did reject the word of God and all the preaching and prophesying which did come among them.

Nevertheless, the people of the church did have great joy because of the conversion of the Lamanites, yea, because of the church of God, which had been established among them. And they did fellowship one with another, and did rejoice one with another, and did have great joy.

And it came to pass that many of the Lamanites did come down into the land of Zarahemla, and did declare unto the people of the Nephites the manner of their conversion, and did exhort them to faith and repentance.

Yea, and many did preach with exceedingly great power and authority, unto the bringing down many of them into the depths of humility, to be the humble followers of God and the Lamb.

And it came to pass that many of the Lamanites did go into the land northward; and also Nephi and Lehi went into the land northward, to preach unto the people. And thus ended the sixty and third year.

And behold, there was peace in all the land, insomuch that the Nephites did go into whatsoever part of the land they would, whether among the Nephites or the Lamanites.

And it came to pass that the Lamanites did also go whithersoever they would, whether it were among the Lamanites or among the Nephites; and thus they did have free intercourse one with another, to buy and to sell, and to get gain, according to their desire.



- 9 और ऐसा हुआ कि दोनों, लमनाई और नफाई बहुत धनी हो गए; और दोनों ही प्रदेशों में-दक्षिण और उत्तर में उनके पास बहुत सोना, और चांदी, और हर प्रकार का मूल्यवान धातु हो गया ।
- 10 अब दक्षिणी प्रदेश लेही कहलाया, और उत्तरी प्रदेश मूलक जिसका नाम सिदकिय्याह के बेटे के नाम पर रखा गया; क्योंकि प्रभु मूलक को उत्तरी प्रदेश में, और लेही को दक्षिणी प्रदेश में लाया था ।
- 11 और देखो, दोनों ही प्रदेशों में हर प्रकार का सोना, चांदी, और मूल्यवान कच्चा धातु पाया जाता था; और वहां पर दुर्लभ कारीगर भी थे, जो हर प्रकार के कच्चे धातु पर काम कर उसे शुद्ध बनाते थे; और इस प्रकार वे धनी हो गए ।
- 12 उत्तरी और दक्षिणी, दोनों ही प्रदेशों में उन्होंने प्रचुरता में अनाज उगाया; और दोनों ही प्रदेशों में वे बहुत समृद्ध हुए । और प्रदेश में उनकी संख्या में वृद्धि हुई और वे बहुत दृढ़ हुए । और उन्होंने जानवरों के बहुत से समूहों और झुंडों को पाला पोसा था, हां, बहुत से जानवरों को पाला था ।
- 13 देखो उनकी स्त्रियों ने कठिन परिश्रम किया और सूत काता, और अपना तन ढकने के लिए हर तरह के वस्त्र बनाए, लिपटे हुए सन के कपड़े और हर प्रकार के कपड़े । और इस प्रकार चौंसठवां वर्ष शांति से बीत गया ।
- 14 और पैंसठवें वर्ष में भी वे बहुत आनंद और शांति से रहे, हां, बहुत प्रचार-कार्य हुआ और जो आनेवाला है उसके संबंध में कई भविष्यवाणियां हुईं । और इस प्रकार पैंसठवां वर्ष बीत गया ।
- 15 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के छियासठवें वर्ष में, देखो, जब सियोरम न्याय-आसन पर बैठा था तब किसी अज्ञात हाथों द्वारा उसकी हत्या हो गई । और ऐसा हुआ कि उसी वर्ष, उसके बेटे की भी हत्या हो गई जिसे उसके स्थान पर लोगों के मतों द्वारा नियुक्त किया गया था । और इस प्रकार छियासठवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 16 और सड़सठवें वर्ष के आरंभ में लोग फिर से बहुत दुष्ट होने लगे ।

And it came to pass that they became exceedingly rich, both the Lamanites and the Nephites; and they did have an exceeding plenty of gold, and of silver, and of all manner of precious metals, both in the land south and in the land north.

Now the land south was called Lehi, and the land north was called Mulek, which was after the son of Zedekiah; for the Lord did bring Mulek into the land north, and Lehi into the land south.

And behold, there was all manner of gold in both these lands, and of silver, and of precious ore of every kind; and there were also curious workmen, who did work all kinds of ore and did refine it; and thus they did become rich.

They did raise grain in abundance, both in the north and in the south; and they did flourish exceedingly, both in the north and in the south. And they did multiply and wax exceedingly strong in the land. And they did raise many flocks and herds, yea, many fatlings.

Behold their women did toil and spin, and did make all manner of cloth, of fine-twined linen and cloth of every kind, to clothe their nakedness. And thus the sixty and fourth year did pass away in peace.

And in the sixty and fifth year they did also have great joy and peace, yea, much preaching and many prophecies concerning that which was to come. And thus passed away the sixty and fifth year.

And it came to pass that in the sixty and sixth year of the reign of the judges, behold, Cezoram was murdered by an unknown hand as he sat upon the judgment-seat. And it came to pass that in the same year, that his son, who had been appointed by the people in his stead, was also murdered. And thus ended the sixty and sixth year.

And in the commencement of the sixty and seventh year the people began to grow exceedingly wicked again.

17 क्योंकि देखो, प्रभु ने उन्हें इतने दिनों तक संसार की धन-संपत्तियों से आशीषित किया था जिससे कि युद्ध और रक्तपात के लिए वे क्रोध में न भड़कें; इसलिए उन्होंने अपना मन धन-संपत्तियों पर लगा-ना आरंभ कर दिया; हां, उन्होंने फायदा उठाना आरंभ कर दिया जिससे कि वे एक दूसरे से ऊपर कहलाए; इसलिए उन्होंने गुप्त हत्याएं, चोरी और लूट-मार करनी शुरू कर दी, ताकि वे लाभ उठा सकें।

18 और अब देखो, वे हत्यारे और लूटमार करनेवाले उसी टोली के सदस्य थे जिसे किशकूमन और गडियन्टन ने बनाया था। और अब ऐसा हुआ कि उनकी संख्या बहुत थी, यहां तक कि नफाइयों के बीच में भी गडियन्टन की टोली के सदस्य थे। परन्तु देखो, दुष्ट लमनाइयों में उनकी संख्या बहुत अधिक थी। और वे गडियन्टन के डाकू और हत्यारे कहलाए।

19 और ये वही लोग थे जिन्होंने न्याय-आसन पर रहते हुए, मुख्य न्यायी सिजोरम, और उसके बेटे की हत्या की थी; और देखो, वे पकड़े नहीं गए।

20 और अब ऐसा हुआ कि जब लमनाइयों को पता चला कि उनके बीच में कई डाकू रहते थे तो वे बहुत दुखी हुए; और उन लोगों को धरती से खत्म करने के लिए उन्होंने उस हर साधन का उपयोग किया जिसका उपयोग वे अपने सामर्थ्य के अनुसार कर सकते थे।

21 परन्तु देखो, शैतान ने अधिकतर नफाइयों के हृदयों को इतना अधिक भड़काया कि वे डाकूओं की टोली से मिल गए, और उनके साथ उनके अनुबंधों और उनके शपथ में प्रवेश किया, ताकि चाहे किसी भी प्रकार की कठिन परिस्थितियों का सामना क्यों न करना पड़े, वे एक दूसरे को बचाएंगे, और एक दूसरे की रक्षा करेंगे जिससे कि उन्हें उनकी हत्या, लूट-मार और चोरी के लिए दंड न भुगतना पड़े।

22 और ऐसा हुआ कि उनके चिन्ह थे, हां, उनके गुप्त चिन्ह, और उनके गुप्त शब्द थे; और ऐसा इसलिये था ताकि वे अपने उस भाई में अंतर कर सकें जिसने अनुबंध में प्रवेश किया था, जिससे कि जो भी दुष्टता उसका भाई करे तो उसे कोई हानि न हो, न ही टोली के उन सदस्यों के द्वारा कोई हानि हो जिन्होंने अनुबंध में प्रवेश किया था।

23 और इस प्रकार वे अपने देश के नियमों और परमेश्वर के नियमों के विपरित भी हत्या, लूट-मार, और चोरी, और वेश्यावृत्ति, और हर प्रकार की दुष्टता कर सकते थे।

For behold, the Lord had blessed them so long with the riches of the world that they had not been stirred up to anger, to wars, nor to bloodshed; therefore they began to set their hearts upon their riches; yea, they began to seek to get gain that they might be lifted up one above another; therefore they began to commit secret murders, and to rob and to plunder, that they might get gain.

And now behold, those murderers and plunderers were a band who had been formed by Kishkumen and Gadianton. And now it had come to pass that there were many, even among the Nephites, of Gadianton's band. But behold, they were more numerous among the more wicked part of the Lamanites. And they were called Gadianton's robbers and murderers.

And it was they who did murder the chief judge Cezoram, and his son, while in the judgment-seat; and behold, they were not found.

And now it came to pass that when the Lamanites found that there were robbers among them they were exceedingly sorrowful; and they did use every means in their power to destroy them off the face of the earth.

But behold, Satan did stir up the hearts of the more part of the Nephites, insomuch that they did unite with those bands of robbers, and did enter into their covenants and their oaths, that they would protect and preserve one another in whatsoever difficult circumstances they should be placed, that they should not suffer for their murders, and their plunderings, and their stealings.

And it came to pass that they did have their signs, yea, their secret signs, and their secret words; and this that they might distinguish a brother who had entered into the covenant, that whatsoever wickedness his brother should do he should not be injured by his brother, nor by those who did belong to his band, who had taken this covenant.

And thus they might murder, and plunder, and steal, and commit whoredoms and all manner of wickedness, contrary to the laws of their country and also the laws of their God.

- 24 और उनकी टोली का कोई भी सदस्य यदि उनकी दुष्टता और उनके घृणित कार्यों के बारे में बाकी लोगों को बता देता, तो उन्हें दंडित किया जाता, उनके देश के नियमों के अनुसार नहीं बल्कि उनकी दुष्टता के उन नियमों के अनुसार जो गडियन्टन और किशकूमन द्वारा बनाए गए थे।
- 25 अब देखो, ये वही गुप्त शपथ और अनुबंध हैं जिसे अलमा ने अपने बेटे को संसार को न बताने की आज्ञा दी थी, कि कहीं ऐसा न हो कि ये लोगों के विनाश का साधन बनें।
- 26 अब देखो, ये गुप्त शपथ और अनुबंध गडियन्टन के पास उन अभिलेखों से नहीं आए थे जिन्हें हिलामन को दिया गया था; परन्तु देखो, इन्हें गडियन्टन के हृदय में उसी व्यक्तित्व ने डाला था जिसने हमारे पहले माता-पिता को मना किये गए फल को खाने के लिए फुसलाया था—
- 27 हां, उसी व्यक्तित्व ने जिसने कैन के साथ योजना बनाई थी कि यदि वह अपने भाई हाबिल की हत्या करेगा तो उसके बारे में संसार को पता नहीं चलेगा। और उसी समय से वह कैन और उसके अनुयाइयों को साथ योजना बनाता रहा है।
- 28 और यह वही व्यक्ति है जिसने लोगों के हृदयों में एक ऊंची मीनार बनाने की बात डाली ताकि वे स्वर्ग जा सकें। और यह वही व्यक्ति है जिसने उन लोगों का मार्गदर्शन किया जो उस मीनार से इस प्रदेश में पहुंचे थे; जिन्होंने पूरे प्रदेश में अंधकार और घृणित कार्यों को तब तक फैलाया था जब तक कि उसने लोगों को पूरी तरह से विनाश में, और अनंत नरक में न ढकेल दिया।
- 29 हां, यह वही व्यक्ति है जिसने गडियन्टन के हृदय में डाला था कि वह अंधकार में किये जानेवाले कार्यों, और गुप्त हत्याओं को जारी रखे; और वह मनुष्य के अस्तित्व में आने ले लेकर अब तक ऐसा करता रहा है।
- 30 और देखो, यह वही है जो सारे पापों को निर्माता है। और देखो, उसने अपने अंधकार के कार्यों और गुप्त हत्याओं को जारी रखा है, और अपने षडयंत्रों, अपने शपथ, और अपने अनुबंधों और दुष्टता की अपनी भयावह योजनाओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाया है जिससे कि वह मानव संतान के हृदयों को अपने वश में कर सके।

And whosoever of those who belonged to their band should reveal unto the world of their wickedness and their abominations, should be tried, not according to the laws of their country, but according to the laws of their wickedness, which had been given by Gadianton and Kishkumen.

Now behold, it is these secret oaths and covenants which Alma commanded his son should not go forth unto the world, lest they should be a means of bringing down the people unto destruction.

Now behold, those secret oaths and covenants did not come forth unto Gadianton from the records which were delivered unto Helaman; but behold, they were put into the heart of Gadianton by that same being who did entice our first parents to partake of the forbidden fruit—

Yea, that same being who did plot with Cain, that if he would murder his brother Abel it should not be known unto the world. And he did plot with Cain and his followers from that time forth.

And also it is that same being who put it into the hearts of the people to build a tower sufficiently high that they might get to heaven. And it was that same being who led on the people who came from that tower into this land; who spread the works of darkness and abominations over all the face of the land, until he dragged the people down to an entire destruction, and to an everlasting hell.

Yea, it is that same being who put it into the heart of Gadianton to still carry on the work of darkness, and of secret murder; and he has brought it forth from the beginning of man even down to this time.

And behold, it is he who is the author of all sin. And behold, he doth carry on his works of darkness and secret murder, and doth hand down their plots, and their oaths, and their covenants, and their plans of awful wickedness, from generation to generation according as he can get hold upon the hearts of the children of men.

- 31 और अब देखो, उसने नफाइयों के हृदयों को पूरी तरह से अपने वश में कर लिया है; हां, इतना अधिक कि वे बहुत दुष्ट हो गए हैं; हां, उनमें से अधिकांश लोगों ने धार्मिकता के मार्ग को बदल लिया है, और अपने पैरों तले परमेश्वर की आज्ञाओं को रौंद डाला है, और अपनी मनमानी की है, अपने लिए सोने और चांदी की मूर्तियां बना ली हैं ।
- 32 और ऐसा हुआ कि ये सब दुष्टता इनमें थोड़े समय में ही आ गई थी, नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के सड़सठवें वर्ष में इनमें ये बहुत अधिक आ गई थी ।
- 33 और धर्मी लोगों को दुख और विलाप देते हुए, अड़सठवें वर्ष में भी इनमें दुष्टता बढ़ती रही ।
- 34 और इस प्रकार हम देखते हैं कि नफाइयों का विश्वास कम होने लगा, और उनकी दुष्टता और घृणित कार्य बढ़ने लगे, जब कि लमनाई परमेश्वर के अपने ज्ञान में अत्याधिक आगे बढ़ने लगे; हां, वे उसके नियमों और आज्ञाओं को मानने लगे, और उसके सामने सच्चाई और ईमानदारी में चलने लगे ।
- 35 और इस प्रकार हम देखते हैं कि नफाइयों की दुष्टता और उनके कठोर हृदयों के कारण प्रभु की आत्मा उनसे दूर होने लगी ।
- 36 और इस प्रकार हम देखते हैं कि लमनाइयों की सरलता और उसके वचन में विश्वास करने की उनकी इच्छा के कारण प्रभु उन पर अपनी आत्मा उंडेलने लगा ।
- 37 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों ने गडियन्टन के डाकुओं की टोली को खोज निकाला; और जो लोग उनमें बहुत दुष्ट थे उन्हें परमेश्वर का वचन सुनाया, इतना अधिक कि डाकुओं की यह टोली उनमें से पूरी तरह से मिट गई ।
- 38 और ऐसा हुआ कि दूसरी तरफ, नफाइयों ने उन लोगों की दुष्टता को बढ़ाया और उन्हें सहारा दिया जो उनमें बहुत दुष्ट थे, उन्होंने ऐसा तब तक किया जब तक कि उन्होंने इसे नफाइयों के सभी प्रदेशों में न फैला दिया, और अधिकांश धर्मी लोगों को उन्होंने तब तक लुभाया जब तक कि वे उनके कार्यों में विश्वास न करने लगे और उनके लूट में उनका साथ न देने लगे, और उनकी गुप्त हत्याओं और उनके गठबंधन के कार्य में साथ न देने लगे ।

And now behold, he had got great hold upon the hearts of the Nephites; yea, insomuch that they had become exceedingly wicked; yea, the more part of them had turned out of the way of righteousness, and did trample under their feet the commandments of God, and did turn unto their own ways, and did build up unto themselves idols of their gold and their silver.

And it came to pass that all these iniquities did come unto them in the space of not many years, insomuch that a more part of it had come unto them in the sixty and seventh year of the reign of the judges over the people of Nephi.

And they did grow in their iniquities in the sixty and eighth year also, to the great sorrow and lamentation of the righteous.

And thus we see that the Nephites did begin to dwindle in unbelief, and grow in wickedness and abominations, while the Lamanites began to grow exceedingly in the knowledge of their God; yea, they did begin to keep his statutes and commandments, and to walk in truth and uprightness before him.

And thus we see that the Spirit of the Lord began to withdraw from the Nephites, because of the wickedness and the hardness of their hearts.

And thus we see that the Lord began to pour out his Spirit upon the Lamanites, because of their easiness and willingness to believe in his words.

And it came to pass that the Lamanites did hunt the band of robbers of Gadianton; and they did preach the word of God among the more wicked part of them, insomuch that this band of robbers was utterly destroyed from among the Lamanites.

And it came to pass on the other hand, that the Nephites did build them up and support them, beginning at the more wicked part of them, until they had overspread all the land of the Nephites, and had seduced the more part of the righteous until they had come down to believe in their works and partake of their spoils, and to join with them in their secret murders and combinations.

39 और इस प्रकार उन्होंने शासन के प्रबंध पर एकमात्र अधिकार कर लिया, इतना अधिक कि उन्होंने गरीब और विनीत, और परमेश्वर के विनम्र अनुयाइयों को अपने पैरों तले रौंदा और उन्हें मारा-काटा और उनसे अपना मुंह फेर लिया ।

40 और इस प्रकार हम देखते हैं कि वे एक भयावह स्थिति में थे, और अनंत विनाश की राह पर आगे बढ़ रहे थे ।

41 और ऐसा हुआ कि इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का अड़सठवां वर्ष समाप्त हुआ ।

And thus they did obtain the sole management of the government, insomuch that they did trample under their feet and smite and rend and turn their backs upon the poor and the meek, and the humble followers of God.

And thus we see that they were in an awful state, and ripening for an everlasting destruction.

And it came to pass that thus ended the sixty and eighth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

**हिलामन के बेटे, नफी की भविष्याणी**—परमेश्वर नफी के लोगों को फटकारता है कि यदि वे अपनी दुष्टता के लिए पश्चाताप नहीं करेंगे तो वह उन पर उनके पूरे विनाश के लिए क्रोध में प्रकट होगा। परमेश्वर महामारी के द्वारा नफी के लोगों को दंडित करता है; वे पश्चाताप कर उसकी तरफ मुड़ जाते हैं। शमूएल, एक लमनाई नफाइयों के लिए भविष्यवाणी करता है।

## हिलामन 7

- 1 देखो, अब ऐसा हुआ कि नफाइयों के लोगों पर न्यायियों के शासन के उनहत्तरवें वर्ष में, हिलामन का बेटा, नफी. उत्तरी प्रदेश से जराहेम-ला प्रदेश वापस आता है।
- 2 क्योंकि वह उत्तरी प्रदेश के लोगों के बीच रहा, और उनमें परमेश्वर के वचन का प्रचार किया, और उनके लिए कई बातों की भविष्यवाणी की थी;
- 3 और उन्होंने उसकी सभी बातों को नकारा था, इतना अधिक कि वह उनके बीच नहीं रह सका, परन्तु अपने जन्मस्थान पर वापस आ गया।
- 4 और यह देखते हुए कि लोग इतनी भयावह दुष्टता की स्थिति में जी रहे हैं, और गडियन्टन के डाकू न्याय-आसन पर बैठे हैं—प्रदेश की सत्ता और अधिकार को हड़पते हुए; परमेश्वर की आज्ञाओं को ताक पर रखते हुए, और मानव संतान के प्रति कोई भी न्याय न करते हुए वे उसे बिलकुल भी ठीक नहीं लगे।
- 5 धर्मी लोगों की धार्मिकता के कारण उनकी निंदा करते हुए; धन के कारण अपराधी और दुष्ट को दंड न देते हुए; और इससे भी अधिक अपनी इच्छा के अनुसार न्याय करने के लिए शासन के मुखिया के पद पर बैठते हुए, ताकि वे लाभ उठा सकें और संसार का यश पा सकें, और, इससे भी अधिक, वे आसानी से व्यभिचार, और चोरी, और हत्या, और अपनी इच्छा के अनुसार दुष्टता कर सकें।
- 6 अब थोड़े ही समय में यह घोर अधर्म नफाइयों में आ गया था; और नफी ने जब इसे देखा, तो उसकी छाती के भीतर का उसका हृदय बहुत दुखी हुआ; और वह अपनी आत्मा की वेदना में चिल्ला उठा।

*THE PROPHECY OF NEPHI, THE SON OF HELAMAN—  
God threatens the people of Nephi that he will visit them in his anger, to their utter destruction except they repent of their wickedness. God smiteth the people of Nephi with pestilence; they repent and turn unto him. Samuel, a Lamanite, prophesies unto the Nephites.*

## Helaman 7

Behold, now it came to pass in the sixty and ninth year of the reign of the judges over the people of the Nephites, that Nephi, the son of Helaman, returned to the land of Zarahemla from the land northward.

For he had been forth among the people who were in the land northward, and did preach the word of God unto them, and did prophesy many things unto them;

And they did reject all his words, insomuch that he could not stay among them, but returned again unto the land of his nativity.

And seeing the people in a state of such awful wickedness, and those Gadianton robbers filling the judgment-seats—having usurped the power and authority of the land; laying aside the commandments of God, and not in the least aright before him; doing no justice unto the children of men;

Condemning the righteous because of their righteousness; letting the guilty and the wicked go unpunished because of their money; and moreover to be held in office at the head of government, to rule and do according to their wills, that they might get gain and glory of the world, and, moreover, that they might the more easily commit adultery, and steal, and kill, and do according to their own wills—

Now this great iniquity had come upon the Nephites, in the space of not many years; and when Nephi saw it, his heart was swollen with sorrow within his breast; and he did exclaim in the agony of his soul:

- 7 ओह, काश मैंने भी अपने पूर्वज नफी के समय में जन्म लिया होता जब वह पहली बार यरूशलेम प्रदेश से बाहर आए थे, ताकि मैं भी प्रतिज्ञा की हुई भूमि पर उनके साथ आनंदित हुआ होता; तब उनके लोग सरलता से विनती करते थे, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने में दृढ़ रहते थे, और अधर्म में आसानी से नहीं पड़ते थे; और वे परमेश्वर के वचन को सुनने के लिए व्याकुल रहते थे।
- 8 हां, यदि मैंने उसी समय में जन्म लिया होता, तो मेरे भाइयों की धार्मिकता में मेरी आत्मा भी आनंदित हुई होती।
- 9 परन्तु देखो, मुझे तो मेरे ही दिनों में भेजा गया है, और यह कि मेरे भाइयों की दुष्टता के कारण मेरी आत्मा दुख से भर जाएगी।
- 10 और देखो, अब ऐसा हुआ कि वह मीनार पर था, जो नफी के बगीचे में स्थित थी, जो प्रमुख मार्ग के बगल में थी जो मुख्य बाजार की तरफ जाता था, जो कि जराहेमला नगर में स्थित था; इसलिए, बगीचे में स्थित मीनार पर नफी ने स्वयं को झुकाया, उसी मीनार पर जो बगीचे के द्वार के नजदीक भी थी जिससे होकर प्रमुख मार्ग जाता था।
- 11 और ऐसा हुआ कि जब नफी मीनार पर परमेश्वर के सामने अपनी आत्मा उंडेल रहा था तो वहां से जा रहे कुछ लोगों ने उसे देखा; और वे भागकर गए और जो देखा था उसे अन्य लोगों को बताया, और लोगों की एक भीड़ आई ताकि वे जान सकें कि लोगों की दुष्टता के लिए विलाप करने का कारण क्या है।
- 12 और अब, जब नफी उठा तो उसने लोगों की भीड़ देखी जो वहां पर एकत्रित हुए थे।
- 13 और ऐसा हुआ कि उसने अपना मुंह खोला और उनसे कहा: देखो, तुम सब यहां क्यों एकत्रित हुए हो? ताकि मैं तुम्हें तुम्हारी बुराइयों के बारे में बता सकूँ?
- 14 हां, क्योंकि मैं मीनार पर गया था ताकि मैं अपनी आत्मा को अपने परमेश्वर पर उंडेल सकूँ, क्योंकि मेरा हृदय तुम्हारी बुराइयों के कारण बहुत दुखी था!
- 15 और मेरे दुख और विलाप के कारण तुम सब यहां पर एकत्रित हुए हो, और अचम्भीत हो; हां, और तुम्हें अचम्भीत होने की भारी आवश्यकता है; हां, तुम्हें अचम्भीत होना चाहिए क्योंकि तुम बहक गए हो जिससे कि शैतान ने तुम सबके हृदयों को अपने वश में कर लिया है।

Oh, that I could have had my days in the days when my father Nephi first came out of the land of Jerusalem, that I could have joyed with him in the promised land; then were his people easy to be entreated, firm to keep the commandments of God, and slow to be led to do iniquity; and they were quick to hearken unto the words of the Lord—

Yea, if my days could have been in those days, then would my soul have had joy in the righteousness of my brethren.

But behold, I am consigned that these are my days, and that my soul shall be filled with sorrow because of this the wickedness of my brethren.

And behold, now it came to pass that it was upon a tower, which was in the garden of Nephi, which was by the highway which led to the chief market, which was in the city of Zarahemla; therefore, Nephi had bowed himself upon the tower which was in his garden, which tower was also near unto the garden gate by which led the highway.

And it came to pass that there were certain men passing by and saw Nephi as he was pouring out his soul unto God upon the tower; and they ran and told the people what they had seen, and the people came together in multitudes that they might know the cause of so great mourning for the wickedness of the people.

And now, when Nephi arose he beheld the multitudes of people who had gathered together.

And it came to pass that he opened his mouth and said unto them: Behold, why have ye gathered yourselves together? That I may tell you of your iniquities?

Yea, because I have got upon my tower that I might pour out my soul unto my God, because of the exceeding sorrow of my heart, which is because of your iniquities!

And because of my mourning and lamentation ye have gathered yourselves together, and do marvel; yea, and ye have great need to marvel; yea, ye ought to marvel because ye are given away that the devil has got so great hold upon your hearts.

- 16 हां, तुम स्वयं को उसके लालच में कैसे पड़ने दे सकते हो जो कि तुम्हारी आत्माओं को अनंत दुख और अंतहीन श्राप में ढकेलना चाहता है ?
- 17 ओ, पश्चाताप करो, तुम पश्चाताप करो ! तुम क्यों मरोगे ? मुड़ जाओ, प्रभु अपने परमेश्वर की तरफ मुड़ जाओ । उसने तुम्हें क्यों छोड़ दिया है ?
- 18 ऐसा इसलिए है क्योंकि तुमने अपने हृदयों को कठोर कर लिया है; हां, तुम्हें अच्छे चरवाहे की आवाज सुनाई नहीं देगी; हां, तुमने उसे तुम्हारे विरुद्ध क्रोध के लिए उकसाया है ।
- 19 और देखो, यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे, तो देखो, वह तुम्हें एकत्रित करने की बजाय तितर-बितर कर देगा ताकि तुम कुत्तों और जंगली भेड़ियों का भोजन बन सको ।
- 20 ओ, तुम उसी दिन से परमेश्वर को कैसे भूल सकते हो जिस दिन उसने तुम्हें मुक्त किया था ?
- 21 परन्तु देखो, ऐसा लाभ पाने के लिए है, लोगों की प्रशंसा के लिए है, हां, और ताकि तुम सोना और चांदी पा सको । और तुमने अपने मन को धन और संसार की व्यर्थ की चीजों पर लगा रखा है, क्योंकि उसके लिए तुम हत्या, लूट-मार, और चोरी करते हो, और पड़ोसी के खिलाफ झूठी गवाही देते हो, और हर प्रकार की अधर्म करते हो ।
- 22 और इस कारण यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो तुम पर अनंत श्राप आएगा । क्योंकि यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे, देखो, यह महान नगर, और आसपास के सारे महान नगर, जो कि हमारे अधिकार क्षेत्र में हैं, उन्हें ले लिया जाएगा ताकि उनमें तुम्हारे लिए कोई स्थान न हो; क्योंकि देखो, तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं के विरुद्ध डटे रहने के लिए अब तक प्रभु जो बल तुम्हें देता था अब नहीं देगा ।
- 23 क्योंकि देखो, प्रभु ने इस प्रकार कहा है: मैं दुष्ट को अपना बल नहीं दिखाऊंगा, एक को दूसरे से अधिक, सिवाय उन लोगों के जो अपने पापों का पश्चाताप करते हैं, और मेरी बातों को नहीं सुनते हैं । अब इसलिए, मैं चाहता हूं कि मेरे भाइयों, तुम सुनो कि यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो तुम्हारे बजाय लमनाइयों का भला होगा ।
- 24 क्योंकि देखो, वे तुमसे अधिक धर्मी हैं, क्योंकि उन्होंने उस महान ज्ञान के विरुद्ध कोई पाप नहीं किया है जिसे तुमने प्राप्त किया है; इसलिए प्रभु उन पर दया करेगा; हां, वह उनके समय को लंबा करेगा और उनके वंश को बढ़ाएगा, यहां तक कि यदि तुमने पश्चाताप नहीं किया तो वह पूरी तरह से तुम्हारा विनाश करेगा ।

Yea, how could you have given way to the enticing of him who is seeking to hurl away your souls down to everlasting misery and endless wo?

O repent ye, repent ye! Why will ye die? Turn ye, turn ye unto the Lord your God. Why has he forsaken you?

It is because you have hardened your hearts; yea, ye will not hearken unto the voice of the good shepherd; yea, ye have provoked him to anger against you.

And behold, instead of gathering you, except ye will repent, behold, he shall scatter you forth that ye shall become meat for dogs and wild beasts.

O, how could you have forgotten your God in the very day that he has delivered you?

But behold, it is to get gain, to be praised of men, yea, and that ye might get gold and silver. And ye have set your hearts upon the riches and the vain things of this world, for the which ye do murder, and plunder, and steal, and bear false witness against your neighbor, and do all manner of iniquity.

And for this cause wo shall come unto you except ye shall repent. For if ye will not repent, behold, this great city, and also all those great cities which are round about, which are in the land of our possession, shall be taken away that ye shall have no place in them; for behold, the Lord will not grant unto you strength, as he has hitherto done, to withstand against your enemies.

For behold, thus saith the Lord: I will not show unto the wicked of my strength, to one more than the other, save it be unto those who repent of their sins, and hearken unto my words. Now therefore, I would that ye should behold, my brethren, that it shall be better for the Lamanites than for you except ye shall repent.

For behold, they are more righteous than you, for they have not sinned against that great knowledge which ye have received; therefore the Lord will be merciful unto them; yea, he will lengthen out their days and increase their seed, even when thou shalt be utterly destroyed except thou shalt repent.



- 25 हां, जो घृणित कार्य तुमने किया है उसके कारण तुम पर श्राप आएगा; और तुमने स्वयं को उसमें एक कर लिया है, हां, गडियन्टन द्वारा स्थापित उस गुप्त टोली से मिल गए हो !
- 26 हां, जिस अहंकार को तुमने अपने हृदय में प्रवेश करने दिया है उसके कारण तुम पर श्राप आएगा, उस अत्याधिक धन-संपत्ति के कारण जिसने तुम्हें हृद से अधिक अहंकारी बना दिया है !
- 27 हां, तुम्हारी दुष्टता और तुम्हारे घृणित कार्यों के कारण तुम पर श्राप आएगा !
- 28 और यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो तुम्हारा विनाश होगा; हां, यहां तक कि तुम्हारी जमीनें तुमसे ले ली जाएंगी, और धरती से तुम्हें नष्ट कर दिया जाएगा ।
- 29 अब देखो, मैं यह नहीं कहता कि ये मेरी तरफ से हैं, क्योंकि ये मेरी तरफ से नहीं हैं कि मैं इन बातों को जानता हूं; परन्तु देखो, मैं जानता हूं कि यह सब सच है क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने इसे मुझ पर प्रकट किया है, इसलिए मैं गवाही देता हूं कि ऐसा होगा ।

Yea, wo be unto you because of that great abomination which has come among you; and ye have united yourselves unto it, yea, to that secret band which was established by Gadianton!

Yea, wo shall come unto you because of that pride which ye have suffered to enter your hearts, which has lifted you up beyond that which is good because of your exceedingly great riches!

Yea, wo be unto you because of your wickedness and abominations!

And except ye repent ye shall perish; yea, even your lands shall be taken from you, and ye shall be destroyed from off the face of the earth.

Behold now, I do not say that these things shall be, of myself, because it is not of myself that I know these things; but behold, I know that these things are true because the Lord God has made them known unto me, therefore I testify that they shall be.

## हिलामन 8

- 1 और अब ऐसा हुआ कि जब नफी ने इन बातों को कह लिया, देखो, वहां पर वे लोग थे जो न्यायी थे, जो गडियन्टन की गुप्त टोली के सदस्य भी थे, और वे क्रोधित हो उठे, और उसके विरुद्ध लोगों से यह कहते हुए चिल्लाने लगे: तुम इस मनुष्य को पकड़कर क्यों नहीं लाते ताकि इसके किये गए अपराध के अनुसार इसे दंड दिया जा सके ?
- 2 क्यों तुम इस मनुष्य को देख और सुन रहे हो जो इन लोगों के और हमारे नियमों के खिलाफ बोल रहा है ?
- 3 क्योंकि देखो, नफी ने उनके भ्रष्ट कानून के बारे में कहा था; हां, नफी ने कई बातें कही जिसे लिखा नहीं जा सकता; और उसने ऐसी कोई बात नहीं कही जो परमेश्वर की आज्ञाओं के विरुद्ध थी ।
- 4 और वे न्यायी उससे बहुत क्रोधित थे क्योंकि उसने साफ तौर पर उनके अंधकार के गुप्त कार्यों के बारे में कहा था; फिर भी, वे उसे हाथ लगाने का साहस न कर सके, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं लोग उनके खिलाफ आवाज न उठाने लगे ।
- 5 इसलिए वे लोगों से यह कहते हुए चिल्लाने लगे: तुम इस मनुष्य को हमारे खिलाफ क्यों बोलने दे रहे हो ? क्योंकि देखो वह इन लोगों की निंदा कर रहा है, यहां तक कि विनाश की बातें कर रहा है; हां, और यह कि ये महान नगर हमसे ले लिए जाएंगे, कि हमारे लिए वहां पर कोई स्थान न होगा ।
- 6 और अब हम जानते हैं कि यह असंभव है, क्योंकि देखो, हम शक्तिशाली हैं, और हमारे नगर महान हैं, इसलिए हमारे शत्रु हम पर अधिकार नहीं कर सकते हैं ।
- 7 और ऐसा हुआ कि इस प्रकार उन्होंने नफी के विरुद्ध लोगों को भड़काया, और उनमें मतभेद हो गया; क्योंकि उनमें से कुछ ऐसे थे जिन्होंने याचना की: इस व्यक्ति को अकेले रहने दो, क्योंकि यह एक अच्छा मनुष्य है, और जो बातें यह कहता है वह निश्चित तौर पर होंगी यदि हम पश्चाताप नहीं करेंगे ।
- 8 हां, देखो, जिन बातों की गवाही इसने हमें दी है वह सब न्यायदंड हम पर आएगा; क्योंकि हम जानते हैं कि उसने हमारी बुराइयों के विषय में सच्ची गवाही दी है । और देखो हमारे अपराध बहुत हैं, और जैसे वह हमारी बुराइयों को जानता है वैसे ही वह उन सारी बातों को जानता है जो हम पर आनेवाली हैं ।

## Helaman 8

And now it came to pass that when Nephi had said these words, behold, there were men who were judges, who also belonged to the secret band of Gadianton, and they were angry, and they cried out against him, saying unto the people: Why do ye not seize upon this man and bring him forth, that he may be condemned according to the crime which he has done?

Why seest thou this man, and hearest him revile against this people and against our law?

For behold, Nephi had spoken unto them concerning the corruptness of their law; yea, many things did Nephi speak which cannot be written; and nothing did he speak which was contrary to the commandments of God.

And those judges were angry with him because he spake plainly unto them concerning their secret works of darkness; nevertheless, they durst not lay their own hands upon him, for they feared the people lest they should cry out against them.

Therefore they did cry unto the people, saying: Why do you suffer this man to revile against us? For behold he doth condemn all this people, even unto destruction; yea, and also that these our great cities shall be taken from us, that we shall have no place in them.

And now we know that this is impossible, for behold, we are powerful, and our cities great, therefore our enemies can have no power over us.

And it came to pass that thus they did stir up the people to anger against Nephi, and raised contentions among them; for there were some who did cry out: Let this man alone, for he is a good man, and those things which he saith will surely come to pass except we repent;

Yea, behold, all the judgments will come upon us which he has testified unto us; for we know that he has testified aright unto us concerning our iniquities. And behold they are many, and he knoweth as well all things which shall befall us as he knoweth of our iniquities;

- 9 हां, और देखो, यदि यह एक भविष्यवक्ता नहीं होता तो उन चीजों से संबंधित गवाहियां नहीं दे पाता ।
- 10 और ऐसा हुआ कि जो लोग नफी का विनाश करना चाहते थे, उनका डर उन पर इतना हावी हुआ कि उन्होंने उसे हाथ लगाने का साहस भी नहीं किया; इसलिए यह देखते हुए कि उस पर कुछ लोगों की कृपादृष्टि है, वह फिर से उनसे बातें करने लगा, इतना अधिक कि बचे हुए बाकी लोग डर गए ।
- 11 इसलिए वह यह कहते हुए उन्हें अधिक बताने के लिए बाध्य हुआ: मेरे भाइयों, देखो, क्या तुमने नहीं पढ़ा है कि परमेश्वर ने एक व्यक्ति, मूसा को भी शक्ति दी थी कि उसने लाल सागर के जल पर प्रहार किया, और वह दो भागों में इधर-उधर बंट गया, इतना अधिक कि इस्राएलियों ने, जो कि हमारे पूर्वज थे, सूखी धरती से होकर उसे पार कर लिया, और मिस्रियों की सेना पर जल आ गया और उन्हें निगल गया ?
- 12 और अब देखो, यदि परमेश्वर ने उस मनुष्य को इतनी शक्ति दी थी, तो तुम आपस में मतभेद क्यों करते हो, और कहते हो कि उसने मुझे कोई शक्ति नहीं दी है जब कि मैं जान सकता हूं कि यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो तुम पर न्यायदंड आएगा ?
- 13 परन्तु, देखो, तुम केवल मेरी बातों को ही अस्वीकार नहीं कर रहे हो, बल्कि तुम उन सारी बातों को अस्वीकार कर रहे हो जिसे हमारे पूर्वजों ने कहा है, और इस मूसा द्वारा कही गई बातों को भी अस्वीकार कर रहे हो जिसे इतनी महान शक्ति प्रदान की गई थी, हां, उसे भी जिसे उसने मसीह के आगमन के संबंध में कहा था ।
- 14 हां, क्या उसने गवाही नहीं दी थी कि परमेश्वर का पुत्र आएगा ? और जैसे उसने निर्जन प्रदेश में पीतल के सांप को उठाया था, वैसे ही वह जो आएगा उसे भी ऊपर उठाया जाएगा ।
- 15 और जितने लोग उस सांप की तरफ देखेंगे वे जीएंगे, उसी प्रकार जितने लोग पश्चातापी आत्मा के साथ, विश्वास रखते हुए परमेश्वर के पुत्र की तरफ देखेंगे, वे शायद अनंतता के लिए जीवित रहेंगे ।
- 16 और अब देखो, केवल मूसा ने ही इन बातों की गवाही नहीं दी थी बल्कि उसके समय से लेकर इब्राहीम के समय तक के सभी पवित्र भविष्यवक्ताओं ने इसकी गवाही दी थी ।
- 17 हां, और देखो, इब्राहीम ने उसके आगमन को देखा था, और प्रसन्नता से भर गया था और आनंदित हुआ था ।

Yea, and behold, if he had not been a prophet he could not have testified concerning those things.

And it came to pass that those people who sought to destroy Nephi were compelled because of their fear, that they did not lay their hands on him; therefore he began again to speak unto them, seeing that he had gained favor in the eyes of some, insomuch that the remainder of them did fear.

Therefore he was constrained to speak more unto them saying: Behold, my brethren, have ye not read that God gave power unto one man, even Moses, to smite upon the waters of the Red Sea, and they parted hither and thither, insomuch that the Israelites, who were our fathers, came through upon dry ground, and the waters closed upon the armies of the Egyptians and swallowed them up?

And now behold, if God gave unto this man such power, then why should ye dispute among yourselves, and say that he hath given unto me no power whereby I may know concerning the judgments that shall come upon you except ye repent?

But, behold, ye not only deny my words, but ye also deny all the words which have been spoken by our fathers, and also the words which were spoken by this man, Moses, who had such great power given unto him, yea, the words which he hath spoken concerning the coming of the Messiah.

Yea, did he not bear record that the Son of God should come? And as he lifted up the brazen serpent in the wilderness, even so shall he be lifted up who should come.

And as many as should look upon that serpent should live, even so as many as should look upon the Son of God with faith, having a contrite spirit, might live, even unto that life which is eternal.

And now behold, Moses did not only testify of these things, but also all the holy prophets, from his days even to the days of Abraham.

Yea, and behold, Abraham saw of his coming, and was filled with gladness and did rejoice.

- 18 हां, और देखो मैं तुमसे कहता हूं, कि केवल इब्राहीम को ही इन बातों के बारे में नहीं पता था बल्कि इब्राहीम के समय से पहले के कई लोगों को पता था जिन्हें परमेश्वर की रीति के अनुसार, हां, उसके पुत्र की रीति के अनुसार भी नियुक्त किया गया था; और यह कि उसके आगमन के कई हजारों वर्ष पूर्व इसे लोगों को दिखाया गया था कि इनका मुक्ति भी होगा ।
- 19 और अब मैं चाहता हूं कि तुम जानो, कि इब्राहीम के समय के बाद भी ऐसे कई भविष्यवक्ता रहे हैं जिन्होंने इन बातों की गवाही दी है; हां, देखो, भविष्यवक्ता जीनस ने इसकी गवाही बड़ी ही निडरता के साथ दी थी जिसके कारण उसे मार दिया गया ।
- 20 और देखो, जीनक, और इजायस, और यशायाह, और यिर्मयाह ने भी गवाही दी, (यिर्मयाह वही भविष्यवक्ता था जिसने यरूशलेम के विनाश की गवाही दी थी) और अब हम जानते हैं कि यिर्मयाह की भविष्यवाणी के अनुसार यरूशलेम का विनाश हुआ था । ओह फिर उसकी भविष्यवाणी के अनुसार, परमेश्वर का पुत्र क्यों नहीं आएगा ?
- 21 और अब क्या तुम इस बात पर भी विवाद करोगे कि यरूशलेम का विनाश हुआ था ? क्या तुम कहोगे कि मूलक के अलावा सिदकिय्याह के बेटों को नहीं मारा गया था ? हां, और क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता कि सिदकिय्याह का वंश हमारे साथ है, और उन्हें यरूशलेम प्रदेश से बाहर निकाल दिया गया था ? परन्तु देखो, यही सब कुछ नहीं है—
- 22 हमारे पूर्वज लेही को यरूशलेम से बाहर निकाल दिया गया था क्योंकि उसने इन बातों की गवाही दी थी । नफी ने भी इन बातों की गवाही दी थी, और उस समय से लेकर अब तक लगभग हमारे सभी पूर्वजों ने भी; हां, उन्होंने मसीह के आगमन की गवाही दी थी, और उसकी प्रतीक्षा की थी, और आनेवाले दिन के लिए आनंदित हुए थे ।
- 23 और देखो, वह परमेश्वर है, और वह उनके साथ है, और वह स्वयं को उन पर प्रकट करता है, ताकि वे उसके द्वारा मुक्ति पाएं; और जो होनेवाला है उसके कारण उसकी बड़ाई की ।
- 24 और अब, देखते हुए कि तुम इन बातों को जानते हो और झूठ बोलने के अलावा तुम इसे अस्वीकार नहीं कर सकते हो, इसलिए इस मामले में तुमने पाप किया है, क्योंकि इतने सारे प्रमाणों को प्राप्त करने के बावजूद भी तुमने इन सारी बातों को अस्वीकार किया है; हां, यहां तक कि तुमने स्वर्ग और पृथ्वी की उन सारी बातों को एक साक्षी के रूप में प्राप्त किया है जो सच्ची हैं ।

Yea, and behold I say unto you, that Abraham not only knew of these things, but there were many before the days of Abraham who were called by the order of God; yea, even after the order of his Son; and this that it should be shown unto the people, a great many thousand years before his coming, that even redemption should come unto them.

And now I would that ye should know, that even since the days of Abraham there have been many prophets that have testified these things; yea, behold, the prophet Zenos did testify boldly; for the which he was slain.

And behold, also Zenock, and also Ezias, and also Isaiah, and Jeremiah, (Jeremiah being that same prophet who testified of the destruction of Jerusalem) and now we know that Jerusalem was destroyed according to the words of Jeremiah. O then why not the Son of God come, according to his prophecy?

And now will you dispute that Jerusalem was destroyed? Will ye say that the sons of Zedekiah were not slain, all except it were Mulek? Yea, and do ye not behold that the seed of Zedekiah are with us, and they were driven out of the land of Jerusalem? But behold, this is not all—

Our father Lehi was driven out of Jerusalem because he testified of these things. Nephi also testified of these things, and also almost all of our fathers, even down to this time; yea, they have testified of the coming of Christ, and have looked forward, and have rejoiced in his day which is to come.

And behold, he is God, and he is with them, and he did manifest himself unto them, that they were redeemed by him; and they gave unto him glory, because of that which is to come.

And now, seeing ye know these things and cannot deny them except ye shall lie, therefore in this ye have sinned, for ye have rejected all these things, notwithstanding so many evidences which ye have received; yea, even ye have received all things, both things in heaven, and all things which are in the earth, as a witness that they are true.

- 25 परन्तु देखो, तुमने सच्चाई को अस्वीकार किया है, और अपने पवित्र परमेश्वर के खिलाफ हो गए हो; और इस समय भी, स्वर्ग में अपने लिए धन इकट्ठा करने की बजाय जो कि भ्रष्ट नहीं होता, और जहां कोई भी अशुद्ध वस्तु प्रवेश नहीं कर सकती, तुम न्याय के दिन के विरुद्ध स्वयं के लिए क्रोध का ढेर लगा रहे हो ।
- 26 हां, इस समय भी अनंत विनाश के लिए, अपनी हत्याओं और अपने व्यभिचार और अपनी दुष्टता के कारण तुम पापी हो चुके हो; हां, और यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो यह तुम पर शीघ्र ही आएगा ।
- 27 हां, देखो अब भी यह तुम्हारे दरवाजों पर दस्तक दे रहा है; हां, तुम न्याय-आसन के पास जाओ और ढूँढो; और देखो, तुम्हारे न्यायी की हत्या हो गई है, और वह रक्तरंजित पड़ा हुआ है; और उसकी हत्या उसके भाई ने की है जो न्याय-आसन पर बैठना चाहता है ।
- 28 और देखो, वे दोनों तुम्हारी गुप्त टोली के सदस्य हैं, जिनका निर्माता गडियन्टन है और वह शैतान है जो मनुष्यों की आत्माओं को नष्ट करना चाहता है ।

But behold, ye have rejected the truth, and rebelled against your holy God; and even at this time, instead of laying up for yourselves treasures in heaven, where nothing doth corrupt, and where nothing can come which is unclean, ye are heaping up for yourselves wrath against the day of judgment.

Yea, even at this time ye are ripening, because of your murders and your fornication and wickedness, for everlasting destruction; yea, and except ye repent it will come unto you soon.

Yea, behold it is now even at your doors; yea, go ye in unto the judgment-seat, and search; and behold, your judge is murdered, and he lieth in his blood; and he hath been murdered by his brother, who seeketh to sit in the judgment-seat.

And behold, they both belong to your secret band, whose author is Gadianton and the evil one who seeketh to destroy the souls of men.

## हिलामन 9

- 1 देखो, अब ऐसा हुआ कि जब नफी ने इन बातों को कह लिया, उनमें से कुछ लोग न्याय-आसन की तरफ दौड़कर गए; हां, जो गए उनकी संख्या पांच थी, और जाने के बाद उन्होंने आपस में कहा:
- 2 देखो, अब हम निश्चयपूर्वक जान सकेंगे कि यह मनुष्य एक भविष्यवक्ता है और परमेश्वर ने इसे इतनी अद्भुत बातों की भविष्यवाणी करने की आज्ञा दी है। देखो, हमें विश्वास नहीं है कि इसे जानकारी है, हमें विश्वास नहीं है कि यह एक भविष्यवक्ता है; फिर भी, जो बातें उसने मुख्य न्यायी के संबंध में कहा है, यदि वह सच है, कि वह मर चुका है, तो हम विश्वास करेंगे कि जो अन्य बातें उसने कही हैं वे सच हैं।
- 3 और ऐसा हुआ कि वे अपनी पूरी शक्ति से दौड़े, और न्याय-आसन के पास पहुंचे; और देखो, मुख्य न्यायी धरती पर गिरा पड़ा था, और वह अपने ही लहू में पड़ा हुआ था।
- 4 और अब देखो, जब उन्होंने इसे देखा तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ, इतना अधिक कि वे धरती पर गिर पड़े; क्योंकि मुख्य न्यायी के संबंध में जो नफी ने कहा था उस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया था।
- 5 परन्तु अब, जब उन्होंने देखा तो विश्वास किया, और वे भयभीत हुए कि कहीं लोगों पर वह सब न्यायदंड न आ जाए जिसके बारे में नफी ने बताया था; इसलिए वे कांपने लगे, और धरती पर गिर पड़े।
- 6 अब, न्यायी की हत्या के तुरन्त बाद—उसे उसके भाई ने भेष बदलकर मारा था, और वह भाग गया, और सेवकों ने जाकर हत्या के बारे में ढिंढोरा पीटते हुए लोगों को इसे बताया।
- 7 और देखो, लोग न्याय-आसन के पास एकत्रित हुए—और देखो, अचम्भीत होकर उन्होंने उन पांच लोगों को देखा जो धरती पर गिरे पड़े थे।
- 8 और अब देखो, ये लोग नफी के बगीचे पर एकत्रित भीड़ के बारे में कुछ नहीं जानते थे; इसलिए उन्होंने आपस में कहा: ये वही लोग हैं जिन्होंने न्यायी की हत्या की है, और परमेश्वर ने उन्हें गिरा दिया है ताकि ये हमसे भाग न सकें।

## Helaman 9

Behold, now it came to pass that when Nephi had spoken these words, certain men who were among them ran to the judgment-seat; yea, even there were five who went, and they said among themselves, as they went:

Behold, now we will know of a surety whether this man be a prophet and God hath commanded him to prophesy such marvelous things unto us. Behold, we do not believe that he hath; yea, we do not believe that he is a prophet; nevertheless, if this thing which he has said concerning the chief judge be true, that he be dead, then will we believe that the other words which he has spoken are true.

And it came to pass that they ran in their might, and came in unto the judgment-seat; and behold, the chief judge had fallen to the earth, and did lie in his blood.

And now behold, when they saw this they were astonished exceedingly, insomuch that they fell to the earth; for they had not believed the words which Nephi had spoken concerning the chief judge.

But now, when they saw they believed, and fear came upon them lest all the judgments which Nephi had spoken should come upon the people; therefore they did quake, and had fallen to the earth.

Now, immediately when the judge had been murdered—he being stabbed by his brother by a garb of secrecy, and he fled, and the servants ran and told the people, raising the cry of murder among them;

And behold the people did gather themselves together unto the place of the judgment-seat—and behold, to their astonishment they saw those five men who had fallen to the earth.

And now behold, the people knew nothing concerning the multitude who had gathered together at the garden of Nephi; therefore they said among themselves: These men are they who have murdered the judge, and God has smitten them that they could not flee from us.

- 9 और ऐसा हुआ कि उन्होंने उन्हें पकड़ लिया, और उन्हें बांधकर बंदीगृह में डाल दिया। और चारों तरफ घोषणा की गई कि न्यायी की हत्या हो गई है, और हत्यारों को पकड़ लिया गया है और बंदीगृह में डाल दिया है।
- 10 और ऐसा हुआ कि अगले दिन, लोग मारे गए महान मुख्य न्यायी की दफन-क्रिया पर शोक मनाने और उपवास करने के लिए एकत्रित हुए।
- 11 और इस प्रकार वे न्यायी भी दफन-क्रिया पर एकत्रित हुए जो नफी के बगीचे पर थे और जिन्होंने उसकी बातों को सुना था।
- 12 और ऐसा हुआ कि उन्होंने यह कहते हुए लोगों से पूछताछ की: वे पांच लोग कहां हैं जिन्हें मुख्य न्यायी की मौत के विषय में पता करने के लिए भेजा गया था? और उन्होंने उत्तर दिया और कहा: हम उन पांच लोगों के बारे में तो नहीं जानते हैं जिन्हें तुमने भेजा था; परन्तु पांच और लोग हैं जो हत्यारे हैं जिन्हें हमने बंदीगृह में डाल दिया है।
- 13 और ऐसा हुआ कि न्यायियों ने इच्छा जताई कि उन्हें लाया जाए; और उन्हें लाया गया, और देखो ये वही पांच लोग थे जिन्हें भेजा गया था; और देखो न्यायियों ने मामले के संबंध में उनसे पूछताछ की, और यह कहते हुए, उन्होंने अपने द्वारा की गई सारी बातें बताईं:
- 14 हम भागकर आए और न्याय-आसन के पास पहुंचे, और जब हमने सब कुछ देखा जैसा कि नफी ने गवाही दी थी, हम इतना अधिक अचम्भीत हुए कि धरती पर गिर पड़े; और जब हम अपने आश्चर्य से बाहर निकले तो देखो उन्होंने हमें बंदीगृह में डाल दिया।
- 15 अब, इस व्यक्ति की हत्या के बारे में, हम नहीं जानते हैं कि ऐसा किसने किया है; और हमें केवल इतनी ही पता है, तुम्हारी इच्छा के अनुसार हम दौड़कर यहां आए, और देखो नफी की भविष्यवाणी के अनुसार, वह मरा पड़ा था।
- 16 और ऐसा हुआ कि न्यायियों ने इस मामले को लोगों को समझाया, और नफी के विरुद्ध यह कहते हुए चीखने लगे: देखो, हम जानते हैं कि नफी ने किसी के साथ मिलकर न्यायी की हत्या करवाई है, और तब इसने हमें इसके बारे में बताया है जिससे कि वह अपने विश्वास में हमारा परिवर्तन कर सके, ताकि स्वयं को परमेश्वर द्वारा चुना हुआ एक महान पुरुष, और एक भविष्यवक्ता बता सके।

And it came to pass that they laid hold on them, and bound them and cast them into prison. And there was a proclamation sent abroad that the judge was slain, and that the murderers had been taken and were cast into prison.

And it came to pass that on the morrow the people did assemble themselves together to mourn and to fast, at the burial of the great chief judge who had been slain.

And thus also those judges who were at the garden of Nephi, and heard his words, were also gathered together at the burial.

And it came to pass that they inquired among the people, saying: Where are the five who were sent to inquire concerning the chief judge whether he was dead? And they answered and said: Concerning this five whom ye say ye have sent, we know not; but there are five who are the murderers, whom we have cast into prison.

And it came to pass that the judges desired that they should be brought; and they were brought, and behold they were the five who were sent; and behold the judges inquired of them to know concerning the matter, and they told them all that they had done, saying:

We ran and came to the place of the judgment-seat, and when we saw all things even as Nephi had testified, we were astonished insomuch that we fell to the earth; and when we were recovered from our astonishment, behold they cast us into prison.

Now, as for the murder of this man, we know not who has done it; and only this much we know, we ran and came according as ye desired, and behold he was dead, according to the words of Nephi.

And now it came to pass that the judges did expound the matter unto the people, and did cry out against Nephi, saying: Behold, we know that this Nephi must have agreed with some one to slay the judge, and then he might declare it unto us, that he might convert us unto his faith, that he might raise himself to be a great man, chosen of God, and a prophet.

- 17 और अब देखो, हम इस व्यक्ति के बारे में पता लगा लेंगे, और वह अपनी गलती का अंगीकार करेगा और हमें इस न्यायी के असली हत्यारे का पता बताएगा ।
- 18 और ऐसा हुआ कि दफन-क्रिया के दिन उन पांच लोगों को छोड़ दिया गया । फिर भी, नफी के विरुद्ध कही गई बातों के लिए उन्होंने न्यायियों को डांटा-फटकारा, और एक-एक कर उन लोगों से बहुत बहस की और उन्हें समझाया ।
- 19 फिर भी, उन्होंने नफी को पकड़कर बंधवा दिया और भीड़ के सामने लाए, और उससे विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछने लगे जिससे कि वे उसे फंसा सकें, ताकि वे उसे मृत्युदंड दे सकें—
- 20 उससे यह कहते हुए: तुम अपराध में भागीदार हो; कौन है वह व्यक्ति जिसने यह हत्या की है ? अब हमें बताओ, और अपनी गलती स्वीकार करो, देखो यह धन है; और यदि तुम हमें उस व्यक्ति के बारे में बताओगे और उसके साथ अपनी साझीदारी को स्वीकार करोगे तो हमें तुम्हें जीवनदान भी दे देंगे ।
- 21 परन्तु नफी ने उनसे कहा: हे मन्दबुद्धि लोगों, तुमने अपने हृदय को अशुद्ध कर लिया है, तुम अंधे और हठी लोग हो, क्या तुम जानते हो कि तुम्हारा प्रभु परमेश्वर ऐसा कब तक सहन करेगा कि तुम पाप के अपने मार्ग पर चलते रहो ?
- 22 तुम्हें विलाप और शोक आरंभ करना चाहिए क्योंकि यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो इस समय भारी विनाश तुम्हारी प्रतीक्षा में खड़ा है ।
- 23 देखो तुम कहते हो कि सीजोरम, हमारे मुख्य न्यायी की हत्या में मैं उस व्यक्ति के साथ मिला हुआ हूँ । परन्तु देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, कि तुम्हें ऐसा इसलिए लग रहा है क्योंकि मैंने तुम्हें गवाही दी थी और एक साक्षी भी कि तुम इस बात के बारे में जान सको, कि मैं तुम लोगों के बीच में हो रही दुष्टता और घृणित कार्यों के बारे में जानता हूँ ।
- 24 और क्योंकि मैंने तुम्हें इसे बताया है, तुम कहते हो कि मैं उस व्यक्ति के साथ मिला हुआ हूँ ताकि वह इस काम को कर सके; हां, क्योंकि मैंने तुम्हें इसका चिन्ह दिखाया है तुम मुझसे क्रोधित हो, और मुझे मारना चाहते हो ।
- 25 और अब देखो, मैं तुम्हें दूसरा चिन्ह दिखाऊंगा, और देखूंगा कि क्या तुम इसमें भी मुझे मारने का प्रयास करते हो ।
- 26 देखो मैं तुमसे कहता हूँ: सीएण्टम के घर जाओ, जो कि सीजोरम का भाई है, और उससे कहो—

And now behold, we will detect this man, and he shall confess his fault and make known unto us the true murderer of this judge.

And it came to pass that the five were liberated on the day of the burial. Nevertheless, they did rebuke the judges in the words which they had spoken against Nephi, and did contend with them one by one, insomuch that they did confound them.

Nevertheless, they caused that Nephi should be taken and bound and brought before the multitude, and they began to question him in divers ways that they might cross him, that they might accuse him to death—

Saying unto him: Thou art confederate; who is this man that hath done this murder? Now tell us, and acknowledge thy fault; saying, Behold here is money; and also we will grant unto thee thy life if thou wilt tell us, and acknowledge the agreement which thou hast made with him.

But Nephi said unto them: O ye fools, ye uncircumcised of heart, ye blind, and ye stiffnecked people, do ye know how long the Lord your God will suffer you that ye shall go on in this your way of sin?

O ye ought to begin to howl and mourn, because of the great destruction which at this time doth await you, except ye shall repent.

Behold ye say that I have agreed with a man that he should murder Seezoram, our chief judge. But behold, I say unto you, that this is because I have testified unto you that ye might know concerning this thing; yea, even for a witness unto you, that I did know of the wickedness and abominations which are among you.

And because I have done this, ye say that I have agreed with a man that he should do this thing; yea, because I showed unto you this sign ye are angry with me, and seek to destroy my life.

And now behold, I will show unto you another sign, and see if ye will in this thing seek to destroy me.

Behold I say unto you: Go to the house of Seantum, who is the brother of Seezoram, and say unto him—



- 27 क्या नफी, जो एक भविष्यवक्ता होने का दिखावा करता है, जो कि इन लोगों के बुराई के बारे में भविष्यवाणी करता है, तुम्हारे साथ मिला हुआ था कि तुम सीजोरम की हत्या करो जो कि तुम्हारा भाई है ?
- 28 और देखो, वह तुमसे कहेगा, नहीं ।
- 29 और तुम उससे कहना: क्या तुमने अपने भाई की हत्या की है ?
- 30 और वह भय से खड़ा हो जाएगा, और समझ नहीं पाएगा कि क्या कहे । और देखो, वह तुम्हें मना कर देगा; और वह आश्चर्य का ढोंग करेगा; फिर भी, वह अपने आपको निर्दोष बताएगा ।
- 31 परन्तु देखो, तुम उसकी परीक्षा लेना, और तुम्हें उसके लबादे के किनारों पर लहू मिलेगा ।
- 32 और जब तुम इसे देख लो, तुम कहना: यह लहू कहां से आया ? क्या हम समझें कि यह लहू तुम्हारे भाई का है ?
- 33 और फिर वह कांप जाएगा, और उसका चेहरा पीला पड़ जाएगा, मानो उस पर मृत्यु आ गई हो ।
- 34 और फिर तुम कहना: इस भय और तुम्हारे चेहरे के पीलेपन के कारण, देखो, हम जानते हैं कि तुम अपराधी हो ।
- 35 और तब वह और भी भयभीत हो उठेगा; और फिर वह तुम्हारे सामने अंगीकार करेगा, और इस बात को मना नहीं करेगा कि उसने हत्या की है ।
- 36 और तब वह तुमसे कहेगा, कि मैं नफी के बारे में नहीं जानता, उसे तो परमेश्वर की शक्ति के द्वारा इस मामले की जानकारी दी गई है । और तब तुम जानोगे कि मैं एक सच्चा व्यक्ति हूँ, और मुझे परमेश्वर ने तुम्हारे पास भेजा है ।
- 37 और ऐसा हुआ कि वे चले गए, और वैसा ही किया जैसा कि नफी ने उनसे करने के लिए कहा था । और देखो, जो बातें उसने कही थीं वह सच्ची थीं; क्योंकि उसके कहे अनुसार उसने मना किया; और फिर उसके कहे ही अनुसार उसने अंगीकार किया ।
- 38 और उससे पूरी तरह सिद्ध करवाया गया कि वही हत्यारा है, जिससे कि पकड़े गए पांच लोगों को और नफी को भी छोड़ दिया गया ।
- 39 और कुछ नफाई थे जिन्होंने नफी की बातों पर विश्वास किया; और कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने उन पांच लोगों की गवाहियों के कारण विश्वास किया, क्योंकि जब वे बंदीगृह में थे तभी उनका मन परिवर्तन हो गया था ।

Has Nephi, the pretended prophet, who doth prophesy so much evil concerning this people, agreed with thee, in the which ye have murdered Seezoram, who is your brother?

And behold, he shall say unto you, Nay.

And ye shall say unto him: Have ye murdered your brother?

And he shall stand with fear, and wist not what to say. And behold, he shall deny unto you; and he shall make as if he were astonished; nevertheless, he shall declare unto you that he is innocent.

But behold, ye shall examine him, and ye shall find blood upon the skirts of his cloak.

And when ye have seen this, ye shall say: From whence cometh this blood? Do we not know that it is the blood of your brother?

And then shall he tremble, and shall look pale, even as if death had come upon him.

And then shall ye say: Because of this fear and this paleness which has come upon your face, behold, we know that thou art guilty.

And then shall greater fear come upon him; and then shall he confess unto you, and deny no more that he has done this murder.

And then shall he say unto you, that I, Nephi, know nothing concerning the matter save it were given unto me by the power of God. And then shall ye know that I am an honest man, and that I am sent unto you from God.

And it came to pass that they went and did, even according as Nephi had said unto them. And behold, the words which he had said were true; for according to the words he did deny; and also according to the words he did confess.

And he was brought to prove that he himself was the very murderer, insomuch that the five were set at liberty, and also was Nephi.

And there were some of the Nephites who believed on the words of Nephi; and there were some also, who believed because of the testimony of the five, for they had been converted while they were in prison.

40 और अब कुछ लोग थे जिन्होंने कहा कि नफी एक भविष्यवक्ता था ।

41 और कुछ अन्य लोग थे जिन्होंने कहा: देखो, वह परमेश्वर है क्योंकि कि यदि वह परमेश्वर नहीं होता तो उसे यह सारी बातें पता नहीं होती । क्योंकि देखो, उसने हमारे मन के विचारों को हमें बताया, और अन्य बातें बताई; यहां तक कि उसने हमारे मुख्य न्यायी के असली हत्यारे की जानकारी हमें दी ।

And now there were some among the people, who said that Nephi was a prophet.

And there were others who said: Behold, he is a god, for except he was a god he could not know of all things. For behold, he has told us the thoughts of our hearts, and also has told us things; and even he has brought unto our knowledge the true murderer of our chief judge.

## हिलामन 10

- 1 और ऐसा हुआ कि लोगों में विभाजन होने लगा, इतना अधिक कि जब नफी उनके बीच में खड़ा था, तो उसे अकेला छोड़ते हुए वे इधर-उधर अलग होकर अपने मार्ग पर चले गए ।
- 2 और ऐसा हुआ कि नफी अपने घर की तरफ चला गया, उन बातों पर मनन करते हुए जिसे प्रभु ने उसे दिखाया था ।
- 3 और ऐसा हुआ कि जब वह इस प्रकार से मनन कर रहा था— नफाइयों की दुष्टता, अंधकार के उनके गुप्त कार्यों, और उनकी हत्याओं, और उनके लूट-मार, और हर प्रकार की बुराइयों के कारण बहुत अधिक दुखी होते हुए—और ऐसा हुआ कि जब वह इस प्रकार से अपने हृदय में मनन कर रहा था, देखो, यह कहते हुए उसे एक आवाज सुनाई दी:
- 4 नफी, तुम आशीषित हो, उन बातों के लिए जो तुमने किया है; क्योंकि मैंने देखा है कि किस प्रकार बिना थके हुए तुमने वचन की घोषणा की है, जिसे मैंने तुम्हें इन लोगों को सुनाने के लिए दिया था । और तुम उनसे डरे नहीं, और तुमने अपने प्राणों का मोह नहीं किया, परन्तु तुमने मेरी इच्छानुसार किया है, और मेरी आज्ञाओं का पालन किया है ।
- 5 और अब, क्योंकि तुमने ऐसा बिना थके हुए किया है, देखो, मैं तुम्हें सदा आशीष दूंगा; और मैं तुम्हारी बात में और कर्म में, विश्वास में और कार्यों में तुम्हें शक्तिशाली बनाऊंगा; हां, यहां तक कि सारी चीजें तुम्हारे कहे अनुसार ही होंगी, क्योंकि तुम ऐसी किसी भी चीज को नहीं मांगोगे जो मेरी इच्छा के विपरित हो ।
- 6 देखो, तुम नफी हो, और मैं परमेश्वर हूँ । देखो, मैं अपने स्वर्दगूतों की उपस्थिति में तुम्हें बताता हूँ, कि तुम्हारा इन लोगों पर अधिकार होगा, और मैं इन लोगों की दुष्टता के अनुसार पृथ्वी को अकाल, और महामारी, और विनाश से दंडित करूंगा ।
- 7 देखो, मैं तुम्हें अधिकार देता हूँ कि धरती पर तुम जिस को भी मुहरबंद करोगे उसे स्वर्ग में भी मुहरबंद किया जाएगा; और धरती पर तुम जिस चीज को खोलोगे वह स्वर्ग में भी खुलेगा; और इस प्रकार इन लोगों पर तुम्हारा अधिकार होगा ।
- 8 और इस प्रकार, यदि तुम इस मंदिर को कहोगे कि दो टुकड़ों में बंट जाए तो ऐसा होगा ।
- 9 और यदि तुम इस पहाड़ को कहोगे, तुम नीचे गिरकर समतल हो जाओ तो ऐसा होगा ।

## Helaman 10

And it came to pass that there arose a division among the people, insomuch that they divided hither and thither and went their ways, leaving Nephi alone, as he was standing in the midst of them.

And it came to pass that Nephi went his way towards his own house, pondering upon the things which the Lord had shown unto him.

And it came to pass as he was thus pondering—being much cast down because of the wickedness of the people of the Nephites, their secret works of darkness, and their murderings, and their plunderings, and all manner of iniquities—and it came to pass as he was thus pondering in his heart, behold, a voice came unto him saying:

Blessed art thou, Nephi, for those things which thou hast done; for I have beheld how thou hast with unwearyingness declared the word, which I have given unto thee, unto this people. And thou hast not feared them, and hast not sought thine own life, but hast sought my will, and to keep my commandments.

And now, because thou hast done this with such unwearyingness, behold, I will bless thee forever; and I will make thee mighty in word and in deed, in faith and in works; yea, even that all things shall be done unto thee according to thy word, for thou shalt not ask that which is contrary to my will.

Behold, thou art Nephi, and I am God. Behold, I declare it unto thee in the presence of mine angels, that ye shall have power over this people, and shall smite the earth with famine, and with pestilence, and destruction, according to the wickedness of this people.

Behold, I give unto you power, that whatsoever ye shall seal on earth shall be sealed in heaven; and whatsoever ye shall loose on earth shall be loosed in heaven; and thus shall ye have power among this people.

And thus, if ye shall say unto this temple it shall be rent in twain, it shall be done.

And if ye shall say unto this mountain, Be thou cast down and become smooth, it shall be done.

- 10 और देखो, यदि तुम कहोगे कि परमेश्वर इन लोगों को दंड दे तो ऐसा ही होगा ।
- 11 और अब देखो, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम जाओ और इसे लोगों को बताओ, कि ऐसा प्रभु परमेश्वर कहता है, जो सर्वशक्तिमान है: यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो तुम्हें दंडित किया जाएगा, यहां तक कि तुम्हारा विनाश होगा ।
- 12 और देखो, अब ऐसा हुआ कि जब प्रभु ने नफी से इन बातों को कह लिया, वह रुका और अपने घर नहीं गया, परन्तु वह उन लोगों में गया जो प्रदेश में तितर-बितर हो गए थे, और उन्हें प्रभु का वह वचन सुनाने लगा जो उसे बताया गया था कि यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे तो उनका विनाश होगा ।
- 13 अब देखो, मुख्य न्यायी की हत्या के संबंध में नफी ने जो लोगों को बताया था, उस महान चमत्कार के बावजूद भी उन्होंने अपने हृदयों को कठोर कर लिया था और प्रभु के वचन की तरफ ध्यान नहीं दिया ।
- 14 इसलिए नफी ने उन्हें प्रभु का वचन सुनाया, यह कहते हुए: यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे, ऐसा प्रभु परमेश्वर कहता है, तो तुम्हें दंडित किया जाएगा, यहां तक कि तुम्हारा विनाश होगा ।
- 15 और ऐसा हुआ कि जब नफी ने उन्हें वचन सुना दिया, देखो, उन्होंने अपने हृदयों को फिर भी कठोर ही रखा और उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया; इसलिए उन्होंने उसे बुरा-भला कहा, और उसे पकड़ने का प्रयास किया ताकि वे उसे बंदीगृह में डाल सकें ।
- 16 परन्तु देखो, उसके साथ परमेश्वर की शक्ति थी, और वे उसे पकड़कर बंदीगृह में नहीं डाल पाए, क्योंकि पवित्र आत्मा उसे उनके बीच में से दूर ले गई ।
- 17 और ऐसा हुआ कि इस प्रकार आत्मा में रहते हुए, वह परमेश्वर के वचन की घोषणा करते हुए एक जनसमूह से दूसरे जनसमूह गया, तब तक जब तक कि उसने इसकी घोषणा सबमें न कर दी, या इसे सारे लोगों में न पहुंचा दिया ।
- 18 और ऐसा हुआ कि उन्होंने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया; और मतभेद शुरू हो गया, इतना अधिक कि वे आपस में ही एक दूसरे के विरुद्ध हो गए और तलवार से एक दूसरे की हत्या करने लगे ।
- 19 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का एकहत्तरवां वर्ष समाप्त हुआ ।

And behold, if ye shall say that God shall smite this people, it shall come to pass.

And now behold, I command you, that ye shall go and declare unto this people, that thus saith the Lord God, who is the Almighty: Except ye repent ye shall be smitten, even unto destruction.

And behold, now it came to pass that when the Lord had spoken these words unto Nephi, he did stop and did not go unto his own house, but did return unto the multitudes who were scattered about upon the face of the land, and began to declare unto them the word of the Lord which had been spoken unto him, concerning their destruction if they did not repent.

Now behold, notwithstanding that great miracle which Nephi had done in telling them concerning the death of the chief judge, they did harden their hearts and did not hearken unto the words of the Lord.

Therefore Nephi did declare unto them the word of the Lord, saying: Except ye repent, thus saith the Lord, ye shall be smitten even unto destruction.

And it came to pass that when Nephi had declared unto them the word, behold, they did still harden their hearts and would not hearken unto his words; therefore they did revile against him, and did seek to lay their hands upon him that they might cast him into prison.

But behold, the power of God was with him, and they could not take him to cast him into prison, for he was taken by the Spirit and conveyed away out of the midst of them.

And it came to pass that thus he did go forth in the Spirit, from multitude to multitude, declaring the word of God, even until he had declared it unto them all, or sent it forth among all the people.

And it came to pass that they would not hearken unto his words; and there began to be contentions, insomuch that they were divided against themselves and began to slay one another with the sword.

And thus ended the seventy and first year of the reign of the judges over the people of Nephi.

## हिलामन 11

- 1 और ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के बहत्तरवें वर्ष में मतभेद और भी बढ़ा, इतना अधिक कि पूरे प्रदेश में नफी के लोगों में युद्ध छिड़ गया ।
- 2 और यह गुप्त टोली के डाकू ही थे जिन्होंने विनाश और दुष्टता का कार्य आगे बढ़ाया । और यह युद्ध उस पूरे वर्ष जारी रहा; और तिहत्तरवें वर्ष में भी जारी रहा ।
- 3 और ऐसा हुआ कि इस वर्ष यह कहते हुए नफी ने प्रभु से याचना की:
- 4 हे प्रभु, ऐसा न होने दो कि इन लोगों का विनाश तलवार द्वारा हो; परन्तु हे प्रभु, इसकी बजाय प्रदेश में अकाल भेज दो, जिसके कारण इन्हें प्रभु अपने परमेश्वर की याद आए, और संभवतः ये पश्चाताप करें और तुम्हारी तरफ मुड़ जाएं ।
- 5 और नफी के कहे अनुसार ऐसा ही हुआ । और प्रदेश में नफी के सारे लोगों पर एक भारी अकाल पड़ा । और इस प्रकार चौहत्तरवें वर्ष में अकाल जारी रहा, और विनाश का कार्य तलवार द्वारा तो बंद हो गया परन्तु अकाल द्वारा अत्यंत दुखदाई हुआ ।
- 6 और विनाश का यह कार्य पचहत्तरवें वर्ष में भी जारी रहा । क्योंकि नष्ट किये जाने के कारण धरती सूख गई थी, और उपज के मौसम में अनाज नहीं उगा पाई; और पूरी धरती नष्ट हो गई थी, यहां तक कि लमनाइयों और नफाइयों की भी, इसलिए उनका विनाश हुआ जिससे कि प्रदेश के अधिक दुष्कर्मी हिस्से में हजारों की संख्या में लोग नष्ट हुए ।
- 7 और ऐसा हुआ कि लोगों ने देखा कि अकाल द्वारा लगभग उनका विनाश होनेवाला है, और वे प्रभु अपने परमेश्वर को याद करने लगे; और उन्हें नफी के शब्द याद आने लगे ।
- 8 और लोग अपने मुख्य न्यायियों और अपने मार्गदर्शकों से याचना करने लगे कि वे नफी से कहना चाहते हैं: देखो, हम जानते हैं कि तुम परमेश्वर के मनुष्य हो, और इसलिए हमारे प्रभु परमेश्वर से विनती करो कि वह इस अकाल को बंद कर दे, कहीं ऐसा न हो कि जो भी बातें तुमने हमारे विनाश के बारे में बताया है वह पूरी हो जाए ।

## Helaman 11

And now it came to pass in the seventy and second year of the reign of the judges that the contentions did increase, insomuch that there were wars throughout all the land among all the people of Nephi.

And it was this secret band of robbers who did carry on this work of destruction and wickedness. And this war did last all that year; and in the seventy and third year it did also last.

And it came to pass that in this year Nephi did cry unto the Lord, saying:

O Lord, do not suffer that this people shall be destroyed by the sword; but O Lord, rather let there be a famine in the land, to stir them up in remembrance of the Lord their God, and perhaps they will repent and turn unto thee.

And so it was done, according to the words of Nephi. And there was a great famine upon the land, among all the people of Nephi. And thus in the seventy and fourth year the famine did continue, and the work of destruction did cease by the sword but became sore by famine.

And this work of destruction did also continue in the seventy and fifth year. For the earth was smitten that it was dry, and did not yield forth grain in the season of grain; and the whole earth was smitten, even among the Lamanites as well as among the Nephites, so that they were smitten that they did perish by thousands in the more wicked parts of the land.

And it came to pass that the people saw that they were about to perish by famine, and they began to remember the Lord their God; and they began to remember the words of Nephi.

And the people began to plead with their chief judges and their leaders, that they would say unto Nephi: Behold, we know that thou art a man of God, and therefore cry unto the Lord our God that he turn away from us this famine, lest all the words which thou hast spoken concerning our destruction be fulfilled.

- 9 और ऐसा हुआ कि जैसा वे चाहते थे वैसा ही न्यायियों ने नफी से कहा। और ऐसा हुआ कि जब नफी ने देखा कि लोगों ने पश्चाताप किया है और टाट के वस्त्रों में स्वयं को विनम्र किया है, यह कहते हुए उसने प्रभु से फिर से विनती की:
- 10 हे प्रभु, देखो इन लोगों ने पश्चाताप किया है; और उन्होंने अपने बीच से गडियन्टन की टोली को ऐसे खत्म किया है कि वे विलुप्त हो गए हैं, और उन्होंने जमीन में अपनी गुप्त योजनाओं को दफन कर दिया है।
- 11 अब, हे प्रभु, इनकी इस विनम्रता के कारण क्या तुम अपना क्रोध हटा लोगे, और क्रोध को उन दुष्ट लोगों को विनाश से शांत कर लो जिन्हें तुमने पहले ही नष्ट कर दिया है।
- 12 हे प्रभु, क्या अपना क्रोध हटा लोगे, हां, अपने भारी क्रोध को, और ऐसा होने दो कि इस प्रदेश में अकाल पड़ना बंद हो जाए।
- 13 हे प्रभु, क्या तुम मेरी बात सुनोगे, और ऐसा होने दोगे कि मेरे कहे अनुसार हो, और धरती पर वर्षा भेज दो, ताकि वह उपजाऊ हो सके, और उपज के मौसम में फल दे सके।
- 14 हे प्रभु, तुमने तब मेरी बात सुनी थी जब मैंने कहा था कि अकाल पड़ने दो, ताकि तलवार की महामारी रुक सके; और मुझे पता है कि इस बार भी तुम मेरी बात सुनोगे, क्योंकि तुमने कहा है: यदि ये लोग पश्चाताप करेंगे तो मैं उन पर दया करूंगा।
- 15 हां, हे प्रभु, और तुम देखते हो कि अकाल, और महामारी और विनाश जो इन पर आया है, उसके कारण इन लोगों ने पश्चाताप किया है।
- 16 और अब, हे प्रभु, क्या तुम अपना क्रोध छोड़ दोगे, और फिर से इन्हें अपनी सेवा करने का अवसर दोगे? और यदि ऐसा हो, हे प्रभु, तो क्या तुम इन्हें अपनी बातों के अनुसार आशीष नहीं दोगे जो तुमने कहा है।
- 17 और ऐसा हुआ कि छिहत्तरवें वर्ष में प्रभु ने लोगों के प्रति अपना क्रोध छोड़ दिया, और पृथ्वी पर वर्षा होने दी, इतना अधिक कि फलों के मौसम में उसमें फल लगे। और ऐसा हुआ कि अनाज के मौसम में उसमें अनाज उगा।

And it came to pass that the judges did say unto Nephi, according to the words which had been desired. And it came to pass that when Nephi saw that the people had repented and did humble themselves in sackcloth, he cried again unto the Lord, saying:

O Lord, behold this people repenteth; and they have swept away the band of Gadianton from amongst them insomuch that they have become extinct, and they have concealed their secret plans in the earth.

Now, O Lord, because of this their humility wilt thou turn away thine anger, and let thine anger be appeased in the destruction of those wicked men whom thou hast already destroyed.

O Lord, wilt thou turn away thine anger, yea, thy fierce anger, and cause that this famine may cease in this land.

O Lord, wilt thou hearken unto me, and cause that it may be done according to my words, and send forth rain upon the face of the earth, that she may bring forth her fruit, and her grain in the season of grain.

O Lord, thou didst hearken unto my words when I said, Let there be a famine, that the pestilence of the sword might cease; and I know that thou wilt, even at this time, hearken unto my words, for thou saidst that: If this people repent I will spare them.

Yea, O Lord, and thou seest that they have repented, because of the famine and the pestilence and destruction which has come unto them.

And now, O Lord, wilt thou turn away thine anger, and try again if they will serve thee? And if so, O Lord, thou canst bless them according to thy words which thou hast said.

And it came to pass that in the seventy and sixth year the Lord did turn away his anger from the people, and caused that rain should fall upon the earth, insomuch that it did bring forth her fruit in the season of her fruit. And it came to pass that it did bring forth her grain in the season of her grain.

- 18 और देखो, लोग आनंदित हुए और परमेश्वर की महिमा की, और पूरा प्रदेश आनंद से भर गया; और फिर उन्होंने नफी को मारने का प्रयास नहीं किया, परन्तु उन्होंने उसे एक महान भविष्यवक्ता मान लिया, परमेश्वर का एक ऐसा मनुष्य जिसे परमेश्वर से महान शक्ति और अधिकार प्राप्त हो।
- 19 और देखो, धार्मिकता की बातों में उसका भाई लेही उससे एक बिंदू से भी कम नहीं था।
- 20 और इस प्रकार ऐसा हुआ कि नफी के लोगों ने फिर से प्रदेश में उन्नति करना आरंभ किया, और नष्ट हुए स्थानों को फिर से बसाने लगे, और उनकी संख्या बढ़ने लगी और वे सारे तरफ फैल गए, यहां तक कि वे पूरे प्रदेश में फैल गए, दोनों उत्तरी और दक्षिणी दिशा में, पश्चिमी समुद्रतट से लेकर पूर्वी समुद्रतट तक।
- 21 और ऐसा हुआ कि छिहत्तरवां वर्ष शांति से समाप्त हुआ। और सतहत्तरवां वर्ष शांति से आरंभ हुआ; और पूरे प्रदेश में गिरजे का प्रसार हुआ; और अधिकतर लोग, नफाई और लमनाई दोनों ही गिरजे के सदस्य बने; और प्रदेश में उन्होंने महान शांति का अनुभव किया; और इस प्रकार सतहत्तरवां वर्ष समाप्त हुआ।
- 22 और अठहत्तरवें वर्ष में भी शांति बनी रही, सिद्धांत की बातों से संबंधित कुछ मतभेदों के अलावा जिन्हें भविष्यवक्ताओं ने बताया था।
- 23 और उनहत्तरवां वर्ष अधिक विवादों के साथ आरंभ हुआ। परन्तु ऐसा हुआ कि नफी और लेही, और उनके कई भाई नियमित प्रकटीकरण प्राप्त करते हुए, सिद्धांत की सच्ची बातों को जानते थे, इसलिए उन्होंने लोगों में इसका इतना अधिक प्रचार किया कि उन्होंने उसी वर्ष अपने विवादों को खत्म कर दिया।
- 24 और ऐसा हुआ नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन के अस्सीवें वर्ष में, नफी के लोगों में कुछ लोग मतभेद करने लगे, जो कि कुछ वर्ष पूर्व लमनाइयों से मिल गए थे, और स्वयं को लमनाई कहते थे, और कुछ ऐसे भी विपक्षी थे जो वास्तव में लमनाइयों के वंशज थे, उनके और उन विपक्षियों के द्वारा क्रोध में भड़काए गए, इसलिए उन्होंने अपने भाइयों के साथ युद्ध आरंभ कर दिया।

And behold, the people did rejoice and glorify God, and the whole face of the land was filled with rejoicing; and they did no more seek to destroy Nephi, but they did esteem him as a great prophet, and a man of God, having great power and authority given unto him from God.

And behold, Lehi, his brother, was not a whit behind him as to things pertaining to righteousness.

And thus it did come to pass that the people of Nephi began to prosper again in the land, and began to build up their waste places, and began to multiply and spread, even until they did cover the whole face of the land, both on the northward and on the southward, from the sea west to the sea east.

And it came to pass that the seventy and sixth year did end in peace. And the seventy and seventh year began in peace; and the church did spread throughout the face of all the land; and the more part of the people, both the Nephites and the Lamanites, did belong to the church; and they did have exceedingly great peace in the land; and thus ended the seventy and seventh year.

And also they had peace in the seventy and eighth year, save it were a few contentions concerning the points of doctrine which had been laid down by the prophets.

And in the seventy and ninth year there began to be much strife. But it came to pass that Nephi and Lehi, and many of their brethren who knew concerning the true points of doctrine, having many revelations daily, therefore they did preach unto the people, insomuch that they did put an end to their strife in that same year.

And it came to pass that in the eightieth year of the reign of the judges over the people of Nephi, there were a certain number of the dissenters from the people of Nephi, who had some years before gone over unto the Lamanites, and taken upon themselves the name of Lamanites, and also a certain number who were real descendants of the Lamanites, being stirred up to anger by them, or by those dissenters, therefore they commenced a war with their brethren.

- 25 और उन्होंने हत्या और लूट-मार की; और फिर वे पीछे हटते हुए पहाड़ों, और निर्जन प्रदेश और गुप्त स्थानों पर स्वयं को छिपाते हुए चले गए ताकि उन्हें खोजा न जा सके, उनकी संख्या में नियमित रूप से वृद्धि होती रही, और जितने भी विपक्षी थे वे उनके पास चले गए ।
- 26 और इस प्रकार अभी कई वर्ष नहीं बीते थे कि डाकुओं की टोली अत्याधिक बड़ी हो गई; और उन्होंने गडियन्टन की सारी योजनाओं का पता लगाया; और इस प्रकार वे गडियन्टन के डाकू बन गए ।
- 27 अब देखो, इन डाकुओं ने भारी तबाही मचाई, हां, यहां तक कि नफी के लोगों का, और लमनाइयों के लोगों का भी भारी विनाश किया ।
- 28 और ऐसा हुआ कि विनाश के इस कार्य को रोकना आवश्यक हो गया था; इसलिए डाकुओं की इस टोली को खोजने, और उनका विनाश करने के लिए उन्होंने एक मजबूत सेना को निर्जन प्रदेश और पहाड़ों पर भेजा ।
- 29 परन्तु देखो, ऐसा हुआ कि उसी वर्ष उन्हें फिर से उनके प्रदेश वापस खदेड़ दिया गया । और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का अस्सिवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 30 और ऐसा हुआ कि इक्यासिवें वर्ष में उन्होंने फिर से डाकुओं की टोली पर चढ़ाई कर दी, और कई लोगों को मार डाला; और उनका भी बहुत विनाश हुआ ।
- 31 और जो डाकू पहाड़ियों और निर्जन प्रदेश में फैले हुए थे, उन्होंने अपनी अत्याधिक संख्या के कारण उन्हें फिर से निर्जन प्रदेश और पहाड़ों से निकलकर उनके स्वयं के प्रदेश में जाने के लिए मजबूर किया गया ।
- 32 और ऐसा हुआ कि इस प्रकार यह वर्ष समाप्त हुआ । और डाकुओं की संख्या बढ़ती गई और वे मजबूत होते गए, इतना अधिक कि उन्होंने नफाइयों की पूरी सेना को, और लमनाइयों को भी ललकारा; और सारे प्रदेश में लोगों पर उनका भय छा गया ।
- 33 हां, उन्होंने प्रदेश के कई हिस्सों पर हमला किया, और उनका भारी विनाश किया; हां, कई लोगों की हत्या की, और बाकी लोगों को बंदी बनाकर निर्जन प्रदेश में ले गए, हां, और विशेषकर उनकी स्त्रियों और उनके बच्चों को ।

And they did commit murder and plunder; and then they would retreat back into the mountains, and into the wilderness and secret places, hiding themselves that they could not be discovered, receiving daily an addition to their numbers, inasmuch as there were dissenters that went forth unto them.

And thus in time, yea, even in the space of not many years, they became an exceedingly great band of robbers; and they did search out all the secret plans of Gadianton; and thus they became robbers of Gadianton.

Now behold, these robbers did make great havoc, yea, even great destruction among the people of Nephi, and also among the people of the Lamanites.

And it came to pass that it was expedient that there should be a stop put to this work of destruction; therefore they sent an army of strong men into the wilderness and upon the mountains to search out this band of robbers, and to destroy them.

But behold, it came to pass that in that same year they were driven back even into their own lands. And thus ended the eightieth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

And it came to pass in the commencement of the eighty and first year they did go forth again against this band of robbers, and did destroy many; and they were also visited with much destruction.

And they were again obliged to return out of the wilderness and out of the mountains unto their own lands, because of the exceeding greatness of the numbers of those robbers who infested the mountains and the wilderness.

And it came to pass that thus ended this year. And the robbers did still increase and wax strong, inasmuch that they did defy the whole armies of the Nephites, and also of the Lamanites; and they did cause great fear to come unto the people upon all the face of the land.

Yea, for they did visit many parts of the land, and did do great destruction unto them; yea, did kill many, and did carry away others captive into the wilderness, yea, and more especially their women and their children.



34 अब यह महान बुराई, जो कि लोगों के अधर्म के कारण उन पर आया था, जिसके कारण प्रभु अपने परमेश्वर को याद करने के लिए वे फिर से उत्तेजित हुए ।

35 और इस प्रकार न्यायियों के शासन का इक्यासिवां वर्ष समाप्त हुआ ।

36 और बयासिवें वर्ष में वे फिर से प्रभु अपने परमेश्वर को भूलने लगे । और तिरासिवें वर्ष में वे फिर से अधर्म में मजबूत होने लगे । और चौरासिवें वर्ष में उन्होंने स्वयं में कोई सुधार नहीं किया ।

37 और ऐसा हुआ कि पच्चासिवें वर्ष में वे अपने अहंकार और अपनी दुष्टता में और अधिक मजबूत होते गए; और इस प्रकार विनाश की तरफ अग्रसर हुए ।

38 और इस प्रकार पच्चासिवां वर्ष समाप्त हुआ ।

Now this great evil, which came unto the people because of their iniquity, did stir them up again in remembrance of the Lord their God.

And thus ended the eighty and first year of the reign of the judges.

And in the eighty and second year they began again to forget the Lord their God. And in the eighty and third year they began to wax strong in iniquity. And in the eighty and fourth year they did not mend their ways.

And it came to pass in the eighty and fifth year they did wax stronger and stronger in their pride, and in their wickedness; and thus they were ripening again for destruction.

And thus ended the eighty and fifth year.

## हिलामन 12

- 1 और इस प्रकार हम देख सकते हैं कि कैसे मानव संतान झूठी होती है और उनके हृदय कैसे अस्थिर होते हैं; हां, हम देख सकते हैं कि प्रभु अपनी महान असीम अच्छाई में उन लोगों को आशीष देता है और उनकी उन्नति करता है जो उसमें विश्वास करते हैं ।
- 2 हां, और हम देख सकते हैं कि अत्यंत शीघ्रता से वह अपने लोगों की उन्नति करता है, हां, उनके खेतों में फसल, उनके पशु-पक्षियों, और सोने और चांदी, और विभिन्न प्रकार के सारे मूल्यवान वस्तुओं और कलाकृतियों को बढ़ाता है; उनके जीवन को बचाते हुए और उन्हें उनके शत्रुओं के हाथों से छुड़ाते हुए; उनके शत्रुओं के हृदयों को कोमल बनाते हुए ताकि वे उनके खिलाफ युद्ध न करें; हां, और ठीक से रहें, अपने लोगों के कल्याण और प्रसन्नता के लिए सब कुछ करते हुए; हां, और यह वह समय होता है जब वे अपने हृदयों को कठोर करते हैं, और प्रभु अपने परमेश्वर को भूल जाते हैं, और अपने पैरों तले पवित्र जन को कुचल देते हैं—हां, और ऐसा वे अपने सुविधा, और अपनी अत्याधिक संपन्नता के कारण करते हैं ।
- 3 और इस प्रकार हम देखते हैं कि जब तक प्रभु अपने लोगों को कई परेशानियों, मृत्यु और डर, और अकाल और विभिन्न प्रकार की महामारी से दंडित नहीं करता है, वे प्रभु को याद नहीं करेंगे ।
- 4 ओह ! मानव संतान कितनी बुद्धिहीन, और कितनी झूठी, और कितनी बुरा और दुराचारी, और अधर्म करने में कितनी सचेत, और भलाई करने में कितनी आलसी है; हां, शैतान की बातों को सुनने में, और संसार की व्यर्थ चीजों पर अपना मन लगाने में कितनी सचेत है ।
- 5 हां, अहंकारी बनने में कितनी सचेत है; हां, शेखी बघारने में, और हर प्रकार के अधर्म में कितनी सचेत है; और प्रभु अपने परमेश्वर को याद करने में, और उसकी सीख पर ध्यान देने में कितनी आलसी है, हां, समझदारी की राह पर चलने में कितनी आलसी है ।
- 6 देखो, वे नहीं चाहते कि उनका प्रभु परमेश्वर जिसने उनकी रचना की है, उन पर शासन और हुकूमत करे; उनके प्रति उसकी महान अच्छाई और दया के बावजूद, वे उसकी सलाह को कुछ नहीं समझते हैं, और वे नहीं चाहते कि वह उनका मार्गदर्शक बने ।
- 7 ओह ! मानव संतान कुछ भी नहीं है; हां, वे पृथ्वी की धूल से भी कम हैं ।

## Helaman 12

And thus we can behold how false, and also the unsteadiness of the hearts of the children of men; yea, we can see that the Lord in his great infinite goodness doth bless and prosper those who put their trust in him.

Yea, and we may see at the very time when he doth prosper his people, yea, in the increase of their fields, their flocks and their herds, and in gold, and in silver, and in all manner of precious things of every kind and art; sparing their lives, and delivering them out of the hands of their enemies; softening the hearts of their enemies that they should not declare wars against them; yea, and in fine, doing all things for the welfare and happiness of his people; yea, then is the time that they do harden their hearts, and do forget the Lord their God, and do trample under their feet the Holy One—yea, and this because of their ease, and their exceedingly great prosperity.

And thus we see that except the Lord doth chasten his people with many afflictions, yea, except he doth visit them with death and with terror, and with famine and with all manner of pestilence, they will not remember him.

O how foolish, and how vain, and how evil, and devilish, and how quick to do iniquity, and how slow to do good, are the children of men; yea, how quick to hearken unto the words of the evil one, and to set their hearts upon the vain things of the world!

Yea, how quick to be lifted up in pride; yea, how quick to boast, and do all manner of that which is iniquity; and how slow are they to remember the Lord their God, and to give ear unto his counsels, yea, how slow to walk in wisdom's paths!

Behold, they do not desire that the Lord their God, who hath created them, should rule and reign over them; notwithstanding his great goodness and his mercy towards them, they do set at naught his counsels, and they will not that he should be their guide.

O how great is the nothingness of the children of men; yea, even they are less than the dust of the earth.

- 8 क्योंकि देखो, हमारे महान और अनंत परमेश्वर की आज्ञा पर, पृथ्वी की धूल यहां और वहां, अलग होते हुए उड़ती रहती है ।
- 9 हां, देखो उसकी आवाज पहाड़ियों और पहाड़ों को थर्रा देती है और कंपकंपा देती है ।
- 10 और उसकी आवाज की शक्ति द्वारा वे टूट जाते हैं, और हां, घाटी के समान सपाट हो जाते हैं ।
- 11 हां, उसकी आवाज की शक्ति द्वारा पूरी पृथ्वी थर्रा जाती है ।
- 12 हां, उसकी आवाज की शक्ति द्वारा आधार शिला भी मध्य तक हिल जाती है ।
- 13 हां, और यदि वह पृथ्वी से कहता है—हिलो—वह हिल जाती है ।
- 14 हां, यदि वह पृथ्वी से कहता है—तुम वापस पीछे लौट जाओ, ताकि दिन कई घंटों का हो जाए—तो ऐसा हो जाता है;
- 15 और इस प्रकार, उसके कहे अनुसार पृथ्वी वापस लौट जाती है, और लोगों को ऐसा लगता है कि सूरज अभी भी स्थिर है; हां, और देखो, यह ऐसा है; क्योंकि निश्चय रूप से पृथ्वी ही हिलती है पर सूर्य नहीं ।
- 16 और देखो, यदि वह गहरे पानी को कहता है—तुम सूख जाओ—तो वह सूख जाता है ।
- 17 देखो, यदि वह पहाड़ से कहता है—खड़े हो जाओ, और आकर उस नगर पर गिर पड़ो ताकि वह दफन हो जाए—देखो ऐसा होता है ।
- 18 और देखो, यदि कोई मनुष्य धरती पर धन छिपाकर रखता है, और प्रभु कहेगा—जिसने इसे छिपाकर रखा है उसके अधर्म के कारण यह श्रापित हो जाए—देखो, यह श्रापित हो जाएगा ।
- 19 और यदि प्रभु कहेगा—तुम श्रापित हो जाओ ताकि अब से लेकर सदा के लिए तुम्हें कोई भी मनुष्य न पा सके—देखो, अब से लेकर सदा के लिए कोई भी मनुष्य इसे नहीं पा सकता है ।
- 20 और देखो, यदि प्रभु किसी मनुष्य से कहेगा—तुम्हारे पापों के कारण, तुम सदा के लिए श्रापित हो—ऐसा होगा ।
- 21 और यदि प्रभु कहेगा—तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें मेरी उपस्थिति से अलग कर दिया जाएगा—वह देखेगा कि ऐसा ही हो ।

For behold, the dust of the earth moveth hither and thither, to the dividing asunder, at the command of our great and everlasting God.

Yea, behold at his voice do the hills and the mountains tremble and quake.

And by the power of his voice they are broken up, and become smooth, yea, even like unto a valley.

Yea, by the power of his voice doth the whole earth shake;

Yea, by the power of his voice, do the foundations rock, even to the very center.

Yea, and if he say unto the earth—Move—it is moved.

Yea, if he say unto the earth—Thou shalt go back, that it lengthen out the day for many hours—it is done;

And thus, according to his word the earth goeth back, and it appeareth unto man that the sun standeth still; yea, and behold, this is so; for surely it is the earth that moveth and not the sun.

And behold, also, if he say unto the waters of the great deep—Be thou dried up—it is done.

Behold, if he say unto this mountain—Be thou raised up, and come over and fall upon that city, that it be buried up—behold it is done.

And behold, if a man hide up a treasure in the earth, and the Lord shall say—Let it be accursed, because of the iniquity of him who hath hid it up—behold, it shall be accursed.

And if the Lord shall say—Be thou accursed, that no man shall find thee from this time henceforth and forever—behold, no man getteth it henceforth and forever.

And behold, if the Lord shall say unto a man—Because of thine iniquities, thou shalt be accursed forever—it shall be done.

And if the Lord shall say—Because of thine iniquities thou shalt be cut off from my presence—he will cause that it shall be so.

- 22 और उस पर हाथ जिसे वह ऐसा कहेगा, क्योंकि ऐसा उसके साथ होगा जो पाप करेगा, और वह बचाया नहीं जा सकता; इसलिए, पश्चाताप के बारे में घोषणा की गई है ताकि लोगों को बचाया जा सके ।
- 23 इसलिए, आशीषित हैं वे लोग जो पश्चाताप करेंगे और प्रभु अपने परमेश्वर की आवाज को सुनेंगे; क्योंकि यही वे लोग हैं जो बचाए जाएंगे ।
- 24 और परमेश्वर अपनी परिपूर्णता में ऐसा होने दे, कि लोगों को पश्चाताप और अच्छे कर्मों में लाया जा सके, ताकि उनके कर्मों के अनुसार उन पर फिर से अनुग्रह ही अनुग्रह हो सके ।
- 25 और मैं चाहूंगा कि सारे मनुष्यों को बचाया जा सके । परन्तु हम पढ़ते हैं कि अंतिम दिन में कुछ लोग निकाले जाएंगे, जिन्हें प्रभु की उपस्थिति से अलग कर दिया जाएगा;
- 26 हां, जिन्हें अंतहीन दुख की स्थिति के हवाले कर दिया जाएगा, उस वचन को पूरा करते हुए जो कहता है: उन लोगों को अनंत जीवन मिलेगा जिन्होंने भला काम किया है; और जिन्होंने बुरा काम किया है उन्हें अनंत नरकदंड । और इस प्रकार यह है । आमीन ।

And wo unto him to whom he shall say this, for it shall be unto him that will do iniquity, and he cannot be saved; therefore, for this cause, that men might be saved, hath repentance been declared.

Therefore, blessed are they who will repent and hearken unto the voice of the Lord their God; for these are they that shall be saved.

And may God grant, in his great fulness, that men might be brought unto repentance and good works, that they might be restored unto grace for grace, according to their works.

And I would that all men might be saved. But we read that in the great and last day there are some who shall be cast out, yea, who shall be cast off from the presence of the Lord;

Yea, who shall be consigned to a state of endless misery, fulfilling the words which say: They that have done good shall have everlasting life; and they that have done evil shall have everlasting damnation. And thus it is. Amen.

## हिलामन 13

- 1 और अब ऐसा हुआ कि छियासिवे वर्ष में, नफाई अब भी दुष्टता के कार्यों में पड़े हुए थे, हां, भारी दुष्टता में, जब कि मूसा की व्यवस्था के अनुसार, लमनाई सख्ती से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन कर रहे थे ।
- 2 और ऐसा हुआ कि इसी वर्ष एक समूह नामक लमनाई था जो जराहेमला के प्रदेश आया, और लोगों में प्रचार करने लगा । और ऐसा हुआ कि उसने कई दिनों तक लोगों में पश्चाताप का प्रचार किया, और उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया, और वह अपने प्रदेश वापस जानेवाला था ।
- 3 परन्तु देखो, उसे प्रभु की आवाज सुनाई दी, कि उसे फिर से वापस जाना चाहिए, और जो भी उसके हृदय में आए उनके लिए उसकी भविष्यवाणी करनी चाहिए ।
- 4 और ऐसा हुआ कि वे नहीं चाहते थे कि वह उनके नगर में प्रवेश करे; इसलिए वह गया और वहां की दीवार पर खड़ा हो गया, और अपने हाथों को फैलाया और जोर-जोर से बताने लगा, और लोगों को उन बातों की भविष्यवाणी करने लगा जो प्रभु उसके हृदय में डालता रहा ।
- 5 और उसने उनसे कहा: देखो, मैं समूह, एक लमनाई हूँ, और वही बोलता हूँ जो प्रभु मेरे हृदय में डालता है; और देखो उसने मेरे हृदय में इन लोगों को बताने के लिए यह बात डाली है कि न्याय की तलवार इन लोगों पर लटक रही है; और चार सौ वर्ष पूरे नहीं होंगे कि न्याय की तलवार इन लोगों पर गिर जाएगी ।
- 6 हां, भारी विनाश इन लोगों की प्रतीक्षा में है, और निश्चय तौर पर यह इन पर आएगा, और कोई भी चीज इन्हें नहीं बचा सकती है सिवाय पश्चाताप के और प्रभु यीशु मसीह में विश्वास के जिसका संसार में आना तय है, और जो बहुत उत्पीड़न सहेगा और अपने लोगों के लिए मारा जाएगा ।
- 7 और देखो, प्रभु के एक स्वर्गदूत ने मुझे इसकी घोषणा की है, और उसने मुझे सुसमाचार सुनाया है । और देखो, मुझे तुम्हें भी यह बात बताने के लिए भेजा गया है, ताकि तुम भी सुसमाचार सुन सको; परन्तु देखो तुम मुझे स्वीकार नहीं करना चाहते ।

## Helaman 13

And now it came to pass in the eighty and sixth year, the Nephites did still remain in wickedness, yea, in great wickedness, while the Lamanites did observe strictly to keep the commandments of God, according to the law of Moses.

And it came to pass that in this year there was one Samuel, a Lamanite, came into the land of Zarahemla, and began to preach unto the people. And it came to pass that he did preach, many days, repentance unto the people, and they did cast him out, and he was about to return to his own land.

But behold, the voice of the Lord came unto him, that he should return again, and prophesy unto the people whatsoever things should come into his heart.

And it came to pass that they would not suffer that he should enter into the city; therefore he went and got upon the wall thereof, and stretched forth his hand and cried with a loud voice, and prophesied unto the people whatsoever things the Lord put into his heart.

And he said unto them: Behold, I, Samuel, a Lamanite, do speak the words of the Lord which he doth put into my heart; and behold he hath put it into my heart to say unto this people that the sword of justice hangeth over this people; and four hundred years pass not away save the sword of justice falleth upon this people.

Yea, heavy destruction awaiteth this people, and it surely cometh unto this people, and nothing can save this people save it be repentance and faith on the Lord Jesus Christ, who surely shall come into the world, and shall suffer many things and shall be slain for his people.

And behold, an angel of the Lord hath declared it unto me, and he did bring glad tidings to my soul. And behold, I was sent unto you to declare it unto you also, that ye might have glad tidings; but behold ye would not receive me.

- 8 इसलिए, इस प्रकार प्रभु कहता है: नफाइयों के हृदयों की कठोरता के कारण, यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे तो मैं अपना वचन उनसे वापस ले लूंगा, और मैं अपनी आत्मा उनसे अलग कर लूंगा, और मैं उन्हें दंड दूंगा, और मैं उनके भाइयों के हृदयों को उनके विरुद्ध कर दूंगा।
- 9 और चार सौ वर्ष पूरा नहीं होगा कि मैं दंडित करूंगा; हां, मैं उन पर तलवार चलाऊंगा और उन पर अकाल और महामारी लाऊंगा।
- 10 हां, मैं अपना भयावह क्रोध उन पर लाऊंगा, और तुम्हारे पूरे विनाश को देखने के लिए, तुम्हारी चौथी पीढ़ी के लोग होंगे जो तुम्हारे शत्रुओं से बच जाएंगे; और प्रभु कहता है कि ऐसा निश्चित रूप से होगा यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे; और तुम्हारी चौथी पीढ़ी के वे लोग तुम्हारा विनाश देखेंगे।
- 11 परन्तु यदि तुम पश्चाताप करोगे और प्रभु अपने परमेश्वर की तरफ मुड़ोगे तो प्रभु कहता है कि मैं अपना क्रोध हटा लूंगा; हां, इस प्रकार प्रभु कहता है, वे लोग आशीषित हैं जो पश्चाताप करेंगे और मेरी तरफ मुड़ेंगे, परन्तु उन पर हाय जो पश्चाताप नहीं करते हैं।
- 12 हां, जराहेमला के इस महान नगर पर हाय; क्योंकि देखो, इसे धर्मी लोगों के कारण बचाया गया है; हां, इस महान नगर पर हाय, प्रभु कहता है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि कई लोग हैं, हां, इस महान नगर के कई भागों में जो मेरे विरुद्ध अपने हृदयों को कठोर करेंगे, प्रभु कहता है।
- 13 परन्तु आशीषित हैं वे लोग जो पश्चाताप करेंगे, क्योंकि मैं उन्हें बचा लूंगा। परन्तु देखो, इस महान नगर में जो धर्मी लोग हैं यदि वे नहीं होते, देखो, तो मैं स्वर्ग से नीचे अग्नि भेजकर इसे नष्ट कर देता।
- 14 परन्तु देखो, धर्मी लोगों के कारण ही इसे बचाया गया है। परन्तु देखो, प्रभु कहता है कि समय आएगा जब तुम धर्मी लोगों को अपने बीच से खदेड़ दोगे, तब तुम विनाश की तरफ अग्रसर होगे; हां, दुष्टता और घृणित कार्य जो इसमें हो रहा है उसके कारण इस महान नगर पर हाय।
- 15 हां, गिडियन (गिदोन) के नगर में जो दुष्टता और घृणित कार्य है उसके कारण उस पर हाय।
- 16 हां, और उन सारे नगरों में जो रही दुष्टता और घृणित कार्यों के कारण उन पर हाय जो प्रदेश के चारों तरफ हैं, और जिन पर नफाइयों का अधिकार है।

Therefore, thus saith the Lord: Because of the hardness of the hearts of the people of the Nephites, except they repent I will take away my word from them, and I will withdraw my Spirit from them, and I will suffer them no longer, and I will turn the hearts of their brethren against them.

And four hundred years shall not pass away before I will cause that they shall be smitten; yea, I will visit them with the sword and with famine and with pestilence.

Yea, I will visit them in my fierce anger, and there shall be those of the fourth generation who shall live, of your enemies, to behold your utter destruction; and this shall surely come except ye repent, saith the Lord; and those of the fourth generation shall visit your destruction.

But if ye will repent and return unto the Lord your God I will turn away mine anger, saith the Lord; yea, thus saith the Lord, blessed are they who will repent and turn unto me, but wo unto him that repenteth not.

Yea, wo unto this great city of Zarahemla; for behold, it is because of those who are righteous that it is saved; yea, wo unto this great city, for I perceive, saith the Lord, that there are many, yea, even the more part of this great city, that will harden their hearts against me, saith the Lord.

But blessed are they who will repent, for them will I spare. But behold, if it were not for the righteous who are in this great city, behold, I would cause that fire should come down out of heaven and destroy it.

But behold, it is for the righteous' sake that it is spared. But behold, the time cometh, saith the Lord, that when ye shall cast out the righteous from among you, then shall ye be ripe for destruction; yea, wo be unto this great city, because of the wickedness and abominations which are in her.

Yea, and wo be unto the city of Gideon, for the wickedness and abominations which are in her.

Yea, and wo be unto all the cities which are in the land round about, which are possessed by the Nephites, because of the wickedness and abominations which are in them.

- 17 और देखो, सेनाओं का प्रभु कहता है, प्रदेश में रह रहे लोगों के कारण, हां, उनकी दुष्टता और उसके घृणित कार्यों के कारण प्रदेश पर श्राप आएगा ।
- 18 और ऐसा होगा, सेनाओं का प्रभु कहता है, हां, हमारा महान और सच्चा परमेश्वर कि जो लोग भी धरती पर अपना धन छिपाएंगे उन्हें प्रदेश पर श्राप के कारण वह फिर से नहीं मिलेगा, सिवाय उसके कि वह एक धर्मी मनुष्य हो और उसे प्रभु के लिए छिपा रखा हो ।
- 19 क्योंकि प्रभु कहता है कि मैं चाहूंगा कि वे अपना धन मेरे पास छिपाएं; और वे श्रापित हैं जो अपना धन मेरे पास नहीं छिपाते हैं; क्योंकि धर्मी मनुष्यों को छोड़कर कोई भी अपना धन मेरे पास नहीं छिपाता है; और वह जो मेरे पास अपना धन नहीं छिपाता है, वह और उसका धन श्रापित है, और प्रदेश पर श्राप के कारण कोई भी उससे मुक्ति नहीं दिला सकता ।
- 20 और वह दिन आएगा जब वे अपना धन छिपाएंगे क्योंकि उन्होंने अपना हृदय अपनी धन-संपत्तियों पर लगा रखा है; और क्योंकि उन्होंने अपना हृदय अपनी धन-संपत्तियों पर लगा रखा है, और जब वे अपने शत्रुओं से भागेंगे तब अपना धन छिपा देंगे; क्योंकि वे उन्हें मेरे पास नहीं छिपाएंगे, इसलिए वे और उनका धन श्रापित होंगे, और प्रभु कहता है कि उस दिन उनका नाश होगा ।
- 21 देखो तुम, इस महान नगर के लोगों, और मेरी बातों पर ध्यान दो; हां, उन बातों पर ध्यान दो जो प्रभु कहता है; क्योंकि देखो, वह कहता है कि तुम्हारी धन-संपत्तियों के कारण तुम श्रापित हो, और तुम्हारी धन-संपत्ति भी श्रापित है क्योंकि तुमने अपना हृदय उन पर लगा रखा है, और तुमने उसकी बताई गई बातों पर ध्यान नहीं दिया है ।
- 22 तुम प्रभु अपने परमेश्वर को उन बातों में याद नहीं करते हो जिससे उसने तुम्हें आशीषित किया है, परन्तु तुम अपनी धन-संपत्तियों को सदा याद करते हो, पर उनके लिए प्रभु अपने परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए नहीं; हां, तुम्हारा हृदय प्रभु पर नहीं लगा है परन्तु भारी अहंकार, घमंड, अभिमान, ईर्ष्या, बैर, दुर्भावना, अत्याचार, हत्या, और हर प्रकार की बुराइयों से फूला हुआ है ।
- 23 इस कारण प्रभु परमेश्वर ने ऐसा किया है कि प्रदेश पर श्राप आए, और तुम्हारी धन-संपत्तियों पर भी, और ऐसा तुम्हारी बुराइयों के कारण है ।

And behold, a curse shall come upon the land, saith the Lord of Hosts, because of the people's sake who are upon the land, yea, because of their wickedness and their abominations.

And it shall come to pass, saith the Lord of Hosts, yea, our great and true God, that whoso shall hide up treasures in the earth shall find them again no more, because of the great curse of the land, save he be a righteous man and shall hide it up unto the Lord.

For I will, saith the Lord, that they shall hide up their treasures unto me; and cursed be they who hide not up their treasures unto me; for none hideth up their treasures unto me save it be the righteous; and he that hideth not up his treasures unto me, cursed is he, and also the treasure, and none shall redeem it because of the curse of the land.

And the day shall come that they shall hide up their treasures, because they have set their hearts upon riches; and because they have set their hearts upon their riches, and will hide up their treasures when they shall flee before their enemies; because they will not hide them up unto me, cursed be they and also their treasures; and in that day shall they be smitten, saith the Lord.

Behold ye, the people of this great city, and hearken unto my words; yea, hearken unto the words which the Lord saith; for behold, he saith that ye are cursed because of your riches, and also are your riches cursed because ye have set your hearts upon them, and have not hearkened unto the words of him who gave them unto you.

Ye do not remember the Lord your God in the things with which he hath blessed you, but ye do always remember your riches, not to thank the Lord your God for them; yea, your hearts are not drawn out unto the Lord, but they do swell with great pride, unto boasting, and unto great swelling, envyings, strifes, malice, persecutions, and murders, and all manner of iniquities.

For this cause hath the Lord God caused that a curse should come upon the land, and also upon your riches, and this because of your iniquities.

- 24 हां, यह समय जो आया है उसके कारण इन लोगों पर हाय, कि तुम भविष्यवक्ताओं को निकालते हो, और उनका मजाक उड़ाते हो, और उन पर पत्थरवाह करते हो, और उनकी हत्या करते हो, और उनके साथ हर प्रकार के अधर्म करते हो जैसा कि प्राचीन समय के लोगों ने किया था ।
- 25 और अब जब तुम बोलते हो, तुम कहते हो: यदि हम अपने पूर्वजों के पुराने समय में होते, तो हमने भविष्यवक्ताओं की हत्या नहीं की होती; हमने उन पर पत्थरवाह नहीं किया होता, और उन्हें बाहर नहीं निकाला होता ।
- 26 देखो तुम उनसे भी बदतर हो; क्योंकि जैसे प्रभु जीवित है, यदि एक भविष्यवक्ता तुम लोगों के बीच में आता है और तुम्हें प्रभु का वचन सुनाता है, जो तुम्हारे पापों और तुम्हारी बुराइयों की गवाही देता है, तुम लोग उससे क्रोधित होते हो, और उसे बाहर निकाल देते हो और उसे नष्ट करने के लिए हर तरीके का प्रयास करते हो; हां, तुम कहोगे कि वह एक झूठा भविष्यवक्ता है, और वह एक पापी है, और शैतान की तरफ से है क्योंकि उसने तुम्हारे बुरे कार्यों के बारे में बताया है ।
- 27 परन्तु देखो, यदि तुम्हारे बीच कोई व्यक्ति आएगा और कहेगा: इसे करो, और यह कोई अधर्म नहीं है; उसे करो और तुम्हें कुछ नहीं होगा; हां, वह कहेगा: अपने हृदयों के अहंकार के अनुसार चलो; हां, अपनी आंखों के अहंकार के अनुसार चलो, और वही करो जो तुम्हारे हृदय में आता है—और यदि कोई व्यक्ति तुम्हारे बीच आएगा और इसे कहेगा, तुम उसे स्वीकार करोगे, और कहोगे कि वह एक भविष्यवक्ता है ।
- 28 हां, तुम उसे ऊपर उठाओगे, और तुम उसे अपनी वस्तु दोगे; तुम उसे अपना सोना, और अपनी चांदी दोगे, और तुम उसे महंगे वस्त्र पहनाओगे; और वह तुमसे फुसलानेवाली बातें कहेगा, और वह कहेगा कि सब ठीक है, तो तुम्हें उसमें कोई कमी नहीं नजर आएगी ।
- 29 ओह ! तुम दुष्ट और जिद्दी पीढ़ी; तुम कठोर और हठी लोग, कब तक सोचते हो कि प्रभु तुम्हें सहन करेगा ? हां, तुम कब तक बुद्धिहीन और अंधे बनकर स्वयं का मार्गदर्शन होने दोगे ? हां, कब तक तुम प्रकाश की बजाय अंधकार का चुनाव करते रहोगे ?
- 30 हां, देखो, प्रभु का क्रोध तुम्हारे विरुद्ध सुलग चुका है; देखो, उसने तुम्हारे अधर्म के कारण प्रदेश को श्रापित किया है ।

Yea, wo unto this people, because of this time which has arrived, that ye do cast out the prophets, and do mock them, and cast stones at them, and do slay them, and do all manner of iniquity unto them, even as they did of old time.

And now when ye talk, ye say: If our days had been in the days of our fathers of old, we would not have slain the prophets; we would not have stoned them, and cast them out.

Behold ye are worse than they; for as the Lord liveth, if a prophet come among you and declareth unto you the word of the Lord, which testifieth of your sins and iniquities, ye are angry with him, and cast him out and seek all manner of ways to destroy him; yea, you will say that he is a false prophet, and that he is a sinner, and of the devil, because he testifieth that your deeds are evil.

But behold, if a man shall come among you and shall say: Do this, and there is no iniquity; do that and ye shall not suffer; yea, he will say: Walk after the pride of your own hearts; yea, walk after the pride of your eyes, and do whatsoever your heart desireth—and if a man shall come among you and say this, ye will receive him, and say that he is a prophet.

Yea, ye will lift him up, and ye will give unto him of your substance; ye will give unto him of your gold, and of your silver, and ye will clothe him with costly apparel; and because he speaketh flattering words unto you, and he saith that all is well, then ye will not find fault with him.

O ye wicked and ye perverse generation; ye hardened and ye stiffnecked people, how long will ye suppose that the Lord will suffer you? Yea, how long will ye suffer yourselves to be led by foolish and blind guides? Yea, how long will ye choose darkness rather than light?

Yea, behold, the anger of the Lord is already kindled against you; behold, he hath cursed the land because of your iniquity.



- 31 और देखो, समय आएगा जब वह तुम्हारी धन-संपत्तियों को श्रापित करेगा, ताकि वे फिसलनभरी हो जाएं और तुम उन्हें पकड़ न सको; और अपनी गरीबी के दिनों में तुम उन्हें बचाकर न रख सको ।
- 32 और अपनी गरीबी के इन दिनों में तुम प्रभु से याचना करोगे; और व्यर्थ में ही तुम याचना करोगे, क्योंकि तुम्हारा नाश तो पहले ही आ चुका होगा, और तुम्हारा विनाश निश्चित है; और फिर उस दिन तुम रोओगे और चीखोगे, सेनाओं का प्रभु कहता है । और फिर तुम विलाप करोगे और कहोगे:
- 33 ओह ! काश कि मैंने पश्चाताप किया होता, और भविष्यवक्ताओं की हत्या न की होती, और उन पर पत्थरवाह नहीं किया होता, और उन्हें बाहर न निकाला होता । हां, उस दिन तुम कहोगे: ओह ! काश उन दिनों हमने प्रभु अपने परमेश्वर को याद किया होता जब उसने हमें धन-संपत्ति दी थी, और तब वे हमारे हाथों से नहीं फिसलती कि हम उन्हें खो देते; क्योंकि देखो, हमने हमारी धन-संपत्तियों को खो दिया है ।
- 34 देखो, हम यहां एक औजार रखते हैं और अगले ही दिन वह गायब हो जाता है; और देखो, हमारी तलवारें हमसे उसी दिन ले ली जाती हैं जिस दिन हम उन्हें युद्ध के लिए खोजते हैं ।
- 35 हां, हमने अपना धन छिपा रखा है और प्रदेश पर श्राप के कारण वह हमारे हाथों से फिसल गया है ।
- 36 ओह ! जब प्रभु का वचन हमारे पास आया था तभी हमें पश्चाताप करना चाहिए था; क्योंकि देखो प्रदेश श्रापित है, और सारी चीजें फिसलनभरी हो गई हैं, और हम उन्हें पकड़ नहीं सकते हैं ।
- 37 देखो, हम दुष्ट आत्माओं से घिरे हुए हैं, हां, हम उसके दूतों से लगभग घिरे हुए हैं जो हमारी आत्माओं को नष्ट करना चाहता है । देखो, हमारी बुराइयां बहुत हैं । ओह प्रभु, क्या तुम हमसे अपना क्रोध नहीं हटा सकते हो ? और उन दिनों में तुम्हारी बोली ऐसी होगी ।
- 38 परन्तु देखो, परीक्षा के तुम्हारे दिन खत्म हो गए हैं; तुमने अपने उद्धार के दिन को तब तक टाला है जब तक कि सर्वदा के लिए देर न हो गई, और विनाश निश्चित न हो गया; हां, क्योंकि तुमने उस चीज की खोज में अपना पूरा जीवन व्यतीत कर दिया जिसे तुम प्राप्त नहीं कर सकते; और तुमने अधर्म में प्रसन्नता खोजी, जो कि हमारे महान और अनंत मार्गदर्शक की धार्मिकता के स्वभाव के विरुद्ध है ।

And behold, the time cometh that he curseth your riches, that they become slippery, that ye cannot hold them; and in the days of your poverty ye cannot retain them.

And in the days of your poverty ye shall cry unto the Lord; and in vain shall ye cry, for your desolation is already come upon you, and your destruction is made sure; and then shall ye weep and howl in that day, saith the Lord of Hosts. And then shall ye lament, and say:

O that I had repented, and had not killed the prophets, and stoned them, and cast them out. Yea, in that day ye shall say: O that we had remembered the Lord our God in the day that he gave us our riches, and then they would not have become slippery that we should lose them; for behold, our riches are gone from us.

Behold, we lay a tool here and on the morrow it is gone; and behold, our swords are taken from us in the day we have sought them for battle.

Yea, we have hid up our treasures and they have slipped away from us, because of the curse of the land.

O that we had repented in the day that the word of the Lord came unto us; for behold the land is cursed, and all things are become slippery, and we cannot hold them.

Behold, we are surrounded by demons, yea, we are encircled about by the angels of him who hath sought to destroy our souls. Behold, our iniquities are great. O Lord, canst thou not turn away thine anger from us? And this shall be your language in those days.

But behold, your days of probation are past; ye have procrastinated the day of your salvation until it is everlastingly too late, and your destruction is made sure; yea, for ye have sought all the days of your lives for that which ye could not obtain; and ye have sought for happiness in doing iniquity, which thing is contrary to the nature of that righteousness which is in our great and Eternal Head.

39 ओह प्रदेश के तुम लोगोँ, मेरी बातों को सुनो! और मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु का क्रोध तुमसे हट जाए, और यह कि तुम पश्चाताप करो और बचाए जाओ ।

O ye people of the land, that ye would hear my words! And I pray that the anger of the Lord be turned away from you, and that ye would repent and be saved.

## हिलामन 14

- 1 और अब ऐसा हुआ कि लमनाई समूह ने और कई महान चीजों की भविष्यवाणी की जिसे लिखा नहीं जा सकता ।
- 2 और देखो, उसने उनसे कहा: देखो, मैं तुम्हें एक चिन्ह दूंगा; क्योंकि पांच वर्ष और बीतने वाले हैं, और देखो, फिर परमेश्वर का पुत्र उन सबको मुक्ति देने आएगा जो उसके नाम में विश्वास करेंगे ।
- 3 और देखो, मैं उसके आने के समय का एक चिन्ह दूंगा; क्योंकि देखो, स्वर्ग में बहुत प्रकाश होगा, इतना अधिक कि उसके आने से पहले जो रात होगी उसमें अंधकार नहीं होगा, जिससे कि मनुष्यों को ऐसा प्रतीत होगा जैसे कि दिन हो ।
- 4 इसलिए, एक दिन और एक रात और एक दिन होगा, जैसे कि एक ही दिन हो और कोई रात न हो; और यह तुम्हारे लिए एक चिन्ह स्वरूप होगा; ताकि तुम सूरज के उगने और उसके डूबने को जान सको; इसलिए वे निश्चित रूप से जान जाएंगे कि यह दो दिन और एक रात है; फिर भी रात में अंधेरा नहीं होगा; और उसके जन्म से पहले रात होगी ।
- 5 और देखो, एक नया तारा उगेगा, ऐसा जैसे तुमने कभी भी न देखा हो; और यह भी तुम्हारे लिए एक चिन्ह स्वरूप होगा ।
- 6 और देखो यह सब कुछ नहीं है, बहुत से चिन्ह दिखाई देंगे और स्वर्ग में चमत्कार होंगे ।
- 7 और ऐसा होगा कि तुम अचम्भीत और आश्चर्यचकित हो जाओगे, इतना अधिक कि तुम धरती पर गिर पड़ोगे ।
- 8 और ऐसा होगा कि जो लोग भी परमेश्वर के पुत्र में विश्वास करेंगे, उन्हें ही अनंत जीवन मिलेगा ।
- 9 और देखो, इस प्रकार प्रभु ने मुझे अपने स्वर्गदूतों के द्वारा आज्ञा दी है कि मैं आकर तुम लोगों को ये बातें बताऊं; हां, उसने आज्ञा दी है कि मैं तुम्हारे लिए इन बातों की भविष्यवाणी करूं; हां, उसने मुझसे कहा है: इन लोगों को पश्चाताप करने और प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिए पुकारो ।
- 10 और अब, क्योंकि मैं एक लमनाई हूँ, और मैंने तुम्हें वे बातें बताई हैं जिसे प्रभु ने मुझे बताने की आज्ञा दी है, और क्योंकि यह तुम्हारे लिए कठोर थीं, तुम मुझसे क्रोधित हो और मारना चाहते हो, और अपने बीच से मुझे निकालना चाहते हो ।

## Helaman 14

And now it came to pass that Samuel, the Lamanite, did prophesy a great many more things which cannot be written.

And behold, he said unto them: Behold, I give unto you a sign; for five years more cometh, and behold, then cometh the Son of God to redeem all those who shall believe on his name.

And behold, this will I give unto you for a sign at the time of his coming; for behold, there shall be great lights in heaven, insomuch that in the night before he cometh there shall be no darkness, insomuch that it shall appear unto man as if it was day.

Therefore, there shall be one day and a night and a day, as if it were one day and there were no night; and this shall be unto you for a sign; for ye shall know of the rising of the sun and also of its setting; therefore they shall know of a surety that there shall be two days and a night; nevertheless the night shall not be darkened; and it shall be the night before he is born.

And behold, there shall a new star arise, such an one as ye never have beheld; and this also shall be a sign unto you.

And behold this is not all, there shall be many signs and wonders in heaven.

And it shall come to pass that ye shall all be amazed, and wonder, insomuch that ye shall fall to the earth.

And it shall come to pass that whosoever shall believe on the Son of God, the same shall have everlasting life.

And behold, thus hath the Lord commanded me, by his angel, that I should come and tell this thing unto you; yea, he hath commanded that I should prophesy these things unto you; yea, he hath said unto me: Cry unto this people, repent and prepare the way of the Lord.

And now, because I am a Lamanite, and have spoken unto you the words which the Lord hath commanded me, and because it was hard against you, ye are angry with me and do seek to destroy me, and have cast me out from among you.

- 11 और तुम मेरी बातें सुनोगे, क्योंकि मैं इसी उद्देश्य से इस नगर की दीवारों पर चढ़ा हूँ, ताकि तुम सुन सको और परमेश्वर के उस न्याय को जान सको जो तुम्हारी बुराइयों के कारण तुम्हारी प्रतीक्षा में है, और यह कि तुम पश्चाताप की परिस्थितियों के बारे में जान सको ।
- 12 और यह कि तुम यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, स्वर्ग और पृथ्वी के पिता, आरंभ से लेकर सारी चीजों के सृष्टिकर्ता के बारे में जान सको; और यह कि तुम उसके आने के चिन्ह और उसके अभिप्राय के विषय में जान सको ताकि तुम उसके नाम में विश्वास कर सको ।
- 13 और यदि तुम उसके नाम में विश्वास करोगे और अपने पापों का पश्चाताप करोगे, तो शायद इसके पश्चात उसके गुणों द्वारा तुम्हें उनसे क्षमा प्राप्त हो ।
- 14 और देखो, फिर से, मैं तुम्हें एक दूसरा चिन्ह देता हूँ, हां, उसकी मृत्यु का चिन्ह ।
- 15 क्योंकि देखो, निश्चित तौर पर उसकी मृत्यु होगी ताकि उद्धार हो सके; हां, यह उसके योग्य है और मरे हुए लोगों पर पुनरुत्थान लाने के लिए आवश्यक है कि उसकी मृत्यु हो, ताकि इसके पश्चात मनुष्यों को प्रभु की उपस्थिति में लाया जा सके ।
- 16 हां, देखो, यह मृत्यु पुनरुत्थान लाती है, और सारी मानवजाति को पहली मृत्यु—आत्मिक मृत्यु से मुक्ति दिलाती है; आदम के पतन द्वारा सारी मानवजाति प्रभु की उपस्थिति से अलग हो गई थी, जिन्हें दोनों ही, लौकिक और आत्मिक तौर पर मृत माना जाता है ।
- 17 परन्तु देखो, मसीह का पुनरुत्थान मानवजाति को मुक्ति देता है, हां, यहां तक कि सारी मानवजाति को, और उन्हें फिर से प्रभु की उपस्थिति में लाता है ।
- 18 हां, और यह पश्चाताप की स्थिति लाती है, ताकि जो कोई पश्चाताप करेगा उसे काट कर आग में नहीं डाला जाएगा; परन्तु जो कोई पश्चाताप नहीं करेगा उसे काट कर आग में डाल दिया जाएगा; और यहां उन पर फिर से आत्मिक मृत्यु आएगी, हां, दूसरी मृत्यु, क्योंकि उन्हें फिर से धार्मिकता से संबंधित चीजों से अलग कर दिया जाएगा ।
- 19 इसलिए पश्चाताप करो, पश्चाताप करो, कहीं ऐसा न हो कि केवल जानने से और न करने से तुम स्वयं पर दण्डाज्ञा लाओ, और तुम पर यह दूसरी मृत्यु आए ।

And ye shall hear my words, for, for this intent have I come up upon the walls of this city, that ye might hear and know of the judgments of God which do await you because of your iniquities, and also that ye might know the conditions of repentance;

And also that ye might know of the coming of Jesus Christ, the Son of God, the Father of heaven and of earth, the Creator of all things from the beginning; and that ye might know of the signs of his coming, to the intent that ye might believe on his name.

And if ye believe on his name ye will repent of all your sins, that thereby ye may have a remission of them through his merits.

And behold, again, another sign I give unto you, yea, a sign of his death.

For behold, he surely must die that salvation may come; yea, it behooveth him and becometh expedient that he dieth, to bring to pass the resurrection of the dead, that thereby men may be brought into the presence of the Lord.

Yea, behold, this death bringeth to pass the resurrection, and redeemeth all mankind from the first death—that spiritual death; for all mankind, by the fall of Adam being cut off from the presence of the Lord, are considered as dead, both as to things temporal and to things spiritual.

But behold, the resurrection of Christ redeemeth mankind, yea, even all mankind, and bringeth them back into the presence of the Lord.

Yea, and it bringeth to pass the condition of repentance, that whosoever repenteth the same is not hewn down and cast into the fire; but whosoever repenteth not is hewn down and cast into the fire; and there cometh upon them again a spiritual death, yea, a second death, for they are cut off again as to things pertaining to righteousness.

Therefore repent ye, repent ye, lest by knowing these things and not doing them ye shall suffer yourselves to come under condemnation, and ye are brought down unto this second death.

- 20 परन्तु देखो, जैसा कि मैंने तुम्हें दूसरे चिन्ह, उसकी मृत्यु के चिन्ह के संबंध में कहा है, देखो, जिस दिन उसकी मृत्यु होगी उस दिन सूर्य अंधकार में डूब जाएगा और तुम्हें अपना प्रकाश देने से मना कर देगा; और चांद और तारे भी मना कर देंगे; और इस प्रदेश पर प्रकाश नहीं होगा, यहां तक कि उसकी मृत्यु के समय से लेकर तीन दिनों तक जब तक कि वह फिर से मरे हुआओं में से जी न उठेगा ।
- 21 हां, जिस समय वह अपना प्राण त्यागेगा उस समय कई घंटों तक बादल गरजेगा और बिजली चमकेगी, और धरती हिलेगी और थर्राएगी; और इस धरती के ऊपर और नीचे जो भी चट्टानें हैं, जिसे तुम जानते हो कि सख्त हैं, या उसका अधिकतर भाग सख्त है, टूट जाएंगी ।
- 22 हां, वे दो भागों में बंट जाएंगी, और तब से निशान और दरार लगे हुए, और पूरी धरती पर, उसके ऊपर और नीचे के हिस्से में टूटे हुए खण्डों में पाए जाएंगे ।
- 23 और देखो, भारी तूफान भी आएगा, और कई पहाड़ खाड़ी के समान झुक जाएंगे, और कई स्थान जिन्हें हम खाड़ी कहते हैं वह पहाड़ बन जाएंगे, जिनकी ऊंचाई बहुत होगी ।
- 24 और कई प्रमुख मार्ग खण्डित हो जाएंगे, और कई महान नगर उजाड़ हो जाएंगे ।
- 25 और कई कब्रें खुल जाएंगी, और कई मृतक बाहर आएंगे; और बहुतों को कई संत दिखाई देंगे ।
- 26 और देखो, इस तरह स्वर्गदूत ने मुझसे कहा; क्योंकि उसने मुझसे कहा था कि कई घंटों तक बादल गरजेगा और बिजली चमकेगी ।
- 27 और उसने मुझसे कहा था कि जब बादल गरजेगा और बिजली चमकेगी, और तूफान आएगा, और ये चीजें होंगी, और तीन दिनों तक पूरी धरती पर अंधकार छाया रहेगा ।
- 28 और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा था कि कई लोग इससे भी महान चीजें देखेंगे, इस अभिप्राय से कि वे इन चिन्हों पर विश्वास कर सकें और ये चमत्कार पूरे प्रदेश में होगा, इस अभिप्राय से कि मानव संतान के बीच अविश्वास का कोई भी कारण न रहे—

But behold, as I said unto you concerning another sign, a sign of his death, behold, in that day that he shall suffer death the sun shall be darkened and refuse to give his light unto you; and also the moon and the stars; and there shall be no light upon the face of this land, even from the time that he shall suffer death, for the space of three days, to the time that he shall rise again from the dead.

Yea, at the time that he shall yield up the ghost there shall be thunderings and lightnings for the space of many hours, and the earth shall shake and tremble; and the rocks which are upon the face of this earth, which are both above the earth and beneath, which ye know at this time are solid, or the more part of it is one solid mass, shall be broken up;

Yea, they shall be rent in twain, and shall ever after be found in seams and in cracks, and in broken fragments upon the face of the whole earth, yea, both above the earth and beneath.

And behold, there shall be great tempests, and there shall be many mountains laid low, like unto a valley, and there shall be many places which are now called valleys which shall become mountains, whose height is great.

And many highways shall be broken up, and many cities shall become desolate.

And many graves shall be opened, and shall yield up many of their dead; and many saints shall appear unto many.

And behold, thus hath the angel spoken unto me; for he said unto me that there should be thunderings and lightnings for the space of many hours.

And he said unto me that while the thunder and the lightning lasted, and the tempest, that these things should be, and that darkness should cover the face of the whole earth for the space of three days.

And the angel said unto me that many shall see greater things than these, to the intent that they might believe that these signs and these wonders should come to pass upon all the face of this land, to the intent that there should be no cause for unbelief among the children of men—

29 और ऐसा इस अभिप्राय से होगा कि जो भी विश्वास करेगा शायद उसे बचाया जा सके, और जो भी विश्वास नहीं करेगा उसका धार्मिक तौर पर न्याय हो सके; और इसलिए भी कि यदि वे दोषी हैं तो उन्होंने स्वयं अपने आप पर दोष लगाया है ।

30 और अब याद रखो, मेरे भाइयों याद रखो, कि जिसका विनाश होगा, स्वयं के कारण उसका विनाश होगा; और जो कोई अधर्म करता है, वह स्वयं के लिए करता है; क्योंकि देखो, तुम स्वतंत्र हो; तुम कर्म करने के लिए स्वतंत्र हो; क्योंकि देखो, परमेश्वर ने तुम्हें ज्ञान दिया है और उसने तुम्हें स्वतंत्र किया है ।

31 उसने तुम्हें ज्ञान इसलिए दिया है ताकि तुम भले और बुरे को जानो, और उसने तुम्हें स्वतंत्रता इसलिए दी है ताकि तुम जीवन या मृत्यु चुन सको; और भलाई कर सको और पहले के समान अच्छे हो सको, या उस भलाई को प्राप्त करो जिसे तुम्हारे लिए स्थापित किया गया है; या तुम बुराई करो, और उस बुराई को प्राप्त करो जिसे तुम्हारे लिए स्थापित किया गया है ।

And this to the intent that whosoever will believe might be saved, and that whosoever will not believe, a righteous judgment might come upon them; and also if they are condemned they bring upon themselves their own condemnation.

And now remember, remember, my brethren, that whosoever perisheth, perisheth unto himself; and whosoever doeth iniquity, doeth it unto himself; for behold, ye are free; ye are permitted to act for yourselves; for behold, God hath given unto you a knowledge and he hath made you free.

He hath given unto you that ye might know good from evil, and he hath given unto you that ye might choose life or death; and ye can do good and be restored unto that which is good, or have that which is good restored unto you; or ye can do evil, and have that which is evil restored unto you.

## हिलामन 15

- 1 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, देखो, मैं घोषित करता हूँ कि यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो तुम्हारे घर उजाड़ हो जाएंगे ।
- 2 हां, यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो जिस दिन तुम्हारी स्त्रियां बच्चों को जन्म देंगी उस दिन उनके पास विलाप करने का भारी कारण होगा; क्योंकि तुम भागने का प्रयास करोगे और कोई आश्रय न होगा; हां, और उन पर हाय जो गर्भवती होंगी, क्योंकि वे भारी होंगी और भाग नहीं सकेंगी; इसलिए, वे कुचली जाएंगी और नाश होने के लिए रह जाएंगी ।
- 3 हां, जब वे उन चिन्हों और चमत्कारों को देखेंगे जो उन्हें दिखाया जाएगा, और यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे तो उन पर हाय जो नफी के लोग कहलाते हैं; क्योंकि देखो, वे प्रभु के चुने हुए लोग रह चुके हैं; हां, नफी के लोगों से उसने प्रेम किया है, और उसने उन्हें शुद्ध भी किया है; हां, उसने उनकी बुराइयों के दिनों में उन्हें शुद्ध किया क्योंकि वह उनसे प्रेम करता है ।
- 4 परन्तु देखो मेरे भाइयों, लमनाइयों से वह ईर्ष्या करता था क्योंकि उनके काम निरंतर बुरे होते जा रहे थे, और ऐसा उनके पूर्वजों की परंपरा के अधर्म के कारण था । परन्तु देखो, नफाइयों के प्रचार के द्वारा उन पर उद्धार आया; और इसीलिए प्रभु ने उनके दिनों को बढ़ाया ।
- 5 और मैं चाहूंगा कि तुम देखो कि उनमें से अधिकतर लोग अपने कर्तव्य के मार्ग पर रहें, और परमेश्वर के सामने वे सावधानीपूर्वक चलें, और मूसा की व्यवस्था के अनुसार वे उसकी आज्ञाओं, नियमों, और उसके न्याय का पालन किया ।
- 6 हां, मैं तुमसे कहता हूँ कि अधिकतर लोग ऐसा कर रहे हैं, और अथक परिश्रम कर रहे हैं ताकि वे अपने बचे हुए भाइयों को सच्चाई के ज्ञान में ला सकें; इसलिए ऐसे कई लोग हैं जो निरंतर उनसे जुड़ते जा रहे हैं ।
- 7 और देखो, इसे तुम स्वयं जानते हो क्योंकि तुमने इसकी साक्षी दी है, कि बहुत से लोगों को सच्चाई के ज्ञान में लाया जाता है, और उन्हें उनके पूर्वजों की घृणित परंपराओं की जानकारी दी जाती है, और उन्हें पवित्र धर्मशास्त्रों पर विश्वास कराया जाता है, हां, पवित्र भविष्यवक्ताओं द्वारा लिखी गई भविष्यवाणियों पर जो उन्हें प्रभु में विश्वास, और पश्चाताप की तरफ ले जाती हैं, और वही विश्वास और पश्चाताप उनके हृदयों को बदल देता है—

## Helaman 15

And now, my beloved brethren, behold, I declare unto you that except ye shall repent your houses shall be left unto you desolate.

Yea, except ye repent, your women shall have great cause to mourn in the day that they shall give suck; for ye shall attempt to flee and there shall be no place for refuge; yea, and wo unto them which are with child, for they shall be heavy and cannot flee; therefore, they shall be trodden down and shall be left to perish.

Yea, wo unto this people who are called the people of Nephi except they shall repent, when they shall see all these signs and wonders which shall be showed unto them; for behold, they have been a chosen people of the Lord; yea, the people of Nephi hath he loved, and also hath he chastened them; yea, in the days of their iniquities hath he chastened them because he loveth them.

But behold my brethren, the Lamanites hath he hated because their deeds have been evil continually, and this because of the iniquity of the tradition of their fathers. But behold, salvation hath come unto them through the preaching of the Nephites; and for this intent hath the Lord prolonged their days.

And I would that ye should behold that the more part of them are in the path of their duty, and they do walk circumspectly before God, and they do observe to keep his commandments and his statutes and his judgments according to the law of Moses.

Yea, I say unto you, that the more part of them are doing this, and they are striving with unwearied diligence that they may bring the remainder of their brethren to the knowledge of the truth; therefore there are many who do add to their numbers daily.

And behold, ye do know of yourselves, for ye have witnessed it, that as many of them as are brought to the knowledge of the truth, and to know of the wicked and abominable traditions of their fathers, and are led to believe the holy scriptures, yea, the prophecies of the holy prophets, which are written, which leadeth them to faith on the Lord, and unto repentance, which faith and repentance bringeth a change of heart unto them—

- 8 इसलिए, जितने लोग इस अवस्था में आए हैं, तुम स्वयं जानते हो कि वे विश्वास में दृढ़ और अटल हैं, और उन बातों में जिससे उनका उद्धार हुआ है।
- 9 और तुम यह भी जानते हो कि उन्होंने युद्ध के अपने हथियारों को दफन कर दिया है, और उन्हें फिर से उठाने में डरते हैं कि कहीं उनसे पाप न हो जाए; हां, तुम देख सकते हो कि पाप करने से वे डरते हैं—क्योंकि देखो वे स्वयं को अपने शत्रुओं के पैरों तले कुचले और मारे जाने देंगे, और उनके विरुद्ध तलवार नहीं उठाएंगे, और ऐसा मसीह में उनके विश्वास के कारण होगा।
- 10 और अब, जिन बातों पर वे विश्वास करते हैं, उस विश्वास में उनकी दृढ़ता के कारण, क्योंकि अपनी दृढ़ता के कारण ही वे आलोकित हुए थे, देखो, प्रभु उन्हें आशीषित करेगा, और उनके अधर्म के बावजूद उनके दिनों को बढ़ाएगा।
- 11 हां, यदि उनका अविश्वास घट भी जाए तो भी प्रभु उनके दिनों को बढ़ाएगा, तब तक जब तक कि वह समय न आ जाए जब हमारे लमनाई भाइयों की पुनःस्थापना फिर से उनके ज्ञान में हो जाए, जिसके विषय में हमारे पूर्वजों ने, और भविष्यवक्ता जीनस और कई अन्य भविष्यवक्ताओं ने बताया था—
- 12 हां, मैं तुमसे कहता हूँ कि अंतिम समय में प्रभु की प्रतीज्ञाएं हमारे लमनाई भाइयों के लिए विस्तृत की गई हैं; और चाहे उन पर कितनी ही परेशानियां क्यों न आए, और चाहे पृथ्वी पर उन्हें यहां से वहां क्यों न खदेड़ा और उन्हें खोजा जाए, और उन्हें मारा-काटा जाए और कोई भी आश्रय न पाते हुए वे तितर-बितर हो जाएं, तब भी प्रभु उनके प्रति दयालु रहेगा।
- 13 और ऐसा भविष्यवाणी के अनुसार है कि उन्हें फिर से सच्चा ज्ञान कराया जाएगा, जो कि मुक्तिदाता का, और उनके महान और सच्चे चरवाहे का ज्ञान है, और उनकी गिनती उसकी भेड़ों में होगी।
- 14 इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि तुमने पश्चाताप नहीं किया तो यह तुम्हारे लिए नहीं बल्कि उनके लिए अच्छा होगा।
- 15 क्योंकि देखो, जो महान कार्य तुम्हें दिखाया गया है, यदि उन्हें उन लोगों को दिखाया गया होता जो अपने पूर्वजों की परंपराओं के कारण अविश्वास में घट गए हैं, तुम स्वयं देख सकते हो कि वे अविश्वास में फिर कभी भी नहीं घटेंगे।

Therefore, as many as have come to this, ye know of yourselves are firm and steadfast in the faith, and in the thing wherewith they have been made free.

And ye know also that they have buried their weapons of war, and they fear to take them up lest by any means they should sin; yea, ye can see that they fear to sin—for behold they will suffer themselves that they be trodden down and slain by their enemies, and will not lift their swords against them, and this because of their faith in Christ.

And now, because of their steadfastness when they do believe in that thing which they do believe, for because of their firmness when they are once enlightened, behold, the Lord shall bless them and prolong their days, notwithstanding their iniquity—

Yea, even if they should dwindle in unbelief the Lord shall prolong their days, until the time shall come which hath been spoken of by our fathers, and also by the prophet Zenos, and many other prophets, concerning the restoration of our brethren, the Lamanites, again to the knowledge of the truth—

Yea, I say unto you, that in the latter times the promises of the Lord have been extended to our brethren, the Lamanites; and notwithstanding the many afflictions which they shall have, and notwithstanding they shall be driven to and fro upon the face of the earth, and be hunted, and shall be smitten and scattered abroad, having no place for refuge, the Lord shall be merciful unto them.

And this is according to the prophecy, that they shall again be brought to the true knowledge, which is the knowledge of their Redeemer, and their great and true shepherd, and be numbered among his sheep.

Therefore I say unto you, it shall be better for them than for you except ye repent.

For behold, had the mighty works been shown unto them which have been shown unto you, yea, unto them who have dwindled in unbelief because of the traditions of their fathers, ye can see of yourselves that they never would again have dwindled in unbelief.



- 16      इसलिए, प्रभु कहता है: मैं उन्हें पूर्णरूप से नष्ट नहीं करूंगा, परन्तु मैं ऐसा होने दूंगा कि मेरे ज्ञान के दिन में वे फिर से मेरे पास लौट आएंगे, प्रभु कहता है ।
- 17      और अब देखो, नफाई लोगों के संबंध में प्रभु कहता है: यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे, और मेरी इच्छा का पालन नहीं करेंगे, तो प्रभु कहता है कि बहुत से महान कार्य जो मैंने उनके बीच में किये हैं उसमें उनके अविश्वास के कारण मैं उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर दूंगा; और प्रभु कहता है कि जैसे यह निश्चय है कि प्रभु जीवित है वैसे ही निश्चय तौर पर ये चीजें होंगी ।

Therefore, saith the Lord: I will not utterly destroy them, but I will cause that in the day of my wisdom they shall return again unto me, saith the Lord.

And now behold, saith the Lord, concerning the people of the Nephites: If they will not repent, and observe to do my will, I will utterly destroy them, saith the Lord, because of their unbelief notwithstanding the many mighty works which I have done among them; and as surely as the Lord liveth shall these things be, saith the Lord.

## हिलामन 16

- 1 और अब, ऐसा हुआ कि कई लोग थे जिन्होंने लमनाई समूह की बातों को सुना जो नगर की चार दीवारी पर से बोल रहा था। और जितने लोगों ने उसकी बातों पर विश्वास किया उन्होंने जाकर नफी को खोजा; और जब उन्होंने आकर उसे खोज लिया तो उन्होंने उससे अपने पापों का अंगीकार किया और उसे इन्कार नहीं किया, यह कहते हुए कि वे प्रभु में बपतिस्मा लेना चाहते हैं।
- 2 परन्तु ऐसे भी कई लोग थे जिन्होंने समूह की बातों पर विश्वास नहीं किया जो उससे क्रोधित हुए; और उन्होंने दीवार के ऊपर उस पर पत्थरवाह किया, और जब वह दीवार पर खड़ा था तब कई लोगों ने उस पर तीर फेंके; परन्तु प्रभु की आत्मा उसके साथ थी, इतना अधिक कि वे उसे न तो पत्थरों से मार सके और न ही तीरों से।
- 3 अब जब उन्होंने देखा कि वे उसे मार नहीं सकते, तो और भी लोगों ने उसकी बातों पर इतना अधिक विश्वास किया कि वे बपतिस्मा लेने के लिए नफी के पास चले गए।
- 4 क्योंकि देखो, नफी बपतिस्मा और भविष्यवाणी और प्रचार-कार्य करता रहा, लोगों को पश्चाताप के लिए पुकारते, चिन्ह और आश्चर्यजनक कार्य दिखाते, और लोगों में चमत्कार करते हुए, ताकि वे जान सकें कि मसीह शीघ्र ही आनेवाला है—
- 5 उन्हें वे बातें बताते हुए जो शीघ्र ही होनेवाली थीं, ताकि वे जान सकें और उनके आगमन पर याद कर सकें कि उन्हें इनके विषय में पहले से ही बताया गया था, इस उद्देश्य से कि वे विश्वास कर सकें; इसलिए जितने लोगों ने समूह की बातों पर विश्वास किया वे बपतिस्मा लेने के लिए उसके पास चले गए, क्योंकि वे पश्चाताप और अपने पापों का अंगीकार करते हुए आए थे।
- 6 परन्तु उनमें से अधिकतर लोगों ने समूह की बातों पर ध्यान नहीं दिया; इसलिए जब उन्होंने देखा कि वे उसे पत्थरों और तीरों से नहीं मार सकते हैं तो वे अपने प्रधान के पास यह कहते हुए याचना करने लगे: इस व्यक्ति को पकड़कर बांध दो, क्योंकि देखो इसमें शैतान है; और शैतान की जो शक्ति इसमें है उसके कारण हम उसे अपने पत्थरों और तीरों से नहीं मार सकते हैं; इसलिए इसे ले जाकर बांध दो और इससे दूर रहो।

## Helaman 16

And now, it came to pass that there were many who heard the words of Samuel, the Lamanite, which he spake upon the walls of the city. And as many as believed on his word went forth and sought for Nephi; and when they had come forth and found him they confessed unto him their sins and denied not, desiring that they might be baptized unto the Lord.

But as many as there were who did not believe in the words of Samuel were angry with him; and they cast stones at him upon the wall, and also many shot arrows at him as he stood upon the wall; but the Spirit of the Lord was with him, insomuch that they could not hit him with their stones neither with their arrows.

Now when they saw that they could not hit him, there were many more who did believe on his words, insomuch that they went away unto Nephi to be baptized.

For behold, Nephi was baptizing, and prophesying, and preaching, crying repentance unto the people, showing signs and wonders, working miracles among the people, that they might know that the Christ must shortly come—

Telling them of things which must shortly come, that they might know and remember at the time of their coming that they had been made known unto them beforehand, to the intent that they might believe; therefore as many as believed on the words of Samuel went forth unto him to be baptized, for they came repenting and confessing their sins.

But the more part of them did not believe in the words of Samuel; therefore when they saw that they could not hit him with their stones and their arrows, they cried unto their captains, saying: Take this fellow and bind him, for behold he hath a devil; and because of the power of the devil which is in him we cannot hit him with our stones and our arrows; therefore take him and bind him, and away with him.

- 7 और जैसे ही उसे पकड़ने के लिए वे आगे बढ़े, देखो, वह दीवार से नीचे कूद गया, और उनके देश से बाहर भाग गया, हां, यहां तक कि अपने प्रदेश चला गया, और अपने लोगों में प्रचार और भविष्यवाणी करने लगा ।
- 8 और देखो, फिर कभी भी उसके विषय में नफाइयों के बीच में सुना नहीं गया; और ऐसा था लोगों का कामकाज ।
- 9 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का छिया-सिवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 10 और इसी प्रकार न्यायियों के शासन का सत्ताइसवां वर्ष भी समाप्त हुआ, अधिकतर लोग अपने अहंकार और दुष्टता में ही पड़े रहे, और कुछ लोग परमेश्वर के सामने सावधानीपूर्वक चलते रहे ।
- 11 और यही स्थिति न्यायियों के शासन के अठ्ठाइसवें वर्ष में भी रही ।
- 12 और लोग अधर्म में और अधिक मजबूत होते गए और इसके बावजूद लोगों के कामकाज में थोड़ा बहुत फेरबदल हुआ, और न्यायियों के शासन के नवासिवें वर्ष में उनमें से अधिक से अधिक काम परमेश्वर की आज्ञाओं के विपरित होने लगे ।
- 13 परन्तु ऐसा हुआ कि न्यायियों के शासन के नब्बेवें वर्ष में, लोगों में बड़े-बड़े चिन्ह और आश्चर्यकर्म दिखाए गए; और भविष्यवाक्ताओं की भविष्यवाणियां पूरी होने लगीं ।
- 14 और लोगों को, विवेकपूर्ण लोगों को स्वर्गदूत दिखाई दिए, और उन्हें महान आनंद का सुसमाचार सुनाया; इस प्रकार इस वर्ष धर्मशास्त्रों की बातें पूरी हुईं ।
- 15 फिर भी, नफाइयों और लमनाइयों में से अत्याधिक विश्वासी लोगों के अलावा बाकी लोगों ने अपने हृदयों को कठोर करना जारी रखा, और अपने स्वयं के बल और बुद्धि पर यह कहते हुए भरोसा रखने लगे:
- 16 बहुत सी बातों में से उन्होंने कुछ बातों का अनुमान सही लगाया होगा; परन्तु देखो, हम जानते हैं कि जिनके विषय में बताया गया है उनमें से सारे महान और अदभुत कार्य पूरे नहीं हो सकते ।
- 17 और वे आपस में एक दूसरे को तर्क देते हुए विवाद करने लगे, यह कहते हुए:
- 18 यह विचारपूर्ण नहीं लगता कि इस तरह का कोई मसीह आएगा; यदि ऐसा है, और वह परमेश्वर, स्वर्ग और पृथ्वी के पिता का पुत्र है, जैसा कि कहा गया है, तो वह हमारे साथ-साथ यरूशलेम के लोगों पर भी अपने आपको क्यों नहीं प्रकट करेगा ?

And as they went forth to lay their hands on him, behold, he did cast himself down from the wall, and did flee out of their lands, yea, even unto his own country, and began to preach and to prophesy among his own people.

And behold, he was never heard of more among the Nephites; and thus were the affairs of the people.

And thus ended the eighty and sixth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

And thus ended also the eighty and seventh year of the reign of the judges, the more part of the people remaining in their pride and wickedness, and the lesser part walking more circumspectly before God.

And these were the conditions also, in the eighty and eighth year of the reign of the judges.

And there was but little alteration in the affairs of the people, save it were the people began to be more hardened in iniquity, and do more and more of that which was contrary to the commandments of God, in the eighty and ninth year of the reign of the judges.

But it came to pass in the ninetieth year of the reign of the judges, there were great signs given unto the people, and wonders; and the words of the prophets began to be fulfilled.

And angels did appear unto men, wise men, and did declare unto them glad tidings of great joy; thus in this year the scriptures began to be fulfilled.

Nevertheless, the people began to harden their hearts, all save it were the most believing part of them, both of the Nephites and also of the Lamanites, and began to depend upon their own strength and upon their own wisdom, saying:

Some things they may have guessed right, among so many; but behold, we know that all these great and marvelous works cannot come to pass, of which has been spoken.

And they began to reason and to contend among themselves, saying:

That it is not reasonable that such a being as a Christ shall come; if so, and he be the Son of God, the Father of heaven and of earth, as it has been spoken, why will he not show himself unto us as well as unto them who shall be at Jerusalem?

- 19 हां, वह इस प्रदेश के साथ-साथ यरूशलेम प्रदेश में भी अपने आपको क्यों नहीं प्रकट करेगा ?
- 20 परन्तु देखो, हम जानते हैं कि यह एक बुरी परंपरा है, जिसे हमें हमारे पूर्वजों ने कुछ महान और अदभुत चीजों पर विश्वास करने के लिए प्रदान किया है जो कि होनेवाली हैं, परन्तु हमारे बीच में नहीं बल्कि उस प्रदेश में होंगी जो कि बहुत दूर है, एक ऐसा प्रदेश जिसे हम नहीं जानते हैं; इसलिए वे हमें अज्ञानता में रख सकते हैं, क्योंकि हम अपनी आंखों से नहीं देख सकते हैं कि यह सब सच है ।
- 21 और वे शैतान के धूर्त और रहस्यपूर्ण कलाओं के द्वारा कोई बड़ा भेद खोलेंगे जिसे हम समझ नहीं पाएंगे, जिससे वे हमें अपनी बातों का, और स्वयं का भी दास बनाकर रखेंगे, क्योंकि शिक्षा के लिए हम उन्हीं पर निर्भर होंगे; और इस प्रकार यदि हम उनकी बातों को स्वीकार करेंगे तो वे हमें जीवनभर अज्ञानता में रखेंगे ।
- 22 और लोगों ने अपने मन में कई बातों की कल्पना की, जो कि मूर्ख-तापूर्ण और व्यर्थ थीं; और वे बहुत व्याकुल हुए, क्योंकि शैतान ने उन्हें निरंतर अधर्म करने के लिए भड़काया; हां, वह पूरे प्रदेश में अफवाह और वाद-विवाद फैलाता रहा, ताकि वह उस बात के विरुद्ध लोगों के हृदयों को कठोर कर सके जो कि उचित थी और जो होनेवाली थी ।
- 23 और प्रभु के लोगों के लिए जो चिन्ह और आश्चर्यकर्म बनाए गए थे उसके बावजूद, और कई चमत्कार जिसे उन्होंने किया था उसके बावजूद शैतान ने पूरे प्रदेश में लोगों के हृदयों को अपने वश में कर लिया था ।
- 24 और इस प्रकार नफी के लोगों पर न्यायियों के शासन का नब्बेवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 25 और इस प्रकार हिलामन और उसके बेटों के अभिलेख के अनुसार, हिलामन की पुस्तक समाप्त हुई ।

Yea, why will he not show himself in this land as well as in the land of Jerusalem?

But behold, we know that this is a wicked tradition, which has been handed down unto us by our fathers, to cause us that we should believe in some great and marvelous thing which should come to pass, but not among us, but in a land which is far distant, a land which we know not; therefore they can keep us in ignorance, for we cannot witness with our own eyes that they are true.

And they will, by the cunning and the mysterious arts of the evil one, work some great mystery which we cannot understand, which will keep us down to be servants to their words, and also servants unto them, for we depend upon them to teach us the word; and thus will they keep us in ignorance if we will yield ourselves unto them, all the days of our lives.

And many more things did the people imagine up in their hearts, which were foolish and vain; and they were much disturbed, for Satan did stir them up to do iniquity continually; yea, he did go about spreading rumors and contentions upon all the face of the land, that he might harden the hearts of the people against that which was good and against that which should come.

And notwithstanding the signs and the wonders which were wrought among the people of the Lord, and the many miracles which they did, Satan did get great hold upon the hearts of the people upon all the face of the land.

And thus ended the ninetieth year of the reign of the judges over the people of Nephi.

And thus ended the book of Helaman, according to the record of Helaman and his sons.

# तीसरा नफी

## नफी की पुस्तक

### नफी का बेटा, जो हिलामन का बेटा था

और हिलामन उस अलमा के बेटे हिलामन का बेटा था, जो अलमा का बेटा था, और जो नफी के वंशज का होने के नाते उस लेही का बेटा था जो यहूदा के राजा, सिदकिय्याह के शासन के प्रथम वर्ष में यरूशलेम से बाहर आया था ।

### 3 नफी 1

- 1 अब ऐसा हुआ कि इक्यानबेवां वर्ष बीत चुका था और जब लेही ने यरूशलेम छोड़ा था तब से लेकर अब तक छह सौ वर्ष हो गया था; और यही वह वर्ष था जब लकोनियस प्रदेश का मुख्य न्यायी और शासक था ।
- 2 और हिलामन का बेटा, नफी. जराहेमला प्रदेश से चला गया था, अपने बड़े बेटे नफी को पीतल की पट्टियों के संबंध में, उन सारे अभिलेखों को सौंपते हुए जिन्हें रखा गया था, और उन सारी पावन चीजों को भी जिन्हें लेही के यरूशलेम से बाहर आने के समय से लेकर अब तक रखा गया था ।
- 3 फिर वह प्रदेश से चला गया, और कोई नहीं जानता था कि वह कहां गया; और उसके बेटे नफी ने उसके स्थान पर अभिलेखों को रखा, हां, इन लोगों के अभिलेखों को ।
- 4 और ऐसा हुआ कि बानबेवें वर्ष के आरंभ में, देखो, भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियां भली-भांति परिपूर्ण होने लगीं; क्योंकि लोगों के बीच में भारी संख्या में चिन्ह दिखाई देने लगे और चमत्कार होने लगे ।
- 5 परन्तु कुछ लोग ऐसे भी थे जो कहने लगे कि लमनाई समूएल द्वारा बताई गई बातों की परिपूर्णता का समय बीत चुका है ।
- 6 और वे अपने भाइयों से यह कहते हुए आनंद मनाने लगे: देखो समय बीत चुका है, और समूएल की भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई; इसलिए, इस बात के संबंध में तुम्हारी प्रसन्नता और तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है ।

# Third Nephi

## The Book of Nephi

### the Son of Nephi, Who Was the Son of Helaman

*And Helaman was the son of Helaman, who was the son of Alma, who was the son of Alma, being a descendant of Nephi who was the son of Lehi, who came out of Jerusalem in the first year of the reign of Zedekiah, the king of Judah.*

### 3 Nephi 1

Now it came to pass that the ninety and first year had passed away and it was six hundred years from the time that Lehi left Jerusalem; and it was in the year that Lachoneus was the chief judge and the governor over the land.

And Nephi, the son of Helaman, had departed out of the land of Zarahemla, giving charge unto his son Nephi, who was his eldest son, concerning the plates of brass, and all the records which had been kept, and all those things which had been kept sacred from the departure of Lehi out of Jerusalem.

Then he departed out of the land, and whither he went, no man knoweth; and his son Nephi did keep the records in his stead, yea, the record of this people.

And it came to pass that in the commencement of the ninety and second year, behold, the prophecies of the prophets began to be fulfilled more fully; for there began to be greater signs and greater miracles wrought among the people.

But there were some who began to say that the time was past for the words to be fulfilled, which were spoken by Samuel, the Lamanite.

And they began to rejoice over their brethren, saying: Behold the time is past, and the words of Samuel are not fulfilled; therefore, your joy and your faith concerning this thing hath been vain.

- 7 और ऐसा हुआ कि उन्होंने पूरे प्रदेश में हंगामा किया; और जिन लोगों ने विश्वास किया वे दुखी होने लगे, कि कहीं ऐसा न हो कि कही गई बातें पूरी ही न हों ।
- 8 परन्तु देखो, उन्होंने स्थिर रहते हुए उस दिन और उस रात की प्रतीक्षा की जब कोई रात नहीं होगी और केवल एक दिन होगा, ताकि वे जान सकें कि उनका विश्वास व्यर्थ नहीं था ।
- 9 अब ऐसा हुआ कि अविश्वासियों द्वारा एक दिन निर्धारित किया गया था कि यदि लमनाई समूहल द्वारा दिए गए चिन्ह न दिखाई दिए तो उन सभी लोगों को मृत्युदंड दिया जाएगा जिन्होंने उन परंपराओं पर विश्वास किया था ।
- 10 अब ऐसा हुआ कि नफी के बेटे नफी ने जब इन लोगों की दुष्टता को देखा तो उसका हृदय अत्याधिक पीड़ित हुआ ।
- 11 और ऐसा हुआ कि वह बाहर गया और स्वयं को धरती पर झुकाया, और अपने लोगों के लिए परमेश्वर से विलापपूर्वक याचना करने लगा, हां, उन लोगों के लिए जो अपने पूर्वजों की परंपरा में अपने विश्वास के कारण लगभग नष्ट होनेवाले थे ।
- 12 और ऐसा हुआ कि वह पूरे दिन प्रभु से विलापपूर्वक याचना करता रहा; और देखो, यह कहते हुए उसे प्रभु की वाणी सुनाई दी:
- 13 अपना सिर उठाओ और खुश रहो; क्योंकि देखो, समय निकट है, और आज की रात चिन्ह दिया जाएगा, और अगले दिन मैं संसार में आऊंगा, संसार को यह दिखाने के लिए कि मैं उन सारी बातों को पूरा करूंगा जिन्हें मैंने अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुंह से निकलवाई है ।
- 14 देखो, जिन बातों को मैंने संसार की नींव से लेकर अब तक मानव संतान को ज्ञात कराया है उसे पूरा करने के लिए, और दोनों पिता और पुत्र की इच्छा—मेरे कारण पिता की, और मेरे शरीर के कारण पुत्र की इच्छा को पूरा करने के लिए मैं स्वयं आऊंगा । और देखो, समय निकट है, और आज की रात चिन्ह दिया जाएगा ।
- 15 और ऐसा हुआ कि जो बातें नफी से कही गई थीं वे पूरी हुईं, जैसा कि बताया गया था; क्योंकि देखो, सूर्यास्त के बावजूद अंधेरा नहीं हुआ; और रात होने पर भी अंधेरा नहीं होने के कारण लोग आश्चर्यचकित होने लगे ।

And it came to pass that they did make a great uproar throughout the land; and the people who believed began to be very sorrowful, lest by any means those things which had been spoken might not come to pass.

But behold, they did watch steadfastly for that day and that night and that day which should be as one day as if there were no night, that they might know that their faith had not been vain.

Now it came to pass that there was a day set apart by the unbelievers, that all those who believed in those traditions should be put to death except the sign should come to pass, which had been given by Samuel the prophet.

Now it came to pass that when Nephi, the son of Nephi, saw this wickedness of his people, his heart was exceedingly sorrowful.

And it came to pass that he went out and bowed himself down upon the earth, and cried mightily to his God in behalf of his people, yea, those who were about to be destroyed because of their faith in the tradition of their fathers.

And it came to pass that he cried mightily unto the Lord all that day; and behold, the voice of the Lord came unto him, saying:

Lift up your head and be of good cheer; for behold, the time is at hand, and on this night shall the sign be given, and on the morrow come I into the world, to show unto the world that I will fulfil all that which I have caused to be spoken by the mouth of my holy prophets.

Behold, I come unto my own, to fulfil all things which I have made known unto the children of men from the foundation of the world, and to do the will, both of the Father and of the Son—of the Father because of me, and of the Son because of my flesh. And behold, the time is at hand, and this night shall the sign be given.

And it came to pass that the words which came unto Nephi were fulfilled, according as they had been spoken; for behold, at the going down of the sun there was no darkness; and the people began to be astonished because there was no darkness when the night came.

- 16 और ऐसे कई लोग थे जिन्होंने भविष्यवक्ताओं की बातों पर विश्वास नहीं किया था, वे धरती पर गिर पड़े और ऐसे हो गए मानो वे मर गए हों, क्योंकि वे जानते थे कि जो लोग भविष्यवक्ताओं की बातों पर विश्वास करते थे उनके लिए उन्होंने जो विनाश की महान योजना बनाई थी उसमें गड़बड़ी हो गई थी; क्योंकि जो चिन्ह दिया गया था उसे दिखाया जा चुका था ।
- 17 और वे यह जानने लगे कि परमेश्वर का पुत्र शीघ्र ही आएगा; हां, निश्चित रूप से, पूरी धरती पर पश्चिम से लेकर पूर्व तक के, और उत्तर की भूमि से लेकर दक्षिण की भूमि तक के लोग इतने अधिक आश्चर्यचकित हुए कि वे धरती पर गिर पड़े ।
- 18 क्योंकि वे जानते थे कि भविष्यवक्ताओं ने इन बातों की गवाही कई वर्षों से दी है, और जिस चिन्ह को बताया गया था वह हो रहा था; और अपने अधर्म और अपने अविश्वास के कारण वे डरने लगे ।
- 19 और ऐसा हुआ कि उस पूरी रात अंधेरा नहीं हुआ, परन्तु दोपहर के समान उजियाला था । और ऐसा हुआ कि अपने उचित ढंग से, सुबह में फिर से सूर्योदय हुआ; और जो चिन्ह दिए गए थे उसके कारण वे जानते थे कि यही वह दिन था जब प्रभु का जन्म होगा ।
- 20 और ऐसा हुआ कि जैसा भविष्यवक्ताओं ने कहा था, सारी चीजें बिलकुल वैसी ही हुईं ।
- 21 और ऐसा हुआ कि जैसा कहा गया था, एक नया तारा भी दिखाई दिया ।
- 22 और ऐसा हुआ कि इस समय के बाद से लोगों के हृदयों को कठोर करने के लिए शैतान द्वारा झूठ का आरंभ हुआ, इस उद्देश्य से कि वे उन चिन्हों और आश्चर्यकर्मों पर विश्वास न कर सकें जिसे उन्होंने देखा था; परन्तु इन झूठ और छलावों के बावजूद भी अधिक लोगों ने विश्वास किया, और प्रभु में परिवर्तित हुए ।
- 23 और ऐसा हुआ कि पश्चाताप कर बपतिस्मा दिलवाते हुए नफी अपने और अन्य लोगों में गया, जिसके तहत भारी संख्या में पापों से क्षमा प्राप्ति हुई । और इस प्रकार प्रदेश में लोगों के बीच फिर से शांति स्थापित होने लगी ।
- 24 और कोई मतभेद नहीं था, केवल कुछ लोगों को छोड़कर जिन्होंने प्रचार-कार्य प्रारंभ किया, धर्मशास्त्रों द्वारा यह सिद्ध करने के प्रयास से कि मूसा की व्यवस्था का पालन करना आवश्यक नहीं था । अब धर्मशास्त्रों को न समझते हुए वे इस बात से भटकने लगे ।

And there were many, who had not believed the words of the prophets, who fell to the earth and became as if they were dead, for they knew that the great plan of destruction which they had laid for those who believed in the words of the prophets had been frustrated; for the sign which had been given was already at hand.

And they began to know that the Son of God must shortly appear; yea, in fine, all the people upon the face of the whole earth from the west to the east, both in the land north and in the land south, were so exceedingly astonished that they fell to the earth.

For they knew that the prophets had testified of these things for many years, and that the sign which had been given was already at hand; and they began to fear because of their iniquity and their unbelief.

And it came to pass that there was no darkness in all that night, but it was as light as though it was mid-day. And it came to pass that the sun did rise in the morning again, according to its proper order; and they knew that it was the day that the Lord should be born, because of the sign which had been given.

And it had come to pass, yea, all things, every whit, according to the words of the prophets.

And it came to pass also that a new star did appear, according to the word.

And it came to pass that from this time forth there began to be lyings sent forth among the people, by Satan, to harden their hearts, to the intent that they might not believe in those signs and wonders which they had seen; but notwithstanding these lyings and deceivings the more part of the people did believe, and were converted unto the Lord.

And it came to pass that Nephi went forth among the people, and also many others, baptizing unto repentance, in the which there was a great remission of sins. And thus the people began again to have peace in the land.

And there were no contentions, save it were a few that began to preach, endeavoring to prove by the scriptures that it was no more expedient to observe the law of Moses. Now in this thing they did err, having not understood the scriptures.

- 25 परन्तु ऐसा हुआ कि वे शीघ्र ही परिवर्तित हुए, और अपनी भूल को मान लिया, क्योंकि उन्हें ज्ञात कराया गया कि व्यवस्था अभी भी परिपूर्ण नहीं हुई थी, और यह कि हर चीज में यह पूरी होगी; हां, उन्हें बताया गया कि यह पूर्ण होगी; हां, बिन्दुमात्र भी नहीं छूटेगा जब तक कि यह पूरा नहीं हो जाता; इसलिए इसी वर्ष उन्हें उनकी भूल का ज्ञात कराया गया और उन्होंने अपनी गलतियों का अंगीकार किया ।
- 26 और इस प्रकार सारे पवित्र भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणी के अनुसार, जो चिन्ह दिखाए गए थे उनके कारण लोगों के लिए सुसमाचार लाते हुए बानबेवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 27 और ऐसा हुआ कि तिरानबेवां वर्ष भी शांति से बीत गया, केवल उन गडियन्टन डाकुओं को छोड़कर जो पहाड़ियों पर रहते थे और जो प्रदेश में फैले हुए थे; उनकी पकड़ और उनके गुप्त स्थान इतने मजबूत थे कि लोग उन पर विजय नहीं प्राप्त कर सके; इसलिए उन्होंने कई हत्याएं कीं और भारी मात्रा में लोगों में नरसंहार किया ।
- 28 और ऐसा हुआ कि चौरानबेवें वर्ष में उनकी संख्या अत्याधिक बढ़ने लगी क्योंकि नफाइयों में से ऐसे कई विपक्षी थे जो भागकर उनके पास चले गए, जिसके कारण वे नफाई बहुत दुखी हुए जो प्रदेश में ही रह गए थे ।
- 29 और लमनाइयों के बीच भी दुख का एक कारण था; क्योंकि देखो, उनके कई बच्चे ऐसे थे जो बड़े हुए और वर्ष दर वर्ष मजबूत हुए, और वे जोरामाइयों के झूठ और फुसलानेवाली बातों में आकर भटक गए, और गडियन्टन डाकुओं में शामिल हो गए ।
- 30 और इस प्रकार लमनाई भी पीड़ित हुए, और उभरती पीढ़ी की दुष्टता के कारण अपने विश्वास और धार्मिकता में घटने लगे ।

But it came to pass that they soon became converted, and were convinced of the error which they were in, for it was made known unto them that the law was not yet fulfilled, and that it must be fulfilled in every whit; yea, the word came unto them that it must be fulfilled; yea, that one jot or tittle should not pass away till it should all be fulfilled; therefore in this same year were they brought to a knowledge of their error and did confess their faults.

And thus the ninety and second year did pass away, bringing glad tidings unto the people because of the signs which did come to pass, according to the words of the prophecy of all the holy prophets.

And it came to pass that the ninety and third year did also pass away in peace, save it were for the Gadianton robbers, who dwelt upon the mountains, who did infest the land; for so strong were their holds and their secret places that the people could not overpower them; therefore they did commit many murders, and did do much slaughter among the people.

And it came to pass that in the ninety and fourth year they began to increase in a great degree, because there were many dissenters of the Nephites who did flee unto them, which did cause much sorrow unto those Nephites who did remain in the land.

And there was also a cause of much sorrow among the Lamanites; for behold, they had many children who did grow up and began to wax strong in years, that they became for themselves, and were led away by some who were Zoramites, by their lyings and their flattering words, to join those Gadianton robbers.

And thus were the Lamanites afflicted also, and began to decrease as to their faith and righteousness, because of the wickedness of the rising generation.



## 3 नफी 2

- 1 और ऐसा हुआ कि इस प्रकार पंचानबेवां वर्ष भी समाप्त हो गया, और लोग उन चिन्हों और आश्चर्यकर्मों को भूलने लगे जिसके विषय में उन्होंने सुना था, और स्वर्ग से मिल रहे चिन्ह और आश्चर्यकर्म के कारण उनके अचम्भे में बहुत कमी आ जाती है जिससे कि उनके हृदय कठोर और उनका मन अंधा हो गया, और उन सभी बातों पर वे अविश्वास करने लगे जिसे उन्होंने सुना या देखा था ।
- 2 अपने हृदयों में कुछ व्यर्थ की चीजों की कल्पना करते हुए, कि लोगों को पथभ्रष्ट करने और उन्हें धोखा देने के लिए यह मनुष्यों द्वारा और शैतान की शक्ति द्वारा गढ़ा गया है; और इस प्रकार शैतान फिर से लोगों के हृदयों पर कब्जा कर लेता है, इतना अधिक कि वह उनकी आंखों पर पट्टी बांध देता है और उन्हें विश्वास दिलाता है कि मसीह का सिद्धांत मूर्खतापूर्ण और व्यर्थ है ।
- 3 और ऐसा हुआ कि लोग दुष्टता और घृणित कार्यों में मजबूत होने लगे; और उन्होंने विश्वास नहीं किया कि और भी चिन्ह और आश्चर्यकर्म दिखाए जाएंगे; और शैतान लोगों के हृदयों को पथभ्रष्ट करता रहा, उन्हें ललचाता रहा और प्रदेश में उनसे भारी दुष्टता करवाता रहा ।
- 4 और इस प्रकार छियानबेवां वर्ष बीत गया; और संतानबेवां वर्ष भी; और अंठानबेवां वर्ष भी, और निन्यानबेवां वर्ष भी बीत गया ।
- 5 और सौवां वर्ष भी बीत चुका था, उस मुसायाह के समय से लेकर जो कि नफाई लोगों का राजा था ।
- 6 और लेही ने जब यरूशलेम छोड़ा था तब से लेकर छह सौ और नौ वर्ष बीत चुके थे ।
- 7 और जब चिन्ह दिया गया था तब से लेकर अब तक नौ वर्ष बीत चुके थे, जिसके विषय में भविष्यवक्ताओं ने बताया था कि मसीह संसार में आएगा ।
- 8 अब से नफाई अपने समय की गणना करने लगे, इस समय से जब चिन्ह दिया गया था, या मसीह के आगमन से; इसलिए, नौ वर्ष बीत चुके थे ।
- 9 और नफी जो कि नफी का पिता था जिसे अभिलेखों की जिम्मेदारी दी गई थी, जराहेमला प्रदेश वापस लौटकर नहीं आया, और वह पूरे प्रदेश में कहीं भी नहीं पाया गया ।

## 3 Nephi 2

And it came to pass that thus passed away the ninety and fifth year also, and the people began to forget those signs and wonders which they had heard, and began to be less and less astonished at a sign or a wonder from heaven, insomuch that they began to be hard in their hearts, and blind in their minds, and began to disbelieve all which they had heard and seen—

Imagining up some vain thing in their hearts, that it was wrought by men and by the power of the devil, to lead away and deceive the hearts of the people; and thus did Satan get possession of the hearts of the people again, insomuch that he did blind their eyes and lead them away to believe that the doctrine of Christ was a foolish and a vain thing.

And it came to pass that the people began to wax strong in wickedness and abominations; and they did not believe that there should be any more signs or wonders given; and Satan did go about, leading away the hearts of the people, tempting them and causing them that they should do great wickedness in the land.

And thus did pass away the ninety and sixth year; and also the ninety and seventh year; and also the ninety and eighth year; and also the ninety and ninth year;

And also an hundred years had passed away since the days of Mosiah, who was king over the people of the Nephites.

And six hundred and nine years had passed away since Lehi left Jerusalem.

And nine years had passed away from the time when the sign was given, which was spoken of by the prophets, that Christ should come into the world.

Now the Nephites began to reckon their time from this period when the sign was given, or from the coming of Christ; therefore, nine years had passed away.

And Nephi, who was the father of Nephi, who had the charge of the records, did not return to the land of Zarahemla, and could nowhere be found in all the land.

- 10 और ऐसा हुआ कि लोगों के बीच में जो प्रचार-कार्य और भविष्य-वाणी हुई थी उसके बावजूद भी वे दुष्टता ही में पड़े रहे; और इस प्रकार दसवां वर्ष भी बीत गया; और ग्यारवां वर्ष भी अधर्म में बीत गया ।
- 11 और ऐसा हुआ कि तेरहवें वर्ष में पूरे प्रदेश में युद्ध और वाद-विवाद होने लगे; क्योंकि गडियन्टन डाकुओं की संख्या बहुत बढ़ गई थी, और उन्होंने कई लोगों की हत्या की, और कई नगरों को नष्ट किया, और पूरे प्रदेश में मृत्यु और संहार इतनी भारी संख्या में हुआ कि सारे लोगों, नफाई और लमनाई दोनों के लिए, उन के विरुद्ध हथियार उठाना आवश्यक हो गया ।
- 12 इसलिए, वे सारे लमनाई जो प्रभु में परिवर्तित हुए थे अपने नफाई भाइयों से मिल गए, और अपने जीवन और अपनी स्त्रियों और अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए गडियन्टन डाकुओं के विरुद्ध हथियार उठाने को बाध्य हुए, हां, और अपने अधिकार को, और अपने गिरजे और अपनी आराधना के सुअवसरों को, और अपनी स्वतंत्रता और स्वाधीनता को बनाए रखने के लिए भी हथियार उठाने को बाध्य हुए ।
- 13 और ऐसा हुआ कि इस तेरहवें वर्ष के समाप्त होने से पहले इस युद्ध के कारण हुए संपूर्ण विनाश से नफाई संकट में पड़ गए थे जो कि अत्यंत दुखदाई था ।
- 14 और ऐसा हुआ कि जो लमनाई नफाइयों से मिल गए थे, उनकी गिनती नफाइयों में हुई ।
- 15 और उन पर से श्राप हटा लिया गया, और उनकी त्वचा नफाइयों के समान गोरी हो गई ।
- 16 और उनके युवा लड़के और उनकी लड़कियां बहुत ही सुंदर बन गए, और उनकी गिनती नफाइयों में हुई, और वे नफाई कहलाए । और इस प्रकार तेरहवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 17 और ऐसा हुआ कि चौदहवें वर्ष के आरंभ में, डाकुओं और नफी के लोगों के बीच युद्ध जारी रहा और अत्याधिक दुखदाई था; फिर भी, नफी के लोगों ने डाकुओं पर बहुत सफलता प्राप्त की, इतनी अधिक कि उन्होंने उन्हें वापस उनके प्रदेश, पहाड़ों और गुप्त स्थानों पर खदेड़ दिया ।

And it came to pass that the people did still remain in wickedness, notwithstanding the much preaching and prophesying which was sent among them; and thus passed away the tenth year also; and the eleventh year also passed away in iniquity.

And it came to pass in the thirteenth year there began to be wars and contentions throughout all the land; for the Gadianton robbers had become so numerous, and did slay so many of the people, and did lay waste so many cities, and did spread so much death and carnage throughout the land, that it became expedient that all the people, both the Nephites and the Lamanites, should take up arms against them.

Therefore, all the Lamanites who had become converted unto the Lord did unite with their brethren, the Nephites, and were compelled, for the safety of their lives and their women and their children, to take up arms against those Gadianton robbers, yea, and also to maintain their rights, and the privileges of their church and of their worship, and their freedom and their liberty.

And it came to pass that before this thirteenth year had passed away the Nephites were threatened with utter destruction because of this war, which had become exceedingly sore.

And it came to pass that those Lamanites who had united with the Nephites were numbered among the Nephites;

And their curse was taken from them, and their skin became white like unto the Nephites;

And their young men and their daughters became exceedingly fair, and they were numbered among the Nephites, and were called Nephites. And thus ended the thirteenth year.

And it came to pass in the commencement of the fourteenth year, the war between the robbers and the people of Nephi did continue and did become exceedingly sore; nevertheless, the people of Nephi did gain some advantage of the robbers, insomuch that they did drive them back out of their lands into the mountains and into their secret places.

18 और इस प्रकार चौदहवां वर्ष समाप्त हुआ। और पंद्रहवें वर्ष में उन्होंने नफी के लोगों पर आक्रमण कर दिया; और नफी के लोगों की दुष्टता के कारण, और उनके बीच के वाद-विवाद और मतभेदों के कारण गडियन्टन डाकुओं को उन पर बहुत सफलता प्राप्त हुई।

19 और इस प्रकार पंद्रहवां वर्ष समाप्त हुआ। इस प्रकार लोग बहुत सी परेशानियों में थे; और विनाश की तलवार उन पर लटकी रही, इतनी अधिक कि लगभग वे इससे मारे जाने की स्थिति में हो गए थे, और ऐसा उनके अधर्म के कारण था।

And thus ended the fourteenth year. And in the fifteenth year they did come forth against the people of Nephi; and because of the wickedness of the people of Nephi, and their many contentions and dissensions, the Gadianton robbers did gain many advantages over them.

And thus ended the fifteenth year, and thus were the people in a state of many afflictions; and the sword of destruction did hang over them, insomuch that they were about to be smitten down by it, and this because of their iniquity.

### 3 नफी 3

- 1 और ऐसा हुआ कि मसीह के आगमन से सोलहवें वर्ष में, प्रदेश के शासक लकोनियस ने डाकुओं की इस मंडली के मार्गदर्शक और शासक से एक पत्र प्राप्त किया; और यही वे शब्द हैं जिन्हें लिखा गया था, यह कहते हुए:
- 2 लकोनियस, प्रदेश के श्रेष्ठ और मुख्य शासक, देखो, मैं तुम्हें यह पत्र लिखता हूँ, और जिसे तुम अपना अधिकार और अपनी स्वाधीनता समझते हो उसे बनाए रखने के लिए तुम्हारी दृढ़ता के कारण मैं तुम्हारी और तुम्हारे लोगों की बहुत प्रशंसा करता हूँ; हाँ, तुम दृढ़ता से खड़े हो मानो जैसे तुम्हारी स्वाधीनता, और तुम्हारी संपत्ति, और तुम्हारे प्रदेश, या जो भी तुम करते हो उसमें परमेश्वर का हाथ तुम्हें सहारा दे रहा है।
- 3 और श्रेष्ठ लकोनियस, मुझे तुम्हारी इस बात पर दया आती है कि तुम यह मानने में कितने मूर्ख और झूठे हो कि तुम इतने साहसी लोगों के खिलाफ खड़े हो सकते हो जो मेरे आदेश पर हैं, जो अपने अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित खड़े हैं, और नफाइयों पर आक्रमण कर उन्हें नष्ट करने की आज्ञा का उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।
- 4 और मैं, युद्ध के मैदान में सिद्ध करने की उनके अजेय स्वभाव को जानता हूँ, और तुमने उनके प्रति जो कई गलतियाँ की हैं उसके कारण तुम्हारे प्रति उनकी अनंत ईर्ष्या को भी जानता हूँ, इसलिए यदि उन्होंने तुम पर आक्रमण कर दिया तो वे पूरी तरह से तुम्हारा विनाश कर देंगे।
- 5 इसलिए यह पत्र मैंने लिखा है, जिसे मैंने स्वयं के हाथों से बंद किया है, जिस बात को तुम उचित समझते हो उसमें दृढ़ रहने के लिए, और युद्ध के मैदान में भारी साहस दिखाने के कारण, तुम्हारे कल्याण के बारे में सोचते हुए।
- 6 इसलिए मैं तुम्हें यह चाहते हुए लिख रहा हूँ कि तुम मेरे लोगों को अपने नगर, अपने प्रदेश, अपनी संपत्तियों को सौंप दोगे, नहीं तो वे तुम पर तलवार से आक्रमण करेंगे और तुम पर विनाश आएगा।
- 7 या अन्य शब्दों में, अपने आपको हमें सौंप दो, और हमारे साथ मिल जाओ और हमारे गुप्त कार्यों से परिचित हो जाओ, और हमारे भाई बन जाओ ताकि हमारे समान बन सको—हमारे गुलाम नहीं बल्कि हमारी सारी वस्तुओं में हमारे भाई या सहयोगी बन सको।

### 3 Nephi 3

And now it came to pass that in the sixteenth year from the coming of Christ, Lachoneus, the governor of the land, received an epistle from the leader and the governor of this band of robbers; and these were the words which were written, saying:

Lachoneus, most noble and chief governor of the land, behold, I write this epistle unto you, and do give unto you exceedingly great praise because of your firmness, and also the firmness of your people, in maintaining that which ye suppose to be your right and liberty; yea, ye do stand well, as if ye were supported by the hand of a god, in the defence of your liberty, and your property, and your country, or that which ye do call so.

And it seemeth a pity unto me, most noble Lachoneus, that ye should be so foolish and vain as to suppose that ye can stand against so many brave men who are at my command, who do now at this time stand in their arms, and do await with great anxiety for the word—Go down upon the Nephites and destroy them.

And I, knowing of their unconquerable spirit, having proved them in the field of battle, and knowing of their everlasting hatred towards you because of the many wrongs which ye have done unto them, therefore if they should come down against you they would visit you with utter destruction.

Therefore I have written this epistle, sealing it with mine own hand, feeling for your welfare, because of your firmness in that which ye believe to be right, and your noble spirit in the field of battle.

Therefore I write unto you, desiring that ye would yield up unto this my people, your cities, your lands, and your possessions, rather than that they should visit you with the sword and that destruction should come upon you.

Or in other words, yield yourselves up unto us, and unite with us and become acquainted with our secret works, and become our brethren that ye may be like unto us—not our slaves, but our brethren and partners of all our substance.

- 8 और देखो, मैं दृढ़तापूर्वक कहता हूँ कि यदि तुम इसे शपथ लेकर करोगे तो तुम्हारा विनाश नहीं होगा; परन्तु यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, मैं दृढ़तापूर्वक शपथ लेकर कहता हूँ कि अगले माह मैं आज्ञा दूंगा कि मेरी सेनाएं तुम पर आक्रमण करें, और वे अपने हाथों को न रोकेँ और न छोड़े बल्कि तुम्हारी हत्या कर दें, और तुम लोगों पर उनकी तलवार तब तक चलती रहे जब तक कि तुम सदा के लिए विलुप्त न हो जाओ।
- 9 और देखो, मैं गिडियान्ही हूँ; और मैं गडियन्टन के इस गुप्त संगठन का शासक हूँ; वह संगठन और कार्य जिसे मैं अच्छा समझता हूँ; और ये पुराने समय से हैं और इन्हें हमें सौंपा गया है।
- 10 और लकोनियस, मैं तुम्हें यह पत्र लिख रहा हूँ और आशा करता हूँ कि बिना रक्तपात के तुम अपने प्रदेश और अपनी संपत्तियों को हमें सौंप दोगे जिससे कि मेरे ये लोग अपने अधिकार और शासन को फिर से प्राप्त कर सकें जिन्होंने तुमसे मतभेद किया था क्योंकि तुमने अपनी दुष्टता के कारण शासन के उनके अधिकार से उन्हें वंचित रखा था, और यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो उनके प्रति की गई गलतियों के लिए मैं तुमसे बदला लूंगा। मैं गिडियान्ही हूँ।
- 11 और अब ऐसा हुआ कि जब लकोनियस ने इस पत्र को प्राप्त किया तो गिडियान्ही द्वारा नफाइयों के प्रदेश की मांग करने में उसके दुःसाहस के कारण, और लोगों को धमकाने और उन लोगों के प्रति किये गए अन्याय के लिए धमकाने के कारण उसे बहुत आश्चर्य हुआ जो कि उनके प्रति अन्याय था ही नहीं, बल्कि वे स्वयं मतभेद कर उन दुष्ट और घृणित डाकुओं में जा मिले थे।
- 12 अब देखो, यह शासक लकोनियस एक न्यायी पुरुष था, और एक डाकू की मांग और धमकियों से डर नहीं सकता था; इसलिए उसने डाकुओं के शासक गिडियान्ही के पत्र पर ध्यान नहीं दिया, परन्तु उसने अपने लोगों से कहा कि वे उस समय के लिए प्रभु से बल की याचना करें जब डाकू उन पर आक्रमण करने आएँ।
- 13 हां, उसने अपने सारे लोगों में घोषणा करवाई कि वे अपनी जमीन को छोड़कर अपनी स्त्रियों और अपने बच्चों, और अपने पशु-पक्षियों के झुंडों को, और अपनी सारी वस्तुओं को एक स्थान पर एकत्रित करें।

And behold, I swear unto you, if ye will do this, with an oath, ye shall not be destroyed; but if ye will not do this, I swear unto you with an oath, that on the morrow month I will command that my armies shall come down against you, and they shall not stay their hand and shall spare not, but shall slay you, and shall let fall the sword upon you even until ye shall become extinct.

And behold, I am Giddianhi; and I am the governor of this the secret society of Gadianton; which society and the works thereof I know to be good; and they are of ancient date and they have been handed down unto us.

And I write this epistle unto you, Lachoneus, and I hope that ye will deliver up your lands and your possessions, without the shedding of blood, that this my people may recover their rights and government, who have dissented away from you because of your wickedness in retaining from them their rights of government, and except ye do this, I will avenge their wrongs. I am Giddianhi.

And now it came to pass when Lachoneus received this epistle he was exceedingly astonished, because of the boldness of Giddianhi demanding the possession of the land of the Nephites, and also of threatening the people and avenging the wrongs of those that had received no wrong, save it were they had wronged themselves by dissenting away unto those wicked and abominable robbers.

Now behold, this Lachoneus, the governor, was a just man, and could not be frightened by the demands and the threatenings of a robber; therefore he did not hearken to the epistle of Giddianhi, the governor of the robbers, but he did cause that his people should cry unto the Lord for strength against the time that the robbers should come down against them.

Yea, he sent a proclamation among all the people, that they should gather together their women, and their children, their flocks and their herds, and all their substance, save it were their land, unto one place.

- 14 और उसने उनके चारों तरफ किलाबंदी करवाई, और इसके पश्चात वे बहुत मजबूत हुए। और उसने नफाइयों और लमनाइयों दोनों से, या उन सबसे जो नफाइयों में गिने जाते थे उन्हें उनकी देख-भाल करने के लिए, और डाकुओं से रात और दिन उनकी सुरक्षा के लिए रक्षकों के रूप में नियुक्त किया।
- 15 हां, उसने उनसे कहा: जैसे कि प्रभु जीवित है, यदि तुम अपनी सारी बुराइयों के लिए पश्चाताप नहीं करोगे, और प्रभु से विनती नहीं करोगे, तो तुम गडियन्टन डाकुओं के हाथों से नहीं बचाए जाओगे।
- 16 और लकोनियस के वचन और उसकी भविष्यवाणियां इतनी महान और अद्भुत थीं कि उनके कारण सारे लोगों पर भय छा गया; और उन्होंने लकोनियस की बातों के अनुसार अपने बल को और बढ़ाया।
- 17 और ऐसा हुआ कि लकोनियस ने नफाइयों की सारी सेनाओं पर मुख्य सेनापति नियुक्त किये ताकि जब डाकू निर्जन प्रदेश से बाहर आकर उन पर आक्रमण करें तब उन्हें आदेश दिया जा सके।
- 18 अब मुख्य सेनापतियों के मुखिया और नफाइयों की सारी सेनाओं के महान सेनाध्यक्ष को नियुक्त किया गया, और उसका नाम गिड-गिडोनी था।
- 19 अब नफाइयों के बीच उनके मुख्य सेनापतियों के लिए, (उनकी दुष्टता की परिस्थितियों के अलावा) किसी ऐसे व्यक्ति को नियुक्त करने की एक प्रथा थी जिसके पास प्रकटीकरण और भविष्यवाणी की भी आत्मा हो; इसलिए, यह गिडगिडोनी मुख्य न्यायी होने के साथ-साथ उनके बीच एक महान भविष्यवक्ता भी था।
- 20 अब लोगों ने गिडगिडोनी से कहा: प्रभु से प्रार्थना करो, और हमें पहाड़ियों और निर्जन प्रदेश में जाने दो ताकि हम डाकुओं पर आक्रमण कर सकें और उन्हें उनके ही प्रदेश में खत्म कर सकें।
- 21 परन्तु गिडगिडोनी ने उनसे कहा: प्रभु मना करता है; क्योंकि यदि हम उन पर आक्रमण करेंगे तो प्रभु हमें उनके सुपुर्द कर देगा; इसलिए हम अपने प्रदेश के बीचोंबीच स्वयं को तैयार करेंगे, और अपनी सारी सेनाओं को एक साथ एकत्रित करेंगे, और हम उन पर आक्रमण नहीं करेंगे, परन्तु हम उनके आक्रमण की प्रतीक्षा करेंगे; इसलिए जैसे कि प्रभु जीवित है, यदि हम ऐसा करेंगे तो वह उन्हें हमारे सुपुर्द कर देगा।

And he caused that fortifications should be built round about them, and the strength thereof should be exceedingly great. And he caused that armies, both of the Nephites and of the Lamanites, or of all them who were numbered among the Nephites, should be placed as guards round about to watch them, and to guard them from the robbers day and night.

Yea, he said unto them: As the Lord liveth, except ye repent of all your iniquities, and cry unto the Lord, ye will in nowise be delivered out of the hands of those Gadianon robbers.

And so great and marvelous were the words and prophecies of Lachoneus that they did cause fear to come upon all the people; and they did exert themselves in their might to do according to the words of Lachoneus.

And it came to pass that Lachoneus did appoint chief captains over all the armies of the Nephites, to command them at the time that the robbers should come down out of the wilderness against them.

Now the chiefest among all the chief captains and the great commander of all the armies of the Nephites was appointed, and his name was Gidgiddoni.

Now it was the custom among all the Nephites to appoint for their chief captains, (save it were in their times of wickedness) some one that had the spirit of revelation and also prophecy; therefore, this Gidgiddoni was a great prophet among them, as also was the chief judge.

Now the people said unto Gidgiddoni: Pray unto the Lord, and let us go up upon the mountains and into the wilderness, that we may fall upon the robbers and destroy them in their own lands.

But Gidgiddoni saith unto them: The Lord forbid; for if we should go up against them the Lord would deliver us into their hands; therefore we will prepare ourselves in the center of our lands, and we will gather all our armies together, and we will not go against them, but we will wait till they shall come against us; therefore as the Lord liveth, if we do this he will deliver them into our hands.

- 22 और ऐसा हुआ कि सत्रहवें वर्ष के अंत में, पूरे प्रदेश में चारों तरफ लकोनियस की घोषणा पहुंच गई, और उन्होंने अपने घोड़ों, और अपने पशुओं, और अपने सारे जानवरों के समूहों को, अपने झुंडों को, और अपने अनाज और अपनी वस्तुओं को लिया और हजारों और लाखों की संख्या में तब तक चलते रहे जब तक कि अपने शत्रुओं से स्वयं की रक्षा के लिए उस स्थान पर न पहुंच गए जिसे एकत्रित होने के लिए चुना गया था ।
- 23 और जिस प्रदेश को चुना गया था वह प्रदेश था जराहेमला, और जो जराहेमला और संपन्न प्रदेश के बीचोबीच था, हां, वह पंक्ति जो संपन्न प्रदेश और उजाड़ प्रदेश के बीच में थी ।
- 24 और कई हजारों की संख्या में लोग थे जो नफाई कहलाते थे, जिन्होंने स्वयं को इस प्रदेश में एकत्रित किया था । अब प्रदेश का उत्तरी हिस्सा श्रापित था जिसके कारण लकोनियस ने उन्हें प्रदेश के दक्षिणी हिस्से में एकत्रित होने के लिए कहा ।
- 25 और उन्होंने स्वयं को अपने शत्रुओं के खिलाफ मजबूत किया; और वे एक प्रदेश में एक समूह बनकर रहे, और लकोनियस द्वारा बताई गई बातों से इतने भयभीत हुए कि उन्होंने अपने सारे पापों का पश्चाताप किया; और उन्होंने प्रभु अपने परमेश्वर से प्रार्थना की ताकि जब उनके शत्रु उनके विरुद्ध युद्ध करें तो वह उनकी रक्षा करे ।
- 26 और अपने शत्रुओं के कारण वे बहुत दुखी थे । और गिडगिडोनी ने उनसे युद्ध के हर प्रकार के हथियार बनाने के लिए कहा, और उसके आदेश के अनुसार वे कवच और ढाल, और छोटी-छोटी ढालों से सुसज्जित हुए ।
- And it came to pass in the seventeenth year, in the latter end of the year, the proclamation of Lachoneus had gone forth throughout all the face of the land, and they had taken their horses, and their chariots, and their cattle, and all their flocks, and their herds, and their grain, and all their substance, and did march forth by thousands and by tens of thousands, until they had all gone forth to the place which had been appointed that they should gather themselves together, to defend themselves against their enemies.
- And the land which was appointed was the land of Zarahemla, and the land which was between the land Zarahemla and the land Bountiful, yea, to the line which was between the land Bountiful and the land Desolation.
- And there were a great many thousand people who were called Nephites, who did gather themselves together in this land. Now Lachoneus did cause that they should gather themselves together in the land southward, because of the great curse which was upon the land northward.
- And they did fortify themselves against their enemies; and they did dwell in one land, and in one body, and they did fear the words which had been spoken by Lachoneus, insomuch that they did repent of all their sins; and they did put up their prayers unto the Lord their God, that he would deliver them in the time that their enemies should come down against them to battle.
- And they were exceedingly sorrowful because of their enemies. And Gidgiddoni did cause that they should make weapons of war of every kind, and they should be strong with armor, and with shields, and with bucklers, after the manner of his instruction.

### 3 नफी 4

- 1 और ऐसा हुआ कि अठारहवें वर्ष के अंत में डाकुओं की सेनाएं युद्ध के लिए तैयार थीं, और पहाड़ियों से, और पहाड़ों से, और निर्जन प्रदेश से, और अपने मजबूत और गुप्त स्थानों से धावा बोलना शुरू कर दिया, और दक्षिणी प्रदेश और उत्तरी प्रदेश दोनों पर कब्जा करने लगे, और पूरे प्रदेश पर और उन नगरों पर कब्जा करने लगे जिसे नफाइयों ने छोड़ दिया था, और उजाड़ दिया था ।
- 2 परन्तु देखो, जिन स्थानों को नफाइयों ने उजाड़ दिया था उन स्थानों पर न तो जंगली पशु थे और न ही कोई शिकार, और निर्जन प्रदेश के अलावा डाकुओं के लिए कहीं शिकार नहीं था ।
- 3 और भोजन के अभाव के कारण डाकू निर्जन प्रदेश के अलावा कहीं और जीवित नहीं रह सकते थे; क्योंकि नफाई अपने प्रदेश को उजाड़ छोड़ गए थे, और एक संगठन के रूप में उन्होंने अपने पशुओं, और अपने सारे जानवरों के समूहों और अपनी सारी वस्तुओं को एकत्रित कर लिया था ।
- 4 इसलिए, नफाइयों के विरुद्ध युद्ध करने के अलावा डाकुओं के पास लूटपाट करने और भोजन प्राप्त करने का कोई चारा नहीं था; और नफाई भारी संख्या में एक संगठन थे, और स्वयं के खाद्य पदार्थों को बचाकर रखा था, और घोड़ों और मवेशियों, और हर प्रकार के जानवरों के समूहों को रखा था जिससे कि वे उन सात वर्षों के लिए निर्वाह कर सकते थे जिसमें उन्होंने प्रदेश से डाकुओं को खत्म करने की आशा की थी; और इस प्रकार अठारहवां वर्ष समाप्त हुआ ।
- 5 और ऐसा हुआ कि उन्नीसवें वर्ष में गिडियान्ही को लगा कि नफाइयों के विरुद्ध युद्ध करना आवश्यक हो गया था, क्योंकि लूटपाट और डकैती और हत्या के अलावा कोई भी रास्ता नहीं था जिससे वे निर्वाह कर सकते थे ।
- 6 और वे प्रदेश में स्वयं को इतना अधिक प्रकट करने का साहस नहीं कर सकते थे कि वे अनाज उगा सकें, कहीं ऐसा न हो कि नफाई उन पर आक्रमण कर दें और उनकी हत्या कर दें; इसलिए गिडियान्ही ने अपनी सेनाओं को आज्ञा दी कि इस वर्ष उन्हें नफाइयों के विरुद्ध युद्ध करना चाहिए ।

### 3 Nephi 4

And it came to pass that in the latter end of the eighteenth year those armies of robbers had prepared for battle, and began to come down and to sally forth from the hills, and out of the mountains, and the wilderness, and their strongholds, and their secret places, and began to take possession of the lands, both which were in the land south and which were in the land north, and began to take possession of all the lands which had been deserted by the Nephites, and the cities which had been left desolate.

But behold, there were no wild beasts nor game in those lands which had been deserted by the Nephites, and there was no game for the robbers save it were in the wilderness.

And the robbers could not exist save it were in the wilderness, for the want of food; for the Nephites had left their lands desolate, and had gathered their flocks and their herds and all their substance, and they were in one body.

Therefore, there was no chance for the robbers to plunder and to obtain food, save it were to come up in open battle against the Nephites; and the Nephites being in one body, and having so great a number, and having reserved for themselves provisions, and horses and cattle, and flocks of every kind, that they might subsist for the space of seven years, in the which time they did hope to destroy the robbers from off the face of the land; and thus the eighteenth year did pass away.

And it came to pass that in the nineteenth year Giddianhi found that it was expedient that he should go up to battle against the Nephites, for there was no way that they could subsist save it were to plunder and rob and murder.

And they durst not spread themselves upon the face of the land insomuch that they could raise grain, lest the Nephites should come upon them and slay them; therefore Giddianhi gave commandment unto his armies that in this year they should go up to battle against the Nephites.



7 और ऐसा हुआ कि वे युद्ध करने आए; और यह छठवां महीना था; और देखो, वह दिन महान और भयानक था जब वे युद्ध करने आए; और वे डाकुओं के भेष में थे; और उन्होंने अपनी कमर पर लहू में लिपटी हुई मेमने की खाल बांध रखी थी, और उन्होंने सिर मुंडाया हुआ था, और उन्होंने सिर की टोपी पहनी थी; और उनके कवच, और रक्त में रंगे होने के कारण गिडियान्ही की सेनाओं का रूप-रंग भयानक था ।

8 और ऐसा हुआ कि जब नफाइयों की सेनाओं ने गिडियान्ही की सेना का रूप-रंग देखा तो सारे के सारे जमीन पर गिर पड़े, और प्रभु अपने परमेश्वर से याचना करने लगे, कि वह उन्हें छोड़ दे और उन्हें उनके शत्रुओं के हाथों से बचा ले ।

9 और ऐसा हुआ कि जब गिडियान्ही की सेनाओं ने इसे देखा तो खुशी के कारण वे जोर-जोर से चिल्लाने लगे, क्योंकि उन्हें लगा कि उनकी सेना के डर के कारण नफाई गिर गए थे ।

10 परन्तु इस बात से उन्हें निराशा हुई, क्योंकि नफाई उनसे डरे नहीं थे बल्कि उन्हें अपने परमेश्वर का भय था और उन्होंने सुरक्षा के लिए विनती की; इसलिए, जब गिडियान्ही की सेना उन पर धावा बोलने आई तब वे उनका सामना करने के लिए तैयार थे; हां, प्रभु के सामर्थ्य से उन्होंने उनका सामना किया ।

11 और छठवें महीने में युद्ध आरंभ हुआ; और इसके पश्चात युद्ध बहुत हुआ और भयानक था, हां, इसके पश्चात नरसंहार बहुत हुआ और भयानक था, इतना अधिक कि जब से लेही ने यरूशलेम छोड़ा था तब से लेकर अब तक लोगों में इतना भारी नरसंहार कभी नहीं हुआ था ।

12 और गिडियान्ही ने जो धमकियां दी थीं और जो शपथ खाई थी उसके बावजूद, देखो, नफाइयों ने उन्हें पराजित कर दिया, इतना अधिक कि वे उनके सामने से पीछे हटने लगे ।

13 और ऐसा हुआ कि गिडिगिडोनी ने अपनी सेना को निर्जन प्रदेश की सीमाओं तक उन लोगों का पीछा करने की आज्ञा दी, और यह कि रास्ते में जो भी उनके हाथ लग जाए उसे नहीं छोड़ना है; और इस प्रकार उन्होंने निर्जन प्रदेश की सीमाओं तक उनका पीछा किया और उनकी हत्या की, यहां तक कि उन्होंने ऐसा तब तक किया जब तक कि गिडिगिडोनी की आज्ञा पूरी नहीं हुई ।

And it came to pass that they did come up to battle; and it was in the sixth month; and behold, great and terrible was the day that they did come up to battle; and they were girded about after the manner of robbers; and they had a lamb-skin about their loins, and they were dyed in blood, and their heads were shorn, and they had head-plates upon them; and great and terrible was the appearance of the armies of Giddianhi, because of their armor, and because of their being dyed in blood.

And it came to pass that the armies of the Nephites, when they saw the appearance of the army of Giddianhi, had all fallen to the earth, and did lift their cries to the Lord their God, that he would spare them and deliver them out of the hands of their enemies.

And it came to pass that when the armies of Giddianhi saw this they began to shout with a loud voice, because of their joy, for they had supposed that the Nephites had fallen with fear because of the terror of their armies.

But in this thing they were disappointed, for the Nephites did not fear them; but they did fear their God and did supplicate him for protection; therefore, when the armies of Giddianhi did rush upon them they were prepared to meet them; yea, in the strength of the Lord they did receive them.

And the battle commenced in this the sixth month; and great and terrible was the battle thereof, yea, great and terrible was the slaughter thereof, insomuch that there never was known so great a slaughter among all the people of Lehi since he left Jerusalem.

And notwithstanding the threatenings and the oaths which Giddianhi had made, behold, the Nephites did beat them, insomuch that they did fall back from before them.

And it came to pass that Gidgiddoni commanded that his armies should pursue them as far as the borders of the wilderness, and that they should not spare any that should fall into their hands by the way; and thus they did pursue them and did slay them, to the borders of the wilderness, even until they had fulfilled the commandment of Gidgiddoni.

- 14 और ऐसा हुआ कि जिस गिडियान्ही ने निडरता से लड़ाई लड़ी उसका पीछा किया गया जब वह भागा था; और लड़कर अधिक थक जाने के कारण उसे पकड़ लिया गया और उसकी हत्या कर दी गई। और इस प्रकार डाकू गिडियान्ही का अंत हुआ।
- 15 और ऐसा हुआ कि नफाइयों की सेनाएं वापस अपने सुरक्षा के स्थान पर लौट आईं। और ऐसा हुआ कि यह उन्नीसवां वर्ष भी बीत गया, और डाकू फिर से युद्ध करने नहीं आए; न ही वे फिर से बीसवें वर्ष में आए।
- 16 और इक्कीसवें वर्ष में वे युद्ध करने नहीं आए, परन्तु वे चारों तरफ से नफी के लोगों को घेरने के लिए आए; क्योंकि उन्हें लगा कि वे नफी के लोगों को उनके ही प्रदेश से निकाल फेंकेंगे और उन्हें हर दिशा से घेर लेंगे, और उन्हें बाहर की सुविधाओं से वंचित रखेंगे ताकि वे उनकी इच्छानुसार अपना आत्मसमर्पण कर सकें।
- 17 अब उन्होंने अपने लिए एक नया मार्गदर्शक नियुक्त कर लिया था जिसका नाम था जीमनारिहा; इसलिए यह जीमनारिहा ही था जिसने चाहा था कि यह घेराबंदी हो।
- 18 परन्तु देखो, इससे नफाइयों को लाभ ही हुआ; उन्होंने जिन भोजन सामग्रियों का भंडार रखा था उसके कारण डाकुओं के लिए बहुत दिनों तक घेराबंदी करना असंभव था जिससे कि इसका प्रभाव नफाइयों पर पड़ सके।
- 19 और डाकुओं में भोजन सामग्रियों की कमी के कारण; क्योंकि देखो, उनके पास उनकी जीविका के लिए मांस के अलावा कुछ भी नहीं था, उस मांस के अलावा जिसे उन्होंने निर्जन प्रदेशों में हासिल किया था।
- 20 और ऐसा हुआ कि निर्जन प्रदेश में इस जंगली शिकार में इतनी अधिक कमी आ गई कि डाकू लगभग भूखमरी से नष्ट ही होनेवाले थे।
- 21 और नफाई दिन रात मार्च करते रहे और उनकी सेनाओं पर धावा बोलते रहे, और हजारों और लाखों की संख्या में उनका वध करते रहे।
- 22 और इस प्रकार दिन और रात जो भारी विनाश हो रहा था उसके कारण जीमनारिहा के लोगों की इच्छा थी कि वे अपने उद्देश्य से पीछे हट जाएं।

And it came to pass that Giddianhi, who had stood and fought with boldness, was pursued as he fled; and being weary because of his much fighting he was overtaken and slain. And thus was the end of Giddianhi the robber.

And it came to pass that the armies of the Nephites did return again to their place of security. And it came to pass that this nineteenth year did pass away, and the robbers did not come again to battle; neither did they come again in the twentieth year.

And in the twenty and first year they did not come up to battle, but they came up on all sides to lay siege round about the people of Nephi; for they did suppose that if they should cut off the people of Nephi from their lands, and should hem them in on every side, and if they should cut them off from all their outward privileges, that they could cause them to yield themselves up according to their wishes.

Now they had appointed unto themselves another leader, whose name was Zemnariyah; therefore it was Zemnariyah that did cause that this siege should take place.

But behold, this was an advantage to the Nephites; for it was impossible for the robbers to lay siege sufficiently long to have any effect upon the Nephites, because of their much provision which they had laid up in store,

And because of the scantiness of provisions among the robbers; for behold, they had nothing save it were meat for their subsistence, which meat they did obtain in the wilderness;

And it came to pass that the wild game became scarce in the wilderness insomuch that the robbers were about to perish with hunger.

And the Nephites were continually marching out by day and by night, and falling upon their armies, and cutting them off by thousands and by tens of thousands.

And thus it became the desire of the people of Zemnariyah to withdraw from their design, because of the great destruction which came upon them by night and by day.

- 23 और ऐसा हुआ कि जीमनारिहा ने अपने लोगों को आज्ञा दी कि वे अपनी घेराबंदी हटा लें, और उत्तरी प्रदेश में स्थित सबसे दूर के इलाकों में चले जाएं ।
- 24 और अब, क्योंकि गिडगिडोनी उनकी योजना से अवगत था, और भोजन की कमी के कारण उनकी कमजोरी को, और उनके बीच में हुए भारी नरसंहार को जानता था, इसलिए उसने अपनी सेनाओं को रात के समय में भेजा, और उनके वापसी के मार्ग को बंद करवा दिया, और उनके वापसी के मार्ग में अपनी सेना नियुक्त कर दी ।
- 25 और ऐसा उन्होंने रात के समय में किया, और मार्च करते हुए डाकूओं से आगे पहुंच गए ताकि अगले दिन, जब डाकू अपना मार्च आरंभ करें, तो उनका सामना नफाइयों की सेना से आगे और पीछे दोनों तरफ हो ।
- 26 और जो डाकू दक्षिणी दिशा में थे, वापस जाने के उनके मार्गों को भी बंद कर दिया गया । और यह सब गिडगिडोनी की आज्ञा से हुआ ।
- 27 और कई हजारों की संख्या में ऐसे लोग थे जिन्होंने स्वयं को बंदियों के रूप में नफाइयों को समर्पित कर दिया, और बाकी बचे हुए लोग मारे गए ।
- 28 और उनके मार्गदर्शक जीमनारिहा को पकड़ लिया गया और उसे एक पेड़ पर लटका दिया गया, यहां तक कि ऊपरी छोर तक जब तक कि वह मर न गया । और जब उन्होंने उसे लटकाकर मृत्युदंड दे दिया तब उन्होंने धरती तक पेड़ को काट डाला, और यह कहते हुए जोर-जोर से विनती करने लगे:
- 29 प्रभु अपने लोगों को धार्मिकता में और हृदय की पवित्रता में बचाए, ताकि जो लोग शक्ति और गुप्त गठबंधन के कारण उन्हें मारना चाहेंगे वे सारे मार गिराए जाएं, वैसे ही जैसे कि इस मनुष्य को धरती पर मार गिराया गया ।
- 30 और यह कहते हुए उन्होंने आनंद मनाया और फिर से विनती की: इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर अपने लोगों की धार्मिकता में तब तक रक्षा करें जब तक वे अपने परमेश्वर को सुरक्षा के लिए पुकारते रहें ।
- 31 और ऐसा हुआ कि उन्हें उनके शत्रुओं के हाथों में पड़ने से बचाने में उनके परमेश्वर ने जो भी उनके साथ महान कार्य किया था उसके लिए वे सब एक साथ गाने लगे और उसकी बड़ाई करने लगे ।

And it came to pass that Zemnarihah did give command unto his people that they should withdraw themselves from the siege, and march into the furthest parts of the land northward.

And now, Gidgiddoni being aware of their design, and knowing of their weakness because of the want of food, and the great slaughter which had been made among them, therefore he did send out his armies in the night-time, and did cut off the way of their retreat, and did place his armies in the way of their retreat.

And this did they do in the night-time, and got on their march beyond the robbers, so that on the morrow, when the robbers began their march, they were met by the armies of the Nephites both in their front and in their rear.

And the robbers who were on the south were also cut off in their places of retreat. And all these things were done by command of Gidgiddoni.

And there were many thousands who did yield themselves up prisoners unto the Nephites, and the remainder of them were slain.

And their leader, Zemnarihah, was taken and hanged upon a tree, yea, even upon the top thereof until he was dead. And when they had hanged him until he was dead they did fell the tree to the earth, and did cry with a loud voice, saying:

May the Lord preserve his people in righteousness and in holiness of heart, that they may cause to be felled to the earth all who shall seek to slay them because of power and secret combinations, even as this man hath been felled to the earth.

And they did rejoice and cry again with one voice, saying: May the God of Abraham, and the God of Isaac, and the God of Jacob, protect this people in righteousness, so long as they shall call on the name of their God for protection.

And it came to pass that they did break forth, all as one, in singing, and praising their God for the great thing which he had done for them, in preserving them from falling into the hands of their enemies.

32 हां, उन्होंने विनती की: सर्वोच्च परमेश्वर के लिए होशाना । और उन्होंने विनती की: सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, उच्चतम परमेश्वर का नाम आशीषित हो ।

33 और उन्हें उनके शत्रुओं के हाथों से बचाने में परमेश्वर की महान भलाई के कारण, भावुक होकर रोते हुए, उनके हृदय आनंद से भर गए; और वे जानते थे कि ऐसा उनके पश्चाताप और उनकी विनम्रता के कारण हुआ है कि उन्हें उनके अनंत विनाश से बचा लिया गया था ।

Yea, they did cry: Hosanna to the Most High God.  
And they did cry: Blessed be the name of the Lord  
God Almighty, the Most High God.

And their hearts were swollen with joy, unto the gushing out of many tears, because of the great goodness of God in delivering them out of the hands of their enemies; and they knew it was because of their repentance and their humility that they had been delivered from an everlasting destruction.

## 3 नफी 5

- 1 और अब देखो, नफाई लोगों में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जिसने पवित्र भविष्यवक्ताओं द्वारा बोली गई छोटी से छोटी बातों पर भी संदेह किया हो; क्योंकि वे जानते थे कि उनका पूरा होना अनिवार्य था।
- 2 और कई चिन्ह दिए गए थे, और भविष्यवक्ताओं की बातों के कारण वे जानते थे कि मसीह का आना आवश्यक था; और जो बातें पहले ही हो चुकी थीं उसके कारण वे जानते थे कि जो भी कहा गया है उसके अनुसार इन सारी बातों का होना आवश्यक है।
- 3 इसलिए उन्होंने अपने सारे पाप, और घृणित कार्य, और वेश्यावृत्ति छोड़ दी, और रात और दिन पूरी निष्ठा के साथ परमेश्वर की सेवा की।
- 4 और अब ऐसा हुआ कि जब उन्होंने सारे डाकुओं को इस तरह बंदी बना लिया कि जो मारे नहीं गए थे वे भाग न पाएं, तो उन्होंने अपने बंदियों को बंदीगृह में डाल दिया, और उनमें परमेश्वर के वचन का प्रचार कराया; और जितने लोगों ने अपने पापों का पश्चाताप किया और अनुबंध में प्रवेश किया कि अब वे हत्या नहीं करेंगे तो उन्हें आजाद कर दिया गया।
- 5 परन्तु बहुत से लोग थे जिन्होंने अनुबंध में प्रवेश नहीं किया, और जिन्होंने अपने हृदयों में अभी भी गुप्त हत्याओं को जारी रखा, हां, और जितने लोग अपने भाइयों से बोलते हुए और उन्हें धमकाते हुए पाए गए उनकी निंदा की गई और नियम के अनुसार उन्हें दंड दिया गया।
- 6 और इस प्रकार उन्होंने उन सभी दुष्ट, और गुप्त, और घृणित गठबंधनों का अंत कर दिया जिसमें बहुत से दुष्ट कार्य और बहुत सी हत्याएं हुई थीं।
- 7 और इस प्रकार बाइसवां वर्ष बीत गया, और तेइसवां वर्ष भी, और चौबीसवां वर्ष, और पच्चीसवां वर्ष भी; और इस प्रकार पच्चीस वर्ष बीत गए।
- 8 और बहुत सी बातों के बारे में पता चला जो कि कुछ लोगों की नजर में महान और अद्भुत थीं; फिर भी उन सबको पुस्तक में लिखा नहीं जा सकता था; हां, यहां तक कि इस पुस्तक में सौवें हिस्से को भी शामिल नहीं किया जा सकता जो इन पच्चीस वर्षों के दौरान लोगों के बीच में घटी थीं।

## 3 Nephi 5

And now behold, there was not a living soul among all the people of the Nephites who did doubt in the least the words of all the holy prophets who had spoken; for they knew that it must needs be that they must be fulfilled.

And they knew that it must be expedient that Christ had come, because of the many signs which had been given, according to the words of the prophets; and because of the things which had come to pass already they knew that it must needs be that all things should come to pass according to that which had been spoken.

Therefore they did forsake all their sins, and their abominations, and their whoredoms, and did serve God with all diligence day and night.

And now it came to pass that when they had taken all the robbers prisoners, insomuch that none did escape who were not slain, they did cast their prisoners into prison, and did cause the word of God to be preached unto them; and as many as would repent of their sins and enter into a covenant that they would murder no more were set at liberty.

But as many as there were who did not enter into a covenant, and who did still continue to have those secret murders in their hearts, yea, as many as were found breathing out threatenings against their brethren were condemned and punished according to the law.

And thus they did put an end to all those wicked, and secret, and abominable combinations, in the which there was so much wickedness, and so many murders committed.

And thus had the twenty and second year passed away, and the twenty and third year also, and the twenty and fourth, and the twenty and fifth; and thus had twenty and five years passed away.

And there had many things transpired which, in the eyes of some, would be great and marvelous; nevertheless, they cannot all be written in this book; yea, this book cannot contain even a hundredth part of what was done among so many people in the space of twenty and five years;

- 9 परन्तु देखो ऐसे अभिलेख भी हैं जिनमें इन लोगों की सारी कार्य-वाहियों को शामिल किया गया है; और नफी के द्वारा लघु परन्तु सच्चा विवरण दिया गया था ।
- 10 इसलिए नफी के अभिलेख के अनुसार मैंने इन चीजों का अपना अभिलेख बनाया है, जिन्हें पट्टियों पर अंकित किया गया था और जो नफी की पट्टियां कहलाती हैं ।
- 11 और देखो, मैंने पट्टियों पर उन अभिलेखों को भी अंकित किया है जिन्हें मैंने अपने स्वयं के हाथों से बनाया है ।
- 12 और देखो, मेरा नाम मॉरमन है, जिसका नाम मॉरमन प्रदेश के नाम पर रखा गया है, वह प्रदेश जिसमें अलमा ने लोगों के बीच में गिरजे को स्थापित किया था, हां, पहला गिरजा जिसे लोगों में उनके उल्लंघन के पश्चात स्थापित किया गया था ।
- 13 देखो, मैं परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह का एक शिष्य हूं । लोगों में उसके वचन के प्रचार के लिए मुझे बुलाया गया है, ताकि वे अनंत जीवन प्राप्त कर सकें ।
- 14 और यह आवश्यक हो गया है कि, परमेश्वर की इच्छानुसार, उन लोगों की प्रार्थनाओं से जो जा चुके हैं, जो कि पवित्र जन थे, और उनके विश्वास के अनुसार, जिन कार्यों को किया गया है मैं उनका अभिलेख लिखूँ—
- 15 हां, उन कार्यों का एक संक्षिप्त अभिलेख लिखूँ जो लेही के यरूशलेम छोड़ने के समय से लेकर वर्तमान समय तक हुई हैं ।
- 16 इसलिए मैं उन विवरणों से अपना अभिलेख लिखता हूं जो मुझे उन लोगों के द्वारा दिया गया है जो मेरे समय के आरंभ होने से पहले थे;
- 17 और फिर मैं उन चीजों का अभिलेख लिखता हूं जिन्हें मैंने अपनी स्वयं की आंखों से देखा है ।
- 18 और मुझे पता है कि मैं जिस अभिलेख को लिखता हूं वह एक उचित और सच्चा अभिलेख है; फिर भी हमारी भाषा के अनुसार, ऐसी बहुत सी चीजें हैं जिसे लिखने में हम समर्थ नहीं हैं ।
- 19 और अब मैं अपने कथन का अंत करता हूं, जो कि मेरे स्वयं का है, और उन चीजों के विवरण पर आगे बढ़ता हूं जो कि मुझसे पहले की हैं ।

But behold there are records which do contain all the proceedings of this people; and a shorter but true account was given by Nephi.

Therefore I have made my record of these things according to the record of Nephi, which was engraven on the plates which were called the plates of Nephi.

And behold, I do make the record on plates which I have made with mine own hands.

And behold, I am called Mormon, being called after the land of Mormon, the land in which Alma did establish the church among the people, yea, the first church which was established among them after their transgression.

Behold, I am a disciple of Jesus Christ, the Son of God. I have been called of him to declare his word among his people, that they might have everlasting life.

And it hath become expedient that I, according to the will of God, that the prayers of those who have gone hence, who were the holy ones, should be fulfilled according to their faith, should make a record of these things which have been done—

Yea, a small record of that which hath taken place from the time that Lehi left Jerusalem, even down until the present time.

Therefore I do make my record from the accounts which have been given by those who were before me, until the commencement of my day;

And then I do make a record of the things which I have seen with mine own eyes.

And I know the record which I make to be a just and a true record; nevertheless there are many things which, according to our language, we are not able to write.

And now I make an end of my saying, which is of myself, and proceed to give my account of the things which have been before me.

- 20 मैं मॉरमन हूँ, और लेही का एक सच्चा वंशज । मेरे पास अपने परमेश्वर और अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के गुणगान करने का कारण है कि वह हमारे पूर्वजों को यरूशलेम प्रदेश से बाहर लाया था (और इसके विषय में उसे और उन लोगों के अलावा किसी को भी नहीं पता था जिन्हें उसने प्रदेश से बाहर निकाला था) और यह कि उसने मुझे और मेरे लोगों को हमारी आत्माओं के उद्धार के विषय में इतना अधिक ज्ञान दिया ।
- 21 निश्चित तौर पर उसने याकूब के घराने को आशीषित किया है, और युसूफ के वंश के प्रति दयालु रहा है ।
- 22 और लेही की संतानों ने जितना ही उसकी आज्ञाओं का पालन किया है उतना ही उसने उन्हें आशीषित किया है और अपने वचन के अनुसार उन्हें समृद्ध बनाया है ।
- 23 हाँ, और निश्चित तौर पर वह फिर से युसूफ के बाकी बचे वंशों को उनके प्रभु परमेश्वर के बारे में ज्ञात कराएगा ।
- 24 और जिस निश्चितता से प्रभु जीवित है, वह याकूब के उन सभी बचे हुए वंशों को पृथ्वी की चारों दिशाओं से एकत्रित करेगा जो पूरी पृथ्वी पर दूर-दूर तक तितर-बितर हो गई हैं ।
- 25 और जैसा उसने याकूब के सभी घराने से अनुबंध बनाया है, ठीक उसी तरह से याकूब के घराने के जिन लोगों के साथ उसने अनुबंध बनाया है, वह उसके उचित समय में पूरी होंगी, याकूब के सभी घराने के उन लोगों को उस अनुबंध का ज्ञात कराते हुए जिसे उसने उनके साथ बनाया है ।
- 26 और तब वे अपने मुक्तिदाता को जानेंगे जो कि परमेश्वर का पुत्र, यीशु मसीह है; तब उन्हें पृथ्वी की चारों दिशाओं से उनके स्वयं के उस प्रदेशों में एकत्रित किया जाएगा जहां से तितर-बितर हुए थे; हाँ, जैसे प्रभु जीवित है वैसा ही होगा । आमीन ।

I am Mormon, and a pure descendant of Lehi. I have reason to bless my God and my Savior Jesus Christ, that he brought our fathers out of the land of Jerusalem, (and no one knew it save it were himself and those whom he brought out of that land) and that he hath given me and my people so much knowledge unto the salvation of our souls.

Surely he hath blessed the house of Jacob, and hath been merciful unto the seed of Joseph.

And insomuch as the children of Lehi have kept his commandments he hath blessed them and prospered them according to his word.

Yea, and surely shall he again bring a remnant of the seed of Joseph to the knowledge of the Lord their God.

And as surely as the Lord liveth, will he gather in from the four quarters of the earth all the remnant of the seed of Jacob, who are scattered abroad upon all the face of the earth.

And as he hath covenanted with all the house of Jacob, even so shall the covenant wherewith he hath covenanted with the house of Jacob be fulfilled in his own due time, unto the restoring all the house of Jacob unto the knowledge of the covenant that he hath covenanted with them.

And then shall they know their Redeemer, who is Jesus Christ, the Son of God; and then shall they be gathered in from the four quarters of the earth unto their own lands, from whence they have been dispersed; yea, as the Lord liveth so shall it be. Amen.

### 3 नफी 6

- 1 और ऐसा हुआ कि छब्बीसवें वर्ष में नफाड़ियों के सारे लोग अपने प्रदेश वापस लौट आए, प्रत्येक मनुष्य अपने परिवार, जानवरों के अपने समूहों और झुंडों, अपने घोड़ों और अपने मवेशियों के साथ, और उन सारी चीजों के साथ लौट आए जो उनका था ।
- 2 और ऐसा हुआ कि उन्होंने अपनी सारी खाद्य-सामग्रियों को नहीं खाया था; इसलिए उन्होंने अपने साथ वह सब ले लिया जिसे उन्होंने नहीं खाया था, हर प्रकार के अपने सारे अनाज, और अपना सोना, और अपनी चांदी, और अपनी सारी मूल्यवान वस्तुओं को ले लिया, और वे दोनों ही उत्तर और दक्षिण दिशा, और उत्तरी और दक्षिणी देश, अपने स्वयं के प्रदेश और अपने अधिकार क्षेत्रों में लौट आए ।
- 3 और उन्होंने उन सभी डाकुओं को उनकी संख्या के अनुसार जमीनें दे दीं जिन्होंने प्रदेश में शांति बनाए रखने के अनुबंध में प्रवेश किया था, ताकि वे अपने परिश्रम से अपना निर्वाह कर सकें; और इस प्रकार उन्होंने पूरे प्रदेश में शांति स्थापित की ।
- 4 और वे फिर से समृद्ध होने लगे और आगे बढ़ने लगे; और छब्बीसवां और सत्तइसवां वर्ष बीत गया, और प्रदेश में महान प्रबंध था; और समानता और न्याय के अनुसार उन्होंने कानून व्यवस्था बनाई ।
- 5 और सिवाय लोगों के स्वयं अपराध करने के अलावा, अब प्रदेश में ऐसी कोई भी चीज नहीं थी जो निरंतर समृद्ध होने से उन्हें रोक सके ।
- 6 और अब यह गिदोनी, और न्यायी लकोनियस, और जिन्हें मार्गदर्शकों के रूप में नियुक्त किया गया था वही लोग थे जिन्होंने प्रदेश में महान शांति स्थापित की थी ।
- 7 और ऐसा हुआ कि कई नए नगरों का निर्माण किया गया, और कई पुराने नगरों की मरम्मत की गई ।
- 8 और कई प्रमुख मार्गों, और सड़कों को बनाया गया, जो कि एक नगर से दूसरे नगर तक, और एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश तक, और एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते थे ।
- 9 और इस प्रकार अठ्ठाइसवां वर्ष बीत गया, और लोगों में निरंतर शांति बनी रही ।

### 3 Nephi 6

And now it came to pass that the people of the Nephites did all return to their own lands in the twenty and sixth year, every man, with his family, his flocks and his herds, his horses and his cattle, and all things whatsoever did belong unto them.

And it came to pass that they had not eaten up all their provisions; therefore they did take with them all that they had not devoured, of all their grain of every kind, and their gold, and their silver, and all their precious things, and they did return to their own lands and their possessions, both on the north and on the south, both on the land northward and on the land southward.

And they granted unto those robbers who had entered into a covenant to keep the peace of the land, who were desirous to remain Lamanites, lands, according to their numbers, that they might have, with their labors, wherewith to subsist upon; and thus they did establish peace in all the land.

And they began again to prosper and to wax great; and the twenty and sixth and seventh years passed away, and there was great order in the land; and they had formed their laws according to equity and justice.

And now there was nothing in all the land to hinder the people from prospering continually, except they should fall into transgression.

And now it was Gidgiddoni, and the judge, Lachoneus, and those who had been appointed leaders, who had established this great peace in the land.

And it came to pass that there were many cities built anew, and there were many old cities repaired.

And there were many highways cast up, and many roads made, which led from city to city, and from land to land, and from place to place.

And thus passed away the twenty and eighth year, and the people had continual peace.



- 10 परन्तु ऐसा हुआ कि उनतीसवें वर्ष में लोगों में थोड़ा बहुत मतभेद होने लगा; और कुछ लोगों में अपनी अत्याधिक धन-संपत्ति के कारण अहंकार आ गया, हां, यहां तक कि भारी उत्पीड़न होने लगा ।
- 11 क्योंकि प्रदेश में कई व्यापारी, और कई वकील भी, और कई अधिकारी थे ।
- 12 और उनकी धन-संपत्तियों और सीखने के उनके अवसरों के अनुसार, लोगों में पदों को लेकर अंतर आने लगा; हां, कुछ लोग अपनी गरीबी के कारण अनपढ़ थे, और कुछ लोगों ने अपनी धन-संपत्तियों के कारण अत्याधिक शिक्षा प्राप्त कर ली ।
- 13 कुछ लोग अहंकार में फूले हुए थे, और अन्य अत्याधिक विनम्र थे; कुछ लोग गाली के बदले गाली देते थे जब कि अन्य गाली और उत्पीड़न और हर प्रकार के कष्टों को सहन करते थे, और पलटकर उन्हें भला-बुरा नहीं कहते थे, परन्तु परमेश्वर के सामने विनम्र और पश्चात्तापी रहते थे ।
- 14 और इस प्रकार पूरे प्रदेश में एक भारी असमानता हो गई, इतना अधिक कि गिरजा बिखरने लगा; हां, इतना अधिक कि तीसवें वर्ष में पूरे प्रदेश में गिरजा बिखर चुका था सिवाय कुछ उन लमनाइयों को छोड़कर जो सच्चे विश्वास में परिवर्तित हुए थे; और वे उससे अलग नहीं हुए क्योंकि प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने में वे दृढ़, और अडिग, और अटल, और पूरी निष्ठा से इच्छुक थे ।
- 15 अब लोगों में इस असमानता का कारण था—हर प्रकार की दुष्टता करने में लोगों को भड़काने, उन्हें अहंकार में फुलाने, सत्ता, अधिकार, धन-संपत्ति, और संसार की व्यर्थ चीजों को पाने के प्रति उन्हें लालच देने में शैतान बहुत शक्तिशाली था ।
- 16 और इस प्रकार हर तरह का अधर्म करने के लिए शैतान ने लोगों के हृदयों को बहकाया; इसलिए उन्होंने आनंद उठाया परन्तु कुछ वर्षों के लिए ही ।
- 17 और इस प्रकार, इकतीसवें वर्ष के आरंभ में—एक लंबे समय तक के लिए शैतान अपने प्रलोभनों द्वारा लोगों को जहां चाहता वहीं ले जाता, और अपनी इच्छानुसार उनसे अधर्म करवाता—और इस प्रकार तीसवें वर्ष के आरंभ में, वे एक बहुत ही भयावह दुष्टता की स्थिति में थे ।

But it came to pass in the twenty and ninth year there began to be some disputings among the people; and some were lifted up unto pride and boastings because of their exceedingly great riches, yea, even unto great persecutions;

For there were many merchants in the land, and also many lawyers, and many officers.

And the people began to be distinguished by ranks, according to their riches and their chances for learning; yea, some were ignorant because of their poverty, and others did receive great learning because of their riches.

Some were lifted up in pride, and others were exceedingly humble; some did return railing for railing, while others would receive railing and persecution and all manner of afflictions, and would not turn and revile again, but were humble and penitent before God.

And thus there became a great inequality in all the land, insomuch that the church began to be broken up; yea, insomuch that in the thirtieth year the church was broken up in all the land save it were among a few of the Lamanites who were converted unto the true faith; and they would not depart from it, for they were firm, and steadfast, and immovable, willing with all diligence to keep the commandments of the Lord.

Now the cause of this iniquity of the people was this—Satan had great power, unto the stirring up of the people to do all manner of iniquity, and to the puffing them up with pride, tempting them to seek for power, and authority, and riches, and the vain things of the world.

And thus Satan did lead away the hearts of the people to do all manner of iniquity; therefore they had enjoyed peace but a few years.

And thus, in the commencement of the thirtieth year—the people having been delivered up for the space of a long time to be carried about by the temptations of the devil whithersoever he desired to carry them, and to do whatsoever iniquity he desired they should—and thus in the commencement of this, the thirtieth year, they were in a state of awful wickedness.

- 18 अब वे अज्ञानता में पाप नहीं कर रहे थे, क्योंकि वे उनसे संबंधित परमेश्वर की इच्छा को जानते थे, क्योंकि उन्हें यह सिखाया गया था; इसलिए वे जानबूझकर परमेश्वर के विरुद्ध हुए ।
- 19 और अब यह लकोनियस के बेटे, लकोनियस का समय था, क्योंकि लकोनियस अपने पिता के स्थान पर नियुक्त हुआ और उस वर्ष लोगों पर शासन किया ।
- 20 और यहां पर लोग स्वर्ग से प्रेरित हुए और पूरे प्रदेश में उन्हें लोगों के बीच भेजा गया, लोगों को सिखाने के लिए और उनके पापों और उनकी बुराइयों को निडरता से बताने के लिए, और उस मुक्ति से संबंधित उन्हें गवाही देने के लिए जो प्रभु अपने लोगों को देगा, या अन्य शब्दों में कहें तो मसीह का पुनरुत्थान; और उन्होंने निडरता से उसकी मृत्यु और उसके उत्पीड़न की गवाही दी ।
- 21 अब कई ऐसे लोग थे जो इन बातों की गवाही के कारण उनसे अत्याधिक क्रोधित हुए; और जो लोग क्रोधित थे वे मुख्यतः मुख्य न्यायी थे, और वे उच्च याजक और वकील थे; हां, वे सब वकील थे जो उन लोगों से क्रोधित थे जिन्होंने इन बातों की गवाही दी थी ।
- 22 अब ऐसा कोई वकील या न्यायी या उच्च याजक नहीं था जिसके पास किसी को भी मृत्युदंड देने का अधिकार था, सिर्फ प्रदेश के शासक के हस्ताक्षर द्वारा इस दंड की आज्ञा को दिया जा सकता था ।
- 23 अब कई लोग थे जिन्होंने मसीह से संबंधित बातों की गवाही निडरता से दी थी, जिन्हें पकड़कर न्यायियों द्वारा गुप्त रूप से मृत्युदंड दिया गया, कि प्रदेश के शासक को उनकी मृत्यु की सूचना तब तक नहीं मिली जब तक कि उनकी मृत्यु न हो गई ।
- 24 अब देखो, किसी भी व्यक्ति को प्रदेश के शासक के बिना अधिकार के मृत्युदंड दिया जाना प्रदेश के नियम के विरुद्ध था ।
- 25 इसलिए जराहेमला प्रदेश में, प्रदेश के शासक के पास इन न्यायियों के खिलाफ एक शिकायत आई जिन्होंने बिना कानून-व्यवस्था के प्रभु के भविष्यवक्ताओं को मृत्युदंड दिया था ।
- 26 अब ऐसा हुआ कि उन्हें पकड़कर न्यायी के सामने लाया गया ताकि जो अपराध उन्होंने किया था उसका न्याय उस नियम के अनुसार हो सके जिसे लोगों के मतों द्वारा बनाया गया था ।

Now they did not sin ignorantly, for they knew the will of God concerning them, for it had been taught unto them; therefore they did wilfully rebel against God.

And now it was in the days of Lachoneus, the son of Lachoneus, for Lachoneus did fill the seat of his father and did govern the people that year.

And there began to be men inspired from heaven and sent forth, standing among the people in all the land, preaching and testifying boldly of the sins and iniquities of the people, and testifying unto them concerning the redemption which the Lord would make for his people, or in other words, the resurrection of Christ; and they did testify boldly of his death and sufferings.

Now there were many of the people who were exceedingly angry because of those who testified of these things; and those who were angry were chiefly the chief judges, and they who had been high priests and lawyers; yea, all those who were lawyers were angry with those who testified of these things.

Now there was no lawyer nor judge nor high priest that could have power to condemn any one to death save their condemnation was signed by the governor of the land.

Now there were many of those who testified of the things pertaining to Christ who testified boldly, who were taken and put to death secretly by the judges, that the knowledge of their death came not unto the governor of the land until after their death.

Now behold, this was contrary to the laws of the land, that any man should be put to death except they had power from the governor of the land—

Therefore a complaint came up unto the land of Zarahemla, to the governor of the land, against these judges who had condemned the prophets of the Lord unto death, not according to the law.

Now it came to pass that they were taken and brought up before the judge, to be judged of the crime which they had done, according to the law which had been given by the people.

27 अब ऐसा हुआ कि उन न्यायियों के कई मित्र और रिश्तेदार थे; और बाकी बचे लोग, हां, यहां तक कि लगभग सारे वकील और उच्च याजक एकत्रित हुए, और उन न्यायियों के रिश्तेदारों के साथ मिल गए जिनका नियम के अनुसार न्याय होना था ।

28 और उन्होंने एक दूसरे के साथ एक अनुबंध में प्रवेश किया, हां, यहां तक कि उस अनुबंध में भी प्रवेश किया जो उन्हें आदिकाल से दिया गया था, जिसे सारी धार्मिकता के विरुद्ध एकजुट होने के लिए शैतान द्वारा दिया और प्रबंधित किया गया था ।

29 इसलिए वे प्रभु के लोगों के विरुद्ध एकजुट हुए, और उनके विनाश के लिए एक अनुबंध में प्रवेश किया, और उन लोगों को बचाने के लिए जो न्याय के अनुसार हत्या के अपराधी थे, और जिन्हें नियम के अनुसार दंड दिया जाना था ।

30 और उन्होंने अपने प्रदेश के नियम और अधिकारों का अनादर किया; और उन्होंने शासक का नाश करने के लिए और प्रदेश पर एक राजा नियुक्त करने के लिए एक दूसरे के साथ अनुबंध बनाया, कि प्रदेश में अब कोई स्वाधीनता नहीं होनी चाहिए बल्कि इसे राजाओं के अधीन होना चाहिए ।

Now it came to pass that those judges had many friends and kindreds; and the remainder, yea, even almost all the lawyers and the high priests, did gather themselves together, and unite with the kindreds of those judges who were to be tried according to the law.

And they did enter into a covenant one with another, yea, even into that covenant which was given by them of old, which covenant was given and administered by the devil, to combine against all righteousness.

Therefore they did combine against the people of the Lord, and enter into a covenant to destroy them, and to deliver those who were guilty of murder from the grasp of justice, which was about to be administered according to the law.

And they did set at defiance the law and the rights of their country; and they did covenant one with another to destroy the governor, and to establish a king over the land, that the land should no more be at liberty but should be subject unto kings.

### 3 नफी 7

- 1 अब देखो, मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि उन्होंने प्रदेश पर कोई राजा नियुक्त नहीं किया; बल्कि इसी वर्ष में, हां, तीसवें वर्ष में, उन्होंने न्याय-आसन को नष्ट कर दिया, हां, प्रदेश के मुख्य न्यायी की हत्या कर दी ।
- 2 और लोग एक दूसरे से अलग हो गए; और वे जातियों के आधार पर एक दूसरे से अलग हो गए, प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार और अपने रिश्तेदार और मित्रों के अनुसार अलग हो गया; और इस प्रकार उन्होंने प्रदेश के प्रशासन को नष्ट कर दिया ।
- 3 और प्रत्येक जाति ने अपने लिए एक मुखिया या एक मार्गदर्शक नियुक्त किया; और इस प्रकार जातियां और जातियों पर मार्गदर्शक बनाए गए ।
- 4 अब देखो, उनके बीच में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जिसके पास बड़ा परिवार और कई रिश्तेदार और मित्र न हों; इसलिए उनकी जातियां बहुत बढ़ गईं ।
- 5 अब यह सब हो गया, और उनमें अभी तक कोई युद्ध नहीं हुआ; और लोगों में ये सब बुराइयां इसलिए आ गईं क्योंकि उन्होंने अपने आपको शैतान के हवाले कर दिया था ।
- 6 और जिन लोगों ने भविष्यवक्ताओं की हत्या की थी, उनके मित्रों और रिश्तेदारों के गुप्त गठबंधन के कारण प्रशासन के नियम भंग हो गए ।
- 7 और उन्होंने प्रदेश में भारी मतभेद उत्पन्न किया, इतना अधिक कि लोगों का जो भाग अत्याधिक धार्मिक माना जाता था वह लगभग दुष्ट हो गया; हां, उनमें बहुत थोड़े से ही लोग थे जो धर्मी रह गए थे ।
- 8 और इस प्रकार छह वर्ष भी नहीं बीते थे कि अधिकतर लोग अपनी धार्मिकता से विमुख हो गए थे, जैसे कि कुत्ता अपनी उलटी की तरफ जाता है और सुअरनी अपने कीचड़ में लोटने जाती है ।
- 9 अब यह गुप्त गठबंधन, जिसके कारण लोगों में बहुत अधर्म आया था, उन्होंने अपने आपको एकत्रित किया, और उन्होंने एक व्यक्ति को अपना मुखिया बनाया जिसे वे याकूब बुलाते थे;
- 10 उन्होंने उसे अपना राजा बुलाया; इसलिए वह इस दुष्ट टोली का राजा बन गया; और वह उन मुख्य लोगों में से एक था जिसने उन भविष्यवक्ताओं के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई थी जिन्होंने मसीह की गवाही दी थी ।

### 3 Nephi 7

Now behold, I will show unto you that they did not establish a king over the land; but in this same year, yea, the thirtieth year, they did destroy upon the judgment-seat, yea, did murder the chief judge of the land.

And the people were divided one against another; and they did separate one from another into tribes, every man according to his family and his kindred and friends; and thus they did destroy the government of the land.

And every tribe did appoint a chief or a leader over them; and thus they became tribes and leaders of tribes.

Now behold, there was no man among them save he had much family and many kindreds and friends; therefore their tribes became exceedingly great.

Now all this was done, and there were no wars as yet among them; and all this iniquity had come upon the people because they did yield themselves unto the power of Satan.

And the regulations of the government were destroyed, because of the secret combination of the friends and kindreds of those who murdered the prophets.

And they did cause a great contention in the land, insomuch that the more righteous part of the people had nearly all become wicked; yea, there were but few righteous men among them.

And thus six years had not passed away since the more part of the people had turned from their righteousness, like the dog to his vomit, or like the sow to her wallowing in the mire.

Now this secret combination, which had brought so great iniquity upon the people, did gather themselves together, and did place at their head a man whom they did call Jacob;

And they did call him their king; therefore he became a king over this wicked band; and he was one of the chiefest who had given his voice against the prophets who testified of Jesus.

11 और ऐसा हुआ कि उन लोगों की जातियों के समान इनकी संख्या बहुत नहीं थी, जो कि एक साथ मिल गए थे, और जिनके प्रत्येक मार्गदर्शकों ने अपनी जाति के अनुसार अपना कानून बनाया था; फिर भी वे शत्रु थे; और इसके बावजूद वे धर्मी लोग नहीं थे, तब भी वे उन लोगों के प्रति ईर्ष्या में एक थे जिन्होंने प्रशासन को नष्ट करने के लिए एक अनुबंध में प्रवेश किया था।

12 इसलिए, याकूब ने देखा कि उनके शत्रुओं की संख्या उनसे अधिक थी, वह टोली का राजा था, इसलिए उसने अपने लोगों को आज्ञा दी कि उन्हें प्रदेश के उत्तरी छोर पर भाग जाना चाहिए, और वहां पर उन्हें एक राज्य का निर्माण तब तक करना चाहिए जब तक कि वे विपक्षियों से जुड़ न जाएं, (क्योंकि उसने उन्हें बहकाया था कि विपक्षियों की संख्या बहुत होगी) और लोगों की जातियों के साथ लड़ाई करने के लिए वे काफी में मजबूत हो जाएंगे; और उन्होंने ऐसा किया।

13 और वे इतनी तेजी से चले कि उन्हें तब तक किसी भी बाधा का सामना नहीं करना पड़ा जब तक कि वे लोगों की पहुंच से दूर न हो गए। और इस प्रकार तीसवां वर्ष समाप्त हो गया; और इस प्रकार नफी के लोगों का घटनाक्रम भी।

14 और ऐसा हुआ कि इकतीसवें वर्ष में हर व्यक्ति अपने परिवार और अपने रिश्तेदार और मित्रों के साथ जातियों में विभाजित हो गया; फिर भी उन्होंने एक अनुबंध बनाया कि वे एक दूसरे के साथ युद्ध नहीं करेंगे; परन्तु वे अपने कानून और प्रशासन के अपने तरीकों में एक नहीं हुए क्योंकि वे चीजें उन लोगों द्वारा स्थापित की गई थीं जो उनके मुखिया और मार्गदर्शक थे। परन्तु उन्होंने सख्त कानून बनाया कि एक जाति दूसरी जाति के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी जिससे कि प्रदेश में कुछ हद तक शांति बनी रहे; फिर भी उनके हृदय प्रभु अपने परमेश्वर से विमुख थे, और उन्होंने भविष्यवक्ताओं पर पत्थरवाह किया और उन्हें अपने बीच में से निकाल दिया।

15 और ऐसा हुआ कि नफी—जिससे स्वर्गदूतों की भेंट हो चुकी थी और जिससे प्रभु की वाणी ने बात की थी, इसलिए उसने स्वर्गदूतों को देखा था, और जो प्रत्यक्षदर्शी रहा था, और जिसे सामर्थ्य दिया गया था ताकि वह मसीह की सेवकाई से संबंधित बातें जान सके, और जो उनके बहुत जल्दी ही धार्मिकता से दुष्टता और घृणित कार्यों की तरफ जाने का प्रत्यक्षदर्शी रहा था;

And it came to pass that they were not so strong in number as the tribes of the people, who were united together save it were their leaders did establish their laws, every one according to his tribe; nevertheless they were enemies; notwithstanding they were not a righteous people, yet they were united in the hatred of those who had entered into a covenant to destroy the government.

Therefore, Jacob seeing that their enemies were more numerous than they, he being the king of the band, therefore he commanded his people that they should take their flight into the northernmost part of the land, and there build up unto themselves a kingdom, until they were joined by dissenters, (for he flattered them that there would be many dissenters) and they become sufficiently strong to contend with the tribes of the people; and they did so.

And so speedy was their march that it could not be impeded until they had gone forth out of the reach of the people. And thus ended the thirtieth year; and thus were the affairs of the people of Nephi.

And it came to pass in the thirty and first year that they were divided into tribes, every man according to his family, kindred and friends; nevertheless they had come to an agreement that they would not go to war one with another; but they were not united as to their laws, and their manner of government, for they were established according to the minds of those who were their chiefs and their leaders. But they did establish very strict laws that one tribe should not trespass against another, insomuch that in some degree they had peace in the land; nevertheless, their hearts were turned from the Lord their God, and they did stone the prophets and did cast them out from among them.

And it came to pass that Nephi—having been visited by angels and also the voice of the Lord, therefore having seen angels, and being eye-witness, and having had power given unto him that he might know concerning the ministry of Christ, and also being eye-witness to their quick return from righteousness unto their wickedness and abominations;

- 16 इसलिए, उनके हृदय की कठोरता और उनके मन के अंधेपन के कारण जो दुखी हुआ था—उसी वर्ष उनके बीच गया, और निडरता से पश्चाताप और प्रभु यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा पापों की क्षमा की गवाही देने लगा ।
- 17 और उसने उनके लिए कई सेवा कार्य किये; और सबको लिखा नहीं जा सकता है, और उनका एक भाग पर्याप्त नहीं होता, इसलिए उन्हें इस पुस्तक में नहीं लिखा गया । और नफी ने सामर्थ्य और महान अधिकार के साथ सेवा की ।
- 18 और ऐसा हुआ कि वे उससे क्रोधित हुए, यहां तक कि उसके पास उनसे अधिक सामर्थ्य था जिसके कारण यह संभव नहीं था कि वे उसकी बातों पर अविश्वास कर सकें, क्योंकि उसका विश्वास प्रभु यीशु मसीह पर इतना अधिक था कि प्रतिदिन स्वर्गादूत उसकी सहायता करते थे ।
- 19 और यीशु के नाम में उसने शैतान और बुरी आत्माओं को बाहर निकाला; और यहां तक कि उसने अपने भाई को मरे हुआओं में से जीवित किया जब उस पर लोगों ने पत्थरवाह कर उसे मार डाला था ।
- 20 और लोगों ने इसे देखा, और इसकी साक्षी दी, और उसकी शक्ति के कारण उससे क्रोधित हुए; और उसने यीशु के नाम में, लोगों की नजर के सामने कई और चमत्कार किये ।
- 21 और ऐसा हुआ कि इकतीसवां वर्ष बीत गया, और कुछ ही लोग थे जो प्रभु में परिवर्तित हुए; परन्तु जितने भी लोग परिवर्तित हुए थे उन्होंने लोगों को वास्तविकता बताई कि उन पर परमेश्वर की वह शक्ति और आत्मा आई थी, जो यीशु मसीह में थी जिसमें उन्होंने विश्वास किया ।
- 22 और जितने लोग बुरी आत्माओं से ग्रसित थे उनमें से उन्हें निकाला गया, और उनकी बीमारी और उनकी दुर्बलता से उन्हें चंगाई मिली, उन्होंने लोगों को सच्चाई बताई कि परमेश्वर की आत्मा उन पर आई थी, और वे चंगे हो गए; और उन्होंने होनेवाले चिन्ह भी दिखाए और लोगों के बीच में कुछ चमत्कार किया ।
- 23 इस प्रकार बत्तीसवां वर्ष भी बीत गया । और तैंतीसवें वर्ष के आरंभ में नफी ने लोगों को पुकारा; और उसने उन्हें पश्चाताप और पापों की क्षमा के बारे में सिखाया ।
- 24 अब मैं तुम्हें याद भी दिलाना चाहूंगा कि बिना पानी से बपितस्मा लिए किसी को भी पश्चाताप में नहीं लाया गया था ।

Therefore, being grieved for the hardness of their hearts and the blindness of their minds—went forth among them in that same year, and began to testify, boldly, repentance and remission of sins through faith on the Lord Jesus Christ.

And he did minister many things unto them; and all of them cannot be written, and a part of them would not suffice, therefore they are not written in this book. And Nephi did minister with power and with great authority.

And it came to pass that they were angry with him, even because he had greater power than they, for it were not possible that they could disbelieve his words, for so great was his faith on the Lord Jesus Christ that angels did minister unto him daily.

And in the name of Jesus did he cast out devils and unclean spirits; and even his brother did he raise from the dead, after he had been stoned and suffered death by the people.

And the people saw it, and did witness of it, and were angry with him because of his power; and he did also do many more miracles, in the sight of the people, in the name of Jesus.

And it came to pass that the thirty and first year did pass away, and there were but few who were converted unto the Lord; but as many as were converted did truly signify unto the people that they had been visited by the power and Spirit of God, which was in Jesus Christ, in whom they believed.

And as many as had devils cast out from them, and were healed of their sicknesses and their infirmities, did truly manifest unto the people that they had been wrought upon by the Spirit of God, and had been healed; and they did show forth signs also and did do some miracles among the people.

Thus passed away the thirty and second year also. And Nephi did cry unto the people in the commencement of the thirty and third year; and he did preach unto them repentance and remission of sins.

Now I would have you to remember also, that there were none who were brought unto repentance who were not baptized with water.

25      इसलिए, इस कार्य में वे नफी द्वारा नियुक्त हुए, कि जो भी उनके पास आए उसे पानी से बपतिस्मा दिया जाए, और यह परमेश्वर के समक्ष और लोगों के लिए एक साक्षी और गवाही के रूप में थी कि उन्होंने पश्चाताप किया था और अपने पापों से क्षमा प्राप्त की थी ।

26      और इस वर्ष के आरंभ में ऐसे कई लोग जिन्होंने पश्चाताप कर बपतिस्मा लिया था; और इस प्रकार वर्ष का अधिकतर समय बीत गया ।

Therefore, there were ordained of Nephi, men unto this ministry, that all such as should come unto them should be baptized with water, and this as a witness and a testimony before God, and unto the people, that they had repented and received a remission of their sins.

And there were many in the commencement of this year that were baptized unto repentance; and thus the more part of the year did pass away.

### 3 नफी 8

- 1 और अब ऐसा हुआ कि हमारे अभिलेख के अनुसार, और हम जानते हैं कि हमारा अभिलेख सत्य है, क्योंकि देखो, इस अभिलेख को रखनेवाला एक न्यायी व्यक्ति था—क्योंकि उसने वास्तव में यीशु के नाम में कई चमत्कार किये थे; और ऐसा कोई भी व्यक्ति अपने पापों से पूर्ण रूप से शुद्ध हुए बिना यीशु के नाम में चमत्कार नहीं कर सकता—
- 2 और अब ऐसा हुआ कि यदि हमारे समय की गणना में इस व्यक्ति के द्वारा कोई भी गलती नहीं हुई थी, तो तैंतीसवां वर्ष बीत चुका था;
- 3 और बड़ी ही गंभीरता से लोग उस चिन्ह की प्रतीक्षा करने लगे जिसके विषय में लमनाई भविष्यवक्ता समूहल द्वारा बताया गया था, हां, उस समय की जब धरती पर तीन दिनों के लिए अंधकार छा जाएगा ।
- 4 और इतने सारे चिन्हों के विषय में बताए जाने के बावजूद भी लोगों के बीच में भारी संदेह और विवाद होने लगे ।
- 5 और ऐसा हुआ कि चौतीसवें वर्ष के, पहले माह के चौथे दिन पर एक भारी तूफान आया, इतना भारी कि इसके जैसा प्रदेश में पहले कभी नहीं आया था ।
- 6 और एक भारी और भयानक हलचल भी हुई; बिजली की गड़गड़ाहट इतनी तेज थी कि पूरी धरती ऐसे हिली मानो वह लगभग अलग ही होनेवाली थी ।
- 7 और बहुत ही तेजी से बिजली चमकने लगी, इतनी तेजी से कि इसके जैसे प्रदेश में पहले कभी नहीं चमकी थी ।
- 8 और जराहेमला नगर में आग लग गई ।
- 9 और मोरोनी नगर समुद्र की गहराई में डूब गया, और उसमें रहनेवाले निवासी डूब गए ।
- 10 और मोरोनिहा नगर पर इतनी अधिक मिट्टी जमा हो गई कि नगर के स्थान पर एक भारी पर्वत खड़ा हो गया ।
- 11 और प्रदेश के दक्षिणी हिस्से में एक भारी और भयंकर विनाश हुआ ।
- 12 परन्तु देखो, उत्तरी प्रदेश में और भी भारी और भयानक विनाश हुआ; क्योंकि देखो, आंधी-तूफान और बवंडरों, और गड़गड़ाहट और बिजली की चमक, और पूरी धरती पर भारी भूचाल के कारण प्रदेश का रंग-रूप ही बदल गया था ।

### 3 Nephi 8

And now it came to pass that according to our record, and we know our record to be true, for behold, it was a just man who did keep the record—for he truly did many miracles in the name of Jesus; and there was not any man who could do a miracle in the name of Jesus save he were cleansed every whit from his iniquity—

And now it came to pass, if there was no mistake made by this man in the reckoning of our time, the thirty and third year had passed away;

And the people began to look with great earnestness for the sign which had been given by the prophet Samuel, the Lamanite, yea, for the time that there should be darkness for the space of three days over the face of the land.

And there began to be great doubtings and disputations among the people, notwithstanding so many signs had been given.

And it came to pass in the thirty and fourth year, in the first month, on the fourth day of the month, there arose a great storm, such an one as never had been known in all the land.

And there was also a great and terrible tempest; and there was terrible thunder, insomuch that it did shake the whole earth as if it was about to divide asunder.

And there were exceedingly sharp lightnings, such as never had been known in all the land.

And the city of Zarahemla did take fire.

And the city of Moroni did sink into the depths of the sea, and the inhabitants thereof were drowned.

And the earth was carried up upon the city of Moronihah, that in the place of the city there became a great mountain.

And there was a great and terrible destruction in the land southward.

But behold, there was a more great and terrible destruction in the land northward; for behold, the whole face of the land was changed, because of the tempest and the whirlwinds, and the thunderings and the lightnings, and the exceedingly great quaking of the whole earth;



- 13 और मुख्य मार्ग टूट गए थे, और सपाट सड़कें नष्ट हो गई थीं, और कई समतल स्थान ऊबड़-खाबड़ हो गए थे ।
- 14 और कई महान और प्रसिद्ध नगर बर्बाद हो गए, और कई जल गए, और हिलने से इमारतें धरती पर गिर गईं, और उनके निवासी मारे गए, और वे जगहें उजाड़ हो गईं ।
- 15 और कुछ नगर ऐसे भी थे जो बच गए थे; परन्तु वहां पर भी भारी क्षति हुई थी, और उनके भी कई निवासी मारे गए थे ।
- 16 और कुछ लोग थे जिन्हें बवंडर अपने साथ उड़ा ले गए; और केवल यह जानने के अलावा कि उन्हें उड़ा ले जाया गया, कोई भी यह नहीं जानता था कि वे कहां गए ।
- 17 और इस प्रकार आंधी-तूफानों, और गड़गड़ाहट, और बिजली की चमक, और धरती पर भारी भूचाल के कारण पूरी धरती कुरूप हो गई थी ।
- 18 और देखो, चट्टानें दो टुकड़ों में विभाजित हो गईं; पूरी धरती के ऊपर चट्टानें टूट गईं, इतना अधिक कि पूरे प्रदेश में टूटे हुए टुकड़े, निशान और दरारें ही दिखाई देने लगीं ।
- 19 और ऐसा हुआ कि जब गड़गड़ाहट, और बिजली का चमकना, और तूफान, और आंधी, और धरती पर भूचाल बंद हो गया—क्योंकि देखो, यह सब लगभग तीन घंटों तक होता रहा; और कुछ लोगों ने कहा कि यह अधिक समय तक हुआ था; फिर भी, यह सब महान और भयानक चीजें लगभग तीन घंटों तक होती रहीं—और फिर देखो, पूरे प्रदेश पर अंधकार छा गया ।
- 20 और ऐसा हुआ कि पूरे प्रदेश पर घोर अंधकार छा गया, इतना अधिक कि जो निवासी धरती पर गिरे पड़े थे वे अंधकार के बादल को महसूस कर सकते थे;
- 21 और अंधकार के कारण कहीं कोई प्रकाश न हो सका, और न तो मोम बत्तियां; न ही मशालें; और अच्छी और सूखी लकड़ियों के होने के बावजूद न तो आग जलाई जा सकी, इसलिए बिलकुल भी प्रकाश न हो सका;
- 22 और कहीं कोई प्रकाश दिखाई नहीं दे रहा था, न ही आग, न टिम-टिमाहट, न सूर्य, न चांद, न तारे दिखाई दे रहे थे, क्योंकि पूरे प्रदेश पर अंधकार की धुंध थी ।

And the highways were broken up, and the level roads were spoiled, and many smooth places became rough.

And many great and notable cities were sunk, and many were burned, and many were shaken till the buildings thereof had fallen to the earth, and the inhabitants thereof were slain, and the places were left desolate.

And there were some cities which remained; but the damage thereof was exceedingly great, and there were many in them who were slain.

And there were some who were carried away in the whirlwind; and whither they went no man knoweth, save they know that they were carried away.

And thus the face of the whole earth became deformed, because of the tempests, and the thunderings, and the lightnings, and the quaking of the earth.

And behold, the rocks were rent in twain; they were broken up upon the face of the whole earth, insomuch that they were found in broken fragments, and in seams and in cracks, upon all the face of the land.

And it came to pass that when the thunderings, and the lightnings, and the storm, and the tempest, and the quakings of the earth did cease—for behold, they did last for about the space of three hours; and it was said by some that the time was greater; nevertheless, all these great and terrible things were done in about the space of three hours—and then behold, there was darkness upon the face of the land.

And it came to pass that there was thick darkness upon all the face of the land, insomuch that the inhabitants thereof who had not fallen could feel the vapor of darkness;

And there could be no light, because of the darkness, neither candles, neither torches; neither could there be fire kindled with their fine and exceedingly dry wood, so that there could not be any light at all;

And there was not any light seen, neither fire, nor glimmer, neither the sun, nor the moon, nor the stars, for so great were the mists of darkness which were upon the face of the land.

- 23 और ऐसा हुआ कि तीन दिनों तक कहीं भी कोई प्रकाश न दिखाई दिया; और सभी लोगों में लगातार भारी विलाप और चीख पुकार और रोना चिल्लाना होता रहा; हां, लोगों पर जो अंधकार और भारी विनाश आया था उसके कारण वे बुरी तरह कराह रहे थे ।
- 24 और एक स्थान पर यह कहते हुए उन्हें एक आवाज सुनाई दी: काश कि हमने इस बड़े और भयानक दिन के पहले पश्चाताप किया होता, और हमारे भाई-बंधु बच जाते, और उन्होंने महान नगर जराहेमला को झुलसते हुए नहीं देखा होता ।
- 25 और दूसरे स्थान पर विलाप करते हुए और यह कहते हुए एक आवाज सुनाई दी: काश कि हमने इस बड़े और भयानक दिन के पहले पश्चाताप किया होता, और भविष्यवक्ताओं को नहीं मारा होता और उन पर पत्थरवाह नहीं किया होता, और उन्हें बाहर नहीं निकाला होता तो हमारी माताएं और सुंदर बेटियां, और हमारे बच्चे बच जाते, और इस महान नगर मोरोनिहा में दफन नहीं होते । और इस प्रकार लोगों की चीख पुकार बहुत अधिक और भयानक थी ।

And it came to pass that it did last for the space of three days that there was no light seen; and there was great mourning and howling and weeping among all the people continually; yea, great were the groanings of the people, because of the darkness and the great destruction which had come upon them.

And in one place they were heard to cry, saying: O that we had repented before this great and terrible day, and then would our brethren have been spared, and they would not have been burned in that great city Zarahemla.

And in another place they were heard to cry and mourn, saying: O that we had repented before this great and terrible day, and had not killed and stoned the prophets, and cast them out; then would our mothers and our fair daughters, and our children have been spared, and not have been buried up in that great city Moronihah. And thus were the howlings of the people great and terrible.

### 3 नफी 9

- 1 और ऐसा हुआ कि पूरे प्रदेश में, धरती के सभी निवासियों को यह कहते हुए एक आवाज सुनाई दी:
- 2 इन लोगों पर हाय; यदि पश्चाताप न करें तो पूरी धरती के निवासियों पर हाय; क्योंकि मेरे लोगों के सुंदर बेटों और बेटियों के मारे जाने के कारण; और वे अपनी दुष्टता और घृणित कार्यों में पतित हुए इस-के कारण शैतान हंसता है, और उसके दूत आनंद मनाते हैं।
- 3 देखो, उस महान नगर जराहेमला और उसमें रह रहे निवासियों को मैंने आग से जला दिया है।
- 4 और देखो, महान नगर मोरोनी को मैंने समुद्र की गहराइयों में डूबा दिया है, और उसमें रह रहे निवासी डूब गए हैं।
- 5 और देखो, लोग अपनी बुराइयों और अपने घृणित कार्यों को मुझसे छिपा सकें इसलिए मैंने इस महान नगर मोरोनिहा को मिट्टी से ढक दिया है, और उसमें रह रहे निवासियों को भी जिससे कि भविष्यवक्ताओं और संतों का लहू उनके विरुद्ध मेरे पास और न आए।
- 6 और देखो, मैंने गिल्गाल के नगर को बर्बाद कर दिया है, और उसमें रह रहे निवासियों को धरती की गहराइयों में दफन कर दिया है;
- 7 हां, ओनिहा नगर और उसमें रह रहे निवासियों को, और मोकम नगर और उसमें रह रहे निवासियों को, और यरूशलेम नगर और उसमें रह रहे निवासियों को मैंने पानी में डूबा दिया है जिससे कि वे अपनी बुराइयों और अपने घृणित कार्यों को मुझसे छिपा सकें ताकि भविष्यवक्ताओं और संतों का लहू उनके विरुद्ध मेरे पास और न आए।
- 8 और देखो, गडियान्डी नगर, और गडिओमना नगर, और याकूब नगर, और गिमगिमनो नगर को मैंने डूबा दिया है, और उनके स्थान पर पहाड़ी और घाटी बना दी है; और उसमें रह रहे निवासियों को मैंने धरती की गहराइयों में दफन कर दिया है जिससे कि वे अपनी बुराइयों और अपने घृणित कार्यों को मुझसे छिपा सकें ताकि भविष्यवक्ताओं और संतों का लहू उनके विरुद्ध मेरे पास और न आए।

### 3 Nephi 9

And it came to pass that there was a voice heard among all the inhabitants of the earth, upon all the face of this land, crying:

Wo, wo, wo unto this people; wo unto the inhabitants of the whole earth except they shall repent; for the devil laugheth, and his angels rejoice, because of the slain of the fair sons and daughters of my people; and it is because of their iniquity and abominations that they are fallen!

Behold, that great city Zarahemla have I burned with fire, and the inhabitants thereof.

And behold, that great city Moroni have I caused to be sunk in the depths of the sea, and the inhabitants thereof to be drowned.

And behold, that great city Moronihah have I covered with earth, and the inhabitants thereof, to hide their iniquities and their abominations from before my face, that the blood of the prophets and the saints shall not come any more unto me against them.

And behold, the city of Gilgal have I caused to be sunk, and the inhabitants thereof to be buried up in the depths of the earth;

Yea, and the city of Onihah and the inhabitants thereof, and the city of Mocum and the inhabitants thereof, and the city of Jerusalem and the inhabitants thereof; and waters have I caused to come up in the stead thereof, to hide their wickedness and abominations from before my face, that the blood of the prophets and the saints shall not come up any more unto me against them.

And behold, the city of Gadiandi, and the city of Gadiomnah, and the city of Jacob, and the city of Gimgimno, all these have I caused to be sunk, and made hills and valleys in the places thereof; and the inhabitants thereof have I buried up in the depths of the earth, to hide their wickedness and abominations from before my face, that the blood of the prophets and the saints should not come up any more unto me against them.

9 और देखो, महान नगर याकूबगाथ जिसमें राजा याकूब के निवासी रहते थे उन सबको मैंने उनके पापों और उनकी उस दुष्टता के कारण आग से जला दिया है जो धरती की सभी दुष्टताओं से सबसे बड़ी थी, उनकी गुप्त हत्याओं और गठबंधनों के कारण; क्योंकि यही था जिससे उन्होंने मेरे लोगों की शांति और प्रदेश के प्रशासन को भंग किया था; इसलिए मैंने उन्हें जला दिया, अपने सामने से मैंने उन्हें नष्ट कर दिया ताकि भविष्यवक्ताओं और संतों का लहू उनके विरुद्ध मेरे पास और न आए ।

10 और देखो, नगर लमान, और नगर जोश, और नगर गाद, और नगर किश्कूमन को मैंने आग से जला दिया, और उसमें रह रहे निवासियों को भी क्योंकि उन्होंने अपनी दुष्टता में भविष्यवक्ताओं को बाहर निकाला था, उन लोगों पर पत्थरवाह किया था जिन्हें मैंने उनकी दुष्टता और उनके घृणित कार्यों के संबंध में बताने के लिए भेजा था ।

11 और क्योंकि उन्होंने उन सबको बाहर निकाला था, कि उनके बीच में कोई भी धर्मी मनुष्य नहीं बचा था, मैंने नीचे आग भेजकर उन्हें नष्ट कर दिया, ताकि उनकी दुष्टता और उनके घृणित कार्य मुझसे छिप सकें जिससे कि मेरे भेजे गए भविष्यवक्ताओं और संतों का लहू उनके विरुद्ध जमीन से मुझे न पुकारे ।

12 और उनकी दुष्टता और उनके घृणित कार्यों के कारण इस प्रदेश पर, और इन लोगों पर मैं अन्य भयानक विनाश लाया हूँ ।

13 ओह ! तुम सब जो उनसे अधिक धार्मिकता के कारण बचाए गए हो, क्या तुम अब मेरे पास नहीं आओगे, और अपने पापों का पश्चात्ताप नहीं करोगे, और परिवर्तित नहीं होगे ताकि मैं तुम्हें चंगा कर सकूँ ?

14 हां, मैं तुमसे सच कहता हूँ, यदि तुम मेरे पास आओगे तो तुम्हें अनंत जीवन मिलेगा । देखो, दया की मेरी बांह तुम्हारी ओर खुली हुई है, और जो कोई भी आएगा, उसे मैं स्वीकार करूंगा; और आशीषित हैं वे जो मेरे पास आते हैं ।

15 देखो, मैं परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह हूँ । मैंने स्वर्गों और पृथ्वी को, और उसमें की सारी वस्तुओं को बनाया है । मैं आरंभ से पिता के साथ था । मैं पिता में, और पिता मुझमें है; और मुझमें पिता ने अपने नाम को गौरान्वित किया है ।

And behold, that great city Jacobugath, which was inhabited by the people of king Jacob, have I caused to be burned with fire because of their sins and their wickedness, which was above all the wickedness of the whole earth, because of their secret murders and combinations; for it was they that did destroy the peace of my people and the government of the land; therefore I did cause them to be burned, to destroy them from before my face, that the blood of the prophets and the saints should not come up unto me any more against them.

And behold, the city of Laman, and the city of Josh, and the city of Gad, and the city of Kishkumen, have I caused to be burned with fire, and the inhabitants thereof, because of their wickedness in casting out the prophets, and stoning those whom I did send to declare unto them concerning their wickedness and their abominations.

And because they did cast them all out, that there were none righteous among them, I did send down fire and destroy them, that their wickedness and abominations might be hid from before my face, that the blood of the prophets and the saints whom I sent among them might not cry unto me from the ground against them.

And many great destructions have I caused to come upon this land, and upon this people, because of their wickedness and their abominations.

O all ye that are spared because ye were more righteous than they, will ye not now return unto me, and repent of your sins, and be converted, that I may heal you?

Yea, verily I say unto you, if ye will come unto me ye shall have eternal life. Behold, mine arm of mercy is extended towards you, and whosoever will come, him will I receive; and blessed are those who come unto me.

Behold, I am Jesus Christ the Son of God. I created the heavens and the earth, and all things that in them are. I was with the Father from the beginning. I am in the Father, and the Father in me; and in me hath the Father glorified his name.

- 16 मैं अपने लोगों में आया, और मेरे लोगों ने मुझे स्वीकार नहीं किया। और मेरे आने से संबंधित धर्मशास्त्र परिपूर्ण हुए।
- 17 और जितने लोगों ने मुझे स्वीकार किया, उन सभी को मैंने परमेश्वर का संतान होने की स्वीकृति दी है; और मैं उन लोगों को भी यह स्वीकृति दूंगा जो मेरे नाम में विश्वास करेंगे, क्योंकि देखो, मेरे द्वारा ही मुक्ति आता है, और मुझमें ही मूसा की व्यवस्था परिपूर्ण होती है।
- 18 मैं ही संसार की ज्योति और जीवन हूँ। मैं ही अल्फा और ओमेगा अर्थात् आदि और अंत हूँ।
- 19 और अब तुम मुझे रक्तपात की भेंट नहीं दोगे; हां, तुम अपने बलिदान और अग्नि का चढ़ावा नहीं दोगे, क्योंकि मैं तुम्हारे किसी भी बलिदान और अग्नि भेंट को स्वीकार नहीं करूंगा।
- 20 और एक बलिदान के रूप में तुम मुझे एक टूटा हुआ हृदय और एक शोकार्त आत्मा दोगे। और जो कोई भी मेरे पास टूटे हृदय और शोकार्त आत्मा के साथ आएगा, उसे मैं आग और पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दूंगा, यहां तक कि लमनाइयों के परिवर्तन के समय पर मुझमें उनके विश्वास के कारण उनका बपतिस्मा भी आग और पवित्र आत्मा से हुआ था, और वे इसे नहीं जानते थे।
- 21 देखो, संसार पर मुक्ति लाने के लिए, संसार को पापों से बचाने के लिए ही मैं संसार में आया हूँ।
- 22 इसलिए, जो कोई भी पश्चाताप करता है और मेरे पास एक बच्चे के समान होकर आता है उसे मैं स्वीकार करूंगा, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसे ही लोगों का है। देखो, ऐसे ही लोगों के लिए मैंने अपना जीवन दिया और फिर से वापस ले लिया; इसलिए पश्चाताप करो, और पृथ्वी के एक सिरे से दूसरे सिरे के लोगों मेरे पास आओ, और बचाए जाओ।

I came unto my own, and my own received me not. And the scriptures concerning my coming are fulfilled.

And as many as have received me, to them have I given to become the sons of God; and even so will I to as many as shall believe on my name, for behold, by me redemption cometh, and in me is the law of Moses fulfilled.

I am the light and the life of the world. I am Alpha and Omega, the beginning and the end.

And ye shall offer up unto me no more the shedding of blood; yea, your sacrifices and your burnt offerings shall be done away, for I will accept none of your sacrifices and your burnt offerings.

And ye shall offer for a sacrifice unto me a broken heart and a contrite spirit. And whoso cometh unto me with a broken heart and a contrite spirit, him will I baptize with fire and with the Holy Ghost, even as the Lamanites, because of their faith in me at the time of their conversion, were baptized with fire and with the Holy Ghost, and they knew it not.

Behold, I have come unto the world to bring redemption unto the world, to save the world from sin.

Therefore, whoso repenteth and cometh unto me as a little child, him will I receive, for of such is the kingdom of God. Behold, for such I have laid down my life, and have taken it up again; therefore repent, and come unto me ye ends of the earth, and be saved.

### 3 नफी 10

- 1 और अब देखो, ऐसा हुआ कि प्रदेश के पूरे लोगों ने इन कथनों को सुना, और इसकी साक्षी दी। और इन कथनों के पश्चात कई घंटों के लिए प्रदेश में चुप्पी छा गई;
- 2 लोगों का आश्चर्य इतना अधिक था कि उनके जो रिश्तेदार मारे गए थे उनके लिए उन्होंने विलाप करना और रोना-धोना बंद कर दिया; इसलिए कई घंटों के लिए प्रदेश में चुप्पी छा गई।
- 3 और ऐसा हुआ कि लोगों को फिर से एक आवाज सुनाई दी, और सभी लोगों ने सुना, और इसकी गवाही दी, यह कहते हुए:
- 4 ओह इन महान नगरों के पतित लोग, जो याकूब के वंशज हो, हां, जो इस्राएल के घराने के हो, कितनी बार मैंने तुम्हें एकत्रित किया है जैसे कि मुर्गी अपने चूजों को अपने परों के नीचे एकत्रित करती है, और तुम्हारा पोषण किया है।
- 5 और फिर से, कितनी बार मैं तुम्हें एकत्रित करता जैसे कि मुर्गी अपने चूजों को अपने परों के नीचे एकत्रित करती है, हां, ओह तुम इस्राएल के घराने के पतित लोगों; हां, ओह तुम इस्राएल के घराने के लोगों, जो यरूशलेम में रहते हो, जो तुम पतित हुए हो; हां, कितनी बार मैं तुम्हें एकत्रित करता जैसे कि मुर्गी अपने चूजों को अपने परों के नीचे एकत्रित करती है, और तुम एकत्रित नहीं होते।
- 6 ओह तुम इस्राएल का घराना जिन्हें मैंने छोड़ दिया है, तो कितनी बार मैं तुम्हें एकत्रित करूंगा जैसे कि मुर्गी अपने चूजों को अपने परों के नीचे एकत्रित करती है, यदि तुम पश्चाताप करोगे और अपने हृदय के पूरे संकल्प के साथ मेरे पास आओगे।
- 7 परन्तु यदि ऐसा नहीं होगा, ओह इस्राएल का घराना, तुम्हारे पूर्वजों के साथ किये गए अनुबंध के पूरा होने के समय तक, रहने के तुम्हारे स्थान उजाड़ हो जाएंगे।
- 8 और अब ऐसा हुआ कि जब लोगों ने इन बातों को सुन लिया, देखो, अपने रिश्तेदारों और मित्रों के मर जाने के कारण वे फिर से रोने और चीखने-चिल्लाने लगे।
- 9 और ऐसा हुआ कि इस प्रकार तीन दिन बीत गए। और यह सुबह का समय था, और प्रदेश से अंधकार छंटने लगा, और पृथ्वी की कंपन कम होने लगी और चट्टान का फटना बंद हो गया, और भयावह कराहना रुक गया, और कोलाहल से भरी आवाजें बंद हो गईं।

### 3 Nephi 10

And now behold, it came to pass that all the people of the land did hear these sayings, and did witness of it. And after these sayings there was silence in the land for the space of many hours;

For so great was the astonishment of the people that they did cease lamenting and howling for the loss of their kindred which had been slain; therefore there was silence in all the land for the space of many hours.

And it came to pass that there came a voice again unto the people, and all the people did hear, and did witness of it, saying:

O ye people of these great cities which have fallen, who are descendants of Jacob, yea, who are of the house of Israel, how oft have I gathered you as a hen gathereth her chickens under her wings, and have nourished you.

And again, how oft would I have gathered you as a hen gathereth her chickens under her wings, yea, O ye people of the house of Israel, who have fallen; yea, O ye people of the house of Israel, ye that dwell at Jerusalem, as ye that have fallen; yea, how oft would I have gathered you as a hen gathereth her chickens, and ye would not.

O ye house of Israel whom I have spared, how oft will I gather you as a hen gathereth her chickens under her wings, if ye will repent and return unto me with full purpose of heart.

But if not, O house of Israel, the places of your dwellings shall become desolate until the time of the fulfilling of the covenant to your fathers.

And now it came to pass that after the people had heard these words, behold, they began to weep and howl again because of the loss of their kindred and friends.

And it came to pass that thus did the three days pass away. And it was in the morning, and the darkness dispersed from off the face of the land, and the earth did cease to tremble, and the rocks did cease to rend, and the dreadful groanings did cease, and all the tumultuous noises did pass away.

- 10 और धरती फिर से चिपक कर ठहर गई; और जो लोग जीवित थे उनका शोक, और रोना-धोना, और क्रंदन बंद हो गया; और उनका शोक आनंद में बदल गया, और अपने विलाप के स्थान पर वे प्रभु यीशु मसीह, अपने मुक्तिदाता की बड़ाई करने लगे और उसे धन्यवाद देने लगे ।
- 11 और इस प्रकार भविष्यवक्ताओं द्वारा बताए गए यहां तक के धर्मशास्त्र पूरे हुए ।
- 12 और जो लोग बच गए थे वे अधिकतर धर्मी लोग थे, और ये वही लोग थे जिन्होंने भविष्यवक्ताओं को स्वीकार किया था और उन पर पत्थरवाह नहीं किया था; और ये वही लोग थे जो संतों का रक्तपात न करने के कारण बच गए थे—
- 13 और ये लोग बच गए और बर्बाद नहीं हुए और धरती में दफन नहीं हुए; और ये समुद्र की गहराइयों में डूबे नहीं; और ये आग से जलाए नहीं गए, न ही ये कुचलकर मारे गए; और न ही बवंडर इन्हें उड़ाकर ले गई; न ही धुएं और भाप की अंधकार द्वारा ये शक्तिहीन हुए ।
- 14 और अब, जो कोई भी पढ़ता है उसे समझने दो; जिसके पास धर्मशास्त्र है उसे खोजने दो, और उसे देखने और सुनने दो कि आग द्वारा, और धुएं द्वारा, और भूचाल द्वारा, और बवंडर द्वारा, और उन्हें निगलने के लिए धरती के फटने द्वारा, और जो भी सारी चीजें हुई हैं वह सब क्या उन कई पवित्र भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों को पूरा करती हैं या नहीं ।
- 15 देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, हां, कई लोगों ने मसीह के आगमन पर इन चीजों के होने की गवाही दी है, और इन बातों की गवाही देने के कारण वे मारे गए हैं ।
- 16 हां, भविष्यवक्ता जीनस ने इन बातों की गवाही दी थी, और जीनक ने भी इन बातों के बारे में बताया था, और हम उनके बचे हुए वंश हैं इसके कारण उन्होंने विशेषकर हमें इसकी गवाही दी थी ।
- 17 देखो, हमारे पूर्वज याकूब ने भी यूसुफ के बचे हुए वंशों के विषय में गवाही दी थी । और देखो, क्या हम यूसुफ के बचे हुए वंश नहीं हैं ? और ये चीजें जो हमारे विषय में गवाही देती हैं, क्या पीतल की उन पट्टियों पर नहीं लिखी गई हैं जिन्हें हमारा पूर्वज लेही यरूशलेम से बाहर लाया था ?

And the earth did cleave together again, that it stood; and the mourning, and the weeping, and the wailing of the people who were spared alive did cease; and their mourning was turned into joy, and their lamentations into the praise and thanksgiving unto the Lord Jesus Christ, their Redeemer.

And thus far were the scriptures fulfilled which had been spoken by the prophets.

And it was the more righteous part of the people who were saved, and it was they who received the prophets and stoned them not; and it was they who had not shed the blood of the saints, who were spared—

And they were spared and were not sunk and buried up in the earth; and they were not drowned in the depths of the sea; and they were not burned by fire, neither were they fallen upon and crushed to death; and they were not carried away in the whirlwind; neither were they overpowered by the vapor of smoke and of darkness.

And now, whoso readeth, let him understand; he that hath the scriptures, let him search them, and see and behold if all these deaths and destructions by fire, and by smoke, and by tempests, and by whirlwinds, and by the opening of the earth to receive them, and all these things are not unto the fulfilling of the prophecies of many of the holy prophets.

Behold, I say unto you, Yea, many have testified of these things at the coming of Christ, and were slain because they testified of these things.

Yea, the prophet Zenos did testify of these things, and also Zenock spake concerning these things, because they testified particularly concerning us, who are the remnant of their seed.

Behold, our father Jacob also testified concerning a remnant of the seed of Joseph. And behold, are not we a remnant of the seed of Joseph? And these things which testify of us, are they not written upon the plates of brass which our father Lehi brought out of Jerusalem?

18 और ऐसा हुआ कि चौतीसवें वर्ष के अंत में, देखो, मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि नफी के लोग जो बच गए थे, और जो लोग लमनाई कहलाए थे और जिन्हें बचाया भी गया था, उन पर महान कृपा हुई थी, और उन पर इतनी महान आशीर्षें उंडेली गईं कि मसीह ने अपने स्वर्गरोहण के शीघ्र पश्चात स्वयं को वास्तव में उन पर प्रकट किया—

19 इसके पश्चात उन लोगों को अपना शरीर दिखाते हुए, और उन्हें उपदेश देते हुए उसकी सेवकाई का एक विवरण दिया जाएगा। इस-लिए इस समय मैं अपनी बातों को समाप्त करता हूँ।

And it came to pass that in the ending of the thirty and fourth year, behold, I will show unto you that the people of Nephi who were spared, and also those who had been called Lamanites, who had been spared, did have great favors shown unto them, and great blessings poured out upon their heads, inso-much that soon after the ascension of Christ into heaven he did truly manifest himself unto them—

Showing his body unto them, and ministering unto them; and an account of his ministry shall be given hereafter. Therefore for this time I make an end of my sayings.



जब संपन्न प्रदेश में भीड़ एकत्रित होती है तब यीशु मसीह नफी के लोगों पर स्वयं को प्रकट करता है, और उनकी सेवा करता है; और इस समय वह स्वयं को उन पर प्रकट करता है।

### 3 नफी 11

- 1 और ऐसा हुआ कि संपन्न प्रदेश में जो मंदिर था उसके आस-पास नफी के लोगों की एक भारी भीड़ एक साथ एकत्रित हो गई; और वे एक दूसरे के साथ अचम्भीत और आश्चर्यचकित हो रहे थे, और उन महान और अदभुत बदलावों के बारे में एक दूसरे को दिखा रहे थे।
- 2 और वे इस यीशु मसीह के विषय में भी बातचीत कर रहे थे जिसकी मृत्यु के संबंध में चिन्ह दिए थे।
- 3 और ऐसा हुआ कि जब वे इस तरह से एक दूसरे के साथ बातचीत कर रहे थे, उन्होंने एक वाणी सुनी मानो स्वर्ग से आ रही हो; और उन्होंने अपने आसपास देखा क्योंकि जिस वाणी को उन्होंने सुना था वे उसे समझ नहीं पाए; और न तो वह वाणी कठोर थी और न ही तेज; फिर भी, धीमी वाणी होने के बावजूद उनके हृदयों पर इतना असर किया कि उनके शरीर का ऐसा कोई भी हिस्सा नहीं था जिसमें कंपकंपाहट नहीं हुई; हां, इससे उनकी आत्मा पर असर हुआ, और उनके हृदयों को जलाने लगी।
- 4 और ऐसा हुआ कि फिर से उन्होंने वाणी सुनी, और उन्हें समझ नहीं आया।
- 5 और फिर से उन्होंने तीसरी बार वाणी सुनी, और उसे सुनने के लिए अपने कान खड़े कर लिए; और उनकी आंखें वहीं थीं जहां से वाणी आ रही थी; और उनकी आंखें स्वर्ग की ओर स्थिर हो गईं जहां से वाणी आ रही थी।
- 6 और देखो, तीसरी बार वे उस वाणी को समझ गए जिसे सुना था; और उसने उनसे कहा:
- 7 देखो मेरे प्रिय पुत्र, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूं, जिसमें मैंने अपने नाम को गौरान्वित किया है—तुम उसे सुनो।

*Jesus Christ did show himself unto the people of Nephi, as the multitude were gathered together in the land Bountiful, and did minister unto them; and on this wise did he show himself unto them.*

### 3 Nephi 11

And now it came to pass that there were a great multitude gathered together, of the people of Nephi, round about the temple which was in the land Bountiful; and they were marveling and wondering one with another, and were showing one to another the great and marvelous change which had taken place.

And they were also conversing about this Jesus Christ, of whom the sign had been given concerning his death.

And it came to pass that while they were thus conversing one with another, they heard a voice as if it came out of heaven; and they cast their eyes round about, for they understood not the voice which they heard; and it was not a harsh voice, neither was it a loud voice; nevertheless, and notwithstanding it being a small voice it did pierce them that did hear to the center, insomuch that there was no part of their frame that it did not cause to quake; yea, it did pierce them to the very soul, and did cause their hearts to burn.

And it came to pass that again they heard the voice, and they understood it not.

And again the third time they did hear the voice, and did open their ears to hear it; and their eyes were towards the sound thereof; and they did look steadfastly towards heaven, from whence the sound came.

And behold, the third time they did understand the voice which they heard; and it said unto them:

Behold my Beloved Son, in whom I am well pleased, in whom I have glorified my name—hear ye him.

- 8 और ऐसा हुआ कि जब वे समझ गए उन्होंने फिर से अपनी आंखों को स्वर्ग की तरफ उठा लिया; और देखो, उन्होंने स्वर्ग से एक मनुष्य को नीचे उतरते देखा; और उसने सफेद वस्त्र पहना था; और वह नीचे आया और उनके बीच में खड़ा हो गया; और पूरी भीड़ की आंखें उस पर टिक गईं, और वे अपना मुंह खोलने का साहस न कर सके, यहां तक कि एक दूसरे से बात भी न कर सके, और उसका अर्थ भी नहीं समझ पाए क्योंकि उन्होंने सोचा कि जो उन्हें दिखाई दे रहा है वह एक स्वर्गदूत है।
- 9 और ऐसा हुआ कि उसने अपना हाथ फैलाया और यह कहते हुए लोगों से बोला:
- 10 देखो, मैं यीशु मसीह हूँ, जिसके विषय में भविष्यवक्ताओं ने गवाही दी थी कि वह स्वर्ग से आएगा।
- 11 और देखो, मैं ही संसार की ज्योति और जीवन हूँ; और मैंने उस कड़वे प्याले को पिया है जिसे पिता ने मुझे दिया था, और संसार के पापों को अपने ऊपर लेकर मैंने पिता को गौरान्वित किया है, जिसमें मैंने आरंभ से लेकर हर बात में पिता की इच्छा को पूरा किया है।
- 12 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन बातों को कह लिया तब पूरी भीड़ धरती पर गिर पड़ी; क्योंकि उन्हें याद आ गया कि उनके बीच में भविष्यवाणी की गई थी कि स्वर्ग में अपने क्रूसारोहण के पश्चात् मसीह स्वयं को उन पर प्रकट करेगा।
- 13 और ऐसा हुआ कि यह कहते हुए प्रभु ने उनसे बात की:
- 14 उठो और मेरे पास आओ, ताकि तुम अपने हाथों को मेरे बगल में डाल सको, और मेरे हाथों और पैरों के कीलों के निशान को महसूस कर सको, ताकि तुम जान सको कि मैं ही इस्राएल का परमेश्वर हूँ, और पूरी पृथ्वी का परमेश्वर हूँ, और मैं संसार के पापों के लिए मारा गया था।
- 15 और ऐसा हुआ कि भीड़ आगे बढ़ी, और उसके बगल में अपने हाथों को डाला, और उसके हाथों और पैरों के कीलों के निशान को महसूस किया; और ऐसा उन्होंने वातस्व में तब तक किया जब तक कि उनमें से हर एक ने ऐसा न कर लिया, और अपनी आंखों से देखा और अपने हाथों से महसूस किया, और इसकी निश्चितता को जाना और इसकी गवाही दी, कि यह वही है जिसके आने के विषय में भविष्यवक्ताओं ने लिखा था।
- 16 और जब सारे लोगों ने जाकर स्वयं इसे देख लिया, यह कहते हुए वे एक स्वर में पुकारने लगे:

And it came to pass, as they understood they cast their eyes up again towards heaven; and behold, they saw a Man descending out of heaven; and he was clothed in a white robe; and he came down and stood in the midst of them; and the eyes of the whole multitude were turned upon him, and they durst not open their mouths, even one to another, and wist not what it meant, for they thought it was an angel that had appeared unto them.

And it came to pass that he stretched forth his hand and spake unto the people, saying:

Behold, I am Jesus Christ, whom the prophets testified shall come into the world.

And behold, I am the light and the life of the world; and I have drunk out of that bitter cup which the Father hath given me, and have glorified the Father in taking upon me the sins of the world, in the which I have suffered the will of the Father in all things from the beginning.

And it came to pass that when Jesus had spoken these words the whole multitude fell to the earth; for they remembered that it had been prophesied among them that Christ should show himself unto them after his ascension into heaven.

And it came to pass that the Lord spake unto them saying:

Arise and come forth unto me, that ye may thrust your hands into my side, and also that ye may feel the prints of the nails in my hands and in my feet, that ye may know that I am the God of Israel, and the God of the whole earth, and have been slain for the sins of the world.

And it came to pass that the multitude went forth, and thrust their hands into his side, and did feel the prints of the nails in his hands and in his feet; and this they did do, going forth one by one until they had all gone forth, and did see with their eyes and did feel with their hands, and did know of a surety and did bear record, that it was he, of whom it was written by the prophets, that should come.

And when they had all gone forth and had witnessed for themselves, they did cry out with one accord, saying:

- 17 होशाना ! सर्वोच्च परमेश्वर का नाम आशीषित हो ! और वे यीशु के पैरों के पास गिर गए, और उसकी आराधना करने लगे ।
- 18 और ऐसा हुआ कि उसने नफी से बात की (क्योंकि नफी भीड़ के बीच में था) और उसने उसे आगे आने की आज्ञा दी ।
- 19 और नफी उठा और आगे आया, और स्वयं को प्रभु के सामने झुका लिया और उसके पैरों को चूमा ।
- 20 और प्रभु ने उसे उठने की आज्ञा दी । और वह उठा और उसके सामने खड़ा हो गया ।
- 21 और प्रभु ने उससे कहा: मैं तुम्हें अधिकार देता हूँ कि जब मैं फिर से स्वर्ग चला जाऊँ तब तुम इन लोगों का बपतिस्मा करना ।
- 22 और फिर से प्रभु ने दूसरे लोगों को बुलाया, और इसी प्रकार उनसे भी कहा; और उसने उन्हें बपतिस्मा लेने का अधिकार दिया । और उसने उनसे कहा: इस प्रकार तुम बपतिस्मा लोगे; और तुम्हारे बीच कोई मतभेद नहीं होगा ।
- 23 मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो कोई भी तुम्हारी बातों को सुनकर अपने पापों का पश्चात्ताप करेगा, और मेरे नाम में बपतिस्मा लेने की इच्छा करेगा, इस प्रकार तुम उसे बपतिस्मा दोगे—देखो, तुम जाओगे और पानी में खड़े रहोगे, और मेरे नाम में तुम उन्हें बपतिस्मा दोगे ।
- 24 और अब देखो, यही वे शब्द हैं जिन्हें तुम कहोगे, उनका नाम लेकर, यह कहते हुए:
- 25 यीशु मसीह का जो अधिकार मुझे दिया गया है, मैं तुम्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा देता हूँ । आमीन ।
- 26 और तब तुम उन्हें पानी में डुबाओगे, और फिर से पानी से बाहर निकालोगे ।
- 27 और इसी प्रकार तुम मेरे नाम से बपतिस्मा दोगे; क्योंकि देखो, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा एक ही हैं; और मैं पिता में हूँ, और पिता मुझमें, और पिता और मैं एक ही हैं ।
- 28 और जैसे मैंने तुम्हें आज्ञा दी है उसी प्रकार तुम बपतिस्मा दोगे । और तुम्हारे बीच कोई मतभेद नहीं होगा, जैसा कि अब तक होता रहा है; न ही मेरे सिद्धांत की बातों से संबंधित तुम्हारे बीच कोई मतभेद होगा, जैसा कि अब तक होता रहा है ।

Hosanna! Blessed be the name of the Most High God! And they did fall down at the feet of Jesus, and did worship him.

And it came to pass that he spake unto Nephi (for Nephi was among the multitude) and he commanded him that he should come forth.

And Nephi arose and went forth, and bowed himself before the Lord and did kiss his feet.

And the Lord commanded him that he should arise. And he arose and stood before him.

And the Lord said unto him: I give unto you power that ye shall baptize this people when I am again ascended into heaven.

And again the Lord called others, and said unto them likewise; and he gave unto them power to baptize. And he said unto them: On this wise shall ye baptize; and there shall be no disputations among you.

Verily I say unto you, that whoso repenteth of his sins through your words, and desireth to be baptized in my name, on this wise shall ye baptize them— Behold, ye shall go down and stand in the water, and in my name shall ye baptize them.

And now behold, these are the words which ye shall say, calling them by name, saying:

Having authority given me of Jesus Christ, I baptize you in the name of the Father, and of the Son, and of the Holy Ghost. Amen.

And then shall ye immerse them in the water, and come forth again out of the water.

And after this manner shall ye baptize in my name; for behold, verily I say unto you, that the Father, and the Son, and the Holy Ghost are one; and I am in the Father, and the Father in me, and the Father and I are one.

And according as I have commanded you thus shall ye baptize. And there shall be no disputations among you, as there have hitherto been; neither shall there be disputations among you concerning the points of my doctrine, as there have hitherto been.

- 29 क्योंकि मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जिसके पास मतभेद की आत्मा है वह मेरा नहीं है, परन्तु शैतान का है जो कि सारे मतभेदों का पिता है, और वह लोगों के हृदयों को क्रोध में, एक दूसरे से मतभेद करने के लिए भड़काता है ।
- 30 देखो, एक दूसरे के विरुद्ध, क्रोध में लोगों के हृदयों को भड़काना मेरा सिद्धांत नहीं है; परन्तु मेरा सिद्धांत इस प्रकार की बातों को दूर करना है ।
- 31 देखो, मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, मैं तुम्हें अपना सिद्धांत बताऊंगा ।
- 32 और यह मेरा सिद्धांत है, और मेरा सिद्धांत वही है जिसे पिता ने मुझे दिया है; और मैं पिता की साक्षी देता हूँ, और पिता मेरी साक्षी देता है, और पवित्र आत्मा पिता और मेरी साक्षी देती है; और मैं साक्षी देता हूँ कि पिता हर स्थान के लोगों को पश्चाताप करने और मुझमें विश्वास करने की आज्ञा देता है ।
- 33 और जो मुझमें विश्वास करता है, और बपतिस्मा लेता है, वही बचाया जाएगा; और ये वही लोग हैं जो परमेश्वर के राज्य का उत्तारि-धाकारी होंगे ।
- 34 और जो मुझमें विश्वास नहीं करता है, और बपतिस्मा नहीं लेता है, वह श्रापित होगा ।
- 35 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि यही मेरा सिद्धांत है, और मैं इसकी गवाही पिता द्वारा देता हूँ; और जो मुझमें विश्वास करता है वह पिता में भी करता है; और उसे पिता मेरी गवाही देगा, क्योंकि वह उसे आग और पवित्र आत्मा द्वारा शक्ति देगा ।
- 36 और इस प्रकार पिता मेरी गवाही देगा, और पवित्र आत्मा उसे पिता की और मेरी गवाही देगी; क्योंकि पिता, और मैं, और पवित्र आत्मा एक ही हैं ।
- 37 और फिर से मैं तुमसे कहता हूँ, तुम्हें पश्चाताप करना होगा, और एक छोटे बच्चे के समान होकर मेरे नाम में बपतिस्मा लेना होगा, या तुम इन चीजों को किसी भी तरीके से प्राप्त नहीं कर सकते ।
- 38 और फिर से मैं तुमसे कहता हूँ, तुम्हें पश्चाताप करना होगा, और मेरे नाम में बपतिस्मा लेना होगा, और एक छोटे बच्चे के समान होना होगा, अन्यथा तुम किसी भी तरीके से परमेश्वर के राज्य का उत्तरा-धिकारी नहीं हो सकते ।
- 39 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि यह मेरा सिद्धांत है, और जो कोई इस पर निर्माण करेगा वह मेरी चट्टान पर निर्माण करेगा, और उनके विरुद्ध नरक के द्वार प्रबल नहीं होंगे ।

For verily, verily I say unto you, he that hath the spirit of contention is not of me, but is of the devil, who is the father of contention, and he stirreth up the hearts of men to contend with anger, one with another.

Behold, this is not my doctrine, to stir up the hearts of men with anger, one against another; but this is my doctrine, that such things should be done away.

Behold, verily, verily, I say unto you, I will declare unto you my doctrine.

And this is my doctrine, and it is the doctrine which the Father hath given unto me; and I bear record of the Father, and the Father beareth record of me, and the Holy Ghost beareth record of the Father and me; and I bear record that the Father commandeth all men, everywhere, to repent and believe in me.

And whoso believeth in me, and is baptized, the same shall be saved; and they are they who shall inherit the kingdom of God.

And whoso believeth not in me, and is not baptized, shall be damned.

Verily, verily, I say unto you, that this is my doctrine, and I bear record of it from the Father; and whoso believeth in me believeth in the Father also; and unto him will the Father bear record of me, for he will visit him with fire and with the Holy Ghost.

And thus will the Father bear record of me, and the Holy Ghost will bear record unto him of the Father and me; for the Father, and I, and the Holy Ghost are one.

And again I say unto you, ye must repent, and become as a little child, and be baptized in my name, or ye can in nowise receive these things.

And again I say unto you, ye must repent, and be baptized in my name, and become as a little child, or ye can in nowise inherit the kingdom of God.

Verily, verily, I say unto you, that this is my doctrine, and whoso buildeth upon this buildeth upon my rock, and the gates of hell shall not prevail against them.

40 और जो इससे अधिक या इससे कम का प्रचार करेगा, और इसे मेरा सिद्धांत बताएगा, वह बुरे की तरफ से होगा, और वह मेरे चट्टान पर बना हुआ नहीं होगा; परन्तु उसकी नींव रेतीली होगी, और जब बाढ़ और हवाएं उन पर आक्रमण करेंगी तब नरक के द्वार उन्हें अपनाने के लिए खड़े होंगे।

41 इसलिए, इन लोगों के पास जाओ, और पृथ्वी के सिरों तक उन बातों का प्रचार करो जो मैंने कही हैं।

And whoso shall declare more or less than this, and establish it for my doctrine, the same cometh of evil, and is not built upon my rock; but he buildeth upon a sandy foundation, and the gates of hell stand open to receive such when the floods come and the winds beat upon them.

Therefore, go forth unto this people, and declare the words which I have spoken, unto the ends of the earth.

### 3 नफी 12

- 1 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने नफी से इन बातों को कह लिया, और उन लोगों से जिन्हें नियुक्त किया गया था, (अब उन लोगों की संख्या बारह थी जिन्हें नियुक्त किया गया था, और उन्होंने सामर्थ्य और अधिकार प्राप्त किया था) और देखो, उसने भीड़ की तरफ अपना हाथ फैलाया, और यह कहते हुए उन्हें पुकारा: तुम आशीषित होगे यदि तुम इन बारह लोगों की बातों पर ध्यान दोगे जिन्हें मैंने तुम्हारे ही बीच से तुम्हारी सेवा के लिए, और तुम्हारा सेवक होने के लिए चुना है; और उन्हें मैंने अधिकार दिया है ताकि वे तुम्हें पानी से बपतिस्मा दे सकें; और पानी से तुम्हारा बपतिस्मा होने के पश्चात, देखो, मैं तुम्हें आग और पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दूंगा; अब तुमने मुझे देखा है और जानते हो कि मैं हूँ, इसलिए तुम आशीषित होगे यदि तुम मुझमें विश्वास करोगे और बपतिस्मा लोगे ।
- 2 और फिर से, तुमसे अधिक आशीषित वे लोग होंगे जो तुम्हारी बातों पर विश्वास करेंगे क्योंकि तुम गवाही दोगे कि तुमने मुझे देखा है, और तुम जानते हो कि मैं हूँ । हां, आशीषित हैं वे जो तुम्हारी बातों पर विश्वास करेंगे, और अत्याधिक विनम्र होंगे और बपतिस्मा लेंगे, क्योंकि उन पर आग और पवित्र आत्मा आएगी, और उन्हें उनके पापों से माफी मिलेगी ।
- 3 हां, आशीषित हैं वे जो आत्मा में दीन होकर मेरे पास आते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है ।
- 4 और फिर से, आशीषित हैं वे जो शोक मनाते हैं, क्योंकि उन्हें सात्वना दी जाएगी ।
- 5 और आशीषित हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि पृथ्वी के अधिकारी वही होंगे ।
- 6 और आशीषित हैं वे जो धार्मिकता के लिए भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे पवित्र आत्मा से भर जाएंगे ।
- 7 और आशीषित हैं वे जो दयालु हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी ।
- 8 और आशीषित हैं वे जो हृदय से शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे ।
- 9 और आशीषित हैं वे जो शांति बनाए रखते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर की संतान कहलाएंगे ।
- 10 और आशीषित हैं वे जिन्हें मेरे नाम पर सताया गया है, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है ।

### 3 Nephi 12

And it came to pass that when Jesus had spoken these words unto Nephi, and to those who had been called, (now the number of them who had been called, and received power and authority to baptize, was twelve) and behold, he stretched forth his hand unto the multitude, and cried unto them, saying: Blessed are ye if ye shall give heed unto the words of these twelve whom I have chosen from among you to minister unto you, and to be your servants; and unto them I have given power that they may baptize you with water; and after that ye are baptized with water, behold, I will baptize you with fire and with the Holy Ghost; therefore blessed are ye if ye shall believe in me and be baptized, after that ye have seen me and know that I am.

And again, more blessed are they who shall believe in your words because that ye shall testify that ye have seen me, and that ye know that I am. Yea, blessed are they who shall believe in your words, and come down into the depths of humility and be baptized, for they shall be visited with fire and with the Holy Ghost, and shall receive a remission of their sins.

Yea, blessed are the poor in spirit who come unto me, for theirs is the kingdom of heaven.

And again, blessed are all they that mourn, for they shall be comforted.

And blessed are the meek, for they shall inherit the earth.

And blessed are all they who do hunger and thirst after righteousness, for they shall be filled with the Holy Ghost.

And blessed are the merciful, for they shall obtain mercy.

And blessed are all the pure in heart, for they shall see God.

And blessed are all the peacemakers, for they shall be called the children of God.

And blessed are all they who are persecuted for my name's sake, for theirs is the kingdom of heaven.

- 11 और तुम आशीषित होंगे जब लोग तुम्हें धिक्कारेंगे और सताएंगे, और मेरे कारण तुम्हारे विरुद्ध तुम्हें हर प्रकार की बुरी बातें सुनाएंगे ।
- 12 क्योंकि तुम्हें महान आनंद और अत्याधिक प्रसन्नता प्राप्त होगी, क्योंकि तुमसे पहले जो भविष्यवक्ता हुए थे उन्हें सताया गया था इसलिए स्वर्ग में तुम्हारा पुरस्कार महान होगा ।
- 13 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, मैं तुम्हें पृथ्वी का नमक बनाऊंगा, परन्तु यदि नमक अपना स्वाद खो देगा, तो पृथ्वी कैसे नमकीन होगी ? इसके पश्चात नमक का मूल्य कुछ भी नहीं रह जाएगा, बल्कि उसे फेंक दिया जाएगा और लोगों के पैरों तले कुचला जाएगा ।
- 14 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, मैं तुम्हें लोगों के लिए प्रकाश बनाऊंगा । एक नगर जिसे पहाड़ी पर बनाया जाता है उसे छिपाया नहीं जा सकता ।
- 15 देखो, क्या लोग दिया जलाकर बर्तन के नीचे रख देते हैं ? नहीं, बल्कि एक चिरागदान पर रखते हैं, और वह उन सब पर प्रकाश डालता है जो घर में रहते हैं ।
- 16 इसलिए अपना प्रकाश इन लोगों पर पड़ने दो, ताकि वे तुम्हारा अच्छा कार्य देख सकें और तुम्हारे उस पिता की महिमा कर सकें जो स्वर्ग में है ।
- 17 यह मत सोचो कि मैं नियम या भविष्यवक्ताओं को नष्ट करने आया हूँ । मैं नष्ट करने नहीं बल्कि परिपूर्ण करने आया हूँ ।
- 18 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, कि एक बिन्दु या एक लेश मात्र भी नियम से हटकर नहीं, बल्कि मुझमें परिपूर्ण होता है ।
- 19 और देखो, मैंने तुम्हें अपने पिता का नियम और उनकी आज्ञा दी है, कि तुम मुझमें विश्वास करोगे, और अपने पापों का पश्चाताप करोगे, और मेरे पास एक टुटे हुए हृदय और शोकार्त आत्मा के साथ आओगे । देखो, तुम्हारे सामने आज्ञाएं हैं, और नियम परिपूर्ण हुआ ।
- 20 इसलिए मेरे पा आओ और स्वयं को बचाओ; क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें इस समय दी है, यदि तुम उनका पालन नहीं करोगे तो और कोई तरीका नहीं है जिससे तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर सको ।
- 21 तुमने सुना है कि जो लोग प्राचीन काल में रहते थे उन्होंने इसे कहा है, और इसे तुम्हारे सामने भी लिखा गया है, कि तुम्हें हत्या नहीं करनी चाहिए, और जो कोई हत्या करता है उसे परमेश्वर के न्याय के अनुसार दंड का पात्र होगा ।

And blessed are ye when men shall revile you and persecute, and shall say all manner of evil against you falsely, for my sake;

For ye shall have great joy and be exceedingly glad, for great shall be your reward in heaven; for so persecuted they the prophets who were before you.

Verily, verily, I say unto you, I give unto you to be the salt of the earth; but if the salt shall lose its savor wherewith shall the earth be salted? The salt shall be thenceforth good for nothing, but to be cast out and to be trodden under foot of men.

Verily, verily, I say unto you, I give unto you to be the light of this people. A city that is set on a hill cannot be hid.

Behold, do men light a candle and put it under a bushel? Nay, but on a candlestick, and it giveth light to all that are in the house;

Therefore let your light so shine before this people, that they may see your good works and glorify your Father who is in heaven.

Think not that I am come to destroy the law or the prophets. I am not come to destroy but to fulfil;

For verily I say unto you, one jot nor one tittle hath not passed away from the law, but in me it hath all been fulfilled.

And behold, I have given you the law and the commandments of my Father, that ye shall believe in me, and that ye shall repent of your sins, and come unto me with a broken heart and a contrite spirit. Behold, ye have the commandments before you, and the law is fulfilled.

Therefore come unto me and be ye saved; for verily I say unto you, that except ye shall keep my commandments, which I have commanded you at this time, ye shall in no case enter into the kingdom of heaven.

Ye have heard that it hath been said by them of old time, and it is also written before you, that thou shalt not kill, and whosoever shall kill shall be in danger of the judgment of God;

- 22 परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई भी अपने भाई से क्रोध करेगा वह उसके न्याय के अनुसार दंड का पात्र होगा। और जो भी अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह परिषद के न्याय के अनुसार दंड का पात्र होगा; और जो भी कहेगा कि तुम मूर्ख हो तो वह आग भरी नरक के दंड का पात्र होगा।
- 23 इसलिए, यदि तुम मेरे पास आओगे, या मेरे पास आने की इच्छा रखोगे, और याद रखोगे कि तुम्हारे भाई ने तुम्हारे विरुद्ध क्या क्या किया है—
- 24 अपने भाई के पास जाओ, और पहले अपने भाई से मेल-मिलाप करो, और तब हृदय की पूर्ण इच्छा से मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें स्वीकार करूँगा।
- 25 जब तुम अपने मार्ग में हो तभी शीघ्रता से अपने विपक्षी से मेल-मिलाप कर लो, कहीं ऐसा न हो कि वह कभी भी तुम्हारे पास आ जाए और तुम्हें बंदीगृह में डाल दे।
- 26 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, कि जब तक तुम कौड़ी-कौड़ी (सेनिन) भर न दोगे तब तक तुम किसी भी प्रकार से बाहर नहीं आ सकते। और जब तुम बंदीगृह में होगे तो क्या एक भी कौड़ी (सेनिन) दे सकोगे? मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, नहीं।
- 27 देखो, जो लोग प्राचीन काल में रहते थे उन्होंने इसके विषय में लिखा है कि तुम्हें व्यभिचार नहीं करना चाहिए;
- 28 परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई भी एक स्त्री की तरफ कामुकता भरी नजर से देखता है, उसने अपने मन में व्यभिचार कर लिया है।
- 29 देखो, मैं तुम्हें एक आज्ञा देता हूँ कि इनमें से किसी भी चीज को अपने मन में न आने दो;
- 30 क्योंकि यह तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि तुम इन बातों को स्वयं ही अस्वीकार करो, जहां नरक में फेंके जाने की बजाय तुम अपना क्रूस उठाओगे।
- 31 इसे लिखा गया है कि जो कोई भी अपनी पत्नी को त्यागेगा, तो उसे तलाक लिखकर देना होगा।
- 32 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि व्यभिचार के कारण के अलावा जो भी अपनी पत्नी को त्यागेगा, उसके व्यभिचार का कारण बनेगा; और यदि कोई भी व्यक्ति तलाकशुदा स्त्री से विवाह करता है तो वह व्यभिचार करता है।
- 33 और फिर से इसे लिखा गया है कि तुम अपनी झूठी शपथ न खाना, परन्तु प्रभु में अपने शपथ को परिपूर्ण करना;
- 34 परन्तु मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, कि तुम कोई भी शपथ न खाना, न ही स्वर्ग की क्योंकि यह परमेश्वर का सिंहासन है;

But I say unto you, that whosoever is angry with his brother shall be in danger of his judgment. And whosoever shall say to his brother, Raca, shall be in danger of the council; and whosoever shall say, Thou fool, shall be in danger of hell fire.

Therefore, if ye shall come unto me, or shall desire to come unto me, and rememberest that thy brother hath aught against thee—

Go thy way unto thy brother, and first be reconciled to thy brother, and then come unto me with full purpose of heart, and I will receive you.

Agree with thine adversary quickly while thou art in the way with him, lest at any time he shall get thee, and thou shalt be cast into prison.

Verily, verily, I say unto thee, thou shalt by no means come out thence until thou hast paid the uttermost senine. And while ye are in prison can ye pay even one senine? Verily, verily, I say unto you, Nay.

Behold, it is written by them of old time, that thou shalt not commit adultery;

But I say unto you, that whosoever looketh on a woman, to lust after her, hath committed adultery already in his heart.

Behold, I give unto you a commandment, that ye suffer none of these things to enter into your heart;

For it is better that ye should deny yourselves of these things, wherein ye will take up your cross, than that ye should be cast into hell.

It hath been written, that whosoever shall put away his wife, let him give her a writing of divorce-ment.

Verily, verily, I say unto you, that whosoever shall put away his wife, saving for the cause of fornication, causeth her to commit adultery; and whoso shall marry her who is divorced committeth adultery.

And again it is written, thou shalt not forswear thyself, but shalt perform unto the Lord thine oaths;

But verily, verily, I say unto you, swear not at all; neither by heaven, for it is God's throne;



- 35 न ही पृथ्वी की क्योंकि यह उसके पैर रखने का स्थान है; Nor by the earth, for it is his footstool;
- 36 न ही तुम अपने सिर की शपथ खाना क्योंकि तुम एक भी बाल को Neither shalt thou swear by thy head, because  
न तो काला कर सकते हो न ही सफेद । thou canst not make one hair black or white;
- 37 हां परन्तु निश्चय रूप से तुम वार्तालाप करोगे, हां, हां; नहीं, नहीं; But let your communication be Yea, yea; Nay, nay;  
तो जो कुछ भी इससे और होगा वह बुराई से होगा । for whatsoever cometh of more than these is evil.
- 38 और देखो, इसे लिखा गया है, आंख के बदले आंख, और दांत के And behold, it is written, an eye for an eye, and a  
बदले दांत; tooth for a tooth;
- 39 परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम बुराई का प्रतिरोध नहीं करोगे But I say unto you, that ye shall not resist evil, but  
बल्कि जो भी तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारता है, उसकी तरफ whosoever shall smite thee on thy right cheek, turn  
दूसरा गाल घुमा दोगे; to him the other also;
- 40 और यदि कोई मनुष्य तुम पर कानून का अभियोग लगाए और तु- And if any man will sue thee at the law and take  
म्हारा अंगरखा ले ले, तो उसे अपना लबादा भी दे दो; away thy coat, let him have thy cloak also;
- 41 और यदि कोई तुम्हें एक मील चलने पर बाध्य करे तो उसके साथ And whosoever shall compel thee to go a mile, go  
दो मील चलो । with him twain.
- 42 जो तुमसे मांगता है उसे दे दो, और जो तुमसे उधार लेना चाहे तुम Give to him that asketh thee, and from him that  
उससे मुंह मत मोड़ो । would borrow of thee turn thou not away.
- 43 और देखो इसे भी लिखा गया है कि तुम अपने पड़ोसी से प्रेम करो And behold it is written also, that thou shalt love  
और अपने शत्रु से बैर; thy neighbor and hate thine enemy;
- 44 परन्तु देखो मैं तुमसे कहता हूँ कि अपने शत्रुओं से प्रेम करो, जो But behold I say unto you, love your enemies,  
तुम्हें श्राप दे उसे आशीष दो, जो तुमसे बैर करे उसके लिए भलाई bless them that curse you, do good to them that hate  
करो, और उनके लिए प्रार्थना करो जो द्वेष में तुम्हारा उपयोग करे और you, and pray for them who despitefully use you and  
तुम्हें सताए; persecute you;
- 45 ताकि तुम अपने पिता की संतान ठहरो जो स्वर्ग में है; क्योंकि वह That ye may be the children of your Father who is  
अच्छे और बुरे दोनों पर अपना सूर्योदय करता है । in heaven; for he maketh his sun to rise on the evil  
and on the good.
- 46 इसलिए जो भी प्राचीनकाल की बातें हैं, जो कानून के तहत है Therefore those things which were of old time,  
और जो मुझमें है वह सब पूरा हो गया है । which were under the law, in me are all fulfilled.
- 47 पुरानी बातें पूरी हो गई हैं, और सारी चीजें नई हो गई हैं । Old things are done away, and all things have be-  
come new.
- 48 इसलिए मैं चाहूंगा कि तुम मेरे समान, और अपने उस पिता के Therefore I would that ye should be perfect even  
समान परिपूर्ण हो जाओ जो स्वर्ग में है । as I, or your Father who is in heaven is perfect.

### 3 नफी 13

- 1 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि मैं चाहता हूँ कि तुम गरीबों को दान दो; परन्तु ध्यान रखो कि तुम लोगों को दिखाने के लिए दान मत करो; नहीं तो तुम्हारे लिए तुम्हारे उस पिता की तरफ से कोई पुरस्कार नहीं होगा जो स्वर्ग में है।
- 2 इसलिए, जब तुम दान करो तब अपने आगे तुरही मत बजाओ, जैसे कि ढोंगी लोग आराधनालयों और सड़कों पर करते हैं, ताकि लोग उनकी प्रशंसा कर सकें। मैं तुमसे सच कहता हूँ, उनके लिए उनका पुरस्कार है।
- 3 परन्तु जब तुम दान करते हो तब अपने बाएं हाथ को भी न जानने दो कि तुम्हारे दाहिने हाथ ने क्या दान किया है।
- 4 ताकि तुम्हारा दान गुप्त रहे; और तुम्हारा पिता जो गुप्त में देखता है, वही तुम्हें खुले तौर पर पुरस्कार देगा।
- 5 और जब तुम प्रार्थना करो तब तुम ढोंगियों के समान मत करो, क्योंकि उन्हें आराधनालयों में और सड़कों के नुक्कड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना अच्छा लगता है ताकि लोग उन्हें देख सकें। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि, उनके लिए उनका पुरस्कार है।
- 6 परन्तु जब तुम प्रार्थना करो तब अपनी कोठरी में जाओ और जब तुम द्वार बंद कर लो तब उस पिता से प्रार्थना करो जो गुप्त में है; और तुम्हारा पिता जो गुप्त में देखता है, तुम्हें खुले तौर पर पुरस्कार देगा।
- 7 परन्तु जब तुम प्रार्थना करो, व्यर्थ में मत दोहराओ, जैसे कि मूर्ति-पूजक करते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि वे अधिक बोलेंगे तो उनकी सुनी जाएगी।
- 8 तुम उनके समान मत बनो, क्योंकि मांगने से पहले ही तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें किस चीज की आवश्यकता है।
- 9 इसलिए तुम इस रीति से प्रार्थना करो: हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र हो।
- 10 तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी हो।
- 11 और जैसे हमने अपने देनदारों को क्षमा किया है वैसे ही हमारा ऋणों भी क्षमा कर।
- 12 और हमें प्रलोभन में न डाल परन्तु बुराई से बचा।
- 13 क्योंकि राज्य, और अधिकार, और महिमा सदा तेरी ही है। आमीन।
- 14 क्योंकि, यदि तुम मनुष्य के अपराधों को क्षमा करोगे तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता तुम्हें भी क्षमा करेगा।

### 3 Nephi 13

Verily, verily, I say that I would that ye should do alms unto the poor; but take heed that ye do not your alms before men to be seen of them; otherwise ye have no reward of your Father who is in heaven.

Therefore, when ye shall do your alms do not sound a trumpet before you, as will hypocrites do in the synagogues and in the streets, that they may have glory of men. Verily I say unto you, they have their reward.

But when thou doest alms let not thy left hand know what thy right hand doeth;

That thine alms may be in secret; and thy Father who seeth in secret, himself shall reward thee openly.

And when thou prayest thou shalt not do as the hypocrites, for they love to pray, standing in the synagogues and in the corners of the streets, that they may be seen of men. Verily I say unto you, they have their reward.

But thou, when thou prayest, enter into thy closet, and when thou hast shut thy door, pray to thy Father who is in secret; and thy Father, who seeth in secret, shall reward thee openly.

But when ye pray, use not vain repetitions, as the heathen, for they think that they shall be heard for their much speaking.

Be not ye therefore like unto them, for your Father knoweth what things ye have need of before ye ask him.

After this manner therefore pray ye: Our Father who art in heaven, hallowed be thy name.

Thy will be done on earth as it is in heaven.

And forgive us our debts, as we forgive our debtors.

And lead us not into temptation, but deliver us from evil.

For thine is the kingdom, and the power, and the glory, forever. Amen.

For, if ye forgive men their trespasses your heavenly Father will also forgive you;

- 15 परन्तु यदि तुम मनुष्य के अपराधों को क्षमा नहीं करोगे तो क्या तुम्हारा स्वर्गीय पिता तुम्हारे अपराधों को क्षमा करेगा ।
- 16 इससे अधिक, यदि तुम उपवास करो तो ढोंगियों के समान तुम्हारे चेहरे पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुंह बनाए रहते हैं ताकि लोग उन्हें उपवास करनेवाला जानें । मैं तुमसे सच कहता हूँ, उनके लिए उनका पुरस्कार है ।
- 17 परन्तु तुम जब उपवास करते हो तब अपने सिर तेल से अभिषेक करो, और अपने चेहरा धो लो;
- 18 ताकि तुम लोगों को उपवास करनेवाला न दिखाई दो, परन्तु अपने पिता को दिखाई दो, जो गुप्त में है; और पिता जो गुप्त में से देखता है, तुम्हें खुले तौर पर पुरस्कार देगा ।
- 19 स्वयं के लिए पृथ्वी पर धन इकठ्ठा मत करो, जहां कीड़े उन्हें बिगाड़ते हैं और उन पर जंग लग जाती है, और चोर आकर उन्हें चुरा ले जाते हैं;
- 20 परन्तु स्वयं के लिए स्वर्ग में धन इकठ्ठा करो, जहां न तो कीड़े उन्हें बिगाड़ते हैं और न उन पर जंग लगती है, और न ही चोर आकर उन्हें चुरा ले जाते हैं;
- 21 क्योंकि जहां तुम्हारा धन होगा वहीं तुम्हारा मन भी लगा रहेगा ।
- 22 शरीर की ज्योति आंख है; इसलिए, यदि तुम्हारी आंख में सच्चाई है तो तुम्हारा शरीर प्रकाशवान होगा ।
- 23 परन्तु यदि तुम्हारी आंख में बुराई है तो तुम्हारा पूरा शरीर अंधकारमय होगा । इसलिए, यदि तुममें जो प्रकाश है वह अंधकारमय होगा तो वह अंधकार कितना भयानक होगा!
- 24 कोई भी मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता है; या तो वह एक से ईर्ष्या करेगा और दूसरे से प्रेम, या तो वह एक से मिला रहेगा और दूसरे की उपेक्षा करेगा । तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते ।
- 25 और अब ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन बातों को कह लिया तो उसने उन बारहों की तरफ देखा जिन्हें उसने चुना था, और उनसे कहा: इन बातों को याद रखो जिसे मैंने कहा है । क्योंकि देखो, तुम लोग वही हो जिन्हें मैंने इन लोगों की सेवा के लिए चुना है । इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि अपने जीवन की चिंता मत करो, कि तुम क्या खाओगे, या क्या पीओगे; न ही अपने शरीर के लिए कि क्या पहनोगे । क्या जीवन भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं है ?
- 26 देखो हवा में उड़नेवाले पक्षी न तो बोते हैं, न ही काटते हैं और न ही खलिहानों में अनाज एकत्रित करते हैं; फिर भी स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है । क्या तुम उनसे बेहतर नहीं हो ?

But if ye forgive not men their trespasses neither will your Father forgive your trespasses.

Moreover, when ye fast be not as the hypocrites, of a sad countenance, for they disfigure their faces that they may appear unto men to fast. Verily I say unto you, they have their reward.

But thou, when thou fastest, anoint thy head, and wash thy face;

That thou appear not unto men to fast, but unto thy Father, who is in secret; and thy Father, who seeth in secret, shall reward thee openly.

Lay not up for yourselves treasures upon earth, where moth and rust doth corrupt, and thieves break through and steal;

But lay up for yourselves treasures in heaven, where neither moth nor rust doth corrupt, and where thieves do not break through nor steal.

For where your treasure is, there will your heart be also.

The light of the body is the eye; if, therefore, thine eye be single, thy whole body shall be full of light.

But if thine eye be evil, thy whole body shall be full of darkness. If, therefore, the light that is in thee be darkness, how great is that darkness!

No man can serve two masters; for either he will hate the one and love the other, or else he will hold to the one and despise the other. Ye cannot serve God and Mammon.

And now it came to pass that when Jesus had spoken these words he looked upon the twelve whom he had chosen, and said unto them: Remember the words which I have spoken. For behold, ye are they whom I have chosen to minister unto this people. Therefore I say unto you, take no thought for your life, what ye shall eat, or what ye shall drink; nor yet for your body, what ye shall put on. Is not the life more than meat, and the body than raiment?

Behold the fowls of the air, for they sow not, neither do they reap nor gather into barns; yet your heavenly Father feedeth them. Are ye not much better than they?

- 27 तुममें से कौन है जो चिंता करके अपने कद में एक इंच भी बढ़ा सकता है ?
- 28 और वस्त्र के बारे में तुम चिंता क्यों करते हो ? खेत में बढ़ रहे कु-मुद के फूलों पर विचार करो; न तो वे परिश्रम करती हैं, न ही वे कात-ती है;
- 29 और फिर भी मैं कहता हूँ, कि सुलैमान भी अपनी संपूर्ण महिमा में इनमें से किसी के समान सजा-संवरा नहीं था ।
- 30 इस कारण से यदि परमेश्वर खेत के घासों को कपड़े पहना सकता है, जिन्हें आज नहीं तो कल भट्टी में डाल दिया जाएगा, तो यदि तुम अल्प विश्वासी नहीं रहे तो इसी प्रकार वह तुम्हें भी कपड़े पहनाएगा ।
- 31 इसलिए यह कहते हुए चिंता मत करो कि हम क्या खाएंगे ? या हम क्या पीएंगे ? या हमारे लिए कपड़ा कहां से आएगा ?
- 32 क्योंकि तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब चीजों की आवश्यकता है ।
- 33 परन्तु सबसे पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसकी महिमा को खोजो, और ये सारी चीजें तुम्हें दे दी जाएंगी ।
- 34 इसलिए आनेवाले दिन की चिंता मत करो, क्योंकि आनेवाला दिन इन सब चीजों की चिंता स्वयं ही कर लेगा । आज के लिए आज का ही दुख बहुत है ।

Which of you by taking thought can add one cubit unto his stature?

And why take ye thought for raiment? Consider the lilies of the field how they grow; they toil not, neither do they spin;

And yet I say unto you, that even Solomon, in all his glory, was not arrayed like one of these.

Wherefore, if God so clothe the grass of the field, which today is, and tomorrow is cast into the oven, even so will he clothe you, if ye are not of little faith.

Therefore take no thought, saying, What shall we eat? or, What shall we drink? or, Wherewithal shall we be clothed?

For your heavenly Father knoweth that ye have need of all these things.

But seek ye first the kingdom of God and his righteousness, and all these things shall be added unto you.

Take therefore no thought for the morrow, for the morrow shall take thought for the things of itself. Sufficient is the day unto the evil thereof.

### 3 नफी 14

- 1 और अब ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन बातों को कह लिया तो वह फिर से भीड़ की तरफ मुड़ा, और उसने फिर से उनसे यह कहा: मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, दोष मत लगाओ कि तुम पर दोष न लगाया जाए।
- 2 क्योंकि जिस प्रकार तुम दूसरों को न्याय करते, उसी प्रकार तुम्हारा न्याय किया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापोगे, फिर से तुम्हें उसी नाप से नापा जाएगा।
- 3 और अपने स्वयं की आंख का लट्टा देखने की बजाय, तुम अपने भाई की आंख का तिनका क्यों देखते हो ?
- 4 या तुम अपने भाई से कैसे कहोगे: मुझे तुम्हारी आंख का तिनका निकालने दो—और देखो, तुम्हारी अपनी आंख में लट्टा है ?
- 5 तुम ढोंगी लोग, पहले अपना आंख से लट्टा निकालो; और तब तुम अपने भाई की आंख का तिनका निकालने के लिए स्पष्ट रूप से देख सकोगे।
- 6 पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, न ही सूअर के सामने अपनी बहुमूल्य वस्तुएं डालो, कहीं ऐसा न हो कि वे उन्हें अपने पैरों तले रौंद दें, और फिर तुम्हारे तरफ घुमकर तुम्हें चीर-फाड़ दें।
- 7 मांगो, और वह तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढो, और तुम पाओगे; खटखटाओ, और तुम्हारे लिए खोला जाएगा।
- 8 क्योंकि जो कोई भी मांगता है, उसे मिलता है; और जो कोई भी खोजता है, वह पाता है; और जो कोई भी खटखटाता है, उसके लिए खोला जाता है।
- 9 या तुममें से कौन मनुष्य होगा जिसका बेटा उससे रोटी मांगेगा तो वह उसे पत्थर देगा ?
- 10 या यदि वह मछली मांगेगा तो क्या तुम उसे सांप दोगे ?
- 11 यदि तुम बुरे होकर भी जानते हो कि अपने बच्चों को कैसे अच्छी वस्तुएं देनी चाहिए, तो पिता जो स्वर्ग में है, वह उन्हें कितनी अच्छी चीजें देगा जो मांगेंगे ?
- 12 इसलिए, वह सारी चीजें जिसे तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे लिए करें, तो तुम भी उनके साथ वैसा ही करो, क्योंकि यही नियम है और भविष्यवक्ता हैं।
- 13 तुम तंग द्वार से प्रवेश करो, क्योंकि जो द्वार चौड़ा, और जो मार्ग बड़ा है, वह विनाश की तरफ जाता है, और बहुत से लोग हैं जो उस पर जाते हैं;

### 3 Nephi 14

And now it came to pass that when Jesus had spoken these words he turned again to the multitude, and did open his mouth unto them again, saying: Verily, verily, I say unto you, Judge not, that ye be not judged.

For with what judgment ye judge, ye shall be judged; and with what measure ye mete, it shall be measured to you again.

And why beholdest thou the mote that is in thy brother's eye, but considerest not the beam that is in thine own eye?

Or how wilt thou say to thy brother: Let me pull the mote out of thine eye—and behold, a beam is in thine own eye?

Thou hypocrite, first cast the beam out of thine own eye; and then shalt thou see clearly to cast the mote out of thy brother's eye.

Give not that which is holy unto the dogs, neither cast ye your pearls before swine, lest they trample them under their feet, and turn again and rend you.

Ask, and it shall be given unto you; seek, and ye shall find; knock, and it shall be opened unto you.

For every one that asketh, receiveth; and he that seeketh, findeth; and to him that knocketh, it shall be opened.

Or what man is there of you, who, if his son ask bread, will give him a stone?

Or if he ask a fish, will he give him a serpent?

If ye then, being evil, know how to give good gifts unto your children, how much more shall your Father who is in heaven give good things to them that ask him?

Therefore, all things whatsoever ye would that men should do to you, do ye even so to them, for this is the law and the prophets.

Enter ye in at the strait gate; for wide is the gate, and broad is the way, which leadeth to destruction, and many there be who go in thereat;

- 14 क्योंकि जो द्वार तंग है, और मार्ग संकरा है, वह जीवन की तरफ ले जाती है, और कुछ ही लोग हैं जो इसे पाते हैं ।
- 15 झूठे भविष्यवक्ताओं से सावधान रहो, जो तुम्हारे पास भेड़ की खाल में आते हैं, परन्तु भीतर से भूखे और लालची भेड़िये होते हैं ।
- 16 उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे । क्या लोग कांटों से अंगूर और कांटेदार पेड़ से अंजीर तोड़ते हैं ?
- 17 वैसे ही हर अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है; परन्तु भ्रष्ट पेड़ बुरा फल ही लाता है ।
- 18 एक अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता है, न ही एक भ्रष्ट पेड़ अच्छा फल ला सकता है ।
- 19 हर पेड़ जो अच्छा फल नहीं लाता है उसे काट दिया जाता है, और आग में झोंक दिया जाता है ।
- 20 इसलिए तुम उन्हें उनके फलों से पहचान लोगे ।
- 21 जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, वह हर एक मनुष्य स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा; परन्तु वह प्रवेश करेगा जो स्वर्ग में रह रहे मेरे पिता की इच्छा पूरी करेगा ।
- 22 उस दिन बहुत से लोग मुझसे कहेंगे: हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तुम्हारे नाम में भविष्यवाणी नहीं की, और क्या हमने तुम्हारे नाम में शैतान नहीं निकाला, और क्या तेरे नाम में कई आश्चर्यजनक कार्य नहीं किये ?
- 23 और तब मैं तुम्हें बताऊंगा; मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना; अधर्म करनेवाले, तुम मुझसे दूर चले जाओ ।
- 24 इसलिए, जो कोई भी मेरी इन बातों को सुनता है और उन्हें करता है, मैं उसे उस बुद्धिमान व्यक्ति के समान मानता हूँ जो अपना घर एक चट्टान पर बनाता है—
- 25 और बारीश गिरती है, और बाढ़ आती है, और हवा बहती है, और उस घर पर थपेड़े मारती है; और वह गिरता नहीं है क्योंकि उसकी नींव तो चट्टान पर रखी गई थी ।
- 26 और जो कोई भी मेरी इन बातों को सुनता है और उन्हें करता नहीं है तो मैं उसे उस मूर्ख व्यक्ति के समान मानता हूँ जो अपना घर रेत पर बनाता है—
- 27 और बारीश गिरती है, और बाढ़ आती है, और हवा बहती है, और उस घर पर थपेड़े मारती है; और वह गिर जाता है, और वह बड़े जोर से गिरकर नष्ट हो जाता है ।
- Because strait is the gate, and narrow is the way, which leadeth unto life, and few there be that find it.
- Beware of false prophets, who come to you in sheep's clothing, but inwardly they are ravening wolves.
- Ye shall know them by their fruits. Do men gather grapes of thorns, or figs of thistles?
- Even so every good tree bringeth forth good fruit; but a corrupt tree bringeth forth evil fruit.
- A good tree cannot bring forth evil fruit, neither a corrupt tree bring forth good fruit.
- Every tree that bringeth not forth good fruit is hewn down, and cast into the fire.
- Wherefore, by their fruits ye shall know them.
- Not every one that saith unto me, Lord, Lord, shall enter into the kingdom of heaven; but he that doeth the will of my Father who is in heaven.
- Many will say to me in that day: Lord, Lord, have we not prophesied in thy name, and in thy name have cast out devils, and in thy name done many wonderful works?
- And then will I profess unto them: I never knew you; depart from me, ye that work iniquity.
- Therefore, whoso heareth these sayings of mine and doeth them, I will liken him unto a wise man, who built his house upon a rock—
- And the rain descended, and the floods came, and the winds blew, and beat upon that house; and it fell not, for it was founded upon a rock.
- And every one that heareth these sayings of mine and doeth them not shall be likened unto a foolish man, who built his house upon the sand—
- And the rain descended, and the floods came, and the winds blew, and beat upon that house; and it fell, and great was the fall of it.

### 3 नफी 15

- 1 और अब ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन बातों को कहना समाप्त कर लिया तो उसने अपनी दृष्टि अपने आस-पास की भीड़ पर डाली, और उनसे कहा: देखो, तुमने उन्हीं बातों को सुना है जिसे मैंने अपने पिता के पास जाने से पहले सिखाया था; इसलिए, जो कोई भी मेरी इन कही हुई बातों को याद रखेगा और उनका पालन करेगा, मैं उसे अंतिम दिन में खड़ा करूंगा।
- 2 और अब ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन बातों को कह लिया तब उसने महसूस किया कि उनमें से कुछ लोग थे जो अचम्भीत हुए, और आश्चर्य में पड़ गए कि वह मूसा की व्यवस्था के संबंध में क्या कहना चाहता था; क्योंकि वे इस कथन को समझ नहीं पाए कि पुरानी बातें बीत चुकी हैं, और सारी बातें नई हो गई हैं।
- 3 और उसने उनसे कहा: अचम्भीत न हो कि मैंने कहा कि पुरानी बातें बीत चुकी हैं, और सारी बातें नई हो गई हैं।
- 4 देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि जो व्यवस्था मूसा को दी गई थी वह पूरी हुई।
- 5 देखो, मैं ही हूँ जिसने व्यवस्था दी थी, और मैं ही हूँ जिसने इस्राएल के अपने लोगों से अनुबंध बनाया था; इसलिए, व्यवस्था मुझमें परिपूर्ण हुई, क्योंकि मैं व्यवस्था को परिपूर्ण करने आया हूँ; इसलिए यह समाप्त हो गई।
- 6 देखो, मैं अपने भविष्यवक्ताओं को नष्ट नहीं करता हूँ, क्योंकि जितनी भविष्यवाणियां मुझमें परिपूर्ण नहीं हुई हैं, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वे सब परिपूर्ण होंगी।
- 7 और क्योंकि मैंने तुमसे कहा है कि पुरानी बातें बीत चुकी हैं, मैं उन बातों को नष्ट नहीं करूंगा जो आनेवाली बातों के संबंध में कही गई हैं।
- 8 क्योंकि देखो, जो अनुबंध मैंने अपने लोगों के साथ बनाया है वह सब पूरा नहीं हुआ है; परन्तु जो व्यवस्था मूसा को दी गई थी वह मुझमें खत्म हो गई है।
- 9 देखो, मैं ही व्यवस्था और प्रकाश हूँ। मेरी तरफ देखो, और अंत तक दृढ़ बने रहो, और तुम जीवित रहोगे; क्योंकि जो अंत तक दृढ़ रहेगा उसे मैं अनंत जीवन दूंगा।
- 10 देखो, मैंने तुम्हें आज्ञाएं दी हैं; इसलिए मेरी आज्ञाओं का पालन करो। और यही नियम और भविष्यवक्ता हैं क्योंकि उन्होंने वास्तव में मेरी गवाही दी है।

### 3 Nephi 15

And now it came to pass that when Jesus had ended these sayings he cast his eyes round about on the multitude, and said unto them: Behold, ye have heard the things which I taught before I ascended to my Father; therefore, whoso remembereth these sayings of mine and doeth them, him will I raise up at the last day.

And it came to pass that when Jesus had said these words he perceived that there were some among them who marveled, and wondered what he would concerning the law of Moses; for they understood not the saying that old things had passed away, and that all things had become new.

And he said unto them: Marvel not that I said unto you that old things had passed away, and that all things had become new.

Behold, I say unto you that the law is fulfilled that was given unto Moses.

Behold, I am he that gave the law, and I am he who covenanted with my people Israel; therefore, the law in me is fulfilled, for I have come to fulfil the law; therefore it hath an end.

Behold, I do not destroy the prophets, for as many as have not been fulfilled in me, verily I say unto you, shall all be fulfilled.

And because I said unto you that old things have passed away, I do not destroy that which hath been spoken concerning things which are to come.

For behold, the covenant which I have made with my people is not all fulfilled; but the law which was given unto Moses hath an end in me.

Behold, I am the law, and the light. Look unto me, and endure to the end, and ye shall live; for unto him that endureth to the end will I give eternal life.

Behold, I have given unto you the commandments; therefore keep my commandments. And this is the law and the prophets, for they truly testified of me.

- 11 और अब ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन बातों को कह लिया, उसने जिन बारह लोगों को चुना था उनसे कहा:
- 12 तुम मेरे शिष्य हो; और तुम इन लोगों के लिए प्रकाश हो जो कि यूसुफ के घराने के बाकी लोग हैं।
- 13 और देखो, यह धरती तुम्हारी धरोहर है; और पिता ने इसे तुम्हें दिया है।
- 14 और पिता ने मुझे किसी भी समय यह आज्ञा नहीं दी कि इसके विषय में मैं तुम्हारे यरूशलेम के बंधुओं को ही बताऊं।
- 15 न ही पिता ने मुझे किसी भी समय यह आज्ञा दी कि मैं इस्राएल के घराने की अन्य जातियों को ही बताऊं जिन्हें पिता प्रदेश से बाहर निकाल ले गया था।
- 16 पिता ने केवल मुझे आज्ञा दी कि मैं उन्हें बताऊं।
- 17 कि अन्य भेड़ें हैं जो इस बाड़े की नहीं हैं; मुझे उन्हें भी लाना है, और वह मेरी आवाज सुनेंगी; और केवल एक बाड़ा होगा और एक चरवाहा।
- 18 और अब, हठी और अविश्वासी होने के कारण वे मेरी बात समझ नहीं पाए; इसलिए मेरे पिता ने इस विषय में उनसे बात न करने की मुझे आज्ञा दी थी।
- 19 परन्तु, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि पिता ने मुझे आज्ञा दी है, और मैं तुम्हें इसके विषय में बताता हूँ कि उनकी बुराइयों के कारण ही तुम उनसे अलग हो गए थे; इसलिए अपनी बुराइयों के कारण ही वे तुम्हारे बारे में नहीं जानते हैं।
- 20 और मैं फिर से तुमसे सच कहता हूँ कि पिता ने अन्य जातियों को उनसे अलग कर दिया है; और अपनी बुराइयों के कारण ही वे उनके बारे में नहीं जानते हैं।
- 21 और मैं तुमसे सच कहता हूँ कि तुम वही हो जिससे मैंने कहा था: मेरे पास अन्य भेड़े हैं जो इस बाड़े की नहीं हैं; मुझे उन्हें भी लाना है, और वे मेरी वाणी सुनेंगी; और केवल एक बाड़ा होगा और एक चरवाहा।
- 22 और वे मुझे समझ नहीं पाए, क्योंकि उन्हें लगा कि यह अन्य जातियों के लिए था; क्योंकि वे यह समझ नहीं पाए कि उनके प्रचार से अन्य जातियां परिवर्तित हो जाएंगी।

And now it came to pass that when Jesus had spoken these words, he said unto those twelve whom he had chosen:

Ye are my disciples; and ye are a light unto this people, who are a remnant of the house of Joseph.

And behold, this is the land of your inheritance; and the Father hath given it unto you.

And not at any time hath the Father given me commandment that I should tell it unto your brethren at Jerusalem.

Neither at any time hath the Father given me commandment that I should tell unto them concerning the other tribes of the house of Israel, whom the Father hath led away out of the land.

This much did the Father command me, that I should tell unto them:

That other sheep I have which are not of this fold; them also I must bring, and they shall hear my voice; and there shall be one fold, and one shepherd.

And now, because of stiffneckedness and unbelief they understood not my word; therefore I was commanded to say no more of the Father concerning this thing unto them.

But, verily, I say unto you that the Father hath commanded me, and I tell it unto you, that ye were separated from among them because of their iniquity; therefore it is because of their iniquity that they know not of you.

And verily, I say unto you again that the other tribes hath the Father separated from them; and it is because of their iniquity that they know not of them.

And verily I say unto you, that ye are they of whom I said: Other sheep I have which are not of this fold; them also I must bring, and they shall hear my voice; and there shall be one fold, and one shepherd.

And they understood me not, for they supposed it had been the Gentiles; for they understood not that the Gentiles should be converted through their preaching.



- 23 और वे इसका अर्थ समझ नहीं पाए कि मैंने उनसे कहा था कि वे मेरी वाणी सुनेंगे; और वे इसका अर्थ भी समझ नहीं पाए कि अन्य जातियां किसी भी समय मेरी वाणी नहीं सुनेंगी—कि पवित्र आत्मा के अलावा मैं स्वयं को उन पर प्रकट नहीं करूंगा ।
- 24 परन्तु देखो, तुम दोनों ने मेरी वाणी सुनी, और मुझे देखा; और तुम मेरी भेड़ें हो, और तुम्हारी गिनती उन लोगों में है जिन्हें पिता ने मुझे दिया है ।

And they understood me not that I said they shall hear my voice; and they understood me not that the Gentiles should not at any time hear my voice—that I should not manifest myself unto them save it were by the Holy Ghost.

But behold, ye have both heard my voice, and seen me; and ye are my sheep, and ye are numbered among those whom the Father hath given me.

## 3 नफी 16

- 1 और मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि मेरी अन्य भेड़ें भी हैं जो कि इस प्रदेश की नहीं हैं, न ही यरूशलेम प्रदेश की, न ही उस प्रदेश के आस-पास के किसी प्रदेश की हैं जहाँ मैं उपदेश देने गया था ।
- 2 क्योंकि जिनके बारे में मैं बोल रहा हूँ उन्होंने अभी तक मेरी आवाज नहीं सुनी है; न ही कभी मैंने स्वयं को उन पर प्रकट किया है ।
- 3 परन्तु मैंने पिता से आज्ञा प्राप्त की है कि मैं उनके पास जाऊँगा, और वे मेरी आवाज सुनेंगी, और उनकी गिनती मेरी भेड़ों में होगी, ताकि एक ही बाड़ा और एक ही चरवाहा हो सके; इसलिए मैं उन पर स्वयं को प्रकट करने जाऊँगा ।
- 4 और मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि मेरे जाने के पश्चात् तुम इन बातों को लिखोगे, कि ऐसा होगा कि यरूशलेम के मेरे लोगों ने जिन्होंने मुझे देखा है और मेरे सेवा कार्य में मेरे साथ रहे हैं, वे पिता से मेरे नाम में नहीं मांगते हैं कि वे पवित्र आत्मा द्वारा तुम्हारे विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकें, और अन्य जातियों के बारे में भी जिन्हें वे नहीं जानते हैं, इसलिए ये कथन जिन्हें तुम लिखोगे उन्हें रखा जाएगा और उन्हें दूसरी जातियों पर प्रकट किया जाएगा जिससे कि दूसरी जातियों कि परिपूर्णता के द्वारा उनके ही बचे हुए वंशों को लाया जा सके या जिन्हें मेरे, उनके मुक्तिदाता के ज्ञान में लाया जा सके जो अपने अविश्वास के कारण पृथ्वी पर तितर-बितर हो जाएंगे ।
- 5 और फिर मैं उन्हें पृथ्वी के चारों कोनों से एकत्रित करूँगा; और तब मैं उस अनुबंध को पूरा करूँगा जिसे पिता ने इस्राएल के घराने के सारे लोगों से बनाया था ।
- 6 और अन्य जातियां मुझमें अपने विश्वास के कारण आशीषित हैं, और उस पवित्र आत्मा में भी जो उन्हें मेरे और पिता की गवाही देती है ।
- 7 देखो, मुझमें अपने विश्वास के कारण, पिता कहता है, और तुम लोगों के अविश्वास के कारण, हे इस्राएल का घराना, अंतिम दिनों में सच्चाई अन्य जातियों तक पहुंचेगी, ताकि इन चीजों की परिपूर्णता का ज्ञात उन्हें कराया जाए ।

## 3 Nephi 16

And verily, verily, I say unto you that I have other sheep, which are not of this land, neither of the land of Jerusalem, neither in any parts of that land round about whither I have been to minister.

For they of whom I speak are they who have not as yet heard my voice; neither have I at any time manifested myself unto them.

But I have received a commandment of the Father that I shall go unto them, and that they shall hear my voice, and shall be numbered among my sheep, that there may be one fold and one shepherd; therefore I go to show myself unto them.

And I command you that ye shall write these sayings after I am gone, that if it so be that my people at Jerusalem, they who have seen me and been with me in my ministry, do not ask the Father in my name, that they may receive a knowledge of you by the Holy Ghost, and also of the other tribes whom they know not of, that these sayings which ye shall write shall be kept and shall be manifested unto the Gentiles, that through the fulness of the Gentiles, the remnant of their seed, who shall be scattered forth upon the face of the earth because of their unbelief, may be brought in, or may be brought to a knowledge of me, their Redeemer.

And then will I gather them in from the four quarters of the earth; and then will I fulfil the covenant which the Father hath made unto all the people of the house of Israel.

And blessed are the Gentiles, because of their belief in me, in and of the Holy Ghost, which witnesses unto them of me and of the Father.

Behold, because of their belief in me, saith the Father, and because of the unbelief of you, O house of Israel, in the latter day shall the truth come unto the Gentiles, that the fulness of these things shall be made known unto them.

- 8 परन्तु पिता कहता है कि अन्य जातियों के अविश्वास के कारण उन पर हाय हो—क्योंकि उन्होंने इस प्रदेश में आकर मेरे उन लोगों को तितर-बितर किया है जो इस्राएल के घराने के हैं; और मेरे लोग जो इस्राएल के घराने के हैं, उन्हें उनके बीच में से निकाल दिया गया, और वे उनके पैरों द्वारा कुचले गए;
- 9 और अन्य जातियों पर पिता की दया के कारण, और इस्राएल के घराने के मेरे लोगों पर पिता के न्याय के कारण भी, मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि इन सबके पश्चात् मैंने इस्राएल के घराने के अपने लोगों को दंड दिलवाया, और उन्हें कष्ट दिया, और उनका वध करवाया, और उनसे अलग करवाया जिससे कि वे उनसे घृणा करें, और उन्हें फुफकारें और उनके बीच उन पर छींटा-कसी हो—
- 10 और इस प्रकार पिता आज्ञा देता है जिसे मैं तुमसे कहता हूँ: इस दिन जब अन्य जातियाँ मेरे सुसमाचार के विरुद्ध पाप करेंगी, और मेरे सुसमाचार की परिपूर्णता को अस्वीकार करेंगी, और अहंकार में आकर सारे राष्ट्रों और पूरी धरती के सारे लोगों से स्वयं को ऊंचा समझेंगी, और हर प्रकार के झूठ, छलावे, और बुराई, और हर प्रकार के ढोंग और हत्याओं, और अनुचित पूजा उपासना, और वेश्यावृत्ति, और गुप्त घृणित कार्यों से भर जाएंगी; और यदि वे लोग ये सब कार्य करेंगे, और मेरे सुसमाचार की परिपूर्णता को अस्वीकार करेंगे, देखो, पिता कहता है, मैं उनके बीच से अपने सुसमाचार की परिपूर्णता को ले लूंगा ।
- 11 और तब मैं अपने अनुबंध को याद रखूंगा जिसे मैंने अपने लोगों से बनाया है, हे इस्राएल के घराने, और मैं अपना सुसमाचार उनके बीच लाऊंगा ।
- 12 और मैं तुम्हें दिखाऊंगा, हे इस्राएल का घराना कि अन्य जातियों का तुम पर कोई प्रभाव नहीं होगा; परन्तु हे इस्राएल के घराने मैं तुम्हारे साथ बनाए गए अपने अनुबंध को याद रखूंगा और तुम्हें मेरे सुसमाचार की परिपूर्णता का ज्ञान होगा ।
- 13 परन्तु यदि अन्य जातियाँ पश्चात्ताप करेंगी और मेरे पास आएंगी, पिता कहता है, देखो, हे इस्राएल के घराने, उनकी गिनती भी मेरे लोगों में होगी ।
- 14 और जो लोग इस्राएल के घराने के मेरे लोग हैं, पिता कहता है, मैं उनके साथ ऐसा नहीं होने दूंगा कि वे उनके पैरों तले कुचले जाएं ।

But wo, saith the Father, unto the unbelieving of the Gentiles—for notwithstanding they have come forth upon the face of this land, and have scattered my people who are of the house of Israel; and my people who are of the house of Israel have been cast out from among them, and have been trodden under feet by them;

And because of the mercies of the Father unto the Gentiles, and also the judgments of the Father upon my people who are of the house of Israel, verily, verily, I say unto you, that after all this, and I have caused my people who are of the house of Israel to be smitten, and to be afflicted, and to be slain, and to be cast out from among them, and to become hated by them, and to become a hiss and a byword among them—

And thus commandeth the Father that I should say unto you: At that day when the Gentiles shall sin against my gospel, and shall reject the fulness of my gospel, and shall be lifted up in the pride of their hearts above all nations, and above all the people of the whole earth, and shall be filled with all manner of lyings, and of deceits, and of mischiefs, and all manner of hypocrisy, and murders, and priestcrafts, and whoredoms, and of secret abominations; and if they shall do all those things, and shall reject the fulness of my gospel, behold, saith the Father, I will bring the fulness of my gospel from among them.

And then will I remember my covenant which I have made unto my people, O house of Israel, and I will bring my gospel unto them.

And I will show unto thee, O house of Israel, that the Gentiles shall not have power over you; but I will remember my covenant unto you, O house of Israel, and ye shall come unto the knowledge of the fulness of my gospel.

But if the Gentiles will repent and return unto me, saith the Father, behold they shall be numbered among my people, O house of Israel.

And I will not suffer my people, who are of the house of Israel, to go through among them, and tread them down, saith the Father.

15 परन्तु यदि वे मेरे पास नहीं आएंगे, और मेरी आवाज नहीं सुनेंगे तो मैं उन्हें दंड दूंगा, हां, मैं अपने लोगों को दंड दूंगा, हे इस्राएल के घराने कि वे तुम्हारे बीच जाएं, और वे कुचले जाएं, और हे इस्राएल के घराने, वे उस नमक की तरह हो जाएं जिसने अपना स्वाद खो दिया हो, जो कि इसके पश्चात फेंके जाने के सिवाय किसी काम का न हो, और जो मेरे लोगों के पैरों तले कुचला जाए ।

16 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, इस प्रकार पिता ने मुझे आज्ञा दी है—कि मैं इस प्रदेश को इन लोगों को इनकी धरोहर के रूप में दे दूँ ।

17 और तब भविष्यवक्ता यशयाह की भविष्यवाणी पूरी होगी, जो कहता है:

18 तेरे पहरेदार ऊंची आवाज में बोलेंगे; वे एक साथ गाएंगे, क्योंकि जब प्रभु फिर से सिय्योन स्थापित करेगा तब वे अपनी आंखों से देखेंगे ।

19 तुम यरूशलेम के खण्डहरों, आनंद मनाओ, एक साथ गाओ; क्योंकि प्रभु ने अपने लोगों को सांत्वना दी है, उसने यरूशलेम को मुक्ति दी है ।

20 प्रभु ने सारे राष्ट्रों के सामने अपनी पवित्र भुजा को फैलाया है; और पृथ्वी का छोर-छोर परमेश्वर का उद्धार देखेगा ।

But if they will not turn unto me, and hearken unto my voice, I will suffer them, yea, I will suffer my people, O house of Israel, that they shall go through among them, and shall tread them down, and they shall be as salt that hath lost its savor, which is thenceforth good for nothing but to be cast out, and to be trodden under foot of my people, O house of Israel.

Verily, verily, I say unto you, thus hath the Father commanded me—that I should give unto this people this land for their inheritance.

And then the words of the prophet Isaiah shall be fulfilled, which say:

Thy watchmen shall lift up the voice; with the voice together shall they sing, for they shall see eye to eye when the Lord shall bring again Zion.

Break forth into joy, sing together, ye waste places of Jerusalem; for the Lord hath comforted his people, he hath redeemed Jerusalem.

The Lord hath made bare his holy arm in the eyes of all the nations; and all the ends of the earth shall see the salvation of God.

### 3 नफी 17

- 1 देखो, अब ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन बातों को कह लिया तब उसने फिर से भीड़ के चारों तरफ देखा, और उसने उनसे कहा: देखो, मेरा समय निकट है ।
- 2 मैं जानता हूँ कि तुम कमजोर हो जिससे तुम मेरी उन सारी बातों को नहीं समझ सकते हो जिसे पिता ने मुझे तुमसे इस समय कहने की आज्ञा दी है ।
- 3 इसलिए, अपने घरों को जाओ, और उन बातों पर चिंतन करो जिसे मैंने कहा है, और मेरे नाम में पिता से मांगो ताकि तुम समझ सको, और अगले दिन के लिए अपने मन को तैयार कर सको, और मैं तुम्हारे पास फिर से आऊंगा ।
- 4 परन्तु अब मैं पिता के पास जाता हूँ, और इस्राएल की खोई हुई जातियों पर भी मुझे स्वयं को प्रकट करना है, क्योंकि वे पिता के लिए खोई हुई नहीं हैं, क्योंकि वह जानता है कि वह उन्हें कहां ले गया है ।
- 5 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इस प्रकार कह लिया, उसने फिर से भीड़ के चारों तरफ अपनी दृष्टि डाली, और देखा कि वे आंसुओं में थे, और उसे टकटकी लगाए देख रहे थे मानो वे कहना चाहते हों कि वह उनके साथ थोड़ी देर और रुक जाए ।
- 6 और उसने उनसे कहा: देखो, तुम्हारे लिए मेरा प्याला करुणा से भर गया है ।
- 7 क्या तुममें से कोई बीमार है ? उन्हें यहां लाओ । क्या तुममें से कोई लूला, या अन्धा, या लंगड़ा, या विकलांग, या कोढ़ी, या निर्बल, या बहरा है, या कोई है जिसे किसी भी प्रकार का कष्ट हो ? उन्हें यहां लाओ और मैं उन्हें चंगा करूंगा क्योंकि मुझमें तुम्हारे लिए करुणा है; मेरा प्याला दया से भर गया है ।
- 8 क्योंकि मैंने महसूस किया है कि तुम भी चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए भी वही करूँ जो मैंने यरूशलेम के तुम्हारे भाइयों के लिए किया है क्योंकि मैं देख सकता हूँ कि तुम्हारा विश्वास पर्याप्त है जिससे कि मैं तुम्हें चंगा करूँ ।
- 9 और ऐसा हुआ कि जब उसने इस प्रकार कह लिया, तब सारी भीड़ एक साथ मिलकर अपनी बीमारी और अपने कष्टों, और अपने लंगड़े-लूलों, और अपने अन्धों, और अपने गूंगों के साथ गए जो किसी भी प्रकार के कष्ट में थे; और जैसे-जैसे वे उसके पास लाए गए वैसे-वैसे उसने उन्हें चंगा किया ।

### 3 Nephi 17

Behold, now it came to pass that when Jesus had spoken these words he looked round about again on the multitude, and he said unto them: Behold, my time is at hand.

I perceive that ye are weak, that ye cannot understand all my words which I am commanded of the Father to speak unto you at this time.

Therefore, go ye unto your homes, and ponder upon the things which I have said, and ask of the Father, in my name, that ye may understand, and prepare your minds for the morrow, and I come unto you again.

But now I go unto the Father, and also to show myself unto the lost tribes of Israel, for they are not lost unto the Father, for he knoweth whither he hath taken them.

And it came to pass that when Jesus had thus spoken, he cast his eyes round about again on the multitude, and beheld they were in tears, and did look steadfastly upon him as if they would ask him to tarry a little longer with them.

And he said unto them: Behold, my bowels are filled with compassion towards you.

Have ye any that are sick among you? Bring them hither. Have ye any that are lame, or blind, or halt, or maimed, or leprous, or that are withered, or that are deaf, or that are afflicted in any manner? Bring them hither and I will heal them, for I have compassion upon you; my bowels are filled with mercy.

For I perceive that ye desire that I should show unto you what I have done unto your brethren at Jerusalem, for I see that your faith is sufficient that I should heal you.

And it came to pass that when he had thus spoken, all the multitude, with one accord, did go forth with their sick and their afflicted, and their lame, and with their blind, and with their dumb, and with all them that were afflicted in any manner; and he did heal them every one as they were brought forth unto him.

- 10 और दोनों ही प्रकार के लोग, जिन्हें चंगा किया गया और जो ठीक-ठाक थे, उसके पैरों पर गिर पड़े और उसकी आराधना की; और जितने भी लोग भीड़ में से आ पाए उन्होंने उसके पैरों को चूमा, इतना अधिक कि उन्होंने अपने आंसुओं से उसके पैरों को नहला दिया ।
- 11 और ऐसा हुआ कि उसने आज्ञा दी कि वे अपने छोटे बच्चों को लाएं ।
- 12 इसलिए वे अपने छोटे बच्चों को लाए और उसके आसपास उन्हें जमीन पर बिठा दिया, और यीशु बीच में खड़ा हुआ; और भीड़ ने तब तक रास्ता दिया जब तक कि उन सबको उसके पास न लाया गया ।
- 13 और ऐसा हुआ कि जब वे सबको ले आए, और यीशु उनके बीच में खड़ा हो गया, उसने भीड़ को आज्ञा दी कि वे सब जमीन पर घुटनों के बल हो जाएं ।
- 14 और ऐसा हुआ कि जब वे जमीन पर घुटनों के बल हो गए, यीशु ने मन ही मन कराहा, और कहा: पिता, इस्राएल के घराने के लोगों की दुष्टता के कारण मैं कष्ट में हूँ ।
- 15 और जब उसने इन शब्दों को कह लिया, वह भी जमीन पर घुटनों के बल हो गया; और देखो उसने पिता से प्रार्थना की, और उसने जो प्रार्थना की उसे लिखा नहीं जा सकता, और भीड़ में से जिन्होंने उसे सुना उन्होंने इसकी गवाही दी ।
- 16 और इस प्रकार उन्होंने गवाही दी: जब हमने देखा और यीशु को पिता से बात करते सुना तब इतनी महान और अदभुत चीजें हुईं जिसे इससे पहले आंखों ने न तो कभी देखा था, न ही कानों ने कभी सुना था ।
- 17 और न ही किसी की जबान इस तरह बोल सकती है, न ही इसे किसी मनुष्य द्वारा लिखा जा सकता है, न ही इस तरह की महान और अदभुत चीजें कोई अपने मन में सोच सकता है जैसा कि हमने यीशु को देखते और बोलते सुना था; और कोई भी उस आनंद को नहीं सोच सकता है जो हमारी आत्माओं में उस समय भर गया जब हमने उसे हमारे लिए पिता से प्रार्थना करते सुना था ।
- 18 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने पिता से प्रार्थना करना समाप्त किया, तो वह उठा; परन्तु भीड़ की प्रसन्नता इतनी अधिक थी कि वे अपना सुध-बुध खो बैठे थे ।
- 19 और ऐसा हुआ कि यीशु ने उनसे बात की, और उन्हें उठने की आज्ञा दी ।

And they did all, both they who had been healed and they who were whole, bow down at his feet, and did worship him; and as many as could come for the multitude did kiss his feet, insomuch that they did bathe his feet with their tears.

And it came to pass that he commanded that their little children should be brought.

So they brought their little children and set them down upon the ground round about him, and Jesus stood in the midst; and the multitude gave way till they had all been brought unto him.

And it came to pass that when they had all been brought, and Jesus stood in the midst, he commanded the multitude that they should kneel down upon the ground.

And it came to pass that when they had knelt upon the ground, Jesus groaned within himself, and said: Father, I am troubled because of the wickedness of the people of the house of Israel.

And when he had said these words, he himself also knelt upon the earth; and behold he prayed unto the Father, and the things which he prayed cannot be written, and the multitude did bear record who heard him.

And after this manner do they bear record: The eye hath never seen, neither hath the ear heard, before, so great and marvelous things as we saw and heard Jesus speak unto the Father;

And no tongue can speak, neither can there be written by any man, neither can the hearts of men conceive so great and marvelous things as we both saw and heard Jesus speak; and no one can conceive of the joy which filled our souls at the time we heard him pray for us unto the Father.

And it came to pass that when Jesus had made an end of praying unto the Father, he arose; but so great was the joy of the multitude that they were overcome.

And it came to pass that Jesus spake unto them, and bade them arise.

- 20 और वे जमीन पर खड़े हो गए, और उसने उनसे कहा: अपने विश्वास के कारण तुम आशीषित हो। और अब देखो, मेरा आनंद परिपूर्ण है।
- 21 और जब उसने इन बातों को कह लिया, वह रोया और भीड़ ने इसकी गवाही दी, और उसने उनके छोटे बच्चों को एक-एक कर आशीष दी, और उनके लिए पिता से प्रार्थना की।
- 22 और जब उसने ऐसा कर लिया तो वह फिर से रोया;
- 23 और वह भीड़ की तरफ मुड़ा, और उनसे कहा: अपने छोटे बच्चों को देखो।
- 24 और जब उन्होंने देखना चाहा तो अपनी आंखें स्वर्ग की तरफ उठाईं, और उन्होंने स्वर्गों को खुलते हुए देखा, और उन्होंने स्वर्ग से स्वर्गदूतों को नीचे उतरते देखा मानो वे आग के मध्य में हों; और वे नीचे आए और छोटे बच्चों को चारों तरफ से घेर लिया, और वे आग से घिर गए; और स्वर्गदूत उन्हें उपदेश देने लगे।
- 25 और भीड़ ने इसे देखा और सुना और इसकी गवाही दी; और वे जानते थे कि उनकी गवाही सच्ची है क्योंकि उनमें से हर एक व्यक्ति ने इसे स्वयं देखा और सुना था; और इन आत्माओं की संख्या लगभग दो हजार और पांच सौ थी; और उनमें पुरुष, स्त्री और बच्चे शामिल थे।

And they arose from the earth, and he said unto them: Blessed are ye because of your faith. And now behold, my joy is full.

And when he had said these words, he wept, and the multitude bare record of it, and he took their little children, one by one, and blessed them, and prayed unto the Father for them.

And when he had done this he wept again;

And he spake unto the multitude, and said unto them: Behold your little ones.

And as they looked to behold they cast their eyes towards heaven, and they saw the heavens open, and they saw angels descending out of heaven as it were in the midst of fire; and they came down and encircled those little ones about, and they were encircled about with fire; and the angels did minister unto them.

And the multitude did see and hear and bear record; and they know that their record is true for they all of them did see and hear, every man for himself; and they were in number about two thousand and five hundred souls; and they did consist of men, women, and children.

### 3 नफी 18

- 1 और ऐसा हुआ कि यीशु ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि वे उसके पास कुछ रोटी और मदिरा लाएं ।
- 2 और जब वे रोटी और मदिरा लेने गए हुए थे, उसने भीड़ को आज्ञा दी कि वे सब जमीन पर बैठ जाएं ।
- 3 और जब शिष्य रोटी और मदिरा लेकर आ गए, उसने रोटी ली और तोड़ी और उसे आशीषित किया; और उसने उसे शिष्यों को दिया और उन्हें उसे खाने की आज्ञा दी ।
- 4 और जब उन्होंने खा लिया और परिपूर्ण हुए तब उसने उन्हें आज्ञा दी कि वे उसे भीड़ को खिलाएं ।
- 5 और जब भीड़ ने खा लिया और परिपूर्ण हुई, उसने शिष्यों से कहा: देखो तुममें से एक को नियुक्त किया जाएगा, और उसे मैं अधिकार दूंगा कि वह रोटी को तोड़ेगा और उसे आशीषित करेगा और उसे गिरजे के मेरे उन सब लोगों को देगा जो मेरे नाम में विश्वास करेंगे और बपतिस्मा लेंगे ।
- 6 और इसे तुम सदा वैसे ही करोगे जैसा कि मैंने किया है, जैसे कि मैंने रोटी को तोड़ा और उसे आशीषित किया और तुम्हें दिया ।
- 7 और जो मैंने तुम्हें दिखाया है उसे तुम मेरे शरीर की याद में करोगे । और यह पिता के लिए एक गवाही होगी कि तुम मुझे सदा याद रखते हो । और यदि तुम मुझे सदा याद रखोगे तो मेरी आत्मा तुम्हारे साथ रहेगी ।
- 8 और ऐसा हुआ कि जब उसने इन बातों को कह लिया, उसने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि वे मदिरा का प्याला लेकर उसे पिएं, और वे भीड़ को भी दें ताकि वे भी इसे पी सकें ।
- 9 और ऐसा हुआ कि उन्होंने ऐसा ही किया, और उसे पिया और परिपूर्ण हुए; और उन्होंने भीड़ को दिया, और उन्होंने भी पिया, और वे भी परिपूर्ण हुए ।
- 10 और जब शिष्यों ने ऐसा कर लिया तब यीशु ने उनसे कहा: तुम आशीषित हो क्योंकि तुमने इसे किया है, क्योंकि ऐसा करना मेरी आज्ञाओं को पूरा करना है, और यह पिता के लिए गवाही है कि जो आज्ञा मैंने तुम्हें दी है उसे तुम करने की इच्छा रखते हो ।

### 3 Nephi 18

And it came to pass that Jesus commanded his disciples that they should bring forth some bread and wine unto him.

And while they were gone for bread and wine, he commanded the multitude that they should sit themselves down upon the earth.

And when the disciples had come with bread and wine, he took of the bread and brake and blessed it; and he gave unto the disciples and commanded that they should eat.

And when they had eaten and were filled, he commanded that they should give unto the multitude.

And when the multitude had eaten and were filled, he said unto the disciples: Behold there shall one be ordained among you, and to him will I give power that he shall break bread and bless it and give it unto the people of my church, unto all those who shall believe and be baptized in my name.

And this shall ye always observe to do, even as I have done, even as I have broken bread and blessed it and given it unto you.

And this shall ye do in remembrance of my body, which I have shown unto you. And it shall be a testimony unto the Father that ye do always remember me. And if ye do always remember me ye shall have my Spirit to be with you.

And it came to pass that when he said these words, he commanded his disciples that they should take of the wine of the cup and drink of it, and that they should also give unto the multitude that they might drink of it.

And it came to pass that they did so, and did drink of it and were filled; and they gave unto the multitude, and they did drink, and they were filled.

And when the disciples had done this, Jesus said unto them: Blessed are ye for this thing which ye have done, for this is fulfilling my commandments, and this doth witness unto the Father that ye are willing to do that which I have commanded you.



- 11 और ऐसा तुम उन लोगों के साथ सदा करोगे जो पश्चाताप करते हैं और मेरे नाम में बपतिस्मा लेते हैं; और इसे तुम मेरे उस लहू की याद में करोगे जिसे मैंने तुम्हारे लिए बहाया है ताकि यह पिता के लिए एक गवाही हो सके कि तुम मुझे सदा याद करते हो। और यदि तुम ऐसा सदा करोगे तो याद रखो कि मेरी आत्मा तुम्हारे साथ होगी।
- 12 और मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम इन चीजों को करोगे। और तुम आशीषित होगे यदि तुम इन चीजों को सदा करोगे, क्योंकि तुम्हारा निर्माण मेरी चट्टान पर हुआ है।
- 13 परन्तु तुममें से जो कोई भी इससे अधिक या इससे कम करेगा उसका निर्माण मेरी चट्टान पर नहीं हुआ है, परन्तु उसका निर्माण रेत पर हुआ है; और जब बारीश गिरती है, और बाढ़ आती है, और हवा बहती है, और उन पर थपेड़े मारती है तो वे गिर जाते हैं, और नरक का द्वार उन्हें ग्रहण करने के लिए खुला होता है।
- 14 इसलिए तुम आशीषित होगे यदि मेरी उन आज्ञाओं का पालन करोगे जिसे पिता ने मुझे तुम्हें देने की आज्ञा दी है।
- 15 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि तुम्हें सदा जागते और प्रार्थना करते रहना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि तुम शैतान द्वारा लालच में पड़ जाओ, और उसके द्वारा दास बनाए जाओ।
- 16 और जैसा मैंने तुम्हारे बीच में प्रार्थना की है वैसे ही तुम मेरे गिरजे में और मेरे उन लोगों में प्रार्थना करोगे जो पश्चाताप करते हैं और मेरे नाम में बपतिस्मा लेते हैं। देखो मैं प्रकाश हूँ; मैंने तुम्हारे लिए एक उदाहरण रखा है।
- 17 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने शिष्यों से इन बातों को कह लिया तो वह फिर से भीड़ की तरफ मुड़ा और उनसे कहा:
- 18 देखो मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि तुम्हें सदा जागते और प्रार्थना करते रहना चाहिए नहीं तो तुम प्रलोभन में पड़ जाओगे; क्योंकि शैतान तुम्हें अपने वश में करना चाहता है ताकि वह तुम्हें गेहूँ के समान फटक सके।
- 19 इसलिए तुम्हें सदा मेरे नाम में पिता से प्रार्थना करनी चाहिए;
- 20 और मेरे नाम में जो भी तुम पिता से मांगोगे, जो कि उचित होगा और तुम्हें विश्वास होगा कि तुम पाओगे, देखो वह तुम्हें दिया जाएगा।
- 21 अपने परिवारों में सदा मेरे नाम से पिता से प्रार्थना किया करो ताकि तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे बच्चे आशीषित हो सकें।

And this shall ye always do to those who repent and are baptized in my name; and ye shall do it in remembrance of my blood, which I have shed for you, that ye may witness unto the Father that ye do always remember me. And if ye do always remember me ye shall have my Spirit to be with you.

And I give unto you a commandment that ye shall do these things. And if ye shall always do these things blessed are ye, for ye are built upon my rock.

But whoso among you shall do more or less than these are not built upon my rock, but are built upon a sandy foundation; and when the rain descends, and the floods come, and the winds blow, and beat upon them, they shall fall, and the gates of hell are ready open to receive them.

Therefore blessed are ye if ye shall keep my commandments, which the Father hath commanded me that I should give unto you.

Verily, verily, I say unto you, ye must watch and pray always, lest ye be tempted by the devil, and ye be led away captive by him.

And as I have prayed among you even so shall ye pray in my church, among my people who do repent and are baptized in my name. Behold I am the light; I have set an example for you.

And it came to pass that when Jesus had spoken these words unto his disciples, he turned again unto the multitude and said unto them:

Behold, verily, verily, I say unto you, ye must watch and pray always lest ye enter into temptation; for Satan desireth to have you, that he may sift you as wheat.

Therefore ye must always pray unto the Father in my name;

And whatsoever ye shall ask the Father in my name, which is right, believing that ye shall receive, behold it shall be given unto you.

Pray in your families unto the Father, always in my name, that your wives and your children may be blessed.

- 22 और देखो, तुम अक्सर एकत्रित हुआ करो; और जब तुम एकत्रित होते हो तो किसी भी व्यक्ति को अपने पास आने से मना मत करो, बल्कि ऐसा होने दो कि वे तुम्हारे पास आएँ और उन्हें मत रोको ।
- 23 परन्तु तुम उनके लिए प्रार्थना करो, और उन्हें बाहर मत निकालो; और यदि ऐसा हो कि वे अक्सर ही तुम्हारे पास आएँ तो तुम उनके लिए मेरे नाम में पिता से प्रार्थना करो ।
- 24 इसलिए, अपने प्रकाश को ऊंचा करो जिससे कि वह सारे संसार को प्रकाशित कर सके । देखो मैं वही प्रकाश हूँ जिसे तुम पकड़े रहोगे—जिसे तुमने मुझे करते देखा है । देखो तुमने मुझे पिता से प्रार्थना करते देखा है, और तुम सबने इसकी गवाही दी है ।
- 25 और तुमने देखा है कि मैंने तुममें से किसी को भी दूर जाने की आज्ञा नहीं दी है, बल्कि मैंने तुम्हें मेरे पास आने की आज्ञा दी है ताकि तुम मुझे महसूस कर सको और देख सको; ऐसा ही तुम संसार के साथ भी करोगे; और जो कोई भी इस आज्ञा को तोड़ेगा वह प्रलोभन में पड़ जाएगा ।
- 26 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन बातों को कह लिया तो उसने अपनी आंखें फिर से उन शिष्यों पर टिका दी जिन्हें उसने चुना था, और उनसे कहा:
- 27 देखो मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, मैं तुम्हें दूसरी आज्ञा दूंगा, और फिर मुझे अपने पिता के पास जाना होगा ताकि मैं अन्य आज्ञाओं को पूरा कर सकूँ जिसे उसने मुझे दिया है ।
- 28 और अब देखो, यही वह आज्ञा है जिसे मैं तुम्हें देता हूँ, कि जब तुम मेरे शरीर और लहू को देते हो, तब तुम जानते हुए इसे किसी अयोग्य व्यक्ति को मत लेने देना ।
- 29 क्योंकि जो कोई भी अयोग्य रहते हुए मेरा शरीर खाएगा और लहू पीएगा वह अपनी आत्मा को नरकदंड खिलाएगा और पिलाएगा; इसलिए यदि तुम जानते हो कि कोई व्यक्ति मेरे शरीर और लहू को खाने और पीने के लिए अयोग्य है तो तुम उसे मना करोगे ।
- 30 फिर भी, तुम उसे अपने बीच से बाहर नहीं निकालोगे, परन्तु तुम उसे उपदेश दोगे और मेरे नाम में पिता से उसके लिए प्रार्थना करोगे; और यदि ऐसा होता है कि वह पश्चाताप करता है और मेरे नाम में बप-तिस्मा लेता है तो तुम उसे स्वीकार करोगे, और उसे मेरा शरीर और लहू दोगे ।

And behold, ye shall meet together oft; and ye shall not forbid any man from coming unto you when ye shall meet together, but suffer them that they may come unto you and forbid them not;

But ye shall pray for them, and shall not cast them out; and if it so be that they come unto you oft ye shall pray for them unto the Father, in my name.

Therefore, hold up your light that it may shine unto the world. Behold I am the light which ye shall hold up—that which ye have seen me do. Behold ye see that I have prayed unto the Father, and ye all have witnessed.

And ye see that I have commanded that none of you should go away, but rather have commanded that ye should come unto me, that ye might feel and see; even so shall ye do unto the world; and whosoever breaketh this commandment suffereth himself to be led into temptation.

And now it came to pass that when Jesus had spoken these words, he turned his eyes again upon the disciples whom he had chosen, and said unto them:

Behold verily, verily, I say unto you, I give unto you another commandment, and then I must go unto my Father that I may fulfil other commandments which he hath given me.

And now behold, this is the commandment which I give unto you, that ye shall not suffer any one knowingly to partake of my flesh and blood unworthily, when ye shall minister it;

For whoso eateth and drinketh my flesh and blood unworthily eateth and drinketh damnation to his soul; therefore if ye know that a man is unworthy to eat and drink of my flesh and blood ye shall forbid him.

Nevertheless, ye shall not cast him out from among you, but ye shall minister unto him and shall pray for him unto the Father, in my name; and if it so be that he repenteth and is baptized in my name, then shall ye receive him, and shall minister unto him of my flesh and blood.

- 31 परन्तु यदि वह पश्चात्ताप नहीं करता है तो उसकी गिनती तुम्हारे लोगों में नहीं होगी, जिससे कि वह मेरे लोगों को बर्बाद न कर सके क्योंकि देखो मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और उनकी गिनती हो चुकी है ।
- 32 फिर भी, तुम उसे अपने आराधनालयों और उपासना के अपने स्थानों से बाहर नहीं निकालोगे बल्कि उसे उपदेश देना जारी रखोगे; क्योंकि तुम नहीं जानते हो कि कब वे बदल जाएं और पश्चात्ताप करें, और पूरे हृदय से मेरे पास आएँ, और मैं उन्हें चंगाई दूंगा; और उनके प्रति उद्धार लाने का स्रोत तुम बनोगे ।
- 33 इसलिए, उन बातों को कहते रहो जिसे मैंने तुम्हें कहने की आज्ञा दी है ताकि तुम पर दंडाज्ञा न आए; क्योंकि उस पर हाय जिसे पिता दंड देता है ।
- 34 और जो तुम्हारे बीच विवाद है उसके कारण ही मैं तुम्हें ये आज्ञाएं देता हूँ । और यदि तुम्हारे बीच कोई वाद-विवाद नहीं है तो तुम आशीर्षित हो ।
- 35 और अब मैं पिता के पास जाऊंगा क्योंकि यह आवश्यक है कि मैं तुम्हारे खातिर पिता के पास जाऊँ ।
- 36 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने कहना समाप्त किया, उसने एक-एक कर उन शिष्यों को जिन्हें उसने चुना था, अपने हाथों से तब तक छुआ जब तक कि सबको न छू लिया, और जब उसने उन्हें छुआ तब उनसे बातें की ।
- 37 और जो बातें उसने उनसे की उसे भीड़ ने नहीं सुना, इसलिए वे गवाही न दे सके; परन्तु शिष्यों ने गवाही दी कि उसने उन्हें पवित्र आत्मा देने का उपहार दिया था । और इसके पश्चात् मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि यह गवाही सत्य है ।
- 38 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने उन सबको छू लिया, वहां एक बादल आया और भीड़ को ढक लिया जिससे कि वे यीशु को न देख सके ।
- 39 और जब वे बादल से ढक गए थे तब वह उनसे अलग होकर स्वर्ग चला गया । और शिष्यों ने देखा और इसकी गवाही दी कि वह फिर से स्वर्ग चला गया ।

But if he repent not he shall not be numbered among my people, that he may not destroy my people, for behold I know my sheep, and they are numbered.

Nevertheless, ye shall not cast him out of your synagogues, or your places of worship, for unto such shall ye continue to minister; for ye know not but what they will return and repent, and come unto me with full purpose of heart, and I shall heal them; and ye shall be the means of bringing salvation unto them.

Therefore, keep these sayings which I have commanded you that ye come not under condemnation; for wo unto him whom the Father condemneth.

And I give you these commandments because of the disputations which have been among you. And blessed are ye if ye have no disputations among you.

And now I go unto the Father, because it is expedient that I should go unto the Father for your sakes.

And it came to pass that when Jesus had made an end of these sayings, he touched with his hand the disciples whom he had chosen, one by one, even until he had touched them all, and spake unto them as he touched them.

And the multitude heard not the words which he spake, therefore they did not bear record; but the disciples bare record that he gave them power to give the Holy Ghost. And I will show unto you hereafter that this record is true.

And it came to pass that when Jesus had touched them all, there came a cloud and overshadowed the multitude that they could not see Jesus.

And while they were overshadowed he departed from them, and ascended into heaven. And the disciples saw and did bear record that he ascended again into heaven.

### 3 नफी 19

- 1 और अब ऐसा हुआ कि जब यीशु स्वर्ग चला गया, भीड़ तितर-बितर हो गई, और हर एक पुरुष अपनी पत्नी और अपने बच्चों के साथ अपने घर लौट गया ।
- 2 और अंधेरा होने से पहले ही चारों तरफ लोगों में ये बात फैल गई कि भीड़ ने यीशु को देखा था, और यह कि उसने उन्हें उपदेश दिया था, और यह कि वह अगले दिन भीड़ पर स्वयं को प्रकट करेगा ।
- 3 हां, और पूरी रात चारों तरफ यीशु के संबंध में चर्चा होती रही; और इतनी अधिक कि उन्होंने बहुत से लोगों को वहां भेजा, हां, उन्होंने पूरी रात बहुत परिश्रम किया ताकि वे सब अगले दिन उस स्थान पर जा सकें जहां यीशु भीड़ पर स्वयं को प्रकट करनेवाला था ।
- 4 और ऐसा हुआ कि अगले दिन, जब भीड़ एकत्रित हुई, देखो, नफी और उसका भाई जिसे उसने मृत्यु से जीवित किया था, जिसका नाम तीमुथियुस था, और उसका बेटा भी जिसका नाम यूनस था, और मथोनी भी, और उसका भाई मथोनिहा भी, और कूमन, और कूमनोन्ही, और यिर्मयाह, और शेमनोन, और यूनस, और सिदकिय्याह, और यशायाह—अब ये उन शिष्यों के नाम हैं जिन्हें यीशु ने चुना था—और ऐसा हुआ कि वे गए और भीड़ के मध्य में खड़े हो गए ।
- 5 और देखो, भीड़ इतनी बड़ी थी कि उन्होंने उसे बारह हिस्सों में बांट दिया ।
- 6 और बारहों ने भीड़ में प्रचार किया; और देखो, उन्होंने भीड़ से जमीन पर घुटने टेकने, और यीशु के नाम में पिता से प्रार्थना करने के लिए कहा ।
- 7 और शिष्यों ने भी यीशु के नाम में पिता से प्रार्थना की । और ऐसा हुआ कि वे खड़े हुए और लोगों को उपदेश दिया ।
- 8 और जब उन्होंने उन्हीं बातों का प्रचार कर लिया जिसे यीशु ने बताया था—यीशु की कही हुई बातों से कुछ भी अलग नहीं था—देखो, उन्होंने फिर से घुटने टेके और यीशु के नाम में पिता से प्रार्थना की ।

### 3 Nephi 19

And now it came to pass that when Jesus had ascended into heaven, the multitude did disperse, and every man did take his wife and his children and did return to his own home.

And it was noised abroad among the people immediately, before it was yet dark, that the multitude had seen Jesus, and that he had ministered unto them, and that he would also show himself on the morrow unto the multitude.

Yea, and even all the night it was noised abroad concerning Jesus; and insomuch did they send forth unto the people that there were many, yea, an exceedingly great number, did labor exceedingly all that night, that they might be on the morrow in the place where Jesus should show himself unto the multitude.

And it came to pass that on the morrow, when the multitude was gathered together, behold, Nephi and his brother whom he had raised from the dead, whose name was Timothy, and also his son, whose name was Jonas, and also Mathoni, and Mathonihah, his brother, and Kumen, and Kumenonhi, and Jeremiah, and Shemnon, and Jonas, and Zedekiah, and Isaiah—now these were the names of the disciples whom Jesus had chosen—and it came to pass that they went forth and stood in the midst of the multitude.

And behold, the multitude was so great that they did cause that they should be separated into twelve bodies.

And the twelve did teach the multitude; and behold, they did cause that the multitude should kneel down upon the face of the earth, and should pray unto the Father in the name of Jesus.

And the disciples did pray unto the Father also in the name of Jesus. And it came to pass that they arose and ministered unto the people.

And when they had ministered those same words which Jesus had spoken—nothing varying from the words which Jesus had spoken—behold, they knelt again and prayed to the Father in the name of Jesus.

- 9 और उन्होंने उस चीज के लिए प्रार्थना की जिसकी उन्हें सबसे अधिक इच्छा थी; और उनकी इच्छा थी कि उन्हें पवित्र आत्मा प्रदान की जाए ।
- 10 और इस प्रकार जब उन्होंने प्रार्थना कर ली तब वे नदी के किनारे गए, और भीड़ उनके पीछे हो ली ।
- 11 और अब ऐसा हुआ कि नफी पानी में गया और उसका बपतिस्मा हुआ ।
- 12 और वह पानी से बाहर आया और बपतिस्मा करने लगा । और उसने उन सबका बपतिस्मा किया जिन्हें यीशु ने चुना था ।
- 13 और अब ऐसा हुआ कि जब सबका बपतिस्मा हो गया और वे पानी से बाहर आ गए, पवित्र आत्मा उन पर आई, और वे पवित्र आत्मा और आग से भर गए ।
- 14 और देखो, वे ऐसी चीज से घिर गए मानो आग हो; और वह स्वर्ग से आई थी, और भीड़ ने इसे देखा, और इसकी गवाही दी; और स्वर्ग-दूत स्वर्ग से नीचे आए और उन्हें उपदेश दिया ।
- 15 और ऐसा हुआ कि जब स्वर्गदूत शिष्यों को उपदेश दे रहे थे, देखो, यीशु आया और उनके मध्य में खड़ा हो गया और उन्हें उपदेश दिया ।
- 16 और ऐसा हुआ कि उसने भीड़ से बात की, और उन्हें आज्ञा दी कि वे फिर से जमीन पर घुटने टेकें, और अपने शिष्यों को भी आज्ञा दी कि वे जमीन पर घुटने टेकें ।
- 17 और ऐसा हुआ कि जब उन सबने जमीन पर घुटने टेक लिए, उसने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि उन्हें प्रार्थना करनी चाहिए ।
- 18 और देखो, वे प्रार्थना करने लगे; और उन्होंने यीशु से प्रार्थना की, उसे अपना प्रभु और अपना परमेश्वर पुकारते हुए ।
- 19 और ऐसा हुआ कि यीशु उनके बीच से चला गया, और उनसे थोड़ी दूरी पर जाकर स्वयं को जमीन पर झुका लिया, और उसने कहा:
- 20 पिता, मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ कि तुमने उन लोगों को पवित्र आत्मा प्रदान की है जिन्हें मैंने चुना था; और ऐसा मुझमें उनके विश्वास के कारण है कि मैंने उन्हें संसार में से चुना है ।
- 21 पिता, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम उन सब लोगों को पवित्र आत्मा दोगे जो उनकी बातों पर विश्वास करेंगे ।

And they did pray for that which they most desired; and they desired that the Holy Ghost should be given unto them.

And when they had thus prayed they went down unto the water's edge, and the multitude followed them.

And it came to pass that Nephi went down into the water and was baptized.

And he came up out of the water and began to baptize. And he baptized all those whom Jesus had chosen.

And it came to pass when they were all baptized and had come up out of the water, the Holy Ghost did fall upon them, and they were filled with the Holy Ghost and with fire.

And behold, they were encircled about as if it were by fire; and it came down from heaven, and the multitude did witness it, and did bear record; and angels did come down out of heaven and did minister unto them.

And it came to pass that while the angels were ministering unto the disciples, behold, Jesus came and stood in the midst and ministered unto them.

And it came to pass that he spake unto the multitude, and commanded them that they should kneel down again upon the earth, and also that his disciples should kneel down upon the earth.

And it came to pass that when they had all knelt down upon the earth, he commanded his disciples that they should pray.

And behold, they began to pray; and they did pray unto Jesus, calling him their Lord and their God.

And it came to pass that Jesus departed out of the midst of them, and went a little way off from them and bowed himself to the earth, and he said:

Father, I thank thee that thou hast given the Holy Ghost unto these whom I have chosen; and it is because of their belief in me that I have chosen them out of the world.

Father, I pray thee that thou wilt give the Holy Ghost unto all them that shall believe in their words.

- 22 पिता, तुमने उन्हें पवित्र आत्मा प्रदान की है क्योंकि वे मुझमें विश्वास करते हैं; और तुम देखते हो वे मुझमें विश्वास करते हैं क्योंकि तुम उन्हें सुनते हो, और वे मुझसे प्रार्थना करते हैं; और वे मुझसे प्रार्थना इसलिए करते हैं क्योंकि मैं उनके साथ हूँ ।
- 23 और अब पिता, मैं उनके लिए तुमसे प्रार्थना करता हूँ, और उन लोगों के लिए भी जो उनकी बातों पर विश्वास करेंगे जिससे वे मुझमें विश्वास कर सकें, ताकि मैं उनमें वैसे ही विराजमान रहूँ जैसे पिता, तुम मुझमें हो, ताकि हम एक हो सकें ।
- 24 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इस प्रकार पिता से प्रार्थना कर ली, वह अपने शिष्यों के पास आया, और देखो, बिना रुके वे अब भी उससे प्रार्थना कर रहे थे; और उन्होंने और शब्द नहीं बढ़ाए क्योंकि उन्हें बताया गया था कि उन्हें क्या प्रार्थना करनी है, और वे इच्छा से भर गए ।
- 25 और ऐसा हुआ कि जब वे यीशु से प्रार्थना कर रहे थे तब उसने उन्हें आशीष दी; और उसके चेहरे पर उनके लिए मुस्कराहट थी, और चेहरे का उसका प्रकाश उन पर भी चमका, और देखो वे उसके चेहरे और उसके वस्त्र के समान सफेद हो गए; और देखो यह सफेदी सभी सफेदी से अधिक थी, हां, यहां तक कि पृथ्वी पर इतनी सफेद कोई भी चीज नहीं है जितना कि उसका चेहरा था ।
- 26 और यीशु ने उनसे कहा: प्रार्थना करते रहो, और उन्होंने प्रार्थना करना बंद नहीं किया ।
- 27 और वह फिर से वहां से घुम गया, और उनसे थोड़ी दूरी पर जाकर स्वयं को जमीन पर झुका लिया, और उसने यह कहते हुए फिर से पिता से प्रार्थना की:
- 28 पिता, मैं धन्यवाद देता हूँ कि तुमने उन लोगों को शुद्ध किया जिन्हें मैंने उनके विश्वास के कारण चुना है, और मैं उनके लिए प्रार्थना करता हूँ, और उनके लिए भी जो उनकी बातों पर विश्वास करेंगे, ताकि वे भी उनकी बातों पर विश्वास करने के कारण वैसे ही मुझमें शुद्ध हो सकें जैसे कि वे मुझमें शुद्ध हुए हैं ।
- 29 पिता, मैं संसार के लिए प्रार्थना नहीं करता हूँ, परन्तु उन लोगों के लिए करता हूँ जिन्हें तुमने उनके विश्वास के कारण संसार से चुनकर मुझे दिया है, कि वे मुझमें शुद्ध हो सकें, कि मैं उनमें वैसे ही विराजमान रहूँ जैसे पिता, तुम मुझमें हो, कि हम एक हो सकें, ताकि मैं उनमें गौरवान्वित हो सकूँ ।

Father, thou hast given them the Holy Ghost because they believe in me; and thou seest that they believe in me because thou hearest them, and they pray unto me; and they pray unto me because I am with them.

And now Father, I pray unto thee for them, and also for all those who shall believe on their words, that they may believe in me, that I may be in them as thou, Father, art in me, that we may be one.

And it came to pass that when Jesus had thus prayed unto the Father, he came unto his disciples, and behold, they did still continue, without ceasing, to pray unto him; and they did not multiply many words, for it was given unto them what they should pray, and they were filled with desire.

And it came to pass that Jesus blessed them as they did pray unto him; and his countenance did smile upon them, and the light of his countenance did shine upon them, and behold they were as white as the countenance and also the garments of Jesus; and behold the whiteness thereof did exceed all the whiteness, yea, even there could be nothing upon earth so white as the whiteness thereof.

And Jesus said unto them: Pray on; nevertheless they did not cease to pray.

And he turned from them again, and went a little way off and bowed himself to the earth; and he prayed again unto the Father, saying:

Father, I thank thee that thou hast purified those whom I have chosen, because of their faith, and I pray for them, and also for them who shall believe on their words, that they may be purified in me, through faith on their words, even as they are purified in me.

Father, I pray not for the world, but for those whom thou hast given me out of the world, because of their faith, that they may be purified in me, that I may be in them as thou, Father, art in me, that we may be one, that I may be glorified in them.

- 30 और जब यीशु ने इन बातों को कह लिया तब वह फिर से अपने शिष्यों के पास आया; बिना रुके और देखो उन्होंने उससे दृढ़तापूर्वक प्रार्थना की; और वह उनकी तरफ देखकर फिर से मुस्कराया; और देखो वे यीशु के समान सफेद थे ।
- 31 और ऐसा हुआ कि वह फिर से उनसे थोड़ी दूरी पर गया और पिता से प्रार्थना की;
- 32 और जबान उन शब्दों को नहीं बोल सकती जिससे उसने प्रार्थना की थी, न ही उन शब्दों को किसी मनुष्य द्वारा लिखा जा सकता है जिससे उसने प्रार्थना की थी ।
- 33 और भीड़ ने उसे सुना और उसका अभिलेख रखा; और उनके हृदय खुले हुए थे और उन्होंने उन शब्दों को अपने हृदय से समझ लिया जिससे उसने प्रार्थना की थी ।
- 34 फिर भी, वे शब्द अत्याधिक महान और अदभुत थे जिससे उसने प्रार्थना की थी कि उन्हें न तो लिखा जा सकता था और न ही किसी व्यक्ति द्वारा उन्हें बोला सकता था ।
- 35 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने प्रार्थना समाप्त की तब वह फिर से शिष्यों के पास आया, और उनसे कहा: इतना महान विश्वास मैंने समस्त यहूदियों में कभी नहीं देखा है; इसलिए उनके अविश्वास के कारण इतने महान चमत्कार मैं उन्हें नहीं दिखा सका ।
- 36 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि उनमें से कोई भी ऐसा नहीं है जिसने इतनी महान चीजों को देखा है जिसे तुमने देखा है; न ही उन्होंने इतनी महान चीजों को सुना है जिसे तुमने सुना है ।

And when Jesus had spoken these words he came again unto his disciples; and behold they did pray steadfastly, without ceasing, unto him; and he did smile upon them again; and behold they were white, even as Jesus.

And it came to pass that he went again a little way off and prayed unto the Father;

And tongue cannot speak the words which he prayed, neither can be written by man the words which he prayed.

And the multitude did hear and do bear record; and their hearts were open and they did understand in their hearts the words which he prayed.

Nevertheless, so great and marvelous were the words which he prayed that they cannot be written, neither can they be uttered by man.

And it came to pass that when Jesus had made an end of praying he came again to the disciples, and said unto them: So great faith have I never seen among all the Jews; wherefore I could not show unto them so great miracles, because of their unbelief.

Verily I say unto you, there are none of them that have seen so great things as ye have seen; neither have they heard so great things as ye have heard.

### 3 नफी 20

- 1 और ऐसा हुआ कि उसने भीड़ को आज्ञा दी कि वे प्रार्थना करना बंद कर दें, और अपने शिष्यों को भी। और उसने उन्हें आज्ञा दी कि उन्हें अपने मन में प्रार्थना करना बंद नहीं करना चाहिए।
- 2 और उसने उन्हें आज्ञा दी कि वे उठें और अपने पैरों पर खड़े हो जाएं। और वे उठे और अपने पैरों पर खड़े हो गए।
- 3 और ऐसा हुआ कि उसने फिर से रोटी तोड़ी और उसे आशीषित किया, और शिष्यों को खाने के लिए दिया।
- 4 और जब उन्होंने खा लिया तब उसने उन्हें आज्ञा दी कि वे रोटी तोड़ें, और उसे भीड़ को दें।
- 5 और जब उन्होंने भीड़ को दे दिया तब उसने उन्हें पीने के लिए मदिरा दी, और उन्हें आज्ञा दी कि वे उसे भीड़ को दें।
- 6 अब, न तो शिष्यों द्वारा और न ही भीड़ द्वारा रोटी और मदिरा लाई गई थी।
- 7 परन्तु उसने वास्तव में उन्हें खाने के लिए रोटी और पीने के लिए मदिरा दी।
- 8 और उसने उनसे कहा: वह जो इस रोटी को खाता है, अपनी आत्मा के लिए मेरा शरीर खाता है; और वह जो इस मदिरा को पीता है, अपनी आत्मा के लिए मेरा लहू पीता है; और उसकी आत्मा न तो कभी भूखी रहेगी और न ही कभी प्यासी रहेगी, परन्तु परिपूर्ण होगी।
- 9 अब, जब भीड़ ने खा और पी लिया, देखो वे आत्मा से भर गए; और वे एक स्वर में चिल्लाए, और यीशु की महिमा की जिसे उन्होंने देखा और सुना था।
- 10 और ऐसा हुआ कि जब उन सबने यीशु की महिमा कर ली, वह उनसे बोला: देखो अब मैं उस आज्ञा को पूरा करता हूँ जिसे पिता ने मुझे इन लोगों के संबंध में दी थी जो कि इस्राएल के घराने के बचे हुए लोग हैं।
- 11 तुम याद रखना कि मैंने तुमसे बात की है, और कहा है कि जब यशायाह की भविष्यवाणी पूरी होगी—देखो उन्हें लिखा गया है, तुम्हारे सामने वे हैं, इसलिए उन्हें खोजो—
- 12 और मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि जब वे बातें पूरी होंगी तब वह अनुबंध पूरा होगा जिसे पिता ने इन लोगों के साथ बनाया था, हे इस्राएल का घराना।

### 3 Nephi 20

And it came to pass that he commanded the multitude that they should cease to pray, and also his disciples. And he commanded them that they should not cease to pray in their hearts.

And he commanded them that they should arise and stand up upon their feet. And they arose up and stood upon their feet.

And it came to pass that he brake bread again and blessed it, and gave to the disciples to eat.

And when they had eaten he commanded them that they should break bread, and give unto the multitude.

And when they had given unto the multitude he also gave them wine to drink, and commanded them that they should give unto the multitude.

Now, there had been no bread, neither wine, brought by the disciples, neither by the multitude;

But he truly gave unto them bread to eat, and also wine to drink.

And he said unto them: He that eateth this bread eateth of my body to his soul; and he that drinketh of this wine drinketh of my blood to his soul; and his soul shall never hunger nor thirst, but shall be filled.

Now, when the multitude had all eaten and drunk, behold, they were filled with the Spirit; and they did cry out with one voice, and gave glory to Jesus, whom they both saw and heard.

And it came to pass that when they had all given glory unto Jesus, he said unto them: Behold now I finish the commandment which the Father hath commanded me concerning this people, who are a remnant of the house of Israel.

Ye remember that I spake unto you, and said that when the words of Isaiah should be fulfilled—behold they are written, ye have them before you, therefore search them—

And verily, verily, I say unto you, that when they shall be fulfilled then is the fulfilling of the covenant which the Father hath made unto his people, O house of Israel.



- 13 और तब बाकी के बचे हुए वे लोग जो पृथ्वी पर दूर-दूर तक तितर-बितर हो जाएंगे, वे पूर्व से और पश्चिम से, और दक्षिण से और उत्तर से एकत्रित होंगे; और उन्हें उनके उस प्रभु परमेश्वर का ज्ञान कराया जाएगा जिसने उन्हें मुक्ति दी है ।
- 14 और पिता ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं तुम्हें यह धरती तुम्हारी धरोहर के रूप में दूँ ।
- 15 और मैं तुमसे कहता हूँ कि मेरे लोगों को तितर-बितर करने के पश्चात, और आशीष प्राप्त करने के पश्चात भी यदि अन्य जातियों ने पश्चाताप नहीं किया—
- 16 तब तुम लोग जो याकूब के घराने के बचे हुए लोग हो उनके बीच में जाओगे; और तुम उन लोगों के बीच में जाओगे जिनकी संख्या बहुत है; और तुम लोग उनके बीच में वैसे ही होगे जैसे कि जंगल के जंगली पशुओं के बीच में एक शेर, और भेड़ की झुंड में एक शावक के रूप में होगे जो कुचलाता हुआ और फाड़कर टुकड़े-टुकड़े करता चला जाता है, और कोई बचा नहीं सकता है ।
- 17 तुम्हारे हाथ तुम्हारे विरोधियों पर उठेंगे, और तुम्हारे सारे शत्रु मारे जाएंगे ।
- 18 और मैं वैसे ही अपने लोगों को एक साथ एकत्रित करूँगा जैसे कि एक मनुष्य जमीन पर पड़े अपने गठुओं को एकत्रित करता है ।
- 19 क्योंकि मैं अपने उन लोगों को बनाऊँगा जिनसे पिता ने अनुबंध बनाया है, हां, मैं तुम्हारी सींगों को लोहे का, और तुम्हारी खुर्शों को पीतल का बनाऊँगा । और तुम कई लोगों के टुकड़े-टुकड़े कर दोगे; और मैं उनके लाभ को प्रभु के प्रति समर्पित करूँगा, और उनकी वस्तुओं को पूरी पृथ्वी के प्रभु के प्रति समर्पित करूँगा । और देखो, मैं वही हूँ इसे जो करता है ।
- 20 और ऐसा होगा, पिता कहता है कि उस दिन उन पर मेरी न्याय की तलवार लटकेगी; और यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे तो वह उन पर गिर जाएगी, पिता कहता है, हां, यहां तक कि अन्य जातियों के सारे राष्ट्रों पर भी ।
- 21 और ऐसा होगा कि मैं अपने लोगों को स्थापित करूँगा, हे इस्राएल का घराना ।
- 22 और देखो, मैं इन लोगों को इस धरती पर उस अनुबंध को पूरा करने के लिए स्थापित करूँगा जिसे मैंने तुम्हारे पिता याकूब के साथ बनाया था; और वह नया यरूशलेम होगा । और स्वर्ग की शक्तियां इन लोगों के बीच में होंगी; हां, मैं भी तुम्हारे बीच में रहूँगा ।

And then shall the remnants, which shall be scattered abroad upon the face of the earth, be gathered in from the east and from the west, and from the south and from the north; and they shall be brought to the knowledge of the Lord their God, who hath redeemed them.

And the Father hath commanded me that I should give unto you this land, for your inheritance.

And I say unto you, that if the Gentiles do not repent after the blessing which they shall receive, after they have scattered my people—

Then shall ye, who are a remnant of the house of Jacob, go forth among them; and ye shall be in the midst of them who shall be many; and ye shall be among them as a lion among the beasts of the forest, and as a young lion among the flocks of sheep, who, if he goeth through both treadeth down and teareth in pieces, and none can deliver.

Thy hand shall be lifted up upon thine adversaries, and all thine enemies shall be cut off.

And I will gather my people together as a man gathereth his sheaves into the floor.

For I will make my people with whom the Father hath covenanted, yea, I will make thy horn iron, and I will make thy hoofs brass. And thou shalt beat in pieces many people; and I will consecrate their gain unto the Lord, and their substance unto the Lord of the whole earth. And behold, I am he who doeth it.

And it shall come to pass, saith the Father, that the sword of my justice shall hang over them at that day; and except they repent it shall fall upon them, saith the Father, yea, even upon all the nations of the Gentiles.

And it shall come to pass that I will establish my people, O house of Israel.

And behold, this people will I establish in this land, unto the fulfilling of the covenant which I made with your father Jacob; and it shall be a New Jerusalem. And the powers of heaven shall be in the midst of this people; yea, even I will be in the midst of you.

- 23 देखो, मैं वही हूँ जिससे विषय में मूसा ने बताया था, यह कहते हुए: तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हारे इन भाइयों में से ही तुम्हारे लिए अपने समान एक भविष्यवक्ता खड़ा करेगा; और वह जो भी तुमसे कहेगा तुम उसकी सारी बातें सुनोगे। और ऐसा होगा कि प्रत्येक व्यक्ति जो उस भविष्यवक्ता की बात नहीं सुनेगा उसे लोगों के बीच से अलग कर दिया जाएगा।
- 24 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, हाँ, और समूएल और उसके बाद के सारे भविष्यवक्ता, जितनों ने भी बोला है उन्होंने मेरी गवाही दी है।
- 25 और देखो, तुम भविष्यवक्ताओं की संतान हो; और तुम इस्राएल का घराना हो; और तुम उस अनुबंध में हो जिसे पिता ने तुम्हारे पूर्वजों से बनाया था, इब्राहीम से यह कहते हुए: और तुम्हारे वंश के द्वारा पृथ्वी की सारी जातियाँ आशीषित होंगी।
- 26 पिता ने सबसे पहले मुझे तुम्हारे लिए खड़ा किया है, हर एक को उसकी बुराइयों से पलटने में आशीषित करने के लिए मुझे भेजा है; और ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम अनुबंधित बच्चे हो।
- 27 और इसके पश्चात जब तुम्हें आशीषित किया गया तब पिता का वह अनुबंध पूरा हुआ जिसे उसने इब्राहीम से यह कहते हुए बनाया था: तुम्हारे वंश के द्वारा पृथ्वी की सारी जातियाँ आशीषित होंगी—अन्य जातियों पर मेरे द्वारा पवित्र आत्मा उंडेलते हुए जो कि वह आशीष है जो मेरे लोगों को तितर-बितर करते हुए, अन्य जातियों को सबसे शक्तिशाली बनाएगी, हे इस्राएल का घराना।
- 28 और वे इस धरती के लोगों के लिए अभिशाप होंगे। फिर भी, जब वे मेरे सुसमाचार की परिपूर्णता को प्राप्त कर लेंगे और तब भी अपने हृदयों को मेरे विरुद्ध कठोर करेंगे, तो मैं उनकी बुराइयाँ उनके ही सिर पर डाल दूँगा, पिता कहता है।
- 29 और मैं उस अनुबंध को याद करूँगा जिसे मैंने अपने लोगों के साथ बनाया है; और मैंने उनके साथ अनुबंध बनाया है कि मैं उन्हें अपने निश्चित समय में एकत्रित करूँगा, ताकि मैं उन्हें उनकी धरोहर के रूप में उनके पूर्वजों की धरती उन्हें फिर से दे दूँ, जो कि यरूशलेम की धरती है और जो सदा उनके लिए प्रतिज्ञा की हुई धरती होगी, पिता कहता है।
- 30 और ऐसा होगा कि समय आएगा जब मेरे सुसमाचार की परिपूर्णता को उन्हें सिखाया जाएगा।
- 31 और वे मुझमें विश्वास करेंगे कि मैं ही परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह हूँ, और मेरे नाम में पिता से प्रार्थना करेंगे।

Behold, I am he of whom Moses spake, saying: A prophet shall the Lord your God raise up unto you of your brethren, like unto me; him shall ye hear in all things whatsoever he shall say unto you. And it shall come to pass that every soul who will not hear that prophet shall be cut off from among the people.

Verily I say unto you, yea, and all the prophets from Samuel and those that follow after, as many as have spoken, have testified of me.

And behold, ye are the children of the prophets; and ye are of the house of Israel; and ye are of the covenant which the Father made with your fathers, saying unto Abraham: And in thy seed shall all the kindreds of the earth be blessed.

The Father having raised me up unto you first, and sent me to bless you in turning away every one of you from his iniquities; and this because ye are the children of the covenant—

And after that ye were blessed then fulfilleth the Father the covenant which he made with Abraham, saying: In thy seed shall all the kindreds of the earth be blessed—unto the pouring out of the Holy Ghost through me upon the Gentiles, which blessing upon the Gentiles shall make them mighty above all, unto the scattering of my people, O house of Israel.

And they shall be a scourge unto the people of this land. Nevertheless, when they shall have received the fulness of my gospel, then if they shall harden their hearts against me I will return their iniquities upon their own heads, saith the Father.

And I will remember the covenant which I have made with my people; and I have covenanted with them that I would gather them together in mine own due time, that I would give unto them again the land of their fathers for their inheritance, which is the land of Jerusalem, which is the promised land unto them forever, saith the Father.

And it shall come to pass that the time cometh, when the fulness of my gospel shall be preached unto them;

And they shall believe in me, that I am Jesus Christ, the Son of God, and shall pray unto the Father in my name.

- 32 तब उनके पहरेदार अपनी आवाज उठाएंगे, और एक साथ गाएंगे; क्योंकि वे अपनी आंखों से देखेंगे ।
- 33 तब पिता उन्हें फिर से एकत्रित करेगा, और यरूशलेम को उन्हें उनकी धरोहर की धरती के रूप में देगा ।
- 34 तब वे आनंद मानेंगे कि हे तुम यरूशलेम के खण्डहरों, एक साथ गाओ; क्योंकि पिता ने अपने लोगों को सांत्वना दी है, उसने यरूशलेम को मुक्त किया है ।
- 35 पिता ने सारे राष्ट्रों की दृष्टि में अपनी पवित्र बाहों को खुला रखा है; और पृथ्वी के सभी छोर पिता के उद्धार को देखेंगे; और पिता और मैं एक ही हूँ ।
- 36 और फिर वह होगा जिसे लिखा गया है: हे सिय्योन, जाग, फिर से जाग, और अपना बल धारण कर; अपना सुंदर वस्त्र धारण कर, हे यरूशलेम, पवित्र नगर, क्योंकि अब से तुम अखतनारहित और अशुद्ध लोगों में कोई नहीं आएगा ।
- 37 हे यरूशलेम, अपने ऊपर लगी धूल को झाड़; उठ, और बैठ जा; हे सिय्योन की बंधक बेटी, स्वयं अपनी गर्दन पर बंधी पट्टी को खोल दे ।
- 38 क्योंकि इस प्रकार प्रभु कहता है: व्यर्थ में तुमने स्वयं को बेच दिया है, और बिना धन के तुम्हें मुक्त किया जाएगा ।
- 39 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि मेरे लोग मेरा नाम जानेंगे; हां, उस दिन वे जानेंगे कि मैं वही हूँ जिसके विषय में बोला गया है ।
- 40 और फिर वे कहेंगे: पहाड़ों पर उसके पैर कितने सुहावने हैं जो उनके लिए सुसमाचार लाते हैं, जो शांति फैलाते हैं; जो उनकी भलाई के लिए अच्छा सुसमाचार लाते हैं, जो उद्धार के बारे में बताते हैं; जिसे सिय्योन के लिए कहा गया है: तेरा परमेश्वर राज्य करता है !
- 41 और फिर आवाज सुनाई देती है: चले जाओ, चले जाओ, तुम यहां से चले जाओ, जो अशुद्ध है उसे मत छुओ; उसके बीच से चले जाओ; प्रभु के पात्रों को ढोनेवालों तुम शुद्ध हो जाओ ।
- 42 क्योंकि न तो तुम शीघ्रता से निकल पाओगे और न ही भाग पाओगे; क्योंकि प्रभु तुम्हारे आगे-आगे चलेगा, और इस्राएल का परमेश्वर तुम्हारे पीछे-पीछे चलेगा ।
- 43 देखो, मेरा सेवक बुद्धिमानी से काम लेगा; वह उत्कर्षित और प्रशंसनीय होगा और ऊंचा स्थान प्राप्त करेगा ।

Then shall their watchmen lift up their voice, and with the voice together shall they sing; for they shall see eye to eye.

Then will the Father gather them together again, and give unto them Jerusalem for the land of their inheritance.

Then shall they break forth into joy—Sing together, ye waste places of Jerusalem; for the Father hath comforted his people, he hath redeemed Jerusalem.

The Father hath made bare his holy arm in the eyes of all the nations; and all the ends of the earth shall see the salvation of the Father; and the Father and I are one.

And then shall be brought to pass that which is written: Awake, awake again, and put on thy strength, O Zion; put on thy beautiful garments, O Jerusalem, the holy city, for henceforth there shall no more come into thee the uncircumcised and the unclean.

Shake thyself from the dust; arise, sit down, O Jerusalem; loose thyself from the bands of thy neck, O captive daughter of Zion.

For thus saith the Lord: Ye have sold yourselves for naught, and ye shall be redeemed without money.

Verily, verily, I say unto you, that my people shall know my name; yea, in that day they shall know that I am he that doth speak.

And then shall they say: How beautiful upon the mountains are the feet of him that bringeth good tidings unto them, that publisheth peace; that bringeth good tidings unto them of good, that publisheth salvation; that saith unto Zion: Thy God reigneth!

And then shall a cry go forth: Depart ye, depart ye, go ye out from thence, touch not that which is unclean; go ye out of the midst of her; be ye clean that bear the vessels of the Lord.

For ye shall not go out with haste nor go by flight; for the Lord will go before you, and the God of Israel shall be your rearward.

Behold, my servant shall deal prudently; he shall be exalted and extolled and be very high.

44 जैसे तुमको देखकर बहुत से लोग आश्चर्यचकित हुए—वैसे ही उसका रूप भी इतना बिगड़ा हुआ था कि किसी मनुष्य के समान नहीं लगता था, और उसका ढांचा भी मानव संतान जैसा नहीं था—

45 वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा; उसके सामने राजा अपना मुंह नहीं खोल पाएंगे क्योंकि वे उसे देखेंगे जिसके बारे में उन्हें बताया नहीं गया था; और वे उस पर विचार करेंगे जिसे उन्होंने सुना नहीं था।

46 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि ये सारी बातें अवश्य होंगी, वैसे ही जैसे कि पिता ने मुझे आज्ञा दी है। तब जाकर पिता का वह अनुबंध पूरा होगा जिसे उसने अपने लोगों से बनाया था; और यरूशलेम में मेरे लोग फिर से निवास करेंगे, और यह उनकी धरोहर की भूमि होगी।

As many were astonished at thee—his visage was so marred, more than any man, and his form more than the sons of men—

So shall he sprinkle many nations; the kings shall shut their mouths at him, for that which had not been told them shall they see; and that which they had not heard shall they consider.

Verily, verily, I say unto you, all these things shall surely come, even as the Father hath commanded me. Then shall this covenant which the Father hath covenanted with his people be fulfilled; and then shall Jerusalem be inhabited again with my people, and it shall be the land of their inheritance.

### 3 नफी 21

- 1 और मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैं तुम्हें एक चिन्ह देता हूँ कि जब ये बातें होनेवाली होंगी तब तुम जान सको—हे इस्राएल का घराना, मैं अपने लोगों को उनके लंबे समय तक बिखरे रहने के बाद उन्हें एकत्रित करूँगा;
- 2 और देखो, यही वह चीज है जो मैं तुम्हें चिन्ह के रूप में दूँगा—क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब मैं इन बातों को तुम्हें घोषित करूँगा, और जिन्हें मैं अब से तुम्हें घोषित करूँगा, और जिन्हें तुम्हें उस पवित्र आत्मा के द्वारा बताया जाएगा जिसे पिता तुम्हें देगा, उन्हें अन्य जातियों पर ज्ञात कराया जाएगा ताकि वे याकूब के घराने के बचे हुए इन लोगों के बारे में जान सकें, और मेरे इन लोगों के बारे में भी जो उनके द्वारा तितर-बितर किये गए थे;
- 3 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि पिता के द्वारा उन्हें इन बातों का ज्ञात कराया जाएगा, और पिता से होकर ये बातें उनके द्वारा तुम तक आएँगी;
- 4 क्योंकि यह पिता की समझ है कि उन्हें इस धरती पर स्थापित किया जाए, और पिता के सामर्थ्य द्वारा उन्हें स्वतंत्र लोग के रूप में निर्धारित किया जाए ताकि ये बातें उनके द्वारा तुम्हारे बचे हुए वंशों तक पहुंच सकें, जिससे कि हे इस्राएल का घराना, पिता का वह अनुबंध पूरा हो सके जिसे उसने अपने लोगों से बनाया था;
- 5 इसलिए, इसके पश्चात ये बातें और तुम्हारे बीच में गढ़ी गई बातें अन्य जातियों द्वारा तुम्हारी वंशों में लाई जाएँगी जो अपनी बुराइयों के कारण अविश्वास में दुर्बल हो जाएँगे ।
- 6 क्योंकि पिता को यही उचित लगता है कि ये बातें अन्य जातियों द्वारा लाई जानी चाहिए ताकि वह अन्य जातियों को अपना सामर्थ्य दिखा सके, और इस कारण यदि अन्य जाति अपना हृदय कठोर नहीं करेंगे ताकि वे पश्चाताप कर सकें और मेरे पास आएँ और मेरे नाम में बपतिस्मा लें और मेरे सिद्धांत के सच्चे तथ्यों को जानें जिससे कि हे इस्राएल का घराना, उनकी गिनती मेरे लोगों में हो सके;
- 7 और जब ये बातें होंगी तो तुम्हारे वंश इन बातों को जानने लगेंगे—यह उनके लिए एक चिन्ह होगा जिससे वे जान सकें कि पिता का कार्य उस अनुबंध को पूरा करने में आरंभ हो गया है जिसे उसने उन लोगों के साथ बनाया था जो इस्राएल के घराने के हैं ।

### 3 Nephi 21

And verily I say unto you, I give unto you a sign, that ye may know the time when these things shall be about to take place—that I shall gather in, from their long dispersion, my people, O house of Israel, and shall establish again among them my Zion;

And behold, this is the thing which I will give unto you for a sign—for verily I say unto you that when these things which I declare unto you, and which I shall declare unto you hereafter of myself, and by the power of the Holy Ghost which shall be given unto you of the Father, shall be made known unto the Gentiles that they may know concerning this people who are a remnant of the house of Jacob, and concerning this my people who shall be scattered by them;

Verily, verily, I say unto you, when these things shall be made known unto them of the Father, and shall come forth of the Father, from them unto you;

For it is wisdom in the Father that they should be established in this land, and be set up as a free people by the power of the Father, that these things might come forth from them unto a remnant of your seed, that the covenant of the Father may be fulfilled which he hath covenanted with his people, O house of Israel;

Therefore, when these works and the works which shall be wrought among you hereafter shall come forth from the Gentiles, unto your seed which shall dwindle in unbelief because of iniquity;

For thus it behooveth the Father that it should come forth from the Gentiles, that he may show forth his power unto the Gentiles, for this cause that the Gentiles, if they will not harden their hearts, that they may repent and come unto me and be baptized in my name and know of the true points of my doctrine, that they may be numbered among my people, O house of Israel;

And when these things come to pass that thy seed shall begin to know these things—it shall be a sign unto them, that they may know that the work of the Father hath already commenced unto the fulfilling of the covenant which he hath made unto the people who are of the house of Israel.

- 8 और जब वह दिन आएगा, ऐसा होगा कि राजा अपना मुंह बंद रखेंगे; क्योंकि जिनके विषय में उन्हें बताया नहीं गया था उसे वे देखेंगे; और जिनके विषय में उन्होंने सुना नहीं था उस पर वे विचार करेंगे ।
- 9 क्योंकि उस दिन, पिता मेरे लिए एक कार्य करेगा जो कि उन लोगों के बीच में एक महान और अदभुत कार्य होगा; और यद्यपि एक व्यक्ति इसे उनके बीच में घोषित करेगा फिर भी उनमें कुछ लोग ऐसे होंगे जो इस पर विश्वास नहीं करेंगे ।
- 10 परन्तु देखो, मेरे सेवक का जीवन मेरे हाथ में होगा; इसलिए वे उसे नुकसान नहीं पहुंचाएंगे, जब कि उनके कारण उन्हें हानि होगी । फिर भी मैं उसे चंगा करूंगा क्योंकि मैं उन्हें दिखाऊंगा कि मेरा विवेक शैतान की धूर्तता से बड़ा है ।
- 11 इसलिए ऐसा होगा कि जो कोई भी मेरी बातों पर विश्वास नहीं करेगा कि मैं यीशु मसीह हूँ, जिसे पिता अन्य जातियों के बीच भेजेगा, और उसे सामर्थ्य देगा कि वह उन्हें अन्य जातियों में लाए, (वैसा ही होगा जैसा कि मूसा ने कहा था) और उन्हें मेरे अनुबंधित लोगों से अलग कर दिया जाएगा ।
- 12 और मेरे लोग जो याकूब के बचे हुए लोग हैं, वे अन्य जातियों में होंगे, हां, उनके बीच में वैसे ही होंगे जैसे कि जंगली पशुओं के बीच में एक शेर होता है, भेड़ की झुंड में एक शावक के रूप में जो यदि वहां से गुजर जाए तो कुचलता हुआ और फाड़कर टुकड़े-टुकड़े करता चला जाता है, और कोई बचा नहीं सकता है ।
- 13 उनके हाथ अपने विरोधियों पर उठेंगे, और उनके सारे शत्रु मारे जाएंगे ।
- 14 हां, अन्य जातियों पर हाथ यदि वे पश्चाताप नहीं करती हैं; क्योंकि उस दिन ऐसा होगा, पिता कहता है कि मैं उनके बीच से तुम्हारे घोड़ों को मिटा दूंगा, और मैं तुम्हारे रथों को नष्ट कर दूंगा ।
- 15 और मैं तुम्हारे प्रदेश के नगरों को मिटा दूंगा, और तुम्हारे सारे किलों को गिरा दूंगा ।
- 16 और मैं तुम्हारे प्रदेश से जादू-टोना मिटा दूंगा, और तुम्हारे पास कोई ज्योतिषी नहीं रह जाएगा;
- 17 मैं तुम्हारी बनाई हुई मूर्तियों को मिटा दूंगा, और उनके बीच से तुम्हारी खड़ी मूर्तियों को नष्ट कर दूंगा, और तब तुम अपने हाथों द्वारा बनाई गई मूर्तियों की उपासना नहीं कर सकोगे ।
- 18 और मैं तुम्हारे बीच से तुम्हारे बागों को उजाड़ दूंगा; और उसी तरह तुम्हारे नगरों को भी नष्ट कर दूंगा ।

And when that day shall come, it shall come to pass that kings shall shut their mouths; for that which had not been told them shall they see; and that which they had not heard shall they consider.

For in that day, for my sake shall the Father work a work, which shall be a great and a marvelous work among them; and there shall be among them those who will not believe it, although a man shall declare it unto them.

But behold, the life of my servant shall be in my hand; therefore they shall not hurt him, although he shall be marred because of them. Yet I will heal him, for I will show unto them that my wisdom is greater than the cunning of the devil.

Therefore it shall come to pass that whosoever will not believe in my words, who am Jesus Christ, which the Father shall cause him to bring forth unto the Gentiles, and shall give unto him power that he shall bring them forth unto the Gentiles, (it shall be done even as Moses said) they shall be cut off from among my people who are of the covenant.

And my people who are a remnant of Jacob shall be among the Gentiles, yea, in the midst of them as a lion among the beasts of the forest, as a young lion among the flocks of sheep, who, if he go through both treadeth down and teareth in pieces, and none can deliver.

Their hand shall be lifted up upon their adversaries, and all their enemies shall be cut off.

Yea, wo be unto the Gentiles except they repent; for it shall come to pass in that day, saith the Father, that I will cut off thy horses out of the midst of thee, and I will destroy thy chariots;

And I will cut off the cities of thy land, and throw down all thy strongholds;

And I will cut off witchcrafts out of thy land, and thou shalt have no more soothsayers;

Thy graven images I will also cut off, and thy standing images out of the midst of thee, and thou shalt no more worship the works of thy hands;

And I will pluck up thy groves out of the midst of thee; so will I destroy thy cities.

- 19 और ऐसा होगा कि सारा झूठ, छल-कपट, और ईर्ष्या, और शत्रुता, और अनुचित पूजा उपासना, और वेश्यावृत्ति का अंत हो जाएगा ।
- 20 क्योंकि पिता कहता है, ऐसा होगा कि उस दिन यदि कोई पश्चात्ताप नहीं करेगा और मेरे प्रिय पुत्र के पास नहीं आएगा, हे इस्राएल का घराना मैं उन्हें अपने लोगों से अलग कर दूंगा;
- 21 और मैं उन पर दंड और कोप उसी प्रकार लाऊंगा जैसे कि मूर्तिपूजकों पर तब लाया जाता है जब वे नहीं सुनते हैं ।
- 22 परन्तु यदि वे पश्चात्ताप करेंगे और मेरी बात सुनेंगे, और अपने हृदयों को कठोर नहीं करेंगे, तो उनके बीच मैं अपना गिरजा स्थापित करूंगा, और वे अनुबंध में प्रवेश करेंगे और याकूब के बचे हुए उन लोगों में उनकी गिनती होगी जिन्हें मैंने यह धरती उनकी धरोहर के रूप में दी है;
- 23 और वे याकूब के बचे हुए, मेरे लोगों की सहायता करेंगे, और उन बहुत से लोगों की जो इस्राएल के घराने से आएंगे, ताकि वे एक नगर का निर्माण कर सकें, जो कि नया यरूशलेम कहलाएगा ।
- 24 और तब वे मेरे उन लोगों की सहायता करेंगे ताकि वे नये यरूशलेम में एकत्रित हो सकें, जो धरती पर तितर-बितर हो गए हैं ।
- 25 और तब स्वर्ग की शक्ति उन लोगों के बीच आएगी; और मैं भी उनके मध्य में रहूंगा ।
- 26 और तब इस दिन पिता का कार्य आरंभ होगा, यहां तक कि तभी इन लोगों के बाकी लोगों में इस सुसमाचार का प्रचार किया जाएगा । मैं तुमसे सच कहता हूँ कि इस दिन पिता का कार्य मेरे सारे तितर-बितर हुए लोगों में आरंभ होगा, हां, यहां तक कि उन जातियों में भी जो खो गई थीं, जिन्हें पिता यरूशलेम से बाहर ले गया था ।
- 27 हां, पिता के साथ उस मार्ग को तैयार करने के लिए मेरे सारे तितर-बितर हुए लोगों में कार्य आरंभ होगा जिस पर चलकर वे मेरे पास आ सकेंगे, ताकि वे मेरे नाम में पिता को पुकार सकें ।
- 28 हां, और तब मार्ग की तैयारी में सारे राष्ट्रों के बीच पिता के साथ कार्य आरंभ होगा जिसके द्वारा उसके लोग अपने पैतृक प्रदेश में एकत्रित हो सकेंगे ।
- 29 और वे सारे राष्ट्रों से बाहर जाएंगे; और वे न तो हड़बड़ी में जाएंगे न ही भागकर जाएंगे, क्योंकि पिता कहता है कि मैं उनके आगे-आगे चलूंगा, और मैं ही उनके पीछे भी चलूंगा ।

And it shall come to pass that all lyings, and deceivings, and envyings, and strifes, and priestcrafts, and whoredoms, shall be done away.

For it shall come to pass, saith the Father, that at that day whosoever will not repent and come unto my Beloved Son, them will I cut off from among my people, O house of Israel;

And I will execute vengeance and fury upon them, even as upon the heathen, such as they have not heard.

But if they will repent and hearken unto my words, and harden not their hearts, I will establish my church among them, and they shall come in unto the covenant and be numbered among this the remnant of Jacob, unto whom I have given this land for their inheritance;

And they shall assist my people, the remnant of Jacob, and also as many of the house of Israel as shall come, that they may build a city, which shall be called the New Jerusalem.

And then shall they assist my people that they may be gathered in, who are scattered upon all the face of the land, in unto the New Jerusalem.

And then shall the power of heaven come down among them; and I also will be in the midst.

And then shall the work of the Father commence at that day, even when this gospel shall be preached among the remnant of this people. Verily I say unto you, at that day shall the work of the Father commence among all the dispersed of my people, yea, even the tribes which have been lost, which the Father hath led away out of Jerusalem.

Yea, the work shall commence among all the dispersed of my people, with the Father to prepare the way whereby they may come unto me, that they may call on the Father in my name.

Yea, and then shall the work commence, with the Father among all nations in preparing the way whereby his people may be gathered home to the land of their inheritance.

And they shall go out from all nations; and they shall not go out in haste, nor go by flight, for I will go before them, saith the Father, and I will be their rearward.

### 3 नफी 22

- 1 और तब वह होगा जिसे लिखा गया है: गा, हे बांझ, तू जो संतान नहीं जनी; गीत गा, और जोर से याचना कर, तूने जो प्रसव पीड़ा नहीं सही; क्योंकि प्रभु कहता है कि विवाहित पत्नी के बच्चों से अधिक त्यागी गई स्त्री के बच्चे हैं ।
- 2 अपने तंबू को चौड़ा कर, और उन्हें तेरे निवास-स्थानों के पर्दे फैलाने दे; छोड़ मत, तेरी डोर को तानने दे और तेरे खूंटों को मजबूत करने दे;
- 3 क्योंकि तेरा विस्तार दाएं और बाएं हाथ होगा, और तुम्हारे वंश अन्य जातियों पर अधिकार करेगी और विध्वंस हुए नगरों को निवास-स्थान बनाएगी ।
- 4 भयभीत मत हो, क्योंकि तुझे लज्जित नहीं होना पड़ेगा; न ही तुझे गलत साबित किया जाएगा, क्योंकि तू लज्जित नहीं होगी; क्योंकि तू अपनी युवावस्था की लज्जा को भूल जाएगी, और युवावस्था की अपनी बदनामी को याद नहीं रखेगी, और कभी भी अपने विधवापन की बदनामी को याद नहीं रखेगी ।
- 5 क्योंकि तेरा रचयिता, तेरा पति, उसका नाम सेनाओं का प्रभु है; और जो इस्राएल का पवित्र, तेरा मुक्तिदाता है—जिसे संपूर्ण पृथ्वी का परमेश्वर पुकारा जाएगा ।
- 6 क्योंकि प्रभु ने तुझे एक त्यागी हुई और आत्मा में दुखित स्त्री, और युवावस्था की एक पत्नी कहा है जब तुझे त्याग दिया गया था, परमेश्वर कहता है ।
- 7 मैंने तुझे थोड़े समय के लिए त्यागा है, परन्तु मैं तुझे महान अनुग्रहों में एकत्रित करूंगा ।
- 8 क्रोध में मैंने थोड़े समय के लिए तुझसे अपने चेहरा छिपा लिया था, परन्तु अनंत उदारता में तुझ पर दया करूंगा, प्रभु तेरा मुक्तिदाता कहता है ।
- 9 क्योंकि यह मेरे लिए नूह के समय के जलप्रलय के समान है, क्योंकि मैंने शपथ ली है कि नूह के समय का जलप्रलय पृथ्वी पर फिर से नहीं आना चाहिए, इसलिए मैंने शपथ ली है कि मैं तुझसे क्रोधित नहीं होऊंगा ।
- 10 चाहे पर्वत हट जाए और पहाड़ियां खिसक जाएं, परन्तु मेरी उदारता तुझसे अलग नहीं होगी, न ही शांति का मेरा अनुबंध हटेगा, वह प्रभु कहता है जो तुझ पर दया करता है ।

### 3 Nephi 22

And then shall that which is written come to pass: Sing, O barren, thou that didst not bear; break forth into singing, and cry aloud, thou that didst not travail with child; for more are the children of the desolate than the children of the married wife, saith the Lord.

Enlarge the place of thy tent, and let them stretch forth the curtains of thy habitations; spare not, lengthen thy cords and strengthen thy stakes;

For thou shalt break forth on the right hand and on the left, and thy seed shall inherit the Gentiles and make the desolate cities to be inhabited.

Fear not, for thou shalt not be ashamed; neither be thou confounded, for thou shalt not be put to shame; for thou shalt forget the shame of thy youth, and shalt not remember the reproach of thy youth, and shalt not remember the reproach of thy widowhood any more.

For thy maker, thy husband, the Lord of Hosts is his name; and thy Redeemer, the Holy One of Israel—the God of the whole earth shall he be called.

For the Lord hath called thee as a woman forsaken and grieved in spirit, and a wife of youth, when thou wast refused, saith thy God.

For a small moment have I forsaken thee, but with great mercies will I gather thee.

In a little wrath I hid my face from thee for a moment, but with everlasting kindness will I have mercy on thee, saith the Lord thy Redeemer.

For this, the waters of Noah unto me, for as I have sworn that the waters of Noah should no more go over the earth, so have I sworn that I would not be wroth with thee.

For the mountains shall depart and the hills be removed, but my kindness shall not depart from thee, neither shall the covenant of my peace be removed, saith the Lord that hath mercy on thee.



- 11 हे दुख की मारी, तूफान में डांवाडोल हुई, और न ही तूझे सांत्वना मिला ! देख, मैं तेरे पत्थरों को सुंदर रंगों से रंगकर बल दूंगा, और नीलम से तेरा आधार मजबूत करूंगा ।
- 12 और मैं तेरी खिड़कियों को सुलेमानी पत्थरों से और तेरे द्वारों को मणि रत्नों से बनाऊंगा, और तेरे सारे किनारों को मनोहर पत्थरों से बनाऊंगा ।
- 13 और तेरे सारे बच्चों को प्रभु के बारे में सिखाया जाएगा; और तेरे बच्चों को महान शांति प्राप्त होगी ।
- 14 तेरी स्थापना धार्मिकता में होगी; तू उत्पीड़न से दूर होगी क्योंकि तू भयभीत न होगी, और खौफ से दूर रहेगी क्योंकि वह तेरे पास न फटकेगा ।
- 15 देख, वे तेरे विरुद्ध निश्चय ही एकत्रित होंगे, मेरे द्वारा नहीं; जो कोई भी तेरे विरुद्ध एकत्रित होगा वह तेरे कारण गिरेगा ।
- 16 देख, मैंने एक लुहार बनाया है जो आग में कोयलों को फूंककर जलाता है, और जिससे अपने काम के लिए एक औजार बनाता है; और नाश करने के लिए मैंने एक विनाशकर्ता बनाया है ।
- 17 जो भी हथियार तेरे विरुद्ध बनाया जाएगा वह प्रबल नहीं होगा; और जो भी जबान तेरे विरुद्ध भला बुरा बोलेगी उसकी तू न्याय में निंदा करेगी । यही प्रभु के सेवकों की परंपरा है, और उनकी धार्मिकता मुझसे है, प्रभु कहता है ।

O thou afflicted, tossed with tempest, and not comforted! Behold, I will lay thy stones with fair colors, and lay thy foundations with sapphires.

And I will make thy windows of agates, and thy gates of carbuncles, and all thy borders of pleasant stones.

And all thy children shall be taught of the Lord; and great shall be the peace of thy children.

In righteousness shalt thou be established; thou shalt be far from oppression for thou shalt not fear, and from terror for it shall not come near thee.

Behold, they shall surely gather together against thee, not by me; whosoever shall gather together against thee shall fall for thy sake.

Behold, I have created the smith that bloweth the coals in the fire, and that bringeth forth an instrument for his work; and I have created the waster to destroy.

No weapon that is formed against thee shall prosper; and every tongue that shall revile against thee in judgment thou shalt condemn. This is the heritage of the servants of the Lord, and their righteousness is of me, saith the Lord.

### 3 नफी 23

- 1 और अब, देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हें इन बातों की खोज करनी चाहिए। हां, मैं तुम्हें एक आज्ञा देता हूँ कि तुम इन बातों को निष्ठापूर्वक खोजो; क्योंकि यशायाह के शब्द महान हैं।
- 2 क्योंकि निश्चय ही वह मेरे उन लोगों से संबंधित सारी बातों को कहता है जो कि इस्राएल के घराने के हैं; इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि उसे अन्य जातियों से भी बातें बोलनी चाहिए।
- 3 और जो कुछ उसने कहा था उसी प्रकार हुआ और आगे भी उसके कहे अनुसार ही होगा।
- 4 इसलिए मेरी बातों पर ध्यान दो; उन बातों को लिखो जिसे मैंने कहा है; और समय और पिता की इच्छानुसार ये बातें अन्य जातियों में जाएंगी।
- 5 और जो कोई मेरी बातों पर ध्यान देगा और पश्चाताप कर बपतिस्मा लेगा, वह बचाया जाएगा। भविष्यवक्ताओं को खोजो क्योंकि ऐसे बहुत हैं जो इन बातों की गवाही देते हैं।
- 6 और अब ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन बातों को कह लिया उसने उनसे फिर कहा, जो धर्मशास्त्र उन्हें प्राप्त थे उन सबको उन्हें समझाने के पश्चाताप उसने उनसे कहा: देखो, मैं चाहता हूँ कि तुम उन अन्य धर्मशास्त्रों को लिखो जो तुम्हारे पास नहीं है।
- 7 और ऐसा हुआ कि उसने नफी से कहा: उन अभिलेखों को लाओ जिन्हें तुमने रखा है।
- 8 और जब नफी अभिलेखों को ले आया, और उन्हें उसके सामने रख दिया, उसने उन पर अपनी दृष्टि डाली और कहा:
- 9 मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैंने अपने सेवक लमनाई समूएल को आज्ञा दी थी कि वह इसकी गवाही लोगों को दे ताकि उस दिन पिता मुझमें अपने नाम को गौरान्वित करे जिससे कि कई संत मरे हुए लोगों में से जी उठें और बहुत से लोगों को दिखाई दें, और उन्हें उपदेश दें। और उसने उनसे कहा: क्या ऐसा नहीं था ?
- 10 और उसके शिष्यों ने उसे उत्तर दिया और कहा: हां, प्रभु, समूएल ने तुम्हारे कहे अनुसार भविष्यवाणी की थी, और वे सारी पूरी हुईं।
- 11 और यीशु ने उनसे कहा: कैसे तुमने उन बातों को नहीं लिखा कि कई संत जी उठे और बहुत से लोगों को दिखाई दिए और उन्हें उपदेश दिए ?

### 3 Nephi 23

And now, behold, I say unto you, that ye ought to search these things. Yea, a commandment I give unto you that ye search these things diligently; for great are the words of Isaiah.

For surely he spake as touching all things concerning my people which are of the house of Israel; therefore it must needs be that he must speak also to the Gentiles.

And all things that he spake have been and shall be, even according to the words which he spake.

Therefore give heed to my words; write the things which I have told you; and according to the time and the will of the Father they shall go forth unto the Gentiles.

And whosoever will hearken unto my words and repenteth and is baptized, the same shall be saved. Search the prophets, for many there be that testify of these things.

And now it came to pass that when Jesus had said these words he said unto them again, after he had expounded all the scriptures unto them which they had received, he said unto them: Behold, other scriptures I would that ye should write, that ye have not.

And it came to pass that he said unto Nephi: Bring forth the record which ye have kept.

And when Nephi had brought forth the records, and laid them before him, he cast his eyes upon them and said:

Verily I say unto you, I commanded my servant Samuel, the Lamanite, that he should testify unto this people, that at the day that the Father should glorify his name in me that there were many saints who should arise from the dead, and should appear unto many, and should minister unto them. And he said unto them: Was it not so?

And his disciples answered him and said: Yea, Lord, Samuel did prophesy according to thy words, and they were all fulfilled.

And Jesus said unto them: How be it that ye have not written this thing, that many saints did arise and appear unto many and did minister unto them?

12 और ऐसा हुआ कि नेफी ने याद किया कि इस बात को नहीं लिखा गया था ।

13 और ऐसा हुआ कि यीशु ने आज्ञा दी कि इसे लिखा जाना चाहिए; इसलिए इसे उसकी आज्ञा के अनुसार लिखा गया ।

14 और अब ऐसा हुआ कि जब यीशु ने उन सभी धर्मशास्त्रों को मिलाकर समझा दिया, जो उन्होंने लिखे थे, तब उसने उन्हें आज्ञा दी कि वे उन बातों को सिखाएं जो उसने उन्हें समझाई थी ।

And it came to pass that Nephi remembered that this thing had not been written.

And it came to pass that Jesus commanded that it should be written; therefore it was written according as he commanded.

And now it came to pass that when Jesus had expounded all the scriptures in one, which they had written, he commanded them that they should teach the things which he had expounded unto them.

## 3 नफी 24

- 1 और ऐसा हुआ कि उसने उन्हें आज्ञा दी कि उन्हें उन बातों को लिखना चाहिए जिसे पिता ने मलाकी को दिया था, जिसे उसे उन्हें बताना चाहिए। और ऐसा हुआ कि लिखने के पश्चात उसने उन्हें उन बातों को समझाया। और निम्नलिखित वे शब्द हैं जिसे उसने उन्हें बताया था, यह कहते हुए: इस प्रकार पिता मलाकी से कहता है—देखो, मैं अपना संदेशवाहक भेजूंगा, और वह मुझसे पहले मार्ग तैयार करेगा, और वह प्रभु जिसे तुम ढूँढोगे वह अकस्मात् ही अपने मंदिर में आ जाएगा, देखो, यहां तक कि अनुबंध का वह संदेशवाहक भी आएगा जिसमें तुम आनंदित होते हो; सेनाओं का प्रभु कहता है।
- 2 परन्तु कौन है जो उसके आगमन तक बना रहेगा, और खड़ा रहेगा जब वह दिखाई देगा? क्योंकि वह धातु को शुद्ध करनेवाले के आग के समान और धोबी के साबुन के समान है।
- 3 और वह धातु शुद्ध करनेवाले और चांदी शुद्ध करनेवाले के रूप में बैठेगा; और वह लेवी के पुत्रों का शुद्धीकरण करेगा और उन्हें सोने और चांदी के समान शुद्ध करेगा, ताकि वे धार्मिकता में प्रभु को एक भेंट चढ़ा सकें।
- 4 तब प्राचीन दिनों और प्राचीन वर्षों के समान यहूदा और यरूशलेम की भेंट प्रभु को प्रसन्न करेगी।
- 5 और न्याय के लिए मैं तुम्हारे पास आऊंगा; और जादू-टोना करनेवालों और व्यभिचारियों और झूठी शपथ खानेवालों के विरुद्ध मैं एक प्रबल गवाही बनूंगा, और उन लोगों के विरुद्ध भी गवाही बनूंगा जो मजदूरों की मजदूरी का दमन करते हैं, और विधवा और अनाथों पर अत्याचार करते हैं, और जो परदेशियों की अवहेलना करते हैं, जो मुझसे डरते नहीं हैं, सेनाओं का प्रभु कहता है।
- 6 क्योंकि मैं प्रभु हूँ, मैं बदलता नहीं; इसलिए तुम याकूब की संतान नष्ट नहीं हुए।
- 7 तुम अपने पूर्वजों के समय से ही मेरी विधियों से विमुख हो गए थे, और उनका पालन नहीं किया था। मेरी तरफ लौटो और मैं तुम्हारी तरफ लौटूंगा, सेनाओं का प्रभु कहता है। परन्तु तुम कहते हो: हम किस बात में लौटें?
- 8 क्या कोई व्यक्ति परमेश्वर को लूट सकता है? फिर भी तुमने मुझे लूटा है। परन्तु तुम कहते हो: हमने तुम्हें किस बात में लूटा है? दस-मांश और भेंट में।
- 9 तुम एक श्राप से श्रापित हो, क्योंकि तुमने मुझे लूटा है, यहां तक कि यह पूरी जाति श्रापित है।

## 3 Nephi 24

And it came to pass that he commanded them that they should write the words which the Father had given unto Malachi, which he should tell unto them. And it came to pass that after they were written he expounded them. And these are the words which he did tell unto them, saying: Thus said the Father unto Malachi—Behold, I will send my messenger, and he shall prepare the way before me, and the Lord whom ye seek shall suddenly come to his temple, even the messenger of the covenant, whom ye delight in; behold, he shall come, saith the Lord of Hosts.

But who may abide the day of his coming, and who shall stand when he appeareth? For he is like a refiner's fire, and like fuller's soap.

And he shall sit as a refiner and purifier of silver; and he shall purify the sons of Levi, and purge them as gold and silver, that they may offer unto the Lord an offering in righteousness.

Then shall the offering of Judah and Jerusalem be pleasant unto the Lord, as in the days of old, and as in former years.

And I will come near to you to judgment; and I will be a swift witness against the sorcerers, and against the adulterers, and against false swearers, and against those that oppress the hireling in his wages, the widow and the fatherless, and that turn aside the stranger, and fear not me, saith the Lord of Hosts.

For I am the Lord, I change not; therefore ye sons of Jacob are not consumed.

Even from the days of your fathers ye are gone away from mine ordinances, and have not kept them. Return unto me and I will return unto you, saith the Lord of Hosts. But ye say: Wherein shall we return?

Will a man rob God? Yet ye have robbed me. But ye say: Wherein have we robbed thee? In tithes and offerings.

Ye are cursed with a curse, for ye have robbed me, even this whole nation.

- 10 तुम सारे दसमांश को भंडारघर में लाओ, ताकि मेरे घर में भोजन हो; और सेनाओं का प्रभु कहता है कि ऐसा करके मेरी जांच करो कि क्या मैं स्वर्ग के झरोखों को नहीं खोलूंगा, और तुम पर आशीष नहीं उंडेलूंगा जिससे कि तुम्हारे पास इसके लिए जगह कम पड़ जाए ।
- 11 और तुम्हारे लिए मैं भक्षण करनेवाले को फटकाऊंगा, और वह तुम्हारी उपज का नाश नहीं करेगा; न ही पकने के पहले तुम्हारे अंगूर लताओं से गिरेंगे, सेनाओं का प्रभु कहता है ।
- 12 और सारी जाति तुम्हें आशीषित मानेगी, क्योंकि तुम्हारा प्रदेश आनंदमय प्रदेश होगा, सेनाओं का प्रभु कहता है ।
- 13 तुम्हारी बातें मेरे विरुद्ध कठोर रही हैं, प्रभु कहता है । फिर भी तुम कहते हो: तुम्हारे विरुद्ध हमने क्या कहा है ?
- 14 तुमने कहा है: परमेश्वर की सेवा करना व्यर्थ है, और उसकी विधियों का पालन करने से हमें क्या लाभ हुआ और यह कि शोक में रहते हुए सेनाओं के प्रभु के सामने चलने से हमें क्या मिला ?
- 15 और अब हम अहंकारी को धन्य कहते हैं; हां, जो दुष्टता का कार्य करते हैं वे स्थित हैं; हां, यहां तक कि जो परमेश्वर को प्रलोभित करते हैं उन्हें छोड़ दिया गया ।
- 16 तब वे जो प्रभु का भय खाते थे अक्सर एक दूसरे से बातें करते थे, और प्रभु ने ध्यान दिया और सुना; और उसके सामने उन लोगों के लिए स्मरण की पुस्तक लिखी गई जो प्रभु का भय खाते थे, और जो उसके नाम पर विचार करते थे ।
- 17 और सेनाओं का प्रभु कहता है कि वे उस दिन मेरे होंगे जब मैं अपने बहुमूल्य लोगों को बनाऊंगा; और मैं उन्हें उसी प्रकार बचाऊंगा जैसे कि एक व्यक्ति अपने उस पुत्र को बचाता है जो उसकी सेवा करता है ।
- 18 तब तुम लौटोगे और धर्मी और दुष्ट को पहचानोगे, उसे पहचानोगे जो परमेश्वर की सेवा करता है और उसे जो उसकी सेवा नहीं करता है ।

Bring ye all the tithes into the storehouse, that there may be meat in my house; and prove me now herewith, saith the Lord of Hosts, if I will not open you the windows of heaven, and pour you out a blessing that there shall not be room enough to receive it.

And I will rebuke the devourer for your sakes, and he shall not destroy the fruits of your ground; neither shall your vine cast her fruit before the time in the fields, saith the Lord of Hosts.

And all nations shall call you blessed, for ye shall be a delightsome land, saith the Lord of Hosts.

Your words have been stout against me, saith the Lord. Yet ye say: What have we spoken against thee?

Ye have said: It is vain to serve God, and what doth it profit that we have kept his ordinances and that we have walked mournfully before the Lord of Hosts?

And now we call the proud happy; yea, they that work wickedness are set up; yea, they that tempt God are even delivered.

Then they that feared the Lord spake often one to another, and the Lord hearkened and heard; and a book of remembrance was written before him for them that feared the Lord, and that thought upon his name.

And they shall be mine, saith the Lord of Hosts, in that day when I make up my jewels; and I will spare them as a man spareth his own son that serveth him.

Then shall ye return and discern between the righteous and the wicked, between him that serveth God and him that serveth him not.

### 3 नफी 25

- 1 क्योंकि देखो, वह दिन आएगा जो भट्टी के समान जलेगा; और सारे अहंकारी, हां, वे सारे जो बुरे काम करते हैं, रूठ के समान होंगे; और वह दिन आएगा जब वे जलाए जाएंगे, सेनाओं का प्रभु कहता है, कि न तो उनकी जड़े बचेंगी और न ही उनकी शाखाएं ।
- 2 परन्तु वे जो मेरे नाम का भय खाते हैं वे धार्मिकता के पुत्र अपने पंखों में मजबूती प्राप्त करते हुए उठेंगे; और वे जाएंगे और इस प्रकार बढ़ेंगे जैसे घुड़साल में बछड़े बढ़ते हैं ।
- 3 और तुम बुरे लोगों को कुचल दोगे; क्योंकि उस दिन मैं तुम्हारे पांवों के तलवों द्वारा कुचलकर उन्हें राख बनाऊंगा, सेनाओं का प्रभु कहता है ।
- 4 मेरे सेवक मूसा की व्यवस्था को याद करो जिसकी आज्ञा मैंने उसे सारे इस्राएल के लिए नियम और न्याय के साथ, होरेब पर दी थी ।
- 5 देखो, प्रभु के महान और भयावह दिन से पहले मैं तुम्हारे पास भविष्यवक्ता एल्लियाह को भेजूंगा;
- 6 और वह पिताओं के हृदय को उनके बच्चों की तरफ और बच्चों के हृदयों को उनके पिताओं की तरफ मोड़ेगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को एक श्राप से नष्ट कर दूं ।

### 3 Nephi 25

For behold, the day cometh that shall burn as an oven; and all the proud, yea, and all that do wickedly, shall be stubble; and the day that cometh shall burn them up, saith the Lord of Hosts, that it shall leave them neither root nor branch.

But unto you that fear my name, shall the Son of Righteousness arise with healing in his wings; and ye shall go forth and grow up as calves in the stall.

And ye shall tread down the wicked; for they shall be ashes under the soles of your feet in the day that I shall do this, saith the Lord of Hosts.

Remember ye the law of Moses, my servant, which I commanded unto him in Horeb for all Israel, with the statutes and judgments.

Behold, I will send you Elijah the prophet before the coming of the great and dreadful day of the Lord;

And he shall turn the heart of the fathers to the children, and the heart of the children to their fathers, lest I come and smite the earth with a curse.

### 3 नफी 26

- 1 और अब ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन बातों को कह लिया तब उसने उन बातों को भीड़ को समझाया; और उसने उन्हें बड़ी और छोटी सारी बातों को समझाया ।
- 2 और उसने कहा: ये धर्मशास्त्र जो तुम्हारे पास नहीं थे, पिता ने मुझे आज्ञा दी कि मैं इन्हें तुम्हें दूँ; क्योंकि यह उसमें समझदारी की बात होती कि उन्हें भावी पीढ़ियों को दे देना चाहिए ।
- 3 और आरंभ से लेकर महिमा में उसके आने के समय तक की सारी बातों को उसने उन्हें समझाया—हां, उन सारी चीजों को भी जो पृथ्वी पर होनेवाली थीं, यहां तक कि उन तत्वों को भी समझाया जो प्रचंड गर्मी से पिघलनेवाले थे, और जिसमें पृथ्वी एक आवरण से ढकनेवाली थी, और स्वर्ग और पृथ्वी टलनेवाले थे;
- 4 और यहां तक कि महान और अंतिम दिन में, जब सारे लोग, और सारे भाई-बंधु, और सारी जातियां और सारी जबानें अपने कर्मों के अनुसार न्याय पाने के लिए परमेश्वर के समक्ष खड़ी रहेंगी, चाहें वे भले हों या बुरे—
- 5 यदि वे भले होंगे तो उनका पुनरुत्थान होगा और उन्हें अनंत जीवन मिलेगा; और यदि वे बुरे होंगे तो उनका पुनरुत्थान होगा और नरक-दंड मिलेगा; दया और न्याय और मसीह की उस पवित्रता में एक-एक व्यक्ति की तुलना करते हुए जो कि संसार की उत्पत्ति से पहले से था ।
- 6 और अब बातों के सौंवे हिस्से को भी इस पुस्तक में नहीं लिखा जा सकता है जिसे यीशु वास्तव में अपने लोगों को सिखाता है;
- 7 परन्तु देखो नफी की पट्टियों पर वे सारी बातें अधिक से अधिक लिखी गई हैं जिन्हें उसने लोगों को सिखाया था ।
- 8 और इन बातों को मैंने लिखा है जो कि उन बातों का थोड़ा भाग है जिसे उसने लोगों को सिखाया था; और मैंने उन्हें इस उद्देश्य से लिखा है कि यीशु के शब्दों के अनुसार उन्हें अन्य जातियों से निकालकर फिर से लोगों में लाया जा सके ।
- 9 और जब वे उसे प्राप्त कर लें, जो कि आवश्यक है कि अपने विश्वास को जांचने के लिए वे उसे पहले प्राप्त करें, और यदि ऐसा होगा कि वे इन बातों पर विश्वास करेंगे तब उन पर महान बातों को प्रकट किया जाएगा ।

### 3 Nephi 26

And now it came to pass that when Jesus had told these things he expounded them unto the multitude; and he did expound all things unto them, both great and small.

And he saith: These scriptures, which ye had not with you, the Father commanded that I should give unto you; for it was wisdom in him that they should be given unto future generations.

And he did expound all things, even from the beginning until the time that he should come in his glory—yea, even all things which should come upon the face of the earth, even until the elements should melt with fervent heat, and the earth should be wrapt together as a scroll, and the heavens and the earth should pass away;

And even unto the great and last day, when all people, and all kindreds, and all nations and tongues shall stand before God, to be judged of their works, whether they be good or whether they be evil—

If they be good, to the resurrection of everlasting life; and if they be evil, to the resurrection of damnation; being on a parallel, the one on the one hand and the other on the other hand, according to the mercy, and the justice, and the holiness which is in Christ, who was before the world began.

And now there cannot be written in this book even a hundredth part of the things which Jesus did truly teach unto the people;

But behold the plates of Nephi do contain the more part of the things which he taught the people.

And these things have I written, which are a lesser part of the things which he taught the people; and I have written them to the intent that they may be brought again unto this people, from the Gentiles, according to the words which Jesus hath spoken.

And when they shall have received this, which is expedient that they should have first, to try their faith, and if it shall so be that they shall believe these things then shall the greater things be made manifest unto them.

- 10 और यदि ऐसा होगा कि वे इन बातों पर विश्वास नहीं करेंगे तब उनकी दण्डाज्ञा के रूप में उन्हें उन महान बातों से वंचित रखा जाएगा ।
- 11 देखो, मैं उन सारी बातों को लिखनेवाला था जो नफी की पट्टियों पर लिखी गई थीं, परन्तु प्रभु ने यह कहते हुए मना किया था: मैं अपने लोगों के विश्वास को परखूंगा ।
- 12 इसलिए मैं, मॉरमन, उन बातों को लिखता हूँ जिन्हें लिखने की प्रभु मुझे आज्ञा देता है । और अब मैं, मॉरमन, अपने कथनों को समाप्त करता हूँ, और उन बातों को लिखना आरंभ करता हूँ जिन्हें लिखने की मुझे आज्ञा दी गई है ।
- 13 इसलिए, मैं चाहूंगा कि तुम देखो कि प्रभु ने वास्तव में तीन दिनों तक लोगों को सिखाया; और इसके पश्चात उसने स्वयं को अक्सर उन पर प्रकट किया, और अक्सर रोटी को तोड़ा और उसे आशीषित किया, और उसे उन्हें दिया ।
- 14 और ऐसा हुआ कि भीड़ की जिन संतानों के विषय में बताया गया है उन्हें उसने सिखाया और उपदेश दिया, और उसने उनकी जबानों को खोला और उन्होंने अपने पिताओं को महान और अदभुत बातों के विषय में बताया, यहां तक कि उन बातों से भी बड़ी बातों को जिन्हें उसने लोगों पर प्रकट किया था; और उसने उनकी जबानों को खोला ताकि वे बोल सकें ।
- 15 और ऐसा हुआ कि उसके स्वर्गारोहण के पश्चात—दूसरी बार उसने स्वयं को लोगों पर प्रकट किया, और उनके बीमारों को, और लंगड़ों को चंगा करने, और उनके अंधों की आंखों और बहरों के कानों को खोलने, और उनमें हर प्रकार की बीमारियों को ठीक करने, और मरे हुए में से व्यक्ति को जिलाने, और उन लोगों को अपना सामर्थ्य दिखाने के पश्चात पिता के पास चला गया—
- 16 देखो, अगले दिन ऐसा हुआ कि भीड़ एकत्रित हुई, और उन्होंने इन बच्चों को देखा और सुना; हां, यहां तक कि शिशुओं ने भी अपना मुंह खोला और अदभुत बातों को बताया; और जिन बातों को उन्होंने बताया उन्हें मना कर दिया गया ताकि कोई भी व्यक्ति उन्हें लिख न सके ।
- 17 और ऐसा हुआ कि यीशु ने उस समय से कुछ शिष्यों को चुना जिससे कि जब लोग उनके पास आए तब वे उनका बपतिस्मा कर उन्हें सिखा सकें; और जितने भी लोगों को यीशु के नाम में बपतिस्मा दिया गया वे पवित्र आत्मा से भर गए ।

And if it so be that they will not believe these things, then shall the greater things be withheld from them, unto their condemnation.

Behold, I was about to write them, all which were engraven upon the plates of Nephi, but the Lord forbade it, saying: I will try the faith of my people.

Therefore I, Mormon, do write the things which have been commanded me of the Lord. And now I, Mormon, make an end of my sayings, and proceed to write the things which have been commanded me.

Therefore, I would that ye should behold that the Lord truly did teach the people, for the space of three days; and after that he did show himself unto them oft, and did break bread oft, and bless it, and give it unto them.

And it came to pass that he did teach and minister unto the children of the multitude of whom hath been spoken, and he did loose their tongues, and they did speak unto their fathers great and marvelous things, even greater than he had revealed unto the people; and he loosed their tongues that they could utter.

And it came to pass that after he had ascended into heaven—the second time that he showed himself unto them, and had gone unto the Father, after having healed all their sick, and their lame, and opened the eyes of their blind and unstopped the ears of the deaf, and even had done all manner of cures among them, and raised a man from the dead, and had shown forth his power unto them, and had ascended unto the Father—

Behold, it came to pass on the morrow that the multitude gathered themselves together, and they both saw and heard these children; yea, even babes did open their mouths and utter marvelous things; and the things which they did utter were forbidden that there should not any man write them.

And it came to pass that the disciples whom Jesus had chosen began from that time forth to baptize and to teach as many as did come unto them; and as many as were baptized in the name of Jesus were filled with the Holy Ghost.



18 और उनमें से कई लोगों ने देखा और अकथनीय बातों को सुना जिन्हें लिखना वैध नहीं था ।

19 और उन्होंने सिखाया, और एक दूसरे को उपदेश दिया; और उनमें सारी बातें एक समान थीं कि हर व्यक्ति का एक दूसरे के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार था ।

20 और ऐसा हुआ कि उन्होंने उन सारी बातों को वैसा ही किया जैसे कि यीशु ने उन्हें करने की आज्ञा दी थी ।

21 और जिन लोगों ने यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था वे मसीह का गिरजा कहलाए ।

And many of them saw and heard unspeakable things, which are not lawful to be written.

And they taught, and did minister one to another; and they had all things common among them, every man dealing justly, one with another.

And it came to pass that they did do all things even as Jesus had commanded them.

And they who were baptized in the name of Jesus were called the church of Christ.

### 3 नफी 27

- 1 और ऐसा हुआ कि जैसे-जैसे यीशु के शिष्य यात्रा करते रहे और उन बातों का प्रचार करते रहे जिसे उन्होंने सुना और देखा था, और यीशु के नाम में बपतिस्मा देते रहे, तब ऐसा हुआ कि शिष्य एकत्रित हुए और वे एक उत्साही प्रार्थना और उपवास में जुड़े ।
- 2 और यीशु ने स्वयं को उन पर फिर से प्रकट किया, क्योंकि वे उसके नाम में पिता से प्रार्थना कर रहे थे; और यीशु आया और उनके मध्य में खड़ा हो गया, और उनसे कहा: तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हें दूँ ?
- 3 और उन्होंने उससे कहा: प्रभु, हम चाहते हैं कि तुम हमें इस गिरजे का नाम बताओ जिससे हम इसे पुकारेंगे; क्योंकि इस मामले के संबंध में लोगों में मतभेद है ।
- 4 और प्रभु ने उनसे कहा: मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि ऐसा क्यों है कि इस बात के कारण लोग बड़ाबड़ा रहे हैं और मतभेद कर रहे हैं ?
- 5 क्या वे धर्मशास्त्रों को नहीं पढ़ते हैं, जो बताता है कि तुम्हें मसीह का नाम ग्रहण करना चाहिए जो कि मेरा नाम है ? क्योंकि अंतिम दिन में तुम्हें इसी नाम द्वारा बुलाया जाएगा;
- 6 और जो भी मेरा नाम ग्रहण करता है, और अंत तक सहनशील बना रहता है, वही अंतिम दिनों में बचाया जाएगा ।
- 7 इसलिए, जो भी तुम करोगे, मेरे नाम में करोगे; इसलिए गिरजे का नाम तुम मेरे नाम पर रखोगे; और मेरे नाम में पिता को पुकारोगे जिससे कि वह मेरे कारण गिरजे को आशीषित करेगा ।
- 8 और यह मेरा गिरजा कैसे होगा यदि इसे मेरे नाम से न पुकारा जाए ? क्योंकि यदि गिरजे का नाम मूसा के नाम पर रखा जाएगा तो वह मूसा का गिरजा होगा; या यदि इसका नाम किसी व्यक्ति के नाम पर रखा जाएगा तो यह व्यक्ति का गिरजा होगा; परन्तु यदि इसका नाम मेरे नाम पर होगा तो यह मेरा गिरजा होगा, और यदि ऐसा होगा तो यह मेरे सुसमाचार पर निर्मित होगा ।
- 9 मैं तुमसे सच कहता हूँ कि तुम मेरे सुसमाचार पर आधारित हो; इसलिए तुम जो भी करो मेरे नाम पर करो; इसलिए यदि तुम मेरे नाम पर गिरजे के लिए पिता को पुकारोगे तो पिता तुम्हारी सुनेगा;

### 3 Nephi 27

And it came to pass that as the disciples of Jesus were journeying and were preaching the things which they had both heard and seen, and were baptizing in the name of Jesus, it came to pass that the disciples were gathered together and were united in mighty prayer and fasting.

And Jesus again showed himself unto them, for they were praying unto the Father in his name; and Jesus came and stood in the midst of them, and said unto them: What will ye that I shall give unto you?

And they said unto him: Lord, we will that thou wouldst tell us the name whereby we shall call this church; for there are disputations among the people concerning this matter.

And the Lord said unto them: Verily, verily, I say unto you, why is it that the people should murmur and dispute because of this thing?

Have they not read the scriptures, which say ye must take upon you the name of Christ, which is my name? For by this name shall ye be called at the last day;

And whoso taketh upon him my name, and endureth to the end, the same shall be saved at the last day.

Therefore, whatsoever ye shall do, ye shall do it in my name; therefore ye shall call the church in my name; and ye shall call upon the Father in my name that he will bless the church for my sake.

And how be it my church save it be called in my name? For if a church be called in Moses' name then it be Moses' church; or if it be called in the name of a man then it be the church of a man; but if it be called in my name then it is my church, if it so be that they are built upon my gospel.

Verily I say unto you, that ye are built upon my gospel; therefore ye shall call whatsoever things ye do call, in my name; therefore if ye call upon the Father, for the church, if it be in my name the Father will hear you;

- 10 और यदि गिरजे का निर्माण मेरे सुसमाचार पर होगा तो पिता अपने कार्यों को उसमें दिखाएगा ।
- 11 परन्तु यदि यह मेरे सुसमाचार पर निर्मित नहीं होगा, और लोगों के कर्मों या शैतान के कर्मों पर निर्मित होगा, तो मैं तुमसे सच कहता हूँ कि थोड़ी अवधि के लिए वे अपने कर्मों में आनंद प्राप्त करेंगे, और जैसे-जैसे अंत नजदीक आएगा तो उन्हें काटकर उस आग में फेंक दिया जाएगा जहां से कोई वापसी नहीं है ।
- 12 क्योंकि उनके कर्म उनका पीछा करेंगे, क्योंकि उनके कर्म ही हैं जिनके कारण उन्हें अलग कर दिया गया; इसलिए उन बातों को याद रखो जिसे मैंने तुमसे कहा है ।
- 13 देखो मैंने तुम्हें अपना सुसमाचार दिया है, और यही सुसमाचार है जिसे मैंने तुम्हें दिया है—कि मैं इस संसार में अपने पिता की इच्छा पूरी करने आया, क्योंकि मेरे पिता ने मुझे भेजा था ।
- 14 और मेरे पिता ने मुझे इसलिए भेजा कि मैं क्रूस पर उठाया जाऊँ; और मुझे क्रूस पर उठाए जाने के पश्चात, मैं सारे लोगों को अपने पास ला सकूँ, ताकि जैसे मैं लोगों के द्वारा उठाया गया वैसे ही मेरे सामने खड़े होने के लिए, और अपने कर्मों के अनुसार न्याय पाने के लिए वे मेरे पिता द्वारा उठाए जाएं, चाहे वे भले हों या बुरे—
- 15 और इसी कार्य के लिए मुझे उठाया गया था; इसलिए, पिता के सामर्थ्य के अनुसार मैं सारे लोगों को अपने पास लाऊँगा ताकि उनके कर्मों के अनुसार उनका न्याय हो सके ।
- 16 और ऐसा होगा कि जो कोई भी पश्चाताप करेगा और मेरे नाम में बपतिस्मा लेगा वह परिपूर्ण होगा और यदि वह अंत तक धीरज धरता है, देखो, उस दिन जब मैं संसार के न्याय के लिए खड़ा रहूँगा तब मैं उसे अपने पिता के समक्ष निर्दोष ठहराऊँगा ।
- 17 और वह जो अंत तक धीरज नहीं धरता है तो पिता के न्याय के कारण उसे भी अलग कर आग में फेंक दिया जाएगा, जहां से वे फिर कभी भी वापस नहीं आ सकते ।
- 18 और यही वह वचन है जिसे उसने मानव संतानों को दिया है । और इसी कारण वह उस वचन को पूरा करता है जिसे उसने दिया है, और वह झूठ नहीं बोलता है परन्तु अपने सारे वचनों को पूरा करता है ।

And if it so be that the church is built upon my gospel then will the Father show forth his own works in it.

But if it be not built upon my gospel, and is built upon the works of men, or upon the works of the devil, verily I say unto you they have joy in their works for a season, and by and by the end cometh, and they are hewn down and cast into the fire, from whence there is no return.

For their works do follow them, for it is because of their works that they are hewn down; therefore remember the things that I have told you.

Behold I have given unto you my gospel, and this is the gospel which I have given unto you—that I came into the world to do the will of my Father, because my Father sent me.

And my Father sent me that I might be lifted up upon the cross; and after that I had been lifted up upon the cross, that I might draw all men unto me, that as I have been lifted up by men even so should men be lifted up by the Father, to stand before me, to be judged of their works, whether they be good or whether they be evil—

And for this cause have I been lifted up; therefore, according to the power of the Father I will draw all men unto me, that they may be judged according to their works.

And it shall come to pass, that whoso repenteth and is baptized in my name shall be filled; and if he endureth to the end, behold, him will I hold guiltless before my Father at that day when I shall stand to judge the world.

And he that endureth not unto the end, the same is he that is also hewn down and cast into the fire, from whence they can no more return, because of the justice of the Father.

And this is the word which he hath given unto the children of men. And for this cause he fulfilleth the words which he hath given, and he lieth not, but fulfilleth all his words.

- 19 और कोई भी अशुद्ध वस्तु उसके राज्य में प्रवेश नहीं कर सकती; इसलिए जिन लोगों ने अपने विश्वास के कारण मेरे लहू में अपने वस्त्रों को साफ किया है, और अपने सारे पापों का पश्चाताप किया है, जिन लोगों ने अपनी विश्वसनीयता को अंत तक बनाए रखा है, उनके अलावा और कोई भी उसके आरामगाह में प्रवेश नहीं कर सकता है।
- 20 अब यह आज्ञा है: संसार के सभी छोर के लोगों, पश्चाताप करो, और मेरे पास आओ और मेरे नाम में बपतिस्मा लो जिससे कि पवित्र आत्मा के स्वीकारे जाने से तुम्हारा पवित्रकरण हो सके, ताकि अंतिम दिन में तुम मेरे समक्ष निर्दोष खड़े रह सको।
- 21 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि यही मेरा सुसमाचार है; और तुम उन कार्यों को जानते हो जिसे तुम्हें मेरे गिरजे में करना चाहिए; क्योंकि जिस कार्य को तुमने मुझे करते हुए देखा है उसे तुम्हें भी करना होगा; क्योंकि जैसा तुमने उसे मुझे करते हुए देखा है तुम्हें भी वैसे ही करना होगा।
- 22 इसलिए, यदि तुम इन कार्यों को करते हो तो तुम आशीषित हो, क्योंकि अंतिम दिन में तुम उत्कर्ष पाओगे।
- 23 जिन बातों को मना किया गया है उनके अलावा बाकी बातों को लिखो जिसे तुमने देखा और सुना है।
- 24 इन लोगों के कार्यों को वैसे ही लिखो जैसे कि अतीत में हुए कार्यों को लिखा गया था।
- 25 क्योंकि देखो, जो पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं, और जो लिखी जाएंगी उनके आधार पर ही इन लोगों का न्याय होगा, क्योंकि उनके द्वारा इन लोगों के कार्यों को लोगों पर प्रकट किया जाएगा।
- 26 और देखो, सारी बातें पिता द्वारा लिखी गई हैं; इसलिए पुस्तकों में जो लिखी जाएंगी उनके आधार पर ही संसार का न्याय होगा।
- 27 और तुम जानो कि जो न्याय मैं तुम्हें दूंगा और जो कि उचित होगा उसके अनुसार तुम इन लोगों के न्यायी होगे। इसलिए, तुम्हें किस प्रकार का व्यक्ति होना चाहिए? मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वैसे जैसे कि मैं हूँ।
- 28 और अब मैं पिता के पास जाता हूँ। और मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो भी तुम पिता से मेरे नाम में मांगोगे वह तुम्हें दिया जाएगा।
- 29 इसलिए, मांगो, और तुम्हें दिया जाएगा; खटखटाओ, और इसे तुम्हारे लिए खोला जाएगा; क्योंकि वह जो मांगता है, प्राप्त करता है; और वह जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा।

And no unclean thing can enter into his kingdom; therefore nothing entereth into his rest save it be those who have washed their garments in my blood, because of their faith, and the repentance of all their sins, and their faithfulness unto the end.

Now this is the commandment: Repent, all ye ends of the earth, and come unto me and be baptized in my name, that ye may be sanctified by the reception of the Holy Ghost, that ye may stand spotless before me at the last day.

Verily, verily, I say unto you, this is my gospel; and ye know the things that ye must do in my church; for the works which ye have seen me do that shall ye also do; for that which ye have seen me do even that shall ye do;

Therefore, if ye do these things blessed are ye, for ye shall be lifted up at the last day.

Write the things which ye have seen and heard, save it be those which are forbidden.

Write the works of this people, which shall be, even as hath been written, of that which hath been.

For behold, out of the books which have been written, and which shall be written, shall this people be judged, for by them shall their works be known unto men.

And behold, all things are written by the Father; therefore out of the books which shall be written shall the world be judged.

And know ye that ye shall be judges of this people, according to the judgment which I shall give unto you, which shall be just. Therefore, what manner of men ought ye to be? Verily I say unto you, even as I am.

And now I go unto the Father. And verily I say unto you, whatsoever things ye shall ask the Father in my name shall be given unto you.

Therefore, ask, and ye shall receive; knock, and it shall be opened unto you; for he that asketh, receiveth; and unto him that knocketh, it shall be opened.

- 30 और अब, देखो, मेरा आनंद महान है, यहां तक कि तुम्हारे, और इस पीढ़ी के कारण परिपूर्ण है; हां, पिता भी आनंदित होता है, और तुम्हारे, और इस पीढ़ी के कारण पवित्र स्वर्गदूत भी आनंदित होते हैं; क्योंकि उनमें से कोई भी खोया नहीं है ।
- 31 देखो, मैं चाहता हूं कि तुम समझो; मेरा अभिप्राय उन लोगों से है जो इस पीढ़ी के जीवित लोग हैं; और उनमें से कोई भी खोया नहीं है; और उनमें मेरा आनंद परिपूर्ण है ।
- 32 परन्तु देखो, इस पीढ़ी की चौथी पीढ़ी के कारण मुझे दुख होता है, क्योंकि वे बंदी बना लिए जाएंगे वैसे ही जैसे कि नरक के पुत्र को बनाया गया था; क्योंकि वे मुझे चांदी और सोने के लिए बेच देंगे जो कि कीड़ों द्वारा नष्ट किये जाएंगे और जिन्हें चोर चुरा सकते हैं । और उनके कर्मों को उन्हीं के सिर पर लादते हुए, मैं उनसे उस दिन मिलूंगा ।
- 33 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन बातों को समाप्त कर लिया तब उसने अपने शिष्यों से कहा: तुम संकरे द्वार से प्रवेश करो; क्योंकि जो द्वार तंग है, और जो मार्ग संकरा है वह जीवन की ओर जाता है, और कुछ ही लोग हैं जो इसे खोज पाते हैं; परन्तु जो द्वार चौड़ा है, और जो खुला हुआ है वह मृत्यु को ओर जाता है, और बहुत से हैं जो उस पर तब तक चलते हैं जब कि रात नहीं हो जाती जहां कोई भी व्यक्ति कार्य नहीं कर सकता है ।

And now, behold, my joy is great, even unto fullness, because of you, and also this generation; yea, and even the Father rejoiceth, and also all the holy angels, because of you and this generation; for none of them are lost.

Behold, I would that ye should understand; for I mean them who are now alive of this generation; and none of them are lost; and in them I have fulness of joy.

But behold, it sorroweth me because of the fourth generation from this generation, for they are led away captive by him even as was the son of perdition; for they will sell me for silver and for gold, and for that which moth doth corrupt and which thieves can break through and steal. And in that day will I visit them, even in turning their works upon their own heads.

And it came to pass that when Jesus had ended these sayings he said unto his disciples: Enter ye in at the strait gate; for strait is the gate, and narrow is the way that leads to life, and few there be that find it; but wide is the gate, and broad the way which leads to death, and many there be that travel therein, until the night cometh, wherein no man can work.

### 3 नफी 28

- 1 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन शब्दों को कह लिया, यह कहते हुए उसने एक-एक कर अपने शिष्यों से बात की: मेरे अपने पिता के पास जाने के पश्चात तुम मुझसे क्या चाहते हो ?
- 2 और तीन को छोड़कर बाकी सबने यह कहा: हम चाहते हैं कि जब हमारी मनुष्य की आयु समाप्त हो जाए, कि जब हमारी सेवकाई की अवधि समाप्त हो जाए जिसमें तुमने हमें नियुक्त किया है, तो हम शीघ्रता से तुम्हारे राज्य में तुम्हारे पास आ सकें ।
- 3 और उसने उनसे कहा: तुम आशीषित हो कि तुमने मुझसे यह इच्छा रखी है; इसलिए बहत्तर वर्ष के होने के पश्चात तुम मेरे राज्य में मेरे पास आओगे; और मेरे साथ तुम्हें आराम मिलेगा ।
- 4 और जब उसने उनसे बात कर ली, वह तीनों की तरफ मुड़ा और उनसे कहा: जब मैं अपने पिता के पास चला जाऊँ उसके पश्चात तुम क्या चाहोगे कि मैं तुम्हारे लिए करूँ ?
- 5 और वे दुखी हो गए, क्योंकि उनमें उस बात को कहने का साहस नहीं हुआ जो वे चाहते थे ।
- 6 और उसने उनसे कहा: देखो, मैं तुम्हारे विचारों को जानता हूँ, और तुम वही चाहते हो जो यहूदियों द्वारा मुझे उठाए जाने के पहले, मेरा प्रिय यूहन्ना, मेरी सेवकाई के समय में मुझसे चाहता था ।
- 7 इसलिए, तुम अधिक आशीषित हो, क्योंकि तुम कभी भी मृत्यु का स्वाद नहीं चखोगे; परन्तु तुम उन सारी कार्यवाहियों को होते हुए देखोगे जो पिता मानव संतानों में करेगा, यहां तक कि तब तक जब तक कि वे सारी चीजें पिता की इच्छा के अनुसार पूरी नहीं हो जातीं, जब तक कि मैं स्वर्ग की शक्तियों के साथ अपनी महिमा में नहीं आ जाता ।
- 8 और तुम मृत्यु की पीड़ा को कभी भी नहीं सहोगे; परन्तु जब मैं अपनी महिमा में आऊंगा तब तुम पलक झपकते ही नश्वरता से अमरत्व में परिवर्तित हो जाओगे; और तब तुम मेरे पिता के राज्य में आशीषित कहलाओगे ।
- 9 और जब तक तुम इस मानव शरीर में रहोगे तब तक तुम्हें न तो कोई पीड़ा होगी, न ही संसार के पापों के अलावा कोई दुख होगा; और यह सब मैं तुम्हारी इच्छा के कारण ही करूंगा, क्योंकि तुम्हारी इच्छा है कि जब तक यह संसार रहेगा तुम लोगों को मेरे पास ला सकूँ ।

### 3 Nephi 28

And it came to pass when Jesus had said these words, he spake unto his disciples, one by one, saying unto them: What is it that ye desire of me, after that I am gone to the Father?

And they all spake, save it were three, saying: We desire that after we have lived unto the age of man, that our ministry, wherein thou hast called us, may have an end, that we may speedily come unto thee in thy kingdom.

And he said unto them: Blessed are ye because ye desired this thing of me; therefore, after that ye are seventy and two years old ye shall come unto me in my kingdom; and with me ye shall find rest.

And when he had spoken unto them, he turned himself unto the three, and said unto them: What will ye that I should do unto you, when I am gone unto the Father?

And they sorrowed in their hearts, for they durst not speak unto him the thing which they desired.

And he said unto them: Behold, I know your thoughts, and ye have desired the thing which John, my beloved, who was with me in my ministry, before that I was lifted up by the Jews, desired of me.

Therefore, more blessed are ye, for ye shall never taste of death; but ye shall live to behold all the doings of the Father unto the children of men, even until all things shall be fulfilled according to the will of the Father, when I shall come in my glory with the powers of heaven.

And ye shall never endure the pains of death; but when I shall come in my glory ye shall be changed in the twinkling of an eye from mortality to immortality; and then shall ye be blessed in the kingdom of my Father.

And again, ye shall not have pain while ye shall dwell in the flesh, neither sorrow save it be for the sins of the world; and all this will I do because of the thing which ye have desired of me, for ye have desired that ye might bring the souls of men unto me, while the world shall stand.

- 10 और इस कारण तुम्हें आनंद की परिपूर्णता प्राप्त होगी; और तुम मेरे पिता के राज्य में बैठोगे; हां, तुम्हारा आनंद पूर्ण होगा, वैसे ही जैसे कि पिता ने मुझे आनंद की परिपूर्णता दी है; और तुम भी मेरे समान हो जाओगे, और मैं पिता के समान हूँ; और पिता और मैं एक ही हैं;
- 11 और पवित्र आत्मा पिता का और मेरा अभिलेख रखता है; मेरे ही कारण पिता ने पवित्र आत्मा को मानव संतानों को दिया है।
- 12 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन शब्दों को कह लिया, केवल उन तीनों को छोड़कर जिन्हें सदा के लिए जीवित रहना था, उसने उनमें से हर एक को अपनी उंगली से छुआ, और फिर वह चला गया।
- 13 और देखो, स्वर्ग खुल गए, और वे स्वर्ग में ले जाए गए, और उन्होंने-ने अवर्णनीय बातों को देखा और सुना।
- 14 और उन्हें बोलने के लिए मना किया गया था; न ही उन्हें सामर्थ्य दिया गया कि वे उन बातों के बारे में बता सकें जिसे उन्होंने देखा और सुना था;
- 15 और जब वे शरीर में या शरीर से बाहर थे, वे बता नहीं सके; क्योंकि-कि यह उनके लिए ऐसा प्रतीत होता था मानो वे रूपांतरित हो गए हों, जैसे मांस का उनका शरीर बदलकर एक अमरत्व की दशा में आ गया हो, जिससे कि वे परमेश्वर की बातों को देख सकें।
- 16 परन्तु ऐसा हुआ कि उन्होंने फिर से पृथ्वी पर सेवा-कार्य किया; फिर भी, स्वर्ग में दी गई आज्ञा के कारण उन्होंने उन बातों का प्रचार नहीं किया जिसे उन्होंने सुना या देखा था।
- 17 और अब, उनके रूपांतरित होने के समय से अब तक वे नश्वरता में थे या अमरत्व में, मैं नहीं जानता;
- 18 परन्तु मैं इतना जानता हूँ, उस अभिलेख के अनुसार जिसे दिया गया है—कि वे सारे लोगों को उपदेश देते हुए पृथ्वी पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर गए, जितने लोगों ने उन पर विश्वास किया उन्हें गिरजे से जोड़ते हुए; उन्हें बपतिस्मा देते हुए, और जितने लोगों ने बपतिस्मा लिया उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त की।
- 19 और जो लोग गिरजे के सदस्य नहीं थे उन्होंने उन्हें बंदीगृह में डाल दिया। और बंदीगृह उन्हें रोक नहीं सके क्योंकि वे दो टुकड़ों में फट गए।

And for this cause ye shall have fulness of joy; and ye shall sit down in the kingdom of my Father; yea, your joy shall be full, even as the Father hath given me fulness of joy; and ye shall be even as I am, and I am even as the Father; and the Father and I are one;

And the Holy Ghost beareth record of the Father and me; and the Father giveth the Holy Ghost unto the children of men, because of me.

And it came to pass that when Jesus had spoken these words, he touched every one of them with his finger save it were the three who were to tarry, and then he departed.

And behold, the heavens were opened, and they were caught up into heaven, and saw and heard unspeakable things.

And it was forbidden them that they should utter; neither was it given unto them power that they could utter the things which they saw and heard;

And whether they were in the body or out of the body, they could not tell; for it did seem unto them like a transfiguration of them, that they were changed from this body of flesh into an immortal state, that they could behold the things of God.

But it came to pass that they did again minister upon the face of the earth; nevertheless they did not minister of the things which they had heard and seen, because of the commandment which was given them in heaven.

And now, whether they were mortal or immortal, from the day of their transfiguration, I know not;

But this much I know, according to the record which hath been given—they did go forth upon the face of the land, and did minister unto all the people, uniting as many to the church as would believe in their preaching; baptizing them, and as many as were baptized did receive the Holy Ghost.

And they were cast into prison by them who did not belong to the church. And the prisons could not hold them, for they were rent in twain.

- 20 और वे पृथ्वी पर फेंक दिए गए; परन्तु उन्होंने परमेश्वर के वचन से पृथ्वी पर इतना अधिक प्रहार किया कि उसके सामर्थ्य द्वारा वे पृथ्वी की गहराइयों से बचाए गए; और इसलिए उन्हें पकड़े रहने के लिए वे पर्याप्त मात्रा में गड्ढे नहीं खोद सके ।
- 21 और तीन बार उन्हें जलती हुई भट्टी में झोंका गया और उन्हें कोई हानि नहीं हुई ।
- 22 और दो बार उन्हें जंगली पशुओं की गुफा में डाला गया; और देखो उन्होंने पशुओं के साथ वैसे खेला जैसे कि एक बच्चा दूध पीते हुए मेमने के साथ खेलता है, और उन्हें कोई हानि नहीं हुई ।
- 23 और ऐसा हुआ कि इस प्रकार वे नफी के लोगों के बीच गए, और धरती पर सभी लोगों को मसीह का सुसमाचार सुनाया; और वे प्रभु में परिवर्तित हुए, और मसीह के गिरजे में एक हुए, और इस प्रकार यीशु के वचन के अनुसार उस पीढ़ी के लोग आशीषित हुए ।
- 24 और अब मैं, मॉरमन, कुछ समय के लिए इन चीजों के बारे में बात करना बंद करता हूँ ।
- 25 देखो, मैं लगभग उन लोगों का नाम लिखनेवाला था जो कभी भी मृत्यु का स्वाद नहीं चखनेवाले थे, परन्तु प्रभु ने मना किया; इसलिए मैं उन्हें नहीं लिखूंगा क्योंकि उन्हें संसार से छिपाया गया है ।
- 26 परन्तु देखो, मैंने उन्हें देखा है, और उन्होंने मुझे उपदेश दिया है ।
- 27 और देखो वे गैर-यहूदियों में होंगे, और अन्य जाति उन्हें नहीं जान पाएंगे ।
- 28 वे यहूदियों में भी होंगे, और यहूदी उन्हें नहीं जान पाएंगे ।
- 29 और ऐसा होगा कि जब प्रभु अपने विवेक में इसे उचित समझेगा तब वे इस्राएल की सारी तितर-बितर हुई जातियों में, और सारे राष्ट्रों, रिश्तेदारों, भाषाओं और लोगों में उपदेश देंगे, और उनमें से कई लोगों को यीशु के पास लाएंगे ताकि उनकी इच्छा पूरी हो सके, और परमेश्वर के उस विश्वसनीय सामर्थ्य के कारण भी उनकी इच्छा पूरी होगी जो उनमें विद्यमान है ।
- 30 और वे परमेश्वर के स्वर्गदूतों के समान हैं, और यदि वे यीशु के नाम में पिता से प्रार्थना करेंगे तो जो व्यक्ति उन्हें भला प्रतीत होगा उन पर वे स्वयं को प्रकट कर सकते हैं ।

And they were cast down into the earth; but they did smite the earth with the word of God, insomuch that by his power they were delivered out of the depths of the earth; and therefore they could not dig pits sufficient to hold them.

And thrice they were cast into a furnace and received no harm.

And twice were they cast into a den of wild beasts; and behold they did play with the beasts as a child with a suckling lamb, and received no harm.

And it came to pass that thus they did go forth among all the people of Nephi, and did preach the gospel of Christ unto all people upon the face of the land; and they were converted unto the Lord, and were united unto the church of Christ, and thus the people of that generation were blessed, according to the word of Jesus.

And now I, Mormon, make an end of speaking concerning these things for a time.

Behold, I was about to write the names of those who were never to taste of death, but the Lord forbade; therefore I write them not, for they are hid from the world.

But behold, I have seen them, and they have ministered unto me.

And behold they will be among the Gentiles, and the Gentiles shall know them not.

They will also be among the Jews, and the Jews shall know them not.

And it shall come to pass, when the Lord seeth fit in his wisdom that they shall minister unto all the scattered tribes of Israel, and unto all nations, kindreds, tongues and people, and shall bring out of them unto Jesus many souls, that their desire may be fulfilled, and also because of the convincing power of God which is in them.

And they are as the angels of God, and if they shall pray unto the Father in the name of Jesus they can show themselves unto whatsoever man it seemeth them good.



- 31 इसलिए, उस महान और आनेवाले दिन से पहले, उनके द्वारा महान और अदभुत कार्य होंगे जब निश्चित रूप से सारे लोग मसीह के न्याय-आसन के समक्ष खड़े होंगे ।
- 32 हां उस न्यायवाले दिन से पहले, अन्य जातियों में भी उनके द्वारा महान और अदभुत कार्य किया जाएगा ।
- 33 और यदि तुम्हारे पास वे सारे धर्मशास्त्र थे जो कि मसीह के अदभुत कार्यों का एक विवरण देते हों तो मसीह के वचनों के अनुसार तुम जानोगे कि ये बातें निश्चित रूप से होंगी ।
- 34 और उस पर हाय जो यीशु के वचनों पर ध्यान नहीं देगा, और उन पर भी जिन्हें उसने चुना है और उन लोगों में भेजा है; क्योंकि जो कोई यीशु के वचनों को स्वीकार नहीं करता है और उन लोगों की बातों पर भी विश्वास नहीं करता है जिन्हें उसने भेजा है; और इसलिए वह उन्हें अंतिम दिन में स्वीकार नहीं करेगा;
- 35 और यह उनके लिए बेहतर होता कि उनका जन्म ही नहीं हुआ होता । क्योंकि क्या तुम समझते हो कि तुम एक अप्रसन्न परमेश्वर के न्याय से बच सकते हो, जो कि मनुष्यों के पैरों तले रौंदा गया ताकि उसके पश्चात उद्धार आ सके ?
- 36 और अब देखो, जब मैं उन लोगों के संबंध में बता रहा था जिन्हें प्रभु ने चुना है, हां, मैं नहीं जानता था कि जो तीन लोग स्वर्ग ले जाए गए थे वे नश्वरता से अमरत्व में परिवर्तित हो चुके थे—
- 37 परन्तु देखो, क्योंकि मैंने लिखा था, मैंने प्रभु से प्रार्थना की है, और उसने मुझ पर प्रकट किया है कि यह आवश्यक है कि उनके शरीरों में परिवर्तन लाया जाए, या यह आवश्यक है कि उन्हें मृत्यु का स्वाद चखना पड़े ।
- 38 इसलिए, उनके शरीरों में परिवर्तन आ गया था तो वे मृत्यु का स्वाद न चख सकें, और यह कि संसार के पापों के अलावा उन्हें पीड़ा या दुख सहना न पड़े ।
- 39 अब यह बदलाव उसके बराबर नहीं था जो कि अंतिम दिन में होनेवाला था; परन्तु उन पर बदलाव लाया गया, इतना अधिक कि शैतान का उन पर कोई अधिकार न हो, ताकि वह उन्हें लालच में न डाल सके; और शरीर में रहते हुए उनका पवित्रिकरण हुआ, जिससे वे पवित्र हो गए थे, और धरती की शक्तियां उन पर हावी नहीं हो सकती थीं ।

Therefore, great and marvelous works shall be wrought by them, before the great and coming day when all people must surely stand before the judgment-seat of Christ;

Yea even among the Gentiles shall there be a great and marvelous work wrought by them, before that judgment day.

And if ye had all the scriptures which give an account of all the marvelous works of Christ, ye would, according to the words of Christ, know that these things must surely come.

And wo be unto him that will not hearken unto the words of Jesus, and also to them whom he hath chosen and sent among them; for whoso receiveth not the words of Jesus and the words of those whom he hath sent receiveth not him; and therefore he will not receive them at the last day;

And it would be better for them if they had not been born. For do ye suppose that ye can get rid of the justice of an offended God, who hath been trampled under feet of men, that thereby salvation might come?

And now behold, as I spake concerning those whom the Lord hath chosen, yea, even three who were caught up into the heavens, that I knew not whether they were cleansed from mortality to immortality—

But behold, since I wrote, I have inquired of the Lord, and he hath made it manifest unto me that there must needs be a change wrought upon their bodies, or else it needs be that they must taste of death;

Therefore, that they might not taste of death there was a change wrought upon their bodies, that they might not suffer pain nor sorrow save it were for the sins of the world.

Now this change was not equal to that which shall take place at the last day; but there was a change wrought upon them, insomuch that Satan could have no power over them, that he could not tempt them; and they were sanctified in the flesh, that they were holy, and that the powers of the earth could not hold them.

40 और इस अवस्था में उन्हें मसीह के न्याय के दिन तक रहना था; और उस दिन उनमें एक महान परिवर्तन होनेवाला था, और कभी भी बाहर न जाने के लिए वे पिता के राज्य में, परन्तु स्वर्गों में अनंत परमेश्वर के साथ रहने के लिए स्वीकारे जानेवाले थे ।

And in this state they were to remain until the judgment day of Christ; and at that day they were to receive a greater change, and to be received into the kingdom of the Father to go no more out, but to dwell with God eternally in the heavens.

### 3 नफी 29

- 1 और अब देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि जब प्रभु अपने विवेक में इसे उचित समझेगा कि उसकी बातों के अनुसार ये कथन अन्य जातियों के साथ पूरे होंगे तब तुम जान सकोगे कि उनके अधिकार के क्षेत्रों की उनकी पुनःस्थापना के बारे में जो अनुबंध पिता ने इस्राएल के बच्चों के साथ बनाया है, वह पूरा होना आरंभ हो गया है ।
- 2 और तुम जान सकोगे कि प्रभु के वचन, जो कि पवित्र भविष्यवक्ताओं द्वारा बोले गए हैं, वह सब पूरे होंगे; और तुम्हें कहने की आवश्यकता नहीं होगी कि इस्राएल के बच्चों के प्रति प्रभु अपने आगमन को विलंब कर रहा है ।
- 3 और तुम्हें अपने हृदयों में कल्पना करने की आवश्यकता नहीं होगी कि जो बातें कही गई हैं वे व्यर्थ हैं, क्योंकि देखो, प्रभु अपने उस अनुबंध को याद रखेगा जिसे उसने इस्राएल के घराने के अपने बच्चों से बनाया है ।
- 4 और जब तुम देखोगे कि ये बातें तुम्हारे बीच में पूरी होने लगी हैं तब तुम्हें प्रभु के कार्यों को अस्वीकार करने की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि उसके न्याय की तलवार उसके दाहिने हाथ में होगी; और देखो, उस दिन, यदि तुम उसके कार्यों को अस्वीकार करोगे तो वह तुम्हें शीघ्र ही पकड़ लेगा ।
- 5 उस पर हाय जो प्रभु के कार्यों को अस्वीकार करता है; हां, उस पर हाय जो मसीह और उसके कार्यों को नकारेगा !
- 6 हां, उस पर हाय जो प्रभु के प्रकटीकरणों को नकारेगा, और वे कहेंगे कि प्रभु प्रकटीकरण द्वारा, या भविष्यवाणी द्वारा, या उपहारों द्वारा, या भाषा द्वारा, या चंगाई द्वारा, या पवित्र आत्मा की शक्ति द्वारा काम नहीं करता है !
- 7 हां, और उस पर हाय जो उस दिन लाभ प्राप्त करने के लिए कहेगा कि यीशु मसीह द्वारा कोई भी चमत्कार नहीं किया गया; क्योंकि जो भी ऐसा करेगा वह नरकवास के पुत्र के समान होगा, जिसके पास मसीह की बातों के अनुसार कोई दया भाव नहीं है !
- 8 हां, और तुम्हें न तो फुकारने, न ही अस्वीकार करने, न ही यहूदियों के साथ या इस्राएल के घराने के किसी भी बचे हुए व्यक्ति के साथ खेल खेलने की आवश्यकता होगी; क्योंकि देखो, प्रभु उनके साथ बनाए गए अपने अनुबंध को याद रखता है, और वह उनके साथ वैसा ही करेगा जैसा उसने शपथ ली थी ।

### 3 Nephi 29

And now behold, I say unto you that when the Lord shall see fit, in his wisdom, that these sayings shall come unto the Gentiles according to his word, then ye may know that the covenant which the Father hath made with the children of Israel, concerning their restoration to the lands of their inheritance, is already beginning to be fulfilled.

And ye may know that the words of the Lord, which have been spoken by the holy prophets, shall all be fulfilled; and ye need not say that the Lord delays his coming unto the children of Israel.

And ye need not imagine in your hearts that the words which have been spoken are vain, for behold, the Lord will remember his covenant which he hath made unto his people of the house of Israel.

And when ye shall see these sayings coming forth among you, then ye need not any longer spurn at the doings of the Lord, for the sword of his justice is in his right hand; and behold, at that day, if ye shall spurn at his doings he will cause that it shall soon overtake you.

Wo unto him that spurneth at the doings of the Lord; yea, wo unto him that shall deny the Christ and his works!

Yea, wo unto him that shall deny the revelations of the Lord, and that shall say the Lord no longer worketh by revelation, or by prophecy, or by gifts, or by tongues, or by healings, or by the power of the Holy Ghost!

Yea, and wo unto him that shall say at that day, to get gain, that there can be no miracle wrought by Jesus Christ; for he that doeth this shall become like unto the son of perdition, for whom there was no mercy, according to the word of Christ!

Yea, and ye need not any longer hiss, nor spurn, nor make game of the Jews, nor any of the remnant of the house of Israel; for behold, the Lord remembereth his covenant unto them, and he will do unto them according to that which he hath sworn.

9      इसलिए तुम्हें यह मानने की आवश्यकता नहीं होगी कि तुम प्रभु के दाहिने हाथ को बाएं ओर घुमा दोगे, ताकि वह उस अनुबंध की परिपूर्णता के प्रति अपना न्याय न दे सके जिसे उसने इस्राएल के घराने के साथ बनाया था ।

Therefore ye need not suppose that ye can turn the right hand of the Lord unto the left, that he may not execute judgment unto the fulfilling of the covenant which he hath made unto the house of Israel.

### 3 नफी 30

- 1 सुनो, हे तुम अन्य जाति, और जीवित परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के वचनों को सुनो, जिसे उसने मुझे आज्ञा दी है कि तुमसे संबंधित बातें बताऊं, क्योंकि, देखो वह मुझे आज्ञा देता है कि मैं लिखूं, यह कहते हुए:
- 2 तुम सभी अन्य जाति, बुराई के मार्गों से मुड़ जाओ; और अपने बुरे कार्यों, अपने झूठ और छलावों, और अपनी वेश्यावृत्तियों, और अपने गुप्त घृणित कार्यों, और अपनी मूर्तिपूजा, और अपनी हत्याओं, और अपने अनुचित पूजा उपसाना, और अपनी शत्रुता, और अपने झगड़ों, और अपनी सारी दुष्टता और घृणित कार्यों के लिए पश्चाताप करो, और मेरे पास आओ, और मेरे नाम में बपतिस्मा लो, ताकि तुम्हें अपने पापों से पश्चाताप मिले, और पवित्र आत्मा से भर जाओ, ताकि तुम्हारी गिनती मेरे उन लोगों में हो सके जो कि इस्राएल के घराने के हैं।

### 3 Nephi 30

Hearken, O ye Gentiles, and hear the words of Jesus Christ, the Son of the living God, which he hath commanded me that I should speak concerning you, for, behold he commandeth me that I should write, saying:

Turn, all ye Gentiles, from your wicked ways; and repent of your evil doings, of your lyings and deceivings, and of your whoredoms, and of your secret abominations, and your idolatries, and of your murders, and your priestcrafts, and your envyings, and your strifes, and from all your wickedness and abominations, and come unto me, and be baptized in my name, that ye may receive a remission of your sins, and be filled with the Holy Ghost, that ye may be numbered with my people who are of the house of Israel.

# चौथा नफी

## नफी की पुस्तक

जो नफी का पुत्र है—यीशु मसीह के शिष्यों में से एक

*नफी के अभिलेख के अनुसार, उसके लोगों का एक विवरण ।*

- 1 और ऐसा हुआ कि चौतीसवां वर्ष बीत गया, और पैंतीसवां वर्ष भी, और देखो यीशु के शिष्यों ने आसपास के सारे प्रदेशों में मसीह के गिरजे का निर्माण किया । और जितने लोग उनके पास आए, और जिन्होंने अपने पापों का सच्चा पश्चाताप किया, उनका यीशु के नाम में बपतिस्मा हुआ; और उन्होंने भी पवित्र आत्मा प्राप्त की ।
- 2 और ऐसा हुआ कि छत्तीसवें वर्ष में, पूरे प्रदेश के सारे लोग, नफाई और लमनाई दोनों ही प्रभु में परिवर्तित हुए, और उनके बीच कोई विवाद और मतभेद नहीं था, और प्रत्येक व्यक्ति ने एक दूसरे के साथ न्यायोचित तरीके से संबंध बनाया ।
- 3 और उनमें सारी चीजें एक समान थीं; इसलिए उनमें कोई धनी या गरीब नहीं था, दास या स्वतंत्र नहीं था, परन्तु वे सब स्वतंत्र किये गए थे, और स्वर्गीय उपहार को ग्रहण किया था ।
- 4 और ऐसा हुआ कि सैंतीसवां वर्ष भी बीत गया, और प्रदेश में फिर भी शांति बनी रही ।
- 5 और यीशु के शिष्यों द्वारा महान और अदभुत कार्य किये गए, इतने अधिक कि उन्होंने बीमार को चंगा किया, और मरे हुएों को जिलाया, और लंगड़े चलने लगे, और अंधों को दृष्टि मिल गई, और बहरे सुनने लगे; और उन्होंने मानव संतानों के बीच चमत्कार किये; और उन्होंने चमत्कार यीशु के नाम के अलावा किसी और चीज के आधार पर नहीं किये ।
- 6 और इस प्रकार अड़तीसवां वर्ष बीत गया, और उनचालीसवां वर्ष भी, और एकतालीसवां और बयालीसवां वर्ष भी, हां, यहां तक कि उनचासवां वर्ष भी बीत गया, और इक्यावनवां और बावनवां वर्ष भी; हां, और यहां तक कि उनसठवां वर्ष भी बीत गया ।

# Fourth Nephi

## The Book of Nephi

Who Is the Son of Nephi—One of the Disciples of Jesus Christ

*An account of the people of Nephi, according to his record.*

And it came to pass that the thirty and fourth year passed away, and also the thirty and fifth, and behold the disciples of Jesus had formed a church of Christ in all the lands round about. And as many as did come unto them, and did truly repent of their sins, were baptized in the name of Jesus; and they did also receive the Holy Ghost.

And it came to pass in the thirty and sixth year, the people were all converted unto the Lord, upon all the face of the land, both Nephites and Lamanites, and there were no contentions and disputations among them, and every man did deal justly one with another.

And they had all things common among them; therefore there were not rich and poor, bond and free, but they were all made free, and partakers of the heavenly gift.

And it came to pass that the thirty and seventh year passed away also, and there still continued to be peace in the land.

And there were great and marvelous works wrought by the disciples of Jesus, insomuch that they did heal the sick, and raise the dead, and cause the lame to walk, and the blind to receive their sight, and the deaf to hear; and all manner of miracles did they work among the children of men; and in nothing did they work miracles save it were in the name of Jesus.

And thus did the thirty and eighth year pass away, and also the thirty and ninth, and forty and first, and the forty and second, yea, even until forty and nine years had passed away, and also the fifty and first, and the fifty and second; yea, and even until fifty and nine years had passed away.

- 7 और प्रभु ने उन्हें प्रदेश में बहुत संपन्न बनाया; हां, इतना अधिक कि जिन स्थानों पर नगरों को जला दिया गया था वहां पर उन्होंने फिर से नगर बनाए ।
- 8 हां, यहां तक कि उन्होंने महान नगर जराहेमला का भी पुनःनिर्माण किया ।
- 9 परन्तु बहुत से नगर थे जो डूब गए थे और वहां पर पानी भर गया था; इसलिए इन नगरों का पुनःनिर्माण नहीं हो सका ।
- 10 और अब देखो, ऐसा हुआ कि नफी के लोग मजबूत हुए, और बहुत तेजी से उनकी वृद्धि हुई, और बहुत ही न्याय संगत और प्रसन्न लोग हुए ।
- 11 और उनका विवाह हुआ, और वे विवाह में दिए गए, और उन अनेकों प्रतिज्ञाओं के अनुसार आशीषित किये गए जो प्रभु ने उनके साथ बनाई थी ।
- 12 और अब वे मूसा की व्यवस्था की कार्यवाहियों और विधियों के अनुसार नहीं चले; परन्तु निरंतर उपवास और प्रार्थना करते हुए, और अक्सर प्रार्थना में और प्रभु के वचन को सुनने में एकत्रित होते हुए अब वे उन आज्ञाओं के अनुसार चले जिसे उनके प्रभु और उनके परमेश्वर ने उन्हें दिया था ।
- 13 और ऐसा हुआ कि पूरे प्रदेश के सभी लोगों में कोई भी विवाद नहीं था; परन्तु यीशु के शिष्यों के बीच महान चमत्कार हुए ।
- 14 और ऐसा हुआ कि एकहत्तरवां वर्ष बीत गया, और बहत्तरवां वर्ष भी, हां, और सब कुछ तब तक ठीक रहा जब तक कि उन्नासीवां वर्ष बीत न गया; हां, यहां तक कि सौवां वर्ष भी बीत गया था, और यीशु के वे शिष्य जिन्हें उसने चुना था वे सब परमेश्वर के स्वर्गधाम चले गए, केवल उन तीन शिष्यों को छोड़कर जिन्हें रुकना था; और उनके स्थान पर अन्य शिष्यों को नियुक्त किया गया; और उस पीढ़ी के भी कई लोग मर चुके थे ।
- 15 और ऐसा हुआ कि परमेश्वर के उस प्रेम के कारण जो कि लोगों के हृदयों में बसा था, प्रदेश में कोई विवाद नहीं हुआ ।
- 16 और कोई शत्रुता नहीं थी, न ही झगड़ा, न हंगामा, न वेश्यावृत्ति, न झूठ-कपट, न हत्या, और न ही किसी प्रकार की कामुकता थी; और जितने लोग परमेश्वर के हाथों द्वारा रचे गए थे, उन सारे लोगों में निश्चय ही इन लोगों से अधिक कोई भी आनंदमय नहीं था ।

And the Lord did prosper them exceedingly in the land; yea, insomuch that they did build cities again where there had been cities burned.

Yea, even that great city Zarahemla did they cause to be built again.

But there were many cities which had been sunk, and waters came up in the stead thereof; therefore these cities could not be renewed.

And now, behold, it came to pass that the people of Nephi did wax strong, and did multiply exceedingly fast, and became an exceedingly fair and delightful people.

And they were married, and given in marriage, and were blessed according to the multitude of the promises which the Lord had made unto them.

And they did not walk any more after the performances and ordinances of the law of Moses; but they did walk after the commandments which they had received from their Lord and their God, continuing in fasting and prayer, and in meeting together oft both to pray and to hear the word of the Lord.

And it came to pass that there was no contention among all the people, in all the land; but there were mighty miracles wrought among the disciples of Jesus.

And it came to pass that the seventy and first year passed away, and also the seventy and second year, yea, and in fine, till the seventy and ninth year had passed away; yea, even an hundred years had passed away, and the disciples of Jesus, whom he had chosen, had all gone to the paradise of God, save it were the three who should tarry; and there were other disciples ordained in their stead; and also many of that generation had passed away.

And it came to pass that there was no contention in the land, because of the love of God which did dwell in the hearts of the people.

And there were no envyings, nor strifes, nor tumults, nor whoredoms, nor lyings, nor murders, nor any manner of lasciviousness; and surely there could not be a happier people among all the people who had been created by the hand of God.

- 17 कोई डाकू नहीं थे, न ही कोई हत्यारे, न ही लमनाई थे, न ही किसी प्रकार की कोई भिन्नता थी; परन्तु वे एक थे, मसीह के बच्चे, और परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी ।
- 18 और वे कितने आशीषित थे! क्योंकि प्रभु ने उनके सारे कामों में उन्हें आशीषित किया था; हां, वे तब तक आशीषित और समृद्ध होते गए जब तक कि एक सौ दस वर्ष बीत न गया; और मसीह के समय से लेकर पहली पीढ़ी का अंत हो चुका था, और पूरे प्रदेश में कोई विवाद नहीं था ।
- 19 और ऐसा हुआ कि नफी ही था जिसने इस अंतिम अभिलेख को लिखा था, (और उसने इसे नफी की पट्टियों पर लिखा) मर गया, और अब उसके स्थान पर उसके बेटे आमोस ने इसे लिखा; और उसने भी इसे नफी की पट्टियों पर लिखा ।
- 20 और उसने इसे चौरासी वर्ष तक लिखा, और प्रदेश में तब भी शांति थी, केवल लोगों के एक छोटे से दल को छोड़कर जिन्होंने गिरजे से बगावत कर ली थी और अपने ऊपर लमनाइयों का नाम ग्रहण कर लिया था; इसलिए प्रदेश में फिर से लमनाई होने लगे ।
- 21 और ऐसा हुआ कि आमोस की भी मृत्यु हो गई, (और मसीह के आने के समय से लेकर अब तक एक सौ चौरानबे वर्ष हो चुके थे) और उसके स्थान पर उसके बेटे आमोस ने अभिलेख रखा; और उसने भी उसे नफी की पट्टियों पर लिखा; और उसे नफी की पुस्तक में भी लिखा गया था जो कि यही पुस्तक है ।
- 22 और ऐसा हुआ कि दो सौ वर्ष बीत चुके थे; और कुछ लोगों को छोड़कर दूसरी पीढ़ी भी खत्म हो चुकी थी ।
- 23 और अब मैं, मॉरमन, चाहता हूँ कि तुम जानो कि लोगों की संख्या बढ़ी थी, इतनी अधिक कि वे पूरे प्रदेश में फैल गए थे, और यह कि मसीह में उनकी संपन्नता के कारण वे बहुत ही धनी हो गए थे ।
- 24 और अब, इस दो सौ एकवें वर्ष में कुछ लोग अहंकारी होने लगे थे, जैसे कि महंगे वस्त्र पहनने लगे थे, और हर प्रकार के उत्तम मोती, और संसार की उत्तम वस्तुएं धारण करने लगे थे ।
- 25 और उस समय से आगे उनकी सामग्रियां और उनकी वस्तुएं उनके बीच एक समान नहीं रहीं ।
- 26 और वे वर्गों में विभाजित होने लगे; और वे अपने लाभ के लिए गिरजों का निर्माण करने लगे, और मसीह के सच्चे गिरजाघर को नकारने लगे ।

There were no robbers, nor murderers, neither were there Lamanites, nor any manner of -ites; but they were in one, the children of Christ, and heirs to the kingdom of God.

And how blessed were they! For the Lord did bless them in all their doings; yea, even they were blessed and prospered until an hundred and ten years had passed away; and the first generation from Christ had passed away, and there was no contention in all the land.

And it came to pass that Nephi, he that kept this last record, (and he kept it upon the plates of Nephi) died, and his son Amos kept it in his stead; and he kept it upon the plates of Nephi also.

And he kept it eighty and four years, and there was still peace in the land, save it were a small part of the people who had revolted from the church and taken upon them the name of Lamanites; therefore there began to be Lamanites again in the land.

And it came to pass that Amos died also, (and it was an hundred and ninety and four years from the coming of Christ) and his son Amos kept the record in his stead; and he also kept it upon the plates of Nephi; and it was also written in the book of Nephi, which is this book.

And it came to pass that two hundred years had passed away; and the second generation had all passed away save it were a few.

And now I, Mormon, would that ye should know that the people had multiplied, insomuch that they were spread upon all the face of the land, and that they had become exceedingly rich, because of their prosperity in Christ.

And now, in this two hundred and first year there began to be among them those who were lifted up in pride, such as the wearing of costly apparel, and all manner of fine pearls, and of the fine things of the world.

And from that time forth they did have their goods and their substance no more common among them.

And they began to be divided into classes; and they began to build up churches unto themselves to get gain, and began to deny the true church of Christ.



- 27 और ऐसा हुआ कि जब दो सौ दस वर्ष बीत गए तब तक प्रदेश में कई गिरजे हो चुके थे; हां, कई गिरजे हो गए थे जो मसीह को जानने की घोषणा करते थे, और फिर भी वे उसके सुसमाचार के अधिकांश भाग को नकारते थे, इतना अधिक कि उनमें हर प्रकार की बुराई आ गई, और ऐसी चीजें करने लगे जो कि उसके लिए पावन थीं और जिसे अयोग्यता के कारण वर्जित किया गया था ।
- 28 और अधर्म के कारण यह गिरजाघर बहुत बढ़ गया, और उस शैतान की शक्ति के कारण भी जिसने उनके हृदयों पर अधिकार कर लिया था ।
- 29 और फिर से एक दूसरे गिरजे का निर्माण हुआ जिसने मसीह को नकारा; और उनकी दीनता और मसीह में उनके विश्वास के कारण उन्होंने मसीह के सच्चे गिरजे को प्रताड़ित किया; और उनके बीच में जो कई चमत्कार हुए थे उसके कारण उन्होंने उनकी उपेक्षा की ।
- 30 इसलिए यीशु के जो शिष्य उनके साथ थे उन्होंने उन पर शक्ति और अधिकार का प्रयोग किया, और उन्होंने उन्हें बंदीगृह में डाला; परन्तु परमेश्वर के उस वचन की शक्ति द्वारा जो कि उनमें थी, बंदीगृह दो टुकड़ों में फट गया, और वे उनके बीच में शक्तिशाली चमत्कार करते हुए आगे बढ़ गए ।
- 31 फिर भी, इन सारे चमत्कारों के बावजूद, लोगों ने अपने हृदय कठोर कर लिए, और उन्हें वैसे ही मारने का प्रयास किया जैसे कि यरूशलेम के यहूदियों ने यीशु की बातों के कारण उसको मारने का प्रयास किया था ।
- 32 और उन्होंने उन्हें जलती हुई झाड़ियों में डाला, और बिना कोई नुकसान पहुंचे वे बाहर आ गए ।
- 33 और उन्होंने उन्हें जंगली पशुओं की गुफाओं में भी डाला, और उन्होंने उन जंगली पशुओं के साथ वैसे ही खेला जैसे कि एक बच्चा मेमने से खेलता है; और बिना किसी नुकसान के उनके बीच से बचकर आ गए ।
- 34 फिर भी, लोगों ने अपने हृदयों को कठोर किया, क्योंकि कई गिरजे के निर्माण के लिए, और हर प्रकार के अधर्म करने के लिए वे कई याजकों और झूठे भविष्यवक्ताओं द्वारा पथभ्रष्ट किये गए । और उन्होंने यीशु के लोगों को मारा-पीटा; परन्तु यीशु के लोगों ने उन्हें पलटकर नहीं मारा । और इस प्रकार वर्ष-प्रति-वर्ष वे अविश्वास में क्षीण होते गए और बुराई करते गए, यहां तक कि तब तक जब तक कि दो सौ तीस वर्ष बीत न गए ।

And it came to pass that when two hundred and ten years had passed away there were many churches in the land; yea, there were many churches which professed to know the Christ, and yet they did deny the more parts of his gospel, insomuch that they did receive all manner of wickedness, and did administer that which was sacred unto him to whom it had been forbidden because of unworthiness.

And this church did multiply exceedingly because of iniquity, and because of the power of Satan who did get hold upon their hearts.

And again, there was another church which denied the Christ; and they did persecute the true church of Christ, because of their humility and their belief in Christ; and they did despise them because of the many miracles which were wrought among them.

Therefore they did exercise power and authority over the disciples of Jesus who did tarry with them, and they did cast them into prison; but by the power of the word of God, which was in them, the prisons were rent in twain, and they went forth doing mighty miracles among them.

Nevertheless, and notwithstanding all these miracles, the people did harden their hearts, and did seek to kill them, even as the Jews at Jerusalem sought to kill Jesus, according to his word.

And they did cast them into furnaces of fire, and they came forth receiving no harm.

And they also cast them into dens of wild beasts, and they did play with the wild beasts even as a child with a lamb; and they did come forth from among them, receiving no harm.

Nevertheless, the people did harden their hearts, for they were led by many priests and false prophets to build up many churches, and to do all manner of iniquity. And they did smite upon the people of Jesus; but the people of Jesus did not smite again. And thus they did dwindle in unbelief and wickedness, from year to year, even until two hundred and thirty years had passed away.

- 35 और अब ऐसा हुआ कि इसी वर्ष, हां, दो सौ इकतीसवें वर्ष में, लोगों में एक भारी विभाजन हुआ ।
- 36 और ऐसा हुआ कि इसी वर्ष कुछ लोग आए जो नफाई कहलाए, और वे मसीह में सच्चे विश्वासी थे; और उनमें वे लोग थे जो लमनाइयों के नाम से जाने जाते थे—याकूबियों, यूसुफियों, और जोरामाइयों;
- 37 इसलिए मसीह में सच्चे विश्वासी, और मसीह के सच्चे उपासक, (जिनमें यीशु के वे तीन शिष्य भी थे जिन्हें जीवित रहना था) नफाई, और याकूबियों, और यूसुफियों, और जोरामाइयों कहलाए ।
- 38 और ऐसा हुआ कि जिन लोगों ने सुसमाचार को अस्वीकार किया वे लमनाई, और लमूएलियों, और इश्माएलियों कहलाए; और वे अविश्वास में क्षीण नहीं हुए बल्कि उन्होंने मसीह के सुसमाचार का इच्छापूर्वक विरोध किया; और उन्होंने अपनी संतानों को सिखाया कि उन्हें विश्वास नहीं करना चाहिए, यहां तक कि अपने पूर्वजों के समान जो आरंभ से अविश्वासी थे ।
- 39 और ऐसा उनके पूर्वजों की दुष्टता और घृणित कार्यों के कारण था, यहां तक कि ऐसा ही आरंभ में भी था । और उन्हें परमेश्वर के बच्चों से घृणा करना सिखाया गया था, वैसे ही जैसे कि आरंभ से लमनाइयों को नफी की संतानों से घृणा करना सिखाया गया था ।
- 40 और ऐसा हुआ कि दो सौ चौवालीस वर्ष बीत चुके थे, और इस प्रकार लोगों का कामकाज था । और लोगों का अधिक दुष्ट भाग मजबूत हुआ, और उनकी संख्या परमेश्वर के लोगों की संख्या से अधिक हो गई ।
- 41 और उन्होंने स्वयं के लिए गिरजे का निर्माण लगातार जारी रखा, और उन्हें हर प्रकार की मूल्यवान वस्तुओं से सजाया । और इस प्रकार दो सौ पचास वर्ष, और दो सौ साठ वर्ष भी बीत गए ।
- 42 और ऐसा हुआ कि जो लोग दुष्ट थे उन्होंने फिर से गुप्त शपथ लेना और गडियन्टन के गठबंधन बनाने आरंभ कर दिए ।
- 43 और जो लोग नफी के लोग कहलाए, अपनी अत्याधिक धन-संपत्ति के कारण वे भी अहंकारी होने लगे, और अपने भाइयों, लमनाइयों के समान व्यर्थ हो गए ।
- 44 और इस समय से शिष्य संसार के पापों के कारण दुखी होने लगे ।
- And now it came to pass in this year, yea, in the two hundred and thirty and first year, there was a great division among the people.
- And it came to pass that in this year there arose a people who were called the Nephites, and they were true believers in Christ; and among them there were those who were called by the Lamanites—Jacobites, and Josephites, and Zoramites;
- Therefore the true believers in Christ, and the true worshipers of Christ, (among whom were the three disciples of Jesus who should tarry) were called Nephites, and Jacobites, and Josephites, and Zoramites.
- And it came to pass that they who rejected the gospel were called Lamanites, and Lemuelites, and Ishmaelites; and they did not dwindle in unbelief, but they did wilfully rebel against the gospel of Christ; and they did teach their children that they should not believe, even as their fathers, from the beginning, did dwindle.
- And it was because of the wickedness and abomination of their fathers, even as it was in the beginning. And they were taught to hate the children of God, even as the Lamanites were taught to hate the children of Nephi from the beginning.
- And it came to pass that two hundred and forty and four years had passed away, and thus were the affairs of the people. And the more wicked part of the people did wax strong, and became exceedingly more numerous than were the people of God.
- And they did still continue to build up churches unto themselves, and adorn them with all manner of precious things. And thus did two hundred and fifty years pass away, and also two hundred and sixty years.
- And it came to pass that the wicked part of the people began again to build up the secret oaths and combinations of Gadianton.
- And also the people who were called the people of Nephi began to be proud in their hearts, because of their exceeding riches, and become vain like unto their brethren, the Lamanites.
- And from this time the disciples began to sorrow for the sins of the world.

45 और ऐसा हुआ कि जब तीन सौ वर्ष बीत गए, नफी के लोग और लमनाई, दोनो ही, एक दूसरे के समान अत्याधिक दुष्ट हो गए ।

46 और ऐसा हुआ कि गडियन्टन के डाकू पूरे प्रदेश में फैल गए; और यीशु के शिष्यों के अलावा कोई भी व्यक्ति धर्मी नहीं रह गया था । और भंडार घर में सोना और चांदी प्रचुरता में एकत्रित हुए, और हर प्रकार का गैर-कानूनी व्यापार होने लगा ।

47 और ऐसा हुआ कि जब तीन सौ पांच वर्ष बीत गए, (और लोग फिर भी दुष्टता में पड़े रहे) आमोस की मृत्यु हो गई; और उसके भाई अम्मोरोन ने उसके स्थान पर अभिलेख रखा ।

48 और ऐसा हुआ कि जब तीन सौ बीस वर्ष बीत गए, पवित्र आत्मा के प्रभाव द्वारा अम्मोरोन ने उन पावन अभिलेखों को छिपा दिया—हां, यहां तक कि उन सभी पावन अभिलेखों को जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक दूसरे को सौंपी गई थीं, और जो कि पावन थीं—यहां तक कि मसीह के आगमन से लेकर तीन सौ बीस वर्ष के पूरे होने तक के अभिलेखों को ।

49 और उसने उन्हें प्रभु के पास छिपा दिया, ताकि भविष्यवाणियों और प्रभु की प्रतिज्ञाओं के अनुसार उन्हें फिर से याकूब के घराने के शेष लोगों के पास लाया जा सके । और इस प्रकार अम्मोरोन का अभिलेख समाप्त हुआ ।

And it came to pass that when three hundred years had passed away, both the people of Nephi and the Lamanites had become exceedingly wicked one like unto another.

And it came to pass that the robbers of Gadianton did spread over all the face of the land; and there were none that were righteous save it were the disciples of Jesus. And gold and silver did they lay up in store in abundance, and did traffic in all manner of traffic.

And it came to pass that after three hundred and five years had passed away, (and the people did still remain in wickedness) Amos died; and his brother, Ammaron, did keep the record in his stead.

And it came to pass that when three hundred and twenty years had passed away, Ammaron, being constrained by the Holy Ghost, did hide up the records which were sacred—yea, even all the sacred records which had been handed down from generation to generation, which were sacred—even until the three hundred and twentieth year from the coming of Christ.

And he did hide them up unto the Lord, that they might come again unto the remnant of the house of Jacob, according to the prophecies and the promises of the Lord. And thus is the end of the record of Ammaron.

# मॉरमन की पुस्तक

## मॉरमन 1

- 1 और अब मैं, मॉरमन, उन चीजों का अभिलेख बनाता हूँ जो मैंने देखी और सुनी हैं, और इसे मॉरमन की पुस्तक कहूँगा।
- 2 और उस समय जब अम्मोरोन ने अभिलेखों को प्रभु के पास छिपा दिया था, वह मेरे पास आया, (मैं लगभग दस वर्ष का था, और मैं अपने लोगों की शिक्षाओं के अनुसार कुछ-कुछ सीखने लगा था) और अम्मोरोन ने मुझसे कहा: मैं समझता हूँ कि तुम एक संयमी बच्चे हो, और शीघ्रता से अलवलोकन कर लेते हो;
- 3 इसलिए, जब तुम चौबीस वर्ष के हो जाओगे तो मैं चाहूँगा कि तुम उन चीजों को याद रखो जिनका तुमने इन लोगों के संबंध में अवलोकन किया है; और जब तुम उस आयु के हो जाओ तब तुम शिम नामक पहाड़ी के पास एंताम प्रदेश में जाना; और वहाँ पर मैंने इन लोगों से संबंधित सारी पावन लिखावट को प्रभु के पास रखा हुआ है।
- 4 और देखो, तुम नफी की पट्टियों को ले लेना, और बाकी को वहीं रहने देना जहाँ पर वे हैं; और तुम नफी की पट्टियों पर उन सारी बातों को लिखना जिनका तुमने इन लोगों के संबंध में अवलोकन किया है।
- 5 और मैं, मॉरमन, नफी का एक वंशज होने के नाते, (और मेरे पिता का नाम मॉरमन था) अम्मोरोन द्वारा निर्देशित बातों को मैंने याद रखा।
- 6 और ऐसा हुआ कि मैं, ग्यारह वर्ष का हुआ, और अपने पिता द्वारा दक्षिणी प्रदेश की तरफ ले जाया गया, यहाँ तक कि जराहेलमा प्रदेश की तरफ भी।
- 7 पूरा प्रदेश इमारतों से ढक चुका था, और लोगों की संख्या लगभग समुद्र की रेत के समान हो गई थी।
- 8 और ऐसा हुआ कि इसी वर्ष नफाइयों के बीच युद्ध आरंभ हुआ, जिसमें नफाई, याकूबियों और यूसुफियों और जोरामाइयों शामिल थे; और यह युद्ध नफाइयों, और लमनाइयों और लमूएलियों और इश्माएलियों के बीच हुआ।
- 9 अब लमनाइयों और लमूएलियों और इश्माएलियों लमनाई कहलाते थे, और दो दल थे नफाई और लमनाई।

# The Book of Mormon

## Mormon 1

And now I, Mormon, make a record of the things which I have both seen and heard, and call it the Book of Mormon.

And about the time that Ammaron hid up the records unto the Lord, he came unto me, (I being about ten years of age, and I began to be learned somewhat after the manner of the learning of my people) and Ammaron said unto me: I perceive that thou art a sober child, and art quick to observe;

Therefore, when ye are about twenty and four years old I would that ye should remember the things that ye have observed concerning this people; and when ye are of that age go to the land Antum, unto a hill which shall be called Shim; and there have I deposited unto the Lord all the sacred engravings concerning this people.

And behold, ye shall take the plates of Nephi unto yourself, and the remainder shall ye leave in the place where they are; and ye shall engrave on the plates of Nephi all the things that ye have observed concerning this people.

And I, Mormon, being a descendant of Nephi, (and my father's name was Mormon) I remembered the things which Ammaron commanded me.

And it came to pass that I, being eleven years old, was carried by my father into the land southward, even to the land of Zarahemla.

The whole face of the land had become covered with buildings, and the people were as numerous almost, as it were the sand of the sea.

And it came to pass in this year there began to be a war between the Nephites, who consisted of the Nephites and the Jacobites and the Josephites and the Zoramites; and this war was between the Nephites, and the Lamanites and the Lemuelites and the Ishmaelites.

Now the Lamanites and the Lemuelites and the Ishmaelites were called Lamanites, and the two parties were Nephites and Lamanites.

- 10 और ऐसा हुआ कि सिदोन नदी के तट से लगे हुए जराहेमला की सीमाओं में उनके बीच युद्ध आरंभ हुआ ।
- 11 और ऐसा हुआ कि नफाइयों ने भारी संख्या में लोगों को एकत्रित कर लिया, यहां तक कि उनकी संख्या तीस हजार से भी अधिक हो गई । और ऐसा हुआ कि इसी वर्ष कई युद्ध हुए जिसमें नफाइयों ने लमनाइयों को हरा दिया और उनमें से कई लोगों का वध कर दिया ।
- 12 और ऐसा हुआ कि लमनाई अपनी योजना से फिर गए, और प्रदेश में शांति स्थापित हुई; और लगभग चार वर्षों तक शांति बनी रही, और कोई रक्तपात नहीं हुआ ।
- 13 परन्तु पूरे प्रदेश में दुष्टता प्रबल हुई, इतनी अधिक कि प्रभु ने अपने प्रिय शिष्यों को उनके बीच से हटा लिया, और लोगों की बुराइयों के कारण चमत्कार और चंगाई का कार्य रुक गया ।
- 14 और प्रभु की ओर से कोई उपहार नहीं था, और उनकी दुष्टता और अविश्वास के कारण उन पर अब कोई पवित्र आत्मा नहीं आई ।
- 15 और मैं, पंद्रह वर्ष का हुआ और मैं परिपक्व विचार का था, इसलिए मुझे प्रभु का दर्शन हुआ, और मैंने अनुभव किया और यीशु की अच्छाइयों को जाना ।
- 16 और मैंने इन लोगों को सिखाने का प्रयास किया, परन्तु मेरा मुंह बंद था, और मुझे उन्हें सिखाने से मना कर दिया गया था; क्योंकि देखो वे इच्छापूर्वक अपने परमेश्वर के विरुद्ध हुए थे; और उनके अधर्म के कारण प्रिय शिष्यों को प्रदेश से हटा दिया गया था ।
- 17 परन्तु मैं उनके बीच में ही रहा, लेकिन उनके हृदयों की कठोरता के कारण मुझे उन्हें सिखाने से मना कर दिया था; और उनके हृदयों की कठोरता के कारण ही उनकी खातिर प्रदेश श्रापित हुआ था ।
- 18 और ये गडियन्टन डाकू, जो कि लमनाइयों के बीच में थे, प्रदेश में फैल गए, इतनी अधिक संख्या में कि वहां के निवासी अपने धनों को जमीन में छिपाने लगे; और क्योंकि प्रभु ने प्रदेश को श्रापित किया था तो वह जमीन चिकनी हो गई और उन पर उसकी पकड़ नहीं रही, न ही वह उन्हें फिर से छिपाकर रख सकी ।

And it came to pass that the war began to be among them in the borders of Zarahemla, by the waters of Sidon.

And it came to pass that the Nephites had gathered together a great number of men, even to exceed the number of thirty thousand. And it came to pass that they did have in this same year a number of battles, in which the Nephites did beat the Lamanites and did slay many of them.

And it came to pass that the Lamanites withdrew their design, and there was peace settled in the land; and peace did remain for the space of about four years, that there was no bloodshed.

But wickedness did prevail upon the face of the whole land, insomuch that the Lord did take away his beloved disciples, and the work of miracles and of healing did cease because of the iniquity of the people.

And there were no gifts from the Lord, and the Holy Ghost did not come upon any, because of their wickedness and unbelief.

And I, being fifteen years of age and being somewhat of a sober mind, therefore I was visited of the Lord, and tasted and knew of the goodness of Jesus.

And I did endeavor to preach unto this people, but my mouth was shut, and I was forbidden that I should preach unto them; for behold they had wilfully rebelled against their God; and the beloved disciples were taken away out of the land, because of their iniquity.

But I did remain among them, but I was forbidden to preach unto them, because of the hardness of their hearts; and because of the hardness of their hearts the land was cursed for their sake.

And these Gadianton robbers, who were among the Lamanites, did infest the land, insomuch that the inhabitants thereof began to hide up their treasures in the earth; and they became slippery, because the Lord had cursed the land, that they could not hold them, nor retain them again.

19 और ऐसा हुआ कि वहां पर भूतसिद्धि, और जादू-टोना, और जादू होने लगे; और पूरे प्रदेश पर शैतान की शक्ति प्रबल हुई, यहां तक कि अबिनादी की सारी भविष्यवाणियों को पूरा करते हुए, और लमनाई समूह की भविष्यवाणियों को पूरा करते हुए भी ।

And it came to pass that there were sorceries, and witchcrafts, and magics; and the power of the evil one was wrought upon all the face of the land, even unto the fulfilling of all the words of Abinadi, and also Samuel the Lamanite.

## मॉरमन 2

- 1 और ऐसा हुआ कि उसी वर्ष नफाइयों और लमनाइयों के बीच युद्ध फिर से आरंभ हो गया। और एक नवयुवक होने के बावजूद मेरी कद-काठी बड़ी थी; इसलिए नफी के लोगों ने मुझे उनका मार्गदर्शक, या उनकी सेनाओं का मार्गदर्शक नियुक्त किया।
- 2 इसलिए ऐसा हुआ कि जब मैं सोलह वर्ष का था तब मैंने लमनाइयों के विरुद्ध नफाइयों की सेनाओं का नेतृत्व किया; इस प्रकार तीन सौ छब्बीस वर्ष बीत चुके थे।
- 3 और ऐसा हुआ कि तीन सौ सत्ताइसवें वर्ष में लमनाइयों ने हम पर इतनी अत्याधिक शक्ति से आक्रमण कर दिया कि उन्होंने मेरी सेनाओं को डरा दिया; इसलिए वे लड़ नहीं सके और उत्तरी देशों की तरफ पीछे हटने लगे।
- 4 और ऐसा हुआ कि हम अंगोला के नगर आ गए, और हमने नगर पर अधिकार कर लिया, और लमनाइयों से स्वयं की रक्षा की तैयारी की। और ऐसा हुआ कि हमने अपने बल से नगर की किलाबंदी की; परन्तु हमारी किलाबंदी के बावजूद लमनाइयों ने हम पर आक्रमण कर दिया और हमें नगर से खदेड़ दिया।
- 5 और उन्होंने हमें दाऊद के प्रदेश से भी बाहर निकाल दिया।
- 6 और हमने मार्च किया और यहोशू के प्रदेश आए जो कि समुद्रतट से लगी पश्चिमी सीमाओं पर स्थित था।
- 7 और ऐसा हुआ कि जितनी जल्दी हो सका उतनी जल्दी हमने अपने लोगों को एकत्रित किया, ताकि हम उन्हें एक झुंड के रूप में एकत्रित कर सकें।
- 8 परन्तु देखो, प्रदेश डाकुओं और लमनाइयों से भर गया था; और मेरे लोगों पर महान विनाश लटका हुआ था तब भी उन्होंने अपने बुरे कार्यों के लिए पश्चाताप नहीं किया; इसलिए पूरे प्रदेश में, नफाइयों और लमनाइयों, दोनों में ही बहुत रक्तपात और संहार हुआ; और पूरे प्रदेश में यह एक पूरी क्रांति थी।

## Mormon 2

And it came to pass in that same year there began to be a war again between the Nephites and the Lamanites. And notwithstanding I being young, was large in stature; therefore the people of Nephi appointed me that I should be their leader, or the leader of their armies.

Therefore it came to pass that in my sixteenth year I did go forth at the head of an army of the Nephites, against the Lamanites; therefore three hundred and twenty and six years had passed away.

And it came to pass that in the three hundred and twenty and seventh year the Lamanites did come upon us with exceedingly great power, insomuch that they did frighten my armies; therefore they would not fight, and they began to retreat towards the north countries.

And it came to pass that we did come to the city of Angola, and we did take possession of the city, and make preparations to defend ourselves against the Lamanites. And it came to pass that we did fortify the city with our might; but notwithstanding all our fortifications the Lamanites did come upon us and did drive us out of the city.

And they did also drive us forth out of the land of David.

And we marched forth and came to the land of Joshua, which was in the borders west by the seashore.

And it came to pass that we did gather in our people as fast as it were possible, that we might get them together in one body.

But behold, the land was filled with robbers and with Lamanites; and notwithstanding the great destruction which hung over my people, they did not repent of their evil doings; therefore there was blood and carnage spread throughout all the face of the land, both on the part of the Nephites and also on the part of the Lamanites; and it was one complete revolution throughout all the face of the land.

- 9 और अब, लमनाइयों के पास एक राजा था जिसका नाम हारून था; और उसने हम पर चौवालीस हजार की एक सेना के साथ आक्रमण कर दिया। और देखो, मैंने बयालीस हजार की सेना के साथ उसका सामना किया। और ऐसा हुआ कि मैंने अपनी सेना की मदद से उसे हरा दिया जिससे कि वह मेरे सामने से भाग गया। और देखो, यह सब हुआ था, और तीन सौ तीस वर्ष बीत चुके थे।
- 10 और ऐसा हुआ कि नफाइयों ने अपनी दुष्टता के लिए पश्चाताप करना शुरू किया, और भविष्यवक्ता समूएल द्वारा की गई भविष्यवाणी के अनुसार याचना करने लगे; क्योंकि देखो कोई भी व्यक्ति अपने पास अपने स्वयं की वस्तु नहीं बचा सका, क्योंकि चोर, डाकू, और हत्यारे, और जादू करनेवाले, और टोना-टोटका करनेवाले प्रदेश में स्थित थे।
- 11 इस प्रकार इन सब बातों के कारण पूरे प्रदेश में शोक और विलाप होने लगा, और ऐसा अधिकतर नफी के लोगों में हुआ।
- 12 और ऐसा हुआ कि जब मैंने, मॉरमन ने उनके विलाप और उसके शोक और प्रभु के समक्ष उनके दुख को देखा तो प्रभु की दया, और लंबे समय के उसके उत्पीड़न को जानते हुए मेरा हृदय आनंदित होने लगा, इसलिए यह मैं मानने लगा कि वह उन पर दया करेगा जिससे कि वे फिर से धर्मी लोग बन जाएं।
- 13 परन्तु देखो मेरा यह आनंद व्यर्थ था, क्योंकि परमेश्वर की भलाई के कारण, उनका दुख पश्चाताप के लिए नहीं था; परन्तु यह श्राप के दुख के कारण था जिससे कि पाप में रहते हुए प्रभु उनकी प्रसन्नता उनसे न छीन ले।
- 14 और वे टूटे हुए हृदय और पश्चातापी आत्मा से मसीह के पास नहीं आए थे, परन्तु उन्होंने परमेश्वर को कोसा और मरने की इच्छा व्यक्त की। फिर भी, उन्होंने अपने प्राणों के लिए तलवार उठाई।
- 15 और ऐसा हुआ कि मेरा दुख मेरे पास फिर से लौट आया, और मैंने देखा कि शारीरिक और आत्मिक तौर पर, उन पर अनुग्रह करने के दिन बीत चुके थे; क्योंकि मैंने देखा कि उनमें से हजारों लोगों को उनके परमेश्वर के विरुद्ध खुलकर विरोध करने के कारण काट दिया गया, और प्रदेश में गोबर के समान उनका ढेर लग गया। और इस प्रकार तीन सौ चौवालीस वर्ष बीत चुके थे।
- 16 और ऐसा हुआ कि तीन सौ पैंतालीसवें वर्ष में नफाई लमनाइयों के सामने से भागने लगे; और उनका तब तक पीछा किया गया जब तक कि वे जेशान नामक प्रदेश तक न पहुंच गए, और जहां से उनका और पीछे हटना संभव नहीं था।

And now, the Lamanites had a king, and his name was Aaron; and he came against us with an army of forty and four thousand. And behold, I withstood him with forty and two thousand. And it came to pass that I beat him with my army that he fled before me. And behold, all this was done, and three hundred and thirty years had passed away.

And it came to pass that the Nephites began to repent of their iniquity, and began to cry even as had been prophesied by Samuel the prophet; for behold no man could keep that which was his own, for the thieves, and the robbers, and the murderers, and the magic art, and the witchcraft which was in the land.

Thus there began to be a mourning and a lamentation in all the land because of these things, and more especially among the people of Nephi.

And it came to pass that when I, Mormon, saw their lamentation and their mourning and their sorrow before the Lord, my heart did begin to rejoice within me, knowing the mercies and the long-suffering of the Lord, therefore supposing that he would be merciful unto them that they would again become a righteous people.

But behold this my joy was vain, for their sorrowing was not unto repentance, because of the goodness of God; but it was rather the sorrowing of the damned, because the Lord would not always suffer them to take happiness in sin.

And they did not come unto Jesus with broken hearts and contrite spirits, but they did curse God, and wish to die. Nevertheless they would struggle with the sword for their lives.

And it came to pass that my sorrow did return unto me again, and I saw that the day of grace was passed with them, both temporally and spiritually; for I saw thousands of them hewn down in open rebellion against their God, and heaped up as dung upon the face of the land. And thus three hundred and forty and four years had passed away.

And it came to pass that in the three hundred and forty and fifth year the Nephites did begin to flee before the Lamanites; and they were pursued until they came even to the land of Jashon, before it was possible to stop them in their retreat.



- 17 और अब, जेशान का नगर उस प्रदेश के नजदीक था जहां अम्मोरोन ने प्रभु के पास अभिलेखों को रखा था, ताकि उन्हें नष्ट न किया जा सके। और देखो, अम्मोरोन के कहे अनुसार मैं वहां गया, और नफी की पट्टियों को ले आया, और अम्मोरोन के कहे अनुसार मैंने एक अभिलेख रखा।
- 18 और नफी की पट्टियों पर मैंने दुष्टता और घृणित कार्यों का एक पूरा विवरण लिखा; परन्तु इन पट्टियों पर मैंने उनकी सारी दुष्टता और घृणित कार्यों का पूरा विवरण नहीं लिखा, क्योंकि देखो, जब से मैं मनुष्यों के समान देखने-समझने लगा तब से लेकर अब तक की सारी दुष्टता और घृणित कार्य मेरी आंखों के सामने आने लगा।
- 19 और उनकी दुष्टता के कारण मुझ पर हाय; क्योंकि मेरे पूरे समय में उनकी दुष्टता के कारण मेरा हृदय दुख से भर गया था; फिर भी, मैं जानता हूँ कि अंतिम दिन में मैं उत्कर्ष पाऊंगा।
- 20 और ऐसा हुआ कि इसी वर्ष फिर से नफी के लोगों को खोजा और खदेड़ा गया। और ऐसा हुआ कि हमें तब तक खदेड़ा गया जब तक कि हम प्रदेश के उस उत्तरी हिस्से में न पहुंच गए जो कि शेम कहलाता था।
- 21 और ऐसा हुआ कि हमने शेम के नगर की किलाबंदी की, और जितना संभव हो सका उतना हमने अपने लोगों को एकत्रित किया, जिससे कि हम उन्हें विनाश से बचा सकें।
- 22 और ऐसा हुआ कि तीन सौ छियालीसवें वर्ष में उन्होंने हम पर फिर से आक्रमण करना आरंभ कर दिया।
- 23 और ऐसा हुआ कि मैंने अपने लोगों से बात की, और पूरी ऊर्जा के साथ मैंने उनसे विनति की कि उन्हें निडरता से लमनाइयों का सामना करना होगा और अपनी पत्नियों, और अपने बच्चों, और अपने मकानों, और अपने घरों के लिए लड़ना होगा।
- 24 और मेरी बातों ने उनमें थोड़ा बहुत जोश उत्पन्न किया, इतना कि वे लमनाइयों से भागे नहीं, परन्तु निडरता से उनका सामना किया।
- 25 और ऐसा हुआ कि पचास हजार की एक सेना के विरुद्ध हमने तीस हजार की एक सेना के साथ युद्ध किया। और ऐसा हुआ कि हमने उनका सामना दृढ़ता के साथ किया जिससे कि वे हमारे सामने से भागने लगे।

And now, the city of Jashon was near the land where Ammaron had deposited the records unto the Lord, that they might not be destroyed. And behold I had gone according to the word of Ammaron, and taken the plates of Nephi, and did make a record according to the words of Ammaron.

And upon the plates of Nephi I did make a full account of all the wickedness and abominations; but upon these plates I did forbear to make a full account of their wickedness and abominations, for behold, a continual scene of wickedness and abominations has been before mine eyes ever since I have been sufficient to behold the ways of man.

And wo is me because of their wickedness; for my heart has been filled with sorrow because of their wickedness, all my days; nevertheless, I know that I shall be lifted up at the last day.

And it came to pass that in this year the people of Nephi again were hunted and driven. And it came to pass that we were driven forth until we had come northward to the land which was called Shem.

And it came to pass that we did fortify the city of Shem, and we did gather in our people as much as it were possible, that perhaps we might save them from destruction.

And it came to pass in the three hundred and forty and sixth year they began to come upon us again.

And it came to pass that I did speak unto my people, and did urge them with great energy, that they would stand boldly before the Lamanites and fight for their wives, and their children, and their houses, and their homes.

And my words did arouse them somewhat to vigor, insomuch that they did not flee from before the Lamanites, but did stand with boldness against them.

And it came to pass that we did contend with an army of thirty thousand against an army of fifty thousand. And it came to pass that we did stand before them with such firmness that they did flee from before us.

26 और ऐसा हुआ कि जब वे भाग गए तब हमने अपनी सेनाओं के साथ उनका पीछा किया, और उनसे फिर युद्ध किया, और उन्हें हराया; फिर भी प्रभु का सामर्थ्य हमारे साथ नहीं था; हां, हमें हमारे हाल पर छोड़ दिया गया था, कि प्रभु की आत्मा हमारे बीच नहीं रही; इसलिए हम अपने भाइयों के समान ही निर्बल हो गए ।

27 और मेरे लोगों की महान विपत्ति के कारण, और उनकी दुष्टता और उनके घृणित कार्यों के कारण मेरा हृदय दुखी हुआ । परन्तु देखो, हमने लमनाइयों और गडियन्टन के डाकुओं पर तब तक आक्रमण किया जब तक कि हमने अपनी धरोहर की धरती पर अधिकार न कर लिया ।

28 और तीन सौ उनचास वर्ष बीत गए । और तीन सौ पचासवें वर्ष में हमने लमनाइयों और गडियन्टन के डाकुओं के साथ संधि कर ली, जिसके तहत हमने अपनी धरोहर की धरती को विभाजित किया ।

29 और लमनाइयों ने हमें उत्तर में स्थित प्रदेश दे दिया, हां, उस संकरे मार्ग को भी जो दक्षिण दिशा की तरफ जाता था । और हमने दक्षिण स्थित सारा प्रदेश लमनाइयों को दे दिया ।

And it came to pass that when they had fled we did pursue them with our armies, and did meet them again, and did beat them; nevertheless the strength of the Lord was not with us; yea, we were left to ourselves, that the Spirit of the Lord did not abide in us; therefore we had become weak like unto our brethren.

And my heart did sorrow because of this the great calamity of my people, because of their wickedness and their abominations. But behold, we did go forth against the Lamanites and the robbers of Gadianton, until we had again taken possession of the lands of our inheritance.

And the three hundred and forty and ninth year had passed away. And in the three hundred and fiftieth year we made a treaty with the Lamanites and the robbers of Gadianton, in which we did get the lands of our inheritance divided.

And the Lamanites did give unto us the land northward, yea, even to the narrow passage which led into the land southward. And we did give unto the Lamanites all the land southward.

### मॉरमन 3

- 1 और ऐसा हुआ कि लमनाई फिर से आक्रमण करने नहीं आए जब तक कि और दस वर्ष न बीत गए। और देखो, युद्ध के समय की तैयारी के प्रति मैंने अपने लोगों, नफाइयों को उनके प्रदेश और उनके अस्त्र-शस्त्रों की तैयारी में लगा दिया।
- 2 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने मुझसे कहा: इन लोगों से याचना करो—पश्चाताप करो, और मेरे पास आओ, और बपतिस्मा लो, और फिर से मेरे गिरजे का निर्माण करो, और तुम बचाए जाओगे।
- 3 और मैंने इन लोगों से याचना की, परन्तु यह व्यर्थ था; और इन्हें समझ नहीं आया कि वह प्रभु ही था जिसने इन्हें बचाया था, और उन्हें पश्चाताप करने का एक मौका दिया था। और देखो उन्होंने प्रभु अपने परमेश्वर के प्रति अपने हृदयों को कठोर किया।
- 4 और ऐसा हुआ कि जब यह दस वर्ष बीत गया, मसीह के आने के समय से लेकर तीन सौ साठ वर्ष पूरे हो गए, तब लमनाइयों के राजा ने मुझे एक पत्र भेजा, जिससे मुझे पता चला कि वे हम पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहे थे।
- 5 और ऐसा हुआ कि मैंने अपने लोगों को उजाड़ प्रदेश पर एकत्रित होने को कहा जो कि उस संकरे मार्ग से होते हुए सीमाओं पर स्थित था जो दक्षिणी प्रदेश की तरफ जाता था।
- 6 और वहां हमने अपनी सेनाओं को स्थित किया जिससे कि हम लमनाइयों की सेनाओं को रोक सकें, ताकि वे हमारे किसी भी प्रदेश पर कब्जा न कर सकें; इसलिए हमने अपनी पूरी ताकत से उनके विरुद्ध किलाबंदी की।
- 7 और ऐसा हुआ कि तीन सौ इकसठवें वर्ष में उजाड़ प्रदेश के नगर पर लमनाई हमसे युद्ध करने आए; और ऐसा हुआ कि उस वर्ष हमने उन्हें पराजित कर दिया, इतना अधिक कि वे फिर से अपने प्रदेश वापस चले गए।
- 8 और तीन सौ बासठवें वर्ष में वे फिर से युद्ध करने आए। और हमने उन्हें फिर से पराजित कर दिया, और उनमें से बहुत से लोगों को मार डाला, और उनके मृतकों को समुद्र में फेंक दिया।
- 9 और अब इस महान काम के कारण जिसे मेरे लोगों, नफाइयों ने किया था, वे अपनी ही ताकत के कारण अहंकारी होने लगे, और आसमान की तरफ देखकर शपथ लेने लगे कि वे अपने उन भाइयों की मृत्यु का प्रतिशोध स्वयं लेंगे जो उनके शत्रुओं द्वारा मारे गए थे।

### Mormon 3

And it came to pass that the Lamanites did not come to battle again until ten years more had passed away. And behold, I had employed my people, the Nephites, in preparing their lands and their arms against the time of battle.

And it came to pass that the Lord did say unto me: Cry unto this people—Repent ye, and come unto me, and be ye baptized, and build up again my church, and ye shall be spared.

And I did cry unto this people, but it was in vain; and they did not realize that it was the Lord that had spared them, and granted unto them a chance for repentance. And behold they did harden their hearts against the Lord their God.

And it came to pass that after this tenth year had passed away, making, in the whole, three hundred and sixty years from the coming of Christ, the king of the Lamanites sent an epistle unto me, which gave unto me to know that they were preparing to come again to battle against us.

And it came to pass that I did cause my people that they should gather themselves together at the land Desolation, to a city which was in the borders, by the narrow pass which led into the land southward.

And there we did place our armies, that we might stop the armies of the Lamanites, that they might not get possession of any of our lands; therefore we did fortify against them with all our force.

And it came to pass that in the three hundred and sixty and first year the Lamanites did come down to the city of Desolation to battle against us; and it came to pass that in that year we did beat them, insomuch that they did return to their own lands again.

And in the three hundred and sixty and second year they did come down again to battle. And we did beat them again, and did slay a great number of them, and their dead were cast into the sea.

And now, because of this great thing which my people, the Nephites, had done, they began to boast in their own strength, and began to swear before the heavens that they would avenge themselves of the blood of their brethren who had been slain by their enemies.

- 10 और उन्होंने आसमान की तरफ देखकर शपथ ली, और परमेश्वर के सिंहासन की भी कि वे अपने शत्रुओं से युद्ध करने जाएंगे, और प्रदेश से उन्हें खत्म कर देंगे ।
- 11 और ऐसा हुआ कि मैं, मॉरमन ने इस बार उनकी दुष्टता और उनके घृणित कार्यों के कारण इन लोगों का सेनाध्यक्ष या मार्गदर्शक होने से पूरी तरह मना कर दिया ।
- 12 देखो, मैंने उनका मार्गदर्शन किया था, उनकी दुष्टता के बावजूद युद्ध में कई बार मैंने उनका नेतृत्व किया था, और परमेश्वर का जो प्रेम मुझमें था उसके अनुसार मैंने अपने पूरे हृदय से उनसे प्रेम किया था; और उनके लिए पूरे समय मैंने परमेश्वर से प्रार्थना करने में अपना हृदय उड़ेला था; फिर भी, उनके हृदयों की कठोरता के कारण यह प्रार्थना बिना विश्वास के थी ।
- 13 और तीन बार मैंने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथों से बचाया, और उन्होंने अपने पापों का पश्चाताप नहीं किया ।
- 14 और जब उन्होंने उन सब चीजों की शपथ ली जो कि हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा वर्जित थीं, कि वे युद्ध करने अपने शत्रुओं के पास जाएंगे, और अपने भाइयों के लहू का प्रतिशोध लेंगे. देखो यह कहते हुए प्रभु की आवाज मुझे सुनाई दी:
- 15 प्रतिशोध मेरा है, और मैं भुगतान करूंगा; और मेरे बचाए जाने के बावजूद भी इन लोगों ने पश्चाताप नहीं किया है जिसके कारण, देखो धरती से इनका नाश होगा ।
- 16 और ऐसा हुआ कि मैंने अपने शत्रुओं से युद्ध करने से पूरी तरह से मना कर दिया; और मैंने वैसा ही किया जैसे कि प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी; और जिन बातों को मैंने देखा और सुना था, उनको संसार पर प्रकट करने के लिए मैं निरर्थक साक्षी के रूप में खड़ा रहा, और उस आत्मा के प्रकटीकरण के अनुसार भी जिसने होनेवाली बातों की गवाही दी थी ।
- 17 इसलिए हे अन्य जातियों, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, और हे इस्राएल का घराना, तुम्हें भी, कि जब कार्य आरंभ होगा, कि जब तक अपनी धरोहर की धरती पर जाने की तैयारी कर रहे होगे;
- 18 हां, देखो, मैं पृथ्वी की सभी छोरों को लिख रहा हूँ; हां, तुम्हें, इस्राएल की बारह जातियों को, जिनका न्याय उनके कार्यों के अनुसार उन बारह लोगों के द्वारा होगा जिन्हें यीशु ने यरूशलेम की धरती पर अपने शिष्यों के रूप में चुना था ।
- And they did swear by the heavens, and also by the throne of God, that they would go up to battle against their enemies, and would cut them off from the face of the land.
- And it came to pass that I, Mormon, did utterly refuse from this time forth to be a commander and a leader of this people, because of their wickedness and abomination.
- Behold, I had led them, notwithstanding their wickedness I had led them many times to battle, and had loved them, according to the love of God which was in me, with all my heart; and my soul had been poured out in prayer unto my God all the day long for them; nevertheless, it was without faith, because of the hardness of their hearts.
- And thrice have I delivered them out of the hands of their enemies, and they have repented not of their sins.
- And when they had sworn by all that had been forbidden them by our Lord and Savior Jesus Christ, that they would go up unto their enemies to battle, and avenge themselves of the blood of their brethren, behold the voice of the Lord came unto me, saying:
- Vengeance is mine, and I will repay; and because this people repented not after I had delivered them, behold, they shall be cut off from the face of the earth.
- And it came to pass that I utterly refused to go up against mine enemies; and I did even as the Lord had commanded me; and I did stand as an idle witness to manifest unto the world the things which I saw and heard, according to the manifestations of the Spirit which had testified of things to come.
- Therefore I write unto you, Gentiles, and also unto you, house of Israel, when the work shall commence, that ye shall be about to prepare to return to the land of your inheritance;
- Yea, behold, I write unto all the ends of the earth; yea, unto you, twelve tribes of Israel, who shall be judged according to your works by the twelve whom Jesus chose to be his disciples in the land of Jerusalem.

- 19 और इन लोगों के बाकी बचे हुए लोगों को भी लिख रहा हूँ, जिनका न्याय भी उन बारह लोगों के द्वारा होगा जिन्हें यीशु ने इस प्रदेश में चुना है; और इन बारह लोगों का न्याय उन बारह लोगों के द्वारा होगा जिन्हें यीशु ने यरूशलेम की धरती पर चुना था ।
- 20 और इन चीजों को मुझ पर आत्मा ने प्रकट किया; इसलिए मैं तुम सबको लिख रहा हूँ । और यह सब मैं इसलिए लिख रहा हूँ कि तुम जान सको कि तुम सब को मसीह के न्याय-आसन के समाने खड़ा होना होगा, हां, हर उस आत्मा को जो आदम के पूरे मानव परिवार का सदस्य है; और तुम्हें तुम्हारे कर्मों के अनुसार न्याय के लिए खड़ा होना होगा चाहे वे अच्छे हों या बुरे;
- 21 और इसलिए भी जिससे कि तुम यीशु मसीह के सुसमाचार पर विश्वास कर सको, जो कि तुम्हारे ही बीच में होगा; और यहूदियों में और प्रभु के अनुबंधित लोगों में होगा, उसके अलावा उनके पास एक अन्य साक्षी होगी जिसे उन्होंने देखा और सुना था, कि यीशु जिसे उन लोगों ने मार डाला था वही मसीह और परमेश्वर था ।
- 22 और मैं चाहूंगा कि पृथ्वी की छोर के सारे लोगों को पश्चाताप करने और मसीह के न्याय-आसन के सामने खड़े होने के प्रति उनकी तैयारी के लिए मैं उन्हें मना सकूँ ।

And I write also unto the remnant of this people, who shall also be judged by the twelve whom Jesus chose in this land; and they shall be judged by the other twelve whom Jesus chose in the land of Jerusalem.

And these things doth the Spirit manifest unto me; therefore I write unto you all. And for this cause I write unto you, that ye may know that ye must all stand before the judgment-seat of Christ, yea, every soul who belongs to the whole human family of Adam; and ye must stand to be judged of your works, whether they be good or evil;

And also that ye may believe the gospel of Jesus Christ, which ye shall have among you; and also that the Jews, the covenant people of the Lord, shall have other witness besides him whom they saw and heard, that Jesus, whom they slew, was the very Christ and the very God.

And I would that I could persuade all ye ends of the earth to repent and prepare to stand before the judgment-seat of Christ.

## मॉरमन 4

- 1 और अब ऐसा हुआ कि तीन सौ तिरसठवें वर्ष में नफाई अपनी सेनाओं के साथ लमनाइयों से युद्ध करने उजाड़ प्रदेश से बाहर गए ।
- 2 और अब ऐसा हुआ कि फिर से नफाई सेनाओं को उजाड़ प्रदेश में वापस भेज दिया गया । और जब वे थके हुए ही थे तभी लमनाइयों की एक नई सेना ने उन पर आक्रमण कर दिया; और उनमें एक भारी युद्ध हुआ, इतना अधिक कि लमनाइयों ने उजाड़ प्रदेश पर कब्जा कर लिया, और बहुत से नफाइयों को मार डाला, और बहुत से लोगों को बंदी बना लिया ।
- 3 और बचे हुए भागकर टियंकम नगर के निवासियों से जा मिले । अब टियंकम का यह नगर समुद्रतट की सीमाओं से लगा हुआ था; और यह उजाड़ शहर के नजदीक भी था ।
- 4 और क्योंकि नफाई सेनाएं लमनाइयों पर आक्रमण करने गई थीं इसलिए वे मारे जाने लगे; यदि ऐसा नहीं हुआ होता तो लमनाइयों का उन पर कोई अधिकार नहीं होता ।
- 5 परन्तु देखो, परमेश्वर का न्याय दुष्ट लोगों पर आएगा; और दुष्टों के द्वारा ही दुष्टों को दंड मिलेगा; क्योंकि दुष्ट लोग ही हैं जो मानव संतानों के हृदयों में रक्तपात करने की बात डालते हैं ।
- 6 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों ने टियंकम नगर पर आक्रमण करने की तैयारी की ।
- 7 और ऐसा हुआ कि तीन सौ चौंसठवें वर्ष में लमनाइयों ने टियंकम नगर पर आक्रमण कर दिया, जिससे कि वे टियंकम नगर पर भी कब्जा कर सकें ।
- 8 और ऐसा हुआ कि वे हार गए और नफाइयों द्वारा पीछे हटाए गए । और जब नफाइयों ने देखा कि उन्होंने लमनाइयों को भगा दिया तो वे अपने बल के कारण फिर से अहंकारी हो गए; और अपनी ताकत से वे आगे बढ़े और फिर से उजाड़ शहर पर अधिकार कर लिया ।
- 9 और अब यह सब हो चुका था, और दोनों तरफ के, नफाइयों और लमनाइयों के हजारों लोग मारे गए थे ।

## Mormon 4

And now it came to pass that in the three hundred and sixty and third year the Nephites did go up with their armies to battle against the Lamanites, out of the land Desolation.

And it came to pass that the armies of the Nephites were driven back again to the land of Desolation. And while they were yet weary, a fresh army of the Lamanites did come upon them; and they had a sore battle, insomuch that the Lamanites did take possession of the city Desolation, and did slay many of the Nephites, and did take many prisoners.

And the remainder did flee and join the inhabitants of the city Teancum. Now the city Teancum lay in the borders by the seashore; and it was also near the city Desolation.

And it was because the armies of the Nephites went up unto the Lamanites that they began to be smitten; for were it not for that, the Lamanites could have had no power over them.

But, behold, the judgments of God will overtake the wicked; and it is by the wicked that the wicked are punished; for it is the wicked that stir up the hearts of the children of men unto bloodshed.

And it came to pass that the Lamanites did make preparations to come against the city Teancum.

And it came to pass in the three hundred and sixty and fourth year the Lamanites did come against the city Teancum, that they might take possession of the city Teancum also.

And it came to pass that they were repulsed and driven back by the Nephites. And when the Nephites saw that they had driven the Lamanites they did again boast of their own strength; and they went forth in their own might, and took possession again of the city Desolation.

And now all these things had been done, and there had been thousands slain on both sides, both the Nephites and the Lamanites.

- 10 और ऐसा हुआ कि तीन सौ छियासठ वर्ष बीत चुके थे, और युद्ध करने के लिए लमनाइयों ने फिर से नफाइयों पर आक्रमण कर दिया; और अब भी नफाइयों ने जो बुरे काम किये थे उसका पश्चाताप नहीं किया, परन्तु अपनी दुष्टता में निरंतर मजबूत होते गए ।
- 11 और जबान से इसका वर्णन करना, या जो रक्तपात और नरसंहार का भयानक दृश्य दोनों, नफाइयों और लमनाइयों के बीच हुआ था, उसका पूरा विवरण लिखना किसी मनुष्य के लिए असंभव है; और हर एक हृदय कठोर था, इसलिए निरंतर लहू बहाने में उन्हें आनंद महसूस होता था ।
- 12 और प्रभु के वचन के अनुसार न तो लेही के सारे बच्चों में, न ही इस्राएल के पूरे घराने में कभी इतनी अधिक दुष्टता रही थी जितनी कि इन लोगों में थी ।
- 13 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों ने उजाड़ शहर पर कब्जा कर लिया, और ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उनकी संख्या नफाइयों की संख्या से अधिक थी ।
- 14 और वे टियंकम नगर पर आक्रमण करने के लिए भी आगे बढ़े, और वहां के निवासियों को भी भगा दिया, और स्त्रियों और बच्चों के साथ-साथ कई और लोगों को बंदी बना लिया, और अपने प्रतिमा स्वरूप ईश्वरों को उन लोगों का बलिदान चढ़ाया ।
- 15 और ऐसा हुआ कि तीन सौ सड़सठवें वर्ष में, नफाई क्रोधित हुए क्योंकि लमनाइयों ने उनकी स्त्रियों और बच्चों का बलिदान चढ़ाया था, कि अत्याधिक क्रोध में उन्होंने लमनाइयों पर आक्रमण कर दिया, इतना अधिक कि उन्होंने लमनाइयों को पराजित कर दिया और उन्हें उनके प्रदेशों से बाहर निकाल दिया ।
- 16 और लमनाई नफाइयों पर आक्रमण करने तब तक नहीं आए जब तक कि तीन सौ पचहत्तर वर्ष न बीत गया ।
- 17 और इसी वर्ष उन्होंने नफाइयों पर अपनी पूरी ताकत से आक्रमण कर दिया; और उनकी अत्याधिक संख्या के कारण उनकी गणना नहीं हुई ।
- 18 और इस समय से नफाई लमनाइयों पर कोई बल न दिखा सके, परन्तु उन्होंने उन्हें वैसे बना दिया जैसे कि सूरज के सामने एक ओस ।

And it came to pass that the three hundred and sixty and sixth year had passed away, and the Lamanites came again upon the Nephites to battle; and yet the Nephites repented not of the evil they had done, but persisted in their wickedness continually.

And it is impossible for the tongue to describe, or for man to write a perfect description of the horrible scene of the blood and carnage which was among the people, both of the Nephites and of the Lamanites; and every heart was hardened, so that they delighted in the shedding of blood continually.

And there never had been so great wickedness among all the children of Lehi, nor even among all the house of Israel, according to the words of the Lord, as was among this people.

And it came to pass that the Lamanites did take possession of the city Desolation, and this because their number did exceed the number of the Nephites.

And they did also march forward against the city Teancum, and did drive the inhabitants forth out of her, and did take many prisoners both women and children, and did offer them up as sacrifices unto their idol gods.

And it came to pass that in the three hundred and sixty and seventh year, the Nephites being angry because the Lamanites had sacrificed their women and their children, that they did go against the Lamanites with exceedingly great anger, insomuch that they did beat again the Lamanites, and drive them out of their lands.

And the Lamanites did not come again against the Nephites until the three hundred and seventy and fifth year.

And in this year they did come down against the Nephites with all their powers; and they were not numbered because of the greatness of their number.

And from this time forth did the Nephites gain no power over the Lamanites, but began to be swept off by them even as a dew before the sun.

- 19 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों ने फिर से उजाड़ शहर पर आक्रमण कर दिया; और उजाड़ प्रदेश में घमासान युद्ध हुआ, जिसमें उन्होंने नफाइयों को पराजित कर दिया ।
- 20 और वे फिर से उनके सामने से भाग गए, और वे बोअज नगर पहुंचे; और अत्याधिक निडरता के साथ उन्होंने लमनाइयों का सामना किया, इतना अधिक कि लमनाई उन्हें तब तक न पराजित कर सके जब तक कि उन्होंने दूसरी बार उन पर आक्रमण नहीं किया ।
- 21 और जब उन्होंने दूसरी बार आक्रमण किया, तब नफाइयों को भगाया गया और अत्याधिक नरसंहार हुआ; उनकी स्त्रियों और उनके बच्चों का फिर से मूर्तियों के सामने बलिदान दिया गया ।
- 22 और ऐसा हुआ कि नगरों और गांवों के सारे निवासियों को अपने साथ लेते हुए, नफाई फिर से उनके सामने से भाग गए ।
- 23 और अब, मैं, मॉरमन, यह देखते हुए कि लमनाई लगभग प्रदेश का तख्ता पलटने ही वाले थे, तब मैं शिम पहाड़ी पर गया, और उन सारे अभिलेखों को लिया जिसे अम्मोरोन ने प्रभु के पास छिपा रखा था ।

And it came to pass that the Lamanites did come down against the city Desolation; and there was an exceedingly sore battle fought in the land Desolation, in the which they did beat the Nephites.

And they fled again from before them, and they came to the city Boaz; and there they did stand against the Lamanites with exceeding boldness, in-somuch that the Lamanites did not beat them until they had come again the second time.

And when they had come the second time, the Nephites were driven and slaughtered with an exceedingly great slaughter; their women and their children were again sacrificed unto idols.

And it came to pass that the Nephites did again flee from before them, taking all the inhabitants with them, both in towns and villages.

And now I, Mormon, seeing that the Lamanites were about to overthrow the land, therefore I did go to the hill Shim, and did take up all the records which Ammaron had hid up unto the Lord.



## मॉरमन 5

- 1 और ऐसा हुआ कि मैं नफाइयों के बीच गया, और उनकी सहायता न करने की जो शपथ मैंने ली थी उसके लिए मैंने पश्चाताप किया; और उन्होंने अपनी सेनाओं की कमान फिर से मुझे सौंप दी, क्योंकि उन्होंने मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे कि मैं उन्हें उनकी परेशानियों से मुक्ति दिला सकता हूँ।
- 2 परन्तु देखो, मैं निराश था, क्योंकि मैं प्रभु के न्याय को जानता था जो उन पर आनेवाला था; क्योंकि उन्होंने अपनी बुराइयों के लिए पश्चाताप नहीं किया था, परन्तु उस अस्तित्व को बिना पुकारे अपने जीवन के लिए संघर्ष किया था जिसने उन्हें बनाया था।
- 3 और ऐसा हुआ कि जब हम यरदन नगर की तरफ भाग रहे थे तभी लमनाइयों ने हम पर आक्रमण कर दिया; परन्तु देखो, उन्हें पीछे हटा दिया गया जिससे कि उस समय वे नगर पर कब्जा न कर सकें।
- 4 और ऐसा हुआ कि उन्होंने हम पर फिर से आक्रमण किया, और हमने नगर को संभाला। और अन्य नगर भी थे जिनकी देखरेख नफाइयों द्वारा हुई, जिसकी किलाबंदी के कारण हमारे देश के निवासियों को नष्ट करने के लिए वे उस प्रदेश में प्रवेश नहीं कर पाए जो हमारे सामने थी।
- 5 परन्तु ऐसा हुआ कि जिस भी प्रदेश से हम गए, और वहां रह रहे निवासी जो एकत्रित नहीं हुए उन्हें लमनाइयों ने नष्ट कर दिया, और उनके शहर, और गांव, और नगर जला दिए गए; और इस प्रकार तीन सौ नवासी वर्ष बीत गए।
- 6 और ऐसा हुआ कि तीन सौ अस्सीवें वर्ष में युद्ध करने के लिए लमनाइयों ने हम पर फिर से आक्रमण कर दिया, और हमने निडरता से उनका सामना किया; परन्तु वह सब व्यर्थ था, क्योंकि उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि उन्होंने नफाई लोगों को अपने पैरों तले कुचल दिया।
- 7 और ऐसा हुआ कि हम फिर से भागने लगे, और जो तेज गति से भागे वे लमनाइयों से बच गए, और जो लमनाइयों से तेज गति से नहीं भाग सके उन्हें मारकर नष्ट कर दिया गया।

## Mormon 5

And it came to pass that I did go forth among the Nephites, and did repent of the oath which I had made that I would no more assist them; and they gave me command again of their armies, for they looked upon me as though I could deliver them from their afflictions.

But behold, I was without hope, for I knew the judgments of the Lord which should come upon them; for they repented not of their iniquities, but did struggle for their lives without calling upon that Being who created them.

And it came to pass that the Lamanites did come against us as we had fled to the city of Jordan; but behold, they were driven back that they did not take the city at that time.

And it came to pass that they came against us again, and we did maintain the city. And there were also other cities which were maintained by the Nephites, which strongholds did cut them off that they could not get into the country which lay before us, to destroy the inhabitants of our land.

But it came to pass that whatsoever lands we had passed by, and the inhabitants thereof were not gathered in, were destroyed by the Lamanites, and their towns, and villages, and cities were burned with fire; and thus three hundred and seventy and nine years passed away.

And it came to pass that in the three hundred and eightieth year the Lamanites did come again against us to battle, and we did stand against them boldly; but it was all in vain, for so great were their numbers that they did tread the people of the Nephites under their feet.

And it came to pass that we did again take to flight, and those whose flight was swifter than the Lamanites' did escape, and those whose flight did not exceed the Lamanites' were swept down and destroyed.

- 8 और अब देखो, मैं, मॉरमन, नहीं चाहता था कि मेरी आंखों के सामने रक्तपात और नरसंहार के इस प्रकार भयानक दृश्य में पड़ते हुए लोगों की आत्माओं को कष्ट पहुंचे; परन्तु मैं इतना अवश्य जानता था कि इन बातों को ज्ञात कराया जाएगा, और जितनी बातें छिपी हुई हैं उन्हें घर की छतों से प्रकट किया जाएगा—
- 9 और यह भी कि इन बातों का ज्ञात इन लोगों में से बचे हुए लोगों को कराया जाएगा, और अन्य जातियों को भी, जिन्हें प्रभु ने कहा है कि ये इन लोगों को तितर-बितर करेंगे, और उनके बीच इन लोगों की गिनती नहीं होगी—इसलिए जिसे मैंने देखा है उसके पूरे विवरण को लिखने का साहस न करते हुए, उस आज्ञा के कारण मैं एक छोटा सा विवरण लिख रहा हूँ जिसे मैंने प्राप्त किया है, और इसलिए भी कि इन लोगों की दुष्टता के कारण तुम्हें शायद अधिक दुख न हो।
- 10 और अब देखो, यह मैं इनके वंशों के लिए लिख रहा हूँ, और उन अन्य जातियों के लिए भी जिन्हें इस्राएल के घराने की चिंता है, जो समझते हैं और जानते हैं कि इनके लिए आशीषें कहां से आती हैं।
- 11 क्योंकि मैं जानता हूँ कि इस्राएल के घराने की विपत्ति का दुख कैसा होगा; हां, वे इन लोगों के विनाश का दुख मनाएंगे; वे इस बात का दुख मानएंगे कि इन लोगों ने पश्चाताप नहीं किया था जिससे कि यीशु उन्हें अपनी मजबूत बाहों की सुरक्षित घेरे में ले सके।
- 12 अब ये बातें याकूब के घराने के बचे हुए लोगों के लिए लिखी गई हैं; और ये इस प्रकार लिखी गई हैं, क्योंकि परमेश्वर को ज्ञात है कि दुष्टता में ये बातें उन तक नहीं पहुंचेंगी; और इन्हें प्रभु के पास छिपाना होगा ताकि यह उसके उपयुक्त समय में बाहर आ सकें।
- 13 और यह आज्ञा है जिसे मैंने प्राप्त किया है; और देखो, ये सब बातें प्रभु की आज्ञा के अनुसार तब बाहर आएंगी जब वह अपने ज्ञान में इनके आने के उचित समय को देखेगा।
- 14 और देखो, ये नास्तिक यहूदियों में जाएंगी; और इस उद्देश्य से ये जाएंगी—कि उन्हें विश्वास दिलाया जा सके कि यीशु ही मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र; जिससे कि पिता अपने प्रिय पुत्र के द्वारा, यहूदियों को या इस्राएल के पूरे घराने को उनकी उस विरासत की धरती पर पुनः स्थापित करने के अपने महान और अनंत उद्देश्य को पूरा कर सके, जिसे उनके प्रभु परमेश्वर ने अपने अनुबंध को पूरा करने के लिए उन्हें दिया है।

And now behold, I, Mormon, do not desire to harrow up the souls of men in casting before them such an awful scene of blood and carnage as was laid before mine eyes; but I, knowing that these things must surely be made known, and that all things which are hid must be revealed upon the house-tops—

And also that a knowledge of these things must come unto the remnant of these people, and also unto the Gentiles, who the Lord hath said should scatter this people, and this people should be counted as naught among them—therefore I write a small abridgment, daring not to give a full account of the things which I have seen, because of the commandment which I have received, and also that ye might not have too great sorrow because of the wickedness of this people.

And now behold, this I speak unto their seed, and also to the Gentiles who have care for the house of Israel, that realize and know from whence their blessings come.

For I know that such will sorrow for the calamity of the house of Israel; yea, they will sorrow for the destruction of this people; they will sorrow that this people had not repented that they might have been clasped in the arms of Jesus.

Now these things are written unto the remnant of the house of Jacob; and they are written after this manner, because it is known of God that wickedness will not bring them forth unto them; and they are to be hid up unto the Lord that they may come forth in his own due time.

And this is the commandment which I have received; and behold, they shall come forth according to the commandment of the Lord, when he shall see fit, in his wisdom.

And behold, they shall go unto the unbelieving of the Jews; and for this intent shall they go—that they may be persuaded that Jesus is the Christ, the Son of the living God; that the Father may bring about, through his most Beloved, his great and eternal purpose, in restoring the Jews, or all the house of Israel, to the land of their inheritance, which the Lord their God hath given them, unto the fulfilling of his covenant;

- 15 और इसलिए भी कि इन लोगों के वंश उसके सुसमाचार पर पूरी तरह से विश्वास कर सकें, जो अन्य जातियों से उनके बीच जाएगा; क्योंकि ये लोग तितर-बितर होंगे, और इतने बुरे, भ्रष्ट, और घृणास्पद होंगे जो कि उस व्याख्या से बढ़कर होगा जो कभी भी हमारे बीच हुआ हो, हां, लमनाइयों के बीच की भी, और ऐसा उनके अविश्वास और मूर्तिपूजा को कारण होगा ।
- 16 क्योंकि देखो, प्रभु की आत्मा ने तो पहले से ही उनके पूर्वजों के साथ प्रयास करना बंद कर दिया है; और संसार में वे बिना मसीह और परमेश्वर के हैं; और लगभग वे हवा द्वारा भूसी के समान उड़ाए गए हैं ।
- 17 एक समय पर वे आनंदित लोग थे, और उनके चरवाहे के रूप में उनके पास मसीह था; हां, यहां तक कि उनका मार्गदर्शन पिता परमेश्वर द्वारा होता था ।
- 18 परन्तु अब, देखो, उनका मार्गदर्शन शैतान द्वारा होता है, वैसे ही जैसे कि हवा से भूसी उड़ाई जाती है, या वैसे ही जैसे कि एक नाव जो बिना पाल या पतवार के लहरों पर उछाली जाती है, या किसी के सहारे के बिना बहती है; और जैसे वह बहती है, वैसे ही वे भी हैं ।
- 19 और देखो, प्रभु ने उनकी आशीषों को सुरक्षित रख लिया है जिसे हो सकता है कि वे प्राप्त कर सकते थे क्योंकि अन्य जाति अब प्रदेश के अधिकारी होंगे ।
- 20 परन्तु देखो, ऐसा होगा कि वे भगा दिए जाएंगे और अन्य जातियों द्वारा तितर-बितर किये जाएंगे; और भगाए और अन्य जातियों द्वारा तितर-बितर किये जाने के पश्चात, देखो, तब प्रभु अपने उस अनुबंध को याद करेगा जिसे उसने इब्राहीम और इस्राएल के घराने के साथ बनाया था ।
- 21 और प्रभु धर्मी लोगों की उन प्रार्थनाओं को भी याद करेगा जो उनके लिए उससे की गई थीं ।
- 22 और फिर, हे तुम अन्य जातियों, सिवाय पश्चाताप करने और अपने बुरे मार्गों से फिरने के अलावा तुम परमेश्वर के सामर्थ्य के आगे कैसे टिके रह सकते हो ?
- 23 क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर के हाथों में हो ? क्या तुम नहीं जानते कि उसके पास सारी शक्तियां हैं, और उसकी महान आज्ञा से धरती कागज के एक टुकड़े के समान लपेटी जा सकती है ?

And also that the seed of this people may more fully believe his gospel, which shall go forth unto them from the Gentiles; for this people shall be scattered, and shall become a dark, a filthy, and a loathsome people, beyond the description of that which ever hath been amongst us, yea, even that which hath been among the Lamanites, and this because of their unbelief and idolatry.

For behold, the Spirit of the Lord hath already ceased to strive with their fathers; and they are without Christ and God in the world; and they are driven about as chaff before the wind.

They were once a delightsome people, and they had Christ for their shepherd; yea, they were led even by God the Father.

But now, behold, they are led about by Satan, even as chaff is driven before the wind, or as a vessel is tossed about upon the waves, without sail or anchor, or without anything wherewith to steer her; and even as she is, so are they.

And behold, the Lord hath reserved their blessings, which they might have received in the land, for the Gentiles who shall possess the land.

But behold, it shall come to pass that they shall be driven and scattered by the Gentiles; and after they have been driven and scattered by the Gentiles, behold, then will the Lord remember the covenant which he made unto Abraham and unto all the house of Israel.

And also the Lord will remember the prayers of the righteous, which have been put up unto him for them.

And then, O ye Gentiles, how can ye stand before the power of God, except ye shall repent and turn from your evil ways?

Know ye not that ye are in the hands of God? Know ye not that he hath all power, and at his great command the earth shall be rolled together as a scroll?

24      इसलिए, तुम पश्चाताप करो, और स्वयं को उसके समाने विनम्र बनाओ, कहीं ऐसा न हो कि उसका न्याय तुम पर पड़ जाए—कहीं ऐसा न हो कि याकूब के बचे हुए वंश तुम्हारे बीच में एक शेर के समान आएँ, और तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दें, और कोई तुम्हें बचाने-वाला न हो।

Therefore, repent ye, and humble yourselves before him, lest he shall come out in justice against you—lest a remnant of the seed of Jacob shall go forth among you as a lion, and tear you in pieces, and there is none to deliver.

## मॉरमन 6

- 1 और अब मैं अपने लोगों, नफाइयों के विनाश के संबंध में अपने अभिलेख का अंत करता हूँ। और ऐसा हुआ कि हम लमनाइयों के सामने से आगे बढ़ गए।
- 2 और मैंने, मॉरमन ने लमनाइयों के राजा के लिए एक पत्र लिखा, और उस पर इच्छा जाहिर की कि वह हमें अनुमति दे जिससे कि हम अपने लोगों को कूमोरा प्रदेश में एकत्रित कर सकें जो कि कूमोरा नामक पहाड़ी से लगा हुआ था, और वहां हम उनसे युद्ध कर सकें।
- 3 और ऐसा हुआ कि लमनाइयों के राजा ने मुझे उस बात की अनुमति दी जो मैं चाहता था।
- 4 और ऐसा हुआ कि हम कूमोरा प्रदेश की तरफ चल पड़े, और कूमोरा पहाड़ी के आसपास हमने अपने तंबू लगाए; और यह अनेक जलाशयों, नदियों, और झरनों का प्रदेश था; और यहां हमारे पास लमनाइयों पर लाभ प्राप्त करने की पूरी आशा थी।
- 5 और जब तीन सौ चौरासी वर्ष बीत गए, हमने कूमोरा के प्रदेश में अपने लोगों में से बचे हुए सारे लोगों को एकत्रित किया।
- 6 और ऐसा हुआ कि जब हमने कूमोरा प्रदेश के एक स्थान पर अपने सारे लोगों को एकत्रित कर लिया, देखो मैं, मॉरमन वृद्ध होने लगा; और जानते हुए कि यह मेरे लोगों का अंतिम संघर्ष है, और प्रभु की आज्ञा प्राप्त करते हुए कि मुझे उन अभिलेखों को लमनाइयों के हाथों में नहीं पड़ने देना चाहिए (क्योंकि लमनाई उन्हें नष्ट कर देंगे) जिसे हमारे पूर्वजों ने दिया है, जो कि पावन हैं। इसलिए मैंने नफी की पट्टियों पर इसका अभिलेख लिखा, और उन सारे अभिलेखों को कूमोरा पहाड़ी पर छिपा दिया जो प्रभु के हाथों द्वारा मुझे सौंपे गए थे, केवल कुछ उन पट्टियों को छोड़कर जिसे मैंने अपने बेटे मोरोनी को दिया था।
- 7 और ऐसा हुआ कि अब मेरे लोगों ने अपनी पत्नियों और अपने बच्चों के साथ लमनाई सेनाओं को उनकी तरफ आते देखा; और जो मृत्यु का भयंकर डर सारे दुष्टों के हृदयों में समा गया था, और वे उसे प्राप्त करने की प्रतीक्षा करने लगा।
- 8 और ऐसा हुआ कि वे हमसे युद्ध करने आए, और उनकी अत्याधिक संख्या के कारण हर आत्मा में डर समा गया।

## Mormon 6

And now I finish my record concerning the destruction of my people, the Nephites. And it came to pass that we did march forth before the Lamanites.

And I, Mormon, wrote an epistle unto the king of the Lamanites, and desired of him that he would grant unto us that we might gather together our people unto the land of Cumorah, by a hill which was called Cumorah, and there we could give them battle.

And it came to pass that the king of the Lamanites did grant unto me the thing which I desired.

And it came to pass that we did march forth to the land of Cumorah, and we did pitch our tents around about the hill Cumorah; and it was in a land of many waters, rivers, and fountains; and here we had hope to gain advantage over the Lamanites.

And when three hundred and eighty and four years had passed away, we had gathered in all the remainder of our people unto the land of Cumorah.

And it came to pass that when we had gathered in all our people in one to the land of Cumorah, behold I, Mormon, began to be old; and knowing it to be the last struggle of my people, and having been commanded of the Lord that I should not suffer the records which had been handed down by our fathers, which were sacred, to fall into the hands of the Lamanites, (for the Lamanites would destroy them) therefore I made this record out of the plates of Nephi, and hid up in the hill Cumorah all the records which had been entrusted to me by the hand of the Lord, save it were these few plates which I gave unto my son Moroni.

And it came to pass that my people, with their wives and their children, did now behold the armies of the Lamanites marching towards them; and with that awful fear of death which fills the breasts of all the wicked, did they await to receive them.

And it came to pass that they came to battle against us, and every soul was filled with terror because of the greatness of their numbers.

- 9 और ऐसा हुआ कि उन्होंने तलवार से मेरे लोगों पर आक्रमण कर दिया, और धनुष से, और तीर से, और कुल्हाड़ी से, और युद्ध के हर प्रकार के हथियारों से आक्रमण किया ।
- 10 और ऐसा हुआ कि मेरे लोगों को काट दिया गया, हां, मेरे उन दस हजार लोगों को भी जो मेरे साथ थे, और मैं बीच में घायल पड़ा था; और वे मेरे पास से होकर गुजर गए और उन्होंने मेरा जीवन समाप्त नहीं किया ।
- 11 और जब उन्होंने हममें से चौबीस को छोड़कर (जिसमें मेरा बेटा मोरोनी भी था) मेरे सारे लोगों को काट दिया, और हम जो अपने लोगों में से बच गए थे, अगले दिन कूमोरा पहाड़ी की चोटी से देखा कि लमनाई अपने डेरों में जा चुके थे, और मेरे जिन दस हजार लोगों को काट दिया गया था वे सब मेरे सामने पड़े थे ।
- 12 और हमने अपने उन दस हजार लोगों को भी देखा जिनका नेतृत्व मेरे बेटे मोरोनी ने किया था ।
- 13 और देखो, गिडगिडोना के दस हजार लोग मरे पड़े थे, और वह भी उनके बीच में था ।
- 14 और लमाह अपने दस हजार लोगों के साथ मरा पड़ा था; और गिलगाल अपने दस हजार लोगों के साथ मरा पड़ा था; और लिमहा अपने दस हजार लोगों के साथ मरा पड़ा था; और जेनियम अपने दस हजार लोगों के साथ मरा पड़ा था; और कुमेनिहा, और मोरोनिहा, और अंतीओनम, और शिबलोम, और शेम, और जोश अपने-अपने दस हजार लोगों के साथ मरे पड़े थे ।
- 15 और ऐसा हुआ कि दस लोग और थे जो अपने-अपने दस हजार लोगों के साथ तलवार द्वारा मारे गए थे; हां, केवल उन चौबीस लोगों को छोड़कर जो मेरे साथ थे, मेरे बाकी सारे लोग मारे गए थे, और कुछ लोग और भी बचे थे जो दक्षिणी देशों की तरफ पलायन कर गए थे, कुछ और लोग बच गए थे लोग जो लमनाइयों में जा मिले थे; और उनका मांस, और उनकी हड्डियां, और लहू धरती पर फैले हुए थे, जो उन लोगों द्वारा धरती पर सड़ने और टुकड़े-टुकड़े होकर उनकी धरती माता की गोद में समा जाने के लिए छोड़ दिए गए थे जिन्होंने उन्हें मारा था ।
- 16 और मेरे लोगों के मारे जाने के कारण, वेदना से मेरी आत्मा तार-तार हो गई, और मैं रोया:
- 17 हे तुम निष्कपट लोगों, कैसे तुम प्रभु के मार्ग से अलग हो सकते हो ! हे तुम निष्कपट लोगों, कैसे तुम उस यीशु को नकार सकते हो जो खुली बाहों से तुम्हें स्वीकार करने के लिए खड़ा है !

And it came to pass that they did fall upon my people with the sword, and with the bow, and with the arrow, and with the ax, and with all manner of weapons of war.

And it came to pass that my men were hewn down, yea, even my ten thousand who were with me, and I fell wounded in the midst; and they passed by me that they did not put an end to my life.

And when they had gone through and hewn down all my people save it were twenty and four of us, (among whom was my son Moroni) and we having survived the dead of our people, did behold on the morrow, when the Lamanites had returned unto their camps, from the top of the hill Cumorah, the ten thousand of my people who were hewn down, being led in the front by me.

And we also beheld the ten thousand of my people who were led by my son Moroni.

And behold, the ten thousand of Gidgiddonah had fallen, and he also in the midst.

And Lamah had fallen with his ten thousand; and Gilgal had fallen with his ten thousand; and Limhah had fallen with his ten thousand; and Jeneum had fallen with his ten thousand; and Cumenihah, and Moronihah, and Antionum, and Shiblom, and Shem, and Josh, had fallen with their ten thousand each.

And it came to pass that there were ten more who did fall by the sword, with their ten thousand each; yea, even all my people, save it were those twenty and four who were with me, and also a few who had escaped into the south countries, and a few who had deserted over unto the Lamanites, had fallen; and their flesh, and bones, and blood lay upon the face of the earth, being left by the hands of those who slew them to molder upon the land, and to crumble and to return to their mother earth.

And my soul was rent with anguish, because of the slain of my people, and I cried:

O ye fair ones, how could ye have departed from the ways of the Lord! O ye fair ones, how could ye have rejected that Jesus, who stood with open arms to receive you!

- 18 देखो, यदि तुमने ऐसा नहीं किया होता तो तुम नहीं मरते। परन्तु देखो, तुम मरे पड़े हो और मैं तुम्हारी क्षति के कारण विलाप कर रहा हूँ।
- 19 हे तुम निष्कपट बेटे और बेटियों, तुम पिताओं और माताओं, तुम पतियों और पत्नियों, तुम निष्कपट लोगों, कैसे हो सकता है कि तुम मरे पड़े हो !
- 20 परन्तु देखो, तुम जा चुके हो, और मेरा दुख तुम्हें वापस नहीं ला सकता है।
- 21 और वह दिन शीघ्र ही आनेवाला है जब तुम नश्वरता से अमरत्व में आ जाओगे, और ये शरीर जो भ्रष्ट होकर इस समय सड़ रहे हैं शीघ्र ही भ्रष्ट न किये जानेवाले शरीरों में परिवर्तित हो जाएंगे; और तब तुम अपने कर्मों के अनुसार न्याय पाने के लिए मसीह के न्याय-आसन के सामने खड़े होंगे; और यदि ऐसा है कि तुम धर्मी हो तो तुम अपने उन पूर्वजों के साथ आशीषित कहलाओगे जो तुमसे पहले जा चुके हैं।
- 22 काश कि तुम पर आए इस महान विनाश से पहले तुमने पश्चाताप किया होता। परन्तु देखो, तुम तो जा चुके हो, और पिता, हाँ, स्वर्ग का अनंत पिता तुम्हारी दशा को जानता है; और वह तुम्हारे साथ अपने न्याय और दया के अनुसार ही व्यवहार करेगा।

Behold, if ye had not done this, ye would not have fallen. But behold, ye are fallen, and I mourn your loss.

O ye fair sons and daughters, ye fathers and mothers, ye husbands and wives, ye fair ones, how is it that ye could have fallen!

But behold, ye are gone, and my sorrows cannot bring your return.

And the day soon cometh that your mortal must put on immortality, and these bodies which are now moldering in corruption must soon become incorruptible bodies; and then ye must stand before the judgment-seat of Christ, to be judged according to your works; and if it so be that ye are righteous, then are ye blessed with your fathers who have gone before you.

O that ye had repented before this great destruction had come upon you. But behold, ye are gone, and the Father, yea, the Eternal Father of heaven, knoweth your state; and he doeth with you according to his justice and mercy.

## मॉरमन 7

- 1 और अब, देखो, मैं उन लोगों से कुछ बोलूंगा जो इन लोगों में से शेष बचे हैं जिन्हें छोड़ दिया है, यदि ऐसा है कि परमेश्वर उन्हें मेरी बातों को समझने देगा जिससे कि वे अपने पूर्वजों की बातों को जान सकें; हां, मैं तुमसे कहता हूँ, तुम इस्राएल के घराने के बचे हुए लोगों; और ये वे शब्द हैं जिसे मैं तुमसे कहता हूँ:
- 2 तुम जानो कि तुम इस्राएल के घराने के हो ।
- 3 तुम जानो कि तुम्हें पश्चाताप करना होगा, अन्यथा तुम बचाए नहीं जा सकते ।
- 4 तुम जानो कि तुम्हें युद्ध के अपने हथियारों को त्यागना होगा, और रक्तपात में और आनंदित नहीं होना होगा, और परमेश्वर की आज्ञा के अलावा तुम्हें उन्हें फिर से धारण नहीं करना चाहिए ।
- 5 तुम जानो कि तुम्हें अपने पूर्वजों के ज्ञान के विषय में पता करना होगा, और अपने सारे पापों और बुराइयों का पश्चाताप करना होगा, और यीशु मसीह में विश्वास करना होगा कि वह परमेश्वर का पुत्र है, और यह कि वह यहूदियों द्वारा मारा गया था, और पिता के सामर्थ्य से वह फिर से जी उठा, जिसके कारण उसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की; और उसमें मृत्यु का डंक भी निगल लिया गया ।
- 6 और वह मरे हुएों पर पुनरुत्थान लाता है, जिसके कारण मनुष्यों को उसके न्याय-आसन के समक्ष खड़ा होना होगा ।
- 7 और वह संसार पर मुक्ति लाता है, जिसके कारण जो कोई भी न्याय वाले दिन उसके सामने निर्दोष पाया जाएगा, वह परमेश्वर के साथ उसके राज्य में रह जाएगा और प्रसन्नता की उस स्थिति में जिसका कोई अंत नहीं है, उसमें रहते हुए उस पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के लिए भजन के साथ-साथ निरंतर उनकी स्तुति करेगा जो कि एक ही परमेश्वर हैं ।
- 8 इसलिए पश्चाताप करो, और यीशु के नाम में बपतिस्मा लो, और मसीह के उस सुसमाचार को पकड़े रहो जिसे तुम्हारे सामने लाया जाएगा, केवल इस अभिलेख को ही नहीं परन्तु उस अभिलेख को भी जो यहूदियों से अन्य जातियों के पास आएगा, और जो अभिलेख अन्य जातियों से तुम्हारे पास आएगा ।
- 9 क्योंकि देखो, इसे इसी उद्देश्य से लिखा गया है कि तुम इस पर विश्वास कर सको; कि यदि तुम्हें विश्वास है कि तुम इस पर विश्वास करोगे; और यदि तुम्हें इस पर विश्वास है तो तुम अपने पूर्वजों से संबंधित बातों को जानोगे, और उन अदभुत कार्यों को भी जिन्हें तुम्हारे बीच में परमेश्वर के सामर्थ्य से किया गया था ।

## Mormon 7

And now, behold, I would speak somewhat unto the remnant of this people who are spared, if it so be that God may give unto them my words, that they may know of the things of their fathers; yea, I speak unto you, ye remnant of the house of Israel; and these are the words which I speak:

Know ye that ye are of the house of Israel.

Know ye that ye must come unto repentance, or ye cannot be saved.

Know ye that ye must lay down your weapons of war, and delight no more in the shedding of blood, and take them not again, save it be that God shall command you.

Know ye that ye must come to the knowledge of your fathers, and repent of all your sins and iniquities, and believe in Jesus Christ, that he is the Son of God, and that he was slain by the Jews, and by the power of the Father he hath risen again, whereby he hath gained the victory over the grave; and also in him is the sting of death swallowed up.

And he bringeth to pass the resurrection of the dead, whereby man must be raised to stand before his judgment-seat.

And he hath brought to pass the redemption of the world, whereby he that is found guiltless before him at the judgment day hath it given unto him to dwell in the presence of God in his kingdom, to sing ceaseless praises with the choirs above, unto the Father, and unto the Son, and unto the Holy Ghost, which are one God, in a state of happiness which hath no end.

Therefore repent, and be baptized in the name of Jesus, and lay hold upon the gospel of Christ, which shall be set before you, not only in this record but also in the record which shall come unto the Gentiles from the Jews, which record shall come from the Gentiles unto you.

For behold, this is written for the intent that ye may believe that; and if ye believe that ye will believe this also; and if ye believe this ye will know concerning your fathers, and also the marvelous works which were wrought by the power of God among them.



10 और तुम यह भी जानोगे कि तुम याकूब के बचे हुए वंश हो; इस-  
लिए तुम्हारी गिनती प्रथम अनुबंधित लोगों में होगी; और यदि ऐसा है  
कि तुम मसीह में विश्वास करते हो और जो आज्ञा तुम्हें दी गई है उस-  
के अनुसार, उद्धारकर्ता का अनुसरण करते हुए, पहले पानी और फिर  
आग और पवित्र आत्मा से बपतिस्मा लेते हो तो न्यायवाले दिन तुम्हा-  
रे साथ भला ही होगा । आमीन ।

And ye will also know that ye are a remnant of the  
seed of Jacob; therefore ye are numbered among the  
people of the first covenant; and if it so be that ye be-  
lieve in Christ, and are baptized, first with water,  
then with fire and with the Holy Ghost, following the  
example of our Savior, according to that which he  
hath commanded us, it shall be well with you in the  
day of judgment. Amen.

## मॉरमन 8

- 1 देखो, मैं, मोरोनी, अपने पिता मॉरमन के अभिलेख को पूरा करता हूँ। देखो, मेरे पास लिखने के लिए है परन्तु कुछ ही बातें हैं जिसे मेरे पिता ने मुझे लिखने की आज्ञा दी थी।
- 2 और अब ऐसा हुआ कि कूमोरा पर घमासान और आश्चर्यजनक युद्ध के पश्चात्, देखो, नफाई जो बचकर दक्षिणी देश की तरफ भाग गए थे उनका लमनाइयों ने तब तक पीछा किया जब तक कि वे सारे के सारे मारे न गए।
- 3 और मेरे पिता भी उनके द्वारा मारे गए, और अपने लोगों के विनाश की दुखभरी कहानी लिखने के लिए मैं अकेला रह गया था। परन्तु देखो, वे जा चुके थे, और मैंने अपने पिता की आज्ञा का पालन किया है। और वे मुझे मार डालेंगे या नहीं, मैं नहीं जानता।
- 4 इसलिए मैं लिखूंगा और अभिलेखों को जमीन में गाड़ दूंगा; और फिर मैं कहीं भी जाऊँ इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।
- 5 देखो, मेरे पिता ने इस अभिलेख को बनाया है, और इसके पश्चात् उन्होंने इसके उद्देश्य को लिखा है। और देखो, मैं भी लिखता यदि पट्टियों पर जगह होती, परन्तु नहीं है; और मेरे पास कच्ची धातु नहीं है, क्योंकि मैं अकेला हूँ। मेरे पिता युद्ध में मारे गए हैं, और मेरे सारे सगे संबंधी भी, और मेरे पास कोई मित्र नहीं है और मुझे नहीं पता कि कहां जाना है; और मुझे नहीं पता कि प्रभु कब तक चाहता है कि मैं जीवित रहूँ।
- 6 देखो, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता के आने के समय से लेकर अब तक चार सौ वर्ष बीत चुके हैं।
- 7 और देखो, लमनाइयों ने एक नगर से दूसरे नगर और एक स्थान से दूसरे स्थान तक मेरे लोगों, नफाइयों का पीछा किया, यहां तक कि तब तक जब तक कि उनका अस्तित्व मिट न गया; और उनका भारी पतन हुआ; हां, मेरे लोगों, नफाइयों का अदभुत विनाश हुआ।
- 8 और देखो, इसमें प्रभु का हाथ था जिसने यह सब किया था। और यह भी देखो, लमनाई एक दूसरे के साथ युद्ध करने लगे; और इस पूरे प्रदेश में हत्या और रक्तपात निरंतर एक चक्र के समान होता रहा; और किसी को भी युद्ध के अंत का पता नहीं चला।
- 9 और अब, देखो, उनके विषय में मैं और नहीं कहूंगा, क्योंकि उन लमनाइयों और डाकुओं को छोड़कर और कोई भी नहीं बचा जो प्रदेश में जीवित हो।

## Mormon 8

Behold I, Moroni, do finish the record of my father, Mormon. Behold, I have but few things to write, which things I have been commanded by my father.

And now it came to pass that after the great and tremendous battle at Cumorah, behold, the Nephites who had escaped into the country southward were hunted by the Lamanites, until they were all destroyed.

And my father also was killed by them, and I even remain alone to write the sad tale of the destruction of my people. But behold, they are gone, and I fulfil the commandment of my father. And whether they will slay me, I know not.

Therefore I will write and hide up the records in the earth; and whither I go it mattereth not.

Behold, my father hath made this record, and he hath written the intent thereof. And behold, I would write it also if I had room upon the plates, but I have not; and ore I have none, for I am alone. My father hath been slain in battle, and all my kinsfolk, and I have not friends nor whither to go; and how long the Lord will suffer that I may live I know not.

Behold, four hundred years have passed away since the coming of our Lord and Savior.

And behold, the Lamanites have hunted my people, the Nephites, down from city to city and from place to place, even until they are no more; and great has been their fall; yea, great and marvelous is the destruction of my people, the Nephites.

And behold, it is the hand of the Lord which hath done it. And behold also, the Lamanites are at war one with another; and the whole face of this land is one continual round of murder and bloodshed; and no one knoweth the end of the war.

And now, behold, I say no more concerning them, for there are none save it be the Lamanites and robbers that do exist upon the face of the land.

- 10 और यीशु के उन शिष्यों को छोड़कर ऐसा कोई भी नहीं है जो सच्चे परमेश्वर को जानता हो, जो कि प्रदेश में तब तक रुके रहे जब तक कि लोगों की दुष्टता इतनी न बढ़ गई कि प्रभु चाहने लगा कि वे लोगों के बीच में न रहें; और यदि वे प्रदेश में हैं तो भी कोई व्यक्ति उनके विषय में नहीं जानता है।
- 11 परन्तु देखो, मेरे पिता और मैंने उन्हें देखा है, और उन्होंने हमें उपदेश दिया है।
- 12 और जो कोई भी इस अभिलेख को प्राप्त करेगा, और जो भी इसमें त्रुटियां हैं उनके कारण इसकी निंदा नहीं करेगा, वह इनसे भी महान बातों को जानेगा। देखो, मैं मोरोनी हूँ; और जितना हो सके उतना मैं सारी बातों की जानकारी दूंगा।
- 13 देखो, मैं इन लोगों के विषय में बोलना समाप्त करता हूँ। मैं मॉरमन का पुत्र हूँ, और मेरे पिता नफी के वंशज थे।
- 14 और मैं वही हूँ जिसने प्रभु की आज्ञा के कारण इस अभिलेख को प्रभु के पास छिपाया है; और इन पट्टियों का कोई मूल्य नहीं रह जाता है। क्योंकि वह वास्तव में कहता है कि लाभ के लिए यह किसी को नहीं मिलेगा; परन्तु इसके अभिलेख अत्यंत बहुमूल्य हैं; और जो कोई भी इसे प्रकाश में लाएगा उसे प्रभु आशीषित करेगा।
- 15 क्योंकि इसे प्रकाश में लाने का सामर्थ्य किसी भी व्यक्ति के पास नहीं हो सकता है सिवाय इसके कि इसे परमेश्वर द्वारा स्वयं उसे प्रदान किया जाए; क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि ऐसा केवल उसकी महिमा के लिए, या प्राचीन और प्रभु के अनुबंधित लोग जो दूर-दूर तक तितर-बितर हो गए हैं उनके कल्याण के लिए किया जाए।
- 16 और आशीषित है वह जो इसे प्रकाश में लाएगा; क्योंकि परमेश्वर के वचन के अनुसार इसे अंधकार से प्रकाश में लाया जाएगा; हां, इसे धरती से बाहर निकाला जाएगा, और यह अंधकार से बाहर चमकेगी, और लोगों की जानकारी में आएगी; और ऐसा परमेश्वर के सामर्थ्य द्वारा होगा।
- 17 और यदि कोई त्रुटि है तो वह मनुष्य की तरफ से है। परन्तु देखो, हम किसी त्रुटि के बारे में नहीं जानते हैं; हालांकि परमेश्वर सारी बातें जानता है; इसलिए, वह जो निंदा करता है, सावधान हो जाए, कहीं ऐसा न हो कि उस पर नरकवास का खतरा बन जाए।
- 18 और वह जो कहता है: मुझे दिखाओ अन्यथा दंड दिया जाएगा—उससे सावधान हो जाओ, कदाचित वह उस बात की आज्ञा देता है जिसे प्रभु ने मना किया है।

And there are none that do know the true God save it be the disciples of Jesus, who did tarry in the land until the wickedness of the people was so great that the Lord would not suffer them to remain with the people; and whether they be upon the face of the land no man knoweth.

But behold, my father and I have seen them, and they have ministered unto us.

And whoso receiveth this record, and shall not condemn it because of the imperfections which are in it, the same shall know of greater things than these. Behold, I am Moroni; and were it possible, I would make all things known unto you.

Behold, I make an end of speaking concerning this people. I am the son of Mormon, and my father was a descendant of Nephi.

And I am the same who hideth up this record unto the Lord; the plates thereof are of no worth, because of the commandment of the Lord. For he truly saith that no one shall have them to get gain; but the record thereof is of great worth; and whoso shall bring it to light, him will the Lord bless.

For none can have power to bring it to light save it be given him of God; for God wills that it shall be done with an eye single to his glory, or the welfare of the ancient and long dispersed covenant people of the Lord.

And blessed be he that shall bring this thing to light; for it shall be brought out of darkness unto light, according to the word of God; yea, it shall be brought out of the earth, and it shall shine forth out of darkness, and come unto the knowledge of the people; and it shall be done by the power of God.

And if there be faults they be the faults of a man. But behold, we know no fault; nevertheless God knoweth all things; therefore, he that condemneth, let him be aware lest he shall be in danger of hell fire.

And he that saith: Show unto me, or ye shall be smitten—let him beware lest he commandeth that which is forbidden of the Lord.

- 19 क्योंकि देखो, वह जो उतावलेपन से न्याय करता है उसका न्याय भी उतावलेपन से ही किया जाएगा; क्योंकि उसकी मजदूरी उसके कार्य के अनुसार ही होगी; इसलिए, वह जो दंड देता है उसे प्रभु से दंड ही मिलेगा ।
- 20 देखो धर्मशास्त्र क्या कहता है—मनुष्य न तो दंड देगा, न ही वह न्याय करेगा; क्योंकि प्रभु कहता है कि न्याय मेरा है, और प्रतिशोध भी मेरा है, और मैं ही भुगतान करूंगा ।
- 21 और वह जो प्रभु के कार्य के विरुद्ध, और प्रभु के उन अनुबंधित लोगों के विरुद्ध रोष और विवाद व्यक्त करता है जो इस्राएल के घराने के हैं, और कहता है: हम प्रभु के कार्य को नष्ट कर देंगे, और प्रभु अपने उस अनुबंध को याद नहीं रखेगा जिसे उसने इस्राएल के घराने से किया था—वही काट कर आग में डाले जाने के खतरे में होगा ।
- 22 क्योंकि प्रभु के अनंत उद्देश्य तब तक चलते रहेंगे जब तक कि उसकी सारी प्रतिज्ञाएं पूरी नहीं हो जातीं ।
- 23 यशायाह की भविष्यवाणियों को खोजो । देखो, मैं उन्हें लिख नहीं सकता । हां, देखो मैं तुमसे कहता हूँ कि वे संत जो मुझसे पहले जा चुके हैं, जिन्होंने इस धरती पर अधिकार किया है, पुकारेंगे, हां, यहां तक कि वे मिट्टी से प्रभु को पुकारेंगे; और क्योंकि प्रभु जीवित है वह उस अनुबंध को याद रखेगा जिसे उसने उनसे किया था ।
- 24 और वह उनकी प्रार्थनाओं को जानता है, कि ये उनके भाइयों के लिए की गई हैं । और वह उनके विश्वास को जानता है, क्योंकि उसके नाम में वे पर्वतों को हटा सकते हैं; और उसके नाम में वे धरती हिला सकते हैं; और उसके वचन के सामर्थ्य द्वारा वे धरती पर बंदीगृहों को गिरा सकते हैं; हां, यहां तक कि उसके वचन के सामर्थ्य के कारण प्रचण्ड भट्टी भी उन्हें नुकसान नहीं पहुंचा सकती है, न ही जंगली पशु और न ही जहरीले सांप ।
- 25 और देखो, उनकी प्रार्थनाएं उसके लिए भी हैं जिससे प्रभु इन बातों को प्रकट करेगा ।
- 26 और किसी को कहने की आवश्यकता नहीं है कि वह बाहर नहीं आएगी, क्योंकि इसके विषय में प्रभु ने कहा है; जो प्रभु के हाथों द्वारा जमीन से बाहर आएगी, और कोई इसे रोक नहीं सकता है; और वह उस समय बाहर आएगी जब कहा जाएगा कि अब चमत्कार नहीं होते हैं; और यह उसी प्रकार बाहर आएगी जैसे कि कोई मरा व्यक्ति बोलने लगा हो ।

For behold, the same that judgeth rashly shall be judged rashly again; for according to his works shall his wages be; therefore, he that smiteth shall be smitten again, of the Lord.

Behold what the scripture says—man shall not smite, neither shall he judge; for judgment is mine, saith the Lord, and vengeance is mine also, and I will repay.

And he that shall breathe out wrath and strifes against the work of the Lord, and against the covenant people of the Lord who are the house of Israel, and shall say: We will destroy the work of the Lord, and the Lord will not remember his covenant which he hath made unto the house of Israel—the same is in danger to be hewn down and cast into the fire;

For the eternal purposes of the Lord shall roll on, until all his promises shall be fulfilled.

Search the prophecies of Isaiah. Behold, I cannot write them. Yea, behold I say unto you, that those saints who have gone before me, who have possessed this land, shall cry, yea, even from the dust will they cry unto the Lord; and as the Lord liveth he will remember the covenant which he hath made with them.

And he knoweth their prayers, that they were in behalf of their brethren. And he knoweth their faith, for in his name could they remove mountains; and in his name could they cause the earth to shake; and by the power of his word did they cause prisons to tumble to the earth; yea, even the fiery furnace could not harm them, neither wild beasts nor poisonous serpents, because of the power of his word.

And behold, their prayers were also in behalf of him that the Lord should suffer to bring these things forth.

And no one need say they shall not come, for they surely shall, for the Lord hath spoken it; for out of the earth shall they come, by the hand of the Lord, and none can stay it; and it shall come in a day when it shall be said that miracles are done away; and it shall come even as if one should speak from the dead.

27 और यह उस समय बाहर आएगी जब गुप्त गठबंधन और अंधकार में किये जानेवाले कार्यों के कारण संतों के लहू प्रभु को पुकारेंगे ।

28 हां, यह उस समय आएगी जब परमेश्वर के सामर्थ्य को अस्वीकार किया जाएगा, और गिरजे दूषित हो जाएंगे और उनके हृदयों के अहंकार से चलाए जाएंगे; हां, उस समय भी जब गिरजे के मार्गदर्शक और शिक्षक अपने हृदयों के अहंकार में फूल जाएंगे, यहां तक कि वे उनसे भी ईर्ष्या करेंगे जो गिरजे के सदस्य हैं ।

29 हां, यह उस समय आएगी जब अग्नि, और आंधी-तूफान के विषय में बातें सुनाई देंगी, और विदेशी प्रदेशों में धूएं के बादल उठेंगे;

30 और जब युद्ध, युद्धों की अफवाहें, और विभिन्न स्थानों पर भूकंपों के विषय में बातें सुनाई देंगी ।

31 हां, यह तब बाहर आएगी जब धरती पर बहुत अशुद्धता होगी; हत्याएं, और लूटपाट, और झूठ, और छलावे, और वेश्यावृत्ति, और हर प्रकार के घृणित कार्य किये जाएंगे; तब जब बहुत से लोग होंगे जो कहेंगे, यह करो, या वह करो, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है क्योंकि प्रभु अंतिम दिनों में संभाल लेगा । परन्तु इस प्रकार के लोगों पर हाय क्योंकि वे कड़वाहट और अधर्म के बंधनों के दुष्प्रभाव में होंगे ।

32 हां, यह तब बाहर आएगी जब उन गिरजों का निर्माण हो चुका होगा जो कहेंगे: मेरे पास आओ, और तुम्हारे धन के कारण तुम्हारे पाप क्षमा किये जाएंगे ।

33 हे तुम दुष्ट और पथभ्रष्ट और हठी लोग, तुमने अपने लाभ के लिए गिरजों का निर्माण क्यों किया है ? क्यों तुमने परमेश्वर के पवित्र वचन को बदल दिया है, कि अपनी आत्माओं पर नरकदंड लाओ ? देखो, परमेश्वर के प्रकटीकरणों की तरफ देखो; क्योंकि देखो, समय तब आएगा जब ये सारी बातें पूरी होंगी ।

34 देखो, प्रभु ने मुझे उस से संबंधित महान और अदभुत चीजें दिखाई हैं जो शीघ्र ही होनेवाली हैं, उस दिन जब ये बातें तुम्हारे बीच में आएंगी ।

35 देखो, मैं तुमसे ऐसे बातें कर रहा हूँ मानो तुम उपस्थित थे, और इस समय तुम नहीं हो । परन्तु देखो, यीशु मसीह ने मुझे दिखाया है, और मैं तुम्हारे काम जानता हूँ ।

And it shall come in a day when the blood of saints shall cry unto the Lord, because of secret combinations and the works of darkness.

Yea, it shall come in a day when the power of God shall be denied, and churches become defiled and be lifted up in the pride of their hearts; yea, even in a day when leaders of churches and teachers shall rise in the pride of their hearts, even to the envying of them who belong to their churches.

Yea, it shall come in a day when there shall be heard of fires, and tempests, and vapors of smoke in foreign lands;

And there shall also be heard of wars, rumors of wars, and earthquakes in divers places.

Yea, it shall come in a day when there shall be great pollutions upon the face of the earth; there shall be murders, and robbing, and lying, and deceivings, and whoredoms, and all manner of abominations; when there shall be many who will say, Do this, or do that, and it mattereth not, for the Lord will uphold such at the last day. But wo unto such, for they are in the gall of bitterness and in the bonds of iniquity.

Yea, it shall come in a day when there shall be churches built up that shall say: Come unto me, and for your money you shall be forgiven of your sins.

O ye wicked and perverse and stiffnecked people, why have ye built up churches unto yourselves to get gain? Why have ye transfigured the holy word of God, that ye might bring damnation upon your souls? Behold, look ye unto the revelations of God; for behold, the time cometh at that day when all these things must be fulfilled.

Behold, the Lord hath shown unto me great and marvelous things concerning that which must shortly come, at that day when these things shall come forth among you.

Behold, I speak unto you as if ye were present, and yet ye are not. But behold, Jesus Christ hath shown you unto me, and I know your doing.

- 36 और मैं जानता हूँ कि तुम अपने हृदयों के अहंकार के अनुसार आचरण करते हो; और कुछ लोगों को छोड़कर ऐसा कोई नहीं है जो अच्छे वस्त्र धारण करने, ईर्ष्या, शत्रुता, और दुर्भावना, और उत्पीड़न, और हर प्रकार की बुराइयों के कारण अपने हृदय के अहंकार में फूला हुआ नहीं है; और तुम्हारे गिरजे भी, हां हर कोई अपने हृदय के अहंकार के कारण भ्रष्ट हो गया है ।
- 37 क्योंकि देखो, गरीब, और जरूरतमंद, और बीमार और सताए हुए लोगों से अधिक तुम धन से, और अपनी वस्तुओं से, और अपने अच्छे वस्त्रों से, और अपने गिरजों के श्रृंगार से प्रेम करते हो ।
- 38 हे तुम भ्रष्ट, तुम ढोंगी, तुम शिक्षक लोगों जो अपने आपको उन चीजों के लिए बेचते हो जो नष्ट हो जाएंगे, क्यों तुमने परमेश्वर के पवित्र गिरजे को भ्रष्ट कर दिया है ? अपने आप पर मसीह के नाम को ग्रहण करने से तुम्हें लज्जा क्यों आती है ? तुम क्यों नहीं समझते हो कि संसार के गुणगान के कारण—कभी भी न खत्म होनेवाली विपदा से एक अंतहीन प्रसन्नता का मोल अत्याधिक है ?
- 39 क्यों तुम अपने आपको उन चीजों से सुशोभित करते हो जिसका जीवन नहीं है, और इसके बावजूद तुम भूखे, जरूरतमंद, और वस्त्रहीन, और बीमार और सताए हुए लोगों को अपने बगल से निकल जाने देते हो और उन पर तुम्हारा ध्यान भी नहीं जाता है ?
- 40 हां, क्यों तुम अपने लाभ के लिए गुप्त गठबंधन करते हो, और ऐसा होने देते हो कि विधवाएं प्रभु के सामने विलाप करें, और अनाथ लोग भी प्रभु के सामने विलाप करें, और तुम लोगों से प्रतिशोध के लिए उन लोगों के पूर्वजों और पतियों का लहू जमीन से प्रभु को पुकारे ?
- 41 देखो, प्रतिशोध की तलवार तुम पर लटक रही है; समय शीघ्र ही आएगा जब वह संतों के लहू का प्रतिशोध तुमसे लेगा क्योंकि वह उनकी पुकार को और नहीं सह सकता ।

And I know that ye do walk in the pride of your hearts; and there are none save a few only who do not lift themselves up in the pride of their hearts, unto the wearing of very fine apparel, unto envying, and strifes, and malice, and persecutions, and all manner of iniquities; and your churches, yea, even every one, have become polluted because of the pride of your hearts.

For behold, ye do love money, and your substance, and your fine apparel, and the adorning of your churches, more than ye love the poor and the needy, the sick and the afflicted.

O ye pollutions, ye hypocrites, ye teachers, who sell yourselves for that which will canker, why have ye polluted the holy church of God? Why are ye ashamed to take upon you the name of Christ? Why do ye not think that greater is the value of an endless happiness than that misery which never dies—because of the praise of the world?

Why do ye adorn yourselves with that which hath no life, and yet suffer the hungry, and the needy, and the naked, and the sick and the afflicted to pass by you, and notice them not?

Yea, why do ye build up your secret abominations to get gain, and cause that widows should mourn before the Lord, and also orphans to mourn before the Lord, and also the blood of their fathers and their husbands to cry unto the Lord from the ground, for vengeance upon your heads?

Behold, the sword of vengeance hangeth over you; and the time soon cometh that he avengeth the blood of the saints upon you, for he will not suffer their cries any longer.

## मॉरमन 9

- 1 और अब, मैं उन लोगों के विषय में भी बोलूंगा जो मसीह में विश्वास नहीं करते हैं ।
- 2 देखो, क्या तुम अपने मुसीबत के दिन में विश्वास करोगे—देखो, जब प्रभु आएगा, हां, उस महान दिन में भी धरती कागज के एक टुकड़े के समान लपेटी जाएगी, और तत्व उत्साही गर्मी से पिघल जाएंगे, हां, उस महान दिन तुम्हें परमेश्वर के मेमने के सामने लाया जाएगा—तब क्या तुम कहोगे कि कोई परमेश्वर नहीं है ?
- 3 तब तुम मसीह को अस्वीकार नहीं कर पाओगे, अन्यथा क्या तुम परमेश्वर के मेमने को देख सकते हो ? क्या तुम समझते हो कि तुम अपने अपराध बोध के ज्ञान में रहते हुए उसके साथ रह सकते हो ? क्या तुम समझते हो कि तुम उस पवित्र अस्तित्व के साथ प्रसन्न रह सकते हो, जब तुम्हारी आत्मा उस अपराध बोध के ज्ञान से दुखी हो कि तुमने सदा ही उसके नियमों का अपमान किया है ?
- 4 देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि नरक में दण्डित आत्माओं के साथ रहने की बजाय, उसके सामने अपनी भ्रष्टता की ज्ञान के तहत रहते हुए, एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर के साथ रहने में तुम्हें अधिक तकलीफ होगी ।
- 5 क्योंकि देखो, जब परमेश्वर के सामने तुम्हारी नग्नता दिखाने के लिए, और परमेश्वर की महिमा, और यीशु मसीह की पवित्रता भी दिखाने के लिए तुम्हें लाया जाएगा, तो तुम पर ज्वाला की वह अग्नि प्रज्वलित की जाएगी जिसे बुझाया नहीं जा सकता है ।
- 6 तब हे तुम अविश्वासी, तुम प्रभु की ओर फिरो; यीशु के नाम में पिता को बलपूर्वक पुकारो, जिससे कि महान और अंतिम दिन में, मेमने के लहू द्वारा स्वच्छ किये जाने के कारण शायद तुम निर्दोष, शुद्ध, निष्कपट, और निष्कलंक स्थापित हो सको ।
- 7 और फिर से मैं उन लोगों से कहता हूँ जो परमेश्वर के प्रकटीकरणों को अस्वीकार करते हैं, और कहते हैं कि वे हो चुके हैं, कि अब न तो कोई प्रकटीकरण मिलते हैं, न ही भविष्यवाणियां होती हैं, न ही उपहार और चंगाई प्राप्त होती हैं, न ही अन्य भाषाएं बोली जाती हैं, और न ही भाषाओं के अनुवाद होते हैं ।
- 8 देखो मैं तुमसे कहता हूँ, वह जो इन बातों को अस्वीकार करता है उसे मसीह का सुसमाचार नहीं पता है; हां, उसने धर्मशास्त्रों को नहीं पढ़ा है; यदि पढ़ा है तो वह उन्हें समझ नहीं पाया है ।

## Mormon 9

And now, I speak also concerning those who do not believe in Christ.

Behold, will ye believe in the day of your visitation—behold, when the Lord shall come, yea, even that great day when the earth shall be rolled together as a scroll, and the elements shall melt with fervent heat, yea, in that great day when ye shall be brought to stand before the Lamb of God—then will ye say that there is no God?

Then will ye longer deny the Christ, or can ye behold the Lamb of God? Do ye suppose that ye shall dwell with him under a consciousness of your guilt? Do ye suppose that ye could be happy to dwell with that holy Being, when your souls are racked with a consciousness of guilt that ye have ever abused his laws?

Behold, I say unto you that ye would be more miserable to dwell with a holy and just God, under a consciousness of your filthiness before him, than ye would to dwell with the damned souls in hell.

For behold, when ye shall be brought to see your nakedness before God, and also the glory of God, and the holiness of Jesus Christ, it will kindle a flame of unquenchable fire upon you.

O then ye unbelieving, turn ye unto the Lord; cry mightily unto the Father in the name of Jesus, that perhaps ye may be found spotless, pure, fair, and white, having been cleansed by the blood of the Lamb, at that great and last day.

And again I speak unto you who deny the revelations of God, and say that they are done away, that there are no revelations, nor prophecies, nor gifts, nor healing, nor speaking with tongues, and the interpretation of tongues;

Behold I say unto you, he that denieth these things knoweth not the gospel of Christ; yea, he has not read the scriptures; if so, he does not understand them.

- 9 क्योंकि क्या हम नहीं पढ़ते हैं कि परमेश्वर जो कल था, वही आज है, और सदा वैसे ही रहेगा, और उसमें न तो कोई परिवर्तनशीलता है न ही बदलाव का कोई आसार है ?
- 10 और अब, यदि तुमने किसी ऐसे परमेश्वर की कल्पना की है जो परिवर्तनशील है, और जिसमें बदलाव के आसार भी दिखाई देते हैं, तो तुमने उस परमेश्वर की कल्पना की है जो चमत्कारों का परमेश्वर नहीं है ।
- 11 परन्तु देखो, मैं तुम्हें चमत्कारों का परमेश्वर दिखाऊंगा, अर्थात् इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर; और यह वही परमेश्वर है जिसने स्वर्गों और पृथ्वी, और उनमें रहने वाली सारी चीजों को बनाया है ।
- 12 देखो, उसने आदम को बनाया, और आदम के द्वारा मनुष्य का पतन हुआ । और मनुष्य के पतन के कारण यीशु मसीह आया, यहां तक कि पिता और पुत्र भी आए; और यीशु मसीह के कारण मनुष्य की मुक्ति आई ।
- 13 और मनुष्य के पुनरुत्थान के कारण, जो कि यीशु मसीह के द्वारा आया, वे फिर से प्रभु की उपस्थिति में लाए गए; हां, यह वह स्थिति है जिसमें सारे मनुष्यों को मुक्ति मिली क्योंकि मसीह की मृत्यु पुनरुत्थान लाता है, जो कि एक अंतहीन नींद से मुक्ति प्रदान करता है, वह नींद जिससे सारे लोग तब परमेश्वर के सामर्थ्य द्वारा जगाए जाएंगे जब तुरही बजेगी; और छोटे और बड़े, सारे लोग आएंगे, और हर कोई उसकी अदालत में खड़ा रहेगा, उस मृत्यु के इस अनंत बंधन से मुक्त होने या खोले जाने के लिए जो कि एक लौकिक मृत्यु है ।
- 14 और तब उन पर पवित्र अस्तित्व का न्याय आएगा; और तब वह समय आएगा जब जो भ्रष्ट है वह भ्रष्ट ही रहेगा; और वह जो धर्मी है वह धर्मी ही रहेगा; वह जो प्रसन्न है वह प्रसन्न ही रहेगा; और वह जो अप्रसन्न है वह अप्रसन्न ही रहेगा ।
- 15 और अब, हे तुम सारे लोगों जिन्होंने एक ऐसे परमेश्वर की कल्पना की है जो चमत्कार नहीं कर सकता है, मैं तुमसे पूछना चाहूंगा कि क्या ये सारी बातें हो चुकी हैं जिनके विषय में मैंने बताया है? क्या अंत आ चुका है ? देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि नहीं; और परमेश्वर ने चमत्कारों वाला परमेश्वर होना नहीं त्यागा है ।
- 16 देखो, क्या परमेश्वर उन बातों को नहीं लाया है जो हमारी नजर में चमत्कारिक बातें हैं ? हां, और कौन है जो परमेश्वर के कार्यों को समझ सकता है ?

For do we not read that God is the same yesterday, today, and forever, and in him there is no variable-ness neither shadow of changing?

And now, if ye have imagined up unto yourselves a god who doth vary, and in whom there is shadow of changing, then have ye imagined up unto yourselves a god who is not a God of miracles.

But behold, I will show unto you a God of miracles, even the God of Abraham, and the God of Isaac, and the God of Jacob; and it is that same God who created the heavens and the earth, and all things that in them are.

Behold, he created Adam, and by Adam came the fall of man. And because of the fall of man came Jesus Christ, even the Father and the Son; and because of Jesus Christ came the redemption of man.

And because of the redemption of man, which came by Jesus Christ, they are brought back into the presence of the Lord; yea, this is wherein all men are redeemed, because the death of Christ bringeth to pass the resurrection, which bringeth to pass a redemption from an endless sleep, from which sleep all men shall be awakened by the power of God when the trump shall sound; and they shall come forth, both small and great, and all shall stand before his bar, being redeemed and loosed from this eternal band of death, which death is a temporal death.

And then cometh the judgment of the Holy One upon them; and then cometh the time that he that is filthy shall be filthy still; and he that is righteous shall be righteous still; he that is happy shall be happy still; and he that is unhappy shall be unhappy still.

And now, O all ye that have imagined up unto yourselves a god who can do no miracles, I would ask of you, have all these things passed, of which I have spoken? Has the end come yet? Behold I say unto you, Nay; and God has not ceased to be a God of miracles.

Behold, are not the things that God hath wrought marvelous in our eyes? Yea, and who can comprehend the marvelous works of God?



17 कौन कहेगा कि यह एक चमत्कार नहीं था कि उसके वचन द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी की रचना हुई; और उसके वचन के सामर्थ्य द्वारा पृथ्वी की धूल से पुरुष की रचना हुई; और उसके वचन के समार्थ्य द्वारा ही चमत्कार किये गए ?

18 और कौन कहेगा कि यीशु मसीह ने कई शक्तिशाली चमत्कार नहीं किये ? और प्रेरितों के हाथों द्वारा भी कई शक्तिशाली चमत्कार किये गए ।

19 और यदि तब चमत्कार किये गए थे, तो क्यों अब भी एक अपरिवर्तनीय अस्तित्व होते हुए भी परमेश्वर ने चमत्कार करनेवाला परमेश्वर होना त्याग दिया है ? और देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि वह परिवर्तित नहीं हुआ है; यदि ऐसा होता तो वह परमेश्वर होना त्याग देता; और उसने परमेश्वर होना नहीं त्यागा है, और चमत्कार करनेवाला एक परमेश्वर है ।

20 और मानव संतानों के बीच में उसने चमत्कार करना क्यों बंद कर दिया है, क्योंकि वे अविश्वास में क्षीण होते गए, और सही मार्ग से भटक गए हैं, और उस परमेश्वर को नहीं जानते हैं जिस पर उन्हें विश्वास करना चाहिए ।

21 देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई भी बिना संदेह के मसीह में विश्वास करता है, वह मसीह के नाम में पिता से जो भी मांगेगा उसे दिया जाएगा; और यह प्रतिज्ञा सभी के लिए है, पृथ्वी की छोर तक के लोगों के लिए भी ।

22 क्योंकि देखो, इस प्रकार परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने अपने उन शिष्यों से कहा है जिन्हें रुकना था, हां, और भीड़ की सुनवाई के समय अपने अन्य सारे शिष्यों से भी: पूरे संसार में जाओ, और हर प्राणी को सुसमाचार सुनाओ ।

23 और वह जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा वही बचाया जाएगा, परन्तु वह जो विश्वास नहीं करेगा वह श्रापित होगा ।

24 और ये चिन्ह उन लोगों के साथ होंगे जो विश्वास करते हैं—मेरे नाम में वे बुरी आत्माओं को निकालेंगे; वे नई भाषाएं बोलेंगे; वे सांपों को उठा लेंगे; और यदि वे किसी जहरीली चीज का सेवन करेंगे तो उन्हें कोई हानि न होगी; वे बीमारों के ऊपर अपना हाथ रखेंगे और वे स्वस्थ हो जाएंगे ।

25 और जो भी बिना संदेह के मेरे नाम में विश्वास करेगा उस पर मैं पृथ्वी के छोर तक अपने सारे शब्दों को प्रमाणित करूंगा ।

Who shall say that it was not a miracle that by his word the heaven and the earth should be; and by the power of his word man was created of the dust of the earth; and by the power of his word have miracles been wrought?

And who shall say that Jesus Christ did not do many mighty miracles? And there were many mighty miracles wrought by the hands of the apostles.

And if there were miracles wrought then, why has God ceased to be a God of miracles and yet be an unchangeable Being? And behold, I say unto you he changeth not; if so he would cease to be God; and he ceaseth not to be God, and is a God of miracles.

And the reason why he ceaseth to do miracles among the children of men is because that they dwindle in unbelief, and depart from the right way, and know not the God in whom they should trust.

Behold, I say unto you that whoso believeth in Christ, doubting nothing, whatsoever he shall ask the Father in the name of Christ it shall be granted him; and this promise is unto all, even unto the ends of the earth.

For behold, thus said Jesus Christ, the Son of God, unto his disciples who should tarry, yea, and also to all his disciples, in the hearing of the multitude: Go ye into all the world, and preach the gospel to every creature;

And he that believeth and is baptized shall be saved, but he that believeth not shall be damned;

And these signs shall follow them that believe—in my name shall they cast out devils; they shall speak with new tongues; they shall take up serpents; and if they drink any deadly thing it shall not hurt them; they shall lay hands on the sick and they shall recover;

And whosoever shall believe in my name, doubting nothing, unto him will I confirm all my words, even unto the ends of the earth.

- 26 और अब, देखो, प्रभु के कार्यों के विरुद्ध कौन खड़ा हो सकता है ? उसके कथनों को कौन नकार सकता है ? प्रभु के शक्तिशाली सामर्थ्य के आगे कौन खड़ा होगा ? प्रभु के कार्यों का कौन तिरस्कार करेगा ? मसीह की संतानों का कौन तिरस्कार करेगा ? देखो, तुम सारे जो प्रभु के कार्यों का तिरस्कार करते हो, तुम पर संदेह किया जाएगा और तुम नष्ट हो जाओगे ।
- 27 हे तब तिरस्कार मत करो, और संदेह के घेरे में न पड़ो, परन्तु प्रभु के वचनों पर ध्यान दो, और जो कुछ भी वह आवश्यकता पड़ने पर तुम्हें देगा उसे यीशु के नाम में पिता से मांगो । संदेह मत करो, परन्तु विश्वासी बने रहो, और प्राचीन समय की तरह प्रभु के पास अपने पूरे हृदय से आना आरंभ करो, और उसके सामने भय और कंपकंपाहट के साथ अपने स्वयं के उद्धार के लिए कार्य करो ।
- 28 अपनी परीक्षा के दिनों में समझदार बनो; अपने भीतर से सारी अशुद्धता को निकाल दो; ऐसे मत मांगो जिससे कि तुम अपने लोभ में नष्ट हो सको, परन्तु अटल दृढ़ता से मांगो जिससे कि तुम किसी प्रलोभन में न पड़ोगे, परन्तु जिससे कि तुम सच्चे और जीवित परमेश्वर की सेवा करोगे ।
- 29 देखो कि तुम अयोग्यता से बपतिस्मा न लो; देखो कि अयोग्यता से मसीह का प्रभुभोजन न लो; परन्तु देखो कि सारी चीजें योग्यतापूर्वक करो, और उसे यीशु मसीह, जीवित परमेश्वर के पुत्र के नाम में करो, और यदि तुम ऐसा करते हो और अंत तक सहनशील बने रहते हो, तो तुम्हें किसी भी तरह से बाहर नहीं फेंका जाएगा ।
- 30 देखो, मैं तुमसे वैसे ही बोल रहा हूँ जैसे मैं मृत होकर बोलता; क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम मेरी बातों को सुनोगे ।
- 31 मेरी त्रुटियों के कारण मेरी निंदा मत करना, न ही मेरे पिता की त्रुटियों, और न ही मुझसे पहले जिन्होंने लिखा है उनकी त्रुटियों के कारण उनकी निंदा मत करना; परन्तु इसकी बजाय परमेश्वर को धन्यवाद देना कि उसने हमारी त्रुटियों को तुम पर प्रकट किया है, जिससे कि तुम हमारी तुलना में अधिक समझदार हो सको ।
- 32 और अब, देखो, हमने इस अभिलेख को अपनी समझ के अनुसार उस लिपि में लिखा है जो कि हम लोगों में मिश्रियों की संशोधित लिपि मानी जाती है, जो हमें मिली है और हमने अपनी भाषा के अनुसार उसमें सुधार किया है ।
- 33 और यदि हमारी पट्टियां पर्याप्त मात्रा में बड़ी होतीं तो हमने इब्रानी लिपि में लिखा होता; परन्तु इब्रानी लिपि में सुधार हमारे द्वारा ही हुआ है; और यदि हमने इब्रानी में लिखा होता तो देखो, तुम्हें हमारे अभिलेख में त्रुटियां नहीं मिलतीं ।

And now, behold, who can stand against the works of the Lord? Who can deny his sayings? Who will rise up against the almighty power of the Lord? Who will despise the works of the Lord? Who will despise the children of Christ? Behold, all ye who are despisers of the works of the Lord, for ye shall wonder and perish.

O then despise not, and wonder not, but hearken unto the words of the Lord, and ask the Father in the name of Jesus for what things soever ye shall stand in need. Doubt not, but be believing, and begin as in times of old, and come unto the Lord with all your heart, and work out your own salvation with fear and trembling before him.

Be wise in the days of your probation; strip yourselves of all uncleanness; ask not, that ye may consume it on your lusts, but ask with a firmness unshaken, that ye will yield to no temptation, but that ye will serve the true and living God.

See that ye are not baptized unworthily; see that ye partake not of the sacrament of Christ unworthily; but see that ye do all things in worthiness, and do it in the name of Jesus Christ, the Son of the living God; and if ye do this, and endure to the end, ye will in nowise be cast out.

Behold, I speak unto you as though I spake from the dead; for I know that ye shall have my words.

Condemn me not because of mine imperfection, neither my father, because of his imperfection, neither them who have written before him; but rather give thanks unto God that he hath made manifest unto you our imperfections, that ye may learn to be more wise than we have been.

And now, behold, we have written this record according to our knowledge, in the characters which are called among us the reformed Egyptian, being handed down and altered by us, according to our manner of speech.

And if our plates had been sufficiently large we should have written in Hebrew; but the Hebrew hath been altered by us also; and if we could have written in Hebrew, behold, ye would have had no imperfection in our record.

- 34 परन्तु प्रभु उन बातों को जानता है जिन्हें हमने लिखा है, और यह भी कि अन्य लोग हमारी भाषा नहीं जानते हैं; और क्योंकि अन्य लोग हमारी भाषा नहीं जानते हैं, इसलिए इसके पश्चात अनुवाद के लिए उसने साधन बनाया ।
- 35 और इन बातों को लिखा गया है ताकि हम अपने उन भाइयों के लहू में डूबे अपने वस्त्रों से छुटकारा पा सकें जो अविश्वास में क्षीण हैं ।
- 36 और देखो, हमारे भाइयों से संबंधित यही बातें हैं जिसकी हमने इच्छा की है, हां, यहां तक कि मसीह के ज्ञान के प्रति उनकी पुनःस्थापना की भी इच्छा की है, जो कि उन सारे संतों की प्रार्थनाओं के अनुसार है जो प्रदेश में रह चुके हैं ।
- 37 और प्रभु यीशु मसीह ऐसा होने दे कि उन्हें उनके विश्वास के अनुसार उत्तर प्राप्त हो सके; और पिता परमेश्वर उनके साथ बनाए गए उस अनुबंध को याद रखे जिसे उसने इस्राएल के घराने के साथ बनाया था; और यीशु मसीह के नाम में विश्वास के द्वारा वह उन्हें सदा के लिए आशीषित करे । आमीन ।

But the Lord knoweth the things which we have written, and also that none other people knoweth our language; and because that none other people knoweth our language, therefore he hath prepared means for the interpretation thereof.

And these things are written that we may rid our garments of the blood of our brethren, who have dwindled in unbelief.

And behold, these things which we have desired concerning our brethren, yea, even their restoration to the knowledge of Christ, are according to the prayers of all the saints who have dwelt in the land.

And may the Lord Jesus Christ grant that their prayers may be answered according to their faith; and may God the Father remember the covenant which he hath made with the house of Israel; and may he bless them forever, through faith on the name of Jesus Christ. Amen.

# ईथर की पुस्तक

राजा मुसायाह के समय में लिम्ही के लोगों द्वारा पाए गए, और चौबीस पट्टियों से लिए गए येरेदाइयों का अभिलेख ।

## ईथर 1

- 1 और अब मैं, मोरोनी, उन प्राचीन निवासियों का विवरण लिखने जा रहा हूँ जो इस उत्तरी देश में प्रभु के हाथों द्वारा नष्ट किये गए थे ।
- 2 और मैं उन चौबीस पट्टियों से अपना अभिलेख लेता हूँ जिसे लिम्ही के लोगों ने पाया था, जो ईथर की पुस्तक कहलाती है ।
- 3 और जैसा कि मुझे लगता है कि इस अभिलेख का पहला भाग, जो कि संसार की सृष्टि के विषय में बताता है, और आदम के विषय में भी, और उस विशाल मीनार के समय के एक विवरण को और उसके विषय में बताता है जो तब तक मानव संतानों के बीच हो चुका था, जो कि यहूदियों में था—
- 4 इसलिए मैं उन बातों को नहीं लिख रहा हूँ जो आदम के समय से लेकर उस समय तक हुई थीं; परन्तु वे पट्टियों पर थीं; और जो कोई भी उन्हें ढूँढ निकालता है, उसी के पास सामर्थ्य होगा ताकि वह पूरा विवरण प्राप्त कर सके ।
- 5 परन्तु देखो, मैं पूरा विवरण नहीं देता हूँ, परन्तु मीनार के नीचे से लेकर जब तक कि वे नष्ट नहीं हुए तब तक के विवरण का एक भाग देता हूँ ।
- 6 और इसी जानकारी के लिए मैं विवरण दे रहा हूँ । जिसने इस अभिलेख को लिखा था, वह ईथर था, और वह कोरियन्टर का एक वंशज था ।
- 7 कोरियन्टर मोरोन का पुत्र था ।
- 8 और मोरोन इथेम का पुत्र था ।
- 9 और इथेम अहा का पुत्र था ।
- 10 और अहा शेत का पुत्र था ।
- 11 और शेत शिबलोन का पुत्र था ।
- 12 और शिबलोन कोम का पुत्र था ।
- 13 और कोम कोरियन्टम का पुत्र था ।
- 14 और कोरियन्टम अमनीगदा का पुत्र था ।
- 15 और अमनीगदा हारून का पुत्र था ।

# The Book of Ether

*The record of the Jaredites, taken from the twenty-four plates found by the people of Limbi in the days of King Mosiah.*

## Ether 1

And now I, Moroni, proceed to give an account of those ancient inhabitants who were destroyed by the hand of the Lord upon the face of this north country.

And I take mine account from the twenty and four plates which were found by the people of Limbi, which is called the Book of Ether.

And as I suppose that the first part of this record, which speaks concerning the creation of the world, and also of Adam, and an account from that time even to the great tower, and whatsoever things transpired among the children of men until that time, is had among the Jews—

Therefore I do not write those things which transpired from the days of Adam until that time; but they are had upon the plates; and whoso findeth them, the same will have power that he may get the full account.

But behold, I give not the full account, but a part of the account I give, from the tower down until they were destroyed.

And on this wise do I give the account. He that wrote this record was Ether, and he was a descendant of Coriantor.

Coriantor was the son of Moron.

And Moron was the son of Ethem.

And Ethem was the son of Ahah.

And Ahah was the son of Seth.

And Seth was the son of Shiblón.

And Shiblón was the son of Com.

And Com was the son of Coriantum.

And Coriantum was the son of Amnigaddah.

And Amnigaddah was the son of Aaron.

- 16 और हारून उस हेथ का एक वंशज था, जो कि हियार्थम का पुत्र था ।  
 17 और हियार्थम लिब का पुत्र था ।  
 18 और लिब कीश का पुत्र था ।  
 19 और कीश कोरम का पुत्र था ।  
 20 और कोरम लेवी का पुत्र था ।  
 21 और लेवी किम का पुत्र था ।  
 22 और किम मोरियन्टन का पुत्र था ।  
 23 और मोरियन्टम रिप्लाकिश का एक वंशज था ।  
 24 और रिप्लाकिश शेज का पुत्र था ।  
 25 और शेज हेथ का पुत्र था ।  
 26 और हेथ कोम का पुत्र था ।  
 27 और कोम कोरियन्टम का पुत्र था ।  
 28 और कोरियन्टम ईमर का पुत्र था ।  
 29 ईमर ओमर का पुत्र था ।  
 30 और ओमर शूल का पुत्र था ।  
 31 और शूल किब का पुत्र था ।  
 32 और किब उस ओरिहा का पुत्र था, जो कि येरेद का पुत्र था;  
 33 वही येरेद जो अपने भाई और उनके परिवारों के साथ, और कुछ अन्य और उनके परिवारों के साथ उस विशाल मीनार के समय से आया था जब प्रभु ने लोगों की भाषा में गड़बड़ी उत्पन्न कर दी थी, और अपने क्रोध में प्रतिज्ञा ली थी उन्हें पृथ्वी पर चारों तरफ तितर-बितर होना होगा; और प्रभु के वचन के अनुसार लोग तितर-बितर हुए ।  
 34 और येरेद का भाई जो कि एक बड़े डील-डौल का और एक शक्तिशाली पुरुष था, और एक ऐसा पुरुष था जिस पर प्रभु का भारी अनुग्रह था, इसके भाई येरेद ने उससे कहा: प्रभु से विनती करो ताकि वह हममें गड़बड़ी न करे जिससे कि हम एक दूसरे की बातों को समझ न सकें ।  
 35 और ऐसा हुआ कि येरेद के भाई ने प्रभु से विनती की, और प्रभु ने येरेद पर करुणा दिखाई; इसलिए उसने येरेद की भाषा में गड़बड़ी उत्पन्न नहीं की; और येरेद और उसके भाई में भी गड़बड़ी नहीं हुई ।
- And Aaron was a descendant of Heth, who was the son of Hearthom.  
 And Hearthom was the son of Lib.  
 And Lib was the son of Kish.  
 And Kish was the son of Corom.  
 And Corom was the son of Levi.  
 And Levi was the son of Kim.  
 And Kim was the son of Morianton.  
 And Morianton was a descendant of Riplakish.  
 And Riplakish was the son of Shez.  
 And Shez was the son of Heth.  
 And Heth was the son of Com.  
 And Com was the son of Coriantum.  
 And Coriantum was the son of Emer.  
 And Emer was the son of Omer.  
 And Omer was the son of Shule.  
 And Shule was the son of Kib.  
 And Kib was the son of Orihah, who was the son of Jared;  
 Which Jared came forth with his brother and their families, with some others and their families, from the great tower, at the time the Lord confounded the language of the people, and swore in his wrath that they should be scattered upon all the face of the earth; and according to the word of the Lord the people were scattered.  
 And the brother of Jared being a large and mighty man, and a man highly favored of the Lord, Jared, his brother, said unto him: Cry unto the Lord, that he will not confound us that we may not understand our words.  
 And it came to pass that the brother of Jared did cry unto the Lord, and the Lord had compassion upon Jared; therefore he did not confound the language of Jared; and Jared and his brother were not confounded.

- 36 तब येरेद ने अपने भाई से कहा: प्रभु से फिर विनती करो, और ऐसा हो कि वह उन लोगों पर से अपना क्रोध हटा ले जो कि हमारे मित्र हैं, ताकि वह उनकी भाषा में भी गड़बड़ी न उत्पन्न करे।
- 37 और ऐसा हुआ कि येरेद के भाई ने प्रभु से विनती की, और प्रभु ने उनके मित्रों और परिवारों पर भी करुणा दिखाई, जिससे कि उनकी भाषा में गड़बड़ी उत्पन्न नहीं हुई।
- 38 और ऐसा हुआ कि यह कहते हुए येरेद ने अपने भाई से फिर कहा: जाओ और प्रभु से पूछताछ करो कि क्या वह हमें इस प्रदेश से बाहर निकालेगा, और यदि वह हमें प्रदेश से बाहर निकालेगा तो उससे विनती करो कि हम कहां जाएंगे। और प्रभु के सिवाय कौन जानता है कि वह हमें एक ऐसे प्रदेश में ले जाए जो कि संसार का उत्तम प्रदेश हो? और यदि ऐसा है, तो चलो प्रभु में विश्वासी रहें, जिससे कि हम उसे अपनी धरोहर के रूप में प्राप्त कर सकें।
- 39 और ऐसा हुआ कि जैसा येरेद ने कहा था उसके अनुसार येरेद के भाई ने प्रभु से विनती की।
- 40 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने येरेद के भाई की विनती सुनी, और उस पर करुणा दिखाई और उससे कहा:
- 41 जाओ और हर प्रकार के अपने झुंड को एकत्रित करो, नर और मादा दोनों को; और पृथ्वी के हर प्रकार के बीज को भी; और अपने परिवारों; और अपने भाई येरेद और उसके परिवार को भी; और अपने मित्रों और उनके परिवारों को भी, और येरेद के मित्रों और उनके परिवारों को भी।
- 42 और जब तुम ऐसा कर लो तब उनका मार्गदर्शन करते हुए उत्तरी खाड़ी में जाओ। और वहां मैं तुमसे मिलूंगा, और मैं तुम्हारे आगे-आगे चलते हुए तुम्हें उस प्रदेश ले जाऊंगा जो संसार के सारे प्रदेशों में उत्तम है।
- 43 और वहां मैं तुम्हें और तुम्हारे वंश को आशीर्षित करूंगा, और मुझमें तुम्हारे वंश को, और तुम्हारे भाई के वंश को, और उन्हें उत्पन्न करूंगा, और एक महान जाति बनाऊंगा। और पूरे संसार में उस जाति से बड़ी कोई भी जाति नहीं होगी जिसे मैं अपने लिए तुम्हारे वंश में से उत्पन्न करूंगा। और ऐसा मैं तुम्हारे साथ इसलिए करूंगा क्योंकि तुमने इतने लंबे समय तक मुझसे विनती की है।

Then Jared said unto his brother: Cry again unto the Lord, and it may be that he will turn away his anger from them who are our friends, that he confound not their language.

And it came to pass that the brother of Jared did cry unto the Lord, and the Lord had compassion upon their friends and their families also, that they were not confounded.

And it came to pass that Jared spake again unto his brother, saying: Go and inquire of the Lord whether he will drive us out of the land, and if he will drive us out of the land, cry unto him whither we shall go. And who knoweth but the Lord will carry us forth into a land which is choice above all the earth? And if it so be, let us be faithful unto the Lord, that we may receive it for our inheritance.

And it came to pass that the brother of Jared did cry unto the Lord according to that which had been spoken by the mouth of Jared.

And it came to pass that the Lord did hear the brother of Jared, and had compassion upon him, and said unto him:

Go to and gather together thy flocks, both male and female, of every kind; and also of the seed of the earth of every kind; and thy families; and also Jared thy brother and his family; and also thy friends and their families, and the friends of Jared and their families.

And when thou hast done this thou shalt go at the head of them down into the valley which is northward. And there will I meet thee, and I will go before thee into a land which is choice above all the lands of the earth.

And there will I bless thee and thy seed, and raise up unto me of thy seed, and of the seed of thy brother, and they who shall go with thee, a great nation. And there shall be none greater than the nation which I will raise up unto me of thy seed, upon all the face of the earth. And thus I will do unto thee because this long time ye have cried unto me.

## ईथर 2

- 1 और ऐसा हुआ कि येरेद और उसका भाई, और उनके परिवार, और येरेद और उसके भाई के मित्र और उनके परिवार भी, अपने हर प्रकार के जानवरों, नर और मादा के समूहों के साथ उत्तरी दिशा की ओर स्थित खाड़ी में गए, (खाड़ी का नाम निम्रोद था जिसका नाम शक्तिशाली शिकारी के नाम पर रखा गया था) ।
- 2 और उन्होंने जाल भी बिछाए और हवा में उड़नेवाले हर प्रकार के पक्षियों को पकड़ा; और उन्होंने एक पात्र भी बनाया जिसमें वे पानी की मछलियों को रखकर ले गए ।
- 3 और वे अपने साथ डेजेरेट भी ले गए जिसका अनुवाद मधुमक्खी है; और इस प्रकार वे अपने साथ मधुमक्खियों का झुंड ले गए, और सबकुछ जो उस प्रदेश में उगता था, उनके बीजों को ले गए ।
- 4 और ऐसा हुआ कि जब वे निम्रोद की खाड़ी में नीचे पहुंचे तो प्रभु नीचे आया और उसने येरेद के भाई से बात की; और वह एक बादल में था, और येरेद के भाई ने उसे नहीं देखा ।
- 5 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने उन्हें आज्ञा दी कि उन्हें निर्जन प्रदेश में आगे बढ़ना चाहिए, हां, उस जगह में जहां कभी भी मनुष्य नहीं गया था । और ऐसा हुआ कि प्रभु उनके आगे-आगे चला, और उसने उनसे बात की जब वह बादल में खड़ा था, और उन्हें निर्देश देता कि उन्हें किस तरफ जाना चाहिए ।
- 6 और ऐसा हुआ कि उन्होंने निर्जन प्रदेश में यात्रा की, और नौकाएं बनाई, और प्रभु के हाथों द्वारा निरंतर निर्देश प्राप्त करते हुए, वे उनमें यात्रा कर पानी के पार गए ।
- 7 और प्रभु नहीं चाहता था कि वे समुद्र के पार निर्जन प्रदेश में रुकें, परन्तु वह चाहता था कि वे प्रतिज्ञा की हुई भूमि तक पहुंचें, जो कि सारे प्रदेशों से उत्तम थी, जिसे प्रभु परमेश्वर ने धार्मिक लोगों के लिए बचाकर रखा था ।
- 8 और क्रोध में उसने येरेद के भाई से प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई भी इस प्रतिज्ञा के प्रदेश में रहेगा, उस समय से लेकर सदा के लिए उसकी, सच्चे और एकमात्र परमेश्वर की सेवा करेगा, अन्यथा वे नष्ट कर दिए जाएंगे जब उसका क्रोध चरम सीमा पर पहुंच जाएगा ।

## Ether 2

And it came to pass that Jared and his brother, and their families, and also the friends of Jared and his brother and their families, went down into the valley which was northward, (and the name of the valley was Nimrod, being called after the mighty hunter) with their flocks which they had gathered together, male and female, of every kind.

And they did also lay snares and catch fowls of the air; and they did also prepare a vessel, in which they did carry with them the fish of the waters.

And they did also carry with them deseret, which, by interpretation, is a honey bee; and thus they did carry with them swarms of bees, and all manner of that which was upon the face of the land, seeds of every kind.

And it came to pass that when they had come down into the valley of Nimrod the Lord came down and talked with the brother of Jared; and he was in a cloud, and the brother of Jared saw him not.

And it came to pass that the Lord commanded them that they should go forth into the wilderness, yea, into that quarter where there never had man been. And it came to pass that the Lord did go before them, and did talk with them as he stood in a cloud, and gave directions whither they should travel.

And it came to pass that they did travel in the wilderness, and did build barges, in which they did cross many waters, being directed continually by the hand of the Lord.

And the Lord would not suffer that they should stop beyond the sea in the wilderness, but he would that they should come forth even unto the land of promise, which was choice above all other lands, which the Lord God had preserved for a righteous people.

And he had sworn in his wrath unto the brother of Jared, that whoso should possess this land of promise, from that time henceforth and forever, should serve him, the true and only God, or they should be swept off when the fulness of his wrath should come upon them.

- 9 और अब, हम इस प्रदेश से संबंधित परमेश्वर के नियमों को देख सकते हैं, कि यह एक प्रतिज्ञा का प्रदेश है; और जो भी जाति इस पर अधिकार करेगी वह परमेश्वर की सेवा करेगी, अन्यथा वे नष्ट कर दिए जाएंगे जब उसका क्रोध चरम सीमा पर पहुंच जाएगा। और उसका भयंकर क्रोध उन पर तब आता है जब वे बुराई में परिपक्व हो जाते हैं।
- 10 परन्तु देखो, यह वह प्रदेश है जो सारे अन्य प्रदेशों से उत्तम है; इसलिए वह जो इस पर अधिकार रखेगा, परमेश्वर की सेवा करेगा अन्यथा नष्ट कर दिया जाएगा; क्योंकि यही परमेश्वर का अनंत नियम है। और उन्हें तब तक नष्ट नहीं किया जाएगा जब तक कि प्रदेश में रह रहे बच्चों के बीच बुराई पूरी तरह न फैल जाए।
- 11 और तुम्हारे पास यह आता है, हे तुम अन्य जातियों, कि तुम परमेश्वर के नियमों को जान सको—जिससे कि तुम पश्चात्ताप कर सको, और जब तक कि परिपूर्णता नहीं आती तब तक तुम अपनी बुराइयों में जारी न रह सको, कि तुम स्वयं पर उन लोगों के समान परमेश्वर का भयंकर क्रोध न ला सको जैसा कि अब तक प्रदेश के निवासियों ने किया है।
- 12 देखो, यह एक उत्तम प्रदेश है, और जो भी जाति इसमें रहेगी वह दासता और अधीनता, और स्वर्ग के नीचे रह रही सारी अन्य जातियों से मुक्त होगी यदि वे प्रदेश के परमेश्वर की सेवा करेंगे जो कि यीशु मसीह है, और जो उन सब बातों से प्रकट होता है जिसे हमने लिखा है।
- 13 और अब मैं अपने अभिलेख में आगे बढ़ता हूँ; क्योंकि देखो, ऐसा हुआ कि प्रभु येरेद और उसके भाइयों को उस महासमुद्र तक ले आया जो प्रदेशों को विभाजित करती है। और जब वे समुद्र के पास आए तब उन्होंने अपना तंबू लगाया; और उन्होंने उस स्थान को मोरियंकुमर नाम दिया; और वे तंबुओं में रहे, और चार वर्षों तक समुद्रतट पर बने तंबुओं में रहे।
- 14 और ऐसा हुआ कि चार वर्षों के अंत में प्रभु फिर से येरेद के भाई के पास आया, और एक बादल में खड़ा हुआ और उससे बात की। और तीन घंटों तक प्रभु ने येरेद के भाई से बात की, और उसे डांटा-फटकारा क्योंकि उसे प्रभु के नाम को पुकारना याद नहीं रहा था।

And now, we can behold the decrees of God concerning this land, that it is a land of promise; and whatsoever nation shall possess it shall serve God, or they shall be swept off when the fulness of his wrath shall come upon them. And the fulness of his wrath cometh upon them when they are ripened in iniquity.

For behold, this is a land which is choice above all other lands; wherefore he that doth possess it shall serve God or shall be swept off; for it is the everlasting decree of God. And it is not until the fulness of iniquity among the children of the land, that they are swept off.

And this cometh unto you, O ye Gentiles, that ye may know the decrees of God—that ye may repent, and not continue in your iniquities until the fulness come, that ye may not bring down the fulness of the wrath of God upon you as the inhabitants of the land have hitherto done.

Behold, this is a choice land, and whatsoever nation shall possess it shall be free from bondage, and from captivity, and from all other nations under heaven, if they will but serve the God of the land, who is Jesus Christ, who hath been manifested by the things which we have written.

And now I proceed with my record; for behold, it came to pass that the Lord did bring Jared and his brethren forth even to that great sea which divideth the lands. And as they came to the sea they pitched their tents; and they called the name of the place Moriancumer; and they dwelt in tents, and dwelt in tents upon the seashore for the space of four years.

And it came to pass at the end of four years that the Lord came again unto the brother of Jared, and stood in a cloud and talked with him. And for the space of three hours did the Lord talk with the brother of Jared, and chastened him because he remembered not to call upon the name of the Lord.



15 और येरेद के भाई ने उस बुराई से पश्चाताप किया जिसे उसने किया था, और अपने उन भाइयों के लिए प्रभु के नाम को पुकारा जो उसके साथ थे। और प्रभु ने उससे कहा: मैं तुम्हारे और तुम्हारे भाइयों के पापों को क्षमा कर दूंगा; परन्तु तुम अब और पाप नहीं करोगे, क्योंकि तुम्हें याद रखना होगा कि मेरी आत्मा सदा के लिए मनुष्यों के साथ प्रयत्न नहीं करती है; इसलिए, यदि तुम पूरी तरह से पाप में पड़ने तक पाप करते रहे तो तुम्हें प्रभु की उपस्थिति से अलग कर दिया जाएगा। और उस देश के लिए यही मेरे विचार हैं जिसे मैंने तुम्हें तुम्हारी धरोहर के रूप में दिया है; क्योंकि यह अन्य सारे प्रदेशों में उत्तम प्रदेश होगा।

16 और प्रभु ने कहा: काम पर जाओ और उन्हीं नौकाओं की तरह नौकाएं बनाएं जैसा कि तुमने अब तक बनाई हैं। और ऐसा हुआ कि येरेद का भाई, और उसके बंधु भी काम पर गए, और प्रभु के निर्देशानुसार उसी प्रकार की नौकाओं को बनाया जैसा कि अब तक बनाई थी। और वे छोटी-छोटी थी, और वे पानी पर हल्की थी, वैसी ही हल्की जैसे कि पानी पर एक पक्षी होता है।

17 और उन्हें वैसे ही बनाया गया था जैसे कि वे बहुत ही कसी हुई हों, इतनी अधिक कि एक थाली के समान जो पानी को रोक सके; और उसका निचला हिस्सा एक थाली के समान ही कसा हुआ था; और उसके बगल के हिस्से भी थाली के समान ही कसे हुए थे; और उसके छोर नुकिले थे; और उसका ऊपरी हिस्सा एक थाली के समान कसा हुआ था; और उसकी लंबाई एक वृक्ष की लंबाई के समान थी; और उसका दरवाजा, यदि बंद हो जाता तो एक थाली के समान कसा हुआ हो जाता।

18 और ऐसा हुआ कि यह कहते हुए येरेद के भाई ने प्रभु से विनती की: हे प्रभु, मैंने वह कार्य पूरा कर दिया है जिसे तुमने मुझे करने की आज्ञा दी थी, और तुम्हारे निर्देशानुसार मैंने नौकाओं को बना दिया है।

19 और देखो, हे प्रभु, उनमें कोई प्रकाश नहीं है; हम किस तरफ जाएंगे? और हम मर भी जाएंगे, क्योंकि उनमें जो हवा है उसके अलावा हम और सांस नहीं ले सकते हैं; इसलिए हम मर जाएंगे।

20 और प्रभु ने येरेद के भाई से कहा: देखो, तुम ऊपरी हिस्से में एक सुराख बनाओगे, और निचले हिस्से में भी; और जब तुम्हें हवा की आवश्यकता हो तब तुम सुराख को खोलकर हवा ले लेना। और यदि ऐसा हो कि तुम पर पानी आए, देखो, तब तुम सुराख को बंद कर देना जिससे कि तुम बाढ़ में बह न सको।

21 और ऐसा हुआ कि येरेद के भाई ने वैसा ही किया, जैसा कि प्रभु ने उसे आज्ञा दी थी।

And the brother of Jared repented of the evil which he had done, and did call upon the name of the Lord for his brethren who were with him. And the Lord said unto him: I will forgive thee and thy brethren of their sins; but thou shalt not sin any more, for ye shall remember that my Spirit will not always strive with man; wherefore, if ye will sin until ye are fully ripe ye shall be cut off from the presence of the Lord. And these are my thoughts upon the land which I shall give you for your inheritance; for it shall be a land choice above all other lands.

And the Lord said: Go to work and build, after the manner of barges which ye have hitherto built. And it came to pass that the brother of Jared did go to work, and also his brethren, and built barges after the manner which they had built, according to the instructions of the Lord. And they were small, and they were light upon the water, even like unto the lightness of a fowl upon the water.

And they were built after a manner that they were exceedingly tight, even that they would hold water like unto a dish; and the bottom thereof was tight like unto a dish; and the sides thereof were tight like unto a dish; and the ends thereof were peaked; and the top thereof was tight like unto a dish; and the length thereof was the length of a tree; and the door thereof, when it was shut, was tight like unto a dish.

And it came to pass that the brother of Jared cried unto the Lord, saying: O Lord, I have performed the work which thou hast commanded me, and I have made the barges according as thou hast directed me.

And behold, O Lord, in them there is no light; whither shall we steer? And also we shall perish, for in them we cannot breathe, save it is the air which is in them; therefore we shall perish.

And the Lord said unto the brother of Jared: Behold, thou shalt make a hole in the top, and also in the bottom; and when thou shalt suffer for air thou shalt unstop the hole and receive air. And if it be so that the water come in upon thee, behold, ye shall stop the hole, that ye may not perish in the flood.

And it came to pass that the brother of Jared did so, according as the Lord had commanded.

22 और यह कहते हुए उसने प्रभु से फिर विनती की: हे प्रभु, देखो मैंने वैसे ही किया है जैसे कि तुमने मुझे आज्ञा दी थी; और मैंने अपने लोगों के लिए नावें तैयार की हैं, और देखो उनमें कोई प्रकाश नहीं है। देखो, हे प्रभु, क्या तुम ऐसा होने दोगे कि हम अंधकार में इस विशाल जल को पार करें ?

23 और प्रभु ने येरेद के भाई से कहा: तुम क्या चाहते हो कि मैं करूँ ताकि तुम्हारी नावों में प्रकाश हो ? क्योंकि देखो, तुम्हारे पास खिड़कियां नहीं हो सकती हैं, क्योंकि वे टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगी; न ही तुम अपने साथ आग लेकर जा सकते हो, क्योंकि तुम आग के प्रकाश द्वारा नहीं जाओगे।

24 क्योंकि देखो, तुम समुद्र में एक व्हेल के समान होगे; क्योंकि पर्वत से आ रही लहरें तुम्हें ठोकर मारेंगी। फिर भी, मैं तुम्हें दोबारा समुद्र की गहराइयों से बाहर निकालूंगा; क्योंकि मेरे मुँह से हवा निकल चुकी है, और मैंने बारिश और बाढ़ भी भेज दी है।

25 और देखो, मैं तुम्हें इन चीजों का सामना करने के लिए तैयार करता; क्योंकि तुम इस विशाल गहराई को पार नहीं कर सकते हो यदि मैं तुम्हें समुद्र की इन लहरों का सामना करने के लिए तैयार न करूँ। इसलिए तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ जिससे कि तुम्हारे पास प्रकाश हो जब तुम समुद्र की गहराइयों में निगले जाते हो ?

And he cried again unto the Lord saying: O Lord, behold I have done even as thou hast commanded me; and I have prepared the vessels for my people, and behold there is no light in them. Behold, O Lord, wilt thou suffer that we shall cross this great water in darkness?

And the Lord said unto the brother of Jared: What will ye that I should do that ye may have light in your vessels? For behold, ye cannot have windows, for they will be dashed in pieces; neither shall ye take fire with you, for ye shall not go by the light of fire.

For behold, ye shall be as a whale in the midst of the sea; for the mountain waves shall dash upon you. Nevertheless, I will bring you up again out of the depths of the sea; for the winds have gone forth out of my mouth, and also the rains and the floods have I sent forth.

And behold, I prepare you against these things; for ye cannot cross this great deep save I prepare you against the waves of the sea, and the winds which have gone forth, and the floods which shall come. Therefore what will ye that I should prepare for you that ye may have light when ye are swallowed up in the depths of the sea?

### ईथर 3

- 1 और ऐसा हुआ कि येरेद का भाई, (अब जितनी नौकाएं बनाई गई थीं उनकी संख्या आठ थी) पर्वत पर गया, जिसे वे उसकी अत्याधिक ऊंचाई के कारण शेलेम पर्वत कहते थे, और चट्टान से सोलह छोटे-छोटे टुकड़े तोड़कर निकाले; और वे सफेद और साफ थे, यहां तक कि पारदर्शी शीशे के समान थे; और वह उन्हें अपने हाथों से उठाकर पर्वत के शिखर पर गया, और यह कहते हुए प्रभु से फिर से विनती की:
- 2 हे प्रभु, तुमने कहा है कि हम बाढ़ द्वारा घिर जाएंगे। अब देखो, हे प्रभु, और तुम्हारे सामने अपने सेवक की दुर्बलता के कारण तुम उससे क्रोधित न होना; क्योंकि हम जानते हैं कि तुम पवित्र हो और स्वर्गों में निवास करते हो, और यह कि पतन के कारण हमारा जो स्वभाव निरंतर बुरा हो गया है उसके कारण हम तुम्हारे सामने अयोग्य हैं; फिर भी, हे प्रभु, तुमने हमें आज्ञा दी है कि हमें तुम्हें पुकारना होगा, जिससे कि हम अपनी इच्छानुसार तुमसे प्राप्त कर सकें।
- 3 देखो, हे प्रभु, हमारी बुराई के कारण तुमने हमें दंडित किया है, और तुमने हमें निकाल दिया है, और इन कई वर्षों तक हम निर्जन प्रदेश में रहे हैं; फिर भी, तुमने हम पर दया दिखाई है। हे प्रभु, दया भरी दृष्टि से मेरी तरफ देखो, और इन लोगों पर से अपना क्रोध हटा लो, और ऐसा मत होने दो कि इन लोगों को अंधकार की इस भयानक गहराई में जाना पड़े; परन्तु इन चीजों को देखो जिन्हें मैंने चट्टान से तोड़कर निकाला है।
- 4 और मैं जानता हूं, हे प्रभु, कि तुम्हारे पास पूर्ण सामर्थ्य है, और तुम वह सब कर सकते हो जो मनुष्य के लाभ के लिए है; इसलिए हे प्रभु, इन पत्थरों को अपनी उंगली से छुओ, और इन्हें तैयार कर दो जिससे कि ये अंधकार में प्रकाशित हों; और ये हमारी उन नौकाओं में चमकें जिन्हें हमने तैयार किया है, जिससे कि जब हम समुद्र को पार करें तब हमारे पास प्रकाश हो।
- 5 देखो, हे प्रभु, तुम ऐसा कर सकते हो। हम जानते हैं कि तुम महान सामर्थ्य दिखाने में समर्थ हो, जो कि मनुष्यों की समझ के अनुसार साधारण लगती हैं।

### Ether 3

And it came to pass that the brother of Jared, (now the number of the vessels which had been prepared was eight) went forth unto the mount, which they called the mount Shelem, because of its exceeding height, and did molten out of a rock sixteen small stones; and they were white and clear, even as transparent glass; and he did carry them in his hands upon the top of the mount, and cried again unto the Lord, saying:

O Lord, thou hast said that we must be encompassed about by the floods. Now behold, O Lord, and do not be angry with thy servant because of his weakness before thee; for we know that thou art holy and dwellest in the heavens, and that we are unworthy before thee; because of the fall our natures have become evil continually; nevertheless, O Lord, thou hast given us a commandment that we must call upon thee, that from thee we may receive according to our desires.

Behold, O Lord, thou hast smitten us because of our iniquity, and hast driven us forth, and for these many years we have been in the wilderness; nevertheless, thou hast been merciful unto us. O Lord, look upon me in pity, and turn away thine anger from this thy people, and suffer not that they shall go forth across this raging deep in darkness; but behold these things which I have molten out of the rock.

And I know, O Lord, that thou hast all power, and can do whatsoever thou wilt for the benefit of man; therefore touch these stones, O Lord, with thy finger, and prepare them that they may shine forth in darkness; and they shall shine forth unto us in the vessels which we have prepared, that we may have light while we shall cross the sea.

Behold, O Lord, thou canst do this. We know that thou art able to show forth great power, which looks small unto the understanding of men.

- 6 और ऐसा हुआ कि जब येरेद के भाई ने इन बातों को कह लिया, तब देखो, प्रभु ने अपना हाथ आगे किया और अपनी उंगली से एक-एक कर पत्थरों को छुआ। और येरेद के भाई की आंखों के सामने उस परदा हट गया, और उसने प्रभु की उंगली को देखा; और वह एक आदमी की उंगली के समान ही थी जो कि मांस और लहू का होता है; और येरेद का भाई प्रभु के सामने नीचे गिर गया, क्योंकि वह डर के कारण दंग रह गया था।
- 7 और प्रभु ने देखा कि येरेद का भाई जमीन पर गिरा हुआ था; और प्रभु ने उससे कहा: उठो, तुम क्यों गिर गए हो ?
- 8 और उसे प्रभु से कहा: मैंने प्रभु की उंगली देखी, और मैं डर गया कि कहीं वह मुझे दंडित न करे; क्योंकि मैं नहीं जानता था कि प्रभु भी मांस और लहू का है।
- 9 और प्रभु ने उससे कहा: अपने विश्वास के कारण तुमने देखा है कि मैं मांस और लहू का भी बन सकता हूँ; मेरे सामने कभी भी ऐसा कोई व्यक्ति नहीं आया है जिसका विश्वास तुम्हारे जितना मजबूत हो; क्योंकि यदि ऐसा नहीं होता तो तुम मेरी उंगली नहीं देख सकते। क्या तुमने इससे अधिक कुछ देखा ?
- 10 और उसने उत्तर दिया: नहीं; प्रभु, अपने आपको मुझे दिखाओ।
- 11 और प्रभु ने उससे कहा: क्या तुम उन बातों पर विश्वास करोगे जिसे मैं कहूँगा ?
- 12 और उसने उत्तर दिया: हां, प्रभु, मैं जानता हूँ कि तुम सच कहते हो, क्योंकि तुम सच्चाई का परमेश्वर हो, और झूठ नहीं बोल सकते।
- 13 और जब उसने इन बातों को कह लिया, देखो, प्रभु ने अपने आपको उसे दिखाया, और कहा: क्योंकि तुम इन बातों को जानते हो, तुम पतन से मुक्त हो गए हो; इसलिए तुम्हें मेरी उपस्थिति में लाया जाएगा; इसलिए मैं तुम्हें अपने आपको दिखा रहा हूँ।
- 14 देखो, मैं वही हूँ जिसने अपने लोगों को मुक्त करने के लिए संसार की नींव से ही तैयारी की है। देखो, मैं ही यीशु मसीह हूँ। मैं ही पिता और पुत्र हूँ। मुझमें ही सारी मानवजाति को जीवन मिलेगा, और वह अनंत जीवन भी उन लोगों को जो मेरे नाम में विश्वास करेंगे; वे मेरे बेटे और बेटियाँ बन जाएंगे।
- 15 और मैंने कभी भी उन मनुष्यों को अपने आपको नहीं दिखाया जिन्हें मैंने बनाया है, क्योंकि कभी भी मनुष्यों ने मुझमें विश्वास नहीं किया है जैसा कि तुमने किया। क्या तुम देख सकते हो कि तुम्हें मेरी ही समानता में बनाया गया है ? हां, यहाँ तक कि सारे मनुष्यों को आरंभ से ही मेरी समानता में बनाया गया है।

And it came to pass that when the brother of Jared had said these words, behold, the Lord stretched forth his hand and touched the stones one by one with his finger. And the veil was taken from off the eyes of the brother of Jared, and he saw the finger of the Lord; and it was as the finger of a man, like unto flesh and blood; and the brother of Jared fell down before the Lord, for he was struck with fear.

And the Lord saw that the brother of Jared had fallen to the earth; and the Lord said unto him: Arise, why hast thou fallen?

And he saith unto the Lord: I saw the finger of the Lord, and I feared lest he should smite me; for I knew not that the Lord had flesh and blood.

And the Lord said unto him: Because of thy faith thou hast seen that I shall take upon me flesh and blood; and never has man come before me with such exceeding faith as thou hast; for were it not so ye could not have seen my finger. Sawest thou more than this?

And he answered: Nay; Lord, show thyself unto me.

And the Lord said unto him: Believest thou the words which I shall speak?

And he answered: Yea, Lord, I know that thou speakest the truth, for thou art a God of truth, and canst not lie.

And when he had said these words, behold, the Lord showed himself unto him, and said: Because thou knowest these things ye are redeemed from the fall; therefore ye are brought back into my presence; therefore I show myself unto you.

Behold, I am he who was prepared from the foundation of the world to redeem my people. Behold, I am Jesus Christ. I am the Father and the Son. In me shall all mankind have life, and that eternally, even they who shall believe on my name; and they shall become my sons and my daughters.

And never have I showed myself unto man whom I have created, for never has man believed in me as thou hast. Seest thou that ye are created after mine own image? Yea, even all men were created in the beginning after mine own image.

- 16 देखो, जो शरीर तुम्हारे पास अभी है, वह मेरी आत्मा का शरीर है; और मनुष्यों को मेरी आत्मा के शरीर के अनुसार बनाया गया है; और जैसा मैं तुम्हें आत्मा के रूप में दिखाई देता हूँ वैसे ही मैं अपने लोगों को मांस के शरीर में दिखाई दूंगा ।
- 17 और अब, मैं, मोरोनी ने जैसा कहा है कि ये बातें जो लिखी गई हैं मैं उनका पूरा विवरण नहीं दे सकता हूँ, इसलिए मेरे लिए यह कहना पर्याप्त होगा कि यीशु ने इस मनुष्य पर अपने आपको आत्मा के रूप में प्रकट किया, उसी शरीर की समानता में जैसा उसने स्वयं को नफाइयों को दिखाया था ।
- 18 और उसने उसे वैसे ही उपदेश दिया जैसा कि उसने नफाइयों को दिया था; और यह सब इसलिए हुआ जिससे कि यह मनुष्य जान सके कि वह परमेश्वर था, क्योंकि प्रभु ने उसे कई महान कार्य दिखाए थे ।
- 19 और इस मनुष्य के ज्ञान के कारण उसे पर्दे के पार देखने से नहीं रोका जा सका; और उसने यीशु की उंगली को देखा था, जिसे जब उसने देखा तो डर के मारे गिर गया था; क्योंकि वह जानता था कि वह प्रभु की उंगली थी; और उसे विश्वास की जरूरत नहीं थी, क्योंकि बिना संदेह के वह सब जानने लगा था ।
- 20 इसलिए, परमेश्वर के इस पूरे ज्ञान के कारण पर्दे के पार देखने से उसे नहीं रोका जा सका; इसलिए उसने यीशु को देखा; और उसने उसे उपदेश भी दिया ।
- 21 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने येरेद के भाई से कहा: देखो, जब तुम संसार में जाओगे तब तुमने जो देखा और सुना है उसे तब तक किसी को नहीं बताओगे जब तक कि समय न आ जाए कि मैं शरीर में अपने नाम को गौरवान्वित करूँ; इसलिए तुम इन बातों को बचाकर रखोगे जिसे तुमने देखा और सुना है, और इसे किसी भी मनुष्य को नहीं बताओगे ।
- 22 और देखो, जब तुम मेरे पास आओगे, तुम इन्हें लिखोगे और उन्हें मुहरबंद कर दोगे, ताकि कोई भी उसका अनुवाद न कर सके; क्योंकि तुम उन्हें उस भाषा में लिखोगे जिसे पढ़ा नहीं जा सकता है ।
- 23 और देखो, मैं तुम्हें ये दो पत्थर दूंगा, और जो तुम लिखोगे उसी के साथ इन्हें भी मुहरबंद कर दोगे ।
- 24 क्योंकि देखो, जिस भाषा में तुम लिखोगे मैंने उसमें गड़बड़ी पैदा कर दी है; इसलिए मैं अपने समय के अनुसार ऐसा होने दूंगा कि ये पत्थर इन बातों को मनुष्यों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाएँ जिसे तुम लिखोगे ।

Behold, this body, which ye now behold, is the body of my spirit; and man have I created after the body of my spirit; and even as I appear unto thee to be in the spirit will I appear unto my people in the flesh.

And now, as I, Moroni, said I could not make a full account of these things which are written, therefore it sufficeth me to say that Jesus showed himself unto this man in the spirit, even after the manner and in the likeness of the same body even as he showed himself unto the Nephites.

And he ministered unto him even as he ministered unto the Nephites; and all this, that this man might know that he was God, because of the many great works which the Lord had showed unto him.

And because of the knowledge of this man he could not be kept from beholding within the veil; and he saw the finger of Jesus, which, when he saw, he fell with fear; for he knew that it was the finger of the Lord; and he had faith no longer, for he knew, nothing doubting.

Wherefore, having this perfect knowledge of God, he could not be kept from within the veil; therefore he saw Jesus; and he did minister unto him.

And it came to pass that the Lord said unto the brother of Jared: Behold, thou shalt not suffer these things which ye have seen and heard to go forth unto the world, until the time cometh that I shall glorify my name in the flesh; wherefore, ye shall treasure up the things which ye have seen and heard, and show it to no man.

And behold, when ye shall come unto me, ye shall write them and shall seal them up, that no one can interpret them; for ye shall write them in a language that they cannot be read.

And behold, these two stones will I give unto thee, and ye shall seal them up also with the things which ye shall write.

For behold, the language which ye shall write I have confounded; wherefore I will cause in my own due time that these stones shall magnify to the eyes of men these things which ye shall write.

25 और जब प्रभु ने इन बातों को कह लिया, तब उसने येरेद के भाई को पृथ्वी के उन सब निवासियों को दिखाया जो रह चुके थे, और उन्हें भी जो रहनेवाले थे; और उसने उन्हें उसकी दृष्टि से पृथ्वी के छोर तक की बातों तक को नहीं हटाया ।

26 क्योंकि उसने उसे समय से पहले बताया था, कि यदि वह उसमें विश्वास करेगा तो वह सारी चीजों को उसे दिखा सकता है—उसे यह सब दिखाया जाएगा; इसलिए प्रभु ने उसके सामने से कोई भी चीज नहीं हटाई, क्योंकि वह जानता था कि प्रभु उसे सारी चीजें दिखा सकता है ।

27 प्रभु ने उससे कहा: इन बातों को लिखो और उन्हें मुहरबंद कर दो; और मैं मानव संतानों को अपने समय के अनुसार इन्हें दिखाऊंगा ।

28 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने उसे आज्ञा दी कि जो दो पत्थर उसे दिए गए थे वह उन्हें भी मुहरबंद कर दे, और उन्हें तब तक न दिखाए जब तक कि प्रभु स्वयं उन्हें मानव संतानों पर प्रकट न करे ।

And when the Lord had said these words, he showed unto the brother of Jared all the inhabitants of the earth which had been, and also all that would be; and he withheld them not from his sight, even unto the ends of the earth.

For he had said unto him in times before, that if he would believe in him that he could show unto him all things—it should be shown unto him; therefore the Lord could not withhold anything from him, for he knew that the Lord could show him all things.

And the Lord said unto him: Write these things and seal them up; and I will show them in mine own due time unto the children of men.

And it came to pass that the Lord commanded him that he should seal up the two stones which he had received, and show them not, until the Lord should show them unto the children of men.

## ईथर 4

- 1 और प्रभु ने येरेद के भाई को आज्ञा दी कि वह पर्वत पर से प्रभु की उपस्थिति से नीचे चला जाए, और उन बातों को लिखे जिसे उसने देखा था; और इन बातों को मानव संतानों में लाने के लिए तब तक मना किया गया जब तक कि उसे क्रूस पर न चढ़ा दिया जाए; और इसी कारण राजा मुसायाह ने उन्हें रखा, ताकि वे संसार में तब तक न आएँ जब तक कि मसीह अपने लोगों को स्वयं को न दिखा दे।
- 2 और जब मसीह वास्तव में अपने आपको लोगों को दिखा चुका होगा, उसने आज्ञा दी कि उसके पश्चात उन्हें प्रकट किया जाए।
- 3 और अब, इसके पश्चात, वे सारे अविश्वास में क्षीण हुए; और लमनाइयों के अलावा और कोई नहीं बचा था, और उन्होंने मसीह के सुसमाचार को अस्वीकार किया; इसलिए मुझे आज्ञा दी गई कि मैं उन्हें फिर से जमीन में छिपा दूँ।
- 4 देखो, मैंने इन पट्टियों पर उन्हीं सच्ची बातों को लिखा है जिसे येरेद के भाई ने देखा था; और कभी भी इतनी महान बातों को प्रकट नहीं किया गया जिन्हें येरेद के भाई पर प्रकट किया गया था।
- 5 इसलिए प्रभु ने मुझे उन्हें लिखने की आज्ञा दी है; और मैंने उन्हें लिखा है। और उसने मुझे आज्ञा दी है कि मैं उन्हें मुहरबंद कर दूँ; और इसके पश्चात मुझे इसके अनुवाद को भी मुहरबंद करने की आज्ञा दी है; इसलिए प्रभु की आज्ञानुसार मैंने अनुवादकों को मुहरबंद कर दिया है।
- 6 क्योंकि प्रभु ने मुझे कहा था: ये अन्य जातियों में तब तक नहीं जाएंगी जब तक कि वे अपनी बुराइयों के लिए पश्चाताप नहीं करेंगे, और प्रभु के सामने शुद्ध नहीं हो जाएंगे।
- 7 और उस दिन वे मुझमें विश्वास बढ़ाएंगे, प्रभु कहता है, वैसे ही जैसे कि येरेद के भाई ने किया था, ताकि उनका मुझमें पवित्रिकरण हो सके, तब मैं उन पर वे बातें प्रकट करूँगा जिसे येरेद के भाई ने देखा था, यहां तक कि उन पर सारे प्रकटीकरणों को, और उनमें की सारी बातों को भी खोल दूँगा, यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, स्वर्गों और पृथ्वी का पिता कहता है।
- 8 और वह जो प्रभु के वचन के विरुद्ध विवाद करेगा, उसे श्रापित होने दो; और वह जो इन बातों को अस्वीकार करेगा, उसे श्रापित होने दो; क्योंकि मैं उन्हें महान चीजें नहीं दिखाऊँगा, यीशु मसीह कहता है; क्योंकि मैं वही हूँ जो कहता है।

## Ether 4

And the Lord commanded the brother of Jared to go down out of the mount from the presence of the Lord, and write the things which he had seen; and they were forbidden to come unto the children of men until after that he should be lifted up upon the cross; and for this cause did king Mosiah keep them, that they should not come unto the world until after Christ should show himself unto his people.

And after Christ truly had showed himself unto his people he commanded that they should be made manifest.

And now, after that, they have all dwindled in unbelief; and there is none save it be the Lamanites, and they have rejected the gospel of Christ; therefore I am commanded that I should hide them up again in the earth.

Behold, I have written upon these plates the very things which the brother of Jared saw; and there never were greater things made manifest than those which were made manifest unto the brother of Jared.

Wherefore the Lord hath commanded me to write them; and I have written them. And he commanded me that I should seal them up; and he also hath commanded that I should seal up the interpretation thereof; wherefore I have sealed up the interpreters, according to the commandment of the Lord.

For the Lord said unto me: They shall not go forth unto the Gentiles until the day that they shall repent of their iniquity, and become clean before the Lord.

And in that day that they shall exercise faith in me, saith the Lord, even as the brother of Jared did, that they may become sanctified in me, then will I manifest unto them the things which the brother of Jared saw, even to the unfolding unto them all my revelations, saith Jesus Christ, the Son of God, the Father of the heavens and of the earth, and all things that in them are.

And he that will contend against the word of the Lord, let him be accursed; and he that shall deny these things, let him be accursed; for unto them will I show no greater things, saith Jesus Christ; for I am he who speaketh.

- 9 और मेरी आज्ञा पर स्वर्ग खुलते हैं और बंद होते हैं; और मेरे शब्द से पृथ्वी हिल जाएगी; और उसके निवासी मेरी आज्ञा से वैसे ही नष्ट हो जाएंगे जैसे कि आग से नष्ट हुए हों ।
- 10 और वह जो मेरी बातों पर विश्वास नहीं करता है, मेरे शिष्यों पर भी विश्वास नहीं करता है; और यदि ऐसा है कि मैं न बोलू तो तुम न्याय करो; क्योंकि तुम जानोगे कि मैं ही हूँ जो अंतिम दिन बोलूंगा ।
- 11 परन्तु जो मैंने कहा है उस पर वह जो विश्वास करता है, उससे मैं अपनी आत्मा की प्रत्यक्षीकरण से मिलूंगा, और वह जानेगा और अभिलेख रखेगा । क्योंकि मेरी आत्मा के कारण वह जानेगा कि ये बातें सच्ची हैं; क्योंकि यही मनुष्यों को भलाई करने के लिए उकसाती हैं ।
- 12 और जो भी बातें मनुष्यों को भलाई करने के लिए उकसाती हैं वे मेरी ओर से हैं; क्योंकि अच्छाई मेरे अलावा कहीं और से नहीं आती है । मैं वही हूँ जो मनुष्यों को सारी भलाई करने के लिए मार्ग दिखाता है; वह जो मेरी बातों पर विश्वास नहीं करेगा मुझ पर विश्वास नहीं करेगा—कि मैं हूँ; और वह जो मुझ पर विश्वास नहीं करेगा उस पिता पर विश्वास नहीं करेगा जिसने मुझे भेजा है । क्योंकि देखो, मैं ही पिता हूँ, मैं ही ज्योति, और जीवन, और संसार की सच्चाई हूँ ।
- 13 मेरे पास आओ, हे तुम अन्य जातियों, और मैं तुम्हें महान चीजें दिखाऊंगा, उस ज्ञान को जिसे अविश्वास के कारण छिपा दिया गया था ।
- 14 मेरे पास आओ, हे तुम इस्राएल के घराने, और तुम पर उन महान बातों को प्रकट किया जाएगा जिसे पिता ने तुम्हारे लिए, संसार की नींव से ही गाड़ कर रखा है; और अविश्वास के कारण वह तुम तक नहीं पहुंची है ।
- 15 देखो, जब तुम अविश्वास के उस पर्दे को फाड़ दोगे जिसके कारण तुम अपनी दुष्टता की भयावह स्थिति, और हृदय की कठोरता, मन के अंधेपन में हो, तब वे महान और अदभुत बातें जिन्हें संसार की नींव से ही तुमसे छिपा कर रखी गई हैं—हां, जब तुम एक टुटे हुए हृदय और शोर्कात आत्मा से, पिता को मेरे नाम में पुकारोगे, तब हे इस्राएल के घराने, तुम जानोगे कि पिता ने उस अनुबंध को याद रखा है जिसे उसने तुम्हारे पूर्वजों से किया था ।
- 16 और तब मेरे वे प्रकटीकरण जिन्हें मैंने अपने सेवक यूहन्ना से लिखवाया था उन्हें सारे लोगों के सामने खोला जाएगा । याद रखो, जब तुम इन बातों को होते देखोगे, तुम जानोगे कि समय निकट है जब उन्हें बिल्कुल उसी कार्य में प्रकट किया जाएगा ।

And at my command the heavens are opened and are shut; and at my word the earth shall shake; and at my command the inhabitants thereof shall pass away, even so as by fire.

And he that believeth not my words believeth not my disciples; and if it so be that I do not speak, judge ye; for ye shall know that it is I that speaketh, at the last day.

But he that believeth these things which I have spoken, him will I visit with the manifestations of my Spirit, and he shall know and bear record. For because of my Spirit he shall know that these things are true; for it persuadeth men to do good.

And whatsoever thing persuadeth men to do good is of me; for good cometh of none save it be of me. I am the same that leadeth men to all good; he that will not believe my words will not believe me—that I am; and he that will not believe me will not believe the Father who sent me. For behold, I am the Father, I am the light, and the life, and the truth of the world.

Come unto me, O ye Gentiles, and I will show unto you the greater things, the knowledge which is hid up because of unbelief.

Come unto me, O ye house of Israel, and it shall be made manifest unto you how great things the Father hath laid up for you, from the foundation of the world; and it hath not come unto you, because of unbelief.

Behold, when ye shall rend that veil of unbelief which doth cause you to remain in your awful state of wickedness, and hardness of heart, and blindness of mind, then shall the great and marvelous things which have been hid up from the foundation of the world from you—yea, when ye shall call upon the Father in my name, with a broken heart and a contrite spirit, then shall ye know that the Father hath remembered the covenant which he made unto your fathers, O house of Israel.

And then shall my revelations which I have caused to be written by my servant John be unfolded in the eyes of all the people. Remember, when ye see these things, ye shall know that the time is at hand that they shall be made manifest in very deed.



17 इसलिए, जब तुम इस अभिलेख को प्राप्त करोगे तब तुम जान सकोगे कि पिता का कार्य पूरे प्रदेश में आरंभ हो चुका है ।

18 इसलिए, पृथ्वी की छोर तक के लोगों पश्चाताप करो, और मेरे पास आओ, और मेरे सुसमाचार में विश्वास करो, और मेरे नाम में बपतिस्मा लो; क्योंकि वह जो विश्वास करता है और बपतिस्मा लेता है वही बचाया जाएगा; परन्तु वह जो विश्वास नहीं करता है वह नरक-वासी होगा; और चिन्ह उन लोगों के साथ होंगे जो मेरे नाम में विश्वास करते हैं ।

19 और आशीषित है वह जो अंतिम दिन में मेरे नाम में विश्वासी पाया जाएगा, क्योंकि वह उस राज्य में रहने के लिए उठा लिया जाएगा जिसे संसार की नींव से ही तैयार किया गया है । और देखो मैं ही हूँ जिसने इसे कहा है । आमीन ।

Therefore, when ye shall receive this record ye may know that the work of the Father has commenced upon all the face of the land.

Therefore, repent all ye ends of the earth, and come unto me, and believe in my gospel, and be baptized in my name; for he that believeth and is baptized shall be saved; but he that believeth not shall be damned; and signs shall follow them that believe in my name.

And blessed is he that is found faithful unto my name at the last day, for he shall be lifted up to dwell in the kingdom prepared for him from the foundation of the world. And behold it is I that hath spoken it. Amen.

## ईथर 5

- 1 और अब, मैं, मोरोनी ने अपनी स्मरणशक्ति के अनुसार, उन बातों को लिखा है जिन्हें लिखने की मुझे आज्ञा दी गई है; और मैंने उन बातों को तुम्हें बता दिया है जिन्हें मैंने मुहरबंद किया था; इसलिए उन्हें उस रीति से न छुओ कि तुम अनुवाद कर सको; क्योंकि परमेश्वर के ज्ञान में उसका समय आने तक, ऐसा करने के लिए तुम्हें मना किया गया है।
- 2 और देखो, तुम्हें इन पट्टियों को उन लोगों को दिखाने का सुअवसर मिलेगा जो इस कार्य को बाहर लाने में सहायता करेंगे।
- 3 और इन्हें तीन लोगों को परमेश्वर के सामर्थ्य द्वारा दिखाया जाएगा; इसलिए वे इस बात की निश्चितता को जानेंगे कि ये बातें सच्ची हैं।
- 4 और तीनों गवाहों के मुंह से ये बातें स्थापित होंगी; और तीनों की गवाहियां, और उसका कार्य जिसमें परमेश्वर का सामर्थ्य और उसका वचन बाहर लाया जाएगा, जिसका पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा अभिलेख रखेंगे—और ये सारी बातें अंतिम दिन में संसार के विरुद्ध एक गवाही के रूप में खड़ी होंगी।
- 5 और यदि ऐसा होगा कि वे पश्चात्ताप करेंगे और यीशु के नाम में पिता के पास आएंगे, उन्हें परमेश्वर के राज्य में स्वीकार किया जाएगा।
- 6 और अब, यदि इन बातों के लिए मेरे पास कोई अधिकार नहीं है, तो तुम न्याय करो; क्योंकि जब तुम मुझे देखोगे तो तुम जानोगे कि मेरे पास अधिकार है, और अंतिम दिन में हम परमेश्वर के समक्ष खड़े रहेंगे। आमीन।

## Ether 5

And now I, Moroni, have written the words which were commanded me, according to my memory; and I have told you the things which I have sealed up; therefore touch them not in order that ye may translate; for that thing is forbidden you, except by and by it shall be wisdom in God.

And behold, ye may be privileged that ye may show the plates unto those who shall assist to bring forth this work;

And unto three shall they be shown by the power of God; wherefore they shall know of a surety that these things are true.

And in the mouth of three witnesses shall these things be established; and the testimony of three, and this work, in the which shall be shown forth the power of God and also his word, of which the Father, and the Son, and the Holy Ghost bear record—and all this shall stand as a testimony against the world at the last day.

And if it so be that they repent and come unto the Father in the name of Jesus, they shall be received into the kingdom of God.

And now, if I have no authority for these things, judge ye; for ye shall know that I have authority when ye shall see me, and we shall stand before God at the last day. Amen.

## ईथर 6

- 1 और अब, मैं, मोरोनी येरेद और उसके भाई के अभिलेख को आगे बढ़ाता हूँ ।
- 2 क्योंकि ऐसा हुआ कि जब प्रभु ने उन पत्थरों को तैयार कर दिया जिसे येरेद का भाई पर्वत पर ले गया था, तब येरेद का भाई पर्वत से नीचे आया, और उन पत्थरों को उसने तैयार की हुई नौकाओं के प्रत्येक छोर पर एक-एक कर रख दिया; और देखो, उन्होंने नौकाओं को प्रकाशित किया ।
- 3 और इस प्रकार पुरुषों, स्त्रियों, और बच्चों को प्रकाश देने के लिए प्रभु ने अंधकार में पत्थरों को चमकाया, ताकि उन्हें उस महान जल को अंधकार में न पार करना पड़े ।
- 4 और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने हर प्रकार की भोजन सामग्री तैयार कर ली, जिससे कि इसके पश्चात वे जल पर निर्वाह कर सकें, और अपने जानवरों के समूहों और झुंडों के लिए भी भोजन सामग्री तैयार कर ली, और जो भी पशु या जानवर या पक्षी ले सकते थे उसे ले लिया—और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने यह सब कर लिया तो वे अपने नावों या नौकाओं में सवार हो गए, और अपने प्रभु परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए समुद्र में आगे बढ़ गए ।
- 5 और ऐसा हुआ कि प्रभु परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की हुई भूमि की तरफ जल में एक प्रचण्ड हवा को बहने दिया; और इस प्रकार हवा के सामने समुद्र की लहरों पर वे उछाले गए ।
- 6 और ऐसा हुआ कि उन पर्वतीय लहरों के कारण वे कई बार समुद्र की गहराइयों में दफनाए गए जिन्होंने उन पर प्रहार किया था, और उस विशाल और भयानक आंधी-तूफान के कारण भी जो कि हवा की प्रचण्डता के कारण आया था ।
- 7 और ऐसा हुआ कि जब वे गहराई में दफनाए गए तो वहां कोई जल नहीं था जो उन्हें नुकसान पहुंचा सके, उनकी नावें एक थाली के समान कसी हुई थी, और वे नूह की जहाज के समान भी कसी हुई थी; इसलिए वे बहुत से जल द्वारा घिर गए थे तो उन्होंने प्रभु से याचना की, और वह उन्हें फिर से जल के ऊपर ले आया ।
- 8 और ऐसा हुआ कि जब वे जल के ऊपर थे तब प्रतिज्ञा की हुई भूमि की तरफ बहती हुई हवा कभी भी नहीं रुकी; और इस प्रकार वे हवा के सामने से आगे की ओर धकेले गए ।

## Ether 6

And now I, Moroni, proceed to give the record of Jared and his brother.

For it came to pass after the Lord had prepared the stones which the brother of Jared had carried up into the mount, the brother of Jared came down out of the mount, and he did put forth the stones into the vessels which were prepared, one in each end thereof; and behold, they did give light unto the vessels.

And thus the Lord caused stones to shine in darkness, to give light unto men, women, and children, that they might not cross the great waters in darkness.

And it came to pass that when they had prepared all manner of food, that thereby they might subsist upon the water, and also food for their flocks and herds, and whatsoever beast or animal or fowl that they should carry with them—and it came to pass that when they had done all these things they got aboard of their vessels or barges, and set forth into the sea, commending themselves unto the Lord their God.

And it came to pass that the Lord God caused that there should be a furious wind blow upon the face of the waters, towards the promised land; and thus they were tossed upon the waves of the sea before the wind.

And it came to pass that they were many times buried in the depths of the sea, because of the mountain waves which broke upon them, and also the great and terrible tempests which were caused by the fierceness of the wind.

And it came to pass that when they were buried in the deep there was no water that could hurt them, their vessels being tight like unto a dish, and also they were tight like unto the ark of Noah; therefore when they were encompassed about by many waters they did cry unto the Lord, and he did bring them forth again upon the top of the waters.

And it came to pass that the wind did never cease to blow towards the promised land while they were upon the waters; and thus they were driven forth before the wind.

- 9 और उन्होंने प्रभु की स्तुति गाई; हां, येरेद के भाई ने प्रभु की स्तुति गाई, और वह पूरे दिन प्रभु को धन्यवाद देता रहा और उसकी स्तुति करता रहा; और जब रात हुई, उन्होंने प्रभु की स्तुति करना बंद नहीं किया ।
- 10 और इस प्रकार वे आगे की ओर धकेले गए; और न तो कोई भी समुद्री दैत्य उन्हें रोक सका, न ही कोई क्लेल उन्हें हानि पहुंचा सकी; और उनके पास निरंतर प्रकाश रहा, चाहे वे जल के ऊपर थे या जल के नीचे ।
- 11 और इस प्रकार जल के ऊपर तीन सौ चौवालीस दिनों तक रहते हुए वे आगे की ओर धकेले गए ।
- 12 और वे प्रतिज्ञा की हुई भूमि के किनारे पर उतरे । और जब उन्होंने अपने पैरों को प्रतिज्ञा की हुई भूमि के किनारों पर रखा तो उन्होंने अपने आपको धरती पर झुकाया, और प्रभु के सामने स्वयं को विनम्र किया, और प्रभु के सामने खुशी के आंसू बहाए क्योंकि उसने बहुतायत में उन पर उदारतापूर्वक दया दिखाई थी ।
- 13 और ऐसा हुआ कि वे धरती पर आगे की ओर बढ़ गए, और धरती को जोतने लगे ।
- 14 और येरेद के चार बेटे थे; और उनके नाम थे जाकोम, गिलगा, और महा, और ओरिहा थे ।
- 15 और येरेद के भाई के भी बेटे और बेटियां हुईं ।
- 16 और येरेद और उसके भाई के मित्रों की संख्या लगभग बाईस थी; और प्रतिज्ञा की भूमि पर आने से पहले ही उनके पास भी बेटे और बेटियां थीं; और इसलिए उनकी संख्या बढ़ने लगी ।
- 17 और उन्हें प्रभु के सामने विनम्रता से चलना सिखाया गया था; और उन्हें स्वर्ग से भी सिखाया गया था ।
- 18 और ऐसा हुआ कि वे प्रदेश में फैलने लगे, और उनकी संख्या बढ़ने लगी और वे धरती को जोतने लगे; और वे प्रदेश में मजबूत हुए ।
- 19 और येरेद का भाई बूढ़ा होने लगा, और देखा कि उसे शीघ्र ही कब्र में जाना होगा; इसलिए उसने येरेद से कहा: चलो अपने लोगों को एकत्रित करें ताकि हम उन्हें गिन सकें, जिससे हम उनसे जान सकेंगे कि हमारे कब्र में जाने से पहले वे हमसे क्या चाहेंगे ।

And they did sing praises unto the Lord; yea, the brother of Jared did sing praises unto the Lord, and he did thank and praise the Lord all the day long; and when the night came, they did not cease to praise the Lord.

And thus they were driven forth; and no monster of the sea could break them, neither whale that could mar them; and they did have light continually, whether it was above the water or under the water.

And thus they were driven forth, three hundred and forty and four days upon the water.

And they did land upon the shore of the promised land. And when they had set their feet upon the shores of the promised land they bowed themselves down upon the face of the land, and did humble themselves before the Lord, and did shed tears of joy before the Lord, because of the multitude of his tender mercies over them.

And it came to pass that they went forth upon the face of the land, and began to till the earth.

And Jared had four sons; and they were called Jacom, and Gilgah, and Mahah, and Orihah.

And the brother of Jared also begat sons and daughters.

And the friends of Jared and his brother were in number about twenty and two souls; and they also begat sons and daughters before they came to the promised land; and therefore they began to be many.

And they were taught to walk humbly before the Lord; and they were also taught from on high.

And it came to pass that they began to spread upon the face of the land, and to multiply and to till the earth; and they did wax strong in the land.

And the brother of Jared began to be old, and saw that he must soon go down to the grave; wherefore he said unto Jared: Let us gather together our people that we may number them, that we may know of them what they will desire of us before we go down to our graves.

- 20 और इसके फलस्वरूप लोग एक साथ एकत्रित हुए । अब येरेद के भाई के बेटे और बेटियों की संख्या बाईस थी; और येरेद के बेटे और बेटियों की संख्या बारह थी, जिसमें उसके चार बेटे थे ।
- 21 और ऐसा हुआ कि उन्होंने अपने लोगों को गिना; और जब उन्होंने उन्हें गिन लिया उसके पश्चात उन्होंने उनसे पूछा कि उनके कब्र में जाने से पहले वे इनसे क्या चाहते थे ।
- 22 और ऐसा हुआ कि लोगों ने उनसे चाहा कि वे अपने बेटों में से एक को उनका राजा अभिषेक करें ।
- 23 और अब देखो, यह उनके लिए दुखद था । और येरेद के भाई ने उनसे कहा: निश्चित तौर पर यह बात दासता की तरफ ले जाती है ।
- 24 परन्तु येरेद ने अपने भाई से कहा: उनके पास एक राजा होने दो । और इसलिए उसने उनसे कहा: हमारे बेटों में से जिसे तुम चाहते हो उसे राजा के रूप में चुन लो ।
- 25 और ऐसा हुआ कि उन्होंने येरेद के भाई के पहिलौठे बेटे को चुन लिया; और उसका नाम था पगाग । और ऐसा हुआ कि उसने उनका राजा बनने से मना कर दिया । और लोग चाहते थे कि उसका पिता उसे बाध्य करे, परन्तु उसके पिता ने ऐसा नहीं किया; और उसने उन्हें आज्ञा दी कि उन्हें किसी भी व्यक्ति को उनका राजा बनने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए ।
- 26 और ऐसा हुआ कि उन्होंने पगाग के सारे भाइयों को चुना, और उन्होंने मना कर दिया ।
- 27 और ऐसा हुआ कि केवल एक को छोड़कर येरेद के सारे बेटों ने मना कर दिया; और ओरिहा को लोगों का राजा अभिषेक किया गया था ।
- 28 और वह शासन करने लगा, और लोग उन्नति करने लगे; और वे अत्याधिक धनी हो गए ।
- 29 और ऐसा हुआ कि येरेद की मृत्यु हो गई, और उसके भाई की भी ।
- 30 और ऐसा हुआ कि ओरिहा परमेश्वर के समाने विनम्र ही रहा, और याद रखा कि प्रभु ने उसके पिता के लिए कितने महान कार्य किये थे, और अपने लोगों को भी सिखाया कि प्रभु ने उनके पूर्वजों के लिए भी कितने महान कार्य किये थे ।

And accordingly the people were gathered together. Now the number of the sons and the daughters of the brother of Jared were twenty and two souls; and the number of sons and daughters of Jared were twelve, he having four sons.

And it came to pass that they did number their people; and after that they had numbered them, they did desire of them the things which they would that they should do before they went down to their graves.

And it came to pass that the people desired of them that they should anoint one of their sons to be a king over them.

And now behold, this was grievous unto them. And the brother of Jared said unto them: Surely this thing leadeth into captivity.

But Jared said unto his brother: Suffer them that they may have a king. And therefore he said unto them: Choose ye out from among our sons a king, even whom ye will.

And it came to pass that they chose even the first-born of the brother of Jared; and his name was Pagag. And it came to pass that he refused and would not be their king. And the people would that his father should constrain him, but his father would not; and he commanded them that they should constrain no man to be their king.

And it came to pass that they chose all the brothers of Pagag, and they would not.

And it came to pass that neither would the sons of Jared, even all save it were one; and Orihah was anointed to be king over the people.

And he began to reign, and the people began to prosper; and they became exceedingly rich.

And it came to pass that Jared died, and his brother also.

And it came to pass that Orihah did walk humbly before the Lord, and did remember how great things the Lord had done for his father, and also taught his people how great things the Lord had done for their fathers.

## ईथर 7

- 1 और ऐसा हुआ कि ओरिहा ने अपने पूरे समयकाल में प्रदेश पर धार्मिकता से न्याय किया, जिसका समयकाल बहुत अधिक था ।
- 2 और उसके बेटे और बेटियां हुईं; हां, उसके इकतीस बच्चे हुए, जिनमें से तेईस बेटे थे ।
- 3 और ऐसा हुआ कि उसकी वृद्धावस्था में किब नामक बेटा भी हुआ । और ऐसा हुआ कि उसके स्थान पर किब ने शासन किया; और किब से कोरिहर का जन्म हुआ ।
- 4 और जब कोरिहर बत्तीस वर्ष का था तब वह अपने पिता का विरोधी हो गया, और जाकर निहोर नामक प्रदेश में रहने लगा; और उसके बेटे और बेटियां हुईं, और वे बहुत सुंदर थे; इसलिए कोरिहर ने अपने पास कई लोगों को आकर्षित कर लिया ।
- 5 और जब उसने एक सेना एकत्रित कर ली तब वह मोरोन नामक प्रदेश चला आया जहां पर राजा रहता था, और उसने उसे बंदी बना लिया, जिससे येरेद के भाई का कथन पूरा हुआ कि वे दासता में लाए जाएंगे ।
- 6 अब मोरोन प्रदेश जिसमें राजा रहता था, वह उस स्थान के नजदीक था जिसे नफाई उजाड़ प्रदेश कहते थे ।
- 7 और ऐसा हुआ कि किब और उसके लोग, उसके बेटे कोरिहर की दासता में तब तक रहे जब तक कि वह बहुत बूढ़ा न हो गया; फिर भी, किब की वृद्धावस्था में उसका बेटा शूल हुआ, जब कि वह अब भी दासता में ही था ।
- 8 और ऐसा हुआ कि शूल अपने भाई से क्रोधित था; और शूल मजबूत हुआ, और एक शक्तिशाली पुरुष बन गया; और वह न्याय में भी शक्तिशाली था ।
- 9 इसलिए, वह एप्रैम की पहाड़ी पर आया, और उसने पहाड़ी से गलाकर उन लोगों के लिए इस्पात की तलवारें बनाईं जिन्हें वह अपने साथ लाया था; और जब उसने उन्हें तलवारों से सुसज्जित कर दिया तो वह निहोर नगर वापस आ गया, और अपने भाई कोरिहर से युद्ध किया, जिसके फलस्वरूप उसने राज्य हासिल कर लिया और उसे अपने पिता किब को फिर से दे दिया ।
- 10 और अब जो कार्य शूल ने किया था, उसके कारण उसके पिता ने राज्य उसे दे दिया; इसलिए वह अपने पिता के स्थान पर शासन करने लगा ।

## Ether 7

And it came to pass that Orihah did execute judgment upon the land in righteousness all his days, whose days were exceedingly many.

And he begat sons and daughters; yea, he begat thirty and one, among whom were twenty and three sons.

And it came to pass that he also begat Kib in his old age. And it came to pass that Kib reigned in his stead; and Kib begat Corihor.

And when Corihor was thirty and two years old he rebelled against his father, and went over and dwelt in the land of Nehor; and he begat sons and daughters, and they became exceedingly fair; wherefore Corihor drew away many people after him.

And when he had gathered together an army he came up unto the land of Moron where the king dwelt, and took him captive, which brought to pass the saying of the brother of Jared that they would be brought into captivity.

Now the land of Moron, where the king dwelt, was near the land which is called Desolation by the Nephites.

And it came to pass that Kib dwelt in captivity, and his people under Corihor his son, until he became exceedingly old; nevertheless Kib begat Shule in his old age, while he was yet in captivity.

And it came to pass that Shule was angry with his brother; and Shule waxed strong, and became mighty as to the strength of a man; and he was also mighty in judgment.

Wherefore, he came to the hill Ephraim, and he did molten out of the hill, and made swords out of steel for those whom he had drawn away with him; and after he had armed them with swords he returned to the city Nehor, and gave battle unto his brother Corihor, by which means he obtained the kingdom and restored it unto his father Kib.

And now because of the thing which Shule had done, his father bestowed upon him the kingdom; therefore he began to reign in the stead of his father.

- 11 और ऐसा हुआ कि उसने धार्मिकता से न्याय किया; और उसने पूरे प्रदेश में अपना राज्य फैला दिया क्योंकि लोगों की संख्या बहुत अधिक हो गई थी ।
- 12 और ऐसा हुआ कि शूल के भी कई बेटे और बेटियां हुईं ।
- 13 और कोरिहर में उन कई बुराइयों के लिए पश्चाताप किया जिसे उसने किया था; इसलिए शूल ने अपने राज्य में उसे अधिकार दिया ।
- 14 और ऐसा हुआ कि कोरिहर के कई बेटे और बेटियां थे । और कोरिहर के बेटों में एक था जिसका नाम नूह था ।
- 15 और ऐसा हुआ कि नूह, राजा शूल के, और अपने पिता कोरिहर के भी विरुद्ध हो गया और अपने भाई कोहोर को, और अपने सारे भाइयों और कई अन्य लोगों को अपनी तरफ कर लिया ।
- 16 और उसने राजा शूल से युद्ध किया जिसके तहत उसने धरोहर की अपनी पहली भूमि को फिर से प्राप्त कर लिया; और प्रदेश के उस भाग का राजा बन गया ।
- 17 और ऐसा हुआ कि उसने राजा शूल से युद्ध किया; और उसने राजा शूल को बंदी बना लिया, और उसे बंधक बनाकर मोरोन ले गया ।
- 18 और ऐसा हुआ कि जब वह उसे मृत्युदंड देने वाला था, रात को दूबे पांव नूह के घर में घुसकर शूल के बेटे ने उसका वध कर दिया, और बंदीगृह के दरवाजे को तोड़ डाला और अपने पिता को बाहर लाया, और अपने स्वयं के राज्य में उसे राजगद्दी पर बिठा दिया ।
- 19 इसलिए, नूह के बेटे ने उसके स्थान पर अपने राज्य का निर्माण किया; फिर भी उन्होंने राजा शूल पर कभी भी अधिकार प्राप्त नहीं किया, और जो लोग शूल के शासन के तहत थे उन्होंने बहुत उन्नति की और मजबूत हुए ।
- 20 और देश विभाजित हो गया था; और दो राज्य हो गए थे, शूल का राज्य और नूह के बेटे कोहोर का राज्य ।
- 21 और नूह के बेटे कोहोर ने लोगों से शूल के विरुद्ध युद्ध करवाया, जिसमें शूल ने उन्हें हरा दिया और कोहोर की हत्या कर दी ।
- 22 और अब कोहोर का एक बेटा था जिसका नाम निम्रोद था; और निम्रोद ने कोहोर का राज्य शूल को दे दिया, और वह शूल की नजर में कृपादृष्टि का पात्र बना; इसलिए शूल ने उस पर भारी कृपादृष्टि दिखाई, और उसने शूल के राज्य में उसकी इच्छा के अनुसार कार्य किया ।

And it came to pass that he did execute judgment in righteousness; and he did spread his kingdom upon all the face of the land, for the people had become exceedingly numerous.

And it came to pass that Shule also begat many sons and daughters.

And Corihor repented of the many evils which he had done; wherefore Shule gave him power in his kingdom.

And it came to pass that Corihor had many sons and daughters. And among the sons of Corihor there was one whose name was Noah.

And it came to pass that Noah rebelled against Shule, the king, and also his father Corihor, and drew away Cohor his brother, and also all his brethren and many of the people.

And he gave battle unto Shule, the king, in which he did obtain the land of their first inheritance; and he became a king over that part of the land.

And it came to pass that he gave battle again unto Shule, the king; and he took Shule, the king, and carried him away captive into Moron.

And it came to pass as he was about to put him to death, the sons of Shule crept into the house of Noah by night and slew him, and broke down the door of the prison and brought out their father, and placed him upon his throne in his own kingdom.

Wherefore, the son of Noah did build up his kingdom in his stead; nevertheless they did not gain power any more over Shule the king, and the people who were under the reign of Shule the king did prosper exceedingly and wax great.

And the country was divided; and there were two kingdoms, the kingdom of Shule, and the kingdom of Cohor, the son of Noah.

And Cohor, the son of Noah, caused that his people should give battle unto Shule, in which Shule did beat them and did slay Cohor.

And now Cohor had a son who was called Nimrod; and Nimrod gave up the kingdom of Cohor unto Shule, and he did gain favor in the eyes of Shule; wherefore Shule did bestow great favors upon him, and he did do in the kingdom of Shule according to his desires.

- 23 और शूल के राज्य में भी लोगों के बीच भविष्यवक्ता आए, जिन्हें प्रभु की ओर से यह भविष्यवाणी करने के लिए भेजा गया था कि दुष्टता और लोगों द्वारा किये जानेवाले मूर्तिपूजा प्रदेश पर श्राप ला रहे थे, और वे नष्ट हो जाएंगे यदि वे पश्चाताप नहीं करते हैं ।
- 24 और ऐसा हुआ कि लोगों ने भविष्यवक्ताओं के खिलाफ बुरा-भला कहा, और उनका मजाक उड़ाया । और ऐसा हुआ कि राजा शूल ने उन लोगों के विरुद्ध न्याय किया जिन्होंने भविष्यवक्ताओं के खिलाफ बुरा-भला कहा था ।
- 25 और उसने पूरे प्रदेश में एक नियम का प्रबंध किया, जिसके तहत भविष्यवक्ताओं को अधिकार दिया गया कि वे जहां भी जाना चाहें, जा सकते हैं; और इस कारण लोगों पर पश्चाताप लाया गया ।
- 26 और क्योंकि लोगों ने अपनी बुराइयों और मूर्तिपूजा के लिए पश्चाताप किया, प्रभु ने उन्हें क्षमा कर दिया और प्रदेश में वे फिर से उन्नति करने लगे । और ऐसा हुआ कि शूल की वृद्धावस्था में उसके बेटे और बेटियां हुईं ।
- 27 और शूल के दिनों में और कोई युद्ध नहीं हुआ; और प्रतिज्ञा किये हुए देश में लाने के लिए गहरे सागर को पार करते समय जो महान कार्य प्रभु ने उसके पूर्वजों के प्रति किये थे, उसे उसने याद रखा; इसलिए उसने अपने पूरे समयकाल में धार्मिकता से न्याय किया ।

And also in the reign of Shule there came prophets among the people, who were sent from the Lord, prophesying that the wickedness and idolatry of the people was bringing a curse upon the land, and they should be destroyed if they did not repent.

And it came to pass that the people did revile against the prophets, and did mock them. And it came to pass that king Shule did execute judgment against all those who did revile against the prophets.

And he did execute a law throughout all the land, which gave power unto the prophets that they should go whithersoever they would; and by this cause the people were brought unto repentance.

And because the people did repent of their iniquities and idolatries the Lord did spare them, and they began to prosper again in the land. And it came to pass that Shule begat sons and daughters in his old age.

And there were no more wars in the days of Shule; and he remembered the great things that the Lord had done for his fathers in bringing them across the great deep into the promised land; wherefore he did execute judgment in righteousness all his days.



## ईथर 8

- 1 और ऐसा हुआ कि उससे ओमर हुआ, और ओमर ने उसके स्थान पर शासन किया। और ओमर से येरेद हुआ; और येरेद के बेटे और बेटियाँ हुईं।
- 2 और येरेद अपने पिता के विरुद्ध हो गया, और आकर हेथ नामक प्रदेश में रहने लगा। और ऐसा हुआ कि उसने कई लोगों को अपनी धूर्तता भरी बातों से तब तक बहलाया-फुसलाया जब तक कि उसने आधे राज्य पर कब्जा न कर लिया।
- 3 और जब उसने आधे राज्य पर कब्जा कर लिया तब उसने अपने पिता से युद्ध किया, और उसने अपने पिता को बंदी बना लिया, और उससे दासता में सेवा करवाई;
- 4 और अब, ओमर के शासनकाल में उसने अपने जीवन का आधा समय दासता में बिताया। और ऐसा हुआ कि उसके बेटे और बेटियाँ हुईं, जिनमें इसरोम और कोरियंटूमर थे।
- 5 और वे अपने भाई येरेद की करतूतों के कारण बहुत क्रोधित थे; इतना अधिक कि उन्होंने एक सेना खड़ी की और येरेद से युद्ध किया। और ऐसा हुआ कि उन्होंने उसके साथ रात में युद्ध किया।
- 6 और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने येरेद की सेना को नष्ट कर दिया तब वे उसकी भी हत्या करनेवाले थे; और उसने उनसे विनती की कि वे उसे न मारें, और वह अपना राज्य अपने पिता को दे देगा। और ऐसा हुआ कि उन्होंने उसे जीवनदान दिया।
- 7 और अब राज्य के खो जाने के कारण येरेद अत्याधिक दुखी हुआ, क्योंकि उसने अपना हृदय राज्य और संसार के वैभव पर लगा रखा था।
- 8 अब येरेद की बेटी बहुत निपुण थी, और अपने पिता के दुख को देखा, तो उसने एक योजना पर विचार किया जिसके तहत वह अपने पिता का राज्य वापस ले सकती थी।
- 9 अब येरेद की बेटी बहुत सुंदर थी। और ऐसा हुआ कि उसने अपने पिता से बात की, और उससे पूछा: मेरे पिता किस कारण इतने दुखी हैं? क्या उन्होंने वह अभिलेख नहीं पढ़ा है जिसे हमारे पूर्वज गहरे सागर को पार कर ले आए थे? देखो, क्या उनकी वृद्धावस्था से संबंधित विवरण नहीं दिया गया है, कि वे अपनी गुप्त योजनाओं के द्वारा राज्य और महाव वैभव प्राप्त करेंगे?

## Ether 8

And it came to pass that he begat Omer, and Omer reigned in his stead. And Omer begat Jared; and Jared begat sons and daughters.

And Jared rebelled against his father, and came and dwelt in the land of Heth. And it came to pass that he did flatter many people, because of his cunning words, until he had gained the half of the kingdom.

And when he had gained the half of the kingdom he gave battle unto his father, and he did carry away his father into captivity, and did make him serve in captivity;

And now, in the days of the reign of Omer he was in captivity the half of his days. And it came to pass that he begat sons and daughters, among whom were Esrom and Coriantumr;

And they were exceedingly angry because of the doings of Jared their brother, insomuch that they did raise an army and gave battle unto Jared. And it came to pass that they did give battle unto him by night.

And it came to pass that when they had slain the army of Jared they were about to slay him also; and he pled with them that they would not slay him, and he would give up the kingdom unto his father. And it came to pass that they did grant unto him his life.

And now Jared became exceedingly sorrowful because of the loss of the kingdom, for he had set his heart upon the kingdom and upon the glory of the world.

Now the daughter of Jared being exceedingly expert, and seeing the sorrows of her father, thought to devise a plan whereby she could redeem the kingdom unto her father.

Now the daughter of Jared was exceedingly fair. And it came to pass that she did talk with her father, and said unto him: Whereby hath my father so much sorrow? Hath he not read the record which our fathers brought across the great deep? Behold, is there not an account concerning them of old, that they by their secret plans did obtain kingdoms and great glory?

- 10 और अब, इसलिए, मेरे पिता मुझे किमनोर के बेटे अकिस के पास भेजेंगे; और देखो, मैं सुंदर हूँ, और मैं उसके सामने नृत्य करूँगी, और उसे प्रसन्न करूँगी, जिससे कि वह मुझे पत्नी बनाना चाहेगा; इसलिए वह आप से चाहेगा कि आप मुझे उसे उसकी पत्नी के रूप में दें, तब आप कहेंगे: मैं इसे तुम्हें तब दूँगा जब तुम मेरे पास मेरे पिता, यानि की राजा का सिर लाओगे ।
- 11 और अब ओमर अकिश का मित्र था; इसलिए, जब येरेद ने अकिश के लिए संदेश भेजा, येरेद की बेटी ने उसके सामने नृत्य किया जिससे कि वह उसे लुभा सके, इतना अधिक कि वह उसे अपनी पत्नी बना ले । और ऐसा हुआ कि उसने येरेद से कहा: इसे मुझे पत्नी के रूप में दे दो ।
- 12 और येरेद ने उससे कहा: मैं इसे तुम्हें दे दूँगा यदि तुम मेरे पास मेरे पिता यानि कि राजा का सिर लाओ ।
- 13 और ऐसा हुआ कि अकिश ने येरेद के घर पर अपने सारे सगे-संबंधियों को एकत्रित किया, और उनसे कहा: क्या तुम सब सौगंध लेते हो कि जो भी मैं तुम लोगों से चाहूँगा उसमें तुम मेरे प्रति विश्वासी रहोगे ?
- 14 और ऐसा हुआ कि उन सब ने स्वर्ग के परमेश्वर, और स्वर्गों, और पृथ्वी, और अपने सिरों की भी सौगंध ली कि जो भी सहायता अकिश उनसे चाहता है, उससे यदि कोई पलटेगा तो उसका सिर काट दिया जाएगा; और जो कुछ भी अकिश ने उन्हें बताया है, यदि उस बात को कोई भी प्रकट करेगा तो उसका जीवन भी समाप्त कर दिया जाएगा ।
- 15 और ऐसा हुआ कि इस प्रकार वे अकिश के साथ सहमत हो गए । और अकिश ने उनसे वैसे ही शपथ भी ली जैसे कि प्राचीन समय के लोग लेते थे जो बल प्राप्त करना चाहते थे, जो उस कैन के समय से चलती आई थी जो कि आरंभ के समय का एक हत्यारा था ।
- 16 और लोगों के लिए इन शपथ को शैतान के बल द्वारा बचाकर रखा गया था, उन्हें अंधकार में रखने के लिए, बल प्राप्त करने में इस प्रकार के लोगों की सहायता के लिए, और हत्या करने के लिए, और लूटपाट करने के लिए, और झूठ बोलने के लिए, और हर प्रकार की दुष्टता और वेश्यावृत्ति करने के लिए ।
- 17 और येरेद की बेटी ही थी जिसने उसके हृदय में इसे डाला जिससे कि वह प्राचीन समय की इन बातों का पता करे; और इसी कारण अकिश जो करना चाहता था उसके लिए, अपने रिश्तेदारों से हसीन प्रतिज्ञाएं कर उन्हें गुमराह किया ।

And now, therefore, let my father send for Akish, the son of Kimnor; and behold, I am fair, and I will dance before him, and I will please him, that he will desire me to wife; wherefore if he shall desire of thee that ye shall give unto him me to wife, then shall ye say: I will give her if ye will bring unto me the head of my father, the king.

And now Omer was a friend to Akish; wherefore, when Jared had sent for Akish, the daughter of Jared danced before him that she pleased him, insomuch that he desired her to wife. And it came to pass that he said unto Jared: Give her unto me to wife.

And Jared said unto him: I will give her unto you, if ye will bring unto me the head of my father, the king.

And it came to pass that Akish gathered in unto the house of Jared all his kinsfolk, and said unto them: Will ye swear unto me that ye will be faithful unto me in the thing which I shall desire of you?

And it came to pass that they all sware unto him, by the God of heaven, and also by the heavens, and also by the earth, and by their heads, that whoso should vary from the assistance which Akish desired should lose his head; and whoso should divulge whatsoever thing Akish made known unto them, the same should lose his life.

And it came to pass that thus they did agree with Akish. And Akish did administer unto them the oaths which were given by them of old who also sought power, which had been handed down even from Cain, who was a murderer from the beginning.

And they were kept up by the power of the devil to administer these oaths unto the people, to keep them in darkness, to help such as sought power to gain power, and to murder, and to plunder, and to lie, and to commit all manner of wickedness and whoredoms.

And it was the daughter of Jared who put it into his heart to search up these things of old; and Jared put it into the heart of Akish; wherefore, Akish administered it unto his kindred and friends, leading them away by fair promises to do whatsoever thing he desired.

- 18 और ऐसा हुआ कि प्राचीन समय के लोगों के समान, उन्होंने एक गुप्त गठबंधन बनाया; वह गठबंधन जो कि परमेश्वर की दृष्टि में सबसे अधिक घृणित और बुरा था ।
- 19 क्योंकि प्रभु गुप्त गठबंधन में कार्य नहीं करता है, न ही वह चाहेगा कि मनुष्य का लहू बहे, परन्तु मनुष्य की उत्पत्ति के समय से ही, हर काम में ऐसा करना मना है ।
- 20 और अब, मैं, मोरोनी, उनकी शपथ और गठबंधनों की रीति के विषय में नहीं लिख रहा हूँ, क्योंकि इस बात की जानकारी मुझे दी गई थी कि ऐसा सारे लोगों में हो चुका है, और ऐसा लमनाइयों के बीच हो चुका है ।
- 21 और इससे इन लोगों का विनाश हुआ जिनके विषय में मैं इस समय बता रहा हूँ, और नफी के लोगों का भी विनाश हुआ ।
- 22 और जो भी राष्ट्र बल और लाभ के लिए इस प्रकार के गुप्त गठबंधनों का तब तक समर्थन करेगा जब तक कि यह पूरे राष्ट्र में फैल न जाए, देखो, वे नष्ट हो जाएंगे; क्योंकि प्रभु नहीं चाहेगा कि उसके संतों का लहू इन लोगों के द्वारा बहाया जाए, जो इनसे बदला लेने के लिए धरती से उसे पुकारेंगे और तब भी वह उनसे बदला न लेगा ।
- 23 इसलिए, हे तुम अन्य जातियों, यह परमेश्वर में समझ की बात है कि इन बातों को तुम्हें दिखाया जाए, ताकि इसके पश्चात तुम अपने पापों का पश्चाताप कर सको, और ऐसा न होने दो कि इस प्रकार के हिंसक गठबंधन तुमसे ऊपर हो, जिन्हें बल और लाभ—और कार्य को प्राप्त करने के लिए बनाया गया है, हां, विनाश का कार्य तुम पर आता है, हां, तुम्हारे तख्ता पलट और विनाश के लिए अनंत परमेश्वर के न्याय की तलवार भी तुम पर गिरेगी यदि तुम इन कार्यों को होने दोगे ।
- 24 इसलिए, प्रभु तुम्हें आज्ञा देता है, कि जब तुम इन बातों को अपने पर आते देखोगे तब तुम्हें अपनी खराब स्थिति का बोध होगा, जो इस गुप्त गठबंधन के कारण तुम्हारे बीच में होगा; या उन लोगों के लहू के कारण श्राप लगेगा जो मारे गए हैं; क्योंकि इसका बदला लेने के लिए वे मिट्टी में से पुकारेंगे, और उन लोगों पर भी श्राप आएगा जिन्होंने इसे बनाया है ।

And it came to pass that they formed a secret combination, even as they of old; which combination is most abominable and wicked above all, in the sight of God;

For the Lord worketh not in secret combinations, neither doth he will that man should shed blood, but in all things hath forbidden it, from the beginning of man.

And now I, Moroni, do not write the manner of their oaths and combinations, for it hath been made known unto me that they are had among all people, and they are had among the Lamanites.

And they have caused the destruction of this people of whom I am now speaking, and also the destruction of the people of Nephi.

And whatsoever nation shall uphold such secret combinations, to get power and gain, until they shall spread over the nation, behold, they shall be destroyed; for the Lord will not suffer that the blood of his saints, which shall be shed by them, shall always cry unto him from the ground for vengeance upon them and yet he avenge them not.

Wherefore, O ye Gentiles, it is wisdom in God that these things should be shown unto you, that thereby ye may repent of your sins, and suffer not that these murderous combinations shall get above you, which are built up to get power and gain—and the work, yea, even the work of destruction come upon you, yea, even the sword of the justice of the Eternal God shall fall upon you, to your overthrow and destruction if ye shall suffer these things to be.

Wherefore, the Lord commandeth you, when ye shall see these things come among you that ye shall awake to a sense of your awful situation, because of this secret combination which shall be among you; or wo be unto it, because of the blood of them who have been slain; for they cry from the dust for vengeance upon it, and also upon those who built it up.

25 क्योंकि ऐसा होता है कि जो कोई भी इसे बनाता है वह सारी धरती, सारे राष्ट्रों, और देशों की स्वतंत्रता हटाना चाहता है; वह सारे लोगों पर विनाश लाता है, क्योंकि इसे उस शैतान द्वारा बनाया गया है जो कि सारे झूठ का पिता है; वही झूठा जिसने हमारे प्रथम माता-पिता को बहलाया था, हां, वही झूठा है जिसने आरंभ के समय से ही मनुष्य को हत्या करने के लिए उकसाया था; जिसने लोगों के हृदयों को कठोर कर दिया था जिससे कि आरंभ से ही उन्होंने भविष्यवक्ताओं की हत्या कर दी, और उन पर पत्थरवाह किया, और उन्हें निकाल दिया ।

26 इसलिए, मुझे, मोरोनी को इन बातों को लिखने की आज्ञा दी गई है कि बुराई को त्याग दिया जाए, और वह समय आए जब शैतान का मानव संतानों के हृदयों पर कोई अधिकार न हो, परन्तु निरंतर भलाई करने के लिए उन्हें राजी किया जा सके, ताकि वे सारी धार्मिकता के सोते के पास आ सकें और बचाए जाएं ।

For it cometh to pass that whoso buildeth it up seeketh to overthrow the freedom of all lands, nations, and countries; and it bringeth to pass the destruction of all people, for it is built up by the devil, who is the father of all lies; even that same liar who beguiled our first parents, yea, even that same liar who hath caused man to commit murder from the beginning; who hath hardened the hearts of men that they have murdered the prophets, and stoned them, and cast them out from the beginning.

Wherefore, I, Moroni, am commanded to write these things that evil may be done away, and that the time may come that Satan may have no power upon the hearts of the children of men, but that they may be persuaded to do good continually, that they may come unto the fountain of all righteousness and be saved.

## ईथर 9

- 1 और अब, मैं, मोरोनी, अपने अभिलेख को आगे बढ़ाता हूँ। इसलिए, देखो, ऐसा हुआ कि अकिश और उसके मित्रों के गुप्त गठबंधनों के कारण, देखो, उन्होंने ओमर के राज्य का तख्ता पलट कर दिया।
- 2 फिर भी, प्रभु ओमर के प्रति दयालु था, और उसके उन बेटों और बेटियों के प्रति भी जो उसका विनाश नहीं चाहते थे।
- 3 और प्रभु ने सपने में ओमर को चेतावनी दी कि उसे प्रदेश से बाहर चला जाना चाहिए; इसलिए ओमर अपने परिवार के साथ प्रदेश से बाहर चला गया, और कई दिनों तक यात्रा की, और शिम नामक पहाड़ी पर आया और वहाँ से आगे निकल गया, और उस स्थान पर पहुँचा जहाँ नफाई मारे गए थे, और वहाँ से पूर्व दिशा की ओर गया, और सुमद्रतट से लगे एबलॉम नामक स्थान पर पहुँचा, और वहाँ पर उसने येरेद और उसके परिवार के अलावा, अपने और अपने बेटे और बेटियों, और अपने सारे घराने के लिए तंबू लगाया।
- 4 और ऐसा हुआ कि अनैतिकता के हाथों द्वारा, येरेद को लोगों का राजा अभिषेक किया गया; और उसने अकिश को अपनी बेटी पत्नी के रूप में दे दी।
- 5 और ऐसा हुआ कि अकिश अपने ससुर को मारना चाहता था; और उसने उन लोगों से सहायता मांगी जिनसे उसने प्राचीन समय के लोगों के समान शपथ ली थी, और वे उसके ससुर का सिर ले आए जब वह उसकी राजगद्दी पर बैठकर उसके लोगों से औपचारिकता निभा रहा था।
- 6 यह बुराई और गुप्त समाज इतना अधिक फैल चुका था कि इसने सारे लोगों के हृदयों को भ्रष्ट कर दिया; इसलिए राजगद्दी के लिए येरेद की हत्या कर दी गई, और अकिश ने उसके स्थान पर शासन किया।
- 7 और ऐसा हुआ कि अकिश अपने बेटे से ईर्ष्या करने लगा, इसलिए उसने उसे बंदीगृह में डाल दिया, और उसे तब तक थोड़ा या न के बराबर भोजन दिया जब तक कि वह मर न गया।
- 8 और अब जिसकी मृत्यु हो चुकी थी, उसका भाई (और उसका नाम निम्राह था), उसके पिता ने उसके भाई के साथ जो भी किया था उस कारण वह अपने पिता से क्रोधित था।
- 9 और ऐसा हुआ कि उस निम्राह ने कुछ लोगों को एकत्रित किया, और प्रदेश से भाग गया, और आकर ओमर के साथ रहने लगा।

## Ether 9

And now I, Moroni, proceed with my record. Therefore, behold, it came to pass that because of the secret combinations of Akish and his friends, behold, they did overthrow the kingdom of Omer.

Nevertheless, the Lord was merciful unto Omer, and also to his sons and to his daughters who did not seek his destruction.

And the Lord warned Omer in a dream that he should depart out of the land; wherefore Omer departed out of the land with his family, and traveled many days, and came over and passed by the hill of Shim, and came over by the place where the Nephites were destroyed, and from thence eastward, and came to a place which was called Ablom, by the seashore, and there he pitched his tent, and also his sons and his daughters, and all his household, save it were Jared and his family.

And it came to pass that Jared was anointed king over the people, by the hand of wickedness; and he gave unto Akish his daughter to wife.

And it came to pass that Akish sought the life of his father-in-law; and he applied unto those whom he had sworn by the oath of the ancients, and they obtained the head of his father-in-law, as he sat upon his throne, giving audience to his people.

For so great had been the spreading of this wicked and secret society that it had corrupted the hearts of all the people; therefore Jared was murdered upon his throne, and Akish reigned in his stead.

And it came to pass that Akish began to be jealous of his son, therefore he shut him up in prison, and kept him upon little or no food until he had suffered death.

And now the brother of him that suffered death, (and his name was Nimrah) was angry with his father because of that which his father had done unto his brother.

And it came to pass that Nimrah gathered together a small number of men, and fled out of the land, and came over and dwelt with Omer.

- 10 और ऐसा हुआ कि उस अकिश के और बेटे हुए, और उन्होंने लोगों के हृदयों को जीत लिया, फिर भी जैसा वह चाहता था उसके अनुसार, हर प्रकार की बुराई करने के लिए उन्होंने उससे सौगंध ली ।
- 11 अब अकिश के लोग लाभ प्राप्त करना चाहते थे, वैसे ही जैसे कि अकिश बल प्राप्त करना चाहता था; इसलिए, अकिश के बेटों ने उन्हें धन दिया, जिससे वे अधिक से अधिक लोगों को अपनी तरफ खींच लाए ।
- 12 और वहां पर अकिश के बेटों और अकिश के बीच युद्ध होने लगा, जो कि कई वर्षों तक चलता रहा, हां, तब तक जब तक कि राज्य के सारे लोग लगभग मारे न जा चुके, हां, यहां तक कि सारे, केवल तीस लोगों को छोड़कर, और ये वही लोग थे जो ओमर के घराने के साथ भाग गए थे ।
- 13 इसलिए, ओमर फिर से अपने उत्तराधिकार के प्रदेश पर स्थापित हुआ ।
- 14 और ऐसा हुआ कि ओमर वृद्ध होने लगा; फिर भी, उसकी वृद्धावस्था में उससे ईमर उत्पन्न हुआ; और उसने ईमर को अपने स्थान पर राजा अभिषेक कर दिया ।
- 15 और जब उसने ईमर को राजा के रूप में अभिषेक कर दिया उसके पश्चात उसने प्रदेश में दो वर्षों तक शांति देखी, और बहुत से दुखभरे दिनों को देखने के पश्चात वह मर गया । और ऐसा हुआ कि ईमर ने उसके स्थान पर शासन किया, और अपने पिता के दिखाए मार्ग पर चला ।
- 16 और प्रभु ने प्रदेश से फिर श्राप वापस ले लिया, और ईमर के शासन के तहत ईमर का घराना बहुत संपन्न हुआ; और बासठ वर्षों में वे अत्याधिक मजबूत बन चुके थे, इतना अधिक कि वे बहुत धनी हो गए—
- 17 हर प्रकार के फल, और अनाज, और रेशम, और उत्तम लेनिन, और सोना, और चांदी, और मूल्यवान वस्तुओं को प्राप्त करते हुए;
- 18 और हर प्रकार के पशु, बैल, और गाय, और भेड़, और सूअर, और बकरियां भी हुईं, और अन्य कई प्रकार के जानवर भी हुए जो कि मनुष्यों के भोजन के लिए उपयोगी थे ।
- 19 और उनके पास घोड़े, और गधे, और हाथी और कुरेलोम और कूमोम नामक पशु थे; जो कि सारे ही मनुष्यों के लिए उपयोगी थे, और अधिकतर हाथी, और कुरेलोम और कूमोम उपयोगी थे ।

And it came to pass that Akish begat other sons, and they won the hearts of the people, notwithstanding they had sworn unto him to do all manner of iniquity according to that which he desired.

Now the people of Akish were desirous for gain, even as Akish was desirous for power; wherefore, the sons of Akish did offer them money, by which means they drew away the more part of the people after them.

And there began to be a war between the sons of Akish and Akish, which lasted for the space of many years, yea, unto the destruction of nearly all the people of the kingdom, yea, even all, save it were thirty souls, and they who fled with the house of Omer.

Wherefore, Omer was restored again to the land of his inheritance.

And it came to pass that Omer began to be old; nevertheless, in his old age he begat Emer; and he anointed Emer to be king to reign in his stead.

And after that he had anointed Emer to be king he saw peace in the land for the space of two years, and he died, having seen exceedingly many days, which were full of sorrow. And it came to pass that Emer did reign in his stead, and did fill the steps of his father.

And the Lord began again to take the curse from off the land, and the house of Emer did prosper exceedingly under the reign of Emer; and in the space of sixty and two years they had become exceedingly strong, insomuch that they became exceedingly rich—

Having all manner of fruit, and of grain, and of silks, and of fine linen, and of gold, and of silver, and of precious things;

And also all manner of cattle, of oxen, and cows, and of sheep, and of swine, and of goats, and also many other kinds of animals which were useful for the food of man.

And they also had horses, and asses, and there were elephants and cureloms and cumoms; all of which were useful unto man, and more especially the elephants and cureloms and cumoms.

- 20 और इस प्रकार प्रभु ने इस प्रदेश पर अपनी आशीर्षे उंडेल दी, जो कि सारे ही प्रदेशों में सबसे उत्तम था; और उसने आज्ञा दी कि जो कोई इस प्रदेश पर अधिकार रखे वह प्रभु के लिए रखे अन्यथा जब उनके पाप का घड़ा भर जाएगा तब उन्हें नष्ट कर दिया जाएगा; क्योंकि इस प्रकार के लोगों पर, प्रभु कहता है: मैं अपना संपूर्ण क्रोध उंडेल दूंगा ।
- 21 और ईमर ने अपने पूरे समयकाल में धार्मिकता से न्याय किया, और उसके कई बेटे और बेटियां हुए; और उससे कोरियंटम उत्पन्न हुआ, और उसने कोरियंटम को अपने स्थान पर शासन के लिए अभिषेक कर दिया ।
- 22 और कोरियंटम को अपने स्थान पर शासन करने के लिए अभिषेक करने के पश्चात वह चार वर्षों तक जीवित रहा, और उसने प्रदेश में शांति देखी; हां, उसने धार्मिकता के पुत्र को भी देखा, और अपने समय में आनंद और बड़ाई प्राप्त की; और वह शांति से मर गया ।
- 23 और ऐसा हुआ कि कोरियंटम अपने पिता के दिखाए मार्ग पर चला, और कई शक्तिशाली नगरों का निर्माण किया, और अपने समयकाल में वह किया जो उसके लोगों के लिए अच्छा था । और ऐसा हुआ कि उसके वृद्ध होने तक उसके पास कोई संतान नहीं थी ।
- 24 और ऐसा हुआ कि एक सौ दो वर्ष होने पर उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई । और ऐसा हुआ कि कोरियंटम ने अपनी वृद्धावस्था में एक युवा कन्या को पत्नी बना लिया, और उसके बेटे और बेटियां हुईं; इसलिए वह एक सौ बयालीस वर्ष तक जीवित रहा ।
- 25 और ऐसा हुआ कि उससे कोम उत्पन्न हुआ, और कोम ने उसके स्थान पर शासन किया; और उसने उनचास वर्ष तक शासन किया, उससे हेथ उत्पन्न हुआ; और उसके और भी बेटे और बेटियां हुईं ।
- 26 और फिर से लोग पूरे प्रदेश में फैल गए, और प्रदेश में फिर से अत्याधिक भारी दुष्टता फैलने लगी, और अपने पिता को नष्ट करने के लिए हेथ ने भी फिर से पुराने उपायों को अपनाया ।
- 27 और ऐसा हुआ कि उसने अपने पिता को राजगद्दी से उतार दिया, क्योंकि उसने उसे अपनी ही तलवार से मार डाला; और उसके स्थान पर शासन किया ।
- 28 और फिर से प्रदेश में भविष्यवक्ता आए, उन लोगों को पश्चाताप करने की घोषणा करते हुए—कि उन्हें प्रभु का मार्ग तैयार करना चाहिए अन्यथा प्रदेश पर श्राप आएगा; हां, यहां तक कि भारी अकाल पड़ेगा, जिसमें वे नष्ट हो जाएंगे यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे ।

And thus the Lord did pour out his blessings upon this land, which was choice above all other lands; and he commanded that whoso should possess the land should possess it unto the Lord, or they should be destroyed when they were ripened in iniquity; for upon such, saith the Lord: I will pour out the fulness of my wrath.

And Emer did execute judgment in righteousness all his days, and he begat many sons and daughters; and he begat Coriantum, and he anointed Coriantum to reign in his stead.

And after he had anointed Coriantum to reign in his stead he lived four years, and he saw peace in the land; yea, and he even saw the Son of Righteousness, and did rejoice and glory in his day; and he died in peace.

And it came to pass that Coriantum did walk in the steps of his father, and did build many mighty cities, and did administer that which was good unto his people in all his days. And it came to pass that he had no children even until he was exceedingly old.

And it came to pass that his wife died, being an hundred and two years old. And it came to pass that Coriantum took to wife, in his old age, a young maid, and begat sons and daughters; wherefore he lived until he was an hundred and forty and two years old.

And it came to pass that he begat Com, and Com reigned in his stead; and he reigned forty and nine years, and he begat Heth; and he also begat other sons and daughters.

And the people had spread again over all the face of the land, and there began again to be an exceedingly great wickedness upon the face of the land, and Heth began to embrace the secret plans again of old, to destroy his father.

And it came to pass that he did dethrone his father, for he slew him with his own sword; and he did reign in his stead.

And there came prophets in the land again, crying repentance unto them—that they must prepare the way of the Lord or there should come a curse upon the face of the land; yea, even there should be a great famine, in which they should be destroyed if they did not repent.

- 29 परन्तु लोगों ने भविष्यवक्ताओं की बातों पर विश्वास नहीं किया, बल्कि उन्होंने उन्हें बाहर निकाल दिया; और कुछ को तो उन्होंने गड्ढे में डालकर मरने के लिए छोड़ दिया। और ऐसा हुआ कि उन्होंने राजा हेथ की आज्ञानुसार यह सब कुछ किया।
- 30 और ऐसा हुआ कि प्रदेश में भारी अभाव होने लगा, और अभाव के कारण निवासी बड़ी तेजी से मरने लगे, क्योंकि धरती पर कहीं भी वर्षा नहीं हुई।
- 31 और इसके पश्चात प्रदेश में जहरीले सांप आ गए, और कई लोगों को काट लिया। और ऐसा हुआ कि उनके पशुओं के झुंड जहरीले सांपों के कारण प्रदेश की दक्षिणी दिशा की तरफ भागने लगे, जिसे नफाई जराहेमला कहते थे।
- 32 और ऐसा हुआ कि उनमें से कई मार्ग में ही मर गए; फिर भी, कुछ थे जो भागकर प्रदेश की दक्षिणी दिशा की तरफ चले गए।
- 33 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने सांपों को उनका पीछा करने से रोक दिया, परन्तु उनके द्वारा मार्ग को घेर लिया जिससे कि लोग वहां से निकल न सकें, कि जो कोई भी वहां से निकलने का प्रयास करे वह जहरीले सांपों द्वारा मारा जाए।
- 34 और ऐसा हुआ कि लोग पशुओं के पीछे-पीछे चलने लगे, और जो पशु मार्ग में मर जाते थे, वे उनके शवों को तब तक खाते जब तक कि उन्होंने सबको खा न लिया। अब जब लोगों ने देखा कि वे नष्ट हो जाएंगे तो वे अपने बुरे कर्मों का पश्चाताप करने लगे और प्रभु को पुकारने लगे।
- 35 और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने पर्याप्त रूप से स्वयं को प्रभु के सामने विनम्र कर लिया तो प्रभु ने धरती पर वर्षा की; और लोग फिर से संभलने लगे, और उत्तरी देशों में, और उसके आसपास के देशों में फल उगाने लगे। और प्रभु ने उन लोगों को अकाल से बचाकर अपना सामर्थ्य दिखाया।

But the people believed not the words of the prophets, but they cast them out; and some of them they cast into pits and left them to perish. And it came to pass that they did all these things according to the commandment of the king, Heth.

And it came to pass that there began to be a great dearth upon the land, and the inhabitants began to be destroyed exceedingly fast because of the dearth, for there was no rain upon the face of the earth.

And there came forth poisonous serpents also upon the face of the land, and did poison many people. And it came to pass that their flocks began to flee before the poisonous serpents, towards the land southward, which was called by the Nephites Zarahemla.

And it came to pass that there were many of them which did perish by the way; nevertheless, there were some which fled into the land southward.

And it came to pass that the Lord did cause the serpents that they should pursue them no more, but that they should hedge up the way that the people could not pass, that whoso should attempt to pass might fall by the poisonous serpents.

And it came to pass that the people did follow the course of the beasts, and did devour the carcasses of them which fell by the way, until they had devoured them all. Now when the people saw that they must perish they began to repent of their iniquities and cry unto the Lord.

And it came to pass that when they had humbled themselves sufficiently before the Lord he did send rain upon the face of the earth; and the people began to revive again, and there began to be fruit in the north countries, and in all the countries round about. And the Lord did show forth his power unto them in preserving them from famine.



## ईथर 10

- 1 और ऐसा हुआ कि शेज जो कि हेथ का एक वंशज था—क्योंकि शेज के अलावा, हेथ और उसका सारा घराना अकाल द्वारा मारा गया था—इसलिए, शेज ने निराश लोगों को फिर से मजबूत करना आरंभ किया ।
- 2 और ऐसा हुआ कि शेज ने अपने पूर्वजों के विनाश को याद रखा, और उसने एक धार्मिक राज्य का निर्माण किया; क्योंकि उसने वह याद रखा था कि जिसे प्रभु ने येरेद और उसके भाई को गहरे समुद्र से बाहर लाने के लिए किया था; और वह प्रभु के मार्ग पर चला; और उसके बेटे और बेटियां हुईं ।
- 3 और उसका बड़ा पुत्र जिसका नाम शेज था, उसके विरुद्ध हो गया; फिर भी, अत्याधिक धन-संपत्ति के कारण शेज एक डाकू के हाथों द्वारा मारा गया, जिसके कारण उसके पिता को फिर से सुकून मिला ।
- 4 और ऐसा हुआ कि उसके पिता ने देश में कई नगरों का निर्माण किया, और लोग फिर से पूरे प्रदेश में फैलने लगे । और शेज बहुत अधिक वृद्ध होने तक जीवित रहा; और उससे रिप्लाकिश उत्पन्न हुआ । और उसकी मृत्यु हो गई, और उसके स्थान पर रिप्लाकिश ने शासन किया ।
- 5 और ऐसा हुआ कि रिप्लाकिश ने वह नहीं किया जो प्रभु की दृष्टि में सही था, क्योंकि उसके पास बहुत सी पत्नियां और रखैलें थीं, और उसने लोगों के कंधों पर इतना अधिक बोझ डाल दिया जिसे उठाना दुखदाई था; हां, उसने उन पर भारी कर लगाए; और उन करों से उसने बहुत से विशाल भवन बनाए ।
- 6 और उसने स्वयं के लिए एक बहुत ही सुंदर सिंहासन बनवाया; और उसने कई बंदीगृह बनवाए, और जो लोग कर के अधीन नहीं थे उन्हें बंदीगृह में डाल दिया; और जो लोग कर देने में असमर्थ थे उन्हें भी उसने बंदीगृह में डाल दिया; और उनके निर्वाह के लिए उसने उनसे निरंतर परिश्रम करवाया; और जिन्होंने परिश्रम करने से मना किया उसने उन्हें मरवा डाला ।
- 7 इसलिए उसने अपना उत्तम कार्य हासिल किया, हां, उसने अपने शुद्ध सोने को भी बंदीगृह में उत्तम करवाया; और हर प्रकार के उत्तम कारीगरों से उसने बंदीगृह में काम करवाया । और ऐसा हुआ कि उसने अपनी वेश्याओं और घृणित कार्यों से लोगों को सताया ।

## Ether 10

And it came to pass that Shez, who was a descendant of Heth—for Heth had perished by the famine, and all his household save it were Shez—wherefore, Shez began to build up again a broken people.

And it came to pass that Shez did remember the destruction of his fathers, and he did build up a righteous kingdom; for he remembered what the Lord had done in bringing Jared and his brother across the deep; and he did walk in the ways of the Lord; and he begat sons and daughters.

And his eldest son, whose name was Shez, did rebel against him; nevertheless, Shez was smitten by the hand of a robber, because of his exceeding riches, which brought peace again unto his father.

And it came to pass that his father did build up many cities upon the face of the land, and the people began again to spread over all the face of the land. And Shez did live to an exceedingly old age; and he begat Riplakish. And he died, and Riplakish reigned in his stead.

And it came to pass that Riplakish did not do that which was right in the sight of the Lord, for he did have many wives and concubines, and did lay that upon men's shoulders which was grievous to be borne; yea, he did tax them with heavy taxes; and with the taxes he did build many spacious buildings.

And he did erect him an exceedingly beautiful throne; and he did build many prisons, and whoso would not be subject unto taxes he did cast into prison; and whoso was not able to pay taxes he did cast into prison; and he did cause that they should labor continually for their support; and whoso refused to labor he did cause to be put to death.

Wherefore he did obtain all his fine work, yea, even his fine gold he did cause to be refined in prison; and all manner of fine workmanship he did cause to be wrought in prison. And it came to pass that he did afflict the people with his whoredoms and abominations.

- 8 और जब उसने बयालीस वर्षों तक शासन कर लिया तो लोग उसके विरोध में खड़े हो गए; और प्रदेश में फिर से युद्ध होने लगा, इतना अधिक कि रिप्लाकिश मारा गया, और उसके वंशजों को प्रदेश से निकाल दिया गया ।
- 9 और ऐसा हुआ कि कई वर्षों को पश्चात, मोरियंटन, (रिप्लाकिश के एक वंशज) ने जाति से बाहर निकाले गए लोगों की एक सेना संगठित कर ली, और गया और लोगों से युद्ध किया; और उसने कई नगरों पर अधिकार प्राप्त कर लिया; और युद्ध अत्यंत दुखदाई हुआ, और कई वर्षों तक चलता रहा; और उसने प्रदेश पर अधिकार प्राप्त कर लिया, और स्वयं को पूरे प्रदेश के राजा के रूप में स्थापित कर लिया ।
- 10 और स्वयं को राजा स्थापित करने के पश्चात उसने लोगों का भार कम कर दिया, जिससे लोग उसे पसंद करने लगे, और उन्होंने उसे अपना राजा अभिषेक किया ।
- 11 और उसने लोगों के साथ न्याय किया, परन्तु अपनी कई वेश्याओं के कारण स्वयं के साथ न्याय नहीं किया; इसलिए उसे प्रभु की उपस्थिति से अलग कर दिया गया ।
- 12 और ऐसा हुआ कि मोरियंटन ने कई नगरों का निर्माण किया, और लोग उसके शासन के तहत इमारतों का निर्माण कर, और सोने और चांदी से, और अनाज उगाकर, और पशु-पक्षियों से, और उन सभी चीजों से बहुत धनी हो गए जो उन्होंने फिर से प्राप्त किया था ।
- 13 और मोरियंटन बहुत वर्षों तक जीवित रहा, और फिर उससे किम उत्पन्न हुआ; और किम ने अपने पिता के स्थान पर शासन किया; और उसने आठ वर्षों तक शासन किया, और उसके पिता की मृत्यु हो गई । और ऐसा हुआ कि किम ने धार्मिकता में शासन नहीं किया, इसलिए उस पर प्रभु की कृपादृष्टि नहीं हुई ।
- 14 और उसका भाई उसके विरोध में खड़ा हो गया, जिसके कारण वह उसे दासता में ले आया; और वह अपने पूरे समयकाल में दासता में ही रहा; और दासता में ही उसके बेटे और बेटियां हुईं, और उसकी वृद्धावस्था में उससे लेवी उत्पन्न हुआ; और उसकी मृत्यु हो गई ।
- 15 और ऐसा हुआ कि लेवी ने अपने पिता की मृत्यु के पश्चात भी बायलीस वर्षों तक दासता में काम किया । और उसने प्रदेश के राजा के विरुद्ध युद्ध कर दिया, जिसके कारण उसने स्वयं के लिए राज्य प्राप्त कर लिया ।

And when he had reigned for the space of forty and two years the people did rise up in rebellion against him; and there began to be war again in the land, insomuch that Riplakish was killed, and his descendants were driven out of the land.

And it came to pass after the space of many years, Morianton, (he being a descendant of Riplakish) gathered together an army of outcasts, and went forth and gave battle unto the people; and he gained power over many cities; and the war became exceedingly sore, and did last for the space of many years; and he did gain power over all the land, and did establish himself king over all the land.

And after that he had established himself king he did ease the burden of the people, by which he did gain favor in the eyes of the people, and they did anoint him to be their king.

And he did do justice unto the people, but not unto himself because of his many whoredoms; wherefore he was cut off from the presence of the Lord.

And it came to pass that Morianton built up many cities, and the people became exceedingly rich under his reign, both in buildings, and in gold and silver, and in raising grain, and in flocks, and herds, and such things which had been restored unto them.

And Morianton did live to an exceedingly great age, and then he begat Kim; and Kim did reign in the stead of his father; and he did reign eight years, and his father died. And it came to pass that Kim did not reign in righteousness, wherefore he was not favored of the Lord.

And his brother did rise up in rebellion against him, by which he did bring him into captivity; and he did remain in captivity all his days; and he begat sons and daughters in captivity, and in his old age he begat Levi; and he died.

And it came to pass that Levi did serve in captivity after the death of his father, for the space of forty and two years. And he did make war against the king of the land, by which he did obtain unto himself the kingdom.

- 16 और स्वयं के लिए राज्य प्राप्त करने के पश्चात उसने वह किया जो प्रभु की दृष्टि में सही था; और प्रदेश में लोग समृद्ध हुए; और वह बहुत वृद्ध होने तक जीवित रहा, और उसके बेटे और बेटियां हुईं; और उससे कोरम उत्पन्न हुआ, जिसे उसने अपने स्थान पर राजा अभिषेक किया ।
- 17 और ऐसा हुआ कि कोरम ने अपने पूरे समयकाल में वह किया जो प्रभु की दृष्टि में उचित था; और उसके कई बेटे और बेटियां हुईं; और बहुत दिनों तक जीवित रहने के पश्चात वह सांसारिक रीति के अनुसार चला गया, और उसके स्थान पर कीश ने शासन किया ।
- 18 और ऐसा हुआ कि कीश की भी मृत्यु हो गई, और लिब ने उसके स्थान पर शासन किया ।
- 19 और ऐसा हुआ कि लिब ने भी वही किया जो प्रभु की दृष्टि में उचित था । और लिब के दिनों में जहरीले सांप नष्ट हो गए । इसलिए प्रदेश के लोगों के लिए भोजन तलाश करने के प्रति वे दक्षिणी प्रदेश की तरफ गए, क्योंकि वह प्रदेश जंगल के जानवरों से भरा हुआ था । और लिब स्वयं एक बड़ा शिकारी बन गया ।
- 20 और उन्होंने प्रदेश के संकरे मार्ग के निकट एक बड़े नगर का निर्माण किया, उस स्थान के निकट जहां पर समुद्र धरती से अलग हो जाती थी ।
- 21 और उन्होंने दक्षिणी प्रदेश के निर्जन प्रदेश को सुरक्षित रखा जिससे कि उन्हें शिकार मिलता रहे । और पूरा उत्तरी प्रदेश निवासियों से ढक गया ।
- 22 और वे बहुत परिश्रमी थे, और उन्होंने आपस में खरीदा और बेचा और एक दूसरे के साथ व्यापार किया, जिससे कि वे लाभ प्राप्त कर सकें ।
- 23 और उन्होंने हर प्रकार की कच्ची धातुओं पर काम किया, और उन्होंने सोना, और चांदी, और लोहा, और पीतल, और हर प्रकार की धातु बनाई; और उन्होंने जमीन की खुदाई की; जिसके कारण सोना, और चांदी, और लोहा, और तांबे की कच्ची धातुओं के लिए मिट्टी का ढेर लगा दिया । और उन्होंने हर प्रकार का उत्तम कार्य किया ।
- 24 और उनके पास रेशम और उत्तम सन का कपड़ा था; और उन्होंने हर प्रकार के कपड़े बनाए, जिससे कि वे अपनी नग्नता को कपड़ों से ढक सकें ।
- 25 और जमीन को जोतने के लिए, हल चलाने और रोपने के लिए, काटने और कुदाल चलाने के लिए, और अनाज को भूसे से अलग करने के लिए उन्होंने हर प्रकार के औजार बनाए ।

And after he had obtained unto himself the kingdom he did that which was right in the sight of the Lord; and the people did prosper in the land; and he did live to a good old age, and begat sons and daughters; and he also begat Corom, whom he anointed king in his stead.

And it came to pass that Corom did that which was good in the sight of the Lord all his days; and he begat many sons and daughters; and after he had seen many days he did pass away, even like unto the rest of the earth; and Kish reigned in his stead.

And it came to pass that Kish passed away also, and Lib reigned in his stead.

And it came to pass that Lib also did that which was good in the sight of the Lord. And in the days of Lib the poisonous serpents were destroyed. Wherefore they did go into the land southward, to hunt food for the people of the land, for the land was covered with animals of the forest. And Lib also himself became a great hunter.

And they built a great city by the narrow neck of land, by the place where the sea divides the land.

And they did preserve the land southward for a wilderness, to get game. And the whole face of the land northward was covered with inhabitants.

And they were exceedingly industrious, and they did buy and sell and traffic one with another, that they might get gain.

And they did work in all manner of ore, and they did make gold, and silver, and iron, and brass, and all manner of metals; and they did dig it out of the earth; wherefore, they did cast up mighty heaps of earth to get ore, of gold, and of silver, and of iron, and of copper. And they did work all manner of fine work.

And they did have silks, and fine-twined linen; and they did work all manner of cloth, that they might clothe themselves from their nakedness.

And they did make all manner of tools to till the earth, both to plow and to sow, to reap and to hoe, and also to thrash.

- 26 और अपने पशुओं से काम लेने के लिए भी उन्होंने हर प्रकार के औजार बनाए ।  
 And they did make all manner of tools with which they did work their beasts.
- 27 और उन्होंने युद्ध के लिए हर प्रकार के हथियार बनाए । और उन्होंने हर प्रकार का काम बहुत ही श्रेष्ठ कारीगरों द्वारा करवाया ।  
 And they did make all manner of weapons of war. And they did work all manner of work of exceedingly curious workmanship.
- 28 और इस समय के लोगों से अधिक किसी भी समय के लोग आशीषित नहीं हुए थे, और न ही प्रभु के हाथों द्वारा समृद्ध बनाए गए थे । और वे उस प्रदेश में थे जो सारे प्रदेशों में सबसे अच्छा था, क्योंकि प्रभु ने इसके विषय में कहा था ।  
 And never could be a people more blessed than were they, and more prospered by the hand of the Lord. And they were in a land that was choice above all lands, for the Lord had spoken it.
- 29 और ऐसा हुआ कि लिब कई वर्षों तक जीवित रहा, और उसके बेटे और बेटियां हुईं; और उससे हियार्थम उत्पन्न हुआ ।  
 And it came to pass that Lib did live many years, and begat sons and daughters; and he also begat Hearthom.
- 30 और ऐसा हुआ कि हियार्थम ने अपने पिता के स्थान पर शासन किया । और जब हियार्थम ने चौबीस वर्षों तक शासन कर लिया, देखो, उससे राज्य छीन लिया गया । और कई वर्षों तक उसने दासता में काम किया, हां, यहां तक कि अपने सारे बच्चे हुए दिनों में भी ।  
 And it came to pass that Hearthom reigned in the stead of his father. And when Hearthom had reigned twenty and four years, behold, the kingdom was taken away from him. And he served many years in captivity, yea, even all the remainder of his days.
- 31 और उससे हेथ उत्पन्न हुआ, और हेथ अपने सारे समयकाल में दासता में ही रहा । और हेथ से हारून उत्पन्न हुआ, और हारून अपने सारे समयकाल में दासता में रहा; और उससे अमनीगदा उत्पन्न हुआ, और अमनीगदा भी अपने पूरे समयकाल में दासता में रहा; और उससे कोरियंटम उत्पन्न हुआ, और कोरियंटम अपने पूरे समयकाल में दासता में रहा; और उससे कोम उत्पन्न हुआ ।  
 And he begat Heth, and Heth lived in captivity all his days. And Heth begat Aaron, and Aaron dwelt in captivity all his days; and he begat Amnigaddah, and Amnigaddah also dwelt in captivity all his days; and he begat Coriantum, and Coriantum dwelt in captivity all his days; and he begat Com.
- 32 और ऐसा हुआ कि कोम ने आधा राज्य अपनी तरफ कर लिया । और आधे राज्य पर उसने बयालीस वर्षों तक शासन किया; और वह राजा, अमगिद के विरुद्ध युद्ध करने गया, और उन्होंने कई वर्षों तक युद्ध किया, जिसके दौरान कोम ने अमगिद पर अधिकार प्राप्त कर लिया, और बाकी बचे राज्य पर भी कब्जा कर लिया ।  
 And it came to pass that Com drew away the half of the kingdom. And he reigned over the half of the kingdom forty and two years; and he went to battle against the king, Amgid, and they fought for the space of many years, during which time Com gained power over Amgid, and obtained power over the remainder of the kingdom.
- 33 और कोम के समयकाल में प्रदेश में डाकू होने लगे; और उन्होंने पुरानी योजनाओं को अपनाया, और प्राचीन समय के लोगों के समान ही शपथ ली, और फिर से राज्य को नष्ट करना चाहा ।  
 And in the days of Com there began to be robbers in the land; and they adopted the old plans, and administered oaths after the manner of the ancients, and sought again to destroy the kingdom.
- 34 अब कोम ने उनके विरुद्ध बहुत लड़ाई की; फिर भी, वह उनसे प्रबल नहीं हुआ ।  
 Now Com did fight against them much; nevertheless, he did not prevail against them.

## ईथर 11

- 1 और कोम के दिनों में भी कई भविष्यवक्ता आए, और उन बहुत से लोगों के विनाश की भविष्यवाणी की यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे, और प्रभु की ओर नहीं मुड़ेंगे, और अपनी हत्याओं और बुराइयों को नहीं छोड़ेंगे।
- 2 और ऐसा हुआ कि भविष्यवक्ता लोगों के द्वारा अस्वीकार किये गए, और सुरक्षा के लिए वे भागकर कोम के पास चले गए, क्योंकि लोग उन्हें मारना चाहते थे।
- 3 और उन्होंने कोम के लिए बहुत सी भविष्यवाणियां कीं; और वह अपने बाकी बचे दिनों में आशीषित हुआ।
- 4 और वह बहुत वृद्ध होने तक जीवित रहा, और शिबलोम उत्पन्न हुआ; और शिबलोम ने उसके स्थान पर शासन किया। और शिबलोम का भाई उसके विरुद्ध हो गया, और पूरे प्रदेश में बहुत ही भारी युद्ध होने लगा।
- 5 और ऐसा हुआ कि शिबलोम के भाई ने चाहा कि उन सारे भविष्यवक्ताओं को मार देना चाहिए जिन्होंने लोगों के विनाश की भविष्यवाणी की थी।
- 6 और पूरे प्रदेश में भारी विपदा आई, क्योंकि उन्होंने गवाही दी थी कि प्रदेश पर, और लोगों पर भी भारी श्राप पड़ेगा, और यह कि उनके बीच एक ऐसा भारी विनाश होगा, जैसा कि पृथ्वी पर कभी भी नहीं हुआ था, और प्रदेश में उनकी हड्डियां मिट्टी के ढेर के समान होंगी यदि वे अपने बुरे कर्मों का पश्चाताप नहीं करेंगे।
- 7 और अपने दुष्ट गठबंधनों के कारण, उन्होंने प्रभु की आवाज को नहीं सुना; इसलिए, पूरे प्रदेश में युद्ध और मतभेद होने लगे, और बहुत अकाल पड़ा और महामारियां आईं, इतना अधिक कि एक ऐसा भारी विनाश हुआ जिसके विषय में धरती पर पहले कभी भी नहीं सुना गया था; और यह सब कुछ शिबलोम के समयकाल में हुआ।
- 8 लोग अपने बुरे कर्मों का पश्चाताप करने लगे; और जितना उन्होंने किया उतना ही प्रभु ने उन पर दया की।
- 9 और ऐसा हुआ कि शिबलोम मारा गया, और शेत को दासता में लाया गया, और वह अपने पूरे समयकाल में दासता में रहा।

## Ether 11

And there came also in the days of Com many prophets, and prophesied of the destruction of that great people except they should repent, and turn unto the Lord, and forsake their murders and wickedness.

And it came to pass that the prophets were rejected by the people, and they fled unto Com for protection, for the people sought to destroy them.

And they prophesied unto Com many things; and he was blessed in all the remainder of his days.

And he lived to a good old age, and begat Shiblom; and Shiblom reigned in his stead. And the brother of Shiblom rebelled against him, and there began to be an exceedingly great war in all the land.

And it came to pass that the brother of Shiblom caused that all the prophets who prophesied of the destruction of the people should be put to death;

And there was great calamity in all the land, for they had testified that a great curse should come upon the land, and also upon the people, and that there should be a great destruction among them, such an one as never had been upon the face of the earth, and their bones should become as heaps of earth upon the face of the land except they should repent of their wickedness.

And they hearkened not unto the voice of the Lord, because of their wicked combinations; wherefore, there began to be wars and contentions in all the land, and also many famines and pestilences, inasmuch that there was a great destruction, such an one as never had been known upon the face of the earth; and all this came to pass in the days of Shiblom.

And the people began to repent of their iniquity; and inasmuch as they did the Lord did have mercy on them.

And it came to pass that Shiblom was slain, and Seth was brought into captivity, and did dwell in captivity all his days.

10 और ऐसा हुआ कि अहा, उसके बेटे ने राज्य हासिल कर लिया; और उसने अपने पूरे समयकाल में लोगों पर शासन किया। और उसने अपने समयकाल में हर प्रकार के बुरे कर्म किये, जिसके द्वारा उसने बहुत रक्तपात करवाया; और उसके दिन थोड़े रह गए थे।

11 और इथेम ने, अहा के वंशज होने के नाते राज्य हासिल कर लिया; और उसने भी अपने समयकाल के बुरे कर्मों को किया।

12 और ऐसा हुआ कि इथेम के दिनों में कई भविष्यवक्ता आए, और फिर से लोगों के लिए भविष्यवाणियां की; हां, उन्होंने भविष्यवाणी की कि प्रभु उन्हें शीघ्र ही धरती से नष्ट कर देगा यदि वे अपने बुरे कर्मों का पश्चाताप नहीं करेंगे।

13 और ऐसा हुआ कि लोगों ने अपने हृदयों को कठोर कर लिया, और उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया; और भविष्यवक्ताओं ने अफसोस प्रकट किया और लोगों के बीच से चले गए।

14 और ऐसा हुआ कि इथेम ने अपने पूरे समयकाल में दुष्टता से न्याय किया; और उससे मोरोन उत्पन्न हुआ। और ऐसा हुआ कि मोरोन ने उसके स्थान पर शासन किया; और मोरोन ने वह किया जो प्रभु की दृष्टि में बुरा था।

15 और ऐसा हुआ कि उस गुप्त गठबंधन के कारण लोगों में एक विद्रोह उत्पन्न हुआ जिसे अधिकार और लाभ प्राप्त करने के लिए बनाया गया था; और अनैतिकता में उनके बीच एक शक्तिशाली मनुष्य सामने आया, और मोरोन से युद्ध किया, जिसमें उसने आधे राज्य का तख्ता पलट कर दिया; और उसने कई वर्षों तक आधे राज्य को संभालकर रखा।

16 और ऐसा हुआ कि मोरोन ने उसका तख्ता पलट कर दिया, और फिर से राज्य हासिल कर लिया।

17 और ऐसा हुआ कि वहां पर एक अन्य शक्तिशाली मनुष्य सामने आया; और वह येरेद के भाई का एक वंशज था।

18 और ऐसा हुआ कि उसने मोरोन का तख्ता पलट कर दिया और राज्य हासिल कर लिया; इसलिए, मोरोन अपने बाकी बचे दिनों में दासता में रहा; और उससे कोरियन्टर उत्पन्न हुआ।

19 और ऐसा हुआ कि कोरियन्टर अपने समयकाल में दासता में रहा।

And it came to pass that Ahah, his son, did obtain the kingdom; and he did reign over the people all his days. And he did do all manner of iniquity in his days, by which he did cause the shedding of much blood; and few were his days.

And Ethem, being a descendant of Ahah, did obtain the kingdom; and he also did do that which was wicked in his days.

And it came to pass that in the days of Ethem there came many prophets, and prophesied again unto the people; yea, they did prophesy that the Lord would utterly destroy them from off the face of the earth except they repented of their iniquities.

And it came to pass that the people hardened their hearts, and would not hearken unto their words; and the prophets mourned and withdrew from among the people.

And it came to pass that Ethem did execute judgment in wickedness all his days; and he begat Moron. And it came to pass that Moron did reign in his stead; and Moron did that which was wicked before the Lord.

And it came to pass that there arose a rebellion among the people, because of that secret combination which was built up to get power and gain; and there arose a mighty man among them in iniquity, and gave battle unto Moron, in which he did overthrow the half of the kingdom; and he did maintain the half of the kingdom for many years.

And it came to pass that Moron did overthrow him, and did obtain the kingdom again.

And it came to pass that there arose another mighty man; and he was a descendant of the brother of Jared.

And it came to pass that he did overthrow Moron and obtain the kingdom; wherefore, Moron dwelt in captivity all the remainder of his days; and he begat Coriantor.

And it came to pass that Coriantor dwelt in captivity all his days.

- 20 और कोरियन्टर के दिनों में भी कई भविष्यवक्ता आए, और महान और अदभुत बातों की भविष्यवाणी की, और लोगों से पश्चात्ताप करने कि विनती की, और यदि वे पश्चात्ताप नहीं करेंगे तो प्रभु परमेश्वर उनका शीघ्र विनाश कर उनके विरुद्ध न्याय करेगा;
- 21 और यह कि प्रभु परमेश्वर अपने सामर्थ्य द्वारा, प्रदेश पर अधिकार करने के लिए अन्य लोगों को भेजेगा या लाएगा, वैसे ही जैसे कि वह उनके पूर्वजों को लाया था ।
- 22 और अपने गुप्त समाज और घृणित कार्यों के कारण उन्होंने भविष्यवक्ताओं की सारी बातों को अस्वीकार किया ।
- 23 और ऐसा हुआ कि कोरियन्टर से ईथर उत्पन्न हुआ, और अपने पूरे समयकाल में दासता में रहते हुए ही उसकी मृत्यु हो गई ।

And in the days of Coriantor there also came many prophets, and prophesied of great and marvelous things, and cried repentance unto the people, and except they should repent the Lord God would execute judgment against them to their utter destruction;

And that the Lord God would send or bring forth another people to possess the land, by his power, after the manner by which he brought their fathers.

And they did reject all the words of the prophets, because of their secret society and wicked abominations.

And it came to pass that Coriantor begat Ether, and he died, having dwelt in captivity all his days.

## ईथर 12

- 1 और ऐसा हुआ कि ईथर का समयकाल कोरियंटूमर के समयकाल में था; और कोरियंटूमर पूरे प्रदेश का राजा था ।
- 2 और ईथर प्रभु का एक भविष्यवक्ता था; इसलिए ईथर कोरियंटूमर के समयकाल में आया, और लोगों के लिए भविष्यवाणी करने लगा, क्योंकि वह प्रभु की उस आत्मा के कारण नियंत्रित नहीं हो सका जो उसमें थी ।
- 3 क्योंकि उसने सुबह से लेकर सूरज डूबने तक विनती की, लोगों को पश्चाताप कर परमेश्वर में विश्वास करने के लिए उपदेश देते हुए नहीं तो वे नष्ट हो जाएंगे, उनसे यह कहते हुए कि विश्वास द्वारा सारी बातें पूरी होती हैं—
- 4 इसलिए, जो कोई परमेश्वर में विश्वास करता है वह निश्चितता के साथ एक बेहतर संसार की, हां, यहां तक कि परमेश्वर के दाहिने हाथ की तरफ रहने की आशा कर सकता है, उस आशा से जो विश्वास से आती है, मनुष्यों की आत्माओं के लिए एक आश्रय बनाती है, जो परमेश्वर की महिमा करने के प्रति सदा अच्छे कार्य करने के लिए उन्हें दृढ़ और अटल बनाएगी ।
- 5 और ऐसा हुआ कि ईथर ने लोगों को महान और अदभुत बातों की भविष्यवाणी की, जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, क्योंकि उन्होंने उन्हें नहीं देखा था ।
- 6 और अब, मैं, मोरोनी इन चीजों से संबंधित कुछ बोलूंगा; मैं संसार को दिखाऊंगा कि विश्वास उस चीज की आशा करना है जो दिखाई नहीं देती है; इसलिए, मतभेद मत करो क्योंकि तुमने नहीं देखा है, क्योंकि तुम्हें गवाही तब तक नहीं मिलती जब तक कि तुम्हारे विश्वास की परीक्षा नहीं हो जाती ।
- 7 क्योंकि यह विश्वास ही था जिसके कारण मसीह ने स्वयं को, मृत्यु से जी उठने के पश्चात हमारे पूर्वजों को दिखाया था; और उसने स्वयं को उन्हें तब तक नहीं दिखाया जब तक कि उन्होंने उसमें विश्वास नहीं किया; इसलिए, यह आवश्यक था कि कुछ लोग उसमें विश्वास करें, क्योंकि उसने स्वयं को संसार को नहीं दिखाया था ।
- 8 परन्तु मनुष्यों के विश्वास के कारण उसने स्वयं को संसार को दिखाया, और पिता के नाम को गौरवान्वित किया, और एक मार्ग तैयार किया ताकि उसके द्वारा अन्य लोग स्वर्गीय उपहार को ग्रहण करने वाले हो सकें, जिससे कि वे उन चीजों की आशा कर सकें जिसे उन्होंने देखा नहीं है ।
- 9 इसलिए, तुम भी आशा कर सकते हो, और उपहार को ग्रहण करने वाले हो सकते हो यदि तुम्हारे पास विश्वास है ।

## Ether 12

And it came to pass that the days of Ether were in the days of Coriantumr; and Coriantumr was king over all the land.

And Ether was a prophet of the Lord; wherefore Ether came forth in the days of Coriantumr, and began to prophesy unto the people, for he could not be restrained because of the Spirit of the Lord which was in him.

For he did cry from the morning, even until the going down of the sun, exhorting the people to believe in God unto repentance lest they should be destroyed, saying unto them that by faith all things are fulfilled—

Wherefore, whoso believeth in God might with surety hope for a better world, yea, even a place at the right hand of God, which hope cometh of faith, maketh an anchor to the souls of men, which would make them sure and steadfast, always abounding in good works, being led to glorify God.

And it came to pass that Ether did prophesy great and marvelous things unto the people, which they did not believe, because they saw them not.

And now, I, Moroni, would speak somewhat concerning these things; I would show unto the world that faith is things which are hoped for and not seen; wherefore, dispute not because ye see not, for ye receive no witness until after the trial of your faith.

For it was by faith that Christ showed himself unto our fathers, after he had risen from the dead; and he showed not himself unto them until after they had faith in him; wherefore, it must needs be that some had faith in him, for he showed himself not unto the world.

But because of the faith of men he has shown himself unto the world, and glorified the name of the Father, and prepared a way that thereby others might be partakers of the heavenly gift, that they might hope for those things which they have not seen.

Wherefore, ye may also have hope, and be partakers of the gift, if ye will but have faith.



- 10 देखो यह विश्वास ही था जिसके कारण प्राचीन लोगों को परमेश्वर की पवित्र रीति के अनुसार बुलाया गया था ।
- 11 इसलिए, विश्वास के द्वारा मूसा की व्यवस्था दी गई थी । परन्तु अपने पुत्र के विश्वास के तहत परमेश्वर ने एक उत्तम मार्ग दिया है; और विश्वास के कारण ही यह परिपूर्ण हुई है ।
- 12 क्योंकि यदि मानव संतानों में विश्वास नहीं होगा तो परमेश्वर उनके बीच कोई चमत्कार नहीं कर सकता है; इसलिए, उसने स्वयं को तब तक नहीं दिखाया जब तक कि उन्होंने विश्वास नहीं किया ।
- 13 देखो, यह अलमा और अमूलेक का विश्वास ही था जिसके कारण बंदीगृह जमीन पर गिर गया था ।
- 14 देखो, यह नफी और लेही का विश्वास ही था जो लमनाइयों में बदलाव लाया था, जिसके कारण उन्होंने आग और पवित्र आत्मा से बपतिस्मा लिया था ।
- 15 देखो, यह अम्मोन और उसके भाइयों का विश्वास ही था जिसके कारण लमनाइयों के बीच में इतना महान चमत्कार हुआ था ।
- 16 हां, और जिन्होंने उनके बीच में चमत्कार किये थे वह भी विश्वास के कारण ही था, यहां तक कि जो मसीह के पहले थे और जो उसके बाद आए उन्होंने भी ऐसा विश्वास के कारण ही किया था ।
- 17 और ऐसा विश्वास के कारण ही था कि तीन शिष्यों ने एक प्रतिज्ञा प्राप्त कर ली कि वे मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे; और उन्होंने प्रतिज्ञा को तब तक प्राप्त नहीं किया था जब तक उन्होंने विश्वास नहीं किया ।
- 18 और उनके विश्वास होने तक किसी भी समय पर कोई भी चमत्कार नहीं हुआ था; इसलिए सर्वप्रथम उन्होंने परमेश्वर के पुत्र में विश्वास किया ।
- 19 और ऐसे कई थे जिनका विश्वास यीशु मसीह के आने से पहले भी अत्याधिक मजबूत था, जिन्हें पर्दे के भीतर देखने से नहीं रोका जा सकता था, परन्तु अपनी आंखों से जिन चीजों को देखा था उसे उन्होंने विश्वास की आंख से देखा था, और वे प्रसन्न थे ।
- 20 और देखो, इस अभिलेख में हमने देखा है कि इनमें से एक था येरेद का भाई; क्योंकि परमेश्वर में उसका विश्वास इतना महान था कि जब परमेश्वर ने अपनी उंगली को आगे किया तो वह उसे येरेद के भाई की दृष्टि से नहीं छिपा सका, उसकी उस बात के कारण जिसे उसने उससे कहा था, और उस बात के कारण जिसे उसने विश्वास से प्राप्त किया था ।

Behold it was by faith that they of old were called after the holy order of God.

Wherefore, by faith was the law of Moses given. But in the gift of his Son hath God prepared a more excellent way; and it is by faith that it hath been fulfilled.

For if there be no faith among the children of men God can do no miracle among them; wherefore, he showed not himself until after their faith.

Behold, it was the faith of Alma and Amulek that caused the prison to tumble to the earth.

Behold, it was the faith of Nephi and Lehi that wrought the change upon the Lamanites, that they were baptized with fire and with the Holy Ghost.

Behold, it was the faith of Ammon and his brethren which wrought so great a miracle among the Lamanites.

Yea, and even all they who wrought miracles wrought them by faith, even those who were before Christ and also those who were after.

And it was by faith that the three disciples obtained a promise that they should not taste of death; and they obtained not the promise until after their faith.

And neither at any time hath any wrought miracles until after their faith; wherefore they first believed in the Son of God.

And there were many whose faith was so exceedingly strong, even before Christ came, who could not be kept from within the veil, but truly saw with their eyes the things which they had beheld with an eye of faith, and they were glad.

And behold, we have seen in this record that one of these was the brother of Jared; for so great was his faith in God, that when God put forth his finger he could not hide it from the sight of the brother of Jared, because of his word which he had spoken unto him, which word he had obtained by faith.

- 21 और प्रभु की उंगली को जब येरेद के भाई ने देख लिया उसके पश्चात्, उस प्रतिज्ञा के कारण जिसे येरेद के भाई ने विश्वास द्वारा प्राप्त किया था, प्रभु उसकी दृष्टि के सामने से कोई भी चीज नहीं हटा सका; इसलिए उसने उसे सारी चीजें दिखा दीं, क्योंकि उसे पर्दे के भीतर देखने से नहीं रोका जा सकता था ।
- 22 और यह विश्वास के द्वारा ही है कि मेरे पूर्वजों ने यह प्रतिज्ञा प्राप्त की है कि ये बातें उनके भाइयों पर अन्य जातियों के द्वारा प्रकट की जाएंगी; इसलिए प्रभु ने, हां, यीशु मसीह ने मुझे आज्ञा दी है ।
- 23 और मैंने उससे कहा: प्रभु, लिखावट में हमारी कमजोरी के कारण, अन्य जातियां इन बातों की हंसी उड़ाएंगी; क्योंकि प्रभु तुमने हमें विश्वास के द्वारा शब्द में तो मजबूत किया है, परन्तु तुमने लिखावट में हमें मजबूत नहीं किया है; क्योंकि तुमने इन लोगों को जो पवित्र आत्मा प्रदान की है उसके कारण तुमने इन्हें बोलने में प्रबल बनाया है ।
- 24 और हमारे अनाड़ीपन के कारण तुमने हमें लिखने में थोड़ा बहुत प्रबल बनाया । देखो, तुमने हमें येरेद के भाई के समान लिखने में मजबूत नहीं किया है, क्योंकि जो बातें उसने लिखी है उसमें तुमने उसे अपने ही समान मजबूत बनाया है, ताकि पढ़ने से लोग अत्याधिक तीव्र हो जाएं ।
- 25 तुमने हमारी बातों को भी शाक्तिशाली और महान बनाया है, इतना अधिक कि हम उन्हें लिख नहीं सकते हैं; इसलिए, जब हम लिखते हैं तब अपनी दुर्बलता को देखते हैं, और अपने शब्दों को उचित स्थान पर लिखने से लड़खड़ा जाते हैं; और मुझे डर है कि अन्य जातियां हमारी बातों की हंसी उड़ाएंगी ।
- 26 और जब मैंने इसे कह लिया, यह कहते हुए प्रभु ने मुझसे कहा: मूर्ख लोग हंसी उड़ाते हैं परन्तु वे विलाप करेंगे; और विनम्र लोगों के लिए मेरा अनुग्रह पर्याप्त है, जिससे कि वे तुम्हारी दुर्बलता का लाभ नहीं उठा सकेंगे;
- 27 और यदि मनुष्य मेरे पास आएंगे तो मैं उन्हें उनकी दुर्बलता दिखाऊंगा । मैं मनुष्यों को दुर्बलता देता हूँ ताकि वे विनम्र हो सकें; और उन सारे मनुष्यों के लिए मेरा अनुग्रह पर्याप्त है जो मेरे सामने स्वयं को विनम्र करते हैं; क्योंकि यदि वे स्वयं को मेरे सामने विनम्र करेंगे, और मुझमें विश्वास रखेंगे, तो मैं दुर्बलताओं को उनके लिए मजबूत कर दूंगा ।
- 28 देखो, मैं अन्य जातियों को उनकी दुर्बलता दिखाऊंगा, और उन्हें दिखाऊंगा कि सभी धार्मिकता के सोते—विश्वास, आशा और उदारता उन्हें मेरे पास लाते हैं ।

And after the brother of Jared had beheld the finger of the Lord, because of the promise which the brother of Jared had obtained by faith, the Lord could not withhold anything from his sight; wherefore he showed him all things, for he could no longer be kept without the veil.

And it is by faith that my fathers have obtained the promise that these things should come unto their brethren through the Gentiles; therefore the Lord hath commanded me, yea, even Jesus Christ.

And I said unto him: Lord, the Gentiles will mock at these things, because of our weakness in writing; for Lord thou hast made us mighty in word by faith, but thou hast not made us mighty in writing; for thou hast made all this people that they could speak much, because of the Holy Ghost which thou hast given them;

And thou hast made us that we could write but little, because of the awkwardness of our hands. Behold, thou hast not made us mighty in writing like unto the brother of Jared, for thou madest him that the things which he wrote were mighty even as thou art, unto the overpowering of man to read them.

Thou hast also made our words powerful and great, even that we cannot write them; wherefore, when we write we behold our weakness, and stumble because of the placing of our words; and I fear lest the Gentiles shall mock at our words.

And when I had said this, the Lord spake unto me, saying: Fools mock, but they shall mourn; and my grace is sufficient for the meek, that they shall take no advantage of your weakness;

And if men come unto me I will show unto them their weakness. I give unto men weakness that they may be humble; and my grace is sufficient for all men that humble themselves before me; for if they humble themselves before me, and have faith in me, then will I make weak things become strong unto them.

Behold, I will show unto the Gentiles their weakness, and I will show unto them that faith, hope and charity bringeth unto me—the fountain of all righteousness.

- 29 और मुझे, मोरोनी को, इन बातों को सुनकर सांत्वना मिली, और कहा: हे प्रभु, तुम्हारी धार्मिकता पूरी होगी, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम मानव संतानों के लिए उनके विश्वास के अनुसार कार्य करते हो;
- 30 क्योंकि येरेद के भाई ने पर्वत जीरिन को कहा था, हट जाओ— और वह हट गया था। और यदि उसमें विश्वास नहीं होता तो वह नहीं हटा होता; इसलिए तुम मनुष्यों में उनके विश्वास के अनुसार कार्य करते हो।
- 31 क्योंकि इसी प्रकार तुम स्वयं को अपने शिष्यों पर प्रकट करते हो; क्योंकि जब उन्हें विश्वास हो जाता है, और तुम्हारे नाम में बोलते हैं तो तुम स्वयं को उन्हें महान सामर्थ्य में दिखाते हो।
- 32 और मुझे भी याद है कि तुमने कहा था कि तुमने मनुष्य के लिए एक घर तैयार किया है, हाँ, अपने पिता के भवनों के बीच में, जिसमें मनुष्य शायद उत्कृष्टता से आशा कर सकेंगे; इसलिए मनुष्य को आशा करनी चाहिए, अन्यथा वह उस उत्तराधिकार के स्थान को प्राप्त नहीं कर सकता है जिसे तुमने तैयार किया है।
- 33 और फिर से, मुझे याद है कि तुमने कहा था कि तुमने संसार से इतना प्रेम किया कि संसार के लिए अपना जीवन तक दे दिया, जिससे कि तुम उसे फिर से लेकर मानव संतान के लिए एक स्थान तैयार कर सको।
- 34 और अब मैं जानता हूँ कि जो प्रेम तुममें मानव संतानों के लिए हुआ होगा वह उदारता है; इसलिए, यदि मनुष्यों में उदारता नहीं है तो वे उस स्थान के उत्तराधिकारी नहीं हो सकते हैं जिसे तुमने अपने पिता के भवनों में तैयार किया है।
- 35 इसलिए, मैं इस बात से जानता हूँ जिसे तुमने कहा है, कि हमारी दुर्बलता के कारण यदि अन्य जातियों में उदारता नहीं होगी तो तुम उन्हें प्रमाणित करोगे, और उनसे उनकी वह योग्यता भी ले लोगे जिसे उन्होंने प्राप्त किया है, और उन्हें दे दोगे जिनके पास बहुत होगा।
- 36 और ऐसा हुआ कि मैंने प्रभु से प्रार्थना की कि वह अन्य जातियों पर अनुग्रह करे जिससे कि उनके पास उदारता हो।
- 37 और ऐसा हुआ कि प्रभु ने मुझसे कहा: यदि उनके पास उदारता नहीं है तो इससे तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा, तुम विश्वासी रहे हो; इसलिए, तुम्हारे वस्त्र सफेद किये जाएंगे। और क्योंकि तुमने अपनी दुर्बलता को देखा है तो तुम मजबूत किये जाओगे, उस स्थान पर बैठने के लिए भी जिसे मैंने अपने पिता के भवनों में तैयार किया है।

And I, Moroni, having heard these words, was comforted, and said: O Lord, thy righteous will be done, for I know that thou workest unto the children of men according to their faith;

For the brother of Jared said unto the mountain Zerin, Remove—and it was removed. And if he had not had faith it would not have moved; wherefore thou workest after men have faith.

For thus didst thou manifest thyself unto thy disciples; for after they had faith, and did speak in thy name, thou didst show thyself unto them in great power.

And I also remember that thou hast said that thou hast prepared a house for man, yea, even among the mansions of thy Father, in which man might have a more excellent hope; wherefore man must hope, or he cannot receive an inheritance in the place which thou hast prepared.

And again, I remember that thou hast said that thou hast loved the world, even unto the laying down of thy life for the world, that thou mightest take it again to prepare a place for the children of men.

And now I know that this love which thou hast had for the children of men is charity; wherefore, except men shall have charity they cannot inherit that place which thou hast prepared in the mansions of thy Father.

Wherefore, I know by this thing which thou hast said, that if the Gentiles have not charity, because of our weakness, that thou wilt prove them, and take away their talent, yea, even that which they have received, and give unto them who shall have more abundantly.

And it came to pass that I prayed unto the Lord that he would give unto the Gentiles grace, that they might have charity.

And it came to pass that the Lord said unto me: If they have not charity it mattereth not unto thee, thou hast been faithful; wherefore, thy garments shall be made clean. And because thou hast seen thy weakness thou shalt be made strong, even unto the sitting down in the place which I have prepared in the mansions of my Father.

- 38 और अब मैं, मोरोनी अन्य जातियों से विदाई लेता हूँ, हां, और अपने उन भाइयों से भी जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, तब तक के लिए जब तक कि हम मसीह के न्याय-आसन के सामने मिल न जाएं, जहां सभी मनुष्य जानेंगे कि मेरे वस्त्रों पर तुम्हारे लहू के धब्बे नहीं लगे हैं ।
- 39 और फिर तुम जानोगे कि मैंने यीशु को देखा है, और उसने मुझसे आमने-सामने बात की है, और यह कि उसने विनम्र होकर स्पष्टता से मुझे इन बातों के संबंध में वैसे ही बताया है जैसे कि कोई मनुष्य मुझे मेरी भाषा में बताता ।
- 40 और लिखावट में अपनी दुर्बलता के कारण, मैंने केवल थोड़ा ही लिखा है ।
- 41 और अब, मैं तुमसे सिफारिश करता हूँ कि तुम इस यीशु को खोजो जिसके विषय में भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों ने लिखा है, कि पिता परमेश्वर, और प्रभु यीशु मसीह, और उस पवित्र आत्मा का भी अनुग्रह तुम पर सदा हो सके जो उनके विषय में बताता है । आमीन ।

And now I, Moroni, bid farewell unto the Gentiles, yea, and also unto my brethren whom I love, until we shall meet before the judgment-seat of Christ, where all men shall know that my garments are not spotted with your blood.

And then shall ye know that I have seen Jesus, and that he hath talked with me face to face, and that he told me in plain humility, even as a man telleth another in mine own language, concerning these things;

And only a few have I written, because of my weakness in writing.

And now, I would commend you to seek this Jesus of whom the prophets and apostles have written, that the grace of God the Father, and also the Lord Jesus Christ, and the Holy Ghost, which beareth record of them, may be and abide in you forever. Amen.

## ईथर 13

- 1 और अब, मैं, मोरोनी, उन लोगों के विनाश से संबंधित अपने अभिलेख को पूरा करने जा रहा हूँ जिनके विषय में मैं लिखता रहा हूँ।
- 2 क्योंकि देखो, उन्होंने ईथर की सारी बातों को अस्वीकार किया; क्योंकि उसने उन्हें मनुष्य के आरंभ से लेकर अब तक की सारी बातें सच-सच बता दीं; और जब इस धरती से जल हट गया तब से यह सारे प्रदेशों में सबसे उत्तम प्रदेश बन गया, प्रभु का चुना हुआ एक प्रदेश; इसलिए प्रभु चाहता है कि इसमें रहनेवाले सारे लोग उसकी सेवा करें;
- 3 और यह कि यह नये यरूशलेम का स्थान था, जो कि स्वर्ग से नीचे उतरेगा, और प्रभु का पवित्र शरणस्थान होगा।
- 4 देखो, ईथर ने मसीह का समय देखा था, और उसने इस प्रदेश पर स्थित एक नये यरूशलेम के विषय में बताया था।
- 5 और उसने इस्राएल के घराने के संबंध में भी बताया था, और यरूशलेम के विषय में भी जहां से लेही आनेवाला था—इसके नष्ट होने के पश्चात इसे फिर से बनाया जाएगा, प्रभु का एक पवित्र नगर; इसलिए, यह नया यरूशलेम नहीं हो सकता है क्योंकि यह प्राचीन समय में था; परन्तु इसे फिर से बनाया जाएगा, और प्रभु का एक पवित्र नगर बन जाएगा; और इसे इस्राएल के घराने के लिए बनाया जाएगा—
- 6 और यह कि यूसुफ के बचे हुए वंशों के लिए नया यरूशलेम इस प्रदेश पर बनाया जाएगा, क्योंकि इसका एक ढांचा पहले से ही है।
- 7 क्योंकि जब यूसुफ अपने पिता को मिस्र प्रदेश में लाया था, तो उसकी मृत्यु भी वहीं हुई थी; इसलिए, प्रभु यूसुफ के वंशों को यरूशलेम प्रदेश से बाहर लाया था, ताकि वह यूसुफ के वंशों के प्रति दयालु हो सके जिससे कि वे नष्ट न हो जाएं, वैसे ही जैसे कि वह यूसुफ के पिता के प्रति दयालु था जिससे कि वह नष्ट न हो जाए।
- 8 इसलिए, यूसुफ के घराने के बचे हुए लोगों को इस प्रदेश पर फिर से स्थापित किया जाएगा; और यह उनके उत्तराधिकार का प्रदेश होगा; और वे प्रभु के लिए वैसे ही एक पवित्र नगर का निर्माण करेंगे जैसे कि पुराना यरूशलेम था; और उनमें तब तक गड़बड़ी उत्पन्न नहीं की जाएगी जब तक कि अंत न आ जाए और धरती खत्म न हो जाए।

## Ether 13

And now I, Moroni, proceed to finish my record concerning the destruction of the people of whom I have been writing.

For behold, they rejected all the words of Ether; for he truly told them of all things, from the beginning of man; and that after the waters had receded from off the face of this land it became a choice land above all other lands, a chosen land of the Lord; wherefore the Lord would have that all men should serve him who dwell upon the face thereof;

And that it was the place of the New Jerusalem, which should come down out of heaven, and the holy sanctuary of the Lord.

Behold, Ether saw the days of Christ, and he spake concerning a New Jerusalem upon this land.

And he spake also concerning the house of Israel, and the Jerusalem from whence Lehi should come—after it should be destroyed it should be built up again, a holy city unto the Lord; wherefore, it could not be a new Jerusalem for it had been in a time of old; but it should be built up again, and become a holy city of the Lord; and it should be built unto the house of Israel—

And that a New Jerusalem should be built up upon this land, unto the remnant of the seed of Joseph, for which things there has been a type.

For as Joseph brought his father down into the land of Egypt, even so he died there; wherefore, the Lord brought a remnant of the seed of Joseph out of the land of Jerusalem, that he might be merciful unto the seed of Joseph that they should perish not, even as he was merciful unto the father of Joseph that he should perish not.

Wherefore, the remnant of the house of Joseph shall be built upon this land; and it shall be a land of their inheritance; and they shall build up a holy city unto the Lord, like unto the Jerusalem of old; and they shall no more be confounded, until the end come when the earth shall pass away.

- 9 और एक नया स्वर्ग और नई पृथ्वी होगी; और वे उसी पुराने के समान होंगे जो कि नष्ट हो चुका होगा, और सारी चीजें नई हो चुकी होंगी ।
- 10 और फिर नया यरूशलेम होगा; और आशीषित हैं वे जो उसमें निवास करते हैं, क्योंकि ये वही लोग हैं जिनके वस्त्र मेमने के लहू द्वारा स्वच्छ किया गया है; ये वही हैं जिनकी गणना यूसुफ के बचे हुए वंशों में होते हैं, जो कि इस्राएल के घराने के थे ।
- 11 और फिर आता है पुराना यरूशलेम और उसके निवासी, आशीषित हैं वे, क्योंकि उन्हें मेमने के लहू से साफ किया गया है; ये वही हैं जो तितर-बितर हो गए थे और जिन्हें धरती के चारों कोनों से एकत्रित किया गया था, और उत्तरी देशों से, और उस अनुबंध की परिपूर्णता में सम्मिलित होनेवाले में से हैं जिसे परमेश्वर ने उनके पूर्वज, इब्राहीम से बनाया था ।
- 12 और जब ये बातें होती हैं, वह धर्मशास्त्र पूरा होता है जो कहता है, वे लोग हैं जो प्रथम थे, जो कि अंतिम होंगे; और वे लोग हैं जो अंतिम थे, जो कि प्रथम होंगे ।
- 13 और मैं अधिक लिखनेवाला था, पर मुझे मना कर दिया गया; परन्तु ईश्वर की भविष्यवाणियां महान और अदभुत थीं; परन्तु उन्हें व्यर्थ मान लिया गया, और उसे बाहर निकाल दिया गया; और वह स्वयं को दिन में चट्टान की गुफा में छिपाता, और रात को वह उन चीजों को देखता जो लोगों के साथ होनेवाली थीं ।
- 14 और जब वह चट्टान की गुफा में रहता था तब रात को लोगों पर आनेवाले विनाश को देखते हुए, उसने इस अभिलेख की शेष बातों को लिखा ।
- 15 और ऐसा हुआ कि उसी वर्ष जब उसे लोगों के बीच से बाहर निकाल दिया गया था, लोगों के बीच भारी युद्ध होने लगा, क्योंकि ऐसे कई लोग थे जो सामने आ गए और जो कि शक्तिशाली थे, और दुष्टता की अपनी उस गुप्त योजनाओं के द्वारा कोरियंटूमर को मारना चाहते थे जिसके विषय में बताया गया था ।
- 16 और अब, कोरियंटूर ने स्वयं ही युद्ध की सारी कला का और संसार की सारी धूर्तता का अध्ययन किया था, इसलिए उसने उन लोगों के साथ मुकाबला किया जो उसे मारना चाहते थे ।

And there shall be a new heaven and a new earth; and they shall be like unto the old save the old have passed away, and all things have become new.

And then cometh the New Jerusalem; and blessed are they who dwell therein, for it is they whose garments are white through the blood of the Lamb; and they are they who are numbered among the remnant of the seed of Joseph, who were of the house of Israel.

And then also cometh the Jerusalem of old; and the inhabitants thereof, blessed are they, for they have been washed in the blood of the Lamb; and they are they who were scattered and gathered in from the four quarters of the earth, and from the north countries, and are partakers of the fulfilling of the covenant which God made with their father, Abraham.

And when these things come, bringeth to pass the scripture which saith, there are they who were first, who shall be last; and there are they who were last, who shall be first.

And I was about to write more, but I am forbidden; but great and marvelous were the prophecies of Ether; but they esteemed him as naught, and cast him out; and he hid himself in the cavity of a rock by day, and by night he went forth viewing the things which should come upon the people.

And as he dwelt in the cavity of a rock he made the remainder of this record, viewing the destructions which came upon the people, by night.

And it came to pass that in that same year in which he was cast out from among the people there began to be a great war among the people, for there were many who rose up, who were mighty men, and sought to destroy Coriantumr by their secret plans of wickedness, of which hath been spoken.

And now Coriantumr, having studied, himself, in all the arts of war and all the cunning of the world, wherefore he gave battle unto them who sought to destroy him.

- 17 परन्तु न तो उसने पश्चाताप किया था, न ही उसके सुंदर बेटे और बेटियों ने; न ही कोहोर के सुंदर बेटे और बेटियों ने; न ही कोरिहर के सुंदर बेटे और बेटियों ने; और भलि-भांति पूरी धरती पर ऐसे सुंदर बेटे और बेटियां नहीं थे जिन्होंने अपने पापों का पश्चाताप किया ।
- 18 इसलिए, ऐसा हुआ कि प्रथम वर्ष में ईथर चट्टान की गुफा में रहा, ऐसे कई लोग थे जो उन लोगों की तलवारों द्वारा मारे गए थे जिन्होंने गुप्त गठबंधन किये थे, कोरियंटूमर के विरुद्ध लड़ाई लड़ते हुए ताकि वे राज्य प्राप्त कर सकें ।
- 19 और ऐसा हुआ कि कोरियंटूमर के बेटों ने बहुत लड़ाई लड़ी और बहुत रक्त बहाया ।
- 20 और दूसरे वर्ष में ईथर के पास प्रभु के वचन आए, कि उसे जाकर कोरियंटूमर के लिए भविष्यवाणी करनी चाहिए कि यदि वह और उसका पूरा घराना पश्चाताप करेगा तो प्रभु उसे उसका राज्य दे देगा और लोगों को बचा लेगा—
- 21 अन्यथा उनका, और उसे छोड़कर उसके पूरे घराने का विनाश हो जाएगा । और केवल वह जीवित रहेगा, उन भविष्यवाणियों को पूरा होते हुए देखने के लिए जिसे उन अन्य लोगों को बारे में बताया गया था जिन्होंने अपने उत्तराधिकार का प्रदेश प्राप्त किया था; और कोरियंटूमर की दफन-क्रिया उन्हीं के द्वारा होगी; और कोरियंटूमर के अलावा हर व्यक्ति खत्म हो जाएगा ।
- 22 और ऐसा हुआ कि न तो कोरियंटूमर ने पश्चाताप किया, न ही उसके घराने ने, न ही लोगों ने; और युद्ध बंद नहीं हुए; और उन्होंने ईथर को मारना चाहा, परन्तु वह उनके सामने से भाग गया और फिर से चट्टान की गुफा में छिप गया ।
- 23 और ऐसा हुआ कि शारद सामने आया, और उसने भी कोरियंटूमर से युद्ध किया; और उसने उसे हरा दिया, इतना अधिक कि तीसरे वर्ष ही वह उसे दासता में ले आया ।
- 24 और चौथे वर्ष में कोरियंटूमर के बेटों ने शारद को हरा दिया, और फिर से अपने पिता के लिए राज्य हासिल कर लिया ।
- 25 अब पूरे प्रदेश में युद्ध होने लगा, हर व्यक्ति अपने दल के साथ उस चीज के लिए लड़ने लगा जो वह चाहता था ।
- 26 और वहां डाकू थे, और भलि-भांति, पूरे प्रदेश में हर प्रकार की दुष्टता होने लगी ।

But he repented not, neither his fair sons nor daughters; neither the fair sons and daughters of Cohor; neither the fair sons and daughters of Corihor; and in fine, there were none of the fair sons and daughters upon the face of the whole earth who repented of their sins.

Wherefore, it came to pass that in the first year that Ether dwelt in the cavity of a rock, there were many people who were slain by the sword of those secret combinations, fighting against Coriantumr that they might obtain the kingdom.

And it came to pass that the sons of Coriantumr fought much and bled much.

And in the second year the word of the Lord came to Ether, that he should go and prophesy unto Coriantumr that, if he would repent, and all his household, the Lord would give unto him his kingdom and spare the people—

Otherwise they should be destroyed, and all his household save it were himself. And he should only live to see the fulfilling of the prophecies which had been spoken concerning another people receiving the land for their inheritance; and Coriantumr should receive a burial by them; and every soul should be destroyed save it were Coriantumr.

And it came to pass that Coriantumr repented not, neither his household, neither the people; and the wars ceased not; and they sought to kill Ether, but he fled from before them and hid again in the cavity of the rock.

And it came to pass that there arose up Shared, and he also gave battle unto Coriantumr; and he did beat him, insomuch that in the third year he did bring him into captivity.

And the sons of Coriantumr, in the fourth year, did beat Shared, and did obtain the kingdom again unto their father.

Now there began to be a war upon all the face of the land, every man with his band fighting for that which he desired.

And there were robbers, and in fine, all manner of wickedness upon all the face of the land.

- 27 और ऐसा हुआ कि कोरियंटूमर शारद से अत्याधिक क्रोधित था, और वह अपनी सेना के साथ उससे युद्ध करने गया; और उन्होंने भयानक क्रोध में युद्ध किया, और उन्होंने गिल्गाल की खाड़ी में युद्ध किया; और युद्ध बहुत ही दुखदाई हुआ ।
- 28 और ऐसा हुआ कि शारद ने तीन दिनों तक उससे युद्ध किया । और ऐसा हुआ कि कोरियंटूमर ने उसे हरा दिया, और उसका तब तक पीछा करता रहा जब तक कि वह हेशलॉन के मैदानों पर न पहुंच गया ।
- 29 और ऐसा हुआ कि उन मैदानों पर फिर से शारद ने उससे युद्ध किया; और देखो, उसने कोरियंटूमर को हरा दिया, और उसे फिर से गिल्गाल की खाड़ी पर खदेड़ दिया ।
- 30 और कोरियंटूमर ने फिर से गिल्गाल की खाड़ी में शारद से युद्ध किया, जिसमें उसने शारद को हरा दिया और उसे मार डाला ।
- 31 और शारद ने कोरियंटूमर की जांघ को घायल कर दिया, जिससे कि उसने दो वर्षों तक फिर से युद्ध के लिए नहीं गया, और उस समय प्रदेश के सारे लोग रक्तपात कर रहे थे, और उन्हें रोकने वाला कोई नहीं था ।
- And it came to pass that Coriantumr was exceedingly angry with Shared, and he went against him with his armies to battle; and they did meet in great anger, and they did meet in the valley of Gilgal; and the battle became exceedingly sore.
- And it came to pass that Shared fought against him for the space of three days. And it came to pass that Coriantumr beat him, and did pursue him until he came to the plains of Heshlon.
- And it came to pass that Shared gave him battle again upon the plains; and behold, he did beat Coriantumr, and drove him back again to the valley of Gilgal.
- And Coriantumr gave Shared battle again in the valley of Gilgal, in which he beat Shared and slew him.
- And Shared wounded Coriantumr in his thigh, that he did not go to battle again for the space of two years, in which time all the people upon the face of the land were shedding blood, and there was none to restrain them.



## ईथर 14

- 1 और अब लोगों की बुराई के कारण पूरा प्रदेश अत्याधिक श्रापित होने लगा, जिसमें, कोई व्यक्ति अपने औजार या अपनी तलवार को यदि अपनी अलमारी पर रख देता, या उस स्थान पर जहां उसे रखा जाता है तो देखो, अगले दिन वह उसे नहीं मिलती थी, इतना भारी श्राप था प्रदेश पर ।
- 2 इसलिए हर व्यक्ति अपनी वस्तु को अपने से चिपकाए रहता, अपने स्वयं के हाथों से, और न तो किसी से लेता और न ही किसी को देता; और हर व्यक्ति अपनी संपत्ति और अपना जीवन, अपनी पत्नियों और अपने बच्चों की रक्षा के लिए अपनी तलवार की मूठ को अपने दाहिने हाथ से पकड़े रहता ।
- 3 और अब, दो वर्षों के पश्चात, और शारद की मृत्यु के पश्चात, देखो, शारद का भाई सामने आया और उसने कोरियंटूमर से युद्ध किया, जिसमें कोरियंटूमर ने उसे हरा दिया और अकिश की निर्जन प्रदेश तक उसका पीछा किया ।
- 4 और ऐसा हुआ कि शारद के भाई ने अकिश के निर्जन प्रदेश में उससे युद्ध किया; और युद्ध बहुत भयानक हो गया, और तलवार द्वारा कई हजार लोगों को मृत्यु के घाट उतार दिया गया ।
- 5 और ऐसा हुआ कि कोरियंटूमर ने निर्जन प्रदेश को घेर लिया; और शारद का भाई रात के समय निर्जन प्रदेश से बाहर चला गया, और कोरियंटूमर की सेना के कुछ लोगों को मार डाला जब वे नशे में धुत्त थे ।
- 6 और वह मोरोन प्रदेश आया, और स्वयं को कोरियंटूमर की राजगद्दी पर स्थापित कर दिया ।
- 7 और ऐसा हुआ कि दो वर्षों तक कोरियंटूमर अपनी सेना के साथ निर्जन प्रदेश में ही रहा, जिसमें उसने अपनी सेना को बहुत मजबूत कर दिया ।
- 8 अब शारद का भाई, जिसका नाम गिलेद था, अपने गुप्त गठबंधनों के कारण उसने भी अपनी सेना को मजबूत कर लिया था ।
- 9 और ऐसा हुआ कि उसके उच्च याजक ने उसकी तब हत्या कर दी जब वह अपनी राजगद्दी पर बैठा था ।
- 10 और ऐसा हुआ कि गुप्त गठबंधनों के एक व्यक्ति ने गुप्त रूप से उसकी हत्या कर दी, और राज्य को स्वयं हथिया लिया; और उसका नाम लिब था; और लिब सारे लोगों में, किसी भी व्यक्ति से अधिक लम्बा-चौड़ा था ।

## Ether 14

And now there began to be a great curse upon all the land because of the iniquity of the people, in which, if a man should lay his tool or his sword upon his shelf, or upon the place whither he would keep it, behold, upon the morrow, he could not find it, so great was the curse upon the land.

Wherefore every man did cleave unto that which was his own, with his hands, and would not borrow neither would he lend; and every man kept the hilt of his sword in his right hand, in the defence of his property and his own life and of his wives and children.

And now, after the space of two years, and after the death of Shared, behold, there arose the brother of Shared and he gave battle unto Coriantumr, in which Coriantumr did beat him and did pursue him to the wilderness of Akish.

And it came to pass that the brother of Shared did give battle unto him in the wilderness of Akish; and the battle became exceedingly sore, and many thousands fell by the sword.

And it came to pass that Coriantumr did lay siege to the wilderness; and the brother of Shared did march forth out of the wilderness by night, and slew a part of the army of Coriantumr, as they were drunken.

And he came forth to the land of Moron, and placed himself upon the throne of Coriantumr.

And it came to pass that Coriantumr dwelt with his army in the wilderness for the space of two years, in which he did receive great strength to his army.

Now the brother of Shared, whose name was Gilead, also received great strength to his army, because of secret combinations.

And it came to pass that his high priest murdered him as he sat upon his throne.

And it came to pass that one of the secret combinations murdered him in a secret pass, and obtained unto himself the kingdom; and his name was Lib; and Lib was a man of great stature, more than any other man among all the people.

- 11 और ऐसा हुआ कि लिब के प्रथम वर्ष में, कोरियंटूमर मोरोन प्रदेश आ गया, और लिब के साथ युद्ध किया ।
- 12 और ऐसा हुआ कि वह लिब के साथ लड़ा जिसमें लिब ने उसकी बांह पर प्रहार किया जिससे कि वह घायल हो गया; फिर भी, कोरियंटूमर की सेना लिब की तरफ बढ़ती गई जिससे कि वह समुद्रतट की सीमाओं की तरफ भाग गया ।
- 13 और ऐसा हुआ कि कोरियंटूमर ने उसका पीछा किया; और लिब ने समुद्रतट पर उसके साथ युद्ध किया ।
- 14 और ऐसा हुआ कि लिब ने कोरियंटूमर की सेना पर आक्रमण किया जिससे कि वे फिर से भागकर अकिश की निर्जन प्रदेश में चले गए ।
- 15 और ऐसा हुआ कि लिब ने उसका तब तक पीछा किया जब तक कि वह आगोश के मैदानों पर न पहुंच गया । और कोरियंटूमर अपने साथ सारे लोगों को लेकर लिब के सामने से प्रदेश के उस हिस्से में भागकर चला गया जहां वह भागा था ।
- 16 और जब वह आगोश के मैदानों पर पहुंच गया तब उसने लिब से युद्ध किया, और वह उस पर तब तक प्रहार करता रहा जब तक कि वह मर न गया; फिर भी, इसके पश्चात लिब का भाई उसके स्थान पर कोरियंटूमर से युद्ध करने लगा, और युद्ध अत्याधिक भयानक हो गया, जिसमें कोरियंटूमर फिर से लिब के भाई की सेना के सामने से भाग गया ।
- 17 अब लिब के भाई का नाम शिज था । और ऐसा हुआ कि शिज ने कोरियंटूमर का पीछा किया, और उसने कई नगरों का तख्ता पलट कर दिया, और उसने दोनों स्त्रियों और बच्चों को मारा, और नगरों को जलाया ।
- 18 और पूरे प्रदेश में शिज का डर फैल गया; हां, पूरे प्रदेश में चीख-पुकार सुनाई देने लगी—शिज की सेना के सामने कौन खड़ा रह सकता है ? देखो, वह धरती का सफाया करता हुआ चलता है ।
- 19 और ऐसा हुआ कि पूरे प्रदेश में लोग सेनाओं में एकत्रित होने लगे ।
- 20 और वे विभाजित होने लगे; और उनमें से एक हिस्सा शिज की सेना में जा मिला, और उनमें से एक हिस्सा कोरियंटूमर की सेना में जा मिला ।
- 21 और युद्ध बहुत भयानक था और अधिक दिनों तक चलता रहा, और बहुत दिनों तक रक्तपात और संहार के दृश्य आते रहे, जिससे कि पूरा प्रदेश मरे हुए लोगों के शरीरों से ढक गया ।

And it came to pass that in the first year of Lib, Coriantumr came up unto the land of Moron, and gave battle unto Lib.

And it came to pass that he fought with Lib, in which Lib did smite upon his arm that he was wounded; nevertheless, the army of Coriantumr did press forward upon Lib, that he fled to the borders upon the seashore.

And it came to pass that Coriantumr pursued him; and Lib gave battle unto him upon the seashore.

And it came to pass that Lib did smite the army of Coriantumr, that they fled again to the wilderness of Akish.

And it came to pass that Lib did pursue him until he came to the plains of Agosh. And Coriantumr had taken all the people with him as he fled before Lib in that quarter of the land whither he fled.

And when he had come to the plains of Agosh he gave battle unto Lib, and he smote upon him until he died; nevertheless, the brother of Lib did come against Coriantumr in the stead thereof, and the battle became exceedingly sore, in the which Coriantumr fled again before the army of the brother of Lib.

Now the name of the brother of Lib was called Shiz. And it came to pass that Shiz pursued after Coriantumr, and he did overthrow many cities, and he did slay both women and children, and he did burn the cities.

And there went a fear of Shiz throughout all the land; yea, a cry went forth throughout the land—Who can stand before the army of Shiz? Behold, he sweepeth the earth before him!

And it came to pass that the people began to flock together in armies, throughout all the face of the land.

And they were divided; and a part of them fled to the army of Shiz, and a part of them fled to the army of Coriantumr.

And so great and lasting had been the war, and so long had been the scene of bloodshed and carnage, that the whole face of the land was covered with the bodies of the dead.

- 22 और युद्ध इतना वेगपूर्ण और तेज था कि मरे हुए लोगों को दफनाने के लिए भी कोई नहीं बचा, परन्तु वे एक स्थान पर रक्तपात कर दूसरे स्थान पर रक्तपात के लिए आगे बढ़ते गए, और मांस खानेवाले कीड़ों का आहार बनने के लिए, दोनों पुरुषों और स्त्रियों, और बच्चों को धरती पर फैलाते गए ।
- 23 और इसके पश्चात प्रदेश में गंध फैल गई, यहां तक कि पूरे प्रदेश में; इसलिए इस गंध के कारण रात और दिन लोग बहुत परेशान हुए ।
- 24 फिर भी, शिज ने कोरियंटूमर का पीछा करना नहीं छोड़ा; क्योंकि उसने शपथ ली थी कि वह कोरियंटूमर से अपने भाई के लहू का बदला लेगा, जो कि मारा गया था, और प्रभु ने ईथर से कहा था कि कोरियंटूमर तलवार से नहीं मारा जाएगा ।
- 25 और इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रभु उन पर अपने पूरे क्रोध में आया, और उनकी बुराई और घृणित कार्यों ने उनके लिए अनंत विनाश का मार्ग तैयार किया ।
- 26 और ऐसा हुआ कि शिज ने कोरियंटूमर का पीछा पूर्व दिशा की ओर, समुद्रतट से लगी सीमाओं तक किया, और वहां पर उसने शिज से तीन दिनों तक युद्ध किया ।
- 27 और शिज की सेनाओं में विनाश इतना भयानक हुआ कि लोग डरने लगे, और कोरियंटूमर की सेना से भागने लगे; और वे भागकर कोरिहर नामक प्रदेश चले गए, और अपने सामने आनेवाले निवासियों को मारते गए, उन सबको जो उनसे नहीं जुड़ना चाहते थे ।
- 28 और उन्होंने कोरिहर की खाड़ी में अपने तंबू लगाए; और कोरियंटूमर ने शूर की खाड़ी में अपने तंबू लगाए । अब शूर की खाड़ी कोमनोर पहाड़ी के नजदीक थी; इसलिए कोरियंटूमर ने अपनी सेनाओं को कोमनोर पहाड़ी पर एकत्रित किया, और युद्ध करने के लिए शिज की सेनाओं को ढिंढोरा पीटकर ललकारा ।
- 29 और ऐसा हुआ कि वे आए, परन्तु फिर से भगा दिए गए; और वे दूसरी बार आए, और दूसरी बार भी भगा दिए गए । और ऐसा हुआ कि वे फिर से तीसरी बार आए, और युद्ध बहुत भयानक हुआ ।

And so swift and speedy was the war that there was none left to bury the dead, but they did march forth from the shedding of blood to the shedding of blood, leaving the bodies of both men, women, and children strewed upon the face of the land, to become a prey to the worms of the flesh.

And the scent thereof went forth upon the face of the land, even upon all the face of the land; wherefore the people became troubled by day and by night, because of the scent thereof.

Nevertheless, Shiz did not cease to pursue Coriantumr; for he had sworn to avenge himself upon Coriantumr of the blood of his brother, who had been slain, and the word of the Lord which came to Ether that Coriantumr should not fall by the sword.

And thus we see that the Lord did visit them in the fulness of his wrath, and their wickedness and abominations had prepared a way for their everlasting destruction.

And it came to pass that Shiz did pursue Coriantumr eastward, even to the borders by the seashore, and there he gave battle unto Shiz for the space of three days.

And so terrible was the destruction among the armies of Shiz that the people began to be frightened, and began to flee before the armies of Coriantumr; and they fled to the land of Corihor, and swept off the inhabitants before them, all them that would not join them.

And they pitched their tents in the valley of Corihor; and Coriantumr pitched his tents in the valley of Shurr. Now the valley of Shurr was near the hill Comnor; wherefore, Coriantumr did gather his armies together upon the hill Comnor, and did sound a trumpet unto the armies of Shiz to invite them forth to battle.

And it came to pass that they came forth, but were driven again; and they came the second time, and they were driven again the second time. And it came to pass that they came again the third time, and the battle became exceedingly sore.

30 और ऐसा हुआ कि शिज ने कोरियंटूमर पर इतना अधिक प्रहार किये कि उसने उसे कई गहरे घाव दिए; और कोरियंटूमर, अधिक लहू बहने से बेहोश हो गया, और उसे वैसे उठाकर ले जाया गया जैसे कि वह मर गया हो ।

31 अब दोनों तरफ इतनी अधिक संख्या में पुरुष, स्त्री, और बच्चे मारे गए कि शिज ने अपने लोगों को कोरियंटूमर की सेनाओं का पीछा न करने की आज्ञा दी; इसलिए, वे अपने शिविर में वापस आ गए ।

And it came to pass that Shiz smote upon Coriantumr that he gave him many deep wounds; and Coriantumr, having lost his blood, fainted, and was carried away as though he were dead.

Now the loss of men, women and children on both sides was so great that Shiz commanded his people that they should not pursue the armies of Coriantumr; wherefore, they returned to their camp.

## ईथर 15

- 1 और ऐसा हुआ कि जब कोरियंटूमर के घाव ठीक हो गए, वह ईथर की बातों को याद करने लगा जिसे उसने उससे कहा था ।
- 2 उसने देखा कि लगभग दो लाख लोग पहले ही तलवार द्वारा मारे जा चुके थे, और वह अपने हृदय में दुखी होने लगा; हां, दो लाख शक्तिशाली पुरुष मारे जा चुके थे, और उनकी पत्नियां और उनके बच्चे भी ।
- 3 जो भी बुरे काम उसने किये थे उसके लिए वह पश्चाताप करने लगा; वह उन बातों को याद करने लगा जिसके विषय में सारे भविष्यवक्ताओं ने बताया था, और उसने उन्हें देखा कि इस प्रकार अब तक हर एक छोटी से छोटी बात पूरी हुई थी; और उसकी आत्मा ने विलाप किया और आश्वासन पाना अस्वीकार कर दिया ।
- 4 और ऐसा हुआ कि उसने शिज को एक पत्र लिखा, उससे यह चाहते हुए कि वह लोगों को छोड़ दे, और लोगों के जीवन के लिए वह राज्य दे देगा ।
- 5 और ऐसा हुआ कि जब शिज ने उसका पत्र प्राप्त किया तब उसने कोरियंटूमर को एक पत्र लिखा, कि यदि वह स्वयं को उसे समर्पित कर दे जिससे कि वह उसे अपने स्वयं की तलवार से मार सके तब वह लोगों को छोड़ देगा ।
- 6 और ऐसा हुआ कि लोगों ने अपनी गलती का पश्चाताप नहीं किया; और कोरियंटूमर के लोग शिज के लोगों के विरुद्ध क्रोध से भड़क गए; और शिज के लोग कोरियंटूमर के लोगों के विरुद्ध क्रोध से भड़क गए; इसलिए, शिज के लोगों ने कोरियंटूमर के लोगों से युद्ध किया ।
- 7 और जब कोरियंटूमर ने देखा कि वह पकड़ा जानेवाला है तो वह फिर से शिज के लोगों के सामने से भाग गया ।
- 8 और ऐसा हुआ कि वह रिप्लियंकुम नामक समुद्र के पास आया, जिसकी यदि व्याख्या की जाए तो बहुत विशाल था, या सबसे विशाल था; इसलिए, जब वे इस समुद्र के पास आए तो उन्होंने अपना तंबू लगाया; और शिज ने भी उनके पास ही अपना तंबू लगा लिया; और इसलिए अगले दिन वे युद्ध करने आए ।
- 9 और ऐसा हुआ कि उन्होंने एक बहुत ही भयानक युद्ध लड़ा, जिसमें कोरियंटूमर फिर से घायल हो गया, और लहू बहने के कारण वह बेहोश हो गया ।

## Ether 15

And it came to pass when Coriantumr had recovered of his wounds, he began to remember the words which Ether had spoken unto him.

He saw that there had been slain by the sword already nearly two millions of his people, and he began to sorrow in his heart; yea, there had been slain two millions of mighty men, and also their wives and their children.

He began to repent of the evil which he had done; he began to remember the words which had been spoken by the mouth of all the prophets, and he saw them that they were fulfilled thus far, every whit; and his soul mourned and refused to be comforted.

And it came to pass that he wrote an epistle unto Shiz, desiring him that he would spare the people, and he would give up the kingdom for the sake of the lives of the people.

And it came to pass that when Shiz had received his epistle he wrote an epistle unto Coriantumr, that if he would give himself up, that he might slay him with his own sword, that he would spare the lives of the people.

And it came to pass that the people repented not of their iniquity; and the people of Coriantumr were stirred up to anger against the people of Shiz; and the people of Shiz were stirred up to anger against the people of Coriantumr; wherefore, the people of Shiz did give battle unto the people of Coriantumr.

And when Coriantumr saw that he was about to fall he fled again before the people of Shiz.

And it came to pass that he came to the waters of Ripliancum, which, by interpretation, is large, or to exceed all; wherefore, when they came to these waters they pitched their tents; and Shiz also pitched his tents near unto them; and therefore on the morrow they did come to battle.

And it came to pass that they fought an exceedingly sore battle, in which Coriantumr was wounded again, and he fainted with the loss of blood.

- 10 और ऐसा हुआ कि कोरियंटूमर की सेनाओं ने शिज की सेनाओं पर भारी धावा बोलकर उन्हें हरा दिया जिससे कि वे उनके सामने से भाग गए; और वे दक्षिणी दिशा की तरफ भागे, और उन्होंने अपना तंबू उस स्थान पर लगाया जो ओगाथ कहलाता था ।
- 11 और ऐसा हुआ कि कोरियंटूमर की सेना ने रामा पहाड़ी के निकट अपने तंबू लगाए; और यह वह पहाड़ी है जहां पर मेरे पिता मॉरमन ने प्रभु के उन अभिलेखों को छिपाया था जो कि पावन थे ।
- 12 और ऐसा हुआ कि उन्होंने ईथर के अलावा, पूरे प्रदेश के उन सारे लोगों को एकत्रित किया जिन्हें मारा नहीं गया था ।
- 13 और ऐसा हुआ कि ईथर ने लोगों की सारी कार्यवाहियों को देखा; और उसने इस बात पर ध्यान दिया कि जो कोरियंटूमर के लोग थे वे कोरियंटूमर की सेना के साथ एकत्रित हो गए; और जो शिज के लोग थे वे शिज की सेना के साथ एकत्रित हो गए ।
- 14 इसलिए, चार वर्षों तक वे लोगों को एकत्रित करते रहे जिससे कि वे प्रदेश के सारे लोगों को ला सकें, और यह कि जितना प्राप्त करना संभव था उतना बल प्राप्त कर सकें ।
- 15 और ऐसा हुआ कि जब वे सब एक साथ एकत्रित हो गए, हर एक व्यक्ति अपनी पत्नी और अपने बच्चों के साथ उस सेना से जुड़ गया जिससे वह जुड़ना चाहता था—ढाल, और कवच, और सिर की पट्टियों को पहनते हुए, और युद्ध में पहने जानेवाले वस्त्र धारण करते हुए, दोनों पुरुष और स्त्री और बच्चे युद्ध के हथियारों से सुसज्जित हो गए—एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध के लिए उन्होंने मार्च किया; और उन्होंने पूरा दिन युद्ध किया, और परास्त नहीं हुए ।
- 16 और ऐसा हुआ कि रात होने तक वे सब थक गए, और अपने शिविरों में चले गए; और जब वे अपने शिविरों में पहुंच गए उसके पश्चात उन्होंने अपने उन लोगों के लिए रूंदन और विलाप किया जो मारे गए थे; और उनका चिखना चिल्लाना, उनका रूंदन और विलाप करना इतना तेज था कि उससे वायुमंडल गूंज उठा ।
- 17 और ऐसा हुआ कि अगले दिन वे फिर से युद्ध करने गए, और वह दिन बड़ा और भयानक था; फिर भी, वे परास्त नहीं हुए, और जब रात हुई तो फिर से उनकी चिल्लाहटों से, और उनके रूंदन और विलाप से वायुमंडल गूंज उठा, क्योंकि उनके लोग मारे गए थे ।

And it came to pass that the armies of Coriantumr did press upon the armies of Shiz that they beat them, that they caused them to flee before them; and they did flee southward, and did pitch their tents in a place which was called Ogath.

And it came to pass that the army of Coriantumr did pitch their tents by the hill Ramah; and it was that same hill where my father Mormon did hide up the records unto the Lord, which were sacred.

And it came to pass that they did gather together all the people upon all the face of the land, who had not been slain, save it was Ether.

And it came to pass that Ether did behold all the doings of the people; and he beheld that the people who were for Coriantumr were gathered together to the army of Coriantumr; and the people who were for Shiz were gathered together to the army of Shiz.

Wherefore, they were for the space of four years gathering together the people, that they might get all who were upon the face of the land, and that they might receive all the strength which it was possible that they could receive.

And it came to pass that when they were all gathered together, every one to the army which he would, with their wives and their children—both men, women and children being armed with weapons of war, having shields, and breastplates, and headplates, and being clothed after the manner of war—they did march forth one against another to battle; and they fought all that day, and conquered not.

And it came to pass that when it was night they were weary, and retired to their camps; and after they had retired to their camps they took up a howling and a lamentation for the loss of the slain of their people; and so great were their cries, their howlings and lamentations, that they did rend the air exceedingly.

And it came to pass that on the morrow they did go again to battle, and great and terrible was that day; nevertheless, they conquered not, and when the night came again they did rend the air with their cries, and their howlings, and their mournings, for the loss of the slain of their people.

- 18 और ऐसा हुआ कि कोरियंटूमर ने फिर से शिज को एक पत्र लिखा, यह इच्छा व्यक्त करते हुए कि वह फिर से युद्ध नहीं करना चाहता, परन्तु वह राज्य ले लेगा और लोगों को नहीं मारेगा ।
- 19 परन्तु देखो, प्रभु की आत्मा ने उनका साथ देना बंद कर दिया था, और लोगों के हृदयों पर शैतान का पूरा कब्जा था; क्योंकि अपने हृदयों की कठोरता, और अपने मन के अंधेपन के कारण वे लाचार हो गए थे कि कहीं वे मारे न जाएं; इसलिए वे फिर से युद्ध करने गए ।
- 20 और ऐसा हुआ कि उन्होंने पूरा दिन युद्ध किया, और जब रात हुई तो वे अपनी तलवारों के साथ सोए ।
- 21 और अगले दिन रात होने तक उन्होंने युद्ध किया ।
- 22 और रात होने तक वे मतवाले हो गए, वैसे ही जैसे कि कोई व्यक्ति मदिरा पी कर नशे में चूर हो जाता है; और फिर से वे अपनी तलवारों के साथ सो गए ।
- 23 और अगले दिन उन्होंने फिर से युद्ध किया; और रात होने तक कोरियंटूमर के बावन लोगों को, और शिज के उनहत्तर लोगों को छोड़कर बाकी सारे मारे जा चुके थे ।
- 24 और ऐसा हुआ कि उस रात वे अपनी तलवारों के साथ सोए, और अगले दिन उन्होंने फिर से युद्ध किया, और पूरा दिन उन्होंने अपनी तलवारों और अपनी ढालों के साथ अपने पूरे बल से युद्ध किया ।
- 25 और रात होने तक शिज के बत्तीस लोग, और कोरियंटूमर के सत्ताईस लोग बचे रह गए ।
- 26 और ऐसा हुआ कि उन्होंने खाया और सो गए, और अगले दिन मरने के लिए तैयार हो गए । और मानव बल की दृष्टि से वे हट्टे-कट्टे और बलवान पुरुष थे ।
- 27 और ऐसा हुआ कि वे तीन घंटों तक लड़ते रहे, और लहू बहने के कारण वे बेहोश हो गए ।
- 28 और ऐसा हुआ कि जब कोरियंटूमर के लोगों ने पर्याप्त बल प्राप्त कर लिया जिससे कि वे चल सकें, वे अपने जीवन की रक्षा के लिए लगभग भागने ही वाले थे; परन्तु देखो, शिज उठा, और उसके लोग भी, और उसने अपने क्रोध में शपथ ली कि वह कोरियंटूमर को मार डालेगा, अन्यथा तलवार द्वारा वह स्वयं मारा जाएगा ।

And it came to pass that Coriantumr wrote again an epistle unto Shiz, desiring that he would not come again to battle, but that he would take the kingdom, and spare the lives of the people.

But behold, the Spirit of the Lord had ceased striving with them, and Satan had full power over the hearts of the people; for they were given up unto the hardness of their hearts, and the blindness of their minds that they might be destroyed; wherefore they went again to battle.

And it came to pass that they fought all that day, and when the night came they slept upon their swords.

And on the morrow they fought even until the night came.

And when the night came they were drunken with anger, even as a man who is drunken with wine; and they slept again upon their swords.

And on the morrow they fought again; and when the night came they had all fallen by the sword save it were fifty and two of the people of Coriantumr, and sixty and nine of the people of Shiz.

And it came to pass that they slept upon their swords that night, and on the morrow they fought again, and they contended in their might with their swords and with their shields, all that day.

And when the night came there were thirty and two of the people of Shiz, and twenty and seven of the people of Coriantumr.

And it came to pass that they ate and slept, and prepared for death on the morrow. And they were large and mighty men as to the strength of men.

And it came to pass that they fought for the space of three hours, and they fainted with the loss of blood.

And it came to pass that when the men of Coriantumr had received sufficient strength that they could walk, they were about to flee for their lives; but behold, Shiz arose, and also his men, and he swore in his wrath that he would slay Coriantumr or he would perish by the sword.

- 29 इसलिये, उसने उनका पीछा किया, और अगले दिन वह उन तक पहुंच गया; और फिर से तलवार से युद्ध करने लगे। और ऐसा हुआ कि जब कोरियंटूमर और शिज के अलावा सारे लोग तलवार द्वारा मारे गए, देखो लहू बहने के कारण शिज बेहोश हो गया।
- 30 और ऐसा हुआ कि जब कोरियंटूमर ने अपनी तलवार का सहारा लेकर झुकते हुए थोड़ा आराम कर लिया, तो उसने शिज का सिर काट दिया।
- 31 और ऐसा हुआ कि जब उसने शिज का सिर काट दिया, तो शिज अपने हाथों का सहारा लेकर उठा और गिर गया; और इसके पश्चात् उसने सांस लेने के लिए संघर्ष किया, वह मर गया।
- 32 और ऐसा हुआ कि कोरियंटूमर जमीन पर गिर गया, और एक मरे हुए के समान हो गया।
- 33 और प्रभु ने ईथर से बात की, और उससे कहा: आगे बढ़ो। और वह आगे गया, और देखा कि प्रभु की सारी बातें पूरी हुई थीं; और उसने अपना अभिलेख पूरा किया; (और मैंने सौवां भाग नहीं लिखा) और उसने उन्हें इस तरह से छिपा दिया कि वह लिमही के लोगों के हाथ लग सके।
- 34 और ईथर द्वारा लिखे गए आखिरी शब्द ये हैं: चाहे प्रभु की इच्छा हो कि मैं रूपांतरित हो जाऊं, या यह कि शरीर में मैं प्रभु की इच्छा प्राप्त करूं तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है, यदि फर्क पड़ता है तो यह कि मैं परमेश्वर के राज्य में बचा लिया जाऊं। आमीन।

Wherefore, he did pursue them, and on the morrow he did overtake them; and they fought again with the sword. And it came to pass that when they had all fallen by the sword, save it were Coriantumr and Shiz, behold Shiz had fainted with the loss of blood.

And it came to pass that when Coriantumr had leaned upon his sword, that he rested a little, he smote off the head of Shiz.

And it came to pass that after he had smitten off the head of Shiz, that Shiz raised up on his hands and fell; and after that he had struggled for breath, he died.

And it came to pass that Coriantumr fell to the earth, and became as if he had no life.

And the Lord spake unto Ether, and said unto him: Go forth. And he went forth, and beheld that the words of the Lord had all been fulfilled; and he finished his record; (and the hundredth part I have not written) and he hid them in a manner that the people of Limhi did find them.

Now the last words which are written by Ether are these: Whether the Lord will that I be translated, or that I suffer the will of the Lord in the flesh, it mattereth not, if it so be that I am saved in the kingdom of God. Amen.



# मोरोनी की पुस्तक

## मोरोनी 1

- 1 अब, मैं, मोरोनी, येरेद के लोगों के विवरण को संक्षिप्त में लिखने के पश्चात्, मैंने माना कि मुझे और अधिक नहीं लिखना चाहिए था, परन्तु मैं अभी भी मरा नहीं हूँ; और मैं अपने जीवित रहने का पता लमनाइयों को नहीं लगने देना चाहता नहीं तो वे मुझे मार देंगे।
- 2 क्योंकि देखो, उनके बीच में हो रहे युद्ध बहुत तीव्र हैं; और अपनी ईर्ष्या के कारण वे उस प्रत्येक नफाई को मार रहे हैं जो मसीह को अस्वीकार नहीं करेगा।
- 3 और मैं, मोरोनी, मसीह को अस्वीकार नहीं करूँगा; इसलिए, मैं अपने जीवन की रक्षा के लिए इधर-उधर भटक रहा हूँ।
- 4 इसलिए, मुझे जो लिखना था उसके विपरित मैं कुछ और बातें लिख रहा हूँ; क्योंकि मैं और लिखना नहीं चाहता था; परन्तु मैं कुछ और बातें लिख रहा हूँ, जो कि प्रभु की इच्छानुसार, शायद भविष्य में किसी दिन, मेरे लमनाई भाइयों की अच्छाई के लिए हो सकें।

# The Book of Moroni

## Moroni 1

Now I, Moroni, after having made an end of abridging the account of the people of Jared, I had supposed not to have written more, but I have not as yet perished; and I make not myself known to the Lamanites lest they should destroy me.

For behold, their wars are exceedingly fierce among themselves; and because of their hatred they put to death every Nephite that will not deny the Christ.

And I, Moroni, will not deny the Christ; wherefore, I wander whithersoever I can for the safety of mine own life.

Wherefore, I write a few more things, contrary to that which I had supposed; for I had supposed not to have written any more; but I write a few more things, that perhaps they may be of worth unto my brethren, the Lamanites, in some future day, according to the will of the Lord.

## मोरोनी 2

- 1 मसीह के वचन, जिसे उसने अपने शिष्यों से कहा, उन बारह लोगों से जिन्हें उसने चुना था, जब उसने अपने हाथों को उन पर रखा—
- 2 और यह कहते हुए उसने उनका नाम लेकर कहा: प्रबल प्रार्थना में, तुम पिता को मेरे नाम में पुकारोगे; और जब तुम ऐसा कर लोगे उसके पश्चात तुम्हारे पास सामर्थ्य होगा कि तुम जिस पर अपना हाथ रखोगे, उसे पवित्र आत्मा प्रदान करोगे; और तुम इसे मेरे नाम में प्रदान करोगे, क्योंकि इसी प्रकार मेरे प्रेरित करते हैं ।
- 3 अब मसीह ने अपनी प्रथम उपस्थिति के समय में इन शब्दों को उनसे कहा; और भीड़ ने इसे नहीं सुना, परन्तु शिष्यों ने इसे सुना; और जितने लोगों पर उन्होंने अपने हाथों को रखा उन्होंने पवित्र आत्मा को महसूस किया ।

## Moroni 2

The words of Christ, which he spake unto his disciples, the twelve whom he had chosen, as he laid his hands upon them—

And he called them by name, saying: Ye shall call on the Father in my name, in mighty prayer; and after ye have done this ye shall have power that to him upon whom ye shall lay your hands, ye shall give the Holy Ghost; and in my name shall ye give it, for thus do mine apostles.

Now Christ spake these words unto them at the time of his first appearing; and the multitude heard it not, but the disciples heard it; and on as many as they laid their hands, fell the Holy Ghost.

### मोरोनी 3

- 1 शिष्य जिन्हें गिरजे के एल्डरों के रूप में बुलाया गया था, उन्होंने याजकों और शिक्षकों को इस रीति से नियुक्त किया—
- 2 जब उन्होंने मसीह के नाम में पिता से प्रार्थना कर ली, तब उन्होंने अपने हाथों को उन पर रखा ।
- 3 अंत तक मसीह के नाम पर विश्वास करते रहने में सहनशील रहते हुए, उसके द्वारा पश्चाताप और पापों की क्षमा का प्रचार करने के लिए, यीशु मसीह के नाम में मैं तुम्हें याजक नियुक्त करता हूँ (या यदि वह शिक्षक है, मैं तुम्हें शिक्षक नियुक्त करता हूँ) । आमीन ।
- 4 और इसी रीति से मनुष्यों के लिए परमेश्वर के उपहारों और बुलाहटों के अनुसार, उन्होंने याजकों और शिक्षकों को नियुक्त किया; और उन्होंने उन्हें पवित्र आत्मा की उस शक्ति द्वारा नियुक्त किया जो उनमें थी ।

### Moroni 3

The manner which the disciples, who were called the elders of the church, ordained priests and teachers—

After they had prayed unto the Father in the name of Christ, they laid their hands upon them, and said:

In the name of Jesus Christ I ordain you to be a priest (or if he be a teacher, I ordain you to be a teacher) to preach repentance and remission of sins through Jesus Christ, by the endurance of faith on his name to the end. Amen.

And after this manner did they ordain priests and teachers, according to the gifts and callings of God unto men; and they ordained them by the power of the Holy Ghost, which was in them.

## मोरोनी 4

- 1 अपने एल्डरों और याजकों की रीति के समान गिरजे में मसीह का मांस और रक्त बांटना; और उन्होंने इसे मसीह की आज्ञानुसार बांटा; इसलिए हम जानते हैं कि यह रीति सही है; और इसे एल्डर और याजक बांटते हैं—
- 2 और उन्होंने गिरजे में घुटने टेके, और यह कहते हुए मसीह के नाम में पिता से प्रार्थना की:
- 3 हे परमेश्वर, अनंत पिता, हम आपके पुत्र, यीशु मसीह के नाम में मांगते हैं, इस रोटी को आशीर्षित और पवित्र करो उन सब प्राणियों के लिए जो इसे ग्रहण करते हैं; ताकि वे इसे आपके पुत्र के शरीर की याद में खा सकें, और आपकी गवाही दे सकें, हे परमेश्वर, अनंत पिता, कि वे अपने ऊपर आपके पुत्र का नाम लेने, और सदा उसे याद रखने, और उन आज्ञाओं को मानने के इच्छुक हैं जो उसने उन्हें दी हैं, ताकि उनके साथ उसकी आत्मा सदा के लिए रह सके। आमीन।

## Moroni 4

The manner of their elders and priests administering the flesh and blood of Christ unto the church; and they administered it according to the commandments of Christ; wherefore we know the manner to be true; and the elder or priest did minister it—

And they did kneel down with the church, and pray to the Father in the name of Christ, saying:

O God, the Eternal Father, we ask thee in the name of thy Son, Jesus Christ, to bless and sanctify this bread to the souls of all those who partake of it; that they may eat in remembrance of the body of thy Son, and witness unto thee, O God, the Eternal Father, that they are willing to take upon them the name of thy Son, and always remember him, and keep his commandments which he hath given them, that they may always have his Spirit to be with them. Amen.

## मोरोनी 5

- 1 मदिरा को बांटने की रीति—देखो, उन्होंने प्याला लिया, और कहा:
- 2 हे परमेश्वर, अनंत पिता, हम आपके पुत्र, यीशु मसीह के नाम में मांगते हैं, इस मदिरा को आशीषित और पवित्र करो उन सब प्राणियों के लिए जो इसे पीते हैं, ताकि वे ऐसा आपके पुत्र के लहू की याद में कर सकें जो उनके लिए बहाया गया था; ताकि वे आपकी गवाही दे सकें, हे परमेश्वर, अनंत पिता, कि वे सदा उसे याद रखें ताकि उनके साथ उसकी आत्मा रह सके । आमीन ।

## Moroni 5

The manner of administering the wine—Behold, they took the cup, and said:

O God, the Eternal Father, we ask thee, in the name of thy Son, Jesus Christ, to bless and sanctify this wine to the souls of all those who drink of it, that they may do it in remembrance of the blood of thy Son, which was shed for them; that they may witness unto thee, O God, the Eternal Father, that they do always remember him, that they may have his Spirit to be with them. Amen.

## मोरोनी 6

- 1 और अब, मैं बपतिस्मे से संबंधित बोलता हूँ। देखो, एल्डरों, याजकों, और शिक्षकों का बपतिस्मा हुआ; और उनका बपतिस्मा तब तक नहीं हुआ था जब तक कि वे इसके योग्य फल नहीं लाए।
- 2 न ही उन्होंने किसी को भी बपतिस्मा के लिए तब तक स्वीकार किया जब तक कि वे एक टूटे हृदय और शोकार्त आत्मा के साथ न आए, और गिरजे में गवाही दी कि उन्होंने वास्तव में अपने पापों का पश्चाताप किया है।
- 3 और किसी को भी बपतिस्मा के लिए तब तक स्वीकार नहीं किया गया जब तक कि उन्होंने मसीह के नाम को अपने ऊपर ग्रहण न कर लिया, अंत तक उसकी सेवा करने का एक दृढ़ निश्चय लेते हुए।
- 4 और उन्हें बपतिस्मा के लिए स्वीकार किये जाने, और प्रभावित होने और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य द्वारा स्वच्छ किये जाने के पश्चात, उनकी गिनती मसीह के गिरजे के लोगों में हुई; और उनके नाम ले लिए गए ताकि उन्हें याद रखा जा सके और उन्हें सही मार्ग पर चलने के लिए, और निरंतर प्रार्थना करने में चौकस रहने के लिए उनका पोषण परमेश्वर के अच्छे वचन द्वारा किया जा सके, केवल मसीह के गुणों पर निर्भर होते हुए, जो कि उनके विश्वास का रचयिता और समाप्त करनेवाला था।
- 5 और उपवास और प्रार्थना के लिए, और अपनी आत्माओं के कल्याण से संबंधित एक दूसरे से बात करने के लिए गिरजे के लोग अक्सर एक साथ मिलते थे।
- 6 और प्रभु की याद में, रोटी और मदिरा ग्रहण करने के लिए वे अक्सर मिलते थे।
- 7 और वे इस बात का पालन करने में सख्त थे कि उनके बीच कोई बुराई न हो; और जो कोई भी बुराई करता हुआ पाया जाता, और गिरजे की तीन गवाह एल्डरों के सामने उनकी निंदा करते, और यदि वे पश्चाताप नहीं करते, और अपने पाप का अंगीकार नहीं करते, तो उनके नाम मिटा दिए जाते, और उनकी गिनती मसीह के लोगों में नहीं होती।
- 8 परन्तु जैसे-जैसे वे सच्ची निष्ठा से पश्चाताप करते और क्षमा प्राप्त करते, उन्हें क्षमा कर दिया जाता।
- 9 और आत्मा की कार्यों की रीति के अनुसार, और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से; गिरजे द्वारा उनकी सभाओं का संचालन होता; क्योंकि पवित्र आत्मा के सामर्थ्य द्वारा प्रचार करने, या उपदेश देने, या प्रार्थना करने, या विनती करने, या गाने के लिए उनका मार्गदर्शन होता, यहां तक कि ऐसा ही किया जाता।

## Moroni 6

And now I speak concerning baptism. Behold, elders, priests, and teachers were baptized; and they were not baptized save they brought forth fruit meet that they were worthy of it.

Neither did they receive any unto baptism save they came forth with a broken heart and a contrite spirit, and witnessed unto the church that they truly repented of all their sins.

And none were received unto baptism save they took upon them the name of Christ, having a determination to serve him to the end.

And after they had been received unto baptism, and were wrought upon and cleansed by the power of the Holy Ghost, they were numbered among the people of the church of Christ; and their names were taken, that they might be remembered and nourished by the good word of God, to keep them in the right way, to keep them continually watchful unto prayer, relying alone upon the merits of Christ, who was the author and the finisher of their faith.

And the church did meet together oft, to fast and to pray, and to speak one with another concerning the welfare of their souls.

And they did meet together oft to partake of bread and wine, in remembrance of the Lord Jesus.

And they were strict to observe that there should be no iniquity among them; and whoso was found to commit iniquity, and three witnesses of the church did condemn them before the elders, and if they repented not, and confessed not, their names were blotted out, and they were not numbered among the people of Christ.

But as oft as they repented and sought forgiveness, with real intent, they were forgiven.

And their meetings were conducted by the church after the manner of the workings of the Spirit, and by the power of the Holy Ghost; for as the power of the Holy Ghost led them whether to preach, or to exhort, or to pray, or to supplicate, or to sing, even so it was done.

## मोरोनी 7

- 1 और अब, मैं, मोरोनी, अपने पिता मॉरमन की कुछ बातों को लिखता हूँ, जिसे उसने विश्वास, आशा, और उदारता के संबंध में कहा था; क्योंकि उसने इस प्रकार लोगों से कहा था जब उसने उन्हें उस आराधनालय में सिखाया था, जिसे उन्होंने उपासना के लिए बनाया था।
- 2 और अब, मैं, मॉरमन, तुमसे कहता हूँ, मेरे प्रिय भाइयों, और ऐसा पिता परमेश्वर, और हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, और उसकी पवित्र इच्छा के द्वारा है, मेरे लिए जो उसकी बुलाहट का उपहार है उसके कारण, कि इस समय मुझे तुमसे बात करने की अनुमति मिली है।
- 3 इसलिए, मैं तुमसे, गिरजे के लोगों से बात करना चाहता हूँ, जो कि मसीह के शांतिमय अनुयाई हो, और तुमने पर्याप्त आशा प्राप्त कर लिया है जिससे तुम इस समय से लेकर स्वर्ग में प्रभु के साथ आराम करने के लिए, उसके आरामगाह में प्रवेश कर सकते हो।
- 4 और अब मेरे भाइयों, मानव संतानों के साथ तुम्हारे शांतिमय आचरण के कारण ही, मैं तुम्हारे विषय में इन बातों का अनुमान लगाता हूँ।
- 5 क्योंकि मुझे परमेश्वर का वचन याद है जो कहता है कि उनके कार्य के द्वारा तुम उन्हें जानोगे; क्योंकि यदि उनके कार्य अच्छे हैं तो वे भी अच्छे हैं।
- 6 क्योंकि देखो, परमेश्वर ने कहा है कि एक मनुष्य बुरा होते हुए अच्छा नहीं कर सकता है; क्योंकि यदि वह भेंट देता है, या परमेश्वर से प्रार्थना करता है, तो इससे उसे कोई लाभ नहीं होगा यदि वह ऐसा सच्ची निष्ठा से नहीं करेगा।
- 7 क्योंकि देखो, इसे उसकी धार्मिकता में नहीं माना जाता है।
- 8 क्योंकि देखो, एक मनुष्य यदि बुरा होते हुए भेंट देता है, वह ऐसा अनिच्छापूर्वक करता है; इसलिए वह उसके लिए वैसा ही माना जाएगा जैसे कि उसने भेंट अपने पास ही रखा हो; इसलिए परमेश्वर के सामने वह बुरा माना जाता है।
- 9 और इसी तरह यह एक मनुष्य के लिए भी बुरा माना जाता है, यदि वह प्रार्थना करेगा परन्तु हृदय की सच्ची निष्ठा से नहीं करेगा; हां, इससे उसे कोई लाभ नहीं होता है क्योंकि परमेश्वर इस प्रकार के व्यक्ति को स्वीकार नहीं करता है।
- 10 इसलिए, एक मनुष्य बुरा होते हुए वह नहीं कर सकता है जो अच्छा है; न ही वह एक अच्छी भेंट देगा।

## Moroni 7

And now I, Moroni, write a few of the words of my father Mormon, which he spake concerning faith, hope, and charity; for after this manner did he speak unto the people, as he taught them in the synagogue which they had built for the place of worship.

And now I, Mormon, speak unto you, my beloved brethren; and it is by the grace of God the Father, and our Lord Jesus Christ, and his holy will, because of the gift of his calling unto me, that I am permitted to speak unto you at this time.

Wherefore, I would speak unto you that are of the church, that are the peaceable followers of Christ, and that have obtained a sufficient hope by which ye can enter into the rest of the Lord, from this time henceforth until ye shall rest with him in heaven.

And now my brethren, I judge these things of you because of your peaceable walk with the children of men.

For I remember the word of God which saith by their works ye shall know them; for if their works be good, then they are good also.

For behold, God hath said a man being evil cannot do that which is good; for if he offereth a gift, or prayeth unto God, except he shall do it with real intent it profiteth him nothing.

For behold, it is not counted unto him for righteousness.

For behold, if a man being evil giveth a gift, he doeth it grudgingly; wherefore it is counted unto him the same as if he had retained the gift; wherefore he is counted evil before God.

And likewise also is it counted evil unto a man, if he shall pray and not with real intent of heart; yea, and it profiteth him nothing, for God receiveth none such.

Wherefore, a man being evil cannot do that which is good; neither will he give a good gift.

- 11 क्योंकि देखो, एक कड़वा सोता अच्छा जल नहीं दे सकता है; न ही एक अच्छा सोता कड़वा जल दे सकता है; इसलिए, एक मनुष्य शैतान का सेवक होते हुए मसीह का अनुसरण नहीं कर सकता है; और यदि वह मसीह का अनुसरण करता है तो वह शैतान का सेवक नहीं हो सकता है।
- 12 इसलिए, सारी बातें जो अच्छी हैं वह परमेश्वर की ओर से आती हैं; और जो बुरी हैं शैतान की ओर से आती हैं; क्योंकि शैतान परमेश्वर का शत्रु है, और निरंतर उसके विरुद्ध लड़ता रहता है, और पाप करने के लिए आमंत्रित करता और फुसलाता है, और जो बुरा है उसे करने के लिए निरंतर फुसलाता है।
- 13 परन्तु देखो, जो परमेश्वर की ओर से है वह निरंतर अच्छा करने के लिए आमंत्रित करता और फुसलाता है; इसलिए, हर चीज जो अच्छा करने के लिए, और परमेश्वर से प्रेम करने के लिए, और उसकी सेवा करने के लिए आमंत्रित करती और फुसलाती है, वह परमेश्वर से प्रेरित होती है।
- 14 इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों, ध्यान दो, तुम निर्णय मत लो कि जो बुरा है वह परमेश्वर की ओर से है, या जो अच्छा है और परमेश्वर की ओर से है, वह शैतान का है।
- 15 क्योंकि देखो, मेरे भाइयों, तुम्हें निर्णय करने के योग्य किया गया है ताकि तुम अच्छे और बुरे को जान सको; और निर्णय करने का तरीका स्पष्ट है ताकि तुम पूर्ण ज्ञान से जान सको कि वैसे ही जैसे कि काली रात से दिन का प्रकाश भिन्न है।
- 16 क्योंकि देखो, प्रभु की आत्मा प्रत्येक मनुष्य को दी गई है, ताकि वह अच्छे और बुरे को जान सके; इसलिए, मैं तुम्हें निर्णय लेने का तरीका बताता हूँ; क्योंकि हर चीज जो अच्छा करने के लिए आमंत्रित करती है, और मसीह में विश्वास करने के लिए उकसाती है, वह मसीह के सामर्थ्य और विश्वास द्वारा भेजी जाती है; इसलिए पूर्ण ज्ञान से तुम जान सकते हो कि यह परमेश्वर की ओर से है।
- 17 परन्तु जो चीज मनुष्यों को बुरा करने, और मसीह में विश्वास न करने, और उसे अस्वीकार करने, और परमेश्वर की सेवा न करने के लिए उकसाती है, तो तुम पूर्ण ज्ञान से जान सकते हो कि यह शैतान की ओर से है; क्योंकि शैतान का कार्य इसी प्रकार होता है, क्योंकि वह किसी भी मनुष्य को अच्छा करने के लिए नहीं उकसाता है, किसी भी मनुष्य को नहीं; न ही उसके दूत उकसाते हैं; न ही वे लोग जो उसके अनुसरण करनेवाले होते हैं।
- 18 और अब, मेरे भाइयों, देखते हुए कि तुम उस प्रकाश को जानते हो जिससे तुम न्याय कर सकते हो, जो प्रकाश है मसीह का प्रकाश, देखो कि तुमसे अनुचित न्याय न हो; क्योंकि जैसा न्याय तुम करते हो वैसा ही न्याय तुम्हारे साथ किया जाएगा।

For behold, a bitter fountain cannot bring forth good water; neither can a good fountain bring forth bitter water; wherefore, a man being a servant of the devil cannot follow Christ; and if he follow Christ he cannot be a servant of the devil.

Wherefore, all things which are good cometh of God; and that which is evil cometh of the devil; for the devil is an enemy unto God, and fighteth against him continually, and inviteth and enticeth to sin, and to do that which is evil continually.

But behold, that which is of God inviteth and enticeth to do good continually; wherefore, every thing which inviteth and enticeth to do good, and to love God, and to serve him, is inspired of God.

Wherefore, take heed, my beloved brethren, that ye do not judge that which is evil to be of God, or that which is good and of God to be of the devil.

For behold, my brethren, it is given unto you to judge, that ye may know good from evil; and the way to judge is as plain, that ye may know with a perfect knowledge, as the daylight is from the dark night.

For behold, the Spirit of Christ is given to every man, that he may know good from evil; wherefore, I show unto you the way to judge; for every thing which inviteth to do good, and to persuade to believe in Christ, is sent forth by the power and gift of Christ; wherefore ye may know with a perfect knowledge it is of God.

But whatsoever thing persuadeth men to do evil, and believe not in Christ, and deny him, and serve not God, then ye may know with a perfect knowledge it is of the devil; for after this manner doth the devil work, for he persuadeth no man to do good, no, not one; neither do his angels; neither do they who subject themselves unto him.

And now, my brethren, seeing that ye know the light by which ye may judge, which light is the light of Christ, see that ye do not judge wrongfully; for with that same judgment which ye judge ye shall also be judged.



- 19 इसलिए, भाइयों, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मसीह के प्रकाश में रहते हुए तुम्हें निष्ठापूर्वक खोजना चाहिए ताकि तुम अच्छे और बुरे को जान सको; और यदि तुम हर अच्छी चीज पर टिके रहोगे और उसकी निंदा नहीं करोगे, तो तुम अवश्य ही मसीह की संतान बनोगे।
- 20 और अब, मेरे भाइयों, यह कैसे संभव है कि तुम हर अच्छी चीज पर टिके रहो ?
- 21 और अब मैं उस विश्वास पर आता हूँ, जिसके विषय में मैंने कहा था कि मैं बताऊंगा; और मैं तुम्हें वह तरीका बताऊंगा जिससे तुम हर अच्छी चीज पर टिके रह सको।
- 22 क्योंकि देखो, परमेश्वर अनंतता से अनंतता तक की हर बात जानता है, देखो, उसने मानव संतानों को उपदेश देने के लिए, मसीह के आगमन से संबंधित बातों को प्रकट करने के लिए स्वर्गदूत भेजे; और मसीह में हर अच्छी बात आएगी।
- 23 और परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं को भी घोषित किया है, अपने स्वयं के मुंह से कि मसीह आएगा।
- 24 और देखो, विभिन्न तरीके थे जिससे उसने मानव संतानों पर उन बातों को प्रकट किया, जो कि अच्छी थीं; और सारी बातें जो अच्छी हैं वे मसीह की तरफ से आती हैं; अन्यथा मनुष्य पतित थे, और उन तक कोई भी अच्छी बात नहीं पहुंच पाती।
- 25 इसलिए, स्वर्गदूतों के उपदेश द्वारा, और परमेश्वर के मुंह से निकले हर एक वचन द्वारा, मनुष्य मसीह में विश्वास बढ़ाने लगे; और इस प्रकार विश्वास द्वारा, वे हर अच्छी बात पर टिके रहे; और इस प्रकार ऐसा मसीह के आगमन तक था।
- 26 और उसके आने के पश्चात मनुष्य भी उसके नाम में विश्वास के द्वारा बचाए गए; और विश्वास द्वारा, वे परमेश्वर के पुत्र बने। और निश्चित तौर पर जैसे कि मसीह जीवित है उसने इन बातों को हमारे पूर्वजों से यह कहते हुए कहा: जो कुछ भी तुम मेरे नाम में पिता से मांगोगे, जो अच्छा है, विश्वास करते हुए कि तुम्हें मिलेगा, देखो, तुम्हारे लिए ऐसा किया जाएगा।
- 27 इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों, क्या चमत्कार होने बंद हो गए हैं क्योंकि मसीह स्वर्ग चला गया है, और परमेश्वर के दाहिने हाथ की ओर बैठा है, पिता से दया के अपने उन अधिकारों का दावा करने के लिए जो उसका मानव संतानों पर है ?

Wherefore, I beseech of you, brethren, that ye should search diligently in the light of Christ that ye may know good from evil; and if ye will lay hold upon every good thing, and condemn it not, ye certainly will be a child of Christ.

And now, my brethren, how is it possible that ye can lay hold upon every good thing?

And now I come to that faith, of which I said I would speak; and I will tell you the way whereby ye may lay hold on every good thing.

For behold, God knowing all things, being from everlasting to everlasting, behold, he sent angels to minister unto the children of men, to make manifest concerning the coming of Christ; and in Christ there should come every good thing.

And God also declared unto prophets, by his own mouth, that Christ should come.

And behold, there were divers ways that he did manifest things unto the children of men, which were good; and all things which are good cometh of Christ; otherwise men were fallen, and there could no good thing come unto them.

Wherefore, by the ministering of angels, and by every word which proceeded forth out of the mouth of God, men began to exercise faith in Christ; and thus by faith, they did lay hold upon every good thing; and thus it was until the coming of Christ.

And after that he came men also were saved by faith in his name; and by faith, they become the sons of God. And as surely as Christ liveth he spake these words unto our fathers, saying: Whatsoever thing ye shall ask the Father in my name, which is good, in faith believing that ye shall receive, behold, it shall be done unto you.

Wherefore, my beloved brethren, have miracles ceased because Christ hath ascended into heaven, and hath sat down on the right hand of God, to claim of the Father his rights of mercy which he hath upon the children of men?

- 28 क्योंकि उसने सारे नियमों को पूरा किया है, और वह उन सब पर दावा करता है जो उसमें विश्वास करते हैं; और वे जो उसमें विश्वास करते हैं हर अच्छी बात को थामे रहेंगे; इसलिए वह मानव संतानों का पक्ष लेता है; और वह अनंतता के लिए स्वर्गों में निवास करता है ।
- 29 और क्योंकि उसने ऐसा किया है, मेरे प्रिय भाइयों, क्या चमत्कार होने बंद हो गए हैं ? देखो मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं; न ही स्वर्गदूतों ने मानव संतानों को उपदेश देना बंद कर दिया है ।
- 30 क्योंकि देखो, उसकी आज्ञा के शब्द के अनुसार उपदेश देने के लिए वे उसके अधीन हैं, स्वयं पर मजबूत विश्वास प्रकट करते हुए और हर प्रकार की धार्मिकता में दृढ़ विचार करते हुए ।
- 31 और उनकी सेवकाई का काम है मनुष्यों को पश्चाताप करने का निमंत्रण देना, और पिता के उन अनुबंधों का काम करना और उन्हें पूरा करना, जिसे उसने मानव संतानों के साथ बनाया है, प्रभु के चुने हुए पात्रों को मसीह का वचन घोषित करने के द्वारा, मानव संतानों के बीच मार्ग तैयार करना है, ताकि वे उसकी गवाही दे सकें ।
- 32 और ऐसा करने के द्वारा, प्रभु परमेश्वर मार्ग तैयार करता है जिससे कि बचे हुए मनुष्य मसीह पर विश्वास कर सकें, ताकि इसके पश्चात सामर्थ्य के अनुसार, पवित्र आत्मा उनके हृदयों में स्थान प्राप्त कर सके; और इसी रीति से वह पिता के उन अनुबंधों को पूरा करता है जिसे उसने मानव संतानों से बनाया है ।
- 33 और मसीह ने कहा है: यदि तुम मुझमें विश्वास करोगे तो तुम्हें उस काम को करने के लिए सामर्थ्य मिलेगा जो मुझमें उचित है ।
- 34 और उसने कहा है: पृथ्वी के छोर तक के सारे लोगों तुम पश्चाताप करो, और मेरे पास आओ, और मेरे नाम में बपतिस्मा लो, और मुझमें विश्वास करो, ताकि तुम बचाए जा सको ।
- 35 और अब, मेरे प्रिय भाइयों, यदि ऐसा है कि ये बातें सच्ची हैं जो मैंने तुमसे कही हैं, और अंतिम दिन में सामर्थ्य और महान महिमा के द्वारा परमेश्वर तुम्हें दिखाएगा कि ये सच हैं, और यदि ये सच हैं तो क्या चमत्कार के दिन समाप्त हो गए हैं ?
- 36 या क्या स्वर्गदूत मानव संतानों को दिखाई देने बंद हो गए हैं ? या क्या उसने पवित्र आत्मा की शक्ति को उनके पास जाने से रोक रखा है ? या क्या वह उस शक्ति को तब तक रोकेगा जब तक अंत काल, यानि कि पृथ्वी रहेगी, या जब तक कि बचाए जाने के लिए पृथ्वी पर एक भी व्यक्ति बचा रहेगा ?

For he hath answered the ends of the law, and he claimeth all those who have faith in him; and they who have faith in him will cleave unto every good thing; wherefore he advocateth the cause of the children of men; and he dwelleth eternally in the heavens.

And because he hath done this, my beloved brethren, have miracles ceased? Behold I say unto you, Nay; neither have angels ceased to minister unto the children of men.

For behold, they are subject unto him, to minister according to the word of his command, showing themselves unto them of strong faith and a firm mind in every form of godliness.

And the office of their ministry is to call men unto repentance, and to fulfil and to do the work of the covenants of the Father, which he hath made unto the children of men, to prepare the way among the children of men, by declaring the word of Christ unto the chosen vessels of the Lord, that they may bear testimony of him.

And by so doing, the Lord God prepareth the way that the residue of men may have faith in Christ, that the Holy Ghost may have place in their hearts, according to the power thereof; and after this manner bringeth to pass the Father, the covenants which he hath made unto the children of men.

And Christ hath said: If ye will have faith in me ye shall have power to do whatsoever thing is expedient in me.

And he hath said: Repent all ye ends of the earth, and come unto me, and be baptized in my name, and have faith in me, that ye may be saved.

And now, my beloved brethren, if this be the case that these things are true which I have spoken unto you, and God will show unto you, with power and great glory at the last day, that they are true, and if they are true has the day of miracles ceased?

Or have angels ceased to appear unto the children of men? Or has he withheld the power of the Holy Ghost from them? Or will he, so long as time shall last, or the earth shall stand, or there shall be one man upon the face thereof to be saved?

- 37 देखो मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं; क्योंकि यह विश्वास ही है जिसके द्वारा चमत्कार होते हैं; और यह विश्वास ही है जिससे स्वर्गदूत दिखाई देते हैं और मनुष्यों को उपदेश देते हैं; इसलिए, यदि ये बातें रुक जाएं तो मानव संतानों पर हाय, क्योंकि ऐसा अविश्वास के कारण है, और सब व्यर्थ है।
- 38 क्योंकि मसीह के वचन के अनुसार, कोई भी मनुष्य तब तक नहीं बचाया जा सकता है जब तक कि वे उसके नाम में विश्वास नहीं करेंगे; इसलिए, यदि ये बातें रुक जाएं, तो विश्वास भी रुक जाएगा; और मनुष्य की स्थिति भयावह होगी, क्योंकि वे वैसे ही होंगे जैसे कि मुक्ति हुई ही नहीं थी।
- 39 परन्तु देखो, मेरे प्रिय भाइयों, मैं तुम्हारे लिए बेहतर चीजों का निर्णय लेता हूँ, क्योंकि मैं निर्णय लेता हूँ कि तुम्हारी दीनता के कारण ही मसीह में तुम्हारा विश्वास है; क्योंकि यदि उसमें तुम्हारा विश्वास नहीं है तो तुम उसके गिरजे के लोगों में गिने जाने के योग्य नहीं हो।
- 40 और फिर से, मेरे प्रिय भाइयों, मैं तुमसे आशा के संबंध में बात करूंगा। ऐसा कैसे हो सकता है कि तुम बिना आशा के विश्वास प्राप्त कर सकते हो?
- 41 और क्या है जिसकी तुम आशा करोगे? देखो मैं तुमसे कहता हूँ कि मसीह के प्रायश्चित और उसके पुनरुत्थान के सामर्थ्य द्वारा, अनंत जीवन के प्रति जिलाए जाने की तुम आशा करोगे, और ऐसा प्रतिज्ञा के अनुसार उसमें तुम्हारे विश्वास के कारण होगा।
- 42 इसलिए, यदि किसी मनुष्य के पास विश्वास है तो उसके पास आशा भी होनी चाहिए; क्योंकि बिना विश्वास के आशा प्राप्त नहीं की जा सकती है।
- 43 और फिर से, देखो मैं तुमसे कहता हूँ कि वह जो हृदय से दीन और नम्र नहीं होगा, वह विश्वास और आशा प्राप्त नहीं कर सकता है।
- 44 यदि ऐसा है, तो उसका विश्वास और आशा व्यर्थ है, क्योंकि हृदय से दीन और नम्र के अलावा, परमेश्वर के सामने और कोई भी स्वीकार्य नहीं है; और यदि कोई मनुष्य हृदय से दीन और नम्र है, और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य द्वारा अंगीकार करता है कि यीशु ही मसीह है, तो उसमें उदारता होनी चाहिए; क्योंकि यदि उसके पास उदारता नहीं है तो वह कुछ भी नहीं है; इसलिए उसके पास उदारता होनी चाहिए।
- 45 और उदारता लंबे समय तक प्रभावित रहती है, और दयालु है, और ईर्ष्या नहीं करती है, और अहंकारी नहीं होती है, स्वार्थी नहीं होती है, आसानी से उत्तेजित नहीं होती है, बुरा नहीं सोचती है, और बुराई में आनंदित नहीं होती है बल्कि सच्चाई में आनंदित होती है, सभी बातों को सहती है, सभी बातों में विश्वास करती है, सभी बातों की आशा करती है, सभी बातों में अंत तक बनी रहती है।

Behold I say unto you, Nay; for it is by faith that miracles are wrought; and it is by faith that angels appear and minister unto men; wherefore, if these things have ceased wo be unto the children of men, for it is because of unbelief, and all is vain.

For no man can be saved, according to the words of Christ, save they shall have faith in his name; wherefore, if these things have ceased, then has faith ceased also; and awful is the state of man, for they are as though there had been no redemption made.

But behold, my beloved brethren, I judge better things of you, for I judge that ye have faith in Christ because of your meekness; for if ye have not faith in him then ye are not fit to be numbered among the people of his church.

And again, my beloved brethren, I would speak unto you concerning hope. How is it that ye can attain unto faith, save ye shall have hope?

And what is it that ye shall hope for? Behold I say unto you that ye shall have hope through the atonement of Christ and the power of his resurrection, to be raised unto life eternal, and this because of your faith in him according to the promise.

Wherefore, if a man have faith he must needs have hope; for without faith there cannot be any hope.

And again, behold I say unto you that he cannot have faith and hope, save he shall be meek, and lowly of heart.

If so, his faith and hope is vain, for none is acceptable before God, save the meek and lowly in heart; and if a man be meek and lowly in heart, and confesses by the power of the Holy Ghost that Jesus is the Christ, he must needs have charity; for if he have not charity he is nothing; wherefore he must needs have charity.

And charity suffereth long, and is kind, and envieth not, and is not puffed up, seeketh not her own, is not easily provoked, thinketh no evil, and rejoiceth not in iniquity but rejoiceth in the truth, beareth all things, believeth all things, hopeth all things, endureth all things.

46 इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों, यदि तुममें उदारता नहीं है तो तुम कुछ भी नहीं हो, क्योंकि उदारता कभी भी असफल नहीं होती है। इसलिए, उदारता को थामे रहो, जो कि सभी बातों में उत्तम है, क्योंकि सभी बातें असफल हो जाएंगी—

47 परन्तु उदारता मसीह का सच्चा प्रेम है, और वह सदा के लिए बनी रहती है; और अंतिम दिन में जिसमें भी यह पाई जाएगी, उसके साथ भला होगा।

48 इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों, हृदय की पूरी ऊर्जा से पिता से प्रार्थना करो, जिससे कि तुम उसके उस प्रेम से परिपूर्ण हो सको, जिसे उसने उन सभी लोगों को प्रदान किया है जो उसके पुत्र, यीशु मसीह के सच्चे अनुयाई हैं; ताकि तुम परमेश्वर के बेटे बन सको; ताकि जब वह आएगा तब हम उसके समान होंगे, क्योंकि हम उसका वास्तविक रूप देख सकेंगे; ताकि हम इस आशा को प्राप्त कर सकें; ताकि हम वैसे ही पवित्र हो सकें जैसा कि वह है। आमीन।

Wherefore, my beloved brethren, if ye have not charity, ye are nothing, for charity never faileth. Wherefore, cleave unto charity, which is the greatest of all, for all things must fail—

But charity is the pure love of Christ, and it endureth forever; and whoso is found possessed of it at the last day, it shall be well with him.

Wherefore, my beloved brethren, pray unto the Father with all the energy of heart, that ye may be filled with this love, which he hath bestowed upon all who are true followers of his Son, Jesus Christ; that ye may become the sons of God; that when he shall appear we shall be like him, for we shall see him as he is; that we may have this hope; that we may be purified even as he is pure. Amen.

## मोरोनी 8

- 1 मेरे पिता मॉरमन का एक पत्र, मेरे लिए, मोरोनी के लिए लिखा गया था; और मेरी सेवकाई की बुलाहट के शीघ्र पश्चात् इसे मेरे लिए लिखा गया था। और इस जानकारी के लिए, यह कहते हुए वह मेरे लिए लिखते हैं:
- 2 मेरे प्रिय पुत्र मोरोनी, मैं बहुत ही आनंदित हूँ कि तुम्हारा प्रभु यीशु मसीह तुम्हारे लिए सचेत रहा है, और तुम्हें अपनी सेवकाई, और अपने पवित्र कार्य के लिए चुना है।
- 3 मैं अपनी प्रार्थनाओं में सदा ही तुम्हारे लिए सचेत रहा हूँ, निरंतर पिता परमेश्वर से उसके पवित्र बच्चे, यीशु के नाम में प्रार्थना करते हुए कि वह अपनी असीम अच्छाई और अनुग्रह के द्वारा, अंत तक उसके नाम में तुम्हें विश्वासी बनाएगा।
- 4 और अब, मेरे बेटे, मैं तुमसे उस विषय में बात करूँगा जो मुझे बहुत ही दुख पहुंचाती है; क्योंकि मुझे इस बात से दुख पहुंचता है कि तुम लोगों में मतभेद है।
- 5 क्योंकि, यदि मैंने सच्चाई जान ली है, तो तुम लोगों में तुम्हारे छोटे बच्चों के बपतिस्मा से संबंधित मतभेद रहा है।
- 6 और अब, मेरे बेटे, मैं चाहता हूँ कि तुम निष्ठापूर्वक परिश्रम करो, ताकि यह भारी त्रुटि तुम लोगों के बीच से निकल जाए; क्योंकि इसी उद्देश्य से मैंने यह पत्र लिखा है।
- 7 क्योंकि जैसे ही मैंने तुम लोगों के बीच की इन बातों को जाना तो इस मामले से संबंधित मैंने प्रभु से पूछताछ की। पवित्र आत्मा के सामर्थ्य द्वारा प्रभु का शब्द मुझ तक आया, यह कहते हुए:
- 8 मसीह, अपने मुक्तिदाता, अपने प्रभु और अपने परमेश्वर के वचन को सुनो। देखो, मैं संसार में धार्मिक लोगों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप करने के लिए बुलाने आया हूँ; जो पूरी तरह से स्वस्थ हैं उन्हें नहीं परन्तु जो बीमार हैं उन्हें वैद्य की आवश्यकता है; इसलिए, छोटे बच्चे पूरी तरह से स्वस्थ हैं, क्योंकि वे पाप करने में समर्थ नहीं हैं; इसलिए मेरे द्वारा आदम का श्राप उनसे हटा लिया गया है, कि उन पर उनका कोई प्रभाव नहीं है; और मेरे द्वारा खतना की व्यवस्था पूरी हुई है।
- 9 और इस रीति से पवित्र आत्मा ने परमेश्वर का वचन मुझ पर प्रकट किया; इसलिए, मेरे प्रिय बेटे, मैं जानता हूँ कि यह परमेश्वर के सामने एक गंभीर उपहास है कि तुम छोटे बच्चों को बपतिस्मा दो।

## Moroni 8

An epistle of my father Mormon, written to me, Moroni; and it was written unto me soon after my calling to the ministry. And on this wise did he write unto me, saying:

My beloved son, Moroni, I rejoice exceedingly that your Lord Jesus Christ hath been mindful of you, and hath called you to his ministry, and to his holy work.

I am mindful of you always in my prayers, continually praying unto God the Father in the name of his Holy Child, Jesus, that he, through his infinite goodness and grace, will keep you through the endurance of faith on his name to the end.

And now, my son, I speak unto you concerning that which grieveth me exceedingly; for it grieveth me that there should disputations rise among you.

For, if I have learned the truth, there have been disputations among you concerning the baptism of your little children.

And now, my son, I desire that ye should labor diligently, that this gross error should be removed from among you; for, for this intent I have written this epistle.

For immediately after I had learned these things of you I inquired of the Lord concerning the matter. And the word of the Lord came to me by the power of the Holy Ghost, saying:

Listen to the words of Christ, your Redeemer, your Lord and your God. Behold, I came into the world not to call the righteous but sinners to repentance; the whole need no physician, but they that are sick; wherefore, little children are whole, for they are not capable of committing sin; wherefore the curse of Adam is taken from them in me, that it hath no power over them; and the law of circumcision is done away in me.

And after this manner did the Holy Ghost manifest the word of God unto me; wherefore, my beloved son, I know that it is solemn mockery before God, that ye should baptize little children.

- 10 देखो मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम यह बात सिखाओगे—पश्चाताप और बपतिस्मा उन लोगों को जो उत्तरदाई हैं और पाप करने में समर्थ हैं; हां, माता-पिता को सिखाओ कि वे पश्चाताप करें और बपतिस्मा लें, और अपने आपको अपने छोटे बच्चों के समान विनम्र बनाएं, और अपने छोटे बच्चों के साथ वे सारे बचाए जाएंगे ।
- 11 और उनके छोटे बच्चों को न तो पश्चाताप की आवश्यकता है, न ही बपतिस्मा की । देखो, पापों से क्षमा के प्रति आज्ञाओं को पूरा करते हुए, बपतिस्मा पश्चाताप के लिए है ।
- 12 परन्तु छोटे बच्चे मसीह में जीवित हैं, यहां तक कि संसार की उत्पत्ति से ही; यदि ऐसा नहीं है तो परमेश्वर एक पक्षपाती परमेश्वर है, और एक परिवर्तनीय परमेश्वर भी, और लोगों की तरफदारी करनेवाला है; क्योंकि कितने ही छोटे बच्चे हैं जिनकी बिना बपतिस्मा लिए ही मृत्यु हो गई है !
- 13 इसलिए, यदि छोटे बच्चे बिना बपतिस्मा के नहीं बचाए जा सकते, तो ये अंतहीन नरक में जा चुके होते ।
- 14 देखो मैं तुमसे कहता हूँ, कि जो मानता है कि छोटे बच्चों को बपतिस्मा की आवश्यकता है वह कड़वाहट की दशा में और बुराई के बंधन में है; क्योंकि उसे न तो विश्वास, न आशा, और न ही उदारता; इसलिए, जो यह विचार रखता है उसे अलग कर दिया जाएगा, और उसे नरक जाना होगा ।
- 15 क्योंकि यह मानना ही दुष्टता की भयावह स्थिति है कि परमेश्वर बपतिस्मा के कारण ही किसी बच्चे को बचाता है, और अन्य नष्ट हो जाएंगे क्योंकि उनका बपतिस्मा नहीं हुआ है ।
- 16 उन पर हाथ जो इस रीति से प्रभु के मार्ग को दूषित करेंगे, क्योंकि उनका नाश होगा यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे । देखो, परमेश्वर के अधिकार से, मैं निर्भिकता से बोलता हूँ; और मैं नहीं डरता हूँ कि लोग क्या कर सकते हैं; क्योंकि परिपूर्ण प्रेम सारा डर दूर कर देता है ।
- 17 और मैं उस उदारता से भरा हुआ हूँ जो अनंत प्रेम है; इसलिए, सभी बच्चे मेरे लिए एक समान हैं; इसलिए, मैं छोटे बच्चों से परिपूर्ण प्रेम से प्रेम करता हूँ; और वे सभी एक समान और उद्धार पानेवालों में से हैं ।
- 18 क्योंकि मैं जानता हूँ कि परमेश्वर पक्षपाती परमेश्वर नहीं है, न ही परिवर्तनीय अस्तित्व है; परन्तु अनंतता से अनंतता तक वह अपरिवर्तनीय है ।

Behold I say unto you that this thing shall ye teach—repentance and baptism unto those who are accountable and capable of committing sin; yea, teach parents that they must repent and be baptized, and humble themselves as their little children, and they shall all be saved with their little children.

And their little children need no repentance, neither baptism. Behold, baptism is unto repentance to the fulfilling the commandments unto the remission of sins.

But little children are alive in Christ, even from the foundation of the world; if not so, God is a partial God, and also a changeable God, and a respecter to persons; for how many little children have died without baptism!

Wherefore, if little children could not be saved without baptism, these must have gone to an endless hell.

Behold I say unto you, that he that supposeth that little children need baptism is in the gall of bitterness and in the bonds of iniquity; for he hath neither faith, hope, nor charity; wherefore, should he be cut off while in the thought, he must go down to hell.

For awful is the wickedness to suppose that God saveth one child because of baptism, and the other must perish because he hath no baptism.

Wo be unto them that shall pervert the ways of the Lord after this manner, for they shall perish except they repent. Behold, I speak with boldness, having authority from God; and I fear not what man can do; for perfect love casteth out all fear.

And I am filled with charity, which is everlasting love; wherefore, all children are alike unto me; wherefore, I love little children with a perfect love; and they are all alike and partakers of salvation.

For I know that God is not a partial God, neither a changeable being; but he is unchangeable from all eternity to all eternity.

- 19 छोटे बच्चे पश्चाताप नहीं कर सकते हैं; इसलिए, उनके प्रति परमेश्वर की शुद्ध दया को अस्वीकार करना भयावह दुष्टता है, क्योंकि उसकी दया के कारण वे सभी उसमें जीवित हैं ।
- 20 और वह जो कहता है कि छोटे बच्चों को बपतिस्मा की आवश्यकता है, वह मसीह की दया को अस्वीकार करता है, और उसके प्रायश्चित और उसकी मुक्ति के सामर्थ्य को व्यर्थ ठहराता है ।
- 21 ऐसे लोगों पर हाथ, क्योंकि वे मृत्यु, नरक, और एक अंतहीन यातना के खतरे में हैं । मैं इसे निर्भिकता से कहता हूँ; परमेश्वर ने मुझे आज्ञा दी है । उन्हें सुनो और उन पर ध्यान दो, अन्यथा मसीह के न्याय-आसन पर वे तुम्हारे विरुद्ध खड़ी रहेंगी ।
- 22 क्योंकि देखो सभी छोटे बच्चे मसीह में जीवित हैं, और यह भी कि उन सब पर नियम लागू नहीं होता है । क्योंकि मुक्ति का सामर्थ्य उन सभी पर आता है जिन पर नियम लागू नहीं होता है; इसलिए, जिसकी निंदा नहीं की जाती है, या वह जो निंदा के तहत नहीं आता है, पश्चाताप नहीं कर सकता है; और ऐसों के लिए बपतिस्मा हितकारी नहीं है ।
- 23 परन्तु यह परमेश्वर के सामने उपहास है, मसीह की दया को, और उसकी पवित्र आत्मा के सामर्थ्य को अस्वीकार करते हुए, और निरर्थक कार्यों में विश्वास करना ।
- 24 देखो, मेरे बेटे, यह बात उचित नहीं है; क्योंकि पश्चाताप उनके लिए है जो निंदा के तहत और एक तोड़े गए नियम के श्राप के तहत आते हैं ।
- 25 और पश्चाताप के फलों में से पहला फल है बपतिस्मा; और आज्ञाओं को मानने के प्रति बपतिस्मा विश्वास द्वारा आता है; और आज्ञाओं को मानने से पापों से क्षमा मिलती है ।
- 26 और दीनता और हृदय की नम्रता पापों की क्षमा लाती है; और दीनता और हृदय की नम्रता से पवित्र आत्मा आती है, वह पवित्र आत्मा आशा और परिपूर्ण प्रेम से भर देती है, वह प्रेम जो प्रार्थना करने के लिए निष्ठा द्वारा अंत तक बना रहता है, अंत के आने तक, जब सारे संत परमेश्वर के साथ रहेंगे ।
- 27 देखो, मेरे बेटे, मैं तुम्हें फिर से लिखूंगा यदि मैं लमनाइयों के विरुद्ध शीघ्र नहीं गया तो । देखो, इस जाति, या नफाई लोगों के अहंकार के कारण इनका विनाश सिद्ध होता है यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे ।

Little children cannot repent; wherefore, it is awful wickedness to deny the pure mercies of God unto them, for they are all alive in him because of his mercy.

And he that saith that little children need baptism denieth the mercies of Christ, and setteth at naught the atonement of him and the power of his redemption.

Wo unto such, for they are in danger of death, hell, and an endless torment. I speak it boldly; God hath commanded me. Listen unto them and give heed, or they stand against you at the judgment-seat of Christ.

For behold that all little children are alive in Christ, and also all they that are without the law. For the power of redemption cometh on all them that have no law; wherefore, he that is not condemned, or he that is under no condemnation, cannot repent; and unto such baptism availeth nothing—

But it is mockery before God, denying the mercies of Christ, and the power of his Holy Spirit, and putting trust in dead works.

Behold, my son, this thing ought not to be; for repentance is unto them that are under condemnation and under the curse of a broken law.

And the first fruits of repentance is baptism; and baptism cometh by faith unto the fulfilling the commandments; and the fulfilling the commandments bringeth remission of sins;

And the remission of sins bringeth meekness, and lowliness of heart; and because of meekness and lowliness of heart cometh the visitation of the Holy Ghost, which Comforter filleth with hope and perfect love, which love endureth by diligence unto prayer, until the end shall come, when all the saints shall dwell with God.

Behold, my son, I will write unto you again if I go not out soon against the Lamanites. Behold, the pride of this nation, or the people of the Nephites, hath proven their destruction except they should repent.

28 उनके लिए प्रार्थना करो, मेरे बेटे, कि वे पश्चाताप कर सकें। परन्तु देखो, मुझे डर है कि कहीं आत्मा ने उन्हें प्रभावित करना बंद न कर दिया हो; और प्रदेश के इस भाग में ये लोग उस सामर्थ्य और अधिकार को भी छोड़ रहे हैं जो परमेश्वर की ओर से आता है; और वे पवित्र आत्मा को अस्वीकार कर रहे हैं।

29 और इतने महान ज्ञान को अस्वीकार करने के पश्चात, मेरे बेटे, उनका विनाश शीघ्र होगा, भविष्यवक्ताओं द्वारा दी गई भविष्यवाणियों को पूरा करते हुए, और स्वयं हमारे उद्धारकर्ता के वचनों को भी पूरा करते हुए।

30 अलविदा, मेरे बेटे, तब तक के लिए जब तक कि मैं तुम्हें लिखूंगा, या जब तक हम फिर से मिलेंगे। आमीन।

Pray for them, my son, that repentance may come unto them. But behold, I fear lest the Spirit hath ceased striving with them; and in this part of the land they are also seeking to put down all power and authority which cometh from God; and they are denying the Holy Ghost.

And after rejecting so great a knowledge, my son, they must perish soon, unto the fulfilling of the prophecies which were spoken by the prophets, as well as the words of our Savior himself.

Farewell, my son, until I shall write unto you, or shall meet you again. Amen.



## मोरोनी 9

- 1 मेरे प्रिय बेटे, मैं तुम्हें फिर से लिख रहा हूँ कि तुम जान सको कि मैं अभी भी जावित हूँ; परन्तु मैं उसे लिख रहा हूँ जो थोड़ा बहुत दुखदाई है ।
- 2 क्योंकि देखो, मेरा लमनाइयों के साथ घोर युद्ध हुआ, जिसमें हमने विजय प्राप्त नहीं की; और आर्किएंतास तलवार द्वारा मारा गया, और लुराम और ईमरोन भी; हां, और हमने हमारे चुने हुए लोगों में से बहुत से लोगों को खो दिया ।
- 3 और अब देखो, मेरे बेटे, मुझे डर है कि लमनाई इन लोगों का विनाश कर देंगे; क्योंकि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया, और शैतान उन्हें निरंतर उत्तेजित कर रहा है जिससे कि वे एक दूसरे से क्रोध करें ।
- 4 देखो, मैं निरंतर उनके साथ परिश्रम कर रहा हूँ; और जब मैं स्पष्टता से परमेश्वर का वचन कहता हूँ तो वे कांपने और मुझ पर क्रोधित होने लगते हैं; और जब मैं स्पष्टता का उपयोग नहीं करता हूँ तो वे इसके विरुद्ध अपने हृदयों को कठोर कर लेते हैं; इसलिए, मुझे डर है कि कहीं प्रभु की आत्मा उन्हें प्रभावित करना बंद न कर दे ।
- 5 क्योंकि वे इतना क्रोधित हो जाते हैं कि मुझे प्रतीत होता है कि उन्हें मृत्यु का भय नहीं है; और उन्होंने एक दूसरे के प्रति अपना प्रेम खो दिया है; और वे लहू के प्यासे हो गए हैं और निरंतर प्रतिशोध लेते हैं ।
- 6 और अब, मेरे प्रिय बेटे, उनकी कठोरता के बावजूद, आओ हम निष्ठापूर्वक परिश्रम करें; क्योंकि यदि हमने परिश्रम करना बंद कर दिया, तो हम निंदा के पात्र होंगे; क्योंकि मिट्टी के इस देह में रहते हुए करने के लिए हमारे पास एक नेक काम है, ताकि हम सभी धार्मिकता के शत्रु पर विजय प्राप्त कर सकें, और अपनी आत्माओं को परमेश्वर के राज्य में विश्राम दे सकें ।
- 7 और अब मैं इनकी पीड़ा से संबंधित थोड़ा बहुत लिख रहा हूँ । जो ज्ञान मैंने अमोरोन से प्राप्त किया है उसके अनुसार, देखो, लमनाइयों के पास बहुत से बंदी हैं जिन्हें उन्होंने शेराइजा की मीनार से पकड़ा था; और वहां पर पुरुष, स्त्री, और बच्चे थे ।
- 8 और उन्हीं स्त्रियों और बच्चों के पतियों और पिताओं को उन्होंने मार दिया; और उन्होंने स्त्रियों को उनके पतियों का, और बच्चों को उनके पिताओं का मांस खिलाया; और पीने के लिए उन्हें बहुत कम पानी दिया ।

## Moroni 9

My beloved son, I write unto you again that ye may know that I am yet alive; but I write somewhat of that which is grievous.

For behold, I have had a sore battle with the Lamanites, in which we did not conquer; and Archeantus has fallen by the sword, and also Luram and Emron; yea, and we have lost a great number of our choice men.

And now behold, my son, I fear lest the Lamanites shall destroy this people; for they do not repent, and Satan stirreth them up continually to anger one with another.

Behold, I am laboring with them continually; and when I speak the word of God with sharpness they tremble and anger against me; and when I use no sharpness they harden their hearts against it; wherefore, I fear lest the Spirit of the Lord hath ceased striving with them.

For so exceedingly do they anger that it seemeth me that they have no fear of death; and they have lost their love, one towards another; and they thirst after blood and revenge continually.

And now, my beloved son, notwithstanding their hardness, let us labor diligently; for if we should cease to labor, we should be brought under condemnation; for we have a labor to perform whilst in this tabernacle of clay, that we may conquer the enemy of all righteousness, and rest our souls in the kingdom of God.

And now I write somewhat concerning the sufferings of this people. For according to the knowledge which I have received from Amoron, behold, the Lamanites have many prisoners, which they took from the tower of Sherrizah; and there were men, women, and children.

And the husbands and fathers of those women and children they have slain; and they feed the women upon the flesh of their husbands, and the children upon the flesh of their fathers; and no water, save a little, do they give unto them.

- 9 और लमनाइयों के इस बहुत ही घृणित कार्य के बावजूद, यह मोरियंटम के हमारे लोगों के धोखे से अधिक नहीं था। क्योंकि देखो, लमनाइयों की बहुत सी बेटियों को बंदी बनाया गया; और उनसे वह चीज छीन ली गई जो सारी चीजों से अधिक प्रिय और मूल्यवान थी, जो कि सतीत्व और सदगुण है—
- 10 और उनके द्वारा इस कार्य को कर लेने के पश्चात, उन्होंने निष्ठुर तरीके से उनकी हत्या कर दी, मृत्यु होने तक उनके शरीरों को यंत्रणा देते हुए; और उनके द्वारा ऐसा कर लेने के पश्चात, अपने हृदय की कठोरता के कारण वे उनके मांस को जंगली पशुओं के समान नोचकर खा गए; और ऐसा उन्होंने अपनी बहादुरी के प्रतीक के रूप में किया।
- 11 हे मेरे प्रिय बेटे, इस प्रकार के लोग कैसे हो सकते हैं, जो सभ्यता-रहित होते हैं—
- 12 (और केवल कुछ ही वर्ष बीता है, और ये सभ्य और प्रसन्न लोग थे)
- 13 परन्तु हे मेरे बेटे, इस प्रकार के लोग कैसे हो सकते हैं, जिनकी खुशी इतनी घृणित हो गई—
- 14 हम कैसे आशा कर सकते हैं कि परमेश्वर इनके विरुद्ध न्याय करने में अपने हाथ को रोकेगा ?
- 15 देखो, मेरा हृदय रोता है: इन लोगों पर हाय। हे परमेश्वर, न्याय करने आओ, और अपने चेहरे के सामने से इनके पाप, और दुष्टता, और घृणित कार्यों को छिपा दो !
- 16 और फिर से, मेरे बेटे, ऐसी कई विधवाएं और बेटियां हैं जो शेराइजा में ही हैं; और वह भोजन सामग्रियां जिन्हें लमनाई नहीं ले गए, देखो, जीनफी की सेना ले गई, और उन्हें भोजन के लिए यहां-वहां भटकने के लिए छोड़ दिया; और मार्ग पर कई बूढ़ी स्त्रियां बेहोश हो गईं और मर गईं।
- 17 और जो सेना मेरे साथ है कमजोर है; और लमनाइयों की सेनाएं शेराइजा और मेरे बीच में हैं; और जितने लोग भागकर हारून की सेना के पास गए वे उनकी भयावह क्रूरता के शिकार बने।
- 18 ओह मेरे लोगों का दुराचार ! वे बिना किसी व्यवस्था के हैं और बिना दया के हो चुके हैं। देखो, मैं एक मनुष्य हूँ, और मेरे पास एक मनुष्य का बल है, और मैं अपनी आज्ञाओं के पालन के लिए उन्हें विवश नहीं कर सकता।

And notwithstanding this great abomination of the Lamanites, it doth not exceed that of our people in Moriantum. For behold, many of the daughters of the Lamanites have they taken prisoners; and after depriving them of that which was most dear and precious above all things, which is chastity and virtue—

And after they had done this thing, they did murder them in a most cruel manner, torturing their bodies even unto death; and after they have done this, they devour their flesh like unto wild beasts, because of the hardness of their hearts; and they do it for a token of bravery.

O my beloved son, how can a people like this, that are without civilization—

(And only a few years have passed away, and they were a civil and a delightful people)

But O my son, how can a people like this, whose delight is in so much abomination—

How can we expect that God will stay his hand in judgment against us?

Behold, my heart cries: Wo unto this people. Come out in judgment, O God, and hide their sins, and wickedness, and abominations from before thy face!

And again, my son, there are many widows and their daughters who remain in Sherrizah; and that part of the provisions which the Lamanites did not carry away, behold, the army of Zenephi has carried away, and left them to wander whithersoever they can for food; and many old women do faint by the way and die.

And the army which is with me is weak; and the armies of the Lamanites are betwixt Sherrizah and me; and as many as have fled to the army of Aaron have fallen victims to their awful brutality.

O the depravity of my people! They are without order and without mercy. Behold, I am but a man, and I have but the strength of a man, and I cannot any longer enforce my commands.

- 19 और वे अपने विकार में मजबूत हो गए हैं; और न तो बुजुर्गों पर, न ही युवाओं पर, किसी पर भी दया न करते हुए वे क्रूर के समान हो गए हैं; और भलाई के सिवाय हर अन्य बात में खुश होते हैं; और इस प्रदेश पर रहनेवाली हमारी स्त्रियों और बच्चों का उत्पीड़न हर बात से बढ़कर है; हां, इसे बोला नहीं जा सकता है, न ही इसे लिखा जा सकता है ।
- 20 और अब, मेरे बेटे, मैं इस भयानक दृश्य में और अधिक नहीं रह सकता हूँ । देखो, तुम इन लोगों की दुष्टता को जानते हो; तुम जानते हो कि ये बिना किसी नियम के हो गए हैं, और उनके विचार और उनकी दुष्टता लमनाइयों से भी अधिक हो गई है ।
- 21 देखो, मेरे बेटे, मैं परमेश्वर से इनकी सिफारिश नहीं कर सकता हूँ अन्यथा वह मुझे ही दंड देगा ।
- 22 परन्तु देखो, मेरे बेटे, मैं परमेश्वर से तुम्हारी सिफारिश कर सकता हूँ, और मुझे मसीह में विश्वास है कि तुम बचाए जाओगे; और मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह तुम्हें जीवन दान देगा, उसके लोगों को उसके पास आने की गवाही देने के लिए, या उनके शीघ्र विनाश के लिए; क्योंकि मैं जानता हूँ कि यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे और उसके पास नहीं लौटेंगे तो उनका विनाश होगा ।
- 23 और यदि ये नष्ट हुए तो यह येरेदाइयों के समान होगा, क्योंकि उनके हृदयों में लहू और प्रतिशोध की इच्छा रहती थी ।
- 24 और यदि ऐसा है कि वे नष्ट हुए, तो हम जानते हैं कि हमारे कई भाई लमनाइयों के कारण नष्ट हो गए थे, और उनके कारण अभी और नष्ट होंगे; इसलिए, कुछ बातों को लिख लो, यदि तुम बच गए और मैं मर जाऊँ और तुम्हें न देखूँ; परन्तु मुझे विश्वास है कि मैं तुम्हें शीघ्र ही देखूँगा; क्योंकि मेरे पास पावन अभिलेख हैं जिन्हें मैं तुम्हें देना चाहता हूँ ।
- 25 मेरे बेटे, मसीह में विश्वासी रहो; और जिन बातों को मैंने लिखा है उससे दुखी न हो, जिससे कि वे तुम्हें मृत्यु तक पहुंचा दें; परन्तु मसीह तुम्हें उभारे, और उसका उत्पीड़न और मृत्यु, और हमारे पूर्वजों को उसके शरीर की दिखाई देना, और उसकी दया और लंबे समय तक का उत्पीड़न, और उसकी महिमा और अनंत जीवन की आशा सदा के लिए तुम्हारे मन में रह सके ।
- 26 और पिता परमेश्वर अनुग्रह हो, जिसका सिंहासन स्वर्ग में ऊंचा है, और हमारा प्रभु यीशु मसीह, जो उसके सामर्थ्य के दाहिने हाथ की ओर तब के लिए बैठा है जब तक कि सारी बातें उसके अधीन न हो जाएं, और तुम्हारे साथ सदा के लिए रहें, आमीन ।

And they have become strong in their perversion; and they are alike brutal, sparing none, neither old nor young; and they delight in everything save that which is good; and the suffering of our women and our children upon all the face of this land doth exceed everything; yea, tongue cannot tell, neither can it be written.

And now, my son, I dwell no longer upon this horrible scene. Behold, thou knowest the wickedness of this people; thou knowest that they are without principle, and past feeling; and their wickedness doth exceed that of the Lamanites.

Behold, my son, I cannot recommend them unto God lest he should smite me.

But behold, my son, I recommend thee unto God, and I trust in Christ that thou wilt be saved; and I pray unto God that he will spare thy life, to witness the return of his people unto him, or their utter destruction; for I know that they must perish except they repent and return unto him.

And if they perish it will be like unto the Jaredites, because of the wilfulness of their hearts, seeking for blood and revenge.

And if it so be that they perish, we know that many of our brethren have deserted over unto the Lamanites, and many more will also desert over unto them; wherefore, write somewhat a few things, if thou art spared and I shall perish and not see thee; but I trust that I may see thee soon; for I have sacred records that I would deliver up unto thee.

My son, be faithful in Christ; and may not the things which I have written grieve thee, to weigh thee down unto death; but may Christ lift thee up, and may his sufferings and death, and the showing his body unto our fathers, and his mercy and long-suffering, and the hope of his glory and of eternal life, rest in your mind forever.

And may the grace of God the Father, whose throne is high in the heavens, and our Lord Jesus Christ, who sitteth on the right hand of his power, until all things shall become subject unto him, be, and abide with you forever. Amen.

## मोरोनी 10

- 1 अब मैं, मोरोनी, कुछ उन बातों को लिख रहा हूँ जो मुझे अच्छी प्रतीत होती हैं; और मैं अपने लमनाई भाइयों के लिए लिख रहा हूँ; और मैं चाहता हूँ कि वे जानें कि चार सौ और बीस वर्षों से भी अधिक का समय बीत चुका है जब मसीह के आगमन का चिन्ह दिया गया था ।
- 2 और उपदेश के समान कुछ बातों को तुम्हें बताने के पश्चात, मैं इन अभिलेखों को मुहरबंद कर देता हूँ ।
- 3 देखो, मैं तुम्हें उपदेश देना चाहता हूँ कि जब तुम इन बातों को पढ़ो, यदि ये परमेश्वर में ज्ञान की बातें हैं तो तुम्हें इन्हें पढ़ना चाहिए, ताकि तुम याद रखो कि मानव संतानों के प्रति प्रभु कितना दयालु रहा है, आदम की सृष्टि से लेकर इस समय तक भी जिससे कि तुम इन बातों को प्राप्त करोगे, और अपने हृदयों में इन पर मनन करोगे ।
- 4 और जब तुम इन बातों को स्वीकार करोगे, मैं तुम्हें उपदेश देना चाहता हूँ कि तुम मसीह के नाम में, अनंत पिता, परमेश्वर से पूछो, कि क्या ये बातें सच्ची नहीं हैं; और यदि तुम सच्चे हृदय के साथ, वास्तविक उद्देश्य से मसीह में विश्वास करते हुए पूछोगे, तो वह पवित्र आत्मा के सामर्थ्य द्वारा तुम पर इसकी सच्चाई प्रकट करेगा ।
- 5 और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य द्वारा तुम सारी बातों की सच्चाई जान सकते हो ।
- 6 और जो बात अच्छी होती है वह उचित और सत्य होती है; इसलिए, जो अच्छी होती है वह मसीह को अस्वीकार नहीं करती है, बल्कि स्वीकार करती है कि वह है ।
- 7 और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य द्वारा, तुम जान सकते हो कि वह है; इसलिए मैं तुम्हें उपदेश देना चाहता हूँ कि तुम परमेश्वर के सामर्थ्य को अस्वीकार मत करना; क्योंकि वह आज और कल, और सदा के लिए मानव संतानों के विश्वास के अनुसार, सामर्थ्य द्वारा कार्य करता है और करता रहेगा ।
- 8 और फिर से, मैं तुम्हें उपदेश देता हूँ, मेरे भाइयों कि तुम परमेश्वर के उपहारों को अस्वीकार मत करो, क्योंकि उनकी संख्या बहुत है; और वे उसी परमेश्वर की तरफ से आते हैं । और विभिन्न तरीके हैं जिससे ये उपहार दिए जाते हैं; परन्तु यह वही परमेश्वर है जो सबमें कार्य करता है; और लोगों के लाभ के लिए, उन्हें ये परमेश्वर की आत्मा के प्रकटीकरण से दिए जाते हैं ।
- 9 क्योंकि देखो, किसी को परमेश्वर की आत्मा द्वारा दिया गया है, जिससे कि वह ज्ञान का शब्द सिखा सके;

## Moroni 10

Now I, Moroni, write somewhat as seemeth me good; and I write unto my brethren, the Lamanites; and I would that they should know that more than four hundred and twenty years have passed away since the sign was given of the coming of Christ.

And I seal up these records, after I have spoken a few words by way of exhortation unto you.

Behold, I would exhort you that when ye shall read these things, if it be wisdom in God that ye should read them, that ye would remember how merciful the Lord hath been unto the children of men, from the creation of Adam even down until the time that ye shall receive these things, and ponder it in your hearts.

And when ye shall receive these things, I would exhort you that ye would ask God, the Eternal Father, in the name of Christ, if these things are not true; and if ye shall ask with a sincere heart, with real intent, having faith in Christ, he will manifest the truth of it unto you, by the power of the Holy Ghost.

And by the power of the Holy Ghost ye may know the truth of all things.

And whatsoever thing is good is just and true; wherefore, nothing that is good denieth the Christ, but acknowledgeth that he is.

And ye may know that he is, by the power of the Holy Ghost; wherefore I would exhort you that ye deny not the power of God; for he worketh by power, according to the faith of the children of men, the same today and tomorrow, and forever.

And again, I exhort you, my brethren, that ye deny not the gifts of God, for they are many; and they come from the same God. And there are different ways that these gifts are administered; but it is the same God who worketh all in all; and they are given by the manifestations of the Spirit of God unto men, to profit them.

For behold, to one is given by the Spirit of God, that he may teach the word of wisdom;

- 10 और अन्य किसी को, जिससे कि वह उसी आत्मा के द्वारा बुद्धि के शब्द सिखा सके;
- 11 और अन्य को, अत्याधिक महान विश्वास दिया जाता है; और अन्य किसी को उसी आत्मा के द्वारा चंगाई के उपहार दिए जाते हैं;
- 12 और फिर से, किसी अन्य को, जिससे कि वह प्रबल चमत्कार कर सके;
- 13 और फिर से, किसी अन्य को, जिससे कि वह इन बातों से संबंधित भविष्यवाणी कर सके;
- 14 और फिर से, किसी अन्य को, वह दृष्टि बोध मिलता है जिससे कि वह स्वर्गदूतों और उपदेश देनेवाली आत्माओं को देख सकता है;
- 15 और फिर से, किसी अन्य को, हर प्रकार की भाषाओं का;
- 16 और फिर से, किसी अन्य को, भाषाओं के अनुवाद का और भाषाओं के विभिन्न प्रकारों का उपहार दिया जाता है ।
- 17 और ये सारे उपहार मसीह की आत्मा द्वारा आते हैं; और ये प्रत्येक व्यक्ति के पास अलग-अलग आते हैं, उसकी इच्छा के अनुसार ।
- 18 और मैं तुम्हें उपदेश देना चाहता हूँ, मेरे प्रिय भाइयों, कि तुम याद रखो कि हर अच्छा उपहार मसीह की तरफ से आता है ।
- 19 और मैं तुम्हें उपदेश देना चाहता हूँ, मेरे प्रिय भाइयों, कि तुम याद रखो कि वह कल, आज, और सदा एक सा ही है, और ये सारे उपहार जिनके विषय में मैंने बताया है, जो कि आत्मिक हैं, केवल मानव संतानों के अविश्वास के अलावा, इनका कभी भी अंत नहीं होगा, यहां तक कि ये तब तक रहेंगे जब तक कि धरती रहेगी ।
- 20 इसलिए, विश्वास अनिवार्य है; और जहां विश्वास होगा वहां आशा भी होगी; और जहां आशा होगी वहां उदारता भी होगी ।
- 21 और यदि तुममें उदारता नहीं है तो किसी भी तरीके से तुम परमेश्वर के राज्य में नहीं बचाए जा सकते हो; न ही तुम परमेश्वर के राज्य में तब बचाए जा सकते हो जब तुममें विश्वास न हो; न ही तुम तब बचाए जा सकते हो जब तुममें आशा न हो ।
- 22 और यदि तुममें आशा नहीं है तो तुम निराशा में रहोगे; और बुराई के कारण निराशा आती है ।
- 23 और मसीह ने वास्तव में हमारे पूर्वजों से कहा था: यदि तुममें विश्वास है तो तुम वह सब कर सकते हो जो मुझमें आवश्यक है ।
- 24 और अब मैं पृथ्वी के सभी छोर के लोगों से कहता हूँ—कि यदि वह दिन आता है जब परमेश्वर के सामर्थ्य और उपहार तुम लोगों के बीच से हटा लिए जाएंगे, तो ऐसा अविश्वास के कारण होगा ।

And to another, that he may teach the word of knowledge by the same Spirit;

And to another, exceedingly great faith; and to another, the gifts of healing by the same Spirit;

And again, to another, that he may work mighty miracles;

And again, to another, that he may prophesy concerning all things;

And again, to another, the beholding of angels and ministering spirits;

And again, to another, all kinds of tongues;

And again, to another, the interpretation of languages and of divers kinds of tongues.

And all these gifts come by the Spirit of Christ; and they come unto every man severally, according as he will.

And I would exhort you, my beloved brethren, that ye remember that every good gift cometh of Christ.

And I would exhort you, my beloved brethren, that ye remember that he is the same yesterday, today, and forever, and that all these gifts of which I have spoken, which are spiritual, never will be done away, even as long as the world shall stand, only according to the unbelief of the children of men.

Wherefore, there must be faith; and if there must be faith there must also be hope; and if there must be hope there must also be charity.

And except ye have charity ye can in nowise be saved in the kingdom of God; neither can ye be saved in the kingdom of God if ye have not faith; neither can ye if ye have no hope.

And if ye have no hope ye must needs be in despair; and despair cometh because of iniquity.

And Christ truly said unto our fathers: If ye have faith ye can do all things which are expedient unto me.

And now I speak unto all the ends of the earth—that if the day cometh that the power and gifts of God shall be done away among you, it shall be because of unbelief.

- 25 और यदि ऐसा है तो मानव संतानों पर हाय; क्योंकि तुममें कोई भी नहीं होगा जो भलाई करेगा, एक भी नहीं। क्योंकि यदि तुममें एक भी है जो भलाई करता है, तो वह परमेश्वर के सामर्थ्य और उपहार द्वारा कार्य करेगा।
- 26 और उन पर हाय जो इन कार्यों को करेंगे और मर जाएंगे, क्योंकि वे अपने पापों में मरते हैं, और वे परमेश्वर के राज्य में नहीं बचाए जा सकते; और मैं इसे मसीह के वचन के अनुसार कहता हूँ; और मैं झूठ नहीं बोलता।
- 27 और मैं तुम्हें इन बातों को याद रखने का उपदेश देता हूँ; क्योंकि समय शीघ्रता से आ रहा है जब तुम जानोगे कि मैं झूठ नहीं बोलता हूँ, क्योंकि तुम मुझे परमेश्वर की अदालत में देखोगे; और प्रभु परमेश्वर तुमसे कहेगा: क्या मैंने अपना वचन तुम्हें नहीं सुनाया था, जो इस व्यक्ति द्वारा लिखे गए थे, जैसे कि कोई मरे हुए लोगों में से पुकार रहा है, हां, जैसे कि कोई मिट्टी में से बोल रहा है ?
- 28 मैं इन बातों की घोषणा भविष्यवाणियों के पूरा होने के प्रति कर रहा हूँ। और देखो, अनंत परमेश्वर के मुंह से ये निकलेंगी; और उसका वचन पीढ़ी-दर-पीढ़ी फुफकार कर कहेगा।
- 29 और तुम्हें परमेश्वर दिखाएगा कि जो मैंने लिखा है वह सच है।
- 30 और फिर से मैं तुम्हें उपदेश देना चाहता हूँ कि तुम मसीह के पास आओ, और हर अच्छे उपहार को थाम लो, और बुरे उपहार को छुओ भी मत, न ही किसी अशुद्ध वस्तु को।
- 31 और हे यरूशलेम, जागो, और मिट्टी में से उठो; हां, हे सिय्योन की बेटी, अपना सुंदर वस्त्र धारण करो; और अपने खूंटों को मजबूत करो और सदा के लिए अपनी सीमाएं बढ़ाओ, जिससे कि तुम हैरान न रह सको, हे इस्राएल का घराना, कि अनंत पिता के वे अनुबंध पूरे हो सकें जिन्हें उसने तुम्हारे साथ बनाया है।
- 32 हां, मसीह के पास आओ, और उसमें परिपूर्ण बनो, और स्वयं सारी अधार्मिकताओं को अस्वीकार करो; और यदि तुम स्वयं सारी अधार्मिकताओं को अस्वीकार करोगे, और परमेश्वर से अपनी योग्यता, बुद्धि और बल से प्रेम करोगे, तब उसके अनुग्रह तुम्हारे लिए पर्याप्त है, जिससे कि उसके अनुग्रह द्वारा तुम मसीह में परिपूर्ण हो सको; और यदि परमेश्वर का अनुग्रह द्वारा तुम मसीह में परिपूर्ण हो, तो किसी भी तरह से तुम परमेश्वर के सामर्थ्य को अस्वीकार नहीं कर सकते।

And wo be unto the children of men if this be the case; for there shall be none that doeth good among you, no not one. For if there be one among you that doeth good, he shall work by the power and gifts of God.

And wo unto them who shall do these things away and die, for they die in their sins, and they cannot be saved in the kingdom of God; and I speak it according to the words of Christ; and I lie not.

And I exhort you to remember these things; for the time speedily cometh that ye shall know that I lie not, for ye shall see me at the bar of God; and the Lord God will say unto you: Did I not declare my words unto you, which were written by this man, like as one crying from the dead, yea, even as one speaking out of the dust?

I declare these things unto the fulfilling of the prophecies. And behold, they shall proceed forth out of the mouth of the everlasting God; and his word shall hiss forth from generation to generation.

And God shall show unto you, that that which I have written is true.

And again I would exhort you that ye would come unto Christ, and lay hold upon every good gift, and touch not the evil gift, nor the unclean thing.

And awake, and arise from the dust, O Jerusalem; yea, and put on thy beautiful garments, O daughter of Zion; and strengthen thy stakes and enlarge thy borders forever, that thou mayest no more be confounded, that the covenants of the Eternal Father which he hath made unto thee, O house of Israel, may be fulfilled.

Yea, come unto Christ, and be perfected in him, and deny yourselves of all ungodliness; and if ye shall deny yourselves of all ungodliness, and love God with all your might, mind and strength, then is his grace sufficient for you, that by his grace ye may be perfect in Christ; and if by the grace of God ye are perfect in Christ, ye can in nowise deny the power of God.

33 और फिर से, यदि परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा तुम मसीह में परिपूर्ण हो, और उसके सामर्थ्य को अस्वीकार नहीं करते हो, तो तुम परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा मसीह में पवित्र हो, मसीह के लहू बहाए जाने के द्वारा, जो कि तुम्हारे पापों की क्षमा के लिए पिता के अनुबंध में शामिल है, जिससे कि तुम बिना दाग के पवित्र हो जाते हो ।

34 और अब मैं तुम सब से अलविदा कहता हूं । शीघ्र ही मैं परमेश्वर के स्वर्गधाम में विश्राम करने जाऊंगा, तब तक के लिए जब तक कि मेरी आत्मा मेरे शरीर से फिर न मिल जाए, और महान यहोवा, जीवित और मृत लोगों के अनंत न्यायी के सुखदाईन्यायालय में, तुमसे मिलने के लिए विजयी होकर मुझे आसमान से लाया जाएगा ।  
आमीन ।

*समाप्त*

And again, if ye by the grace of God are perfect in Christ, and deny not his power, then are ye sanctified in Christ by the grace of God, through the shedding of the blood of Christ, which is in the covenant of the Father unto the remission of your sins, that ye become holy, without spot.

And now I bid unto all, farewell. I soon go to rest in the paradise of God, until my spirit and body shall again reunite, and I am brought forth triumphant through the air, to meet you before the pleasing bar of the great Jehovah, the Eternal Judge of both quick and dead. Amen.

*The End*